



राजस्थान के जैन शास्त्र मराडारों

की

—≡≡≡ ग्रन्थ-सूची ≡≡≡—

[ चतुर्थ भाग ]

(जयपुर के वारद जैन ग्रंथ भंडारों में संग्रहीत दस हजार से अधिक ग्रंथों की सूची, १८  
ग्रंथों की प्रशस्तिर्या तथा ४२ प्राचीन एवं अज्ञात ग्रंथों का परिचय सहित)

भूमिका लेखक:-

डा० वासुदेव शरण अग्रवाल

अध्यक्ष हिन्दी विभाग, काशी विश्व विद्यालय, वाराणसी



सम्पादक:-

डा० कस्तूरचंद कासलीवाल

एम. ए. पी-एच. डी., शास्त्री

पं० अनूपचंद न्यायतीर्थ

साहित्यरत्न



प्रकाशक :-

केशरलाल वरुशी

मंत्री :-

प्रबन्धकारिणी कमेटी

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

महावीर भवन, जयपुर

## पुस्तक प्राप्ति स्थान :—

१. मंत्री श्री दिगम्बर जैन अ० क्षेत्र श्री महावीरजी  
महावीर भवन, सर्वाई मानसिंह हाईवे, जयपुर (राजस्थान)
२. मैनेजर दिगम्बर जैन अ० क्षेत्र श्री महावीरजी  
श्री महावीरजी (राजस्थान)



प्रथम संस्करण  
५०० प्रति

महावीर जयन्ति  
वि० सं० २०१९  
अप्रैल १९६२

मूल्य  
१५)



मुद्रक :—  
भैरवलाल न्यायतीर्थ  
श्री वीर प्रेस, जयपुर ।

## ★ विषय-सूची ★

|                                       |      |                 |
|---------------------------------------|------|-----------------|
| १ प्रकाशकीय                           | .... | पत्र संख्या १-२ |
| २ भूमिका                              | .... | ३-४             |
| ३ प्रस्तावना                          | .... | ५-२३            |
| ४ प्राचीन एवं अज्ञात ग्रंथों का परिचय | .... | २४-४८           |
| ५ " " विवरण                           | .... | ४९-५६           |
| ६ विषय                                |      | पत्र संख्या     |
| १ सिद्धान्त एवं चर्चा                 | .... | १-४७            |
| २ धर्म एवं आचार शास्त्र               | .... | ४८-६८           |
| ३ अध्यात्म एवं योगशास्त्र             | .... | ६९-१२८          |
| ४ न्याय एवं दर्शन                     | .... | १२९-१४१         |
| ५ पुराण साहित्य                       | .... | १४२-१५९         |
| ६ काव्य एवं चरित्र                    | .... | १६०-२१२         |
| ७ कथा साहित्य                         | .... | २१३-२५६         |
| ८ व्याकरण साहित्य                     | ..   | २५७-२७०         |
| ९ कोश                                 | .... | २७१-२७८         |
| १० ज्योतिष एवं निर्मितज्ञान           | .... | २७९-२९५         |
| ११ आयुर्वेद                           | .... | २९६-३०७         |
| १२ चन्द्र एवं अलंकार                  | .... | ३०८-३१५         |
| १३ संगीत एवं नाटक                     | .... | ३१६-३१८         |
| १४ लोक विज्ञान                        | .... | ३१९-३२३         |
| १५ सुभाषित एवं नीति शास्त्र           | .... | ३२४-३४६         |
| १६ मंत्र शास्त्र                      | .... | ३४७-३५२         |
| १७ काम शास्त्र                        | .... | ३५३             |
| १८ शिल्प शास्त्र                      | .... | ३५४             |

|                                     |      | पत्र संख्या |
|-------------------------------------|------|-------------|
| १६ लक्षण एवं समीक्षा                | .... | ३५५-३५६     |
| २० फागु रासा एवं बेलि साहित्य       | ...  | ३६०-३६७     |
| २१ गणित शास्त्र                     | .... | ३६८-३६९     |
| २२ इतिहास                           | .... | ३७०-३७८     |
| २३ स्तोत्र साहित्य                  | .... | ३७९-४५२     |
| २४ पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य | ...  | ४५३-४५६     |
| २५ गुटका संग्रह                     | .... | ४५७-७६६     |
| २६ अर्वाशिष्ट साहित्य               | ...  | ७६६-८००     |
| ७ ग्रंथानुक्रमणिका                  | .... | ८०१-८८४     |
| ८ ग्रंथ एवं ग्रंथकार                | .... | ८८५-९२८     |
| ९ शासकों की नामावलि                 | ..   | ९२९-९३०     |
| १० ग्राम एवं नगरों की नामावलि       | .... | ९३१-९३६     |
| ११ शुद्धाशुद्धि पत्र                | .... | ९४०-९४३     |



## ★ प्रकाशकीय ★

ग्रंथ सूची के चतुर्थ भाग को पाठकों के हाथों में देते हुये मुझे प्रसन्नता होती है। ग्रंथ सूची का यह भाग अब तक प्रकाशित ग्रंथ सूचियों में सबसे बड़ा है और इसमें १० हजार से अधिक ग्रंथों का विवरण दिया हुआ है। इस भाग में जयपुर के १२ शास्त्र भंडारों के ग्रंथों की सूची दी गई है। इस प्रकार सूची के चतुर्थ भाग सहित अब तक जयपुर के १७ तथा श्री महावीरजी का एक, इस तरह १८ भंडारों के अनुमानतः २० हजार ग्रंथों का विवरण प्रकाशित किया जा चुका है।

ग्रंथों के संकलन को देखने से पता चलता है कि जयपुर प्रारम्भ से ही जैन साहित्य एवं संस्कृति का केन्द्र रहा है और दिगम्बर शास्त्र भंडारों की दृष्टि से सारे राजस्थान में इसका प्रथम स्थान है। जयपुर बड़े बड़े विद्वानों का जन्म स्थान भी रहा है तथा इस नगर में होने वाले टोडरमल जी, जयचन्द जी, मद्रामुखजी जैसे महान विद्वानों ने सारे भारत के जैन समाज का साहित्यिक एवं धार्मिक दृष्टि से पथ-प्रदर्शन किया है। जयपुर के इन भंडारों में विभिन्न विद्वानों के हाथों से लिखी हुई पाण्डुलिपियां प्राप्त हुई हैं जो राष्ट्र एवं समाज की अमूल्य निधियों में से हैं। जयपुर के पाटोदी के मन्दिर के शास्त्र भंडार में पं० टोडरमल जी द्वारा लिखे हुये गोम्मटमार जीवकांड की मूल पाण्डुलिपियां प्राप्त हुई हैं जिसका एक चित्र हमने इस भाग में दिया है। इसी तरह ब्रह्म रायमल्ल, जोधराज गोदीका, सुशालचंद आदि अन्य विद्वानों के द्वारा लिखी हुई प्रतियां हैं।

इस ग्रंथ सूची के प्रकाशन से भारतीय साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य को कितना लाभ पहुंचेगा इसका सही अनुमान तो विद्वान ही कर सकेंगे किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इस भाग के प्रकाशन से संस्कृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी की मूकडों प्राचीन एवं अज्ञात रचनायें प्रकाश में आयी हैं। हिन्दी की अभी १३ वीं शताब्दी की एक रचना जिनदत्त चौपई जयपुर के पाटोदी के मन्दिर में उपलब्ध हुई है जिसका संभवतः हिन्दी भाषा की सर्वाधिक प्राचीन रचनाओं में स्थान मिल सकेगा तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास में वह उल्लेखनीय रचना कहलायी जा सकेगी। इसके प्रकाशन की व्यवस्था शीघ्र ही की जा रही है। इससे पूर्व प्रद्युम्न चरित की रचना प्राप्त हुई थी जिसको सभी विद्वानों ने हिन्दी अपूर्व रचना स्वीकार किया है।

उक्त सूची प्रकाशन के अतिरिक्त क्षेत्र के साहित्य शोध संस्थान की ओर से अब तक ग्रंथ सूची के तीन भाग, प्रशान्ति संग्रह, सर्वार्थसिद्धिसार, तामिल भाषा का जैन साहित्य, Jainism a key to true happiness. तथा प्रद्युम्नचरित आठ ग्रंथों का प्रकाशन हो चुका है। सूची प्रकाशन के अतिरिक्त राजस्थान के विभिन्न नगर, कस्बे एवं गांवों में स्थित ७० से भी अधिक भंडारों की ग्रंथ सूचियां बनायी जा

चुकी हैं जो हमारे संस्थान में हैं, तथा जिनसे विद्वान एवं साहित्य शोध में लगे हुये विद्यार्थी लाभ उठाते रहते हैं। ग्रंथ सूचियों के साथ २ करीब ४०० से भी अधिक महत्वपूर्ण एवं प्रचीन ग्रंथों की प्रशस्तियां एवं परिचय लिखे जा चुके हैं जिन्हें भी पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने की योजना है। जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी पद भी इन भंडारों में प्रबुर संख्या में मिलते हैं। ऐसे करीब २००० पदों का हमने संग्रह कर लिया है जिन्हें भी प्रकाशित करने की योजना है तथा संभव है इस वर्ष हम इसका प्रथम भाग प्रकाशित कर सकें। इस तरह खोज पूर्ण साहित्य प्रकाशन के जिस उद्देश्य से क्षेत्र में साहित्य शोध संस्थान की स्थापना की गयी हमारा वह उद्देश्य धीरे धीरे पूरा हो रहा है।

भारत के विभिन्न विद्यालयों के भारतीय भाषाओं मुख्यतः प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश हिन्दी एवं राजस्थानी भाषाओं पर खोज करने वाले सभी विद्वानों से निवेदन है कि वे प्राचीन साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य पर खोज करने वा प्रयास करें। हम भी उन्हें साहित्य उपलब्ध करने में दयाशक्ति सहयोग देंगे।

ग्रंथ सूची के इस भाग में जयपुर के जिन जिन शास्त्र भंडारों की सूची दी गई है मैं उन भंडारों के सभी व्यवस्थापकों का तथा विशेषतः श्री नाथूलालजी वज्र, अनूपचंदजी दीवान, पं० भंवरलालजी न्यायतीर्थ, श्रीराजमलजी गोधा, समीरमलजी झावड़ा, कपूरचंदजी रावका, एवं प्रो० मुल्तानसिंहजी जैन का आभारी हूँ जिन्होंने हमारे शोध संस्थान के विद्वानों को शास्त्र भंडारों की सूचियां बनाने तथा समय समय पर वहां के ग्रंथों को देखने में पूरा सहयोग दिया है। आशा है भविष्य में भी उनका साहित्य सेवा के पुनीत कार्य में सहयोग मिलता रहेगा।

हम श्री डा० वासुदेव शरणजी अग्रवाल, हिन्दू विश्वविद्यालय वागण्ठी के हृदय में आभारी हैं जिन्होंने अस्वस्थ होते हुये भी हमारी प्रार्थना स्वीकार करके ग्रंथ सूची की भूमिका लिखने की कृपा की है। भावग्य में उनका प्राचीन साहित्य के शोध कार्य में निर्देशन मिलता रहता ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है।

इस ग्रंथ के विद्वान सम्पादक श्री डा० कन्दूरचंदजी कामलीवाल एवं उनके सहयोगी श्री पं० अनूपचंदजी न्यायतीर्थ तथा श्री सुगनचंदजी जैन का भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने विभिन्न शास्त्र भंडारों को देखकर लगन एवं परिश्रम से इस ग्रंथ को तैयार किया है। मैं जयपुर के सुयोग्य विद्वान श्री पं० जैन-सुवदामजी न्यायतीर्थ का भी हृदय से आभारी हूँ कि जिनका हमको साहित्य शोध संस्थान के कार्यों में पथ-प्रदर्शन व सहयोग मिलता रहता है।

## भूमिका

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी, जयपुर के कार्यकर्ताओं ने कुछ ही वर्षों के भीतर अपनी संस्था को भारत के साहित्यिक मानचित्र पर उभरे हुए रूप में टांक दिया है। इस संस्था द्वारा संचालित जैन साहित्य शोध संस्थान का महत्वपूर्ण कार्य सभी विद्वानों का ध्यान हटाने, अपनी ओर खींच लेने के लिए पर्याप्त है। इस संस्था को श्री कस्तूरचंद जी कासलीवाल के रूप में एक मौन साहित्य साधक प्राप्त हो गए। उन्होंने अपने संकल्प बल और अद्भुत कार्यशक्ति द्वारा जयपुर एवं राजस्थान के अन्य नगरों में जो शास्त्र भंडार पुराने समय से चले आते हैं उनकी खान बिन का महत्वपूर्ण कार्य अपने ऊपर चठा लिया। शास्त्र भंडारों की जांच पड़ताल करके उनमें संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश, राजस्थानी और हिन्दी के जो अनेकानेक ग्रंथ सुरक्षित हैं उनकी क्रमबद्ध वर्गीकृत और परिचयात्मक सूची बनाने का कार्य बिना रुके हुए कितने ही वर्षों तक कासलीवाल जी ने किया है। सौभाग्य से उन्हें अतिशय क्षेत्र के संचालक और प्रबंधकों के रूप में ऐसे सहयोगी मिले जिन्होंने इस कार्य के राष्ट्रीय महत्व को पहचान लिया और सूची पत्रों के विधिवत् प्रकाशन के लिए आर्थिक प्रबंध भी कर दिया। इस प्रकार का मणिकंचन संयोग बहुत ही फलप्रद हुआ। परिचयात्मक सूची ग्रंथों के तीन भाग पहले मुद्रित हो चुके हैं। जिनमें लगभग दस सहस्र ग्रंथों का नाम और परिचय आ चुका है। हिन्दी जगत् में इन ग्रंथों का व्यापक स्वागत हुआ और विश्वविद्यालयों में शोध करने वाले विद्वानों को इन ग्रंथों के द्वारा बहुत सी अज्ञात नई सामग्री का परिचय प्राप्त हुआ।

उमसे प्रोत्साहित होकर इस शोध संस्थान ने अपने कार्य को और अधिक वेगयुक्त करने का निश्चय किया। उसका प्रत्यक्ष फल ग्रंथ सूची के इस चतुर्थ भाग के रूप में हमारे सामने है। इसमें एक साथ ही लगभग १० सहस्र नए हस्तलिखित ग्रंथों का परिचय दिया गया है। परिचय यद्यपि संक्षिप्त है किन्तु उसके लिखने में विवेक से काम लिया गया है जिनमें महत्वपूर्ण या नई सामग्री की ओर शोधकर्ता विद्वानों का ध्यान अवश्य आकृष्ट हो सकेगा। ग्रंथ का नाम, ग्रंथकर्ता का नाम, ग्रंथ की भाषा, लेखन की तिथि, ग्रंथ पूर्ण है या अपूर्ण इत्यादि तथ्यों का यथा संभव परिचय देते हुए महत्वपूर्ण सामग्री के उद्धरण या अन्वय भी दिये गये हैं। प्रस्तुत सूची पत्र में तीन सौ से ऊपर गुटकों का परिचय भी सम्मिलित है। इन गुटकों में विविध प्रकार की साहित्यिक और जीवनोपयोगी सामग्री का संग्रह किया जाता था। शोधकर्ता विद्वान यथावकाश जब इन गुटकों की व्योरेचार परीक्षा करेंगे तो उनमें से साहित्य की बहुत सी नई सामग्री प्राप्त होने की आशा है। ग्रंथ संख्या ५५०६ गुटका संख्या १२५ में भारतवर्ष के भौगोलिक विस्तार का परिचय देते हुए १२४ देशों के नामों की सूची अत्यन्त उपयोगी है। पृथ्वीचंद्र चरित्र आदि बर्णक ग्रंथों में इस प्रकार की और भी भौगोलिक सूचियाँ मिलती हैं। उनके साथ इस सूची



का तुलनात्मक अध्ययन उपयोगी होगा। किमी समय इस सूची में ६८ देशों की संख्या रूढ़ हो गई थी। ज्ञात होता है कालान्तर में यह संख्या १२४ तक पहुँच गई। गुटका संख्या २२ (ग्रंथ संख्या ४४०२) में नगरों की बसापत का संवत्वार व्यौरा भी उल्लेखनीय है। जैसे संवत् १६१२ अक्रबर पातसाह आगरो बसायो : संवत् १७१४ औरंगसाह पातसाह औरंगवादा बनायो : संवत् १२४४ विमल मंत्री स्वर हुवो विमल बसाई।

विकास की उन पिछली शक्तियों में हिन्दी साहित्य के कितने विविध साहित्य रूप थे यह भी अनुसंधान के लिए महत्वपूर्ण विषय है। इस सूची को देखते हुये उनमें से अनेक नाम सामने आते हैं। जैसे स्तोत्र, पाठ, संग्रह, कथा, रामो, रास, पूजा, मंगल, जयमाल, प्ररनोत्तरी, मंत्र, अष्टक, सार, समुच्चय, वर्णन, सुभाषित, चौपई, शुभमालिका, निराणी, जकडी, व्याहलो, बधावा, विनती, पत्री, आरती, बोल, चरचा, विचार, बात, गीत, लीला, चरित्र, छंद, छापय, भावना, विनोद, कल्प, नाटक, प्रशस्ति, धमाल, चौढालिया, चौमासिया, वारासा, वटोई, बेलि, हिंडोलणा, चूनडी, सग्भाय, वाराखड़ी, भक्ति, वन्दना, पच्चीसी, बत्तीसी, पचासा, बावनी, सतसई, नामायिक, महम्मनाम, नामावली, गुरुवावली, स्तवन, संबोधन, मोडलो आदि। इन विविध साहित्य रूपों में से किसका कत्र आरम्भ हुआ और किस प्रकार विकास और विस्तार हुआ, यह शोध के लिये रोचक विषय है। उसकी बहुमूय सामग्री इन भंडारों में सुरक्षित है।

राजस्थान में कुल शास्त्र भंडार लगभग दो सौ हैं और उनमें संचित ग्रंथों की संख्या लगभग दो लाख के आँकी जाती है। हर्ष की बात है कि शोध संस्थान के कार्यकर्ता इन भारी दायित्व के प्रति-जागरूक हैं। पर स्वभावतः यह कार्य दीर्घकालीन साहित्यिक साधना और बहुव्यय की अपेक्षा रखना है। जिस प्रकार अपने देश में पूना का भंडारकर इन्स्टीट्यूट, तंजौर की सरस्वती महल लाइब्रेरी, मद्रास विश्वविद्यालय की ओरियन्टल मेनस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी या कलकत्ते की बंगाल एशियाटिक सोसाइटी का ग्रंथ भंडार हस्तलिखित ग्रंथों को प्रकाश में लाने का कार्य कर रहे हैं और उनके कार्य के महत्व को मुक्त कंठ से सभी स्वीकार करते हैं, आशा है कि उसी प्रकार महवीर अतिशय क्षेत्र के जैन साहित्य शोध संस्थान के कार्य की ओर भी जनता और शासन दोनों का ध्यान शीघ्र आकृष्ट होगा और यह संस्था जिस सहायता की पात्र है, वह उसे सुलभ की जायगी। संस्था ने अब तक अपने साधनों से बड़ा कार्य किया है, किन्तु जो कार्य शेष हैं वह कहीं अधिक बड़ा है और इसमें संदेह नहीं कि अवश्य करने योग्य है। ११ वीं शती से १६ वीं शती के मध्य तक जो साहित्य रचना होती रही उसकी संचित तिथि का कुंवर जैसा समृद्ध कोष ही हमारे सामने आ गया है। आज से केवल १५ वर्ष पूर्व तक इन भंडारों के अस्तित्व का पता बहुत कम लोगों को था और उनके संबंध में छान बीन का कार्य तो कुछ हुआ ही नहीं था। इस सबको देखते हुये इस संस्था के महत्वपूर्ण कार्य का व्यापक स्वागत किया जाना चाहिये।

काशी विद्यालय

३-१०-१६६१

वामुदेव शरण अप्रवाल

## प्रस्तावना

राजस्थान शताब्दियों से साहित्यिक क्षेत्र रहा है। राजस्थान की रियासतें यद्यपि विभिन्न राजाओं के अधीन थी जो आपस में भी लड़ा करती थीं फिर भी इन राज्यों पर देहली का सीधा सम्पर्क नहीं रहने के कारण यहाँ अधिक राजनीतिक उथल पुथल नहीं हुई और सामान्यतः यहाँ शान्ति एवं व्यवस्था बनी रही। यहाँ राजा महाराजा भी अपनी प्रजा के सभी धर्मों का समादर करते रहे इसलिये उनके शासन में सभी धर्मों को स्वतन्त्रता प्राप्त थी।

जैन धर्मानुयायी सदैव शान्तिप्रिय रहे हैं। इनका राजस्थान के सभी राज्यों में तथा विशेषतः जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, उदयपुर, बूँदी, कोटा, अलवर, भरतपुर आदि राज्यों में पूर्ण प्रभुत्व रहा। शताब्दियों तक बहाने के शासन पर उनका अधिकार रहा और वे अपनी स्वामिभक्ति, शासनदक्षता एवं सेवा के कारण सदैव ही शासन के सर्वोच्च स्थानों पर कार्य करते रहे।

प्राचीन साहित्य की सुरक्षा एवं नवीन साहित्य के निर्माण के लिये भी राजस्थान का वातावरण जैनों के लिये बहुत ही उपयुक्त सिद्ध हुआ। यहाँ के शासकों ने एवं समाज के सभी वर्गों ने उस ओर बहुत ही रुचि दिखायी इसलिये सैकड़ों की संख्या में नये नये ग्रंथ तैयार किये गये तथा हजारों प्राचीन ग्रंथों की प्रतिलिपियां तैयार करवा कर उन्हें नष्ट होने से बचाया गया। आज भी हस्तलिखित ग्रंथों का जितना मुन्दर संग्रह नागौर, बीकानेर, जैसलमेर, अजमेर, आमेर, जयपुर, उदयपुर, ऋषभदेव के ग्रंथ भंडारों में मिलता है उतना मज्जपूर्ण संग्रह भारत के बहुत कम भंडारों में मिलेगा। ताड़पत्र एवं कागज दोनों पर लिखी हुई सबसे प्राचीन प्रतियाँ इन्हीं भंडारों में उपलब्ध होती हैं। यही नहीं अपभ्रंश, हिन्दी तथा राजस्थानी भाषा का अधिकांश साहित्य इन्हीं भंडारों में संग्रहीत किया हुआ है। अपभ्रंश साहित्य के संग्रह की दृष्टि में नागौर एवं जयपुर के भंडार उल्लेखनीय हैं।

अजमेर, नागौर, आमेर, उदयपुर, झुंगपुर एवं ऋषभदेव के भंडार भट्टारकों की साहित्यिक गतिविधियों के केन्द्र रहे हैं। ये भट्टारक केवल धार्मिक नेता ही नहीं थे किन्तु इनकी साहित्य रचना एवं उनकी सुरक्षा में भी पूरा हाथ था। ये स्थान स्थान पर भ्रमण करते थे और वहाँ से ग्रंथों को बटोर कर इनको अपने मुख्य मुख्य स्थानों पर संग्रह किया करते थे।

शास्त्र भंडार सभी आकार के हैं कोई छोटा है तो कोई बड़ा। किसी में केवल स्वाध्याय में काम आने वाले ग्रंथ ही संग्रहीत किये हुये होते हैं तो किसी किसी में सब तरह का साहित्य मिलता है। साधारणतः हम इन ग्रंथ भंडारों को ४ श्रेणियों में बांट सकते हैं।

१. पांच हजार ग्रंथों के संग्रह वाले शास्त्र भंडार
२. पांच हजार से कम एवं एक हजार से अधिक ग्रंथ वाले शास्त्र भंडार

३. एक हजार से कम एवं पांचसौ से अधिक ग्रंथ वाले शास्त्र भंडार
४. पांचसौ ग्रंथों से कम वाले शास्त्र भंडार

इन शास्त्र भंडारों में केवल धार्मिक साहित्य ही उपलब्ध नहीं होता किन्तु काव्य, पुराण, ज्योतिष, आयुर्वेद, गणित आदि विषयों पर भी ग्रंथ मिलते हैं। प्रत्येक मानव की रुचि के विषय, कथा कहानी एवं नाटक भी इनमें अच्छी संख्या में उपलब्ध होते हैं। यही नहीं, सामाजिक राजनीतिक एवं अर्थशास्त्र पर भी ग्रंथों का संग्रह मिलता है। कुछ भंडारों में जैनतर विद्वानों द्वारा लिखे हुये अलभ्य ग्रंथ भी संग्रहीत किये हुये मिलते हैं। वे शास्त्र भंडार खोज करने वाले विद्यार्थियों के लिये शोध संस्थान हैं लेकिन भंडारों में साहित्य की इतनी अमूल्य सम्पत्ति होते हुये भी कुछ वर्षों पूर्व तक ये विद्वानों के पहुँच के बाहर रहे। अब कुछ समय बदला है और भंडारों के व्यवस्थापक ग्रंथों के दिखलाने में उनकी आनाकानी नहीं करते हैं। यह परिवर्तन वास्तव में खोज में लीन विद्वानों के लिये शुभ है। आज के २० वर्ष पूर्व तक राजस्थान के ६० प्रतिशत भंडारों को न तो किसी जैन विद्वान ने देखा और न किसी जैनतर विद्वान ने इन भंडारों के महत्व को जानने का प्रयास ही किया। अब गत १०, १५ वर्षों से इधर कुछ विद्वानों का ध्यान आकृष्ट हुआ है और सर्ष प्रथम हमने राजस्थान के ७५ के करीब भंडारों को देखा है और शेष भंडारों को देखने की योजना बनाई जा चुकी है।

ये ग्रंथ भंडार प्राचीन युग में पुस्तकालयों का काम भी देते थे। इनमें बैठ कर व्याध्याय प्रेमी शास्त्रों का अध्ययन किया करते थे। उस समय इन ग्रंथों की मूर्चियाँ भी उपलब्ध हुआ करती थी तथा ये ग्रंथ लकड़ी के पुट्टों के बीच में रखकर सूत अथवा सिल्क के फीतों से बांधे जाते थे। फिर उन्हें कपड़े के वेष्टनों में बांध दिया जाता था। इस प्रकार ग्रंथों के वैज्ञानिक रीति से रखे जाने के कारण इन भंडारों में ११ वीं शताब्दी तक के लिखे हुये ग्रंथ पाये जाते हैं।

जैसा कि पहिले कहा जा चुका है कि वे ग्रंथ भंडार नगर कच्चे एवं गांवों तक में पाये जाते हैं इसलिये राजस्थान में उनकी वाम्नाविक संख्या कितनी है इसका पता लगाना कठिन है। फिर भी यहाँ अनुमानतः छोटे बड़े २०० भंडार होंगे जिनमें १११, २ लाख से अधिक हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है।

जयपुर प्रारम्भ से ही जैन संस्कृत एवं साहित्य का केन्द्र रहा है। यहाँ १५० से भी अधिक जिन मंदिर एवं चैत्यालय हैं। इस नगर की स्थापना संवत् १७८४ में महाराजा स्वर्दाई जयसिंहजी द्वारा की गई थी तथा उसी समय आमेर के वजाय जयपुर को राजधानी बनाया गया था। महाराजा ने इसे साहित्य एवं कला का भी केन्द्र बनाया तथा एक राज्यकीय पोथीखाने की स्थापना की जिसमें भारत के विभिन्न स्थानों से लाये गये नैकड़ों महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रंथ संग्रहीत किये हुये हैं। यहाँ के महाराजा प्रतापसिंहजी भी विद्वान थे। इन्होंने कितने ही ग्रंथ लिखे थे। इनका लिखा हुआ एक ग्रंथ संगीतसार जयपुर के बड़े मन्दिर के शास्त्र भंडार में संग्रहीत है।

१८ वीं एवं १९ वीं शताब्दी में जयपुर में अनेक उच्च कोटि के विद्वान् हुये जिन्होंने साहित्य की अपार सेवा की। इनमें दौलतराम कासलीवाल ( १८ वीं शताब्दी ) टोडरमल ( १८ वीं शताब्दी ) गुमानीराम ( १८, १९ वीं शताब्दी ) टेकचन्द ( १८ वीं शताब्दी ) दीपचन्द कामलीवाल ( १८ वीं शताब्दी ) जयचन्द्र छावड़ा ( १९ वीं शताब्दी ) केशरीमिह ( १९ वीं शताब्दी ) नेमिचन्द पाटनी ( १९ वीं शताब्दी ) नन्दलाल छावड़ा ( १९ वीं शताब्दी ) स्वरूपचन्द विलाला ( १९ वीं शताब्दी ) सदासुख कामलीवाल ( १९ वीं शताब्दी ) मन्नालाल खिन्दूका ( १९ वीं शताब्दी ) पारसदास निगोत्या ( १९ वीं शताब्दी ) जैतराम ( १९ वीं शताब्दी ) पन्नालाल चौधरी ( १९ वीं शताब्दी ) दुलीचन्द ( १९ वीं शताब्दी ) आदि विद्वानों के नाम उल्लेखनीय हैं। इनमें अधिकांश हिन्दी के विद्वान् थे। इन्होंने हिन्दी के प्रचार के लिये सैकड़ों प्राकृत एवं संस्कृत ग्रंथों पर भाषा टीका लिखी थी। इन विद्वानों ने जयपुर में ग्रंथ भण्डारों की स्थापना की तथा उनमें प्राचीन ग्रंथों की लिपियां करके विराजमान की। इन विद्वानों के अतिरिक्त यहां सैकड़ों लिपिकार हुये जिन्होंने श्रावकों के अनुरोध पर सैकड़ों ग्रंथों की लिपियां की तथा नगर के विभिन्न भण्डारों में रखी गई।

ग्रंथ सूची के इस भाग में जयपुर के १२ शास्त्र भंडारों के ग्रंथों का विवरण दिया गया है ये सभी शास्त्र भंडार यहां के प्रमुख शास्त्र भंडार हैं और इनमें दस हजार से भी अधिक ग्रंथों का संग्रह है। महत्वपूर्ण ग्रंथों के संग्रह की दृष्टि से अ, ज तथा ग भंडार प्रमुख हैं। ग्रंथ सूची में आये हुये इन भंडारों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है।

### १. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर पाटोदी ( अ भंडार )

यह भंडार दि० जैन पाटोदी के मन्दिर में स्थित है जो जयपुर की चौकड़ी मोदीखाना में है। यह मन्दिर जयपुर का प्रसिद्ध जैन पंचायती मन्दिर है। इसका प्रारम्भ में आदिनाथ चैत्यालय' भी नाम था। लेकिन बाद में यह पाटोदी का मन्दिर के नाम से ही कहलाया जाने लगा। इस मन्दिर का निर्माण जोधराज पाटोदी द्वारा कराया गया था। लेकिन मन्दिर के निर्माण की निश्चित तिथि का कहीं उल्लेख नहीं मिलता। फिर भी यह अवश्य कहा जा सकता है कि इसका निर्माण जयपुर नगर की स्थापना के साथ साथ हुआ था। मन्दिर निर्माण के पश्चात् यहां शास्त्र भंडार की स्थापना हुई। इसलिये यह शास्त्र भंडार २०० वर्ष से भी अधिक पुराना है।

मन्दिर प्रारम्भ से ही भट्टारकों का केन्द्र बना रहा तथा आमेर के भट्टारक भी यहीं आकर रहने लगे। भट्टारक क्षेमेन्द्रकीर्ति, सुरेन्द्रकीर्ति, सुखेन्द्रकीर्ति एवं नरेन्द्रकीर्ति का क्रमशः संबत् १८१५,

१८२२, १८६३, तथा १८७६ में यहीं पट्टाभिषेक हुआ था। इस प्रकार इनका इस मन्दिर से करीब १०० वर्ष तक सीधा सम्पर्क रहा।

प्रारम्भ में यहां का शास्त्र भंडार भट्टारकों की देख रेख में रहा इसलिये शास्त्रों के संग्रह में दिन प्रतिदिन वृद्धि होती रही। यहां शास्त्रों की लिखने लिखवाने की भी अच्छी व्यवस्था थी इसलिये श्रावकों के अनुरोध पर यहीं ग्रंथों की प्रतिलिपियां भी होती रहती थी। भट्टारकों का जब प्रभाव क्षीण होने लगा तथा जब वे साहित्य की ओर उपेक्षा दिखलाने लगे तो यहां के भंडार की व्यवस्था श्रावकों ने संभाल ली। लेकिन शास्त्र भंडार में संग्रहीत ग्रंथों को देखने के परचात यह पता चलता है कि श्रावकों ने शास्त्र भंडार के ग्रंथों की संख्या वृद्धि में विशेष अभिरुचि नहीं दिखलाई और उन्होंने भंडार को उसी अवस्था में सुरक्षित रखा।

### हस्तलिखित ग्रंथों की संख्या

भंडार में शास्त्रों की कुल संख्या २२५७ तथा गुटकों की संख्या ३०८ है। लेकिन एक एक गुटके में बहुत से ग्रंथों का संग्रह होता है इसलिये गुटकों में १८०० से भी अधिक ग्रंथों का संग्रह है। इस प्रकार इस भंडार में चार हजार ग्रंथों का संग्रह है। भक्तारम स्तोत्र एवं तत्त्वार्थसूत्र की एक एक ताडपत्रीय प्रति को छोड़ कर शेष सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुये हैं। इसी भंडार में कपडे पर लिखे हुये कुछ जम्बूद्वीप एवं अट्टाईद्वीप के चित्र एवं यन्त्र, मंत्र आदि का उल्लेखनीय संग्रह है।

भंडार में महाकवि पुष्पदन्त कृत जमहर चरित्र ( यशोधर चरित ) की प्रति सबसे प्राचीन है जो संवत् १४०७ में चन्द्रपुर दुर्ग में लिखी गई थी। इसके अनतिरिक्त यहां १५ वीं, १६ वीं, १७ वीं एवं १८ वीं शताब्दी में लिखे हुये ग्रंथों की संख्या अधिक है। प्राचीन प्रतियों में गोम्मटसार जीवकांड, तन्त्राय सूत्र ( सं० १४५८ ) द्रव्यसंग्रह वृत्ति ( ब्रह्मदेव-सं० १६३५ ), उपासकाचार दोहा ( सं० १५५५ ), धर्म-संग्रह श्रावकाचार ( संवत् १५४२ ) श्रावकाचार ( गुणभूषणाचार्य संवत् १५६२ ), समयसार ( १५६४ ), विद्यानन्द कृत अष्टसहस्री ( १७६१ ) उत्तरपुराण टिप्पण प्रभाचन्द्र ( सं० १५७५ ) शान्तिनाथ पुराण ( अशगकवि सं. १५५२ ) ऐमिणाह चरित्र ( लक्ष्मण देव सं. १६३६ ) नागकुमार चरित्र ( मल्लिषेण कवि सं. १५६४ ) वरांग चरित्र ( बद्धमान देव सं. १५६४ ) नवकार श्रावकाचार ( सं० १६१२ ) आदि सैकड़ों ग्रंथों की उल्लेखनीय प्रतियां हैं। ये प्रतियां सम्पादन कार्य में बहुत लाभप्रद सिद्ध हो सकती हैं।

### विभिन्न विषयों से सम्बन्धित ग्रंथ

शास्त्र भंडार में प्रायः सभी विषयों के ग्रंथों का संग्रह है। फिर भी पुराण, चरित्र, काव्य, कथा, व्याकरण, आयुर्वेद के ग्रंथों का अच्छा संग्रह है। पूजा एवं स्तोत्र के ग्रंथों की संख्या भी पर्याप्त

जयपुर के प्रसिद्ध माहिन्य सेवी



वाउत करि वस्येन अनेपमतिनां हि वस्येनै जीहं प्रथम  
 परेस जाभाके मां ही बोचें वरुत हे लोक्या महसबे नोही  
 अरु गिरथकी वसि न आवें नोही अनेपमतिनां  
 अवसिने वरुत नोही जाभा वाच्ये हे लोक्या वरुत नोही  
 चतुरस्रमसो नोही दोला विरथा वीस वरुत नोही  
 रजा तिहम अनेपमती सा मवा देहस मनेपमतिनां  
 निघरे लोकां अनेपमती लोक्या वरुत नोही  
 तिने अनेपमती कही कुनि दोला के मनेपमती  
 सिसरुत नोही जाभा वी नोही वरुत नोही अनेपमती  
 अनेपमती वरुत नोही अनेपमती वरुत नोही

वाहपदा सुकल न सुभभासा न नोही वरुत नोही  
 सुभपराण वी अनेपमती वरुत नोही  
 नूतो नोही वरुत नोही अनेपमती वरुत नोही  
 दोन वरुत नोही अनेपमती वरुत नोही  
 वरुत नोही अनेपमती वरुत नोही



पं० दौलतरामजी कामलीवाल कृत जीवन्धर चरित्र की  
 मूल पाण्डुलिपि के दो पत्र

है। गुटकों में स्तोत्रों एवं कथाओं का अच्छा संग्रह है। आयुर्वेद के सैकड़ों नुसखे इन्हीं गुटकों में लिखे हुये हैं जिनका आयुर्वेदिक विद्वानों द्वारा अध्ययन किया जाना आवश्यक है। इसी तरह विभिन्न जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी पदों का भी इन गुटकों में एवं स्वतन्त्र रूप से बहुत अच्छा संग्रह मिलता है। हिन्दी के प्रायः सभी जैन कवियों ने हिन्दी में पद लिखे हैं जिनका अभी तक हमें कोई परिचय नहीं मिलता है। इसलिये इस दृष्टि से भी गुटकों का संग्रह महत्वपूर्ण है। जैन विद्वानों के पद आध्यात्मिक एवं स्तुति परक दोनों ही हैं और उनकी तुलना हिन्दी के अच्छे से अच्छे कवि के पदों से की जा सकती है। जैन विद्वानों के अतिरिक्त कबीर, सूरदास, मल्लकराम, आदि कवियों के पदों का संग्रह भी इस भंडार में मिलता है।

### अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथ

शास्त्र भंडार में संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा में लिखे हुये सैकड़ों अज्ञात ग्रंथ प्राप्त हुये हैं जिनमें से कुछ ग्रंथों का संक्षिप्त परिचय आगे दिया गया है। संस्कृत भाषा के ग्रंथों में व्रतकथा कोष (सकलकीर्ति एवं देवेन्द्रकीर्ति) आशाधर कृत भूपाल चतुर्विंशति स्तोत्र की संस्कृत टीका एवं रत्नत्रय विधि भट्टारक सकलकीर्ति का परमात्मराज स्तोत्र, भट्टारक प्रभाचंद्र का मुनिमुत्रन छंद, आशाधर के शिष्य विनयचंद्र की भूपालचतुर्विंशति स्तोत्र की टीका के नाम उल्लेखनीय हैं। अपभ्रंश भाषा के ग्रंथों में लक्ष्मण देव कृत गोमिणाह चरित, नरसेन की जिनरात्रिविधान कथा, मुनिगुणभद्र का रोहिणी विधान एवं दशलक्षण कथा, विमल सेन की सुगंधदशमीकथा अज्ञात रचनाएँ हैं। हिन्दी भाषा की रचनाओं में रत्न कविकृत जिनदत्त चौपई (सं. १३५४) मुनिसकलकीर्ति की कर्मचूरिवेलि (१५ वीं शताब्दी) ब्रह्म गुलाल का समोशरणवर्णन, (१७ वीं शताब्दी) विश्वभूषण कृत पार्श्वनाथ चरित्र, कृपाराम का ज्योतिष मार, युद्धीराज कृत कृष्णरुक्मिणीवेलि की हिन्दी गद्य टीका, वृचराज का भुवनकीर्ति गीत, (१७ वीं शताब्दी) विहारी मतसई पर हरिचरणदास की हिन्दी गद्य टीका, तथा उनका ही कविवल्लभ ग्रंथ, पद्मभगत का कृष्णरुक्मिणीमंगल, हीरकवि का सागरदन चरित (१७ वीं शताब्दी) कल्याणकीर्ति का चारुदत्त चरित, हरिवंश पुराण की हिन्दी गद्य टीका आदि ऐसी रचनाएँ हैं जिनके सम्बन्ध में हम पहिले अन्धकार में थे। जिनदत्त चौपई १३ वीं शताब्दी की हिन्दी पद्य रचना है और अब तक उपलब्ध सभी रचनाओं से प्राचीन है। इसी प्रकार अन्य सभी रचनाएँ महत्वपूर्ण हैं। ग्रंथ भंडार की दशा संतोषप्रद है। अधिकांश ग्रंथ वेष्टनों में रखे हुये हैं।

### २. बाबा दुलीचन्द का शास्त्र भंडार (क भंडार)

बाबा दुलीचन्द का शास्त्र भंडार दि० जैन बड़ा तेरहपंथी मन्दिर में स्थित है। इस मन्दिर में दो शास्त्र भंडार हैं जिनमें एक शास्त्र भंडार की ग्रंथ सूची एवं उसका परिचय ग्रंथसूची द्वितीय भाग में



दे दिया गया है। दूसरा शास्त्र भंडार इसी मन्दिर में बाबा दुलीचन्द द्वारा स्थापित किया गया था इस लिये इस भंडार को उन्हीं के नाम से पुकारा जाता है। दुलीचन्दजी जयपुर के मूल निवासी नहीं थे किन्तु वे महाराष्ट्र के पूना जिले के फल्टन नामक स्थान के रहने वाले थे। वे जयपुर हस्तलिखित शास्त्रों के साथ यात्रा करते हुये आये और उन्होंने शास्त्रों की सुरक्षा की दृष्टि से जयपुर को उचित स्थान जानकर यहीं पर शास्त्र संग्रहालय स्थापित करने का निश्चय कर लिया।

इस शास्त्र भंडार में ८५० हस्तलिखित ग्रंथ हैं जो सभी दुलीचन्दजी द्वारा स्थान स्थान की यात्रा करने के परचातु संग्रहीत किये गये थे। इनमें से कुछ ग्रंथ स्वयं बाबाजी द्वारा लिखे हुये हैं तथा कुछ श्रावकों द्वारा उन्हें प्रदान किये हुये हैं। वे एक जैन साधु के समान जीवन यापन करते थे। ग्रंथों की सुरक्षा, लेखन आदि ही उनके जीवन का एक मात्र उद्देश्य था। उन्होंने सारे भारत की तीन बार यात्रा की थी जिसका विस्तृत बर्णन जैन यात्रा दर्पण में लिखा है। वे संस्कृत एवं हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा उन्होंने १५ से भी अधिक ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद किया था जो सभी इस भंडार में संग्रहीत हैं।

यह शास्त्र भंडार पूर्णतः व्यवस्थित है तथा सभी ग्रंथ अलग अलग वेष्टनों में रखे हुये हैं। एक एक ग्रंथ तीन तीन एवं कोई कोई तो चार चार वेष्टनों में बंधा हुआ है। शास्त्रों की ऐसी सुरक्षा जयपुर के किसी भंडार में नहीं मिलेगी। शास्त्र भंडार में मुख्यतः संस्कृत एवं हिन्दी के ग्रंथ हैं। हिन्दी के ग्रंथ अधिकांशतः संस्कृत ग्रंथों की भाषा टीकायें हैं। वैसे तो प्रायः सभी विषयों पर यहां ग्रंथों की प्रतियां मिलती हैं लेकिन मुख्यतः पुराण, कथा, चरित, धर्म एवं सिद्धान्त विषय से संबंधित ग्रंथों की का यहां अधिक संग्रह है।

भंडार में आप्तमीमांसाहंकारिता ( आ० विश्वानन्दि ) की मुन्दर प्रति है। क्रियाकलाप टीका की संवत् १५३४ की लिखी हुई प्रति इस भंडार की सबसे प्राचीन प्रति है जो मांडवगढ़ में मुल्तान गया-सुदीन के राज्य में लिखी गई थी। तन्वार्थमूत्र की रवर्णमयी प्रति दर्शनीय है। इसी तरह यहां गोम्मतसार, त्रिलोकसार आदि कितने ही ग्रंथों की मुन्दर मुन्दर प्रतियां हैं। ऐसी अच्छी प्रतियां कदाचित् ही दूसरे भंडारों में देखने को मिलती हैं। त्रिलोकसार की सर्वात्र प्रति है तथा इतनी धारीक एवं मुन्दर लिखी हुई है कि वह देखने ही बनती है। पन्नालाल चौधरी के द्वारा लिखी हुई डाल्दराम कृत द्वादशांग पूजा की प्रति भी ( सं० १८७६ ) दर्शनीय ग्रंथों में से है।

१६ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध हिन्दी विद्वान् पं० पन्नालालजी मंडी का अधिकांश साहित्य यहां संग्रहीत है। इसी तरह भंडार के संस्थापक दुलीचन्द की भी यहां सभी रचनायें मिलती हैं। उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों में अल्हू कवि का प्राकृतशब्दकोष, विनयचन्द की द्विसंधान काव्य टीका, वादिचन्द्र सूरि का पवनदूत काव्य, ज्ञानार्णव पर नयविलास की संस्कृत टीका, गोम्मतसार पर सकलभूषण एवं धर्मचन्द की संस्कृत टीकायें हैं। हिन्दी रचनाओं में देवीसिंह छावडा कृत

उपदेशरत्नमाला भाषा (सं० १७६६) हरिक्रिशन का भद्रबाहु चरित (सं० १७८७) द्रुतपति जैसवाल की मन-  
मोदन पंचविंशति भाषा (सं० १६१६) के नाम उल्लेखनीय हैं। इस भंडार में हिन्दी पदोंका भी अच्छा  
संग्रह है। इन कवियों में माणकचन्द, हीराचंद, दौलतराम, भागचन्द, मंगलचन्द, एवं जयचन्द छावडा  
के हिन्दी पद उल्लेखनीय हैं।

### ३. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर जोबनेर ( ख भंडार )

यह शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर जोबनेर में स्थापित है जो खेजडे का रास्ता, चांदपोल बाजार  
में स्थित है। यह मन्दिर कब बना था तथा किसने बनवाया था इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता है लेकिन  
एक ग्रंथ प्रशस्त के अनुसार मन्दिर की मूल नायक प्रतिमा पं० पन्नालाल जी के समय में स्थापित हुई  
थी। पंडितजी जोबनेर के रहने वाले थे तथा इनके लिखे हुये जलहोमविधान, धर्मचक्र पूजा आदि  
ग्रंथ भी इस भंडार में मिलते हैं। इनके द्वारा लिखी हुई सबसे प्राचीन प्रति संवत् १६२२ की है।

शास्त्र भंडार में ग्रंथ संग्रह करने में पहिले पं० पन्नालालजी का तथा फिर उन्हीं के शिष्य  
पं० बहतावरलाल जी का विशेष सहयोग रहा था। दोनों ही विद्वान् ज्योतिष, आयुर्वेद, मंत्रशास्त्र, पूजा  
साहित्य के संग्रह में विशेष अभिरुचि रखते थे इसलिये यहां इन विषयों के ग्रंथों का अच्छा संकलन है।  
भंडार में ३४० ग्रंथ हैं जिनमें २३ गुटके भी हैं। हिन्दी भाषा के ग्रंथों से भी भंडार में संस्कृत के ग्रंथों  
की संख्या अधिक है जिससे पता चलता है कि ग्रंथ संग्रह करने वाले विद्वानों का संस्कृत से अधिक  
प्रेम था।

भंडार में १७ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी के ग्रंथों की अधिक प्रतियां हैं। सबसे  
प्राचीन प्रति पद्मानन्दपंचविंशति की है जिसकी संवत् १५७८ में प्रतिलिपि की गई थी। भंडार के उल्लेखनीय  
ग्रंथों में पं० आशाधर की आराधनासार टीका एवं नागौर के भद्ररक च्चेन्द्रकीर्ति कृत गजपंधामंडलपूजन  
उल्लेखनीय ग्रंथ हैं। आशाधर ने आराधनासार की यह धृति अपने शिष्य मुनि विनयचंद के लिये की  
थी। प्रेमी जी ने इस टीका को जैन साहित्य एवं इतिहास में अप्राप्य लिखा है। रघुवंश काव्य की भंडार  
में सं० १६८० की अच्छी प्रति है।

हिन्दी ग्रंथों में शांतिकुशल का अंजनाराम एवं पृथ्वीराज का रुक्मिणी विवाहलो उल्लेखनीय ग्रंथ  
हैं। यहां विहारी सतसई की एक ऐसी प्रति है जिसके सभी पद्य वर्ण क्रमानुसार लिखे हुये हैं। मानसिंह  
का मानविनोद भी आयुर्वेद विषय का अच्छा ग्रंथ है।

### ४. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर चौधरियों का जयपुर ( ग भंडार )

यह मन्दिर बौली के कुआ के पास चौकड़ी मोदीखाना में स्थित है पहिले यह 'नेमिनाथ के मंदिर'  
के नाम से भी प्रसिद्ध था लेकिन बर्तमान में यह चौधरियों के चैत्यालय के नाम से प्रसिद्ध है। यहां द्योटा

समकालीन विद्वानों में से नवलराम, गुमानीराम, जयचन्द छाबड़ा, डालराम। मन्नालाल खिन्दूका, स्वरूपचन्द बिलासाला के नाम उल्लेखनीय हैं और संभवतः इन्हीं विद्वानों के सहयोग से वे ग्रंथों का इतना संग्रह कर सके होंगे। प्रतिभासांतचतुर्दशीव्रतोद्यापन सं. १८७७, गोष्पटसार सं. १८८६, पंचतन्त्र सं. १८८७, सत्र चूडामणि सं० १८९१ आदि ग्रंथों की प्रतिलिपियां करवा कर इन्होंने भंडार में विराजमान की थी।

भंडार में अधिकांश संग्रह १६ वीं २० वीं शताब्दी का है किन्तु कुछ ग्रंथ १६ वीं एवं १७ वीं शताब्दी के भी हैं। इनमें निम्न ग्रंथों के नाम उल्लेखनीय हैं।

|                    |                     |                 |         |
|--------------------|---------------------|-----------------|---------|
| पूर्णाचन्द्राचार्य | उपसर्गहरस्तोत्र     | ले. का सं० १४५३ | संस्कृत |
| पं० अन्नदेव        | लब्धिविधानकथा       | सं० १६०७        | "       |
| अमरकीर्ति          | पटकर्मोपदेशरत्नमाला | सं० १६२२        | अपभ्रंश |
| पूज्यपाद           | सर्वार्थसिद्धि      | सं० १६२५        | संस्कृत |
| पुष्पदन्त          | यशोधर चरित्र        | सं० १६३०        | अपभ्रंश |
| ब्रह्मनेमिदत्त     | नेमिनाथ पुराण       | सं० १६४६        | संस्कृत |
| जोधराज             | प्रवचनसार भाषा      | सं० १७३०        | हिन्दी  |

अज्ञात कृतियों में तेजपाल कविकृत संभवजिणपाद चरित्र (अपभ्रंश) तथा हरचंद्र रंगवाल कृत सुकुमाल चरित्र भाषा (२० का० १६१८) के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं।

## ८. दि० जैन मन्दिर गोधों का जयपुर (छ भंडार)

गोधों का मन्दिर धी वालों का रास्ता, नागोरियों का चौक जौहरी बाजार में स्थित है। इस मन्दिर का निर्माण १८ वीं शताब्दी के अन्त में हुआ था और मन्दिर निर्माण के पश्चात् ही यहां शास्त्रों का संग्रह किया जाना प्रारम्भ हो गया था। बहुत से ग्रंथ यहां सांगानेर के मन्दिरों में से भी लाये गये थे। वर्तमान में यहां एक सुव्यवस्थित शास्त्र भंडार है जिसमें ६१६ हस्तलिखित ग्रंथ एवं १०२ गुटके हैं। भंडार में पुराण, चरित्र, कथा एवं स्तोत्र साहित्य का अच्छा संग्रह है। अधिकांश ग्रंथ १७ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी तक के लिखे हुये हैं। शास्त्र भंडार में व्रतकथाकोश की संवत् १५८६ में लिखी हुई प्रति सबसे प्राचीन है। यहां हिन्दी रचनाओं का भी अच्छा संग्रह है। हिन्दी की निम्न रचनायें महत्वपूर्ण हैं जो अन्य भंडारों में सहज ही में नहीं मिलती हैं।

|                      |            |        |                |
|----------------------|------------|--------|----------------|
| चिन्तामणिजययाल       | ठक्कुर कवि | हिन्दी | १६ वीं शताब्दी |
| सीमन्धर स्तवन        | "          | "      | " "            |
| गीत एवं आदिनाथ स्तवन | पल्ल कवि   | "      | " "            |

|                    |                 |        |                |
|--------------------|-----------------|--------|----------------|
| नेमीश्वर चौनासा    | मुनि सिद्धनन्दि | हिन्दी | १७ वीं शताब्दी |
| चेतनगीत            | "               | "      | " "            |
| नेमीश्वर रास       | मुनि रतनकीर्ति  | "      | " "            |
| नेमीश्वर द्विडोलना | "               | "      | " "            |
| द्रव्यसंग्रह भाषा  | हेमराज          | "      | २० का० १७१६    |
| चतुर्दशीकथा        | डालूराज         | "      | १७६५           |

उक्त रचनाओं के अतिरिक्त जैन हिन्दी कवियों के पदों का भी अच्छा संग्रह है। इनमें वृच-राज, डीहल, कनककीर्ति, प्रभाचन्द्र, मुनि शुभचन्द्र, मनराम एवं अजयराज के पद विशेषतः उल्लेखनीय हैं। संवत् १६२६ में रचित दूंगरकवि की होलिका चौपई भी ऐसी रचना है जिसका परिचय प्रथम बार मिला है। संवत् १८२० में रचित हरचंद्र गंगवाल कृत पंचकल्याणक पाठ भी ऐसी ही सुन्दर रचना है।

संगृह्य ग्रंथों में उन्नास्वामि विरचित पंचपरमेष्ठी स्तोत्र महत्वपूर्ण है। सूची में उसका पाठ उद्धृत किया गया है। भंडार में संग्रहीत प्राचीन प्रतियों में विमलनाथ पुराण सं० १६६६, गुणभद्राचार्य कृत धन्यकुमार चरित सं० १६५२, विदग्धमुखमंडन सं० १६२३, सारस्वत दीपिका सं० १६५७, नाममाला (वर्नजय) सं० १६४३, धर्म परीक्षा (अमितगीत) सं० १६५३, समयसार नाटक (वनारसीदास) सं० १७०४ आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

### ६ शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर यशोदानन्दजी जयपुर ( ज भंडार )

यह मन्दिर जैन यति यशोदानन्दजी द्वारा सं० १८५८ में बनवाया गया था और निर्माण के कुछ समय पश्चात् हा यहाँ शास्त्र भंडार की स्थापना कर दी गई। यशोदानन्दजी स्वयं साहित्यिक व्यक्तित्व थे इसलिए उन्होंने थोड़े समय में ही अपने यहां शास्त्रों का अच्छा संकलन कर लिया। वर्तमान में शास्त्र भंडार में ३५३ ग्रंथ एवं १३ गुटके हैं। अधिकांश ग्रंथ १८ वीं शताब्दी एवं उसके बाद की शताब्दियों के लिखे हुये हैं। संग्रह सामान्य है। उल्लेखनीय ग्रंथों में चन्द्रप्रभकाव्य पंजिका सं० १४६४, पं० देवी चन्द्र कृत हितोपदेश की हिन्दी गद्य टीका, हैं। प्राचीन प्रतियों में आ० कुन्दकुन्द कृत समयसार सं० १६१४, आशाधर कृत सागरधर्मसूत्र सं० १६२८, केशवमिश्रकृत तर्कभाषा सं० १६६६ के नाम उल्लेखनीय हैं। यह मन्दिर चौड़ा रास्ते में स्थित है।

### १० शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर विजयराज पांड्या जयपुर ( भू भंडार )

विजयराज पांड्या ने यह मन्दिर ६६ बनवाया इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता लेकिन मन्दिर की दशा को देखते हुये यह जयपुर दसने के समय का ही बना हुआ जान पड़ता है। यह मन्दिर

पानों का दूरीवा चो० रामचन्द्रजी में स्थित है। यहां का शास्त्र भंडार भी कोई अच्छी दशा में नहीं है। बहुत से ग्रंथ जीर्ण हो चुके हैं तथा बहुत सों के पूरे पत्र भी नहीं हैं। वर्तमान में यहां २७५ ग्रंथ एवं ७६ गुटके हैं। शास्त्र भंडार को देखते हुये यहां गुटकों का अच्छा संग्रह है। इनमें विरवभूषण की नेमीरवर की लहरी, पुण्यरत्न की नेमिनाथ पूजा, श्याम कवि की तीन चौबीसी चौपाई ( र. का. १७५६ ) स्थोजी-राम सोगाखी की लखनचन्द्रिका भाषा के नाम उल्लेखनीय हैं। इन छोटी छोटी रचनाओं के अतिरिक्त रूपचन्द्र, दरिगह, मनराम, हर्षकीर्ति, कुमुदचन्द्र आदि कवियों के पद भी संग्रहीत हैं साह लोहट कृत पटलेश्यावेलि एवं जसुराम का राजनीतिशास्त्र भाषा भी हिन्दी की उल्लेखनीय रचनायें हैं।

### ११ शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर पार्वनाथ जयपुर ( ज भंडार )

दि० जैन मन्दिर पार्वनाथ जयपुर का प्रसिद्ध जैन मन्दिर है। यह खवासजी का रारता चो० रामचन्द्रजी में स्थित है। मन्दिर का निर्माण संवत् १८०५ में सोनी गोत्र वाले किमी श्रावक ने कराया था इसलिये यह सोनियों के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। यहां एक शास्त्र भंडार है जिसमें ५४० ग्रंथ एवं १८ गुटके हैं। इनमें सबसे अधिक संख्या संस्कृत भाषा के ग्रंथों की है। माणिक्य सूरि कृत नलोदय काव्य भंडार की सबसे प्राचीन प्रति है जो सं० १४४५ की लिखी हुई है। यथाऽ भंडार में ग्रंथों की संख्या अधिक नहीं है किन्तु अज्ञान एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों तथा प्राचीन प्रतियों का यहां अच्छा संग्रह है।

इन अज्ञान ग्रंथों में अपभ्रंश भाषा का विजयसिंह कृत अजितनाथ पुराण, कवि दामोदर कृत रोमिणाह चरिए, गुणनन्दि कृत वीरनन्दि के चन्द्रप्रभववाच्यकी दंजिका, (संस्कृत) महापंडित जगन्नाथ कृत नेमिनरेन्द्र स्तोत्र (संस्कृत) मुनि पद्मनन्दि कृत वर्द्धमान काव्य, शुभचन्द्र कृत तत्ववर्णन (संस्कृत) चन्द्रमुनि कृत पुराणसार (संस्कृत) इन्द्रजीत कृत मुनिसुव्रत पुराण (हि०) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

यहां ग्रंथों की प्राचीन प्रतियां भी पर्याप्त संख्या में संग्रहीत है। इनमें से कुछ प्रतियों के नाम निम्न प्रकार हैं।

| सूची की क्र. सं. | ग्रंथ नाम          | ग्रंथकार नाम  | ले. काल | भाषा    |
|------------------|--------------------|---------------|---------|---------|
| १५३५             | पटपाहुड़           | आ० कुन्दकुन्द | १५१६    | प्रा०   |
| २३५०             | वर्द्धमानकाव्य     | पद्मनन्दि     | १५१८    | संस्कृत |
| १८३६             | स्याह्वादमंजरी     | मल्लिपेण सूरि | १५२१    | "       |
| १८३६             | अजितनाथपुराण       | विजयसिंह      | १५८०    | अपभ्रंश |
| २०६८             | रोमिणाहचरिए        | दामोदर        | १५८२    | "       |
| २३२३             | यशोधरचरित्र टिप्पण | प्रभाचन्द्र   | १५८५    | संस्कृत |
| ११७६             | सागारधर्माश्रित    | आशाधर         | १५६५    | "       |

| सूची की क्र. सं. | ग्रंथ नाम             | ग्रंथकार नाम | ले. काल | भाषा    |
|------------------|-----------------------|--------------|---------|---------|
| २५४१             | कश्माकोश              | हरिवेणाचार्य | १५६७    | संस्कृत |
| ३८७६             | जिनशतकटीका            | नरसिंह भट्ट  | १५६४    | "       |
| २२५              | तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर | प्रभाचन्द्र  | १६३३    | "       |
| २००६             | सूत्रचूडामणि          | वादीभरसिंह   | १६०५    | "       |
| २११३             | धन्यकुमारचरित्र       | आ० गुणभद्र   | १६०३    | "       |
| २११५             | नागकुमार चरित्र       | धर्मधर       | १६१६    | "       |

इस भंडार में कपड़े पर संवत् १५१६ का लिखा हुआ प्रतिष्ठा पाठ है। जयपुर के भंडारों में उपलब्ध कपड़े पर लिखे हुये ग्रंथों में यह ग्रंथ सबसे प्राचीन है। यहां अशोभर चरित की एक सुन्दर एवं कला पूर्ण सचित्र प्रति है। इसके दो चित्र ग्रंथ सूची में देखे जा सकते हैं। चित्र कला पर मुगल कालीन प्रभाव है। यह प्रति करीब २०० वर्ष पुरानी है।

### १२ आमेर शास्त्र भंडार जयपुर ( ८ भंडार )

आमेर शास्त्र भंडार राजस्थान के प्राचीन ग्रंथ भंडारों में से है। इस भंडार की एक ग्रंथ सूची सन् १९४८ में क्षेत्र के शोध संस्थान की ओर से प्रकाशित की जा चुकी है। उस ग्रंथ सूची में १५०० ग्रंथों का विवरण दिया गया था। गत १३ वर्षों में भंडार में जिन ग्रंथों का और संग्रह हुआ है उनकी सूची इस भाग में दी गई है। इन ग्रंथों में मुख्यतः जयपुर के छावनों के मन्दिर के तथा बाबू ज्ञानचंदजी खिन्दूका द्वारा भेट किये हुये ग्रंथ हैं। इसके अतिरिक्त भंडार के कुछ ग्रंथ जो पहिले वाली ग्रंथ सूची में आने से रह गये थे उनका विवरण इस भाग में दे दिया गया है।

इन ग्रंथों में पुष्पदंत कृत उत्तरपुराण भी है जो संवत् १३६६ का लिखा हुआ है। यह प्रति इस सूची में आये हुये ग्रंथों में सबसे प्राचीन प्रति है। इसके अतिरिक्त १६ वीं १७ वीं एवं १८ वीं शताब्दी में लिखे हुये ग्रंथों का अच्छा संग्रह है। भंडार के इन ग्रंथों में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति विरचित छांदसीय कवित्त (हिन्दी), ब्र० जिनदास कृत चौरासी न्यातिमाला (हिन्दी), लाभवर्द्धन कृत पाण्डवचरित (संस्कृत), लावो कविकृत पार्वनाथ चौपाई (हिन्दी) आदि ग्रंथों के नाम उल्लेखनीय हैं। गुटकों में मनोहर मिश्र कृत मनोहरमंजरी, उद्यमानु कृत भोजरासो, अमदास के कवित्त, तिपरदास कृत रुक्मिणी कृष्णजी का रासो, जनमोहन कृत स्नेहलीला, श्याममिश्र कृत रागमाला, विनयकीर्ति कृत अष्टाहिका रासो तथा बंसीदास कृत रोहिणीविधिकथा उल्लेखनीय रचनायें हैं। इस प्रकार आमेर शास्त्र भंडार में प्राचीन ग्रंथों का अच्छा संकलन है।

## ग्रंथों का विषयानुसार वर्गीकरण

ग्रंथ सूची को अधिक उपयोगी बनाने के लिये ग्रंथों का विषयानुसार वर्गीकरण करके उन्हें २५ विषयों में विभाजित किया गया है। विविध विषयों के ग्रंथों के अध्ययन से पता चलता है कि जैन आचार्यों ने प्रायः सभी विषयों पर ग्रंथ लिखे हैं। साहित्य का संबन्धतः एक भी ऐसा विषय नहीं होगा जिस पर इन विद्वानों ने अपनी कलम नहीं चलाई हो। एक ओर जहाँ इन्होंने धार्मिक एवं आगम साहित्य लिख कर भंडारों को भरा है वहाँ दूसरी ओर काव्य, चरित्र, पुराण, कथा कोश आदि लिख कर अपनी विद्वान्ता की छाप लगाई है। श्रावकों एवं सामान्य जन के हित के लिये इन आचार्यों एवं विद्वानों ने सिद्धान्त एवं आचार शास्त्र के सूक्ष्म से सूक्ष्म विषय का विश्लेषण किया है। सिद्धान्त की इतनी गहन एवं सूक्ष्म चर्चा शायद ही अन्य धर्मों में मिल सके। पूजा साहित्य लिखने में भी ये किसी से पीछे नहीं रहे। इन्होंने प्रत्येक विषय की पूजा लिखकर श्रावकों को इनको जीवन में उतारने की प्रेरणा भी दी है। पूजाओं की जयमालाओं में कभी कभी इन विद्वानों ने जैन धर्म के सिद्धान्तों का बड़ी उत्तमता से वर्णन किया है। ग्रंथ सूची के इसी भाग में १५०० से अधिक पूजा ग्रंथों का उल्लेख हुआ है।

धार्मिक साहित्य के अतिरिक्त लौकिक साहित्य पर भी इन आचार्यों ने खूब लिखा है। तीर्थ-करों एवं शलाकाओं के महापुरुषों के पावन जीवन पर इनके द्वारा लिखे हुये बड़े बड़े पुराण एवं काव्य ग्रंथ मिलते हैं। ग्रंथ सूची में प्रायः सभी महत्वपूर्ण पुराण साहित्य के ग्रंथ आगये हैं। जैन सिद्धान्त एवं आचार शास्त्र के सिद्धान्तों को कथाओं के रूप में वर्णन करने में जैन आचार्यों ने अपने पाण्डित्य का अचछा प्रदर्शन किया है। इन भंडारों में इन विद्वानों द्वारा लिखा हुआ कथा साहित्य प्रचुर मात्रा में मिलता है। ये कथायें रोचक होने के साथ साथ शिक्षाप्रद भी हैं। इसी प्रकार व्याकरण, ज्योतिष एवं आयुर्वेद पर भी इन भंडारों में अचछा साहित्य संग्रहीत है। गुटकों में आयुर्वेद के नुसखों का अचछा संग्रह है। सैकड़ों ही प्रकार के नुसखे दिये हुये हैं जिन पर खोज होने की अत्यधिक आवश्यकता है। इस बार हमने फागु, रासो एवं बेल साहित्य के ग्रंथों का अनिरीक वर्णन दिया है। जैन आचार्यों ने हिन्दी में छोटे छोटे सैकड़ों रासो ग्रंथ लिखे हैं जो इन भंडारों संग्रहीत हैं। अकेले ब्रह्म जिनदाम के ४० से भी अधिक रासो ग्रंथ मिलते हैं। जैन भंडारों में १४ वीं शताब्दी के पूर्व से रासो ग्रंथ मिलने लगते हैं। इसके अतिरिक्त अध्ययन करने की दृष्टि से संग्रहीत किये हुये इन भंडारों में जैनतर विद्वानों के काव्य, नाटक, कथा, ज्योतिष, आयुर्वेद, कोप, नीतिशास्त्र, व्याकरण आदि विषयों के ग्रंथों का भी अचछा संकलन मिलता है। जैन विद्वानों ने कालिदास, माघ, भारवि आदि प्रसिद्ध कवियों के काव्यों का संकलन ही नहीं किया किन्तु उन पर विस्तृत टीकायें भी लिखी हैं। ग्रंथ सूची के इसी भाग में ऐसे कितने ही काव्यों का उल्लेख आया है। भंडारों में ऐतिहासिक रचनायें भी पर्याप्त संख्या में मिलती हैं। इनमें भट्टारक पट्टाबलियां, भट्टारकों के छन्द, गीत, चोमासा बर्णन, बंशोत्पत्ति बर्णन, देहली के बादशाहों एवं अन्य राज्यों के राजाओं के बर्णन एवं नगरों की बसापत का वर्णन मिलता है।

## विविध भाषाओं में रचित साहित्य

राजस्थान के शास्त्र भंडारों में उत्तरी भारत की प्रायः सभी भाषाओं के ग्रंथ मिलते हैं। इनमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी एवं गुजराती भाषा के ग्रंथ मिलते हैं। संस्कृत भाषा में जैन विद्वानों ने बृहद् साहित्य लिखा है। आ० समन्तभद्र, अकलंक, विद्यानन्दि, जिनसेन, गुणभद्र, वर्द्धमान भट्टारक, सोमदेव, वीरनन्दि, हेमचन्द्र, आराधर, सकलकीर्ति आदि सैकड़ों आचार्य एवं विद्वान् हुये हैं जिन्होंने संस्कृत भाषा में विविध विषयों पर सैकड़ों ग्रंथ लिखे हैं जो इन भंडारों में मिलते हैं। यही नहीं इन्होंने अजैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये काव्य एवं नाटकों की टीकायें भी लिखी हैं। संस्कृत भाषा में लिखे हुये यशस्तिलक चम्पू, वीरनन्दि का चन्द्रप्रभकाव्य, वर्द्धमानदेव का बरांगचरित्र आदि ऐसे काव्य हैं जिन्हें किसी भी महाकाव्य के समकक्ष विठाय जा सकता है। इसी तरह संस्कृत भाषा में लिखा हुआ जैनाचार्यों का दर्शन एवं न्याय साहित्य भी उच्च कोटि का है।

प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा के क्षेत्र में तो केवल जैनाचार्यों का ही अधिकांशतः योगदान है। इन भाषाओं के अधिकांश ग्रंथ जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये ही मिलते हैं। ग्रंथ सूची में अपभ्रंश में एवं प्राकृत भाषा में लिखे हुये पर्याप्त ग्रंथ आये हैं। महाकवि स्वयंभू, पुष्पदंत, अमरकीर्ति, नयनन्दि जैसे महाकवियों का अपभ्रंश भाषा में उच्च कोटि का साहित्य मिलता है। अब तक इस भाषा के १०० से भी अधिक ग्रंथ मिल चुके हैं और वे सभी जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हैं।

इसी तरह हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा के ग्रंथों के संबंध में भी हमारा यही मत है कि इन भाषाओं की जैन विद्वानों ने खूब सेवा की है। हिन्दी के प्रारंभिक युग में जब कि इस भाषा में साहित्य निर्माण करना विद्वत्ता से परे समझा जाता था, जैन विद्वानों ने हिन्दी में साहित्य निर्माण करना प्रारम्भ किया था। जयपुर के इन भंडारों में हमें १३ वीं शताब्दी तक की रचनाएँ मिल चुकी हैं। इनमें जिनदत्त चौपई सर्व प्रमुख है जो संवत् १३५४ (१२६७ ई.) में रची गयी थी। इसी प्रकार भ० सकलकीर्ति, ब्रह्म जिनदास, भट्टारक मुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, शुभचन्द्र, वीहल, बूचराज, ठक्कुरसी, पल्ह आदि विद्वानों का बहुतसा प्राचीन साहित्य इन भंडारों में प्राप्त हुआ है। जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी एवं राजस्थानी साहित्य के अतिरिक्त जैनैतर विद्वानों द्वारा लिखे हुये ग्रंथों का भी यहां अच्छा संकलन है। पृथ्वीराज कृत कृष्णरुक्मिणी वेल्ल, बिहारी सतसई, केशवदास की रसिकाप्रिया, सुर एवं कवीर आदि कवियों के हिन्दीपद, जयपुर के इन भंडारों में प्राप्त हुये हैं। जैन विद्वान कमि कमी एक ही रचना में एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग भी करते थे। धर्मचन्द्र प्रबन्ध इस दृष्टि से अच्छा उदाहरण कहा जा सकता है।



## स्वयं ग्रंथकारों द्वारा लिखे हुये ग्रंथों की मूल प्रतियाँ

जैन विद्वान् ग्रंथ रचना के अतिरिक्त स्वयं ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ भी किया करते थे। इन विद्वानों द्वारा लिखे गये ग्रंथों की पाण्डुलिपियाँ राष्ट्र की धरोहर एवं अमूल्य सम्पत्ति है। ऐसी पाण्डुलिपियों का प्राप्त होना सहज बात नहीं है लेकिन जंकपुर के इन भंडारों में हमें स्वयं विद्वानों द्वारा लिखी हुई निम्न पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हो चुकी हैं।

| सूची की क्र. सं. | ग्रंथकार                     | ग्रंथ नाम            | लिपि संवत्     |
|------------------|------------------------------|----------------------|----------------|
| ८४८              | कनककीर्ति के शिष्य सदाराम    | पुरुषार्थ भिद्धयुपाय | १७०७           |
| १०४२             | रत्नकरन्दश्रावकाचार भाषा     | सदासुख कासलीवाल      | १६२०           |
| ६७               | गोम्मटसार जीवकांड भाषा       | पं. टोडरमल           | १८ वीं शताब्दी |
| २६२५             | नाममाला                      | पं० भारामल्ल         | १६४३           |
| ३६५२             | पंचमंगलपाठ                   | सुशालचन्द काला       | १८४४           |
| ५४३३             | शीलरासा                      | जोधराज गोदीका        | १७५०           |
| ५३८२             | मिथ्यात्व खंडन               | बस्तराम साह          | १८३५           |
| ५७२८             | गुटका                        | टेकचंद               | —              |
| ५६५७             | परमात्म प्रकाश एवं तत्त्वसार | डाकूराम              | —              |
| ६०४४             | झीयालीस ठाणा                 | ब्रह्मरायमल्ल        | १६१३           |

## गुटकों का महत्व

शास्त्र भंडारों में हस्तलिखित ग्रंथों के अतिरिक्त गुटके भी संग्रह में होते हैं। साहित्यिक रचनाओं के संकलन की दृष्टि से ये गुटके बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इनमें विविध विषयों पर संकलन किये हुए कभी कभी ऐसे पाठ मिलते हैं जो अन्यत्र नहीं मिलते। ग्रंथ सूची में आये हुये बारह भंडारों में ८५० गुटके हैं। इनमें सबसे अधिक गुटके अ भंडार में हैं। अधिकांश गुटकों में पूजा मंत्रों एवं कथायें ही मिलती हैं लेकिन प्रत्येक भंडार में कुछ गुटके ऐसे भी मिल जाते हैं जिनमें प्राचीन एवं अलभ्य पाठों का संग्रह होता है। ऐसे गुटकों का अ, ज, त्र एवं ट भंडार में अच्छा संकलन है। १३ वीं शताब्दी की हिन्दी रचना जिनदरा चौपई अ भंडार के एक गुटके में ही प्राप्त हुई है। इसी तरह अपभ्रंश की कितनी ही कथायें, ब्रह्मजिनदास, शुभचन्द, डीहल, टककुरसी, पल्ह, मनराम आदि प्राचीन कवियों की रचनायें भी इन्हीं गुटकों में मिली हैं। हिन्दी पदों के संकलन के तो ये एकमात्र स्रोत है। अधिकांश हिन्दी विद्वानों का पद साहित्य इनमें संकलित किया हुआ होता है। एक एक गुटके में कभी कभी तो ३००, ४०० पद संग्रह किये हुये मिलते हैं। इन गुटकों में ही ऐतिहासिक नामग्री उपलब्ध होती है। पट्टावलिायाँ, छन्द, गीत, वंशावलि, बादशाहों के विवरण, नगरों की बसापत आदि सभी इनमें

ही मिलते हैं। प्रत्येक शास्त्र भंडार के व्यवस्थापकों का कर्तव्य है कि वे अपने यहाँ के गुटकों को सज्जद ही सन्हाल कर रखें जिससे वे नष्ट नहीं होने पावें क्योंकि हमने देखा है कि बहुत से भंडारों के गुटके बिना वेष्टनों में बंधे हुये ही रखे रहते हैं और इस तरह धीरे धीरे उन्हें नष्ट होने की मानों आह्ला दे दी जाती है।

### शास्त्र भंडारों की सुरक्षा के संबंध में :

राजस्थान के शास्त्र भंडार अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं इसलिये उनकी सुरक्षा के प्रश्न पर सबसे पहिले विचार किया जाना चाहिये। छोटे छोटे गांवों में जहाँ जैनों के एक-एक दो-दो घर रह गये हैं वहाँ उनकी सुरक्षा होना अत्यधिक कठिन है। इसके अतिरिक्त कस्बों की भी यही दशा है। वहाँ भी जैन समाज का शास्त्र भंडारों की ओर कोई ध्यान नहीं है। एक तो आजकल छपे हुये ग्रंथ मिलने के कारण हस्तलिखित ग्रंथों की कोई स्वाध्याय नहीं करते हैं, दूसरे वे लोग इनके महत्व को भी नहीं समझते हैं। इसलिये समाज को हस्तलिखित ग्रंथों की सुरक्षा के लिये ऐसा कोई उपाय ढूँढना चाहिये जिससे उनका उपयोग भी होता रहे तथा वे सुरक्षित भी रह सकें। यह तो निश्चित ही है कि छपे हुए ग्रंथ मिलने पर इन्हें कोई पढ़ना नहीं चाहता। इसके अतिरिक्त इस ओर रुचि न होने के कारण आगे आने वाली सन्तति तो इन्हें पढ़ना ही भूल जावेगी। इसलिये यह निश्चित सा है कि भविष्य में ये ग्रंथ केवल विद्वानों के लिये ही उपयोगी रहेंगे और वे ही इन्हें पढ़ना तथा देखना अधिक पसन्द करेंगे।

ग्रंथ भंडारों की सुरक्षा के लिये हमारा यह सुझाव है कि राजस्थान के अभी सभी जिलों के कार्यालयों पर इनका एक एक संग्रहालय स्थापित हो तथा उप प्रान्त के सभी शास्त्र भंडारों के ग्रंथ उन संग्रहालय में संग्रहीत कर लिये जावें, किन्तु यदि किसी किसी उपजिलों एवं कस्बों में भी जैनों की अच्छी बस्ती है तो उन्हीं स्थानों पर भंडारों को रहने दिया जावे। जिलेवार यदि संग्रहालय स्थापित हो जावें तो वहाँ रिसर्च स्कालर्स आसानी से पहुँच कर उनका उपयोग कर सकते हैं तथा उनकी सुरक्षा का भी पूर्णतः प्रबन्ध हो सकता है। इसके अतिरिक्त राजस्थान में जयपुर, अलवर, भरतपुर, नागौर, फोटा, बूँदी, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, हूंगरपुर, प्रतापगढ़, बांसवाडा आदि स्थानों पर इनके बड़े बड़े संग्रहालय खोल दिये जावें तथा अनुसन्धान प्रेमियों को उन्हें देखने एवं पढ़ने की पूरी सुविधाएं दी जावें तो ये हस्तलिखित के ग्रंथ फिर भी सुरक्षित रह सकते हैं अन्यथा उनका सुरक्षित रहना बड़ा कठिन होगा।

जयपुर के भी कुछ शास्त्र भंडारों को छोड़कर अन्य भंडार कोई विशेष अच्छी स्थिति में नहीं हैं। जयपुर के अब तक हमने १६ भंडारों की सूची तैयार की है लेकिन किसी भंडार में वेष्टन नहीं है नो कहीं बिना पुष्टों के ही शास्त्र रखे हुये हैं। हमारी इस असावधानी के कारण ही सैकड़ों ग्रंथ अपूर्ण हो गये हैं। यदि जयपुर के शास्त्र भंडारों के ग्रंथों का संग्रह एक केन्द्रीय संग्रहालय में कर लिया जावे तो उस

समय हसारा बहू संग्रहालय जयपुर के दर्शनीय स्थानों में से गिना जावेगा । प्रति वर्ष सैकड़ों की संख्या में शोध विद्यार्थी आवेंगे और जैन साहित्य के विविध विषयों पर खोज कर सकेंगे । इस संग्रहालय में शास्त्रों की पूर्ण सुरक्षा का ध्यान रखा जावे और इसका पूर्ण प्रबन्ध एक संस्था के अधीन हो । आशा है जयपुर का जैन समाज हमारे इस निवेदन पर ध्यान देगा और शास्त्रों की सुरक्षा एवं उनके उपयोग के लिये कोई निश्चित योजना बना सकेगा ।

### ग्रंथ सूची के सम्बन्ध में

ग्रंथ सूची के इस भाग को हमने सर्वांग सुन्दर बनाने का पूर्ण प्रयास किया है । प्राचीन एवं अज्ञात ग्रंथों की ग्रंथ प्रशस्ति एवं लेखक प्रशस्तियां दी गई हैं जिनसे विद्वानों को उनके कर्ता एवं लेखन-काल के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी मिल सके । गुटकों में महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध होती है इसलिये बहुत से गुटकों के पूरे पाठ एवं शेष गुटकों के उल्लेखनीय पाठ दिये हैं । ग्रंथ सूची के अन्त में ग्रंथानुक्रमिका, ग्रंथ एवं ग्रंथकार, ग्राम नगर एवं उनके शासकों का उल्लेख ये चार परिशिष्ट दिये हैं । ग्रंथानुक्रमिका को देखकर सूची में आये हुये किसी भी ग्रंथ का परिचय शीघ्र मालूम किया जा सकता है क्योंकि बहुत से ग्रंथों के नाम से उनके विषय के सम्बन्ध में स्पष्ट जानकारी नहीं मिलती । ग्रंथानुक्रमिका में ४२०० ग्रंथों का उल्लेख आया है जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि ग्रंथ सूची में निर्दिष्ट सभी ग्रंथ मूल ग्रंथ हैं तथा शेष उन्हीं की प्रतियां हैं । इसी प्रकार ग्रंथ एवं ग्रंथकार परिशिष्ट से एक ही ग्रंथकार के इस सूची में कितने ग्रंथ आये हैं इसकी पूर्ण जानकारी मिल सकती है । ग्राम एवं नगरों के परिशिष्ट में इन भंडारों में किस किस ग्राम एवं नगरों में रचे हुये एवं लिखे हुये ग्रंथ संग्रहीत हैं यह जाना जा सकता है । इसके अतिरिक्त ये नगर कितने प्राचीन थे एवं उनमें साहित्यिक गतिविधियां किस प्रकार चलती थी इसका भी हमें आभास मिल सकता है । शासकों के परिशिष्ट में राजस्थान एवं भारत के विभिन्न राजा, महाराजा एवं बादशाहों के समय एवं उनके राज्य के सम्बन्ध में कुछ २ परिचय प्राप्त हो जाता है । ऐतिहासिक तथ्यों के संकलन में इस प्रकार के उल्लेख बहुत प्रामाणिक एवं महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं । प्रस्तावना में ग्रंथ भंडारों के संक्षिप्त परिचय के अतिरिक्त अन्त में ४६ अज्ञात ग्रंथों का परिचय भी दिया गया है जो इन ग्रंथों की जानकारी प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगा । प्रस्तावना के साथ में ही एक अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों की सूची भी दी गई है इस प्रकार ग्रंथ सूची के इस भाग में अन्य सूचियों से सभी तरह की अधिक जानकारी देने का पूर्ण प्रयास किया है जिससे पाठक अधिक से अधिक लाभ उठा सकें । ग्रंथों के नाम, ग्रंथकर्ता का नाम, उनके रचनाकाल, भाषा आदि के साथ-साथ उनके आदि अन्त भाग पूर्णतः ठीक २ देने का प्रयास किया गया है फिर भी कमियां रहना स्वाभाविक है । इसलिये विद्वानों से हमारा उदार दृष्टि अपनाने का अनुरोध है तथा यदि कहीं कोई कमी हो तो हमें सूचित करने का कष्ट करें जिससे भविष्य में इन कमियों को दूर किया जा सके ।

### धन्यवाद समर्पण

हम सर्व प्रथम क्षेत्र की प्रबन्ध कारिणी कमेटी एवं विरोधतः उसके मंत्री महोदय श्री केशरलालजी बख्शी को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने प्रथम सूची के चतुर्थ भाग को प्रकाशित करवा कर समाज एवं जैन साहित्य की खोज करने वाले विद्यार्थियों का महान् उद्धार किया है। क्षेत्र कमेटी द्वारा जो साहित्य शोध संस्थान संचालित हो रहा है वह सम्पूर्ण जैन समाज के लिये अत्युत्तरीय है एवं उछे नई दिशा की ओर ले जाने वाला है। भविष्य में शोध संस्थान के कार्य का और भी विस्तार किया जावेगा ऐसी हमें आशा है। प्रथम सूची में उल्लिखित सभी शास्त्र भंडार के व्यवस्थापक महोदयों को एवं विशेषतः श्री नयमलजी बज, समीरमलजी छावड़ा, पुनमचंदजी सोगानी, इन्दरलालजी पापड़ीवाल एवं सोहनलालजी सोगानी, अनूपचंदजी दीघण, संवरलालजी न्यायतीर्थ, राजमलजी गोधा, प्रो० सुल्तानसिंहजी, कपूरचंदजी रांवका, आदि सज्जनों के हम पूर्ण आभारी हैं जिन्होंने हमें प्रथम भंडार की सूचियां बनाने में अपना पूर्ण सहयोग दिया एवं अब भी समय समय पर भंडार के प्रबंध विस्तारने में सहयोग देते रहते हैं। अद्य पं० चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ के प्रति हम कृतज्ञांजलियां अर्पित करते हैं जिनकी सतत प्रेरणा एवं मार्ग-दर्शन से साहित्योद्धार का यह कार्य दिया जा रहा है। हमारे सहयोगी भा० सुगतचंदजी को भी हम धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते जिनका प्रथम सूची को तैयार करने में हमें पूर्ण सहयोग मिला है। जैन साहित्य सदन देहली के व्यवस्थापक पं० परमानन्दजी शास्त्री के भी हम हृदय से आभारी हैं। जिन्होंने सूची के एक भाग को देखकर आवश्यक सुझाव देने का कष्ट किया है।

अन्त में आवरणीय डा. वासुदेवशरणजी सा. अग्रवाल, अध्यक्ष हिन्दी विभाग काशी विश्व-विद्यालय, वाराणसी के हम पूर्ण आभारी हैं जिन्होंने प्रथम सूची की भूमिका लिखने की कृपा की है। डाक्टर सा. का हमें सदैव मार्ग-दर्शन मिलता रहता है जिसके लिये उनके हम पूर्ण कृतज्ञ हैं।

महावीर भवन, जयपुर

दिनांक १०-११-६१

कस्तूरचंद कासलीवाल

अनूपचंद न्यायतीर्थ

## प्राचीन एवं अज्ञात रचनाओं का परिचय

### १ अश्वत्थवर्मन काव्य

आषट्क धर्म पर वह एक सुन्दर एवं सरस संस्कृत काव्य है। काव्य में २४ प्रकरण हैं। भट्टारक शुक्लचन्द्र इसके रचयिता हैं जिन्होंने इसे लोहट के पुत्र सावलदास के पठनार्थ लिखा था। स्वयं प्रबंधकार ने अपनी प्रशंसा निम्न प्रकार लिखी है—

पूरे श्रीकृष्णदाचार्ये तत्पट्टे श्रीरुहसकीर्ति तत्पट्टे श्रीद्रुमुषनकीर्तिदेव तत्पट्टे श्रीशुरू-  
रत्नकीर्ति तत्पट्टे श्रीशुक्लचन्द्रदेवभट्टविरचितमहाप्रथं कर्मक्षयार्थं लोहट सुत पंडित श्री सावलदास  
पठनार्थं ॥ काव्य की एक प्रति अ भंडार में है। प्रति अशुद्ध है तथा उसमें प्रथम २ पृष्ठ नहीं हैं।

### २ आचार्यिक भाषा

इस रचना का दूसरा नाम षट् पद छापय है। यह भट्टारक लक्ष्मीचन्द्र की रचना है जो संभवतः भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा में हुये थे। रचना अपभ्रंश भाषा में निबद्ध है तथा उच्छकोटि की है। इसमें संसार की नश्वरता का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया गया है। इसमें २८ पद हैं। एक पद नीचे देखिये—

विरला जायंति पुणो विरला सेवंति अप्पणो सामि, विरला ससहावरया परदव्य परम्मुहा विरला ।  
ते विरला जगि अत्थि जिकिवि परदव्वु ए इछहि, ते विरला ससहाव करहि रुइ शियमणि पिछहि ॥  
विरला सेवहि सामि शिण्णु णिय देह बसंतव, विरला जाणहि अप्पु शुद्ध चेषण गुणवंतव ।  
मणु पत्तणु दुल्लह लहिबि सरवय कुल्लु उत्तमु जियव, जियु एम पर्यपइ णिसुण्णि वुह गाह भण्णि छापव कियव ॥

इसकी एक प्रति अ भंडार में सुरक्षित है। यह प्रति आचार्य नेमिचन्द्र के पदने के लिये लिखी गई थी।

### ३ आराधनासार प्रबन्ध

आराधनासार प्रबन्ध में मुनि प्रभाचंद्र विरचित संस्कृत कथाओं का संग्रह है। मुनि प्रभा-  
चन्द्र देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे। किन्तु प्रभाचन्द्र के शिष्य थे मुनि पद्मनन्द जिन्होंने द्वारा विरचित 'वद्व-  
मान पुराण' का परिचय आगे दिया गया है। प्रभाचन्द्र ने प्रत्येक कथा के अन्त में अपनी परिचय दिया  
है। एक परिचय देखिये—

श्रीमूलसंधे वरभारतीये गच्छे बलान्कारगणोति रम्ये ।

श्रीकृष्णदास्यमुनीन्द्रवंशे जातं प्रभाचन्द्रमहायतीन्द्रः ॥

देवेन्द्रचन्द्रार्कसम्भितेन तेन प्रभाचन्द्रमुनीरवरेण ।  
अनुग्रहाय रचितः सुवाक्यैः आराधनासारकथाप्रबन्धः ॥  
तेन क्रमेणैव भया स्वशाक्त्या रत्नोक्तैः प्रसिद्धै रचनितगद्यते च ।  
मार्गेषु किं भानुकरप्रकाशे स्वकीलया गच्छति सर्वज्ञोके ॥

आराधनासार बहुत सुन्दर कथा ग्रंथ है। यह अभी तक अप्रकाशित है।

#### ४ कवि वल्लभ

क भंडार में हरिचरणदास कृत दो रचनार्यें उपलब्ध हुई हैं। एक विहारी सतसई पर हिन्दी गद्य टीका है तथा दूसरी रचना कवि वल्लभ है। हरिचरणदास ने कृष्णोपासक प्राणनाथ के पास विहारी सतसई का अध्ययन किया था। ये श्रीनन्द पुरोहित की जाति के थे तथा 'मोहन' उनके आश्रयदाता थे जो बहुत ही उदार प्रकृति के थे। विहारी सतसई पर टीका इन्होंने संवत् १८३४ में समाप्त की थी। इसके एक वर्ष पश्चात् इन्होंने कविवल्लभ की रचना की। इसमें काव्य के लक्षणों का वर्णन किया गया है। पूरे काव्य में २८४ पद्य हैं। संवत् १८५२ में लिखी हुई एक प्रति क भंडार में सुरक्षित है।

#### ५ उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा

देवीसिंह छावड़ा १८ वीं शताब्दी के हिन्दी भाषा के विद्वान थे। ये जिनदास के पुत्र थे। संवत् १७६६ में इन्होंने श्रावक माधोदास गोलालारे के आग्रह पर उपदेश सिद्धान्तरत्नमाला की छन्दो-बद्ध रचना की थी। मूल ग्रंथ प्राकृत भाषा का है और वह नेमिचन्द्र भंडारी द्वारा रचित है। कवि नरवर निवासी थे जहाँ कूर्म वंश के राजा छत्रसिंह का राज्य था।

उपदेश सिद्धान्तरत्नमाला भाषा हिन्दी का एक सुन्दर ग्रंथ है जो पूर्णतः प्रकाशान योग्य है। पूरे ग्रंथ में १६८ पद्य हैं जो दोहा, चौपई, चौबोला, गीताछंद, नाराच, सोरठा आदि छन्दों में निबद्ध है। कवि ने ग्रंथ समाप्त पर जो अपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है—

वातसल गोती सूचरो, संचई सकल बखान ।

गोलालारे सुभमती, माधोदास सुजान ॥१६०॥

#### चौपई

महाकठिन प्राकृत की वांती, जगत मांदि प्रगटै सुखदानी ।  
या विधि चिता मनि सुभाषी, भाषा छंद मांदि अभिलाषी ॥  
श्री जिनदास तनुज लघु भाषा, खंडेलवाल सावरा साखा ।  
देवीस्यंघ नाम सब भाषै, कवित मांदि चिता मनि राखै ॥

## गीता छंद

श्री सिद्धान्त उपदेशमाला रतनगुन मंडित करी ।  
सब सुकवि कंठा करहु, भूषित सुमनसोभित विधिकरी ॥  
जिम सूर्य के प्रकास सेती तम बितान विलात है ।  
इमि पढ़ै परमागम सुषांनी विदत रुचि अवदात है ॥

### दोहा

सुखविधान नरवरपती, छत्रस्थंघ अवतंस ।  
कीरति वंत प्रवीन मति, राजत कूरम बंश ॥१६४॥  
जाके राज सुचैन सौं, विनां ईति अरु भीति ।  
रच्यो ग्रंथ सिद्धान्त सुभ, यह उपगार सुनीति ॥१६५॥  
सत्रहसै अरु छपनवै, संबन् विक्रमराज ।  
भादव बुदि एकादसी, शनिदिन सुविधि समाज ॥१६६॥  
ग्रंथ कियो पूरन सुविधि नरवर नगर मंकार ।  
जै सममै याको अरथ ते पावै भवपार ॥१६७॥

### चौबोला

सावन बदि की तीज आदि सौ आरंभ्यो यह ग्रंथ ।  
भादव बदि एकादशि तक लौं परमपुन्य को पंथ ॥  
एक महिना आठ दिना मैं कियो समापत आनि ।  
पढ़ै गुनै प्रकटै चिंतामनि बोध सदा सुख दानि ॥१६८॥

इति उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा ॥

## ६ गोम्मटसार टीका

गोम्मटसार की यह संस्कृत टीका आ० सकलभूषण द्वारा विरचित है । टीका के प्रारम्भ में लिपिकार ने टीकाकार के विषय में लिखा है वह निम्न प्रकार है:—

“अथ गोम्मटसार ग्रंथ गाथा बंध टीका करणाटक भाषा में है उसके अनुसार सकलभूषण नैं संस्कृत टीका बनाई सो लिखिये है ।

टीका का नाम मन्दप्रबोधिका है जिसका टीकाकार ने मंगलाचरण में ही उल्लेख किया है:—

मुनि सिद्धं प्रणम्याहं नेमिचन्द्रजिनेश्वरं ।  
टीकां गुम्फटसारस्य कुर्वे मंदप्रबोधिकां ॥१॥

लेकिन अभयचन्द्राचार्य ने जो गोम्फटसार पर संस्कृत टीका लिखी थी उसका नाम भी मन्द-प्रबोधिका ही है । 'मुल्लार साहब ने उसको गाथा नं० ३८३ तक ही पाया जाना लिखा है, लेकिन जयपुर के 'क' भण्डार में संग्रहीत इस प्रति में आ० सकल भूषण दिया है । इसकी विद्वानों द्वारा विस्तृत खोज होनी चाहिये । टीका के अन्त में जो टीकाकाल लिखा है वह संवत् १५७६ का है ।

विक्रमादित्यभूषणस्य विख्यातो च मनोहरे ।  
दशपंचशते वर्षे षड्भिः संयुतसप्ततौ (१५७६)

टीका का आदि भाग निम्न प्रकार है:—

श्रीमदप्रतिहतप्रभावस्याद्वादशासन-गुह्यार्थतरनिवासि प्रवादिमदांधसिधुरसिंहायमानसिंहनंदि  
मुनीन्द्राभिर्नंदित गंगवंशलालामराज सर्वह्लाद्यनेकगुणनामधेय-श्रीमद्रामल्लदेव महावल्लभ-महामात्य  
पदविराजमान रणरंगमल्लसहाय पराक्रमगुणरत्नभूषण सम्यक्त्वरत्ननिलयादिविविधगुणनाम समा-  
सादितकीर्तिकांतश्रीमच्छामुंडराय भव्यपुंडरीक द्रव्यानुयोगप्रशानुकरूपं महाकर्मप्राभृतसिद्धान्त  
जीवस्थानाख्यप्रथमखंडार्थसंग्रहं गोम्फटसारनामधेय-पंचसंग्रहशास्त्र प्रारभ समस्तसैद्धान्तिकचूडामणि  
श्रीमन्नेमिचंद्रसैद्धान्तचक्रवर्ति तद् गोम्फटसारप्रथमावयवभूतं जीवकांडं विरचयस्तत्रादौमलगालनपुण्यावाप्ति  
शिष्टाचारपरिपालननास्तिकतापरिहारादिफलजननसमर्थं विशिष्टेष्टदेवतानमस्काररूपधर मंगलपूर्वक  
प्रकृतशास्त्रकथनप्रतिज्ञामूचकं गाथा सूचकं कथयति ।

अन्तिम भाग

नत्वा श्रीवद्धमानांताम् वृषभादिजिनेश्वरान् ।  
धर्ममार्गोपदेशत्वान् सर्व्वकल्याणदायिकान् ॥ १ ॥  
श्रीचन्द्रादिप्रभांतं च नत्वा स्याद्वाददेशकं ।  
श्रीमद्गुम्फटसारस्य कुर्वे शस्तां प्रशस्तिकां ॥ २ ॥  
श्रीमतः शकराजस्य शाके वर्त्तति मुन्दरे ।  
चतुर्दशशते चैक-चत्वारिंशत्-समन्विते ॥ ३ ॥  
विक्रमादित्यभूषणस्य विख्याते च मनोहरे ।  
दशपंचशते वर्षे षड्भिः संयुतसप्ततौ ॥ ४ ॥



कार्तिके चाशिते पक्षे त्रयोदश्यां शुभ दिने ।  
 शुक्रे च हस्तनक्षत्रे योगो च प्रीति नामनि ॥ ५ ॥  
 श्रीमच्छ्रीमूलसंघे च नंदाप्राये लसद्गणौ ।  
 बलात्कारे जगन्ममे गच्छे सारस्वताभिषे ॥ ६ ॥  
 श्रीमत्कुङ्कुमाक्ष्य सुरेरन्वयके भवत् ।  
 पद्मादिर्नदि वित्याख्यो भट्टारकविचक्षणः ॥ ७ ॥  
 तत्पट्टांभोजमात्तडः चंद्रांतरच शुभादिक ।  
 तत्पदस्थोभवच्छ्रीमान् जिनचंद्राभिधोगणी ॥ ८ ॥  
 तत्पट्टे सद्गुरौयुक्तो भट्टारकपदेश्वरः ।  
 पंचाचाररतो नित्यं प्रभाचन्द्रो जितेन्द्रियः ॥ ९ ॥  
 तत्शिष्यो धर्मचन्द्रश्च तत्कृष्णानुधि चंद्रमा ।  
 तदाम्नाये भवत भच्यास्ते वर्यते यथाक्रमं ॥ १० ॥  
 पुरे नागपुरे रम्ये राजो मङ्गदखानके ।  
 पाटणीगोत्रके पुत्रे खंडेलवालान्वयभूपणे ॥ ११ ॥  
 दानादिभिर्गुरौयुक्तः लूणानामविचक्षणः ।  
 तस्य भार्या भवत् रास्ता लूणाश्री चामिधानिका ॥ १२ ॥  
 तयोः पुत्रः समाख्यातः पर्वताख्यो विचारकः ।  
 राज्यमान्यो जनैः सेव्यः संघभारधुरंधर ॥ १३ ॥  
 तस्य भार्यास्त सत्साध्वी पर्वतश्रीति नामिका ।  
 शीलादिगुणसंपन्ना पुत्रत्रयसमन्विता ॥ १४ ॥  
 प्रथमो जिनदासाख्यो गृहभारधुरंधरः ।  
 तस्य भार्या भवत्साध्वी जौणादेयविचक्षणा ॥ १५ ॥  
 दानादिगुणसंयुक्ता द्वितीया च सुहागिणी ।  
 प्रथमायास्तु पुत्रः स्यात् तेजपालो गुणान्वितो ॥ १६ ॥  
 द्वितीयो देवदासाख्यो गुरुभक्तः प्रसन्नधीः ।  
 पतिव्रता गुरौयुक्ता भायविवासिरीति च ॥ १७ ॥  
 पितुर्भक्तो गुरौयुक्तो होलानामानुतीयकः ।  
 होलादेया च तद्भार्या होलश्री द्वितीयिका ॥ १८ ॥  
 लिखायि दत्तं निखिलै सुभक्तितः ।  
 सिद्धान्तशास्त्रमिदं हि गुन्मटं ॥

धर्मादिचंद्राय स्वकर्मदानये ।  
हितोक्तये श्री सुखिने नियुक्तये ॥१६॥

### ७ चन्दनमलयगिरि कथा

चन्दनमलयगिरि की कथा हिन्दी की प्रेम कथाओं में प्रसिद्ध कथा है । यह रचना मुक्ति भद्र-सेन की है जिसका वर्णन उन्होंने निम्न प्रकार किया है—

मम उपकारी परमगुरु, गुण अक्षर दातार, बंदे ताके चरण जुग, भद्रसेन मुनि सार ॥३॥

रचना की भाषा पर राजस्थानी का पूर्ण प्रभाव है । कुछ पद्य पाठकों के अबलोकनार्थ नीचे दिये जा रहे हैं:—

सीतल जल सरवर भरे, कमल मधुप ऋणकार । पणघट पांणी भरण कौं, लार बहुत पणिहार ॥

× × × × ×

चंदन विनु मलयगरी, दिन दिन सूकत जात । ज्यौं पावस जलधार विनु, वनवेली कुमिलात ॥

× × × × ×

अग्नि मांफि जरिवौ भलौ, भलौ ज विष कौ पान । शील खंडिवौ नहिं भलौ, कहि कहु शील समान ॥

× × × × ×

चंदन आवत देखि करि, अठि दियो सनमान । उतरौ आपणौ धाम है, हम तुम होई पिछान ॥

रचना में कहीं कहीं गाथायें भी उद्धृत की हुई हैं । पद्य संख्या १८८ है । रचनाकाल एवं लेखन काल दोनों ही नहीं दिये हुये हैं लेकिन प्रति की प्राचीनता की दृष्टि से रचना १७ वीं शताब्दी की होनी चाहिये । भाषा एवं शैली की दृष्टि से रचना सुन्दर है । श्री मोतीलाल<sup>१</sup> मेनारिया ने इसका रचना काल सं. १६७५ माना है । इसका दूसरा नाम कलिकापंचमी<sup>२</sup> कथा भी मिलता है । अभी तक भद्रसेन की एक ही रचना उपलब्ध हुई है । इस रचना की एक सचित्र प्रति अभी हाल में ही हमें भट्टारकीय शास्त्र भंडार इंगरपुर में प्राप्त हुई है ।

### ८ चारुदत्त चरित्र

यह कल्याणकीर्ति की रचना है । ये भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा में होने वाले मुनि देवकीर्ति के शिष्य थे । कल्याणकीर्ति ने चारुदत्त चरित्र को संवत् १६६२ में समाप्त किया था । रचना में

१. राजस्थानी भाषा और साहित्य पृष्ठ सं० १६१

२. राजस्थान के जैन शास्त्र भंडारों की ग्रंथ सूची भाग २ पृ० सं० २३६

सेठ चारुदत्त के जीवन पर प्रकारा डाला गया है। रचना चौपई एवं दूहा छन्द में है लेकिन राग भिन्न भिन्न है। इसका दूसरा नाम चारुदत्तरास भी है।

कल्याणकीर्ति १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। अब तक इनकी पार्श्वनाथ<sup>१</sup> रासो: (सं० १६६७) बावनी<sup>२</sup>, जीराबलि पार्श्वनाथ स्तवन: (सं०) नवग्रह स्तवन (सं०) तीर्थकर चिनती<sup>३</sup> (सं० १७२३) आदी-श्वर<sup>४</sup> बधावा आदि रचनायें मिल चुकी हैं।

## ६ चौरासी जातिजयमाल

ब्रह्म जिनदास १५ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वान् थे। ये संस्कृत एवं हिन्दी दोनों के ही प्रगाढ विद्वान् थे तथा इन दोनों ही भाषाओं में इनकी ६० से भी अधिक रचनायें उपलब्ध होती हैं। जयपुर के इन भंडारों में भी इनकी अभी कितनी ही रचनायें मिली हैं जिनमें से चौरासी जातिजयमाल का वर्णन यहां दिया जा रहा है।

चौरासी जातिजयमाल में माला की बोली के उत्सव में सम्मिलित होने वाली ८४ जैन जातियों का नामोल्लेख किया है। माला की बोली बढ़ाने में एक जाति से दूसरी जाति वाले व्यक्तियों में बड़ी उत्सुकता रहती थी। इस जयमाल में सबसे पहिले गोलालार अन्त में चतुर्थ जैन श्रावक जाति का उल्लेख किया गया है। रचना ऐतिहासिक है एवं इसकी भाषा हिन्दी (राजस्थानी) है। इसमें कुल ४३ पद्य हैं। ब्रह्म जिनदास ने जयमाल के अन्त में अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है।

ते समकित वंतह बहु गुण जुत्तहं, माल सुणो तहमे एकमनि।

ब्रह्म जिनदास भासैं विबुध प्रकासैं, पढई गुणे जे धम्म धनि ॥४३॥

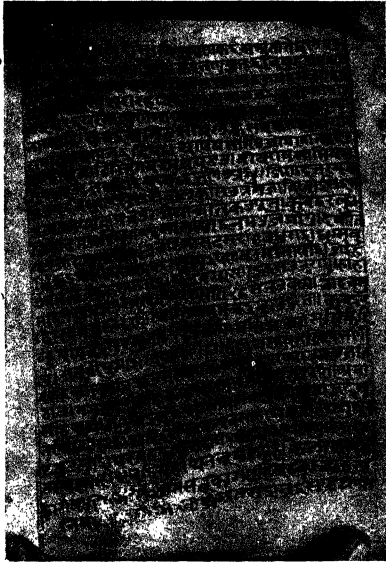
इसी चौरासी जाति जयमाला समाप्त।

इति जयमाल के आगे चौरासी जाति की दूसरी जयमाल है जिसमें २६ पद्य हैं और वह संभवतः किसी अन्य कवि की है।

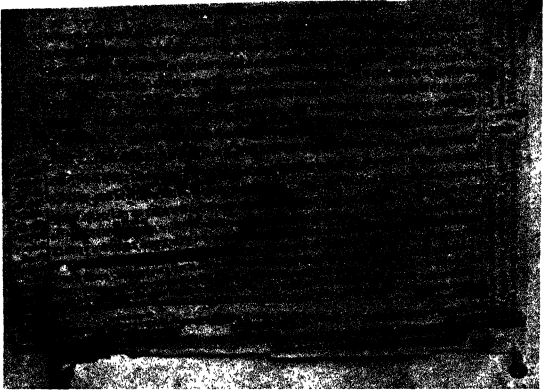
## १० जिनदत्तचौपई

जिनदत्त चौपई हिन्दी का आदिकालिक काव्य है जिसको रत्न कवि ने संवत् १३५४ (सन् १२६७) भाद्रवा सुदी पंचमी के दिन समाप्त किया था।

|    |  |                 |
|----|--|-----------------|
| १. | राजस्थान जैन शास्त्र भंडारों की ग्रंथ सूची भाग २ | पृष्ठ ७४        |
| २. | " "  | पृष्ठ १०६       |
| ३. | " "  | भाग ३ पृष्ठ १४१ |
| ४. | " "  | पृष्ठ १५२       |



रत्न कवि द्वारा संवत् १३५४ में रचित हिन्दी की अति प्राचीन कृति जिनःत चौपई का एक चित्र:—  
पान्डुलिपि जयपुर के दि० जैन मन्दिर पाटोदी के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है ।  
( इसका विस्तृत परिचय प्रतापना की पुस्तक संख्या ३० पर देखिये )



१८ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध माहित्य सेवी महा पंडित टोडरमलजी द्वारा रचित एवं लिखित  
गोस्मटसार की मूल पाण्डुलिपि का एक चित्र ।  
यह ग्रन्थ जयपुर के दि० जैन मंदिरपाटोद्री के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है ।  
( मुची क्र. सं. ६७ वे. सं. ४०३ )



संवत् तेरहसे चढवण्ये, भादव सुदिपंचमगुरु दिण्ये ।

स्वाति नखत्त चंदु गुलहती, कवइ रल्लु पणवइ सुरसवी ॥२८॥

कवि जैन धर्मावलम्बी थे तथा जाति से जैसवाल थे । उनकी माता का नाम\_सिरीया तथा पिता का नाम आते था ।

जइसवाल कुलि उत्तम जाति, वाईसइ पाडल उतपाति ।

पंचउल्लीया आतेकउपूनु, कवइ रल्लु जिणदत्तु चरित्तु ॥

जिनदत्त चौपई कथा प्रधान काव्य है इसमें कविने अपनी काव्यत्व शक्ति का अधिक प्रदर्शन न करते हुये कथा का ही सुन्दर रीति से प्रतिपादन किया है । ग्रंथ का आधार पं. लाम्बू द्वारा विरचित जिण्यत्तचरिउ ( सं. १२७५ ) है जिसका उल्लेख स्वयं ग्रंथकार ने किया है ।

मइ जोयउ जिनदत्तपुराणु, लाम्बू विरयउ अइसू पमाण ॥

ग्रंथ निर्माण के समय भारत पर अलाउद्दीन खिलजी का राज्य था । रचना प्रधानतः चौपई छन्द में निबद्ध है किन्तु यन्तुबंध, दोहा, नाराच, अर्धनाराच आदि छन्दों का भी कहीं-२ प्रयोग हुआ है । इसमें कुल पद्य ५४४ हैं । रचना की भाषा हिन्दी है जिस पर अपभ्रंश का अधिक प्रभाव है । वैसे भाषा सरल एवं सरस है । अधिकांश शब्दों को उकारान्त बनाकर प्रयोग किया गया है जो उस समय की परम्परा सी मालूम होती है । काव्य कथा प्रधान होने पर भी उसमें रोमांचकता है तथा काव्य में पाठकों की उत्सुकता बनी रहती है ।

काव्य में जिनदत्त मगध देशान्तर्गत बसन्तपुर नगर सेठ के पुत्र जीवदेव का पुत्र था । जिनेन्द्र भगवान की पूजा अर्चना करने से प्राप्त होने के कारण उसका नाम जिनदत्त रखा गया था । जिनदत्त व्यापार के लिये सिधल आदि द्वीपों में गया था । उसे व्यापार में अतुल लाभ के अतिरिक्त वहां से उसे अनेक अलौकिक विद्यायें एवं राजकुमारियां भी प्राप्त हुई थीं । इस प्रकार पूरी कथा जिनदत्त के जीवन की सुन्दर कहानियों से पूर्ण है ।

## ११ ज्योतिषसार

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है ज्योतिषसार ज्योतिष शास्त्र का ग्रंथ है । इसके रचयिता हैं श्री कृपाराम जिन्होंने ज्योतिष के विभिन्न ग्रंथों के आधार से संवत् १७४२ में इसकी रचना की थी । कवि के पिता का नाम तुलाराम था और वे शाहजहांपुर के रहने वाले थे । पाठकों की जानकारी के लिये ग्रंथ में से दो उद्धरण दिये जा रहे हैं:—

केदरियों चौथो भवन, सपतमदसमें जान । पंचम अरु नोमौ भवन, येह त्रिकोण बहान ॥६॥

तीजो पसटम ग्यारमों, घर दसमों कर लेखि । इनकौ उपत्रै कहत है, सर्वग्रंथ में देखि ॥७॥

वरष लग्यो जा अंस में, सोह दिन चित धारि । वा दिन उतनी चडी, जु पल बीते लगविचारि ॥४०॥  
लगन लिखे ते गिरह जो, जा घर बैठो आय । ता घर के मूल सुफल को कीजे मित बनाय ॥४१॥

## १२ ज्ञानार्णव टीका

आचार्य शुभचन्द्र विरचित ज्ञानार्णव संस्कृत भाषा का प्रसिद्ध ग्रन्थ है । स्वाध्याय करने वालों का प्रिय होने के कारण इसकी प्रायः प्रत्येक शास्त्र भंडार में हस्तलिखित प्रतियां उपलब्ध होती हैं । इसकी एक टीका विद्यानन्द के शिष्य श्रुतसागर द्वारा लिखी गई थी । ज्ञानार्णव की एक अन्य संस्कृत टीका जयपुर के अ भंडार में उपलब्ध हुई है । टीकाकार है पं. नयविलास । उन्होंने इस टीका को मुगल सम्राट अकबर जलालुद्दीन के राजस्व मंत्री टोडरमल के सुत रिषिदास के श्रवणार्थ एवं पठनार्थ लिखी थी । इसका उल्लेख टीकाकार ने ग्रन्थ के प्रत्येक अध्याय के अंत में निम्न प्रकार किया है—

इति शुभचन्द्राचार्यविरचिते ज्ञानार्णवमूलसूत्रे योगद्रुदीपाधिकारे पं. नयविलासेन साह पासा तत्पुत्र साह टोडर तत्पुत्र साह रिषिदासेन स्वश्रवणार्थे पंडित जिनदासोद्यमेन कारापितेन द्वादशभावना प्रकरण द्वितीयः ।

टीका के प्रारम्भ में भी टीकाकार ने निम्न प्रशस्ति लिखी है—

शास्त्रन् साहि जलालदीनपुरतः प्राप्त प्रतिप्रोदयः ।  
श्रीमान् मुगलवंशशास्रद-शशि-विश्वोपकारोद्यतः ।  
नाम्ना कृष्ण इति प्रसिद्धिरभवन् सद्गात्रधर्मोन्नतेः ।  
तन्मन्त्रीश्वर टोडरो गुणयुतः सर्वाधिकाराधितः ॥६॥  
श्रीमन् टोडरसाह पुत्र निपुणः सहान्चिन्तामणिः ।  
श्रीमन् श्रीरिषिदास धर्मनिपुणः प्राप्तोन्नतिस्वश्रिया ।  
तेनाहं समवादि निपुणो न्यायाद्यलीलाह्वयः ।  
श्रोतुं वृत्तिमता परं सुविषया ज्ञानार्णवस्य स्फुटं ॥७॥

उक्त प्रशस्ति से यह जाना जा सकता है कि सम्राट अकबर के राजस्व मंत्री टोडरमल संभवतः जैन थे । इनके पिता का नाम साह पाशा था । स्वयं मंत्री टोडरमल भी कवि थे और इनका एक भजन “श्रव तैरो मुख देखू जिनंदा” जैन भंडारों में कितने ही गुटको में मिलता है ।

नयविलास की संस्कृत टीका का उल्लेख पीटर्सन ने भी किया है लेकिन उन्होंने नामोल्लेख के अतिरिक्त और कोई परिचय नहीं दिया है । पं. नयविलास का विशेष परिचय अभी खोज का विषय है ।

## १३ खेमिणाह चरिए—महाकवि दामोदर

महाकवि दामोदर कृत खेमिणाह चरिए अपभ्रंश भाषा का एक सुन्दर काव्य है । इस काव्य में पांच संघियां हैं जिनमें भगवान नेमिनाथ के जीवन का वर्णन है । महाकवि ने इसे संवत् १२८७ में समाप्त किया था जैसा निम्न दुवई छन्द ( एक प्रकार का दोहा ) में दिया हुआ है—

बारहसयाई सप्तसियाई, विक्कमरायहो कालहं । पमारहं पट्ट समुद्धरणु, एरवर देवापालहं ॥१४५॥

दामोदर मुनि सूरसेन के प्रशिष्य एवं महामुनि कमलभद्र के शिष्य थे । इन्होंने इस ग्रंथ की पंडित रामचन्द्र के आदेश से रचना की थी । ग्रंथ की भाषा सुन्दर एवं ललित है । इसमें घत्ता, दुवई, वस्तु छंद का प्रयोग किया गया है । कुल पद्यों की संख्या १४५ है । इस काव्य से अपभ्रंश भाषा का शानैः शानैः हिन्दी भाषा में किस प्रकार परिवर्तन हुआ यह जाना जा सकता है ।

इसकी एक प्रति जं भंडार में उपलब्ध हुई है । प्रति अपूर्ण है तथा प्रथम ७ पत्र नहीं हैं । प्रति सं० १५८२ की लिखी हुई है ।

### १४ तत्त्ववर्णन

यह मुनि शुभचन्द्र की संस्कृत रचना है जिसमें संचित रूप से जीवादि द्रव्यों का लक्षण वर्णित है । रचना छोटी है और उसमें केवल ५१ पद्य हैं । प्रारम्भ में ग्रंथकर्ता ने निम्न प्रकार विषय वर्णन करने का उल्लेख किया है:—

तत्त्वतत्त्वस्वरूपं सार्वं सर्वशुणाकरं । वीरं नत्वा प्रवक्ष्येऽहं जीवद्रव्यादिलक्षणं ॥१॥

जीवाजीवमिदं द्रव्यं युग्ममाहु जिनेश्वरा । जीवद्रव्यं द्विधातत्र शुद्धाशुद्धविकल्पतः ॥२॥

रचना की भाषा सरल है । ग्रंथकार ने रचना के अन्त में अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है:—

श्री कंजकीर्तिसहैवैः शुभेंदुमुनितेरितै । जिनागमानुसारेण सम्यक्त्वव्यक्ति-हेतवे ॥५०॥

मुनि शुभचन्द्र भट्टारक शुभचन्द्र से भिन्न विद्वान हैं । ये १७ वीं शताब्दी के विद्वान थे । इनके द्वारा लिखी हुई अभी हिन्दी भाषा की भी रचनायें मिली हैं । यह रचना जं भंडार में संग्रहीत है । यह आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ लिखी गई थी ।

### १५ तत्त्वार्थसूत्र भाषा

प्रसिद्ध जैनाचार्य उभास्वामि के तत्त्वार्थसूत्र का हिन्दी पद्यमें अनुवाद बहुत कम विद्वानों ने किया है । अभी कं भंडार में इस ग्रंथ का हिन्दीपद्यानुवाद मिला है जिसके कर्ता हैं श्री छोटेलाल, जो अलीगढ़ प्रान्त के मेहूगांव के रहने वाले थे । इनके पिता का नाम मोतीलाल था । ये जैसवाल जैन थे तथा कारी नगर में आकर रहने लगे थे । इन्होंने इस ग्रंथ का पद्यानुवाद संवत् १९३२ में समाप्त किया था ।

छोटेलाल हिन्दी के अच्छे विद्वान थे । इनकी अब तक तत्त्वार्थसूत्र भाषा के अतिरिक्त और रचनायें भी उपलब्ध हुई हैं । ये रचनायें चौबीस तीर्थंकर पूजा, पंचपरमेष्ठी पूजा एवं नित्यनियमपूजा हैं । तत्त्वार्थ सूत्र का आदि भाग निम्न प्रकार है ।



मोक्ष की राह बनावत जे । अरु कर्म पहाड करै चक्रवर्ता,  
विरखसुतत्त्व के ज्ञायक है ताही, ज्ञप्ति के हेतु नमौं परिपूरा ।  
सम्यग्दर्शन चरित ज्ञान कहे, याहि मारग मोक्ष के सूरा,  
तत्व को अर्थ करो सरधान सो सम्यग्दर्शन मजहूरा ॥१॥

कवि ने जिन पद्यों में अपना परिचय दिया है वे निम्न प्रकार हैं:—

जिलो अलीगढ जानियो मेहूगाम सुधाम । मोतीलाल सुपुत्र है छोटेलाल सुनाम ॥१॥  
जैसवाल कुल जाति है श्रेयो वीसा जान । वंश इप्याक महान में लयो जन्म भू आन ॥२॥  
काशी नगर सुआय कै सैनी संगति पाय । उदयराज भाई लखो सिम्बरचन्द गुण काय ॥३॥  
छंद भेद जानों नहीं और गणागण सोय । केवल भक्ति सुधर्म की बसी सुहृदय मोय ॥४॥  
ता प्रभाव था सूत्र की छंद प्रतिष्ठा सिद्धि । भाई सु भवि जन सोधियो होय जगत प्रसिद्ध ॥५॥  
मंगल श्री अर्हंत है सिद्ध साध चपसार । तिन नुति मनवच काय यह मेटो विचन विकार ॥६॥  
छंद बंध श्री सूत्र के किये सु बुधि अनुसार । मूलग्रंथ कूं देविके श्री जिन हिरदै धारि ॥७॥  
कारमास की अष्टमी पहलो पक्ष निहार । अठसटि ऊन सहस्र दो संवत रीति विचार ॥८॥

इति छंदबद्धसूत्र संपूर्ण ।

संवत् १६४३ चैत्र कृष्णा १३ तुषे ।

## १६ दर्शनसार भाषा

नथमल नाम के कई विद्वान हो गये हैं । इनमें सबसे प्रसिद्ध १८ वीं शताब्दी के नथमल त्रिलाला थे जो मूलतः आगरे के निवासी थे किन्तु बाद में हीरापुर (हिएडौन) आकर रहने लगे थे । उक्त विद्वान के अतिरिक्त १६ वीं शताब्दी में दूसरे नथमल हुये जिन्होंने कितने ही ग्रंथों की भाषा टीका लिखी । दर्शनसार भाषा भी इन्हीं का लिखा हुआ है जिसे उन्होंने संवत् १६२० में समाप्त किया था । इसका उल्लेख स्वयं कवि ने निम्न प्रकार किया है ।

बीस अधिक उगणीस सै शान्त, श्रायण प्रथम चौथि शनिवार ।

कृष्णपक्ष में दर्शनसार, भाषा नथमल लिखी सुधार ॥४६॥

दर्शनसार मूलतः देवसेन का ग्रंथ है जिसे उन्होंने संवत् ६६० में समाप्त किया था । नथमल ने इसी का पद्यानुवाद किया है ।

नथमल द्वारा लिखे हुये अन्य ग्रंथों में महीपालचरितभाषा ( संवत् १६१८ ), योगसार भाषा ( संवत् १६१६ ), परमात्मप्रकाश भाषा ( संवत् १६१६ ), रत्नकरण्डश्रायकवाचार भाषा ( संवत् १६२० ), षोडश-

कारणभावना भाषा ( संवत् १६२१ ) अष्टाह्निकाकथा ( संवत् १६२२ ), रत्नत्रय जयमाल ( संवत् १६२४ ) उल्लेखनीय हैं ।

### १७ दर्शनसार भाषा

१८ वीं एवं १९ वीं शताब्दी में जयपुर में हिन्दी के बहुत विद्वान् होगये हैं । इन विद्वानों ने हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए सैकड़ों प्राकृत एवं संस्कृत के ग्रंथों का हिन्दी गद्य एवं पद्य में अनुवाद किया था । इन्हीं विद्वानों में से पं० शिवजीलालजी का नाम भी उल्लेखनीय है । ये १८ वीं शताब्दी के विद्वान थे और इन्होंने दर्शनसार की हिन्दी गद्य टीका संवत् १८२३ में समाप्त की थी । गद्य में राजस्थानी शैली का उपयोग किया गया है । इसका एक उदाहरण देखिये:—

सांच कहता जीव के उपरिलोक दूखे वा तूषे । सांच कहने वाला तो कहै ही कहा जग का भय करि राजदंड छोडि देता है वा जूँवा का भय करि राजमनुष्य कपडा पटक देय है ? तैसे निदने वाले निदा, स्तुति करने वाले स्तुति करो, सांच बोला तो सांच कहै ।

### १८ धर्मचन्द्र प्रबन्ध

धर्मचन्द्र प्रबन्ध में मुनि धर्मचन्द्र का संक्षिप्त परिचय दिया गया है । मुनि, भट्टारकों एवं विद्वानों के सम्बन्ध में ऐसे प्रबन्ध बहुत कम उपलब्ध होते हैं इस दृष्टि से यह प्रबन्ध एक महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक रचना है । रचना प्राकृत भाषा में है विभिन्न छन्दों की २० गाथायें हैं ।

प्रबन्ध से पता चलता है कि मुनि धर्मचन्द्र भ० प्रभाचन्द्र के शिष्य थे । ये सकल कला में प्रवीण एवं आगम शास्त्र के पारगामी विद्वान थे । भारत के सभी प्रान्तों के श्रावकों में उनका पूर्ण प्रसुत्व था और समय २ पर वे आकर उनकी पूजा किया करते थे ।

प्रबन्ध की पूरी प्रति ग्रंथ सूची के पृष्ठ ३६६ पर दी हुई है ।

### १९ धर्मविलास

धर्मविलास ब्रह्म जिनदास की रचना है । कवि ने अपने आपको सिद्धान्तचक्रवर्ति आ० नेमिचन्द्र का शिष्य लिखा है । इसलिये ये भट्टारक सकलकीर्ति के अनुज एवं उनके शिष्य प्रसिद्ध विद्वान ब्र० जिनदास से भिन्न विद्वान हैं । इन्होंने प्रथम बंगलाचरण में भी आ० नेमिचन्द्र को नमस्कार किया है ।

भवकमलभायंडं सिद्धजिण तिहुपनिद सदपुज्जं । नेमिशसिं गुरुवीरं परामीय तियशुद्धभोवमहरणं ॥१॥

ग्रंथ का नाम धर्मपंचविंशतिका भी है । यह प्राकृत भाषा में निबद्ध है तथा इसमें केवल २६ गाथायें हैं । ग्रंथ की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति त्रिविधसैद्धान्तिकचक्रवर्त्याचार्यश्रीनेमिचन्द्रस्य त्रिशशिष्यब्रह्मजिनदासविरचितं धर्मपंच-  
विरातिका नाम शास्त्रसमाप्तम् ।

## २० निजामणि

यहाँ प्रसिद्ध विद्वान् ब्रह्म जिनदास की कृति है जो जयपुर के 'क' भण्डार में उपलब्ध हुई है । रचना छोटी है और उसमें केवल ५४ पद्य हैं । इसमें चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति एवं अन्य शालाका महापुरुषों का नामोल्लेख किया गया है । रचना स्तुति परक होते हुये भी आध्यात्मिक है । रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है:—

श्री सकल जिनेश्वर देव, हूँ तब पाय करूँ सेव ।  
हवे निजामणि कहु सार, जिम जपक तरे संसार ॥ १ ॥  
हो जपक सुणे जिनवाणि, संसार अथि र तू जाणि ।  
इहां रखा नहिं कोई धीर, हवे मन दद करो निज धीर ॥ २ ॥  
ग्या आदिश्वर जगीसार, ते जुगला धर्म निवार ।  
ग्या अजित जिनेश्वर चंग, जिने कियो कर्म नो भंग ॥ ३ ॥  
ग्या संभव भव हर स्वामी, ते जिनवर मुक्ति हि गामी ।  
ग्या अभिनंदन आनंद, जिने मोड्यो भव नो कंद ॥ ४ ॥  
ग्या सुमति सुमति दातार, जिने रण मुमी जित्यो मार ।  
ग्या पद्मप्रभ जगिवास, ते मुक्ति तणा निवास ॥ ५ ॥  
ग्या सुपार्श्व जिन जगीसार, जमु पास न रह्यो भार ।  
ग्या चंद्रप्रभ जगीचंद्र, जिने त्रिभुवन कियो आनन्द ॥ ६ ॥

× × × ×

ए निजामणि कहि सार, ते सयल मुख भंडार ।  
जे जपक सुणे ए चंग, ते सौख्य पाये अभंग ॥ ५३ ॥  
श्री सकलकीर्त्ति गुरु ध्याउ, मुनि भुवनकीर्त्ति गुणगाउ ।  
ब्रह्म जिनदास भयोसार, ए निजामणि भवतार ॥ ५४ ॥

## २१ नेमिनरेन्द्र स्तोत्र

यह स्तोत्र वादिराज जगन्नाथ कृत है । ये भट्टारक नरेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य थे तथा टोडारार्यनिह ( जयपुर ) के रहने वाले थे । अद्य तक इनकी श्वेताम्बर पराजय ( केवल मुक्ति निराकरण ), मुख निधान, चतुर्विंशति संधान स्वोपलब्ध टीका एवं शिव साधन नाम क चार ग्रंथ उपलब्ध हुये थे । नेमिनरेन्द्र स्तोत्र

उनकी पांचवी कृति है जिसमें टोडारायसिंह के प्रसिद्ध नेमिनाथ मन्दिर की मूलनायक प्रांतया नेमिनाथ का स्तबन किया गया है। ये १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। रचना में ४१ छन्द हैं तथा अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है:—

श्रीमन्नेमिनरेन्द्रकीर्तिरतुलं चित्तोत्सवं च कृतान् ।  
 पूष्वनिकभवाजितं च कलुषं भक्तस्य वै जर्हतान् ॥  
 उद्धृत्या पद एव शर्मदपदे, स्तोत्रनहौ..... ।  
 शाखन् छ्त्रीजगदीशनिर्मलहृदि प्रायः सदा वतैतान् ॥४१॥

उक्त स्तोत्र की एक प्रति न भण्डार में संग्रहीत है जो संवत् १७०४ की लिखी हुई है।

## २२ परमात्मराज स्तोत्र

भट्टारक सकलकीर्ति द्वारा विरचित यह दूसरी रचना है जो जयपुर के शास्त्र भंडारों में उपलब्ध हुई है। यह सुन्दर एवं भावपूर्ण स्तोत्र है। कवि ने इसे महास्तवन लिखा है। स्तोत्र की भाषा सरल एवं सुन्दर है। इसकी एक प्रति जयपुर के क भंडार में संग्रहीत है। इसमें १६ पद्य हैं। स्तोत्र की पूरी प्रति ग्रंथ सूची के पृष्ठ ४०३ पर दे दी गयी है।

## २३ पासचरिए

पासचरिए अपभ्रंश भाषा की रचना है जिसे कवि तेजपाल ने सिबदास के पुत्र घूचलि के लिये निबद्ध की थी। इसकी एक अपूर्ण प्रति न भण्डार में संग्रहीत है। इस प्रति में ८ से ७७ तक पत्र हैं जिन में आठ संधियों का विवरण है। आठवीं संधि की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इयसिरि पास चरित्तं रड्यं कइ तेजपाल मारुणंदं अणुसंणियसुहहं घूचलि सिबदास पुत्तेण  
 सगगवावाल छीजा सुपनाएण लम्भए णाणं अरविदं दिक्खा अट्टमसंधी परिसमत्तो ॥

तेजपाल ने ग्रंथ में दुबई, घत्ता एवं कडवक इन तीन छन्दों का उपयोग किया है। पहिले घत्ता फिर दुबई तथा सबसे अन्त में कडवक इस क्रम से इन छन्दों का प्रयोग हुआ है। रचना अमी अप्रकाशित है।

तेजपाल १४ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। इनकी दो रचनाएं संभवनाथ चरित एवं वरांग चरित पहिले प्राप्त हो चुकी हैं।

## २४ पार्वनाथ चौपई

पार्वनाथ चौपई कवि लाखो की रचना है जिसे उन्होंने संवत् १७३४ में समाप्त किया था।

कवि राजस्थानी विद्वान् थे तथा बणहटका भ्राम के रहने वाले थे। उस समय मुगल बादशाह औरंगजेब का शासन था। पार्वनाथ चौपई में २६८ पद्य हैं जो सभी चौपई में हैं। रचना सरस भाषा में निबद्ध है।

### १५ पिंगल छन्द शास्त्र

छन्द शास्त्र पर माखन कवि द्वारा लिखी हुई यह बहुत सुन्दर रचना है। रचना का दूसरा नाम माखन छंद विलास भी है। माखन कवि के पिता जिनका नाम गोपाल था स्वयं भी कवि थे। रचना में दोहा चौबोला, छापय, सोरठा, मदनमोहन, हरिमालिका संखधारी, मालती, डिल्ल, करहंचा समानिका, मुजंगप्रयात, मंजुभाषिणी, सारंगिका, तरंगिका, भ्रमराबलि, मालिनी आदि कितने ही छन्दों के लक्षण दिये हुये हैं।

माखन कवि ने इसे संवत् १८६३ में समाप्त किया था। इसकी एक अपूर्ण प्रति 'श्र' भण्डार के संग्रह में है। इसका आदि भाग सूची के ३१० पृष्ठ पर दिया हुआ है।

### २६ पुण्यास्रवकथा कोश

टेकचन्द १८ वीं शताब्दी के प्रमुख हिन्दी कवि हो गये हैं। अबतक इनकी २० से भी अधिक रचनयें प्राप्त हो चुकी हैं। जिन में से कुछ के नाम निम्न प्रकार हैं:—

पंचपरमेष्ठी पूजा, कर्मदहन पूजा, तीनलोक पूजा ( सं० १८२८ ) सुदृष्टि तरंगिणी ( सं० १८३८ ) सोलहकारण पूजा, व्यसनराज वर्णन ( सं० १८२७ ) पञ्चकल्याण पूजा, पञ्चमेरु, पूजा, दशाध्याय सूत्र गद्य टीका, अध्यात्म बारहखड़ी, आदि। इनके पद भी मिलते हैं जो अध्यात्म रस से ओतप्रोत हैं।

टेकचंद के पितामह का नाम दीपचंद एवं पिता का नाम रामकृष्ण था। दीपचंद स्वयं भी अच्छे विद्वान् थे। कवि खण्डेलवाल जैन थे। ये मूलतः जयपुर निवासी थे लेकिन फिर साहिपुरा में जाकर रहने लगे थे। पुण्यास्रवकथाकोश इनकी एक और रचना है जो अभी जयपुर के 'क' भण्डार में प्राप्त हुई है। कवि ने इस रचना में जो अपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है:—

दीपचन्द साधर्मि भण, ते जिनधर्म विपै रत थण ।  
तिन से पुरस तरुणुं मंगपाय, कर्म जोग्य नही धर्म सुहाय ॥ ३२ ॥  
दीपचन्द तन तैं तन भयो, ताको नाम हली हरि दीयो ।  
रामकृष्ण तैं जो तन थाय, हठीचंद ता नाम धराय ॥ ३३ ॥  
सो फिर कर्म उदै तैं आय, साहिपुरै थिति कीनी जाय ।  
तहां भी बहुत काल जिन ज्ञान, खोयो मोह उदै तैं आनि ॥

×

×

×

साहिपुरा सुभयान में, भूलो सहारो पाय ।  
 धर्म लियो जिन देव को, नरभव सफल कराय ॥  
 नृप उमेद ता पुर विपै, करै राज बलवान ।  
 तिन अपने मुजबलथकी, अरि शिर कीहनी आनि ॥  
 ताके राज सुराज में ईतिमीति नहीं जान ।  
 अबलू पुर में सुखथकी तिठे हरप जु आनि ॥  
 करी कथा इस ग्रंथ की, छंद बंध पुर मांहि ।  
 ग्रंथ करन कछू बीचि में, आकुल उपजी नांहि ॥ ५३ ॥  
 साहि नगर साह्य भयो, पायो सुभ अवकास ।  
 पूरण ग्रंथ सुख तै कीयो, पुण्याश्रव पुण्यवास ॥ ५४ ॥

चौपई एवं दोहा छन्दों में लिखा हुआ एक सुन्दर ग्रंथ है । इसमें ७६ कथाओं का संग्रह है । कवि ने इसे संवत् १८२२ में समाप्त किया था जिसका रचना के अन्त में निम्न प्रकार उल्लेख है:—

संवत् अष्टादश सत् जानि, उपरि वीस दोय फिरि आनि ।  
 फागुण सुदि ग्यारमि निसमांहि, कियो समापत् उर हुल साहि ॥ ५५ ॥

प्रारम्भ में कवि ने लिखा है कि पुण्याश्रव कथा कोश पहिले प्राकृत भाषा में निबद्ध था लेकिन जब उसे जन साधारण नहीं समझने लगा तो सकल कीर्ति आदि विद्वानों ने संस्कृत में उसकी रचना की । जब संस्कृत समझना भी प्रत्येक के लिए क्लिष्ट होगया तो फिर आगरे में धनराम ने उसकी वचनिका की । टेकरचंद ने संभवतः इसी वचनिका के आधार पर इसकी छन्दोबद्ध रचना की होगी । कविने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है:—

साधर्मि धनराम जु भए, संस्कृत परधीन जु थए ।  
 तो यह ग्रंथ आगरै धान, कीयो वचनिका सरल बखान ॥  
 जिन धुनि तो बिन अन्तर होय, गणधर समझै और न कोय ।  
 तो प्राकृत में करै बखान, तब सब ही सुनि है गुणखानि ॥ ३ ॥  
 तब फिरि बुधि हीनता लई, संस्कृत वानी श्रुति ठई ।  
 फेरि अल्प बुध ज्ञान की होय, सकल कीर्ति आदिक जोय ॥  
 तिन यह महा सुगम करि लीए, संस्कृत अति सरल जु कीए ॥

## २७ ब्रह्मभावना

पं० रङ्गू अपभ्रंश भाषा के प्रसिद्ध कवि माने जाते हैं । इनकी प्रायः सभी रचनायें अपभ्रंश

भाषा में ही मिलती हैं जिनकी संख्या २० से भी अधिक है। कवि १५ वीं शताब्दी के विद्वान थे और मध्यप्रदेश—ग्वालियर के रहने वाले थे। वारह भावना कवि की एक मात्र रचना है जो हिन्दी में लिखी हुई मिली है लेकिन इसकी भाषा पर भी अपभ्रंश का प्रभाव है। रचना में ३६ पद्य हैं। रचना के अन्त में कवि ने ज्ञान की अगाधता के बारे में बहुत सुन्दर शब्दों में कहा है:—

कथन कहाणी ज्ञान की, कहन सुनन की नाहि। आपन्ही मैं पाइए, जब देखै घट माहि ॥

रचना के कुछ सुन्दर पद्य निम्न प्रकार हैं:—

संसार रूप कोई वस्तु नाहीं, भेदभाव अज्ञान। ज्ञान दृष्टि धरि देखिण, सब ही सिद्ध समान ॥

× × × × × ×

धर्म करावौ धरम करि, किरिया धरम न होय। धरम जु जानत वस्तु है, जो पहचानै कोय ॥

× × × × × ×

करन करावन ग्यान नहि, पढ़ि अर्थ बखानत और। ग्यान दिष्टि विन उपजै, मोहा तणी हु कोर ॥

रचना में रङ्गू का नाम कही नहीं दिया है केवल ग्रंथ समाप्ति पर “ज्ञान श्री रङ्गू कृत वारह भावना संपूर्ण” लिखा हुआ है जिससे इसको रङ्गू कृत लिखा गया है।

## २८ भुवनकीर्ति गीत

भुवनकीर्ति भट्टारक सकलकीर्ति के शिष्य थे और उनकी मृत्यु के परचान ये ही भट्टारक की गद्दी पर बैठे। राजस्थान के शास्त्र भंडारों में भट्टारकों के सम्बन्ध में कितने ही गीत मिले हैं इनमें बृचराज एवं भ० शुभचन्द द्वारा लिखे हुये गीत प्रमुख हैं। इस गीत में बृचराज ने भट्टारक भुवनकीर्ति की तपस्या एवं उनकी बहुश्रुतता के सम्बन्ध में गुणानुवाद किया गया है। गीत ऐतिहासिक है तथा इससे भुवन कीर्ति के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में जानकारी मिलती है। बृचराज १६ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वान<sup>१</sup> थे इनके द्वारा रची हुई अबतक पांच और रचनाएं मिल चुकी हैं। पूरा गीत अचिन्तल रूप से सूची के पृष्ठ ६६६-६६७ पर दिया हुआ है।

## २९ भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्रटीका

महा पं० आशाधर १३ वीं शताब्दी के संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान थे। इनके द्वारा लिखे गये कितने ही ग्रंथ मिलते हैं जो जैन समाज में बड़े ही आदर की दृष्टि से पढ़े जाते हैं। आपकी भूपाल चतुर्विंशतिस्तोत्र की संस्कृत टीका कुछ समय पूर्व तक अप्राप्य थी लेकिन अब इसकी २ प्रतियां जयपुर के अ भंडार में उपलब्ध हो चुकी हैं। आशाधर ने इसकी टीका अपने प्रिय शिष्य विनयचन्द्र के लिखे

१ विस्तृत परिचय के लिए देखिये डा० कासलोवाल द्वारा लिखित बृचराज एवं उनका साहित्य—जैन सन्देश शोधक—११

की थी। टीका बहुत सुन्दर है। टीकाकार ने विनयचन्द्र का टीका के अन्त में निम्न प्रकार उल्लेख दिया है:—

उषराम् इव मूर्च्छिः पूतकीर्तिः स तस्माद् । अजनि विनयचन्द्रः सत्त्वकोरैकचन्द्रः ॥

जगद्वृत्तसंगर्भाः शास्त्रसन्दर्भगर्भाः । शुचिचरित सहिष्णोर्यस्य चिन्वन्ति वाचः ॥

विनयचन्द्र ने कुछ अर्थ परचात् आशाधर द्वारा लिखित टीका पर भी टीका लिखी थी जिसकी एक प्रति 'श्री' भण्डार में उपलब्ध हुई है। टीका के अन्त में "इति विनयचन्द्रनैर्द्विविचितभूपाल-स्तोत्रसमाप्तम्" लिखा है। इस टीका की भाषा एवं शैली आशाधर के समान है।

### ३० मनमोदनपंचराती

कवि छत्र अथवा छत्रपति हिन्दी के प्रसिद्ध कवि हो गये हैं। इनकी मुख्य रचनाओं में 'कृपण-जगावन चरित्र' बहिले ही प्रकार में आनुका है जिसमें तुलसीदास के समकालीन कवि ब्रह्म गुलाल के जीवन चरित्र को अति सुन्दरता से वर्णन किया गया है। इनके द्वारा विरचित १०० से भी अधिक पद हमारे संग्रह में हैं। ये अवांगढ के निवासी थे। पं० बनवारीलालजी के शब्दों में छत्रपति एक आदर्शवादी लेखक थे जिनका धन संचय की ओर कुछ भी ध्यान न था। ये पांच आने से अधिक अपने पास नही रखते थे तथा एक पन्टे से अधिक के लिये वह अपनी दूकान नहीं खोलते थे।

छत्रपति लैसवाल थे। अभी इनकी 'मनमोदनपंचराती' एक और रचना उपलब्ध हुई है। इस पंचराती को कवि ने संवत् १६१६ में संभाषित किया था। कवि ने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है:—

वीर भये असरीर गई षट सत पन बरसहि । प्रघटो विक्रम वैत तनौ संवत सर सरसहि ॥

उनिसइसक घोडशहि पोष प्रतिपदा उजारी । पूर्वाषांड नछत्र अर्क दिन सब सुखकारी ॥

बर वृद्धि जोग मिद्धत इहप्रंथ समापित करिलियो । अनुपम असेष आनंद घन भोगत निवसत थिर थयो ॥

इसमें ५१३ पद्य हैं जिसमें सबैसा, दोहा आदि छन्दों का प्रयोग किया गया है। कवि के शब्दों में पंचराती में सभी स्पृष्ट कवित्त है जिनमें भिन्न २ रसों का वर्णन है—

सकलसिद्धिखम सिद्धि कर पंच परमगुर जेह । तिन पद पंकज कौ सदा प्रनमौ धरि मन नेह ॥

नाह अधिकार प्रबंध नहि फुटकर कवित्त समस्त । जुदा जुदा रस बरनऊं स्वादो चतुर प्रशस्त ॥

मित्र की प्रशंसा में जो पद्य लिखे हैं उनमें से दो पद्य देखिये।

मित्र होय जो न करे चारि बात कौं । उखेद तन धन धर्म मंत्र अनेक प्रकार के ॥

दोष देखि दावै पीठ पीछे होय जस गावै । कारज करत रहै सदा उपकार के ॥



साधारण रीति नहीं स्वारथ की प्रीति जाके । जब तब वचन प्रकांसत पयार के ॥  
दिल को उदार निरबाहै जो पै दे करार । मति कौ सुठार गुनवीसरे न थार के ॥२१३॥  
श्रंतरंग बाहिज मधुर जैसी किसमिस । धनलरचन कौ कुवेरवांनि धर है ॥  
गुन के बधाय कूँ जैसे चन्द सायर कूँ । दुख तम चूरिबे कूँ दिन दुपहर है ॥  
कारज के सारिबे कूँ हड़ बहू विधना है । मंत्र के सिवायबे कूँ मानों सुरगुर है ॥  
ऐसे सार मित्र सौ न कीजिये जुदाई कभी । धन मन तन सब वारि देना पर है ॥२१४॥

इस तरह मनमोदन पंचशती हिन्दी की बहुत ही सुन्दर रचना है जो शीघ्र ही प्रकाशन योग्य है ।

### ३१ मित्रविलास

मित्रविलास एक संग्रह ग्रंथ है जिसमें कवि घासी द्वारा विरचित विभिन्न रचनाओं का संकलन है । घासी के पिता का नाम बहालसिंह था । कवि ने अपने पिता एवं अपने मित्र भारामल के आग्रह से मित्र विलास की रचना की थी । ये भारामल संभवतः वे ही विद्वान हैं जिन्होंने दर्शनकथा, शीलकथा, दानकथा आदि कथायें लिखी हैं । कवि ने इसे संवत् १७८६ में समाप्त किया था जिसका उल्लेख ग्रंथ के अन्त में निम्न प्रकार हुआ है:—

कर्म रिपु सो तो चारों गति मैं घसीट फिर्यौ, ताही के प्रसाद सेती घासी नाम पायौ है ।  
भारामल मित्र वो बहालसिंह पिता मेरो, निनकीसहाय सेती ग्रंथ ये बनायौ है ॥  
या मैं भूल चूक जो हो सुधि सो सुधार ली जो, मो पै कृपा दृष्टि कीज्यो भाव ये जनायौ है ।  
दिगनिध सतजान हरि को चतुर्थ ठान, फागुण सुदि चौथ मान निजगुण गायौ है ॥

कवि ने ग्रंथ के प्रारम्भ में वर्णनीय विषय का निम्न प्रकार उल्लेख किया है:—

मित्र विलास महासुखदैन, वरनु वस्तु स्वाभाविक ऐन ।  
प्रगट देखिये लोक मंभार, संग प्रसाद अनेक प्रकार ॥  
शुभ अशुभ मन को प्रापति होय, संग कुमंग तराओ फल सोय ।  
पुद्गल वस्तु की निरणय ठीक, हम कूँ करनी है तहकीक ॥

मित्र विलास की भाषा एवं शैली दोनों ही सुन्दर हैं तथा पाठकों के मन को लुभावने वाली हैं । ग्रंथ प्रकाशन योग्य है ।

घासी कवि के पद भी मिलते हैं ।

### ३२ रागमाला—श्याममिश्र

राग रागिनियों पर निबद्ध रागमाला श्याम मिश्र की एक सुन्दर कृति है । इसका दूसरा नाम

कासम रसिक बिलास भी है। श्याममिश्र आगरे के रहते बाले थे लेकिन उन्होंने कासिमखानों के संरक्षणता में जाकर लाहौर में इसकी रचना की थी। कासिमखानों उस समय वहां का उदार एवं रसिक शासक था। कवि ने निम्न शब्दों में उसकी प्रशंसा की है।

कासमखानं सुजान कृपा कवि पर करी।  
रागनि की माला करिवे को चित धरी ॥

### दोहा

सेख खान के वंश में उपज्यौ कासमखानं।  
निस दीपग ज्यौ चन्द्रमा, दिन दीपक ज्यौ भान ॥  
कवि वरनै छवि खान की, सौ वरनी नहीं जाय।  
कासमखानं सुजान की अंग रही छवि ज्ञाय ॥

रागमाला में भैरौराग, मालकोशराग, हिंडोलनाराग, दीपकराग, गुणकरीराग, रामकली, ललितरागिनी, विज्ञावलरागिनी, कामोद, नट, केदारो, आसावरी, मल्हार आदि रागरागिनियों का वर्णन किया गया है।

श्याममिश्र के पिता का नाम चतुर्मुज मिश्र था। कवि ने रचना के अन्त में निम्न प्रकार वर्णन किया है—

संबन् सौरहसे वरप, उपर धीते दोइ।  
फागुन बुदी सनोदसी, सुनौ गुनी जन कोइ ॥

### सोरठा

पोथी रची लाहौर, स्याम आगरे न्यर के।  
राजघाट है ठौर, पुत्र चतुरमुज मिश्र के ॥

इति रागमाला ग्रंथ स्याममिश्र कृत संपूरण।

### ३३ रुक्मणिकुण्डली की रासो

यह त्रिपरदास की रचना है। रासो के प्रारम्भ में महाराजा भीमक की पुत्री रुक्मिणी के सौन्दर्य का वर्णन है। इसके पश्चात् रुक्मिणी के विवाह का प्रस्ताव, भीमक के पुत्र रुक्मि द्वारा शिशुपाल के साथ विवाह करने का प्रस्ताव, शिशुपाल को निमंत्रण तथा उनके सदलबल विवाह के लिये प्रस्ताव, रुक्मिणी का कृष्ण को पत्र लिख सन्देश भिजवाना, कृष्णजी द्वारा प्रस्ताव स्वीकृत करना तथा

सद्वैभक्त के साथ भीमनगरी की ओर प्रस्थान, पूजा के बहाने रुक्मिणी का मन्दिर की ओर जाना, रुक्मिणी का सौन्दर्य वर्णन, श्रीकृष्ण द्वारा रुक्मिणी को रथ में बैठाना, कृष्ण शिशुपाल युद्ध वर्णन, रुक्मिणी द्वारा कृष्ण की पूजा एवं उनका द्वारिका नगरी को प्रस्थान आदि का वर्णन किया गया है।

रासो में दूहा, कलरा, त्रोटक, नाराच जाति छंद आदि का प्रयोग किया गया है। रासो की भाषा राजस्थानी है।

### नाराच जातिछंद

आखंड मरीच सोहती, त्रिभवरूप मोहती ।  
 कृष्ण कण्ठ नेवरी, सुचल चरण घुचरी ॥  
 मधु मधु मधु मधु माल, श्रवण हंस सोमती ।  
 रतन हीर जडत जाम, खीर ली अनोपती ॥  
 मलमल जे चंद सूर, सीस फूल सोहए ।  
 बांसिंग बैणि रलै जेम, सिरह मणिज मोहए ॥  
 सोवन में रलहार, जडित कंठ में रलै ।  
 अर्चन मोति जडित जोति, नाकिउ जलाडुलै ॥

### ३४ लग्नचन्द्रिका

यह ज्योतिष का ग्रंथ है जिसकी भाषा स्योजीराम सौगाणी ने की थी। कवि आमेर के निवासी थे। इनके पिता का नाम कंवरपाल तथा गुरु का नाम पं० जैचन्द्रजी था। अपने गुरु एवं उनके शिष्यों के आग्रह से ही कवि ने इसकी भाषा संवत् १८७४ में समाप्त की थी। लग्नचन्द्रिका ज्योतिष का संस्कृत में अच्छा ग्रंथ है। भाषा टीका में ५२३ पद्य हैं। इसकी एक प्रति भ्रं भंडार में सुरक्षित है।

इनके लिखे हुये हिन्दी पद एवं कवित्त भी मिलते हैं:—

### ३५ लब्धि विधान चौपई

लब्धि विधान चौपई एक कथात्मक कृति है इसमें लब्धिविधान व्रत से सम्बन्धित कथा दी हुई है। यह व्रत चैत्र एवं भाद्रपद मास के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा, द्वितीया एवं तृतीया के दिन किया जाता है। इस व्रत के करने से पापों की शान्ति होती है।

चौपई के रचयिता हैं कवि भीषम जिनका नाम प्रथमवार सुना जा रहा है। कवि सांगानेर (जयपुर) के रहने वाले थे। ये खण्डेलवाल जैन थे तथा गोधा इनका गोत्र था। सांगानेर में उस समय स्वाध्याय एवं पूजा का खूब प्रचार था। इन्होंने इसे संवत् १६१७ (सन् १५६०) में समाप्त किया था।

दोहा और चौपई मिला कर पद्यों की संख्या २०१ है। कवि ने जो अपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है:—

संवत् सोलहसै सतरौ, फर्रिगुण मास जबै उतरौ।  
 उजल पाखि तेरसि तिथि जांण, ता दिन कथा गद्दी परवाणि ॥६६॥  
 बरतै निवाली मांहि विख्यात, जैनधर्म तसु गौधा जाति।  
 यह कथा भीषम कवि कही, जिनपुराण मांहि जैसी लही ॥६७॥  
 सांगानेरी बसै सुभ गांव, मानं नृपति तस चहु खंड नाम।  
 जहि कै राजि सुखी सब लोग, सकल वस्तु को कीजे भोग ॥६८॥  
 जैनधर्म की महिमां बणी, संतिक पूजा होई तिहघणी।  
 श्रावक लोक बसै सुजांण, सांफ संवारा सुणै पुराण ॥६९॥  
 आठ निधि पूजा जिणेश्वर करै, रागदोष नहीं मन में धरै।  
 दान चारि सुपात्रा देय, मनिष जन्म कौ लाहौ लेय ॥७०॥  
 कडा बंध चौपई जांणि, पूरा हूवा दोइसै प्रमाण।  
 जिनवाणी का अन्त न जास, भवि जीव जे लहै सुखवास ॥७०॥  
 इति श्री लब्धि विधान की चौपई संपूर्ण।

### ३६ वद्धमानपुराण

इसका दूसरा नाम जिनरात्रिब्रत महात्म्य भी है। मुनि पद्मनन्दि इस पुराण के रचयिता हैं। यह ग्रंथ दो परिच्छेदों में विभक्त है। प्रथम सर्ग में ३५६ तथा दूसरे परिच्छेद में २०५ पद्य हैं। मुनि पद्मनन्दि प्रभाचन्द्र मुनि के पट्ट के थे। रचना संवत् इसमें नहीं दिया गया है लेकिन लेखन काल के आधार से यह रचना १५ वीं शताब्दी से पूर्व होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त ये प्रभाचन्द्र मुनि संभवतः वेदी हैं जिन्होंने आराधनासार ग्रन्थ की रचना की थी और जो भ० देवेन्द्रकीर्ति के प्रमुख शिष्य थे।

### ३७ विषहरण विधि

यह एक आयुर्वेदिक रचना है जिसमें विभिन्न प्रकार के विष एवं उनके मुक्ति का उपाय बतलाया गया है। विषहरण विधि संश्लेष वैद्य की कृति है। ये मुनिहरण के शिष्य थे। इन्होंने इसे कुछ प्राचीन ग्रंथों के आधार पर तथा अपने गुरु ( जो स्वयं भी वैद्य थे ) के बताये हुए ज्ञान के आधार पर हिन्दी पद्य में लिखकर इसे संवत् १७४१ में पूर्ण किया था। ये चन्द्रपुरी के रहने वाले थे। ग्रंथ में १२७ दोहा चौपई छन्द हैं। रचना का प्रारम्भ निम्न प्रकार से हुआ है:—

अथ विषहरण लिख्यते—

दोहरा—श्री गनेस सरस्वती, सुमरि गुर चरनतु चितलाय ।  
पेत्रपाल दुखहरन कौ, सुमति सुबुधि बताय ॥

### चौपई

श्री जिनचंद सुवाच बखानि, रच्यौ सोभाग्य ते यह हरप मुनिजान ।  
इन सीख दीनी जीव दया आनि, संतोष बैद्य लइ तिरहमानि ॥२॥

### ३८ व्रतकथाकोश

इसमें व्रत कथाओं का संग्रह है जिनकी संख्या ३७ से भी अधिक है। कथाकार पं० दामोदर एवं देवेन्द्रकीर्ति हैं। दोनों ही धर्मचन्द्र सूरि के शिष्य थे। मेमा मालूम पड़ता है कि देवेन्द्रकीर्ति का पूर्व नाम दामोदर था इसलिये जो कथायें उन्होंने अपनी गृहस्थावस्था में लिखी थीं उनमें दामोदर कृत लिख दिया है तथा साधु बनने के पश्चात् जो कथायें लिखी उनमें देवेन्द्रकीर्ति लिख दिया गया। दामोदर का उल्लेख प्रथम, षष्ठ, एकादश, द्वादश, चतुर्दश, एवं एकविंशति कथाओं की समाप्ति पर आया है।

कथा कोश संस्कृत गद्य में है तथा भाषा, भाव एवं शैली की दृष्टि से सभी कथायें उच्चस्तर की हैं। इसकी एक अपूर्ण प्रति अ भंडार में सुरक्षित है। इसकी दूसरी अपूर्ण प्रति ग्रंथ संख्या २५४३ पर देखें। इसमें ४४ कथाओं तक पाठ है।

### ३९ व्रतकथाकोश

भट्टारक सकलकीर्ति १५ वीं शताब्दी के प्रकांड विद्वान् थे। इन्होंने संस्कृत भाषा में बहुत ग्रंथ लिखे हैं जिनमें आदिपुराण, धन्यकुमार चरित्र, पुराणसार संग्रह, यशोधर चरित्र, वर्द्धमान पुराण आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। अपने जवरदस्त प्रभाव के कारण उन्होंने एक नई भट्टारक परम्परा को जन्म दिया जिसमें ३० जिनदास, भुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, शुभचन्द जैसे उच्चकोटि के विद्वान् हुये।

व्रतकथा कोश अभी उनकी रचनाओं में से एक रचना है। इसमें अधिकांश कथायें उन्हीं के द्वारा विरचित हैं। कुछ कथायें अत्र पंडित तथा रत्नकीर्ति आदि विद्वानों की भी हैं। कथायें संस्कृत पद्य में हैं। ३० सकलकीर्ति ने सुगन्धदशमी कथा के अन्त में अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है:—

असमगुण समुद्रान्, स्वर्ग मोक्षाय हेतून् ।

प्रकटित शिवमार्गान्, सद्गुरुन् पंचपूज्यान् ॥

विस्तृत परिचय देखिये डा० कासलीबाबु द्वारा लिखित बुकसाज एवं उनका साहित्य—जेन सन्देश घोषांक

त्रिसुवनपतिभव्वैस्तीर्थनाथादिमुख्यान् ।  
जगति सकलकीर्त्या संस्तुवे तद् गुणाप्त्यै ॥

प्रति में ३ पत्र ( १४३ से १४५ ) वाद में लिखे गये हैं । प्रति प्राचीन तथा संभवतः १७ वीं शताब्दी की लिखी हुई है । कथा कोरा में कुल कथाओं की संख्या ५० है ।

### ४० समोसरण

१७ वीं शताब्दी में ब्रह्म गुलाल हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि हो गये हैं । इनके जीवन पर कवि छत्रपति ने एक सुन्दर काव्य लिखा है । इनके पिता का नाम हल्ल था जो चन्दवार के राजा कौसि के आश्रित थे । ब्रह्म गुलाल स्वांग भरना जानते थे और इस कला में पूर्ण प्रवीण थे । एक बार इन्होंने मुनि का स्वांग भरा और ये मुनि भी बन गये । इनके द्वारा विरचित अब तक ८ रचनाएं उपलब्ध हो चुकी हैं । जिसमें त्रेपन क्रिया ( संवत् १६६५ ) गुलाल पच्चीसी, जलगालन क्रिया, विवेक चौपई, कृपण जगावन चरित्र ( १६७१ ), रसविधान चौपई एवं धर्मस्वरूप के नाम उल्लेखनीय हैं ।

‘समोसरण’ एक स्तोत्र के रूप में रचना है जिसे इन्होंने संवत् १६६८ में समाप्त किया था । इसमें भगवान महावीर के समवसरण का वर्णन किया गया है जो ६७ पद्यों में पूर्ण होता है । इन्होंने इसमें अपना परिचय देते हुये लिखा है कि वे जयनन्दि के शिष्य थे ।

स रहसै अढसठिसमै, माघ दसै सित पङ्क ।

गुलाल ब्रह्म भनि गीत गति, जयोनन्दि पद सिद्ध ॥६६॥

### ४१ सोनागिर पच्चीसी

यह एक ऐतिहासिक रचना है जिसमें सोनागिर सिद्ध क्षेत्र का संक्षिप्त वर्णन दिया हुआ है । दिगम्बर विद्वानों ने इस तरह के क्षेत्रों के वर्णन बहुत कम लिखे हैं इसलिये भी इस रचना का पर्याप्त महत्व है । सोनागिर पहिले दतिया स्टेट में था अब वह मध्यप्रदेश में है । कवि भागीरथ ने इसे संवत् १८६१ ज्येष्ठ सुदी १४ को पूर्ण किया था । रचना में क्षेत्र के मुख्य मन्दिर, परिक्रमा एवं अन्य मन्दिरों का भी संक्षिप्त वर्णन दिया हुआ है । रचना का अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है:....

मेला है जहा कौ कातिक सुद पत्नी को,

हाट हू वजार नाना भांति जुरि आए हैं ।

भावधर बंदन कौ पूजत जिनेंद्र काज,

पाप मूल निकंदन कौ दूर हू सै धाए है ॥

गोठै जैड नारे पुनि दान देह नाना विधि,

सुर्ग पंथ जाइवे कौ पूरन पद पाए है ।

कीजिये सहाइ पाइ आए हैं भागीरथ,  
गुरुन के प्रताप सौन गिरी के गुण गाए हैं ॥

### दोहा

जेठ सुदी चौदस भली, जा दिन रची बनाइ ।  
संवत् अष्टादस इकिसठ, संवत् लेउ गिनाइ ॥  
पढ़ै सुनै जो भाव धर, औरै वैइ सुनाइ ।  
मनबंधित फल कौ लिये, सो पूरन पद को पाइ ॥

### ४२ हम्मीररासो

हम्मीररासो एक ऐतिहासिक काव्य है जिसमें महेश कवि ने महिमासाह का बादशाह अलाउद्दीन के साथ झगडा, महिमासाह का भागकर राणथम्भौर के महाराजा हम्मीर की शरण में आना, बादशाह अलाउद्दीन का हम्मीर को महिमासाह को छोडने के लिये दार २ समझाना एवं अन्त में अलाउद्दीन एवं हम्मीर का भयंकर युद्ध का वर्णन किया गया है । कवि की वर्णन शैली सुन्दर एवं सरल है ।

रासो कव और कहां लिखा गया था इसका कवि ने कोई परिचय नहीं दिया है । उसने केषल अपना नामोल्लेख किया है वह निम्न प्रकार है ।

मिले रावपति साही धीर ज्यौ नीर समाही ।  
ज्यौ पारिस कौ परसि वजर कंचन होय जाई ॥  
अलादीन हमीर से हुआ न हौस्यौ होयसे ।  
कवि महेस यम उचरै वै सभांसहै तखु पुरवसै ॥

## अज्ञात एवं महत्वपूर्णा ग्रंथों की सूची

| क्रमांक | प्रं. सू. क्र. | ग्रंथ का नाम                 | ग्रंथकार             | भाषा | ग्रंथसंख्या | रचना काल      |
|---------|----------------|------------------------------|----------------------|------|-------------|---------------|
| १.      | ४३०१           | अनंतव्रतोद्यापनपूजा          | प्रा० गुराचंद्र      | सं०  | प्र         | १६३०          |
| २.      | ४३६२           | अनंतचतुर्दशीपूजा             | शांतिदास             | सं०  | ख           | ×             |
| ३.      | २८६५           | अभिधान रत्नाकर               | धर्मचंद्रपरिया       | सं०  | घ           | ×             |
| ४.      | ४३६१           | अभिषेक विधि                  | लक्ष्मीसेन           | सं०  | ज           | ×             |
| ५.      | ५६६            | अमृतधर्मरसकाव्य              | गुराचंद्र            | सं०  | ञ           | १६ वी शताब्दी |
| ६.      | ४४०१           | अष्टाहिकापूजाकथा             | सुरेन्द्रकीर्ति      | सं०  | झ           | १८५१          |
| ७.      | २५३५           | आराधनासारप्रबन्ध             | प्रभाचंद्र           | सं०  | ट           | ×             |
| ८.      | ६१६            | आराधनासारवृत्ति              | पं० घाशाघर           | सं०  | ड           | १३ वी शताब्दी |
| ९.      | ४४३५           | शुद्धिभण्डलपूजा              | ज्ञानभूषण            | सं०  | ख           | ×             |
| १०.     | ४८८०           | कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा        | नलितकीर्ति           | सं०  | घ           | ×             |
| ११.     | २५०३           | कथाकोश                       | देवेन्द्रकीर्ति      | सं०  | घ           | ×             |
| १२.     | ५४५६           | कथासंग्रह                    | नलितकीर्ति           | सं०  | घ           | ×             |
| १३.     | ४४४६           | कर्मचूरव्रतोद्यापन           | लक्ष्मीसेन           | सं०  | छ           | ×             |
| १४.     | ३८२८           | कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका       | देवतिलक              | सं०  | घ           | ×             |
| १५.     | ३८२७           | कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका       | पं० घाशाघर           | सं०  | घ           | १३ वी "       |
| १६.     | ४४६७           | कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा       | प्रभाचंद्र           | सं०  | घ           | १५ वी "       |
| १७.     | २७५८           | कातन्त्राव्रतभ्रमसूत्रावचूरि | चारित्रसिंह          | सं०  | घ           | १६ वी "       |
| १८.     | ४४७३           | कुण्डलगिरिपूजा               | भ० विश्वभूषण         | सं०  | घ           | ×             |
| १९.     | २०२३           | कुमारसंभवटीका                | कनकसागर              | सं०  | घ           | ×             |
| २०.     | ४४८४           | गजपंधामण्डलपूजनविधान         | भ० क्षेमेन्द्रकीर्ति | सं०  | ख           | ×             |
| २१.     | २०२८           | गजसिंहकुमारचरित्र            | विनयचन्द्रसूरि       | सं०  | ड           | ×             |
| २२.     | ३८३६           | गीतवीतराग                    | शमिनव चाणकीर्ति      | सं०  | घ           | ×             |
| २३.     | ११७            | गोम्मटसारकर्मकाण्डटीका       | कनकनन्दि             | सं०  | क           | ×             |
| २४.     | ११८            | गोम्मटसारकर्मकाण्डटीका       | ज्ञानभूषण            | सं०  | क           | ×             |
| २५.     | ६१             | गोम्मटसारटीका                | सकलभूषण              | सं०  | क           | ×             |
| २६.     | ५४३६           | चंद्रनपष्ठीव्रतकथा           | छत्रसेन              | सं०  | घ           | ×             |
| २७.     | २०४८           | चंद्रप्रभकाव्यपंजिका         | गुरानन्दि            | सं०  | ञ           | ×             |



| क्रमांक | प्रं. सू. क्र. | ग्रंथ का नाम                | ग्रंथकार           | भाषा      | ग्रंथभंडार | रचना काल       |
|---------|----------------|-----------------------------|--------------------|-----------|------------|----------------|
| २८.     | ४५१२           | चारित्र्यशुद्धिविधान        | मुमतिब्रह्म        | सं०       | ब          | ×              |
| २९.     | ४६१४           | ज्ञानपंचविंशतिकाब्रतोग्रापन | भ० सुरेन्द्रकीर्ति | सं०       | ब          | ×              |
| ३०.     | ४६२१           | शमोकारपंचैतीसीब्रतविधान     | कनककीर्ति          | सं०       | ड          | ×              |
| ३१.     | २१३            | तत्ववर्णन                   | शुभचंद्र           | सं०       | अ          | ×              |
| ३२.     | ५४४६           | त्रेपनक्रियोग्रापन          | देवेन्द्रकीर्ति    | सं०       | घ          | ×              |
| ३३.     | ४७०५           | दशलक्षणब्रतपूजा             | जिनचन्द्रसूरि      | सं०       | ङ          | ×              |
| ३४.     | ४७०६           | दशलक्षणब्रतपूजा             | माल्लभूषण          | सं०       | छ          | ×              |
| ३५.     | ४७०२           | दशलक्षणब्रतपूजा             | मुमतिसागर          | सं०       | ड          | ×              |
| ३६.     | ४७२१           | द्वादशब्रतोग्रापनपूजा       | देवेन्द्रकीर्ति    | सं०       | अ          | १७७२           |
| ३७.     | ४७२४           | द्वादशब्रतोग्रापनपूजा       | पद्मनाद            | सं०       | घ          | ×              |
| ३८.     | ४७२५           | ” ” ”                       | जगत्कांति          | सं०       | ब          | ×              |
| ३९.     | ७७२            | धर्मप्रश्नोत्तर             | विमलकीर्ति         | सं०       | अ          | ×              |
| ४०.     | २१५२           | नागकुमारचरित्रटीका          | प्रभावन्द्र        | सं०       | ट          | ×              |
| ४१.     | ४८१            | निजस्मृति                   | ×                  | सं०       | ट          | ×              |
| ४२.     | ४८१९           | नेमिनाथपूजा                 | सुरेन्द्रकीर्ति    | सं०       | घ          | ×              |
| ४३.     | ४८२३           | पंचकल्याणकपूजा              | ”                  | सं०       | क          | ×              |
| ४४.     | ३९७१           | परमात्मराजस्तोत्र           | सकलकीर्ति          | सं०       | घ          | ×              |
| ४५.     | ५४२८           | प्रशस्ति                    | दामोदर             | सं०       | घ          | ×              |
| ४६.     | १९१८           | पुराणसार                    | श्रीचंद्रमुनि      | सं०       | घ          | १०७७           |
| ४७.     | ५४४०           | भावनाचौतीसी                 | भ० पद्मनन्द        | सं०       | घ          | ×              |
| ४८.     | ४०५३           | भूपालचतुर्विंशतिटीका        | श्रीनाथर           | सं०       | अ          | १३ वीं शताब्दी |
| ४९.     | ४०५५           | भूपालचतुर्विंशतिटीका        | विश्वचंद्र         | सं०       | घ          | १३ वीं ”       |
| ५०.     | ५०५७           | सांगीतुं गीगिरिमंडलपूजा     | विश्वभूषण          | सं०       | ख          | १७५६           |
| ५१.     | ५३८१           | मुनिसुब्रतछंद               | प्रभाचंद्र         | सं०       | हि० अ      | ×              |
| ५२.     | ९७९            | मूलाचारटीका                 | बसुनंधि            | प्रा० सं० | अ          | ×              |
| ५३.     | २३२३           | शशोधरचरित्रटिप्पण           | प्रभाचंद्र         | सं०       | अ          | ×              |
| ५४.     | २६८३           | रत्नत्रयविधि                | श्रीनाथर           | सं०       | अ          | ×              |
| ५५.     | २९३५           | रूपमञ्जरीनाममाला            | रूपचंद्र           | सं०       | अ          | १६४४           |
| ५६.     | २३५०           | बद्धमानकाव्य                | मुनिपद्मनंधि       | सं०       | अ          | १३ वीं ”       |

| क्रमांक प्रं. सू. क्र. | ग्रंथ का नाम               | ग्रंथकार      | भाषा  | ग्रंथभंडार | रचना काल |
|------------------------|----------------------------|---------------|-------|------------|----------|
| ५७.                    | ३२६५ वाग्भट्टलंकारटीका     | वाबिराज       | सं०   | घ          | १७२६     |
| ५८.                    | ५४४७ वीतरागस्तोत्र         | भ० पधनंदि     | सं०   | घ          | ×        |
| ५९.                    | ५२२५ शरदुन्मधवीपिका        | सिहनदि        | सं०   | घ          | ×        |
| ६०.                    | ५८२६ शांतिनाथस्तोत्र       | गुणभद्रस्वामी | सं०   | घ          | ×        |
| ६१.                    | ४१०० शांतिनाथस्तोत्र       | मुनिभद्र      | सं०   | घ          | ×        |
| ६२.                    | ५१६६ षणवतिक्षेत्रपालपूजा   | विश्वसेन      | सं०   | घ          | ×        |
| ६३.                    | ५४६ षष्ठ्यधिकशतकटीका       | राजहसोपाध्याय | सं०   | घ          | ×        |
| ६४.                    | १८२३ सप्तनयावबोध           | मुनिनेत्रसिंह | सं०   | घ          | ×        |
| ६५.                    | ५४६७ सरस्वतीमूर्ति         | प्रासाधर      | सं०   | घ          | १३ वी    |
| ६६.                    | ४६४६ सिद्धचक्रपूजा         | प्रभाचद्      | सं०   | ङ          | ×        |
| ६७.                    | २७३१ सिंहामनद्वात्रिंशिका  | क्षेमकरमुनि   | सं०   | च          | ×        |
| ६८.                    | ३८१८ कल्याणक               | समन्तभद्र     | प्रा० | ङ          | ×        |
| ६९.                    | ३६३१ धर्मचन्द्रप्रबन्ध     | धर्मचन्द्र    | प्रा० | च          | ×        |
| ७०.                    | १००५ यत्याचार              | प्रा० वसुनंदि | प्रा० | घ          | ×        |
| ७१.                    | १८३६ अजितनाथपुराण          | विजयसिंह      | अप०   | ज          | १५०५     |
| ७२.                    | ६४५४ कल्याणकाविधि          | विनयचंद       | अप०   | घ          | ×        |
| ७३.                    | ५४४ चूनडी                  | "             | "     | घ          | ×        |
| ७४.                    | २६८८ जिनपूजापुरंदरविधानकथा | धर्मरबीति     | अप०   | घ          | ×        |
| ७५.                    | ५४३६ जिनरत्रिंशद्विधानकथा  | नरसेन         | अप०   | घ          | १७ वी    |
| ७६.                    | २०६७ रोमिणाहचरित्र         | लठमगुदेव      | अप०   | घ          | ×        |
| ७७.                    | २०६८ रोमिणाहचरित्र         | दामोदर        | अप०   | घ          | १२८७     |
| ७८.                    | ५६०२ त्रिशर्तजिनचउवीसी     | महारासिंह     | अप०   | घ          | ×        |
| ७९.                    | ५४३६ दशालक्षणकथा           | गुणभद्र       | अप०   | घ          | ×        |
| ८०.                    | २६८८ दुधारसविधानकथा        | विनयचंद       | अप०   | घ          | ×        |
| ८१.                    | ४६८६ नन्दीश्वरजयमाल        | कनककीर्ति     | अप०   | घ          | ×        |
| ८२.                    | २६८८ निर्मरपंचमीविधानकथा   | विनयचंद       | अप०   | घ          | ×        |
| ८३.                    | २१७६ पासचरित्र             | तेजपाल        | अप०   | ट          | ×        |
| ८४.                    | ५४३६ रोहिणीविधान           | गुणभद्र       | अप०   | घ          | ×        |
| ८५.                    | २६८३ रोहिणी चरित्र         | देवनदि        | अप०   | घ          | १५ वी    |

| क्रमांक | सं. सू. क्र. | ग्रंथ का नाम       | ग्रंथकार         | भाषा  | ग्रंथमंडार | रचना काल |               |
|---------|--------------|--------------------|------------------|-------|------------|----------|---------------|
| ८६.     | २४३७         | सम्भवजिष्णुणाहचरित | तेजपाल           | श्री० | ब          | ×        |               |
| ८७.     | ५४५४         | सम्यक्त्वकौमुदी    | सहस्रपाल         | श्र०  | श          | ×        |               |
| ८८.     | २६८८         | मुखसंपत्तिविधानकथा | विमलकीर्ति       | श्र०  | श          | ×        |               |
| ८९.     | ५४३९         | सुगन्धदशमीकथा      | "                | श्र०  | श          | ×        |               |
| ९०.     | ५३९१         | अंजनारास           | धर्मभूषण         | हि०   | प०         | श        | ×             |
| ९१.     | ४३४७         | अक्षयनिधिपूजा      | ज्ञानभूषण        | हि०   | प०         | ड        | ×             |
| ९२.     | २५०८         | अठारहनातेकीकथा     | शुभिलालचद        | हि०   | प०         | श        | ×             |
| ९३.     | ६००३         | अनन्तकेन्द्रपथ     | धर्मबन्ध         | हि०   | प०         | क        | ×             |
| ९४.     | ४३८१         | अनन्तव्रतारास      | ब० जिनदाम        | हि०   | प०         | श        | १५ बी         |
| ९५.     | ४२१५         | अर्हनेकचौढालियागीत | विमलकीर्ति       | हि०   | प०         | श        | १६८१          |
| ९६.     | ५७६७         | आदित्यवारकथा       | रायमल्ल          | हि०   | प०         | ड        | ×             |
| ९७.     | ५४२५         | आदित्यवारकथा       | बादिचन्द्र       | हि०   | प०         | श        | ×             |
| ९८.     | ५३९२         | आदीश्वरकासमवसरन    | ×                | हि०   | प०         | श        | १६६७          |
| ९९.     | ५७३०         | आदित्यवारकथा       | सुरेन्द्रकीर्ति  | हि०   | प०         | श        | १७४१          |
| १००.    | ५९१५         | आदिनाथस्तवन        | पल्ल             | हि०   | प०         | छ        | १६ धी         |
| १०१.    | ५४८७         | आराधनाप्रतिबोधसार  | विमलेन्द्रकीर्ति | हि०   | प०         | श        |               |
| १०२.    | ३८६४         | आरतीसंग्रह         | ब० जिनदाम        | हि०   | प०         | श        | १५ बी शताब्दी |
| १०३.    | ३४००         | उपदेशलक्ष्मीसी     | जिनहर्ष          | हि०   | प०         | श        | ८             |
| १०४.    | ४४२८         | शुभिमंडलपूजा       | श्री० सुरगान्धि  | हि०   | प०         | श        | ×             |
| १०५.    | २५४०         | कठियारकानडरीचौपई   | ×                | हि०   | प०         | श        | १७४७          |
| १०६.    | ६०५२         | कवित्त             | शगरदास           | हि०   | प०         | ट        | १८ बी शताब्दी |
| १०७.    | ६०६५         | कवित्त             | बनारमीदाम        | हि०   | प०         | ट        | १७ बी शताब्दी |
| १०८.    | ५३९७         | कर्मचूत्रतबेलि     | मुनिमकलचद        | हि०   | प०         | श        | १७ बी शताब्दी |
| १०९.    | ५६०८         | कविवल्लभ           | हरिचरणदास        | हि०   | प०         | श        | ×             |
| ११०.    | ३८६४         | कृष्णछंद           | चन्द्रकीर्ति     | हि०   | प०         | श        | १६ बी शताब्दी |
| १११.    | ५४८७         | कृष्णरुक्मिणीबेलि  | पृ०वीराज         | हि०   | प०         | श        | १६३७          |
| ११२.    | २५५७         | कृष्णरुक्मिणीसंगल  | पदमभगत           | हि०   | प०         | श        | १८९०          |
| ११३.    | ५९१५         | गीत                | पल्ल             | हि०   | प०         | छ        | १६ बी शताब्दी |
| ११४.    | ३८६४         | गुरुछंद            | शुभचंद           | हि०   | प०         | श        | १६ बी शताब्दी |

| क्रमांक | प्रं. सू. क्र. | ग्रंथ का नाम           | ग्रंथकार         | भाषा | ग्रंथभंडार | रचना काल      |
|---------|----------------|------------------------|------------------|------|------------|---------------|
| ११५.    | ५६३२           | चतुर्दशीकथा            | डालूराम          | हि०  | प० छ       | १७६५          |
| ११६.    | ५४१७           | चतुर्विंशतिच्छापय      | गुणकीर्ति        | हि०  | प० घ       | १७७७          |
| ११७.    | ४३२६           | चतुर्विंशतितीर्थकरपूजा | नेमिचंदपाटनी     | हि०  | प० क       | १८८०          |
| ११८.    | ४५३५           | चतुर्विंशतितीर्थकरपूजा | मुगनचंद          | हि०  | प० ख       | १६२६          |
| ११९.    | २५६२           | चन्द्रकुमारकीवार्त्ता  | प्रतापसह         | हि०  | प० ज       | १८४१          |
| १२०.    | २५६४           | चन्द्रनमलयागिरीकथा     | चत्तर            | हि०  | प० घ       | १७०१          |
| १२१.    | २५६३           | चन्द्रनमलयागिरीकथा     | भद्रसेन          | हि०  | प० घ       | ×             |
| १२२.    | १८७६           | चन्द्रप्रभपुराण        | होरालाल          | हि०  | प० क       | १६१३          |
| १२३.    | १५७            | चर्चासागर              | बम्पालाल         | हि०  | ग० घ       | ×             |
| १२४.    | १५४            | चर्चासार               | पं० शिवजीलाल     | हि०  | ग० क       | ×             |
| १२५.    | २०५८           | चारुदत्तचरित्र         | कल्याणकीर्ति     | हि०  | प० घ       | १६६२          |
| १२६.    | ५६१३           | चिंतामणिजयमाल          | ठक्कुरसी         | हि०  | प० छ       | १६ वी शताब्दी |
| १२७.    | ५६१५           | चेतनगीत                | मुनिसिंहनरि      | हि०  | प० छ       | १७ वी शताब्दी |
| १२८.    | ५४०१           | जिनचौबीसीभवान्तरास     | विमनेन्द्रकीर्ति | हि०  | प० घ       | ×             |
| १२९.    | ५४०२           | जिनदत्तचौपई            | रत्नकवि          | हि०  | प० घ       | १३३४          |
| १३०.    | ५४१६           | ज्योतिपसार             | कृपाराम          | हि०  | प० घ       | १७६२          |
| १३१.    | ६०६१           | ज्ञानवावनी             | मतिशेखर          | हि०  | प० ट       | १५७४          |
| १३२.    | ५८२६           | टं डायामीत             | बूचराज           | हि०  | प० छ       | १६ वी शताब्दी |
| १३३.    | ३६६            | तत्त्वार्थसूत्रटीका    | कनककीर्ति        | हि०  | ग० ड       | १८ वी ”       |
| १३४.    | ३६८            | तत्त्वार्थसूत्रटीका    | पांडेजयवन्त      | हि०  | ग० छ       | १८ वी ”       |
| १३५.    | ३७४            | तत्त्वार्थसूत्रटीका    | राजमल्ल          | हि०  | ग० घ       | १७ वी ”       |
| १३६.    | ३७८            | तत्त्वार्थसूत्रभाषा    | शिवरचंद          | हि०  | प० क       | १६ वी ”       |
| १३७.    | ४६२७           | तीनचौबीसीपूजा          | नेमीचंदपाटनी     | हि०  | प० क       | १८६६          |
| १३८.    | ६००६           | तीसचौबीसीचौपई          | व्याम            | हि०  | प० भ       | १७७६          |
| १३९.    | ५८८१           | तेईसबोलविषयख           | ×                | हि०  | प० छ       | १६ वी शताब्दी |
| १४०.    | १७३६           | दर्शनसारभाषा           | नथमल             | हि०  | प० क       | १६२०          |
| १४१.    | १७४०           | दर्शनसारभाषा           | शिवजीलाल         | हि०  | ग० क       | १६२३          |
| १४२.    | ४२४५           | देवकीकीदास             | बृहन्नरकामसनीवाल | हि०  | प० घ       | ×             |
| १४३.    | ४६८            | द्रव्यसंग्रहभाषा       | बाबा दुर्गाचंद   | हि०  | ग० क       | १६६६          |

| क्रमांक | प्रं. सू. क्र. | ग्रंथ का नाम           | ग्रंथकार       | भाषा   | ग्रंथसंख्या | रचना काल       |
|---------|----------------|------------------------|----------------|--------|-------------|----------------|
| १४४.    | ५८८१           | द्रव्यसंग्रहभाषा       | हेमराज         | हि० ग० | छ           | १७३१           |
| १४५.    | ५४०२           | नगरों की वसापतका विवरण | ×              | हि० ग० | घ           | ×              |
| १४६.    | २६०७           | नागमंता                | ×              | हि० प० | घ           | १८६३           |
| १४७.    | ४२४६           | नागश्रीसङ्काय          | विश्वभूषण      | हि० प० | घ           | ×              |
| १४८.    | ८११            | निजामरिण               | श० जिनदाम      | हि० प० | क           | १५ वीं शताब्दी |
| १४९.    | ५४४६           | नेमिजिनंदव्याहलो       | श्वेतसी        | हि० प० | घ           | १७ वीं "       |
| १५०.    | २१५८           | नेमीजीकाचरित्र         | भारण्व         | हि० प० | घ           | १८०४           |
| १५१.    | ५३६२           | नेमिजीकोमंगल           | विश्वभूषण      | हि० प० | घ           | १६६८           |
| १५२.    | ३८६४           | नेमिनाथछंद             | सुभचंद         | हि० प० | घ           | १६ वीं "       |
| १५३.    | ४२५४           | नेमिराजमतिगीत          | हीरानंद        | हि० प० | घ           | ×              |
| १५४.    | २६१४           | नेमिराजुलव्याहलो       | गोपीकृष्ण      | हि० प० | घ           | १८६३           |
| १५५.    | ५४२६           | नेमिराजुलविवाद         | श० ज्ञानसागर   | हि० प० | घ           | १७ वीं "       |
| १५६.    | ५६१५           | नेमीश्वरकाचौमासा       | मुनिमिह्रनंदि  | हि० प० | छ           | १७ वीं "       |
| १५७.    | ५८२६           | नेमिश्वरकाहिंबोलना     | मुनिरत्नकीर्ति | हि० प० | छ           | ×              |
| १५८.    | ४८२६           | नेमीश्वररास            | मुनिरत्नकीर्ति | हि० प० | छ           | ×              |
| १५९.    | ३६५०           | पंचकल्याणकपाठ          | हरचंद          | हि० प० | छ           | १८२३           |
| १६०.    | २१७३           | पांडवचरित्र            | लामबद्धन       | हि० प० | ट           | १७६८           |
| १६१.    | ४२५७           | पद्                    | श्रुतिशिवलाल   | हि० प० | घ           | ×              |
| १६२.    | १४३६           | परमात्मप्रकाशटीका      | ज्ञानचंद       | हि०    | क           | १८३६           |
| १६३.    | ५८३०           | प्रधुम्नरास            | कृष्णराय       | हि० प० | छ           | ×              |
| १६४.    | ५३६४           | पार्ष्वनाथचरित्र       | विश्वभूषण      | हि०    | घ           | १७ वीं "       |
| १६५.    | ४२६०           | पार्ष्वनाथचौपई         | पं० लाला       | हि० प० | ट           | १७३४           |
| १६६.    | ३८६४           | पार्ष्वछन्द            | श० लक्ष्मराज   | हि० प० | घ           | १६ वीं "       |
| १६७.    | ३२७७           | पिंगलछंदशास्त्र        | माखनकवि        | हि० प० | घ           | १८६३           |
| १६८.    | २६२३           | पुट्यास्त्रकथाकोशा     | टेकचंद         | हि० प० | क           | १६२८           |
| १६९.    | ५२५            | बंधउदयसत्ताचौपई        | श्रीलाल        | हि० प० | ट           | १८८१           |
| १७०.    | ५८५६           | बिहारीसतसईटीका         | कृष्णराय       | हि० प० | छ           | ×              |
| १७१.    | ५६०८           | बिहारीसतसईटीका         | हरचरणदास       | हि० प० | घ           | १८३४           |
| १७२.    | ५४६७           | मुचनकीर्तिगीत          | बूचराज         | हि० प० | घ           | १६ वीं "       |

| क्रमांक | प्रं. सू. क्र. | ग्रंथ का नाम           | ग्रंथकार         | भाषा   | ग्रंथसंख्या | रचना काल |
|---------|----------------|------------------------|------------------|--------|-------------|----------|
| १७३.    | २२५४           | मंगलकलशमहासुनिचतुष्पदी | रंगबिनयगणि       | हि० प० | अ           | १७१४     |
| १७४.    | ३४८६           | भनमोदनपंचराती          | छत्रगति          | हि० प० | क           | १६१६     |
| १७५.    | ६०४६           | मनोहरमञ्जरी            | मनोहरमिश्र       | हि० प० | ट           | ×        |
| १७६.    | ३८६४           | महाबीरखंड              | शुभचंद           | हि० प० | अ           | १६ बी    |
| १७७.    | २६३८           | मानतुं गमानवतिचौपई     | मोहनविजय         | हि० प० | झ           | ×        |
| १७८.    | ३१८५           | मानयिनोद               | मानसिंह          | हि० प० | अ           | ×        |
| १७९.    | ३४९१           | मित्रविलास             | घासी             | हि० प० | क           | १७८६     |
| १८०.    | १६४८           | मुनिमुत्रतपुराण        | इन्द्रजीत        | हि० प० | अ           | १८८५     |
| १८१.    | २३१३           | यशोधरचरित्र            | गारुडदास         | हि० प० | —           | १५८१     |
| १८२.    | २३१५           | यशोधरचरित्र            | पन्नालाल         | हि० प० | क           | १६३२     |
| १८३.    | ५११३           | रत्नावलिभ्रतविधान      | ब० कृष्णदास      | हि० प० | अ           | १६ बी    |
| १८४.    | ५५०१           | रविभ्रतकथा             | अयकीति           | हि० प० | अ           | १७ बी    |
| १८५.    | ६०३८           | रागमाला                | श्याममिश्र       | हि० प० | ट           | १६०२     |
| १८६.    | ३४६८           | राजनीतिशास्त्र         | जसुराम           | हि० प० | क           | ×        |
| १८७.    | ५३६८           | राजसभारंजन             | गंगादास          | हि० प० | अ           | ×        |
| १८८.    | ६०५५           | रुक्मिणीकृष्णजीकोरास   | तिपरदास          | हि० प० | ट           | ×        |
| १८९.    | २६८६           | रैदभ्रतकथा             | ब० जिनदास        | हि० प० | क           | १५ बी    |
| १९०.    | ६०६७           | रोहिणीविधिकथा          | बंसीदास          | हि० प० | ट           | १६६५     |
| १९१.    | ५६६६           | लग्नचन्द्रिकाभाषा      | स्योजीरामसोगारणी | हि० प० | अ           | ×        |
| १९२.    | ६०८६           | लक्ष्मिविधानचौपई       | भोषमकवि          | हि० प० | ट           | १६१७     |
| १९३.    | ५६५१           | लक्ष्मीनेमीश्वरकी      | विश्वभूषण        | हि० प० | ट           | ×        |
| १९४.    | ६१०५           | वसंतपूजा               | अजयराज           | हि० प० | ट           | १८ बी    |
| १९५.    | ५५१६           | वाजिदजी के आच्छिन्न    | वाजिद            | हि० प० | अ           | ×        |
| १९६.    | २३५६           | विक्रमचरित्र           | अभयसोम           | हि० प० | अ           | १७२४     |
| १९७.    | ३८६४           | विजयकीर्तिखंड          | शुभचंद           | हि० प० | अ           | १६ बी    |
| १९८.    | ३२११           | विषहरनविधि             | सतोषकवि          | हि० प० | झ           | १७४१     |
| १९९.    | २६७५           | वैदर्भीविवाह           | पेमराज           | हि० प० | अ           | ×        |
| २००.    | ३७०४           | षट्लोश्यावेलि          | साहलोहट          | हि० प० | क           | १७३०     |
| २०१.    | ५४०२           | शहरमारोठ की पत्नी      |                  | हि० प० | अ           | ×        |

| क्रमांक | सं. क्र. | ग्रंथ का नाम   | प्रयकार          | भाषा   | प्रथम अंक | रचना काल |
|---------|----------|----------------|------------------|--------|-----------|----------|
| २०२     | ५४१७     | शीलरास         | गुणकीर्ति        | हि० प० | अ         | १७१३     |
| २०३     | ५६४१     | शीलरास         | ब० राममलादेवसूरि | हि० प० | अ         | १९ बी    |
| २०४     | ३६६६     | शीलरास         | विजयदेवमूरि      | हि० प० | अ         | १६ बी    |
| २०५     | २७०१     | श्रेणिकचौपई    | हू गावेद         | हि० प० | अ         | १८२६     |
| २०६     | २४३२     | श्रेणिकचरित्र  | विजयकीर्ति       | हि० प० | अ         | १८२०     |
| २०७     | ५३६२     | समोसरण         | प्र० गुलाल       | हि० प० | अ         | १६६८     |
| २०८     | ५५२८     | स्यामवत्तीसी   | नंददास           | हि० प० | अ         | ×        |
| २०९     | २४३८     | सागरदत्तचरित्र | हीरकवि           | हि० प० | अ         | १७२४     |
| २१०     | १२१६     | सामायिकपाठभाषा | तिलोकबंद         | हि० प० | ब         | ×        |
| २११     | ३७०६     | हम्मिरासो      | महेशकवि          | हि० प० | उ         | ×        |
| २१२     | १६६४     | हरिवंशपुराण    | ×                | हि० ग० | अ         | १६७१     |
| २१३     | २७४२     | होलिका चौपई    | द्वैधरकवि        | हि० प० | ख         | १६२६     |



भट्टारक सकलकीर्ति कृत यशोधर चरित्र की मन्चित्र प्रति के दो सुन्दर चित्र



यद् मन्चित्र प्रति जयपुर के दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है ।  
राजा यशोधर दुःस्वप्न की शांति के लिये अन्य जीवों की बलि न  
चढा कर स्वयं की बलि देने को तैयार होता है ।  
रानी हाहाकार करती है ।

[ दूसरा चित्र अगले पृष्ठ पर देखिये ]



चित्र नं० २



जिन चैत्यालय एवं राजमहल का एक दृश्य  
(ग्रंथ सूची क्र. सं २२६४ वेष्टन संख्या ११५)

ॐ श्री महाश्रीराय नमः ॐ

## राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

# ग्रन्थसूची

विषय—सिद्धान्त एवं चर्चा

१. अर्धदीपिका—जिनभद्रगणित । पत्र सं० ५७ में ६८ पत्र । आकार १०×४३ इंच । भाषा—प्राकृत ।  
विषय—जैन सिद्धान्त । रचना काल × । लेखन काल × । प्रपूर्णा । केटन मस्या २ । प्राप्ति स्थान छ भण्डार ।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी टीका सहित है ।

२. अथप्रकाशिका—सदामुख कासलीवाल । पत्र सं० ३०३ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×८ इंच । भा० राजम्यानी  
( दुंदारी गद्य ) विषय—सिद्धान्त । ७० काल सं० १९१४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३ । प्राप्ति स्थान क भण्डार ।

विशेष—उमाश्यामी कुल तत्त्वार्थ सूत्र की यह विणद व्याख्या है ।

३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल × । वे० सं० ४८ । प्राप्ति स्थान क भण्डार ।

४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२७ । ले० काल सं० १९२५ आसोज बुदी ६ । वे० सं० १८९६ । प्राप्ति  
स्थान ट भण्डार ।

विशेष—प्रति मुद्रर एवं आकर्षक है ।

५. अष्टकर्म प्रकृतिवर्णन ..... । पत्र सं० ४९ । आ० ९×६ इंच । भा० हिन्दी ( गद्य ) । विषय—  
प्राठ कर्मों का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । प्रपूर्णा । प्राप्ति स्थान ख भण्डार ।

विशेष—जानावरगदादि प्राठ कर्मों का विस्तृत वर्णन है । साथ ही गुणस्थानों का भी अष्टधा विवेचन  
किया गया है । अन्त में ब्रह्मो एवं प्रतिमात्रा का भी वर्णन दिया हुआ है ।

६. अष्टकर्म प्रकृतिवर्णन ..... । पत्र सं० ७ । आ० ८×५ इंच । भा० हिन्दी । विषय—प्राठ  
कर्मों का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५८ । प्राप्ति स्थान ख भण्डार ।

७. अष्टप्रवचन ..... । पत्र सं० २ । आ० १२×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८२ । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—सूत्र मात्र है। सूत्र संख्या ८५ है। पाच ग्रन्थाव है।

८. अर्हःप्रयत्ननठयाख्या..... पत्र सं० ११। पा० १०×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच। भा० मंगल। २० काल ×।  
ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७६१। प्राप्ति स्थान ट अण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम चतुर्विंश सूत्र भी है।

९. आचारांगसूत्र..... पत्र सं० ५३। पा० १०<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×५ इंच। भा० प्राकृत। विषय—ग्राम्य।  
२० काल ×। ले० काल सं० १८२०। अपूर्ण। वे० सं० ६०६। प्राप्ति स्थान अ अण्डार।

विशेष—शुद्ध पत्र नहीं है। हिन्दी में टक्का टीका दी हुई है।

१०. आनुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णक..... पत्र सं० २। पा० १०×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच। भा० प्राकृत।  
विषय—ग्राम्य। २० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० २८। प्राप्ति स्थान च अण्डार।

११. आश्वविभंगी—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० ३१। पा० ११<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×५<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच। भा० प्राकृत।  
विषय—मिद्वान्न। २० काल ×। ले० काल सं० १८६२ वैशाख सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० १८२। प्राप्ति स्थान ज  
अण्डार।

१२. प्रति सं० २। पत्र सं० १३। ले० काल ×। वे० सं० १८४३ प्राप्ति स्थान ट अण्डार।

१३. प्रति सं० ३। पत्र सं० २१। ले० काल ×। वे० सं० २६५। प्राप्ति स्थान अ अण्डार।

१४. आश्वविभंगी..... पत्र सं० ६। पा० १२×५<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच। भा० हिन्दी। विषय—मिद्वान्न।  
२० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० २०१५। प्राप्ति स्थान अ अण्डार।

१५. आश्ववर्षान..... पत्र सं० १४। पा० ११<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×५<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच। भा० हिन्दी। विषय—मिद्वान्न।  
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १९०। प्राप्ति स्थान भ अण्डार।

विशेष—प्रति जीर्ण शीर्ष है।

१६. प्रति सं० २। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० १६६। प्राप्ति स्थान भ अण्डार।

१७. उक्कीमठारणाचार्य—मिद्धसेन मूनि। पत्र सं० ४। पा० ११<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×५<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच। भा० प्राकृत।  
विषय—मिद्वान्न। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७६५। प्राप्ति स्थान ट अण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम एकविंशतिस्थान-प्रकरण भी है।

१८. उत्तराध्ययन..... पत्र सं० २७। पा० ६<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×५ इंच। भा० प्राकृत। विषय—  
ग्राम्य। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६००। प्राप्तिस्थान अ अण्डार।

विशेष—हिन्दी टक्का टीका सहित है।

१६. उत्तराश्वयनभाषाटीका..... । प० सं० ३ । प्रा० १०×४ इंच । भा० हिन्दी ।  
विषय—श्रावण । १० काल × १० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २२४४ । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का प्रारम्भ निम्न प्रकार है ।

परम दयान दया कह, धामा पूरण काज ।  
षडबीसे जिएवर नमु, चउबीसे गणधार ॥ १ ॥  
धरम ग्यान दाता मुगुरु, ग्रहनिस ध्यान धरैस ।  
वाणी वर देसी सरम, विघन हाग विघनेम ॥ २ ॥  
उत्तराध्ययन बडदमद, मित्र छए अधिकार ।  
धलष अकल छुण छद बणा, कह बात मति धनुसार ॥ ३ ॥  
चतुर चाह कर माभलो, ऐ अधिकार धनुष ।  
निश विकथा परिहरी, मुण ज्यो धालम मूढ ॥ ४ ॥

पाने माकेत नगरी का वर्णन है । कई ढाले दी हुई है ।

१७. उद्दयमन्तारंशप्रकृति वर्णन ..... । पत्र सं० ५ । प्रा० ११×५ इंच । भा० संस्कृत ।  
विषय—सिद्धान्त । १० काल × १० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १०४० । प्राप्ति स्थान ट भण्डार ।

१८. कर्मप्रश्नसत्तरी..... । पत्र सं० २८ । प्रा० ६×४ इंच । भा० प्राकृत । विषय—सिद्धान्त ।  
१० काल × १० काल सं० १७८६ माह बुदी १० । पूर्णा । वे० सं० १२२ । प्राप्तिस्थान अ भण्डार ।

विशेष—कर्म सिद्धान्त पर विवेचन किया गया है ।

१९. कर्मप्रकृति—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० १२ । प्रा० १० इंच इंच । भा० प्राकृत । विषय—  
सिद्धान्त । २० काल × १० काल सं० १६८१ मंगसिर मुदी १० । पूर्णा । वे० सं० २६७ । प्राप्तिस्थान अ भण्डार ।

विशेष—गडे डालू के पठनाथ नामपुर मे प्रतिनिधि की गई थी । संस्कृत मे मंक्षित टीका दी हुई है ।

प्राम्ति—गवत् १६८१ बरदे मिति मागसिर वदि १० शुभ दिने श्रीमन्नागपुरे पूर्णाकृता पाडे डालू  
पठनाथ लिखि नूतन मुनि सा० धर्मदासेन प्रदत्ता ।

२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । वे० काल × । वे० सं० ८५ । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे सामान्य टीका दी हुई है ।

२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । वे० काल × । वे० सं० १४० । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे सामान्य टीका दी हुई है ।

२५. प्रति सं० ४। पत्र सं० १२। ले० काल सं० १७६८। मङ्गल। वे० सं० १६६३। अ मन्थार।

विशेष—महारजः जगतकीर्ति के शिष्य कुन्दावन ने प्रतिलिपि करवाई थी।

२६. प्रति सं० ५। पत्र सं० १४। ले० काल सं० १८०२ फाल्गुन बुदी ७। वे० सं० १०५। अ मन्थार।

विशेष—रमकी प्रतिलिपि विद्यालय के शिष्य रामराम मजूमदार ने कृष्ण के लिये की थी। प्रति के दोनों ओर तथा ऊपर नीचे संस्कृत में संक्षिप्त टीका है।

२७. प्रति सं० ६। पत्र सं० ७७। ले० काल सं० १६७१ माघ बुदी २। वे० सं० २६। अ मन्थार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। मालपुरा में श्री पार्षन्नाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई तथा सं० १६८७ में मुनि नन्दकीर्ति ने प्रति का संशोधन किया।

२८. प्रति सं० ७। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १८२३ ज्येष्ठ बुदी १४। वे० सं० १०५। अ मन्थार।

२९. प्रति सं० ८। पत्र सं० १३। ले० काल सं० १८१३ ज्येष्ठ बुदी ६। वे० सं० ५१। अ मन्थार।

मन्थार।

३०. प्रति सं० ९। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १८११। अ मन्थार।

विशेष—संस्कृत में संकेत दिये हुए हैं।

३१. प्रति सं० १०। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १८०२। अ मन्थार।

विशेष—१५६ पाठान्ते है।

३२. प्रति सं० ११। पत्र सं० २१। ले० काल सं० १७७३ वैशाख बुदी ११। वे० सं० १६२। अ मन्थार।

मन्थार।

विशेष—शम्भावती में पं० कृष्ण महामा ने पं० जीवाराय के शिष्य माहननाथ के पठनाथ प्रतिलिपि की थी।

३३. प्रति सं० १२। पत्र सं० १७। ले० काल सं० १८३३। अ मन्थार।

३४. प्रति सं० १३। पत्र सं० १७। ले० काल सं० १६४४ कार्तिक बुदी १०। वे० सं० १२६। अ मन्थार।

मन्थार।

३५. प्रति सं० १४। पत्र सं० १४। ले० काल सं० १६२२। वे० सं० २१५। अ मन्थार।

विशेष—कुन्दावन में राव मूर्धनेन के राज्य में प्रतिलिपि हुई थी।

३६. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ४०५ । अ० अष्टार ।

३७. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ३ से १८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २८० । अ० अष्टार ।

३८. प्रति सं० १७ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० ४०५ । अ० अष्टार ।

३९. प्रति सं० १८ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० १३० । अ० अष्टार ।

४०. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ५ से १७ । ले० काल सं० १७६० । अपूर्ण । वे० सं० २००० । ट मंडार ।

विशेष—कुन्दावती नगरी में पार्वनाथ चैत्यालय में श्रीमान् बुधसिंह के विजय राज्य में धार्वाह्य उदयभूषण के प्रणिय्य वं० तुलसीदास के शिष्य त्रिमांशभूषण ने संशोधन करने प्रतिनिधि की । प्रारम्भ के तथा बीच के कुछ पत्र नहीं हैं । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४१. प्रति सं० २० । पत्र सं० १३ से ४३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८६ । ट अष्टार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । पुनरानी टीका सहित है ।

४२. कर्मप्रकृतिटीका—टीकाकार सुमसिकीर्ति । पत्र सं० २ से २२ । आ० १२×४<sup>३</sup> इंच । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल सं० १८२२ । वे० सं० १२५२ । अपूर्ण । अ० अष्टार ।

विशेष—टीकाकार ने यह टीका भ० ज्ञानभूषण के सहाय्य में लिखी थी ।

४३. कर्मप्रकृति..... । पत्र सं० १० । आ० ८<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इंच । भा० हिन्दी । १० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६४ । अ० अष्टार ।

४४. कर्मप्रकृतिविधान—बनारसीदास । पत्र सं० १६ । आ० ८<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इंच । भा० हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७ । ड अष्टार ।

४५. कर्मविपाकटीका—टीकाकार सकलकीर्ति । पत्र सं० १४ । आ० १२×५ इंच । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल सं० १७६८ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १५६ । अ० अष्टार ।

विशेष—कर्मविपाक के मूलकर्ता आ० नेमिचन्द्र हैं ।

४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० १२ । अ० अष्टार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४७. कर्मस्तवसूत्र—देवैन्द्रसूरि । पत्र सं० १२ । आ० ११×६ इंच । भा० प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल × । वे० सं० १०५ । अ० अष्टार ।

विशेष—गाथाओं पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

४२. कल्पसिद्धान्तसंग्रह..... पत्र सं० ५२ । प्रा० १०×४ इंच । भा० प्राकृत । विषय—  
भागम । १० काल × १० काल × १० पूर्ण । वे० सं० १६१ । अ मण्डार ।

विशेष—श्री जिनसागर सूरि की आज्ञा से प्रतिनिधि हुई थी । गुजराती भाषा में टीका सहित है ।

प्रतिम भाग—मूलः—तेषां कालेषां तेषां सम्बन्धात्.....सिताराम पंडित बुद्धा ।

अर्थ—तिसाह कालइ गर्भापहार कालइ तिगइ समयइ गर्भापहार बन्धी पहिली भ्रमण भगवंत श्री महावीर त्रिहु ज्ञानेकरी सहित इ जिहुता ते भरी इमजि जणइ नेहरिले याम परिभवतामइ । इहा बन्धी लेइ तिसलानी कू लइ संक्याभिस्यइ । घनइ जिगि वलासइ संक्याबइ ने बेला न जाणइ । अपहरणकाल अंतर्भूतर्न संजाबिबइ घनइ उद्योग कल्प त्रिणि अंतर्भूतर्न प्रमाणा । पर छपस्वनाउपयोग धिकउ । संहरण काल मूयम जागिवउ बन्धी श्री आप्पारांग माहि कहउछइ । संहरण काल त्रिणि चणइ । परं ए पाठ लगवइ नही । ते भरी आबेर्येण ही । निसलानी कू लि प्राया पक्षी जाणइ । जिरणी राबिइ भ्रमण भगवंत श्री महावीर देवाणवा काहण्णी मुक्काम्या नूत । काई सूती, काई जाणती । अहं बाउवार स्फाटं तिस्या पूर्वइ बर्मण्या तिस्या अउवह महास्वप्न त्रिबला अत्रियाणी पइ माहुराहभा सासो सीषा । इमउ स्वप्न देखि जायी । जे भरी कल्याण कारियां निरूपहन । घन भाय ना करणहार । मंगलीक । स श्री कजिबइ धरि बाजइ बीपइ धर पहुता । त्रिबइ त्रिबला अत्रियाणी जिएइ पुकारइ सुपिमा देखिस्यइ ते प्रसांतइ वाक्स्या । य श्री कल्प सिद्धान्तनी वाचना तणइ अघिकारइ । एवं आम्बवतं दान वइ । शील पासइ । तप तणइ । भावना भावई एवंविध धर्म कर्तव्य करई ते श्री देवपुर तणइ प्रसाइ देवनइ अघिकारइ विधि चैत्यालय पूज्यमान श्री परमनाथ तणइ प्रसादि मुत्तली परंपरायइ सुविहित बरकूडामणि श्री उद्योतनसूरि श्री बद्धमान सूरि श्री । श्री जिनेश्वर सूरि । श्री अन्नबदेव सूरि युगप्रधान श्री जिनदत्तसूरि श्रीमज्जिन कुशलसूरि श्री इकम्बर पातिसाहि प्रतिबोधक युगप्रधान श्री मज्जिनसूरि तणट्टे प्रभाकर श्री मज्जिनसिंह सूरि तणट्टे प्रभाकर अट्टारक श्री जिनसागर सूरिनी आज्ञा प्रवलंइ । शीरस्तु । संस्कृत में श्लोक तथा प्राकृत में कई जगह गाथाएं दी है ।

४३. कल्पसूत्र ( भिक्षु अउमयण )..... पत्र सं० ४१ । प्रा० १०×४ इंच । भा० प्राकृत ।  
विषय—भागम । १० काल × १० काल × १० पूर्ण । वे० सं० १०६ । पूर्ण । अ मण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

४६. कल्पसूत्र—अनुवाह । पत्र सं० ११६ । प्रा० १०×४ इंच । भा० प्राकृत । विषय—भागम ।  
१० काल × १० काल सं० १८१४ । अ पूर्ण । वे० सं० ३६ । अ मण्डार ।

विशेष—२ रा तथा ३ रा पत्र नहीं है । गाथाओं के नीचे हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ से ४०२ । ले० काल × । अ पूर्ण । वे० सं० १६७ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत तथा गुजराती छाया सहित है ; कहीं २ टब्बा टीका भी दी हुई है ; बीच के कई पत्र नहीं हैं ।

१. कल्पसूत्र—अष्टशाहु । पत्र सं० ६१। भा० ११×४<sup>३</sup> इंच। भा० प्राकृत। विषय—भागम ।  
१० का ×। ले० का सं० १२६० आसोज बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० १५४१। ट अम्बार ।

५२. प्रति सं० २। पत्र सं० ८ ने २७४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८६४। ट अम्बार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है। बाबाओं के ऊपर शर्भ दिया हुआ है।

५३. कल्पसूत्र टीका—समयसुन्दरीयभाष्य । पत्र सं० २५। भा० १५×४ इंच। भाषा—संस्कृत ।  
विषय—भागम । १० काल ×। ले० काल सं० १७२५ कार्तिक। पूर्ण। वे० सं० २८। क अम्बार ।

विशेष—सूराकर्णनर ग्राम में शंभ की रचना हुई थी। टीका का नाम कल्पलता है। सारक ग्राम में पं०  
भाय्य विद्याल ने प्रतिलिपि की थी।

५४. कल्पसूत्रवृत्ति ..... । पत्र सं० १२६। भा० ११×४<sup>३</sup> इंच। भा० प्राकृत। विषय—  
भागम । १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८१८। ट अम्बार ।

५५. कल्पसूत्र ..... । पत्र सं० १० ने ४६। भा० १०×४<sup>३</sup> इंच। भाषा—प्राकृत। विषय—  
भागम । १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २००२। क अम्बार ।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण भी दिया हुआ है।

५. क्षपणासारवृत्ति—भाष्यचन्द्र प्रैविद्यादेव । पत्र सं० ६७। भा० १२×७<sup>३</sup> इंच। भा०  
संस्कृत। विषय—सिद्धान्त । १० काल शक सं० ११२५ वि० सं० १२६०। ले० काल सं० १८१६ वैशाख बुदी ११।  
पूर्ण। वे० सं० ११७। क अम्बार ।

विशेष—शंभ के मूलकर्ता नेमिचन्द्राचार्य है।

५७. प्रति सं० २। पत्र सं० १६४। ले० काल सं० १६५५। वे० सं० १२०। क अम्बार ।

५८. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०२। ले० काल सं० १८४७ आषाढ बुदी २। ट अम्बार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकांति के पठनार्थ जबपुर में प्रतिलिपि की गयी थी।

५६. क्षपणासार—टीका ..... । पत्र सं० ६१। भा० १२<sup>३</sup>×५<sup>३</sup> इंच। भा० संस्कृत ।  
विषय—सिद्धान्त । १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११८८। क अम्बार ।

६०. क्षपणासारभाषा—पं० टोडरमल्ल । पत्र सं० २७३। भा० १३×८ इंच। भा० हिन्दी ।  
विषय—सिद्धान्त । १० काल सं० १८१८ माघ सुदी ५। ले० काल १६४६। पूर्ण। वे० सं० १११६। क अम्बार ।

विशेष—क्षपणासार के मूलकर्ता आचार्य नेमिचन्द्र है। जैन सिद्धान्त का यह प्रथम ग्रन्थ है। महा पं०  
टोडरमल्लजी की कोमट्टसार ( जीव-काण्ड और कर्मकाण्ड ) लम्बिसार और क्षपणासार की टीका का नाम सम्बन्धाव  
चन्द्रिका है। इन तीनों की भाषा टीका एक ग्रन्थ में भी मिलती है। प्रति उत्तम है।



६१. गुणस्थानचर्चा ..... पत्र सं० ४५ । आ० १२×५ इंच । भा० प्राकृत । विषय—  
सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५०३ । छ भण्डार ।
६२. प्रति सं० २ । ले० काल × । वे० सं० ५०४ । छ भण्डार ।
६३. गुणस्थानक्रमारोहसूत्र—रत्नशेखर । पत्र सं० ५ । आ० १०×८ इंच । भा० संस्कृत ।  
विषय—सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल । पूर्ण । वे० सं० १३५ । छ भण्डार ।
६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १७३५ घायात्र बुदी १८ । वे० सं० ३७६ । छ भण्डार ।  
विषय—संस्कृत टीका सहित ।
६५. गुणस्थानचर्चा ..... पत्र सं० ३ । आ० ६×८ इंच । भा० हिन्दी । विषय—  
सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल । वे० सं० १३३० । अपूर्ण । छ भण्डार ।
६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ मे २८ । वे० सं० १३७ । छ भण्डार ।
६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० मे २१ । अठ्ठुगा । ले० काल । वे० सं० १०६ । छ भण्डार ।
६८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ । ले० का० सं० १८६३ । वे० सं० ५३० । छ भण्डार ।
६९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १५ । ले० का० । वे० सं० २३६ । छ भण्डार ।
७०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २६ । ले० काल । वे० सं० ३४६ । छ भण्डार ।
७१. गुणस्थानचर्चा—चन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ३६ । आ० ७×७ इंच । भा० हिन्दी । विषय—सिद्धान्त ।  
१० काल × । ले० काल × । वे० सं० ११६ ।
७२. गुणस्थानचर्चा एवं चौबीस ठाणा चर्चा ..... पत्र सं० ८ । आ० १२×५ इंच । भा०  
संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल । अपूर्ण । वे० सं० १०३१ । छ भण्डार ।
७३. गुणस्थानप्रकरण ..... पत्र सं० ६ । आ० ११×८ इंच । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त  
१० का० × । ले० का० × । पूर्ण । वे० सं० १३८ । छ भण्डार ।
७४. गुणस्थानभेट् ..... पत्र सं० ८ । आ० ११×५ इंच । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।  
१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६३ । छ भण्डार ।
७५. गुणस्थानमार्गशा ..... पत्र सं० ८ । आ० ८×५ इंच । भा० हिन्दी । विषय—सिद्धान्त  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३७ । छ भण्डार ।
७६. गुणस्थानमार्गशास्त्रचना ..... पत्र सं० १८ । आ० ११×८ इंच । भा० संस्कृत ।  
विषय—सिद्धान्त १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७७ । छ भण्डार ।

७३. गुणस्थानवर्णन..... पत्र सं० २० अ० १०×५ इंच । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।  
२० काल × । नै० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ७८ । ख अष्टार ।

विशेष—१४ गुणस्थानों का वर्णन है ।

७८. गुणस्थानवर्णन..... पत्र सं० १५ से ३१ । अ० १२×५ इंच । भा० हिन्दी ।  
विषय—सिद्धान्त । २० काल × । नै० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १३६ । क अष्टार ।

७९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । नै० काल सं० १७६३ । वे० सं० ४६६ । ख अष्टार ।

८०. गोमूढसार ( जीवकाण्ड )—आ० नैमिचन्द्र । पत्र सं० १३ । अ० १३×५ इंच । भा०—  
प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । नै० काल सं० १५५७ अष्टार मुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ११८ ।  
ख अष्टार ।

प्रसिद्धि—संभव १५५७ वर्षे अष्टार गुणल नवम्या श्रीमूलसंघे नंदाभाय बलात्कारणसे सरस्वतीमूर्ते  
श्री कुडकु दाचार्यम्बये भट्टारक श्री पद्मनन्द देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुमचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्त-  
तिशय्य मुनि श्री मडलाचार्य रत्नकीर्ति देवास्ततिशय्य मुनि हेमचंद्र काया तदाभायै सकलवत्सलसे अ-  
श्लो तत्पुत्र मा० भावा नन्दार्या अश्वभारतपुत्रा सा० भावसो द्वितीय क्षमनयो तृतीय जाल्हा एतै सकलप्रसिद्धि नैमिचन्द्र  
नम्य ज्ञानपात्राय मुनि श्री हेमवद्राय अक्षया प्रदत्त ।

८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । नै० काल × । वे० सं० ११६४ । ख अष्टार ।

८२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४६ । नै० काल सं० १७५६ । वे० सं० ११११ । ख अष्टार ।

८३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ से ४८ । नै० काल सं० १६०४ । चैत्र मुदी २ । अपूर्णा । वे०  
सं० १०८ । क अष्टार ।

विशेष—हरिश्चन्द्र के पुत्र मुनययी ने प्रतिलिपि की थी ।

८४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १० । नै० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १३६ । क अष्टार ।

८५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १० । नै० काल × । वे० सं० १३६ । ख अष्टार ।

८६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३७५ । नै० काल सं० १७३८ अष्टार मुदी ५ । वे० सं० १४१ । ख  
अष्टार ।

विशेष—प्रति टीका सहित है । श्री वीरदाम ने अक्षरबराह्मण में प्रतिलिपि की थी ।

८७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७४ । नै० काल सं० १८६६ अष्टार मुदी ७ । वे० सं०  
१३८ । क अष्टार ।

६८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १८६६ वैश्व बुद्धी ३ । वै० सं० ७६ । अ० भण्डार ।

६९. प्रति सं० १० । पत्र सं० १७२-२४१ । ले० काल  $\times$  । अपूर्णा । वै० सं० ८० । अ० भण्डार ।

६०. प्रति सं० ११ । पत्र सं० २० । ले० काल  $\times$  । अपूर्णा । वै० सं० ८६ । अ० भण्डार ।

६१. गोम्मतसारटीका—सकलभूषण । पत्र सं० १८३८ । भा० १२३ $\frac{१}{२}$  इ० च । भा० संस्कृत ।

विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १५७६ कार्तिक सुदी १३ । ले० काल सं० १६४५ । पूर्णा । वै० सं० १४० । अ० भण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्द्र ने पन्नालाय नौधरो में प्रतिनिधि कराई । प्रति  $\times$  वेष्टना में बंधी है ।

६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३१ । ले० काल  $\times$  । वै० सं० १३७ । अ० भण्डार ।

६३. गोम्मतसारटीका—धर्मचन्द्र । पत्र सं० ३३ । भा० १००५ $\frac{१}{२}$  इ० च । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णा । वै० सं० १३६ । अ० भण्डार ।

विशेष—पत्र १३१ पर आचार्य धर्मचन्द्र कुल टीका की प्रशस्ति का भाग है । नागपुर नगर ( नागौर ) में महमदशाह के शासनकाल में गानहा आदि सांख्यवादी गौत्र वाले आचार्यों ने भद्रानक धर्मचन्द्र को यह प्रति लिखकर प्रदानकी थी ।

६४. गोम्मतसारवृत्ति—केशववर्षा । पत्र सं० ५३७ । भा० १०३ $\frac{१}{२}$  इ० च । भा० संस्कृत । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णा । वै० सं० ३८१ । अ० भण्डार ।

विशेष—मूल गायत्री सहित जीवकाण्ड एवं कर्मकाण्ड की टीका है । प्रति अभयचन्द्र द्वारा संशोधित । 'प० गिरधर की पोथी है' ऐसा लिखा है ।

६५. गोम्मतसारवृत्ति । पत्र सं० ३ में ६१२ । भा० १०३ $\frac{१}{२}$  इ० च । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । अपूर्णा । वै० सं० १२३८ । अ० भण्डार ।

६६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २१४ । ले० काल  $\times$  । वै० सं० ८६ । अ० भण्डार ।

६७. गोम्मतसार ( जीवकाण्ड ) भाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० २२१ में २६४ । भा० १३८ इ० च । भा० हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । अपूर्णा । वै० सं० १०३ । अ० भण्डार ।

विशेष—पंडित टोडरमलजी के स्वयं के हाथ का लिखा हुआ ग्रंथ है । जगद २ कटा हुआ है ।

टीका का नाम सम्पूर्णज्ञानचन्द्रिका है । प्रदर्शन—योग्य ।

६८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २७ । ले० काल  $\times$  । अपूर्णा । वै० सं० ३७५ । अ० भण्डार ।

१९९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६५६ । नै० काल सं० १६४८ भादवा मुदी १५ । वै० सं० १४१ । क  
अण्डार ।

१००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । नै० काल × । अपूर्णा । वै० सं० १२६५ । अण्डार ।

१०१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५७६ । नै० काल सं० १८८५ माघ मुदी १५ । वै० सं० १८ ।  
अण्डार ।

विशेष—काचुराम साहू तथा भन्नालाल कामलीवाल ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१०२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३२८ । नै० काल > । अपूर्णा । वै० सं० १४६ । अण्डार ।

विशेष—२०४ में धागे ५४ पत्रों पर सुसंस्थान प्रादि पर यंत्र रचना है ;

१०३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५३ । नै० काल × । वै० सं० १५० । अण्डार ।

विशेष—केवल यत्र रचना ही है ।

१०४. गोम्मतसार-भाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० २१३ । धा० १५×१० इंच । भा० हिन्दी ।  
विषय—सिद्धान्त । १० काल सं० १८१८ माघ मुदी ५ । नै० काल सं० १६४२ भादवा मुदी ५ । पूर्णा । वै० सं० १५१ ।  
अण्डार ।

विशेष—वन्धिसार तथा अपसारा की टीका है । गणेशलाल सुंदरलाल पाठ्या ने ग्रंथ की प्रतिलिपि  
करवायी ।

१०५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १११० । नै० काल सं० १८५७ माघ मुदी ५ । वै० सं० ५३८ ।  
अण्डार ।

१०६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३७१ में ७६५ । नै० काल × । अपूर्णा । वै० सं० १२६ । अण्डार ।

१०७. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ८१८ । नै० काल सं० १८८७ वैशाख मुदी ३ । अपूर्णा । वै० सं०  
२२१८ । अण्डार ।

विशेष—प्रति बड़े धाकार एवं सुन्दर निमाटे की है तथा वर्धनीय है । कुछ पत्रों पर बीच में कलापूर्ण  
शोभाकार दिये हैं । बीच के कुछ पत्र नहीं हैं ।

१०८. गोम्मतसारपीठिका-भाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० ६२ । धा० १५×७ इंच । भा० हिन्दी ।  
विषय—सिद्धान्त । १० काल × । नै० काल × । अपूर्णा । वै० सं० २३२ । अण्डार ।

१०६. गोम्भटसारटीका ( जीवकाण्ड )..... । पत्र सं० २६५ । प्रा० १३×८<sup>१</sup>/<sub>२</sub> डच । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १२६ । ज अष्टार ।

विशेष—टीका का नाम तत्त्वप्रदीपिका है ।

११०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १२१ । ज अष्टार ।

१११. गोम्भटसारसंहिता—पं० टोडरमल । पत्र सं० ८२ । प्रा० १५×७ डच । भा० हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० २० । ग अष्टार ।

११२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८८ मे २०४ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ५३६ । च अष्टार ।

११३. गोम्भटसार ( कर्मकाण्ड )—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ११६ । प्रा० ११×७<sup>१</sup>/<sub>२</sub> डच । भा० प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल सं० १८८५ । चैत सुदी ८ । पूर्णा । वे० सं० ८१ । च अष्टार ।

११४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८३ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ८८ । च अष्टार ।

११५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ८२ । च अष्टार ।

११६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८४० । चैत बुदी १६ । अपूर्णा । वे० सं० १०८० । ट अष्टार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के विद्वान्छात्र सर्वमुक्त के अध्ययनार्थ अटागि नगर में प्रतिनिधि की गई ।

११७. गोम्भटसार (कर्मकाण्ड) टीका- कनकनदि । पत्र सं० १० । प्रा० ११<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×७<sup>१</sup>/<sub>२</sub> डच । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । ( तुर्नाय अष्टिका तक ) । वे० सं० १२५ । क अष्टार ।

११८. गोम्भटसार (कर्मकाण्ड) टीका—भट्टारक ज्ञानभूषण । पत्र सं० २४ । प्रा० ११<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×७<sup>१</sup>/<sub>२</sub> डच । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल सं० ११५७ माघ सुदी ५ । पूर्णा । वे० सं० १८१ । क अष्टार ।

विशेष—मुमतिकीर्ति की सहाय्य में टीका लिखी गयी थी ।

११९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८३ । ले० काल सं० १६७३ । फागुण सुदी ५ । वे० सं० १३६ । ज अष्टार ।

१२०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ८७७ । ज अष्टार ।

१२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५१ । ले० काल × । वे० सं० २५ । छ भण्डार ।

१२२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १७५..... । वे० सं० ४६० । छ भण्डार ।

१२३. गोम्मटसार ( कर्मकाण्ड ) भाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० ६६४ । भा० १३×८ इंच । भा० हिन्दी गद्य ( हूबदारी ) । विषय—सिद्धान्त । २० काल १६ की शताब्दी । ले० काल सं० १६४६ ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १३० । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति उत्तम है ।

१२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४० । ले० काल × । वे० सं० १८८ । छ भण्डार ।

विशेष—मंष्ट्रि सहित है ।

१२५. गोम्मटसार ( कर्मकाण्ड ) भाषा—हेमराज । पत्र सं० ५२ । भा० ६×५ इंच । भा० हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० २०१७ । ले० काल सं० १७८८ पौष सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १०५ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रधान साहू धानन्दरामजी खण्डेलवान ने पुस्तका निम्न ऊपर हेमराज ने गोम्मटसार को देव के क्षयोपगम मासिक पत्री में जबाब लिखने रूप चर्चा की वामना लिखी है ।

१२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १७१७ आसोज बुदी ११ । वे० सं० १२६ ।

विशेष—स्वपठनार्थ रामपुर में बन्ध्याणु पहाडिया ने प्रतिलिपि करवायी थी । प्रति जीर्ण है । हेमराज १८ वी शताब्दी के प्रथमशतक के हिन्दी गद्य के अच्युत विद्वान् हुये है । उन्होने १० में अधिक प्राकृत व संस्कृत रचनाओं का हिन्दी गद्य में रूपान्तर किया है ।

१२७. गोम्मटसार ( कर्मकाण्ड ) टीका..... । पत्र सं० १८ । भा० ११<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×५ इंच । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० १७१७ । वे० सं० १६ । छ भण्डार ।

१२९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० सं० ८१ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति प्रायः श्रीगुप्तसारसूत्रानुटीकाच्च निःशक्यकमेणैवोक्त्य लिखिता । श्री नेमिचन्द्रसैदान्ती विरचितकर्मप्रकृतिप्रथम्य टीका समाप्ताः ।

१३०. गौतमकुलक—गौतम स्वामी । पत्र सं० २ । प्रा० १०×४ इंच । भा० प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति गुजराती टीका सहित है २० पद्य है ।

१३१. गौतमकुलक..... । पत्र सं० १ । प्रा० १०×४ इंच । भा० प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० १२४२ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१३२. चतुर्दशसूत्र ..... । पत्र सं० १ । प्रा० १०×४ इंच । भा० प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६१ । ख भण्डार ।

१३३. चतुर्दशसूत्र—विनयचन्द्र मुनि । पत्र सं० २६ । प्रा० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—प्रागम । २० काल × । ले० काल सं० १६२२ पीथ बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० १८० । क भण्डार ।

१३४. चतुर्दशसूत्राण्यविवरण ..... । पत्र सं० ३ । प्रा० ११×६ इंच । भा० संस्कृत । विषय—प्रागम । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११४ । ख भण्डार ।

विशेष—अनेक अंग का पद प्रमाण दिया हुआ है ।

१३५. चर्चाशतक—द्यानतराय । पत्र सं० १०३ । प्रा० ११×८ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—सिद्धान्त । २० काल १८ बी गताब्दी । ले० काल सं० १६२८ आषाढ बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १४६ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी गद्य टीका भी दी है ।

१३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६३७ फाल्गुण सुदी १२ । वे० सं० १४० । क भण्डार ।

१३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल . । वे० सं० ४६ । अपूर्ण । ख भण्डार ।

विशेष—टिप्पणी टीका सहित ।

१३८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १६३१ मंगिर सुदी २ । वे० सं० १७१ । क भण्डार ।

१३९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १८ । ले० काल- . । वे० सं० १७२ । क भण्डार ।

१४०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १६३४ कार्तिक सुदी ८ । वे० सं० १७३ । क भण्डार ।

विशेष—तीले कागजों पर लिखी हुई है। हिन्दी गद्य में टीका भी दी हुई है।

१४१. प्रति सं० ७। पत्र सं० २२। ले० काल सं० १९६८। वे० सं० २८३। अ भण्डार।

विशेष—निम्न रचनाये शीर है।

१. प्रथम बावनी - दानतराय - हिन्दी

२. गुरु विनती - भूधरदास - ”

३. बारह भावना - नवल - ”

४. समाधि मरण - ”

१४२. प्रति सं० ८। पत्र सं० ४६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५६३। ट भण्डार।

विशेष—गुटकाकार है।

१४३. चर्चावर्णन—। पत्र सं० ८१ से ११४। प्रा० १०<sup>३</sup>×६ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय—सिद्धान्त।  
२० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७०। छ भण्डार।

१४४. चर्चासंग्रह.....। पत्र सं० ३९। प्रा० १०<sup>३</sup>×६ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय—सिद्धान्त।  
२० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७६। छ भण्डार।

१४५. चर्चासंग्रह.....। पत्र सं० ३। प्रा० १२×५<sup>३</sup> इञ्च। भाषा संस्कृत—हिन्दी। विषय—सिद्धान्त।  
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०५१। अ भण्डार।

१४६. प्रति सं० २। पत्र सं० १३। ले० काल ×। वे० सं० ८९। ज भण्डार।

विशेष—विभिन्न आचार्यों की संकलित चर्चाओं का वर्णन है।

१४७. चर्चासमाधान—भूधरदास। पत्र सं० १३०। प्रा० १०×५ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय—  
सिद्धान्त। २० काल सं० १८०६ माघ सुदी ५। ले० काल सं० १८६७। पूर्ण। वे० सं० ३८६। अ भण्डार।

१४८. प्रति सं० २। पत्र सं० ११०। ले० काल सं० १९०८ माघाष्ट सुदी ६। वे० सं० ४४३। अ  
भण्डार।

१४९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११७। ले० काल सं० १८२२। वे० सं० २६। अ भण्डार।

१५०. प्रति सं० ४। पत्र सं० ९९। ले० काल सं० १९४१ वैशाख सुदी ५। वे० सं० ५०। ख भण्डार।

१५१. प्रति सं० ५। पत्र सं० ८०। ले० काल सं० १९६४ चैत सुदी १५। वे० सं० १७४। छ भण्डार।

१५२. प्रति सं० ६। पत्र सं० ३४ से १६६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५३। छ भण्डार।



१५३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १८८३ पीष सुदी १३ । वे० सं० १६७ । छ मण्डार ।

विशेष—जयनगर निवासी महात्मा बंदालाल ने मवाई जयपुर मे प्रतिनिधि की थी ।

१५४. चर्चासार—पं० शिवजीलाल । पत्र सं० १३३ । प्रा० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय—  
सिद्धान्त । २० काल—× । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४८ । क मण्डार ।

१५५. चर्चासार..... । पत्र सं० १६२ । प्रा० ८×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । २०  
काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४० । छ मण्डार ।

१५६. चर्चासागर..... । पत्र सं० ३६ । प्रा० १३×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । २०  
काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७८६ । अ मण्डार ।

१५७. चर्चासागर—चंपालाल । पत्र सं० ३०४ । प्रा० १३×६ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—  
सिद्धान्त । २० काल सं० १६१० । ले० काल सं० १६३१ । पूर्ण । वे० सं० ४३६ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ मे १४ पत्र विषय सूची के अलग दे रले हैं ।

१५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१० । ले० का० सं० १६३८ । वे० सं० १४७ । क मण्डार ।

१५९. चौदहगुणस्थानचर्चा—अल्लयराज । पत्र सं० ४१ । प्रा० ११×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भा० हिन्दी गद्य ।  
( राजस्थानी ) विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६२ । अ मण्डार ।

१६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १-४१ । ले० का० × । वे० सं० ८६० । अ मण्डार ।

१६१. चौदहमार्गणा..... । प० सं० १० । प्रा० १२×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०३६ । अ मण्डार ।

१६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १८५५ । ट मण्डार ।

१६३. चौबीसठाणाचर्चा—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६ । प्रा० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—प्राकृत ।  
विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । सं० १८२० बैशाख सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १५७ । क मण्डार ।

१६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५६ । क मण्डार ।

१६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८१७ पीष सुदी १२ । वे० सं० १६० । क मण्डार ।

विशेष—पं० ईश्वरदास के शिष्य कृष्णचन्द्र के पठनार्थ नरायणा ग्राम मे ग्रन्थ की प्रतिलिपि की ।

१६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १६४६ कार्तिक बुदि ५ । वे० सं० ५१ । क मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। श्री मदनचन्द्र की शिष्या आर्या बार्दे शीलश्री ने प्रतिलिपि-करवाई।

१६७. प्रति सं ५। पत्र सं० २२। ले० काल सं० १७४० ज्येष्ठ बुदी १३। वे० सं० ५२। ख अण्डार।

विशेष—श्रेष्ठी मानसिंहजी ने ज्ञानावरणीय कर्म क्षयार्थं पं० प्रेम से प्रतिलिपि करवायी।

१६८. प्रति सं० ६। पत्र सं० १ मे ४३। ले० काल /। अपूर्णा। वे० सं० ५३। ख अण्डार।

विशेष—संस्कृत टव्वा टीका सहित है। १४३वीं गाथा में ग्रन्थ प्राग्भ्य है। ३७५ गाथा तक है।

१६९. प्रति सं० ७। पत्र सं० ५६। ले० काल /। वे० सं० ५४। ख अण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टव्वा टीका सहित है। टीका का नाम 'अर्थसार टिप्पण' है। श्रानन्दग्राम के पठनार्थं टिप्पण लिखा गया।

१७०. प्रति सं० ८। पत्र सं० २५। ले० का० सं० १६८६ चैत बुदी २। वे० सं० १२६। छ अण्डार।

१७१. प्रति सं० ९। पत्र सं० ७। ले० काल /। वे० सं० १३५। छ अण्डार।

१७२. प्रति सं० १०। पत्र सं० ३२। ले० काल /। वे० सं० १३५। छ अण्डार।

१७३. प्रति सं० ११। पत्र सं० ५३। ले० काल /। वे० सं० १४५। छ अण्डार।

विशेष—२ प्रतियों का मिश्रण है।

१७४. प्रति सं० १२। पत्र सं० ७। ले० काल /। वे० सं० २६१। ज अण्डार।

१७५. प्रति सं० १३। पत्र सं० २ मे २५। ले० काल सं० १६९५। कार्तिक बुदी ५। अपूर्णा। वे० सं० १=१५। ट अण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है। अन्तिम प्रशस्तिः—सवन् १६९५ वर्षे कार्तिक बुदि ५ बुद्धवामरे श्रीचन्द्रापुरी महास्थाने श्री पार्वतीनाथ चैत्यालय चौबीस ठाणे ग्रन्थ संपूर्ण भवति।

१७६. प्रति सं० १४। पत्र सं० ३३। ले० काल सं० १८१४ चैत बुदि ६। वे० सं० १८१६। ट अण्डार।

प्रशस्ति—संवत्सरे वेद समुद्र सिद्धि चंद्रमिने १८४४ चैत्र कृष्ण नवम्या मामवामरे हनुवती देशे श्राद्धयपुरे श्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति नेवं विद्वद् छात्र सर्वं मुबल्लयाध्यापनार्थं लिपिकृतं स्वशयना चन्द्र तारकं स्वीयतामिदं पुस्तकं।

१७७. प्रति सं० १५। पत्र सं० ६६। ले० का० सं० १८४० माघ बुदी १५। वे० सं० १८१७। ट अण्डार।

विशेष—नैणवा नगर में श्टारक सुरेन्द्रकीर्ति तथा छात्र विद्वान् तेजपाल ने प्रतिलिपि की।

१७८. प्रति सं० १६। पत्र सं० १२। ले० काल /। वे० सं० १८८६। ट अण्डार।

विशेष—५ पत्र तक चर्चाये है इनमें आगे शिक्षा की बातें तथा कुत्तर ज्लोक है। चौबीस तीर्थद्वारों के चित्र आदि का वर्णन है।

१७६. चतुर्विंशति स्थानक-नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ४६ । आ० ११०५ डब्बा । भाषा प्राकृत । विषय-मिद्वान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६५ । अ भण्डार ।

विशेष-मंस्कृत टीका भी है।

१८०. चतुर्विंशति गुणस्थान पीठिका ... । पत्र सं० १० । आ० १२५५ डब्बा । भाषा मस्कृत । विषय-मिद्वान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२५ । अ भण्डार ।

१८१. चौबीस ठाणा चर्चा ... । पत्र सं० २ में २४ । आ० १२५६ डब्बा । भाषा मस्कृत । विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२४ । अ भण्डार ।

१८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ न ५१ । आ० ११६ । २६ डब्बा । भाषा मस्कृत । वे० काल सं० १६२१ पीप सुदी १० । वे० सं० १६६६ । अपूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष-१० रामचक्रेन धारानगरमध्ये लिखित ।

१८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६३ । ले० काल ... । वे० सं० १२०० । अ भण्डार ।

१८४. चौबीस ठाणा चर्चा वृत्ति ... । पत्र सं० १२३ । आ० ११६ । ५ डब्बा । भाषा मस्कृत । विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल ... । पूर्ण । वे० सं० १२०० । अ भण्डार ।

१८५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १६४५ जेठ सुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० १२०० । अ भण्डार ।

१८६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल ... । वे० सं० १५५५ । अ भण्डार ।

१८७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १६२० कार्तिक बुदि १० । ज्यैष्ठ-शीमा । वे० सं० १५६ । अ भण्डार ।

विशेष-१० ईश्वरनाम की शाय तथा वासनाम के गुरुभाट मरकर के पठनार्थ मिथ निरधारी क द्वारा प्रतिनिधि करवायी गई । प्रति मंस्कृत टीका महित है ।

१८८. चौबीस ठाणा चर्चा ... । पत्र सं० ११ । आ० ६ । ४ डब्बा । भाषा हिन्दी । विषय-मिद्वान्त । २० काल ... । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३० । अ भण्डार ।

विशेष-ममासि में गन्ध का नाम 'इकबीस ठाणा' प्रकरण भी लिखा है ।

१८९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १६२६ । वे० सं० १०४७ । अ भण्डार ।

१६०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल > । अपूर्णा । वे० सं० २०३६ । अ भण्डार ।

१६१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११ । ले० काल > । वे० सं० ३८२ । अ भण्डार ।

१६१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४० । ले० काल > । वे० सं० १५८ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में टीका की हुई है ।

१६३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४० । ले० काल > । वे० सं० १६१ । क भण्डार ।

१६५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल > । अपूर्णा । वे० सं० १६२ । क भण्डार ।

१६५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १६७६ । वे० सं० २२ । ख भण्डार ।

विशेष—बेनीराम की पुस्तक में प्रतिलिपि की गई ।

१६६. छिन्नालीमट्टागाचर्चा \* \* \* \* \* । पत्र सं० १० । अ० ६१/६६ ड'च । भाषा संस्कृत ।  
विषय—सिद्धान्त । २० काल > । ले० काल सं० १८२९ आषाढ बुदी १ । पूर्णा । वे० सं० २६८ । ख भण्डार ।

१६७. जम्बूद्वीपकल \* \* \* \* \* । पत्र सं० ३० । अ० १२१/०६ ड'च । भाषा संस्कृत । विषय—  
सिद्धान्त । २० काल > । ले० काल सं० १८२८ चैत बुदी ४ । पूर्णा । वे० सं० ११५ । अ भण्डार ।

१६८. जीवम्बरूप वर्णन \* \* \* \* \* । पत्र सं० १४ । अ० ६०/६ ड'च । भाषा प्राकृत । २० काल > ।  
अपूर्णा । वे० सं० १२१ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम ६ पद्यों में लम्ब वर्णन भी है । मीम्मन्मार में म लिखा गया है ।

१६९. जीवाचारविचार \* \* \* \* \* । पत्र सं० ५ । अ० ६०/६६ ड'च । भाषा प्राकृत । विषय—  
सिद्धान्त । २० काल > । ले० काल > । अपूर्णा । वे० सं० ३३ । अ भण्डार ।

२००. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १०१८ मगसिर बुदी १० । वे० सं० २०५ ।  
क भण्डार ।

२०१. जीवसमामटिप्परा \* \* \* \* \* । पत्र सं० ६६ । अ० ११/५ ड'च । भाषा प्राकृत । विषय—  
सिद्धान्त । २० काल > । ले० काल > । पूर्णा । वे० सं० २३५ । अ भण्डार ।

२०२. जीवसमामभाषा \* \* \* \* \* । पत्र सं० २ । अ० ११/५ ड'च । भाषा प्राकृत । विषय—  
सिद्धान्त । २० काल > । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० १६७१ । अ भण्डार ।

२०३. जीवाजीवविचार \* \* \* \* \* । पत्र सं० ३२ । अ० १२/५ ड'च । भाषा संस्कृत । विषय—  
सिद्धान्त । २० काल > । ले० काल > । वे० सं० २००४ । अ भण्डार ।

२०४. जैन सद्भावार्थ मार्सेण्ड नामक पत्र का प्रत्युत्तर—बाबा दुलीचन्द । पत्र सं० २५ ।  
 भा० १२×७<sup>३</sup> इंच । भाषा हिन्दी । विषय—चर्चा समाधान । २० काल सं० १९४६ । ले० काल २० । पूर्ण ।  
 वै० सं० २०८ । क भण्डार ।

२०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल २० । वै० सं० २१७ । क भण्डार ।

२०६. ठाणांगसूत्र..... । पत्र सं० ४ । भा० १०<sup>३</sup>×४<sup>६</sup> इंच । भाषा संस्कृत । विषय—आगम ।  
 २० काल × । ले० काल । अपूर्ण । वै० सं० १९२ । अ भण्डार ।

२०७. तत्त्वकौस्तुभ—पं० पद्मलाल सघी । पत्र सं० ७२७ । भा० १२×७<sup>३</sup> इंच । भाषा हिन्दी ।  
 विषय—निदान । २० का० × । ले० काल सं० १९४४ । पूर्ण । वै० सं० २७७ । क भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ तत्त्वार्थराजबालिक की हिन्दी गद्य टीका है । यह १० अध्यायों में विभक्त है । इस प्रति  
 में ४ अध्याय तक है ।

२०८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४६ । ले० काल सं० १९४७ । वै० सं० २७० । क भण्डार ।

विशेष—५वें अध्याय में १०वें अध्याय तक की हिन्दी टीका है । नवा अध्याय अपूर्ण है ।

२०९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२८ । २० काल सं० १९३४ । ले० काल २० । वै० सं० २८० । क भण्डार ।  
 विशेष—राजबालिक के प्रथमाध्याय की हिन्दी टीका है ।

२१०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४२८ में ७७६ । ले० काल २० । अपूर्ण । वै० सं० २४१ । क भण्डार ।  
 विशेष—नीसरा तथा चौथा अध्याय है । तीसरे अध्याय के २० पत्र अन्तम और है । ४७ अन्तम पत्रों में  
 सूचीपत्र है ।

२११. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०७ में ८०७ । ले० काल २० । वै० सं० २४२ । क भण्डार ।

विशेष—५, ६, ७, ८, ९, १०वें अध्याय की भाषा टीका है ।

२१२. तत्त्वदीपिका— । पत्र सं० ३१ । भा० ११<sup>३</sup>×६<sup>३</sup> इंच । भाषा हिन्दी गद्य । विषय—निदान ।  
 २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २०१४ । अ भण्डार ।

२१३. तत्त्ववर्णन—शुभचन्द्र । पत्र सं० ४ । भा० १०<sup>३</sup>×४<sup>६</sup> इंच । भाषा संस्कृत । विषय—निदान ।  
 २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७६ । अ भण्डार ।

विशेष—आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ लिखी गई थी ।

२१४. तत्त्वसार—देवसेन । पत्र सं० ६ । भा० ११×५<sup>३</sup> इंच । भाषा प्राकृत । विषय—निदान ।  
 २० काल × । ले० काल सं० १७१९ पौष बुदी ८ । पूर्ण । वै० सं० २२५ ।

विशेष—पं० विहारीदास ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २६६ । क अष्टार ।

विशेष—हिन्दी धर्मा भी दिया हुआ है । अन्तिम पत्र नहीं है ।

२१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १०१२ । ट अष्टार ।

२१७. तत्त्वस्मारभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ४४ । आ० १०५×५ इञ्च । भाषा हिन्दी ।

विषय—सिद्धान्त । १० काल सं० १९३१ वैशाल बुदी ७ । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० २६७ । क अष्टार ।

विशेष—देवमेन कृत तत्त्वस्मार की हिन्दी टीका है ।

२१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० २६८ । क अष्टार ।

२१९. तत्त्वार्थदर्पण... । पत्र सं० ३६ । आ० १०५×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १२६ । च अष्टार ।

विशेष—केवल प्रथम अध्याय तक ही है ।

२२०. तत्त्वार्थबोध— पत्र सं० १८ । आ० १०५×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । १०

काल × । ले० काल × । वे० सं० १४७ । ज अष्टार ।

विशेष—पत्र ६ में श्री देवमेन कृत शालावपत्रनि दी हुई है ।

२२१. तत्त्वार्थबोध—बुधजन । पत्र सं० १४५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पत्र । विषय—

सिद्धान्त । १० काल सं० १८७६ । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ३६७ । अ अष्टार ।

२२२. तत्त्वार्थबोध... । पत्र सं० ३६ । आ० १०५×५ इञ्च । भाषा हिन्दी गण । विषय—सिद्धान्त ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ५६६ । च अष्टार ।

२२३. तत्त्वार्थदर्पण... । पत्र सं० १० । आ० १०×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ३५ । ग अष्टार ।

विशेष—प्रथम अध्याय तक पूर्ण, टीका सहित । ग्रन्थ गोमर्तलालजी भोमा का भेंट किया हुआ है ।

२२४. तत्त्वार्थबोधिनीटीका— । पत्र सं० ४२ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।

१० काल × । ले० काल सं० १९५० प्रथम वैशाल सुदि ३ । पूर्णा । वे० सं० ३६ । ग अष्टार ।

विशेष—यह ग्रन्थ गोमर्तलालजी भोमा का है । श्लोक सं० २२५ ।

२२५. तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० १०६ । आ० १०५×५ इञ्च । भाषा संस्कृत ।

विषय—सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल सं० १९७३ धामोज बुदी ७ । वे० सं० ७२ । च अष्टार ।

विशेष—प्रभाचन्द्र भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य थे । ब्र० हरदेव के लिए ग्रन्थ बनाया था । मंगरी कंवर ने

जोगी गंगाराम से प्रतिलिपि करवायी थी ।

२२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १९३३ आषाढ बुदी १० । वे० सं० १३७ ।

च अष्टार ।

२०७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७२ । ले० काल \ । अपूर्णा । वे० सं० ३७ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है ।

२०८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २ में ६१ । ले० काल X । अपूर्णा । वे० सं० १६३६ । ट भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पृष्ठीका— इति तत्त्वार्थ रत्नप्रभाकरग्रन्थे मुनि श्री धर्मचन्द्र शिष्य श्री प्रभाचन्द्रदेव विर-

चित्ते बह्मजैत साधु हावादेव देव भावना निमित्तं मोक्ष पदार्थ कथनं दशम सूत्र विचार प्रकरण समाप्त ॥

२०९. तत्त्वार्थराजवार्तिक—भट्टाकलंकदेव । पत्र सं० ३६० । प्रा० १६X७ इक्ष । भाषा- संस्कृत ।

विषय—सिद्धान्त । १० काल X । ले० काल सं० १८७८ । पूर्णा । वे० सं० १०७१ । अ भण्डार ।

विशेष—इस प्रति की प्रतिलिपि सं० १९७८ वाली प्रति में जयपुर नगर में की गई थी ।

२१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२७८ । ले० काल सं० १६४५ भावना मुदी ६ । वे० सं० २३७ ।

द भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ ७ वेष्टनों में है । प्रथम वेष्टन में १ म ७०० तथा दूसरे में ६०१ में १००० तक पत्र १ ।

प्रति उत्तम है । मूल के नीचे हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

२३१ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल । वे० सं० ६४ । अ भण्डार ।

विशेष—मूलमात्र ही है ।

२३२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०० । ले० काल सं० १६७४ पोप मुदी १० । वे० सं० १०१ ।

द भण्डार ।

विशेष—जयपुर में म्होरीलाल भावसा ने प्रतिलिपि की ।

२३३ प्रति सं० ५ । पत्र सं० १० । ले० काल \ । अपूर्णा । वे० सं० १५६ । द भण्डार ।

२३५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १७४ में २१० । ले० काल । अपूर्णा । वे० सं० १२७ । अ भण्डार ।

२३५. तत्त्वार्थराजवार्तिकभाषा " " । पत्र सं० ५८० । प्रा० १२८ इक्ष । भाषा—हिन्दी मय ।

विषय—सिद्धान्त । १० काल \ । ले० काल X । अपूर्णा । वे० सं० १४५ । द भण्डार ।

२३६. तत्त्वार्थवृत्ति—पं० योगदेव । पत्र सं० ६७ । प्रा० ११२X७ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—

सिद्धान्त । रचनाकाल \ । ले० काल सं० १६५८ चैत बुनो १३ । पूर्णा । वे० सं० २५२ । क भण्डार ।

विशेष—वृत्ति या गाम मुखवाद्य वृत्ति है । तत्त्वार्थ सूत्र पर यह उत्तम टीका है । पं० योगदेव कुम्भनगर के निवासी थे । यह नगर कनारा जिले में है ।

२३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६७ । ले० काल \ । वे० सं० २५० । अ भण्डार ।

२३८. तत्त्वार्थसार—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० १० । प्रा० १० ५ इक्ष । भाषा संस्कृत । विषय—

सिद्धान्त । १० काल X । ले० काल X । पूर्णा । वे० सं० २३८ । क भण्डार ।

विशेष—इस ग्रन्थ में ६१० श्लोक हैं जो ६ अध्यायों में विभक्त हैं । उनमें ७ तन्त्रों का वर्णन किया

गया है ।

२३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४४ । ले० काल × । वे० सं० २३६ । क मण्डार ।

२४०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० २४२ । क मण्डार ।

२४१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । वे० सं० ६५ । क मण्डार ।

२४२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० ६६ । क मण्डार ।

विशेष—पुस्तक दीवान ज्ञानचन्द की है ।

२४३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० सं० १३० । क मण्डार ।

२४४. तत्त्वार्थमार दीपक—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० ६१ । प्रा० ११×५ डब्ब । भाषा—  
संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल - । पूर्ण । वे० सं० २८४ । क मण्डार ।

विशेष—भ० सकलकीर्ति ने 'तत्त्वार्थमारदीपक' में जैन दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों का वर्णन किया है ।  
रचना १० अध्यायों में विभक्त है । यह तत्त्वार्थसूत्र की टीका नहीं है जैसा कि इसके नाम में प्रकट होता है ।

२४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १८२८ । वे० सं० २४० । क मण्डार ।

२४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १८६४ प्राचीन सुवी २ । वे० सं० २४१ । क  
मण्डार ।

विशेष—महात्मा हीरानन्द ने प्रतिनिधि की ।

२४७. तत्त्वार्थमारदीपकभाषा—पद्मलाल चौधरी । पत्र सं० २८६ । प्रा० १२३×५ डब्ब । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । १० काल सं० १६३७ ज्येष्ठ बुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६६ ।

विशेष—जिन २ पन्थों की पद्मलाल ने भाषा लिखी है सब की सूचा दी हुई है ।

२४८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८७ । ले० काल × । वे० सं० २४३ । क मण्डार ।

२४९. तत्त्वार्थ सूत्र—उमास्वामि । पत्र सं० २६ । प्रा० ७×३<sup>१</sup>/<sub>२</sub> डब्ब । भाषा—संस्कृत । विषय—  
निर्णय । १० काल - । ले० काल सं० १४५८ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २१६६ (क) क मण्डार ।

विशेष—लाल पत्र है जिन पर ज्वेल (रजत) प्रक्षर है । प्रति प्रदर्शनी में रखने योग्य है । तत्त्वार्थ सूत्र  
समाप्त पर अक्षरमर स्तोत्र प्रारम्भ होता है लेकिन यह अपूर्ण है ।

प्रवृत्ति—सं० १४५८ श्रावण सुदी ६ ।

२५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६६६ । वे० सं० २२०० क मण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णक्षरों में है । पत्रों के किनारों पर सुन्दर बेलें हैं । प्रति दर्शनीय एवं प्रदर्शनी में रखने  
योग्य है । नवौं प्रति है । सं० १६६६ में जोहरीलालजी नवलालजी धो वालों ने दत्तोद्यापन में प्रति लिखा कर चढाई ।

२५१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३७ । ले० काल - । वे० सं० २२०० क मण्डार ।

विशेष—प्रति ताडपत्रिय एवं प्रदर्शनी योग्य है ।



२५२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११ । ले० काल ५ । वे० सं० १८५५ । अ भण्डार ।

२५३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८८८ । वे० सं० २४६ । अ भण्डार ।

२५४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८८६ । वे० सं० ३३० । अ भण्डार ।

२५५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६ । ले० काल ४ । अपूर्णा । वे० सं० ३८८ । अ भण्डार ।

२५६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८३७ । वे० सं० ३६२ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

२५७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ११ । ले० काल २ । वे० सं० १०७५ । अ भण्डार ।

२५८. प्रति सं० १० । पत्र सं० ५५ । ले० काल ३ । वे० सं० १०३० । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है । पूर्व अमीचंद ने अलवर में प्रतिलिपि की ।

२५९. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १८ । ले० काल ३ । वे० सं० ६५ । अ भण्डार ।

२६०. प्रति सं० १२ । पत्र सं० २८ । ले० काल ५ । अपूर्णा । वे० सं० ७७५ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र १७ में २० तक नहीं है ।

२६१. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ६ में ३३ । ले० काल ५ । अपूर्णा । वे० सं० १००८ । अ भण्डार ।

२६२. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८६० । वे० सं० ८७ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित ।

२६३. प्रति सं० १५ । पत्र सं० २० । ले० काल ३ । वे० सं० ८८ । अ भण्डार ।

२६४. प्रति सं० १६ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १८२० । चैत बुद्धी ३ । वे० सं० ८१६ ।

विशेष—संक्षिप्त हिन्दी अर्थ दिया हुआ है ।

२६५. प्रति सं० १७ । पत्र सं० २८ । ले० काल ३ । वे० सं० २००८ । अ भण्डार ।

२६६. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ११ में २२ । ले० काल ३ । अपूर्णा । वे० सं० १२६८ । अ भण्डार ।

२६७. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६८ । वे० सं० १२८८ । अ भण्डार ।

२६८. प्रति सं० २० । पत्र सं० २८ । ले० काल ३ । वे० सं० १२७५ । अ भण्डार ।

२६९. प्रति सं० २१ । पत्र सं० ८ । ले० काल ३ । वे० सं० १३३१ । अ भण्डार ।

२७०. प्रति सं० २२ । पत्र सं० ५ । ले० काल ३ । वे० सं० २१८० । अ भण्डार ।

२७१. प्रति सं० २३ । पत्र सं० १२ । ले० काल ३ । वे० सं० २१५६ । अ भण्डार ।

२७२. प्रति सं० २४ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १६८६ । कार्तिक मुद्रा ५ । वे० सं० २००६ ।

अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है । पूनचंद विद्याभवा ने प्रतिलिपि की ।

२७३. प्रति सं० २५ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६..... । वे० सं० २००७ । अ भण्डार ।

२७४. प्रति सं० २६ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २०४१ । अ भण्डार ।  
विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है ।

२७५. प्रति सं० २७ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८०४ ज्येष्ठ सुदी २ । वे० सं० २४६ । क भण्डार ।  
विशेष—प्रति स्वराक्षरों में है । शाहजहानाब्द वाले श्री-बुलचन्द बाकलीबाज़ के पुत्र श्री ऋषभदास,

दौलतगम ने जैसिंहपुरा में इसकी प्रतिलिपि कराई थी । प्रति प्रदर्शनी में रखने योग्य है ।

२७६. प्रति सं० २८ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १६३६ भाद्रमा सुदी ४ । वे० सं० २५८ ।  
क भण्डार ।

२७७. प्रति सं० २९ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० २५६ । क भण्डार ।

२७८. प्रति सं० ३० । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १६४५ वैशाख सुदी ७ । वे० सं० २५० । क भण्डार ।

२७९. प्रति सं० ३१ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० २५७ । क भण्डार ।

२८०. प्रति सं० ३२ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ३७ । ग भण्डार ।

विशेष—महुवा निवासी पं० नालगरामने प्रतिलिपि की थी ।

२८१. प्रति सं० ३३ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ३८ । ग भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी । पुस्तक चिम्मनलाल बाकलीवाल की है ।

२८२. प्रति सं० ३४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३६ । ग भण्डार ।

२८३. प्रति सं० ३५ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८६१ माघ सुदी ४ । वे० सं० ४० ।  
ग भण्डार ।

२८४. प्रति सं० ३६ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ३३ । घ भण्डार ।

२८५. प्रति सं० ३७ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० ३४ घ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टक्का टीका सहित है ।

२८६. प्रति सं० ३८ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३५ । घ भण्डार ।

२८७. प्रति सं० ३९ । पत्र सं० ५८ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २४६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२८८. प्रति सं० ४० । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० २४७ । क भण्डार ।

२८९. प्रति सं० ४१ । पत्र सं० ८ से २२ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २४८ । क भण्डार ।

२९०. प्रति सं० ४२ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० २४६ । क भण्डार ।

२९१. प्रति सं० ४३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० २५० । क भण्डार ।

विशेष—कलांतर स्तोत्र भी है ।

२६२. प्रति सं० ४४। पत्र सं० १५। ले० काल सं० १८८६। वे० सं० २५२। ड. भण्डार।

२६३. प्रति सं० ४५। पत्र सं० ६६। ले० काल  $\times$ । वे० सं० २५२। ड. भण्डार।

विशेष—सूत्रों के ऊपर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है।

२६४. प्रति सं० ४६। पत्र सं० ५०। ले० काल  $\times$ । वे० सं० २५३। ड. भण्डार।

२६५. प्रति सं० ४७। पत्र सं० ३६। ले० काल  $\times$ । वे० सं० २५४। ड. भण्डार।

२६६. प्रति सं० ४८। पत्र सं० १२। ले० काल सं० १९२१ कालिक बुदी  $\times$ । वे० सं० २५५। ड. भण्डार।

२६७. प्रति सं० ४९। पत्र सं० ३७। ले० काल  $\times$ । वे० सं० २५६। ड. भण्डार।

२६८. प्रति सं० ५०। पत्र सं० २८। ले० काल  $\times$ । वे० सं० २५७। ड. भण्डार।

२६९. प्रति सं० ५१। पत्र सं० ७। ले० काल  $\times$ । अपूर्ण। वे० सं० २५८। ड. भण्डार।

३००. प्रति सं० ५२। पत्र सं० ९ से १६। ले० काल  $\times$ । अपूर्ण। वे० सं० २५९। ड. भण्डार।

३०१. प्रति सं० ५३। पत्र सं० ६। ले० काल  $\times$ । अपूर्ण। वे० सं० २६०। ड. भण्डार।

३०२. प्रति सं० ५४। पत्र सं० ३२। ले० काल  $\times$ । वे० सं० २६१। ड. भण्डार।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है।

३०३. प्रति सं० ५५। पत्र सं० १६। ले० काल  $\times$ । अपूर्ण। वे० सं० २६२। ड. भण्डार।

३०४. प्रति सं० ५६। पत्र सं० १७। ले० काल  $\times$ । अपूर्ण। वे० सं० २६३। ड. भण्डार।

३०५. प्रति सं० ५७। पत्र सं० १८। ले० काल  $\times$ । वे० सं० २६५। ड. भण्डार।

विशेष—केवल प्रथम अध्याय ही है। हिन्दी अर्थ सहित है।

३०६. प्रति सं० ५८। पत्र सं० ७। ले० काल  $>$ । वे० सं० १२८। च. भण्डार।

विशेष—संक्षिप्त हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है।

३०७. प्रति सं० ५९। पत्र सं० ९। ले० काल  $\times$ । अपूर्ण। वे० सं० १२९। च. भण्डार।

३०८. प्रति सं० ६०। पत्र सं० १७। ले० काल सं० १८८६ फागुन सुदी १३। योगी। वे० सं० १३०।

च. भण्डार।

विशेष—मुरलीधर अन्नबाल जोबनेर वाजे ने प्रतिवलिपि की।

३०९. प्रति सं० ६१। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १९५२ ज्येष्ठ सुदी १। वे० सं० १३१। च. भण्डार।

३१०. प्रति सं० ६२। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १८७१ जेठ सुदी १२। वे० सं० १३२। च. भण्डार।

३११. प्रति सं० ६३। पत्र सं० १९। ले० काल सं० १९३९। वे० सं० १३४। च. भण्डार।

विशेष—छाजूबाल सेठी ने प्रतिवलिपि करवायी।

३१२. प्रति सं० ६४। पत्र सं० १९। ले० काल  $\times$ । वे० सं० १३३। च. भण्डार।

३१३. प्रति सं० ६५। पत्र सं० २१ से २५। ले० काल  $\times$ । अपूर्ण। वे० सं० १३५। च. भण्डार।

३१४. प्रति सं० ६६। पत्र सं० १६। ले० काल  $\times$ । वे० सं० १३६। च. भण्डार।

३१५. प्रति सं० ६७। पत्र सं० ४२। ले० काल  $\times$ । अपूर्ण। वे० सं० १३७। च. भण्डार।

विशेष—टब्बा टीका सहित । १ ला पत्र नहीं है ।

३१६. प्रति सं० ६८ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १६६३ । वे० सं० १३८ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३१७. प्रति सं० ६६ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १६६३ । वे० सं० ५७० । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३१८. प्रति सं० ७० । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० १३६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम ४ पत्रों में तत्त्वार्थ सूत्र के प्रथम, पाँचम तथा दशम अधिकार है । इसमें आगे भक्तार मन्त्र है ।

३१९. प्रति सं० ७१ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । अ भण्डार ।

३२०. प्रति सं० ७२ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ३८ । अ भण्डार ।

३२१. प्रति सं० ७३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६२२ फागुन मुदी १५ । वे० सं० ८८ । अ भण्डार ।

३२२. प्रति सं० ७४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १४२ । अ भण्डार ।

३२३. प्रति सं० ७५ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० ३०५ । अ भण्डार ।

३२४. प्रति सं० ७६ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० २७१ । अ भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल के पठनार्थ लिखा गया था ।

३२५. प्रति सं० ७७ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १६२६ चैत मुदी १४ । वे० सं० २७३ । अ भण्डार ।

विशेष—मण्डलाचार्य श्री चन्द्रकांत के शिष्य ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६. प्रति सं० ७८ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ४४८ । अ भण्डार ।

३२७. प्रति सं० ७९ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । वे० सं० ३४ ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

३२८. प्रति सं० ८० । पत्र सं० २७ । ले० काल × । वे० सं० १६१५ ट भण्डार ।

३२९. प्रति सं० ८१ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १६१६ ट भण्डार ।

३३०. प्रति सं० ८२ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० १६३१ ट भण्डार ।

विशेष—हीराखाल विद्यालय ने गोहलाल पाण्ड्या से प्रतिलिपि करवायी । पुस्तक लिखमाचन्द्र शास्त्री काशी की है ।

३३१. प्रति सं० ८३ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १६३१ । वे० सं० १६४२ ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है । ईसरदा बाल ठाकुर प्रतापसिंहजी के जयपुर आगमन के समय सवाई रामसिंह जी के शासनकाल में जीबणलाल काना ने जयपुर में हजारीलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की ।

३३२. प्रति सं० ८४ । पत्र सं० ३ मे १८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६६ ।

विशेष—चतुर्थ अध्याय से है। इसके प्रागे कमिकुण्डपूजा, पार्श्वनाथपूजा, क्षेत्रपालपूजा, क्षेत्रपालस्तोत्र तथा चिन्तामणिपूजा है।

३४३. तत्त्वार्थसूत्र टीका श्रुतसागर। पत्र सं० ३५६। भा० १२×५ इञ्च। भाषासंस्कृत। विषय—मिद्वान्त। २० काल ×। ले० काल सं० १७३३ प्र० श्रावण सुदी ७; वै० सं० १६०। पूर्ण। अ भण्डार।

विशेष—श्री श्रुतसागर मूरि १६ वीं शताब्दी के संस्कृत के प्रच्छेद विद्वान् थे। इन्होंने ३८ से श्री बाधक ग्रंथों की रचना की जिसमें टीकाएँ तथा छोटी २ कथाएँ भी हैं। श्री श्रुतसागर के गुरु का नाम विशानंदि था जो भट्टारक पद्मनंदि के प्रशिष्य एवं देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे।

३४४. प्रति सं० २। पत्र सं० ३१५। ले० काल सं० १७४८ फाल्गुन सुदी १४। अपूर्णा। वै० सं० २५५। क भण्डार।

विशेष—३१५ में प्रागे के पत्र नहीं हैं।

३४५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३५३। ले० काल—×। वै० सं० २६६। क भण्डार।

३४६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३५३। ले० काल—×। वै० सं० ३३०। अ भण्डार।

३४७. तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति—सिद्धसेन गण्णि। पत्र सं० २४८। भा० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इंच। भाषा—अमृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल×। ले० काल—×। अपूर्णा। वै० सं० २५३। क भण्डार।

विशेष—तीन अध्याय तक ही है। प्रागे पत्र नहीं है। तत्त्वार्थसूत्र की विस्तृत टीका है।

३४८. तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति .....। पत्र सं० ६३। भा० ११×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—मिद्वान्त। २० काल—×। ले० काल—सं० १६३३ फाल्गुन सुदी ५। पूर्णा। वै० सं० ५८। अ भण्डार।

विशेष—मालपुरा में श्री कमलकीर्ति ने प्रागे पठनार्थ मु० जैसा से प्रतिलिपि करवायी।

प्रसक्ति—संवत् १६३३ वर्षे फाल्गुण मासे कृष्ण पक्षे पंचमी तिथी रविवारे श्री मालपुरा नगरे। भ० श्री ५ श्री श्री चंद्रकीर्ति विजय राज्ये ब्र० कमलकीर्ति लिखापितं प्राग्वार्थे पठनीया तू मु० जैसा केन मिलितं।

३४९. प्रति सं० २। पत्र सं० ३२०। ले० काल सं० १६५६ फाल्गुन सुदी १५। तीन अध्याय तक पूर्णा। वै० सं० २५४। क भण्डार।

विशेष—बाला बल्लभ दामा ने प्रतिलिपि की थी। टीका विस्तृत है।

३५०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३५ में ५६३। ले० काल—×। अपूर्णा। वै० सं० २५६। क भण्डार।

विशेष—टीका विस्तृत है।

३५१. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६३। ले० काल सं० १७८६। वै० सं० १०४५। अ भण्डार।

३५२. प्रति सं० ५। पत्र सं० २ से २२। ले० काल—×। अपूर्णा। वै० सं० ३२६। 'अ' भण्डार।

३५३. प्रति सं० ६। पत्र सं० १६। ले० काल—×। अपूर्णा। वै० सं० १७६३। 'ट' भण्डार।

३५४. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—पं० सदासुख कासलीवाल। पत्र सं० ३३३। भा० १२ $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—मिद्वान्त। २० काल सं० १६१० फाल्गुन सुदि १०। ले० काल—×। पूर्णा। वै० सं० २४५। क भण्डार।

विशेष—यह तत्त्वार्थसूत्र पर हिन्दी गद्य में मुन्दर टीका है ।

३५५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५१ । ले० काल सं० १६४३ श्रावण सुदी १५ । वे० सं० २४६ ।  
क भण्डार ।

३५६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०२ । ले० काल सं० १६४० मंगसिर बुदी १३ । वे० सं० २४७ ।  
क भण्डार ।

३५७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६१५ श्रावण सुदी ६ । वे० सं० ६६ । अपूर्णा ।  
स्व भण्डार ।

३५८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०० । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ४२ ।

विशेष—पृष्ठ ६० तक प्रथम अध्याय की टीका है ।

३५९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २८३ । ले० काल सं० १६३५ माह सुदी ८ । वे० सं० ३३ । क भण्डार

३६०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १६६६ । वे० सं० २७० । क भण्डार ।

३६१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०२ । ले० काल × । वे० सं० २७१ । क भण्डार ।

३६२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १२८ । ले० काल सं० १६४० चैत्र बुदी ८ । वे० सं० २७२ । क भण्डार ।

विशेष—मोतीलालजी खिन्दूका ने प्रतिलिपि करवाई ।

३६३. प्रति सं० १० । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० ५७३ । च भण्डार ।

विशेष—मागीलाल श्रामाल ने यह ग्रन्थ लिखवाया ।

३६४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ४४ । ले० काल सं० १६५५ । वे० सं० १८५ । छ भण्डार ।

विशेष—श्रानन्दचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई ।

३६५. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ७१ । ले० काल १६१५ श्रावण सुदी ६ वे० सं० ६१ । क भण्डार ।

विशेष—मोतीलाल गंगवाल ने पुस्तक बढ़ाई ।

३६६. तत्त्वार्थ सूत्र टीका—पं० जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० ११८ । प्रा० १३×७ इञ्च । भाषा हिन्दी  
(गद्य) । १० काल सं० १८५६ । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० २५१ । क भण्डार ।

३६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६७ । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० ५७२ । च भण्डार ।

३६८. तत्त्वार्थ सूत्र टीका—पांडे जयवंत । पत्र सं० ६६ । प्रा० १३×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) ।  
विषय—सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० २४१ । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थिम पाठ निम्न प्रकार है :—

केइक जीव अघोर तप करि सिद्ध छै केइक जीव उर्द्ध सिद्ध छै इत्यादि ।

इति श्री उमास्वामी विरचित सूत्र की बालानोधि टीका पांडे जयवंत कृत संपूर्ण नभान्ता । श्री सवाई के  
कहने से वैष्णव रामप्रसाद ने प्रतिलिपि की ।

३६६. तत्त्वार्थसूत्र टीका—आ० कनककीर्ति । पत्र सं० १४५ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी ( गद्य ) । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६६ । कृ भण्डार ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र की ध्रुतसागरी टीका के आधार पर हिन्दी टीका लिखी गयी है । १४५ में आगे पत्र नहीं है ।

३७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०२ । ले० काल × । वे० सं० १३८ । कृ भण्डार ।

३७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६१ । ले० काल सं० १७८३ । पत्र मुदी ६ । वे० सं० २७२ । अ भण्डार ।

विशेष—लालसोट निवासी ईश्वरलाल भजमेरा ने प्रतिलिपि की थी ।

३७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६२ । ले० काल × । वे० सं० ४४६ । अ भण्डार ।

३७३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १३८ । ले० काल सं० १६११ । वे० सं० १६३८ । ट भण्डार ।

विशेष—वैद्य धर्माचन्द काला ने ईसरदा में शिवनारायण जोशी से प्रतिलिपि करवायी ।

३७४. तत्त्वार्थसूत्र टीका—पं० राजमल्ल । पत्र सं० ५ । मे ४८ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ( गद्य ) । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६१ । अ भण्डार ।

३७५. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—छोटीलाल जैसवाल । पत्र सं० २१ । आ० १३×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १६३२ आसोज बुदी ८ । ले० काल सं० १६५२ आसोज मुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २४४ । कृ भण्डार ।

विशेष—मधुराप्रसाद ने प्रतिलिपि की । छोटीलाल के पिता का नाम मांवीलाल था यह अलीगढ़ जिला के महुवा ग्राम के रहने वाले थे । टीका हिन्दी पद्य में है जो अत्यन्त सरल है ।

३७६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल । वे० सं० २६७ । कृ भण्डार ।

३७७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल । वे० सं० २६८ । कृ भण्डार ।

३७८. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—शिवरचन्द्र । पत्र सं० २७ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १८६८ । ले० काल सं० १६५३ । पूर्ण । वे० सं० २४८ । कृ भण्डार ।

३७९. तत्त्वार्थसूत्र भाषा..... । पत्र सं० ६४ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३६ ।

३८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ४६ । ले० काल सं० १८५० बैशाख बुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० ६७ । अ भण्डार ।

३८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६६ । ले० काल । वे० सं० ६८ । अ भण्डार ।

विशेष—द्वितीय अध्याय तक है ।

३८२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३२ । ले० काल सं० १६४१ फागुण बुदी १४ । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

३८३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ८६ । ले० काल × । वे० सं० ४१ । अ भण्डार ।

३८४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४६८ मे ८१३ । ले० काल सं० । अपूर्ण । वे० सं० २६४ । कृ भण्डार ।

३८५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ८७ । २० काल—X । ले० काल सं० १६१७ । वे० सं० ५७१ ।

च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टिप्पण सहित ।

३८६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५३ । ले० काल X । वे० सं० ५७४ । च भण्डार ।

विशेष—पं० सदानुसूत्री की वचनिका के अनुसार भाषा की गई है ।

३८७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३२ । ले० काल X । वे० सं० ५७५ । च भण्डार ।

३८८. प्रति सं० १० । पत्र सं० २३ । ले० काल X । वे० सं० १८५ । छ भण्डार ।

३८९. तत्त्वार्थसूत्र भाषा..... । पत्र सं० ३३ । प्रा० १०X६ $\frac{१}{२}$  इच्छ । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—

मिद्रान्त । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८८६ ।

विशेष—१५वां तथा ३३ ने प्रागे पत्र नहीं है ।

३९०. तत्त्वार्थसूत्र भाषा..... । पत्र सं० ६० से १०८ । प्रा० ११X४ $\frac{१}{२}$  इच्छ । भाषा—X ।

हिन्दी । २० काल X । ले० काल सं० १७१६ । अपूर्ण । वे० सं० २०८१ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवन् १७१६ मिति आश्वयुज मृदी १३ पातिसाह श्रीरंगसाहि राज्य प्रवर्तमाने इदं तत्त्वार्थ शास्त्र मुद्रानामेक ग्रन्थ जन बोधाय विदुषा जयवंता कृतं साह जगन ... पठनार्थं बालाबोध वचनिका कृता । किमर्थं सूत्राणा । मूलसूत्र अनोव गंभीरतर प्रवर्तत तस्य अर्थ केनापि न अवबुध्यते । इदं वचनिका दीपमालिका कृता कश्चित् अभ्य इया पत्रनि ज्ञानो-ज्ञांत भविव्यति । निम्नापितं साह विहारीदास खोजानबी साबडावासी ग्रामेर का कर्मक्षय निमित्त लिखाई साह भोला, गोधा की सहाय से लिखी है राजश्री जैमिहपुरामध्ये लिखी जिहानाबाद ।

३९१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १८६० । वे० सं० ७० । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में टिप्पण रूप में अर्थ दिया है ।

३९२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२ । २० काल X । ले० काल सं० १६०२ ग्रामोज मुदी १० । वे० सं० १६८ । अ भण्डार ।

विशेष—टब्बा टीका सहित है । हारालाल वासन्तीवान फागी बाले ने विजयरामजी पाठ्या के मन्दिर के वास्ते प्रतिलिपि की थी ।

३९३. त्रिभंगीसार—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६६ । प्रा० ६ $\frac{१}{२}$ X४ $\frac{१}{२}$  इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धांत । २० काल X । ले० काल सं० १८५० सावन मुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—लालचन्द्र टोया ने सर्वाई जयपुर में प्रतिलिपि की ।

३९४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १६१६ । अपूर्ण । वे० सं० १४६ । च भण्डार ।

विशेष—जोहरीलालजी गोधा ने प्रतिलिपि की ।

३९५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८७६ कार्तिक मुदी ४ । वे० सं० २४ । अ भण्डार ।

विशेष—भ० शैवकीर्ति के शिष्य गोबर्द्धन ने प्रतिलिपि की थी ।



३६६. त्रिभंगीसार टीका—विश्वेकनम्भि । पत्र सं० ४८ । प्रा० १२×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल म० १८२४ । पूर्ण । वै० सं० २८० । क भण्डार ।

विशेष—पं० महाचन्द्र ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १११ । ले० काल × । वै० सं० २८१ । क भण्डार ।

३६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ से ८५ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २८३ । छ भण्डार ।

३६९. दशवैकालिकसूत्र..... । पत्र म० १८ । प्रा० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—प्रागम २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २२५१ । अ भण्डार ।

४००. दशवैकालिकसूत्र टीका ..... । पत्र म० १ मे ४२ । प्रा० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—प्रागम । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १०९ । छ भण्डार ।

४०१. द्रव्यसंग्रह—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ८ । प्रा० ११×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—प्राकृत । २० काल × । ले० काल सं० १८३५ माघ सुदी १० । पूर्ण । वै० सं० १८५ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १८३५ वर्षक माघ मास शुक्लपक्षे १० तिथी ।

४०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वै० सं० २२९ । अ भण्डार ।

४०३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८८१ समाज सुदी १३ । वै० सं० १३१० । अ भण्डार ।

४०४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ मे ९ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १०२५ । अ भण्डार ।

विशेष—टप्पा टीका सहित ।

४०५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वै० सं० २९२ । अ भण्डार ।

४०६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ११ । ले० काल म० १८२० । वै० सं० ३१२ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित ।

४०७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८१८ भाद्रवा सुदी ३ । वै० सं० ३१३ । क भण्डार ।

४०८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ९ । ले० काल म० १८१५ पीप सुदी १० । वै० सं० ३१४ । क भण्डार ।

४०९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ९ । ले० काल म० १८१४ आषाढ सुदी १ । वै० सं० ३१५ । क भण्डार ।

विशेष—सक्षिप्त संस्कृत टीका सहित ।

४१०. प्रति सं० १० । पत्र सं० १३ । ले० काल म० १८१७ ज्येष्ठ सुदी १२ । वै० सं० ३१६ । क भण्डार ।

४११. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वै० सं० ३१९ । क भण्डार ।

४१२. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वै० सं० ३११ । क भण्डार ।

विशेष—गाथाओं के नीचे संस्कृत में आद्या दी हुई हैं ।

४१३. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १७८९ ज्येष्ठ सुदी ८ । वै० सं० ८६ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं । टोक में पार्वनाथ चैत्यालय में पं० इंगरजी के शिष्य धरमराज के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई ।

४१४. प्रति सं० १४ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८११ । वे० सं० २६५ । ख भण्डार ।

४१५. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ४० । घ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

४१६. प्रति सं० १६ । पत्र सं० २ मे ८ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ४२ । घ भण्डार ।

४१७. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ४३ । घ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्का टीका सहित है ।

४१८. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ३१२ । ङ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

४१९. प्रति सं० १९ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३१३ । ङ भण्डार ।

४२०. प्रति सं० २० । पत्र सं० ९ । ले० काल × । वे० सं० ३१४ । ङ भण्डार ।

४२१. प्रति सं० २१ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० ३१६ । ङ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत और हिन्दी अर्थ सहित है ।

४२२. प्रति सं० २२ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १६७ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

४२३. प्रति सं० २३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० १६९ । च भण्डार ।

४२४. प्रति सं० २४ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८६६ । डि० ब्राथाड मुदी २ । वे० सं० १२२ ।

छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में बालावबोध टीका सहित है । पं० चतुर्भुज ने नागपुर ग्राम में प्रतिलिपि की थी ।

४२५. प्रति सं० २५ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १७८२ । भादवा बुदी ९ । वे० सं० ११२ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्का टीका सहित है । रूपभमेन खनरगच्छ ने प्रतिलिपि की थी ।

४२६. प्रति सं० २६ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० १०६ । ज भण्डार ।

विशेष—टब्का टीका सहित है ।

४२७. प्रति सं० २७ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १२७ । ख भण्डार ।

४२८. प्रति सं० २८ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २०६ । ख भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

४२९. प्रति सं० २९ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० २६४ । ख भण्डार ।

४३०. प्रति सं० ३० । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० २७५ । ख भण्डार ।

४३१. प्रति सं० ३१ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । वे० सं० ३७८ । ख भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

४३२. प्रति सं० ३२ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १७८५ । पीप मुदी ३ । वे० सं० ४९४ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति टप्पा टीका सहित है। सीलोर नगर में पार्श्वनाथ चैत्यालय में मूलसंघ के अंशवती पट्ट के अष्टारक जगतकीर्ति तथा उनके पट्ट में भ० देकेन्द्रकीर्ति के ग्रामनाथ के शिष्य मनोहर ने प्रतिलिपि की थी।

४३३. प्रति सं० ३३। पत्र सं० १५। ले० काल ×। वे० सं० ४९५। अ० अष्टार।

विशेष—३ पत्र तक इत्यं संग्रह है जिसके प्रथम २ पत्रों में टीका भी है। इसके बाद 'सञ्जनचित्तबल्लभ' मल्लियेराचार्य कृत दिया हुआ है।

४३४. प्रति सं० ३४। पत्र सं० ५। ले० काल सं० १९२२। वे० सं० १९४९। अ० अष्टार।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं।

४३५. प्रति सं० ३५। पत्र सं० २ से ६। ले० काल सं० १७८४। अपूर्णा। वे० सं० १८४५। अ० अष्टार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४३६. द्रव्यसंग्रहवृत्ति—प्रभाचन्द्र। पत्र सं० ११। आ० ११२×५१ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल सं० १८२२ मंगसिर बुदी ९। पूर्णा। वे० सं० १०५३। अ० अष्टार।

विशेष—महाचन्द्र ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

४३७. प्रति सं० २। पत्र सं० २५। ले० काल सं० १९५९ पीव मुदी ३। वे० सं० ३१७। अ० अष्टार।

४३८. प्रति सं० ३। पत्र सं० २ से ३२। ले० काल सं० १७३०। अपूर्णा। वे० सं० ३१७। अ० अष्टार।

विशेष—आचार्य कनककीर्ति ने फागपुर में प्रतिलिपि की थी।

४३९. प्रति सं० ४। पत्र सं० २५। ले० काल सं० १७१४ द्वि० श्रावण बुदी ११। वे० सं० १६८।

अ० अष्टार।

विशेष—यह प्रति राजाधिराज गोदीका के पठनार्थ रूपसी भावसा जोबनेर वालों ने सांगानर में लिखी।

४४०. द्रव्यसंग्रहवृत्ति—ब्रह्मदेव। पत्र सं० १०८। आ० ११२×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल सं० १६३५ आसोज बुदी १०। पूर्णा। वे० सं० ६०।

विशेष—इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि राजाधिराज भगवंतदास विजयराज मानसिंह के शासनकाल में भाजपुरा में श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय में हुई थी।

प्रशस्ति—शुक्लाविषये नवमदिने पुष्यनक्षत्रे सोमवासे संवत् १६३५ वर्षे आसोज बदि १० शुभ दिने राजाधिराज भगवंतदास विजयराज मानसिंह राज्य प्रवर्तमाने मालहपुर वास्तव्ये श्री चंद्रप्रभनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे नवाम्नाये बलभारतारण्ये सरस्वतीगण्ड्ये श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनाभदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे मं० श्रीप्रभाचन्द्र देवास्तत्सिष्य मं० श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तत्सिष्य मं० श्रीललितकीर्तिदेवास्तत्सिष्य मं० श्रीचन्द्रकीर्ति देवास्तदाग्नाए खंडेलवालान्वये गंगवालभात्रे सा. नानिग द्वि पदारथा। सा. नानिग भार्या नायकदे तत्पुत्र सा. स्वामा तदभार्या द्वे। प्र. खमिसिरि। द्व० हरमदे तत्पुत्र कमा तद्भार्या करराणदे। द्वि० सा. पदाथ तद् भार्या पिदिमदे तत्पुत्र सा. गोइंद तद्भार्या मोरदे तत्पुत्रांप्रच प्र. वीका, द्वि नराइण, वृ. उदा, चतुर्व बिरम पं० दसरय। प्र. विका भार्या विक्रम दे एनेया सा. कमा इदं सास्त्र लिख्याय आचार्य श्री सिधमंदाए अटपितं।

४४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० सं० १२४ । अ भण्डार ।

४४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १८१० कार्तिक बुदी १३ । वे० सं० ३२३ । क भण्डार ।

४४३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९९ । ले० काल सं० १८०० । वे० सं० ४४ । छ भण्डार ।

४४४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४६ । ले० काल सं० १७८४ अषाढ बुदी ११ । वे० सं० १११ । झ भण्डार ।

४४५. द्रव्यसंग्रहटीका..... पत्र सं० ५८ । प्रा० १०×४३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । १० काल × ।

ले० काल सं० १७३१ माघ बुदी १३ । वे० सं० ५१० । अ भण्डार ।

विशेष—टीका के प्रारम्भ में लिखा है कि घ्रा० नेमिचन्द्र ने मालवदेश की धारा नगरी में भोजदेव के शासनकाल में श्रीपाल मंडलेश्वर के आश्रम नाम नगर में मोमा नामक भावक के लिए द्रव्य-संग्रह की रचना की थी ।

४४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५८ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम बृहद् द्रव्य संग्रह टीका है ।

४४७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १७७८ पौष सुदी ११ । वे० सं० २९५ । अ भण्डार ।

४४८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९९ । ले० काल सं० १६७० भाद्रवा सुदी ५ । वे० सं० ८५ । ख भण्डार ।

विशेष—नागपुर निवासी खंडेलवाल ज्ञानी मेठी गौत्र वाले सा ऊदा की भार्या ऊदलवे ने पत्य व्रतोद्या-पन में प्रतिनिधि कराकर चढ़ाया ।

४४९. प्रति सं० ६६ । ले० का० सं० १६०० वैश्व बुदी १३ । वे० सं० ४५ । घ भण्डार ।

४५०. द्रव्यसंग्रह भाषा ..... पत्र सं० ११ । प्रा० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल सं० १७७१ सावण बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ८६ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में निम्न प्रकार अर्थ दिवा हुआ है ।

गाथा—द्वन्द्व-संग्रहमिमां मुगिराहा दंस-संचयचुदा मुदयुष्णा ।

साधयंतु तलुमुत्तधरेण गेमिचंद मुगिराहा भगियं जं ॥

अर्थ—भो मुनि नाथ ! भो पंडित कैमे ही तुम्हें दोष संचय मुति दोषनि के जु संचय कहिये सप्रूह तिनते जु रहित ही । मया नेमिचंद्र मुनिना भणित । यत् द्रव्य संग्रह टमं प्रत्यक्षी भूता मे जु ही नेमिचंद्र मुनि तिन जु कहाँ यह द्रव्य संग्रह शास्त्र । ताहि साधयंतु । सी धी हु कि कि सी हू । तनु मुत्त धरेण तनु कहिये धोरो सी मूत्र कहिये । सिद्धात ताको जु धारक ह्यो । अल्प शास्त्र करि संयुक्त हो जु नेमिचंद्र मुनि तेन कहाँ जु द्रव्य संग्रह शास्त्र ताको भो पंडित सांभो ।

इति श्री नेमिचंद्राचार्य विरचितं द्रव्य संग्रह बाणबोध संपूर्ण ।

संवत् १७७१ शके १६३६ प्र० श्रावण मास कृष्णपक्षे तृयोदश्या १३ बुधवासरे लिप्यकृतं विद्याधरेण स्वात्मार्ये ।

४५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २६३ । अ भण्डार ।

४५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ मे १६ । ले० काल सं० १८३५ ज्येष्ठ सुदी ८ । वै० सं० ७७४ । अ  
भण्डार ।

विशेष—हिन्दी सामान्य है ।

४५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १८१४ मगसिर बुदी ६ । वै० सं० ३६३ । अ भण्डार  
विशेष—धर्मार्थी रामचन्द्र की टीका के आधार पर भाषा रचना की गई है ।

४५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १५५७ श्राभोज सुदी ८ । वै० सं० ८८ । त्व भण्डार

४५५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वै० सं० ४४ । ग भण्डार ।

४५६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १७४३ श्रावण बुदी १३ । वै० सं० १११ । छ  
भण्डार ।

प्रारम्भ—बालानामुपकाराय रामचन्द्रं ग्ग मभाषया । द्रव्यसंग्रहदान्त्रय व्याख्यानेनो वितन्वते ॥१॥

४५७. द्रव्यसंग्रह भाषा—पर्वतधर्मार्थी । पत्र सं० १६ । श्रा० १३×५३ डच्च । भाषा—गुजराती ।

लिपि हिन्दी । विषय—छह द्रव्यों का वर्णन । २० काल × । ले० काल सं० १८०० माघ बुदि १३ । वै० सं० २१/२६२  
छ भण्डार ।

४५८. द्रव्यसंग्रह भाषा—पद्मलाल चौधरी । पत्र सं० १६ । श्रा० ११<sup>३</sup> ७<sup>३</sup> डच्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—छह द्रव्यों का वर्णन । २० काल × । ले० काल < । पूर्ण । वै० सं० ८२ । घ भण्डार ।

४५९. द्रव्यसंग्रह भाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० ३१ । श्रा० ११<sup>३</sup>×१<sup>३</sup> डच्च । भाषा—हिन्दी

गद्य । विषय—छह द्रव्यों का वर्णन । २० काल सं० १८८३ माघ बुदि १४ । ले० काल > । पूर्ण । वै० सं० १०१२ ।  
अ भण्डार ।

४६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८६३ माघ बुदी १८ । वै० सं० ३०५ । क  
भण्डार ।

४६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५१ । ले० काल > । वै० सं० ३१८ । क भण्डार ।

४६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १८८३ । वै० सं० १६५८ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र ४२ के श्रागे द्रव्यसंग्रह पद्य में है लेकिन वह अपूर्ण है ।

४६२. द्रव्यसंग्रह भाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० ५ । श्रा० १००५ डच्च । भाषा हिन्दी (पद्य)

विषय—छह द्रव्यों का वर्णन । २० काल × । ले० काल < । पूर्ण । वै० सं० ३०२ । क भण्डार ।

४६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १६३६ । वै० सं० ३१८ । छ भण्डार ।

४६४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १६३३ । वै० सं० ३१६ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी गद्य में भो अर्थ दिया हुआ है ।

४६५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८७६ कार्तिक बुदी १४ । वै० सं० ५६१ । च  
भण्डार ।

विशेष—पं० मदाहस्र कामलीवाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की है ।

४६६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४७ । ले० काल × । वे० सं० १६४ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी गद्य में भी अर्थ दिया गया है ।

४६७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३७ । ले० काल × । वे० सं० २४० । अ भण्डार ।

४६८. ब्रह्मसंमर्ष भाषा—बाबा तुलसीचन्द्र । पत्र सं० ३८ । प्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—  
द्वन्द्व शब्दों का वर्णन । २० काल सं० १९६६ प्रागोज सुची १० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२० । क भण्डार ।

विशेष—जयचन्द्र छाबड़ा की हिन्दी टीका के अनुसार बाबा तुलसीचन्द्र ने इसकी दिल्ली में भाषा लिखी थी ।

४६९. ब्रह्मस्वरूप वर्णन । पत्र सं० ६ में १६ तक । प्रा० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—द्वन्द्व  
शब्दों का लक्षण वर्णन । २० काल × । ले० काल सं० १६०५ साधन बुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० २१३७ । ट भण्डार ।

४७०. धवल ..... । पत्र सं० २८ । प्रा० १३×८ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—जैनागम । २०  
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५० । क भण्डार ।

४७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ म १८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५१ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में सामान्य टीका भी दी हुई है ।

४७२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ३५२ । क भण्डार ।

४७३. लक्ष्मीमूर्त ..... । पत्र सं० ८ । प्रा० १२×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—प्रागम । २०  
काल × । ले० काल सं० १५६० । वे० सं० १८४८ । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—सं० १५६० वर्ष श्री खरतरगच्छे विजयराज्ये श्री जिनचन्द्र मुरि पं० नयसमुद्रयग्नि नामा देव ?  
नम्मु शिष्ये वी. पुणलाभ गण्णिभिलेखि ।

४७४. नवतन्त्रगथा ..... । पत्र सं० ३ । प्रा० ११<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—६ तन्त्रों  
का वर्णन । २० काल × । ले० काल सं० १८१३ मंगसिर बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—पं० महाचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

४७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८२३ । पूर्ण । वे० सं० १०५० । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

४७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ से ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७६ । च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

४७७. नवतन्त्र प्रकरण—लक्ष्मीधरराज । पत्र सं० १४ । प्रा० ६<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×४<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
६ तन्त्रों का वर्णन । २० काल सं० १७४७ । ले० काल सं० १८०६ । वे० सं० १ । ट भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का सम्मिश्रण है । राधकचन्द्र शंकावत ने शक्तिसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि की ।

४५८. नवतत्त्ववर्णन..... । पत्र सं० ५ । आ० ८३×४३ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय—जीव प्रजीव आदि ९ तत्त्वों का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० मं० ६०१ । अ भण्डार ।

विशेष—जीव प्रजीव, पुण्य पाप, तथा आश्रव तत्त्व का ही वर्णन है ।

४५९. नवतत्त्व वचनिका—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ५१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय—९ तत्त्वों का वर्णन । २० काल सं० १९३४ आषाढ सुवी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वै० मं० ३६४ । क भण्डार ।

४६०. नवतत्त्वविचार ..... । पत्र सं० ६ मे २४ । आ० १४×४ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय—९ तत्त्वों का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २५६ । अ भण्डार ।

४६१. निजस्मृति—जयतिलक । पत्र सं० ५ मे १३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २३१ । ट भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—

ऽग्यागमिकाचार्यश्रीजयतिलकरचितं निजस्मृत्ये बध—स्वामित्वात्म्यं प्रकरणमेतद्वचतुर्थं । सपुष्पांशु ग्रन्थः । ग्रन्थाग्रन्थ ५६० प्रमाणं । केतरातरा श्री तपोवच्छेद्य पंडित रत्नाकर पंडित श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्री सोभाय—विजयगणि तच्छिष्य मु० सिधविजयन । पं० धन्नापाल ऋषभचन्द की पुस्तक है ।

४६२. नियमसार—आ० कुन्दकुन्द । पत्र सं० १०० । आ० १० इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धांत । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० मं० ५३ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका संज्ञित है ।

४६३. नियमसार टीका—पद्मप्रभमलधारिदेव । पत्र सं० १०२ । आ० १२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल सं० १८३८ माघ बुदा ९ । पूर्ण । वै० सं० ३८७ । क भण्डार ।

४६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८७ । ले० काल सं० १८६६ । वै० मं० ३७१ । अ भण्डार ।

४६५. निरयावलीसूत्र..... । पत्र सं० १३ मे ३६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आयम । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १८६ । घ भण्डार ।

४६६. पञ्चपरिवर्तन ..... । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल . । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १८३८ । अ भण्डार ।

विशेष—जीवों के द्रव्य क्षेत्र आदि पञ्चपरिवर्तनों का वर्णन है ।

४६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल . । वै० सं० ४१३ । क भण्डार ।

४६८. पञ्चसंग्रह—आ० नैमिचन्द्र । पत्र सं० २६ मे २४८ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल . । अपूर्ण । वै० सं० ४०० । ड भण्डार ।

४८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८१२ कार्तिक बुद्धो ८ । वे० सं० १३८ । अ  
भण्डार ।

विशेष—उदयपुर नगर में रत्नरत्निका ने प्रतिलिपि की थी । कही कही हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

४६०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०७ । ले० काल × । वे० सं० ५०६ । अ भण्डार ।

४६१. पञ्चसंग्रहवृत्ति—अभयचन्द्र । पत्र सं० १२० । आ० १२×६ डब्बा । भाषा—संस्कृत । विषय—  
सिद्धांत । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०८ । अ भण्डार ।

विशेष—नवम अधिकार तक पूर्ण । २४-२५वा पत्र नवीन लिखा हुआ है ।

४६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०६ में २५० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०६ अ भण्डार ।

विशेष—केवल जीव काण्ड है ।

४६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८५२ में ६१५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११० । अ भण्डार ।

विशेष—शर्मकाण्ड नवमा अधिकार तक । वृत्ति-रचना पार्ष्वनाथ मन्दिर चित्रकूट में माधु तिंगा के सह-  
योग में की थी ।

४६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५८६ में ७६३ तक । ले० काल सं० १७२३ फागुन सुदी २ । अपूर्ण । वे०  
सं० ७८१ । अ भण्डार ।

विशेष—कुन्दावती में पार्ष्वनाथ मन्दिर में श्रीसंगमाह ( श्रीसंगजेव ) के शासनकाल में राजा वंशोत्पन्न राज  
श्री भार्गवसिंह के राज्यकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

४६५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ८२० । ले० काल सं० १८६८ माघ बुद्धी २ । वे० सं० १२७ । क भण्डार

४६६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६२४ । ले० काल सं० १८५० वैशाख सुदी ३ । वे० सं० १३१ । क भण्डार

४६७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २ में २०८ । वे० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४७ । क भण्डार ।

विशेष—धीच के कुछ पत्र भी नहीं है ।

४६८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७४ में २१४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५ । अ भण्डार ।

४६९ पंचसंग्रह टोका—अभितगति । पत्र सं० ११४ । आ० ११×५ डब्बा । भाषा संस्कृत ।  
विषय—सिद्धांत । १० काल सं० १०७३ ( शक ) । ले० काल सं० १८०७ । पूर्ण । वे० सं० २१४ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ संस्कृत गद्य और पद्य में लिखा हुआ है । ग्रन्थकार का परिचय निम्न प्रकार है ।

श्रीमाधुराणामनघट्टतीना संघोऽभवद् वृत्त विमूषितानाम् ।

हारो मोगुनाभवतापहारी सूत्रानुसारी राशिरश्मि बुध्नः ॥ १ ॥



महात्मनेनगणीगणनीयः शुद्धतमोऽजनि तत्र जनीयः ।

भूयसि सत्यवतीव शशांकः श्रीमति सिधुपतावकलंकः ॥ २ ॥

शिष्यस्तस्य महात्मनोऽपितपतिबोधाभिनामभरणी ।

रेतच्छास्त्रमशेषकर्मसमितिप्रख्यापनापाकृत ॥

कीरस्येव जिनेश्वरस्य गराशुद्धभव्योपकारोद्यतो ।

दुर्बारस्मरदंतिदारराहुरि. श्रीगीतमोऽनुत्तमः ॥ ३ ॥

यद्यत्र सिद्धान्त विरोधिवद्द प्राह्य निराकृत्यतदेतवामै ।

गृह्णति लोका श्रुपकारियभाव निराकृत्य फलं पवित्रं ॥ ४ ॥

अनश्वरं केवलमर्चनीयं यावत्स्वितरं तिष्ठतिमुक्तपत्नी ।

तावद्धरायामिदमत्रशास्त्रं स्वेषाच्छुभं कर्मनिरासकारि ॥

द्विसप्तत्यधिकेन्दना सहस्रं एकविद्विप ।

ममूतिकापुदे जातमिदं शास्त्रं मनोरमं ॥ ५ ॥

इत्यमितगतिकृता नैरासार तपामच्छे ।

५००. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१५ । ले० काल सं० १७६६ माघ बुद्धी १ । वै० सं० १८७ । अ भण्डार

५०१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८० । ले० काल सं० १७२४ । वै० सं० २१६ । अ भण्डार ।

विशेष—जोगं प्रति है ।

५०२. पञ्चसंग्रह टीका— । पत्र सं० २५ । आ० १२८५६ उच्च । भाषा-मस्कृत । विषय-सिद्धान्त ।

१० काल X । ले० काल X । अपूर्णा । वै० सं० ३६६ । क भण्डार ।

५०३. पंचास्तिकाय—कुन्दकुम्भाचार्य । पत्र सं० ५३ । आ० ६ ५ उच्च । भाषा-प्रकृत । विषय-

सिद्धान्त । १० काल : । ले० काल सं० १७०३ । पूर्णा । वै० सं० १०३ । अ भण्डार ।

५०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १६४० । वै० सं० ४०४ । अ भण्डार ।

५०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल : । वै० सं० ४०२ । क भण्डार ।

५०६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६६ । वै० सं० ४०३ । क भण्डार ।

५०७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३२ । ले० काल X । वै० सं० ३२ । क भण्डार

विशेष—त्रिनीय स्कन्ध तक है । माथाघा पर टीका भी की है ।

५०८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १८ । ले० काल X । वै० सं० १८७ । अ भण्डार ।

५०९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १७२४ आषाढ बुद्धी ५ । वै० सं० १६६ । अ भण्डार ।

विशेष—अंवावती मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५१०. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं १६६ । क भण्डार ।

५११. पञ्चास्तिकाय टीका—अमृतचन्द्र सूरि । पत्र सं० १२४ । प्रा० १२५×७ इञ्च । भाषा संस्कृत  
विषय—मिद्धान्त । १० काल × । ले० काल सं० १६३८ श्रावण सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं ४०५ । क भण्डार ।

५१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०५ । ले० काल सं० १४८७ वैशाख सुदी १० । वे० सं० ४०२ ।  
क भण्डार ।

५१३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७६ । ले० काल × । वे० सं० २०२ । च भण्डार ।

५१४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १६५६ । वे० सं० २०३ । च भण्डार ।

५१५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १५४१ कार्तिक सुदी १४ । वे० सं० । च भण्डार ।

प्रशस्ति—चन्द्राग्री वास्तव्ये खण्डेनवानान्वये मा. फहरी भार्या घमला नयो. पुत्रधामु तस्य भार्या घनगिरि  
नाम्या पुत्र मा. होलु भार्या मुनखत तस्य दामाद मा. हंवरराज तस्य भ्राता देवपति एवै पुत्रक पञ्चास्तिकायात्रिषं निवाय  
कुलभूषणस्य कर्मधार्य दत्त ।

५१६. पञ्चास्तिकाय भाषा—पं० हीरानन्द । पत्र सं० ६३ । प्रा० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।  
विषय—मिद्धान्त । १० काल सं० १७०० ज्येष्ठ सुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४०७ । क भण्डार ।

विशेष—जहानाबाद में बरदगढ़ जहांगीर के समय में प्रतिनिधि हुई ।

५१७. पञ्चास्तिकाय भाषा—पांडे हेमराज । पत्र सं० १७५ । प्रा० १३×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।  
विषय—मिद्धान्त । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४०६ । क भण्डार ।

५१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३५ । ले० काल सं० १६४७ । वे० सं० ४०८ । क भण्डार ।

५१९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४६ । ले० काल × । वे० सं० ४०३ । क भण्डार ।

५२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५० । ले० काल सं० १६५४ । वे० सं० ६२० । च भण्डार ।

५२१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४४ । ले० काल सं० १६३६ प्राषाढ सुदी ४ । वे० सं० ६२१ । च भण्डार ।

५२२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३६ । १० काल × । वे० सं० ६२२ । च भण्डार ।

५२३. पञ्चास्तिकाय भाषा—बुधजन । पत्र सं० ६११ । प्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।  
विषय—मिद्धान्त । १० काल सं० १८६२ । ले० काल × । वे० सं० ७१ । क भण्डार ।

५२४. पुरयतन्त्रचर्चा— । पत्र सं० ६ । प्रा० १० १/२ × ४ १/२ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—मिद्धान्त ।  
१० काल सं० १८८१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०४१ । ट भण्डार ।

५२५. बंध उदय सत्ता चौपई—श्रीलाल । पत्र सं० ६ । प्रा० १० १/२ × ८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।  
विषय—मिद्धान्त । १० काल सं० १८८१ । ले० काल × । वे० सं० १६०५ । पूर्ण । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ ।

बिमल जिनेश्वरप्रणुं पाय, मुनिमुक्त कूं सीस नवाय ।

सतशुक्र मारद हिरदे धरूं, बंध उदय सत्ता उचरूं ॥ १ ॥

**अम्बित्तम**—बंध उबै सत्ता बल्लास्यौ, ग्रन्थ त्रिभंगीसार तै जागि ।

सुद्ध अमुद्ध सुधा रसु नारा, अल्प बुद्धि मे करु बल्लाग ॥ १२ ॥

साहित्य राम मुभक्तुं बुध दर्ई, नगर पचेवर माही लही ।

मुभ उतपत उगी कै माहि, श्रावक कुल गंगवाल कहाहि ॥ १३ ॥

काल पाय के पंडित भयो, नैराचन्द के शिष्य म थयो ।

नगर पचेवर माहि गयो, आदिनाथ मुभु वर्सागु थियो ॥ १४ ॥

पापकर्म ते बिलत भयो, लाब जा कर रहतां भयो ।

शोतल जिनकूँ करि परिराम, स्वपर कारग ने कहे बल्लाग ॥ १५ ॥

मंवल घठरासै का कहा, अवर अक्यासी ऊपर लहा ।

पडत सुएत अष लय होय, पुन्य बंध बुधि बहु होय ॥ १६ ॥

॥ इति श्री उदै बंध वना समाप्ता ॥

**इससे आगे चौबीस ठाणा की चौपाई है—**

**प्रारम्भ**—इव धर्म गुरु ग्रन्थ पद बंदी मन वच काय ।

गुणठाणनि परि ग्रन्थ की रचना कहू बगाय ॥

**अम्बित्तम**—इह विधि तस गुणस्थान की रचना वरणी सार ।

भूल चूक जो होय तो, बुधजस लहु मुधार

छटि मंगसिर कृष्ण की लावा नगर मभार ।

उगरीसै अरु पाच के गाल जाय श्रीलाल ॥

॥ इति सम्पूर्ण ॥

४०६. **भगवतीसूत्र**—पत्र सं० ५० । आ० ११ १२१ डब्ब । भाषा—प्रकृत । विषय—ग्रामम । २० काल । पूर्ण । वे० सं० २२०७ । अ भण्डार ।

४२७. **भाषत्रिभंगी—नेमिचन्द्रचार्य** । पत्र सं० ५१ । आ० ११ ५ डब्ब । भाषा—प्रकृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल । वे० काल X । पूर्ण । वे० सं० ५५२ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रथम पत्र दुवारा लिखा गया है ।

४२८. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ५४ । वे० काल सं० १०११ माघ मूनि ३ । २० काल ५६० । क भण्डार ।

विशेष—पं० रूपचन्द ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि जयपुर में की थी ।

४२९. **भावदीपिका भाषा**—। पत्र सं० ५५ । आ० १२ १३ । भाषा—प्रकृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल । वे० काल X । पूर्ण । वे० सं० ५६७ । क भण्डार ।

४३०. **मरणकारंडिका** । पत्र सं० ५६ । आ० १३ १४ डब्ब । भाषा—प्रकृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल । वे० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६०० ।

विशेष—आचार्य निवकोटि की आराधना पर अमितिगति का टिप्पण है ।

५३१. मार्गशा व गुणस्थान वर्णन—। पत्र सं० ३-५५ । आ० १८५ ड३ । भाषा-प्राकृत । विषय-  
गिदांत । १० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १७४२ । ट भण्डार ।

५३२. मार्गशा समास—। पत्र सं० ३ मे १८ । आ० ११३ ५ ड३ । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त  
१० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २१८६ । ट भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका तथा हिन्दी अर्थ सहित है ।

५३३. रायपसेयी सूत्र—। पत्र सं० १५३ । आ० १०५ ४ ड३ । भाषा-प्राकृत । विषय-आगम । १०  
काल × । ले० काल सं० १७६७ प्रासोज मुदी १० । वे० सं० २०३२ । ट भण्डार ।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी टीका सहित है । समसागर के शिष्य लालसागर उनके शिष्य मन्वसागर  
मन्वपटनार्थ टीका की । गाथाओं के ऊपर व्याख्या की हुई है ।

५३४. लखिसार—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५७ । आ० १२५ ड३ । भाषा-प्राकृत । विषय-  
सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ३२१ । च भण्डार ।

विशेष—५७ ने आगे पत्र नहीं है । संस्कृत टीका सहित है ।

५३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ३२२ । च भण्डार ।

५३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० १६०० । ट भण्डार ।

५३७. लखिसार टीका—। पत्र सं० १५७ । आ० १६८ ड३ । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त ।  
१० काल × । ले० काल सं० १६५६ । पूर्णा । वे० सं० ६३८ । क भण्डार ।

५३८. लखिसार भाषा—प० टोडरमल । पत्र सं० १८० । आ० १३८ ड३ । भाषा-हिन्दी ।  
विषय-सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल १६६६ । पूर्णा । वे० सं० ६३६ । क भण्डार ।

५३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६३ । ले० काल × । वे० सं० ७५ । ग भण्डार ।

५४०. लखिसार स्रपणामार भाषा—प० टोडरमल । पत्र सं० १०० । आ० १५८ ड३ । भाषा-  
हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ७६ । ग भण्डार ।

५४१. लखिसार स्रपणामार मंत्रशि—प० टोडरमल । पत्र सं० ४६ । आ० १४८ ड३ । भाषा-  
हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । १० काल सं० १८८६ बँत बुदी ७ । वे० सं० ७७ । ग भण्डार ।

विशेष—काचुराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

५४२. विपाकसूत्र—। प० सं० ३ मे ३५ । आ० १२५ ड३ । भाषा-प्राकृत । विषय-आगम । १०  
काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २१३१ । ट भण्डार ।

५४३. विशेषमत्तात्रिभंगी—आ० नेमिचन्द्र । पत्र सं० ६ । आ० १५८ ड३ । भाषा-प्राकृत ।  
विषय-सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० २४३ । अ भण्डार ।

५४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल ५ । वे० सं० ३४६ । अ भण्डार ।

५४५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १२०२ आसोज बुदी १३ । अपूर्णा । वे० सं० ८५४ ।

अ भण्डार ।

विषय—३० से ३४ तक पत्र नहीं है । जयपुर में प्रतिनिधि हुई ।

५४५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल ५ । अपूर्णा । वे० सं० ८५५ । अ भण्डार ।

विषय—केवल आश्वय विभङ्गी ही है ।

५४७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७३ । ले० काल ५ । अपूर्णा । वे० सं० ७६० । अ भण्डार ।

विषय—दो तीन प्रतियों का सम्मिश्रण है ।

५४८. षट्श्लोका वर्णन ... पत्र सं० १ । आ० १०५६ इक्ष । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—मिद्वान्त ।

२० काल ५ । ले० काल ५ । अपूर्णा । वे० सं० १८६० । अ भण्डार ।

विषय—षट् श्लोका पर दोहे है ।

५४९. षट्श्लोका शतक टीका—राजहंसापाध्याय । पत्र सं० ३१ । आ० १०५७ इक्ष । भाषा संस्कृत । विषय—मिद्वान्त । २० काल सं० १५७९ आदवा । ले० काल सं० १५७९ अग्रहन बुदी ६ । पूर्णा । वे० सं० १३५ । अ भण्डार ।

विषय—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

श्रीमज्जडकढाभिखो गोत्रे गोत्रावन्तिके, सुश्रावणशिरारण्ये देवहाण्यो ममभूतुरा ॥ १ ॥

स्वजन-जलधिचन्द्रस्तनतृजो वितद्रो, विबुधकुमुदचन्द्रः सर्वविद्यासमुद्रः ।

जयति प्रकृतिभद्रः प्राञ्चराज्ये समुद्रः, खल हरिणा हरिन्द्रो रायचन्द्रो महान् ॥ २ ॥

तदंगजन्माजितजैनभक्तः परोपकारव्यसनैकशक्तः सदा सदाचारविचारविज्ञः साहजराज मुकुतीकुलजः ॥ ३ ॥

श्रीमाल-भूपातकुलप्रदीपः समेदिनी मल्लह पावनीय । नंद्यादमंथ गुणमादधानः तन्मूर्तुरन्युनगुणप्रधान ॥ ४ ॥

भायावचगुणैरायां कम्पाद्रपतित्रता, कर्मलेख इरेमन्यस्य वास्वामान विराजते ॥ ५ ॥

तन्नुत्राभयचंद्रोस्ति भव्यचन्द्र इवापरः, निर्भयो निष्कलकश्च निष्कुरंग कलातिथिः ।

तस्याभ्यर्थनया तया विरचिता श्रीराजहंसाभिद्यापाध्याये शतपष्टिकस्य विमलावृत्तिः शिशूना हित्वा ।

वर्षे नद मुनिपुत्रं सहिते गावाण्यमाना बुधे । मामे भाद्रपदे मिकंदरपुरे नंद्याचिर भूतले ॥ ७ ॥

स्वच्छे स्वरतरंगच्छे श्रीमाज्जनंदनमूरिसंताने । जिननिलकसूरिसुगुः शिष्य श्रावर्षनिलकोऽभूत् ॥ ८ ॥

तच्छिद्रम्येन कृत्ये पाठकमुख्येन राजहंसेन षट्श्लोकाशतप्रकरणगटाका नंद्याचिरं मह्या ॥ ९ ॥

एति षट्श्लोकाशतप्रकरणस्य टीका कृता श्री राजहंसापाध्यायैः ॥ समयहंसेन वि० ॥

संवत् १५७९ समये अग्रहन बुदि ६ गत्रिवासरे लेखक श्री भिवागीदामेन लेखि ।

५५०. श्लोकवार्त्तिक—आ० विद्यानिधि । पत्र सं० १५८५ । आ० १०५८ इक्ष । भा० संस्कृत । विषय—मिद्वान्त । २० काल ५ । ले० काल १८४४ आसोज बुदी ७ । पूर्णा । वे० सं० ७०७ । अ भण्डार ।

विशेष—यह तत्त्वार्थसूत्र की बृहद् टीका है। पद्मालाल चौधरी ने इसकी प्रतिलिपि की थी। ग्रन्थ तीन वेष्टनों में बंधा हुआ है। हिन्दी अर्थ सहित है।

५५१. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल  $\times$ । वे० सं० ७८। च भण्डार।

तत्त्वार्थसूत्र के प्रथम अध्याय की प्रथम सूत्र की टीका है।

५५२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८०। ले० काल  $\times$ । अपूर्णा। वे० सं० १६५। च भण्डार।

५५३. संग्रहणीसूत्र .....। पत्र सं० ३ से २८। आ० १०/४ इञ्च। भाषा प्राकृत। विषय—आगम। १० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । अपूर्णा। वे० सं० २०२। च भण्डार।

विशेष—पत्र सं० ६, ११, १६ से २०, २३ से २५ नहीं है। प्रति सचित्र है। चित्र सुन्दर एवं दर्शनीय है। ८, २१ और २८ वे पत्र को छोड़कर सभी पत्रों पर चित्र हैं।

५५४. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल  $\times$ । वे० सं० २३३। छ भण्डार। ३११ गायथे है।

५५५. संग्रहणी बालावबोध—शिवनिधानगण्डि। पत्र सं० ७ से ५३। आ० १० $\frac{३}{४}$  इञ्च। भाषा—प्राकृत—हिन्दी। विषय—आगम। १० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । वे० सं० १००१। च भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

५५६. सत्ताद्वार .....। पत्र सं० ३ से ७ तक। आ० ८ $\frac{३}{४}$  इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय—सिद्धान्त १० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । अपूर्णा। वे० सं० ३६१। च भण्डार।

५५७. सत्तात्रिभंगी—भेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० २ से ४०। आ० १२ $\times$ ६ इञ्च। भाषा प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। १० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । अपूर्णा। वे० सं० १८४२। ट भण्डार।

५५८. सर्वार्थसिद्धि—पूज्यपाद्। पत्र सं० ११८। आ० १२ $\times$ ६ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय—सिद्धान्त १० काल  $\times$ । ले० काल सं० १८७६। पूर्णा। वे० सं० ११२। च भण्डार।

५५९. प्रति सं० २। पत्र सं० ३६८। ले० काल सं० १६४४। वे० सं० ७६८। क भण्डार।

५६०. प्रति सं० ३। पत्र सं० .....। ले० काल  $\times$ । अपूर्णा। वे० सं० ८०७। छ भण्डार।

५६१. प्रति सं० ४। पत्र सं० १२२। ले० काल  $\times$ । वे० सं० ३७७। च भण्डार।

५६२. प्रति सं० ५। पत्र सं० ७२। ले० काल  $\times$ । वे० सं० ३७८। च भण्डार।

विशेष—चतुर्थ अध्याय तक ही है।

५६३. प्रति सं० ६। पत्र सं० १-१३३, २००-२६३। ले० काल सं० १६२५। माघ सुदी ५। वे० सं० ३७६। च भण्डार।

निम्नकाल और दिखे गये हैं—

सं० १६६३ माघ शुक्ल ७-६ कानाबेरा में श्रीनारायण ने प्रतिलिपि की थी। सं० १७१७ कार्तिक सुदी १३ ब्रह्म नाथू ने भेंट में दिया था।

५६४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १८२ । ले० काल × । वै० सं० ३८० । च भण्डार ।

५६५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १५८ । ले० काल × । वै० सं० ८४ । छ भण्डार ।

५६६. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १३४ । ले० काल सं० १८८३ ज्येष्ठ बुदी २ । वै० सं० ८५ । छ भण्डार ।

५६७. प्रति सं० १० । पत्र सं० २७६ । ले० काल सं० १७०८ वैशाख बुदी ९ । वै० सं० २१९ । अ भण्डार ।

५६८. सर्वार्थसिद्धि भाषा—जयचन्द्र व्यावहारी । पत्र सं० ६४३ । प्रा० १३०७ ईश्वर । भाषा हिन्दी विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १८६१ चैत बुदी ५ । ले० काल सं० १९२९ कार्तिक बुदी ९ । पूर्ण । वै० सं० ७६९ क भण्डार ।

५६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१८ । ले० काल × । वै० सं० ८८० । छ भण्डार ।

५७०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४६७ । ले० काल सं० १९१७ । वै० सं० ७०५ । च भण्डार ।

५७१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २७० । ले० काल सं० १८८३ वानिक बुदी २ । वै० सं० १६७ । अ भण्डार ।

५७२. सिद्धान्तार्थसार—पं० रघु । पत्र सं० ९९ । प्रा० १३०८ ईश्वर । भाषा आङ्ग्ल । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल सं० १९५६ । पूर्ण । वै० सं० ७९९ । क भण्डार ।

विशेष—यह प्रति सं० १५९३ वाली प्रति में लिखी गई है ।

५७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ९६ । ले० काल सं० १८६८ । वै० सं० ८०० । च भण्डार ।

विशेष—यह प्रति भी सं० १५९३ वाली प्रति में ही लिखी गई है ।

५७४. सिद्धान्तसार भाषा— । पत्र सं० ७५ । प्रा० १८७३ ईश्वर । भाषा हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल सं० १८९६ । पूर्ण । वै० सं० ७९६ । च भण्डार ।

५७५. सिद्धान्तलेशसंग्रह— । पत्र सं० ९६ । प्रा० १८७३ ईश्वर । भाषा हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल सं० १८९८ । पूर्ण । वै० सं० १८४८ । अ भण्डार ।

विशेष—वैदिक साहित्य है । दो प्रतियों का सम्मिश्रण है ।

५७६. सिद्धान्तसार दीपक—मकलकीर्ति । पत्र सं० ८८० । प्रा० १८७३ ईश्वर । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १६१ ।

५७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८८ । ले० काल सं० १८२६ पोष बुदी २२ । वै० सं० १९८ । अ भण्डार । विशेष—पं० चोखचन्द के शिष्य पं० किशनदास के वाचसार्थ प्रतिनिधि की गई थी ।

५७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५५ । ले० काल सं० १७९२ । वै० सं० १३० । अ भण्डार ।

५७९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २३६ । ले० काल सं० १८३२ । वै० सं० ८०० । क भण्डार ।

विशेष—सलोपराम पाठनी ने प्रतिनिधि की थी ।

५८०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७८ । ले० काल सं० १८१३ । वैशाख बुदी ८ । वै० सं० १२० । अ भण्डार ।

विशेष—साहजहानाबद नगर में स्थायी शीलारवि ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाई थी।

५२१. प्रति सं० ६। पत्र सं० १७३। ले० काल १। अपूर्णा। वे० सं० २२२। च भण्डार।

विशेष—कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हैं।

५२२. प्रति सं० ५। पत्र सं० १८६। ले० काल १। अपूर्णा। वे० सं० २२२। च भण्डार।

५२३. सिद्धान्तसारदीपक—। पत्र सं० ६। भा० १२/६ दृष्ट। भाषा संस्कृत। विषय—सिद्धान्त।

२० काल १। ले० काल १। पूर्णा। वे० सं० २२६। च भण्डार।

विशेष—केवल ज्योतिषशास्त्र वर्णन वाला १७वाँ अधिकार है।

५२४. प्रति सं० २। पत्र सं० १८६। ले० काल १। वे० सं० २२५। च भण्डार।

५२५. सिद्धान्तसार भाषा—नथमल बिलाला। पत्र सं० ८३। भा० १३/१५ दृष्ट। भाषा हिन्दी।

विषय—सिद्धान्त। २० काल सं० १८८५। ले० काल १। पूर्णा। वे० सं० १२६। च भण्डार।

५२६. प्रति सं० २। पत्र सं० २५०। ले० काल १। वे० सं० २५०। च भण्डार।

विशेष—रचनाकार 'क' भण्डार की प्रति में है।

५२७. सिद्धान्तसारसंग्रह—आ० नरेंद्रदेव। पत्र सं० १६। भा० १२/५ दृष्ट। भाषा संस्कृत।

विषय—सिद्धान्त। २० काल १। ले० काल १। अपूर्णा। वे० सं० ११६५। च भण्डार।

विशेष—द्वितीय अधिकांश तक पूर्ण तथा चतुर्थ अधिकांश अपूर्ण है।

५२८. प्रति सं० २। पत्र सं० १००। ले० काल सं० १२६६। वे० सं० १२६। च भण्डार।

५२९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५५। ले० काल सं० १२३०। भाषा हिन्दी। वे० सं० १५०। च भण्डार।

विशेष—प० रामचन्द्र ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी।

५३०. सूत्रकृतान्त—। पत्र सं० १३। भा० १०/६ दृष्ट। भाषा प्राकृत। विषय—आयुषः।

२० काल १। ले० काल १। अपूर्णा। वे० सं० २३३। च भण्डार।

विशेष—आरम्भ के १५ पत्र नहीं हैं। प्रति संस्कृत टीका सहित है। बहुत से पत्र संभवतः नष्ट हो चुके हैं।

बीज में सूत्र गणना है तथा अन्त में टीका है। इसी से सूत्रकृतान्त शीला गोखलमाध्याय।



## विषय-धर्म एवं आचार शास्त्र

५६१. अट्टाईसमूलगुणवर्णन ... । पत्र सं० १ । प्रा० १०३:५५ ट. ६३ । भाषा—संस्कृत । विषय—  
पुनित्तवर्णन । २० काल × । पूर्ण । वै० सं० २०३० । अ. भण्डार ।

५६२. अतनारधर्मसूत्र—पं० आशाधर । पत्र सं० ३७७ । प्रा० ११३:५५ ट. ६३ । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—मुनिधर्म वर्णन । २० काल सं० १३०० । ने० काल सं० १७७७ माघ सुदी १ । पूर्ण । वै० सं० ६३१ । अ.  
भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित है । बौली नगर में श्रीमहाराजा कुशनसिंहजी के शासनकाल में महर्जा  
रामचन्द्रजी ने प्रतिलिपि करवायी थी । सं० १८२६ में पं० मुखराम के शिष्य पं० केशव ने ग्रन्थका सशोधन किया था ।  
६२ में १६९ तक नवीन पत्र है ।

५६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५३ । ने० काल । वै० सं० १८ । अ. भण्डार ।

५६४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७७ । ने० काल । वै० सं० १६५३ कालिक सुदी ५ । वै० सं० १६ ।  
अ. भण्डार ।

५६५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३७ । ने० काल × । वै० सं० ४६७ । अ. भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । पं० माधव ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी । ग्रन्थ का दूसरा नाम 'धर्मासूत्रमूलि-  
संग्रह' भी है ।

५६६. अनुभवप्रकाश—दीपचन्द्र कासलीवाल । पत्र सं० ४४० । प्रा० १२०:७३ ट. ६३ । भाषा—  
हिन्दी (राजस्थानी) गद्य । विषय—धर्म । २० काल सं० १७०१ पीप सुदी ५ । ने० काल सं० १८१४ । अपूर्ण । वै० सं०  
१ । अ. भण्डार ।

५६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ में ७४ । ने० काल । अपूर्ण । वै० सं० २१ । अ. भण्डार ।

५६८. अनुभवानन्द ... । पत्र सं० ५६ । प्रा० १३३:५६ ट. ६३ । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म ।  
२० काल × । ने० काल । पूर्ण । वै० सं० १३ । अ. भण्डार ।

असूत्रधर्मसकाय—गुणचन्द्रदेव । पत्र सं० ३ में ६६ । प्रा० १०३:५५ ट. ६३ । भाषा—संस्कृत । विषय—  
आचार शास्त्र । २० काल × । ने० काल सं० १६८५ पीप सुदी १ । अपूर्ण । वै० सं० २३४ । अ. भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के दो पत्र नहीं हैं । अन्तिम पुष्पिका—इति श्री गुणचन्द्रदेवविरचितसूत्रधर्मसकाय  
व्याख्यानं धारकव्रतनिरूपणं चतुर्विंशति प्रकरणं संपूर्णं । प्रगमिन् निम्न प्रकार है—

पट्टे श्री कुंदकुंदाचार्ये तत्पट्टे श्री सहस्रकर्मि तत्पट्टे श्रीभुवनकोत्तिदेवभट्टारके तत्पट्टे श्री पद्मविदेव  
भट्टारके तत्पट्टे श्री जयकोत्तिदेव तत्पट्टे श्री ललितकीर्तिदेव तत्पट्टे श्री गुणरत्नकीर्ति तत्पट्टे श्री ५ गुणचन्द्रदेव भट्टारके

विरचित महाग्रन्थ कर्मक्षयार्थ । लौहटमुत पंडितभी सावलदास पठनार्थ । अन्तिसीःयमावपट्टप्रकाशन धर्मउपदेशकनार्थ । चन्द्रप्रभ जैत्यालयं माघ मासे कृष्णशुक्ले पूष्यनक्षत्रे पार्थिव दिने १ शुक्रवारे सं० १६०५ वर्षे वैरागरशामे चौधरी चन्द्र-  
मेनिमहाथे तन्मुत चतुर्भुज जगमनि परमरामु खेमराज भ्राता पंच सहायिका । शुभं भवतु ।

६००. आगमबिलास—द्यानतराय । पत्र सं० ७३ । आ० १०<sup>३</sup>×६<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य)  
विषय—धर्म । २० काल सं० १७८३ । ने० काल सं० १६२८ । पूर्ण । वे० सं० ४२ । क भण्डार ।

विशेष—रचना संवत् मम्बन्धी पद्य—“गुण वसु शैल मितंश”

ग्रन्थ प्रशस्ति के अनुसार द्यानतराय क पुत्र ने उक्त ग्रन्थ की मूल प्रति को आम्बू की बेचा तथा उसके पान  
न वहू मूल प्रति जगताराय के हाथ में आयी । ग्रन्थ रचना द्यानतराय ने प्रारम्भ की थी किन्तु बीच ही में मरगवान  
शास्त्रों के कारण जगताराय ने सन् १७८८ में मैनपुरी में ग्रन्थ को पूर्ण किया । आगम बिलास में कवि की विविध  
रचनाओं का संग्रह है ।

६०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०१ । ने० काल सं० १६५६ । वे० सं० ४३ । क भण्डार ।

६०२. आचारमार—वीरनंदि । पत्र सं० ४६ । आ० १२. ५<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार  
शास्त्र । २० काल । ने० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० १२७ । अ भण्डार ।

६०३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०१ । ने० काल × । वे० सं० ४४ । क भण्डार ।

६०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०६ । ने० काल . । अपूर्ण । वे० सं० ४ । अ भण्डार ।

६०५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३२ में ७२ । ने० काल . । अपूर्ण । वे० सं० ४=५ । अ भण्डार ।

६०६. आचारमार भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० २०३ । आ० ११. ८ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—आचारशास्त्र । २० काल सं० १९३४ वैशाख बुदी ६ । ने० काल . । वे० सं० ८५ । क भण्डार ।

६०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६२ । ने० काल . । वे० सं० ८६ । क भण्डार ।

६०८. आराधनामार—देवसेन । पत्र सं० २० । आ० ११. ८<sup>३</sup> । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २०  
काल-१०वा पत्रावली । ने० काल . । अपूर्ण । वे० सं० १७० । अ भण्डार ।

६०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६८ । ने० काल . । वे० सं० २२० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है

६१०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ने० काल . । वे० सं० ३३७ । अ भण्डार

६११. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ । ने० काल . । वे० सं० २८४ । अ भण्डार ।

६१२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ने० काल . । वे० सं० २१५१ । अ भण्डार ।

६१३. आराधनासार भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १६ । आ० १०. ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—धर्म । २० काल सं० १९३१ चैत्र बुदी ६ । ने० काल . । पूर्ण । वे० सं० ६७ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रयासि का अंतिम पत्र मही है ।

६१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४० । ले० काल ५ । वै० सं० ६८ । क भण्डार ।

६१५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५२ । ले० काल ५ । वै० सं० ६९ । क भण्डार ।

६१६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २४ । ले० काल ५ । वै० सं० ७५ । क भण्डार ।

विशेष—गाथायें भी हैं ।

६१७. आराधनासार भाषा ... । पत्र सं० १६ । भा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।  
२० काल । ले० काल ५ । पूर्ण । वै० सं० २१२१ । ट भण्डार ।

६१८. आराधनासार बचनिका—भाषा तुलीचन्द्र । पत्र सं० २२ । भा० १२×५ इञ्च । भाषा—  
हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । २० काल २०वीं शताब्दी । ले० काल ५ । पूर्ण । वै० सं० १८३ । छ भण्डार ।

६१९. आराधनासार वृत्ति—पद आशाधर । पत्र सं० ६ । भा० १०×४½ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—धर्म । २० काल १३वीं शताब्दी । ले० काल ५ । पूर्ण । वै० सं० १० । ख भण्डार ।

विशेष—युनि नवचन्द्र के लिए ग्रन्थरचना की थी । टीका का नाम आराधनासार रसगु है ।

६२०. आहार के खियालीस दोष बर्णन—भैया भगवतीदास । पत्र सं० २ । भा० ११×७½ इञ्च ।  
भाषा—हिन्दी । विषय—आचारशास्त्र । २० काल सं० १७५० । ले० काल ५ । पूर्ण । वै० सं० २०४ । क भण्डार ।

६२१. उपदेशरत्नमाला—धर्मदासगण । पत्र सं० २० । भा० १०×८½ । भाषा—प्राच्य । विषय—  
धर्म । २० काल ५ । ले० काल सं० १७५५ कालिक मुद्री ३ । पूर्ण । वै० सं० ६२८ । अ भण्डार ।

६२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल ५ । वै० सं० ३४८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन पत्र संस्कृत टीका सहित है ।

६२३. उपदेशरत्नमाला—सकलभूषण । पत्र सं० १२९ । भा० ११×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—धर्म । २० काल सं० १६२७ श्रावण मुद्री ६ । ले० काल सं० १७९७ श्रावण मुद्री १४ । पूर्ण । वै० सं० १११ ।  
अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर नगर में श्री गोपीराम बिलाला ने प्रोत्साहित करवाई थी ।

६२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३९ । ले० काल ५ । वै० सं० २७ । अ भण्डार ।

६२५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२९ । ले० काल सं० १७२० श्रावण मुद्री ४ । वै० सं० २८० । अ  
भण्डार ।

६२६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६९ । ले० काल सं० १६६८ कालिक मुद्री १२ । अपूर्ण । वै० सं० ६५० ।  
अ भण्डार ।

विशेष—पत्र सं० १० में ६३ तथा १०० नहीं हैं । प्रमाण में निम्नप्रकार लिखा है—“शेरपुर की समस्त  
भावगणी ज्ञान कथाशा निमित्त इस शास्त्र की श्री पार्वतीश निमित्त भण्डार में रचवाया ।”

६२७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २५ से १२३ । ले० काल × । वै० सं० ११७५ । अ भण्डार ।

६२८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३८ । ले० काल × । वै० सं० ७७ । क भण्डार ।

६२९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२८ । ले० काल × । वै० सं० ८२ । क भण्डार ।

६३०. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३६ से ६१ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ८३ । क भण्डार ।

६३१. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६४ से १४५ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १०९ । क भण्डार ।

६३२. प्रति सं० १० । पत्र सं० ७२ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १४६ । क भण्डार ।

६३३. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १६७ । ले० काल सं० १७२७ ज्येष्ठ बुदी ६ । वै० सं० ३१ । अ भण्डार ।

६३४. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १८१ । ले० काल × । वै० सं० २७० । अ भण्डार ।

६३५. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १६५ । ले० काल सं० १७१८ फागुण सुदी १२ । वै० सं० ६५२ ।

अ भण्डार ।

६३६. उपदेशसिद्धान्तप्रामाणा—भडारी नेमिचन्द्र । पत्र सं० १६ । प्रा० १२×७ इञ्च । भाषा—  
प्राकृत । विषय—धर्म । १० काल × । ले० काल सं० १९६३ प्राषाढ सुदी ३ । पूर्ण । वै० सं० ७८ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी दी हुई है ।

६३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । वै० सं० ७९ । क भण्डार ।

६३८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८३४ । वै० सं० १२५ । घ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

६३९. उपदेशसिद्धान्तप्रामाणा भाषा—भागचन्द्र । पत्र सं० २८ । प्रा० १२×८ इञ्च । भाषा—  
हिन्दी । विषय—धर्म । १० काल सं० १९१२ प्राषाढ बुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७५९ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ को सं० १९६७ में कानूनाम पोन्त्याका ने खरीदा था । यह ग्रन्थ पट्टकमोपदिशमाला का हिन्दी अनुवाद है ।

६४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १९२९ ज्येष्ठ सुदी १३ । वै० सं० ८० । क भण्डार ।

६४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८९ । ले० काल × । वै० सं० ८१ । क भण्डार ।

६४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १९४३ सावण बुदी ३ । वै० सं० ८२ । क भण्डार ।

६४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७९ । ले० काल × । वै० सं० ८३ । क भण्डार ।

६४४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वै० सं० ८४ । क भण्डार ।

६४५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६५ । ले० काल × । वै० सं० ८७ । अपूर्ण । क भण्डार ।

६४६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५८ । ले० काल × । वै० सं० ८४ । क भण्डार ।

६४७. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५९ । ले० काल × । वै० सं० ८५ । क भण्डार ।

६४८. उपदेशप्रामाणाभाषा—बाबा दुलीचन्द्र । पत्र सं० २० । प्रा० १० इञ्च×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—धर्म । १० काल सं० १९६४ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वै० सं० ८५ । क भण्डार ।

६४६. उपदेश रत्नमाला भाषा—देवीसिंह झाबड़ा । पत्र सं० २० । प्रा० ११०३ उ० ड० । भाषा—हिन्दी पद्य । २० काल सं० १७६६ भादवा बुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६ । क भण्डार ।

विशेष—नरवर नगर मे ग्रन्थ रचना की गई थी ।

६४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ८८ । क भण्डार ।

६४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ८६ । क भण्डार ।

६४२. उपसर्गार्थ विवरण—बुपाचार्य । पत्र सं० १ । प्रा० १०३३ उ० ड० । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६० । अ भण्डार ।

६४३. उपासकाचार दोहा—आचार्य लक्ष्मीचन्द्र । पत्र सं० ०७ । प्रा० ११०५ उ० ड० । भाषा—अपभ्रंश । विषय—श्रावक धर्म वर्णन । २० काल । ले० काल सं० १५५५ कालिक मुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० २२३ । अ भण्डार ।

विशेष—अथ का नाम श्रावकाचार भी है । पं० लक्ष्मण के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी । विस्तृत प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति मवन् १५५५ वर्ष कालिक मुदी १५ सोम श्रौ मूलमधे मरुत्तर्नागच्छ बलाकारभाग भ० विद्यालक्षी पृष्ठ ३० मल्लिकवर्ण तच्छिष्य पठित लक्ष्मण पठनार्थ तृता श्रावकाचार नाम्नं समाप्तं । प्रथ म० २३० । दाही की संख्या २२४ है ।

६४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० २६८ । अ भण्डार ।

६४५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १७३ । अ भण्डार ।

६४६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० २६६ । अ भण्डार ।

६४७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० ३६५ । क भण्डार ।

६४८. उपासकाचार..... । पत्र सं० ६५ । प्रा० १०३३ उ० ड० । भाषा—संस्कृत । विषय—श्रावक धर्म वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण ( १५ परिच्छेद तक ) वे० सं० ६५ । अ भण्डार ।

६४९. उपासकाध्ययन..... । पत्र सं० ११६-३६१ । प्रा० ११३५ उ० ड० । भाषा—संस्कृत । विषय—श्रावक शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०६ । अ भण्डार ।

६६०. अद्विशतक—स्वरूपचन्द्र बिलाला । पत्र संख्या २ । प्रा० १०३५ उ० ड० । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १६०२ ज्येष्ठ मुदी १ । ले० काल सं० १६०६ बैशाख बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २० । अ भण्डार ।

विशेष—श्रीरामन्द की प्रेरणा से मवाँई जयपुर मे उस ग्रन्थ की रचना की गई ।

६६१. कुशीलखंडन—जयलाल । पत्र सं० २६ । प्रा० १०३३ उ० ड० । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १६३० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६११ । अ भण्डार ।

६६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० कात × । वे० सं० १२७ । छ भण्डार ।

६६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । वे० सं० १७६ । छ भण्डार ।

६६४. केवलज्ञान का द्वयौरा..... । पत्र सं० १ । प्रा० १२३×५३ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।  
२० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २६७ । छ भण्डार ।

६६५. क्रियाकलाप टीका—प्रभावन्द्र । पत्र सं० १२२ । प्रा० ११३×५६ । भाषा—संस्कृत । विषय—  
श्रावक धर्म वर्गन । २० काल । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ४३ । छ भण्डार ।

६६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १६५६ बैत्र मुदी १ । वे० सं० ११५ । क भण्डार ।

६६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १७६५ भादवा मुदी ४ । वे० सं० ७५ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति सवाई त्रयपुर में महाराजा जयसिंहजी के शासनकाल में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में लिखी गई थी ।

६६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०७ । ले० काल सं० १५७७ बैशाख बुदी ४ । वे० सं० १८८७ । ट  
भण्डार ।

विशेष —'प्रशस्ति मग्रह' में ६७ पृष्ठ पर प्रशस्ति छप चुकी है ।

६६९. क्रियाकलाप ..... । पत्र सं० ७ । प्रा० ६३×५३ । भाषा—संस्कृत । विषय—श्रावक धर्म  
वर्गन । २० काल । ले० काल । अपूर्णा । वे० सं० २७७ । छ भण्डार ।

६७०. क्रियाकलाप टीका..... । पत्र सं० ६१ । प्रा० १३×५३ । भाषा—संस्कृत । विषय—श्रावक  
धर्म वर्गन । २० काल × । ले० काल सं० १५३६ भादवा बुदी ५ । पूर्णा । वे० सं० ११६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

राजाधिराज माटोगढदुर्गे श्री मुलतानगयामुद्दीनराज्ये चन्देरीदेवीमहाशेरवात्तध्यायीयमाने वेसरे ग्रामे  
वास्तव्य कायस्थ पदमसी तत्पुत्र श्री राषो लिखितं ।

६७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ से ६३ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १०७ । छ भण्डार ।

६७२. क्रियाकलापवृत्ति..... । पत्र सं० ६६ । प्रा० १०×४३ । भाषा—प्राकृत । विषय—श्रावक  
धर्म वर्गन । २० काल × । ले० काल सं० १३६६ फागुण मुदी ५ । पूर्णा । वे० सं० १८७७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

एवं क्रिया कलाप वृत्ति समाप्ता । छ ॥ छ ॥ छ ॥ सा० पूना पुत्रेण द्याचूकेन निखितं श्लोकानामष्टादश-  
गनामि ॥ पूरी प्रशस्ति 'प्रशस्ति संग्रह' में पृष्ठ ६७ पर प्रकाशित हो चुकी है ।

६७३. क्रियाकोष भाषा—किशनसिंह । पत्र सं० =१ । प्रा० ११×५३ । भाषा—हिन्दी पद्य ।  
विषय—श्रावक धर्म वर्गन । २० काल सं० १७८४ भादवा मुदी १५ । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ६०६ । छ भण्डार ।

६७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १८३३ मंगसिर मुदी ६ । वे० सं० ४२६ । छ  
भण्डार ।

६७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ७५८ । अ भण्डार ।

६७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५० । ले० काल सं० १८८५ आषाढ बुदी १० । वै० सं० ८ । ग भंडार  
विशेष—श्यालालजी साहू ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

६७७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १६ से ११५ । ले० काल सं० १८८८ । अपूर्णा । वै० सं० १३० । क  
भण्डार ।

६७८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६७ । ले० काल × । वै० सं० १३१ । क भण्डार ।

६७९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १०० । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ५३४ । च भण्डार ।

६८०. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १४२ । ले० काल सं० १८५१ मंगतिर बुदी १३ । वै० सं० १६५ ।

क भण्डार ।

६८१. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६५६ आषाढ बुदी ६ । वै० सं० १६६ । छ  
भण्डार ।

भण्डार ।

विशेष—प्रति किशनगढ के मन्दिर की है ।

६८२. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४ से ६ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ३०४ । ज भण्डार ।

६८३. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १ से १४ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० २०८७ । ट भण्डार ।

विशेष—१४ से आगे पत्र नहीं है ।

६८४. क्रिष्णकोरा..... । पत्र सं० ५० । आ० १०३/४ इ. आ. भाषा—हिन्दी । विषय—प्राक् धर्म वर्गन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ६०६ । अ भण्डार ।

६८५. कुमुदलक्षण..... । पत्र सं० १ । आ० ६०/४ इ. आ. भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्णा । वै० सं० १७१६ । अ भण्डार ।

६८६. क्षमावतीसी—जिनचन्द्रमूरि । पत्र सं० ३ । आ० ६३/४ इ. आ. भाषा—हिन्दी । विषय—  
धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वै० सं० २१४१ । अ भण्डार ।

६८७. क्षेत्र समासप्रकरण..... । पत्र सं० ६ । आ० १०/४ इ. आ. भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २०  
काल × । ले० काल सं० १७०७ । पूर्णा । वै० सं० ८२६ । अ भण्डार ।

६८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वै० सं० ७ । अ भण्डार ।

६८९. क्षेत्रसमासटीका—टीकाकार हरिभद्रमूरि । पत्र सं० ७ । आ० ११/४ इ. आ. भाषा—संस्कृत ।  
विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वै० सं० ८६० । अ भण्डार ।

६९०. गणसार..... । पत्र सं० ८ । आ० ११/४ इ. आ. भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले०  
काल × । पूर्णा । वै० सं० ५३५ । अ भण्डार ।

६९१. चउसरण प्रकरण..... । पत्र सं० ४ । आ० ११/४ इ. आ. भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २०  
काल × । पूर्णा । वै० सं० १८४६ । अ भण्डार ।

विशेष—

**प्रारम्भ**—सावज्जोषविरह उक्तिरगु गुणवत् अण्डित्वती ।  
 रवलि अस्सय निवण्णावरण तिगिच्छ गुण धारणा च व ॥१॥  
 चारितस्स विसोही कीरई सामाईयर किलइहय ।  
 सावज्जे अरजोगारणं वज्जसा सेवरुत्तरण ॥२॥  
 दसण्णमारविसोही चउवीसा इच्छण्णा किज्जइय ।  
 अन्नवपत्त अणुण कित्तण ह्वेणां जिण्णविरदारण ॥३॥

**अन्तिम**—मदणभावबद्धा तिक्कणु भाषाउ कुणई ताण्व ।  
 असुहाउ निरणु बंधउ कुणई निव्वाउ मंदाउ ॥ ६० ॥  
 ता एवं कायञ्चं बुहेहि निच्चपि संकिलेमंमि ।  
 होई तिककालं मम्मं असंकिले संमि सुगइफलं ॥ ६१ ॥  
 चउरंगो जिण्णधम्मो नकउ चउरंगसरण मवि नकमं ।  
 चउरंगभवच्छेउ नकउ हादा हारिउ जम्मो ॥ ६२ ॥  
 इ अजीव पमीयमहारि वीरभइ तमेव अम्भवणं ।  
 भाणु मिति संक्रम वंमं कारणं निवुइ सुहाणं ॥ ६३ ॥

इति चउसरण प्रकरणं संपूर्णं । लिखितं गणिवीर विजयेन मुनिहर्मविजय पठनात् ।

६६२. चारिभावना..... पत्र सं० ६ । प्रा० १० १/२ × १ १/२ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × १० काल । पूर्ण । वे० सं० १७६ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ भी दिया हुआ है ।

६६३ चारित्रसार—श्रीमशामुंडराय । पत्र सं० ६६ । प्रा० ६ १/२ × ४ १/२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार धर्म । २० काल × १० काल सं० १५४५ बैशाख बुदा ५ । पूर्ण । वे० सं० २४२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति सकलागमसंयमसम्पन्न श्रीमज्जिमनेनभट्टारक श्रीपादपद्मप्रासादासारित चतुरनुयोगपारावार पात्रगधर्मविजयश्रीमच्छामुच्छमहाराजद्विरचिते भावनासारसंग्रहे चारित्रसारं अनागारधर्मममाप्तः ॥ ग्रन्थ संख्या १६५० ॥

सं० १५४५ वर्षे बैशाख बुदा ५ श्रीमशामरे श्री भूलसंघे नक्षाम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनिदेवाः तत्पट्टं भट्टारक श्रीगुणचन्द्रदेवाः तत्पट्टं भट्टारकश्रीजिनचन्द्र देवाः तत् पिप्य प्राणाय श्री मुनिरत्नकीर्तिः तदाशाम्नाये अण्णववालाण्वय अजमेरागोत्रे सह चान्वा भार्या मन्डोवरी तयोः पुत्राः साह हावर भार्या लक्ष्मी साह अश्रुत भार्या दामतयोः पुत्र साह पूत (?) साह ऊदा भार्या कर्मा तयोः पुत्रः साह दामा साह योजा भार्या होली तयोः पुत्री रणमल लक्ष्मराजसा, डाकुर भार्या श्वेत तयोः पुत्र हरराज । सा, जालप माह तेजा भार्या स्वजसिरि पुत्रपोत्रादि प्रभृतीना एतेषा मध्ये सा, अश्रुत इदं चारित्रसारं शास्त्रं लिखाप्य सत्पाचाय अर्घ्यनामगाय प्रदत्तं निबिन्नं ज्योतिषुग्मा ।



६६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४१ । ले० काल सं० १६३५ आषाढ सुदी ४ । वै० सं० १५१ । क  
भण्डार ।

विशेष—ब्रा० कुलीचन्द ने लिखवाया ।

६६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १५८५ मंगसिर बुदी २ । वै० सं० १७७ । क  
भण्डार ।

६६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५५ । ले० काल × । वै० सं० ३२ । अ भण्डार ।

विशेष—कही कही कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

६६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १७८३ कार्तिक सुदी ८ । वै० सं० १३५ । अ  
भण्डार ।

विशेष—हीरपुरी में प्रतिलिपि हुई ।

६६८. चारित्रमार भाषा—मन्नालाल । पत्र सं० ३७ । आ० १२० ६ । भाषा—हिन्दी (शुद्ध) । विषय—धर्म ।  
२० काल सं० १८७१ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० २७ । अ भण्डार ।

६६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६८ । ले० काल सं० १८७७ रामोज सुदी ६ । वै० सं० १७८ ।  
क भण्डार ।

७००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३८ । ले० काल सं० १६६० कार्तिक वृदी १३ । वै० सं० १७६ ।

क भण्डार ।

७०१. चारित्रमार..... । पत्र सं० २२ में ७६ । आ० ११×५ । भाषा—संस्कृत । विषय—आचारशास्त्र  
२० काल × । ले० काल सं० १६८३ ज्येष्ठ बुदी १० । अपूर्णा । वै० सं० २१६४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १६४३ वर्षों तक १५०७ प्रवर्तमाने ज्येष्ठमामे कृष्णपक्षे दशम्या त्रिंशो मासवामने पानिमात्र श्री अक-  
धरराज्येप्रवर्तने पाथी लिखितं माथी लखुन जोमी गोदा लिखित मानपुरा ।

७०२. चौबीस दण्डकभाषा—दौलतराम । पत्र सं० ६ । आ० ६५, ८५ । भाषा—हिन्दी । विषय—  
धर्म । २० काल १८वें शताब्दि । ले० काल सं० १८४७ । पूर्णा । वै० सं० १५७ । अ भण्डार ।

विशेष—लहरीराम ने रामपुरा में प० निहानचन्द के पठनाथ प्रतिलिपि की थी ।

७०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल ५ । वै० सं० १८६६ । अ भण्डार ।

७०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १६३७ फागुण सुदी ४ । वै० सं० १५४ । क भण्डार ।

७०५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल ५ । वै० सं० १६० । क भण्डार ।

७०६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल ५ । वै० सं० १६१ । क भण्डार ।

७०७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८ । ले० काल ५ । वै० सं० १६२ । क भण्डार ।

७०८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८१८ । वै० सं० ७३५ । अ भण्डार ।

७०६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ७२६ । अ भण्डार ।

७१०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—५३ पत्र है ।

७११. चौराभी आसादना... । पत्र सं० १ । प्रा० ६४४३ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४३ । अ भण्डार ।

विशेष—जैन मन्दिरों में वर्तनीय चर्चे क्रियाओं के नाम है ।

७१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० ४४७ । अ भण्डार ।

७१३. चौरासी आसादना... । पत्र सं० १ । प्रा० १०×४३" । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । १०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

७१४. चौरासीलाभ उत्तर गुण... । पत्र सं० १ । प्रा० ११३/२६" । भाषा—हिन्दी । विषय—  
धर्म । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२३३ । अ भण्डार ।

विशेष—१००० शीत क भेद भी दिये हुए है ।

७१४. चौसठ ऋद्धि वर्णन... । पत्र सं० ६ । प्रा० १०×४३" । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५१ । अ भण्डार ।

७१६. छहदाला—दौलतराम । पत्र सं० ६ । प्रा० १०×६३" । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । १०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२२ । अ भण्डार ।

७१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १६५७ । वे० सं० १३२५ । अ भण्डार ।

७१८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १८६१ वेणाल मुद्रा ३ । वे० सं० १७७ । क भण्डार ।  
विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

७१९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १६६ । अ भण्डार ।

विशेष—टमके शक्तिमन्त्र २२ परीपत्र, पंचमंगलपाठ, महावीरस्तोत्र एवं मन्कटहगगविननी आदि भी  
सो हुई है ।

७२०. छहदाला—बुधजन । पत्र सं० ११ । प्रा० १०×७७" । भाषा—हिन्दी पत्र । विषय—धर्म ।  
१० काल सं० १८५६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७ । अ भण्डार ।

७२१. छेदपिण्ड—इन्द्रमन्दि । पत्र सं० ३६ । प्रा० ८×५" । भाषा—प्राकृत । विषय—प्रायश्चित्त  
शास्त्र । १० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८२ । क भण्डार ।

७२२. जैनागारप्रक्रियाभाषा—बा० तुलीचन्द्र । पत्र सं० २४ । प्रा० १२×७" । भाषा—हिन्दी  
विषय—प्रायश्चित्त धर्म वर्णन । १० काल सं० १६३६ । ले० काल × । अर्धपूर्ण । वे० सं० २०८ । क भण्डार ।

७२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १६६६ आतोड मुदी १० । वे० सं० २०६ । क भण्डार ।

७२४. ज्ञानानन्दश्रावकाचार—साधर्मी भाई रायमल्ल । पत्र सं० २३१ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—व्याचार शास्त्र । २० काल १८वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३३ । क भण्डार ।

७२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५६ । ले० काल × । वे० सं० २६६ । क भण्डार ।

७२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१ । क भण्डार ।

७२७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३२ । ले० काल सं० १६३२ श्रावण मुदी १४ । वे० सं० २२२ । क भण्डार ।

७२८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०२ में २७४ । ले० काल × । वे० सं० ५६७ । क भण्डार ।

७२९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५६८ । क भण्डार ।

७३०. ज्ञानचिंतामणि—मनोहरदास । पत्र सं० १० । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५५३ । क भण्डार ।

विशेष—५ में ८ तक पत्र नहीं है ।

७३१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८६४ श्रावण मुदी ६ । वे० सं० ३३ । क भण्डार ।

७३२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० १८७ । क भण्डार ।

विशेष—१२८ छन्द है ।

७३३. तत्त्वज्ञानतरंगिणी—भट्टारक ज्ञानभूषण । पत्र सं० २७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल सं० १५६० । ले० काल सं० १६३५ श्रावण मुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ६८६ । क भण्डार ।

७३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १७६६ ज्येष्ठ मुदी ८ । वे० सं० ३३३ । क भण्डार ।

७३५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १६३४ ज्येष्ठ मुदी ११ । वे० सं० २६० । क भण्डार ।

७३६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १८१४ । वे० सं० २६४ । क भण्डार ।

७३७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७० । ले० काल × । वे० सं० २६६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

७३८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १७०० फागुन मुदी १५ । वे० सं० ५१३ । क भण्डार ।

७३९. त्रिवर्णाचार—भ० सोमसेन । पत्र सं० १०७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याचार—धर्म । २० काल सं० १६६७ । ले० काल सं० १८५८ भाद्रपद मुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ८८८ । क भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २५ पत्र दूसरी लिपि के हैं ।

७४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८१ । ले० काल सं० १८३० कार्तिक मुदी १३ । वे० सं० ८१ । क भण्डार ।

विशेष—पंडित वल्लभराम और उनके मिथ्य धर्मभूताव ने प्रतिनिधि की थी ।

७४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४३ । ले० काल × । वे० सं० २८२ । अ भण्डार ।

७४२. त्रिषण्णिकाचार ..... । पत्र सं० १८ । आ० १०३ × ४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७८ । अ भण्डार ।

७४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० २८५ । अ पूर्ण । अ भण्डार ।

७४४. त्रेपनक्रिया..... । पत्र सं० ३ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आवक की क्रियाओं का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८४ । अ भण्डार ।

७४५. त्रेपनक्रियाकोश—दौलतराम । पत्र सं० ८२ । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
आचार । २० काल सं० १७६५ । ले० काल × । अ पूर्ण । वे० सं० ५८५ । अ भण्डार ।

७४६. दृष्टकपाठ..... । पत्र सं० २३ । आ० ८ × ३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य  
(आचार) । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६० । अ भण्डार ।

७४७. दर्शनप्रतिमास्वरूप..... । पत्र सं० १६ । आ० ११ इञ्च × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।  
२० काल । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६१ । अ भण्डार ।

विशय—आवक की स्थापना प्रतिमाओं में से प्रथम प्रतिमा का विस्तृत वर्णन है ।

७४८. दशभक्ति..... । पत्र सं० ५६ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × ।  
२० काल सं० १६७३ समाज बुद्धि ३ । वे० सं० १०६ । अ भण्डार ।

विशय—दश प्रकार की भक्तियों का वर्णन है । भट्टारक पद्यमंदि के ग्रन्थनाय वाले स्वप्नेनवाच जातीय सा-  
ठान्त गद्य में उत्पन्न होने वाले माह भीखा ने चन्द्रकीर्ति के लिए मीजमावाद में प्रतिनिधि कराई ।

७४९. दशलक्षणधर्मवर्णन—पं० सदासुख कासर्जीवाल । पत्र सं० ४१ । आ० १२ × ५ इञ्च ।  
भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १६३० । पूर्ण । वे० सं० २६५ । अ भण्डार ।

विशय—स्वतन्त्र आचाराचार की गद्य टीका में से है ।

७५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० २६६ । अ भण्डार ।

७५१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० २६७ । अ भण्डार ।

७५२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० १८६ । अ भण्डार ।

७५३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १६६३ कानिक मुद्रा ६ । वे० सं० १८६ ।  
अ भण्डार ।

विशय—श्री गोविन्दराम जैन शास्त्र लेखक ने प्रतिनिधि की ।

७५४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १६४१ । वे० सं० १८६ । अ भण्डार ।

विशय—अन्तिम ७ पत्र बाद में लिखे गये हैं ।

७५५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । वे० सं० १८६ । छ् भण्डार ।

७५६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६ । छ् भण्डार ।

७५७. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ८२ । ले० काल × । वे० सं० १७०६ । ट भण्डार ।

७५८. दशलक्षधर्मवर्णन । पत्र सं० २८ । आ० १२६, ७३६ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७ । च भण्डार ।

७५९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १८१७ । ट भण्डार ।

विशेष—जवाहरलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

७६०. दानपंचाशत—पद्यनंदि । पत्र सं० ८ । आ० ११०, ८६ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।  
२० काल × । ले० काल × । वे० सं० ३२५ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थिमा प्रथमि तन्म प्रकार है—

श्री पद्यनंदि मुनिराश्रित मुनि पुण्डरीक पंचाशत ललितवर्ण त्रयो प्रकरणे ॥ इति दान पंचाशत समाप्त ॥

७६१. दानकुल..... । पत्र सं० ७ । आ० १०, ८६ इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल × ।  
ले० काल × । वे० सं० ३३३ । अ भण्डार ।

विशेष—कुत्रदागी भाषा में अर्थ दिया हुआ है । लिपि नागरी है । प्रारम्भ में ४ पत्र तक संयोजनक भाग्य दिया है ।

७६२. दानशीलतपभावना—धर्मसी । पत्र सं० १ । आ० ६६, ८६ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—  
धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५३ । ट भण्डार ।

७६३. दानशीलतपभावना..... । पत्र सं० ६ । आ० १०, ८६ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।  
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६३६ । अ भण्डार ।

विशेष—४ पत्र नहीं है । प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

७६४. दानशीलतपभावना..... । पत्र सं० १ । आ० ६६, ८६ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२६६ । अ भण्डार ।

विशेष—सोती और काकडे का संवाद भी बहुत सुन्दर रूप में दिया गया है ।

७६५. दीपमालिकानिर्णय..... । पत्र सं० १२ । आ० १२०, ६ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०६ । क भण्डार ।

विशेष—लिपिकार बाङ्गुवाल व्यास ।

७६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०५ । क भण्डार ।

७६७. दोहापाहुड—रामसिंह । पत्र सं० २० । आ० ११, ८६ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार  
शास्त्र । २० काल १०वीं शताब्दि । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६२ । अ भण्डार ।

विशेष—कुल ३३३ दोहे हैं । ६ में १६ तक पत्र नहीं है ।

७६८ धर्मचाहना.....। पत्र सं० ८। घा० ८३×७। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। २० काल ×।  
ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३२८। छ भण्डार।

७६९. धर्मपंचविंशतिका—ब्रह्मजिनदास। पत्र सं० ३। घा० ११३×४३ इञ्च। भाषा—हिन्दी।  
विषय—धर्म। २० काल १५वीं शताब्दी। ले० काल सं० १८२७ पीथ बुदी ९। पूर्ण। वे० सं० ११०। छ भण्डार।  
विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति की पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति त्रिविधसंद्धान्तिकचक्रवर्याचार्य धीनेमिचन्द्रस्य शिष्य ब्र० श्री जिनदास विरचित धर्मपंचविंशतिका  
नामशास्त्रं समाप्तम्। श्रीचन्द्र ने प्रतिनिधि की थी।

७७०. धर्मप्रदीप्रभाषा—पद्मालाल संघी। पत्र सं० ९४। घा० १२, ७। भाषा—हिन्दी। २० काल  
स० १९३५। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३६। छ भण्डार।

विशेष—संस्कृतमूल तथा उसके नीचे भाषा दी हुई है।

७७१. प्रति सं० २। पत्र सं० ६४। ले० काल सं० १९६२ आसोज मुदी १४। वे० सं० ३३७। छ  
भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम दशावतार नाटक है। प० फतेहलाल ने हिन्दी गद्य में धर्म लिखा है।

७७२. धर्मप्रश्नोत्तर—विमलकीर्ति। पत्र सं० ५०। घा० १०३×४३। भाषा—संस्कृत। विषय—धर्म।  
२० काल ×। ले० काल सं० १८१६ फागुन मुदी ५। अ भण्डार।

विशेष—१११६ प्रश्नों का उत्तर है। ग्रन्थ में ६ परिच्छेद हैं। परिच्छेदों में निम्न विषय के प्रश्नों के उत्तर  
ह— १ दशलाक्षणिक धर्म प्रश्नोत्तर। २. श्रावकधर्म प्रश्नोत्तर वर्गिन। ३. रत्नत्रय प्रश्नोत्तर। ४ तन्त्र  
पृच्छा वर्गिन। ५. कर्म विपाक पृच्छा। ६. सज्जन चित्त बल्लभ पृच्छा।

मङ्गलाचरण :— तीर्थान् धीमतो विश्वान् विश्वनाथान् जगद्गुरुन् ।

अनन्तमहिमारूढान् वेदे विश्वहितकारकान् ॥ १ ॥

चोखबन्द के शिष्य रायमल ने जयपुर में शातिनाथ चैत्यालय में प्रतिनिधि की थी।

७७३. धर्मप्रश्नोत्तर .....। पत्र सं० २७। घा० ८३×४। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। २० काल ×।  
ले० काल सं० १९३०। पूर्ण। वे० सं० ४००। अ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का नाम हितोपदेश भी दिया है।

७७४. धर्मप्रश्नोत्तरी.....। पत्र सं० ४ में ३४। घा० ८×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म।  
२० काल ×। ले० काल सं० १९३३। अपूर्ण। वे० सं० ५९८। अ भण्डार।

विशेष—पं० खेमराज ने प्रतिनिधि की।

७७५. धर्मप्रश्नोत्तर श्रावकाचारभाषा—चम्पाराम। पत्र सं० १७७। घा० १२×८ इञ्च। भाषा—  
हिन्दी। विषय—श्रावकों के आचार का वर्गिन है। २० काल सं० १८६८। ले० काल सं० १८९०। पूर्ण। वे० सं०  
३३८। छ भण्डार।

७७६. धर्मप्रनोत्तरश्रावकाचार .....। पत्र सं० १ से ३५। श्रा० ११६×५६ इञ्च। भाषा—संस्कृत।

विषय—श्रावक धर्म वर्णन। २० काल ×। ले० काल ×। श्रुर्ण। वे० सं० २३०। अ भण्डार।

७७७. प्रति सं० २। पत्र सं० ३५। ले० काल ×। वे० सं० २६८। अ भण्डार।

७७८. धर्मरत्नाकर—संग्रहकर्ता पं० मंगल। पत्र सं० १६१। श्रा० १३×७ इञ्च। भाषा—संस्कृत।

विषय—धर्म। २० काल सं० १६८०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३४०। अ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १६८० वर्षे काष्ठामासे नन्दतट ग्रामे भट्टारके श्रीभूपग शिष्य पंडित मञ्जुन कृत शास्त्र रत्नाकर नाम शास्त्र संपूर्ण। संग्रह ग्रन्थ है।

७७९. धर्मरसायन—पद्मानदि। पत्र सं० २३। श्रा० १२×५ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—धर्म। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६१। अ भण्डार।

७८०. प्रति सं० २। पत्र सं० ११। ले० काल म० १७६७ वैदाल बुदी ५। वे० सं० ४३। अ भण्डार।

७८१. धर्मरसायन.....। पत्र सं० ८। श्रा० ११६×५६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—धर्म। २० काल ×। ले० काल ×। श्रुर्ण। वे० सं० १६६२। अ भण्डार।

७८२. धर्मलक्षण.....। पत्र सं० १। श्रा० १०×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—धर्म। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१५५। अ भण्डार।

७८३. धर्मसंग्रहश्रावकाचार—पं० मेधावी। पत्र सं० ४८। श्रा० १०×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—श्रावक धर्म वर्णन। २० काल सं० १५६१। ले० काल म० १५६२ कान्तिक मुद्रा ५। पूर्ण। वे० सं० १६६। अ भण्डार।

विशेष—प्रति वाद में मंगोहित की हुई है। मंगलाचरण को काट कर दूसरा मंगलाचरण लिखा गया है। तथा पुस्तिका में शिष्य के स्थान में धर्मवासिना उपाधि जोड़ा गया है। लेखक प्रशस्ति निम्न है—

श्री विक्रमादित्यराज्यान् संवत् १५४२ वर्षे कान्तिक मुद्रा ५ मुखदिने श्री बर्द्धमानचैत्यालयविराजमाने श्रीहिसार पेरोजारस्तने मुलतानश्रीवहलोलमसिंहाराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलमधे नटाम्नाये सारस्वतगण्डे बलात्कारगणे भट्टारके श्रीपचनदिदेवाः। तस्य कृतस्य धर्मविक्रमनैकचन्द्र श्री मुभचन्द्रदेवाः। तस्य कृतस्य पदसंस्कृतवृत्तिसंस्कृतदेवाः भट्टारके श्री जिनचन्द्रदेवाः तत्क्षिप्ये मंडवनाचार्ये मुनि श्री रत्नकीर्ति। तस्य शिष्यो दिगम्बर मुनिर्मूर्ति श्री विमलकीर्ति पंडितश्रीमीहलपः तदामनाये स्वडेनदानत्वये भीमा गोत्रे परमश्रावकसाधु साधुनामा तयाद्या भार्या देवगुणपदारविद मेवननगरा साध्वी लान्दिमंजिका तयो श्रावकाचारोत्पत्ती साधुभोजा—नेगोभिधानाः। साधुनाम्नो, द्वितीय भाय्ये छाहृदी हनि नाम्नी। तन्मंदनो निमित्तगानविद्यारदगाधुमाकवाभिधेयः अथ साधुभोजाल्नीपातब्रव्यादितुगुणिलयाभोलसिदि सजा। तयोः प्रथमपुत्रः साधुधामीश्व। तद्भायोदिवशुचरणगारीवर्धनचरीका साध्वी धनश्रीः। द्वितीय पुत्रः श्री गिर-मारिगिरी श्री नेमीश्वर यात्राकारक संघर्षति हल्हा नामा। तस्य गेहिनी शीलशानिनी जही इति संज्ञिका। तयोर्ज्येष्ठ-पुत्रश्चतुर्विधदानवितरणाकल्पवृक्षः शान्तिदासः तस्य भाग्मिनी धनेकभुशभालिनी साध्वी हिउसिदि नाम-

धेयाः । द्वितीय पुत्रः पंचाणुव्रतप्रतिपालको नेमिदासः तस्य भार्या विहितानेकधर्मकार्यां बुणसिरि इति प्रतिदिः तत्पुत्री चिरंजीविनी संसार चंदराय चंद्राभिधानी । अथ साधु केसाबन्ध ज्येष्ठा जायाशीलादिगुरुरत्नस्वानिः साध्वी कमलश्री द्वितीयधनेकव्रतनियमागुष्ठानकारिका परमभाविकासाध्वी सुवरीनामा तत्तनूजः सम्यक्त्वात्कृतद्वारदत्तप्रतिपालकः । संघपति दूगराह । तत्कलत्र नानाशीलविनयादिगुरुपात्रं साधु लाठी नाम धेयं । तयोः सुतो देवपुजादिषट्क्रिया कमलिनीबिकास-नेकमार्तण्डोपमां जिनदासः तन्महिलाधर्मकर्मठ कर्म श्रीरतिनाम । एतेषां मध्येमघपति हल्हास्यं भार्या जही नाम्ना निजपुत्र शान्तिदासनेमिदामयो न्योपाजितविलेन इदं श्री धर्मसंग्रह पुस्तकपंचकं पंडितश्रीमीहाब्यस्योपदेगेन प्रथमतो नोके धर्मनार्यं लिखापितं भव्याना पठनाय । निजज्ञानावरणकर्मक्षयार्थं ब्राह्मणार्कादिनदत्तात् ।

७८५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वै० सं० ३४५ । क भण्डार ।

७८५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७० । ले० काल सं० १७०६ । वै० सं० ३४२ । क भण्डार ।

७८६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १८०६ चैत सुदी १२ । वै० सं० १७२ । च भण्डार ।

७८७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४८ मे ५५ । ले० काल सं० १६४२ वैशाख सुदी ३ । वै० सं० १७३ । च भण्डार ।

७८८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १८५६ माघ सुदी ३ । वै० सं० १०८ । छ भंडार ।

विषय—भक्ताराम के शिष्य संपतिराम हरिबंसदास ने प्रतिलिपि करवाई ।

७८९. धर्मसंग्रहश्रावकाचार..... । पत्र सं० ६६ । प्रा० ११३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
प्रायक धर्म । १० काल × । ले० काल × । वै० सं० २०३४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति दोमक ने खा ली है ।

७९०. धर्मसंग्रहश्रावकाचार..... । पत्र सं० २ से २७ । प्रा० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
प्रायक धर्म । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ३४१ । क भण्डार ।

७९१. धर्मशास्त्रप्रदीप .. । पत्र सं० २३ । प्रा० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य ।  
१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १४६६ । अ भण्डार ।

७९२. धर्मसरोवर—जं.धराज गोदीका । पत्र सं० ३६ । प्रा० ११३×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—धर्मप्रदेश । १० काल सं० १७२४ प्रापाठ सुदी ५ । ले० काल सं० १६४७ । पूर्ण । वै० सं० ३३४ । क भंडार

विशेष—नागबद्ध, धनुषबद्ध तथा चक्रबद्ध कविताओं के चित्र हैं । प्रति सं० २ के आधार से रचना संभव है

७९३. प्रति सं० २ । ले० काल सं० १७२७ कार्तिक सुदी ५ । वै० सं० ३४४ । क भण्डार ।

विशेष—प्रतिलिपि सांगानेर मे हुई थी ।

७९४. धर्मसार—पं० शिरोमणिदास । पत्र सं० ३१ । प्रा० १३×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
धर्म । १० काल सं० १७३२ वैशाख सुदी ३ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १०४० । अ भण्डार ।

७९५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १८८५ फागुण सुदी ५ । वै० सं० ४६ । ग  
भण्डार ।

विशेष—श्री शिवलालजी साहू ने सवाई माधोपुर मे सोनपाल भौसा मे प्रतिलिपि करवाई ।



७६६. धर्मासृतसूक्तिसंग्रह—आशाधर । पत्र सं० ६५ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
आचारएवं धर्म । २० काल सं० १२६६ । ले० काल सं० १७४७ आसोज मुदी २ । पूर्ण । वै० सं० २६५ ।

विशेष—संवत् १७८७ त्रयोदशशतक मुदी २ बुधवासरे अयं द्वितीय सागरधर्म स्मृत्यः पद्यायत्रपट्सप्तत्य-  
धिकानि चत्वारिंशत्तानि ॥४७६ ॥ छ ॥

अंतमहूतमधेष्ठी रम मुच्छिमं सिमाफन्ता ॥  
हुति असंख्य जीवानिदिगि सव्वदरसी ॥ दुष्पा गाथा ॥  
संगर कङ्क मिथीयूगचणोगमसू कम्मासं ।  
एव सर्व्व विदलं वज्जीपवापयवेग ॥ १ ॥  
विदलं जी भी पद्धा मुहं च पत्तं च दोविधो विज्जा ।  
अहवावि अत्र पत्तो भुजिज्जं गोरमाईय ॥ २ ॥

इति विदल गाथा ॥ श्री ॥

रचना का नाम 'धर्मासृत' है । यह दो भागों में विभक्त है । एक भाग धर्मासृत तथा दूसरा अनागर धर्मासृत ।

७६७. धर्मोपदेशपीयूषश्रावकाचार—सिंहनंदि । पत्र सं० ३६ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा—  
संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १७८५ माघ मुदी १३ । पूर्ण । वै० सं० ४८ । घ  
भण्डार ।

७६८. धर्मोपदेशश्रावकाचार—अभोजवर्ष । पत्र सं० ३३ । आ० १०३×४५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १७८५ माघ मुदी १३ । पूर्ण । वै० सं० ४८ । घ भण्डार ।

विशेष—कोटा में प्रतिलिपि की गई थी ।

७६९. धर्मोपदेशश्रावकाचार—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र सं० २६ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २४५ । छ भण्डार । अन्तिम पत्र नष्ट है ।

८००. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८६६ ज्येष्ठ मुदी ३ । वै० सं० ८० । ज भण्डार ।

विशेष—भवानीबन्द ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

८०१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वै० सं० २३ । ज भण्डार ।

८०२. धर्मोपदेशश्रावकाचार..... पत्र सं० २६ । आ० १३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १७४ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

८०३. धर्मोपदेशसंग्रह—सेवाराज साह । पत्र सं० २१८ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—धर्म । २० काल सं० १८५८ । ले० काल × । वै० सं० ३४३ ।

विशेष—ग्रन्थ रचना सं० १८५८ में हुई किन्तु कुछ अंग सं० १८६१ में पूर्ण हुआ ।

८०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६० । ले० काल × । वै० सं० ५६७ । ज भण्डार ।

८०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७६ । ले० काल × । वै० सं० १८६५ । ट भण्डार ।

८०६. नरकदुःखवर्जन—भूधरदास । पत्र सं० ३ । भा० १२/५३ इच्छ । भाषा—हिन्दी पद्य ।  
विषय—नरक के दुखों का वर्जन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३६४ । अ भण्डार ।  
विशेष—भूधर कृत पार्वपुराण में है ।
८०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वै० सं० २२६ । अ भण्डार ।
८०८. नरकवर्जन..... । पत्र सं० ८ । भा० १०/५२ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—नरक का वर्जन ।  
२० काल × । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वै० सं० ६०० । अ भण्डार ।  
विशेष—सदाशिव कासलीवाल ने प्रतिविधि की ।
८०९. नवकारश्रावकाचार..... । पत्र सं० १४ । भा० १०/४३ इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय—  
श्रावकों का आचार वर्जन । २० काल × । ले० काल सं० १६१२ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वै० सं० ६५ । अ भण्डार ।  
विशेष—श्री पार्वनाथ जैन्यालय में खंडेलवाल गोत्र वाली बाई तीन्हू ने श्री श्राविका विनय श्री को भेंट  
किया । प्रशस्त निम्न प्रकार है—  
मंवल १६१२ वर्ष वैशाख सुदी ११ दिने श्री पार्वनाथ जैन्यालये श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कार-  
गणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनिदि देवा तत्सद्वृत्ते भ० श्री शुभचन्द्रदेवाः तत्सद्वृत्ते भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्-  
सिध्य मण्डलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा तत्शिष्यमण्डलाचार्य श्री ललितकीर्तिदेवा तदाम्नाये खंडेलवालाश्रये सोनी गोत्रे बाई  
तीन्हू इदं शास्त्र नवकारे श्रावकाचारं ज्ञानावरणी कर्मक्षयं निमित्तं श्राविका विनैसिरीदं दत्तं ।
८१०. नष्टोद्विष्ट..... । पत्र सं० ३ । भा० ८/५५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × ।  
ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ११३३ । अ भण्डार ।
८११. निजामणि—ज० जिनदास । पत्र सं० २ । भा० ८/४ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३६८ । क भण्डार ।
८१२. नित्यकृत्यवर्जन..... । पत्र सं० १२ । भा० १२/५३ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३५८ । क भण्डार ।
८१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वै० सं० ३५६ । क भण्डार ।
८१४. निर्मालयदोषवर्जन—बा० दुलीचन्द्र । पत्र सं० ६ । भा० १०/५० इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—  
श्रावक धर्म वर्जन । २० काल × । ले० काल × । अ पूर्ण । वै० सं० ३८१ । क भण्डार ।
८१५. निर्वाणप्रकरण..... । पत्र सं० ६२ । भा० ६/५० इच्छ । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—धर्म ।  
२० काल × । ले० काल सं० १८६६ वैशाख बुदी ७ । पूर्ण । वै० सं० २३१ । ज भण्डार ।  
विशेष—गुटका साइज में है । यह जैनेतर ग्रन्थ है तथा इसमें २६ सर्ग हैं ।
८१६. निर्वाणभोदकनिर्णय—नेमिदास । पत्र सं० ११ । भा० ११/७३ इच्छ । भाषा—हिन्दी पद्य ।  
विषय—महावीर-निर्वाण के समय का निर्णय । २० काल × । ले० काल × पूर्ण । वै० सं० २७ । ख भण्डार ।

८१७. पंचपरमेष्ठीगुण.....। पत्र सं० ५ । भा० ७×५<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३२० । अ भण्डार ।

८१८. पंचपरमेष्ठीगुणवर्णन—डालूराम । पत्र सं० ७३ । भा० ४<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय एवं सर्व साधु पंच परमेष्ठियों के गुणों का वर्णन । २० काल सं० १८६५ फायुण सुदी १० । ले० काल सं० १८६६ आषाढ सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १७ । अ भण्डार ।

विशेष—६०वें पत्र से द्वादशानुश्रेषा भाषा है ।

८१९. पद्मनंदिपंचविशतिका—पद्मनंदि । पत्र सं० ५ से ८३ । भा० १२<sup>३</sup>×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १५८९ चैत सुदी १० । अपूर्ण । वे० सं० १९७१ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है किन्तु निम्न प्रकार है—

श्री धर्मबन्दास्तदान्नाय्ये वैद्य गोत्रे खंडेलवालान्वये रामसरिवास्तव्ये राव श्री जगमाल राज्यप्रवर्तमाने साह सोनपाल .....

८२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२९ । ले० काल सं० १५७० ज्येष्ठ सुदी प्रतिपदा । वे० सं० २४५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्नप्रकार है—संवत् १५७० वर्षे ज्येष्ठ सुदी १ रवी श्री; मूलसंधे बन्धाकारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्तिस्तच्छिष्य भ० भुवनकीर्तिस्तच्छिष्य भ० श्री ज्ञानभूषण तच्छिष्य ब्रह्म तंत्रसा पठनार्थ । देवुलि ग्रामे वास्तव्ये व्या० शबदासेन लिखिता । शुभं भवतु ।

विषय सूची पर "सं० १६८५ वर्षे" लिखा है ।

८२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ५२ । अ भण्डार ।

८२२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९० । ले० काल सं० १८७२ । वे० सं० ४२२ । क भण्डार ।

८२३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५१ । ले० काल × । वे० सं० ४२० । क भण्डार ।

८२४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५१ । ले० काल × । वे० सं० ४२१ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

८२५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १७८८ माघ सुदी ४ । वे० सं० १०२ । अ भण्डार ।

विशेष—भट्ट बल्लभ ने अर्चंती मे प्रतिलिपि की थी । ब्रह्मचर्याष्टक तक पूर्ण ।

८२६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३९ । ले० काल सं० १५७८ माघ सुदी २ । वे० सं० १०३ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति निम्नप्रकार है— संवत् १५७८ माघ सुदी २ बुधे श्रीमूलसंधे सरस्वतीगच्छे बन्धाकारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सकलकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानकीर्तिदेवास्तत्पट्टे शिष्य आचार्य श्री रत्नकीर्तिदेवास्तत्पट्टे शिष्य आचार्य श्री यशःकीर्ति उपदेशात् हुबड

जातीय बागडूरेसे सागवाड़ शुभस्थाने श्री धादिनाथ चैत्यालये हूँबड़ जातीय गांधी श्री पीपट भाई धर्मविस्तारोःसुत गांधी रामा भार्या रामादे सुत हूँगर भार्या दाडिमदे ताभ्यां स्वज्ञानावर्णां कर्म क्षयार्थं लिखाय ह्यं पंचविंशतिकम् दत्ता ।

८२७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २८८ । ले० काल सं० १६३८ प्राषाढ सुदी ६ । वे० सं० ५४ । घ भण्डार  
विशेष—बैराठ नगर में प्रतिलिपि की गई थी ।

८२८. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ४१८ । ङ भण्डार ।

८२९. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ५१ से १४६ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ४१६ । ङ भण्डार ।

८३०. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ७६ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ४२० । ङ भण्डार ।

८३१. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ८१ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ४२१ । ङ भण्डार ।

८३२. प्रति सं० १४ । पत्र सं० १३१ । ले० काल सं० १६८२ पीप बुदी १० । वे० सं० २६० । ज भण्डार  
विशेष—कही कही कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हैं ।

८३३. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १६८ । ले० काल सं० १७३२ सावण सुदी ६ । वे० सं० ४६ । झ भण्डार ।

विशेष—पंडित मनोहरदास ने प्रतिलिपि कराई ।

८३४. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १३७ । ले० काल सं० १७३५ कालिक सुदी ११ । वे० सं० १०८ । झ भण्डार ।

८३५. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ७८ । ले० काल × । वे० सं० २६४ । झ भण्डार ।

विशेष—प्रति सामान्य संस्कृत टीका सहित है ।

८३६. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १५८५ बैशाख सुदी १ । वे० सं० २१२० । ट भण्डार ।

विशेष—१५८५ वर्षे बैशाख सुदी १५ सोमवारे श्री काष्ठाम्बे मात्रार्गके ( माष्टुर्गम्बे ) पुष्करगणे भट्टारक श्री हेमचन्द्रदेव । तद् .....।

८३७. पद्मनंदिपंचविंशतिटीका.....। पत्र सं० २०० । अ० १३.५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १६३० भाद्रवा सुदी ३ । अपूर्णा । वे० सं० ४२३ । क भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ५१ पृष्ठ नहीं हैं ।

८६८. पद्मनंदिपञ्चीसीभाषा—जगतराय । पत्र सं० १८० । अ० ११.५ इच्छ । भाषा—हिन्दी । पत्र । २० काल सं० १७२२ फाल्गुण सुदी १० । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ४१६ । क भण्डार ।

विशेष—अन्य रचना श्रीरङ्गजेब के शासनकाल में आगरे में हुई थी ।

८३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७१ । २० काल सं० १७५८ । वे० सं० २६२ । झ भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर है ।

८४०. पद्मनंदिपक्षीसीभाषा—मन्नालाल खिन्दूका । पत्र सं० ६६१ । भा० १३×८ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी वद्य । विषय—धर्म । २० काल सं० १६१५ मंगसिर बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४१६ । क भण्डार  
विशेष—इस ग्रन्थ की वचनिका लिखना ज्ञानचन्द्रजी के पुत्र जीहरीलालजी ने प्रारम्भ की थी । 'मिड स्तुति' तक लिखने के पश्चात् ग्रन्थकार की मृत्यु होगई । पुनः मन्नालाल ने ग्रन्थ पूर्ण किया । रचनाकाल प्रति सं० ३ के आधार से लिखा गया है ।

८४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१७ । ले० काल × । वै० सं० ४१७ । क भण्डार ।

८४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५७ । ले० काल सं० १६४४ चैत बुदी ३ । वै० सं० ६१७ । क भण्डार ।

८४३. पद्मनंदिपक्षीसीभाषा..... । पत्र सं० ६७ । भा० ११×७ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ४१८ । क भण्डार ।

८४४. पद्मनंदिशावकाचार—पद्मनंदि । पत्र सं० ४ से ५३ । भा० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १६१३ । अपूर्ण । वै० सं० ४२८ । क भण्डार

८४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० से ६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २१७० । ट भण्डार ।

८४६. परीषद्दर्शन ..... । पत्र सं० ६ । भा० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४४१ । क भण्डार ।

विशेष—स्तोत्र आदि का संग्रह भी है ।

८४७. पुच्छीसेण..... । पत्र सं० २ । भा० १०×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । वै० सं० १२७० । पूर्ण । अ भण्डार ।

८४८. पुरुषार्थसिद्धयुपाय—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० १६ । भा० १३ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १७०७ मंगसिर मुदी ३ । वै० सं० ५३ । अ भण्डार ।

विशेष—आचार्य कनककीर्ति के शिष्य सदाराम ने फाटुईपुर में प्रतिलिपि की थी ।

८४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वै० सं० ५५ । छ भण्डार ।

८५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १८३२ । वै० सं० १७८ । अ भण्डार ।

८५१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १६३४ । वै० सं० ६७१ । क भण्डार ।

विशेष—श्लोकों के ऊपर नीचे संस्कृत टीका भी है ।

८५२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वै० सं० ४७२ । क भण्डार ।

८५३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वै० सं० ६७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । ग्रन्थ का दूसरा नाम जिन प्रवचन रहस्य भी दिया हुआ है ।

८५४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८१७ भादवा बुदी १३ । वे० सं० ६८ । छ  
भण्डार ।  
विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है तथा जयपुर मे लिखी गई थी ।
८५५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ३३१ । ज भण्डार ।
८५६. पुरुषार्थसिद्धयुपायभाषा—प० टोडरमल । पत्र सं० ६७ । श्रा० ११<sup>३</sup>×५ इख । भाषा—  
हिन्दी । विषय—धर्म । १० काल सं० १८२७ । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ४०५ । अ भण्डार ।
८५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०५ । ले० काल सं० १६५२ । वे० सं० ४७३ । छ भण्डार ।
८५८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४८ । ले० काल सं० १८२७ मंगसिर मुदी २ । वे० सं० ११८ । छ  
भण्डार ।
८५९. पुरुषार्थसिद्धयुपायभाषा—भूधरदाम । पत्र सं० ११६ । श्रा० ११<sup>३</sup>×८ इख । भाषा—  
हिन्दी । विषय—धर्म । १० काल सं० १८०१ भादवा मुदी १० । ले० काल सं० १६५२ । पूर्ण । वे० सं० ४७३ । क
८६०. पुरुषार्थसिद्धयुपाय वचनिका—भूधर मिश्र । पत्र सं० १३६ । श्रा० १३×७ इख । भाषा—  
हिन्दी । विषय—धर्म । १० काल सं० १८७१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७२ । क भण्डार ।
८६१. पुरुषार्थानुशासन—श्री गोविन्द अट्ट । पत्र सं० ३८ मे ६७ । श्रा० १०×६ इख । भाषा—  
संस्कृत । विषय—धर्म । १० काल × । ले० काल सं० १८५३ भाद्रवा बुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० ४५ । अ भण्डार ।  
विशेष—प्रशस्ति विस्तृत वी हुई है । द्योजीराम भावसा ने प्रतिलिपि की थी ।
८६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७६ । ले० काल × । वे० सं० १७६ । अ भण्डार ।
८६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७१ । ले० काल × । वे० सं० ४७० । क भण्डार ।
८६४. प्रतिक्रमण..... । पत्र सं० १३ । श्रा० १२×५<sup>३</sup> इख । भाषा—प्राकृत । विषय—किये हुये दोषों  
की झालोचना । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३१ । च भण्डार ।
८६५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३२ । च भण्डार ।
८६६. प्रतिक्रमण पाठ..... । पत्र सं० २६ । श्रा० ६×६<sup>३</sup> इख । भाषा—प्राकृत । विषय किये हुये  
दोषों की झालोचना १० काल × । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० ३२ । ज भण्डार ।
८६७. प्रतिक्रमणसूत्र..... । पत्र सं० ६ । श्रा० ६×६ इख । भाषा—प्राकृत । विषय—किये हुये दोषों  
की झालोचना । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६८ । अ भण्डार ।
८६८. प्रतिक्रमण..... । पत्र सं० २ मे १८ । श्रा० ११×५ इख । भाषा—संस्कृत । विषय—किये हुये  
दोषों की झालोचना । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६६ । ट भण्डार ।
८६९. प्रतिक्रमणसूत्र—( वृत्ति सहित )..... । पत्र सं० २२ । श्रा० १२×५<sup>३</sup> इख । भाषा—प्राकृत  
संस्कृत । विषय किये हुए दोषों की झालोचना । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६० । घ भण्डार ।

८३०. प्रतिमाउत्थापक कृ<sup>०</sup> उपदेश—जगत्स्य । पत्र सं० ४७ । आ० १५४ दृश्य । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल ५ । ले० काल ५ । प्र० सं० १६२५ । वे० सं० ११२२ । क भण्डार ।

विशेष—श्रीरङ्गाबाद में रचना की गयी थी ।

८३१. प्रत्याख्यान..... । पत्र सं० १ । आ० १००४० दृश्य । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल ५ । ले० काल ५ । प्र० सं० १७७२ । क भण्डार ।

८३२. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार । पत्र सं० २५ । आ० ११०८ दृश्य । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल ५ । ले० काल ५ । प्र० सं० १६१८ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी ध्याख्या सहित है ।

८३३. प्रश्नोत्तरश्रावकाचारभाषा—बुलाकीदास । पत्र सं० १६८ । आ० ११५५ दृश्य । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । २० काल सं० १७४७ बेदाय मुद्रा ५ । वे० सं० १६६२ गणित मुद्रा ६ । वे० सं० ६२ । क भण्डार ।

विशेष—श्यालानजी के पुत्र हाज्जलालजी साह ने प्रतिनिधि कराये । इस काल का हिन्दी भाषा जहानाबाद तथा चाणूर में भाषा पालीत में लिखा गया था ।

नाम हिम्मे या ग्रन्थ की भय जहानाबाद ।

चौधरी जलपथ विषी बालराम सन्धार ।

८३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १६२५ भावग मुद्रा १ । वे० सं० ६५ । क भण्डार । विशेष—श्यालानजी साह ने गदाई माधोपुर में प्रारम्भ में प्रारम्भ आधुनिकी के संदर्भ में लिखा ।

८३५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५० । ले० काल सं० १६२४ नीच मुद्रा १ । वे० सं० १५२ । क भण्डार ।

विशेष—सं० १६२६ फागुण मुद्रा १२ की बख्शराम साधा ने प्रतिनिधि की या थाय उमें प्रति न उप की गजल उतारी गई है । महारामा भीताराम के पुत्र लालचन्द ने इसकी परिचालनी की ।

८३६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २१ । ले० काल ५ । वे० सं० ६५ । प्र० सं० १५५५ । क भण्डार ।

८३७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०५ । ले० काल सं० १६६१ भाव मुद्रा १२ । वे० सं० १६१ । क भण्डार ।

८३८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२० । ले० काल सं० १६६३ भाव मुद्रा १४ । वे० सं० १६१ । क भण्डार ।

८३९. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार भाषा—पञ्जालाल चौधरी । पत्र सं० ३८८ । आ० १२०४५ दृश्य । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । २० काल सं० १६३५ भाव मुद्रा १४ । ले० काल सं० १६६८ । प्र० सं० ५१६ । क भण्डार ।

८४०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४०० । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० ५१५ । क भण्डार ।

८८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३१ मे ४६० । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ६४६ । अ भण्डार ।

८८२. प्रनोत्तरश्रावकाचार । पत्र सं० ३३ । अ० ११३×५ इच्छ । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—  
आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १८३२ । पूर्णा । वै० सं० ११६६ । ख भण्डार ।

विशेष—आचार्य राजवर्मा ने प्रतिलिपि की थी ।

८८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३० । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ६८७ । अ भण्डार ।

८८४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३०० । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ५१८ । क भण्डार ।

८८५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३०० । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ५१९ । क भण्डार ।

८८६. प्रनोत्तरोपामकाचार—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० १३१ । अ० ११×४ इच्छ । भाषा—  
संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १६९५. फागुण सुदी १० । पूर्णा । वै० सं० १४२ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ संख्या २६०० ।

प्रशस्ति—संवत् १६९५ वर्षे पाण्डुग मुदी १० सोमे खिराडदेशे पनवाडनगरे श्री चन्द्रप्रमचैत्याल्यै श्री  
पाण्डुस्यै नदीनदगन्धे विद्यालये भट्टारक श्री रामेभान्य भ० श्रीमन्मोमेनदेवास्तत्पट्टे भ० श्री भोमसेनदेवास्तत्पट्टे भ०  
श्री गामकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री विजयसेनदेवास्तत्पट्टे श्रीमदुदयसेनदेवा भ० श्री त्रिभुवन्कीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री  
सन्तुष्यदेवास्तत्पट्टाभरण भ० जयकीर्तिस्तत्पट्टाग्र्याय श्री वीरचन्द्र विनित्त ।

८८७ प्रति सं० २ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १६६६ पौष सुदी १ । वै० सं० १७४ । अ  
भण्डार ।

८८८ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १८८१ मंगलिर सुदी ११ । वै० सं० १९७ । अ  
भण्डार ।

विशेष—महाराजाधिराज सवाई जयसिंहजी के पासनखाल में जैतराम साहू के पुत्र श्याजीलाल की भाषां  
ने प्रतिलिपि कराई । अत्र श्री प्रतिलिपि जयपुर में अवावती ( आमेर ) बाजार में स्थित आदिनाथ चैत्यालय के नीचे  
जनी नननागर के शिबू मन्त्रालय के यथा सवाईगाम गोधा ने की थी । यह प्रति जैतरामजी के घरों में (१२वें दिन पर)  
श्याजीरामजी ने पाशरी के मन्दिर में सं० १८६६ में भेट की ।

८८९ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२८ । ले० काल सं० १९०० । वै० सं० २१७ । अ भण्डार ।

८९०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २१९ । ले० काल सं० १९७६ आसोज सुदी ५ । वै० सं० २११ । अ  
भण्डार ।

विशेष—नातू गोधा ने प्रतिलिपि कराई थी ।

प्रशस्ति—संवत् १९७६ वर्षे आसोज वदि गनिवामरे रोहणी नक्षत्र मोजाबादनगरे राज्यश्रीराजाभावसिध  
राजप्रवर्तमाने श्री मूलसने नवाभान्ये बलाकारगणै सरस्वतीगन्धे श्री कुन्ददाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनिदेवास्तत्पट्टे  
भट्टारकश्रीशुभकन्देवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्देवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीप्रभावचन्देवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीचन्द्रकीर्तिस्तत्पट्टे  
भट्टारकश्रीदेवकीर्तिस्तत्पट्टे दामान्ये गोधा गोत्रे जाचक-जनसदीहकलवृक्ष श्रावकाचारचरण-निरत-चित साहू श्री धनराज



तद्भार्या सीलतोय-तरङ्गिणी विनय-बाणेश्वरी धनसिरि तयोः पुत्राः त्रयः प्रथमपुत्रधर्मधुराधरग धीरसाह श्री रुद्रा तद्भार्या दानसौलद्रुणभूषणभूषितगानानाम्ना भूकरि तयोः पुत्र राजसभा शृंगारहारस्वप्रतागदिनकरमुकुलिकृतशानुसुकुमुदा-  
कर स्वज..... निसाकरभ्राह्मदित कुवल्यदानगुण अलीकृतकरपादय श्री पंचपरमेष्ठिचितन पवित्रितचित सफलद्रुणि-  
जनविश्रामस्थान साह श्री नानूतमनोरमाः पंच प्रथमनारंगदे द्वितीया हरक्षमदे तृतीया मुजानदे चतुर्था सलालदे पंचम  
भार्या लाडी । हरक्षमदेजनितपुत्राः त्रयः स्वकुलनामप्रकाशनैकचन्द्राः प्रथम पुत्र साह भ्रायकर्ण तद्भार्या भ्रहंकारदेपुत्र  
नाशु । दुतीभार्यालाडमदे पुत्र केसवदास भार्या कपूरदे द्वितीय पुत्र चि० सुरगकरण भार्या द्वे प्रथमललतादे पुत्र रामकर्ण  
द्वितीय लाडमदे । तृतीय पुत्र चि० बलिकर्ण भार्या बालमदे । चतुर्थ पुत्र चि० पूर्णमल भार्या पुरबदे । साह धनराज द्विती  
पुत्र साह श्री जोधा तद्भार्या जीरादेतयोः पुत्रास्त्रयः प्रथमपुत्रधार्मिक साह करमचन्द तद्भार्या सोहागदे तयो पुत्र चि०  
दयालदास भार्या दाडमदे । द्वितीयुत्र साह धर्मदास तद्भार्याद्वे । प्रथम भार्या धारादे द्वितीया भार्या लाडमदे तयो पुत्र साह  
ह्रंगरसी तद्भार्या दाडिमदे तत्पुत्रो द्वे । प्र० पु० लक्ष्मीदास द्वि० पुत्र चि० तुलसीदास । जोधा तृतीय पुत्र जिगुचरणकमल-  
मधुप साह पदारथ तद्भार्या हमीरदे । साह धनराज तृतीय पुत्र दानद्रुणश्रेयाससकल जनानन्दकारकम्बवचनप्रतिपालन-  
समर्थसर्वापकारकसाहश्रीरतनमी तद्भार्या द्वे प्रथम भार्या रत्नादे द्वितीय भार्या नीलादे तयो पुत्राश्चत्वारः प्रथम पुत्र  
क्षपाल तद्भार्या मुष्यारदे तयोःपुत्र चि० भोजराज तद्भार्या भावलदे । श्रीरतनमी द्वितीय पुत्र साह गेगराज तद्भार्या गीरादे  
तयोपुत्राः त्रयः प्रथम पुत्र चि० सातूल द्वि० पुत्र चि० मिथा तृतीय पुत्र चि० मलहदी । साह रतनमी तृतीय पुत्र साह  
भरथा तद्भार्या भावलदे चतुर्थ पुत्र चि० परवत तद्भार्या पाटमदे । एतेषा मध्ये मिषवी श्री नानू भार्या प्रथम नारगदे ।  
भट्टारकश्रीचन्द्रकीर्ति शिष्य आ० श्री शुभचन्द्र इदं शास्त्रं व्रतनिमित्तं घटापितं कर्मक्षयनिमित्तं । ज्ञानवान् ज्ञानदाने....

८६१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४६ मे १६४ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १६८३ । अ भण्डार ।

८६२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १३० । ले० काल म० १८६० । अपूर्णा । वे० सं० १०१८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्णा है । बीच के कुछ पत्र नहीं है । पं० केशरीमिह के शिष्य लालचन्द ने महामा  
गभुराम मे सवाई जयपुर मे प्रतिनिधि करायी ।

८६३. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १६५ । ले० काल सं० १६८० । वे० सं० ५१६ । क भण्डार ।

८६४. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ८१ । ले० काल सं० १६५८ । वे० सं० ५२० । क भण्डार ।

८६५. प्रति सं० १० । पत्र सं० २२१ । ले० काल म० १६७७ पौष मृदा । वे० सं० ५१७ । क  
भण्डार ।

८६६. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ११० । ले० काल सं० १८८० । वे० सं० ११५ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० रूपचन्द ने स्वपठनार्थ प्रतिनिधि की थी ।

८६७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ११६ । ले० काल × । वे० सं० ६४ । ख भण्डार ।

८६८. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २ मे २६ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ५१७ । क भण्डार ।

८६९. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ५१७ । क भण्डार ।

९००. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १२६ । ले० काल × । वे० सं० ५२० । क भण्डार ।

६०१. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १४५ । ले० काल × । वे० सं० १०६ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अन्तिम पत्र बाद में लिखा हुआ है ।

६०२. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १८५६ माघ सुदी ३ । वे० सं० १०८ । छ मण्डार ।

६०३. प्रति सं० १८ । पत्र सं० १०४ । ले० काल सं० १७७४ फागुण बुदी ८ । वे० सं० १०९ ।

विशेष—पाचोलास में चातुर्मास योग के समय पं० सोभागविलस ने प्रतिलिपि की थी । सं० १८२५ ज्येष्ठ बुदी १४ को महाराजा पृथ्वीसिंह के पासनकाल में धर्मासुराम छाबड़ा ने मागानेर में गोश्रां के मन्दिर में चढाई ।

६०४. प्रति सं० १९ । पत्र सं० १६० । ले० काल सं० १८२६ मंगसिर बुदी १४ । वे० सं० ७८ ।

व्य मण्डार ।

६०५. प्रति सं० २० । पत्र सं० १३२ । ले० काल × । वे० सं० २२३ । व्य मण्डार ।

६०६. प्रति सं० २१ । पत्र सं० १३१ । ले० काल सं० १७५९ मंगसिर बुदी ८ । वे० सं० ३०२ ।

विशेष—महामा धनराज ने प्रतिलिपि की थी ।

६०७. प्रति सं० २२ । पत्र सं० १६४ । ले० काल सं० १९७४ ज्येष्ठ सुदी २ । वे० सं० ३७५ । व्य मण्डार ।

६०८. प्रति सं० २३ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १६८८ पीष सुदी ५ । वे० सं० ३४३ । व्य मण्डार ।

विशेष—भट्टारक देवेन्द्रजीति तदाम्नाये खंडेलबालाकवये पहाड्या साह श्री कान्हा इदं पुस्तकं लिखापितं ।

६०९. प्रति सं० २४ । पत्र सं० १३१ । ले० काल × । वे० सं० १८७३ । ट मण्डार ।

६१०. प्रश्नोत्तरोद्धार । पत्र संख्या ५० । प्रा०-१०१/५, ११० डन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

प्राचार शास्त्र । २० काल-× । ले० काल-सं० १६०५ माघन बुदी ५ । अपूर्णा । वे० सं० १९९ । छ मण्डार ।

विशेष—चूरु नगर में स्योजीराम कोठारी ने प्रतिलिपि कराई ।

६११. प्रशस्तिकाशिका—बालकृष्ण । पत्र संख्या १९ । प्रा० ११/५, १११ डन्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—धर्म । २० काल-× । ले० काल-सं० १८४२ कार्तिक बुदी ८ । वे० सं० २७८ । छ मण्डार ।

विशेष—बल्लराम के गिष्य शंभु ने प्रतिलिपि की थी ।

प्रारम्भ—नत्वा गगुपति देवं सर्वं विधन विनाशनं ।

गुरुं च कल्पुणानार्थं ब्रह्मानंदाभिधानकं ॥१॥

प्रशस्तिकाशिका दिव्या बालकृष्णेन रच्यते ।

सर्वेषामुपकाराय लेखनाय त्रिपाठिना ॥ २ ॥

चतुर्णामपि वर्णानां क्रमतः कार्यकारिका ।

नित्येनै सर्वविधायि प्रबोधाय प्रशस्तिका ॥ ३ ॥

यस्या लेखन मात्रेण विद्याकीर्तिपगोपि च ।

प्रतिष्ठा लभ्यते शीघ्रमनायामेन धीमता ॥ ४ ॥

६१२. प्रातः क्रिया..... पत्र सं० ४ । आ० १२०५६ इक्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार ।  
२० काल-५ । ले० काल-५ । पूर्ण । वे० सं० १६१६ । ट भण्डार ।

६१३. प्रायश्चित्त ग्रंथ ..... पत्र सं० ३ । आ० १३०६ इक्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-किये हुए  
दोषों की आलोचना । २० काल-५ । ले० काल-५ । पूर्ण । वे० सं० ३५२ । अ भण्डार ।

६१४. प्रायश्चित्त विधि—अकलंक द्वय । पत्र सं० १० । आ० ६८४ इक्ष । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-किये हुए दोषों की आलोचना । २० काल-५ । ले० काल-५ । पूर्ण । वे० सं० ३५२ । अ भण्डार ।

६१५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २६ । ले० काल-५ । वे० सं० ३५२ । अ भण्डार ।

विशेष—१० पत्र में आगे अन्य ग्रंथों के प्रयुक्त पाठों का संग्रह है ।

६१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल-५ । आ० १६३४ चंद्र बुद्धी । वे० सं० ११० । अ भण्डार ।

विशेष—५ पत्रालाल ने जीवनेर के मंदिर जयपुर प्रांतनिधि की थी ।

६१७. प्रति सं० ५ । ले० काल-५ । वे० सं० ५२३ । अ भण्डार ।

६१८. प्रति सं० ५ । ले० काल-सं० १७४८ । वे० सं० २४४ । अ भण्डार ।

विशेष—आचार्य महेंद्रकांत ने मू'दावती (अबावती) में प्रतिनिधि की ।

६१९. प्रति सं० ५ । ले० काल-सं० १७६६ । वे० सं० ८ । अ भण्डार ।

विशेष—बगरू नगर में पं० हीरानंद के शिष्य प चावन्कर ने प्रतिनिधि की थी ।

६२०. प्रायश्चित्त विधि ..... पत्र सं० ५६ । आ० ६८४ इक्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-किये हुए  
दोषों की आलोचना । २० काल-५ । ले० काल-५ । पूर्ण । वे० सं० १६०५ । अ भण्डार ।

विशेष—२२ वा तथा २६ वा पत्र नहीं है ।

६२१. प्रायश्चित्त विधि..... पत्र सं० ६ । आ० ६८४ इक्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-किये  
हुए दोषों का पश्चात्ताप । २० काल-५ । ले० काल-५ । पूर्ण । वे० सं० १२६५ । अ भण्डार ।

६२२. प्रायश्चित्त विधि—भ० एकसंधि । पत्र सं० ४ । आ० ६८४ इक्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-  
किये हुए दोषों की आलोचना । २० काल-५ । ले० काल-५ । पूर्ण । वे० सं० ११०७ । अ भण्डार ।

६२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल-५ । वे० सं० ८५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठाभार का प्रथम अध्याय है ।

६२४. प्रति सं० ३ । ले० काल-सं० १७६६ । वे० सं० ३३ । अ भण्डार ।

६२५. प्रायश्चित्त शास्त्र—इन्द्रजिद् । पत्र सं० १४ । आ० १०३४ इक्ष । भाषा-प्रकृत ।  
विषय-किये हुए दोषों का पश्चात्ताप । २० काल-५ । ले० काल-५ । पूर्ण । वे० सं० १६३ । अ भण्डार ।

६२६. प्रायश्चित्त शास्त्र ..... पत्र सं० ६ । आ० १०३४ इक्ष । भाषा-गुजराती ( लिपि

देवनागरी) विषय—किये हुए दोषों की आलोचना २० काल-× । ले० काल-× । अपूर्णा । वे० सं० १६६८ । ट भण्डार ।

६२७. प्राथमिचत्त समुच्चय टीका—नंदिगुरु । पत्र सं० ८ । आ० १२×६ । भाषा—संस्कृत । विषय—किये हुए दोषों की आलोचना । २० काल-× । ले० काल-सं० १६३४ चैत्र बुदी ११ । पूर्णा । वे० सं० ११८ । ख भण्डार ।

६२८. प्रोपथ दोष वर्णन ... । पत्र सं० १ । आ० १०×५ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार साम्प्र । २० काल-× । ले० काल-× । वे० सं० १४७ । पूर्णा । छ भण्डार ।

६२९. बार्हस्पत्य श्रमचर्य वर्णन—याथा तुलीचन्द्र । पत्र सं० ३२ । आ० १०<sup>३</sup>×६<sup>३</sup> इच्छ । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—श्रावकों के नखाने योग्य पदार्थों का वर्णन । २० काल-सं० १६४१ बैशाख सुदी ५ । ले० काल-× । पूर्णा । वे० सं० ५३२ । क भण्डार ।

६३०. बार्हस्पत्य श्रमचर्य वर्णन × । पत्र सं० ६ । आ० १०×७ । भाषा—हिन्दी । विषय—श्रावकों के नखाने योग्य पदार्थों का वर्णन । २० काल-× । ले० काल-× । पूर्णा । वे० सं० ५३३ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति मंगोहित है ।

६३१. बार्हस्पत्य परीपथ वर्णन—भूषणदास । पत्र सं० ६ । आ० ६×४ इच्छ । भाषा—हिन्दी ( पद्य ) । विषय—मुनियों द्वारा महत किये जाने योग्य परीपथों का वर्णन । २० काल-१८ की शताब्दी । ले० काल-× । पूर्णा । वे० सं० १६७ । अ भण्डार ।

६३२. बार्हस्पत्य परीपथ ... × । पत्र सं० ६ । आ० ६×४ । भाषा—हिन्दी । विषय—मुनियों के सहने योग्य परीपथों का वर्णन । २० काल-× । ले० काल-× । पूर्णा । वे० सं० ६६७ । इ भण्डार ।

६३३. बालाशिवेध ( रामाकार पाठ का अर्थ ) ... × । पत्र सं० २ । आ० १०×४<sup>३</sup> । भाषा—प्राकृत, हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल-× । ले० काल-× । पूर्णा । वे० सं० २८६ । छ भण्डार ।

विशेष—मुनि मार्गण्डेयचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

६३४. बुद्धि विलास—बलतराम साह । पत्र सं० ७५ । आ० ७×६ । भाषा—हिन्दी । विषय—प्राचार साम्प्र । २० काल-सं० १८२७ मगसिर सुदी २ । ले० काल-सं० १८३२ । पूर्णा । वे० सं० १८८१ । ट भण्डार ।

६३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४ । ले० काल-सं० १८६३ । वे० सं० १६५५ । ट भण्डार ।

विशेष—बलतराम साह के पुत्र जीवगराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

६३६. ब्रह्मचर्यव्रत वर्णन ... × । पत्र सं० ४ । आ० ८×५ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल-× । ले० काल-× । वे० पूर्णा । वे० सं० २३१ । झ भण्डार ।

६३७. शोधसार ... × । पत्र सं० ३७ । आ० १२×५<sup>३</sup> । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल-× । ले० काल-सं० १६२८ । काली सुदी ५ । पूर्णा । वे० सं० १२५ । ख भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ बौसर्पथ की आन्वय की मान्यतानुसार है ।

६३८. भगवद्गीता (कृष्णाजुन संवाद).....। पत्र सं० २२ मे ४६। भा० ६३×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—वैदिक साहित्य। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण वे० सं० १५६७। ट भण्डार।

६३९. भगवती आराधना—शिवाचार्य। पत्र सं० ३२१। भा० १११×५३ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—मुनि धर्म वर्गान। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण वे सं० ५८६। क भण्डार।

६४०. प्रति सं० २। पत्र सं० ११२। ले० काल ×। वे० सं० ५५०। क भण्डार।  
विशेष—पत्र ६६ तक संस्कृत में गाथाओं के ऊपर पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं।

६४१. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०३। ले० काल ×। वे० सं० २५६ च भण्डार।  
विशेष—प्रारम्भ एवं अन्तिम पत्र बाद में लिखकर लगाये गये हैं।

६४२. प्रति सं० ४। २६५। ले० काल ×। वे० सं० २६० च भण्डार।  
विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं।

६४३. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३१ ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६३। ज भण्डार।  
विशेष—कही २ संस्कृत में टोका भी दी है।

६४४. भगवती आराधना टीका—अपराजितमूर्ति श्रीनंदिगण। पत्र सं० ८३४। भा० १२०.६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—मुनि धर्म वर्गान। २० काल ×। ले० काल सं० १७६३ माघ बुदी ७ पूर्ण। वे० सं० २७६। अ भण्डार।

६४५. प्रति सं० २। पत्र सं० ३१५। ले० काल सं० १५६७ वैशाख बुदा ६। वे० सं० ३३१। अ भण्डार।

६४६. भगवती आराधना भाषा—पं० मदासुखकासलीवाल। पत्र सं० ६०७। भा० १२०.६ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। २० काल सं० १६०८। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५४८। क भण्डार।

६४७. प्रति सं० २। पत्र सं० ६३०। ले० काल सं० १६५५ माह बुदी १३। वे० सं० ५६०। क भण्डार।

६४८. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७२२। ले० काल सं० १६११ जेठ मुदा ६। वे० सं० ६६५। च भण्डार।

६४९. प्रति सं० ४। पत्र सं० ५७ मे ५१६। ले० काल सं० १६२८ वैशाख मुदी १०। अपूर्ण। वे० सं० २५३। अ भण्डार।

विशेष—यह ग्रन्थ हीरामालजी बगडा का है। मिति १६४२ माघ मुदी १० को आचार्य जी के कर्मवहन प्रत के उद्यापन में चढ़ाई।

६५०. प्रति सं० ५। पत्र सं० ५६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३०५। ज भण्डार।

६५१. प्रति सं० ६। पत्र सं० ३२५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६६७। ट भण्डार।

६५१. भावदीपक—जोधराज गोदीका । पत्र सं० १ मे २७७ । आ० १०×५<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—  
हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ६५६ । च भण्डार ।

६५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६ । ले० काल—सं० १८५७ पीप सुदी १५ । अपूर्णा । वे० सं० ६५६ ।  
च भण्डार ।

६५३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७३ । २० काल × । ले० काल—सं० १६०४ कार्तिक सुदी १० ।  
वे० सं० २५४ । अ भण्डार ।

६५४. भावनासारसंग्रह—चामुण्डराय । पत्र सं० ४१ । आ० ११×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—धर्म । २० काल—× । ले० काल—सं० १५१६ श्रावण बुदी ८ । पूर्णा । वे० सं० १८४ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत् १५१६ वर्ष श्रावण बुदी अष्टमी सोमवारमे लिखित बाई धानी कर्मक्षयनिमित्त ।

६५५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १५३१ फागुण बुदी ३३ । वे० सं० २११६ ।  
ट भण्डार ।

६५६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७४ । ले० काल—× । अपूर्णा । वे० सं० २१३६ । ट भण्डार ।

विशेष—७४ मे आगे के पत्र नहीं है ।

६५७. भावसंग्रह—देवसेन । पत्र सं० ४६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म ।  
२० काल— । ले० काल—सं० १६०७ फागुण बुदी ७ । पूर्णा । वे० सं० २३ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रंथकर्ता श्री देवसेन श्री विमलसेन के शिष्य थे । प्रशस्ति निम्नप्रकार है:—

संवत् १६०७ वर्षे फागुण वदि ७ दिने बुधवासरे विशालानक्षत्रे श्री आदिनाथसेत्यालये तक्षकगढ  
महादुर्गे महाराज श्री रामचन्द्रराजप्रवर्तमाने श्री मूलसंधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुकु दाचार्यान्वये भट्टारक  
श्री पद्मनिर्दिदेवा तन्मृटे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तन्मृटे भट्टारक श्री जितचन्द्रदेवा ..... ।

६५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४५ । ले० काल—सं० १६०४ भाद्रवा सुदी १५ । वे० सं० ३२६ ।  
अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्नप्रकार है:—

संवत् १६०४ वर्षे भाद्रपद सुदी पूर्णिमातिथौ भौमदिने गतभिषा नाम नक्षत्रे भूतनाम्नियोगे मुक्तित्रायण  
ननेमनाहिराजप्रवर्तमाने मिर्कदराबादशुभस्थाने श्रीमन्काष्ठासंधे माधुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्रीमलयकीर्ति देवाः  
तन्मृटे भट्टारक श्रीगुणभद्रदेवाः तन्मृटे भट्टारक श्रीभालुकीर्ति तस्य शिष्यणी बा० मोमा योग्य भावसंग्रहाभ्य  
शास्त्रं प्रदत्तं ।

६५९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल—× । वे० सं० ३२७ । अ भण्डार ।

६६०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४६ । ले० काल—सं० १८६४ पीप सुदी १ । वे० सं० ५५८ ।  
क भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

६६१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ से ४५ । ले० काल-सं० १५६४ कायण बुदी ५ । अपूर्ण ।  
वे० सं० २१६३ । ट भण्डार ।

६६२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४० । ले० काल-सं० १५७१ अषाढ बुदी ११ । वे० सं० २१६६ ।  
ट भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्नप्रकार है:—

संवत् १५७१ वर्षे अषाढ वदि ११ आदित्यवारे परोजा साहे । श्री मूलसथे पडितत्रिरादानेन लिखायितं ।

६६३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६ । ले० काल- $\times$  । अपूर्ण । वे० सं० २१७६ । ट भण्डार ।

विशेष—६ से आगे पत्र नहीं है ।

६६४. भाषसंग्रह—श्रुतमुनि । पत्र म० ५६ । आ० १२, ५३ इक्ष । भाषा—प्राकृत । विषय—  
धर्म । २० काल- $\times$  । ले० काल-सं० १७२२ । अपूर्ण । वे० सं० ३१६ । अ भण्डार ।

विशेष—बीसवा पत्र नहीं है ।

६६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल- $\times$  । अपूर्ण । वे० सं० १३३ । ख भण्डार ।

६६६. प्रति सं० ३ । पत्र म० ५६ । ले० काल-सं० १७८३ । वे० सं० ५६२ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका महित है ।

६६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल- $\times$  । वे० सं० १८४१ । ट भण्डार ।

विशेष—कही २ संस्कृत में अर्थ भी दिये है ।

६६८. भावसंग्रह—पं० वामदेव । पत्र सं० २७ । आ० १२, ५३ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—  
धर्म । २० काल- $\times$  । ले० काल-सं० १८२८ । पूर्ण । वे० सं० ३१७ । अ भण्डार ।

६६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल- $\times$  । अपूर्ण । वे० सं० १३४ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० वामदेव की पूर्ण प्रशस्ति दी हुई है । २ प्रतियो का मिश्रण है । ग्रन्थ के कुछ पानों में भंग  
हुय है । प्रति प्राचीन है ।

६७०. भावसंग्रह..... । पत्र सं० १४ । आ० ११, ५३ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।  
२० काय- $\times$  । ले० काल- $\times$  । वे० सं० १३५ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । १४ में आगे पत्र नहीं है ।

६७१. मनोरथमाला..... । पत्र सं० १ । आ० ८, ४ इक्ष । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।  
२० काल- $\times$  । ले० काल- $\times$  । पूर्ण । वे० सं० ५७० । अ भण्डार ।

६७२. भरकतविलास—पद्मालाल । पत्र सं० ६१ । आ० १२, ६३ इक्ष । भाषा—हिन्दी । विषय—  
श्रावक धर्म वर्णन । २० काल- $\times$  । ले० काल- $\times$  । अपूर्ण । वे० सं० ६६२ । च भण्डार ।

६७३. मिथ्यात्वखंडन—बखतराम । पत्र सं० ५८ । आ० १४, ५३ इक्ष । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।  
विषय—धर्म । २० काल-सं० १८२१ पोष बुदी ५ । ले० काल-सं० १८६२ । पूर्ण । वे० सं० ५७७ । क भण्डार ।

६७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७० । ले० काल-× । वे० सं० ६७ । ग भण्डार ।

६७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६१ । ले० काल-सं० १८२४ । वे० सं० ६६४ । च भण्डार ।

६७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३७ से १०५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०३६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३७ पत्र नहीं हैं । पत्र फटे हुए हैं ।

६७७. मित्यात्वखंडन..... । पत्र सं० १७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।

१० काल-× । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० १४६ । ख भण्डार ।

विशेष—१७ से आगे पत्र नहीं है ।

६७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ५६४ । क भण्डार ।

६७९. मूलाचार टीका—आचार्य वसुनन्दि । पत्र सं० ३६८ । आ० १२×५<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—  
प्राकृत संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । १० काल-× । ले० काल-सं० १८२६ मयसिर बुदी ११ । पूर्ण ।

वे० सं० २७५ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

६८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७३ । ले० काल-× । वे० सं० ५८० । क भण्डार ।

६८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५१ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ५६८ । क भण्डार ।

विशेष—५१ से आगे पत्र नहीं है ।

६८२. मूलाचारप्रदीप—सकलकीर्ति । पत्र सं० १२६ । आ० १२<sup>३</sup>×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—आचारशास्त्र । १० काल-× । ले० काल-सं० १८२८ । पूर्ण । वे० सं० १६२ ।

विशेष—प्रतिलिपि जयपुर में हुई थी ।

६८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । ले० काल-× । वे० सं० ८४६ । अ भण्डार ।

६८४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८१ । ले० काल-× । वे० सं० ७७७ । च भण्डार ।

६८५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५५ । ले० काल-× । वे० सं० ६८ । छ भण्डार ।

६८६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६३ । ले० काल-सं० १८३० पीप सुदी २ । वे० सं० ६३ ।

अ भण्डार ।

विशेष—१० बालचंद्र के शिष्य पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

६८७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १८० । ले० काल-सं० १८५६ कार्तिक बुदी ३ । वे० सं० १०१ ।

अ भण्डार ।

विशेष—महात्मा सर्वसुख ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

६८८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १३७ । ले० काल-सं० १८२६ चैत बुदी १२ । वे० सं० ४५५ ।

अ भण्डार ।

६८९. मूलाचारभाषा—शुभभद्रास । पत्र सं० ३० से ६३ । आ० १०×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—आचार शास्त्र । १० काल-सं० १८८८ । ले० काल-सं० १८६१ । पूर्ण । वे० सं० ६६१ । च भण्डार ।



६६०. मूल-आचार भाषा.....। पत्र सं० ३० से ६३। सा० १०१×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-  
आचार शास्त्र। २० काल-×। ले० काल-×। अपूर्णा। वे० सं० ५६७।

६६१. प्रति सं० २। पत्र सं० १ से १००, ३४६ से ३६०। सा० १०१×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी।  
विषय-आचार शास्त्र। २० काल-×। ले० काल-×। अपूर्णा। वे० सं० ५६६। कृ भण्डार।

६६२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १ से ८१, १०१ से ६००। ले० काल-×। अपूर्णा। वे० सं० ६००।

६६३. मौल्यपैडी—बनारसीदास। पत्र सं० १। सा० ११३×६३ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-  
धर्म। २० काल-×। ले० काल-×। पूर्णा। वे० सं० ७६५। अ भण्डार।

६६४. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल-×। वे० सं० ६०२। कृ भण्डार।

६६५. मोक्षमार्गप्रकाशक—पं० टोडरमल। पत्र सं० ३०१। सा० १२३×८ इञ्च। भाषा-द्विद्वारी  
(राजस्थानी) गद्य। विषय-धर्म। २० काल-×। ले० काल-सं० १६५४ आवागण मुदी १४। पूर्णा। वे० सं० ५८३।

क भण्डार।

विशेष—द्विद्वारी शब्दों के स्थान पर शुद्ध हिन्दी के शब्द भी लिखे हुए हैं।

६६६. प्रति सं० २। पत्र सं० २८२। ले० काल-सं० १६५४। वे० सं० ५८४। कृ भण्डार।

६६७. प्रति सं० ३। पत्र सं० २१२। ले० काल-सं० १६४०। वे० सं० ५६५। कृ भण्डार।

६६८. प्रति सं० ४। पत्र सं० २१२। ले० काल-सं० १८८८ वैशाख वृदी ६। वे० सं० ६८।

ग भण्डार।

विशेष—छात्रूलाल माह ने प्रतिलिपि कराई थी।

६६९. प्रति सं० ५। पत्र सं० २२८। ले० काल-×। वे० सं० ६०३। कृ भण्डार।

१०००. प्रति सं० ६। पत्र सं० २७६। ले० काल-×। वे० सं० ६५८। च भण्डार।

१००१. प्रति सं० ७। पत्र सं० १०१ से २१६। ले० काल-×। अपूर्णा। वे० सं० ६५६।

च भण्डार।

१००२. प्रति सं० ८। पत्र सं० १२३ से २२५। ले० काल-×। अपूर्णा। वे० सं० ६६०। च भण्डार।

१००३. प्रति सं० ९। पत्र सं० ३५१। ले० काल-×। वे० सं० ११६। कृ भण्डार।

१००४. यतिदिनचर्या—देवसूरि। पत्र सं० २१। सा० १०३×४३ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-  
आचार शास्त्र। २० काल-×। ले० काल-सं० १६६८ चैत मुदी ६। पूर्णा। वे० सं० १६२६। ट भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री मुक्तिहितगिरोमणिश्रीदेवसूरिविरचितः यतिदिनचर्या संपूर्णा।

प्रथमः—संवत् १६६८ वर्षे चैत्रमासे शुक्लपक्षे नवमीशोमबामरे श्रीमत्पद्मच्छाधिराज भट्टारक  
श्री श्री ५ त्रिब्रज्येन सूरेश्वरया लिखितं ज्योतिषी उषव श्री युवाउलपुरे।

१००५. यत्याचार—आ० वसुनन्दि। पत्र सं० ६। सा० १२३×५३ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-

मुनि धर्म वर्गन । १० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० १२० । अ भण्डार ।

१००६. रत्नकरण्डआवकाचार—आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं० ७ । भा० १०३×५<sup>१</sup> इक्ष ।

भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । १० काल-× । ले० काल-× । वे० सं० २००६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम परिच्छेद तक पूर्ण है । अर्थ का नाम उपासकाध्याय तथा उपासकाचार भी है ।

१००७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल-× । वे० सं० २६४ । अ भण्डार ।

विशेष—कही कही संस्कृत में टिप्पणियाँ दी हुई हैं । १६३ श्लोक हैं ।

१००८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल-× । वे० सं० ६१२ । अ भण्डार ।

१००९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल-सं० १६३८ माह मुदी १० । वे० सं०

१५६ । अ भण्डार ।

विशेष—कही २ संस्कृत में टिप्पणियाँ दियी हैं ।

१०१०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३३ । ले० काल-× । वे० सं० ६३० । अ भण्डार ।

१०११. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६३१ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

१०१२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४८ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६३३ । अ भण्डार ।

१०१३. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३८-५६ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६३२ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

१०१४. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १२ । ले० काल-× । वे० सं० ६३४ । अ भण्डार ।

विशेष—ब्रह्मचारी मूरजमल ने प्रतिलिपि की थी ।

१०१५. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४० । ले० काल-× । वे० सं० ६३५ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में पत्रालाल मंथी कृत टीका भी है । टीका सं० १६३१ में की गयी थी ।

१०१६. प्रति सं० ११ । पत्र सं० २६ । ले० काल-× । वे० सं० ६३७ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टिप्पणी टीका सहित है ।

१०१७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ४२ । ले० काल-सं० १६५० । वे० सं० ६३८ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

१०१८. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १७ । ले० काल-× । वे० सं० ६३९ । अ भण्डार ।

१०१९. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ३८ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० २६१ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र नहीं है । संस्कृत में सामान्य टीका दी हुई है ।

१०२०. प्रति सं० १५ । पत्र सं० २० । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० २६२ । अ भण्डार ।

१०२१. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ११ । ले० काल-× । वे० सं० २६३ । अ भण्डार ।

१०२२. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ९ । ले० काल-× । वे० सं० २६४ । अ भण्डार ।

१०२३. प्रति सं० १८ । पत्र सं० १३ । ले० काल-५ । वे० सं० २६५ । च भण्डार ।  
 १०२४. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ११ । ले० काल-८ । वे० सं० ७४० । च भण्डार ।  
 १०२५. प्रति सं० २० । पत्र सं० १३ । ले० काल-५ । वे० सं० ७४२ । च भण्डार ।  
 १०२६. प्रति सं० २१ । पत्र सं० १३ । ले० काल-५ । वे० सं० ७४३ । च भण्डार ।  
 १०२७. प्रति सं० २२ । पत्र सं० १० । ले० काल-५ । वे० सं० ११० । छ भण्डार ।  
 १०२८. प्रति सं० २३ । पत्र सं० १० । ले० काल-५ । वे० सं० १४५ । ज भण्डार ।  
 १०२९. प्रति सं० २४ । पत्र सं० १६ । ले० काल-५ । अपूर्णा । वे० सं० ६२ । झ भण्डार ।  
 १०३०. प्रति सं० २५ । पत्र सं० १२ । ले० काल-सं० १७२१ ज्येष्ठ सुदी ३ । वे० सं० १४० ।

च भण्डार ।

१०३१. रत्नकरहडश्रावकाचार टीका—प्रभावन्द । पत्र सं० ८३ । आ० १०<sup>१</sup>/<sub>२</sub> ५<sup>३</sup> डब्बा । भाषा—  
 मङ्गल । विषय—आचार शास्त्र । २० काल-५ । ले० काल-सं० १०६० श्रावण सुदी ७ । पूर्णा । वे० सं० ३१६ ।  
 च भण्डार ।

१०३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल-५ । वे० सं० १०६५ । अ भण्डार ।  
 १०३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१-५३ । ले० काल-५ । अपूर्णा । वे० सं० ३८० । अ भण्डार ।  
 १०३४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३६-६२ । ले० काल-५ । अपूर्णा । वे० सं० ३२७ । अ भण्डार ।  
 विशेष—इसका नाम उग्रमकध्वन टीका भी है ।

१०३५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १६ । ले० काल-५ । वे० सं० ६३६ । अ भण्डार ।  
 १०३६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८८ । ले० काल-सं० १७७६ फागुन सुदी ५ । वे० सं० १७८ ।

अ भण्डार ।

विशेष—भट्टारक मुरन्दकीर्ति की ग्रन्थाय मे संबन्धित ज्ञानीय भासा मोक्षानन्द गुरु छत्रमलने के  
 वंशज साह चन्द्रभाग की भार्या ल्होडी ने गर्भ की प्रतिनिधि कराकर आचार्य चण्डीनि के ज्येष्ठ हर्षकीर्ति के विर-  
 कर्मलाय निमित्त भेट की ।

१०३७. रत्नकरहडश्रावकाचार—पं० सदासुख कासलीयात्र । पत्र सं० १०४० ।  
 आ० १२<sup>१</sup>/<sub>२</sub> ५<sup>३</sup> डब्बा । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—आचार शास्त्र । २० काल सं० १६२० चैत्र सुदी ४ ।  
 ले० काल सं० १६४१ । पूर्णा । वे० सं० ६१६ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रंथ २ केटनों मे है । १ मे ४५५ तथा ४५६ मे १०४६ तक है । प्रति मुद्रित है ।

१०३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६६ । ले० काल-५ । अपूर्णा । वे० सं० ६२० । क भण्डार ।  
 १०३९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६१ मे १७६ । ले० काल-५ । अपूर्णा । वे० सं० ६४० । क भण्डार ।  
 १०४०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४१६ । ले० काल-आमोज बुदि ८ सं० १६२१ । वे० सं० ६६६ ।  
 च भण्डार ।

१०४१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३१ । ले० काल-५ । अपूर्णा । वे० सं० ६७० । च भण्डार ।  
 विशेष—नेमीचंद कालक वाले ने लिखा और सदासुखजी डेडाकाने लिखाया—यह ग्रन्थ मे लिखा हुआ है ।

१०५२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३४६ । ले० काल- $\times$  । वे० सं० १८२ । छ् भण्डार ।

विशेष—“इम प्रकार मूलग्रंथ के प्रसाद तै मदासुखदाम बेडाका का अग्ने हवन तै लिखि ग्रथ समाप्त किया ।”

अन्तिम पृष्ठ पर ऐसा लिखा है ।

१०५३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २०१ । ले० काल-सं० १६६३ कार्तिक बुदी ५५ । वे० सं० १६८ ।

छ् भण्डार ।

१०५४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५३६ । ले० काल-सं० १६५० वैशाख मुदी ६ । वे० सं० ।

भ् भण्डार ।

विशेष—इस ग्रंथ की प्रतिलिपि स्वयं मदासुखजी के हाथ में लिखे हुए सं० १६१६ के ग्रंथ में सामोद म प्रतिलिपि की गई है । महासुख मेठी ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

१०५५. रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा—नथमल । पत्र सं० २६ । आ० १११५ डच्च । भाषा—

हिन्दी पत्र । विषय—आचार शास्त्र । २० काल-सं० १६२० माघ मुदी ६ । ले० काल- $\times$  । वे० सं० ६२२ । पूर्ण । क भण्डार ।

१०५६. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १० । ले० काल- $\times$  । वे० सं० ६२३ । क भण्डार ।

१०५७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल- $\times$  । वे० सं० ६२१ । क भण्डार ।

१०५८. रत्नकरण्डश्रावकाचार—संधी पञ्चालाल । पत्र सं० ४६ । आ० १०३१७ डच्च । भाषा—

हिन्दी पत्र । विषय—आचार शास्त्र । २० काल-सं० १६३१ पौष बुदी ७ । ले० काल-सं० १६५३ मगसिर मुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ६१४ । क भण्डार ।

१०५९. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४० । ले० काल- $\times$  । वे० सं० ६१४ । क भण्डार ।

१०६०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २६ । ले० काल- $\times$  । वे० सं० १८६ । छ् भण्डार ।

१०६१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २७ । ले० काल- $\times$  । वे० सं० १८६ । छ् भण्डार ।

१०६२. रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा..... । पत्र सं० १०१ । आ० १२१५ डच्च । भाषा—हिन्दी

पत्र । विषय—आचार शास्त्र । २० काल-सं० १६५७ । ले० काल- $\times$  । पूर्ण । वे० सं० ६१७ । क भण्डार ।

१०६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७० । ले० काल-सं० १६५३ । वे० सं० ६१६ । क भण्डार ।

१०६४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल- $\times$  । वे० सं० ६१३ । क भण्डार ।

१०६५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २८ मे १५६ । ले० काल- $\times$  । अपूर्ण । वे० सं० ६६० । क भण्डार ।

१०६६. रत्नमान्वा—आचार्य शिवकोटि । पत्र सं० ४ । आ० १११८६ डच्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—आचार शास्त्र । २० काल- $\times$  । ले० काल- $\times$  । पूर्ण । वे० सं० ७४ । छ् भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भः—

सर्वज्ञ सर्ववाणीशं वीरं मारमदायहं ।

प्रणमामि महामोहशातये मुक्तिप्रणतये ॥१॥

मारं यत्पूर्वमारेषु वंशं यद्दक्षिणेऽपि ।

अनेकांतमयं वंदे तदहर्तु वचनं मदा ॥२॥

अग्निपय—यो नित्यं पठति श्रीमान् रत्नमालामिमांपरा ।

सशुद्धचरणो नूतनं शिवकोटित्वमानुयात् ॥

इति श्री समन्तभद्र स्वामी शिष्य शिवकोट्याचार्य विरचिता रत्नमाला समाप्ता ।

१०५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल— $\times$  । अपूर्णा । वे० सं० २११५ । ट भण्डार ।

१०५८. रयणसार—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र सं० १० । आ० १०५ $\times$ ५ $\frac{१}{२}$  ड३ । भाषा—प्राकृत ।

विषय—आचार शास्त्र । २० काल— $\times$  । ले० काल—सं १८८३ । पूर्णा । वे० सं० १४६ । अ भण्डार ।

१०५९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल— $\times$  । वे० सं० १८१० । ट भण्डार ।

१०६०. रात्रि भोजन त्याग वर्णन..... । पत्र सं० १६ । आ० १२ $\times$ ४ ड३ । भाषा—हिन्दी ।

विषय—आचार शास्त्र । २० काल— $\times$  । ले० काल— $\times$  । पूर्णा । वे० सं० ४८० । अ भण्डार ।

१०६१. राधा तन्मोस्सव..... । पत्र सं० १ । आ० १२ $\times$ ६ ड३ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।

२० काल— $\times$  । ले० काल— $\times$  । पूर्णा । वे० सं० ११५१ । अ भण्डार ।

१०६२. रिक्तविभाग प्रकरण..... । पत्र सं० २९ । आ० १३ $\times$ ७ ड३ । भाषा—संस्कृत । विषय—

आचार शास्त्र । २० काल— $\times$  । ले० काल— $\times$  । पूर्णा । वे० सं० ५७ । अ भण्डार ।

१०६३. लघुसामायिक पाठ..... । पत्र सं० २ । आ० १२ $\times$ ७ ड३ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।

२० काल— $\times$  । ले० काल—सं० १८१४ । पूर्णा । वे० सं० २०२१ । अ भण्डार ।

विषय—प्रशस्तिः—

१८१४ अग्रहन मुदा १५ मने बुन्दी नग्रे नेमनाथ जैथ्यालै लिखितं श्री देवेन्द्रक ति आचारज मोरोज के पट्ट स्वयं हस्ते ।

१०६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल— $\times$  । वे० सं० १२४३ । अ भण्डार ।

१०६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १ । ले० काल— $\times$  । वे० सं० १२२० । अ भण्डार ।

१०६६. लघुसामायिक..... । पत्र सं० ३ । आ० ११ $\times$ ५ $\frac{१}{२}$  ड३ । भाषा—संस्कृत—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल— $\times$  । ले० काल— $\times$  । पूर्णा । वे० सं० ६४० । क भण्डार ।

१०६७. लाटीसंहिता—राजमल्ल । पत्र सं० ७ । आ० ११ $\times$ ५ ड३ । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल—सं० १६४१ । ले० काल— $\times$  । पूर्णा । वे० सं० ८८ ।

१०६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७३ । ले० काल—सं० १८६७ रेणाल बुदी.....रविवार वे० सं० ६९५ । क भण्डार ।

१०६९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५९ । ले० काल—सं० १८६७ मंगलिर बुदी ३ । वे० सं० ६९६ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा शंभूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१०७०. वज्रनाभि चक्रवर्ति की भाषना—भूधरदास । पत्र सं० २ । प्रा० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । १० काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वे० सं० ६६७ । अ भण्डार ।

विशेष—पार्वपुराण में से है ।

१०७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल—सं० १८८८ पीष सुदी २ । वे० सं० ६७२ । च भण्डार ।

१०७२. वनस्पतिसत्तरी—मुनिचन्द्र सूरि । पत्र सं० ५ । प्रा० १०×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । १० काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वे० सं० ८४१ । अ भण्डार ।

१०७३. वसुनंदिश्रावकाचार—आ० वसुनंदि । पत्र सं० ५६ । प्रा० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—श्रावक धर्म । १० काल—× । ले० काल—सं० १८६२ पीष सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २०६ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रंथ का नाम उगसकाध्ययन भी है । जयपुर में श्री पिरागदास बाकलीवाल ने प्रतिलिपि करादी । संस्कृत में भाषान्तर दिया हुआ है ।

१०७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ मे २३ । ले० काल—सं० १६११ पीष सुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० ८८८ । अ भण्डार ।

विशेष—मारंगपुर नगर मे पाण्डे दासू ने प्रतिलिपि की थी ।

१०७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६३ । ले० काल—सं० १८७७ भाद्रवा बुदी ११ । वे० सं० ६५२ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा शंभूनाथ ने सवाई जयपुरमे प्रतिलिपि की थी । गाथाओ के नीचे संस्कृत टीका भी दी है ।

१०७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४४ । ले० काल—× । वे० सं० ८७ । क भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३३ पत्र प्राचीन प्रति के है तथा शेष फिर लिखे गये हैं ।

१०७७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५१ । ले० काल—× । वे० सं० ४५ । च भण्डार ।

१०७८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २२ । ले० काल—सं० १५६८ भाद्रवा बुदी १२ । वे० सं० २६६ । च भण्डार ।

अ भण्डार ।

विशेष—प्रगस्त—संवत् १५६८ वर्षे भाद्रवा बुदी १२ शुक्र दिने पुण्यनक्षत्रेअमृतसिद्धिनामउपयोगे श्रीपथस्थाने मूलसंघे सरस्वतीगण्डे बलात्कारण्ये श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री प्रभाषण्डदेवा तस्य शिष्य मंडलाचार्य धर्मकीर्ति द्वितीय मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र एतेषां मध्ये मंडलाचार्य श्री धर्मकीर्ति तत् शिष्य मुनि वीरनंदिने उदं शास्त्रं लिखापितं । पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि करके सं० १८६७ मे पार्वनाथ (सोनियो) के मंदिर मे चढाया ।

१०७९. वसुनंदिश्रावकाचार भाषा—पन्नालाल । पत्र सं० २१८ । प्रा० १२ $\frac{३}{४}$ ×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । १० काल—सं० १६३० कार्तिक बुदी ७ । ले० काल—सं० १६३८ माह बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ६५० । क भण्डार ।

१०८०. प्रति सं० २ । ले० काल सं० १६३० । वे० सं० ६५१ । क भण्डार ।

१०८१. वार्त्तासंग्रह ..... पत्र सं० २५ से ६७ । आ० ६×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।  
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५७ । क भण्डार ।

१०८२. विद्वज्जनबोधक..... पत्र सं० २७ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×८ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।  
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७६ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । ४ अध्याय तक है ।

१०८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०४० । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है । पत्र क्रम में नहीं है और कितने ही बीच क पत्र नहीं है । दो प्रतियों का मिश्रण है ।

१०८४. विद्वज्जनबोधक भाषा—संधी पन्नालाल । पत्र सं० ८६० । आ० १४×७ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—  
संस्कृत, हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १६३६ माघ सुदी ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७७ ।  
क भण्डार ।

१०८५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४३ । ले० काल सं० १६४० आश्विन सुदी ४ । वे० सं० ६७७ ।  
ख भण्डार ।

विशेष—छात्रलाल साह के पुत्र नन्दलाल ने अपनी माताजी के श्रौतश्रावण के उपलक्ष में ग्रन्थ मन्दिर  
दीवान अमरचन्दजी क में चढाया । यह ग्रन्थ के द्वितीयखण्ड के अन्त में लिखा है ।

१०८६. विद्वज्जनबोधकटीका..... पत्र सं० ४४ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६० । क भण्डार ।

विशेष—प्रथमखण्ड के पाचवे उल्लाम तक है ।

१०८७. विवेकविलास..... पत्र सं० १८ । आ० १० $\frac{३}{४}$  × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार  
शास्त्र । २० काल सं० १७७० फागुण सुदी । ले० काल सं० १८८८ चैत्र सुदी ३ । वे० सं० ८२ । भू भण्डार ।

१०८८. वृहत्प्रतिक्रमण..... पत्र सं० १६ । आ० १०×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४८ । ट भण्डार ।

१०८९. प्रति सं० २ । ले० काल × । वे० सं० २१५६ । ट भण्डार ।

१०९०. प्रति सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० २१७६ । ट भण्डार ।

१०९१. वृहत्प्रतिक्रमण..... पत्र सं० १६ । आ० ११×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत, प्राकृत । विषय—  
धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०३ । अ भण्डार ।

१०९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० १५६ । अ भण्डार ।

१०६३. बृहत्प्रतिक्रमण । पत्र सं० ३१ । आ० १०३/४३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२२ । ट भण्डार ।

१०६४. ब्रतों के नाम..... । पत्र सं० ११ । आ० ६३/४ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११६ । ज्ञ भण्डार ।

१०६५. व्रतनामावली..... । पत्र सं० १२ । आ० ८३/४ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६५ । ख भण्डार ।

१०६६. व्रतसंख्या..... । पत्र सं० ५ । आ० ११/५ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५७ । अ भण्डार ।

विशेष—१५१ ब्रतों एवं ४१ मंडल विधानों के नाम दिये हुये हैं ।

१०६७. व्रतसार..... । पत्र सं० १ । आ० १०/४ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८१ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल २२ पद्य हैं ।

१०६८. ब्रतोद्यापनप्राश्निकाचार..... । पत्र सं० ११३ । आ० १३/५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३ । घ भण्डार ।

१०६९. ब्रतोपवामवर्णन..... । पत्र सं० ५७ । आ० १०/५ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३८ । ज्ञ भण्डार ।

विशेष—५७ में धर्मों के पत्र नहीं हैं ।

११००. ब्रतोपवामवर्णन..... । पत्र सं० ४ । आ० १२/४ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४७८ । ज्ञ भण्डार ।

११०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७७६ । ज्ञ भण्डार ।

११०२. षट्पञ्चाशत्यक ( लघुमामासिक )—महाचन्द्र । पत्र सं० ३ । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०३ । ख भण्डार ।

११०३. षट्पञ्चाशत्यकविधान—पन्नालाल । पत्र सं० १४ । आ० १४ ७३ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६३४ । वैशाल बुटी ६ । पूर्ण । वे० सं० ७४४ । क भण्डार ।

११०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४५ । क भण्डार ।

११०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । वे० सं० ४७६ । क भण्डार ।

विशेष—विद्वग्जन बोधक के कृतीय व पश्चिम उत्प्लास का हिन्दी अनुवाद है ।



११०६. षट्कर्मोपदेशरत्नमाला ( छक्कर्मोपदेशम् )—महाकवि अमरकीर्ति । पत्र सं० ३ मे ७१ ।  
 प्रा० १० $\frac{१}{२}$  × ८ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—अनुप्रास । विषय—आचार शास्त्र । २० काल सं० १२४७ । ले० काल सं० १६२२ चैत्र  
 सुदी १३ । वै० सं० ३५६ । अ भण्डार ।

विशेष—नागपुर नगरमे लण्डेलबालान्वय पाटनीगोत्रवाले श्रीमतीहरषमदे ने ग्रन्थकी प्रतिलिपि करवायी थी ।

११०७. षट्कर्मोपदेशरत्नमालाभाषा — पांडे लालचन्द । पत्र संख्या १२६ । प्रा० १२ × ६ इञ्च ।  
 भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । २० काल सं० १८१८ माघ सुदी ५ । ले० काल सं० १८४६ श्रावण १७०५  
 भाद्रपदा सुदी १० । पूर्ण । वै० सं० ४२६ । अ भण्डार ।

विशेष—ब्रह्मचारी देवकरण ने महात्मा भूरा ने जयपुर में प्रतिलिपि करवायी ।

११०८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२८ । ले० काल सं० १८६६ माघ सुदी ६ । वै० सं० ६७ । अ भण्डार ।

विशेष—पुस्तक पं० सदासुख दिल्लीवालो की है ।

११०९. षट्संहननवर्णन—मकरन्द पद्मावति पुरवाल । पत्र सं० ८ । प्रा० १० $\frac{१}{२}$  × ४ $\frac{१}{२}$  इञ्च ।  
 भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १७८६ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७१५ । क भण्डार ।

१११०. षड्भक्तिवर्णन..... । पत्र सं० २२ से २६ । प्रा० १२ × ५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
 धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २६६ । अ भण्डार ।

११११. षोडशकारणभावनावर्णनवृत्ति—पं० शिवजिदरूख । पत्र सं० ४६ । प्रा० ११ × ५ इञ्च ।  
 भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २००४ । अ भण्डार ।

१११२. षोडशकारणभावना—पं० सदासुख । पत्र सं० ८० । प्रा० १२ × ७ इञ्च । भाषा हिन्दी गद्य ।  
 विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । वै० सं० ६६८ । अ भण्डार ।

विशेष—रत्नकरण्डावकाचार भाषा में मे है ।

१११३. षोडशकारणभावना जयमाल—नथमल । पत्र सं० २८ । प्रा० ११ $\frac{१}{२}$  × ७ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—  
 हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १६२५ सावन सुदी ४ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७१६ । क भण्डार ।

१११४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वै० सं० ७४६ । क भण्डार ।

१११५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वै० सं० ७४६ । क भण्डार ।

१११६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ७५० । क भण्डार ।

१११७. षोडशकारणभावना..... । पत्र सं० ६४ । प्रा० १३ $\frac{१}{२}$  × ५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
 धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १६६२ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वै० सं० ७५३ । क भण्डार ।

विशेष—रामप्रताप व्यास ने प्रतिलिपि की थी ।

१११८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । वै० सं० ७५४ । क भण्डार ।

१११६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ७५५ । क भण्डार ।

११२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६ ।

विशेष—३० से आगे पत्र नहीं है ।

११२१. षोडशकारणभावना..... । पत्र सं० १७ । प्रा० १२<sup>३</sup>×७<sup>३</sup> इ.स. । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२१ (क) । क भण्डार ।

विशेष—मंगकृत में संकेत भी दिये हैं ।

११२२. शीलनववाङ्..... । पत्र सं० १ । प्रा० १०×४<sup>३</sup> इ.स. । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना—काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२६ । क भण्डार ।

११२३. श्राद्धपडिकमरणसूत्र..... । पत्र सं० ६ । प्रा० १०×४<sup>३</sup> इ.स. । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१ । घ भण्डार ।

विशेष—पं० जमवन्त के पौत्र तथा मानसिंह के पुत्र दीनानाथ के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी । गुजरानी टट्टा टीका सहित है ।

११२४. श्रावकप्रतिक्रमणभाषा—पद्मलाल चौधरी । पत्र सं० ५० । प्रा० ११<sup>३</sup>×७ इ.स. । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । १० काल सं० १६३० माघ बुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६८ । क भण्डार ।

विशेष—दादा दुलीचन्दजी की प्रेरणा से भाषा की गयी थी ।

११२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७५ । ले० काल × । वे० सं० ६६७ । क भण्डार ।

११२६. श्रावकधर्मवर्णन..... । पत्र सं० १० । प्रा० १०<sup>३</sup>×५ इ.स. । भाषा—संस्कृत । विषय—श्रावक धर्म । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४६ । च भण्डार ।

११२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४७ । च भण्डार ।

११२८. श्रावकप्रतिक्रमण..... । पत्र सं० २५ । प्रा० १०<sup>३</sup>×५ इ.स. । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । १० काल × । ले० काल सं० १६३३ आसोज बुदी ११ । वे० सं० १११ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टट्टा टीका सहित है । हुक्मीजीवरण ने ग्रहपुर में प्रतिलिपि की थी ।

११२९. श्रावकप्रतिक्रमण..... । पत्र सं० १५ । प्रा० १२×६ इ.स. । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६ । ख भण्डार ।

११३०. श्रावकप्रायश्चित्त—बीरसेन । पत्र सं० ७ । प्रा० १२×६ इ.स. । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । १० काल × । ले० काल सं० १६३४ । पूर्ण । वे० सं० १६० ।

विशेष—पं० पद्मलाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

११३१. श्रावकाचार—अभितिगति । पत्र सं० ६७ । मा० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६४ । क भण्डार ।

विशेष—कही कही संस्कृत में टीका भी है । ग्रन्थ का नाम उपासकाचार भी है ।

११३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । अर्धपूर्ण । वे० सं० ४४ । ख भण्डार ।

११३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८३ । ले० काल × । अर्धपूर्ण । वे० सं० १०८ । छ भण्डार ।

११३४. श्रावकाचार—उमास्वामी । पत्र सं० २३ । मा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८६ । अ भण्डार ।

११३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १६२६ आषाढ सुदी २ । वे० सं० २६० । अ  
भण्डार ।

११३६. श्रावकाचार—गुरुभूषणाचार्य । पत्र सं० २१ । मा० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६२ वैशाख बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १३८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति :

संवत् १५६२ वर्षे वैशाख बुदी ४ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुंदाचार्यान्वये भ०  
श्री पद्मनन्द देवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तदाम्नाये  
खंडेलवालान्वये सा० गोत्रे सं० परवत तस्य भार्या रोहातलुत्र नेता तस्य भार्या नारंगदे । तत्पुत्र मनिदान तस्य भार्या  
अपरी दुतीय पुत्र उर्वा तस्य भार्या वोरवी तत्पुत्र नथमल दुतीय खीवा सा० नरसिंह महादास गणेशामध्ये इदमात्र  
निश्वायनं कर्मक्षयनिमित्तं श्रावकाचार । अजिका पदमसिरिज्योम्ये बाई नारिग घटापित ।

११३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १४२६ भाद्रवा बुदी १ । वे० सं० ५०१ । ज  
भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १५२६ वर्षे भाद्रपद १ पक्षे श्री मूलसंघे भ० श्री जिनचन्द्र ङ० नरसिंघे खंडेलवाला-न्वये  
न० अलाल्य भार्या जैश्री पुत्र हास्य लिखावदतु ।

११३८. श्रावकाचार—पद्मनन्द । पत्र सं० २ मे २६ । मा० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अर्धपूर्ण । वे० सं० २१०३ ।

विशेष—३६ से छोटी भी पत्र नहीं है ।

११३९. श्रावकाचार—बृजयपाद । पत्र सं० ६ । मा० ६ $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार  
शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १८५४ वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १०२ । घ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम उपासकाचार तथा उपसकाध्ययन भी है ।

११४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८८० पौष बुदी १५ । वे० सं० ८६ । छ  
भण्डार ।

११४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८८५ आषाढ सुदी २ । वै० सं० ४३ । अ भण्डार  
११४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८०४ । भाद्रवा सुदी ६ । वै० सं० १०२ ।

द्व भण्डार ।

११४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वै० सं० २१५१ । ट भण्डार ।

११४४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वै० सं० २१५= । ट भण्डार ।

११४५. श्रावकाचार—सकलकीर्त्ति । पत्र सं० ६६ । श्रा० ८३×६३ इअ । भाषा—संस्कृत । विषय—  
आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० २०८८ । अ भण्डार ।

११४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२३ । ले० काल सं० १८५५ । वै० सं० ६६३ । क भण्डार ।

११४७. श्रावकाचारभाषा—पं० भागचन्द्र । पत्र सं० १८६ । श्रा० १२×८ इअ । भाषा—हिन्दी गद्य ।  
विषय—आचार शास्त्र । २० काल सं० १६२२ आषाढ सुदी ८ । ले० काल × । पूर्णा । वै० सं० २८ ।

विशेष—प्रमितिगत श्रावकाचार की भाषा टीका है । अन्तिम पत्र पर महावीराष्टक है ।

११४८. श्रावकाचार " " । पत्र संख्या १ में २१ । श्रा० ११×५ इअ । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार  
शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० २१८२ । ट भण्डार ।

विशेष—इसमें श्रागे के पत्र नहीं है ।

११४९. श्रावकाचार " " । पत्र सं० ७ । श्रा० १०३×४३ इअ । भाषा—प्राचिन । विषय—आचारशास्त्र ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वै० सं० १०८ । द्व भण्डार ।

विशेष—६० गाथायें हैं ।

११५०. श्रावकाचारभाषा " " । पत्र सं० ५२ से १३१ । श्रा० ६३×५ इअ । भाषा—हिन्दी । विषय—  
आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० २०६४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

११५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ६६६ । क भण्डार ।

११५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १११ में १७४ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ७०६ । क भण्डार ।

११५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १६६४ भाद्रवा सुदी १ । पूर्णा । वै० सं० ७१० ।  
क भण्डार ।

विशेष—गुणभूषण कृत श्रावकाचार की भाषा टीका है । संबन्ध १५२६ चैत सुदी ५ रविवार को यह  
ग्रन्थ त्रिहानाबाद जैसिहपुरा में लिखा गया था । उस प्रति में यह प्रतिनिरी की गयी थी ।

११५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०८ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ६८२ । अ भण्डार ।

११५५. श्रुतज्ञानवर्षांत ... । पत्र सं० ८ । प्रा० ११३×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × १ ले० काल × १ पूर्ण । वे० सं० ३०१ । क भण्डार ।

११५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × १ वे० सं० ३०२ । क भण्डार ।

११५७. सप्रसन्नोकीगीता..... । पत्र सं० २ । प्रा० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × १ ले० काल × १ पूर्ण । वे० सं० १७४० । ट भण्डार ।

११५८. समकितदाल—आसकरण । पत्र सं० १ । प्रा० ६<sup>३</sup>×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × १ ले० काल सं० १८३५ । पूर्ण । वे० सं० २१२६ । अ भण्डार ।

११५९. समुद्धानभेद..... । पत्र सं० ४ । प्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × १ ले० काल × १ अपूर्ण । वे० सं० ७८८ । क भण्डार ।

११६०. सम्मेशिखर महात्म्य—दीक्षित देवदत्त । पत्र सं० ८१ । प्रा० ११×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । २० काल सं० १६४५ । ले० काल सं० १८८० । पूर्ण । वे० सं० २८२ । अ भण्डार ।

११६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४७ । ले० काल × १ वे० सं० ७६५ । क भण्डार ।

११६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४० । ले० काल × १ अपूर्ण । वे० सं० ३७५ । च भण्डार ।

११६३. सम्मेशिखरमहात्म्य—लालचन्द । पत्र सं० ६५ । प्रा० १३×५ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—धर्म । २० काल सं० १८४२ फायण मुदी ५ । ले० काल × १ पूर्ण । वे० सं० ६६० । क भण्डार ।

विशेष—भट्टारक श्री जगतकीर्ति के शिष्य लालचन्द ने रेवाड़ी में यह ग्रन्थ रचना की थी ।

११६४. सम्मेशिखरमहात्म्य—मनसुखलाल । पत्र सं० १०६ । प्रा० ११×५<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × १ ले० काल सं० १६४१ ग्रामोज बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १०५६ । अ भण्डार ।

विशेष—रचना संवत् सम्बन्धी दोहा—

बाल वेद शशिगये विक्रमार्क तुम जान ।

अपबन्धि मित वसमी मुशुक ग्रन्थ ममापत ठान ॥

लोगाचार्य विरचित ग्रन्थ की भाषा टीका है ।

११६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०२ । ले० काल सं० १८८४ चैत मुदी २ । वे० सं० ७८ । ग भण्डार ।

११६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १८८७ चैत मुदी १५ । वे० सं० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—श्यांजीरामजी भावसा ने जयपुर में प्रतिलिपि की ।

११६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४२ । ले० काल सं० १६११ पौष बुदी १५ । वे० सं० २२ । भू भण्डार ।

११६८. सम्मेशिखरविलास—केशरीसिंह । पत्र सं० ३ । प्रा० ११<sup>३</sup>×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—धर्म । २० काल २०वीं शताब्दी । ले० काल × १ पूर्ण । वे० सं० ७६७ । क भण्डार ।

११६६. समीक्षितक विलोम—देवादि । पत्र सं० ४ । श्रा० ११३×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।  
विषय—धर्म । २० काल १=वी क्षताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६१ । ज मण्डार ।

११७०. संसारस्वरूप वर्णन ..... । पत्र सं० ५ । श्रा० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२६ । व्य मण्डार ।

११७१. सागरधर्मामृत—पंच आशाधर । पत्र सं० १६३ । श्रा० १२१×७३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—भावको के आचार धर्म का वर्णन । २० काल सं० १२६६ । ले० काल सं० १७६८ भादवा बुदी ५ । पूर्ण ।  
वे० सं० २२८ । व्य मण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ संस्कृत टीका सहित है । टीका का नाम भव्यकुमुदचन्द्रिका है । महाराजा सवाई  
जयसिंहजी के शासनकाल में धारपुर में महाराम मानजी ने प्रतिलिपि की थी ।

११७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २०६ । ले० काल सं० १८८१ फागुण सुदी १ । वे० सं० ७७५ ।  
क मण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण कृष्णनगर बप्ति ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की ।

११७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वे० सं० ७७४ । क मण्डार ।

११७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४७ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । घ मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

११७५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५७ । ले० काल × । वे० सं० ११८ । घ मण्डार ।

विशेष—४ में ४० तक के पत्र किन्ही प्राचीन प्रति के हैं बाकी पत्र दुबारा लिखाकर ग्रन्थ पूरा किया  
गया है ।

११७६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १५६ । ले० काल सं० १८६१ भादवा बुदी ५ । वे० सं० ७८ । छ  
मण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित है । सागानेर में तोनदराम ने तेमिनाथ चैत्यालय में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि  
की थी ।

११७७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६१ । ले० काल सं० १८२८ फागुण सुदी १० । वे० सं० १६६ । ज  
मण्डार ।

विशेष—प्रति टक्का टीका सहित है । रचियता एवं लेखक दोनों की प्रशस्ति है ।

११७८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १४० । ले० काल × । वे० सं० १ । व्य मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं शुद्ध है ।

११७९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १५६५ फागुण सुदी २ । वे० सं० १८ । व्य  
मण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—लम्बेनवानान्धये अजमेरागोत्रे पाद्रे डीडा तंन इदं धर्माभूतनामोपाध्ययन आचार्य  
नेमिचन्द्राय दत्तं । अ० प्रभाकर देवस्तन् शिष्य सं० धर्मकन्द्रामाये ।

११८०. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८ क । अ भण्डार ।

११८१. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १४१ । ले० काल × । वे० सं० ४४६ । अ भण्डार ।

विशेष—स्वोपज्ञ टीका सहित है ।

११८२. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ४५० । अ भण्डार ।

विशेष—पूलमात्र प्रति प्राचीन है ।

११८३. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १६६ । ले० काल सं० १५६४ फागुण सुदी १२ । वे० सं० ५०० ।

अ भण्डार ।

विशेष—प्रवृत्ति—संवत् १५६४ वर्षे फाल्गुन सुदी १२ रविवाररे पुनर्वसुनक्षत्रे श्रीमूलमंथे मन्दिसये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्ममन्दि तत्पट्टे श्री शुभचन्द्रदेवातत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्र देवातत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवतत्पिण्ड्यामण्डलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तत्सुख्यशिष्याचार्य श्री नेमिचन्द्रदेवास्तेरियं धर्माभूतनामासाधःश्रावकाचार्यटीका भव्यकुमुदचन्द्रिकानाम्नी लिखापिताम्पठनार्थं ज्ञानावरणविकर्मस्यार्थं च ।

११८४. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५०६ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है ।

११८५. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६५ । अ भण्डार ।

११८६. प्रति सं० १६ । पत्र सं० २ से ७२ । ले० काल सं० १५६४ भाद्रवा सुदी १ । अपूर्ण । वे०

संख्या २११० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है । लेखक प्रवृत्ति पूर्ण है ।

११८७. सातव्यसनस्वाध्याय ... । पत्र सं० १ । आ० १० ५ डब्ब । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल सं० १७८० । पूर्ण । वे० सं० १८७६ ।

विशेष—रूपमञ्जरी भी दी हुई है जिसके आठ पद्य हैं ।

११८८. साधुदिनचर्या..... । पत्र सं० ६ । आ० २३×४१ डब्ब । भाषा—प्राकृत । विषय—आचार

शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७४ ।

विशेष—श्रीमत्तपोगणेशे श्री विजयदानमूरि विजयराज्ये ऋषि रूपा लिखित ।

११८९. सामायिकपाठ—बहुमुनि । पत्र सं० १६ । आ० ८×५ डब्ब । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—

धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१०१ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीबहुमुनिभिरचितं सामयिकपाठ संपूर्ण ।

११९०. सामायिकपाठ..... । पत्र सं० २५ । आ० ८३×६६ डब्ब । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६६ । अ भण्डार ।

११६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६३ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी दी हुई है ।

११६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० ७७६ । क भण्डार ।

११६३. सामायिकपाठ ..... । पत्र सं० ५० । प्रा० ११३ × ७३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।

१० काल × । ले० काल सं० १६५६ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ७७६ । अ भण्डार ।

११६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० १८११ । वे० सं० ७७७ । अ भण्डार ।

विशेष—उदयचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

११६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०१७ । अ भण्डार ।

११६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० १०११ । अ भण्डार ।

११६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ७७८ । क भण्डार ।

११६८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १८२० कार्तिक बुदी २ । वे० सं० ६५ । अ

भण्डार ।

विशेष—आचार्य विजयकान्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

११६९. सामायिक पाठ ..... । पत्र सं० २५ । प्रा० १० × ४ इञ्च । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—धर्म । १० काल × । ले० काल सं० १७३३ । पूर्ण । वे० सं० ८१४ । क भण्डार ।

१२००. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७६८ ज्येष्ठ मुदी ११ । वे० सं० ८१५ । क भण्डार ।

१२०१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६० । च भण्डार ।

विशेष—पत्रा को चूहों ने खालिया है ।

१२०२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६१ । च भण्डार ।

१२०३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २ से १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८१३ । क भण्डार ।

१२०४. सामायिकपाठ ( लघु ) । पत्र सं० १ । प्रा० १० ३/४ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८८ । च भण्डार ।

१२०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० ३८६ । च भण्डार ।

१२०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ७१३ क । च भण्डार ।

१२०७. सामायिकपाठभाषा—बुध महाचन्द्र । पत्र सं० ६ । प्रा० ११ × ५ ३/४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०८ । च भण्डार ।

विशेष—जीहरीलाल कृत आलाचना पाठ भी है ।

१२०८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १६५४ माघ बुदी ३ । वे० सं० १६६१ । ट भण्डार ।



१२०६. सामाधिकपाठभाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० ८२ । प्रा० १२ $\frac{३}{४}$ ×५ इच्छ । भाषा—  
हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ । पूर्ण । वे० सं० ७८० । च भण्डार ।

१२१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १६५६ । वे० सं० ७८१ । च भण्डार ।

१२११. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४९ । ले० काल × । वे० सं० ७८२ । च भण्डार ।

१२१२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५० । ले० काल × । वे० सं० ७८३ । च भण्डार ।

१२१३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १६७१ । वे० सं० ८१७ । च भण्डार ।

विशेष—श्री केजरलाल गोधा ने जयपुर में प्रतिनिधि की थी ।

१२१४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १६७४ फागुण सुदी ८ । वे० सं० १८३ । च  
भण्डार ।

१२१५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १६९१ श्रावण सुदी ८ । वे० सं० ५९ । च  
भण्डार ।

१२१६. सामाधिकपाठभाषा—भ० श्री तिलोकचन्द । पत्र सं० ६४ । प्रा० ११ ५ इच्छ । भाषा—  
हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १८६२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१० । च भण्डार ।

१२१७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १८९१ सावन सुदी १३ । वे० सं० ७१३ ।  
च भण्डार ।

१२१८. सामाधिकपाठ भाषा..... । पत्र सं० ४५ । प्रा० १२×६ इच्छ । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—  
धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १७६८ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १२८ । च भण्डार ।

विशेष—जयपुर में महाराजा जयसिंहजी के शासनकाल में जनी नेगमागर तगान्द्र वाने ने प्रतिनिधि  
की थी ।

१२१९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १७४० वैशाख सुदी ७ । वे० सं० ७०६ । च  
भण्डार ।

विशेष—महात्मा सावलदाम बंसद वाने ने प्रतिनिधि की थी । मन्वृत अथवा प्राकृत कृत्या का अर्थ दिया  
हुआ है ।

१२२०. सामाधिकपाठ भाषा..... । पत्र सं० २ ने ३ । प्रा० ११ $\frac{३}{४}$  ५ इच्छ । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८१२ । च भण्डार ।

१२२१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ८१६ । च भण्डार ।

१२२२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४८६ । च भण्डार ।

१२२३. सामाधिकपाठभाषा..... । पत्र सं० ६७ । प्रा० ६×५ $\frac{३}{४}$  इच्छ । भाषा—हिन्दी ( हूँदारी )  
विषय—धर्म । रचनाकाल × । ले० काल सं० १७६३ मगसिर सुदी ८ । वे० सं० ७११ । च भण्डार ।

१२०५. मारसमुच्चय—कुलभद्र । पत्र सं० १५ । श्रा० ११४६ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।  
२० काल । ले० काल सं० १६०७ पीप बुदी ८ । वै० सं० ४५६ । अ भण्डार ।

विशेष—मंडलाचार्य धर्मचन्द के गिन्य ब्रह्मभाऊ बोहरा ने ग्रन्थ की प्रतिनिधि करवायी थी ।

१२०५. सावयधम्म दोहा—मुनि रामसिंह । पत्र सं० ८ । श्रा० १०३४ इच्छ । भाषा—अपभ्रंश ।  
विषय—आचार शास्त्र । २० काल । ले० काल । वै० सं० १८१ । पूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्रति प्राचीन है ।

१२०६. सिद्धों का स्वरूप ..... । पत्र सं० ३८ । श्रा० ८४३ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।  
२० काल । ले० काल । वै० सं० ८५४ । अ भण्डार ।

१२०७. सुदृष्टि तरंगिणीभाषा—टेकचन्द । पत्र सं० ४०५ । श्रा० १५८६ इच्छ । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—धर्म । २० काल सं० १८३८ मावग मुदी ११ । ले० काल सं० १८६१ भादवा मुदी ३ । पूर्ण । वै० सं० ७५७ ।  
अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र कटा हुआ है ।

१२०८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८० । ले० काल । वै० सं० ८६४ । अ भण्डार ।

१२०९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६११ । ले० काल सं० १६४८ । वै० सं० ८११ । क भण्डार ।

१२१०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३६१ । ले० काल सं० १८६३ । वै० सं० ८२ । ग भण्डार ।

विशेष—खालाल साह ने प्रतिनिधि का थी ।

१२११. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०५ । ले० काल सं० १२३ । वै० सं० १२७ । अ भण्डार ।

१२१२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १६६ । ले० काल । वै० सं० १२८ । अ भण्डार ।

१२१३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५८५ । ले० काल सं० १८६८ आश्वीज मुदी ६ । वै० सं० ८६८ । अ  
भण्डार ।

विशेष—२ प्रतिया का मिश्रण है ।

१२१४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५०० । ले० काल सं० १६६० कार्तिक बुदी ५ । वै० सं० ८६९ ।  
अ भण्डार ।

१२१५. प्रति सं० ९ । पत्र सं० २०० । ले० काल । अ पूर्ण । वै० सं० ७२५ । अ भण्डार ।

१२१६. प्रति सं० १० । पत्र सं० ८३० । ले० काल सं० १६४६ चैत्र बुदी ८ । वै० सं० ११ । अ  
भण्डार ।

१२१७. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ५३५ । ले० काल सं० १८३६ फागुन बुदी ८ । वै० सं० ८६ । अ  
भण्डार ।

१२१८. सुदृष्टि तरंगिणीभाषा ..... । पत्र सं० ५१ सं० ५७ । श्रा० १६३४ इच्छ । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—धर्म । २० काल । ले० काल । अ पूर्ण । वै० सं० ८६७ । अ भण्डार ।

१२३६. सोलहरपक्षीसी—भागीरथ । पत्र सं० ८ । प्रा० ५३×४६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १८६१ ज्येष्ठ शुदी १४ । ले० काल × । वै० सं० १४७ । छ् भण्डार ।

१२४०. सोलहरारणभावनावर्णन—पं० सदासुख । पत्र सं० ४९ । प्रा० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७२६ । छ् भण्डार ।

१२४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वै० सं० १८८ । छ् भण्डार ।

१२४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५७ । ले० काल सं० १६२७ सावण बुदी ११ । वै० सं० १८८ । छ् भण्डार ।

विशेष—मवाई जयपुर में गणेशीलाल पाड्या ने फागो के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी ।

१२४३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१ से ६६ । ले० काल सं० १६५८ माह शुदी २ । अपूर्ण । वै० सं० १९० । छ् भण्डार ।

विशेष—ग्राम्भ के ३० पत्र नहीं है । मुन्दरलाल पाड्या ने चाटमू में प्रतिलिपि की थी ।

१२४४. सोलहरारणभावना एवं दशलक्ष्ण धर्म वर्णन—पं० सदासुख । पत्र सं० ११८ । साटम ११३×८६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १६८१ मंगसिप शुदी १३ । पूर्ण । वै० सं० १८८ । ग भण्डार ।

१२४५. स्थापनानिर्णय..... । पत्र सं० ६ । प्रा० १२×८ इञ्च । भाषा—मसूल । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १०० । छ् भण्डार ।

विशेष—विद्वग्जनबोधक के प्रथम काट का अष्टम उल्लास है । हिन्दी टीका सहित है ।

१२४६. स्वाध्यायपाठ..... । पत्र सं० २० । प्रा० ६×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत, मंस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३३ । ज भण्डार ।

१२४७. स्वाध्यायपाठभाषा..... । पत्र सं० ७ । प्रा० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ८४२ । क भण्डार ।

१२४८. सिद्धान्तधर्मोपदेशमाला..... । पत्र सं० १२ । प्रा० १६×३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २२१ । ख भण्डार ।

१२४९. दुष्टद्वयसर्पिणीकालदोष—माणकचन्द्र । पत्र सं० ६ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ । पूर्ण । वै० सं० ८५५ । क भण्डार ।

विशेष—भाबा दुलीचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।



## विषय--अध्यात्म एवं योगशास्त्र

१२५०. अध्यात्मतरंगिणी—सोमदेव । पत्र सं० १० । प्रा० ११×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल । ले० काल ५ । पूर्ण । वै० सं० २० । क भण्डार ।

१२५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६३७ भादवा बुदी ६ । वै० सं० ४ । क भण्डार ।  
विषय—ऊपर नीचे तथा पत्र के दोनों ओर संस्कृत में टीका मिली हुई है ।

१२५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६३८ आषाढ बुदी १० । वै० सं० ८२ । ज भण्डार ।

विषय—प्रति संस्कृत टीका सहित है । विग्रह फलेनाव ने प्रतिमिति की थी ।

१२५३. अध्यात्मपत्र—जयचन्द्र छाबड़ा । पत्र सं० ७ । प्रा० ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ( गद्य ) ।  
२० काल । १४वीं शताब्दी । ले० काल ५ । पूर्ण । वै० सं० १७ । क भण्डार ।

१२५४. अध्यात्मवत्तीसी—बनारसीदास । पत्र सं० २ । प्रा० ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ( पद्य ) ।  
विषय—अध्यात्म । २० काल । १७वीं शताब्दी । ले० काल ५ । पूर्ण । वै० सं० १३६६ । अ भण्डार ।

१२५५. अध्यात्म चारहखड़ी—कवि सूरत । पत्र सं० १५ । प्रा० १२ १/४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ( गद्य ) ।  
विषय—अध्यात्म । २० काल । १७वीं शताब्दी । ले० काल ५ । पूर्ण । वै० सं० ६ । क भण्डार ।

१२५६. अष्टपाहुड़—कुम्हकुम्हाचार्य । पत्र सं० १० से २७ । प्रा० १०×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत ।  
विषय—अध्यात्म । २० काल । ले० काल ५ । अपूर्ण । वै० सं० १०२२ । अ भण्डार ।

विषय—प्रति जर्ग है । १ से ६ तथा २४-२५वा पत्र नहीं है ।

१२५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १६४३ । वै० सं० ७ । क भण्डार ।

१२५८. अष्टपाहुड़भाषा—जयचन्द्र छाबड़ा । पत्र सं० ४३० । प्रा० १२×७ १/२ इञ्च । भाषा—हिन्दी ( गद्य ) ।  
विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १८६७ भादवा बुदी १३ । ले० काल ५ । पूर्ण । वै० सं० १३ । क भण्डार ।

विषय—मूल ग्रन्थकार आचार्य कुम्हकुम्ह है ।

१२५९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ से २६ । ले० काल ५ । अपूर्ण । वै० सं० १४ । क भण्डार ।

१२६०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२६ । ले० काल ५ । वै० सं० १५ । क भण्डार ।

१२६१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६७ । ले० काल ५ । वै० सं० १६ । क भण्डार ।

१२६२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३३४ । ले० काल सं० १६२६ । वै० सं० १ । क भण्डार ।

१२६३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४५१ । ले० काल सं० १६४३ । वै० सं० २ । क भण्डार ।

१२६४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६५ । वै० काल ४ । वै० सं० ३ । अ भण्डार ।

१२६५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १६७ । वै० काल सं० १६३६ आर्मांज बुद्धी १५ । वै० सं० ३८ । अ भण्डार ।

विशेष—८१ पत्र प्राचीन प्रति है । ८० में १०३ पत्र फिर लिखाये गये हैं तथा १२४ में १२३ तक के पत्र किसी अन्य प्रति के हैं ।

१०६६ प्रति सं० ९ । पत्र सं० २८३ । वै० काल सं० १६५१ आर्मांज बुद्धी १८ । वै० सं० ३९ । अ भण्डार ।

१२६७. प्रति सं० १० । पत्र सं० १६७ । वै० काल ५ । वै० सं० ५०० । अ भण्डार ।

१२६८. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १६५ । वै० काल सं० १८८० आर्मांज बुद्धी १ । वै० सं० ३८ । अ भण्डार ।

१२६९. आत्मध्यान—बनारसीदास । पत्र सं० १ । आ० सं० १८६५ । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।

विषय—ग्रन्थमाला । २० काल ५ । वै० काल ५ । वै० सं० १२७६ । अ भण्डार ।

१२७०. आत्मप्रबोध—कुमारकवि । पत्र सं० १३ । आ० सं० १८६६ । भाषा—संस्कृत । विषय—ग्रन्थमाला । २० काल ५ । वै० काल ५ । वै० सं० २५८ । अ भण्डार ।

१२७१. प्रति सं० १४ । पत्र सं० १६८ । वै० काल ५ । वै० सं० ३०० (क) अ भण्डार ।

१२७२. आत्मसंशोधनकाव्य..... । पत्र सं० २७ । आ० सं० १८६६ । भाषा—संस्कृत । विषय—ग्रन्थमाला । २० काल ५ । वै० काल ५ । वै० सं० १८५६ । अ भण्डार ।

१२७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । वै० काल ५ । अपूर्णा । वै० सं० ५०० । अ भण्डार ।

१२७४. आत्मसंशोधनकाव्य—ज्ञानभूषण । पत्र सं० २८ । आ० सं० १८६६ । भाषा—संस्कृत । विषय—ग्रन्थमाला । २० काल ५ । वै० काल ५ । अपूर्णा । वै० सं० १६७३ । अ भण्डार ।

१२७५. आत्मवलोकन—दीपचन्द कामलीबाल । पत्र सं० ३३ । आ० सं० १८६६ । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—ग्रन्थमाला । २० काल ५ । वै० काल सं० १७७६ काठिन बुद्धी । वै० सं० २१० । अ भण्डार ।

विशेष—बृन्दावन में देवाराम लक्ष्मीराम ने कश्चित् चंदायाम में प्रतिनिर्वाह की है ।

१२७६. आत्मानुशासन—गुणभद्राचार्य । पत्र सं० ४० । आ० सं० १८६६ । भाषा—संस्कृत । विषय—ग्रन्थमाला । २० काल ५ । वै० काल ५ । वै० सं० २२३२ । पूर्णा । योग । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—..... वर्ष ..... शक्ति.....

श्रीतमिनाथचैष्यालय । श्रीमूत्रमधे तद्यत्नान्ने बवाकारणणे मन्मन्नामन्ने श्रीकुन्दकुन्दालाचार्यन्ये भद्राकरश्रीपयनदिवेवा तन्पट्टे मन् श्रीगुणचन्द्रदेवा तन्पट्टे मन् श्रीजिनचन्द्रदेवा तन्पट्टे मन् प्रभाकरदेवा तन्पट्टे मन् त्रिभुवनेश्वरेश्वर्य श्रीधर्मचन्द्रान्ना-दान्नाथे । निश्चितं ज्योति (श्री) श्री गंगा तन्पुत्र मह्य विभिनं ।

१२७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १५६४ अष्टादश मुदी ८ । वे० सं० २६६ । अ  
भण्डार ।

१२७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८६० मावण मुदी ४ । वे० सं० ३१५ । अ  
भण्डार ।

१२७९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१ । ले० काल ५ । वे० सं० १२८८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण एवं प्राचीन है ।

१२८०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३५ । ले० काल ५ । अपूर्णा । वे० सं० २७० । अ भण्डार ।

१२८१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३८ । ले० काल ५ । वे० सं० ७६२ । अ भण्डार ।

१२८२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २५ । ले० काल ५ । वे० सं० ७६३ । अ भण्डार ।

१२८३. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २७ । ले० काल ५ । अपूर्णा । वे० सं० २०८६ । अ भण्डार ।

१२८४. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १०७ । ले० काल सं० १६८० । वे० सं० ५७ । अ भण्डार ।

१२८५. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८८८ । वे० सं० ४६ । अ भण्डार ।

१२८६. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ३६ । ले० काल ५ । वे० सं० १५ । अ भण्डार ।

१२८७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १८७२ चैत मुदी ८ । वे० सं० ५३ । अ  
भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ महित है । पहिले संस्कृत का हिन्दी अर्थ तथा फिर उसका भावार्थ भी दिया हुआ है ।

१२८८. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १७३० भाववा मुदी १० । वे० सं० ५४ । अ  
भण्डार ।

विशेष—प्राग्जात बाकलीवाल ने प्रतिलिपि की था ।

१२८९. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १६७० फागुन मुदी २ । वे० सं० २६ । अ  
भण्डार ।

विशेष—महिगपुर निवासी चापरी मोहल ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१२९०. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १६६५ मंगिर मुदी ५ । वे० सं० २२० । अ  
भण्डार ।

विशेष—मंडलाचार्य धर्मचंद्र के शासनकाल में प्रतिलिपि की गयी थी ।

१२९१. आत्मानुरासनटीका—प्रभाचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५७ । भा० ११२५ इका । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—अध्यात्म । २० काल ५ । ले० काल सं० १८८२ फागुन मुदी १० । पूर्णा । वे० सं० २७ । अ भण्डार ।

१२९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०३ । ले० काल सं० १६०१ । वे० सं० ४८ । अ भण्डार ।

१२९३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १६८५ मंगिर मुदी १४ । वे० सं० ६३ । अ  
भण्डार ।

विशेष—बुन्दावती नगर मे प्रतिलिपि हुई ।

१२६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १०३२ बैशाख बुदी ६ । वे० सं० ५० । अ

भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि हुई ।

१२६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल सं० १६१६ आषाढ सुदी १ । वे० सं० ७१ ।

विशेष—साहू तिरुहूण अन्नबाल गर्म गोत्रीय मे ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी ।

१२६६. आत्मानुशासनभाषा—पंच टोडरमल । पत्र सं० ८७ । घा० १४×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी

(गद्य) त्रिपय—अध्यात्म । २० काल . । ले० काल सं० १८६० । पूर्ण । वे० सं० ३७१ । अ भण्डार ।

१२६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८६ । ले० काल सं० १९०० । वे० सं० ३९६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर है ।

१२६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४८ । ले० काल ५ । वे० सं० ३९८ । अ भण्डार ।

१२६९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १९६३ । वे० सं० ४३४ । अ भण्डार ।

१३००. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २३६ । ले० काल सं० १९३० । वे० सं० ५० । क भण्डार ।

विशेष—प्रभावदाचार्य कृत संस्कृत टीका भी है ।

१३०१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३०५ । ले० काल सं० १९४० । वे० सं० ५१ । क भण्डार ।

१३०२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ११८ । ले० काल सं० १८९९ कालिक सुदी ५ । वे० सं० ५१ । अ

भण्डार ।

१३०३. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७ । ले० काल . । अपूर्णा । वे० सं० ५५ । क भण्डार ।

१३०४. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ८९ से १०२ । ले० काल ५ । अपूर्णा । वे० सं० ५६ । क भण्डार ।

१३०५. प्रति सं० १० । पत्र सं० १८ । ले० काल ५ । अपूर्णा । वे० सं० ५७ । क भण्डार ।

१३०६. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १५१ । ले० काल सं० १९३३ ज्येष्ठ बुदी ८ । वे० सं० ५८ । क

भण्डार ।

विशेष—प्रति संगोधित है ।

१३०७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ९७ । ले० काल ५ । अपूर्णा । वे० सं० ५९ । क भण्डार ।

१३०८. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ६१ से १६५ । ले० काल ५ । अपूर्णा । वे० सं० ६० । क भण्डार ।

१३०९. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ७१ से १८९ । ले० काल ५ । अपूर्णा । वे० सं० ६१ । क भण्डार ।

१३१०. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ९९ से १८३ । ले० काल सं० १९२४ कान्ति सुदी ३ । अपूर्णा ।

वे० सं० ७१ । अ भण्डार ।

१३११. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ८० । ले० काल ५ । अपूर्णा । वे० सं० ७२ । अ भण्डार ।

१३१२. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ९५ । ले० काल सं० १८५४ आषाढ बुदी ५ । वे० सं० ७२ । अ

भण्डार ।

विशेष—रायचन्द्र साहवाह ने स्वःशुद्धार्थ प्रतिनिधि की थी ।

१३१३. प्रति सं० १८ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० २१२४ । अ भण्डार ।

विशेष—१४ में प्रागे पत्र नहीं है ।

१३१४. आध्यात्मिकगाथा—अ० लक्ष्मीचन्द्र । पत्र सं० ६ । प्रा० १०×४ इच्छ । भाषा—अपभ्रंश ।

विषय—अध्यात्म । १० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वै० सं० १२४ । अ भण्डार ।

१३१५. कार्तिकेयानुप्रेक्षा—स्वामी कार्तिकेय । पत्र सं० २४ । प्रा० १२×५ इच्छ । भाषा—प्राकृत ।

विषय—अध्यात्म । १० काल × । ले० काल सं० १९०४ । पूर्णा । वै० सं० २६१ । अ भण्डार ।

१३१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वै० सं० ६२८ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं । १८६ गाथायें हैं ।

१३१७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल × । वै० सं० ६१४ । अ भण्डार ।

विशेष—२८३ गाथायें हैं ।

१३१८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । वै० सं० ८४४ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

१३१९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १८८८ । वै० सं० ८४५ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द हैं ।

१३२०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २० । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ३१ । अ भण्डार ।

१३२१. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ११४ । अ भण्डार ।

१३२२. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १९४३ सावण मुदी ४ । वै० सं० ११६ । अ भण्डार ।

अभण्डार ।

१३२३. प्रति सं० ९ । पत्र सं० २८ में ७५ । ले० काल सं० १८८९ । अपूर्णा । वै० सं० ११७ । अ भण्डार ।

अभण्डार ।

१३२४. प्रति सं० १० । पत्र सं० ५० । ले० काल सं० १८२५ शीघ्र मुदी १० । वै० सं० ११८ । अ भण्डार ।

अभण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी हैं । मुनि रूपचन्द्र ने प्रतिनिधि की थी ।

१३२५. प्रति सं० ११ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १८३६ । वै० सं० ४३७ । अ भण्डार ।

१३२६. प्रति सं० १२ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ४३८ । अ भण्डार ।

१३२७. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८६६ सावण मुदी ६ । वै० सं० ४३९ । अ भण्डार ।

अभण्डार ।

१३२८. प्रति सं० १४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १९२० सावण मुदी ८ । वै० सं० ४४० । अ भण्डार ।

अभण्डार ।



१३२६. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६५६ । वे० सं० ४४२ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

१३३०. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १८८१ भाषा बुद्धी १० । वे० सं० ८० । छ

भण्डार ।

१३३१. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ६३ । ले० काल . . . . . वे० सं० १०७ । ज भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण दिया हुआ है ।

१३३२. प्रति सं० १७ । पत्र सं० १२ । ले० काल . . . . . अपूर्णा । वे० सं० ६८ । झ भण्डार ।

१३३३. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ६ । ले० काल . . . . . वे० सं० ५२५ । झ भण्डार ।

१३३४. प्रति सं० १९ । पत्र सं० १०० । ले० काल . . . . . अपूर्णा । वे० सं० २०६१ । ट भण्डार ।

विशेष—११ से ७४ तथा १०० में श्लोक के पत्र नहीं हैं ।

१३३५. प्रति सं० २० । पत्र सं० ३८ से ६४ । ले० काल . . . . . अपूर्णा । वे० सं० २०८६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१३३६. कार्तिकेयानुप्रेक्षाटीका . . . . . पत्र सं० ५४ । श्लो० १०१, ८ टङ्क । भाषा—संस्कृत । विषय—  
अध्यात्म । २० काल . . . . . ले० काल . . . . . अपूर्णा । वे० सं० ७३८ । झ भण्डार ।

१३३७. प्रति सं० २१ । पत्र सं० ६१ से ११० । ले० काल . . . . . अपूर्णा । वे० सं० ११८ । झ भण्डार ।

१३३८. कार्तिकेयानुप्रेक्षाटीका—शुभचन्द्र । पत्र सं० २१० । श्लो० ११३, ५ टङ्क । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १६०० भाषा बुद्धी १० । ले० काल सं० १८५६ । पूर्णा । वे० सं० ८४३ । क भण्डार ।

१३३९. प्रति सं० २२ । पत्र सं० ४६ । ले० काल . . . . . वे० सं० ११५ । अपूर्णा । क भण्डार ।

१३४०. प्रति सं० २३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल . . . . . अपूर्णा । वे० सं० ४४६ । च भण्डार ।

१४४१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५१ से १७२ । ले० काल सं० १८३२ । अपूर्णा । वे० सं० ४४३ । च

भण्डार ।

१३४२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २१७ । ले० काल सं० १८८२ भाषा बुद्धी १० । वे० सं० ७६ । झ

भण्डार ।

विशेष—सर्वाङ्ग जयपुर में मार्घासिंह के शासनकाल में चन्द्रप्रभु केवलानन्द में पत्र चोखचन्द्र के शिष्य  
रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

१३४३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २४८ । ले० काल सं० १८६६ भाषा बुद्धी १० । वे० सं० ५०५ । च  
भण्डार ।

१३४४. कार्तिकेयानुप्रेक्षाभाषा—जयचन्द्र छाबड़ा । पत्र सं० २३७ । श्लो० ११, ८ टङ्क । भाषा—  
हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १८६३ भाषा बुद्धी १० । ले० काल सं० १०२६ । पूर्णा । वे० सं०  
८६६ । क भण्डार ।

१३४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८१ । ले० काल × । वे० सं० २४६ । छ मण्डार ।

१३४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७६ । ले० काल सं० १८८३ । वे० सं० ६५ । ग मण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१३४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०६ । ले० काल × । प्रपूर्णा । वे० सं० १२० । क मण्डार ।

१३४८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० १२१ । क मण्डार ।

१३४९. कुरालागुबंधिअजमुयणं ..... । पत्र सं० ८ । भा० १०×४ इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १६८३ । ट मण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

इति कुबालागुबंधिअजमुयणं समप्तं । इति श्री चतुशरण टवार्थ ।

उमने: प्रतिरिक्त राजमन्दर तथा विजयदान मूरि विरचित ऋषभदेव स्तुतियां प्रौर है ।

१३५०. चक्रवर्तिकीबारहभाषना ..... । पत्र सं० ४ । भा० १०<sup>१</sup>/<sub>५</sub>×५ इच्छ । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ५४० । च मण्डार ।

१३५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ५४१ । च मण्डार ।

१३५२. चतुर्विधध्यान ..... । पत्र सं० २ । भा० १०×४<sup>१</sup>/<sub>५</sub> इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—योग ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० १५१ । क मण्डार ।

१३५३. चिद्बिलास—दीपचन्द्र कासलीवाल । पत्र सं० ४३ । भा० १२×६ इच्छ । भाषा—हिन्दी (गद्य) विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १७७६ । पूर्णा । वे० सं० २१ । च मण्डार ।

१३५४. जोगीरासो—जिनदास । पत्र सं० २ । भा० १०<sup>१</sup>/<sub>५</sub>×४<sup>१</sup>/<sub>५</sub> इच्छ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ५६१ । च मण्डार ।

१३५५. ज्ञानदर्पण—साह दीपचन्द्र । पत्र सं० ४० । भा० १२<sup>१</sup>/<sub>५</sub>×४<sup>१</sup>/<sub>५</sub> इच्छ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० २२६ । क मण्डार ।

१३५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १८६४ सावण मुदी ११ । वे० सं० ३० । च मण्डार ।

विशेष—महामा उम्मेद ने प्रतिलिपि की थी । प्रति दीवान अमरचन्द्रजी के मन्दिर में विराजमान की गई ।

१३५७. ज्ञानभावनी—बनारसीदास । पत्र सं० १० । भा० ११×५<sup>१</sup>/<sub>५</sub> इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ५३१ । क मण्डार ।

१३५८. ज्ञानसार—मुनि पद्मसिंह । पत्र सं० १२ । भा० १०<sup>१</sup>/<sub>५</sub>×५<sup>१</sup>/<sub>५</sub> इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १०८६ सावण मुदी ६ । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० २१८ । क मण्डार ।

विशेष—रचनाकाल वाली भाषा निम्न प्रकार है—

सिरि विक्रमस्तब्दाबे दशसयखासी खु बमि वहमाणेह

सावरासिम रावमीए श्रवणएपरीम्मकयं मेयं ॥

१३५६. ज्ञानार्थाव—शुभचन्द्राचार्य । पत्र सं० १०५ । आ० १२३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—योग । २० काल × । ले० काल सं० १६७६ चैत्र बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० २७४ । कृ भण्डार ।

विशेष—बैराट नगर मे श्री चतुरदास ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी ।

१३६० प्रति सं० २ । पत्र सं० १०३ । ले० काल सं० १६५६ भाद्रवा मुदी १३ । वे० सं० ४२ । कृ भण्डार ।

भण्डार ।

१३६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०७ । ले० काल सं० १६४२ वीष मुदी ६ । वे० सं० २०० । कृ भण्डार ।

भण्डार ।

१३६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१ । कृ भण्डार ।

१३६३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०८ । ले० काल × । वे० सं० २२२ । कृ भण्डार ।

१३६४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २६४ । ले० काल सं० १८३५ आषाढ मुदी ३ । वे० सं० २३६ । कृ भण्डार ।

भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थम अधिकार की टीका नहीं है ।

१३६५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १० मे ८२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६२ । कृ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ६ पत्र नहीं है ।

१३६६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३१ । ले० काल × । वे० सं० ३२ । कृ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१३६७. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १७६ से २०१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२३ । कृ भण्डार ।

१३६८. प्रति सं० १० । पत्र सं० २६८ । ले० काल × । वे० सं० २२४ । अपूर्ण । कृ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थम पत्र नहीं है । हिन्दी टीका सहित है ।

१३६९. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १०६ । ले० काल × । वे० सं० २२५ । कृ भण्डार ।

१३७०. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ४४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२५ । कृ भण्डार ।

१३७१. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२६ । कृ भण्डार ।

विशेष—प्रालापाम अधिकार तक है ।

१३७२. प्रति सं० १४ । पत्र सं० १४२ । ले० काल सं० १८८६ । वे० सं० २२७ । कृ भण्डार ।

१३७३. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १४० । ले० काल सं० १६६८ आषाढ बुदी ८ । वे० सं० १२६ ।

कृ भण्डार ।

विशेष—लक्ष्मीचन्द्र वैद्य ने प्रतिलिपि की थी ।

१३७५. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १३५ । ले० काल × । वे० सं० ६५ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा संस्कृत में संकेत भी दिये हैं ।

१३७५. प्रति सं० १७ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८८८ माघ सुदी ५ । वे० सं० २८२ । छ

भण्डार ।

विशेष—बारह भावना मात्र है ।

१३७६. प्रति सं० १८ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १५=१ फागुण सुदी १ । वे० सं० २५ । ज

भण्डार ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५८१ वर्षे फागुण सुदी १ बुधवार दिने । अथ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगण्डे श्रीकुन्द-  
कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनिन्देदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे जितेन्द्रिय भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे  
सकलवियानिधानयमस्वाध्यायध्यानतत्परसकलमुनिजनमध्यलम्बप्रतिष्ठाभट्टारकश्रीप्रभावचन्द्रदेवा । प्राचैर गण स्थानत् ।  
कूरमर्षणे महाराजाधिराजपृथ्वीराजराज्ये खण्डेलवालालान्वये समस्तगोष्ठि पंचायत शास्त्रं ज्ञानार्णव लिखापितं त्रैपनक्रिया-  
वर्तनिकनंबाट धनाश्रयांशु षटापितं कर्मअयनिमित्तं ।

१३७७. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ११५ । ले० काल × । वे० सं० ६० । छ भण्डार ।

१३७८. प्रति सं० २० । पत्र सं० १०४ । ले० काल × । वे० सं० १०० । अ भण्डार ।

१३७९. प्रति सं० २१ । पत्र सं० ३ मे ७३ । ले० काल सं० १५०१ माघ सुदी ३ । प्रपूर्णा । वे० सं०

१५६ । अ भण्डार ।

विशेष—ब्रह्मजिनदास ने श्री धर्मकांति के लिए प्रतिलिपि की थी ।

१३८०. प्रति सं० २२ । पत्र सं० १३४ । ले० काल सं० १७८८ । वे० सं० ३७० । अ भण्डार ।

१३८१. प्रति सं० २३ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १६४१ । वे० सं० १६६२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

१३८२. प्रति सं० २४ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६०१ । प्रपूर्णा । वे० सं० १६६३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत गद्य टीका सहित है ।

१३८३. ज्ञानार्णवगद्यटीका—श्रुतसागर । पत्र सं० १५ । प्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—योग । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ६१६ । अ भण्डार ।

१३८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० २२५ । क भण्डार ।

१३८५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८२३ माघ सुदी १० । वे० सं० २२६ । क

भण्डार ।

१३८६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ से ६ । ले० काल × । प्रपूर्णा । वे० सं० ३१ । घ भण्डार ।

१३८७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । मे० काल सं० १७४६ । जीर्ण । वे० सं० २२८ । क भण्डार ।  
विशेष—मौजमाबद मे आचार्य कनककीर्ति के शिष्य पं० मदाराम ने प्रतिलिपि की थी ।
१३८८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २ मे १२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२९ । क भण्डार ।
१३८९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १७८५ भादवा । वे० सं० २३० । क भण्डार ।  
विशेष—पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।
१३९०. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । वे० सं० २२१ । व्य भण्डार ।
१३९१. ज्ञानार्णवटीका—पं० नय विलास । पत्र सं० २७९ । प्रा० १३×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—योग । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२७ । क भण्डार ।  
विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।  
इति शुभचन्द्राचार्यविरचितयोगप्रदीपाधिकारे पं० नयविलासेन साह पाशा तत्पुत्र साह टोडर तत्कुलकमल-  
दिवानकरसाहृद्विदासस्य श्रवणार्थं पं० जिनदासो धर्मनाकारापिता मोक्षप्रकरण समाप्तं ।
१३९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१६ । ले० काल × । वे० सं० २२८ । क भण्डार ।
१३९३. ज्ञानार्णवटीकाभाषा—लब्धिविमलगणि । पत्र सं० १५८ । प्रा० ११×६ इञ्च । भाषा—  
हिन्दी (पद्य) । विषय—योग । २० काल सं० १७२८ आसोज सुदी १० । ले० काल सं० १७३० बैशाख सुदी ३ । पूर्ण ।  
वे० सं० १९४ । क भण्डार ।
१३९४. ज्ञानार्णवभाषा—जयचन्द्र छाबड़ा । पत्र सं० ६९३ । प्रा० १३×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी  
(गद्य) विषय—योग । २० काल सं० १८६९ माघ सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२३ । क भण्डार ।
१३९५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२० । ले० काल × । वे० सं० २२४ । क भण्डार ।
१३९६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२१ । ले० काल सं० १८८३ माघ सुदी ७ । वे० सं० ३४ । क  
भण्डार ।  
विशेष—शाह जिहानाबाद में संतूनाल की प्रेरणा से भाषा रचना की गई । कालूरामजी साह ने मोनपाल  
मावसा मे प्रतिलिपि कराके चौधरियो के मन्दिर मे चढाया ।
१३९७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४०८ । ले० काल × । वे० सं० ५६५ । च भण्डार ।
१३९८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०३ से २१९ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५६६ । च भण्डार ।
१३९९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३६१ । ले० काल सं० १९११ आसोज सुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० ५६६ ।  
क भण्डार ।  
विशेष—प्रारम्भ के २९० पत्र नहीं है ।
१४००. तत्त्वबोध ..... । पत्र सं० ३ । प्रा० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २०  
काल × । ले० काल सं० १८८१ । पूर्ण । वे० सं० ३१० । क भण्डार ।

१४०१. त्रयोविशतिका ..... । पत्र सं० १३ । प्रा० १०३×४<sup>१</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४० । अ भण्डार ।

१४०२. दर्शनपाहुडभाषा ..... । पत्र सं० २६ । प्रा० १०३<sup>१</sup>×८<sup>१</sup> इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—  
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८३ । अ भण्डार ।

विशेष—घष्टपाहुड का एक भाग है ।

१४०३. द्वादशभावना दृष्टान्त ..... । पत्र सं० १ । प्रा० १०×४<sup>१</sup> इञ्च । भाषा—गुजराती । विषय—  
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १७०७ बैशाख बुदी १ । वे० सं० २२१७ । अ भण्डार ।

विशेष—जालोर में श्री हंसकुशल ने प्रतापकुशल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१४०४. द्वादशभावनाटीका ..... । पत्र सं० ६ । प्रा० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म ।  
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६५५ । ट भण्डार ।

विशेष—कुन्दकुन्दाचार्य कृत मूल गाथायें भी दी हैं ।

१४०५. द्वादशानुप्रेक्षा ..... । पत्र सं० २० । प्रा० १०<sup>१</sup>×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म ।  
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८५ । ट भण्डार ।

१४०६. द्वादशानुप्रेक्षा—मकलकीर्ति । पत्र सं० ४ । प्रा० १०<sup>१</sup>×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४ । अ भण्डार ।

१४०७. द्वादशानुप्रेक्षा ..... । पत्र सं० १ । प्रा० १०×४<sup>१</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४ । अ भण्डार ।

१४०८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १६१ । अ भण्डार ।

१४०९. द्वादशानुप्रेक्षा—कविछत्त । पत्र सं० ८३ । प्रा० १२<sup>१</sup>×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।  
विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १६०७ भाद्रवा बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६ । अ भण्डार ।

१४१०. द्वादशानुप्रेक्षा—साह आलू । पत्र सं० ४ । प्रा० ६<sup>१</sup>×४<sup>१</sup> इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६०४ । ट भण्डार ।

१४११. द्वादशानुप्रेक्षा ..... । पत्र सं० १३ । प्रा० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२८ । अ भण्डार ।

१४१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ६३ । अ भण्डार ।

१४१३. पञ्चतन्त्रधारणा ..... । पत्र सं० ७ । प्रा० ६<sup>१</sup>×४<sup>१</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२३२ । अ भण्डार ।

१४१४. पन्द्रहतिथी .....। पत्र सं० ४। प्रा० १०३×५३ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—ग्रन्थात्म।

२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४३१। छ भण्डार।

विशेष—भूधरदास कृत एकीभावस्तोत्र भाषा भी है।

१४१५. परमात्मपुराण—दीपचन्द्र। पत्र सं० २४। प्रा० १२×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)।

विषय—ग्रन्थात्म। २० काल ×। ले० काल सं० १८६४ सावन मुदी ११। पूर्ण। छ भण्डार।

विशेष—महात्मा उमेद ने प्रतिलिपि की थी।

१४१६. प्रति सं० २। पत्र सं० २ से २२। ले० काल सं० १८४३ आसोज बुदी २। अपूर्ण। वे० सं०

६२३। च भण्डार।

१४१७. परमात्मप्रकाश—योगीन्द्रदेव। पत्र सं० १३ से १४। प्रा० १०×५३ इञ्च। भाषा—

अपभ्रंश। विषय—ग्रन्थात्म। २० काल १०वीं शताब्दी। ले० काल सं० १७६६ आमाज मुदी २। अपूर्ण। वे० सं०

२०=३। अ भण्डार।

विशेष—सुबालचन्द्र चिमनराम ने प्रतिलिपि की थी।

१४१८. प्रति सं० २। पत्र सं० ६७। ले० काल सं० १६३५। वे० सं० ४४५। क भण्डार।

विशेष—संस्कृत में टीका भी है।

१४१९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७६। ले० काल सं० १६०४ श्रावण बुदी ३। वे० सं० ५७। छ

भण्डार। संस्कृत टीका सहित है।

विशेष—ग्रन्थ सं० ४००० श्लोक। अन्तिम ६ पृष्ठों में बहुत बारीक लिपि है।

१४२०. प्रति सं० ४। पत्र सं० १५। ले० काल .। अपूर्ण। वे० सं० ४३८। छ भण्डार।

१४२१. प्रति सं० ५। पत्र सं० २ से १५। ले० काल .। अपूर्ण। वे० सं० ४३५। छ भण्डार।

१४२२. प्रति सं० ६। पत्र सं० २५। ले० काल .। अपूर्ण। वे० सं० २०६। च भण्डार

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं।

१४२३. प्रति सं० ७। पत्र सं० १६। ले० काल .। अपूर्ण। वे० सं० २१०। च भण्डार।

१४२४. प्रति सं० ८। पत्र सं० २४। ले० काल सं० १८३० वैशाख बुदी ३। वे० सं० ८२। अ

भण्डार।

विशेष—जयपुर में शुभचन्द्रजी के शिष्य चौखचन्द्र तथा उनके शिष्य पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की। संस्कृत में पर्यायवाची शब्द भी दिये हुए हैं।

१४२५. परमात्मप्रकाशादीका—अमृतचन्द्राचार्य। पत्र सं० ६६ से २४५। प्रा० १०३×८ इञ्च।

भाषा—संस्कृत। विषय—ग्रन्थात्म। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४३३। छ भण्डार।

१४२६. प्रति सं० २। पत्र सं० १३६। ले० काल ×। वे० सं० ४५३। अ भण्डार।

१४२७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४१ । ले० काल सं० १७६७ पौष सुदी ५ । वै० सं० ४५४ । अ  
भण्डार ।

विशेष—भायाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४२८. परमात्मप्रकाशाटीका—ब्रह्मदेव । पत्र सं० १६४ । पृ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—अध्यात्म । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १७६ । अ भण्डार ।

१४२९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ८ मे १४६ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ८३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है ८८ चित्र है ।

१४३०. परमात्मप्रकाशाटीका । पत्र सं० १६३ । पृ० ११×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
अध्यात्म । १० काल × । ले० काल सं० १६५८ द्वि० धारण सुदी १२ । पूर्ण । वै० सं० ४४७ । क भण्डार ।

१४३१. परमात्मप्रकाशाटीका । पत्र सं० ६७ । पृ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
अध्यात्म । १० काल × । ले० काल सं० १८६० कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वै० सं० २०७ । अ भण्डार ।

१४३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ मे १०१ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० २०८ । अ भण्डार ।

१४३३. परमात्मप्रकाशाटीका । पत्र सं० १७० । पृ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
अध्यात्म । १० काल × । ले० काल सं० ५६६६ मगधिर सुदी १३ । पूर्ण । वै० सं० ४४६ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रवृत्ति कटो हुई है । विजयराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४३४. परमात्मप्रकाशाभाषा—दौलतराम । पत्र सं० ४४४ । पृ० ११×६ । भाषा—हिन्दी । विषय—  
अध्यात्म । १० काल १=वी शताब्दी । ले० काल सं० १६३८ । पूर्ण । वै० सं० ४४६ । क भण्डार ।

विशेष—मूल तथा ब्रह्मदेव कृत संस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१४३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३० मे २४२ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ४३६ । क भण्डार ।

१४३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४७ । ले० काल सं० १६५० । वै० सं० ४३७ । क भण्डार ।

१४३७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६० मे १६६ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ६३८ । अ भण्डार ।

१४३८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३२४ । ले० काल × । वै० सं० १६२ । अ भण्डार ।

१४३९. परमात्मप्रकाशाशास्त्राचार्याधिनीटीका—खानचन्द । पत्र सं० २४१ । पृ० १२×५ इञ्च ।  
भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । १० काल सं० १६३६ । पूर्ण । वै० सं० ४४८ । क भण्डार ।

विशेष—यह टीका मुस्तान में श्री पार्थनाथ नैथालय में लिखी गई थी इसका उल्लेख स्वयं टीकाकार ने  
किया है ।

१४४०. परमात्मप्रकाशाभाषा—नथमल । पत्र सं० २१ । पृ० ११×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।  
विषय—अध्यात्म । १० काल सं० १६१६ चैत्र बुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४४० । क भण्डार ।

१४४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १६४८ । वै० सं० ४४१ । क भण्डार ।

१४४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । वै० सं० ४४२ । क भण्डार ।



१४४३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ से १५ । ले० काल म० १६३७ । वे० सं० ४४३ । क भण्डार ।

१४४४. परमात्मप्रकाशभाषा—सूरजभान ओसवाल । पत्र सं० १५४ । प्रा० १२३×८ इञ्च ।  
भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—ग्रन्थात्म । २० काल सं० १८४३ प्रायाङ्क बुदी ७ । ले० काल सं० १६५२ मंगलसर बुदी  
१० । पूर्ण । वे० सं० ४४४ । क भण्डार ।

१४४५. परमात्मप्रकाशभाषा..... । पत्र सं० ६५ । प्रा० १३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ११६० । अ भण्डार ।

१४४६. परमात्मप्रकाशभाषा ..... । पत्र सं० ५६ । प्रा० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२७ । च भण्डार ।

१४४७. परमात्मप्रकाशभाषा..... । पत्र सं० ६३ से १०८ । प्रा० १०×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३२ । क भण्डार ।

१४४८. प्रवचनसार—आचार्य कृन्तुकुन्द । पत्र सं० ४७ । प्रा० १२×४३ इञ्च । भाषा—प्राकृत ।  
विषय—ग्रन्थात्म । २० काल प्रथम शताब्दी । ले० काल सं० १६४० माघ बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ५०८ । क भण्डार ।

विशेष—मंस्कृत में पर्यायवाची शब्द विये दिये हैं ।

१४४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । वे० सं० ५१० ।

१४५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १८६६ भाद्रमास बुदी ५ । वे० सं० २३८ । च  
भण्डार ।

१४५१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३६ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१४५२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १८३७ बैशाख बुदी ६ । वे० सं० २४० । च  
भण्डार ।

विशेष—परागदास मोहा बाल ने प्रतिनिधि की थी ।

१४५३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० १४८ । ज भण्डार ।

१४५४. प्रवचनसारटीका—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६७ । प्रा० ६×५ इञ्च । भाषा—मंस्कृत ।  
विषय—ग्रन्थात्म । २० काल १०वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम तत्त्वदीपिका है ।

१४५५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११८ । ले० काल . . . . . वे० सं० ८५२ । अ भण्डार ।

१४ ६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ६० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७८५ । अ भण्डार ।

१४५७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०१ । ले० काल × । वे० सं० ८१ । अ भण्डार ।

१४५८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०८ । ले० काल सं० १८६८ । वे० सं० ५०७ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा देवकर्ण ने जयनगर में प्रतिनिधि की थी ।

१४५६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २३६ । ले० काल सं० १६३८ । वे० सं० ५०६ । क भण्डार ।

१४६०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ८७ । ले० काल × । वे० सं० २६५ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१४६१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २०२ । ले० काल सं० १७४७ फागुण बुदी ११ । वे० सं० ५११ । क भण्डार ।

१४६२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १६२ । ले० काल सं० १६८० भाद्रपद बुदी ३ । वे० सं० ६१ । क भण्डार ।

विशेष—प० फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६३. प्रवचनसारटीका ... । पत्र सं० ४१ । आ० ११०६ ड० । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ५१० । क भण्डार ।

विशेष—प्रकृत में मूल संस्कृत में छाया तथा हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

१४६४. प्रवचनसारटीका ... । पत्र सं० १२१ । आ० १२×५ ड० । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल । ले० काल सं० १८५७ आषाढ बुदी ११ । पूर्णा । वे० सं० ५०६ । क भण्डार ।

१४६५. प्रवचनसारप्राभृतवृत्ति ... । पत्र सं० ५१ मे १३१ । आ० १२×५ ड० । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल < । ले० काल सं० १७६५ । अपूर्णा । वे० सं० ७८३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ५० पत्र नहीं है । महाराजा जयसिंह के नामनवाज में नेवटा में महात्मा हरिकृष्ण ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६६. प्रवचनसारभाषा—पांडे हेमराज । पत्र सं० ८३ मे २०५ । आ० १२×५ ड० । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १७०६ माघ बुदी ५ । ले० काल सं० १७२५ । अपूर्णा । वे० सं० ६३२ । अ भण्डार ।

विशेष—सायानेर में सोसबाल गुजरमल ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २६७ । ले० काल सं० १६४३ । वे० सं० ५१३ । क भण्डार ।

१४६८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १७३ । ले० काल × । वे० सं० ५१२ । क भण्डार ।

१४६९. प्रति सं० १० । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १६२७ फागुण बुदी ११ । वे० सं० ६३ । क भण्डार ।

विशेष—प० परमानन्द ने दिल्ली में प्रतिलिपि की थी ।

१४७०. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १७६ । ले० काल सं० १७४३ पौष बुदी २ । वे० सं० ५१३ । क भण्डार ।

१४७१. प्रति सं० १२ । पत्र सं० २६१ । ले० काल सं० १८६३ । वे० सं० ६४१ । क भण्डार ।

१४७२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १८४ । ले० काल सं० १८८३ कार्तिक बुदी २ । वै० सं० १६३ । छ  
भण्डार ।

विषय—लवाणु निवासी अमरचन्द के पुत्र महात्मा गणेश ने प्रतिलिपि की थी ।

१४७३. प्रवचनसारभाषा—जोधराज गोद्रीका । पत्र सं० ३८ । आ० ११८५ इ३ । भाषा—हिन्दी  
(गद्य) । विषय—ग्रन्थात्म । २० काल सं० १७२६ । ले० काल सं० १७३० आषाढ मुदी १५ । पूर्ण । वै० सं० ६४४ ।  
च भण्डार ।

१४७४. प्रवचनसारभाषा—वृन्दावनदास । पत्र सं० ८१७ । आ० १२१५ इ३ । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल सं० १६३३ ज्येष्ठ बुदी २ । पूर्ण । वै० सं० ५११ । क भण्डार ।

विषय—ग्रन्थ के अन्त में वृन्दावनदास का परिचय दिया है ।

१४७५. प्रवचनसारभाषा... । पत्र सं० ८६ । आ० ११८३ इ३ । भाषा—हिन्दी । विषय—ग्रन्थात्म ।  
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ५१२ । छ भण्डार ।

१४७६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल . । अपूर्ण । वै० सं० ६८० । च भण्डार ।

विषय—अन्तिम पत्र नहीं है ।

१४७७. प्रवचनसारभाषा ... । पत्र सं० १२ । आ० ११८३ इ३ । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—  
ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १६२२ । ट भण्डार ।

१४७८. प्रवचनसारभाषा... । पत्र सं० १८५ न ५८५ । आ० ११९७ इ३ । भाषा—हिन्दी  
(गद्य) । विषय—ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८६७ । अपूर्ण । वै० सं० ६८५ । च भण्डार ।

१४७९. प्रवचनसारभाषा ... । पत्र सं० २३२ । आ० ११९७ इ३ । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—  
ग्रन्थात्म । २० काल . । ले० काल सं० १६२६ । वै० सं० ६८३ । च भण्डार ।

१४८०. प्राणायामशास्त्र... । पत्र सं० ९ । आ० ६९, ८ इ३ । भाषा—मस्कृत । विषय—योगशास्त्र ।  
२० काल . । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६५६ । अ भण्डार ।

१४८१. बारह भावना—रङ्गू । पत्र सं० ५ । आ० ८९, ६ इ३ । भाषा—हिन्दी । विषय—ग्रन्थात्म ।  
२० काल . । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २८१ । छ भण्डार ।

विषय—निपिकार ने रङ्गू कृत बारह भावना हाना लिखा है ।

प्रारम्भ—ध्रुववस्तु निश्चल सदा अत्रुभाव परजाय ।

स्वरूप जो देखिये पुद्गल तर्गा विभाव ॥

अन्तिम—अकथ कहाणी जान की कहन मुनन की नाहि ।

आनन्दी में पाइये जब देखे घटमार्ग ॥

इति श्री रङ्गू कृत बारह भावना मंजुर्ण ।

१४८२. बारहभावना..... । पत्र सं० १५ । आ० ६३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन ।  
२० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ५२६ । कृ भण्डार ।

१४८३ प्रति सं० १ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० ६८ । कृ भण्डार ।

१४८४. बारहभावना—भूधरदास । पत्र सं० १ । आ० ६३×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन ।  
२० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२४७ । अ भण्डार ।

विशेष—वादर्धपुराण से उद्धृत है ।

१४८५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० २५२ । स्व भण्डार ।

विशेष—इसका नाम चक्रवर्ति की बारह भावना है ।

१४८६. बारहभावना—नयलकवि । पत्र सं० २ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३० । कृ भण्डार ।

१४८७. बोधपाभृत—आचार्य कुंङ्कुड । पत्र सं० ७ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—  
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३५ ।

विशेष—संस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१४८८. भववैराग्यशतक ..... । पत्र सं० १५ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म ।  
२० काल × । ले० काल सं० १८२४ फायुण मुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४५५ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१४८९. भावनाद्वात्रिशिका ..... । पत्र सं० २६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल / । पूर्ण । वे० सं० ५५७ । कृ भण्डार ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह शीर है । यतिभावनाष्टक, पद्मनिर्दिपंचविधतिका शीर, तत्त्वार्थसूत्र ।  
प्रति स्वर्गाक्षरों में है ।

१४९०. भावनाद्वात्रिशिकाटीका..... । पत्र सं० ४६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६८ । कृ भण्डार ।

१४९१. भावपाहुड—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र सं० ६ । आ० १४×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—  
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३० । कृ भण्डार ।

विशेष—प्राकृत भाषाओं पर संस्कृत श्लोक भी है ।

१४९२. मृत्युमहोत्सव ..... । पत्र सं० १ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४१ । अ भण्डार ।

१४९३. मृत्युमहोत्सवभाषा—सदासुख । पत्र सं० २२ । आ० ६३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
अध्यात्म । २० काल सं० १६१८ आषाढ मुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८० । अ भण्डार ।

१४९४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० ६०४ । कृ भण्डार ।

१४६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वै० सं० १८४ । छ मण्डार ।

१४६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वै० सं० १८४ । छ मण्डार ।

१४६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वै० सं० १६५ । झ मण्डार ।

१४६८. योगवित्तुप्रकरण—आ० हरिभद्रसूरि । पत्र सं० १८ । आ० १०×४<sup>३</sup> इ. छ । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—योग । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २६२ । झ मण्डार ।

१४६९. योगभक्ति ..... । पत्र सं० ६ । आ० १२×४<sup>३</sup> इ. च । भाषा—प्राकृत । विषय—योग । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६१५ । छ मण्डार ।

१५००. योगशास्त्र—हेमचन्द्रसूरि । पत्र सं० २५ । आ० १०×४<sup>३</sup> इ. च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । २० काल / । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ८६३ । झ मण्डार ।

१५०१. योगशास्त्र ..... । पत्र सं० ६४ । आ० १०×४<sup>३</sup> इ. च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । २० काल > । ले० काल सं० १७०५ आषाढ बुदी १० । पूर्ण । वै० सं० ८२६ । झ मण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

१५०२. योगमार—योगीन्द्रदेव । पत्र सं० १२ । आ० १५×४ इ. छ । भाषा—प्रब्र श । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८०४ अपूर्णा । वै० सं० ८२ । झ मण्डार ।

विशेष—मुखराम छाबडा ने प्रतिलिपि की थी ।

१५०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १६३४ । वै० सं० ६०६ । क मण्डार ।

विशेष—संस्कृत छाया सहित है ।

१५०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल > । वै० सं० ६०७ । क मण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१५०५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८१३ । वै० सं० ६१६ । क मण्डार ।

१५०६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २६ । ले० काल < । वै० सं० ३१० । क मण्डार ।

१५०७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८८२ चैत्र बुदी ४ । वै० सं० ७८२ । च मण्डार ।

१५०८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८०४ आसोज बुदी ३ । वै० सं० ३३६ । च मण्डार ।

१५०९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ५१६ । झ मण्डार ।

१५१०. योगसारभाषा—नन्दराम । पत्र सं० ५७ । आ० १२३×४<sup>३</sup> इ. छ । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १६०४ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६११ । क मण्डार ।

विशेष—आगरा में ताजगञ्ज में भाषा टीका लिखी गई थी ।

१५११. योगसारभाषा—पद्मलाल चौधरी । पत्र सं० ३३ । आ० १२×७ इ. छ । भाषा—हिन्दी (गद्य) ; विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १६३२ सावन सुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६०१ । क मण्डार ।

१५१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० ६१० । क भण्डार ।

१५१३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० ६१७ । क भण्डार ।

१५१४. योगसारभाषा—पं० बुधजन । पत्र सं० १० । प्रा० ११×७३ इक्ष । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।  
विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १८६५ सावण मुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०८ । क भण्डार ।

१५१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ७४१ । च भण्डार ।

१५१६. योगसारभाषा..... । पत्र सं० ६ । प्रा० २१×६३ इक्ष । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—  
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६१८ । क भण्डार ।

१५१७. योगसारसंग्रह ..... । पत्र सं० १८ । प्रा० १०×४३ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—योग ।  
२० काल × । ले० काल सं० १७५० कार्तिक मुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ७११ । ज भण्डार ।

१५१८. रूपमध्ययानवर्णन ..... । पत्र सं० २ । प्रा० १०३×५३ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—योग ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५६ । क भण्डार ।

‘धर्मनाथस्तुते धर्ममयं सद्धर्मसिद्धये ।

धीमता धर्मदानारं धर्मचक्रप्रवर्तकं ॥

१५१९. लिगपाहुड—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं० ११ । प्रा० १२×५३ इक्ष । भाषा—प्राकृत ।  
विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८६५ । पूर्ण । वे० सं० १०३ । क भण्डार ।

विशेष—शील पाहुड तथा गुरावली भी है ।

१५२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६ । क भण्डार ।

१५२१. वैराग्यशतक—भर्तृहरि । पत्र सं० ७ । प्रा० १२×५ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—  
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । च भण्डार ।

१५२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८८५ सावण मुदी ६ । वे० सं० ३३७ । च  
भण्डार ।

विशेष—बीच में कुछ पत्र कटे हुये हैं ।

१५२३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । वे० सं० १४३ । क भण्डार ।

१५२४. षटपाहुड (प्राश्रुत)—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं० २ से २४ । प्रा० १०×४३ इक्ष ।  
भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७ । क भण्डार ।

१५२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १८५४ मंगसिर मुदी १५ । वे० सं० १८८ । क  
भण्डार ।

१५२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १८१७ माघ मुदी ६ । वे० सं० ७१४ । क  
भण्डार ।

विशेष—नरायणा ( जयपुर ) में पं० रूपचन्दजी ने प्रतिलिपि की थी ।

१५२७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १८१७ कालिक बुदी ७ । वे० सं० १६५ । ख  
भण्डार ।

विशेष—संस्कृत पद्यो मे भी अर्थ दिया है ।

१५२८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २८० । ख भण्डार ।

१५२९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० १६७ । ख भण्डार ।

१५३०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३१ से ५५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७३७ । ख भण्डार ।

१५३१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७३८ । ख भण्डार ।

१५३२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० २७ से ६५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७३९ । ख भण्डार ।

१५३३. प्रति सं० १० । पत्र सं० ५४ । ले० काल × । वे० सं० ७४० । ख भण्डार ।

१५३४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ३५७ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१५३५. प्रति सं० १२ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १५१६ चैत्र बुदी १३ । वे० सं० ३८० । ख  
भण्डार ।

१५३६. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० १८४६ । ट भण्डार ।

१५३७. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १७१५ । वे० सं० १८४७ । ट भण्डार ।

विशेष—नवनपुर मे पार्वनाथ चैत्यालय मे ब्र० सुम्भदेव के पठनार्थ मनोहरदास ने प्रतिलिपि की थी ।

१५३८. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १ मे ८३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ०८५ । ट भण्डार ।

विशेष—निम्न प्राप्त है— दर्शन, सूत्र, चारित्र । चारित्र प्राप्त की ४५ याया मे आगे नहीं है । प्रति  
प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

१५३९. पट्टाहुडटीका..... । पत्र सं० ५१ । आ० १२८ डड्ड । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्ययन ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६ । ख भण्डार ।

१५४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० ७१३ । क भण्डार ।

१५४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८८० फागुण सुदी ८ । वे० सं० १६६ । ख  
भण्डार ।

विशेष—पं० स्वरूपचन्द के पठनार्थ भावनगर मे प्रतिलिपि हुई ।

१५४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १८२५ ज्येष्ठ सुदी १० । वे० सं० २५८ । ख  
भण्डार ।

१५४३. षटपाहुडटीका—भुतसागर । पत्र सं० २६५ । पृ० १०३×५ इञ्च । भाषा—स्कृत । विषय—  
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१२ । क भण्डार ।

१५४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६६ । ले० काल सं० १८६३ माह बुदी ६ । वे० सं० ७५१ । क  
भण्डार ।

१५४५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५२ । ले० काल सं० १७६५ माह बुदी १० । वे० सं० ६२ । क  
भण्डार ।

विशेष—नरसिंह अग्रवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१५४६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १११ । ले० काल सं० १७३६ द्वि० चैत्र मुदी १५ । वे० सं० ६ । अ  
विशेष—श्रीलालबन्द के पठनार्थ आमेर नगर में प्रतिलिपि की गई थी ।

१५४७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १७६७ आश्विन मुदी ७ । वे० सं० ६८ । अ  
भण्डार ।

विशेष—विजयराम तोत्रका की धर्मपत्नी विजय शुभदे ने पं० गोरधनदास के लिए ग्रन्थ की प्रतिलिपि  
करायी थी ।

१५४८. संबोधअक्षरभावनी—द्यानतराय । पत्र सं० ५ । पृ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६० । अ भण्डार ।

१५४९. संबोधपंचासिका—गौतमस्वामी । पत्र सं० ४ । पृ० ८×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—  
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८४० बेशाल मुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३६४ । अ भण्डार ।

विशेष—बाराणपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

१५५०. समयसार—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र सं० २३ । पृ० १०×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—  
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १५६४ फागुण मुदी १२ । पूर्ण । वृत्त म० २६३ सर्व भवति । वे० सं० १८१ ।  
अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—संवत् १५६४ वर्षे फाल्गुनमासे शुद्धपक्षे १२ द्वादशीतिथौ रवौवासरे पुनर्वसुनक्षत्रे श्री  
मूलसंघे तदिसंघे बलात्कारणो सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनिन्देवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र-  
देवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्त्रिद्वयमंडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्रदेवास्तत्सुम्यशियाचार्य  
श्रीनेमिचन्द्रदेवास्तैरिमानि नाटकसमयसारवृत्तानि लिखापितानि स्वपठनार्थं ।

१५५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० सं० १८६ । अ भण्डार ।

१५५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० २७३ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायान्तर दिया हुआ है । दीवान नबनिधिराम के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की  
गई थी ।

१५५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६४२ । वे० सं० ७३४ । क भण्डार ।



१५५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वे० सं० ७३५ । क भण्डार ।

विशेष—गाथाप्रो पर ही संस्कृत मे ग्रन्थ है ।

१५५५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७० । ले० काल × । वे० सं० १०८ । घ भण्डार ।

१५५६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १८७७ बैशाख बुदी ५ । वे० सं० ३६६ । च

भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

१५५७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६७ । च भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१५५८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५२ । ले० काल × । वे० सं० ३६७ क । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये है ।

१५५९. प्रति सं० १० । पत्र सं० ३ मे १३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६८ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१५६०. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ८५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६८ क । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१५६१. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३७० । च भण्डार ।

१५६२. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल × । वे० सं० ३७१ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१५६३. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १५६३ पौष बुदी ६ । वे० सं० २१४० । ट

भण्डार ।

१५६४. समयसारकलशा—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० १२२ । आ० ११×४<sup>३</sup> इञ्ज । भाषा—संस्कृत ।

विषय—अभ्यात्म । १० काल × । ले० काल सं० १७४३ आसोज सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १७३ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १७४३ वर्षे आसोज मासे शुक्लपक्षे द्वितिया २ तिथौ शुद्धवासरे श्रीमत्कामानगरे श्रीश्वेता-  
म्बरशास्त्राया श्रीमद्विजयगच्छे भट्टारक श्री १०८ श्री कन्यागणसागरमूर्तिजी तत् शिष्य ऋषिराज श्री जयवंतजी तत् शिष्य  
ऋषि लक्ष्मणोत्तम पठनाय लिपिचक्रे शुभं भवतु ।

१५६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८४ । ले० काल सं० १६६७ आषाढ सुदी ७ । वे० सं० १३३ । अ

भण्डार ।

विशेष—महाराजाधिराज जयसिंहजी के शासनकाल मे आमेर मे प्रतिलिपि हुई थी । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—  
संवत् १६६७ वर्षे आषाढ बदि सप्तम्या शुद्धवासरे महाराजाधिराज श्री जयसिंहजी प्रतापे प्रभावतीमण्ये लिखादत्तं संधी श्री  
मोहनदासजी पठनार्थं । लिखितं जोशी बालिराज ।

१५६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १६२ । अ भण्डार ।

१५६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । वे० सं० २१५ । अ भण्डार ।

१५६८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७६ । ले० काल सं० १६४३ । वे० सं० ७३६ । क भण्डार ।

विशेष—सरल संस्कृत में टीका दी है तथा नीचे श्लोको की टीका है ।

१५६९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२४ । ले० काल × । वे० सं० ७३७ । क भण्डार ।

१५७०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १८६७ भादवा सुदी ११ । वे० सं० ७३८ । क

भण्डार ।

विशेष—जयपुर में महात्मा देवकरण ने प्रतिलिपि की थी ।

१५७१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । वे० सं० ७३९ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१५७२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० ७४४ । अ भण्डार ।

विशेष—कलशो पर भी संस्कृत में टिप्पण दिया है ।

१५७३. प्रति सं० १० । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ११० । अ भण्डार ।

१५७४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ७६ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ३७१ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है परन्तु पत्र ५६ से संस्कृत टीका नहीं है केवल श्लोक ही है ।

१५७५. प्रति सं० १२ । पत्र सं० २ से ४७ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ३७२ । च भण्डार ।

१५७६. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १७१६ कार्तिक सुदी २ । वे० सं० ६१ । छ

भण्डार ।

विशेष—उज्जैन में प्रतिलिपि हुई थी ।

१५७७. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० ८७ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

१५७८. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १६१४ पीष बुदो ८ । वे० सं० २०५ । ज

भण्डार ।

विशेष—बीच के ६ पत्र नवीन लिखे हुये है ।

१५७९. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वे० सं० १६१४ । ट भण्डार ।

१५८०. प्रति सं० १७ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८२२ । वे० सं० १६९२ । ट भण्डार ।

विशेष—ब्र० नेतसीदास ने प्रतिलिपि की थी ।

१५८१. समयसारटीका (आत्मरूपाति)—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० १३५ । भा० १०३×४३ इक्ष

भाषा—संस्कृत । विषय—प्रध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८३३ माह बुदो ६ । पूर्णा । वे० सं० २ । अ

भण्डार ।

१५८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १७०३ । वे० सं० १०४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—संवत् १७०३ मार्गसिर कृष्णपक्ष्यां तिथौ बुद्धवारो लिखितेयम् ।

१५८३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०१ । ले० काल × । वे० सं० ३ । अ भण्डार ।

१५८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० से ४६ । ले० काल × । वे० सं० २००३ । अ भण्डार ।

१५८५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १७०३ बैशाख सुदी १० । वे० सं० २२६ । अ

भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति :-सं० १७०३ वर्षे बंगाल कृष्णादशम्या तिथौ लिखितम् ।

१५८६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३१६ । ले० काल सं० १६३८ । वे० सं० ७४० । क भण्डार ।

१५८७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १३८ । ले० काल सं० १६५७ । वे० सं० ७४१ । क भण्डार ।

१५८८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०२ । ले० काल सं० १७०६ । वे० सं० ७४२ । क भण्डार ।

विशेष—भगवंत बुद्धे ने मिराज ग्राम मे प्रतिनिधि की थी ।

१५८९ प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० ७४३ । क भण्डार ।

१५९०. प्रति सं० १० । पत्र सं० १६५ । ले० काल × । वे० सं० ७४५ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१५९१. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १७६ । ले० काल सं० १६४४ बैशाख सुदी ५ । वे० सं० १०६ । अ

भण्डार ।

विशेष—शकबर बादशाह के शासनकाल मे मालपुरा मे लिखक मूर्ति देनाम्बर मुनि देवा ने प्रतिनिधि की

थी । बीच विम्बलिखित पत्तिया और लिखी है—

‘पाहे खेतु मेठ तत्र पुत्र पाहे पागु पोयी देहुरे ।

घाली सं० १६७३ तत्र पुत्रु बीमावतः कःपर ।

बीच मे कुछ पत्र लिखवाये हुये है ।

१५९२. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १६८ । ले० काल सं० १६१८ माघ सुदी १ । वे० सं० ७५ । अ

भण्डार ।

विशेष—संगही पत्रालाल ने स्वतन्त्रार्थ प्रतिनिधि की थी । ११२ मे १७० तक नीले पत्र है ।

१५९३. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १७३० मार्गसिर सुदी १५ । वे० सं० १०६ ।

अ भण्डार ।

१५९४. समयसार वृत्ति..... । पत्र सं० ४ । आ० सं० १५ इक्ष । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यत्म ।

१० काल × । ले० काल × । अमूर्ण । वे० सं० १०७ । अ भण्डार ।

१५९५. समयसारटीका..... । पत्र सं० ८१ । आ० सं० १५ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यत्म ।

१० काल × । ले० काल × । अमूर्ण । वे० सं० ७६६ । अ भण्डार ।

१५६६. समयसारनाटक—बनारसीदास । पत्र सं० ६७ । प्रा० ६ $\frac{१}{२}$  × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १६६३ आमोज सुदी १३ । ले० काल सं० १८३८ । पूर्ण । वे० सं० ४०६ । अ  
भण्डार ।

१५६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७२ । ले० काल सं० १८६७ फागुण सुदी ६ । वे० सं० ४०६ । अ  
भण्डार ।

विशेष—आगरे में प्रतिलिपि हुई थी ।

१५६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०६६ । अ भण्डार ।

१५६९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ९८४ । अ भण्डार ।

१६००. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४ से ११५ । ले० काल सं० १७=६ फागुण सुदी ४ । वे० सं० ११२८  
अ भण्डार ।

१६०१ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १८४ । ले० काल सं० १६३० ज्येष्ठ बुदी १५ । वे० सं० ७४६ । क  
भण्डार ।

विशेष—पद्यों के बीच में सदामुख बामलीवाल कृत हिन्दी गद्य टीका भी दी हुई है । टीका रचना सं०  
१६१४ कार्तिक सुदी ७ है ।

१६०२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १११ । ले० काल सं० १६५६ । वे० सं० ७४७ । क भण्डार ।

१६०३. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ४ से ५६ । ले० काल × । वे० सं० २०८ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३ पत्र नष्ट हैं ।

१६०४. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ८७ । ले० काल सं० १८८७ माघ सुदी ८ । वे० सं० ८४ । ग भण्डार ।

१६०५. प्रति सं० १० । पत्र सं० ३६६ । ले० काल सं० १६२० वैशाख सुदी १ । वे० सं० ८५ । ग  
भण्डार ।

विशेष—प्रति गुटके के रूप में है । लिपि बहुत सुन्दर है । अक्षर मोटे हैं तथा एक पत्र में ५ लाइन और  
प्रति लाइन में १८ अक्षर हैं । पद्यों के बीच हिन्दी अर्थ भी है । विरचित सूचीपत्र २१ पत्रों में है । यह ग्रन्थ तनमुख  
सोनी का है ।

१६०६. प्रति सं० ११ । पत्र सं० २८ से १११ । ले० काल सं० १७१४ । अपूर्ण । वे० सं० ७६७ । ह  
भण्डार ।

विशेष—रामगोपाल कायस्थ ने प्रतिलिपि की थी ।

१६०७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १२२ । ले० काल सं० १६५१ चैत्र सुदी २ । वे० सं० ७६८ । क  
भण्डार ।

विशेष—म्होरीलाल ने प्रतिलिपि कराई थी ।

१६०८. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १६४३ मंगसिर बुदी १३ । वे० सं० ७६९ ।  
क भण्डार ।

विशेष—लक्ष्मीनारायण ब्राह्मण ने जयनगर में प्रतिलिपि की थी ।

१६८६. प्रति सं० १४ । पत्र सं० १६० । ले० काल सं० १६७७ प्रथम सावण सुदी १३ । वै० सं०

७७० । कृ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी गद्य में भी टीका है ।

१६१०. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १० । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ७७१ । कृ भण्डार ।

१६११. प्रति सं० १६ । पत्र सं० २ से २२ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ३५७ । कृ भण्डार ।

१६१२. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १७६३ आषाढ़ सुदी १५ । वै० सं० ७७२ ।

कृ भण्डार ।

१६१३. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८३४ मंगसिर बुदी ६ । वै० सं० ६६२ । च

भण्डार ।

विशेष—पाद्रे नानगराम ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि कराई ।

१६१४. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ६६५ । च भण्डार ।

१६१५. प्रति सं० २० । पत्र सं० ४१ से १३२ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ६६५ (क) । च

भण्डार ।

१६१६. प्रति सं० २१ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वै० सं० ६६५ (ख) । च भण्डार ।

१६१७. प्रति सं० २२ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वै० सं० ६६५ (ग) । च भण्डार ।

१६१८. प्रति सं० २३ । पत्र सं० ४० से ५० । ले० काल सं० १७०४ ज्येष्ठ सुदी २ । अपूर्णा । वै०

सं० ६२ (घ) । कृ भण्डार ।

१६१९. प्रति सं० २४ । पत्र सं० १८३ । ले० काल सं० १७८८ आषाढ बुदी २ । वै० सं० ३ । ज

भण्डार ।

विशेष—भिण्ड निवासी किसी कायस्थ ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२०. प्रति सं० २५ । पत्र सं० ४ से ८१ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० १५२६ । ट भण्डार ।

१६२१. प्रति सं० २६ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० १७०८ । ट भण्डार ।

१६२२. प्रति सं० २७ । पत्र सं० २३७ । ले० काल सं० १७४६ । वै० सं० १६०६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति राजमल्लकृत गद्य टीका सहित है ।

१६२३. प्रति सं० २८ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । वै० सं० १८६० । ट भण्डार ।

१६२४. समयसारभाषा—जयचन्द्र छावड़ा । पत्र सं० ५१३ । प्रा० १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी

(गद्य) । विषय—अध्यात्म । १० काल सं० १८६४ कार्तिक बुदी १० । ले० काल सं० १६४६ । पूर्णा । वै० सं० ७४८ ।

कृ भण्डार ।

१६२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६६ । ले० काल × । वै० सं० ७४६ । कृ भण्डार ।

१६२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१६ । ले० काल × । वै० सं० ७५० । कृ भण्डार ।

१६२७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३२५ । ले० काल सं० १८८३ । वे० सं० ७५२ । क भण्डार ।

विशेष—सदानुखजी के पुत्र श्योचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३१७ । ले० काल सं० १८७७ आषाढ़ बुदी १५ । वे० सं० १११ । च भण्डार ।

विशेष—बेनीराम ने लखनऊ में नवान गजुद्रीह बहादुर के राज्य में प्रतिलिपि की ।

१६२९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३७५ । ले० काल सं० १९५२ । वे० सं० ७७३ । क भण्डार ।

१६३०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १०१ से ३१२ । ले० काल × । वे० सं० ६९३ । च भण्डार ।

१६३१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३०५ । ले० काल × । वे० सं० १४३ । ज भण्डार ।

१६३२. समयसारकलशाटीका ..... । पत्र सं० २०० से ३३२ । आ० ११८×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १७१५ ज्येष्ठ बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० ६२ । छ भण्डार ।

विशेष—बंध मोक्ष सर्व विशुद्ध ज्ञान और स्याद्वाच बूलिका ये चार अधिकार पूर्ण हैं । शेष अधिकार नहीं है । पहिले कलशा दिये है फिर उनके नीचे हिन्दी में अर्थ है । समयसार टीका इलोक सं० ५४६५ हैं ।

१६३३. समयसारकलशाभाषा..... । पत्र सं० ६२ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६९१ । च भण्डार ।

१६३४. समयसारवचनिका..... । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ६९४ । च भण्डार ।

१६३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० ६९४ (क) । च भण्डार ।

१६३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । वे० सं० ३९६ । च भण्डार ।

१६३७. समाधितन्त्र—पूज्यपाद । पत्र सं० ५१ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५६ । क भण्डार ।

१६३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । वे० सं० ७५८ । क भण्डार ।

१६३९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १९ । ले० काल सं० १९३० वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७५९ । क भण्डार ।

१६४०. समाधितन्त्र..... । पत्र सं० १६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योगशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६४ । च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१६४१. समाधितन्त्रभाषा..... । पत्र सं० १३८ से १९२ । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—योगशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । बीच के पत्र भी नहीं हैं ।

१६४२. समाधितन्त्रभाषा—माणकचन्द्र । पत्र सं० २६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—योगशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२२ । अ भण्डार ।

विशेष—मूल ग्रन्थ पूज्यपाद का है ।

१६४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १६४२ । वे० सं० ७५५ । क भण्डार ।

१६४४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० ७५७ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी ग्रंथ ऋषभदास निगोत्या द्वारा शुद्ध किया गया है ।

१६४५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ७६ । क भण्डार ।

१६४६. समाधितन्त्रभाषा—नाथूराम दोसी । पत्र सं० ४१५ । प्रा० १२<sup>३</sup>×७ इक्ष । भाषा—हिन्दी ।

विषय—योग । २० काल सं० १६२३ चैत्र सुदी १२ । ले० काल सं० १६३८ । पूर्ण । वे० सं० ७६१ । क भण्डार ।

१६४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१० । ले० काल × । वे० सं० ७६२ । क भण्डार ।

१६४८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६८ । ले० काल सं० १६५३ द्वि० ज्येष्ठ सुदी १० । वे० सं० ७६० ।

क भण्डार ।

१६४९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १७५ । ले० काल × । वे० सं० ६९७ । च भण्डार ।

१६५०. समाधितन्त्रभाषा—पर्यंतधर्मार्थी । पत्र सं० १८७ । प्रा० १२<sup>३</sup>×५ इक्ष । भाषा—गुजराती

लिपि हिन्दी । विषय—योग । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३ । घ भण्डार ।

विशेष—बीच के कुछ पत्र दुबारा लिखे गये हैं । सारंगपुर निवासी पं० उधरगु ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४८ । ले० काल सं० १७४१ कार्तिक सुदी ९ । वे० सं० ११४ । घ

भण्डार ।

१६५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७८१ । छ भण्डार ।

१६५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २०१ । ले० काल × । वे० सं० ७८२ । छ भण्डार ।

१६५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७४ । ले० काल सं० १७७१ । वे० सं० ६९८ । च भण्डार ।

विशेष—समीरपुर में पं० नानिगराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २३२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४२ । छ भण्डार ।

१६५६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १७३८ पौष सुदी ११ । वे० सं० ४४ । ज

भण्डार ।

विशेष—पाण्डे ऊधोनाल काला ने केसरनाल जागी में बहिन नाथी के पठार्थ मीनार में प्रतिलिपि करावायी थी । प्रति गुटका साइज है ।

१६५७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २३८ । ले० काल सं० १७८६ आषाढ सुदी १३ । वे० सं० ५९ । झ

भण्डार ।

१६५८. समाधिमरण..... । पत्र सं० ४ । प्रा० ७<sup>३</sup>×६<sup>३</sup> इक्ष । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३२९ ।

१६५९. समाधिमरणभाषा—द्यानतराय । पत्र सं० ३ । प्रा० ८<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इक्ष । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४२ । झ भण्डार ।

१६६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ७७९ । झ भण्डार ।

१६६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० ७८३ । झ भण्डार ।

१६६०. समाधिमरणभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १०१ । भा० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १६३३ । पूर्ण । वे० सं० ७६६ । क भण्डार ।

विशेष—बाबा कुलोचन्द का सामान्य परिचय दिया हुआ है । टीका बाबा कुलोचन्द की प्रेरणा से की गई थी ।

१६६३. समाधिमरणभाषा—सूरचंद्र । पत्र सं० ७ । भा० ७ $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

१६६४. समाधिमरणभाषा..... । पत्र सं० १३ । भा० १३ $\frac{1}{2}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७८४ । ड भण्डार ।

१६६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८८३ । वे० सं० १७३७ । ट भण्डार ।

१६६६. समाधिमरणस्वरूपभाषा..... । पत्र सं० २५ । भा० १० $\frac{1}{2}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८७८ मंगसिर बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४३१ । अ भण्डार ।

१६६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १८८३ मंगसिर बुदी ११ । वे० सं० ८६ । ग भण्डार ।

विशेष—कालुराम साह ने यह ग्रन्थ लिखवाकर चौधरियो के मन्दिर में चढ़ाया ।

१६६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १८२७ । वे० सं० ६६६ । च भण्डार ।

१६६९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६३४ भादवा सुदी १ । वे० सं० ७०० । च भण्डार ।

१६७०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८८४ भादवा बुदी ८ । वे० सं० २३६ । छ भण्डार ।

१६७१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १८५३ पौष बुदी ६ । वे० सं० १७५ । ज भण्डार ।

विशेष—हरवंश लुहाब्बा ने प्रतिलिपि की थी ।

१६७२. समाधिशतक—पूज्यपाद । पत्र सं० १६ । भा० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६४ । अ भण्डार ।

१६७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ७६ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१६७४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १६२४ वैशाख बुदी ६ । वे० सं० ७७ । ज भण्डार ।

विशेष—संगही पन्नालाल ने स्वयंठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१६७५. समाधिशतकटीका—प्रभाचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५२ । भा० १२ $\frac{1}{2}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १६३५ भादवा सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ७६३ । क भण्डार ।

१६७६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ७६५ । क भण्डार ।



१६७७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १६५८ फागुण बुदी १३ । वे० सं० ३७३ । च विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१६७८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३७४ । च भण्डार ।

१६७९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ७८५ । च भण्डार ।

१६८०. समाधिशतकटीका..... । पत्र सं० १५ । भा० १२×५<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३५ । च भण्डार ।

१६८१. संबोधपंचासिका—गौतमस्वामी । पत्र सं० १६ । भा० ६<sup>२</sup>×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७८६ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी है ।

१६८२. संबोधपंचासिका—रङ्गभू । पत्र सं० ५ । भा० ११×६ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । २० काल × । ले० काल सं० १७१६ पीप सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २२६ । च भण्डार ।

विशेष—पं० बिहारीदासजी ने इसकी प्रतिलिपि करवायी थी । प्रशस्त—

संवत् १७१६ वर्षे मिति पौष वदि ७ सुम दिने महाराजाधिराज श्री जैसिंहजी विजयराज्ये साह श्री हंसराज तत्पुत्र साह श्री गेगराज तत्पुत्र त्रयः प्रथम पुत्र साह राइमलजी । द्वितीय पुत्र साह श्री वलिकर्ण तृतीय पुत्र साह देवसो । जाति साबडा साह श्री रायमलजी का पुत्र पवित्र साह श्री विहारीदासजी लिखायते ।

दोहडा—पूरव श्रावक कौ कहे, गुण इकवीस निवास ।

सो परतखि पेखिये, अंगि बिहारीदास ॥

लिखतं महात्मा नू गरसी पंडित पदमसीजी का चेला खरतर गच्छे वासी मोजे मोहणात् मुकाम दिल्ली मध्ये ।

१६८३. संबोधशतक—द्यानतराय । पत्र सं० ३४ । भा० ११×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७८९ । च भण्डार ।

विशेष—प्रथम २० पत्रो मे चरचा शतक भी है । प्रति दोनो भोर से जली हुई है ।

१६८४. संबोधसत्तरी ..... । पत्र सं० २ से ७ । भा० ११×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८८ । च भण्डार ।

१६८५. स्वरोदय..... । पत्र सं० १६ । भा० १०×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । २० काल × । ले० काल सं० १८१३ मंगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० २४१ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है । देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य उदयराम ने टीका लिखी थी ।

१६८६. स्वानुभवदर्पण—नाथूराम । पत्र सं० २१ । भा० १३×८<sup>३</sup> इञ्च । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १६५६ वैश्व सुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७ । च भण्डार ।

१६८७. हठयोगदीपिका ..... । पत्र सं० २१ । भा० ११×५<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४४४ । च भण्डार ।

## विषय-न्याय एवं दर्शन

१६८८. अध्यात्मकमलमारण्ड—कवि राजमल्ल । पत्र सं० २ से १२ । मा० १०×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—जैन दर्शन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १९७५ । अ भण्डार ।

१६८९. अष्टराती—अकलंकदेव । पत्र सं० १७ । मा० १२×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—जैन दर्शन । २० काल × । ले० काल सं० १७९४ मंगसिर बुदी ८ । पूर्ण । वै० सं० २२२ । अ भण्डार ।

विशेष—देवागम स्तोत्र टीका है । पं० सुखराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६९०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १८७५ फागुन सुदी ३ । वै० सं० १९९१ ज भण्डार ।

१६९१. अष्टसहस्री—आचार्य विद्यानन्दि । पत्र सं० १९७ । मा० १०×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—जैनदर्शन । २० काल × । ले० काल सं० १७९१ मंगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वै० सं० २४४ । अ भण्डार ।

विशेष—देवागम स्तोत्र टीका है । लिपि मुन्दर है । अन्तिम पत्र पीछे लिखा गया है । पं० चोलचन्द ने अपने पठनार्थ प्रतिलिपि कराई । प्रगस्ति—

श्री भूरामल संघ मंडनमणिः, श्री कुन्दकुन्दान्वये श्रीदेशीगणगच्छपुस्तकत्रिधा, श्री देवसंवाप्रणी संवत्सरे चंद्र रंघ मुनीदुमिते (१७९१) मार्गशीर्षमासे शुक्लपक्षे पंचम्यां तिथौ चोलचन्द्रेण विदुषा शुभं पुस्तकमष्टसहस्र्यासप्तप्रमाणेन स्वकीयपठनार्थमायत्तीकृतं ।

पुस्तकमष्टसहस्र्या वै चोलचंद्रेण धीमता ।

ग्रहीतं शुद्धभावेन स्वकर्मक्षयहेतवे ॥१॥

१६९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ४० । अ भण्डार ।

१६९३. आसपरीक्षा—विद्यानन्दि । पत्र सं० २५७ । मा० १२×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—जैन न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १९३६ कात्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वै० सं० ५८ । क भण्डार ।

विशेष—लिपिकार पन्नालाल चौधरी । भोगने से पत्र चिपक गये है ।

१६९४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वै० सं० ५९ । क भण्डार ।

विशेष—कारिका मात्र है ।

१६९५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वै० सं० ३३ । अपूर्ण । च भण्डार ।

१६६६. आत्ममीमांसा—समन्तभद्राचार्य । पत्र सं० ८४ । प्रा० १२<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—जैन न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १६३५ आषाढ सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ६० । क भण्डार ।

विशेष—इस ग्रन्थ का दूसरा नाम 'देवागमस्तोत्र सटीक धष्टशती' दिया हुआ है ।

१६६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०१ । ले० काल × । वे० सं० ६१ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१६६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० ६३ । क भण्डार ।

१६६९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० ६२ । क भण्डार ।

१७००. आत्ममीमांसासंस्कृति—विद्यानन्द । पत्र सं० २२६ । प्रा० १६<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ भाद्रवा सुदी १५ । वे० सं० १४ ।

विशेष—इसका नाम धष्टशती भाष्य तथा धष्टमहर्षी भी है । मालपुरा ग्राम में महागजाधिराज राजसिंह जी के शासनकाल में चतुर्भुज ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी । प्रति काफी बड़ी साइज की है ।

१७०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२५ । ले० काल × । वे० सं० ८६६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति बड़ी साइज की तथा सुन्दर लिखी हुई है । प्रति प्रदर्शन योग्य है ।

१७०२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७२ । प्रा० १२<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इञ्च । ले० काल सं० १७८८ श्रावण सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ७३ । क भण्डार ।

१७०३. आत्ममीमांसाभाषा—जयचन्द्र छ्दाबड़ा । पत्र सं० ६२ । प्रा० १२<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—न्याय । २० काल सं० १८६६ । ले० काल १८६० । पूर्ण । वे० सं० ३६५ । अ भण्डार ।

१७०४. आलापपद्धति—देवसेन । पत्र सं० १० । प्रा० १०<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५० । अ भण्डार ।

विशेष—१ पृष्ठ में ४ पृष्ठ तक प्राभृतसार ४ म ६ तक सप्तभंग ग्रन्थ और है ।

प्राभृतसार—मोह तिमिर मार्तण्ड ग्यजनन्दिपंच शालि.कदवेनेदं कथितं ।

१७०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० २०१० फागुण सुदी ४ । वे० सं० २२३० । अ भण्डार ।

विशेष—आरम्भ में प्राभृतसार तथा सप्तभंगी है । जयपुर में माधूलाल बज ने प्रतिलिपि की थी ।

१७०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ७६ । क भण्डार ।

१७०७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६ । अ भण्डार ।

१७०८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ३ । अ भण्डार ।

१७०९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ४ । अ भण्डार ।

विशेष—मूलग्रन्थ के प्राचार्य मेमिचन्द्र के दृष्टान्त प्रतिलिपि की गयी थी ।

१७१०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७ मे १५ । ले० काल सं० १७८६ । अपूर्णा । वे० सं० ५१५ । अ  
भण्डार ।

१७११. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १० ले० काल × । वे० सं० १८२१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१७१२. ईश्वरवाद ..... पत्र सं० ३ । आ० १०×४<sup>१</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २०  
काल × । पूर्णा । वे० सं० २ । अ भण्डार ।

विशेष—किमी न्याय के ग्रन्थ में उद्धृत है ।

१७१३. गर्भषडारचक्र—देवन्दि । पत्र सं० ३ । आ० ११×४<sup>१</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० २२७ । अ भण्डार ।

१७१४. ज्ञानदीपक ..... पत्र सं० २४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—न्याय । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ६१ । अ भण्डार ।

विशेष—स्वाध्याय करने योग्य ग्रन्थ है ।

१७१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० २३ । अ भण्डार ।

१७१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ से ६४ । ले० काल सं० १८५६ चेत बुदी ७ । अपूर्णा । वे० सं०  
१५६२ । ट भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पृथिव्या निम्न प्रकार है ।

दमो ज्ञान दीपक श्रुत पढो सुखो चित्तधार ।

गब विद्या को मूल ये या विन सकल असार ॥

इति ज्ञानदीपक नामा न्यायश्रुत सपूर्णा ।

१७१७. ज्ञानदीपकवृत्ति ..... पत्र सं० ८ । आ० ६<sup>१</sup>×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० २७६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—

तस्मात् पूर्णविद्वान् निर्व्योदितमनाश्रुत ।

नर्वाकाराभाषिभा शक्या लिङ्गितमीश्वर ॥१॥

ज्ञानदीपकमादाय वृत्ति कृत्यासदासरीः ।

स्वरस्नेहन संयोज्य ज्वालयेदुत्तराधरेः ॥२॥

१७१८. तर्कप्रकरण ..... पत्र सं० ४० । आ० १०×४<sup>१</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २०  
काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १३५८ । अ भण्डार ।

१७१९. तर्कदीपिका ..... पत्र सं० १५ । आ० १४×४<sup>१</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २०  
काल × । ले० काल सं० १८२२ माह मुदा १३ । वे० सं० २२४ । अ भण्डार ।

१७२०. तर्कप्रमाण ... । पत्र सं० ८ से ५० । भा० ६१×४६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय ।  
 २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण एवं जीर्ण । वे० सं० १६४५ । अ भण्डार ।
१७२१. तर्कभाषा—केराव मिश्र । पत्र सं० ४४ । भा० १०×४६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
 न्याय । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ७१ । ख भण्डार ।
१७२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से २६ । ले० काल सं० १७४६ भादवा बुदी १० । वे० सं० २७३ ।  
 क भण्डार ।
१७२३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । भा० १०×४६ इञ्च । ले० काल सं० १६६६ ज्येष्ठ बुदी २ । वे०  
 सं० २२५ । ज भण्डार ।
१७२४. तर्कभाषाप्रकाशिका—बालचन्द्र । पत्र सं० ३५ । भा० १०×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
 विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ५११ । अ भण्डार ।
१७२५. तर्करहस्यदीपिका—गुणरत्नसूरि । पत्र सं० १३५ । भा० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
 विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२६४ । अ भण्डार ।  
 विशेष—यह हरिभद्र के पदुदर्शन मसुच्चय की टीका है ।
१७२६. तर्कसंग्रह—अनंभट्ट । पत्र सं० ७ । भा० ११६×५६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय ।  
 २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०२ । अ भण्डार ।
१७२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८२४ भादवा बुदी ५ । वे० सं० ४७ । ज  
 भण्डार ।  
 विशेष—रावल मूलराज के शासन में लक्ष्मीराम ने जैसलपुर में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।
१७२८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८१२ माह सुदी ११ । वे० सं० ४८ । ज  
 भण्डार ।  
 विशेष—पोथी माणकचन्द लुहाब्बा की है । बिलक विजयराज पोष बुदी १३ संवत् १८१३ यह भी लिखा  
 हुआ है ।
१७२९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १७६३ चैत्र सुदी १५ । वे० सं० १७६५ । ट  
 भण्डार ।  
 विशेष—भामेर के नेमिनाथ चैत्यालय में भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य ( छात्र ) दोदराज ने स्वपठनार्थ  
 प्रतिलिपि की थी ।
१७३०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८४१ मंगसिर बुदी ४ । वे० सं० १७६८ । क  
 भण्डार ।  
 विशेष—बेला प्रतापसागर पठनार्थ ।
१७३१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८३६ । वे० सं० १७६९ । ट भण्डार ।  
 विशेष—सवाई माधोपुर में भट्टारक मुरेन्द्रकीर्ति ने अपने हाथ से प्रतिलिपि की ।

नोट—उक्त ६ प्रतियों के प्रतिरिक्त तर्कसंग्रह की अष्ट भण्डार में तीन प्रतियाँ ( वे० सं० ६१३, ६२६, २०४६ ) ङ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० २७४ ) च्च भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १३६ ) ज भण्डार में ३ प्रतियाँ ( वे० सं० ४६, ४६, ३४० ) ट भण्डार में २ प्रतियाँ ( वे० सं० १७६६, १८३२ ) झोर है ।

१७३२. तर्कसंग्रहटीका ..... पत्र सं० ८ । भा० १२३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४२ । व्य भण्डार ।

१७३३. तार्किकशिरोमणि—रघुनाथ । पत्र सं० ८ । भा० ८×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५८० । अ भण्डार ।

१७३४. दर्शनसार—देवसेन । पत्र सं० ५ । भा० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—दर्शन । २० काल सं० ६६० माघ सुदी १० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४८ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ रचना धारानगर में श्री पार्वनाथ चैत्यालय में हुई थी ।

१७३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८७१ माघ सुदी ५ । वे० सं० ११६ । छ भण्डार ।

विशेष—पं० बल्लराम के शिष्य हरवंश ने नेमिनाथ चैत्यालय ( गोधो के मन्दिर ) जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१७३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० २८२ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टब्बा टीका सहित है ।

१७३७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ३ । व्य भण्डार ।

१७३८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १८५० भाद्रपदा सुदी ८ । वे० सं० ५ । व्य भण्डार ।

विशेष—जयपुर में पं० मुखरामजी के शिष्य केसरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

१७३९. दर्शनसारभाषा—नथमल । पत्र सं० ८ । भा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—दर्शन । २० काल सं० १६२० प्र० श्रावण सुदी ४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६५ । क भण्डार ।

१७४०. दर्शनसारभाषा—पं० शिवजीलाल । पत्र सं० २८१ । भा० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी ( गद्य ) । विषय—दर्शन । २० काल सं० १६२३ माघ सुदी १० । ले० काल सं० १६३६ । पूर्ण । वे० सं० २६४ । क भण्डार ।

१७४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२० । ले० काल × । वे० सं० २८६ । ङ भण्डार ।

१७४२. दर्शनसारभाषा..... पत्र सं० ७२ । भा० ११<sup>३</sup>×५<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८० । ख भण्डार ।

१७४३. द्विजबचनचपेटा । पत्र सं० ६ । भा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ३८२ । अ भण्डार ।

१७४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १७६८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१७४५. नयचक्र—देवसेन । पत्र सं० ४५ । भा० १०३×७ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सात नयो का वर्णन । २० काल × । ले० काल सं० १६४३ पौष सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ३३५ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम मुलबोधार्थ माला पद्धति भी है । उक्त प्रति के अतिरिक्त क भण्डार में तृतीय प्रति ( वे० सं० ३५३, ३५४, ३५६ ) च छ भण्डार में एक एक प्रति ( वे० सं० १७७ व १०१ ) भी है ।

१७४६. नयचक्रभाषा—हेमराज । पत्र सं० ५१ । भा० १२२×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी ( गद्य ) । विषय—सात नयो का वर्णन । २० काल सं० १७२६ फागुण सुदी १० । काल सं० १६३८ । पूर्ण । वे० सं० ३५७ । क भण्डार ।

१७४७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १७२६ । वे० सं० ३५८ । क भण्डार ।

विशेष—७७ पत्र से तत्त्वार्थ सूत्र टीका के अनुसार नय वर्णन है ।

नोट—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त ङ, छ, ज, झ भण्डारों में एक एक प्रति ( वे० सं० ३४५, १८७, ६२३, ८१ ) कमसः भी है ।

१७४८. नयचक्रभाषा—... । पत्र सं० १०६ । भा० १०३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । २० काल × । ले० काल सं० १६४८ आषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३५६ । क भण्डार ।

१७४९. नयचक्रभावप्रकाशिनीटीका—निहालचन्द्र अग्रवाल । पत्र सं० १३७ । भा० १२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी ( गद्य ) । विषय—न्याय । २० काल सं० १८६७ । ले० काल सं० १६४४ । पूर्ण । वे० सं० ३६० । क भण्डार ।

विशेष—यह टीका कानपुर कैंट में की गई थी ।

१७५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०४ । ले० काल × । वे० सं० ३६१ । क भण्डार ।

१७५१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २२४ । ले० काल सं० १६३८ फागुण सुदी ६ । वे० सं० ३६२ । क भण्डार ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की गयी थी ।

१७५२. न्यायकुमुदचन्द्रोदय—भट्ट अकलंकदेव । पत्र सं० १५ । भा० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रंथ १ से ६ तक न्यायकुमुदचन्द्रोदय ५ परिच्छेद तथा शेष पृष्ठों में भट्टाकलकशाकाकानुष्मृति प्रवचन प्रवेश है ।

१७५३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८६४ पौष सुदी ७ । वे० सं० २७० । छ भण्डार ।

विशेष—मवाई राम ने प्रतिलिपि की थी ।

१७५४. न्यायकुमुदचन्द्रिका—प्रभाचन्द्रदेव । पत्र सं० ५८८ । प्रा० १४<sup>३</sup>/<sub>५</sub> इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । १० काल × । ले० काल सं० १६३७ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—सटाकलंक कृत न्यायकुमुदचन्द्रोदय की टीका है ।

१७५५. न्यायदीपिका—धर्मभूषणयति । पत्र सं० ३ से ८ । प्रा० १०<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२०७ । अ भण्डार ।

नोट—उक्त प्रति के प्रतिरिक्त क भण्डार मे २ प्रतिया ( वे० सं० ३६७, ३६८ ) घ एवं च भण्डार मे एक २ प्रति ( वे० सं० ३४७, १८० ) च भण्डार मे २ प्रतिया ( वे० सं० १८०, १८१ ) तथा ज भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० ५२ ) गौर है ।

१७५६. न्यायदीपिकाभाषा—सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० ७१ । प्रा० १४<sup>४</sup>/<sub>३</sub> इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—दर्शन । १० काल सं० १६३० । ले० काल सं० १६३८ वैशाल सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३४६ । क भण्डार ।

१७५७. न्यायदीपिकाभाषा—संधी पन्नालाल । पत्र सं० १६० । प्रा० १२<sup>३</sup>/<sub>७</sub> इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—न्याय । १० काल सं० १६३५ । ले० काल सं० १६४१ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । क भण्डार ।

१७५८. न्यायमाला—परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री भारती तीर्थमुनि । पत्र सं० ८६ से १२७ । प्रा० १०<sup>३</sup>/<sub>५</sub> इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । १० काल × । ले० काल सं० १६०० सावण बुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० २०६३ । अ भण्डार ।

१७५९. न्यायशास्त्र ... । पत्र सं० २ से ५२ । प्रा० १०<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७६ । अ भण्डार ।

१७६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६४६ । अ भण्डार ।

विशेष—किसी न्याय ग्रन्थ से उद्धृत है ।

१७६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५५ । ज भण्डार ।

१७६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६८ । ट भण्डार ।

१७६३. न्यायसार—माधवदेव ( लक्ष्मणदेव का पुत्र ) पत्र सं० २८ से ८७ । प्रा० १०<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । १० काल सं० १७४६ । अपूर्ण । वे० सं० १३४३ । अ भण्डार ।

१७६४. न्यायसार ... । पत्र सं० २४ । प्रा० १०<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१६ । अ भण्डार ।

विशेष—भाग्य परित्येद तर्कपूर्ण है ।

१७६५. न्यायसिद्धांतमञ्जरी—जानकीनाथ । पत्र सं० १४ से ४६ । प्रा० ६<sup>३</sup>/<sub>३</sub> इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । १० काल × । ले० काल सं० १७७४ । अपूर्ण । वे० सं० १५७८ । अ भण्डार ।



१७६६. न्यायसिद्धांतमञ्जरी—भट्टाचार्य चूडामणि । पत्र सं० २८ । प्रा० १३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३ । ज भण्डार ।

विशेष—सटीक प्राचीन प्रति है ।

१७६७. न्यायसूत्र..... । पत्र सं० ४ । प्रा० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०२१ । अ भण्डार ।

विशेष—हेम व्याकरण मे से न्याय सम्बन्धी सूत्रो का सग्रह किया गया है । आशानन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१७६८. पट्टरीति—विष्णुभट्ट । पत्र सं० २ मे ६ । प्रा० १०×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १२६७ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुस्तिका— इति साधर्म्य वैधर्म्य संग्रहोऽयं कियानपि विष्णुभट्टः पट्टरीत्या बालव्युत्पत्तये कृतः । प्रति प्राचीन है ।

१७६९. पत्रपरीक्षा—विद्यानन्दि । पत्र सं० १५ । प्रा० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ७८९ । अ भण्डार ।

१७७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३९ । ले० काल सं० १६७७ आसोज मुदी ९ । वे० सं० १६४६ । ट भण्डार ।

विशेष—शेरपुरा मे श्री जिन चैत्यालय मे लिखमोचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१७७१. पत्रपरीक्षा—पात्र केशरी । पत्र सं० ३७ । प्रा० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १९३४ आसोज मुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ४५७ । क भण्डार ।

१७७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १६७७ । वे० सं० ४५८ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१७७३. परीक्षामुख—सायिकयनन्दि । पत्र सं० ५ । प्रा० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३९ । क भण्डार ।

१७७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १८६६ भाद्रवा मुदी १ । वे० सं० २१३ । च भण्डार ।

१७७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ९७ मे १२६ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २१४ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१७७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २८१ । छ भण्डार ।

१७७७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १९०८ । वे० सं० १४५ । ज भण्डार ।

लेखन काल अष्टमे व्योम क्षिति निधि भूमि ते भाद्रमासगे )

१७७८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १७३८ । ट भण्डार ।

१७७६. परीक्षामुखभाषा—जयचन्द छात्रदा। पत्र सं० ३०६। भा० १२×७ $\frac{१}{२}$  इञ्च। भाषा—हिन्दी (राज)। विषय—न्याय। २० काल सं० १८६३ भाषाद सुदी ४। ले० काल सं० १९४०। पूर्ण। वे० सं० ४५१। क भण्डार।

१७८०. प्रति सं० २। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। वे० सं० ४५०। क भण्डार।  
विशेष—प्रति सुन्दर अक्षरों में है। एक पत्र पर हाशिया पर सुन्दर बेलें हैं। अन्य पत्रों पर हाशिया में केवल रेखाये ही दी हुई हैं। लिपिकार ने अन्य अक्षर छोड़ दिया प्रतीत होता है।

१७८१. प्रति सं० ३। पत्र सं० १२४। ले० काल सं० १९३० मगसिर सुदी २। वे० सं० ५९। घ भण्डार।

१७८२. प्रति सं० ४। पत्र सं० १२०। भा० १० $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च। ले० काल सं० १८७८ श्रावण सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ५०५। क भण्डार।

१७८३. प्रति सं० ५। पत्र सं० २१८। ले० काल ×। वे० सं० ६३९। च भण्डार।

१७८४. प्रति सं० ६। पत्र सं० १९५। ले० काल सं० १९१६ कार्तिक सुदी १४। वे० सं० ६४०। ख भण्डार।

१७८५. पूर्वमीमांसार्थप्रकरण-संग्रह—लोगाक्षिभास्कर। पत्र सं० ९। भा० १२ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{१}{२}$  इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—दर्शन। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६। ज भण्डार।

१७८६. प्रमाणनयतत्त्वालोकालंकारटीका—रत्नप्रभसूरि। पत्र सं० २८८। भा० १२×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—दर्शन। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४९६। क भण्डार।

विशेष—टीका का नाम 'रत्नाकरावतारिका' है। मूलकर्ता वादिवेव सूरि है।

१७८७. प्रमाणनिरुध्य...। पत्र सं० ९४। भा० १२ $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—दर्शन। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४९७। क भण्डार।

१७८८. प्रमाणपरीक्षा—आ० विद्यानंदि। पत्र सं० ९६। भा० १२×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—न्याय। २० काल ×। ले० काल सं० १९३४ आसोज सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ४९८। क भण्डार।

१७८९. प्रति सं० १०। पत्र सं० ४८। ले० काल ×। वे० सं० १७९। ज भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। इति प्रमाण परीक्षा ममासा। मितिराधाडमासस्यपक्षेस्यामलके त्रियो तृतीयाया प्रमाणान्य परीक्षा लिखिता ललु ॥१॥

१७९०. प्रमाणपरीक्षाभाषा—भागचन्द। पत्र सं० २०२। भा० १२ $\frac{१}{२}$ ×७ इञ्च। भाषा—हिन्दी (राज)। विषय—न्याय। २० काल सं० १९१३। ले० काल सं० १९३८। पूर्ण। वे० सं० ४९९। क भण्डार।

१७९१. प्रति सं० २। पत्र सं० २१९। ले० काल ×। वे० सं० ५००। क भण्डार।

१७९२. प्रमाणप्रमेयकलिका—नरेन्द्रसेन। पत्र सं० ६७। भा० १२×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—न्याय। २० काल ×। ले० काल सं० १९३८। पूर्ण। वे० सं० ५०१। क भण्डार।

१७६३. प्रमाणमीमांसा—विद्यानन्द । पत्र सं० ४० । प्रा० ११६×७३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६२ । क भण्डार ।

१७६४. प्रमाणमीमांसा..... । पत्र सं० ६२ । प्रा० ११६×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय ।  
२० काल × । ले० काल सं० १६५७ आर्यग मुदी १३ । पूर्ण । वै० सं० ५०२ । क भण्डार ।

१७६५. प्रमेयकमलमार्चण्ड—आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं० १७६ । प्रा० १३×५ इञ्च । भाषा—  
संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ३७८ । अ भण्डार ।

विशेष—पृष्ठ १३८ तथा २७६ से आगे नहीं है ।

१७६६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६३८ । ले० काल सं० १६४२ ज्येष्ठ मुदी ५ । वै० सं० ५०३ । क  
भण्डार ।

१७६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ५०४ । क भण्डार ।

१७६८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११८ । ले० काल × । वै० सं० १६१७ । ट भण्डार ।

विशेष—५ पत्रों तक मङ्गल टीका भी है । सर्वज्ञ मित्रि ने मदेहवादियों के लक्षण तक है ।

१७६९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४ से ३४ । प्रा० १०×८ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं०  
२१४७ । ट भण्डार ।

१८००. प्रमेयरत्नमाला—अनन्तवीर्य । पत्र सं० १५६ । प्रा० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १६३४ भाद्रवा मुदी ७ । वै० सं० ४५२ । क भण्डार ।

विशेष—परीक्षामुख की टीका है ।

१८०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२७ । ले० काल सं० १८६८ । वै० सं० २३७ । च भण्डार ।

१८०२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १७६७ माघ मुदी १० । वै० सं० १०१ । छ  
भण्डार ।

विशेष—तक्षकपुर में रत्नश्रुति ने प्रतिलिपि की थी ।

१८०३. बालबोधिनी—शांकर भगति । पत्र सं० १३ । प्रा० ८×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १३६२ । अ भण्डार ।

१८०४. भावश्रीपिका—कृष्ण शर्मा । पत्र सं० ११ । प्रा० १३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
न्याय । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १८६५ । ट भण्डार ।

विशेष—सिद्धान्तमञ्जरी की व्याख्या की हुई है ।

१८०५. महाविद्यायिहम्बन..... । पत्र सं० १२ से १६ । प्रा० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १५५३ फाल्गुण मुदी ११ । अपूर्ण । वै० सं० १६८६ । अ भण्डार ।

विशेष—सद्यत् १५५३ वर्षे फाल्गुण मुदी ११ सोमे अष्टौह श्रीपलनमध्ये एतत् पत्राणि निखितानि  
सम्पूर्णानि ।

१८०६. युक्त्यनुशासन—आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं० ६ । भा० १२३×७३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—न्याय । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६०४ । क अण्डार ।

१८०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । ६०५ । क अण्डार ।

१८०८. युक्त्यनुशासनटीका—विद्यानन्दि । पत्र सं० १८८ । भा० १२३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—न्याय । १० काल × । ले० काल सं० १६३४ पीष मुदी ३ । पूर्ण । वै० सं० ६०१ । क अण्डार ।

विशेष—बाबा तुलोचन्द ने प्रतिलिपि कराई थी ।

१८०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वै० सं० ६०२ । क अण्डार ।

१८१०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४२ । ले० काल सं० १६४७ । वै० सं० ६०३ । क अण्डार ।

१८११. धीतरागस्तोत्र—आ० हेमचन्द्र । पत्र सं० ७ । भा० ११३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—दर्शन । १० काल × । ले० काल सं० १५१२ घासोज मुदी १२ । पूर्ण । वै० सं० २५२ । अ अण्डार ।

विशेष—चित्रकूट दुर्ग में प्रतिलिपि की गई थी । संवत् १५१२ वर्षे घासोज मुदी १२ दिने श्री चित्रकूट

दुर्गे अभिषक्त ।

१८१२. वीरद्वाराश्रितिका—हेमचन्द्रसूरि । पत्र सं० ३३ । भा० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

दर्शन । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ३७७ । अ अण्डार ।

विशेष—३३ में आगे पत्र नहीं है ।

१८१३. पद्मदर्शनवार्त्ता..... । पत्र सं० २८ । भा० ८×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १५१ । ट अण्डार ।

१८१४. पद्मदर्शनविचार..... । पत्र सं० १० । भा० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

दर्शन । १० काल × । ले० काल सं० १७२४ माह मुदी १० । पूर्ण । वै० सं० ७४२ । क अण्डार ।

विशेष—सागानेर में जोधराज गोदीका ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । श्लोको का हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

१८१५. पद्मदर्शनसमुच्चय—हरिभद्रसूरि । पत्र सं० ७ । भा० १२३×५ इञ्च । विषय—दर्शन । १०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७०९ । क अण्डार ।

१८१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वै० सं० ६८ । घ अण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन शुद्ध एवं संस्कृत टीका सहित है ।

१८१७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वै० सं० ७४३ । क अण्डार ।

१८१८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १५७० भाववा मुदी २ । वै० सं० ३६६ । अ

अण्डार ।

१८१९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वै० सं० १८६४ । ट अण्डार ।

१८२०. पद्मदर्शनसमुच्चय—गणारत्नसूरि । पत्र सं० १८५ । भा० १३×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—दर्शन । १० काल × । ले० काल सं० १६४७ द्वि० भाववा मुदी १३ । पूर्ण । वै० सं० ७११ । क अण्डार ।

१८२१. पल्लुदर्शनसमुच्चयटीका..... पत्र सं० ६० । भा० १२३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१० । क भण्डार ।

१८२२. सञ्चिप्तवेदान्तशास्त्रप्रक्रिया ... पत्र सं० ४६ । भा० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल सं० १७२७ । वे० सं० ३६७ । व्य भण्डार ।

१८२३. सप्तनयावबोध—मुनि नेत्रसिंह । पत्र सं० ६ । भा० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन (सप्त नयो का वर्णन है) । २० काल × । ले० काल सं० १७४५ । पूर्ण । वे० सं० ३४६ । अ भण्डार ।

प्रारम्भ—

विनय-मुनि-नयक्याः सर्वभावा भुविस्था ।

जिनमतवृत्तिगम्या नेतरेषा मुरम्या ॥

उपकृतश्रुत्यादास्तेष्व्यमाना सदा मे ।

विदधतु मुकुपाते ग्रन्थ अरम्यमाणे ॥१॥

माददैवं प्रणम्यादौ सप्तनयावबोधकं

य ध्रुत्वा येन मार्गेण गच्छन्ति सुषियो जनाः ॥१॥

इसके पश्चात् टीका प्रारम्भ होती है । नीयते प्राप्यते अर्थोऽनेनेति नयः एतौ प्रपणो इति वचनात् ।

अन्तिम—

तत्पुण्यं मुनि-धर्मकर्मनिघर्तं मोक्षं फलं निर्मलं ।

लब्धं येन जनेन निरवयवययात् श्री नेत्रसिंधोदितः ॥

स्याद्वादमार्गाश्रयिणो जनाः ये श्रोष्यति शास्त्रं मुनयावबोधं ।

मोक्ष्यति चैकात्मतं मुदीर्यं मोक्षं गमिष्यति सुखेन भव्याः ॥

इति श्री सप्तनयावबोध शास्त्रं मुनिनेत्रसिंहेन विरचितं शुभं चयं ॥

१८२४. सप्तपदार्थी..... पत्र सं० ३६ । भा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्ञान मतानुसार सात पदार्थों का वर्णन है । ले० काल × । २० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८८ । व्य भण्डार ।

१८२५. सप्तपदार्थी—शिवादित्य । पत्र सं० × । भा० १०<sup>५</sup>/<sub>४</sub>×४<sup>५</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—द्वैतन्याय के अनुसार सप्त पदार्थों का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६३ । ट भण्डार । विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१८२६. सम्मतितर्क—मूलकर्त्ता सिद्धसेन दिवाकर । पत्र सं० ४८ । भा० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०३ । अ भण्डार ।

१८२७. सारसंग्रह—वरदराज । पत्र सं० २ से ७३ । भा० १०<sup>५</sup>/<sub>४</sub>×४<sup>५</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८०१ । क भण्डार ।

१७२८. सिद्धान्तमुक्तावलिटीका—महादेवभट्ट । पत्र सं० ६८ । भा० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १७५६ । वे० सं० ११७२ । अ भण्डार ।

विशेष—जैनतर ग्रन्थ है ।

१८२६. स्याद्वाङ्मूलिका.....। पत्र सं० १५। भा० ११३×५ इंच। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय—दर्शन। २० काल ×। ले० काल म० १६३० कार्तिक बुदी ५। वे० सं० २१६। अ० भण्डार।

विशेष—सागवाहा नगर मे ब्रह्म तेजपाल के पठनार्थ लिखा गया था। समयसार के कुछ पाठो का ग्रन्थ है।

१८३० स्याद्वाङ्मूलिका—मल्लिषेयासूरि। पत्र सं० ८। भा० १२३×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—दर्शन। २० काल ×। ले० काल >। पूर्ण। वे० सं० ८३४। अ० भण्डार।

१८३१. प्रति सं० २। पत्र सं० ५४ मे १०६। ले० काल म० १५२१ माघ सुदी ५। अ० पूर्ण। वे० सं० ३६६। अ० भण्डार।

१८३२. प्रति सं० ३। पत्र म० ३। भा० १२×५३ इंच। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८६१। अ० भण्डार।

विशेष—केवल कारिकामात्र है।

१८३३ प्रति सं० ५। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। अ० पूर्ण। वे० सं० १६०। अ० भण्डार।



## विषय- पुराण साहित्य

१८३४. अजितपुराण—पंडिताचार्य अरुणमणि । पत्र सं० २७३ । भा० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल सं० १७१६ । ले० काल सं० १७८६ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वै० सं० २१८ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १७८६ वर्षे बित्ती ज्येष्ठ सुदी ६ । जहाननवाबमध्ये लिखापितं आचार्य हर्षकीर्तिजी मयाराम स्वपठनार्थं ।

१८३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १७ । छ भण्डार ।

विशेष—१६वें पर्व के ६४वें श्लोक तक है ।

१८३६. अजितनाथपुराण—विजयसिंह । पत्र सं० १२६ । भा० ६३×४ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—पुराण । २० काल सं० १५०५ कार्तिक सुदी १५ । ले० काल सं० १५८० चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वै० सं० २२८ । अ भण्डार ।

विशेष—सं० १५८० में इब्राहीम लोदी के शासनकाल में सिकन्दराबाद में प्रतिलिपि हुई थी ।

१८३७. अनन्तनाथपुराण—गुणभद्राचार्य । पत्र सं० ८ । भा० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १८८५ भाद्रवा सुदी १० । पूर्ण । वै० सं० ७४ । अ भण्डार ।

विशेष—उत्तरपुराण में लिया गया है ।

१८३८. आगामीत्रैसठशलाकापुरुषवर्णन... । पत्र सं० ८ से २१ । भा० १२ $\frac{१}{२}$ ×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ३८ । अ भण्डार ।

विशेष—एकसौ उनहत्तर पुण्य पुरुषों का भी वर्णन है ।

१८३९. आदिपुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र सं० ५२७ । भा० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १८६४ । पूर्ण । वै० सं० ६२ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में पं० खुशालचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

१८४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५०६ । ले० काल सं० १६६४ । वै० सं० १५४ । अ भण्डार ।

१८४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २०४२ । अ भण्डार ।

१८४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४८१ । ले० काल सं० १६५० । वै० सं० ५६ । क भण्डार ।

१८४३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४३७ । ले० काल × । वै० सं० ५७ । क भण्डार ।

विशेष—देहली में सन्नवातजी की कोठी पर प्रतिलिपि हुई थी ।

१८४४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४७१ । ले० काल सं० १६१४ बैशाख सुदी १० । वे० सं० ६ । अ  
भण्डार ।

विशेष—हाथरस नगर में टीकाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१८४५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४६९ । ले० काल सं० १८२४ चैत्र सुदी ५ । वे० सं० १५० । अ  
भण्डार ।

विशेष—मेठ चम्पाराम ने ब्राह्मण श्यामलाल गौड़ में अपने पुत्र पीत्रादि के पठनार्थ प्रतिलिपि करायी ।  
प्रशस्ति काफी बढ़ी है । भरतलण्ड का नवशा भी है जिस पर सं० १७८४ जेठ सुदी १० लिखा है । कही कही कठिन  
शब्दों का संस्कृत में अर्थ भी दिया है ।

१८४६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१६ । ले० काल × । जीर्ण । वे० सं० १४६ । अ भण्डार ।

१८४७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १६०४ मंगसर बुदी ६ । वे० सं० २५२ । अ  
भण्डार ।

१८४८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ४१० । ले० काल सं० १८०४ पौष बुदी ४ । वे० सं० ४५१ । अ  
भण्डार ।

विशेष—नेगमायार ने प्रतिलिपि की थी

१८४९. प्रति सं० १० । पत्र सं० २०६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८८८ । अ भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० २०४२ ) क भण्डार में एक प्रति  
( वे० सं० ३३ ) क भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ६६ ) अ भण्डार में ३ अपूर्ण प्रतियाँ ( वे० सं० ३०, ३१, ३२ )  
अ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ६८६ ) शीर है ।

१८५०. आदिपुराण टिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० २७ । भा० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८०१ । अ भण्डार ।

१८५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८७० । अ भण्डार ।

१८५२. आदिपुराण टिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० ५२ में ६२ । भा० १०२×४३ इञ्च । भाषा—  
संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६ । अ भण्डार ।

विशेष—पुष्पदन्त कृत आदिपुराण का टिप्पण है ।

१८५३. आदिपुराण—महाकवि पुष्पदन्त । पत्र सं० ३२५ । भा० १०२×५ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश ।  
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १६३० आशवा सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ५३ । क भण्डार ।

१८५४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच में कई पत्र नहीं हैं । प्रति प्राचीन है । साहू ब्यहराज ने पंचमी व्रतोत्सवार्थ कर्मशय  
निमित्त यह ग्रन्थ लिखाकर महात्मा लोचनचन्द को भेंट किया ।

१८५५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५४ । क भण्डार ।



१८५६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६५ । ले० काल सं० १७१६ । वे० सं० २६३ । अ. भण्डार ।

विशेष—कही कही कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

१८५७. आदिपुराण—प० दौलतराम । पत्र सं० ४०० । प्रा० १५×६३ इ. अ. भाषा—हिन्दी गद्य ।

विषय—पुराण । २० काल सं० १८२४ । ले० काल सं० १८८३ माघ सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ५ । ग. भण्डार ।

विशेष—कानूराम साहू ने प्रतिलिपि कराई थी ।

१८५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४६ । ले० काल × । वे० सं० १४६ । छ. भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के तीन पत्र नवीन लिखे गये हैं ।

१८५९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५०६ । ले० काल सं० १८२४ आसोज बुदी ११ । वे० सं० १५२ ।

छ. भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के प्रतिरिक्त ग. भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ६ ) छ. भण्डार में ४ प्रतिया ( वे० सं० ६७, ६८, ६९, ७० ) च. भण्डार में २ प्रतिया ( वे० सं० ५१८, ५१९ ) छ. भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १५५ ) तथा म. भण्डार में २ प्रतिया ( वे० सं० ८६, १४६ ) शीर है । ये सभी प्रतिया अपूर्ण हैं ।

१८६०. उत्तरपुराण—गुणभद्राचार्य । पत्र सं० ४२६ । प्रा० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३० । अ. भण्डार ।

१८६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८३ । ले० काल सं० १९०६ आसोज सुदी १३ । वे० सं० ८ । घ. भण्डार ।

विशेष—बीच में २ पृष्ठ नये लिखाकर रखे गये हैं । काष्ठामयी माधुरान्वयी अष्टारक श्री उद्धरमंन की बड़ी प्रशस्ति दी हुई है । जहांगीर बादशाह के शासनकाल में चौहागाराग्यानमर्गत अलाउपुर ( अलवर ) के तिजारा नामक ग्राम में श्री आदिनाथ चैत्यालय में श्री गीरा ने प्रतिलिपि की थी ।

१८६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४० । ले० काल सं० १६३५ माघ सुदी ५ । वे० सं० ५६० । छ. भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संवत्सार्थ दिया है ।

१८६३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३०६ । ले० काल सं० १८२७ । वे० सं० १ । छ. भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में महाराजा पृथ्वीसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई । सा० हंमराज ने संतोषराम के विषय बखतराम को भेंट किया । कठिन शब्दों के संस्कृत में अर्थ भी दिये हैं ।

१८६४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४५३ । ले० काल सं० १८८८ सावण सुदी १३ । वे० सं० ६ । छ. भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में नानंदराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

१८६५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४८४ । ले० काल सं० १६६७ चैत्र बुदी ६ । वे० सं० ८३ । अ. भण्डार ।

विशेष—अष्टारक जयकीर्ति के सिष्य ब्रह्मकल्याणभागर ने प्रतिलिपि की थी ।

१८६६. प्रति सं० ७। पत्र सं० ३६६। ले० काल सं० १७०६ कागुण सुदी १०। वै० सं० ३२४।

अ भण्डार ।

विशेष—पाठे गार्हपत्य ने प्रतिलिपि की थी। कही कही कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं।

१८६७. प्रति सं० ८। पत्र सं० ३७२। ले० काल सं० १७१८ भाद्रवा सुदी १२। वै० सं० २७२।

अ भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त अ, क, घोर, ङ भण्डार में एक-एक प्रति (वै० सं० ६२४, ६७३, ७७) और है। सभी प्रतिया अपूर्ण हैं।

१८६८. उत्तरपुराणटिप्पण—प्रभाचन्द्र। पत्र सं० ५७। प्रा० १२×५३ इञ्च। भाषा—संस्कृत।  
विषय—पुराण। २० कान सं० १०८०। ले० काल सं० १५७५ भाद्रवा सुदी ५। पूर्ण। वै० सं० ५४। अ भण्डार।

विशेष—गृह्यदन्त वृत्त उत्तरपुराण का टिप्पण है। लेखक प्रशस्ति—

श्री धिक्कमादित्य मन्वन्तरे वर्षारणामनीत्यधिक सहस्रे महापुराणविषमपदविबरणसामरनेनमैदांतात् परि-  
जाय मूलटिप्पणवानावनोक्त्य वृत्तमिदं मधुख्यटिप्पणं। अज्ञपातभीतेन श्रीमद् बलात्कारगणश्रीमंघाचार्य मत्कवि  
शिष्येण श्रीचन्द्रमुनिना निज दीर्घाभिभूतरिपुराज्यविजयिनः श्रीभोजदेवस्य ॥ १०२ ॥

इति उत्तरपुराणटिप्पणकं प्रभाचन्द्राचार्यविरचितसमाप्तं ॥ अथ संवत्सरेस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्यगतान्ध  
सन् १५७५ वर्षे भाद्रवा सुदी ५ बुधदिने कुरुजागलदेशे मुलितान मिकंदर पुत्र मुलितानब्राह्मिपुराज्यप्रवर्तमाने श्री काष्ठा-  
संधे माधुराण्वये पुष्करगणे भट्टारक श्यामुगभद्रसूरिदेवाः तदाम्नाये जैमवाल्मीकि जगन्नी पृथु चौ० टोडरमल्लु इदं  
उत्तरपुराण टीका लिखारितं। शुभं भवतु। मागत्यं दधति लेखक पाठकयोः।

१८६९. प्रति सं० ९। पत्र सं० ६१। ले० काल ×। वै० सं० १४५। अ भण्डार।

विशेष—श्री जयमहदेवराज्ये श्रीमद्भारानिवासिना परापरभेदप्रणामोपाजितामलपुष्पनिराकुतास्त्रिमल  
कलकेन श्याम प्रभाचन्द्र पंडितेन महापुराण टिप्पणकं सतश्र्वधिक सहस्रत्रय प्रमाणं कृतमिति।

१८७०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५६। ले० काल ×। वै० सं० १८७६। अ भण्डार।

१८७१. उत्तरपुराणभाषा—सुशालचन्द्र। पत्र सं० ३१०। प्रा० ११×८ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य।  
विषय—पुराण। २० कान सं० १७८६ मंगसिर सुदी १०। ले० काल सं० १६२८ मंगसिर सुदी ५। पूर्ण। वै० सं०  
७४। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति में सुशालचन्द्र का ४३ पद्यों में विस्तृत परिचय दिया हुआ है। बस्तावरलाल ने जयपुर  
में प्रतिलिपि की थी।

१८७२. प्रति सं० २। पत्र सं० २२०। ले० काल सं० १८८३ बैशाख सुदी ३। वै० सं० ७। अ  
भण्डार।

विशेष—काजूराम साहू ने प्रतिलिपि करवायी थी।

१८७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४१५ । ले० काल सं० १८६६ मंगसिर बुदी १ । वै० सं० ६ । च  
भण्डार ।

१८७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३७४ । ले० काल सं० १८५८ कालिक बुदी १३ । वै० सं० १८ । छ  
भण्डार ।

१८७५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४०४ । ले० काल सं० १८६७ । वै० सं० १३७ । झ भण्डार ।

विशेष—च भण्डार में तीन अपूर्ण प्रतियाँ ( वै० सं० ५२२, ५२३, ५२४ ) श्रौर है ।

१८७६. उत्तरपुराणभाषा—संघी पन्नालाल । पत्र सं० ७६३ । भा० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी  
गद्य । विषय—पुराण । २० काल सं० १६३० भाषाबुदी ३ । ले० काल सं० १६४५ मंगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वै०  
सं० ७५ । क भण्डार ।

१८७७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ८० । क भण्डार ।

विशेष—५३४वा पत्र नहीं है । कितने ही पत्र नवीन लिखे हुये हैं ।

१८७८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४६६ । ले० काल × । वै० सं० ८१ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १६७ पत्र नीले रंग के हैं । यह संशोधित प्रति है । छ भण्डार में एक प्रति ( वै०  
सं० ७६ ) च भण्डार में दो प्रतियाँ ( वै० सं० ५२१, ५२५ ) तथा छ भण्डार में एक प्रति श्रौर है ।

१८७९. चन्द्रप्रभुपुराण—हीरालाल । पत्र सं० ३१२ भा० १३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—  
पुराण । २० काल सं० १६१३ भाषा बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १७६ । क भण्डार ।

१८८०. जिनैन्द्रपुराण—भट्टारक जिनैन्द्रभूषण । पत्र सं० ६६० । भा० १६×६ इञ्च । भाषा—  
संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १८४२ फागुण बुदी ७ । वै० सं० ९४ । ब्य भण्डार ।

विशेष—जिनैन्द्रभूषण के प्रशिष्य ब्रह्महर्षसागर के भाई थे । १६५ प्राधिकार है । पुराण के विभिन्न  
विषय हैं ।

१८८१. त्रिषष्टिस्मृति—महापंडित आशाधर । पत्र सं० २४ । भा० १२×५ १/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पुराण । २० काल सं० १२६२ । ले० काल सं० १८१५ शक सं० १६८० । पूर्ण । वै० सं० २३१ । अ  
भण्डार ।

विशेष—नलकञ्चपुर में श्री नेमिजिनचैत्यालय में ग्रन्थ की रचना की गई थी । लेखक प्रचलित किस्मूट  
है ।

१८८२. त्रिषष्टिशालाकापुरुषवर्णन... । पत्र सं० ३७ । भा० १० १/२×५ १/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १६६५ । ट भण्डार ।

विशेष—३७ से आगे पत्र नहीं हैं ।

१८८३. नेमिनाथपुराण—भागचन्द । पत्र सं० १६६ । भा० १२ १/२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।  
विषय—पुराण । २० काल सं० १६०७ सावन बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६ । छ भण्डार ।

१८८४. नेमिनाथपुराण—ब्र० जिनदाम । पत्र सं० २६२ । प्रा० १४४३ इ३ । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६ । छ् भण्डार ।

१८८५. नेमिपुराण (हरिवंशपुराण)—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र सं० १६० । प्रा० ११४३ इ३ । भाषा—

संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १६४७ ज्येष्ठ सुदी ११ । पूर्ण । बी० । वै० सं० १४६ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत् १६४७ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ११ बुधवारं श्री मूलरुचे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दा-  
चार्यान्वये भट्टारक श्रीरघनन्दि देवातस्तु भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तस्तु भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा तस्तु भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवा  
द्वितीय शिष्ये मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्तिदेवा तत्शिष्ये मंडलाचार्य श्रीसुवनकीर्तिदेवा तत्शिष्ये मंडलाचार्य श्रीधमकीर्तिदेवा  
द्वितीयशिष्ये मंडलाचार्य श्रीविशालकीर्तिदेवा तत्शिष्ये मंडलाचार्य श्रीलक्ष्मीचन्द्रदेवा तस्तु मंडलाचार्य श्रीसहजकीर्तिदेवा  
तस्तु मंडलाचार्य श्री श्री श्री नेमचन्द्र तदाम्नाये अग्रवरालान्वये मुगिलयोत्रे साहू जीरा । तस्य भार्या ठाकुरही तयो पुत्राः  
पंच । प्रथम पुत्र सा. जेता तस्य भार्या छानाही । सा. जीरा द्वितीय पुत्र सा. जेता तस्य भार्या बाधाही तयो पुत्राः त्रय  
प्रथम पुत्र मा. देवदास तस्य भार्या माताही तयोः पुत्रात्रय. प्रथमपुत्र बि० सिरवंत द्वितीयपुत्र बि० मागा तृतीयपुत्र बि०  
चतुरा । द्वितीयपुत्र माह पूना तस्य भार्यागुजरहो तृतीयपुत्र सा. बीमा तस्य भार्या मानु । सा जीरा तस्य तृतीयपुत्र सा.  
मानु तस्य भार्या नाथगद्दी तथा पुत्री द्वौ प्रथम पुत्र सा. गोविदा तस्य भार्या पदर्थही तथा पुत्र बि० धमदास द्वि० पुत्र  
बि० मोहनदास । सा. जोगान्मय चतुर्थपुत्र सा. मल्लू तस्य भार्या नीवाही तयोपुत्राः त्रय प्रथमपुत्र सा. उत्ता तस्य भार्या  
धनराजहो तयोपुत्र बि० दूरगदाम द्वितीयपुत्र सा. महोदास तस्यभार्या उदाही तृतीयपुत्र सा. टेमा तस्य भार्या मोरवराही ।  
सा जीरा तस्य पंचमपुत्र सा. माधु तस्यभार्या होलाही तयोपुत्र बि० सावदास तस्यभार्या पूराही एतेषा मध्ये सा.  
मल्लूनेनेदं शास्त्रं हरिवंशपुराणाम्ब ज्ञानावरणोत्कर्मक्षयनिमित्तं मंडलाचार्य श्री श्री लक्ष्मोचन्दनम्बशिष्या अजिका शक्ति  
श्री याथ्य घटागितं ज्ञानावरणोत्कर्मक्षयनिमित्तं ।

१८८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२७ । ले० काल सं० १६६३ आसोज सुदी ३ । वै० सं० ३८७ । क

भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति बाला पत्र बिलकुल फटा हुआ है ।

१८८७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५७ । ले० काल सं० १६४६ माघ सुदी १ । वै० सं० १८६ । अ

भण्डार ।

विशेष—यह प्रति सम्भावती ( धामेर ) में महाराजा मानसिंह के शासनकाल में नेमिनाथ चैत्रास्य के  
लिखी गई थी । प्रशस्ति अधूर्ण है ।

१८८८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८८ । ले० काल सं० १८३४ पौष सुदी १२ । वै० सं० ३१ । छ

भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ३३८ ) छ भण्डार में एक प्रति ( वै० सं०  
५२ ) तथा अ भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ३१३ ) धौर है ।

१८८६. पद्मपुराण—रविषेणाचार्य । पत्र सं० ८७६ । प्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण २० काल × । ले० काल सं० १७०८ चैत्र सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ६३ । अ भण्डार ।

विशेष—टोडा ग्राम निवासी साह खोवसी ने प्रतिलिपि कराकर पं० श्री हर्ष कल्याण का भेंट किया ।

१८६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६५ । ले० काल सं० १८८२ फासोज बुदी ६ । वे० सं० ५२ । ग भण्डार ।

विशेष—जैतराम साह ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि करवाई थी ।

१८६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४४५ । ले० काल सं० १८८५ भाद्रवा बुदी १२ । वे० सं० ४२२ । अ भण्डार ।

१८६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७६८ । ले० काल सं० १८३२ भाद्रवा बुदी १० । वे० सं० १८२ । अ

भण्डार ।

विशेष—चौधरियों के चैत्यालय में पं० गोरधनदास ने प्रतिलिपि की थी ।

१८६३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४८१ । ले० काल सं० १७१२ फासोज बुदी १० । वे० सं० १८३ । अ भण्डार ।

विशेष—घण्टवाल जाल में किसी श्रावक ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ४२६ ) तथा अ भण्डार में दो प्रतियां ( वे० सं० ४०३, ४२५ ) भी हैं ।

१८६४ पद्मपुराण (रामपुराण)—भट्टारक सोमसेन । पत्र सं० ५२० । प्रा० ६<sup>१</sup>/<sub>४</sub> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल शक सं० १६५६ भाद्रवा बुदी १६ । ले० काल सं० १०६८ आषाढ बुदी १८ । पूर्ण । वे० सं० २४ । अ भण्डार ।

१८६५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३५३ । ले० काल सं० १८२५ ज्येष्ठ बुदी ३१ । वे० सं० ४२५ । अ भण्डार ।

विशेष—योगी महेंद्रकीर्ति के प्रसाद से यह रचना की गई ऐसा स्वयं लेखक ने लिखा है । लेखक प्रशस्ति कर्ता हुई है ।

१८६६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०० । ले० काल सं० १८३६ बैशाख बुदी ११ । वे० सं० ८ । अ भण्डार ।

विशेष—आचार्य रत्नकीर्ति के शिष्य नेमिनाथ ने सागानेर में प्रतिलिपि की थी ।

१८६७ प्रति सं० ४ । पत्र सं० २५७ । ले० काल सं० १७६४ भासाव बुदी १३ । वे० सं० ३१२ । अ भण्डार ।

विशेष—सागानेर में गोष्ठी के भण्डार में प्रतिलिपि हुई ।

१८६८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २५७ । ले० काल सं० १७६४ आसोज बुदी १३ । वे० सं० ३१२ ।  
अ भण्डार ।

विशेष—यागानेर में गोधो के मन्दिर में मङ्कराम ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त ऋ भण्डार में २ प्रतिया ( वे० सं० ४२५, ४२६ ) अ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० २०४ ) तथा छ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ५६ ) और है ।

१८६९. पद्मपुराण—भ० धर्मकीर्ति । पत्र सं० २०७ । घा० १३×६ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
पुराण । २० काल सं० १८३५ कार्तिक मुदी १३ । वे० सं० ३ । छ भण्डार ।

विशेष—जीवनराम ने रामगढ नगर में प्रतिलिपि की थी ।

१८७० पद्मपुराण ( उत्तरखण्ड )..... । पत्र सं० १७६ । घा० ६×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १६२३ । ट भण्डार ।

विशेष—वैष्णव पद्यपुराण है । बीचके कुछ पत्र चूहोने काट दिये हैं । अन्त में श्रीकृष्ण का वर्णन भी है ।

१८७१. पद्मपुराणभाषा—पं० दौलतराम । पत्र सं० ४६६ । घा० १४×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।  
२० काल सं० १८२३ माघ मुदी ६ । ले० काल सं० १६१८ । पूर्णा । वे० सं० २२०४ । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजा रामसिंह के शासनकाल में पं० शिवदीनजी के समय में मोतीलाल गोदोका के पुत्र श्री  
गणेशचन्द ने श्रीरत्नलाल कासर्नावान में प्रतिलिपि कराकर पाटोदी के मन्दिर में चढाया ।

१८८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४१ । ले० काल सं० १८८२ आसोज मुदी ६ । वे० सं० ५४ । ग  
भण्डार ।

विशेष—नेतराम साहू ने मवाईराम गोधा से प्रतिलिपि करवायी थी ।

१८८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५१ । ले० काल सं० १८६७ । वे० सं० ४२७ । ङ भण्डार ।

विशेष—इन प्रतिया के अतिरिक्त अ भण्डार में दो प्रतिया ( वे० सं० ४१०, २२०३ ) क और ग भण्डार  
में एक एक प्रति ( वे० सं० ४२४, ५३ ) घ भण्डार में २ प्रतिया ( वे० सं० ५५, ५६ ) च और ज भण्डार में दो  
तथा एक प्रति ( वे० सं० ६२३, ६२४, व २५२ ) तथा झ भण्डार में २ प्रतिया ( वे० सं० १६, ८८ ) और है ।

१८७४. पद्मपुराणभाषा—खुशालचन्द । पत्र सं० २०६ । घा० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।  
विषय—पुराण । २० काल सं० १७८३ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १०८७ । अ भण्डार ।

१८७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २०६ से २६७ । ले० काल सं० १८४५ सावण बुदी ५५ । वे० सं०  
५८२ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की प्रतिलिपि महाराजा प्रतापसिंह के शासनकाल में हुई थी ।

इसी भण्डार में ( वे० सं० ३४१ ) पर एक अपूर्णा प्रति और है ।

१६०६. पाण्डवपुराण—भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र सं० १७३ । घा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पुराण । २० काल सं० १६०८ । ले० काल सं० १७२१ फागुण बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६२ । अ भण्डार ।  
विशेष—ग्रन्थ की रचना श्री शाकवाटपुर में हुई थी । पत्र १३५ तथा १३७ बाद में सं० १८८६ में पुनः  
लिखे गये हैं ।

१६०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३०० । ले० काल सं० १८२६ । वे० सं० ४६५ । क भण्डार ।  
विशेष—ग्रन्थ ब्रह्मश्रीपाल की प्रेरणा से लिखा गया था । महाचन्द्र ने इसका संशोधन किया ।  
१६०८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०२ । ले० काल सं० १६१३ चैत्र बुदी १० । वे० सं० ४४५ । क  
भण्डार ।

विशेष—एक प्रति ट भण्डार में ( वे० सं० २०६० ) और है ।  
१६०९. पाण्डवपुराण—भ० श्रीभूषण । पत्र सं० २४६ । घा० १२×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पुराण । २० काल सं० १६५० । ले० काल सं० १८०० मंगसिर बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २३७ । अ भण्डार ।  
विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है । पत्र बडकगो है ।

१६१०. पाण्डवपुराण—यशःकीर्ति । पत्र सं० ३४० । घा० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—मराठी ।  
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अ पूर्ण । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

१६११. पाण्डवपुराणभाषा—बुलाकीदास । पत्र सं० १४६ । घा० १३×६ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी  
पद्य । विषय—पुराण । २० काल सं० १७५४ । ले० काल सं० १८१२ । पूर्ण । वे० सं० ४६२ । अ भण्डार ।  
विशेष—ग्रन्थ ५ पत्रों में बाईस परीषद् वर्गों में भाषा में है ।  
अ भण्डार में इसकी एक अ पूर्ण प्रति ( वे० सं० १११८ ) और है ।

१६१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५२ । ले० काल सं० १८८६ । वे० सं० ५५ । ग भण्डार ।  
विशेष—कानूराम साहू ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१६१३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०० । ले० काल × । वे० सं० ४४६ । क भण्डार ।  
१६१४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४६ । ले० काल × । वे० सं० ४४७ । क भण्डार ।  
१६१५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५७ । ले० काल सं० १८६० मंगसिर बुदी १० । वे० सं० ६२६ ।  
च भण्डार ।

१६१६. पाण्डवपुराण—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० २२२ । घा० १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी  
गद्य । विषय—पुराण । २० काल सं० १६२३ बेशाव बुदी २ । ले० काल सं० १६३७ पोष बुदी १२ । पूर्ण । वे०  
सं० ४६३ । क भण्डार ।

१६१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२० । ले० काल सं० १६४६ कार्तिक मुदी १५ । वे० सं० ४६४ ।  
क भण्डार ।

विशेष—रामरत्न पाराशर ने प्रतिलिपि की थी ।  
क भण्डार में इसकी एक प्रति ( वे० सं० ४४८ ) और है ।

१६१८. पुराणसार—श्रीचन्द्रमुनि । पत्र सं० १०० । प्रा० १०<sup>३</sup>×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल सं० १०७७ । ले० काल सं० १६०६ ब्राह्मण मुदी १३ । पूर्ण । वै० सं० २३६ । अ भण्डार ।

विशेष—धामेर ( धाम्रगढ ) के राजा भारवल के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

१६१९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६९ । ले० काल सं० १५४३ फाल्गुण बुदी १० । वै० सं० ४७१ । क भण्डार ।

१६२०. पुराणसारसंग्रह—भ० भकलकीर्ति । पत्र सं० १५६ । प्रा० १२×५<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १८५६ मंगल बुदी ९ । पूर्ण । वै० सं० ४६९ । क भण्डार ।

१६२१ बालपद्मपुराण—पं० पन्नालाल वाकलीवाल । पत्र सं० २०३ । प्रा० ८×५<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १६०६ चैत्र बुदी १५ । पूर्ण । वै० सं० ११३८ । अ भण्डार ।

विशेष—लिपि बहुत सुन्दर है । कनकते में रामप्रदीप ( रामदीप ) ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२२. भागवत द्वादशम् स्कंध टीका..... । पत्र सं० ३१ । प्रा० १४×७<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अ पूर्ण । वै० सं० २१७८ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्रों के बीच में मूल तथा ऊपर नीचे टीका दी हुई है ।

१६२३. भागवतमहापुराण ( सप्तमस्कंध )..... । पत्र सं० ६७ । प्रा० १४<sup>३</sup>×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २०८८ । ट भण्डार ।

१६२४ प्रति सं० २ (षष्ठम स्कंध)..... । पत्र सं० ६२ । ले० काल × । अ पूर्ण । वै० सं० २०२६ । ट भण्डार ।

विशेष—बीच के कई पत्र नहीं हैं ।

१६२५. प्रति सं० ३ । ( पञ्चम स्कंध ) ..... । पत्र सं० ८३ । ले० काल सं० १८३० चैत्र बुदी १२ । वै० सं० २०६० । ट भण्डार ।

विशेष—चौबे सरूपराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२६. प्रति सं० ४ (अष्टम स्कंध).... । पत्र सं० ११ से ४७ । ले० काल × । अ पूर्ण । वै० सं० २०६१ । ट भण्डार ।

१६२७. प्रति सं० ५ (तृतीय स्कंध)..... । पत्र सं० ६७ । ले० काल × । अ पूर्ण । वै० सं० २०६२ । ट भण्डार ।

विशेष—६७ में आये पत्र नहीं हैं ।

वै० सं० २८८ से २०६२ तक ये सभी स्कंध श्रीधर स्वामी कृत संस्कृत टीका सहित हैं ।

१६२८. भागवतपुराण..... । पत्र सं० १४ से ६३ । प्रा० १०<sup>३</sup>×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अ पूर्ण । वै० सं० २१०६ । ट भण्डार ।

विशेष—६०वां पत्र नहीं है ।



१६२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० २११३ । ट भण्डार ।

विशेष—द्वितीय स्कंध के तृतीय अध्याय तक की टीका पूर्ण है ।

१६३०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४० ने १०५ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २१७२ । ट भण्डार ।

विशेष—तृतीय स्कंध है ।

१६३१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २१७३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम स्कंध के द्वितीय अध्याय तक है ।

१६३२. मल्लिनाथपुराण—सकलकीर्ति । पत्र सं० ४२ । आ० १०५५ डब्ब । भाषा—संस्कृत । विषय—  
चरित्र । १० काल × । ले० काल १८८८ । वे० सं० २०८ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ८३६ ) भी है ।

१६३३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १७२० माह मुद्री १४ । वे० सं० १७१ । क

भण्डार ।

१६३४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १६६३ माह मुद्री ६ । वे० सं० १७२ ।

विशेष—उदयचन्द लुहाड़िया ने प्रतिलिपि करके शिवराम धर्मरत्नदत्ता के मन्दिर में रखी ।

१६३५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १८१० माह मुद्री ३ । वे० सं० १३६ । ख

भण्डार ।

१६३६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १८८१ माह मुद्री ८ । वे० सं० १३६ । ख

भण्डार ।

१६३७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १८६१ माह मुद्री ८ । वे० सं० १८७ । ख

भण्डार ।

विशेष—जयपुर में शिवलाल गोधा ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

१६३८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० १२ । ख भण्डार ।

१६३९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३२ । ले० काल सं० १७८६ माह मुद्री ३ । वे० सं० २१० । ख

भण्डार ।

१६४०. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ४० । ले० काल सं० १८६१ माह मुद्री ४ । वे० सं० १५२ । ख

भण्डार ।

विशेष—शिवलाल साहू ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाई थी ।

१६४१. मल्लिनाथपुराणभाषा—सेवाराज पाटनी । पत्र सं० ३६ । आ० १२५७ डब्ब । भाषा—

हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ६८८ । अ भण्डार ।

१६४२. महापुराण ( संक्षिप्त ) । पत्र सं० १७ । आ० ११५७ डब्ब । भाषा—संस्कृत । विषय—  
पुराण । १० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ५८६ । ख भण्डार ।

१६४३. महापुराण—जिनमेनाचार्य । पत्र सं० ७०४ । प्रा० १४×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल < । पूर्ण । वै० सं० ७७ ।

विशेष—मलिकीति कृत टीका सहित है ।

य् भण्डार मे एक अपूर्णे प्रति ( वै० सं० ७८ ) और है ।

१६४४. महापुराण—महाकवि पुष्यदन्त । पत्र सं० ५१४ । प्रा० ६<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×४<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णे । वै० सं० १०१ । अ् भण्डार ।

विशेष—बीच के कुछ पत्र जीर्ण होगये है ।

१६४५. मार्कण्डेयपुराण..... । पत्र सं० ३२ । प्रा० ६×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १८२६ कार्तिक बुदी ३ । पूर्ण । वै० सं० २७३ । छ् भण्डार ।

विशेष—ज् भण्डार मे इसकी दो प्रतियां ( वै० सं० २३३, २४६, ) और हैं ।

१६४६. मुनिमुत्रतपुराण—ब्रह्मचारी कृष्णदास । पत्र सं० १०४ । प्रा० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल म० १६८१ कार्तिक मुदी १३ । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वै० सं० ५७८ । क् भण्डार ।

१६४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२७ । ले० काल × । वै० सं० ७ । छ् भण्डार ।

विशेष—कवि का पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

१६४८. मुनिमुत्रतपुराण—इन्द्रजीत । पत्र सं० ३२ । प्रा० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । २० काल सं० १८४५ पौष बुदी २ । ले० काल सं० १८४७ प्राषाढ बुदी १२ । वै० सं० ४७५ । अ् भण्डार ।

विशेष—रतनलाल ने बटेरपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

१६४९. त्रिगपुराण ..... । पत्र सं० १३ । प्रा० ६×४<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—जैनेतर पुराण । २० काल . । ले० काल < । पूर्ण । वै० सं० २४७ । ज् भण्डार ।

१६५०. वर्द्धमानपुराण—सकलकीर्ति । पत्र सं० १५१ । प्रा० १०<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १८७७ प्रासोज मुदी ६ । पूर्ण । वै० सं० ६० । अ् भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे महात्मा शंभुराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३० । ले० काल १८७१ । वै० सं० ६४६ । क् भण्डार ।

१६५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८२ । ले० काल सं० १८६८ सावन मुदी ३ । वै० सं० ३२८ । अ् भण्डार ।

१६५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११३ । ले० काल सं० १८६२ । वै० सं० ४ । छ् भण्डार ।

विशेष—सांगानेर मे पं० नोनदराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४३ । ले० काल सं० १८४६ । वै० सं० ५ । छ् भण्डार ।

१६५५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४१ । ले० काल सं० १७०५ कालिक बुदी ४ । वे० सं० १५ । अ  
भण्डार ।

१६५६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ११६ । ले० काल × । वे० सं० ४६३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रा० शुभचन्द्रजी, चोलचन्द्रजी, रायचन्द्रजी की पुस्तक है । ऐसा लिखा है ।

१६५७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०७ । ले० काल सं० १८३६ । वे० सं० १८६१ । ट भण्डार ।

विशेष—सवाई माधोपुर में भ० मुरन्दकीर्ति ने आदिनाथ चैत्यालय में लिखवायी थी ।

१६५८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १२३ । ले० काल सं० १६६८ भादवा मुदी १२ । वे० सं० १८६३ ।

ट भण्डार ।

विशेष—बागड महादेश के सागपत्तन नगर में भ० सकलचन्द्र के उपदेश में हुबडजातीय वज्रियाणा गोत्र वाले साहू भाका भार्या बाई नायके ने प्रतिनिलिपि करवायी थी ।

इस ग्रन्थ की घ और च भण्डार में एक एक प्रति ( वे० सं० ८६, ३२६ ) अ भण्डार में ० प्रतिया ( वे० सं० ३२, ४६ ) भी है ।

१६५९. अर्द्धमानपुराण—पं० केशरीसिंह । पत्र सं० ११८ । प्रा० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।

विषय—पुराण । २० काल सं० १८७३ फागुण मुदी १२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४७ ।

विशेष—बालचन्द्रजी छाबडा दीवान जयपुर के पौत्र ज्ञानचन्द्र के आग्रह पर इस पुराण की भाषा रचना की गई ।

च भण्डार में तीन घपूर्णा प्रतिया ( वे० सं० ६७४, ६७५, ६७६ ) छ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १५६ ) भी है ।

१६६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १७३३ । वे० सं० ६७० । छ भण्डार ।

१६६१. वासुपुत्रपुराण..... । पत्र सं० ६ । प्रा० १२३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५८ । छ भण्डार ।

१६६२. विमलनाथपुराण—ब्रह्मकृष्णदास । पत्र सं० ७५ । प्रा० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पुराण । २० काल सं० १६७४ । ले० काल सं० १८३१ वैशाख मुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १३१ । अ भण्डार ।

१६६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल सं० १८६७ चैत्र बुदी ८ । वे० सं० ६६ । घ  
भण्डार ।

१६६४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०७ । ले० काल सं० १६६६ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे० सं० १८ । छ  
भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थकार का नाम ब० कृष्णजिष्णु भी दिया है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

संबत् १६६६ वर्षे ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे श्री धेमलासा महानगरे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्रीमत् काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारके श्री रामतेनान्वये एतदनुक्रमेण भ० श्री रत्नसूषणा तत्पट्टे भ० श्री जयकीर्ति ब० श्री

ममलाग्रज स्यबिराचार्य श्री केजवनेन तत् शिष्यो गध्याय श्री विश्वकीर्ति तत्पुत्र भा० ब्र० श्री दीपजी ब्रह्म श्री राजसागर पुक्तै लिखितं स्वज्ञानावर्गं कर्मधार्थं । ब्र० श्री ५ विद्वनेन तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री ५ जयकीर्ति पं० दीपचन्द पं० भगवन्द युक्तै प्राप्तम पठनार्थं ।

१६६५. शान्तिनाथपुराण—महाकवि अशग । पत्र सं० १४३ । प्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । १० काल द्वाक संवत् ६१० । ले० काल सं० १५५३ भाद्रवा बुदी १२ । पूर्ण । वै० सं० ६६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—संवत् १५५३ वर्षे भाद्रवा वदि बारीस रवौ अर्च ह श्री गधारमध्ये लिखितं पुस्तकं लेखक साठकया चिंजीयात् । श्री मूलभंभे श्री कुंडकुन्दाचार्यान्वये सरस्वती गच्छे बलात्कारणो भट्टारक श्री पद्यनिदिदेवास्तत्वट्ट भट्टारक श्री मुभचन्द्रदेवास्तत्वट्ट भट्टारक जिनचन्द्रदेवाच्छिष्य मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्तिदेवास्तच्छिष्य ब्र० लाला पठनार्थं हृवड न्यातीथ श्रे० हापा भार्या संपूरित श्रुत श्रेष्ठि घना सं० थावर सं० सोमा श्रेष्ठि घना तस्य पुत्र वीरसाल भा० बनादे तथा पुत्र. विद्याधर द्वितीय. पुत्र भमंधर एतै. सर्वैः शान्तिपुराणं लक्षाप्य पात्राय दत्तं ।

ज्ञानवान ज्ञानदानन निर्भयोऽभयदानतः ।

अत्रदानान् मुक्ती नित्यं निर्व्याधी भेषजाद्भवेत् ॥१॥

१६६६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १८४ । ले० काल सं० १८६१ । वै० सं० ६८७ । क भण्डार ।

विशेष—इम ग्रन्थ की क, व्य और ट भण्डार में एक एक प्रति ( वै० सं० ७०४, १६, १६३५ ) और है ।

१६६७. शान्तिनाथपुराण—सुशालचन्द्र । पत्र सं० ५१ । प्रा० १२<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—पुराण । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १५७ । क भण्डार ।

विशेष—उत्तरपुराण मे मे है ।

ट भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति ( वै० सं० १८६१ ) और है ।

१६६८. हरिवंशपुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र सं० ३१४ । प्रा० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पुराण । १० काल द्वाक सं० ७०५ । ले० काल सं० १८३० माघ सुदी १ । पूर्ण । वै० सं० २१६ । अ भण्डार ।

विशेष—२ प्रतियो का सम्मिश्रण है । जयपुर नगर मे पं० हूंगरसो के पठनार्थं ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी ।

इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति ( वै० सं० ८६८ ) और है ।

१६६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२४ । ले० काल सं० १८३६ । वै० सं० ८५२ । क भण्डार ।

१६७०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८७ । ले० काल सं० १८६० ज्येष्ठ सुदी ५ । वै० सं० १३२ । क भण्डार ।

विशेष—गंगाचल नगर में ब्रह्मगंभीरसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

१६७१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २४२ से ५१७ । ले० काल सं० १६२५ कालिक मुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० ४४७ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री पूरणमल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ४४६ ) शीर है ।

१६७२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २७४ में ३१३, ३४१ में ३४३ । ले० काव्य सं० १६६३ कालिक बुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० ७६ । छ भण्डार ।

१६७३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २४३ । ले० काल सं० १६५३ चैत्र बुदी २ । वे० सं० २६० । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजाधिराज मानसिंह के शासनकाल में मागानेर में धादिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

उक्त प्रतियों के अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ८४६ ) छ भण्डार में दा प्रतिया ( वे० सं० ७६ में ) शीर हैं ।

१६७४. हरिवंशपुराण—ब्रह्मजिनदाम । पत्र सं० १२८ । अ० ११३, १४ डब्ब । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । १० काल × । ले० काल सं० १८८० । पूर्ण । वे० सं० २१३ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ जोधराज पाटोदी के बनाये हुये मन्दिर में प्रतिलिपि करवाकर विराजमान किया गया । प्राचीन अपूर्ण प्रति को पीछे पूर्ण किया गया ।

१६७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५७ । ले० काल सं० १६६१ श्रावण बुदी ६ । वे० सं० १३१ । अ भण्डार ।

विशेष—देवपत्नी शुभस्थाने पार्वनाथ चैत्यालय काष्ठामधे नदीतटगच्छे विशागमे राममेदान्वये .... आचार्य कन्याराकोत्तिमा प्रतिलिपि कुनं ।

१६७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४६ । ले० काल सं० १८०४ । वे० सं० १३३ । अ भण्डार ।

विशेष—देहली में प्रतिलिपि की गई थी । लिपिकार ने महम्मदशाह का शासनकाल होना लिखा है ।

१६७७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६७ । ले० काल सं० १७३० । वे० सं० ८८८ । अ भण्डार ।

१६७८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २५२ । ले० काल सं० १७८३ कालिक मुदी ५ । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

विशेष—साह मल्लूकचन्दजी के पठनार्थ बोली ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी । अ० जिनशास भ० मकलकीनि के शिष्य थे ।

१६७९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २६८ । ले० काल सं० १५३७ पौष बुदी ३ । वे० सं० ३३३ । अ भण्डार ।

अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—सं० १५३७ वर्षे पौष बुदी २ मांसे श्री भूतमधे बलाकारगगे मरस्वतीगच्छे श्री

कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० सकलकीर्तिदेवा भ० भुवनकीर्तिदेवाः भ० श्री ज्ञानभूषणेन शिष्यमुनि जयनन्दि पठनार्थं । हूँवद  
ज्ञातीय.....।

१६८०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१३ । ले० काल सं० १६३७ माह बुदी १३ । वे० सं० ४६१ । अ  
भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति विस्तृत है ।

उक्त प्रतियो के अतिरिक्त क, छ एवं अ भण्डारो मे एक एक प्रति ( वे० सं० ८५१, ९०६, ९७ )  
घोर है ।

१६८१. हरिवंशपुराण—श्री भूपण । पत्र सं० ३४५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ४९१ । अ भण्डार ।

१६८२. हरिवंशपुराण—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० २७१ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १६५७ चैत्र मुदी १० । पूर्णा । वे० सं० ८५० । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है ।

१६८३. हरिवंशपुराण—धवल । पत्र सं० ५०२ मे ५२३ । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—अपभ्रंश ।  
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १९९६ । अ भण्डार ।

१६८४. हरिवंशपुराण—यशःकीर्ति । पत्र सं० १६६ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—अपभ्रंश ।  
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १५७३ । फागुण मुदी ९ । पूर्णा । वे० सं० ९८ ।

विशेष—तिजारा ग्राम मे प्रतिलिपि की गई थी ।

ग्रथ मन्वन्तरेऽभिम्न् राज्य मन्वत् १५७३ वर्षे फाल्गुणि शुदि ९ रविवासे श्री तिजारा स्थाने । अलाव-  
लवा राज्य श्री काष्ठ ..... अपूर्णा ।

१६८५. हरिवंशपुराण—महाकवि स्वयंभू । पत्र सं० २० । आ० ९×४ $\frac{१}{२}$  । भाषा—अपभ्रंश । विषय—  
पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ४५० । अ भण्डार ।

१६८६. हरिवंशपुराणभाषा—दौलतराम । पत्र सं० १०० मे २०० । आ० १०×८ इञ्च । भाषा—  
हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । २० काल सं० १८२९ चैत्र मुदी १५ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ९८ । ग  
भण्डार ।

१६८७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६६ । ले० काल सं० १९२६ भादवा मुदी ७ । वे० सं० ९०९ (क)  
अ भण्डार ।

१६८८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२५ । ले० काल सं० १९०८ । वे० सं० ७२८ । अ भण्डार ।

१६८९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७०६ । ले० काल सं० १९०३ आसोज मुदी ७ । वे० सं० २३७ । छ  
भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त छ भण्डार मे तीन प्रतिया ( वे० सं० १३४, १५१ ) छ, तथा अ  
भण्डार मे एक एक प्रति ( वे० सं० ९०९, १४४ ) घोर है ।

१६६०. हरिवंशपुराणभाषा—सुरालचन्द्र । पत्र सं० २०७ । पृ० १४०७ इ० । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । २० काल सं० १७०० बैशाख सुदी ३ । ले० काल सं० १८६० पूर्ण । वै० सं० ३७२ । अ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियो का सम्मिश्रण है ।

१६६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २०२ । ले० काल सं० १८०५ पौष बुदी ८ । अपूर्ण । वै० सं० १५४ ।

अ भण्डार ।

विशेष—१ मे १७२ तक पत्र नहीं है । जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

१६६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३४ । ले० काल × । वै० सं० ४६६ । अ भण्डार ।

विशेष—धारम्भ के ४ पत्रों में मनोहरदास कृत नरक दुल वर्णन है पर अपूर्ण है ।

१६६३. हरिवंशपुराणभाषा..... । पत्र सं० १५० । पृ० १२×५ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ६०७ । अ भण्डार ।

विशेष—एक अपूर्ण प्रति । ( वै० सं० ६०८ ) शोर है ।

१६६४. हरिवंशपुराणभाषा..... । पत्र सं० ३८१ । पृ० ८३×४ इ० । भाषा—हिन्दी गद्य ( राजस्थानी ) । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १६७१ आसोज बुदी ८ । पूर्ण । वै० सं० १०२२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम तथा अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

आदिभाग—प्रथम कथा सम्बन्ध लोखीय है । तैयों कालेयों तैयों समर्थों समर्थों भगवंत महावीर रायनेहे ममोसरीये तेहीज काल, तेही ज समउ, ते भगवंत श्री बंर वद्धमान राजग्रही नगरी भावी समोसरया । ते किमा छड वीतराग चउतीस अतिसइ करी सहित, पइतीस वचन वाणी करी सोभित, चउदइसह साध, छतीस सहस परवरया । अनेक अत्रिक जीव प्रतिबोधता श्रीराजग्रही नगरी भावी समोसरया । तिवारइ वनमाली धानी राजा श्री मंगिक कनड । बधामणी दिधी । सामी धाज श्री वद्धमान भावी समोसरया छइ । सेणीक ते बात साभली नई बधामणी प्रापी । राजा प्राण महाहर्षवत थकउ । वादवानी सामग्री करावण लागउ । ते कि सामा गलीसा ..... कीधउ । पछि धानंद भेरि उछली जय जयकार वद थउ । भवीक लोक सधलाइ धानंद परिषया । धन धन कहता लोक सधलाइ वादिवा चाल्या । पछइ राजा श्रेणक सिबाणक हस्ती सिएगारी उपरि छइठउ । माथइ सेत छत्र धरएउ । उभइ पास चामर डालइ छइ । वदी जण कइ वार करइ छइ । मंगिए जण बडिद बोलइ छइ । पाच शब्द वाजिअ वाजने । चतुरगिनी सेना सजकरी । राय राणा मंडलोक मुकबधनी सामंत चउरासिया..... ।

एक अन्य उदाहरण— पत्र १६८

तिणी अजोप्या नउ हेमरथ राजा राज पाले छइ । तेह राजा नइ धारणी राणी छइ । तेह नउ भाव धर्म उरारि घणउ छइ । तेहनी कुषि ते कुंमर पणइ उरनी । तेह नउ नाम बुधुकीत जाणिवउ । ते पुणु कुमर जाणे सिस ममान छइ । इम करता ते कुंमर जोबन भरिया । तिवारइ पिताइ तेह नई राज भार बाण्यउ । तिवारइ तेग जाना मुब भोगवता काल अतिक्रमइ छइ । बली जिए नउ धर्म घणु करइ छइ ।

## पत्र संख्या ३७१

नागश्री जे नरक गई थी । तेह नी कथा सामलजं । तिग्री नरक माहि थी । ते जीवनीकलियजं । पछइ मरी रोइ सर्प थयज । सयंभू रमरिण द्वीपा माहि । पछइ ते तिहा पाप करिया लागज । पछई बली तिहां थको मरण पाम्यो । बीजे नरक गई तिहा तिन सागर धायु भोगबी । छेदन भेदन तापन दुख भोगबी । बली तिहा थकी ते निकलियज । ते जीव पछइ चंपा नगरी माहि चांडाल उइ धरि पुत्री उपनी तेहा निचकुल भवतार पाम्यजं । पछइ ते एक बार जन माहि तिहा उबर बीरीबा लागी ।

## अन्तिम पाठ—पत्र संख्या ३८०—८१

श्री नेमनाथ तिन त्रिभवरण तारणहार तिग्री सागी बिहार क्रम कीयजं । पछइ देम विदेस नगर पाटणना भवीक लोक प्रबोधीया । बलीत्रिणी सामी समकित ज्ञान चारित्र तप संपनीयज दान दीयज । पछइ गिरनार धाव्या । तिहा समोसर्या । पछइ धरणा लोक संबोध्या । पछइ सहस बरस आउषज भोगवीनइ दस धनुष प्रमाण देह जाणवी । ईग्री परइ घगा दीन गया । पछइ एक मासज गरयज । पछइ जगनाथ जोग धरी नइ । समो सरण त्याग कीयजं । निवारइ ते घातिया कर्म थय करां चउदमइ गुणठणइ रह्या । तिहा थका मोष सिद्धि थया । तिहा घाठ गुण सहित जाणवा । बली पाच सई छत्रीस साध साधइ सुकति गया । तिग्री सामी भचल ठाम लाधज । तेहना मुखनीउपमा दीधी न जाई । ईसा मूलनासवी भागी थया । हिबइ रोक था सुगमार्थ लिखी छइ । जे काई विरुद्ध बात लिखाणी होई ते पोष तिरतो कीज्यो । बली सामनी सालि । जे काई मइ आपरणी बुध थकी । हरबस कथा माहि अथ कोउ छइ लीखीयज होइ । ते मिछ्यामि दुकड था ज्यो ।

संब १६७१ वर्षे आसोज मासे कृष्णपक्षे अष्टमी तिर्था । निखिलं मुनि कान्हूजी पाठलीपुर मध्ये ।  
निज शिष्यणी आर्या सहजा पठनार्थ ।





## काव्य एवं चरित्र

१६६५. अकलङ्कचरित्र—नाथूराम । पत्र सं० १२ । श्रा० १२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—जेनाचार्य अकलङ्क की जीवन कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७६ । अ भण्डार ।

१६६६. अकलङ्कचरित्र..... । पत्र सं० १२ । श्रा० १२ $\frac{1}{2}$ ×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २ । अ भण्डार ।

१६६७. अमरुशतक..... । पत्र सं० ६ । श्रा० १० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६ । अ भण्डार ।

१६६८. अद्भुतसंदेशाख्यप्रबन्ध..... । पत्र सं० ८ । श्रा० ११ $\frac{1}{2}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १७७६ । पूर्ण । वे० सं० ३१६ । अ भण्डार ।

१६६९. अष्टमनाथचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० ११९ । श्रा० १२×५ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—प्रथम तीर्थङ्कर आदिनाथ का जीवन चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६१ पीप बुदी ५५ ; पूर्ण । वे० सं० २०४० । अ भण्डार ।

विषय—ग्रन्थ का नाम आदिपुराण तथा अष्टमनाथ पुराण भी है ।

प्रशस्ति—१५६१ वर्षे पीप बुदी ५५ रवी । श्री मूलसंघे मरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री ६ प्रभाकरद्वेबाः भ० श्री ६ पद्मनिदिदेवा भ० श्री ६ सकलकीर्तिदेवाः भ० श्री ६ भुवनकीर्तिदेवाः भ० श्री ६ प्रभाकरद्वेबाः भ० श्री ६ विजयकीर्तिदेवाः भ० श्री ६ शुभचन्द्रदेवाः भ० श्री ६ मुमतिकीर्तिदेवाः स्वधिवारार्थं श्री ६ नन्दकीर्तिदेवास्तृण्णिय श्री ५ श्रीवतं तं शिष्य ब्रह्म श्री नाकरस्येदं पुस्तकं पठनार्थं ।

२०००. प्रति सं० २ । पत्र सं० २०६ । ले० काल सं० १८८० । वे० सं० १५० । अ भण्डार ।

इस भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० १३५ ) और है ।

२००१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६० । ले० काल सं० १६६७ । वे० सं० ५२ । अ भण्डार ।

एक प्रति वे० सं० ६६६ की और है ।

२००२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६४ । ले० काल सं० १७१७ फागुण बुदी १० । वे० सं० ६४ । अ भण्डार ।

२००३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १८२ । ले० काल सं० १७८३ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे० सं० ६५ । अ भण्डार ।

२००४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १८५५ प्र० श्रावण सुदी ८ । वै० सं० ३० ।

अ. भण्डार ।

विशेष—चिमनराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२००५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १८१ । ले० काल सं० १७७४ ; वै० सं० २८७ । अ. भण्डार ।

इसके प्रतिरिक्त ख. भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० १७६ ) तथा ट. भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० २१=३ ) प्रौर है ।

२००६. ऋतुसंहार—कालिदास । पत्र सं० १३ । प्रा० १०×३३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १६२४ आसोज सुदी १० । वै० सं० ४७१ । अ. भण्डार ।

विशेष—प्रगल्भ—संवत् १६२४ वर्ष अश्विनि सुदि १० दिने श्री मलधारण्ये भट्टारक श्री श्री मानदेव मारि नृत्तगण्यभावदेवेन लिखिता स्वहेतवे ।

२००७. करकण्डुचरित्र—भुनि कनकामर । पत्र सं० ६१ । प्रा० १०<sup>३</sup>×५ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६५ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वै० सं० १०२ । क. भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रगल्भ वाला अग्निम पत्र नहीं है ।

२००८. करकण्डुचरित्र—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ८४ । प्रा० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल सं० १६११ । ले० काल सं० १६५६ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वै० सं० २७७ । अ. भण्डार ।

विशेष—प्रगल्भ—संवत् १६५६ वर्षे मागसिर सुदि ६ भोमे सोमंथा ( सोजत ) ग्रामे नेमनाथ चैत्यालये श्रीमत्काष्ठामये भ० श्री विश्वमेन तत्पट्टे भ० श्री विद्याभूषण तत्तृण्य भट्टारक श्री श्रीभूषण विजिरामेस्तत्शिष्ये त्र० नेमसागर स्वहस्तेन लिखितं ।

प्राचार्यावराचार्य श्री श्री चन्द्रकीर्तिजी तत्तृण्य प्राचार्य श्री हर्षकीर्तिजी की पुस्तक ।

२००९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । वै० सं० २८४ । अ. भण्डार ।

२०१०. कविप्रिया—केशवदेव । पत्र सं० २१ । प्रा० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—काव्य ( भण्डार ) । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ११३ । अ. भण्डार ।

२०११. कादम्बरीटीका ..... । पत्र सं० १५१ मे १८३ । प्रा० १०<sup>३</sup>×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १६७७ । अ. भण्डार ।

२०१२. काव्यप्रकाशसटीक ..... । पत्र सं० ८३ । प्रा० १०<sup>३</sup>×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १६७८ । अ. भण्डार ।

विशेष—टीकाकार का नाम नहीं दिया है ।

२०१३. किराताजुनीय—महाकवि भारवि । पत्र सं० ४६ । प्रा० १०<sup>३</sup>×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ६०२ । अ. भण्डार ।

२०१४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ से ६३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२०१५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८७ । ले० काल सं० १५३० भादवा बुदी ८ । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

भण्डार ।

२०१६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८४२ भादवा बुदी । वे० सं० १२३ । छ भण्डार ।

भण्डार ।

विशेष—साकेतिक टीका भी है ।

२०१७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १८१७ । वे० सं० १२४ । छ भण्डार ।

विशेष—जयपुर नगर मे माधोसिंहजी के राज्य मे पं० युमानोराम ने प्रतिनिधि करवायी थी ।

२०१८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८६ । ले० काल × । वे० सं० ६६ । च भण्डार ।

२०१९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२० । ले० काल × । वे० सं० ६४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति मल्लिनाथ कृत संस्कृत टीका सहित है ।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० ६३८ ) छ भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० ३५ ) च भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० ७० ) तथा छ भण्डार मे तीन प्रतिया ( वे० सं० ६४, २५१, २५२ ) शीर है ।

२०२०. कुमारसम्भव—महाकवि कालिदास । पत्र सं० ४१ । भा० १२×५<sup>३</sup> इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १७८३ मंगसिर सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ६३६ । अ भण्डार ।

विशेष—छ विपक जाने से अक्षर खराब होगये है ।

२०२१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १७५७ । वे० सं० १८४५ । शीर्ष । अ भण्डार ।

२०२२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । वे० सं० १२५ । छ भण्डार । अष्टम सर्ग पर्यंत ।

इनके अतिरिक्त अ एवं क भण्डार मे एक एक प्रति ( वे० सं० ११८०, ११३ ) च भण्डार मे दो प्रतिया ( वे० सं० ७१, ७२ ) व भण्डार मे दो प्रतिया ( वे० सं० १३८, ३१० ) तथा ट भण्डार मे तीन प्रतिया ( वे० सं० २०५२, ३२३, २१०४ ) शीर है ।

२०२३. कुमारसंभवटीका—कनकसागर । पत्र सं० २२ । भा० १०×४<sup>३</sup> इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०३८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

२०२४. सत्र-चूड़ामणि—वादीभसिंह । पत्र सं० ४२ । भा० ११×४<sup>३</sup> इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—काव्य । २० काल सं० १६८७ सावण बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १३३ । छ भण्डार ।

विशेष—इसका नाम जोबंवर चरित्र भी है ।

२०२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८६१ भादवा बुदी ६ । वे० सं० ७३ । च भण्डार ।

भण्डार ।

विशेष—दीवान अमरबन्धजी ने धामलाल वैद्य के पास प्रतिलिपि की थी ।

च भण्डार में एक अपूर्ण प्रति ( वे० सं० ५४ ) धोर है ।

२०२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १६०५ माघ सुदी ५ । वे० सं० ३३२ । अ  
भण्डार ।

२०२७. खण्डप्रशस्तिकाव्य..... । पत्र सं० ३ । भा० ८३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य ।  
१० काल × । ले० काल सं० १८७१ प्रथम भाद्रपदा बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १३१४ । अ भण्डार ।

विशेष—सवाईराम गोधा ने जयपुर में अंबावती बाजार के आदिनाथ चैत्यालय ( मन्दिर पाटोदी ) में  
प्रतिलिपि की थी ।

ग्रन्थ में कुल २१२ श्लोक हैं जिनमें रघुकुलमणि श्री रामचन्द्रजी की मूर्ति की गई है । वेने प्रारम्भ में  
रघुकुल की प्रशंसा फिर दशरथ राम व सीता आदि का वर्णन तथा रावण के मारने में राम के पराक्रम का वर्णन है ।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री खंडप्रशस्ति काव्यानि संपूर्णा ।

२०२८. राजसिंहकुमारचरित्र—विनयचन्द्र सूरि । पत्र सं० २३ । भा० १०३×४६ इंच । भाषा—  
संस्कृत । विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३५ । क भण्डार ।

विशेष—२१ व २२वा पत्र नहीं है ।

२०२९. गीतगोविन्द—जयदेव । पत्र सं० २ । भा० ११३×७३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
काव्य । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२२ । क भण्डार ।

विशेष—भालराराटन में गौड़ ब्राह्मण पंडा भैरवलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२०३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८४४ । वे० सं० १८२६ । ट भण्डार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इसो भण्डार में एक अपूर्ण प्रति ( वे० सं० १७८६ ) धोर है ।

२०३१. गीतमस्वामीचरित्र—मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र । पत्र सं० ५३ । भा० ६३×५ इंच । भाषा—  
संस्कृत । विषय—चरित्र । १० काल सं० १७२६ ज्येष्ठ सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१ । अ भण्डार ।

२०३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८३६ कार्तिक सुदी १२ । वे० सं० १३२ । क  
भण्डार ।

२०३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० ५२ । छ भण्डार ।

२०३४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १६०६ कार्तिक सुदी १२ । वे० सं० २१ । अ  
भण्डार ।

२०३५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० २५६ । अ भण्डार ।

२०३६. शैवमस्वामीचरित्रभाषा—पद्मलाल चौधरी । पत्र सं० १०८ । भा० १३×५ इंच । भाषा—  
हिन्दी । विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल सं० १६४० मगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १३३ । क भण्डार ।

विशेष—मूलग्रन्थकर्ता आचार्य धर्मचन्द्र है । रचना संवत् १४२६ विद्या है जो ठीक प्रतीत नहीं होसक ।

२०३७. घटकर्परकाव्य—घटकर्पर । पत्र सं० ४ । भा० १२×५३ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × ११ ले० काल सं० १८१४ । पूर्ण । वे० सं० २३० । अ भण्डार ।

विशेष—चम्पापुर मे प्रादिनाथ चेत्यालय मे ग्रन्थ लिखा गया था ।

अ धोर व्य भण्डार मे इसकी एक एक प्रति ( वे० सं० १५४८, ७५ ) धोर है ।

२०३८. चन्द्रनाचरित्र—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ३६ । भा० १०×५३ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल सं० १६२५ । ले० काल सं० १८३३ भादवा बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १८३ । अ भण्डार ।

२०३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १८२५ माह बुदी ३ । वे० सं० १७२ । क

भण्डार ।

१०५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८६३ द्वि० श्रावण । वे० सं० १६७ । क

भण्डार ।

२०४१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८० । ले० काल सं० १८३७ माह बुदी ७ । वे० सं० ५४ । क

भण्डार ।

विशेष—सागानेर मे पं० मन्वाहिराम गोधा के मन्दिर मे स्वपठनार्थ प्रतिनिधि हुई थी ।

२०४२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८६१ भादवा बुदी ८ । वे० सं० ५८ । क

भण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० ५७ ) धार है ।

२०४३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८३२ मंगसिर बुदी १ । वे० सं० ५० । अ

भण्डार ।

२०४४. चन्द्रप्रभचरित्र—वीरनदि । पत्र सं० १३० । भा० १२×५ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × ११ ले० काल सं० १५८६ पौष बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ६१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रवास्ति अपूर्ण है ।

२०४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८६ । ले० काल सं० १६४१ मंगसिर बुदी १० । वे० सं० १७४ ।

क भण्डार ।

२०४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८७ । ले० काल सं० १५२४ भादवा बुदी १० । वे० सं० १६ । घ

भण्डार ।

विशेष—प्रतिम प्रवास्ति निम्न प्रकार है—

श्री मल्लेडल वंशे विद्युध मुनि जनामदकंटे प्रसिद्धं कृपानामिति साधुः सफलकलिसललालनेक प्रवीण मय-  
क्यस्तस्मपुत्रे जिनवर वचनाराधको दानन्यासेनेदं बालकाव्य निजकरनिश्चितं चन्द्रनाथस्य सार्धं सं० १५२४ वर्षे भादवा  
बदी ७ ग्रन्थ लिखितं कर्मसायानिमित्तं ।

२०४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५७ से ७४ । ले० काल सं० १७८५ । अपूर्ण । वे० सं० २१७७ । ट  
भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५८५ वर्षे फागुण बुदी ७ रविवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारयगौ श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक  
श्री पद्मनदिदेवा तत्पुत्रं भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवा तत्पुत्रं भट्टारक श्री त्रिभुवनकीर्तिदेवातत्पुत्रं भट्टारक श्री सहसकीर्नि  
देवातत्पुत्रं ब० संजयति इव शास्त्रं ज्ञानावरणी कर्मक्षया निमित्तं लिखायित्वा ठीकुरदारस्थानो... साधु लिखितं ।

इन प्रतियों के प्रतिरिक्त अ भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० ६४६ ) च भण्डार मे दो प्रतिया ( वे० सं०  
६०, ८८ ) ज भण्डार मे तीन प्रतिया ( वे० सं० १०३, १०४, १०५ ) ख एवं ट भण्डार मे एक एक प्रति ( वे० सं०  
१६४, २१६० ) और है ।

२०४८. चन्द्रप्रभकाव्यपञ्जिका—टीकाकार गुणानन्दि । पत्र सं० ८६ । प्रा० १०×४ इंच । भाषा—  
संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ११ । ख भण्डार ।

विशेष—मूलकर्ता धाराचार्य वीरनन्दि । संस्कृत मे संक्षिप्त टीका दी हुई है । १८ सगों मे है ।

२०४९. चंद्रप्रभचरित्रपञ्जिका ... । पत्र सं० २१ । प्रा० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६४ घासांज सुदी १३ । वे० सं० ३२५ । ज भण्डार ।

२०५०. चन्द्रप्रभचरित्र—यशःकीर्ति । पत्र सं० १०६ । प्रा० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—अपभ्रंश ।  
विषय—घाटवे तीर्थङ्कर चन्द्रप्रभ का जीवन चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १६४१ पीप सुदी ११ । पूर्ण । वे०  
सं० ६६ । अ भण्डार ।

विशेष—अपभ्रंश संवत् १६४१ वर्षे पाह शुदि एकादशी बुधवामरे काष्ठासंघे मा ... ( अपूर्ण )

२०५१. चन्द्रप्रभचरित्र—भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र सं० ६५ । प्रा० ११×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १८०४ कार्तिक बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १ । अ भण्डार ।

विशेष—बसवा नगरे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे धाराचर्यवर श्री मेरुकीर्ति के शिष्य पं० परशुरामजी के शिष्य  
नंदराम ने म्वाठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२०५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८३० कार्तिक सुदी १० । वे० सं० ७३ । क  
भण्डार ।

२०५३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १८६५ जेठ सुदी ८ । वे० सं० १६६ । ख  
भण्डार ।

इस प्रति के प्रतिरिक्त ख एवं ट भण्डार मे एक एक प्रति ( वे० सं० ४८, २१६६ ) और है ।

२०५४. चन्द्रप्रभचरित्र—कवि दामोदर ( शिष्य धर्मचन्द्र ) । पत्र सं० १४६ । प्रा० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च ।  
भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल सं० १७२७ भाद्रवा सुदी ६ । ले० काल सं० १८८१ सावण बुदी ६ । पूर्ण ।  
वे० सं० १६ । अ भण्डार ।

विशेष—आदिभाग—

ॐ नमः । श्री परमात्मने नमः । श्री सरस्वत्यै नमः ।

त्रियं चंद्रप्रभो नित्या चंद्रभद्र लालनः ।

अथ कुमुदचंद्रोत्तरचंद्रप्रभो जिनः क्रियात् ॥१॥

कुशासनवचो ब्रूजगतारणहेतवे ।

तेन स्ववाक्यसूरोस्नेहं मपोतः प्रकाशितः ॥२॥

युगादौ येन तीर्थशाधर्मतीर्थं प्रवर्तितः ।

तमहं वृषभं बंदे वृषदं वृषनायकं ॥३॥

चक्री तीर्थकरः कामो मुक्तिप्रियो महावली ।

शातिनाथः सदा शान्तिं करोतु नः प्रशांतिं कृत् ॥४॥

प्रतिम भाग—

भूमन्नेवात्तल ( १७२१ ) शशधराक प्रमे वर्षेऽतीते

नवमिदिवसेमासि भाद्रे सुयोगे ।

रम्ये ग्रामे विरचितमिदं श्रीमहाराष्ट्रनाम्नि

नाभेयसचप्रवरभवने भूटि शोभानिवासे ॥८५॥

रम्यं चतुः सहस्राणि पंचदशयुतानि वै

अनुष्टुपैः समाख्यातं श्लोकैरिदं प्रमाणातः ॥८६॥

इति श्री मंडलसूरिः श्रीभूषण तल्पट्टगच्छेश श्रीधर्मचंद्रशिष्य कवि दामोदरविरचिते श्रीचन्द्रप्रभ चरिते निर्वाण गमन वर्गनं नाम सप्तविंशति नामः सर्गं ॥२७॥

इति श्री चन्द्रप्रभचरितं समाप्तं । संवत् १८४१ श्रावण द्वितीय कृष्णपक्षे नवम्या तिथौ सोमवामरे त्वाई जयनगरे जोधराज पाटोदी कृत मंदिरे लिखतं पं० चोखचंद्रस्य शिष्य दुर्गरासनी तस्य शिष्य कल्याणदासस्य तन् शिष्य भुवालचंद्रं ग स्वहस्तेन पूर्णोद्धतं ॥

२०५५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६२ । ले० काल सं० १८६२ पौष बुदी १४ । वे० म० १७५ । क भण्डार ।

२०५६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १८३४ अषाढ सुदी २ । वे० म० २५५ । क भण्डार ।

विशेष—पं० चोखचन्दनी शिष्य पं० रामचन्द ने ग्रन्थ की प्रतिनिधि की थी ।

२०५७. चन्द्रप्रभचरित्रभाषा—जयचन्द्र छायाका । पत्र सं० ६६ । भा० १२६×६ । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—चरित्र । १० काल ११वो शताब्दी । ले० काल सं० १६४२ ज्येष्ठ सुदी १४ । वे० सं० १६५ । क भण्डार ।

विशेष—केवल दूसरे सर्ग में आये हुये न्याय प्रकरण के श्लोकों की भाषा है ।

इसी भण्डार में तीन प्रतियां ( वे० सं० १६६, १६७, १६८ ) भी हैं ।

२०५८. चारुदत्तचरित्र—कल्याणकीर्ति । पत्र सं० १६ । प्रा० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—मेठ चारुदत्त का चरित्र वर्णन । २० काल सं० १६६२ । ले० काल सं० १७३३ कार्तिक बुधी ६ । अग्रपुर्ण । वे०  
नं० ८७४ । अ. अ. अ. अ. अ.

विशेष—१६ ने भागों के पत्र नहीं हैं । अन्तिम पत्र मौजूद है । बहादुरपुर ग्राम में प० अमोचन्द ने प्रति-  
निधि की थी ।

प्रादिभाग— ३० नमः सिद्धेभ्यः श्रो सारदाई नमः ॥

प्रादि जिनप्रादिस्तु धृति श्री महावीर ।  
श्री गीतम गणधर ननु बलि भारति गुरुगंभीर ॥१॥  
श्री मूलसंघमहिमा धरुणो सरस्वतिगच्छ भृंगार ।  
श्री सकलकीर्ति गुरु अनुक्रमि नंगुश्रीपधनदि भवतार ॥२॥  
तस गुरु भ्राता शुभमति श्री देवकीर्ति मुनिराय ।  
चारुदत्त श्रेष्ठीतणो प्रबंध रचु नमी पाय ॥३॥

प्रादिभाग— ..... अट्टारक सुलकार ॥

सुलकार सोभाग धृति विचक्षण वदि बारण केवारी ।  
अट्टारक श्री पधनदिचरणकंज सेवि हरि ॥१०॥  
एसहु रे गच्छ नायक प्रणामि करि  
देवकीरति रे मुनि निज गुरु मन्य घरी ।  
धरिचित्त चरणो नमि कल्याणकीरति इम भरी ।  
चारुदत्तकुमर प्रबंध रचना रचिभि आदर परिण ॥११॥  
रायदेश मध्यि रे भिलोड डंबसि  
निज रचनायि रे हरिपुर निहसि  
हसि अमर कुमारनितिहां धनपति वित्त बिलसए ।  
प्राशाद प्रतिमा जिन प्रति करि मुकृत संचए ॥१२॥  
मुकृत संचि रे व्रत बहु आचरि  
यान महोद्वरे जिन पूजा करि  
करि उद्व यान गंधर्व चन्द्र जिन प्रासादए ।  
ज्ञान सिद्धर सोहामसु ध्वज कलक कलण विलासए ॥१३॥  
मंडप मध्यि समवसरण सोह  
श्री जिन बिबरे मनोहर मन मोहि ।



मोहि जिनमन प्रति उन्नत मानस्तंभविशालए ।  
 तिहा विजयभद्र विहात मुन्दर जिनसासन रक्षपालए ॥१४॥  
 तथा चोमासि रे रचना करि  
 सोलबाणु पिरे घासो भनुसरि ।  
 भनुसरि घासो शुक्ल पंचमी श्रीगुरु चरणरुदय धरि ।  
 कल्याणकीरति कहि सज्जन अणो भ्रादर करि ॥१५॥

दोहा—भ्रादर ब्रह्म संघ जीतगि विनय सहित सुखकार ।  
 ते देखि चारुदत्त नो प्रबंध रच्यो मनोहार ॥१॥  
 भगिणु मुगिण भ्रादर करि याचक निदिध दान ।  
 इंदो तणो पद ते लहि भ्रमर दीपि बहुमान ॥२॥  
 इति श्री चारुदत्त प्रबंध समाप्तः ॥

विशेष—मवत् १७३३ वर्षे कार्तिक वदि ६ गुरुवारे लिखितं बहादुरपुरग्रामे श्री चितामनी चैत्यालये भट्टा-  
 रक श्री ५ धर्मभूषण तन्वट्टे भट्टारक श्री ५ देविद्रकांति तन्विष्य पंडित श्रीमोचंद स्वहस्तेन लिखितं ।

॥ श्री रस्तु ॥

२०५६. चारुदत्तचरित्र—भारामल्ल । पत्र सं० ५० । भा० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
 चरित्र । २० काल सं० १८१३ सावन बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६७८ । अ भण्डार ।

२०६०. चारुदत्तचरित्र—उदयलाल । पत्र सं० १६ । भा० १२ $\frac{१}{२}$ ×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।  
 विषय—चरित्र । २० काल सं० १६२६ माघ सुदी १ । ले० काल × । वै० सं० १७१ । अ भण्डार ।

२०६१ जम्बूस्वामीचरित्र—ज० जिनदास । पत्र सं० १०७ । भा० १२×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—सम्बुल ।  
 विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १६३३ । पूर्ण । वै० सं० १७१ । अ भण्डार ।

२०६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १७५६ फागुण बुदी ५ । वै० सं० २५५ । अ  
 भण्डार ।

२०६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११४ । ले० काल सं० १८२५ भाद्रवा सुदी १२ । वै० सं० १८४ । क  
 भण्डार ।

अ भण्डार मे एक प्रति ( वै० सं० ५५ ) धोर है ।

२०६४ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११२ । ले० काल × । वै० सं० २६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । प्रथम २ तथा अन्तिम पत्र नये लिखे हुये हैं ।

२०६५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५५ । ले० काल × । वै० सं० १६६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रथम तथा अन्तिम पत्र नये लिखे हुये है ।

२०६६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०४ । ले० काल सं० १८६४ पीथ बुदी १४ । वे० सं० २०० । क  
भण्डार ।

२ ६७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ८७ । ले० काल सं० १८६३ चैत्र बुदी ४ । वे० सं० १०१ । च  
भण्डार ।

विशेष—महात्मा शम्भूराम ने सवाई जयपुर में प्रतिर्लपि की थी ।

२०६८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १८२५ । वे० सं० ३५ । छ भण्डार ।

२०६९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १२३ । ले० काल × । वे० सं० ११२ । अ भण्डार ।

२०७०. जम्बूश्यामीचरित्र—पं० राजमल्ल । पत्र सं० १२९ । प्रा० १२३ × ५३ इच्छ । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—चरित्र । १० काल सं० १६३२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५ । क भण्डार ।

विशेष—१३ सर्गों में विभक्त है तथा इसकी रचना 'टोडर' नाम के साधु के लिए की गई थी ।

२०७१. जम्बूश्यामीचरित्र—विजयकीर्ति । पत्र सं० २० । प्रा० १३ × ८ इच्छ । भाषा—हिन्दी पद्य ।  
विषय—चरित्र । १० काल सं० १८२७ फागुन बुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४० । ज भण्डार ।

२०७२. जम्बूश्यामीचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १८३ । प्रा० १४३ × ५३ इच्छ ।  
भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । १० काल सं० १९३४ फागुण बुदी १४ । ले० काल सं० १९३६ । वे० सं० ४२७ ।  
अ भण्डार ।

२०७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६६ । ले० काल × । वे० सं० १८६ । क भण्डार ।

२०७४. जम्बूश्यामीचरित्र—नाथूराम । पत्र सं० २८ । प्रा० १२३ × ८ इच्छ । भाषा—हिन्दी गद्य ।  
विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल × । वे० सं० १६९ । छ भण्डार ।

२०७५. जिनचरित्र..... । पत्र सं० ६ से २० । प्रा० १० × ४ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र ।  
१० काल । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११०५ । अ भण्डार ।

२०७६. जिनदत्तचरित्र—गुणभद्राचार्य । पत्र सं० ६५ । प्रा० ११ × ५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—  
चरित्र । १० काल × । ले० काल सं० १५९५ ज्येष्ठ बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १४७ । अ भण्डार ।

२०७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल सं० १८१६ माघ बुदी ५ । वे० सं० १८९ । क  
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है ।

२०७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८९३ फागुण बुदी १ । वे० सं० २०३ । क  
भण्डार ।

२०७९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १९०४ आसोब बुदी २ । वे० सं० १०३ । च  
भण्डार ।

२०८०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १८०७ मंगसिर बुदी १३ । वै० सं० १०४ । ख

भण्डार ।

विशेष—यह प्रति पं० चोखचन्द एवं रामबंद की थी ऐसा उल्लेख है ।

छ् भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति ( वै० सं० ७१ ) शीर है ।

२०८१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५७ । ले० काल सं० १६०४ कार्तिक बुदी १२ । वै० सं० ३६ । ख

भण्डार ।

विशेष—गोपीराम बसवा वाले ने कागो मे प्रतिलिपि की थी ।

२०८२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १७८३ मंगसिर बुदी ८ । वै० सं० २४३ । ख

भण्डार ।

विशेष—फिलाय में पं० गोर्डन ने प्रतिलिपि की थी ।

२०८३. जिनदत्तचरित्रभाषा—पञ्जालाल चौधरी । पत्र सं० ७६ । या० १३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी

मद्य । विषय—चरित्र । १० काल सं० १६३६ माघ बुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १६० । क भण्डार ।

२०८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । वै० सं० १६१ । क भण्डार ।

२०८५. जीवंधरचरित्र—भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र सं० १२१ । या० ११×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । १० काल सं० १५६६ । ले० काल सं० १८४० फागुण बुदा १४ । पूर्ण । वै० सं० २२ । अ भण्डार ।

इसी भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतिया ( वै० सं० ८७३, ८६६ ) शीर हैं ।

२०८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७२ । ले० काल सं० १८३१ भाद्रवा बुदी १३ । वै० सं० १०६ । क

भण्डार ।

विशेष—सेसक प्रशस्ति कटी हुई है ।

२०८७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १८६८ फागुण बुदी ८ । वै० सं० ४१ । छ

भण्डार ।

विशेष—सवाई जयनगर मे महाद्वारा जगतसिंह के शासनकाल मे (मिनाथ जिन चैत्यालय ( गोबो कान मन्दिर ) मे बख्तराम कुण्डलाम ने प्रतिलिपि की थी ।

२०८८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०४ । ले० काल सं० १८८० ज्येष्ठ बुदी ५ । वै० सं० ४२ । छ

भण्डार ।

२०८९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६१ । ले० काल सं० १८३३ वैशाख बुदी २ । वै० सं० २७ । ज

भण्डार ।

२०९०. जीवंधरचरित्र—नथब्रह्म विशाखा । पत्र सं० ११४ । या० १२ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—चरित्र । १० काल सं० १८४० । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । वै० सं० ४१७ । अ भण्डार ।

२०६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२३ । ले० काल सं० १६३७ चंद्र बुदी ६ । वे० सं० ५५६ । अ  
भण्डार ।

२०६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०१ मे १५१ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १७५३ । ट  
भण्डार ।

२०६३. जीवंधरचरित्र—पद्मलाल चौधरी । पत्र सं० १७० । अ० १३×५ इच्छ । भाषा—हिन्दी  
गद्य । विषय—चरित्र । २० काल सं० १६३५ । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० २०७ । क भण्डार ।

२०६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३५ । ले० काल × । वे० सं० २१४ । क भण्डार ।

विशेष—श्रुतिम ३५ पत्र चूहो द्वारा खाये हुये है ।

२०६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३२ । ले० काल × । वे० सं० १६२ । छ भण्डार ।

२०६६. जीवंधरचरित्र..... । पत्र सं० ४१ । अ० ११<sup>३</sup>×८<sup>३</sup> इच्छ । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—  
चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २०२६ । अ भण्डार ।

२०६७. रोमिणाहचरित्र—कविरत्न अबुध के पुत्र लक्ष्मणदेव । पत्र सं० ४४ । अ० ११×४<sup>३</sup> इच्छ ।  
भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १५३६ शक १४०१ । पूर्णा । वे० सं० ६६ । अ  
भण्डार ।

२०६८. रोमिणाहचरित्र—दामोदर । पत्र सं० ४३ । अ० १२×५ इच्छ । भाषा—अपभ्रंश । विषय—  
काव्य । २० काल सं० १२८७ । ले० काल सं० १५८२ भादवा बुदी ११ । वे० सं० १२५ । अ भण्डार ।

विशेष—चंदेरी मे आचार्य जितचन्द्र के शिष्य के निमित्त लिखा गया ।

२०६९. त्रैसंशलाकापुरुषचरित्र..... । पत्र सं० ३६ मे ६१ । अ० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इच्छ । भाषा—प्राकृत ।  
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २०६० । अ भण्डार ।

२०७०. दुर्घटकाव्य ..... । पत्र सं० ४ । अ० १२×५<sup>३</sup> इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २०  
काल × । ले० काल × । वे० सं० १८५१ । ट भण्डार ।

२०७१. द्वाश्रयकाव्य—हंसचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६ । अ० १०×४<sup>३</sup> इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—  
काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० १८३२ । ट भण्डार । ( दो सर्ग हैं )

२०७२. द्विसंधानकाव्य—धनञ्जय । पत्र सं० ६२ । अ० १०<sup>३</sup>×५<sup>३</sup> इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—  
काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ८५३ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच के पत्र टूट गये हैं । ६२ से आगे के पत्र नहीं है । इसका नाम राघव पाण्डवीय काव्य  
भी है ।

२०७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ३३१ । क भण्डार ।

२०७४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १५७७ भादवा बुदी ११ । वे० सं० १५८ । क  
भण्डार ।

विशेष—गौर गोत्र बाले श्री सेऊ के पुत्र पदारथ ने प्रतिनिधि की थी ।

३००५. द्विसंधानकाव्यटीका—विनयचन्द्र । पत्र सं० २२ । प्रा० १२३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—काव्य । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । ( पंचम सर्ग तक ) वै० सं० ३३० । क मण्डार ।

३००६. द्विसंधानकाव्यटीका—नेमिचन्द्र । पत्र सं० ३६१ । विषय—काव्य । भाषा—संस्कृत । १०  
काल × । ले० काल सं० १६५२ कालिक मुदी ४ । पूर्ण । वै० सं० ३२६ । क मण्डार ।

विशेष—इसका नाम पद कोमुदी भी है ।

३००७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५८ । ले० काल सं० १८७५ माघ मुदी ८ । वै० सं० १५७ । क  
मण्डार ।

३००८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७० । ले० काल सं० १५०६ कालिक मुदी २ । वै० सं० ११३ । व्य  
मण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है । गोपाचल ( भालियर ) में महाराजा ह्वगरेट के शासनकाल में प्रतिलिपि  
की गई थी ।

३००९. द्विसंधानकाव्यटीका... । पत्र सं० २६४ । प्रा० १०२×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
काव्य । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३२८ । क मण्डार ।

३०१०. धन्यकुमारचरित्र—श्री० गुणभद्र । पत्र सं० ५३ । प्रा० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३३३ । क मण्डार ।

३०११. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ में ४५ । ले० काल सं० १५६७ ग्रामाज मुदी १० । अपूर्ण । वै०  
सं० ३२५ । क मण्डार ।

विशेष—दूद्र गांव के निवासी खम्बेनवाल जातीय ने प्रतिलिपि की थी । उस समय दूद्र ( जयपुर ) पर  
घडसीराय का राज्य लिखा है ।

३०१२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १६५२ द्वि० ज्येष्ठ मुदी ११ । वै० सं० ४३ । व्य  
मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति दी हुई है । अमिर में आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई । लेखक प्रशस्ति  
अपूर्ण है ।

३०१३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १६०४ । वै० सं० १२८ । व्य मण्डार ।

३०१४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३३ । ले० काल × । वै० सं० ३६१ । व्य मण्डार ।

३०१५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १६०३ भाद्रवा मुदी ३ । वै० सं० ४५८ । व्य  
मण्डार ।

विशेष—श्राविका सीवामो ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करके मुनि श्री कमलकीर्ति को भेंट दिया था ।

३०१६. धन्यकुमारचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० १०७ । प्रा० ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ६३ । व्य मण्डार ।

विशेष—वनुर्ष अधिकार तक है ।

३०१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८५० ग्राणह बुदी १३ । वे० सं० २५७ । अ  
मण्डार ।

विशेष—२६ मे ३६ तक के पत्र बाद मे लिखकर प्रति को पूर्ण किया गया है ।

३०१८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८२५ माघ सुदी १ । वे० सं० ३१४ । अ  
मण्डार ।

३०१९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १७८० श्रावण सुदी ४ । अपूर्णा । वे० सं०  
११०४ । अ मण्डार ।

विशेष—१६वा पत्र नहीं है । डॉ० मेघसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

३०२०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८१३ भाद्रवा बुदी ८ । वे० सं० ४४ । अ  
मण्डार ।

विशेष—देवगिरि ( दौमा ) मे पं० बस्तावर के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई । कठिन शब्दों के हिन्दी मे अर्थ  
दिये हे । कुल ७ अधिकार हे ।

३०२१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० १७ । अ मण्डार ।

३०२२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १८९१ बैशाख सुदी ७ । वे० सं० २१८७ । ट  
मण्डार ।

विशेष—संवत् १६९१ वर्षे बैशाख सुदी ७ पुष्यनक्षत्रे बुधनाम जोमे शुक्रवासरं नंदाभनाये बलात्कारगणे  
सरस्वती गच्छे..... ।

३०२३. धन्यकुमारचरित्र—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सं० २४ । भा० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३२ । क मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३०२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १९०१ पौष बुदी ३ । वे० सं० ३२७ । क  
मण्डार ।

विशेष—फोबुलाल टोम्या ने प्रतिलिपि की थी ।

३०२५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १७९० श्रावण सुदी ५ । वे० सं० ८६ । अ  
मण्डार ।

विशेष—भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति ने अपने शिष्य मनोहर के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

३०२६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १९ । ले० काल सं० १८१६ फागुण बुदी ७ । वे० सं० ८७ । अ  
मण्डार ।

विशेष—सवाई अयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३०२७. धन्यकुमारचरित्र—सुरासाक्षर । पत्र सं० ३० । भा० १४×७ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।  
विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७४ । अ मण्डार ।

३०२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० ४१२ । अ भण्डार ।

३०२९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल × । वे० सं० ३३४ । क भण्डार ।

३०३०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० ३२६ । छ भण्डार ।

३०३१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४४ । ले० काल सं० १६६४ कात्तिक बुदी ६ । वे० सं० ५६३ । ष भण्डार ।

भण्डार ।

३०३२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० १८५२ । वे० सं० २४ । म् भण्डार ।

३०३३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० ४६५ । व्य भण्डार ।

विशेष—संतोषराम छाबड़ा मौजमाबाद वाले ने प्रतिलिपि को थी । ग्रन्थ प्रशस्ति काफ़ी विस्तृत है ।

इनके अतिरिक्त च भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ५६४ ) तथा छ और क भण्डार में एक एक प्रति ( वे० सं० १६८ व १२ ) और है ।

३०३४. धन्यकुमारचरित्र..... पत्र सं० १८ । प्रा० १० । ६३ डब्बा । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ३२३ । छ भण्डार ।

३०३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ३२४ । छ भण्डार ।

३०३६. धर्मशर्माभ्युदय—महाकवि हरिचन्द्र । पत्र सं० १५३ । प्रा० १० । ५३ डब्बा । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ६१ । अ भण्डार ।

३०३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८७ । ले० काल सं० १६३२ कात्तिक बुदी ८ । वे० सं० ३४८ । क भण्डार ।

विशेष—नोचे संस्कृत में संकेत दिया हुए है ।

३०३८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८५ । ले० काल × । वे० सं० २०३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ तथा क भण्डार में एक एक प्रति ( वे० सं० १४८१, ३४६ ) और है ।

३०३९. धर्मशर्माभ्युदयटीका—यशःकोत्ति । पत्र सं० ४ में ६६ । प्रा० १२ । ५ डब्बा । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ८५६ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम 'संदेह भ्यात दीपिका' है ।

३०४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३०४ । ले० काल सं० १६५१ आषाढ बुदी १ । पूर्णा । वे० सं० ३४७ । क भण्डार ।

विशेष—क भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ३४६ ) की और है ।

३०४१. नलोदयकाव्य—माणिक्यसूरि । पत्र सं० ३२ से ११७ । प्रा० १० । ६३ डब्बा । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल । ले० काल सं० १४४५ प्र० फागुन बुदी ८ । अपूर्णा । वे० सं० ३४२ । व्य भण्डार ।

पत्र सं० १ में ३१ ५५, ५६ तथा ६२ से ७२ नहीं हैं । दो पत्र बीच के और हैं जिन पर पत्र सं० नहीं है ।

विशेष—इसका नाम 'नवायन महाकाव्य' तथा 'कुबेर पुरान' भी है । इसकी रचना सं० १४६४ के पूर्व हुई थी । जिन रत्नकोष में ग्रन्थकार का नाम माणिक्यसूरि तथा माणिक्यदेव दोनों दिया हुआ है ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १४४५ वर्षे प्रथम फागुन वदि ८ शुक्रं निखितमिदं श्रीमदणहिलपत्तने ।

३०४२. नलाद्यकाव्य—कालिदास । पत्र सं० ६ । घा० १२×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । १० काल × १० काल सं० १८३६ । पूर्ण । वै० सं० ११४३ । अ भण्डार ।

३०४३. नवरत्नकाव्य । पत्र सं० २ । घा० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । १० काल × १० काल × १० पूर्ण । वै० सं० १०६२ । अ भण्डार ।

विशेष—विक्रमादित्य के नवरत्नों का परिचय दिया हुआ है ।

३ ४४ प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × १० सं० ११४६ । अ भण्डार ।

३-४५. नागकुमारचरित्र—मल्लिषेण सूरि । पत्र सं० २२ । घा० १०<sup>१</sup>/<sub>४</sub>×६<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । १० काल × १० काल सं० १५६४ भादवा सुदी १५ । पूर्ण । वै० सं० २३४ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

संवत् १५६४ वर्षे भादवा सुदी १५ सोमदिने श्री मूलसंधे नयाम्नाये बलात्कारपणो सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदा-चार्यान्वये भ० श्री पद्मनदिदेवा त० भ० श्री शुभचन्द्रदेवा त० भ० श्री जिनचन्द्रदेवा त० भ० श्री ब्रभाचन्द्रदेवा तदाम्नाये षण्देलवालाश्रये साह जिणदास तद्गुर्या जमणादे त० साह सागा द्वि० महमा नुर कुंडा सा० मागा भार्या सूर्यदे द्वि० गृ गारदे तृ० मुरतागदे त० सा० आमा, धगापाल आमा भार्या हंकारदे, धगापाल भार्या धारादे । द्वि० मुहागदे । सहसा भार्या स्वरुदे त० सा० पासा द्वि० महिपाल । पासा भार्या मुयुगादे द्वि० पाटमदे त० काल्हा महिपाल महिमादे । बु डा भार्या चादगदे तस्यपुत्र सा० दागा तद्गुर्या दाडिमदे तस्यपुत्र नरसिह एतेषा मध्ये प्रासा भार्या प्रहकारदे इदंशास्त्र निःपठनाचार्य श्री धर्मचंद्राय ।

३०४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १८२६ पीय सुदी ५ । वै० सं० ३६५ । अ भण्डार ।

३०४७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १८०६ चैत्र सुदी ५ । वै० सं० ५० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ६ पत्र नवीन लिखे हुये हैं । १० से १६ तथा ३२वा पत्र किमी प्राचीन प्रति के हैं । अन्त में निम्न प्रकार लिखा है । गाँडे रामचन्द्र के माथे पधराई पोथी । संवत् १८०६ चैत्र वदी ५ सनिवासर दिङ्गी ।

३०४८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १५८० । वै० सं० ३५३ । अ भण्डार ।

३०४९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६४१ माघ सुदी ७ । वै० सं० ४६६ । अ भण्डार ।

विशेष—तक्षकगढ़ में कल्याणराज के समय में घा० भोपाल ने प्रतिनिधि कराई थी ।

३०५०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २१ । ले० काल × १० पूर्ण । वै० सं० १८०७ । अ भण्डार ।



३०५१. नागकुमारचरित्र—पं० धर्मधर । पत्र सं० ५५ । प्रा० १०३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । १० काल सं० १५११ श्रावण सुदी १५ । वै० काल सं० १९१६ बैशाख सुदी १० । पूर्ण । वै० सं० २३० । अ. भण्डार ।

३०५२. नागकुमारचरित्र..... । पत्र सं० २२ । प्रा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । १० काल × । वै० काल सं० १८६१ मादरा बुदी ८ । पूर्ण । वै० सं० ८६ । अ. भण्डार ।

३०५३. नागकुमारचरितटीका—टीकाकार प्रभाचन्द्र । पत्र सं० २ से २० । प्रा० १०×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । १० काल × । वै० काल × । वै० काल × । अ. पूर्ण । वै० सं० २१८८ । अ. भण्डार ।

विवेक—प्रति प्राचीन है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

श्री जयसिधदेवराज्ये श्रीमद्भारानिवासिनो परापरमेष्ठिप्रमाणोपाजितमलपुष्पिनिराकृताखिलकलंकेन श्रीमत्प्रभाचन्द्रपंडितेन श्री मत्पंचमी टिप्पणकं वृत्तमिति ।

३०५४. नागकुमारचरित्र—उदयलाल । पत्र सं० ३६ । प्रा० १३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । १० काल × । वै० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३५४ । अ. भण्डार ।

३०५५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । वै० काल < । वै० सं० ३५४ । अ. भण्डार ।

३०५६. नागकुमारचरित्रभाषा..... । पत्र सं० ४५ । प्रा० १३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । १० काल × । वै० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६७७ । अ. भण्डार ।

३०५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४० । वै० काल < । वै० सं० १७३ । अ. भण्डार ।

३०५८. नेमिजी का चरित्रआणन्द । पत्र सं० २ से ५ । प्रा० १०×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । १० काल सं० १८०४ फागुण सुदी ५ । वै० काल सं० १८५१ । अ. पूर्ण । वै० सं० २२५७ । अ. भण्डार ।

विवेक—अन्तिम भाग—

नेम तस तात सचर मध्ये रे रह्या ज रुड भावो ।

चरत पाल्ये मात सारे सहस बरसना प्राव ॥

सहस बरसना प्रावज पूरा जिरावर ककडी धीगडी ।

प्राठ कर्म कीधा चकचूरा पाव मछ तास सघान पूरा जी ।

संवत १८ बिडोतर फागुण मान मझारो ।

मुद पंचमी सनीसर रे कीधो चरित उदारो ॥

कीधो चरत उदार धारांदा डम जारो छाहो ग्रहफदा ।

धन २ समुद गिरांदा ऋष जेम सह नेम जिरांदा ॥५२॥

इति श्री नेमजी को चरित्र समाप्त ।

सं० १८५१ कैसाले श्री श्री भोजराज जी निखत कन्याराजो राजगढ मध्ये ।

प्राप्ते नेमिजी के मव अथ दिये हुये हैं ।

२१५६. नेमिनाथ के दशमवर्ष ..... । पत्र सं० ७ । प्रा० ६×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र ।  
२० काल × । ले० काल सं० १६१८ । वे० सं० ३५४ । झ भण्डार ।

२१६०. नेमिदूतकाव्य—महाकवि विक्रम । पत्र सं० २२ । प्रा० १३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६१ । क भण्डार ।

विशेष—कालिदास दूत मेघदूत के श्लोकों के अन्तिम चरण की समस्यापूर्ति है ।

२१६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३७३ । व्य भण्डार ।

२१६२. नेमिनाथचरित्र—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० २ मे ७८ । प्रा० १२×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इञ्च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १५८१ पीप मुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० २१३२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है ।

२१६३. नेमिनिर्वाण—महाकवि वाग्भट्ट । पत्र सं० १०० । प्रा० १३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-नेमिनाथ का जीवन वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६० । क भण्डार ।

२१६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १८२३ । वे० सं० ३८८ । क भण्डार ।

विशेष—एक अपूर्ण प्रति क भण्डार में ( वे० सं० ३८६ ) धोर है ।

२१६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८२ । क भण्डार ।

२१६६. नेमिनिर्वाणपंजिका ..... । पत्र सं० ६२ । प्रा० ११<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×८ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-  
काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३९६ । व्य भण्डार ।

विशेष—६२ में आगे पत्र नहीं है ।

प्रारम्भ—धन्वा नेमिश्वरं चित्ते लब्धवानत चतुष्टय ।

कुर्वहं नेमिनिर्वाणमहाकाव्यस्य पंजिका ॥

२१६७. नैषधचरित्र—हर्षकवि । पत्र सं० २ मे ३० । प्रा० १०<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×८ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-  
काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६१ । झ भण्डार ।

विशेष—पंचम सर्ग तक है । प्रति सटीक एवं प्राचीन है ।

२१६८. पद्मचरित्रसार ..... । पत्र सं० ५ । प्रा० १०×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । २०  
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४७ । झ भण्डार ।

विशेष—पद्मपुराण का संक्षिप्त भाग है ।

२१६९. पर्युषणकल्प ..... । पत्र सं० १०० । प्रा० ११<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र ।  
२० काल × । ले० काल सं० १६६६ । अपूर्ण । वे० सं० १०५ । व्य भण्डार ।

विशेष—६३ वा तथा ६५ से ६६ तक पत्र नहीं है । भूतस्फंध का द्वा अध्याय है ।

प्रशस्ति—सं० १६६६ वर्षे पुलतारांमध्ये सुधावक सोत्रं तत्र बभूव हर्म्यी तत्र मुता मुन्यल्लगी मेलुष धडावृते  
बभूव नैन एषा प्रति पं० श्री राजकीर्तिगरिणो विहारेर्जयिता स्वकृपाया ।

२१७०. परिशिष्टपर्व.....। पत्र सं० ५८ से ८०। श्रा० १०<sup>३</sup>×४<sup>२</sup> इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। २० काल × १० काल सं० १६७३। अपूर्णा। वे० सं० १६६०। अ भण्डार।

विशेष—६१ व ६२वा पत्र नहीं है। बीरमपुर नगर में प्रतिलिपि हुई थी।

२१७१. पवनदूतकाव्य—वादिचन्द्रसूरि। पत्र सं० १३। श्रा० १२×५<sup>३</sup> इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। २० काल × १० काल सं० १६५५। पूर्णा। वे० सं० ४२५। क भण्डार।

विशेष—सं० १६५५ में राव के प्रमाद में भाई दुलीचन्द के अवलोकनार्थ ललितपुर नगर में प्रतिलिपि हुई।

२१७२. प्रति सं० २। पत्र सं० १२। ले० काल × १० काल सं० ४५६। क भण्डार।

२१७३. पाण्डवचरित्र—लालवर्द्धन। पत्र सं० ६७। श्रा० १०<sup>३</sup>×४<sup>२</sup> इंच। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—चरित्र। २० काल सं० १७६८। ले० काल सं० १८१७। पूर्णा। वे० सं० १६२३। ट भण्डार।

२१७४. पार्श्वनाथचरित्र—बादिराजसूरि। पत्र सं० ६६। श्रा० १२×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पार्श्वनाथ का जीवन चरित्र। २० काल शक सं० ६४७। ले० काल सं० १५७७ फाल्गुण बुदी ६। पूर्णा। अग्र्यन्त जीर्ण। वे० सं० २२५८। अ भण्डार।

विशेष—पत्र फटे हुये तथा गले हुये हैं। ग्रन्थ का दूसरा नाम पार्श्वपुराण भी है।

प्रशस्ति। नमन प्रकार है—

१। १५७७ वर्षे फाल्गुन बुदी ६ श्री मूलसंघे बलाकारगणे सरस्वतीगन्धे नयामनाय भट्टारक श्री पद्मनिदित्यट्टे भट्टारक श्री शुभचंद्रदेवास्त्यट्टे भट्टारक श्रीजिनचंद्रदेवान्त्यट्टे भट्टारकश्रीभ्राह्मचंद्रदेवान्त्यट्टे माधु गोत्रे साह काशिय तस्य भार्या कांबलदे तयोः पुत्रः सत्तुविद्यदान कल्पवृक्षः साह वध्या तस्य भार्या पदमा तयो पुत्र पंचाङ्ग तस्य भार्या बानाग्ने तयोपुत्रः साह दूलह एते नित्यं प्रशर्मति।

२१७५. प्रति सं० २। पत्र सं० २२। ले० काल × १० काल सं० १०७। अ भण्डार।

विशेष—२२ से आगे पत्र नहीं है।

२१७६. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०५। ले० काल सं० १५६५ फाल्गुण बुदी ०। वे० सं० २१८। अ भण्डार।

विशेष—नमक प्रशस्ति वाला पत्र नहीं है।

२१७७. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३४। ले० काल सं० १८७१ चैत्र बुदी १६। वे० सं० २१६। अ भण्डार।

२१७८. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६५। ले० काल सं० १६८५ आषाढ। वे० सं० १६। अ भण्डार।

२१७९. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६७। ले० काल सं० १७८५। वे० सं० १०५। अ भण्डार।

विशेष—कृदावती में प्रादिनाथ चैत्यालय में गोद्ध न में प्रतिलिपि की थी।

२१८०. पार्श्वनाथचरित्र—भट्टारक सकलकीर्ति । पत्र सं० १२० । छा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पार्श्वनाथ का जीवन वर्णन । १० काल १५वीं शताब्दी । ले० काल सं० १८८८ प्रथम बैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १३१ । अ भण्डार ।

२१८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल सं० १८२३ कार्तिक बुदी १० । वे० सं० ४६६ । क भण्डार ।

२१८२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६१ । ले० काल सं० १७६१ । वे० सं० ७० । घ भण्डार ।

२१८३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७५ मे १३६ । ले० काल सं० १८०२ फागुण बुदी ११ । अपूर्णा । वे० सं० ४५६ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—

संवत् १८०२ वर्षे फाल्गुनमासे कृष्णपक्षे एकादशी बुधे निखितं श्रीउदयपुरनगरमध्येसुभावक-गुण्यप्रभावक-श्रीदेवगुरुभक्तिकारक श्रीतम्यस्त्वमूलद्रादशप्रतधारक सा० श्री दीलतरामजी पठनार्थ ।

२१८४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५२ से २२६ । ले० काल सं० १८५४ मंगसिर सुदी २ । अपूर्णा । वे० सं० २१६ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति दीवान मंगही ज्ञानचन्द्र की थी ।

२ ८५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १७८५ प्र० बैशाख सुदी ८ । वे० सं० २१७ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति लेखकमा ने स्वपठनार्थ दुर्गादास मे लिखवायी थी ।

२१८६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६१ । ले० काल सं० १८५२ श्रावण सुदी ६ । वे० सं० १५ । छ भण्डार ।

विशेष—पं० श्यामजीराम ने अपने शिष्य नोनहराम के पठनार्थ गगाविष्णु मे प्रतिलिपि कराई ।

२१८७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १२३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२१८८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६१ मे १४४ । ले० काल सं० १७८७ । अपूर्णा । वे० सं० १६४५ । ट भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे ३ प्रतिया ( वे० सं० १०१३, ११७४, २३८ ) क तथा घ भण्डार मे एक एक प्रति ( वे० सं० ४६६, ७० ) तथा ङ भण्डार में ४ प्रतिया ( वे० सं० ४५६, ४५६, ४५७, ४५८ ) ब तथा ट भण्डार मे एक एक प्रति ( वे० सं० २०४, २१८४ ) और है ।

२१८९. पार्श्वनाथचरित्र—रङ्गधू । पत्र सं० ८ से ७६ । छा० १०½×५ इंच । भाषा—अरबि । विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २१२७ । ट भण्डार ।

२१९०. पार्श्वनाथपुराण—भूधरदास । पत्र सं० ६२ । छा० १०½×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पार्श्वनाथ का जीवन वर्णन । १० काल सं० १७८६ आषाढ सुदी ५ । ले० काल सं० १८३३ । पूर्ण । वे० सं० ३५६ । अ भण्डार ।

२१६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १६२६ । वे० सं० ४४७ । अ भण्डार ।

विशेष—तीन प्रतिमा धोर है ।

२१६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १८६० माह बुदी ६ । वे० सं० ५७ । ग

भण्डार ।

२१६३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १८६१ । वे० सं० ४५० । ङ भण्डार ।

२१६४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १३८ । ले० काल सं० १८६५ । वे० सं० ४५१ । ङ भण्डार ।

२१६५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२३ । ले० काल सं० १८८१ वीष सुदी १४ । वे० सं० ४५३ । ङ

भण्डार ।

२१६६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४६ मे १३० । ले० काल सं० १६२१ सावन बुदी ६ । वे० सं० १७५ ।

छ भण्डार ।

२१६७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०० । ले० काल सं० १८२० । वे० सं० १०४ । झ भण्डार ।

२१६८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १३० । ले० काल सं० १८५२ फागुण बुदी १४ । वे० सं० १० । च

भण्डार ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी । सं० १८५२ में लूणकरण गोधा ने प्रतिलिपि की ।

२१६९. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४६ से १५४ । ले० काल सं० १६०७ । झपूर्णा । वे० सं० १८४ ।

च भण्डार ।

२२००. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १८६६ आषाढ बुदी १२ । वे० सं० ५८ । ञ

भण्डार ।

विशेष—फतेहलाल संघी दीवान ने सोनियो के मन्दिर में सं० १६४० भाद्रवा सुदी ४ का चढ़ाया ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में तीन प्रतिमा ( वे० सं० ४५५, ४०८, ४७७ ) ग तथा घ भण्डार में एक एक प्रति ( वे० सं० ५६, ७१ ) ङ भण्डार में तीन प्रतिमा ( वे० सं० ४४६, ४५२, ४५४ ) च भण्डार में ५ प्रतिमा ( वे० सं० ६३०, ६३१, ६३२, ६३३, ६३४ ) छ भण्डार में एक तथा झ भण्डार में २ ( वे० सं० १५६, १, २ ) तथा ट भण्डार में दो प्रतिमा ( वे० सं० १६१६, २०७४ ) धोर है ।

२२०१. प्रद्युम्नचरित्र—पं० महासेनाचार्य । पत्र सं० ५८ । प्रा० १०३×४३, इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल × । झपूर्णा । वे० सं० २३६ । च भण्डार ।

२२०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०१ । ले० काल × । वे० सं० ३४५ । च भण्डार ।

२२०३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११८ । ले० काल सं० १५६५ ज्येष्ठ बुदी ४ । वे० सं० ३४६ । च

भण्डार ।

विशेष—संस्कृत १५६५ वर्षे ज्येष्ठ बुदी चतुर्थीदिने शुक्लासरे सिद्धियोगे मूलनक्षत्रे श्रीमूलसंघे नृधाम्नाथे बलत्कास्यगणे सरस्वतीगच्छे ओकुंदकुदाचामान्त्र्ये भ० श्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे म० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचंद्र

देवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्य मंडलाचार्य श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये रामसरनगरे श्रीचंद्रप्रभचैत्यालये खंडेल-  
बालान्वये काटरावालगोत्रे सा० बीरमस्तदभार्या हरषम् । तत्पुत्र सा० वेला तद्भार्या बील्हा तत्पुत्री द्वौ प्रथम साह दामो  
द्वितीय साह पूना । सा० दामा तद्भार्या गोगी तयोः पुत्रः सा० बोदिष तद्भार्या हीरो । सा० पूना तद्भार्या कोहल तयोः  
पुत्रः सा० खरहव एतेषां मध्ये जिनपूवापुरंदरेण सा० चेलाल्येन इदं श्री प्रद्युम्न शास्त्रलियाप्यं ज्ञानावरणीकर्म क्षयार्थं  
निमित्तं सत्पात्रायम श्री धर्म इन्द्राय प्रदत्त ।

२२०४. प्रद्युम्नचरित्र—आचार्य सांमकीति । पत्र सं० १९५ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—चरित्र । २० काल सं० १५३० । ले० काल सं० १७२१ । पूर्ण । वे० सं० १५५ । अ भण्डार ।

विशेष—रचना सन्त 'क' प्रति मे से है । संवत् १७२१ वर्षे आशोष ऋदि ७ शुभ दिने लिखितं प्राबं  
( आमेर ) मध्ये लिखितं प्राचार्य श्री महोचंद्रकोतिजी । लिखितं जोसि श्रीधर ।।

२२०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५३ । ले० काल सं० १८८३ मंगसिर मुदी ५ । वे० सं० ११३ । अ  
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

भट्टारक रत्नभूषण की ग्राम्नाय में कासलीवाल गोत्रीय गोवटीपुरी निवासी श्री राजलालजी ने कर्मोच्ये हैं  
गेलिचपुर आकर हीरालालजी ने प्रतिलिपि कराई ।

२२०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६१ । ग भण्डार ।

२२०७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२४ । ले० काल सं० १८०२ । वे० सं० ६१ । घ भण्डार ।

विशेष—हांसी ( भासी ) वाले भैया श्री डमल्ल भद्रवाल आक्क ने ज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थं प्रतिलिपि  
करवाई थी । पं० जयरामदास के शिष्य रामचन्द्र को समर्पण की गई ।

२२०८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११६ से १६५ । ले० काल सं० १८६६ सावन मुदी १२ । वे० सं०  
२०७ । ङ भण्डार ।

विशेष—लिखित पंडित संगहीजी का मन्दिर का महाराजा श्री सवाई जगतसिंहजी राजमध्ये लिखी पंडित  
गोवर्द्धनदामेन ग्रामार्थ ।

२२०९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २२१ । ले० काल सं० १८३३ भावण मुदी ३ । वे० सं० १९ । छ  
भण्डार ।

विशेष—पंडित सवाईराम ने सागानेर में प्रतिलिपि की थी । ये आ० रत्नकीर्तिजी के शिष्य थे ।

२२१०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २०२ । ले० काल सं० १८१६ मार्गशीर्ष मुदी १० । वे० सं० २१ ।  
ज भण्डार ।

विशेष—बलतराम ने स्वपठनार्थं प्रतिलिपि की थी ।

२२११. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २७४ । ले० काल सं० १८०४ भादवा बुदी ६ । वे० सं० ३७४ । अ  
भण्डार ।

विशेष—अगरबन्दजी चादवाड ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इसके प्रतिरिक्त अ भण्डार मे तीन प्रतिया ( वे० सं० ४१६, ६४८, २०८६ तथा क भण्डार मे एक प्रति  
( वे० सं० ५०८ ) शीर है ।

२२२२. प्रद्युम्नचरित्र ... । पत्र सं० ५० । घा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र ।  
१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३५ । अ भण्डार ।

२२२३. प्रद्युम्नचरित्र—सिंहकवि । पत्र सं० ४ से ८६ । घा० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इंच । भाषा—अपभ्रंश ।  
विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २००४ । अ भण्डार ।

२२२४. प्रद्युम्नचरित्रभाषा—मन्नालाल । पत्र सं० ५०१ । घा० १३×५ इंच । भाषा—हिन्दी (गद्य) ।  
विषय—चरित्र । १० काल सं० १६१६ ज्येष्ठ बुदी ५ । ले० काल सं० १६३७ वैशाख बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४६४ ।  
क भण्डार ।

२२२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२२ । ले० काल सं० १६३३ मंगसिर सुदी २ । वे० सं० ५०६ । क  
भण्डार ।

२२२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७० । ले० काल × । वे० सं० ६३८ । अ भण्डार ।

विशेष—रचयिता का पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

२२२७. प्रद्युम्नचरित्रभाषा..... । पत्र सं० २७१ । घा० ११<sup>२</sup>×७<sup>३</sup> इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—  
चरित्र । १० काल × । ले० काल सं० १६१६ । पूर्ण । वे० सं० ४२० । अ भण्डार ।

२२२८. प्रीतिकरचरित्र—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सं० २१ । घा० १२<sup>२</sup>×५<sup>३</sup> इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल सं० १८२७ मंगसिर बुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १२६ । अ भण्डार ।

२२२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० ५३० । क भण्डार ।

२२२०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११६ । अ भण्डार ।

विशेष—२२ से ३१ पत्र नहीं हैं । प्रति प्राचीन है । दो तीन तरह की लिपि है ।

२२२१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १८१० वैशाख । वे० सं० १२१ । अ भण्डार ।

२२२२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६७६ प्र० आशुष बुदी १० । वे० सं० १२८ ।

अ भण्डार ।

२२२३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८२१ आशुष बुदी ७ । वे० सं० ६१ । अ  
भण्डार ।

विशेष—पं० चोखन्द के दिग्ग पं० रामचन्द्रजी ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

इसकी दो प्रतियां अ भण्डार मे ( वे० सं० १२०, २८६ ) शीर हैं ।

२२२४. प्रीतिकरचरित्र—जोधराज गोदीका । पत्र सं० १० । प्रा० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल सं० १७२१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८२ । अ मण्डार ।

२२२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० १५६ । छ मण्डार ।

२२२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ मे ६३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३६ । छ मण्डार ।

२२२७. भद्रबाहुचरित्र—रत्ननन्दि । पत्र सं० २२ । प्रा० १२×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १८२७ । पूर्ण । वे० सं० १२८ । अ मण्डार ।

२२२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । वे० सं० ५५१ । क मण्डार ।

२२२९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १६७४ पीप सुदी ८ । वे० सं० १३० । छ मण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र किसी दूसरी प्रति का है ।

२२३०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १७८६ बेदाख बुदी ६ । वे० सं० ५५८ । अ मण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण (कृष्णगढ) विशानगढ वालो ने सर्वाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२२३१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८१६ । वे० सं० ३७ । छ मण्डार ।

विशेष—बखतराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२२३२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १७६३ ब्रासोज सुदी १० । वे० सं० ५१७ । अ मण्डार ।

विशेष—क्षेमकीर्ति ने बौली ग्राम में प्रतिलिपि की थी ।

२२३३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३ से १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१३३ । ट मण्डार ।

२२३४. भद्रबाहुचरित्र—तवलकवि । पत्र सं० ४८ । प्रा० १२ $\frac{३}{४}$ ×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १६४८ । पूर्ण । वे० सं० ५५६ । छ मण्डार ।

२२३५. भद्रबाहुचरित्र—चंपाराम । पत्र सं० ३८ । प्रा० १२ $\frac{३}{४}$ ×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । २० काल सं० श्रावण सुदी १५ । ले० काल × । वे० सं० १६५ । छ मण्डार ।

२२३६. भद्रबाहुचरित्र ..... । पत्र सं० २७ । प्रा० १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८५ । अ मण्डार ।

२२३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८ । प्रा० १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६५ । छ मण्डार ।

२२३८. भरतेशवैभव ..... । पत्र सं० ५ । प्रा० ११×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४६ । छ मण्डार ।



२२३६. अश्लेष्यदत्तचरित्र—पं० श्रीधर । पत्र सं० १०८ । आ० १३×४३ इंच । मापा-संस्कृत ।

विषय—चरित्र । १० काल × १ ले० काल × । पृष्ठां १०२ । अ० अण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र फटा हुआ है । संस्कृत में संक्षिप्त टिप्पणा भी दिया हुआ है ।

२०४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १६१४ माघ सुदी ८ । वै० सं० ५५३ । क

अण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की प्रतिनिधि तक्षकगठ में हुई थी । लेखक प्रशस्ति वाला अन्तिम पत्र नहीं है ।

२२४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १७२४ वैशाख सुदी ६ । वै० सं० १३१ । क

अण्डार ।

विशेष—मेडला निवासी साहू श्री ईसर सोगारी के बंध में से सा० राडकान्न की भार्या रङ्गराये ने प्रति-  
लिपि करवाकर मंडलानार्य श्रीभूषण के शिष्य रुचन्द्र को कर्मधारय निमित्त दिया ।

२२४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७० । ले० काल सं० १६६२ जेठ सुदी ७ । वै० सं० ७५ । अ

अण्डार ।

विशेष—अजमेर गठ मध्ये लिखित अर्धुनगुत जोभी सूरदास ।

दूमरो श्रीर निम्न प्रशस्ति है ।

हरसार मध्ये राजा श्री सावलदास राज्ये खण्डेनवालान्वय साहू देव भार्या देवलदे ने ग्रन्थ की प्रतिनिधि  
करवायी थी ।

२२४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १८३७ अश्विन सुदी ७ । पूर्ण । वै० सं० ५६५ ।

अण्डार ।

विशेष—लेखक पं० गोबिन्द नदास ।

२२४४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८६ । ले० काल × । वै० सं० २६३ । अण्डार ।

२२४५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५० । ले० काल × । वै० सं० ५१ । अण्डार । अण्डार ।

विशेष—कही कही कठिन शब्दों के अर्थ दिये गये हैं तथा अन्त के २५ पत्र नहीं लिखे गये हैं ।

२२४६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १६७७ आषाढ सुदी २ । वै० सं० ७७ । अ

अण्डार ।

विशेष—साधु लक्ष्मण के लिए रचना की गई थी ।

२२४७. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १६६७ आश्विन सुदी ६ । वै० सं० १६४४ । ट

अण्डार ।

विशेष—धामेर में महाराजा मानसिंह के शासनकाल में प्रतिनिधि हुई थी । प्रशस्ति का अन्तिम पत्र  
नहीं है ।

२२४८. अश्लेष्यदत्तचरित्रभाषा—पद्मलाल चौधरी । पत्र सं० १०० । आ० ११३×७३ इंच ।

अण्डार—हिन्दी (गद्य) । विषय—चरित्र । १० काल सं० १६३७ । ले० काल सं० १६५० । पूर्ण । वै० सं० ५५५ । क

अण्डार ।

२२५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३५ । ले० काल × । वे० सं० ५५५ । क भण्डार ।

२२५७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३८ । ले० काल सं० १६४० । वे० सं० ५५६ । क भण्डार ।

२२५९. भोज प्रबन्ध—पंडितप्रवर वल्लाल । पत्र सं० २६ । प्रा० १२३×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—काव्य । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७७ । क भण्डार ।

२२५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १७११ प्रासोज बुदी ६ । वे० सं० ४६ । अपूर्ण ।  
क भण्डार ।

२२५३. भौमचरित्र—भ० रत्नचन्द्र । पत्र सं० ४३ । प्रा० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
चरित्र । १० काल × । ले० काल सं० १८४६ फागुण बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ५६४ । क भण्डार ।

२२५४. मंगलकलशमहामुनिचतुष्पदी—रंगविनयगणि । पत्र सं० २ से २४ । प्रा० १०×४ इञ्च ।  
भाषा—हिन्दी (राजस्थानी) विषय—चरित्र । १० काल सं० १७१४ श्रावण बुदी ११ । ले० काल सं० १७१७ । अपूर्ण ।  
वे० सं० ८४४ । क भण्डार ।

विशेष—चोतोड़ा ग्राम में श्री रंगविनयगणि के शिष्य दयामेरु मुनि के वाचनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

राग धन्यासिरी—

एह बा मुनिवर निसदिन गाईबइ, मन मुधि ध्यान लगाइ ।  
पुष्य पुरुषणा गुण चुणतां छता पातक दूरि पुलाइ ॥१॥ ए० ॥  
शातिचरित्र थकी ए चउपई कीधी निज मति सारि ।  
मंगलकलसमुनि सतरंगा कछा गुण प्राप्तम हितकारि ॥२॥ ए० ॥  
गछ करतर युग बर गुण प्रागलउ श्री जिनराज सुरिद ।  
तनु पट्टधारी सुरि शिरोमणी श्री जिनरंग मुण्डि ॥४॥ ए० ॥  
तामु सोस मंगल मुनि रायनउ चरित कहेउ स सनेह ।  
रंगविनय वाचक मनरंग सु जिन पूजा फल एह ॥५॥ ए० ॥  
नगर अभयपुर भति रलिप्राभरणउ जहा जिन गृहचउसाल ।  
मोहन मूरति वीर जिणंदनी सेबक जन मु रसाल ॥६॥ ए० ॥  
जिन भनइबलि सोवत घणी जूणा देवल ठाम ।  
जिहां देवी हरि सिद्ध गेह गहइ पूरइ बखित काम ॥७॥ ए० ॥  
निरमल नीर भरवउं सोहई यणु ऊंऊ महेश्वर नाम ।  
धाय विधाता जनि धवतरी कीधउ की मति काम ॥८॥ ए० ॥  
जिहां किणु आवक सगुण शिरोमणी धरम मरम नउ जाण ।  
श्री नारायणदास सराहियइ मानइ जिगुवर प्राण ॥९॥ ए० ॥

धामु तएह आग्रह ए चउपई कीची मन उल्लास ।  
 अधिकउ उछउ जे इहां भास्वियउ मिछा दुक्कड तास ॥१०॥ ए० ॥  
 दासए नायक बीर प्रसाद बी बउरी चडोय प्रमाए ।  
 भगिण्ण्यई सुगिण्ण्यई जे नर भावसु धारयई तामु कल्याण ॥११॥ ए० ॥  
 ए संबध सरस रस गुण भरयउ भाष्य मति अनुसारि ।  
 धरमी जए गुण गावए मन रली रगविनय सुखकार ॥१२॥ ए० ॥  
 एह वा मुनिवर निसि दिन गार्डियई सर्व गाथा दूहा ॥ ५३२ ॥

इति श्री मंगलकलसमहामुनिचउपही संपूर्तिमगमत् लिखिता श्री संबत् १७१७ वर्षे श्री धासोज सुवी  
 विजय दसमी वासरे श्री चांतोडा महाप्रामे राजि श्री पस्तापसिहजी विजयराज्ये वाचनाचार्ये श्री रंगविनयगरिण शिष्य  
 पण्डित दयामेह मुनि ध्यात्मश्रेयसे शुभं भवतु । कल्याणमस्तु लेखक पाठकयोः ॥

२२५५. महीपालचरित्र—चारित्रभूषण । पत्र सं० ४१ । प्रा० ११३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
 विषय—चरित्र । २० काल सं० १७३१ श्रावण सुदी १२ (छ) । ले० काल सं० १८१८ फाल्गुण सुदी १४ । पूर्ण । वे०  
 सं० १६५ । अ भण्डार ।

विशेष—जोहरोलाल गोदीका ने प्रतिलिपि करवाई ।

२२५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । वे० सं० ५६१ । क भण्डार ।

२०५७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १६२८ फाल्गुण सुदी १२ । वे० सं० २७१ । च  
 भण्डार ।

विशेष—रोहुराम वेद्य ने प्रतिलिपि की थी ।

२०५८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५५ । ले० काल × । वे० सं० ४६ । क भण्डार ।

२२५६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४५ । ले० काल × । वे० सं० १७० । क भण्डार ।

२२६०. महीपालचरित्र—भ० रत्ननन्दि । पत्र सं० ३४ । प्रा० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
 विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १८३६ भाद्रवा सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ५७४ । क भण्डार ।

२२६१. महीपालचरित्रभाषा—नथमल । पत्र सं० ६२ । प्रा० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।  
 विषय—चरित्र । २० काल सं० १६१८ । ले० काल सं० १६३६ श्रावण सुदी ३ । वे० सं० ५७५ । क भण्डार ।

विशेष—मूलकर्ता चारित्र भूषण ।

२२६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १६३५ । वे० सं० ५६२ । क भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १५ तबे पत्र लिखे हुये हैं ।

कवि परिचय—नथमल सधामुख काशीजीवान के शिष्य थे । इनके पिताका नाम तुलीचन्द तथा पिता  
 का नाम शिवचन्द था ।

२०६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५७ । ले० काल सं० १६२६ आश्वय सुदी ७ । पूर्णा । वे० सं० ६६३ ।  
अभ्यन्तार ।

२०६४. मेघदूत—कालिदास । पत्र सं० २१ । भा० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य ।  
१० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ६०१ । अ भ्यन्तार ।

२०६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० १६१ । अ भ्यन्तार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है । पत्र जीर्ण है ।

२२६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १६८६ । अ भ्यन्तार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

२०६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८५५ बैशाख सुदी २ । वे० सं० २००५ । अ  
भ्यन्तार ।

२२६८. मेघदूतटीका—परमहंस परिव्राजकाचार्य । पत्र सं० ४८ । भा० १०३×४ इञ्च । भाषा—  
संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल सं० १५७१ भाद्रपद सुदी ७ । पूर्णा । वे० सं० ३६६ । अ भ्यन्तार ।

२२६९. यशस्तिलक चम्पू—सोमदेव सूरि । पत्र सं० २५४ । भा० १२३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत  
गद्य पद्य । विषय—राजा यशोधर का जीवन वर्णन । १० काल शक सं० ८८१ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं०  
८५१ । अ भ्यन्तार ।

विशेष—कई प्रतियों का मिश्रण है तथा बीच के कुछ पत्र नहीं हैं ।

२२७०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १६१७ । वे० सं० १८२ । अ भ्यन्तार ।

२२७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १५४० फागुण सुदी १४ । वे० सं० ३५६ । अ  
भ्यन्तार ।

विशेष—करमी घोषा ने प्रतिलिपि करवाई थी । जिमदास करभी के पुत्र थे ।

२२७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ५६१ । क भ्यन्तार ।

२२७३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४५६ । ले० काल सं० १७५२ मंगसिर बुदो ६ । वे० सं० ३५१ । अ  
भ्यन्तार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है । प्रति प्राचीन है । कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ दिये हुये हैं ।

अंबावती में नेमिनाथ चैत्यालय में भ० जगत्कीर्ति के शिष्य पं० दोदराज के पठनाथ प्रतिलिपि हुई थी ।

२२७४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०२ से ११२ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १८०८ । अ  
भ्यन्तार ।

२२७५. यशस्तिलकचम्पू टीका—भुतसिंह । पत्र सं० ४०० । भा० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ भाद्रपद सुदी १० । पूर्णा । वे० सं० १५७ । अ भ्यन्तार ।

विशेष—मूलकर्ता सोमदेव सूरि ।

२२७६. यशस्विलकचम्पूटीका..... पत्र सं० ६४६। प्रा० १२३×७ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। १० काल ×। ले० काल सं० १८४१। पूर्ण। वे० सं० ५८८। क भण्डार।

२२७७. प्रति सं० २। पत्र सं० ६१०। ले० काल ×। वे० सं० ५८६। क भण्डार।

२२७८. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३८१। ले० काल ×। वे० सं० ५६०। क भण्डार।

२२७९. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४०६ से ४५६। ले० काल सं० १६४८। अपूर्ण। वे० सं० ५८७। क भण्डार।

२२८०. यशोधरचरित—महाकवि पुष्पदन्त। पत्र सं० ८२। प्रा० १०×४ इञ्च। भाषा—अपभ्रंश। विषय—चरित्र। १० काल ×। ले० काल सं० १४०७। आसोज मुदी १०। पूर्ण। वे० सं० २५। अ भण्डार।

विशेष—संवत्सरेस्मिन् १४०७ वर्षे अश्विनमासे शुक्लपक्षे १० बुधवासरे तस्मिन् चन्द्रगुरीदुर्गेहोनीपुरविराजमाने महाराजाधिराजसमस्तरात्रावलीमेव्यमारा खिलजीवश उद्योत्तक मुनिश्राणमहमूदसाहिाराज्ये तद्विजयराज्ये श्रीकाष्ठासंधे माधुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री देवनेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री विमलनेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीधर्मसेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री भावनेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री महत्क्रीति देवास्तत्पट्टे श्रीगुणक्रीति देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री यशःक्रीति देवास्तत्पट्टे भट्टारक मलयक्रीति देवास्तत्पट्टे महात्मा श्री हरिषेण देवास्तत्पट्टे मनाये अग्रोत्तकान्वये मीनलगोत्रे साधु श्रीकरमसी तद्गार्थानुत्तवा तयोः पुत्रास्त्रयः जेष्ठः सा मेषपाल द्वितीयः सा, पूना तृतीयः सा, भाभरण। साधु मेषपाल भायें द्वे बाड भूराही। सा, भाभरण पुत्र जगमल मोमा एतेषामध्ये इदंपुस्तकं जानावररूपीकमं क्षयायै वाड वधो इदं यशोधरचरित्रं लिखाय महात्मा हरिषेणदेवा, दत्तं पठनार्थं। लिखितं पं० विजयसिंहनेन।

२२८१. प्रति सं० २। पत्र सं० १४५। ले० काल सं० १६३६। वे० सं० ५६८। क भण्डार।

विशेष—कहो कही संस्कृत मे टीका भी दी हुई हैं।

२२८२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६० से ६८। ले० काल सं० १६३० भादो..... अपूर्ण। वे० सं० २८८। अ भण्डार।

विशेष—प्रतिलिपि ग्रामेर मे राजा भारमल के शासनकाल मे नेमीश्वर चैत्यालय मे की गई थी। प्रशस्ति अपूर्ण हे।

२२८३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६३। ले० काल सं० १८६७ आसोज मुदी २। वे० सं० २८६। अ भण्डार।

२२८४. प्रति सं० ५। पत्र सं० ८६। ले० काल सं० १६७२ मंगसिर मुदी १०। वे० सं० २८७। अ भण्डार।

२२८५. प्रति सं० ६। पत्र सं० ८६। ले० काल ×। वे० सं० २१२६। ट भण्डार।

२२८६. यशोधरचरित्र—भ० सकलक्रीति। पत्र सं० ५१। प्रा० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—राजा यशोधर का जीवन वर्णन। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३४। अ भण्डार।

२०८७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । वे० सं० ५६६ । क भण्डार ।

२०८८. प्रत सं० ३ । पत्र सं० २ से ३७ । ले० काल सं० १७६५ कालिक मुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० २८४ । क भण्डार ।

२०८९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८६२ आसोज मुदी ६ । वे० सं० २८५ । क भण्डार ।

विशेष—पं० नोनिधराम ने स्वयंठनार्थ प्रतिनिधि की थी ।

२०९०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १८५५ आसोज मुदी ११ । वे० सं० २२ । क भण्डार ।

२०९१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८६५ फागुण मुदी १२ । वे० सं० २३ । क भण्डार ।

२०९२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० २४ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२०९३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १७७५ चैत्र मुदी ६ । वे० सं० २५ । क भण्डार ।

विशेष—प्रवास्ति—संवत्सर १७७५ वर्षे मितो चैत्र मुदी ६ मंगलवार । भट्टारक-शिरोरत्न भट्टारक श्री श्री १०८ । श्री वेङ्कटकीर्त्तिजी तस्य आजाविधायि आचार्य श्री क्षेमकीर्त्ति । पं० बोलचन्द ने बतई ग्राम मे प्रतिलिपि की थी—अन्त मे यह धोर लिखा है—

संवत् १३५२ धेली भौसे प्रतिष्ठा कराई लाडणा मे तदिस्यी ल्हौडमाजरा उपजो ।

२०९४. प्रत सं० ८ । पत्र सं० २ मे ३८ । ले० काल सं० १७८० आषाढ मुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० २६ । क भण्डार ।

२०९५. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५५ । ले० काल × । वे० सं० ११४ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है । ३७ चित्र है, मुगलकालीन प्रभाव है । पं० गोवर्द्धनजी के शिष्य पं० टोडरमल के लिए प्रतिलिपि करवाई थी । प्रति दर्शनीय है ।

२०९६. प्रति सं० १० । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १७६२ ज्येष्ठ मुदी १४ । अपूर्ण । वे० सं० २६३ । क भण्डार ।

विशेष—आचार्य शुभचन्द्र ने टोक मे प्रतिलिपि की थी ।

क भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ६०४ ) क भण्डार मे दो प्रतिया ( वे० सं० ५६६, ५६७ ) धोर हैं ।

२०९७. यशोवन्तरचरित्र—काव्यरथ प्रज्ञानाम्भ । पत्र सं० ७० । भा० ११×४<sup>१</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल सं० १८३२ चैत्र मुदी १२ । वे० सं० ५६२ । क भण्डार ।

२२६८. प्रति सं० २ । प्रति सं० ६८ । ले० काल स० १५६५ सावन सुदी १३ । वै० सं० १५२ । छ  
भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ पौमसिरी से आचार्य युवनकीर्ति की शिष्या धार्मिका मुक्तिश्री के लिए दयामुन्दर से  
लिखवाया तथा बैशाख सुदी १० सं० १७८५ को मंडलाचार्य श्री भ्रमन्तकीर्तिजी के लिए नाथूरामजी ने समर्पित किया ।

२२६९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५५ । ले० काल × । वै० सं० ८५ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति नवीन है ।

२३००. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ८५ । ले० काल स० १६६७ । वै० सं० ६०६ । छ भण्डार ।

विशेष—मानसिंह महाराजा के शासनकाल में आमेर में प्रतिलिपि हुई ।

२३०१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १८३३ पौष सुदी १३ । वै० सं० २१ । छ  
भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में पं० बलतराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

२३०२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७६ । ले० काल सं० भाद्रवा बुदी १० । वै० सं० ६६ । ज भण्डार ।

विशेष—टोडरमलजी के पठनार्थ पांडे गोरधनदास ने प्रतिलिपि कराई थी । महामुनि गुणकीर्ति के उपदेश  
से ग्रन्थकार ने ग्रन्थ की रचना की थी ।

२३०३. यशोधरचरित्र—बादिराजसूरि । पत्र सं० २ में १२ । प्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १८३६ । अपूर्णा । वै० सं० ८७२ । अ भण्डार ।

२३०४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२ । ले० काल १८२५ । वै० सं० ५६५ । क भण्डार ।

२३०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ में १६ । ले० काल सं० १५१८ । अपूर्णा । वै० सं० ८३ । घ  
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्णा है ।

२३०६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वै० सं० २१३८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नवीन लिखा गया है ।

२३०७. यशोधरचरित्र—पूरणदेव । पत्र सं० ३ में २० । प्रा० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । जीर्ण । वै० सं० २८१ । ज भण्डार ।

२३०८. यशोधरचरित्र—वासवसेन । पत्र सं० ७१ । प्रा० १२×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
चरित्र । २० काल स० १५६५ माघ सुदी १२ । पूर्णा । वै० सं० २०५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—

संवत् १५६५ वर्षे माघमास कृष्णपक्षे द्वादशीदिनेन बृहस्पतिवारसे भूलनक्षत्रे रावे श्रीमालदे राज्यप्रवर्त्त-  
माने रावते श्री सेतसी प्रतापे सांक्षीण नाम नगरे श्रीयानिनाथ जिगचैत्यालये श्रीभूलसमेखलात्कारगले मरुत्वतोगच्छे

नंदाग्नाये श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक धीपयनद्वि देवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री जिष्णुचन्द्रदेवास्त-  
त्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाग्नाये खंडनवानान्वये दोगीगोत्रे सा. तिहुंगा तद्भार्या तोली तयोपुत्रसत्रयः प्रथम सा,  
ईसर द्वितीय टोहा तृतीय सा, ऊल्हा ईसरभार्या भ्रजगिणी तयोः पुत्राः चत्वारः प्र० मा० लोहट द्वितीय सा भूगा तृतीय  
सा ऊधर चतुर्थ सा, देवा सा, लोहट भार्या लज्जितादे तयोः पुत्राः पंच प्रथम धर्मदास द्वितीय सा, धीरा तृतीय लूणा  
चतुर्थ होना पंचम राज, सा, भूगा भार्या भृगुमिरी तयोपुत्र नगराज माह उपर भार्या उधमिरी तयोः पुत्रो द्वौ प्रथम  
नाला द्वितीय खरहृष-मा० देवा भार्या जोसिरी तयोः पुत्र धनिउ चि० धर्मदास भार्या धर्मश्री चिजो धीरा भार्या रमायी  
सा टोहा भार्ये द्वे बृहद्गीला लक्ष्मी मुहागदे तत्पुत्रदान पुष्य गीलवान सा, नालहा तद्भार्या नयगत्री सा० ऊल्हा भार्या  
बाली तयोः पुत्र सा, डानू तद्भार्या डलमिरी एतेषामध्ये चतुर्विधदान वितरणाशक्तेनत्रिपंचागतश्रावकसत्क्या प्रति-  
पालण सावधानेन जिष्णुपूजापुरंदरेण मद्गुह्यदेश निर्वाहकेन संघपति साह श्री टोहानामधेयेन इदं शास्त्र लिखाय उत्तम-  
पात्राय घटारितं ज्ञानावर्णा कर्मक्षय निमित्त ।

२३०६ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ से ५४ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २०७३ । अ भण्डार ।

२३१०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १६६० बैताल बुदी १३ । वे० सं० ५६३ । क  
भण्डार ।

विशेष—मिश्र केशव ने प्रतिनिधि की थी ।

२३११. यशोधरचरित्र " " " " । पत्र सं० १७ से ४५ । मा० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
चरित्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १६६१ । अ भण्डार ।

२३१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ६१३ । क भण्डार ।

२३१३. यशोधरचरित्र—गारवदास । पत्र सं० ४३ । मा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।  
विषय—चरित्र । १० काल सं० १५८१ भादवा सुदी १२ । ले० काल सं० १६३० मंगमिर सुदी ११ । पूर्णा । वे० सं०  
५६६ ।

विशेष—कवि कफोतपुर का रहने वाला था ऐसा निखा है ।

२३१४. यशोधरचरित्रभाषा—सुरालखंद । पत्र सं० ३७ । मा० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।  
विषय—चरित्र । १० काल सं० १७८१ कार्तिक सुदी ६ । ले० काल सं० १७६६ आसोज सुदी १ । पूर्णा । वे० सं०  
१०४६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रद्यस्त—

मिती आसोज मासे शुक्लपक्षे तिथि पडिवा वार सनिवासर सं० १७६६ जिनवा । श्रे० कुशमोजी तत्  
विषयेन लिपिकृतं पं० सुत्यालखंद श्री घुतषिबोलजी के देहरे पूर्ण कर्तव्यं ।

दिवालो जिनराज की देखस दिवालो जाय ।

निसि दिवालो बलाइये कर्म दिवालो धाय ॥

धी रस्तु । कल्याणखस्तु । महाराष्ट्रपुर मध्ये परिपूर्णा ।



२३१५. यशोधरचरित्र—पद्मालाल । पत्र सं० ११२ । भा० १३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।  
विषय—चरित्र । १० काल सं० १६३२ सावन बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६०० । क भण्डार ।

विशेष—गुणवंत कृत यशोधर चरित्र का हिन्दी अनुवाद है ।

२३१६. प्रति सं० ० । पत्र सं० ७४ । ले० काल × । वै० सं० ६१२ । क भण्डार ।

२३१७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८२ । ले० काल × । वै० सं० १६४ । छ भण्डार ।

३२१८. यशोधरचरित्र ... । पत्र सं० २ मे ६३ । भा० ६३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
चरित्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ६११ । क भण्डार ।

२३१९. यशोधरचरित्र—श्रुतमागर । पत्र सं० ६१ । भा० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
चरित्र । १० काल × । ले० काल सं० १५६८ फागुण बुदी १२ । पूर्ण । वै० सं० ५६४ । क भण्डार ।

२३२०. यशोधरचरित्र—भट्टारक ज्ञानकीर्ति । पत्र सं० ६३ । भा० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—चरित्र । १० काल सं० १६५९ । ले० काल सं० १७६० आनोज बुदी ९ । पूर्ण । वै० सं० २६५ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत् १६६० वीं आसोजमासे कृष्णपक्षे नवम्यातिथी सोमवासरे आदिनाथचैत्यालये मोजमाबाद  
वास्तव्ये राजाधिराज महाराजाध्रामामनिघराज्यप्रवर्तते श्रीमूलमधेवलात्कारगणे नंदाभ्यायेसरस्वतीगच्छे श्रीवृन्दुंदाचार्या-  
न्वये तत्पट्टे भट्टारक श्रीपद्मनदिदेवातपट्टे भट्टार श्री शुभचन्द्रदेवा तपट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा तपट्टे श्रीचन्द्र-  
कीर्ति देवास्तदाभ्याये खंबेलवालये पा.बाळ्यागोथे साह.हीरा तस्य भार्या हरपमदे । तयो पुत्राचत्वार । प्रथम पुत्र साह  
नातू तस्यभार्या नीलादे पुत्र त्रयः प्रथमपुत्र साह नातू तस्य भार्या नायकदे तयोपुत्रा द्वौ प्रथम पुत्र । चरंजीव गीरधर ।  
द्वितीयपुत्र साह बोहिय तस्य भार्या बहुरंगदे तस्य पुत्रा त्रय प्रथमपुत्र चिरजी स्थिरपाल द्वितीय पुत्र जेसा । तृतीयपुत्र  
देवू । तृतीय पुरण तस्यभार्या कूरुदे । साह हीरा । द्वितीयपुत्र चोहथ तस्यभार्या चादादे । तस्यपुत्रा द्वौ प्रथमपुत्र साह  
गुजर तस्यभार्या गारवदे । द्वितीयपुत्र चिरजी छाजू । हीरा तृतीयपुत्र साह पचादण । हीरा चतुर्थपुत्र साह नरादण तस्य  
भार्या नैणादे तस्यपुत्र साह दुग्गा एनेपामध्ये बोहिय नैनंदाभ्य यशोधरचरित्रकर्मसंघनिमित्तं भट्टारक श्रीचन्द्रकीर्तितर्पण्य  
धर्म सालवद योग्य घटापितं ।

२३२१. प्रति सं० ० । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १५७७ । वै० सं० ६०९ । क भण्डार ।

विशेष—ब्रह्म मतिसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

२३२२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १६५१ मंगसिर बुदी २ । वै० सं० ६१० । क  
भण्डार ।

विशेष—साह छीतरमल के पठनार्थ जांघी जगन्नाथ ने मोजमाबाद मे प्रतिलिपि की थी ।

क भण्डार मे २ प्रतियां ( वै० सं० ६०७, ६०८ ) खीर है ।

२३२३. यशोधरचरित्रटिप्पण्य—प्रभाचंद्र । पत्र सं० १२ । भा० १०३×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल सं० १५८५ शीव बुदी ११ । पूर्ण । वै० सं० ३७६ । अ भण्डार ।

विशेष—पुण्यदत्त कृत यशोधर चरित्र का संस्कृत टिप्पण है। बादशाह बाबर के शासनकाल में प्रतिलिपि की गई थी।

२३२५. रघुवंशमहाकाव्य—महाकवि कालिदास। पत्र सं० १४४। पा० १२ $\frac{१}{२}$  × ५ $\frac{१}{२}$  इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६५४। अ भण्डार।

विशेष—पत्र सं० ८२ में १०५ तक नहीं है। पंचम सर्ग तक कठिन शब्दों के अर्थ संस्कृत में दिये हुये हैं।

२३२५. प्रति सं० २। पत्र सं० ७०। ले० काल सं० १८२४ काती बुदी ३। वे० सं० ६४३। अ भण्डार।

विशेष—कठी ग्राम में पाठ्या देवराज के पठनार्थ जैतसी ने प्रतिलिपि की थी।

२३२६. प्रति सं० ३। पत्र सं० १२६। ले० काल सं० १८४४। वे० सं० २०६६। अ भण्डार।

२३२७. प्रति सं० ४। पत्र सं० १११। ले० काल सं० १६८० भादवा सुदी ८। वे० सं० १५४। अ भण्डार।

२३२८. प्रति सं० ५। पत्र सं० १३२। ले० काल सं० १७८६ मंगसर सुदी ११। वे० सं० १५५। अ भण्डार।

विशेष—हाथियों पर चारों ओर शब्दार्थ दिये हुए हैं। प्रति भारीठ में पं० अनन्तमोति के शिष्य उदयराज ने स्वपठनार्थ लिखी थी।

२३२८. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६६ में १३४। ले० काल सं० १६६६ कालिका बुदी ६। अपूर्ण। वे० सं० २४२। अ भण्डार।

२३२९. प्रति सं० ७। पत्र सं० ७५। ले० काल सं० १८२८ पीष बुदी ४। वे० सं० २४४। अ भण्डार।

२३३१. प्रति सं० ८। पत्र सं० ६ से १७३। ले० काल सं० १७७३ मंगसर सुदी ५। अपूर्ण। वे० सं० १६६५। अ भण्डार।

विशेष—प्रति मस्कृत टीका सहित है तथा टीकाकार उदयहर्य है।

इनके प्रतिरिक्त अ भण्डार में ५ प्रतिया ( वे० सं० १०२८, १२६५, १२६५, १८७५, २०६५ ) अ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १५५ [क] )। अ भण्डार में ७ प्रतिया ( वे० सं० ६१६, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५ )। अ भण्डार में दो प्रतिया ( वे० सं० २८६, २६० ) अ और अ भण्डार में एक एक प्रतिया ( वे० सं० ६३, १६६६ ) भी हैं।

२३३२. रघुवंशटीका—सखिनाथसुरि। पत्र सं० २३२। पा० १२ × ५ $\frac{१}{२}$  इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। १० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० २४२। अ भण्डार।

२३३३. प्रति सं० २। पत्र सं० १८ में १४१। वे० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३६८। अ भण्डार।

२३३४. रघुवंशटीका—पं० सुमति विजयगणि । पत्र सं० ६० से १७६ प्रा० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ६२७ ।

विशेष—टीकाकाल—

निर्विग्रहरस शक्ति संवत्सरे फाल्गुनसितैकादश्यां तिथौ संपूर्णा श्रीरस्तु मंगल सदा कर्तुः टीकायाः । विक्रम-पुर मे टीका की गयी थी ।

२३३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ से १४७ । ले० काल सं० १८४० चैत्र सुदी ७ । अपूर्ण । वै० सं० १२८ । ङ्ग भण्डार ।

विशेष—शुभानीराम के शिष्य पं० शम्भूराम ने ज्ञानीराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

विशेष—ङ्ग भण्डार मे एक प्रति ( वै० सं० ६२६ ) श्रौर है ।

२३३६. रघुवंशटीका—समयसुन्दर । पत्र सं० ६ । प्रा० १०<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल सं० १६६२ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १८७५ । अ्र भण्डार ।

विशेष—समयसुन्दर कृत रघुवंश की टीका द्वयार्थक है । एक अर्थ तो वही है जो काव्य का है तथा दूसरा अर्थ जैनदृष्टिकोण से है ।

२३३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ से ३७ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २०७२ । ट भण्डार ।

२३३८. रघुवंशटीका—गुणविनयगणि । पत्र सं० १३७ । प्रा० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । वै० सं० ८६ । व्य भण्डार ।

विशेष—स्वतंत्रगच्छीय वाचनाचार्य प्रमोदमणिकव्यगणि के शिष्य संन्ययनुव्य श्रीमत् जयसोमगणि के शिष्य गुणविनयगणि ने प्रतिलिपि की थी ।

२३३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८६५ । वै० सं० ६२६ । ङ्ग भण्डार ।

इनके प्रतिरिक्त अ्र भण्डार मे दो प्रतिया ( वै० सं० १३५०, १०८१ ) श्रौर है । केवल व्य भण्डार की प्रति ही गुणविनयगणि की टीका है ।

२३४०. रामकृष्णकाव्य—द्वैवह्न पं० सूर्य । पत्र सं० ३० । प्रा० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ६०५ । अ्र भण्डार ।

२३४१. रामचन्द्रिका—केशवदास । पत्र सं० १७६ । प्रा० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ श्रावण सुदी १५ । पूर्ण । वै० सं० ६५५ । ङ्ग भण्डार ।

२३४२. वरांगचरित्र—भ० वर्द्धमानदेव । पत्र सं० ४६ । प्रा० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—राजा वरांग का जीवन चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६४ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वै० सं० ३२१ । अ्र भण्डार ।

विशेष—प्रधानि—

सं० १५६४ वर्षे शाके १४५६ कार्तिकमासे शुद्धगले दशमीदिवसे शनैश्चरवात्सरे धनिष्ठानक्षत्रे गंडयोने भावां नाम महानगरे राव श्री सूर्यसेणि राज्यप्रवर्तमाने कवर श्री पुररामलक्ष्मप्रतापे श्री धान्तिनाथ जिनसेत्यालये श्रीमूल-

संघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनिदि देवास्तपट्टे म० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तपट्टे भ० श्री जिराचंद्रदेवास्तपट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तपट्टे भ० श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तपट्टे भ० श्रीशिवलालान्वये शावडागोत्रे संधावि-  
पति साहू श्री रणमल्ल तड्डार्या रैगादे तयो पुत्रास्त्रयः प्रथम सं. श्री खीवा तद्भायें द्वे प्रथमा सं० खेमलदे द्वितीयो  
मुहागदे तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम चि० सधारण द्वि० श्रीकरण तृतीय धर्मदास । द्वितीय सं० वेणा तद्भायें द्वे प्रथमा विमलादे  
द्वि० नौलादे । तृतीय सं. डूंगरसी तड्डार्या दाब्योदे एतेसा मध्ये सं. विमलादे इदं शास्त्रं निष्ठाप्य उत्तमपात्राय दत्तं  
जानावर्णी कर्मक्षय निमित्तम् ।

२३४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८६३ भादवा सुदी १४ । वै० सं० ६६६ । अ  
भण्डार ।

२३५४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १८६४ मंगसिर सुदी ८ । वै० सं० ३३० । अ  
भण्डार ।

२३४५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १८३६ फागुण सुदी १ । वै० सं० ४६ । अ  
भण्डार ।

विशेष—जयपुर के नेमिनाथ चैत्यालय मे संतोषराम के शिष्य वस्तराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७६ । ले० काल सं० १८४७ वैशाख सुदी १ । वै० सं० ४७ । अ  
भण्डार ।

विशेष—मागावती ( सागानेर ) मे गोषो के चैत्यालय मे पं० सवाईराम के शिष्य नौनिधराम ने प्रति-  
लिपि की थी ।

२३४७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८३१ भाषाढ सुदी ३ । वै० सं० ४६ । अ  
भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे चंद्रप्रभ चैत्यालय मे पं० रामचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३० से ५६ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० २०५७ । अ भण्डार ।

विशेष—दवे सर्ग से १३वे सर्ग तक है ।

२३४९. वरांगचरित्र—भर्तृहरि । पत्र सं० ३ से १० । भा० १२१×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—  
चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० १७१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं ।

२३५०. बद्धमानकाव्य—मुनि श्री पद्मनिदि । पत्र सं० ५० । भा० १०×४ इच्छ । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १५१८ । पूर्णा । वै० सं० ३६६ । अ भण्डार ।

इति श्री बद्धमान कथावतारे जिनरात्रिप्रतमहात्म्यप्रदशके मुनि श्री पद्मनिदि विरचिते सुखनामां दिने श्री  
बद्धमाननिर्वाणमन नाम द्वितीय परिच्छेदः

विषय—**वर्द्धमानकथा**—जयमित्रहल। पत्र सं० ७३। भा० १३×१३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—**काव्य-र० काल** ×। ले० काल सं० १६६५। बौधायन बुदी ३। पूर्ण। वे० सं० १५३। अ भण्डार।

विषय—**प्रशस्ति**—

सं० १६५५ वरपे बौधायन बुदी ३ शुक्रवारि। मुगसीरनलित्रे मूलसवे श्रीकुंदकुंदाचार्याभ्ये तत्पट्टे भट्टारक श्री पूर्णभद्र संस्कृत भट्टारक श्रीमल्लिभूषण संस्कृत भट्टारक श्रीप्रभाचंद्र तत्पट्टे भट्टारक श्रीचंद्रकीर्ति विरचित श्रीनेमवत् प्राचार्य अंबावतंगड महादुर्गातः श्रीनेमिनाथ चैत्यालये कुद्याहावस महाराजाधिराज महाराजा श्री मानस्यधराज्ये अज-मेरुगोत्रे सा. धीरा तद्गार्याधाम्पदे अत्रुत्र चत्वार प्रथम पुत्र .....। (अपूर्णा)

२३५२. प्रति सं० २। पत्र सं० ५२। ले० काल ×। वे० सं० १६५३। अ भण्डार।

२३५३. **वर्द्धमानचरित्र**.....। पत्र सं० १६८ मे २१२। भा० १०×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० ६८६। अ भण्डार।

२३५४. प्रति सं० २। पत्र सं० ६१। ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० १६७४। अ भण्डार।

२३५५. **वर्द्धमानचरित्र**—केशरीसिंह। पत्र सं० १८५। भा० ११×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—चरित्र। २० काल सं० १८६१। ले० काल सं० १८६४। सावन बुदी २। पूर्ण। वे० सं० ६४८। क भण्डार।

विषय—सदामुखजी गोधा ने प्रतिलिपि की थी।

२३५६. **विक्रमचरित्र**—वाचनाचार्य अमरसोम। पत्र सं० ४ से ५। भा० १०×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—विक्रमादित्य का जीवन। २० काल सं० १७२४। ले० काल सं० १७८१। भावण बुदी ४। अपूर्णा। वे० सं० १३६। अ भण्डार।

विषय—उदयपुर नगर में शिष्य रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

२३५७. **विदग्धमुखसंज्ञन**—बौद्धाचार्य धर्मदास। पत्र सं० २०। भा० १०३×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। २० काल ×। ले० काल सं० १८५१। पूर्ण। वे० सं० ६२७। अ भण्डार।

२३५८. प्रति सं० २। पत्र सं० १८। ले० काल ×। वे० सं० १०३३। अ भण्डार।

२३५९. प्रति सं० ३। पत्र सं० २७। ले० काल सं० १८२२। वे० सं० ६५७। क भण्डार।

विषय—जयपुर में महाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

२३६०. प्रति सं० ४। पत्र सं० २४। ले० काल सं० १७२४। वे० सं० ६५८। क भण्डार।

विषय—संस्कृत में टीका भी दी है।

२३६१. प्रति सं० ५। पत्र सं० २६। ले० काल ×। वे० सं० ११३। अ भण्डार।

विषय—प्रति संस्कृत टीकी सहित है।

प्रथम व अन्तिम पत्र पर गोल मोहर है जिस पर लिखा है 'श्री जिन मेवक साहू वादिराज जाति सोमगुण पोसा सुत।

२३६२. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४७। ले० काल सं० १९१४ चैत्र सुदी ७। वे० सं० ११५। छ  
भण्डार।

विशेष—गोधो के मन्दिर मे प्रतिलिपि हुई थी।

२३६३. प्रति सं० ७। पत्र सं० ३३। ले० काल सं० १८८१ पौष बुदी ३। वे० सं० २७८। ज  
भण्डार।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है।

२३६४. प्रति सं० ८। पत्र सं० ३०। ले० काल सं० १७५६ मंगसिर बुदी ८। वे० सं० ३०१। छ  
भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

२३६५. प्रति सं० ९। पत्र सं० ३८। ले० काल सं० १७४३ कार्तिक बुदी २। वे० सं० ५०७। छ  
भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। टीकाप्रवर जिनबुखानसूरि के शिष्य केसवन्धु गणित है।

इनके अतिरिक्त छ भण्डार मे २ प्रतियां ( वे० सं० ११३, १५६ ) छ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं०  
५०७ ) भी है।

२३६६. विदग्धमुखमंडनटीका—विनयरत्न। पत्र सं० ३३। घा० १०३×४३ इच्च। भाषा—संस्कृत।  
विषय—हास्य। टीकाकाल सं० १५३५। ले० काल सं० १६८३ भासोज सुदी १०। वे० सं० ११३। छ भण्डार।

२३६७. विद्वारकाव्य—कालिदास। पत्र सं० २। घा० १२×५३ इच्च। भाषा—संस्कृत। विषय—  
काव्य। १० काल ×। ले० काल सं० १८४६। वे० सं० १८५३। छ भण्डार।

विशेष—अमरपुद् मे ब्रह्मभक्त शैलालय से भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के समय के लिखी गई थी।

२३६८. शंभुप्रभुभनप्रबंध—समयसुन्दरगणित। पत्र सं० २ से २१। घा० १०३×४३ इच्च। भाषा—  
हिन्दी। विषय—श्रीकृष्ण, शत्रुकुमार एवं प्रभुभन का जीवन। १० काल ×। ले० काल सं० १६५६। अपूर्ण। वे०  
सं० ७०१। छ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति मिम्न प्रकार है।

संवत् १६५६ वर्षे विजयदशम्यां श्रीस्तंभतीर्थे श्रीबृहत्खरतरणन्द्यापीथर श्री दिल्लीपति पातिसाह जलालदीन  
अकबरसाहिप्रदत्तयुगप्रधानादधारक श्री ६ जिनबन्धुमुरि सूरश्वरगणा ( सूरीश्वरगणा ) साहितसमक्षवहस्तस्थापिता  
पार्ष्ण्यश्रीजिनसिंहमूरिमु गिरुदागणा ( सूरीश्वरगणा ) शिष्य मुम्य पंडित सकलचन्द्रगणित लिख्य वा० समयसुन्दरगणित  
श्रीनेमलमे० वाग्भन्धे नानाविध साहित्यविचाररसिक लो० सिन्धीन सप्तमवर्षनाया कृतः श्री शंभुप्रभुभनप्रबंधे प्रथमः खंडः।

२३६६. शान्तिनाथचरित्र—अजितप्रभसूरि । पत्र सं० १६६ । प्रा० ६३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १०२४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६६ से आगे के पत्र नहीं हैं ।

२३७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ से १०५ । ले० काल सं० १७१४ पीप बुदी १४ । अपूर्णा । वे०  
सं० १६२० । ट भण्डार ।

२३७१. शान्तिनाथचरित्र—भट्टारक सकलकीर्त्ति । पत्र सं० १६५ । प्रा० १३×५३ इञ्च । भाषा—  
संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १७८६ चैत्र सुदी ५ । अपूर्णा । वे० सं० १२६ । अ भण्डार ।

२३७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२८ । ले० काल × । वे० सं० ७०२ । क भण्डार ।

विशेष—तीन प्रकार की लिपिया है ।

२३७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २२१ । ले० काल सं० १८६३ माह बुदी ६ । वे० सं० ७०३ । क  
भण्डार ।

विशेष—लिखितं गुरजीरामलाल सवाई जयनगरमध्ये वासी नेवटा का हाल संघड़ी मालावता के मन्दिर  
लिखी । लिखायतं चंपारामजी छावडा सवाई जयपुर मध्ये ।

२३७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८७ । ले० काल सं० १८६४ फागुण बुदी १२ । वे० सं० ३६१ । च  
भण्डार ।

विशेष—यह प्रति श्यांजीरामजी दीवान के मन्दिर की है ।

२३७५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५६ । ले० काल सं० १७६६ वात्तिक सुदी ११ । वे० सं० १४ । छ  
भण्डार ।

विशेष—सं० १८०३ जेठ बुदी ६ के दिन उदयराम ने इस प्रति का संशोधन किया था ।

२३७६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १७ से १२७ । ले० काल सं० १८८८ वैशाख सुदी २ । अपूर्णा । वे०  
सं० ४६४ । अ भण्डार ।

विशेष—महात्मा पन्नालाल ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

इनके अतिरिक्त छ, अ तथा ट भण्डार में एक एक प्रति ( वे० सं० १३, ६८६, १६२६ ) श्रौत है ।

२३७७. शालिभद्रचौपई—मतिसागर । पत्र सं० । प्रा० १०<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×८<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
चरित्र । २० काल सं० १६७८ आसोज बुदी ६ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २१५४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र आधा फटा हुआ है ।

२३७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ३६४ । अ भण्डार ।

२३७९. शालिभद्र चौपई..... । पत्र सं० ५ । प्रा० ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २०  
काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २३० ।

विशेष—रचना में ६० पद्य हैं तथा अशुद्ध लिखी हुई है ; अन्तिम पाठ नहीं है ।

प्रारम्भ—

श्री सासरा नायक सुमरिदे बद्धमान जिनबंध ।

अलीइ विचन दुरोहरं भापै प्रमानंद ॥१॥

२३८०. शिशुपालबध—महाकवि माघ । पत्र सं० ४६ । पा० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—काव्य । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६३ । अ भण्डार ।

२३८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ६३४ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० लक्ष्मीचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

२३८२. शिशुपालबध टीका—मल्लिनाथसुरि । पत्र सं० १४४ । पा० ११३×५ इञ्च । भाषा—  
संस्कृत । विषय—काव्य । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३२ । अ भण्डार ।

विशेष—६ सर्ग है । प्रत्येक सर्ग की पत्र संख्या अलग अलग है ।

२३८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० २७६ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल प्रथम सर्ग तक है ।

२३८४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० ३३७ । अ भण्डार ।

२३८५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ से १४४ । ले० काल सं० १७६६ । अपूर्ण । वे० सं० १८५ । अ  
भण्डार ।

२३८६. अश्वराजभूषण—नरहरिभट्ट । पत्र सं० २५ । पा० १२३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
काव्य । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४२ । अ भण्डार ।

विशेष—विदग्धमुखमंडन की व्याख्या है ।

प्रारम्भ—श्री नमो पार्वनाथाय ।

हेरवंक किमं व किम् तव कारता तस्य चाद्रीकला

कृत्यं कि शरजन्मनोक्त मन पार्दतारु रं स्यादिति तातः ।

कुप्यति शृङ्खलामिति विहायाहतुं मन्या कला—

माकाशे जयति प्रसारित कर स्तंबैरमयामणी ॥१॥

यः साहित्यमुपेदुर्नरहरि रत्नलालमंडनः ।

कुल्ले सैशवरा भूषणभ्यां विदग्धमुखमंडणव्याख्या ॥२॥

प्रकाराः संतु बहवो विदग्धमुखमंडने ।

तथापि मत्कृतं भावि मुखं भुवण—भूषणं ॥३॥

अन्तिम पृष्ठिका—इति श्री नरहरिभट्टविरचिते अश्वराजभूषणे चतुर्थः परिच्छेदः संपूर्ण ।



२३८७. श्रीपालचरित्र—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सं० ६८ । प्रा० १०३५५ ईव । भाषा—संस्कृत । विषय—  
चरित्र । २० काल सं० १५८५ । ले० काल सं० १६४३ । पूर्ण । वे० सं० २१० । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अयुगी है । प्रशस्ति—

संवत् १६४३ वर्षे आषाढ सुदी ५ शनिवासरे श्रीमूलसंघे न्यायमान्ये बसन्तकाराग्र्ये सरस्वतीगण्ये श्रीकुन्द-  
कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनिदिवातत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवातत्पट्टे म० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे म० प्रशास्त्र-  
देवा मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्तिदेवा तत्शिष्य म० भुवनकीर्तिदेवा तत्शिष्य म० धर्मकीर्तिदेवा द्वितीय शिष्यमंडलाचार्य  
विशालकीर्तिदेवा तत्शिष्ये मंडलाचार्ये लक्ष्मीचंददेवा तदन्वये म० सहस्रकीर्तिदेवा तदन्वये मंडलाचार्य नेमचद तदामान्ये  
खंडलवालात्वये रैवासा वास्तव्ये दगडा गोत्रे सा० लीला त

२३८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० ६६६ । क भण्डार ।

२३८९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १८४५ ज्येष्ठ सुदी ३ । वे० सं० १६२ । अ  
भण्डार ।

विशेष—मालवदेश के पूणसिा नगर मे आदिनाथ चैत्यालय में ग्रन्थ रचना की गई थी । विजयराम ने  
तक्षकपुर ( टोडारामसिह ) मे अपने पुत्र चि० टेकचन्द के स्वाध्यायार्थ इसकी तीन दिन मे प्रतिलिपि की थी ।

यह प्रति ९० मुखलास की है । हरिदुर्य में यह ग्रन्थ मिला ऐसा उल्लेख है ।

२३९०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८६५ आशुज सुदी ४ । वे० सं० १६३ । अ  
भण्डार ।

विशेष—केकड़ी से प्रतिलिपि हुई थी ।

२३९१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४३ से ७६ । ले० काल सं० १७६१ माघ सुदी ४ । वे० सं० १  
क भण्डार ।

विशेष—वृन्दावती मे राय बुधसिह के शासनकाल मे ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

२३९२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८३१ फागुण सुदी १२ । वे० सं० ३८ । अ  
भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर मे श्वेताम्बर पंडित मुक्तिविजय ने प्रतिलिपि की थी ।

२३९३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १८२७ चैत सुदी १४ । वे० सं० ३७ । अ  
भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर मे पं० ऋषभदास ने कर्मक्षमार्क प्रतिलिपि की थी ।

२३९४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ४४ । ले० काल सं० १८२६ माघ सुदी ८ । वे० सं० ३६ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० रामचन्द्रजी के शिष्य सेवकराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

२३९५. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १६४४ भाद्रपद सुदी ५ । वे० सं० २३६ । अ  
भण्डार ।

विशेष—इसके इतिहास का अन्वय में २ प्रतियां ( वे० सं० २३३, २५६ ) का, का तथा अ अन्वय में एक एक प्रति ( वे० सं० ७२१, ३६ तथा ८५ ) प्रौर हैं ।

२३६६. श्रीपालचरित्र—अ० सकलकीर्ति । पत्र सं० ५६ । भा० ११×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल शक सं० १६५३ । पूर्ण । वे० सं० १०१४ । अ अन्वय ।

विशेष—ब्रह्मचारी माणिक्य ने प्रतिलिपि की थी ।

२३६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२८ । ले० काल सं० १७६५ फागुन बुदी १२ । वे० सं० ४० । अ अन्वय ।

विशेष—तारगुपुर में मंडलाचार्य रत्नकीर्ति के प्रशिष्य विष्णुरूप ने प्रतिलिपि की थी ।

२३६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० १६२ । अ अन्वय ।

विशेष—मह प्रन्व चिरंजीवाल मोठ्या ने सं० १६६३ की भादवा बुदी ८ को बढाया था ।

२३६९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ ( ६० में ८८ ) ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७ । अ अन्वय ।

विशेष—पं० हरलाल ने वाम में प्रतिलिपि की थी ।

२४००. श्रीपालचरित्र..... । पत्र सं० १२ से ३४ । भा० ११ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६३ । अ अन्वय ।

२४०१. श्रीपालचरित्र..... । पत्र सं० १७ । भा० ११ $\frac{३}{४}$ ×४ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६६ । अ अन्वय ।

२४०२. श्रीपालचरित्र—परिमल्ल । पत्र सं० १४४ । भा० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—चरित्र । १० काल सं० १६५१ । भाषा बुदी ८ । ले० काल सं० १६३३ । पूर्ण । वे० सं० ४०७ । अ अन्वय ।

२४०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६४ । ले० काल सं० १८६८ । वे० सं० ४२१ । अ अन्वय ।

२४०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५२ में १४४ । ले० काल सं० १८५६ । वे० सं० ४०४ । अपूर्ण । अ अन्वय ।

विशेष—महात्मा जानीराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । दीवान शिबचन्दजी ने प्रन्व लिखाया था ।

२४०५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८८६ पीष बुदी १० । वे० सं० ७६ । अ अन्वय ।

विशेष—प्रन्व धागरे में शालमगंज में लिखा था ।

२४०६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १८६७ बैवाल सुदी ३ । वे० सं० ७१७ । अ अन्वय ।

विशेष—महात्मा कालूराम ने सवाई अजपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२४०७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १८५७ आसोज बुदी ७ । वे० सं० ७१६ । क  
अष्टार ।

विशेष—धनवराम गोधा ने बयपुर में प्रतिनिधि की थी ।

२४०८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १०२ । ले० काल सं० १८६२ माघ बुदी २ । वे० सं० ६८३ । अ  
अष्टार ।

२४०९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १७९० पीष सुदी २ । वे० सं० १७४ । अ  
अष्टार ।

विशेष—हुटका साइज है । हिंगोड में प्रतिनिधि हुई थी । अन्तिम ५ पत्रों में कर्मप्रकृति बर्णन है जिसका  
लेखनकाल सं० १७९३ आसोज बुदी १३ है । सांगानेर में गुरुजी मद्रूराम ने कान्होजीदास के पठनार्थ लिखा था ।

२४१०. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १३१ । ले० काल सं० १८८२ सावन बुदी ५ । वे० सं० २२८ । अ  
अष्टार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ अष्टार में २ प्रतियाँ ( वे० सं० १०७७, ४१८ ) घ अष्टार में एक प्रति  
( वे० सं० १०४ ) क अष्टार में तीन प्रतियाँ ( वे० सं० ७१५, ७१८, ७२० ) छ, झ और ट अष्टार में एक एक  
प्रति ( वे० सं० २२५, २२६ और १६१३ ) और है ।

२४११. श्रीपालचरित्र..... पत्र सं० २५ । आ० ११३ × ८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र  
२० काल × १ ले० काल सं० १८६१ । पूर्ण । वे० सं० १०३ । घ अष्टार ।

विशेष—धमीचन्दजी सीगाणी तबेला बालोको बहूने लिखवाकर विजैरामजी पाठ्या के मन्दिर में विराज  
मान किया ।

२४१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० ७०० । क अष्टार ।

२४१३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १९२६ पीष सुदी ८ । वे० सं० ८० । ग  
अष्टार ।

२४१४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६१ । ले० काल सं० १९३० फागुण सुदी ६ । वे० सं० ८२ । ग  
अष्टार ।

२४१५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १९३४ फागुण बुदी ११ । वे० सं० २५६ । अ  
अष्टार ।

विशेष—महात्तल पारडीवाल ने प्रतिनिधि करवायी थी ।

२४१६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० ६७४ । अ अष्टार ।

२४१७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १९३६ । वे० सं० ४४० । अ अष्टार ।

२४१८. श्रीपालचरित्र.....। पत्र सं० २४। भा० ११३×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र।  
१० काल ×। ले० काल ×। प्रपूर्णा। वे० सं० ६७५।

विशेष—२४ से भागे पत्र नहीं है। दो प्रतियों का मिश्रण है।

२४१९. प्रति सं० २। पत्र सं० ३९। ले० काल ×। वे० सं० ८१। ग अष्टार।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि की थी।

२४२०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३४। ले० काल ×। प्रपूर्णा। वे० सं० ६८४। च अष्टार।

२४२१. श्रेणिकचरित्र.....। पत्र सं० २७ से ४८। भा० १०×४३ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-  
चरित्र। १० काल ×। ले० काल ×। प्रपूर्णा। वे० सं० ७३२। छ अष्टार।

२४२२. श्रेणिकचरित्र—भ० सकलकीर्ति। पत्र सं० ४९। भा० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत।  
विषय-चरित्र। १० काल ×। ले० काल ×। प्रपूर्णा। वे० सं० ३५६। च अष्टार।

२४२३. प्रति सं० २। पत्र सं० १०७। ले० काल सं० १८३७ कालिक बुदी। प्रपूर्णा। वे० सं० २७।  
छ अष्टार।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है।

२४२४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७०। ले० काल ×। वे० सं० २८। छ अष्टार।

विशेष—दो प्रतियों को मिलाकर ग्रन्थ पूरा किया गया है।

२४२५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ८१। ले० काल सं० १८१८। वे० सं० २९। छ अष्टार।

२४२६. श्रेणिकचरित्र—भ० शुभचन्द्र। पत्र सं० ८४। भा० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-  
चरित्र। १० काल ×। ले० काल सं० १८०१ ज्येष्ठ बुदी ७। पूर्णा। वे० सं० २४६। छ अष्टार।

विशेष—टोक में प्रतिलिपि हुई थी। इसका दूसरा नाम मविष्यत् पथनामपुराण भी है।

२४२७. प्रति सं० २। पत्र सं० ११९। ले० काल सं० १७०८ चैत्र बुदी १४। वे० सं० १९४। छ  
अष्टार।

२४२८. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४८। ले० काल सं० १९२९। वे० सं० १०५। घ अष्टार।

२४२९. प्रति सं० ४। पत्र सं० १३१। ले० काल सं० १८०१। वे० सं० ७३५। छ अष्टार।

विशेष—महात्मा फकीरदास ने लक्ष्मीती में प्रतिलिपि की थी।

२४३०. प्रति सं० ५। पत्र सं० १४६। ले० काल सं० १८६४ माघाढ बुदी १०। वे० सं० ३५२। च  
अष्टार।

२४३१. प्रति सं० ६। पत्र सं० ७५। ले० काल सं० १८६१ धावण बुदी १। वे० सं० ३५३। च  
अष्टार।

विशेष—जयपुर में उदयचंद सुहाबिया ने प्रतिलिपि की थी ।

२४३२. श्रेणिकचरित्र—भट्टारक विजयकीर्ति । पत्र सं० १२६ । भा० १०×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—चरित्र । २० काल सं० १८२० फागुण बुदी ७ । ले० काल सं० १६०३ पीप सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ४३७ । अ मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थकार परिचय—

विजयकीर्ति भट्टारक जान, इह भावा कीषी परमारण ।  
संबत घठारास वीस, फागुण बुदी साते सु जगीस ॥  
बुधवार इह पूरण भई, स्वाति नक्षत्र वृद्ध जोग सुथई ।  
गोत पाटणी है मुनिराम, विजयकीर्ति भट्टारक थाय ॥  
तमु पटधारी श्री मुनिजानि, बडजात्यासतु गोत पिछारिण ।  
त्रिलोकेश्वरीतिरिचिराज, नितप्रति साधय द्वातम काज ॥  
विजयमुनि शिषि दुतिय मुजारण श्री बैराठ देश तमु धारण ।  
धर्मचन्द्र भट्टारक नाम, ठोस्या गोत वरप्यो द्वाभिराम ।  
मलयखेड सिधसासण मही, कारंजय पट सोभा नही ॥

२४३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७६ । ले० काल सं० १८८३ ज्येष्ठ सुदी ५ । वे० सं० ८३ । ग मण्डार ।

विशेष—महाराजा श्री जयसिंहजी के शासनकाल में जयपुर में सवाईराम गोषा ने द्वाविनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी । मोहनराम चौधरी पांढ्या ने ग्रन्थ लिखवाकर चौधरियो के चैत्यालय में बढाया ।

२४३४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८६ । ले० काल × । वे० सं० १६३ । छ मण्डार ।

२४३५. श्रेणिकचरित्रभाषा..... । पत्र सं० ५५ । भा० ११×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७३३ । अ मण्डार ।

२४३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३३ से ६५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७३४ । अ मण्डार ।

२४३७. संभवजिण्णाहचरित ( संभवनाथ चरित्र ) तेजपाल । पत्र सं० ६२ । भा० १०×५ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ३६५ । अ मण्डार ।

२४३८. सागरदत्तचरित्र—हीरकवि । पत्र सं० १८ से २० । भा० १०×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल सं० १७२४ रामोज सुदी १० । ले० काल सं० १७२७ कार्तिक बुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० ८३५ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १७ पत्र नहीं हैं ।

ढाल पञ्चतालीसमी गुरुबानी—

संबन् वेद युग जातीय मुनि शशि वर्ष उदार ॥ सुगुण नर सांभलो ॥  
 मेदपाठ माहे लिख्यो विजइ दशमि दिन सार ॥ ५ ॥ सुगुण०  
 गढ जालोरइ युग तस्युं लिखीउण् ग्रधिकार ।  
 अमृत सिधि योगइ सही त्रयोदसी दिनसार ॥ ६ ॥ मु०  
 भाद्रव मास महिमा धरणी पूरण करयो विचार ।  
 भक्ति नर सांभलो पञ्चतालीस ढाले सही याथा सातसईसार ॥ ७ ॥ मु०  
 लूंकइ गच्छ लायक यती वीर सीह जे माल ।  
 गुरुं भाभग्य श्रुत केवली धिवर गुणे बोसाल ॥ ८ ॥ मु०  
 समरयधिवर महा मुनी मुंदर रूप उदार ।  
 तत शिष भाव धरी भगइ सुगुरु तरणइ आभार ॥ ९ ॥ मु०  
 उछी ग्रधिवयो कहां कवि चातुरीय किल्लोल ।  
 निध्या दुःकृत ते होग्यो जिन सालइ चउसाल ॥ १० ॥ मु०  
 सजन जन नर नारि जे संभली लहइ उल्हास ।  
 नरनारी धर्मातिमा पडित म करो को हास ॥ ११ ॥ मु०  
 दुरजन नइ न मुहाबई नही आबइ कहे दाय ।  
 माखी चंदन नादरइ अमुचिहिहा चलि जाय ॥ १२ ॥ मु०  
 प्यारो लायइ संतनइ पामर चित संतोष ।  
 ढाल भली २ संभली चिते श्री ढाल रोष ॥ १२ ॥ मु०  
 श्री गच्छ नायक तेजसी जब लग प्रतपो भाण ।  
 हीर मुनि आसीस बइ हो ज्यो कोडि कल्याण ॥ १४ ॥ मु०  
 नरस ढाल सरसी कथा सरसो सहू ग्रधिकार ।  
 हीर मुनि गुरु नाम श्री अगंद हरष उदार ॥ १५ ॥ मु०

इति श्री ढाल सागरदत्त चरित्र संपूर्ण । सर्व याथा ७१७ संबन् १७२७ वर्षे कार्तिक बुदी १ दिने सोम-  
 षासरे लिखत श्री धन्यजी ऋषि श्री केशवजी तत् शिष्य प्रवर पंडित पूज्य ऋषि श्री ५ मामाजातदत्तेवामी लिपिकृते  
 मुनिसावलं आत्मार्थे । जांभपुरमध्ये । शुभं भवतु ।

२४३६. सिरिपालचरित्र—पं० नरसेन । पत्र सं० ४७ । प्रा० ६५×४६ इंच । भाषा—अपभ्रंश ।  
 विषय—राजा श्रीपाल का जीवन बर्णन । २० काल × १ ले० काल सं० १६१५ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं०  
 ४१० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रतिम पत्र जीर्ण है । लक्षकगढ नगर के आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२४४०. सीताचरित्र—कवि रामचन्द्र ( बालक ) । पत्र सं० १०० । प्रा० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । २० काल सं० १७१३ मंगसिर मुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०० ।

विशेष—रामचन्द्र कवि बालक के नाम में विख्यात थे ।

२४४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८० । ले० काल × । वे० सं० ६१ । ग भण्डार ।

२४४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६६ । ले० काल सं० १८८४ कार्तिक बुदी ६ । वे० सं० ७१६ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति मजिस्ट है ।

२४४३. सुकुमालचरित्र—श्रीधर । पत्र सं० ६५ । प्रा० १०×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—सुकुमाल मुनि का जीवन वर्णन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २८८ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४४४. सुकुमालचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० ४८ । प्रा० १०×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १६७० कार्तिक मुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ६४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रवास्त निम्न प्रकार है—

संवत् १६७० जाके १५२७ प्रवर्तमाने महामान्यप्रदकार्तिकाम शुक्लपक्षे अष्टम्या त्रिती मोमवामरे नागपुरमध्ये श्रीचंद्रप्रभचैत्यालये श्रीमूलमये बलाकारगणे नरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपदानदिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीसुभचंद्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचंद्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचंद्रदेवा महलाचार्य श्रीभुवनकीर्तिदेवा तत्पट्टे म० श्रीधर्मकीर्तिदेवा तत्पट्टे म० श्रीमहन्नकांतिदेवा तत्पट्टे महलाचार्य श्रीनिमचंद्रदेवा तत्पट्टे महलाचार्य श्रीयमकीर्ति. तदाम्नाये स्वर्णवलाचर्ये भोगागोत्रे सा. मोक्ष तस्यभार्या मानथी तथा पुत्र सा. फलह तस्यभार्या पुलमदे तथा पुत्रा पद् । प्रथम पुत्र सा० नरनिह तस्यभार्या नरनिघदे । द्वितीयपुत्र सा. वरनिह तस्यभार्या बहुर्गदे तथा. पुत्र सा ठाकुर तस्यभार्या ठाकुरदे । तृतीयपुत्र सा. श्वेता तस्यभार्या श्वेतलदे तथा: पुत्री द्वौ प्रथमपुत्र सा. रगमल तस्यभार्या रगणदे तथा: पुत्री द्वौ प्र० चि० कबरा द्वितीय पुत्र चि० धनेड । द्वितीय पुत्र सा. पट्टा तस्यभार्या पाटभदे तथा: पुत्री द्वा प्रथम पुत्र चि० नाथू द्वि० पुत्र चि० उदयसिध । चतुर्थ पुत्र सा रूपा तस्यभार्या रूपदे । पञ्चमपुत्र सा. तजा तस्यभार्या तेजलदे । तथा: पुत्री द्वौ प्रथमपुत्र चि० बल्लू द्वितीयपुत्र मुलतान । षष्ठमपुत्र सा. भीवा तस्यभार्या द्वे प्रथमा भावलदे द्वितीय भीवलदे । तथा पुत्रा-श्रवणार. प्रथम पुत्र सा. नानिग तस्यभार्या द्वे प्रथमा नानिगदे द्वितीया नानादे तथा: पुत्र चि० उदयसिध । सा. भीवा । द्वितीय पुत्र सा. हेमा तस्यभार्या हेमलदे । तृतीयपुत्र चि० भूठा चतुर्थ पुत्र चि० पूरग । एतेषामध्य सा. भीवा तस्यभार्या माध्वी भीवलदे तत्रेदं शास्त्रं सुकुमालचरिथाख्यं ज्ञानावरगो कर्मधार्यानिमित्तं निखाद्य सत्यात्राय प्रदत्त ।

२४४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १७८५ । वे० सं० १२५ । अ भण्डार ।

२४४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १८६८ ज्येष्ठ बुदी १४ । वे० सं० ४१२ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२४४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १८१६ । वे० सं० ३२ । छ् भण्डार ।

विशेष—कही कही संस्कृत में कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए हैं ।

२४४८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १८४६ ज्येष्ठ बुदी ५ । वे० सं० ३४ । छ् भण्डार ।

विशेष—सागानेर में सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२४४९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४४ । ले० काल सं० १८२६ पौष बुदी ५ । वे० सं० ८६ । च् भण्डार ।

विशेष—पं० रामचन्द्रजी के शिष्य सेवकराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

इनके अतिरिक्त अ, ङ, छ, झ, तया अ भण्डार में एक एक प्रति ( वे० सं० ८६५, ३३, २, ३३४ ) धार हैं ।

२४५०. सुकुमालचरित्रभाषा—पं० नाथूलाल दोसी । पत्र सं० १४३ । भा० १२३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । १० काल सं० १९१८ सावन सुदी ७ । ले० काल सं० १९३७ चैत्र सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ८०७ । क भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ में हिन्दी पद्य में है इनके बाद वचनिका में है ।

२४५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १९६० । वे० सं० ८६१ । ङ भण्डार ।

२४५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल × । वे० सं० ८६४ । ङ भण्डार ।

२४५३. सुकुमालचरित्र—हरचंद गंगवाल । पत्र सं० १५३ । भा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । १० काल सं० १९१८ । ले० काल सं० १९२९ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ७२० । च भण्डार ।

२४५४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७४ । ले० काल सं० १९३० । वे० सं० ७२१ । च भण्डार ।

२४५५. सुकुमालचरित्र..... । पत्र सं० ३६ । भा० ७×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । १० काल सं० १९३३ । पूर्ण । वे० सं० ८६२ । ङ भण्डार ।

विशेष—फतेहलाल भावसा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । प्रथम २१ पत्रों में तत्त्वार्थसूत्र है ।

२४५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० से ७६ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ८६० । ङ भण्डार ।

२४५७. सुखनिधान—कवि जगन्नाथ । पत्र सं० ५१ । भा० ११३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । १० काल सं० १७०० प्रामोज सुदी १० । ले० काल सं० १७१४ । पूर्ण । वे० सं० १९६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।



संवत् १७१४ फाल्गुन सुदी १० मोजाबाद ( मोजमानाबाद ) मध्ये श्री ब्राह्मीश्वर चैल्यालये लिखितं पं०  
दामोदरेण ।

२४५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८३० कार्तिक सुदी १३ । वे० सं० २३६ । अ  
भण्डार ।

२४५९. सुदर्शनचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० ६० । अ० ११×४३ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल सं० १७१५ । अपूर्ण । वे० सं० ८ । अ भण्डार ।

विशेष—५६ से ५८ तक पत्र नहीं है ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १७७५ वर्षे माघ शुक्लैकादश्यासोमे पुष्करज्ञातीयेन मिश्रजयरामेणोद सुदर्शनचरित्रं लेखक पाठकयोः  
शुभं भूयात् ।

२४६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४१५ । अ भण्डार ।

२४६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ४१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४१६ । अ भण्डार ।

२४६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५० । ले० काल × । वे० सं० ४९ । अ भण्डार ।

२४६३. सुदर्शनचरित्र—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र सं० ६९ । अ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—  
चरित्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२ । अ भण्डार ।

२४६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० ४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है । पत्र ५६ से ५८ तक नवीन निले हुए है ।

२४६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १६५२ फाल्गुन सुदी ११ । वे० सं० २२९ । अ  
भण्डार ।

विशेष—साह मनोरथ ने मुकुन्ददास से प्रतिनिधि कराई की ।

नीचे—सं० १६२८ में अणाल सुदी ९ को पं० तुलसीदास के पठनार्थ ली गई ।

२४६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८३० चैत्र सुदी ६ । वे० सं० ९२ । अ  
भण्डार ।

विशेष—रामचन्द्र ने अपने शिष्य सेवकाराम के पठनार्थ लिखाई ।

२४६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६७ । ले० काल × । वे० सं० ३३५ । अ भण्डार ।

२४६८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७१ । ले० काल सं० १६६० फाल्गुन सुदी २ । वे० सं० २१६८ । अ  
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

२४६६. सुदर्शनचरित्र—मुमुक्षु विद्यानिधि । पत्र सं० २७ मे ३६ । मा० १२ $\frac{१}{२}$ ×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । १० काल × १० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ८६३ । छ भण्डार ।

२४७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१८ । ले० काल सं० १८१८ । वै० सं० ४१३ । च भण्डार ।

२४७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ४१४ । च भण्डार ।

२४७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १६६५ भादवा बुदी ११ । वै० सं० ४८ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

अथ संबन्धरेति श्रीपुत्रि ( श्री पुत्रि ) विक्रमादित्यराज्ये गताब्द संवत् १६६५ वर्षे भादी बुदि ११ शुक्र-  
वामरे कृष्णशुभे अर्धमासुरदुर्ग शुभस्थाने अश्वतिगत्ररतिनरपतिराजत्रय मुद्राधिपतिश्रीमन्साहिसनेमराज्यप्रवर्तमाने श्रीमत्  
काष्ठामंथे मायुरगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये भट्टारक श्रीमन्वकीर्तिदेवास्तत्पट्टे श्रीगुणभद्रदेवातत्पट्टे भट्टारक श्री  
भानुकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री कुमारश्रेणुस्तदाम्नाये इक्ष्वाकवर्णे जैसवालान्वये ठाकुराणुगोत्रे पालव मुमस्थाने  
त्रिनक्षत्रपालये आचार्यगुणकीर्तिना पठनार्थं लिखितं ।

२४७३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १८६३ वैशाख बुदी ४ । वै० सं० ३ । छ भण्डार ।

विशेष—चित्रकूटगढ मे राजाधिराज राणा श्री उदयमिहजी के शासनकाल मे पार्ष्वनाथ चैत्यालय मे भ०  
जिनचन्द्रदेव प्रभावन्द्रदेव आदि जिप्यो ने प्रतिलिपि की । प्रशस्ति अपूर्ण है ।

२४७४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४५ । ले० काल × । वै० सं० २१३६ । ट भण्डार ।

२४७५. सुदर्शनचरित्र..... । पत्र सं० ४ मे ५६ । मा० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
चरित्र । १० काल × १० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १६६८ । अ भण्डार ।

२४७६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ मे ४० । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १६८५ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र सं० १, २, ६ तथा ४० मे प्रागे के पत्र नहीं है ।

२४७७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ८५६ । छ भण्डार ।

२४७८. सुदर्शनचरित्र..... । पत्र सं० ५४ । मा० १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र ।  
१० काल × १० काल × । पूर्ण । वै० सं० १६० । छ भण्डार ।

२४७९. सुभौमचरित्र—भ० रतनचन्द्र । पत्र सं० ३७ । मा० ८ $\frac{१}{२}$ ×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—सुभौम चक्रवर्ति का जीवन चरित्र । १० काल सं० १६८३ भादवा बुदी ५ । ले० काल सं० १८५० । पूर्ण ।  
वै० सं० ५५ । छ भण्डार ।

विशेष—विबुध नेजपाल की सहायता मे हेमराज पाटनी के लिये ग्रन्थ रचा गया । पं० मवाईराम के शिष्य  
नोनदराम के पठनार्थ गंगाविष्णु ने प्रतिलिपि की थी । हेमराज व भ० रतनचन्द्र का पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

२१० ]

[ काव्य एवं चरित्र ]

२४८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १८४० वैशाख सुदी १ । वे० सं० १५१ । च  
भण्डार ।

विशेष—हेमराज पाटनी के लिये टोडराज की सहायता से ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

२४८१. हनुमन्चरित्र—त्र० अज्ञित । पत्र सं० १२४ । भा० १०<sup>१</sup>×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १६८२ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ३० । अ भण्डार ।

विशेष—भुवकच्छपुरी में श्री नेमिजिनालय में ग्रन्थ रचना हुई ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सन् १६८२ वर्ष वैशाखमास वैश्वलपक्षे एकादश्यातिथौ काव्यवारे । लिखापित पठित श्री दावल इदं  
शास्त्रं लिखितं गोपा लेखक ग्राम वैरभारमध्ये । ग्रन्थाग्रन्थ २००० ।

२४८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १६४४ चैत्र सुदी ५ । वे० सं० १४६ । अ  
भण्डार ।

२४८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ९३ । ले० काल सं० १८२६ । वे० सं० ८४८ । क भण्डार ।

२४८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९२ । ले० काल सं० १६२८ वैशाख सुदी ११ । वे० सं० ८४६ । क  
भण्डार ।

२४८५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८०७ ज्येष्ठ सुदी ४ । वे० सं० २४३ । ख  
भण्डार ।

विशेष—तुलसीदास भोतीराम गंगवाल ने पठित उदयराम के पठनार्थ कालाबंहरा ( कृष्णग्रह ) में प्रति-  
लिपि करवायी थी ।

२४८६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८२ । ले० काल सं० १८८२ । वे० सं० ९६ । ग भण्डार ।

२४८७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ११२ । ले० काल सं० १५८४ । वे० सं० १३० । घ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति नहीं है ।

२४८८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३१ । ले० काल > । अपूर्णा । वे० सं० ४४५ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४८९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ८९ । ले० काल × । वे० सं० ५० । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४९०. प्रति सं० १० । पत्र सं० ९७ । ले० काल सं० १६३३ कार्तिक सुदी ११ । वे० सं० १०८ क ।  
च भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति काफी विस्तृत है ।

भट्टारक पद्मनंद की आश्रमाय में खंडेनवान ज्ञानीय साहू गोश्रापत्र माधु श्री बोहीथ के बंध में होने वाली  
बाई महलानंद ने सोलहकारण अतोद्यापन में प्रतिलिपि कराकर चढ़ाई ।

२४६१. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १६२६ मंगसिर बुदी ४ । वे० सं० ३४७ ।  
अ भण्डार ।

विशेष—इ० डाबू लोहशाल्या सेठी गोत्र काल ने प्रतिलिपि कराई ।

२४६२. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १६७४ । वे० सं० ५१२ । अ भण्डार ।

२४६३. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २ से १०५ । ले० काल सं० १६८८ माघ बुदी १२ । अ पूर्ण । वे०  
सं० २१४१ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र १, ७३, व १०३ गही हैं लेखक प्रशस्ति बड़ी है ।

इनके प्रतिरिक्त अ और अ भण्डार मे एक एक प्रति ( वे० सं० १७७ तथा ४७३ ) और है ।

२४६४. हनुमचरित्र—ब्रह्म रायमल्ल । पत्र सं० ३६ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
चरित्र । २० काल सं० १६१६ बैशाख बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०१ । अ भण्डार ।

२४६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८२४ । वे० सं० २४२ । अ भण्डार ।

२४६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १८८३ सावण बुदी ६ । वे० सं० ६७ । ग  
भण्डार ।

विशेष—साहू कालूराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२४६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८८३ आसोज बुदी १० । वे० सं० ६०२ । क  
भण्डार ।

विशेष—सं० १६५६ मंगसिर बुदी १ शनिवार को मुवालातजी बंकी बालों के घड़ो पर संघीजी के  
मन्दिर मे यह ग्रन्थ भेंट किया गया ।

२४६८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १७६१ कार्तिक बुदी ११ । वे० सं० ६०३ । क  
भण्डार ।

विशेष—वनपुर ग्राम मे घामीराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२४६९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० सं० १६६ । छ भण्डार ।

२४७०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६४ । ले० काल × । अ पूर्ण । वे० सं० १४१ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है ।

२४७१. हारावलि—महामहोपाध्याय पुरुषोत्तमदेव । पत्र सं० १३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—  
मस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८५३ । क भण्डार ।

२४७२. होलीरेणुकाचरित्र—पं० जिनदास । पत्र सं० ५६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—चरित्र । २० काल सं० १६०८ । ले० काल सं० १६०८ ज्येष्ठ बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १५ । अ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल के समय की ही प्राचीन प्रति है अतः महत्त्वपूर्ण है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति श्रीमते शांतिनाथाय । संवत् १६०८ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे दशमीतिथौ शुक्लवासरु हस्तनक्षत्रे श्री  
 रणस्तंभदुर्गस्य शास्त्रानगरे धेरपुरनाम्नि श्रीशांतिनाथजिनचैत्यालये श्री भ्रालमसाह साहिपालम श्रीसल्लेमसाहराज्यप्रवर्त-  
 माने श्रीभूलसंघे बलात्कारगणे नंथाम्नाये सरस्वतीगच्छे श्रीकुंडकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्र-  
 देवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे श्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्य मं० श्रीधर्मचंद्रदेवास्तद्राम्नाशेखंबेलवालान्वये सेठीगोत्रे  
 सा० सोल्लू तद्भार्या फूला तत्पुत्रास्त्रयः प्र. सा. पचायण द्वि. सा. डोडा तृतीय सा. करमा । सा. पृथ्वर्य भाया वील्हा  
 तत्पुत्र सा. दामोदर तद्भार्ये द्वे. प्र. खेमी द्वि० नीलादे तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम मा. नेमा द्वितीय सा. बोधू तृतीय सा० तेजा ।  
 सा. नेमा भार्या चतुरा । सा. बोधू भार्या सवीरा सा. डोडा भार्या गीरा तत्पुत्र सा. हेमा तद्भार्ये द्वे. प्रथम थीरगि  
 द्वितीय मुहागदे तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम सा. भीष्म द्वितीय सा. चतुरा तृतीय सा. भोवाबु । सा. करमा भार्या टरमी तत्पुत्री  
 द्वौ प्र. सा. धर्मदास द्वि० सा. जसवंत । सा. धर्मदाम भार्या गिनारदे जसवंत भार्या जसमादे तत्पुत्र चिरंजीवी ईसरदास  
 एतेषामध्ये जिनपूजापुरंदरेण उत्तमश्रुण्णगणालंकृतयात्रेण सा. कर्मानामध्ये येनेदंशास्त्रसिखाय आचार्ये श्री मवित्तकोसंघ  
 घटापिनं दशलक्षणत्रतोद्यपनार्थं ।

२५०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० कान × । वे० सं० ३६ । अ भण्डार ।

२५०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४ । ले० कान सं० १७२८ माप मुदी ७ । वे० सं० ८५१ । च  
 भण्डार ।

विशेष—यह प्रति पं० रायमल्ल के द्वारा बुन्दावती ( बुन्दी ) में स्थापितनाथ चन्द्रप्रभु चैत्यालय में लिखी गई  
 थी । कवि जिनदाम रगधंभीरगड के समीप नवलक्षपुर का रहने वाला था । उसने धेरपुर के शान्तिनाथ चैत्यालय में  
 स० १६०८ में उक्त ग्रन्थ की रचना की थी ।

२५०५ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ में ३५ । ले० कान । अर्पण । वे० सं० २१७१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।



## कथा-साहित्य

२५०६. अकलंकदेवकथा..... पत्र सं० ४ । प्रा० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।  
१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५६ । ट भण्डार ।

२५०७. अज्ञयनिधिमुष्टिकाविधानप्रतकथा..... पत्र सं० ६ । प्रा० २२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८३४ । ट भण्डार ।

२५०८. अठारहनासे की कथा—ऋषि लालचन्द्र । पत्र सं० ४२ । प्रा० १०×५ इञ्च । भाषा—  
हिन्दी । विषय—कथा । १० काल सं० १८०५ माह मुदी ५ । ले० काल सं० १८८३ कात्तिक बुदी ८ । वे० म० ६६८ ।  
अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम भाग—

नवन अठारह पञ्चोत्तर १८०५ जी हो माह सुदी पांचा गुरुवार ।

भगव मुहुरत मुभ जोग में जी हो कथण कसो मुवीचार ॥ धन धन० ॥४६६॥

श्री चीतोड सलहटी राजियो, जी हो ऋषि जीनेश्वर स्वाम ।

श्री मोष दोलती बी घणा जी हो सीध की पूरा जे हाम ॥ माहा मुनि० धन० ॥४७०॥

तलहटी श्री मीगराज तो, जी हो बहुनो छय परीवार ।

बेटा बेटा पोतरा जी हो अनधन अधीक अघार ॥ माहा मुनि० धन० ॥४७१॥

श्री कोठारी काम का धग्गी, जी हो द्वात्रड सो नगरा सेठ ।

था रावत मुराण ग्वांखर दीपता जी हो अोर बाण्या हेठ ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७२॥

श्री पुन्य मग छगोडवो महा जी हो श्री विजयराज वांखांण ।

पाट अघार आतर जी हो गुण सागर गुण खारण ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७३॥

सोभागी सीर मेहरा जी हो साग मुरी कल्याण ।

परवारा पूरा सही जी हो सकल वाता सु बायाण ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७४॥

श्री बीजवेगछें गंडवोचणी जी हो श्री भीम सागर मुरी पाट ।

श्री तीलक मुरद वीर जीवज्यो जी हो सहसगुणो का पाट ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७५॥

साध सकल मे सोभतो जी हो ऋषि लालचन्द्र मुसीस ।

अठारा नता बोधी कथी जी हो ढाल भग्गी इगतीस ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७६॥

ईतो श्री धर्मउपदेस अठारा नाता चरीत्र संपूर्ण समाप्ता ॥

विखतु बेनी मुक्कुवर जी धारज्या जी श्री १०८ श्री श्री श्री भागाजी तत् सखणी जी श्री श्री डमरजा श्री रामकुवर जी । श्री मेवकुवर जी श्री चंदनराजी श्री दुन्हडी भणता गुराता संपूर्ण ।

संवत् १८८३ वर्षे साके वर्षे भित्ती ब्राह्मोज ( काती ) वदी ८ मे दिन वार सोमरे । ग्राम संशामगडमध्ये संपूर्ण, बीमासो तीजो कीधो ठारा ६॥ की धो छो जदी लखीइ छ जी । श्री श्री १०८ श्री श्री मासत्या जी क प्रसाद लखेइ छ सेबुनी ॥ श्री श्री मासत्या जी वाचवाने अरथ । आरक्षा जी वाचवान अरथ ठारा ॥ ६ ॥

२५६६ अनन्तचतुर्दशी कथा—ब्रह्म ज्ञानसागर । पत्र सं० १२ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२३ । अ भण्डार ।

२५१० अनन्तचतुर्दशीकथा—मुनीन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३ । च भण्डार ।

२५११ अनन्तचतुर्दशीकथा..... । पत्र सं० ३ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५ । मू भण्डार ।

२५१२ अनन्तव्रतविधानकथा—मदनकीर्ति । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५८ । ट भण्डार ।

२५१३ अनन्तव्रतकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ७ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६ । ख भण्डार ।

विषय—संस्कृत पद्यो के हिन्दी अर्थ भी दिये हुये हैं ।

इनके अतिरिक्त ग भण्डार मे १ प्रति ( वे० सं० २ ) छ भण्डार मे ४ प्रान्या ( वे० सं० ८, ९, १०, ११ ) छ भण्डार मे १ प्रति ( वे० सं० ७४ ) आर है ।

२५१४ अनन्तव्रतकथा—भ० पद्मनन्दि । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १७८२ सावन बुदी १ । वे० सं० ७६ । छ भण्डार ।

२५१५ अनन्तव्रतकथा..... । पत्र सं० ४ । आ० ७३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७ । छ भण्डार ।

२५१६ प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१८० । ट भण्डार ।

२५१७ अनन्तव्रतकथा..... । पत्र सं० १० । आ० ६×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ( जैनतर ) २० काल × । ले० काल सं० १८३८ भाद्रवा मुदी ७ । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

२५१८ अनन्तव्रतकथा—सुरालचन्द्र । पत्र सं० ५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८३७ ब्राह्मोज बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ९६९ । अ भण्डार ।

२५१६. अंजनचौरकथा..... पत्र सं० ६ । आ० ८ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६१४ । ट भण्डार ।

२५२०. अषाढएकादशीमहात्म्य..... पत्र सं० २ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११४६ । अ भण्डार ।

विशेष—यह जैनेतर ग्रन्थ है ।

२५२१. अष्टांगसम्यग्दर्शनकथा—सकलकीर्ति । पत्र सं० २ मे ३६ । आ० ७ $\frac{१}{२}$ ×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२१ । ट भण्डार ।

विशेष—कुछ बीच के पत्र नहीं है । आठो अङ्गो की अलग २ कथाये है ।

२५२२. अष्टांगोपाख्यान—पंच मेधावी । पत्र सं० २८ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१८ । अ भण्डार ।

२५२३. अष्टाहिकाकथा—भठ शुभचंद्र । पत्र सं० ८ । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०० । अ भण्डार ।

विशेष—अ भण्डार मे ३ प्रतिया ( वे० सं० ४८५, १०७०, १०७२ ) ग भण्डार मे १ प्रति ( वे० सं० ३ ) ङ्क भण्डार मे ४ प्रतिया ( वे० सं० ४१, ४२, ४३, ४४ ) च भण्डार मे ६ प्रतिया ( वे० सं० १५, १६, १७, १८, १९, २० ) तथा छ भण्डार मे १ प्रति ( वे० सं० ७४ ) और है ।

२५२४. अष्टाहिकाकथा—नथमल । पत्र सं० १८ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—कथा । २० काल सं० १६२२ फागुण सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२५ । अ भण्डार ।

विशेष—पद्यो के चारो ओर बेल बनी हुई है ।

इनके अतिरिक्त क भण्डार मे ४ प्रतिया ( वे० सं० २७, २८, २९, ७६३ ) ग भण्डार में १ प्रति ( वे० सं० ८ ) ङ्क भण्डार मे ४ प्रतिया ( वे० सं० ४५, ४६, ४७, ४८ ) च भण्डार मे ४ प्रतिया ( वे० सं० ५०६, ५१०, ५११, ५१२ ) तथा छ भण्डार मे १ प्रति ( वे० सं० १७६ ) और है ।

इसका दूसरा नाम सिद्धचक्र प्रतकथा भी है ।

२५२५. अष्टाहिकाकौमुदी..... पत्र सं० ५ । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७११ । ट भण्डार ।

२५२६. अष्टाहिकाप्रतकथा..... पत्र सं० ४३ । आ० ६×६ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७२ । छ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० १४५ ) की और है ।



२५२७. अष्टाङ्गिकाव्रतकथासंग्रह—गुणचन्द्रसूरी । पत्र सं० १४ । प्रा० ६३×६३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × १ ले० काल × १ पूर्ण । वै० सं० ७२ । छ भण्डार ।

२५२८. अशोकरोहिणीकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ६ । प्रा० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × १ ले० काल सं० १८६४ । पूर्ण । वै० सं० ३५ । छ भण्डार ।

२५२९. अशोकरोहिणीव्रतकथा ..... । पत्र सं० १८ । प्रा० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—कथा । १० काल × १ ले० काल × १ पूर्ण । वै० सं० ३६ । छ भण्डार ।

२५३०. अशोकरोहिणीव्रतकथा..... । पत्र सं० १० । प्रा० ८ $\frac{१}{२}$ ×६ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । १० काल सं० १७८४ पौप बुदी ११ । पूर्ण । वै० सं० २८१ । छ भण्डार ।

२५३१. आकाशपंचमीव्रतकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ६ । प्रा० ११ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{१}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × १ ले० काल सं० १६०० श्रावण सुदी १३ । पूर्ण । वै० सं० ५१ । छ भण्डार ।

२५३२. आकाशपंचमीकथा..... । पत्र सं० ६ मे २१ । प्रा० १०×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × १ ले० काल × १ अपूर्ण । वै० सं० ५० । छ भण्डार ।

२५३३. आराधनाकथाकोष..... । पत्र सं० ११८ से ३१७ । प्रा० १२×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × १ ले० काल × १ अपूर्ण । वै० सं० १६७३ । अ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार मे १ प्रति ( वै० सं० १७ ) तथा ट भण्डार मे १ प्रति ( वै० सं० २१७४ ) आर हे तथा दोनो ही अपूर्ण है ।

२५३४. आराधनाकथाकोष ..... । पत्र सं० १४४ । प्रा० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × १ ले० काल × १ अपूर्ण । वै० सं० २८६ । अ भण्डार ।

विशेष—८४वी कथा तक पूर्ण है । ग्रन्थकर्ता का निम्न परिचय दिया है ।

श्री मूलसंधे वरभारतीये गच्छे ब्रवात्कारयगोति रम्ये ।

श्रीकुन्दकुदाल्यमुनीद्रवंशे जाते प्रभाचन्द्रमहायतीन्द्रः ॥५॥

देवेंद्रचंद्रार्कसम्मचिनेन तेन प्रभाचन्द्रमुनीष्यरेण ।

अनुग्रहार्थं रचितं मुत्वायै आराधनासारः।याप्रबन्धः ॥६॥

तेन क्रमेणैव मया स्वशक्त्या श्लोकैः प्रसिद्धैश्च निगद्यते सः ।

मायेंन किं शानुकरप्रकाशे स्वलीलयो गच्छन्ति सर्वलोकः ॥७॥

प्रथेक कथा के अन्त मे परिचय दिया गया है ।

२५३५. आराधनासारप्रबंध—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० १५६ । प्रा० ११. ४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × १ ले० काल × १ अपूर्ण । वै० सं० २०६५ । ट भण्डार ।

विशेष—५६ से आगे तथा बीच में भी कई पत्र नहीं है ।

२५३६. आरामशोभाकथा..... पत्र सं० ६ । प्रा० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३६ । अ भण्डार ।

विशेष—जिन पूजाफल कथायें हैं ।

प्रारम्भ—

अम्बदा श्री महावीरस्वामी राजगृहेपुरे  
समवासरदुयाने भूसो गुण शिलाभिधे ॥१॥  
सद्धर्ममूलसम्यक्त्वं नैर्मल्यकरणे सदा ।  
यतध्वमिति तीर्थेया वक्तिदेवादिपर्षदि ॥२॥  
देवपूजाविधोराज्यसंपर्षं मुरसंपदं ।  
निर्वारिणकमलांबापि लभते नियतं जनः ॥३॥

अन्तिम पाठ—

यावद्दंबी सुते राज्यं नाम्ना मलयमुंदरे ।  
क्षिपाभि सफलं तावत्करिष्यामि निजं जनु ॥७५॥  
सूर नत्वा गृहे गत्वा राज्यं क्षिप्त्वा निजागजे ।  
आरामशोभायुक्ते राजाश्रितमुपाह्वते ॥७६॥  
अधीत सर्वसिद्धांतं संविम्वगुगसंयुतं ।  
एवं संस्थापयामास मुनिराजो निजे पदे ॥७७॥  
यातायायै तभारामशोभायै गुणभूमये ।  
प्रवृत्तिनीपदं प्रादान् गुरुस्तद्गुणरंजितः ॥७८॥  
सबोध्य भविकान् सूरिः कृत्वा तैरनशनं तथा ।  
धिपद्यद्वावपि स्वर्गसंपदं प्रापतुर्वरं ॥७९॥  
ततश्च्युत्वा क्रमादेतौ नरता सुदता वरान् ।  
भयान् कतिपयान् प्राप्य शास्वती सिद्धिमेप्स्यत ॥८०॥  
एवं भोस्तीर्थकृद्भक्तेः फलमाकर्षं मुंदरं ।  
कार्यस्तत्करणेपन्नो युष्माभिः प्रमदत्सदा ॥८१॥  
॥ इति जिनपूजा विषये आरामशोभाकथा संपूर्णं ॥  
संस्कृत पद्य संख्या २८१ है ।

२५३७. उपांगललितव्रतकथा..... पत्र सं० १४ । प्रा० ८३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
कथा ( जनेतर ) १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२३ । अ भण्डार ।

२५३८. ऋणसंबंधकथा—अभयचन्द्रगणि । पत्र सं० ४ । प्रा० १०×४३ इंच । भाषा—प्राकृत ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६६२ ज्येष्ठ बुदी १ । पूर्ण । वै० सं० ८४० । अ भण्डार ।

विशेष—आगंदरायगुलगा सोमेश अभयचंद्रगणिराय माहणचन्द्रपुत्राणं कथाकियं म्यारघनरसए ॥१२॥

इति रिणु संबंधे छ ॥१॥

श्री श्री पं० श्री धाराणंदविजय मुनिभिल्लि । श्री किहोरमध्ये संवत् १६६२ वर्षे जेठ वदि १ दिने ।

२५३९. औषधदानकथा—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सं० ६ । प्रा० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अ पूर्ण । वै० सं० २०८१ । ट भण्डार ।

विशेष—२ मे ५ तक पत्र नहीं है ।

२५४०. कठियारकानडरीचौपई—मानसागर । पत्र सं० १४ । प्रा० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २० काल सं० १७४७ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १००३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रादि भाग ।

श्री शुक्म्योनमः दाल जंबूद्वीप मभार एहनी प्रथम—

मुनिवर धार्यमुहस्तिकिए इक भवसरइ नयइ उजेणी भावियारे ।

चरण करण व्रतधार गुणमणि भागर बहु परिवारे परिवस्याए ॥१॥

वन वाढी विश्राम लेइ तिहां रछा दोइ मुनि नगर पठाविया ए ।

थानक मागण काज मुनिवर मान्हता भद्रानड' घरि भाविया ए ॥२॥

मेठानी कहे ताम शिष्य तुम्हे केहनस्ये काजै श्राम्या इहा ए ।

धार्यमुहस्तिकना सोस श्रम्हे छां श्राविका उचाने गुरु छै तिहाए ॥३॥

अन्तिम—

मनरै मेतले समै म. तिहा कीषी चौमाम ॥ सं० ॥

सदगुरु ना परसाद थी म. पूगी मन की आम ॥ म० ॥

मानसागर सुख संवदा म. जति सागरगणि सोम ॥ म० ॥

माधुतरा गुणगावता म. पूगी मनइ जगीस ॥

दिग पट कथा कोस थी म. रचीयो ए अधिकार ।

अडि को उछो भाषीयां मं, भिछा तुकड़ कार ॥

नवमी दाल सोहामजी मं० गोडी राग मुरंग ।

मानसागर कहै साभलो दिन दिन बधतो रंग ॥ १० ॥

इति श्री रीस विषय कठीयार कानडरी चौपई संपूर्ण ।

२५४१. कथाकोश—हरियेणाचार्य । पत्र सं० ४६१ । प्रा० १०×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल सं० ६८६ । ले० काल सं० १५६७ पौष बुदी १४ । वे० सं० ८४ । अ भण्डार ।

विशेष—संधी पदारथ ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२५४२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१८ । प्रा० १०×४ $\frac{१}{२}$  इंच । ले० काल १८३३ भादवा बुदी ५ । वे० सं० ६७१ । क भण्डार ।

२५४३. कथाकोश—धर्मचन्द्र । पत्र सं० ३६ मे १०६ । प्रा० १२×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल सं० १७६७ श्रवाढ बुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० १६९७ । अ भण्डार ।

विशेष—१ से ३८, ५३ से ७० एवं ८७ से ८६ तक के पत्र नहीं हैं ।

लेखक प्रशस्ति—

संबत् १७६७ का आसाढमासे कृष्णपक्षे नवम्या शनिवारे अजमेराख्ये नगरे पातिस्थाहाजी ब्रह्मदस्याहजी महाराजाधिराज राजराजेश्वरमहाराजा श्री उभैसिहजी राज्यप्रवर्त्तमाने श्रीमूलसंघेसरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे नंदाग्नाये कुंदकुंदाचार्यान्वये मंडलाचार्य श्रीरत्नकीर्त्तिजी तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीविद्यानंदिजी तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीश्रीमहेन्द्रकीर्त्तिजी तत्पट्टे मंडलाचार्यजी श्री श्री श्री १०८ श्री अनंतकीर्त्तिजी तदग्नाये ब्रह्मचारीजी किसनदासजी तत् शिष्य पंडित मनसाराभेग्य व्रतकथाकोशाख्यं शास्त्रलिखापितं धर्म्मोपदेशदानार्थं ज्ञानावरणीकर्मलयार्थं मंगलभूयाच्चतुर्विधसंधानां ।

२५४४. कथाकोश (आराधनाकथाकोश)—त्र० नेमिदत्त । पत्र सं० ४६ से १६२ । प्रा० १२ $\frac{१}{२}$ ×६ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल सं० १८०२ कार्तिक बुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० २२६६ । अ भण्डार ।

२५४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २०३ । ले० काल सं० १६७५ सावन बुदी ११ । वे० सं० ६८ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है ।

इनके प्रतिरिक्त क भण्डार मे १ प्रति ( वे० सं० ७४ ) च भण्डार मे १ प्रति ( वे० सं० ३४ ) छ भण्डार मे २ प्रतिया ( वे० सं० ६४, ६५ ) और है ।

२५४६. कथाकोश ..... । पत्र सं० २५ । प्रा० १२×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५६ । च भण्डार ।

विशेष—च भण्डार मे २ प्रतिया ( वे० सं० ५७, ५८ ) ट भण्डार मे २ प्रतिया ( वे० सं० २११७ २११८ ) और है ।

२५४७. कथाकोश ..... । पत्र सं० २ मे ६८ । प्रा० १२×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६ । क भण्डार ।

२५४८. कञ्जारसगर—नारचन्द्र । पत्र सं० ५ । भा० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२५४ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच के १७ से २१ पत्र है ।

२५४९. कथासंग्रह—ब्रह्मज्ञानसागर । पत्र सं० २५ । भा० १२×६<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल सं० १८५४ बैशाख बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ३६८ । अ भण्डार ।

| नाम कथा                  | पत्र     | पृथ संख्या |
|--------------------------|----------|------------|
| [१] त्रैलोक्य तीज कथा    | १ मे ३   | ५२         |
| [२] निसल्याष्टमी कथा     | ४ से ७   | ६४         |
| [३] जिन रात्रिगत कथा     | ७ से १२  | ६६         |
| [४] अष्टाह्निका व्रत कथा | १२ मे १५ | ५२         |
| [५] रक्षबंधन कथा         | १५ से १६ | ७६         |
| [६] रोहिणी व्रत कथा      | १६ मे २३ | ६५         |
| [७] आदित्यवार कथा        | २३ से २५ | ३७         |

विशेष—१८५४ का बैशाखमासे कृष्णपक्षे तिथी २ शुक्रवासर । लिखित महात्मा स्वर्णुराम सवाई जयपुर मध्ये । लिखायतं चिरंजीव साहजी हरचंदजी जाति भौसा पठनार्थ ।

२५५०. कथासंग्रह..... । पत्र सं० ३ मे ६ । भा० १०×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—प्राकृत हिन्दी । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२६३ । अपूर्ण । अ भण्डार ।

२५५१. कथासंग्रह..... । पत्र सं० ६४ । भा० १२×७<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६ । क भण्डार ।

विशेष—व्रत कथाये भी है । इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० १०० ) भीर है ।

२५५२. कथासंग्रह..... । पत्र सं० ७८ । भा० १०<sup>३</sup>×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४४ । अ भण्डार ।

२५५३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७६ । ले० काल सं० १५७८ । वे० सं० २३ । ख भण्डार ।

विशेष—३४ कथाओं का संग्रह है ।

२५५४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२ । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न कथायें ही हैं ।

१. पौडशकारणकथा—राधाप्रभदेव ।

२. रत्नत्रयविधानकथा—रत्नकर्ति ।

कृ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ६७ ) और है ।

२५५५. कथवन्नाचौपई—जिनचंद्रसूरि । पत्र सं० १५ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४३ इंच । भाषा—हिन्दी ( रात्रन्वानी ) । विषय—कथा । २० काल सं० १७२१ । ले० काल सं० १७६६ । पूर्ण । वे० सं० २४ । ख भण्डार ।  
विशेष—चयनविजय ने कृष्णगड में प्रतिलिपि की थी ।

२५५६. कर्मविपाक..... । पत्र सं० १८ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल सं० १८१६ मगसिर बुदी १४ । वे० सं० १०१ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति श्री सूर्यालयसंवादरूपकर्मविपाक संपूर्ण ।

२५५७. कवलचन्द्रायणव्रतकथा..... । पत्र सं० ४ । आ० १२×५ उच्च । भाषा—गम्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०५ । अ भण्डार ।

विशेष—कृ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १०६ ) तथा अ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ४४२ ) और है ।

२५५८. कृष्णरुक्मिणीमंगल—पदमभगत । पत्र सं० ७३ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{१}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८६० । वे० सं० ११६० । पूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—श्री गणेशाय नमः । श्री गुरुभ्यो नमः । प्रथ रुक्मिणि मंगल लिखते ।

यादि कीयो हरि पदमयोजी, दोयो विवाण खिनाय ।  
कीरतकरि श्रीकृष्ण की जी, लीयो हबुरी बुलाय ॥  
पावा लायो पदमयोजी, जहां बड़ा रुक्मणी जादुराय ।  
करा करी हरी भगत पै जी, पीतामर पह्राय ॥  
घास्यादि हरि भगत ने जी, पुरी दुवारिका माहि ।  
रुक्मणि मंगल सुरी जी, ते भ्रमरापुरि जाहि ॥  
नरनारियो मंगल सुरी जी, हरिचरण बितलाय ।  
बै नारी इंद्र की अपहरा जी, वै नर बैकुंठ जाय ॥  
व्याह बेल भागीरथि जी गीता सहसर नाब ।  
गावतो भ्रमरापुरी जी पाव(व)न होय सब गांव ॥  
बोलै राणी रुक्मणि जी, सुराज्यो भगति मुजाण ।  
या किया रति केशो तरणी जी, येसडीर करोजी बसाण ॥  
थी मंगल परगठ करी जी, सत को सबद विचारि ।  
बीडा दीयो हरी भगत ने जी, कथीयो कृष्ण मुरारि ॥

गुरु गोविंद नै बिनवा जी, व भ्रमिनासी जी देव ।  
 तन मन तो प्रागै धरा जी, कराजी गुरा की जी सेव ॥  
 गुरु गोविंद बलाइया जी, हरी थापै बहमंड ।  
 गुरु गोविंद कै सरनै भ्राये, होजो कुल की लाज सब पेली ।  
 कृष्ण कृपा ते काम हमारो, भगता पदम यो तेनी ॥

पत्र ४० - राग मिथु ।

समियाल राजा बोलियो जी सुरिण जे राज कवार ।  
 जो जादु बुध भ्रायसी, तो भोत बजाऊ सार ॥  
 ये कै सार धार करु बैरखा, बाए वहाँ अरार ।  
 गोला नालि अनेक छूटै सारग्या री मार ॥  
 डाहलतरिण फोजै भली पर भ्राप मुगिण्यो राज्य को बार ॥  
 भूप बतलाइयाइ जी..... ।

अन्तिम—

माता करी नै प्रभुजी रो अरितो भोमि दान दत होय ।  
 श्रवण सत गुर साभलो, दीप न लागै कोय ॥  
 श्रीकृष्ण की ब्याहलौ, गुणै सकल चितलाय ।  
 हरि पुरखे सब कामना, भगति मुकति फलदाय ॥  
 द्वारामात आनन्द हुवा, मुनिजन देत असीस ।  
 जन पिय सामलिया, सीयामणि जगदीस ॥

रुकमणि जी मंगल मंपूर्ण ॥

मंत्र १८७० का माने १७३५ का भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे पंचम्या चित्राभौमनक्षत्रे द्वितीयचरणे तुलाभ्यर्धेयं समाप्तोयं ॥ शुभं ॥

२५५६. कौमुदीकथा—आचार्य धर्मकीर्ति । पत्र सं० ३ मे ३५ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—  
 संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६६३ । अपूर्णा । वे० सं० १३२ । कृ भण्डार ।

विशेष—ब्रह्म इंगरमी ने लिखा । बीच के १६ मे १८ तक के भी पत्र नहीं है ।

२५६८. ख्याल गोपीचंदका..... । पत्र सं० १६ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—  
 कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८५ । कृ भण्डार ।

विशेष—अंत में श्री भी रागिनियों के पद दिये हुये हैं ।

२५६९. चतुर्दशीविधानकथा..... । पत्र सं० ११ । आ० ८×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।  
 २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८७ । कृ भण्डार ।

२५६२. चंद्रकुंवर की बार्ता—प्रतापसिंह । पत्र सं० ६ । भा० ११×४३ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।  
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८४१ भाववा । पूर्ण । वे० सं० १७१ । अ भण्डार ।

विशेष—६६ पद्य हैं । पंडित मन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

अन्तिम—

प्रतापसिंह घर मन बसी, कविजन सदा मुहाइ ।

जुग जुग जीवो चंद्रकुंवर, बात कही कविराय ॥ ६६ ॥

२५६३ चन्दनमलयगिरीकथा—भद्रसेन । पत्र सं० ६ । भा० ११×५३ इंच । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । आदि अंत भाग निम्न प्रकार है ।

प्रारम्भ—

स्वस्ति श्री विक्रमपुरे, प्रणमौ श्री जगदीस ।

तन मन जीवन मुख करण, पूरत जगत जगीस ॥१॥

बरदाइक श्रुत देवता, मति विस्तारण मात ।

प्रणमौ मन धरि मोद सी, हरै विचन संघात ॥२॥

मम उपकारी परमगुरु, गुण अक्षर दातार ।

बंदे ताके चरण जुग, भद्रमेन मुनि सार ॥३॥

कहा चन्दन कहा मलयगिरि, कहा सायर कहा नीर ।

कहिये ताकी वारता, सुणो सबे बर वीर ॥४॥

अन्तिम—

कुमर पिता पाइन छुबै, भीर लिये पुर संग ।

आसुन की धारा छुटी, मानो न्हावण गंग ॥ १८६॥

दुख जु मन मे मुख भयो, मागौ विरह विजोग ।

आनन्द सी च्यारी मिले, भयो अपूरव जोग ॥ १८७॥

गाथा—

कच्छवि चंदन राया, कच्छव मलयगिरिविजे ।

कच्छ जोहि पुण्यवन होई, दिठता संजोगो हवइ एव ॥१८८॥

कुल १८८ पद्य है । ६ कलिका हैं ।

२५६४. चन्दनमलयगिरिकथा—चत्तर । पत्र सं० १० । भा० १०½×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—कथा । २० काल सं० १७०१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७२ । अ भण्डार ।

अन्तिम डाल—डाल एहवी साधनुमु ।

कठिन माहावरत राख ही व्रत राखीहि सोइ चतर मुजारा ॥

अनुकरमइ सुख पामीयाजी, पाम्यो अमर विमारा ॥ १ ॥ गुणवंता साधनमु ॥



गुण दान लील तप भावना, व्या रे धरम प्रधान ॥  
 सुधइ चित्त जे पालइ जी पासी मुख कल्याण ॥ २ ॥ गुण० ॥  
 सतियाना गुण गावता जो जावह पातिग दूर ॥  
 भली भावना भावइ जी जाइ उपसरग दूर ॥ ३ ॥ गुण० ॥  
 संमत सत्रासइ इकोतरइ जी कीधो प्रथम भ्रभास ॥  
 जे नर नारी साभलो जी तस मन होइ उलास ॥ ४ ॥ गुण० ॥  
 राखी नगर सो पावणो जी वसइ तहाँ सरावक लोक ॥  
 देव गुरा नारा गाया जी लाजइ सखला लोक ॥ ५ ॥ गुण० ॥  
 गुजराति गच्छ जाणोयइ जी श्री पूज्य जी जसराज ॥  
 घाबारइ करो सोभतो जी सं.....वीरज रूपराज ॥ ६ ॥ गुण० ॥  
 तस गच्छ माहि सोभता जी सोभा धिवर मुजाण ॥  
 मोहला जी ना जस घणा जी सोभ्या बुद्धि निधान ॥ ७ ॥ गुण० ॥  
 वीर वचन कहइ वीरज हो तस पाटे धरमदास ॥  
 भाऊ धिवर वरवाणोयइ जी पंडित गुणाहि निवास ॥ ८ ॥ गुण० ॥  
 तस सेवक इम वीनवइ जो चतर कहइ चितलाय ॥  
 गुणभणता गुणता भावसुजी तस मन वंछित वाय ॥ ९ ॥ गुण० ॥

॥ इति श्रीचंदनमनयागिरिचरित्रसमाप्तं ॥

२५६५. चन्दनषष्टिकथा—३० श्रुतसागर । पत्र सं० ४ । भा० १२/६ टङ्क । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १७० । क भण्डार ।

विशेष—क भण्डार मे एक प्रति वै० सं० १६६ की ओर है ।

२५६६. चन्दनषष्टिकथा..... । पत्र सं० २४ । भा० ११/५ टं'च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १८ । घ भण्डार ।

विशेष—अन्य कथायें भी हैं ।

२५६७. चन्दनषष्टिशतकथाभाषा—सुरालचंद्र काला । पत्र सं० ६ । भा० ११/६ टं'च । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १६९ । क भण्डार ।

२५६८. चंद्रहंसकी कथा—टीकम । पत्र सं० ७० । भा० १५/६ टं'च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।

२० काल सं० १७०८ । ले० काल सं० १७३३ । पूर्ण । वै० सं० २० । घ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त सिन्दूरप्रकरण एकीभाषा स्तोत्र धारि ओर है ।

२५६६. चारमित्रों की कथा—अजयराज । पत्र सं० ५ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । १० काल सं० १७२१ ज्येष्ठ सुदी १३ । ले० काल सं० १७३३ । पूर्ण । वै० सं० ५५३ । अ भण्डार ।

२५७०. चित्रसेनकथा..... । पत्र सं० १८ । आ० १२×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल सं० १८२१ पौष बुदी २ । पूर्ण । वै० सं० २२ । अ भण्डार ।

विशेष—श्लोक सख्या ४६५ ।

२५७१. चौआराधनाउद्योतककथा—जोधराज । पत्र सं० ६२ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल सं० १८४६ मगधिर सुदी ८ । पूर्ण । वै० सं० २२ । अ भण्डार ।

विशेष—सं० १८०१ की प्रति में लिखी गई है । जमनालाल साह ने प्रतिनिधि की थी ।

सं० १८०१ चाकमू" इतना और लिखा है । मूल्य—५) ॥) इन तरह कुल ५॥३ लिखा है ।

२५७२. जयकुमारसुलोचनाकथा..... । पत्र सं० १६ । आ० ७×८ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १७६ । अ भण्डार ।

२५७३. जिनगुणसंपत्तिकथा..... । पत्र सं० ४ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल सं० १७८५ चैत्र बुदी १३ । पूर्ण । वै० सं० ३११ । अ भण्डार ।

विशेष—अ भण्डार में ( वै० सं० १८८ ) की एक प्रति और है जिनकी जयपुर में मागीनाल बज ने प्रतिनिधि की थी ।

२५७४. जीवजीतसंहार—जैतराम । पत्र सं० ५ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७७६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसमें कवि ने मोह और चतन के सग्राम का कथा के रूप में वर्णन किया है ।

२५७५. ज्येष्ठजिनवरकथा..... । पत्र सं० ४ । आ० १३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४८३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ( वै० सं० ४८४ ) की एक प्रति और है ।

२५७६. ज्येष्ठजिनवरकथा—जसकीर्ति । पत्र सं० ११ में १८ । आ० १२×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल सं० १७३७ आश्विन बुदी ४ । अपूर्ण । वै० सं० २०८० । अ भण्डार ।

विशेष—जसकीर्ति देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे ।

२५७७. डोलामारुवणी चौवई—कुशलनाभगणि । पत्र सं० २८ । आ० ८×४ इंच । भाषा—हिन्दी ( राजस्थानी ) । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २३८ । अ भण्डार ।

२१७८. **ढोलामारुणीकीबात** ... । पत्र सं० २ से ७७ । भा० ६×८<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—कथा । १० काल × । ले० काल सं० १६०० प्राषाढ सुदी ८ । अपूर्णा । वै० सं० १५६१ । ट अण्डार ।

विशेष—१, ४, ५ तथा ६ठा पत्र नहीं है ।

हिन्दी गद्य तथा दोहे हैं । कुल ६८८ दोहे हैं जिनमें ढोलामारु की बात तथा राजा नल की विपत्ति आदि का वर्णन है । अन्तिम भाग इस प्रकार है—

मारुजी पीहरनै कागद लिखि प्रोहित नै मोख दीनी । ईं भाति नरवल की राज करे छै । मारुजी का कूँख कंवर लिछमरा स्थंघ जी हुवा । मालवरा की कूँखि कंवर वीरभाण जी हुवा । दाय कंवर ढोला जी क हुवा । ढोला जी की मारुजी को श्री महादेव जी की किरपा सु घमर जोडो हुई । लिछमरा स्थंघ जी कंवर सुं प्रीलाद कुछाहा की चाली । ढोला सूँ राजा रामस्थंघ जीं ताईं पोडो एक सोदस हुई । राजाधिराज महाराजा श्री मवाई ईंसरीसिंहजीं तोडो पीढी एक मी चार हुई ॥

इति श्री ढोलामारुजी वा राजा नल का विषा की वारता संपुरण । मिनी साठ सुदी ८ बुधवार सं० १६०० का लिछमणराम चादवाड की पीथी मु उतार निखिनं ' ...रामगंज मे' ... ।

पत्र ७७ पर कुछ शृंगार रस के कवित्त तथा दोहे हैं । बुधराम तथा रामचरण के कवित्त एव मिश्रर की कुंडलिया भी है ।

२१७९. **ढोलामारुणी की बात** ... । पत्र सं० ९ । भा० ८<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×६ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० १५६० । ट अण्डार ।

विशेष—५२ पद्य तक गद्य तथा पद्य मिश्रित है । बीच बीच में दोहे भी दिये गये हैं ।

२१८०. **रामोकारसंज्ञकथा** ... । पत्र सं० ८२ से ७१ । भा० १२<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×१६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० २३७ । क अण्डार ।

विशेष—रामोकार मन्त्र के प्रभाव की कथाय है ।

२१८१. **त्रिकालचौबीसीकथा (रोटतीजकथा)**—पंच अक्षरेव । पत्र सं० २ । भा० ११<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×१७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल सं० १८२२ । पूण । वै० सं० २६६ । अ अण्डार ।

विशेष—इयाँ अण्डार में १ प्रति ( वै० सं० ३०८ ) की श्रौर है ।

२१८२ **त्रिकालचौबीसी (रोटतीज) कथा—गुणनन्दि** । पत्र सं० २ । भा० १०<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—तथा । १० काल × । ले० काल सं० १८६६ । पूणे । वै० सं० ४८२ । अ अण्डार ।

विशेष—इसी अष्टादश में एक प्रति ( वे० सं० १३३७ ) छ अष्टादश में एक प्रति ( वे० सं० २५४ ) छ अष्टादश में तीन प्रतियां ( वे० सं० ६६२, ६६३, ६६४ ) और हैं ।

२५८३. त्रिलोकसारकथा..... । पत्र सं० १२ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल सं० १६२७ । ले० काल सं० १८५० ज्येष्ठ शुद्धी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३८७ । अ अष्टादश ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

सं० १८५० शके १७१५ मिति ज्येष्ठ शुद्धा ७ रविदिने लिखायितं पं० जी श्री भागचन्द्रजी माल कोट्टे पधारया ब्रह्मचारीजी शिवसागरजी चेलान लेबा । दक्षण्याकर उं भाई कै राडि हुई सूबादार तक्रूजी भाग्यो राजा जी की फने हुई । लिखित शुद्धी मेवराज नगरमध्ये ।

२५८५. दत्तात्रय ..... । पत्र सं० ३६ । आ० १३३×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १९१५ । पूर्ण । वे० सं० ३४१ । अ अष्टादश ।

२५८५. दर्शनकथा—भारामल्ल । पत्र सं० २३ । आ० १२×७ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८१ । अ अष्टादश ।

विशेष—इसके अनिर्दिष्ट अ अष्टादश में एक प्रति ( वे० सं० ४१४ ) छ अष्टादश में १ प्रति ( वे० सं० २९३ ) छ अष्टादश में १ प्रति ( वे० सं० ३९ ) अ अष्टादश में १ प्रति ( वे० सं० ५८६ ) तथा अ अष्टादश में ३ प्रतियां ( वे० सं० २६५, २६६, २६७ ) और हैं ।

२५८६. दर्शनकथाकोश ..... । पत्र सं० २२ से ६० । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८ । अ अष्टादश ।

२५८७. दशमूर्खोंकी कथा..... । पत्र सं० ३९ । आ० १२×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १७४६ । पूर्ण । वे० सं० २९० । अ अष्टादश ।

२५८८. दशलक्षणकथा—लोकसेन । पत्र सं० १२ । आ० ९३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८९० । पूर्ण । वे० सं० ३५० । अ अष्टादश ।

विशेष—अ अष्टादश में दो प्रतियां ( वे० सं० ३७, ३८ ) और हैं ।

२५८९. दशलक्षणकथा..... । पत्र सं० ५ । आ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१३ । अ अष्टादश ।

विशेष—अ अष्टादश में १ प्रति ( वे० सं० ३०२ ) की और है ।

२५९०. दशलक्षणव्रतकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०७ । अ अष्टादश ।

२५६१. दानकथा—आरामल्ल । पत्र सं० १८ । आ० ११३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसके प्रतिरिक्त अ भण्डार मे १ प्रति ( वे० सं० ६७६ ) क भण्डार मे १ प्रति ( वे० सं० ३०४ ) क भण्डार मे १ प्रति ( वे० सं० ३०४ ) छ भण्डार मे १ प्रति ( वे० सं० १८० ) तथा ज भण्डार मे १ प्रति ( वे० सं० २६८ ) और है ।

२५६२. दानशीलतपभावनाका चोढाल्या—समयसुन्दरगणि । पत्र सं० ३ । आ० १०×१६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० २१७६ ) की और है । जिस पर केवल दान गान तप भावना ही दिया है ।

२५६३. देवराजवच्छराज चौपई—सोमदेवसूरि । पत्र सं० २३ । आ० ११×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०७ । क भण्डार ।

२५६४. देवलोकनकथा..... । पत्र सं० २ मे ५ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल सं० १८५३ कार्तिक सुदी ७ । अ पूर्ण । वे० सं० १६६१ । अ भण्डार ।

२५६५. द्वादशत्रयकथा—पं० अन्नदेव । पत्र सं० ७ । आ० ६/५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२५ । क भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार मे दो प्रतिया ( वे० सं० ७३ एक ही प्रिण्ट ) और है ।

२५६६. द्वादशत्रयकथा/संग्रह—ब्रह्मचन्द्रसागर । पत्र सं० २० । आ० १२×६३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । १० काल × । ले० काल सं० १८५४ वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न कथाये और है ।

मौन एकादशकथा— ब० ज्ञानसागर भाषा— हिन्दी ।

शुनस्वधवतकथा— " " "

कोकिलापचमीकथा— ब० हर्षा " हिन्दी १० काल सं० १७३६

जिनप्रणसंपत्तिकथा— ब० ज्ञानसागर भाषा— हिन्दी ।

रात्रिभोजनकथा— — " "

२५६७. द्वादशत्रयकथा..... । पत्र सं० ७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०० । अ भण्डार ।

विशेष—पं० अन्नदेव की रचना के आधार पर इसकी रचना की गई है ।

व्य भण्डार में ३ प्रतियाँ ( वे० सं० १७२, ४३६ तथा ४४० ) और हैं ।

२५६८. धनदत्त सेठ की कथा..... पत्र सं० १४ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×७ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । १० काल सं० १७२५ । ले० काल × । वे० सं० ६८३ । अ भण्डार ।

२५६९. धन्नाकथानक..... पत्र सं० ६ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७ । घ भण्डार ।

२६००. धन्नासालिभद्रचौपई..... पत्र सं० २४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है । मुगलकालीन कला के ३८ सुन्दर चित्र हैं । २४ में आगे के पत्र नहीं है । प्रति अधिक प्राचीन नहीं है ।

२६०१. धर्मबुद्धिचौपई—लालचन्द्र । पत्र सं० ३७ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । विषय—कथा । भाषा—हिन्दी पद्य । १० काल सं० १७३६ । ले० काल सं० १८३० भादवा सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ६० । ख भण्डार ।

विशेष—स्वतरंगच्छप्रति जिनचन्द्रमूरि के शिष्य विजेराजगणि ने यह ढाल कहे हैं । ( पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

२६०२. धर्मबुद्धिपापबुद्धिकथा..... पत्र सं० १२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल सं० १८५५ । पूर्ण । वे० सं० ६१ । ख भण्डार ।

२६०३. धर्मबुद्धिमन्त्रीकथा—वृन्दावन । पत्र सं० २४ । आ० ११×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । १० काल सं० १८०७ । ले० काल सं० १६२७ सावण बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । क भण्डार ।

नंदीश्वरकथा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ८ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६२ ।

विशेष—सागानेर में ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

अ भण्डार में १ प्रति ( वे० सं० ७४ ) सं० १७८२ की लिखी हुई और है ।

२६०५. नंदीश्वरविधानकथा—हरिषेण । पत्र सं० १३ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६५ । क भण्डार ।

२६०६. नंदीश्वरविधानकथा..... पत्र सं० ३ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७३ । ट भण्डार ।

२६०७. नागमंता..... पत्र सं० १० । आ० १२×५ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—हिन्दी (रानस्थानी) । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६३ । अ भण्डार ।

विशेष—आदि अंत भाग निम्न प्रकार है ।

श्री नागमंता लिख्यते—

नगर हीरापुर पाटण भरीयइ, माहि हर केसरदेव ।  
 नमणि करइ वर नाम लेई नइ, करइ तुम्हारी सेव ॥१॥  
 करइ तुम्हारी सेवनइ, बसिगराइ तेढावीया ।  
 काल कंकोडनइ तित्वगिक्त'यर, अवर वेग बोलावीया ॥२॥  
 नाद वेद आणंद अधिक, करइ तुम्हारी सेव ।  
 नगर हीरापुर पाटण भरीयइ, माहि हर केसरदेव ॥३॥  
 राउ देहरासर बइठउ, आणे निरमल नीर ।  
 डंक गयउ भागीरथी, समुद्रइ पइलइ तीर ॥४॥  
 नीर लेई डंक मोकल्पउ लामी अति धरुवार ।  
 आण सवारथ पडीउ लोभइ, समुद्रइ पइलेपार ॥५॥  
 मह्य अठ्यामी जिहा देवता, जाई तिगुवनि पइठउ ।  
 गंगा तरणउ प्रवाह उ आयउ, राउ देहरा सरवइ छउ ॥६॥  
 राम मोकल्या छे वाडीये, आणे सुर ही जाइ ।  
 आणे मुरही पातरी, आणे मुरही भाइ ॥७॥  
 आणे मुरही भाइ नइ, आणे मुगंधी पातरी ।  
 आकतुल छीनइ पापची, करि कग बीर मुरातडी ॥८॥  
 जाइ बंडल करणउ, कंबडो राइ मच कुंड उ सारी ।  
 गुफ करंडक भरीनइ, आथो राइमो कल्याछइ बाडी ॥९॥

— ७५ —

एक कामिणि अवर बाली, विछोही भरतार ।  
 डक तरणउ शिर बरसही, ताल्हण अमी संचारि ॥  
 ताल्हण अमीय संचारि, मुक प्रिय मरइ अपूटउ ।  
 बाजि नहरि विष पंधारिउ, ताल्ह धवल नइ ऊठउ  
 रुदन करउ मुख घाह हउं मु सनेहा टाली ।  
 विछोही भरतार एक कामिणि अरु बाली ॥१॥  
 शकमुंडा कल बाजही, बहु कांसी भयकार ।

चंद्र रोहिणी जिम मिलिउं, तिम धरु मिली भरतार नइ ॥

तित्य गिरांगुड तूठउ बोलइ, अमीयविष गयउ छंडी ।

अंक तरणइ धिर तूठउ, उठिउ नाह हई मन संती ॥

मूँध मंगलक छाजइ,..... ।

बहु कांसी भमकार डाक छंडा कल वाजइ ॥

इति श्री नागमंता संग्रामम् । ग्रन्थाग्रन्य ३००७

पोथी ५१० मेरुकीति जी की । कथा के रूप में है । प्रति अनुसुद्ध लिखी हुई है ।

२६०८. नागश्रीकथा—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र सं० १६ । ५१३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
कथा । १० काल × । ले० काल सं० १८२३ चैत्र सुदी ९ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ३६७ ) तथा ज्ञ भण्डार में १ प्रति ( वे० सं० १०८ ) की  
घोर है ।

ज्ञ भण्डार वाली प्रति की गुरुदमलजी गोधा ने मालपुरा में प्रतिलिपि की थी ।

२६०९. नागश्रीकथा—किशानसिंह । पत्र सं० २७५ । ५१० ७३×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
कथा । १० काल सं० १७७३ सावण सुदी ६ । ले० काल सं० १७८५ पौष सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३५६ । क  
भण्डार ।

विशेष—जोबनेर में सोमपाल ने प्रतिलिपि की थी । ३६ पत्र से आगे अद्रबाहु चरित्र हिन्दी में है किन्तु  
अपूर्ण है ।

२६१०. निशल्याष्टमीकथा..... । पत्र सं० १ । ५१०×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।  
१० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० २११७ । अ भण्डार ।

२६११. निशिभोजनकथा—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र सं० ४० में ५५ । ५१० ८३×६ इंच । भाषा—  
संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८७ । अ भण्डार ।

विशेष—ज्ञ भण्डार में १ प्रति ( वे० सं० ९८ ) की घोर है जिसकी कि सं० १८०१ में महाराजा ईश्वर  
सिंहजी के शासनकाल में जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२६१२. निशिभोजनकथा..... । पत्र सं० २१ । ५१० १२×५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—  
कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८३ । क भण्डार ।

२६१३. नेमिच्याहलो..... । पत्र सं० ३ । ५१० १०×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । १०  
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२५५ । अ भण्डार ।



विशेष—प्रारम्भ—

नरसरीपुरी राजियाहु समदविजय राय धारो ।  
तस नंदन श्री नेमजी हु सावल बरण सरीरो ॥  
धन धन अदे छी ज्यो तेव राजसबररण करता ।  
वालवरनासे जीनमो सो सोरजी हु हुतो ॥  
समदवजजी रो नंद अतेरो ले धानण जी ।  
हुतो सावली हु श्री रो नमे कल्याण सु पावणो जी ॥

प्रति अशुद्ध एवं जीर्ण है ।

२६१४. नेमिराजलब्याहलो—गोपीकृष्ण । पत्र सं० ६ । अ० १०×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २० काल सं० १८६३ प्र० सावण बुदी ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२५० । अ भण्डार ।

प्रारम्भ—

श्री जिण वरण कमल नमो नमो अणगार ।  
नेमनाथ र ढाल तणे व्याहव घहु मुखदाय ॥  
द्वारामती नगरी भली सोरठ देस मभार ।  
इन्द्रपुरी सी ऊपमा मुंदर बहु विस्तार ॥  
चौडा नो जोजण तिहा लाबा वारा जाण ।  
साठि कोठि घर माहि रे वाहर थहतर प्रमाण ॥२॥

अन्तिम—

राजल नेम तरणो व्याहलो जी गावसो जो नरनारो ।

भग गुण मुणसी भलो जी पावसी मुख अणार ॥

कनक—

प्रथम सावण चौष मुकली वार मंगलवार ए ।

संबत् अठारा वरस तरेमठि माग जुल मुभार ए ।

श्री नेम राजल कसन गोपी तास चरत बखानइ ।

मुतार सीखा ताहि ताहि भावी कही कथा प्रमाण ए ॥

इति श्री नेम राजल विवाहलो संपूर्ण ।

इसके आगे नव अक्षर की ढाल दी है वह अपूर्ण है ।

२६१५. पचाख्यान—विष्णु शर्मा । पत्र सं० १ । अ० १२३×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २००६ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल ६३वा पत्र है । अ भण्डार में १ प्रति ( वे० सं० ५०१ ) अपूर्ण और है ।

२६१६. परसरामकथा..... पत्र सं० ६ । आ० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १०१७ । अ भण्डार ।

२६१७. पन्यविधानकथा—शुशालचन्द्र । पत्र सं० २१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य ।  
विषय-कथा । १० काल सं० १७८७ फागुन बुदी १० । पूर्ण । वै० सं० २० । अ भण्डार ।

२६१८. पल्लविधानत्रयःपाख्यानकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ११७ । आ० ११<sup>३</sup>×५ इञ्च । भाषा-  
संस्कृत । विषय-कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४५४ । क भण्डार ।

विशेष—अ भण्डार मे एक प्रति ( वै० सं० १०६ ) तथा ज भण्डार मे १ प्रति ( वै० सं० ८३ ) बिसका  
ले० काल सं० १६१७ प्राक्के है और है ।

२६१९. पात्रदानकथा—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र सं० ५ । आ० ११×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-  
कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २७८ । अ भण्डार ।

विशेष—आमर मे १० मनोहरलालजी पाटनी ने लिखी थी ।

२६२०. पुण्याश्रवकथाकोश—सुमुज्जु रामचन्द्र । पत्र सं० २०० । आ० ११×४ इंच । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४६८ । क भण्डार ।

विशेष—अ भण्डार मे एक प्रति ( वै० सं० ४६७ ) तथा अ भण्डार मे २ प्रतिया ( वै० सं० ६६, ७० )  
और है किन्तु नीना ही अपूर्ण है ।

२६२१. पुण्याश्रवकथाकोश—दौलतराम । पत्र सं० २४८ । आ० ११<sup>३</sup>×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी  
पद्य । विषय-कथा । १० काल सं० १७७७ भाद्रवा सुदी ५ । ले० काल सं० १७८८ मगसिर बुदी ३ । पूर्ण । वै० सं०  
३७० । अ भण्डार ।

विशेष—अहमदाबाद मे श्री अभयमेन ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार मे ५ प्रतिया ( वै० सं० ४३३,  
४०६, ८६५, ८६६, ८६७ ) तथा अ भण्डार मे ६ प्रतिया ( वै० सं० ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६८, ४६९ ) तथा  
अ भण्डार मे १ प्रति ( वै० सं० ६३५ ) अ भण्डार मे १ प्रति ( वै० सं० १७७ ) ज भण्डार मे १ प्रति ( वै० सं०  
१३ ) अ भण्डार मे १ प्रति ( वै० सं० २६८ ) तथा अ भण्डार मे एक प्रति ( वै० सं० १९४६ ) और है ।

२६२२. पुण्याश्रवकथाकोश..... पत्र सं० ९४ । आ० १६×७<sup>३</sup> इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा ।  
१० काल × । ले० काल सं० १८८४ ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । वै० सं० ५८ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साहू ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि खुशालचन्द्र के पुत्र सोनपाल से कराकर चौधरियो के मंदिर  
मे चढाई ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे एक प्रति ( वै० सं० ४६२ ) तथा ज भण्डार मे एक प्रति ( वै० सं०  
२६० ) [ अपूर्ण ] और है ।

२६२३. पुण्याश्रवकथाकोश—टेकचन्द । पत्र सं० ३४१ । भा० ११३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।  
विषय—कथा । २० काल सं० १६२८ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४६७ । क भण्डार ।

२६२४. पुण्याश्रवकथाकोश की सूची..... । पत्र सं० ४ । भा० ६३×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३४६ । झ भण्डार ।

२६२५. पुष्पांजलीव्रतकथा—श्रुतकीर्ति । पत्र सं० ५ । भा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६५६ । झ भण्डार ।

विशेष—झ भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ५६ ) श्रौत है ।

२६२६. पुष्पांजलीव्रतकथा—जिनदाम । पत्र सं० ३१ । भा० १०<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×८<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६७७ फागुण बुदी ११ । पूर्ण । वै० सं० ४७४ । क भण्डार ।

विशेष—यह प्रत बागड देश स्थित घाटकुल नगर में श्री वासुदेव चैत्यालय में श्रद्धा ठाकुरगी के जिये  
मरणदाम में लखी थी ।

२६२७. पुष्पांजलीव्रतविधानकथा . . . । पत्र सं० ६ में १० । भा० १०×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २२१ । च भण्डार ।

२६२८. पुष्पांजलीव्रतकथा—सुरालचन्द्र । पत्र सं० ६ । भा० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।  
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६८२ कार्तिक बुदी ८ । पूर्ण । वै० सं० ३०० । ख भण्डार ।

विशेष—झ भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० १०६ ) की श्रौत है जिसे महात्मा जोगी पन्नालाल ने जयपुर  
में प्रतिलिपि की थी ।

२६२९. वैतालपञ्चमी . . . । पत्र सं० ५५ । भा० ८<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २०  
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २५० । च भण्डार ।

२६३०. भक्तामरमत्तोत्रकथा—नथमल । पत्र सं० ८६ । भा० १०<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
कथा । २० काल सं० १८२६ । ले० काल सं० १८५६ फाल्गुण बुदी ७ । पूर्ण । वै० सं० २५५ । ड भण्डार ।

विशेष—च भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ७३१ ) श्रौत है ।

२६३१. भक्तामरमत्तोत्रकथा—विनोदीलाल । पत्र सं० १५७ । भा० १०<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×७<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इञ्च । भाषा—हिन्दी  
पद्य । विषय—कथा । २० काल सं० १७८७ सावन बुदी २ । ले० काल सं० १६८६ । अपूर्ण । वै० सं० २२०१ । झ  
भण्डार ।

विशेष—धीरे वा केवल एक पत्र कम है ।

इसके अतिरिक्त ड भण्डार में २ प्रतियां ( वै० सं० ५५५, ५५४ ) झ भण्डार में २ प्रतियां ( वै० सं०  
१८१, २२८ ) तथा झ भण्डार में १ प्रति ( वै० सं० १२६ ) की श्रौत हैं ।

२६३२. भक्तामरस्तोत्रकथा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १२८ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । १६३१ कायुग मुदी ४ । ले० काल सं० १६३८ । पूर्ण । वै० सं० ५६० । क भण्डार ।

२६३३. भोजप्रबन्ध ..... । पत्र सं० १२ से २५ । आ० ११×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अर्पूर्ण । वै० सं० १२५६ । अ भण्डार ।

विशेष—इ भण्डार मे एक प्रति ( वै० सं० ५७६ ) की शीर है ।

२६३४. मधुकैटभवध (महिषासुरवध)..... । पत्र सं० २३ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अर्पूर्ण । वै० सं० १३५३ । अ भण्डार ।

२६३५. मधुमालतीकथा—चतुर्भुजदाम । पत्र सं० ४८ । आ० ६×६ इंच । भाषा हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६२८ कायुग मुदी १२ । पूर्ण । वै० सं० ५८० । इ भण्डार ।

विशेष—पद्य सं० ६२८ । सरदारमन गांधी ने सवाई जयपुर मे प्रतिनिधि की थी । अन्त के ५ पन्ना मे स्तुति दी हुई है । इमी भण्डार मे १ प्रति [ अर्पूर्ण ] ( वै० सं० ५८१ ) तथा १ प्रति ( वै० सं० ५८२ ) की [ पूर्ण ] शीर है ।

२६३६. मृगापुत्रचउडाला ..... । पत्र सं० १ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ८३७ । अ भण्डार ।

विशेष—गृधाराणी के पुत्र का चौडाला है ।

२६३७. माधवानलकथा—आनन्द । पत्र सं० २ से १० । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अर्पूर्ण । वै० सं० १८०६ । ट भण्डार ।

२६३८. मानसुंगमानवतिचौपई—मोहनविजय । पत्र सं० २६ । आ० १०. ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८५१ कात्तिक मुदी ६ । पूर्ण । वै० सं० ५३ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रादि अ त्रभाग निम्न प्रकार है—

प्रादि—

शृषभ त्रिगुंद पदाकुजे, मधुकर करी लीन ।

प्रागम गुग सांडसवर, अति आरद थी लीन ॥१॥

यान पान सम जिनकर, तारग भवनिधि तोय ।

प्राप तर्था तारे अवर, तेहने प्रगति होइ ॥२॥

भावे प्रगमुं भारती, बरदाता मुक्लिाम ।

बावन अखर की भरपी, अखय खजानो जान ॥३॥

शुक्र करया केई शनि थका, एह बीजे हनी शक्ति ।

किम मू काई तेहना, पद नीको विषे भक्ति ॥४॥

अन्तिम— पूर्ण काय मुनीचंद्र गुण वर्ष, बुद्धि माम शुचि पत्ने है । ( आगे पत्र फटा हुआ है ) ४७ ढाल है ।

२६३६. मुक्तावलिव्रतकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ४ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल सं० १८७३ पीप बुंदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—यति दयाचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

२६५०. मुक्तावलिव्रतकथा—भोमप्रभ । पत्र सं० ११ । आ० १०३×८३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल सं० १८५५ सावन सुदी २ । वे० सं० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—ब्रह्मपुर मे मेमिनाथ चैथालय मे बालूवाल के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२६४१. मुक्तावलिधिधानकथा ..... । पत्र सं० ६ मे ११ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल सं० १५४१ फाल्गुन सुदी ५ । अपूर्णा । वे० सं० १६६८ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत् १५४१ वर्षे फाल्गुन सुदी ५ श्रीमूलमघे बलान्कारमणो मरस्वतीगच्छे श्रीकुंदाकुंदाचार्यान्वये भट्टारिक श्रीघनशिखा तत्पुत्र भट्टारिक श्रीशुभचंद्रदेवा तस्मिप्य मुनि जितचंद्रदेवा खडेलवालान्वये भावगामोत्रे संघवी खेता भार्या होनी तत्पुत्राः संघवी चाहूह, आसन, कालू, जालप, लखमग नेया मध्ये संघवी कालू भार्या कौलसिरी तत्पुत्रा हेमराज रिपभदाम तैने रो साह हेमराज भार्या हिमसिरी एतं रित्र राहिंगीमुक्तावलीकथानकं लिखापतं ।

२६५०. मेघमालाव्रतौघापनकथा .. । पत्र सं० ११ । आ० १२×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१ । अ भण्डार ।

विशेष—अ भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० २७६ ) और है ।

२६५३. मेघमालाव्रतकथा ..... । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०६ । अ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० ७८ ) की और है ।

२६४४. मेघमालाव्रतकथा—सुशालचंद्र । पत्र सं० ५ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८१ । क भण्डार ।

२६४५. मौनिव्रतकथा—गुणभद्र । पत्र सं० ५ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४१ । अ भण्डार ।

२६४६. मौनिव्रतकथा..... पत्र सं० १२ । भा० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८२ । छ भण्डार ।

२६४७. यमपालमातंगकीकथा..... पत्र सं० २६ । भा० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
कथा । १० काल × ; ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५१ । छ भण्डार ।

विशेष—इस कथा में पूर्व पत्र १ से ६ तक पथरय राजा दृष्टांत कथा तथा पत्र १० से १६ तक पंच  
नमस्कार कथा दी हुई है । कही २ हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है । कथायें कथाकोश में से ली गई हैं ।

२६४८. रत्नाबंधनकथा—नाथूराम । पत्र सं० १२ । भा० १२२×८ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य ।  
विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६१ । अ भण्डार ।

२६४९. रत्नाबंधनकथा..... पत्र सं० १ । भा० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।  
१० काल × । ले० काल × । १८३५ सावन सुदी २ । वे० सं० ७३ । छ भण्डार ।

२६५०. रत्नत्रयगुणकथा—पं० शिवजीलाल । पत्र सं० १० । भा० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७२ । अ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १५७ ) भी है ।

२६५१. रत्नत्रयविधानकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ४ । भा० ११३×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—कथा । १० काल × । ले० काल सं० १६०४ श्रावण सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ६५२ । क भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ७३ ) भी है ।

२६५२. रत्नावलिव्रतकथा—जोशी रामदास । पत्र सं० ४ । भा० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—कथा । १० काल × । ले० काल सं० १६६६ । पूर्ण । वे० सं० ६३४ । क भण्डार ।

२६५३. रविव्रतकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० १८ । भा० ६५×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६ । अ भण्डार ।

२६५४. रविव्रतकथा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० १८ । भा० ६×३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
कथा । १० काल सं० १७८५ ज्येष्ठ सुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४० । छ भण्डार ।

२६५५. रविव्रतकथा—भाऊकवि । पत्र सं० १० । भा० ६३×६ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—  
कथा । १० काल × । ले० काल सं० १७६५ । पूर्ण । वे० सं० ६६० । अ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ७४ ), अ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ४१ ), क भण्डार  
में एक प्रति ( वे० सं० ११३ ) तथा ट भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १७५० ) भी है ।

२६५६. राठौडरतनमहेशदशोत्तरी .....। पत्र सं० ३ से ८ । आ० ६३×४ इंच । भाषा-हिन्दी  
[राजस्थानी] विषय-कथा । १० काल सं० १५१३ वैशाख शुक्ला ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७७ । अ  
भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

दाहा—

सावित्रीउमया श्रीया भ्रागै साम्ही धाई ।

मुंदर सोचने, इंदिर लइ बघाड ॥१॥

हूया धवलि मंगल हरण वधीया नेह नवल ।

सूर रतन सतीया सरीस, मिलीया जाड महल्ल ॥२॥

श्री सुरनर फुरउधरे, वैकुठ कीधावास ।

राजा रम्यणायरतगी, जुग अविचल जस वास ॥३॥

पल वैशाखह तिथि नवमी पनरीतरं वरस्म ।

वार शुक्ल डीयाविहद, हीडू तुरवः वहस्म ॥४॥

जोडि भरी सिडीयो जमे, रामो रतन रसाल ।

सूरा पूरा सभलउ, भउ मोटा भूपान ॥५॥

दिली राउ बाका उजेणी रासा का अ्यार तुगर हिंसी कपि बान कैमी ॥ इति श्री राठौडरतन महेश  
दासीत्तसरी वचनिका संपूर्ण ।

२६५७. रात्रिभोजनकथा—भारामल्ल । पत्र सं० ८ । आ० ११ ८ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य ।  
विषय-कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८११ । अ भण्डार ।

२६५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ६०६ । च भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम निशिभोजन कथा भी है ।

२६५९. रात्रिभोजनकथा—किशनसिंह । पत्र सं० २८ । आ० १३×५ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य ।  
विषय-कथा । १० काल सं० १७७३ श्रावण सुदी ६ । ले० काल सं० १६२८ भाद्रवा बुदा ५ । पूर्ण । वे० सं० ६३५ ।  
क भण्डार ।

विशेष—ग भण्डार में १ प्रति और है जिसका ले० काल सं० १८८३ है । कामूराम माह ने प्रतिनिधि  
कराई थी ।

२६६०. रात्रिभोजनकथा .....। पत्र सं० ४ । आ० १० ५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा ।  
१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६६ । ख भण्डार ।

विशेष—ख भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १६१ ) और है ।

२६६१. रात्रिभोजनचौपई.....। पत्र सं० २। आ० १०×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा।  
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८३१। अ भण्डार।

२६६२. रूपसेनचरित्र.....। पत्र सं० १७। आ० १०×४ $\frac{१}{२}$  इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा।  
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६०। अ भण्डार।

२६६३. रैदव्रतकथा—देवेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ६। आ० १०×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा।  
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३१२। अ भण्डार।

२६६४. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल सं० १८३५ ज्येष्ठ सुदी ९। वे० सं० ७४। अ भण्डार।

विशेष—लक्ष्मण ( जयपुर ) के मन्दिर में केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १८५७ ) तथा अ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ६६१ ) की धोर है।

२६६५. रैदव्रतकथा.....। पत्र सं० ४। आ० ११×४ $\frac{१}{२}$  इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। २०  
काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६३६। अ भण्डार।

विशेष—अ भण्डार में १ प्रति ( वे० सं० ३६५ ) की है जिसका ले० काल सं० १७८५ आसोज सुदी  
४ है।

२६६६. रोहिणीव्रतकथा—आचार्य भानुकीर्त्ति। पत्र सं० १। आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$  इंच। भाषा—  
संस्कृत। विषय—कथा। २० काल ×। ले० काल सं० १८८८ ज्येष्ठ सुदी ९। वे० सं० ९०८। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ५६७ ) अ भण्डार में १ प्रति ( वे० सं० ७४ ) तथा अ  
भण्डार में १ प्रति ( वे० सं० १७२ ) धोर है।

२६६७. रोहिणीव्रतकथा.....। पत्र सं० २। आ० ११×८ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। २०  
काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६९२। अ भण्डार।

विशेष—अ भण्डार में १ प्रति ( वे० सं० ६६७ ) तथा अ भण्डार में १ प्रति ( वे० सं० ६५ ) जिसका  
ले० काल सं० १९१७ बैशाख सुदी ३ धोर है।

२६६८. लब्धिविधानकथा—प० अश्वमेध। पत्र सं० ९। आ० ११×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च। भाषा—संस्कृत।  
विषय—कथा। २० काल ×। ले० काल सं० १६०७ भाद्रपदा सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० ३१७। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति का संक्षिप्त निम्न प्रकार है—

संवत् १६०७ वर्षे भाद्रपदा सुदी १४ सोमवासरे श्री आदिनाथचैत्यालये तक्षकगदमहादुर्गे महाराज



श्रीरामचंद्रराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंधे भलाकारगणो सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये.....मंडलाचार्य धर्मचन्द्राम्नाये  
स्वभेलबालान्वये भ्रजमेरागोत्रे सा. पथा तद्भार्या केलमदे..... सा. कालू इदं कथा ..... मंडलाचार्य धर्मचन्द्राय  
दत्तं ।

२६६६. रोहिणीविधानकथा ..... । पत्र सं० ८ । भा० १०×४३ इ. च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

१० काल × १ ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०६ । अ भण्डार ।

२६७०. लोकप्रत्याख्यानधर्मिलकथा..... । पत्र सं० ७ । भा० १०×५ इ. च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
कथा । ले० काल × । १० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५० । अ भण्डार ।

विशेष—श्लोक सं० २४३ है । प्रति प्राचीन है ।

२६७१. वारिषेणमुनिकथा—जोधराजगोदीका । पत्र सं० ५ । भा० ६×५ इ. च । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—कथा । १० काल × । ले० काल सं० १७६६ । पूर्ण । वे० सं० १७४ । अ भण्डार ।

विशेष—बूहामल विलाला ने प्रतिनिधि की गयी थी ।

२६७२. विक्रमचौबोलीचौपई—अभयचन्द्रसूरि । पत्र सं० १३ । भा० ६×४३ इ. च । भाषा—  
हिन्दी । विषय—कथा । १० काल सं० १७२४ आषाढ बुदी १० । ले० काल < । पूर्ण । वे० सं० १६२१ । ट  
भण्डार ।

विशेष—मतिसुन्दर के लिए ग्रन्थ की रचना की थी ।

२६७३. विष्णुकुमारमुनिकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ५ । भा० ११×५ इ. च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१० । अ भण्डार ।

२६७४. विष्णुकुमारमुनिकथा..... । पत्र सं० ५ । भा० १०×४३ इ. च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
कथा । १० काल × । ले० काल < । पूर्ण । वे० सं० १७५ । अ भण्डार ।

२६७५. वैदरभीविवाह—पेमराज । पत्र सं० ६ । भा० १०×४३ इ. च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२५४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रादि अन्तभाग निम्न प्रकार है—

दोहा—

जिण धरम माही दीपता करो धरम सुरंग ।

सो राधा राजा राणैड ढाल भवहू रंग ॥१॥

रग विणरथ न भावसी किबता करो विचार ।

पढता सवि सुल संपजै हुरस भान हानइ भाव ॥

सुल मामणे हो रंग महल ने निस भार पोढी सेजजी ।

दोध धनता उफण्या जण्णेनदार विछोराद्ध मेहजी ॥

ग्रन्थम—

कवनाथ सुजाण छै वैदरभी वेस्वार ।  
 सुख अनंता भोगिया बेलै हुवा भरणगार ॥  
 दान देई कारित लीयौ होवा तो जय जयकार ।  
 पेमराज गुरु इम भगी, मुक्त गया तत्काल ॥  
 भगी गुग्गे जे साभली वैदरभी तरागे विवाह ।  
 भरण तास वै मुख संपजे पढ्यवा मुक्त मभार ।  
 इति वैदरभी विवाह संपूर्ण ॥

ग्रन्थ जीर्ण है । इसमें काफ़ी ढाले लिखी हुई है ।

२६७६. अनकथाकोश—श्रुतसागर । पत्र सं० ७६ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
 कथा । २० काल × । ले० काल × । प्रपूर्णा । वे० सं० ८७८ । अ भण्डार ।

२६७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १६४७ कालिक मुदी ३ । वे० सं० ६७ । छ  
 भण्डार ।

प्रगस्ति—संवत् १६४७ वर्षे कालिक मुदि ३ बुधवारे इदं पुस्तकं लिखायतं श्रीमदकाष्ठासंधे नदीतरगच्छे  
 विद्यागगे भट्टारक श्रीराममेनाचव्ये तदनुक्रमे भट्टारक श्रीमंगकीति तत्पट्टे भ० यदाःकीति तत्पट्टे भ० श्रीउदयमेन तत्प-  
 ट्टाधारणधीर भ० श्रीत्रिभुवनकीति तत्पट्टे श्री नरवत इदं पुस्तिका लिखापितं खडेलवालजातीय कासलीवाल  
 गात्रे माह केशव भार्या लाडी तत्पुत्र ६ बृहद पुत्र जीनो भार्या जमनादे । द्वि० पुत्र खेमसो तस्य भार्या खेमलदे तृ० पुत्र  
 इमर तस्य भार्या ग्रहकारदे, चतुर्थ पुत्र नानू तस्य भार्या नायकदे, पंचम पुत्र साह वाला तस्य भार्या बालमदे, षष्ठ पुत्र  
 नाला तस्य भार्या ललतादे, तेषामध्ये साह बालेन इदं पुस्तकं कथाकोशनामधेयं ब्रह्म श्री नर्वदावै ज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थं  
 निवाप्य प्रदत्तं । लेखक लयमन श्वेताबर ।

संवत् १७८१ वर्षे माहा मुदि ५ सोमवानरे भट्टारक श्री ५ विश्वनेन तस्य शिष्य मंडलाचार्य श्री ३ जय-  
 कीति पं० दीपचंद पं० मयाचंद युक्तै ।

२६७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७३ मे १२६ । ले० काल १५८६ कालिक मुदी २ । प्रपूर्णा । वे० सं०  
 ७८ । छ भण्डार ।

२६७९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८० । ले० काल सं० १७६५ फागुण बुदी ६ । वे० सं० ६३ । छ  
 भण्डार ।

इतके अतिरिक्त क भण्डार मे २ प्रतिया ( वे० सं० ६७५, ६७६ ) छ भण्डार मे १ प्रति ( वे० सं० ६८८ )  
 तथा ट भण्डार मे २ प्रतिया ( वे० सं० २० ७३, २१०० ) श्रीर है ।

२६८०. अतकथाकोश—पं० दामोदर । पत्र सं० ६ । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
 कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ६७३ । क भण्डार ।

२६८१. व्रतकथाकोश—सकलकीर्ति । पत्र सं० १६४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८७६ । अ भण्डार ।

विशेष—छ्द्र भण्डार में १ प्रति ( वे० सं० ७२ ) की प्रौर है जिसका ले० काल सं० १८६६ मावन बुदो ५ है । श्वेताम्बर पृथ्वीराज ने उदयपुर में जिसकी प्रतिलिपि की थी ।

२६८२. व्रतकथाकोश—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ८६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८७७ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच के अनेक पत्र नहीं हैं । कुछ कथायें पं० दामोदर की भी हैं । क भण्डार में १ अपूर्ण प्रति ( वे० सं० ६७४ ) प्रौर है ।

२६८३. व्रतकथाकोश..... । पत्र सं० ३ से १०० । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत अपभ्रंश । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६०६ फागुण बुदो ११ । अपूर्ण । वे० सं० ८७८ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच के २२ में २५ तथा ६५ में ६६ तक के भी पत्र नहीं हैं । निम्न कथाओं का मयह है—

- |  |                      |
|--|----------------------|
| १. पुष्पांजलिविधान कथा ... ।                                   | संस्कृत पत्र ३ में ५ |
| २. श्रवणद्वादशीकथा—चन्द्रभूषण के शिष्य पं० अभ्रदेव , , ५ में ८ | ” ” ५ में ८          |

अन्तिम—चंद्रभूषणशिष्येण कथयं पापहारिणी ।

संस्कृता पंडिताश्रेया कृता प्राकृत मृत. ।।

- |   |                            |
|---|----------------------------|
| ३. रत्नत्रयविधानकथा—पं० रत्नकीर्ति .... | संस्कृत गद्य पत्र ८ में ११ |
| ४. षोडशकारणकथा—पं० अभ्रदेव ....         | ” पद्य ” ११ में १६         |
| ५. जिनरात्रिविधानकथा ..... ।            | ” ” १४ से २६               |
|   | २६३ पद्य है ।              |
| ६. मेघमालाव्रतकथा ..... ।               | ” गद्य ” २६ में ३१         |
| ७. दशलाक्षणिककथा—लोकसेन ।               | ” ” ” ३१ में ३५            |
| ८. सुगंधदशमीव्रतकथा ..... ।             | ” ” ” ३५ से ४०             |
| ९. त्रिकालचलवीसीकथा—अभ्रदेव ।           | ” पद्य ” ४० से ४३          |
| १०. रत्नत्रयविधि—आशाधर ....             | ” गद्य ” ४३ से ५१          |

प्रारम्भ— श्रौवर्द्धमानमानस्य गीतमादीश्वसद्गुरुन् ।

रत्नत्रयविधि वक्ष्ये यथाम्नायविशुद्धये ॥१॥

अन्तिम प्रशस्ति— साधो मंडितवागबंधगुणगौः सज्जेनचूडामरोः ।

मालाख्यस्वमुत्. प्रतीनमहिमा श्रीनागदेवोऽभवत् ॥१॥

यः शुक्रादिपदेषु मालवपतेः श्रात्रातिमुक्तं शिवं ।  
 श्रीसल्लक्षणयास्वमाश्रितवसः का प्रापयन्नः श्रियं ॥२॥  
 श्रीमल्लेशवसेनार्यवर्धवाकयादुपेयुषा ।  
 पाक्षिकश्रावकीभावं तेन मालवमंडले ॥  
 सल्लक्षणपुरे तिष्ठन् गृहस्थाचार्यकुजरः ।  
 पंडिताशाधरो भक्त्या विजितः सम्यगेकदा ॥३॥  
 प्रायेण राजकार्येष्वरुद्धमर्माश्रितस्य मे ।  
 भाद्रं किंचिदनुष्टयं व्रतमादिष्यतामिति ॥४॥  
 ततस्तेन समीक्षो वै परमागमविस्तरं ।  
 उपविष्टसतामिष्टस्तस्यायं विधिःसत्तमः ॥५॥  
 तेनान्येदं च यथाशक्तिर्भवभीतैरनुष्ठितः ।  
 ग्रंथो बुधाशाधारेण सद्धर्मार्थमर्थो कृतः ॥६॥  
 विक्रमार्कव्यशीत्यग्रदादशाब्दशतात्पथे ।  
 दशम्यापश्चिमे कृष्णे प्रथमा कथा ॥७॥  
 पत्नी श्रीनारादेवस्य नद्याद्धर्मैण नायिका ।  
 यामोद्वलनत्रयविधिं चरतीनां पुरस्मरी ॥८॥

दश्याशाधरविरचिता रत्नत्रयविधि. समाप्त. ॥

- |                                 |              |          |
|---------------------------------|--------------|----------|
| ११. पुरंदरविधानकथा.....।        | संस्कृत पद्य | ५१ से ५४ |
| १२. रत्नाविधानकथा.....।         | गद्य         | ५४ से ५६ |
| १३. दशलक्षणजयमाल—रङ्गभू ।       | अपभ्रंश      | ५६ से ५८ |
| १४. पल्लवविधानकथा .....         | संस्कृत पद्य | ५८ से ६३ |
| १५. अनथमोत्रतकथा—पं० हरिचंद्र । | अपभ्रंश      | ६३ से ६६ |

अगरवाल वरवंसि उप्पण्ण्डं हरियंदेण ।

भत्तिण् जिणुयण्णुपण्णुवेवि पयडिउ पड्डियाद्धदेण ॥१६॥

- |                     |          |         |          |
|---------------------|----------|---------|----------|
| १६. चंदनपण्ठीकथा—   | ”        | ”       | ६६ से ७१ |
| १७. मुग्धावलोकनकथा  | —        | संस्कृत | ७१ से ७५ |
| १८. रोहिणीचरित्र—   | देवनांदि | अपभ्रंश | ७६ से ८१ |
| १९. रोहिणीविधानकथा— | ”        | ”       | ८१ से ८५ |

|                                 |   |              |                |
|---------------------------------|---|--------------|----------------|
| २०. अक्षयनिधिबिधानकथा           | — | संस्कृत      | ८५ से ८८       |
| २१. मुकुटसप्तमीकथा—पं० अभद्रदेव |   | "            | ८८ से ८९       |
| २२. मौनव्रतविधान—रत्नकीर्त्ति   |   | संस्कृत गद्य | ९० से ९४       |
| २३. रुक्मिणिविधानकथा—ज्ञानसेन   |   | संस्कृत पद्य | १०० [ अपूर्ण ] |

संवत् १६०९ वर्षे फाल्गुण वदि १ सोमवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्या-  
न्वये.....]

२६८४. व्रतकथाकोश.....। पत्र सं० १५२। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। २०  
काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ९२। छ भण्डार।

२६८५. व्रतकथाकोश—सुरालचंद। पत्र सं० ८९। आ० १२½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-  
कथा। २० काल सं० १७८७ फागुन बुदी १३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६७। अ भण्डार।

विशेष—१८ कथायें हैं।

इसके अतिरिक्त छ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ९१ ) छ भण्डार में १ प्रति ( वे० सं० ९८९ ) तथा  
छ भण्डार में १ प्रति ( वे० सं० १७८ ) और है।

२६८६. व्रतकथाकोश.....। पत्र सं० ५०। आ० १०×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। २०  
काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८३१। छ भण्डार।

विशेष—निम्न कथाओं का संग्रह है—

| नाम                  | कर्ता          | विशेष           |
|----------------------|----------------|-----------------|
| ज्येष्ठजिनव्रतकथा—   | सुरालचंद       | २० काल सं० १७८२ |
| आदित्यवारकथा—        | भाऊ कवि        | >               |
| लघुरवित्रतकथा—       | ब्र० ज्ञानसागर | —               |
| सप्तपरमस्थानव्रतकथा— | सुरालचन्द      | —               |
| मुकुटसप्तमीकथा—      | "              | २० काल सं० १७८३ |
| अक्षयनिधिव्रतकथा—    | "              | —               |
| षोडशकारणव्रतकथा—     | "              | —               |
| मेघमालाव्रतकथा—      | "              | —               |
| चन्दनपष्ठीव्रतकथा—   | "              | —               |
| लक्ष्मिविधानकथा—     | "              | —               |
| जिनपूजापुरंदरकथा—    | "              | —               |
| दश-चण्डकथा—          | "              | —               |

| नाम                | कर्ता       | विशेष           |
|--------------------|-------------|-----------------|
| पुष्पांजलिप्रतकथा— | सुशालचन्द्र | —               |
| आकाशपंचमीकथा—      | ”           | २० काल सं० १७८५ |
| मुक्तावलीप्रतकथा—  | ”           | —               |

पृष्ठ ३६ मे ५० तक दीमक लगी हुई है ।

२६८७. व्रतकथासमग्र.....। पत्र सं० ६ मे ६० । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०३६ । ट भण्डार ।

विशेष—६० मे आगे भी पत्र नहीं है ।

२६८८. व्रतकथासमग्र.....। पत्र सं० १२३ । आ० १२×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत अपभ्रंश । विषय—  
कथा । २० काल × । ले० काल सं० १५१६ सावण बुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ११० । व्य भण्डार ।

विशेष—निम्न कथाओं का संग्रह है ।

| नाम                                  | कर्ता     | भाषा    | विशेष |
|--------------------------------------|-----------|---------|-------|
| सुगन्धदशमीव्रतकथा.....।              |           | अपभ्रंश | —     |
| अनन्तव्रतकथा.....।                   |           | ”       | —     |
| रोहिणीव्रतकथा—                       | ×         | ”       | —     |
| निर्दोषसप्तमीकथा—                    | ×         | ”       | —     |
| दुधारसविधानकथा—मुनिविनयचंद्र ।       |           | ”       | —     |
| सुखसंपत्तिविधानकथा—विमलकीर्ति ।      |           | ”       | —     |
| निर्भरपञ्चमीविधानकथा—विनयचंद्र ।     |           | ”       | —     |
| पुष्पांजलिविधानकथा—पं० हरिश्चन्द्र । |           | ”       | —     |
| अवणद्वादशीकथा—पं० अभ्रदेव ।          |           | ”       | —     |
| षोडशकारणविधानकथा—                    | ”         | ”       | —     |
| श्रुतस्कंधविधानकथा—                  | ”         | ”       | —     |
| रुक्मिणीविधानकथा—                    | छत्रसेन । | ”       | —     |

प्रारम्भ— जिनें प्रणम्य नेमीशं संसारार्णवतारकं ।

रुक्मिणिचरितं वक्ष्ये भव्याना बोधकारणं ॥

अन्तिम पुष्पिका— इति छत्रसेन विरचिता नरदेव कारापिता रुक्मिणि विधानकथा समाप्तं ।

|                        |           |   |         |   |
|------------------------|-----------|---|---------|---|
| पल्यविधानकथा—          | ×         | — | संस्कृत | — |
| दशलक्षणविधानकथा—       | लोकसेन    | — | "       | — |
| चन्दनषष्ठीविधानकथा—    | ×         | — | अपभ्रंश | — |
| जिनरात्रिविधानकथा—     | ×         | — | "       | — |
| जिनपूजापुरंदरविधानकथा— | अमरकीर्ति | — | "       | — |
| त्रिचतुर्विंशतिविधान—  | ×         | — | संस्कृत | — |
| जिनमुखावलोकनकथा—       | ×         | — | "       | — |
| शीलविधानकथा—           | ×         | — | "       | — |
| अन्नयविधानकथा—         | ×         | — | "       | — |
| मुखसंपत्तिविधानकथा—    | ×         | — | "       | — |

लेखक प्रगल्भ—संवत् १५१६ वर्षे श्रावण बुदी १५ श्रीमूलसंवे सरस्वतीगच्छे बलान्कारगणे भ० श्रीपद्य-  
नंदिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा । भट्टारक श्रीपद्यनंदि शिष्य मुनि मदनकीर्ति शिष्य ब्र  
नरसिंह निमित्त । खंडेलवालान्वये दोसोगोत्रे संघी राजा भार्या देउ मुपुत्र छांद्रा भार्या गरगोपुत्र कानु पदमा धर्मा धाम्  
कर्मक्षयार्थ इदं शास्त्रं लिखाप्य जान पात्रादत्त ।

२६८६. व्रतकथासंग्रह..... । पत्र सं० ८८ । आ० १२०७। इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न कथाओं का संग्रह है ।

|                      |               |         |   |
|----------------------|---------------|---------|---|
| द्वादशव्रतकथा—       | पं० अश्रदेव । | संस्कृत | — |
| कवलचन्द्रायणव्रतकथा— |               | "       | — |
| चन्दनषष्ठीव्रतकथा—   | सुरालचन्द्र । | हिन्दी  | — |
| नंदीश्वरव्रतकथा—     |               | संस्कृत | — |
| जिनगुणसंपत्तिकथा—    |               | "       | — |
| होली की कथा—         | छीतर ठोलिया   | हिन्दी  | — |
| रैदव्रतकथा—          | ब्र० जिनदास   | "       | — |
| रत्नावलिव्रतकथा—     | गुणनंदि       | "       | — |

२६६०. व्रतकथासंग्रह—ब्र० महतिसागर । पत्र सं० २७ । आ० १०×४३ । भाषा—हिन्दी । विषय—  
कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७७ । क भण्डार ।

२६६१. व्रतकथासंग्रह.....। पत्र सं० ४। भा० ८×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। १० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६७२। क भण्डार।

विशेष—रविव्रत कथा, अष्टाह्निकाव्रतकथा, षोडशकारगव्रतकथा, दशलक्षगव्रतकथा इनका संग्रह है षोडशकारगव्रतकथा गुजराती में है।

२६६२. व्रतकथासंग्रह.....। पत्र सं० २२ से १०४। भा० ११×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६७८। क भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के २१ पत्र नहीं हैं।

२६६३. पांडशकारणविधानकथा—प० अभ्रदेव। पत्र सं० २६। भा० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। १० काल ×। ले० काल सं० १६६० भादवा सुदी ५। वे० सं० ७२२। क भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त आकाश पंचमी, रक्मिणीकथा एवं अनंतव्रतकथा के कर्ता का नाम प० मदनकीर्ति है।

ट भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० २०२६ ) और है।

२६६४. शिवरात्रिउद्यापनविधिकथा—शंकरभट्ट। पत्र सं० २२। भा० ६×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा (जैनतर)। १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १४७२। अ भण्डार।

विशेष—३२ में आगे पत्र नहीं है। स्कंधपुराण में है।

२६६५. शैलकथा—भारामल्ल। पत्र म० २०। भा० १२×७ $\frac{३}{४}$  इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४१३। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां ( वे० सं० ६६६, १११६ ) क भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ६६२ ) घ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १०० ) , छ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ७०८ ) , झ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १८० ) , ज भण्डार में एक प्रति ( ले० सं० १६६७ ) और है।

२६६६. शीलोपदेशमाला—मेरुसुन्दरगण्डि। पत्र सं० १३१। भा० ६×४ इंच। भाषा—गुजराती निपि हिन्दी। विषय—कथा। १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २६७। छ भण्डार।

विशेष—४३वीं कथा ( धनश्री तक प्रति पूर्ण है )।

२६६७. शुक्सप्तति.....। पत्र सं० ६४। भा० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३४५। च भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

२६६८. आबगुद्दादशीउपाख्यान.....। पत्र सं० ३। भा० १० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा ( जैनतर )। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८८०। अ भण्डार।



२६६६. श्रावणद्वादशीकथा .....। पत्र सं० ६८। मा० १२×५ इंच। भाषा—संस्कृत गद्य। विषय—  
कथा। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७११। छ भण्डार।

२७००. श्रीपालकथा .....। पत्र सं० २७। मा० ११×७२ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। २०  
काल ×। ले० काल सं० १६२६ वैशाख बुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ७१३। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७१४) झोर है।

२७०१. श्रेणिकचौपई—डूंगा बँद । पत्र सं० १४। मा० ६१×४९ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—  
कथा। २० काल सं० १८२६। पूर्ण। वे० सं० ७६४। अ भण्डार।

विशेष—कवि मालपुरा के रहने वाले थे।

अथ श्रेणिक चौपई लीखते—

आदिनाथ बंदी जगदीस । जाहि चरित थे होई जगोस ॥  
दूजा बंदी गुर निरगंध । भूला भव्य दीवावगु पंध ॥१॥  
तीजा साधु सबै का पाइ । चौथा मरस्वती करी सहाय ।  
जहि मेया थे सब बुधि होय । करी चौपई मन मुधि जाई ॥२॥  
माता ह्यनै करी सहार्ई । अन्धर हीगु मयारो आई ।  
श्रेणिक चरित बात में लहो । जैमा जाणी चौपई कही ॥३॥  
राणी सही चेलना जागि । धर्म जैन संवै मनि प्रागि ।  
राजा धर्म चलावै बांध । जैन धर्म को काटै खोध ॥४॥

पत्र ७ पर—दोहा—

जो भूठी मुख थे कहै, अगुदास्या दे दोस ।  
जे नर जासी नरक में, मत कोइ आणी रोस ॥१५१॥

चौपई—  
कहै जती इक साह मुजाण । वामण एक पढ्यो प्रति प्रागि ।  
जइ को पुत्र नहीं को आय । तवै न्यूल इक पान्यो जाय ॥१५२॥  
वेठो करि राख्यो निरताइ । दुवैउ पाव एक पै आइ ।  
वामणी सही जाइयो पूत । पली थावै जागि अउत ॥१५३॥  
एक दिवस वामण बिचारि । पाणी नैवा चाली नारि ।  
पालण वालक मेलही तहा । न्यूल वचन ए भाखै जहां ॥१५४॥

अन्तिम—

भेद भलो जाणो इक सार । जे सुगिरी ते उतरै पार ।  
 हीन पद अक्षर जो होय । जको सवारो सुगिरीर लोय ॥२८॥  
 मैं म्हारी बुधि सारु कही । सुगिरीर लोग सवारो सही ।  
 जे ता तरणो कहै निरताय । सुगता सगला पातिग जाइ ॥२९०॥  
 लिखिवा चाल्यो सुख नित लहौ, जे साधा का गुण यौ कहौ ।  
 यामे भोलो कोइ नही, हूँ वैद चौपड़ कही ॥२९१॥  
 वास भलो मालपुरो जाणि । टौक मही सो कियो बखारण ।  
 जठे बसै माहाजन लोग । पान फूल का कीजे भोग ॥२९२॥  
 पोरिग छतीसी लीला करै । दुख ये पेट न कोइ भरै ।  
 राइस्यंघ जो राजा बखारिण । चौर चवाहन राखै भारिण ॥२९३॥  
 जीव दया को अधिक मुभाव । सबे भलाई साथे डाव ।  
 पतिसाहा बंदि दीन्ही छोडि । बुरी कही भवि सुणौ बहोडि ॥२९४॥  
 धनि हिंदवाणो राज बखारिण । जह मैं सीसोद्यो सो जाणि ।  
 जीव दया को सदा वीचार । रैति तरणौ राखै भारिण ॥२९५॥  
 कीरति कहौ कहा लागि जाणि । जीव दया सहू पालै भारिण ।  
 इह विधि सगला करै जगोस । राजा जीज्यौ सौ अरु बीस ॥२९६॥  
 एता वरम मे भोलो नही । बेटा पोता फल ज्यो सही ।  
 दुखिया का दुख टालै भाय । परमेस्वर जी करै सहाय ॥२९७॥  
 इ पुन्य तरणौ कोइ नही पार । वैदि खलास करै ते सार ।  
 बाकी बुरी कहै नर कोइ । जन्म आपणी चालै खोइ ॥२९८॥  
 संबन् सौलह सै प्रमाण । उपर सहो इतासी जाण ।  
 निन्याणवे कहा निरदोष । जीव सबै पावै पोष ॥२९९॥  
 भाद्रव सुदी तेरस सनिवार । कडा तीन सै षट अधिक्राम ।  
 इ सुगता सुख पासो देह । प्राय समाही करै सनेह ॥३००॥

इति श्री श्रेणिक चौपड़ संपूरण भीती कार्तिक सुदि १३ सनीसरवार कर्क सं० १८२६ काडी प्रामे लीखतं  
 बलनसागर वाचै जहने निम्सकार नमोस्तं वाच ज्यो जी ।

२७०२. सप्तपरमस्थानकथा—आचार्य चन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ११ । प्रा० ६२×४ इंच । भाषा—  
 संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६८६ प्रासोज बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ३५० । अ  
 भण्डार ।

२७०३. समन्यसनकथा—आचार्य सोमकीर्ति । पत्र सं० ४१ । आ० १०३×४५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल सं० १५२६ माघ सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२७०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १७७२ श्रावण बुदी १३ । वे० सं० १००२ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति—सं० १७७२ बर्षे श्रावणमासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्या तिथी अर्कवासरे विजेरामेण लिपिचक्रे अकम्बरपुर समीपेषु केरवाग्रामे ।

२७०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८६४ भाद्रवा सुदी ६ । वे० सं० ३६३ । अ भण्डार

विशेष—नेवटा निवासी महात्मा हीरा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । दीवाण मगही अमरचंदजी खिन्दूका ने प्रतिलिपि दीवाण स्योजीराम के मंदिर के लिए करवाई ।

२७०६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १७७६ माघ सुदी १ । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० नरसिंह ने श्रावक गोविन्ददास के पठनार्थ हिण्डौन में प्रतिलिपि की थी ।

२७०७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १६४७ आश्विन सुदी ६ । वे० सं० १११ । अ भण्डार ।

२७०८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १७५६ कार्तिक बुदी ६ । वे० सं० १३६ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० कपूरचंद के वाचनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

इनके अतिरिक्त छ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १०६ ) छ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ७५ ) शीर हैं ।

२७०९. समन्यसनकथा—भारामल्ल । पत्र सं० ८६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । २० काल सं० १८१४ आश्विन सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ६८८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र चिपके हुये हैं । अंत में कवि का परिचय भी दिया हुआ है ।

२७१०. समन्यसनकथा भाषा— । पत्र सं० १०६ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—नथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६३ । अ भण्डार ।

विशेष—सोमकीर्ति कृत समन्यसनकथा का हिन्दी अनुवाद है ।

अ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ६८९ ) शीर है ।

२७११. सम्मेशिलखरमहात्म्य—लालचन्द । पत्र सं० २६ । प्रा० १२×५३ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २० काल सं० १८४२ । ले० काल सं० १८८७ भाषाढ बुटी । वे० सं० ८८ । अ भण्डार ।

विशेष—लालचन्द भट्टारक जयतकीर्ति के शिष्य थे । रेवाड़ी ( पञ्जाब ) के रहने वाले थे और वही लेखक ने इसे पूर्ण किया ।

२७१२. सम्यक्त्वकौमुदीकथा—गुणाकरसूरि । पत्र सं० ४८ । प्रा० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल सं० १५०४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७६ । अ भण्डार ।

२७१३. सम्यक्त्वकौमुदीकथा—खेता । पत्र सं० ७६ । प्रा० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८३३ माघ सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १३६ । अ भण्डार ।

विशेष—अ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ६१ ) तथा अ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ३० ) और है ।

२७१४. सम्यक्त्वकौमुदीकथा..... । पत्र सं० १३ से ३३ । प्रा० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६२५ माघ सुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० १११० । अ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १६२५ वर्षे शाके १४६० प्रवर्तमाने दक्षिणायने मार्गशीर्ष शुक्लपक्षे षष्ठम्या शनी .....श्रीकुंभलमेरुदुर्गे रा० श्री उदयसिंहराज्ये श्री खरतरगन्धे श्री गुणलाल महोपाध्यायै स्ववाचनार्थं लिखापिता मोवाच्यमाना चिरं नंदनात् ।

२७१५. सम्यक्त्वकौमुदीकथा..... । पत्र सं० ८६ । प्रा० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६०० चैत सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ४१ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत् १६०० में खेटक स्थान में शाह झालम के राज्य में प्रतिलिपि हुई । ज० धर्मदास अग्रवाल गोयल गोश्रीय मडलराणापुर निवासी के बंश में उत्पन्न होने वाले साधु श्रीदास के पुत्र प्रादि ने प्रतिलिपि कराई । लेखक प्रशस्ति ७ षष्ठ लम्बी है ।

२७१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ से ६० । ले० काल सं० १६२८ वैशाख सुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० ६४ । अ भण्डार ।

श्री हूंगर ने इस ग्रंथ को ज० रामलाल को भेंट किया था ।

अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीशुभप्रतिविक्रमादित्यराज्ये संवत् १६२८ वर्षे पोषमासे कृष्णपक्षपंचमीदिने भट्टारक श्रीभानुकीर्तिसदान्नाये अग्रबालान्धये मित्तलगोत्रे साह दाम् तस्य भार्या भोली तयोपुत्र सा. गोपी सा. दीपा । सा. गोपी तस्य भार्या बीबी तयो पुत्र सा. भावन साह उबा सा. भावन भार्या बूरदा धही तस्य पुत्र तिपरदाश । साह उबा तस्य भार्या मेघमहो तस्यपुत्र कूंगरली सास्य सम्पत्क कौमदी ग्रंथ ब्रह्मचार राधमल्लध्यात पठनार्थं ज्ञानावलीं कर्मभाम्हेतु । शुभं भक्तु । लिखितं जीवात्मज गोपालदाश । श्रीशुभप्रभु चैत्यालये ग्रहपुराण्ये ।

२७१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० १७१६ पीच बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ७६६ ।  
क भण्डार ।

२७१८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १८३१ माघ सुदी ५ । वे० सं० ७५४ । क  
भण्डार ।

विशेष—भाकराम साह ने जयपुर नगर में प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में २ प्रतिया ( वे० सं० २०६६, ८६४ ) घ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ११२ ), क भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ८०० ), छ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ८७ ), झ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ६१ ), ञ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ३० ), तथा ट भण्डार में २ प्रतियां ( वे० सं० २१२६, २१३० ) [ दोनों अपूर्ण ] भी हैं ।

२७१९. सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा—विनोदीलाल । पत्र सं० १६० । आ० ११×५ इंच । भाषा—  
हिन्दी पद्य । विषय—कथा । २० काल सं० १७४६ । ले० काल सं० १८६० सावन बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ८७ । ग  
भण्डार ।

२७२०. सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा—जगतराय । पत्र सं० १५१ । आ० ११×५ इंच । भाषा—  
हिन्दी पद्य । विषय—कथा । २० काल सं० १७७२ माघ सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५३ । क  
भण्डार ।

२७२१. सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा—जोधराज गोदीका । पत्र सं० ४७ । आ० १०½×७½ इंच ।  
भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल सं० १७२४ फागुण बुदी १३ । ले० काल सं० १८२५ आसोज बुदी ७ । पूर्ण ।  
वे० सं० ४३५ । अ भण्डार ।

विशेष—नैनसागर ने श्री गुलाबचंदजी गोदीका के वाचनार्थ मवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी । सं०  
१८६८ में पोथी की निखारावलि दिवाई पं० लुध्यालजी, पं० ईसरदासजी गोदीका सून हस्ते महात्मा फताह्वी भाई रु०  
१) दिया ।

२७२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १८६३ माघ बुदी २ । वे० सं० २११ । न  
भण्डार ।

२७२३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० ७६८ । क भण्डार ।

२७२४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० ७०३ । च भण्डार ।

२७२५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १८३५ चैत्र बुदी १३ । वे० सं० १० । झ  
भण्डार ।

इसके अतिरिक्त च भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ७०४ ) ट भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १५४३ )  
भी हैं ।

२७२६. सन्यस्तकौमुदीभाषा.....। पत्र सं० १७४ । आ० १०३×७२ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७०२ । अ भण्डार ।

२७२७. संयोगपंचमीकथा—धर्मचन्द्र । पत्र सं० ३ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८४० । पूर्ण । वै० सं० ३०६ । अ भण्डार ।

विशेष—इ भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ८०१ ) और है ।

२७२८. शालिभद्रध्वजानीचौपई—जिनसिंहसूरि । पत्र सं० ४६ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २० काल सं० १६७८ आसोज बुदी ६ । ले० काल सं० १८०० चैत्र सुदी १४ । अपूर्ण । वै० सं० ८४२ । अ भण्डार ।

विशेष—किशनगढ़ में प्रतिलिपि की गई थी ।

२७२९. सिद्धचक्रकथा.....। पत्र सं० २ से ११ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ८४३ । अ भण्डार ।

२७३०. सिंहासनवृत्तीसी.....। पत्र सं० ११ से ६१ । आ० ७×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १५६७ । अ भण्डार ।

विशेष—५वें अध्याय में १२वें अध्याय तक है ।

२७३१. सिंहासनद्वान्त्रिशिका—क्षेमकरमुनि । पत्र सं० २७ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—राजा विक्रमादित्य की कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २२७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

श्रीविक्रमादित्यनरेश्वरस्य चरित्रमेतत् कविभिनिबद्धं ।

पुरा महाराष्ट्रपरिभ्रमभाषा मयं महाश्चर्मकरंनराणां ॥

क्षेमंकरेण मुनिना वरपद्मगद्यबंधेनमुक्तिकृतसंस्कृतबधुरेण ।

विश्वोपकार विलसन् गुणकीर्तिनायकं चिरादमरपंडितहर्षहेतु ॥

२७३२. सिंहासनद्वान्त्रिशिका.....। पत्र सं० ६३ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल सं० १७६८ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वै० सं० ४११ । अ भण्डार ।

विशेष—लिपि विकृत है ।

२७३३. सुकुमालमुनिकथा.....। पत्र सं० २७ । आ० ११३×७३ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८७१ माह बुदी ६ । पूर्ण । वै० सं० १०५२ । अ भण्डार ।

विशेष—बयपुर में सदासुखजी गोधा के पुत्र सवाईराम गोधा ने प्रतिलिपि की थी ।

२७३५. सुगन्धदशमीकथा..... । पत्र सं० ६ । आ० ११३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०६ । क भण्डार ।

विशेष—उक्त कथा के अतिरिक्त एक और कथा है जो अपूर्ण है ।

२७३५. सुगन्धदशमीव्रतकथा—हेमराज । पत्र सं० ५ । आ० ८३×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-  
कथा । १० काल × । ले० काल सं० १६८५ श्रावण सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ६६५ । अ भण्डार ।

विशेष—भिण्ड नगर में रामसहाय ने प्रतिलिपि की थी ।

प्रारम्भ—अथ सुगन्धदशमी व्रतकथा लिख्यते—

चौपई—  
वर्द्धमान बंदी मुखदाई, गुर गीतम बंदी चितलाय ।  
सुगन्धदशमीव्रत मुनि कथा, वर्द्धमान परकाशी यथा ॥१॥  
पूर्वदेस राजग्रह गाव, श्रेनिक राज करै अभिराम ।  
नाम चेलना गृहपटरानी, चंद्रोहिणी रूप समान ।  
नृप सिंहासन बैठौ कदा, वनमाली फल ल्यायो तदा ॥२॥

अन्तिम—  
सहर गहे लोउ तिम वास, जैनधर्म को करैप्रकाम ॥  
सब श्रावक व्रत मंयम धरै, दान पूजा सो पातिक हरै ।  
हेमराज कवियन यो कह्यो, विस्वभूषन परकामी मह्यो ।  
सो नर स्वर्ग अमरपति होय, मन वच काय मुनै जो कोय ॥३॥  
इति कथा संपूरणम्

दोहा—  
श्रावण शुक्ला पंचमी, चंद्रवार गुप्त जान ।  
श्रीजिन भुवन सहावनी, तिहा भित्वा घरि ध्यान ॥  
संवत् विक्रम भूप को, इक नव आठ मुजान ।  
ताके ऊपर पाच लखि, लीजे चतुर मुजान ॥  
देश भदावर के विषे, भिण्ड नगर गुप्त ठाम ।  
ताही में हम रहत है, रामनाथ है नाम ॥

२७३६. सुदयवच्छसावर्णिगाकी चौपई—मुनि केशव । पत्र सं० २७ । आ० ६×४३ इंच । भाषा-  
हिन्दी । विषय-कथा । १० काल सं० १६६७ । ले० काल सं० १८३७ । वे० सं० १६४१ । ट भण्डार ।

विशेष—कटक में लिखा गया ।

२७३७. सुदर्शनसेठकीढाल ( कथा ) ..... । पत्र सं० ६ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा-हिन्दी ।  
विषय-कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६१ । अ भण्डार ।

२७३८. सोमशर्मावारिषेणकथा.....। पत्र सं० ७। मा० १०×३३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५२३। अ भण्डार।

२७३९. सौभाग्यपंचमीकथा—सुन्दरविजयगणि। पत्र सं० ९। मा० १०×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। २० काल सं० १६९६। ले० काल सं० १८११। पूर्ण। वे० सं० २९९। अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी में अर्थ भी दिया हुआ है।

२७४०. हरिवंशवर्णन.....। पत्र सं० २०। मा० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८३६। अ भण्डार।

२७४१. होलिकाकथा.....। पत्र सं० २। मा० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। २० काल ×। ले० काल म० १९२१। पूर्ण। वे० सं० २९३। अ भण्डार।

२७४२. होलिकाचौपई—हूंगरकवि। पत्र सं० ४। मा० ९×४ इंच। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—कथा। २० काल सं० १६२९ चैत्र बुदी २। ले० काल सं० १७१८। अपूर्ण। वे० सं० १५७। अ भण्डार।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र है वह भी एक धोर से फटा हुआ है। अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

मोनहसह गुणतीसइ सार चैत्रहि वदि दुतिया बुधिवार।

नयर सिकदरावाइ.....गुणकरि घागाध, वाचक मंडण श्री वेमा साध ॥८५॥

तामु सोम हूंगर मति रत्नी, अण्णु चरित्र गुण साभली।

जे नर नारी सुरास्यइ सदा तिह धरि बहुली हुई संपदा ॥८५॥

इति श्री होलिका चउपई। मुनि हरचंद लिखितं। संवत् १७१८ वर्ष.....आगरामध्ये लिपिकृतं ॥ रचना में कुल ८५ पद्य हैं। चौथे पत्र में केवल ८ पद्य हैं वे भी पूरे नहीं हैं।

२७४३. होलीकीकथा—छोतर ठोलिया। पत्र सं० २। मा० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। २० काल सं० १६६० फागुण सुदी १५। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४५८। अ भण्डार।

२७४४. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १७५०। वे० सं० ८५६। क भण्डार।

विशेष—मूलक मौजमाबाद [ जयपुर ] का निवासी था इसी गांव में उसने ग्रंथ रचना की थी।

२७४५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १८८३। वे० सं० ९९। ग भण्डार।

विशेष—कालूराम साहू ने ग्रंथ लिखवाकर चौधरियों के मन्दिर में चढाया।

२७४६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १८३० फागुण बुदी १२। वे० सं० १६४२। ट भण्डार।

विशेष—पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।



२७४७. होलीकथा—जिनमुन्दरसूरि । पत्र सं० १४ । प्रा० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
कथा × । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७४ । छ् भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में इसके अतिरिक्त ३ प्रतियां वै० सं० ७४ में ही प्रौर है ।

२७४८. होलीपर्वकथा..... । पत्र सं० ३ । प्रा० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४४६ । अ भण्डार ।

२७४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८०४ माघ सुदी ३ । वै० सं० २८२ । म्  
भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त ऋ भण्डार में २ प्रतियां ( वै० सं० ६१०, ६११ ) प्रौर है ।



## व्याकरणा-साहित्य

२७५०. अनिटकारिका.....। पत्र सं० १। भा० १०३×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण।

१० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०३५। अ भण्डार।

२७५१. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० २१४६। ट भण्डार।

२७५२. अनिटकारिकावचुरि.....। पत्र सं० ३। भा० ११३×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २५०। अ भण्डार।

२७५३. अठ्ययप्रकरण ..। पत्र सं० ६। भा० ११३×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०१८। अ भण्डार।

२७५४. अठ्ययार्थ.....। पत्र सं० ८। भा० ८×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। १० काल ×। ले० काल सं० १८४८। पूर्ण। वे० सं० १२२। अ भण्डार।

२७५५. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०२१। ट भण्डार।

विशेष—प्रति दीमक ने खा रखी है।

२७५६. उणादिसूत्रसंग्रह—संग्रहकर्ता—उज्ज्वलदत्त। पत्र सं० ३८। भा० १०×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०२७। अ भण्डार।

विशेष—प्रति टीका सहित है।

२७५७. उपाधिच्यकरण.....। पत्र सं० ७। भा० १०×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८७२। अ भण्डार।

२७५८. कातन्त्रविभ्रमसूत्रावचुरि—चारित्रसिंह। पत्र सं० १३। भा० १०३×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। १० काल ×। ले० काल सं० १६६६ कालिक सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० २४७। अ भण्डार।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

नत्वा जिनेत्रं स्वप्नुहं च भक्त्या तत्संप्रसादासमुसिद्धिशक्त्या।

सत्संप्रदायादवचुरिमेतां लिखामि सारस्वतसूत्रयुक्त्वा ॥१॥

प्रायः प्रयोगादुर्ज्ञेयाः किलकांतं विभ्रमो ।  
 येषु भो मुह्यते श्रेष्ठः शाब्दिकोऽपि यथा जडः ॥२॥  
 कातंत्रसूत्रविसरः खनु साप्रतं ।  
 यन्नाति प्रसिद्ध इह चाति स्वरोगरीयान् ॥  
 स्वस्येतरस्ये च मुबोधविवर्द्धनार्था ।  
 ऽस्त्वित्यं ममात्र सफलो लिखन त्रयासः ॥

ग्रन्थितम पाठ—

बाणशशिर्षाडुमिते संवदति धवनवकपुरवरे समहे ।  
 श्रीखरतरंगराणुधरमुदिवापुष्टप्रकाराणा ॥१॥  
 श्रीजिनमार्गिकवदाभिधसूराणा सकलसार्वभौमाना ।  
 पट्टे करे विजयिषु श्रीमज्जिनचंद्रसूरिराजेषु ॥२॥  
 गीति वाचकमतिभद्रगणे. शिष्यस्तदुग्रासत्यवातपरमार्थ. ।  
 चारित्रसिंहसानुर्व्यदधदवचूर्णिमिह मुगमा ॥३॥  
 यज्ञिकितं मतिमावादनूनं प्रमोतरेत्र विचिदपि ।  
 तत्सम्यक् प्राजवरे, शोष्यं स्वपरोपकाय । ४॥  
 इति कातंत्रविभ्रमावचूरिः संपूर्णा निव्यनत. ।

आचार्य श्रीरत्नगुणस्तच्छिष्य पंडित केदाय. तेनेव निपि कृता ग्रामपठनार्थं । शुभ भवतु । संवत् १८६६  
 वर्षे कार्तिके सुदी ५ तिथौ ।

२७५६. कातंत्रटीका..... । पत्र सं० ३ । आ० १०३×४५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल × । अग्रपूर्णा । वे० सं० १६०१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२७६०. कातंत्ररूपमालाटीका—दौर्गमिह । पत्र सं० ३६८ । आ० १२३×४५ इंच । भाषा—  
 संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ । पूर्णा । वे० सं० १११ । क भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम कलाप व्याकरण भी है ।

२७६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । अग्रपूर्णा । वे० सं० ११२ । क भण्डार ।

२७६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७७ । ले० काल × । अग्रपूर्णा । वे० सं० ६७ । च भण्डार ।

२७६३. कातंत्ररूपमालावृत्ति ... । पत्र सं० १४ स ५६ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १५२६ कार्तिके सुदी ५ । अग्रपूर्णा । वे० सं० २१४४ । ट भण्डार ।

प्रयासित—संवत् १५२४ वर्षे कार्तिक सुदी ५ दिने श्री टोंकवत्सने सुरत्राणभलावदीनराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे वलात्कारगणै सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुंदाचार्यन्वये भट्टारक श्रीपथर्नशिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पण्डिये ब्रह्मतीक्ष्ण निमित्त । खंडेलवालान्वये पाटलीगोत्रे सं० धना भार्या धनश्री पुत्र सं. दिवराजा, दोदा, मूलाप्रभृतयः एतेषामध्ये सा. दोदा इदं पुस्तकं ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्तं लिखाप्य ज्ञानपात्राय दत्तं ।

२७६४. कातन्त्रव्याकरण—शिववर्मा । पत्र सं० ३५ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

२७६५. कारकप्रक्रिया ... । पत्र सं० ३ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५५ । अ भण्डार ।

२७६६. कारकविवेचन ..... । पत्र सं० ८ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०७ । अ भण्डार ।

२७६७. कारकममासप्रकरण ... । पत्र सं० ५ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३३ । अ भण्डार ।

२७६८. कृदन्तपाठ ... । पत्र सं० ६ । आ० ६३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६६ । अ भण्डार ।

विशेष—तृतीय पत्र नहीं है । सारस्वत प्रक्रिया म मे है ।

२७६९. गणपाठ—वादिराज जगन्नाथ । पत्र सं० ३४ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७८० । अ भण्डार ।

२७७०. चंद्रान्मीलन ... । पत्र सं० ३० । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १८३५ फागुन सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६१ । अ भण्डार ।

विशेष—मेवाराम ब्राह्मण ने स्वपठनार्थं प्रतिलिपि की थी ।

२७७१. जैनैन्द्रव्याकरण—देवनन्दि । पत्र सं० १२६ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १७१० फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३१ ।

विशेष—ग्रंथ का नाम पंचाध्यायी भी है । देवनन्दि का दूसरा नाम पूज्यपाद भी है । पंचवस्तु तक । सोलपुर नगर मे श्री भगवान जोशी ने पं० श्री हर्ष तथा श्रीकल्याण के लिये प्रतिलिपि की थी ।

संवत् १७२० आसोज सुदी १० को पुनः श्रीकल्याण व हर्ष को साह श्री लूणा बघेरवाल द्वारा भेंट की गयी थी ।

२७७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १९६३ फागुन सुदी ६ । वै० सं० २१२ । क  
भण्डार ।

२७७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६४ से २१४ । ले० काल सं० १९६४ माह बुदी २ । अपूर्णा । वै० सं०  
२१३ । क भण्डार ।

२७७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८६६ कार्तिक सुदी ३ । वै० सं० २१० । क  
भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में सशित संकेतार्थ दिये हुये हैं । पन्नालाल भीसा ने प्रतिलिपि की थी ।

२७७५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १९०८ । वै० सं० ३२८ । ज भण्डार ।

२७७६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२५ । ले० काल सं० १८८० वशाख सुदी १४ । वै० सं० २०० । अ  
भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त च भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० १२१ ) अ भण्डार में २ प्रतिया ( वै० सं०  
३२३, २८८ ) और हैं । ( वै० सं० ३२३ ) वाले ग्रन्थ में सोमदेवगुरि कृत शब्दार्थ चन्द्रिका नाम की टीका भी है ।

२७७७. जैनैन्द्रमहावृत्ति—अभयनेदि । पत्र सं० १०४ से २३२ । आ० १२३, १६ इक्ष । भाषा—  
संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × १ ले० काल × १ अपूर्णा । वै० सं० १०४२ । अ भण्डार ।

२७७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६० । ले० काल सं० १९४६ भाद्रपद सुदी १० । वै० सं० २११ । क  
भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल चौधरी ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

२७७९. तद्धितप्रक्रिया ... । पत्र सं० १६ । आ० १०×५ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।  
१० काल × १ ले० काल × १ पूर्णा । वै० सं० १८७० । अ भण्डार ।

२७८०. धातुपाठ—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० १३ । आ० १०×६ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—  
व्याकरण । १० काल × १ ले० काल सं० १७६७ श्रावण सुदी ५ । वै० सं० २६२ । छ भण्डार ।

२७८१. धातुपाठ ... । पत्र सं० ५१ । आ० ११×५ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १०  
काल × १ ले० काल × १ अपूर्णा । वै० सं० ६६० । अ भण्डार ।

विशेष—धातुओं के पाठ हैं ।

२७८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १५६४ फागुण सुदी १२ । वै० सं० ६२ । ख  
भण्डार ।

विशेष—आचार्य नेमिचन्द्र ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० १३०३ ) तथा ख भण्डार में एक प्रति ( वै० सं०  
२६० ) और हैं ।

२७८३. धातुरूपावलि..... पत्र सं० २२ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६ । अ भण्डार ।

विशेष—शब्द एवं धातुओं के रूप हैं ।

२७८४. धातुप्रत्यय..... पत्र सं० ३ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०२८ । ट भण्डार ।

विशेष—हेमचन्द्रानुशासन की शब्द साधनिका दी है ।

२७८५. पंचसंधि ... । पत्र सं० २ से ७ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

१० काल × । ले० काल सं० १७३२ । अपूर्ण । वे० सं० १२६२ । अ भण्डार ।

२७८६. पंचिकरणवार्तिक—सुरेश्वराचार्य । पत्र सं० २ से ४ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४४ । ट भण्डार ।

२७८७. परिभाषासूत्र ... । पत्र सं० ५ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

१० काल × । ले० काल सं० १५३० । पूर्ण । वे० सं० १६५४ । ट भण्डार ।

विशेष—अं तम पुष्टिका निम्न प्रकार है—

इति परिभाषा सूत्र सम्पूर्णा ॥

प्रयसित निम्न प्रकार है—

म० १५३० वर्षे श्रीखरतरगच्छे श्रीत्रयसागरमहोपाध्यायशिष्यश्रीरत्नचन्द्रोपाध्यायशिष्यभक्तिलाभगणिताना लिखिताना वाचिता च ।

२७८८. परिभाषेन्दुशेखर—नागोजीभट्ट । पत्र सं० ६७ । आ० ६×३३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८ । ज भण्डार ।

२७८९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वे० सं० १०० । ज भण्डार ।

२७९०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११२ । ले० काल × । वे० सं० १०२ । ज भण्डार ।

विशेष—दो लिपिकर्ताओं ने प्रतिलिपि की थी । प्रति सटीक है । टीका का नाम भेरवी टीका है ।

२७९१. प्रक्रियाकौमुदी ..... पत्र सं० १४३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५० । अ भण्डार ।

विशेष—१४३ से आगे पत्र नहीं है ।

२७९२. पाणिनीयव्याकरण—पाणिनि । पत्र सं० ३६ । आ० ८३×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा पत्र के एक ओर ही लिखा गया है ।

२७६३. प्राकृतरूपमाला—श्रीरामभट्ट सुत धरद्वाराज । पत्र सं० ४७ । आ० ६३×४ इञ्च । भाषा—  
प्राकृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १७२४ आषाढ बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ५२२ । क  
भण्डार ।

विशेष—आचार्य कनककीर्ति ने ग्रन्थपूर (मालपुरा) में प्रतिलिपि की थी ।

२७६४. प्राकृतरूपमाला..... । पत्र सं० ३१ रे ४६ । भाषा—प्राकृत । विषय—व्याकरण । २० काल × ।  
ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २४६ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

२७६५. प्राकृतव्याकरण—चंडकवि । पत्र सं० ६ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्राकृत प्रकाश भी है । संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, पेशाविकी, मागधी तथा सोरमेनी  
आदि भाषाओं पर प्रकाश डाला गया है ।

२७६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८६६ । वे० सं० ५२३ । क भण्डार ।

२७६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८२३ । वे० सं० ५२४ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ५२२ ) और है ।

२७६८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४० । ले० काल सं० १८४४ मगसिर सुदी १५ । वे० सं० १०८ । छ  
भण्डार ।

विशेष—जयपुर के गोधो के मन्दिर नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी ।

२७६९. प्राकृतव्युत्पत्तिदीपिका—सौभाग्यगणि । पत्र सं० २२४ । आ० १२३×५३ इञ्च । भाषा—  
संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १८६६ आमोज सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ५२७ । क  
भण्डार ।

२८००. भाष्यपदीप—कैटयट । पत्र सं० ३१ । आ० १२३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५१ । ज भण्डार ।

२८०१. रूपमाला..... । पत्र सं० ४ मे ५० । आ० ८३×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।  
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३०६ । च भण्डार ।

विशेष—धानुषो के रूप दिये हैं ।

इसके अतिरिक्त इसी भण्डार में २ प्रतियां ( वे० सं० ३०७, ३०८ ) और हैं ।

२८०२. लघुन्यासवृत्ति..... । पत्र सं० १२७ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७७ ट भण्डार ।

२८०३. लघुरूपसर्गवृत्ति.....। पत्र सं० ४। ग्रा० १०३×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण।

१० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६४८। ट मण्डार।

२८०४. लघुशब्देन्दुशेखर.....। पत्र सं० २१५। ग्रा० ११२×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—

व्याकरण। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २११। ज मण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के १० पत्र सटीक है।

२८०५. लघुसारस्वत—अनुभूति स्वरूपाचार्य। पत्र सं० २३। ग्रा० ११×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत।

विषय—व्याकरण। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६२६। अ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार मे ४ प्रतियां ( वे० सं० ३११, ३१२, ३१३, ३१४ ) भीर है।

२८०६. प्रति सं० २।.....। पत्र सं० २०। ग्रा० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०

३११। च मण्डार।

२८०७. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४। ले० काल सं० १८६२ भाद्रपद शुक्ला ८। वे० सं० ३१३। च

मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार मे दो प्रतिया ( वे० सं० ३१३, ३१४ ) भीर है।

२८०८. लघुसिद्धान्तकौमुदी—वरदराज। पत्र सं० १०४। ग्रा० १०×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च। भाषा—संस्कृत।

विषय—व्याकरण। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६७। ख मण्डार।

२८०९. प्रति सं० २। पत्र सं० ३१। ले० काल सं० १७८६ ज्येष्ठ बुदी ५। वे० सं० १७३। ज

मण्डार।

विशेष—घाठ अध्याय तक है।

च मण्डार मे २ प्रतिया ( वे० सं० ३१५, ३१६ ) भीर है।

२८१०. लघुसिद्धान्तकौस्तुभ.....। पत्र सं० ५१। ग्रा० १२×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—

व्याकरण। १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०१२। ट मण्डार।

विशेष—पाणिनी व्याकरण की टीका है।

२८११. वैय्याकरणभूषण—कौहनभट्ट। पत्र सं० ३३। ग्रा० १०×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—

व्याकरण। १० काल ×। ले० काल सं० १७७४ कार्तिक मुदी २। पूर्ण। वे० सं० ६८३। ङ मण्डार।

२८१२. प्रति सं० २। पत्र सं० १०४। ले० काल सं० १६०५ कार्तिक बुदी २। वे० सं० २८१। ङ

मण्डार।

२८१३. वैय्याकरणभूषण.....। पत्र सं० ७। ग्रा० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—

व्याकरण। १० काल ×। ले० काल सं० १८६६ पौष मुदी ८। पूर्ण। वे० सं० ६८२। ङ मण्डार।



२८१४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी ४ । वे० सं० ३३५ । च  
भण्डार ।

विशेष—माणिक्यचन्द्र के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

२८१५. व्याकरण..... । पत्र सं० ४६ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१ । छ भण्डार ।

२८१६. व्याकरणटीका..... । पत्र सं० ७ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३८ । छ भण्डार ।

२८१७. व्याकरणभाषाटीका..... । पत्र सं० १८ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।  
विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६८ । छ भण्डार ।

२८१८. शब्दशोभा—कवि नीलकण्ठ । पत्र सं० ४३ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
व्याकरण । १० काल सं० १६६३ । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ७०० । छ भण्डार ।

विशेष—महात्मा लालचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

२८१९. शब्दरूपावली..... । पत्र सं० ८६ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

२८२०. शब्दरूपिणी—आचार्य वररुचि । पत्र सं० २७ । आ० १०३×३३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१२ । छ भण्डार ।

२८२१. शब्दानुशासन—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ३१ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४८८ । छ भण्डार ।

२८२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । आ० १०३×४३ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं०  
१६८६ । छ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार मे ६ प्रतियाँ ( वे० सं० ६८१, ६८२, ६८३, ६८३, (क) ६८४, ५२६ ) तथा छ  
भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० १६८६ ) और है ।

२८२३. शब्दानुशासनवृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ७६ । आ० १२×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२६३ । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्राकृत व्याकरण भी है ।

२८२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी ३ । वे० सं० ५२५ । छ  
भण्डार ।

विशेष—धामेर निवासी पिरागदास महारा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

२८२५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी १ । वे० सं० २४३ । च भण्डार ।

विषय—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ३३६ ) शोर है ।

२८२६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १५२७ चैत्र बुदी ८ । वे० सं० १६५० । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १५२७ वर्षे चैत्र वदि ८ भोमे गोराचलदुर्गे महाराजाधिराजश्रीकीर्तिनिहदेवराज-प्रवर्तमानसमये श्री कालिदास पुत्र श्री हरि ब्रह्म.....।

२८२७. शाकटायन व्याकरण—शाकटायन । २ मे २० । मा० १५×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४० । च्च भण्डार ।

२८२८. शिशुबोध—काशीनाथ । पत्र सं० ६ । मा० १०×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल सं० १७३६ माघ सुदी २ । वे० सं० २८७ । छ भण्डार ।

प्रारम्भ—भूदेवदेवगोपाल, नत्वागोपालमीश्वर ।

क्रियते काशीनाथेन, शिशुबोधविशेषतः ॥

२८२९. संह्याप्रक्रिया.....। पत्र सं० ४ । मा० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८५ । छ भण्डार ।

२८३०. सम्बन्धविवक्षा.....। पत्र सं० २४ । मा० ६<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । वे० सं० २२७ । ज भण्डार ।

२८३१. संस्कृतमञ्जरी.....। पत्र सं० ४ । मा० ११×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वे० सं० ११६७ । झ भण्डार ।

२८३२. सारस्वतीघातुपाठ.....। पत्र सं० ५ । मा० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष—कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

२८३३. सारस्वतपंचसंधि.....। पत्र सं० १३ । मा० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल सं० १८५५ माघ सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १३७ । छ भण्डार ।

२८३४. सारस्वतप्रक्रिया—आनुभूतिस्वरूपाचार्य । पत्र सं० १२१ मे १४५ । मा० ८<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल सं० १८४६ । अपूर्ण । वे० सं० १३६५ । झ भण्डार ।

२८३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १७८१ । वे० सं० ६०१ । झ भण्डार ।

२८३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८१ । ले० काल सं० १८६६ । वे० सं० ६२१ । अ भण्डार ।

२८३७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १८३१ । वे० सं० ६५१ । अ भण्डार ।

विशेष—बोधचन्द के शिष्य कृष्णदास ने प्रतिलिपि की थी ।

२८३८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६० से १२४ । ले० काल सं० १८३८ । अपूर्ण । वे० सं० ६८५ । अ

भण्डार ।

बवाई ( बस्ती ) नगर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२८३९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १७५९ । वे० सं० १२४९ । अ भण्डार ।

विशेष—चन्द्रनागरगणु ने प्रतिलिपि की थी ।

२८४०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १७०१ । वे० सं० ६७० । अ भण्डार ।

२८४१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३२ मे ७२ । ले० काल सं० १८५२ । अपूर्ण । वे० सं० ६३७ । अ

भण्डार ।

२८४२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०५५ । अ भण्डार ।

विशेष—चन्द्रकीर्ति वृत्त संस्कृत टीका सहित है ।

२८४३. प्रति सं० १० । पत्र सं० १६४ । ले० काल सं० १८२१ । वे० सं० ७९० । क भण्डार ।

विशेष—धिमनराम के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२८४४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १४६ । ले० काल सं० १८२७ । वे० सं० ७९१ । क भण्डार ।

२८४५. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १८४६ माघ सुदी १४ । वे० सं० २६८ । ख

भण्डार ।

विशेष—पं० जगरूपदास ने दुलोचन्द के पठनार्थ नगर हरिद्वार मे प्रतिलिपि की थी । केवल 'वसंत  
संधि तक है ।

२८४६. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८६४ श्रावण सुदी ५ । वे० सं० ७६६ । ख

भण्डार ।

२८४७. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १७०० । वे० सं० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष—दुर्गाराम शर्मा के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२८४८. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १९१७ । वे० सं० ४८ । झ भण्डार ।

विशेष—गणेशलाल पाठ्या के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी । दो प्रतियो का सम्मिश्रण है ।

२८४९. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १८७६ । वे० सं० १२५ । झ भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार मे १७ प्रतिभा ( वे० सं० ६०७, ६५२, ८०६, ९०३, १००६,

१०३४, १३१३, ६५३, १२०६, १२७२, १२३२, १६५०, १२५०, १८८०, १२६१, १२६८, १२०४, १३०१, १३०२ ) ख भण्डार में ७ प्रतियां ( वे सं० २१५, २१५ [म], २१६, २१७, २१८, २१९, २६८ ) घ भण्डार में ३ प्रतियां ( वे० सं० ११६, १२०, १२१ ) ङ भण्डार में १५ प्रतियां ( वे० सं० ८२१, ८२२, ८२३, ८२४, ८२६, ८२७, ८२८, ८२९, ८३०, ८३१, ८३२, ८३३, ८३४ ) च भण्डार में ५ प्रतियां ( वे० सं० ३६६, ४००, ४०१, ४०२, ४०३ ) छ भण्डार में ६ प्रतियां ( वे० सं० १३६, १३७, १४०, २४७, २५४, ६७ ) झ भण्डार में ३ प्रतियां ( वे० सं० १२१, १४०, २२२ ) ञ भण्डार में १ प्रति ( वे० सं० २० ) तथा ट भण्डार में ५ प्रतियां ( वे० सं० १६८८, १६६०, २१००, २०७२, २१०५ ) श्रौत है ।

उक्त प्रतियों में बहुत सी अपूर्ण प्रतियां भी हैं ।

२८५०. सारस्वतप्रक्रियाटीका—महीभट्टी । पत्र सं० ६७ । भा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ८२४ । ङ भण्डार ।

विशेष—महात्मा लालबन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

२८५१. मंज्ञाप्रक्रिया..... । पत्र सं० ६ । भा० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०० । ख भण्डार ।

२८५२. सिद्धहेमतनत्रवृत्ति—जिनप्रभसूरि । पत्र सं० ३ । भा० ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । १० काल । ले० काल सं० १७२४ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ..... । ज भण्डार ।

विशेष—संवत् १४६४ की प्रति में प्रतिलिपि की गई थी ।

२८५३. सिद्धान्तकौमुदी—भट्टोजी दीक्षित । पत्र सं० ८ । भा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४ । ज भण्डार ।

२८५४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४० । ले० काल × । वे० सं० ६६ । ज भण्डार ।

विशेष—पूवाढ है ।

२८५५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७६ । ले० काल × । वे० सं० १०१ । ज भण्डार ।

विशेष—उत्तराढ पूरा है ।

इसके अतिरिक्त ज भण्डार में २ प्रतियां ( वे० सं० ६५, ६६ ) तथा ट भण्डार में २ प्रतियां ( वे० सं० १६३४, १६६६ ) श्रौत हैं ।

२८५६. सिद्धान्तकौमुदी..... । पत्र सं० ४३ । भा० १२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

व्याकरण । १० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४७ । ङ भण्डार ।

विशेष—अतिरिक्त ङ, च तथा ट भण्डार में एक एक प्रति ( वे० सं० ८४८, ४०७, २७२ ) और है।

२८५७. सिद्धान्तकौमुदीटीका ... पत्र सं० ६५। घा० ११३×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-

व्याकरण। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६५। ज भण्डार।

विशेष-पत्रों के कुछ अंश पानी से गल गये हैं।

२८५८. सिद्धान्तचन्द्रिका—रामचंद्राश्रम। पत्र सं० ४४। घा० ९३×५३ इंच। भाषा-संस्कृत।

विषय-व्याकरण। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १९५१। अ भण्डार।

२८५९. प्रति सं० २। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १८४७। वे० सं० १९५२। अ भण्डार।

विशेष—कृष्णगढ में भट्टारक मुरेन्द्रकीर्ति ने प्रतिनिधि की थी।

२८६०. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०१। ले० काल सं० १८४७। वे० सं० १९५३। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में १० प्रतियां ( वे० सं० १९३१, १९५४, १९५५, १९५६, १९५७, १९५८,

६०८, ६१७, ६१८, २०२३ ) और है।

२८६१. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६४। घा० ११३×५३ इंच। ले० काल सं० १०८४। अण्डा बुदी १४।

वे० सं० ७८२। क भण्डार।

२८६२. प्रति सं० ५। पत्र सं० ५७। ले० काल सं० १९०२। वे० सं० २२३। ख भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां ( वे० सं० २२२ तथा ४०८ ) और है।

२८६३. प्रति सं० ६। पत्र सं० २९। ले० काल सं० १७५२। अण्डा बुदी ९। वे० सं० ९०। छ भण्डार।

विशेष—इसी वेष्टन में एक प्रति और है।

२८६४. प्रति सं० ७। पत्र सं० ३९। ले० काल सं० १८९४। अण्डा बुदी ६। वे० सं० ३५२। ज

भण्डार।

विशेष—प्रथम बुक्ति तक है। संस्कृत में कहीं गन्धार्थ भी है। इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ३५३ )

और है।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ९ प्रतियां ( वे० सं० १२८५, १९५४, १९५५, १९५६, १९५७,

६०८, ६१७, ६१८ ) ख भण्डार में २ प्रतियां ( वे० सं० २२२, ४०८ ) छ तथा ज भण्डार में एक एक प्रति ( वे० सं० ९०, ३५३ ) और है। अ भण्डार में ३ प्रतियां ( वे० सं० ११७७, १२९६, १२९७ ) अण्डा बुदी। च भण्डार में २ प्रतियां ( वे० सं० ४०९, ४१० ) छ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ११९ ) तथा ज भण्डार में ३ प्रतियां ( वे० सं० ३५५, ३५८, ३५९ ) और है।

ये सभी प्रतियां अपूर्ण हैं।

२८६५. सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका—लोकेशकर । पत्र सं० ६७ । प्रा० ११ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०१ । कृ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम तत्त्वदीपिका है ।

२८६६ प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ से ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४७ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२८६७ सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति—सदानन्दरायि । पत्र सं० १७३ । प्रा० ११×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । वे० सं० ८६ । कृ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम सुबोधनीवृत्ति भी है ।

२८६८ प्रति सं० २ । पत्र सं० १७८ । ले० काल सं० १८५६ ज्येष्ठ बुदी ७ । वे० सं० ३५१ । ज भण्डार ।

विशेष—प० महाचन्द्र ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिनिधि की थी ।

२८६९. सारम्यतदीपिका—चन्द्रकीर्त्तिसूरि । पत्र सं० १६० । प्रा० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । १० काल सं० १६५६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६५ । अ भण्डार ।

२८७० प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ से ११ । ले० काल सं० १६५७ । वे० सं० २६४ । कृ भण्डार ।

विशेष—चन्द्रकीर्त्ति के शिष्य हर्षकीर्त्ति ने प्रतिनिधि की थी ।

२८७१ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७२ । ले० काल सं० १८२८ । वे० सं० २८३ । कृ भण्डार ।

विशेष—मुनि चन्द्रभाग्य खेतसी ने प्रतिनिधि की थी । पत्र जीर्ण है ।

२८७२ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १६६१ । वे० सं० १६४३ । ट भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ च और ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १०५५, ३६८ तथा २०६४) भी है ।

२८७३. सारस्वतदशाध्यायी..... । पत्र सं० १० । प्रा० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

व्याकरण । १० काल × । ले० काल सं० १७६८ वैशाख बुदी ११ । वे० सं० १३७ । कृ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । कृष्णदास ने प्रतिनिधि की थी ।

२८७४. सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका..... । पत्र सं० १६ । प्रा० १०×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४६ । कृ भण्डार ।

२८७५. सिद्धान्तविन्दु—श्रीमधुसूदन सरस्वती । पत्र सं० २८ । आ० १०१×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल सं० १७४२ आसोज बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ८१७ । अ भण्डार ।

विशेष—इति श्रीमत्परमहंस परित्वाजकाचार्य श्रीविश्वेश्वर सरस्वती भगवत्पाद शिष्य श्रीमधुसूदन सरस्वती विरचितः सिद्धान्तविदुस्समाप्तः ॥ संवत् १७४२ वर्षे आश्विनमासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्या बुधवासे बगहनाम्निनगरे मिश्र श्री श्यामलस्य पुत्रेण भगवत्प्राप्ता सिद्धान्तविदुरलेखि । शुभमस्तु ॥

२८७६. सिद्धान्तमंजूषिका—नागेशभट्ट । पत्र सं० ६३ । आ० १२१×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ३३४ । ज भण्डार ।

२८७७. सिद्धान्तमुक्तावली—पचानन भट्टाचार्य । पत्र सं० ७० । आ० १२×५<sup>३</sup> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल सं० १८३३ भाद्रवा बुदी ३ । वे० सं० ३०८ । ज भण्डार ।

२८७८. सिद्धान्तमुक्तावली ... । पत्र सं० ७० । आ० १२×५<sup>३</sup> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल सं० १७०५ चैत बुदी ३ । पूर्णा । वे० सं० २८६ । ज भण्डार ।

२८७९. हेमनीवृद्धवृत्ति ... । पत्र सं० ५४ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १४६ । अ भण्डार ।

२८८०. हेमव्याकरणवृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० २४ । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० १८४४ । अ भण्डार ।

२८८१. हेमीव्याकरण—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ८३ । आ० १०×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ३५८ ।

विशेष—बीच में अधिकांश पत्र नहीं है । प्रति प्राचीन है ।



## कोश

२८८२. अनेकार्थध्वनिमंजरी—महीपयश कवि । पत्र सं० ११ । भा० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । १० काल × । ले० काल × । वे० सं० १४ । छ अण्डार ।

२८८३. अनेकार्थध्वनिमञ्जरी..... । पत्र सं० १४ । भा० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६१५ । ट अण्डार ।

विशेष—तृतीय अधिकार तक पूर्ण है ।

२८८४. अनेकार्थमञ्जरी—नन्ददास । पत्र सं० २१ । भा० ८ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१८ । झ अण्डार ।

२८८५. अनेकार्थशत—भट्टारक हर्षकीर्ति । पत्र सं० २३ । भा० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । १० काल × । ले० काल सं० १६६७ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १५ । छ अण्डार ।

२८८६. अनेकार्थसंग्रह—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ४ । भा० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । १० काल × । ले० काल सं० १६६६ अषाढ बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३८ । क अण्डार ।

२८८७. अनेकार्थसंग्रह..... । पत्र सं० ४१ । भा० १०×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४ । च अण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम महीपकोश भी है ।

२८८८. अभिधानकोष—पुरुषोत्तमदेव । पत्र सं० ३४ । भा० ११ $\frac{१}{२}$ ×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११७१ । अ अण्डार ।

२८८९. अभिधानचिंतामणिनाममाला—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६ । भा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०५ । अ अण्डार ।

विशेष—केवल प्रथमकाण्ड है ।

२८९०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३५ । ले० काल सं० १७३० अषाढ मुदी १० । वे० सं० ३६ । क अण्डार ।

विशेष—स्वोपज्ञ संस्कृत टीका सहित है । महाराणा राजसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।



२८६१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १८०२ ज्येष्ठ सुदी १०। वै० सं० ३७। क  
भण्डार।

विशेष—स्वोपजवृत्ति है।

२८६२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७ ये १३४। ले० काल सं० १७८० आसोज सुदी ११। अपूर्णा। वै०  
सं० ५। क भण्डार।

२८६३. प्रति सं० ५। पत्र सं० ११२। ले० काल सं० १६२६ आषाढ सुदी २। वै० सं० ८५। ज  
भण्डार।

२८६४. प्रति सं० ६। पत्र सं० ५८। ले० काल सं० १८१३ बैशाख सुदी १३। वै० सं० १११। ज  
भण्डार।

विशेष—पं० भोमराज ने प्रतिलिपि की थी।

२८६५. अभिधानरत्नाकर—धर्मचन्द्रगणि। पत्र सं० २६। आ० १०×४<sup>३</sup> डंच। भाषा-संस्कृत।  
विषय—कोश। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्णा। वै० सं० ८२७। अ भण्डार।

२८६६. अभिधानसार—पं० शिवजीलाल। पत्र सं० २३। आ० १०×४<sup>३</sup> डंच। भाषा—संस्कृत।  
विषय—कोश। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्णा। वै० सं० ८। ख भण्डार।

विशेष—देवकाण्ड तक है।

२८६७. अमरकोश—अमरसिंह। पत्र सं० २६। आ० १२×६ डंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कोश।  
२० काल ×। ले० काल सं० १८०० ज्येष्ठ सुदी १४। पूर्णा। वै० सं० २०७५। अ भण्डार।

विशेष—इमका नाम लिंगानुशासन भी है।

२८६८. प्रति सं० २। पत्र सं० ३८। ले० काल सं० १८३५। वै० सं० १६११। अ भण्डार।

२८६९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५४। ले० काल सं० १८११। वै० सं० ६२२। अ भण्डार।

२८७०. प्रति सं० ४। पत्र सं० १८ से ६१। ले० काल सं० १८८२ आसोज सुदी १। अपूर्णा। वै०  
सं० ६२१। अ भण्डार।

२८७१. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १८६४। वै० सं० २४। क भण्डार।

२८७२. प्रति सं० ६। पत्र सं० १३ से ६१। ले० काल सं० १८२४। वै० सं० १२। अपूर्णा। ख  
भण्डार।

२६०३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६८ आश्विन सुदी ६ । वे० सं० २४ । क  
भण्डार ।

विशेष—प्रथमकाण्ड तक है । अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

२६०४ प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १८८३ आश्विन सुदी ३ । वे० सं० २७ । क  
भण्डार ।

विशेष—जयपुर म दीवाण अमरचन्दजी के मन्दिर में मालीराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

२६०५. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १८९८ कार्तिक सुदी ८ । वे० सं० ३३६ । क  
भण्डार ।

विशेष—ऋषि हेमराज के पठनार्थ ऋषि भारमल्ल ने जयदुर्ग में प्रतिलिपि की थी । सं० १८२२ आषाढ  
सुदी २ मे ३) म० देकर पं० रत्नानिह्र के शिष्य रूपचन्द्र ने श्वेताम्बर जती मे ली ।

२६०६. प्रति सं० १० । पत्र सं० ९१ से १३१ । ले० काल सं० १८३० आषाढ सुदी ११ । अपूर्णा ।  
वे० सं० २६५ । क भण्डार ।

विशेष—मौनीराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

२६०७ प्रति सं० ११ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १८८१ वैशाख सुदी १५ । वे० सं० ३४४ । ज  
भण्डार ।

विशेष—कहो २ टीना भी दो हुई है ।

२६०८. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १७६६ मंगसिर सुदी ५ । वे० सं० ७ । क  
भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार मे २१ प्रतियां ( वे० सं० ६३८, ८०४, ७६१, ६२३, ११६६,  
११६२, ८०६, ६१७, १२८६, १२८७, १२८८, १२९०, १६५६, १६६०, १३४२, १८३६, १५५८, १५५६, १५६०  
१८५१, २१०५ ) क भण्डार मे ५ प्रतिया ( वे० सं० २१, २२, २३, २४, २६ ) ख भण्डार मे ५ प्रतियां ( वे०  
सं० ६, १०, ११, २६६ २६६ ) क भण्डार मे ११ प्रतियां ( वे० सं० १६, १७, १८, १६, २०, २१, २२, २३,  
२४, २५, २६ ) च भण्डार में ७ प्रतिया ( वे० सं० ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४ ) छ भण्डार में ४ प्रतियां  
( वे० सं० १३६ १३६, १४१, २४ [क] ) ज भण्डार में ४ प्रतिया ( वे० सं० ५६, ३५०, ३५२, ६२ ) झ भण्डार  
१ प्रति ( वे० सं० ६५ ), तथा ट भण्डार मे ४ प्रतिया ( वे० सं० १८००, १८८५, २१०१ तथा २०७६ )  
भीर है ।

२६०६. अमरकोषटीका—भानुजीदीक्षित । पत्र सं० ११४ आ० १०×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६ । च भण्डार ।

विशेष—बघेल वंशोद्भव श्री महीधर श्री कीर्तिसहदेव की आज्ञा से टीका लिखी गई ।

२६१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७ । च भण्डार ।

२६११. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० १८८६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथमखण्ड तक है ।

२६१२. एकाक्षरकोश—सुपरसूक्त । पत्र सं० ४ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२ । क भण्डार ।

२६१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८८६ कार्तिक मुदी ५ । वे० सं० ५१ । च  
भण्डार ।

२६१४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १६०३ चैत्र बुदा ६ । वे० सं० १५५ । ज  
भण्डार ।

विशेष—पं० सदासुखजी ने अपने शिष्य के प्रतिबोधार्थ प्रतिनिधि की थी ।

२६१५. एकाक्षरीकोश—वररुचि । पत्र सं० २ । आ० ११<sup>१</sup>/<sub>४</sub>×५<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०७१ । अ भण्डार ।

२६१६. एकाक्षरीकोश..... । पत्र सं० १० । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २०  
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३०० । अ भण्डार ।

२६१७. एकाक्षरनाममाला..... । पत्र सं० ४ । आ० १२<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश ।  
२० काल × । ले० काल सं० १६०३ चैत्र बुदा ६ । पूर्ण । वे० सं० ११५ । ज भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में महाराज रामसिंह के शासनकाल में भ० देवेन्द्रकीर्ति के समय में पं० सदासुखजी  
के शिष्य फतेलाल ने प्रतिनिधि का था ।

२६१८. त्रिकःशब्दशेषसूची (अमरकोश)—अमरमिह । पत्र सं० ३४ । आ० ११<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच ।  
भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४१ । च भण्डार ।

विशेष—अमरकोश के काण्डों में आने वाले शब्दों की श्लोक सख्या दी हुई है । प्रत्येक श्लोक का प्रारम्भिक  
अंश भी दिया हुआ है ।

इसके अतिरिक्त इसी भण्डार में ३ प्रतियां ( वे० सं० १४२, १४३, १४५ ) शोर है ।

२६१६. त्रिकायदशोपाभिधान—श्री पुरुषोत्तमदेव । पत्र सं० ४३ । प्रा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२० । छ भण्डार ।

२६२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० १४४ । च भण्डार ।

२६२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १६०३ आसोज बुदी ६ । वे० सं० १८६ ।

विशेष—जयपुर के महाराजा रामसिंह के शासनकाल में पं० सदासुखजी के शिष्य फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२६२२. नाममाला—धनंजय । पत्र सं० १६ । प्रा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४७ । अ भण्डार ।

२६२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८३७ फागुण सुदी १ । वे० सं० २८२ । अ भण्डार ।

विशेष—पाटांटी के मन्दिर में खुशालचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके प्रतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतियां ( वे० सं० १४, १०७३, १०८६ ) और है ।

२६२४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १३०६ कार्तिक बुदी ८ । वे० सं० ६३ । ख भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ३२२ ) और है ।

२६२५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६४३ ज्येष्ठ सुदी ११ । वे० सं० २४६ । छ भण्डार ।

विशेष—पं० भारामल्ल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके प्रतिरिक्त इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० २६६ ) तथा ज भण्डार में ( वे० सं० २७६ ) की एक प्रति और है ।

२६२६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८१६ । वे० सं० १८५ । अ भण्डार ।

२६२७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८०१ फागुण सुदी ६ । वे० सं० ५२२ । अ भण्डार ।

२६२८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १७ से ३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०८ । ट भण्डार ।

विशेष—इसके प्रतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतियां ( वे० सं० १०७३, १४, १०८६ ) छ, छ तथा ज भण्डार में १-१ प्रति ( वे० सं० ३२२, २६६, २७६ ) और है ।

२६२६. नाममाला..... । पत्र सं० १२ । पृ० १०×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोष । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२८ । ट भण्डार ।

२६३०. नाममाला—बनारसीदास । पत्र सं० १४ । पृ० ८×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कोश । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४ । ख भण्डार ।

२६३१. बीजक(कोश)..... । पत्र सं० २३ । पृ० ६३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कोश । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १००४ । अ भण्डार ।

विशेष—विमलहसगण ने प्रतिलिपि की थी ।

२६३२. मानमञ्जरी—नंददाम । पत्र सं० २२ । पृ० ८×६ इंच । भाषा—हिन्दी विषय—कोश । १० काल × । ले० काल सं० १८५३ फागुण सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ५६३ । ङ भण्डार ।

विशेष—चन्द्रभान बज ने प्रतिलिपि की थी ।

२६३३. मैत्रिकोश । पत्र सं० ६४ । पृ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८२ । क भण्डार ।

२६३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११६ । ले० काल × । वे० सं० २७८ । च भण्डार ।

२६३५. रूपमञ्जरीनाममाला—गोपालदाम सुत रूपचन्द्र । पत्र सं० ८ । पृ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । १० काल सं० १६४४ । ले० काल सं० १७८० चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १८७६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ में नाममाला की तरह श्लोक है ।

२६३६. लघुनाममाला—हर्षकीर्तिसूरि । पत्र सं० २३ । पृ० ६×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । १० काल × । ले० काल सं० १८२८ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ११२ । ज भण्डार ।

विशेष—सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२६३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ४६८ । ख भण्डार ।

२६३८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ से १६, ३७ से ४५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५८४ । ट भण्डार ।

२६३९. लिंगानुशासन ..... । पत्र सं० ५ । पृ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६ । ख भण्डार ।

विशेष—५ में प्रागे पत्र नहीं है ।

२६४०. लिङ्गानुशासन—हेमचन्द्र । पत्र सं० १० । भा० १०×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६० । अ भण्डार ।

विशेष—कही २ शब्दार्थ तथा टीका भी संस्कृत में दी हुई हैं ।

२६४१. विश्वप्रकाश—वैद्यराज महेश्वर । पत्र सं० १०१ । भा० ११×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—कोश । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ भासोज सुवी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६६३ । क भण्डार ।

२६४२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ३३२ । क भण्डार ।

२६४३. विश्वलोचन—धरसेन । पत्र सं० १८ । भा० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
कोश । २० काल × । ले० काल सं० १५६६ । पूर्ण । वे० सं० २७५ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम मुक्तावली भी है ।

२६४४. विश्वलोचनकोशकीशब्दानुक्रमणिका..... । पत्र सं० २६ । भा० १०×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—  
संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८८७ । अ भण्डार ।

२६४५. शतक..... । पत्र सं० ६ । भा० ११×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २०  
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६८ । अ भण्डार ।

२६४६. शब्दप्रभेद व धातुप्रभेद—सकल वैद्य चूडामणि श्री महेश्वर । पत्र सं० १६ । भा०  
१०×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७७ । अ भण्डार ।

२६४७. शब्दरत्न..... । पत्र सं० १६६ । भा० ११×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २०  
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४६ । अ भण्डार ।

२६४८. शारदीयाममाला..... । पत्र सं० २४ से ४७ । भा० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८३ । अ भण्डार ।

२६४९. शिलोच्छकोश—कवि सारस्वत । पत्र सं० १७ । भा० १०<sup>३</sup>×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । ( तृतीयसंख तक ) वे० सं० ३४३ । अ भण्डार ।

विशेष—रचना अमरकोश के आधार पर की गई है जैसा कि कवि के निम्न पद्यों से प्रकट है ।

कवेरमहसिहस्य कृतिरेषाति निर्मला ।

श्रीचन्द्रतारकं भूयान्नामलिङ्गानुशासनम् ।

पद्मानिबोधयत्यर्कः शास्त्राणि कुरुते कविः

तत्सौरभनमस्वंतः संतस्तन्वन्तितद्गुणाः ॥

सूनेष्वपरसिंहेन, नामलिङ्गेषु शालिषु ।

एष बाङ्गमयवप्रेषु शिलोच्छ क्रियते मया ॥

२६५०. सवाथसाधनी—भट्टवररुचि । पत्र सं० २ मे २४ । प्रा० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कोश । २० काल × । ले० काल सं० १५६७ मंगसिर बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० २१२ । ख भण्डार ।

विशेष—हिसार पिरोग्यकोट में रुद्रपल्लीयगच्छ के देवसुंदर के पट्ट मे श्रीजितदेवमूर्ति ने प्रतिनिधि की थी ।



## ज्योतिष एवं निमित्तज्ञान

२६५१. अरिहंत केवली पाशा..... | पत्र सं० १४ | भा० १२×५ इंच | भाषा-संस्कृत ।  
विषय-ज्योतिष । २० काल सं० १७०७ सावन सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३५ । क भण्डार ।  
विशेष—ग्रन्थ रचना सहजानन्दपुर में हुई थी ।
२६५२. अरिष्ट कर्ता ..... | पत्र सं० ३ | भा० ११×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष  
० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २५६ । ख भण्डार ।  
विशेष—६० श्लोक है ।
२६५३. अरिष्टाध्याय ..... | पत्र सं० ११ | भा० ८×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष ।  
२० काल × । ले० काल सं० १८६६ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वै० सं० १३ । ख भण्डार ।  
विशेष—प० जीवणराम ने शिष्य पन्नालाल के लिये प्रतिलिपि की । ६ पत्र में धामे भारतीस्तोत्र दिया  
हुआ है ।
२६५४. अयजद केवली ..... | पत्र सं० १० । भा० ८×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्ञकुन  
शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १५६ । व्य भण्डार ।
२६५५. उच्चग्रह फल ..... | पत्र सं० १ । भा० १० $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २६७ । ख भण्डार ।
२६५६. करण कौतूहल ..... | पत्र सं० ११ । भा० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २१५ । ज भण्डार ।
२६५७. करलकखण ..... | पत्र सं० ११ । भा० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-ज्योतिष ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १०६ । क भण्डार ।  
विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं । मारिण्यचन्द्र ने वृन्दावन में प्रतिलिपि की ।
२६५८. कर्पूरचक्र— | पत्र सं० १ । भा० १४ $\frac{३}{४}$ ×११ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष ।  
२० काल × । ले० काल सं० १८६३ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वै० सं० २१६४ । अ भण्डार ।  
विशेष—चक्र भवन्ती नगरी से प्रारम्भ होता है, इसके चारो ओर देश चक्र है तथा उनका फल है । पं०  
सुशाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।



२६४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल सं० १८४० । वे० सं० २१६६ अ भण्डार ।

विशेष—मिश्र धरणीधर ने नागपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२६६०. कर्मराशि फल ( कर्म विपाक )..... । पत्र सं० ३१ । आ० ८३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण × । वे० सं० १६५१ । अ भण्डार ।

२६६१. कर्म विपाक फल..... । पत्र सं० ३ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३ । अ भण्डार ।

विशेष—राशियों के अनुसार कर्मों का फल दिया हुआ है ।

२६६२. कालज्ञान— । पत्र सं० १ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१८ । अ भण्डार ।

२६६३. कालज्ञान..... । पत्र सं० २ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११८६ । अ भण्डार ।

२६६४. कौतुक लीलावती..... । पत्र सं० ५ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८६२ । वैशाल गुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० २६१ । अ भण्डार ।

२६६५. क्षेत्र व्यवहार..... । पत्र सं० २० । आ० ८×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६७ । अ भण्डार ।

२६६६. गर्गमनोरमा..... । पत्र सं० ७ । आ० ७×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८८८ । पूर्ण । वे० सं० २१२ । अ भण्डार ।

२६६७. गर्गसहिता—गर्गश्रुति । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८८६ । अपूर्ण । वे० सं० ११६७ । अ भण्डार ।

२६६८. ग्रह दशा वखौन..... । पत्र सं० १८ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० १७२७ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रहों की दशा तथा उपदेशाधी के अन्तर एवं फल दिये हुए हैं ।

२६६९. ग्रह फल..... । पत्र सं० ६ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०२२ । अ भण्डार ।

२६७०. ग्रहलाघव—गणेश देवज्ञ । पत्र सं० ४ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४४ । अ भण्डार ।

२६७८. चन्द्रनाडीसूर्यनाडीकवच.....। पत्र सं० ५-२३। प्रा० १०×४३ इंच। भाषा-संस्कृत।

२० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० १६८। छ भण्डार।

विशेष—इसके प्रागे पंचमत्त प्रमाण लक्षण भी है।

२६७९. चमत्कारचिन्तामणि.....। पत्र सं० २-९। प्रा० १०×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-

ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल सं० ×। १८१८ फागुण बुदी ५। पूर्ण। वै० सं० ९३२। अ भण्डार।

२६८०. चमत्कारचिन्तामणि.....। पत्र सं० २६। प्रा० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-

ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १७३०। ट भण्डार।

२६८१. छायापुरुषलक्षण.....। पत्र सं० २। प्रा० ११×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-

सामुद्रिक जास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १४४। छ भण्डार।

विशेष—नीलिधराम ने प्रतिलिपि की थी।

२६८२. जन्मपत्रीग्रहविचार.....। पत्र सं० १। प्रा० १२×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-

ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० २२१३। अ भण्डार।

२६८३. जन्मपत्रीविचार.....। पत्र सं० ३। प्रा० १२×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष

२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ६१०। अ भण्डार।

२६८४. जन्मप्रदीप—रोमकाचार्य। पत्र सं० २-२०। प्रा० १२×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-

ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल सं० १८३१। अपूर्ण। वै० सं० १०४८। अ भण्डार।

विशेष—शंकरभट्ट ने प्रतिलिपि की थी।

२६८५. जन्मफल.....। पत्र सं० १। प्रा० ११३×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष।

२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० २०२४। अ भण्डार।

२६८६. जातककर्मपद्धति..... श्रीपति। पत्र सं० १४। प्रा० ११×४३ इंच। भाषा-संस्कृत।

विषय-ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल सं० १६३८ वैशाख सुदी १। पूर्ण। वै० सं० ९००। अ भण्डार।

२६८७. जातकपद्धति—केशव। पत्र सं० १०। प्रा० ११×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष

२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० २१७। ज भण्डार।

२६८८. जातकपद्धति.....। पत्र सं० २६। प्रा० ८×६३। भाषा-संस्कृत। २० काल ×। ले०

काल ×। अपूर्ण। वै० सं० १७४९। ट भण्डार।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है।

२६८६. ज्ञातकाभरण—द्वैषज्ञानद्विराज । पत्र सं० ४३ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १७३६ भाद्रवा मुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ८६७ । अ भण्डार ।

विशेष—नागपुर मे पं० मुखकुशलगरि ने प्रतिलिपि की थी ।

२६६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०० । ले० काल सं० १८४० कार्तिक मुदी ६ । वे० सं० १५७ ।

अ भण्डार ।

विशेष—भट्ट गंगाधर ने नागपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

२६६१. ज्ञातकालंकार..... । पत्र सं० १ से ११ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अ पूर्ण । वे० सं० १७४५ । ट भण्डार ।

२६६२. ज्योतिषरत्नमाला..... । पत्र सं० ६ से २४ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अ पूर्ण । वे० सं० १६८३ । अ भण्डार ।

२६६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० १५४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२६६४. ज्योतिषमणिमाला..... । पत्र सं० ५ से २७ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२०५ । अ भण्डार ।

२६६५. ज्योतिषफलप्रथ..... । पत्र सं० ६ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४ । अ भण्डार ।

२६६६. ज्योतिषसारभाषा—कृपाराम । पत्र सं० ३ से १३ । आ० ६३×६ इंच । भाषा—हिन्दी

(पद्य) । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८४१ कार्तिक मुदी १२ । अ पूर्ण । वे० सं० १५१३ ।

अ भण्डार ।

विशेष—फतेराम वैद्य ने नोनिधराम बज की पुस्तक से लिखा ।

आदि भाग—( पत्र ३ पर )

अथ केदारिया त्रिकोण घर को भेद—

केंदरियो चौथो भवन सप्तम दसमो जान ।

पंचम अरु नोमो भवन येह त्रिकोण बलान ॥६॥

तीजो षसटम ग्यारमो अरु दसमो वर लेखि ।

इन को उपचै कहत है सबै ग्रंथ में देखि ॥७॥

प्रन्तिम—

घरष लग्यो जा घस में सोई दिन चित धारि ।

वा दिन उतनी घडी जु पल बीते लग्न विचारि ॥४०॥

लग्न लिले ते गिरह जो जा घर बैठो भाय ।

ता घर के फल सुफल को कीजे मित बनाय ॥४१॥

इति श्री कवि कृपाराम कृत भाषा ज्योतिषसार संपूर्ण ।

२६६७. ज्योतिषसारलघुचन्द्रिका—काशीनाथ । पत्र सं० ६३ । प्रा० ६३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८६३ पौष सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ६३ । अ भण्डार ।

२६६८. ज्योतिषसारसूत्रटिप्पण—नारचन्द्र । पत्र सं० १६ । प्रा० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८२ । अ भण्डार ।

विशेष—मूलग्रन्थकर्ता सागरचन्द्र है ।

२६६९. ज्योतिषशास्त्र..... । पत्र सं० ११ । प्रा० ५×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०१ । अ भण्डार ।

३०००. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३३ । ले० काल × । वे० सं० ५२१ । अ भण्डार ।

३००१. ज्योतिषशास्त्र..... । पत्र सं० ५ । प्रा० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८४ । ट भण्डार ।

३००२. ज्योतिषशास्त्र..... । पत्र सं० ५८ । प्रा० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १७६८ ज्येष्ठ सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० १११५ । अ भण्डार ।

विशेष—ज्योतिष विषय का संग्रह ग्रन्थ है ।

प्रारम्भ मे कुछ व्यक्तियों के जन्म टिप्पण दिये गये है इनकी संख्या २२ है । इनमे मुख्यरूप से निम्न नाम तथा उनके जन्म समय उल्लेखनीय है—

|   |                            |
|---|----------------------------|
| महाराजा बिशनसिंह के पुत्र महाराजा जयसिंह    | जन्म सं० १७४५ मंगसिर       |
| महाराजा विधानसिंह के द्वितीय पुत्र विजयसिंह | जन्म सं० १७४७ चैत्र सुदी ६ |
| महाराजा सवाई जयसिंह की राणी गौडि के पुत्र   | सं० १७६६                   |
| रामचन्द्र ( जन्म नाम भ्रूकराम )             | सं० १७१५ फागुण सुदी २      |
| दौलतरामजी ( जन्म नाम बेगराज )               | सं० १७४६ भाषाठ बुदी १४     |

३००३. ताजिकसमुच्चय..... पत्र सं० १५। आ० ११×४३ इच्च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल सं० १८५६। पूर्ण। वै० सं० २५५। अ भण्डार

विशेष—बडा नरायने मे श्री पार्वनाथ चैत्यालय मे जीवणराम ने प्रतिलिपि की थी।

३००४ तात्कालिकचन्द्रशुभाशुभफल..... पत्र सं० ३। आ० १०<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इच्च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १२२। अ भण्डार।

३००५ त्रिपुरबंधमुहूर्त..... पत्र सं० १। आ० ११×५ इच्च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ११८८। अ भण्डार।

३००६. त्रैलोक्यप्रकाश..... पत्र सं० १६। आ० ११×५ इच्च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ६१२। अ भण्डार।

विशेष—१ से ६ तक दूसरी प्रति के पत्र है। २ से १४ तक वाली प्रति प्राचीन है। दो प्रतियो का सम्मिश्रण है।

३००७. दशोठनमुहूर्त..... पत्र सं० ३। आ० ७<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×४ इच्च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १७२५। अ भण्डार।

३००८. नक्षत्रविचार..... पत्र सं० ११। आ० ८<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×४ इच्च। भाषा—हिन्दी। विषय—ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल सं० १८६८। पूर्ण। वै० सं० २७६। अ भण्डार।

विशेष—स्त्रीक आदि विचार भी दिये हुये है।

निम्नलिखित रचनाये और है—

सज्जनप्रकाश दोहा—

कवि ठाकुर हिन्दी [ १० वविस ]

मित्रविषय के दोहे—

हिन्दी [ ४४ दोहे है ]

रक्तगुञ्जाकल्प—

हिन्दी [ ले० काल सं० १६६७ ]

विशेष—लाल चिरमी का गेठन बताया गया है जिसके साथ लेने से क्या असर होता है इसका वर्णन ३६ दोहां मे किया गया है।

३००९. नक्षत्रवैयपीडाज्ञान..... पत्र सं० ६। आ० १०<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इच्च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। २० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ८६४। अ भण्डार।

३०१०. नक्षत्रसत्र..... पत्र सं० ३ से २४। आ० ६×३<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इच्च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल सं० १८०१ मंगलिर मुदी ८। अपूर्ण। वै० सं० १७३६। अ भण्डार

३०११. नरपतिजयचर्या—नरपति । पत्र सं० १४८ । आ० १२३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल सं० १५२३ चैत्र सुदी १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४६ । अ भण्डार ।

विशेष—४ से १२ तक पत्र नहीं है ।

३०१२. नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र—नारचन्द्र । पत्र सं० २६ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८१० मंगसिर सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १७२ । अ भण्डार ।

३०१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० ३४५ । अ भण्डार ।

३०१४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १८६५ फागुण सुदी ३ । वे० सं० ६५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रत्येक पंक्ति के नीचे अर्ध लिखा हुआ है ।

३०१५. निमित्तज्ञान ( भद्रबाहु संहिता )—भद्रबाहु । पत्र सं० ७७ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७ । अ भण्डार ।

३०१६. निषेकाध्यायवृत्ति ..... । पत्र सं० १८ । आ० ८×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४८ । ट भण्डार ।

विशेष—१८ से आगे पत्र नहीं है ।

३०१७. नीलकंठनाजिक—नीलकंठ । पत्र सं० १४ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०५८ । अ भण्डार ।

३०१८. पञ्चांगप्रबोध..... । पत्र सं० १० । आ० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७३५ । ट भण्डार ।

३०१९. पंचांग—चण्डू । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न वर्षों के पचांग है ।

संवत् १८२६, ५२, ५४, ५५, ५६, ५८, ६१, ६२, ६५, ७१, ७२, ७३, ७४, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८३, ८७, ८८ ।

३०२०. पंचांग..... । पत्र सं० १३ । आ० ७३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १६२७ । पूर्ण । वे० सं० २४७ । अ भण्डार ।

३०२१. पंचांगसाधन—गणेश ( केशवपुत्र ) । पत्र सं० ५२ । आ० ६×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८८२ । वे० सं० १७३१ । ट भण्डार ।

३०२२. पल्यविचार..... पत्र सं० ६ । आ० ६३×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—शकुन शास्त्र ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५ । अ भण्डार ।

३०२३. पल्यविचार..... पत्र सं० २ । आ० ६३×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—शकुनशास्त्र ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६२ । अ भण्डार ।

३०२४. पाराशरी..... पत्र सं० ३ । आ० १३×५<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३२ । अ भण्डार ।

३०२५. पाराशरीसज्जनरंजनीटीका ..... पत्र सं० २३ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८३६ आसोज सुदी २ । पूर्ण वे० सं० ६३३ । अ भण्डार ।

३०२६. पाराशरी—गर्गमुनि । पत्र सं० ७ । आ० १०<sup>३</sup>×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त  
शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १८७१ । पूर्ण । वे० सं० ६२५ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम शकुनावली भी है ।

३०२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १७३८ । जीर्ण । वे० सं० ६७६ । अ भण्डार ।  
विशेष—श्रीधर मनोहर ने प्रतिलिपि की थी । श्रीचन्द्रमूरि रचित नेमिनाथ स्तवना भी दिया हुआ है ।

३०२८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ६२३ । अ भण्डार ।

३०२९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८१७ पौष सुदी १ । वे० सं० ११८ । छ  
भण्डार ।

विशेष—निवासपुरी ( सागानेर ) में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में मन्दाईशम के शिष्य नोनगामन न प्रतिनिर्मा  
की थी ।

३०३०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ११८ । छ भण्डार ।

३०३१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८६६ वैशाख सुदी १२ । वे० सं० १५८ । छ  
भण्डार ।

विशेष—दयाचन्द गर्ग ने प्रतिलिपि की थी ।

३०३२. पाराशरी—ज्ञानभास्कर । पत्र सं० ५ । आ० ६×५<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
निमित्त शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२० । च भण्डार ।

३०३३. पाराशरी..... पत्र सं० ११ । आ० ६×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्तशास्त्र ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४६ । अ भण्डार ।

३०३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७७५ फागुण सुदी १० । वे० सं० २०१६ । अ  
भण्डार ।

विशेष—पांडे दयाराम सोनी ने आमेर में मल्लिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतियां ( वे० सं० १०७१, १०८८, ७६८ ) स्व भण्डार मे १ प्रति ( वे० सं० १०८ ) छ भण्डार मे ३ प्रतियां (वे० सं० ११६, ११४, ११४) ट भण्डार मे १ प्रति ( वे० सं० १८२४ ) धीर हैं ।

३०३५. पाशाकेवली..... पत्र सं० ५ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी विषय—निमित्तज्ञान ।

१० काल × । ले० काल सं० १८४१ । पूर्ण । वे० सं० ३६५ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० रतनचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३०३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २५७ । ज भण्डार ।

३०३७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ११६ । व्य भण्डार ।

३०३८. पाशाकेवली..... पत्र सं० १ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—निमित्त शास्त्र ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५६ । अ भण्डार ।

३०३९. पाशाकेवली..... पत्र सं० १३ । आ० ८३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—निमित्त

शास्त्र । १० काल × । ले० काल सं० १८५० । अपूर्ण । वे० सं० ११८ । छ भण्डार ।

विशेष—विश्वनाथ ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी । प्रथम पत्र नहीं है ।

३०४०. पुरश्चरणविधि..... पत्र सं० ४ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । पत्र भोग गये है जिसमे कई जगह पढा नहीं जा सकता ।

३०४१. प्रश्नचूडामणि..... पत्र सं० १३ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६६ । अ भण्डार ।

३०४२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८०८ आमोज मुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं०

१८५ । छ भण्डार ।

विशेष—तीसरा पत्र नहीं है विजैराम अजमेरा चाटसू वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

३०४३. प्रश्नविद्या..... पत्र सं० २ से ५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३३ । छ भण्डार ।

३०४४. प्रश्नविनोद .. . पत्र सं० १६ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

१० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८४ । छ भण्डार ।

३०४५. प्रश्नमतोरमा—गर्ग । पत्र सं० ३ । आ० १३×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

१० काल × । ले० काल सं० १६२८ भादवा मुदी ७ । वे० सं० १७४१ । ट भण्डार ।



३०४६. प्रश्नमाला.....। पत्र सं० १०। मा० ६×५३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-ज्योतिष। १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०६५। अ भण्डार।

३०४७. प्रश्नसुगनावलिरमल.....। पत्र सं० ४। मा० ६३×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-ज्योतिष। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४६। अ भण्डार।

३०४८. प्रश्नावलि.....। पत्र सं० ७। मा० ६×३३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय ज्योतिष। १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८१७। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है।

३०४९. प्रश्नसार.....। पत्र सं० १९। मा० १२<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-शकुन शास्त्र। १० काल ×। ले० काल सं० १९२९ फायुण बुदी १४। वे० सं० ३३६। ज भण्डार।

३०५०. प्रश्नसार—हयग्रीव। पत्र सं० १२। मा० ११×५<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-शकुन शास्त्र। १० काल ×। ले० काल सं० १९२९। वे० सं० ३३३। ज भण्डार।

विशेष—पत्रो पर कोष्ठक बने हैं जिन पर अक्षर लिखे हुये है उनके अनुसार शुभाशुभ फल निकलता है।

३०५१. प्रश्नोत्तरमाणिक्यमाला—संग्रहकर्त्ता ज्ञानसागर। पत्र सं० २७। मा० १२×५<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। १० काल ×। ले० काल सं० १८६०। पूर्ण। वे० सं० २६१। ख भण्डार।

३०५२. प्रति सं० २। पत्र सं० ३७। ले० काल सं० १८६१ वेत्र बुदी १०। अपूर्ण। वे० सं० ११०।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इति प्रश्नोत्तर माणिक्यमाला महाग्रन्थे भट्टारक श्री चरणारविन्द मधुकरोपमा ब्र० ज्ञानसागर संग्रहीते श्री जिनमाश्रित प्रथमोपकारः ॥ प्रथम पत्र नहीं है।

३०५३. प्रश्नोत्तरमाला.....। पत्र सं० २ से २२। मा० ७<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-ज्योतिष। १० काल ×। ले० काल सं० १८६४। अपूर्ण। वे० सं० २०६८। अ भण्डार।

विशेष—श्री बलदेव बालाहेदी वाले ने बाबा बालमुकुन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३०५४. प्रति सं० २। पत्र सं० ३६। ले० काल सं० १८१७ आसोग मुदी ५। वे० सं० ११४। ख भण्डार।

३०५५. भवानीवाक्य.....। पत्र सं० ५। मा० ६×५<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-ज्योतिष। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२८२। अ भण्डार।

विशेष—सं० १६०५ से १६६६ तक के प्रतिवर्ष का अविद्य फल दिया हुआ है।

३०५६. भङ्गली..... पत्र सं० ११ । प्रा० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—ज्योतिष । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४० । छ भण्डार ।

विशेष—मेघ गर्जना, बरघना तथा बिजली आदि चमकने से वर्ष फल देखने सम्बन्धी विचार दिये हुये हैं ।

३०५७. भाषवती—पद्मनाभ । पत्र सं० ९ । प्रा० ११×३३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६४ । च भण्डार ।

३०५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० २६५ । च भण्डार ।

३०५९. भुवनदीपिका..... पत्र सं० २२ । प्रा० ७३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । १० काल × । ले० काल सं० १९१५ । पूर्ण । वे० सं० २४१ । ज भण्डार ।

३०६०. भुवनदीपक—पद्मप्रभसूरि । पत्र सं० ५८ । प्रा० १०३×४५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८९५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३०६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८५६ फागुण सुदी १० । वे० सं० ९१२ । अ भण्डार ।

विशेष—शुभानन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० २६६ । च भण्डार ।

विशेष—पत्र १७ में आगे कोई ग्रन्थ ग्रन्थ है जो अपूर्ण है ।

३०६३. भृगुमंडिता..... पत्र सं० २० । प्रा० ११×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

३०६४. मुहूर्त्तचिन्तामणि..... पत्र सं० १६ । प्रा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । १० काल × । ले० काल सं० १८८६ । अपूर्ण । वे० सं० १४७ । ख भण्डार ।

३०६५. मुहूर्त्तमुक्तावली..... पत्र सं० ९ । प्रा० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । १० काल × । ले० काल सं० १८१९ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १३९४ । अ भण्डार ।

३०६६. मुहूर्त्तमुक्तावली—परमहंस परिव्राजकाचार्य । पत्र सं० ६ । प्रा० ९३×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०१२ । अ भण्डार ।

विशेष—सब कार्यों के मुहूर्त्त का विवरण है ।

३०६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८७१ वैशाख बुदी १ । वे० सं० १४८ । ख भण्डार ।

३०६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १७८२ मार्गशीर्ष बुदी ३ । ज भण्डार ।

विशेष—सथाणा नगर में मुनि चोखचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६९. मुहूर्त्तमुक्तावली..... । पत्र सं० १५ से २६ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—हिन्दी, संस्कृत ।

विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४९ । ख भण्डार ।

३०७०. मुहूर्त्तमुक्तावली .. ... । पत्र सं० ६ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल सं० १८१६ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १३६४ । अ भण्डार ।

३०७१. मुहूर्त्तदीपक—महादेव । पत्र सं० ८ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल सं० १७६७ वैशाख बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६१४ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० हूंगरसी के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

३०७२. मुहूर्त्तसंग्रह..... । पत्र सं० २२ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५० । ख भण्डार ।

३०७३. मेघमाला..... । पत्र सं० २ से १८ । आ० १०<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८९६ । अ भण्डार ।

विशेष—बर्षा आने के लक्षणों एवं कारणों पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है । श्लोक सं० ३४९ है ।

३०७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० ६१५ । अ भण्डार ।

३०७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७७७ । ट भण्डार ।

३०७६. योगफल..... । पत्र सं० १९ । आ० ६३×३<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २८३ । च भण्डार ।

३०७७. रत्नदीपक—गणपति । पत्र सं० २३ । आ० १२×५ उंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल सं० १८२८ । पूर्ण । वे० सं० १६० । ख भण्डार ।

३०७८. रत्नदीपक .. ... । पत्र सं० ५ । आ० १२×५<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २०

काल × । ले० काल सं० १८१० । पूर्ण । वे० सं० ६११ । अ भण्डार ।

विशेष—जन्मपत्री विचार भी है ।

३०७९. रमलशास्त्र—पं० चिंतामणि । पत्र सं० १५ । आ० ८×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५४ । छ भण्डार ।

३०८०. रमलशास्त्र..... । पत्र सं० १६ । आ० ९×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—निमित्त शास्त्र

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३२ । व्य भण्डार ।

३०८१. रमलज्ञान ..... पत्र सं० ५ । प्रा० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-निमित्तशास्त्र ।  
२० काल × । ले० काल सं० १८६६ । वे० सं० ११८ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रादिनाथ चैत्यालय में आचार्य रतनकीर्ति के प्रशिष्य सवाईराम के शिष्य नोनदराम ने प्रतिलिपि की थी ।

३०८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ४४ । ले० काल सं० १८७८ आषाढ बुदी ३ । अपूर्णा । वे० सं० १५६४ । ट मण्डार ।

३०८३. राजादिकल्प ..... पत्र सं० ४ । प्रा० ६३×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८२१ । पूर्णा । वे० सं० १६२ । ख मण्डार ।

३०८४. राहुकल्प ..... पत्र सं० ८ । प्रा० ६३×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८०३ ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्णा । वे० सं० ६६६ । च मण्डार ।

३०८५. रुद्रज्ञान ..... पत्र सं० १ । प्रा० ६३×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १७५७ चैत्र । पूर्णा । वे० सं० २११६ । अ मण्डार ।

विशेष—देवश्याशाम में लालसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

३०८६. लग्नचन्द्रिकाभाषा ..... पत्र सं० ८ । प्रा० ८×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ३४८ । म मण्डार ।

३०८७. लग्नशास्त्र—वर्द्धमानसूरि । पत्र सं० ३ । प्रा० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० २१६ । ज मण्डार ।

३०८८. लघुजातक—भट्टोत्पल । पत्र सं० १७ । प्रा० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १६३ । व मण्डार ।

३०८९. वर्षबोध ..... पत्र सं० ५० । प्रा० १०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ८६३ । अ मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ पत्र नहीं है । वर्षकाल निकालने की विधि दी हुई है ।

३०९०. विवाहशोधन ..... पत्र सं० २ । प्रा० ११×१ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० २१६२ । अ मण्डार ।

३०९१. वृहज्जातक—भट्टोत्पल । पत्र सं० ४ । प्रा० १०½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० १८०२ । ट मण्डार ।

विशेष—भट्टारक महेंद्रकीर्ति के शिष्य भारभल्ल ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६२. षट्पंचासिका—वराहमिह्वर । पत्र सं० ६ । ग्रा० ११×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ । पूर्ण । वै० सं० ७३६ । छ्म भण्डार ।

३०६३. षट्पंचासिकावृत्ति—भट्टोत्पल । पत्र सं० २२ । ग्रा० १२×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १७८८ । अपूर्ण । वै० सं० ६४४ । छ्म भण्डार ।

विशेष—हेमराज मिश्र ने तथा साहू पूरगमन ने प्रतिलिपि की थी । इसमें १, २, ८, ११ पत्र नहीं हैं ।

३०६४. शकुनविचार ... । पत्र सं० ५ । ग्रा० ६३×४३ इच्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—शकुनशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १४८ । छ्म भण्डार ।

३०६५. शकुनावली ... । पत्र सं० २ । ग्रा० ११×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६५८ । छ्म भण्डार ।

विशेष—५२ अक्षरो का यंत्र दिया हुआ है ।

३०६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८६६ । वै० सं० १०२० । छ्म भण्डार ।

विशेष—पं० सदासुखराम ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६७. शकुनावली—गर्ग । पत्र सं० २ ने ५ । ग्रा० १२×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २०५४ । छ्म भण्डार ।

विशेष—इसका नाम पाशाकेवली भी है ।

३०६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वै० सं० ११६ । छ्म भण्डार ।

विशेष—अमरचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८१३ मंगिर मुदी ११ । अपूर्ण । वै० सं० २७६ । छ्म भण्डार ।

३१००. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ ने ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २०६८ । छ्म भण्डार ।

३१०१. शकुनावली—अथजद्व । पत्र सं० ७ । ग्रा० ११×५ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—शकुनशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १८६२ सावन मुदी ७ । पूर्ण । वै० सं० २५८ । छ्म भण्डार ।

३१०२. शकुनावली ... । पत्र सं० १३ । ग्रा० ८३×४ इच्च । भाषा—पुरानी हिन्दी । विषय—शकुनशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ११४ । छ्म भण्डार ।

३१०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १७८१ सावन मुदी १४ । वै० सं० ११४ । छ्म भण्डार ।

विशेष—रामचन्द्र ने उदयपुर मे राणा संग्रामसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि की थी । २० कमलाकाश चक्र हैं जिनमे २० नाम विये हुये हैं । पत्र ५ से आगे प्रथमो का फल दिया हुआ है ।

३१०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वै० सं० ३४० । अ भण्डार

३१०५. शकुनावली ..... । पत्र सं० ५ से ८ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८६० । अपूर्ण । वै० सं० १२५८ । अ भण्डार ।

३१०६. शकुनावली..... । पत्र सं० २ । आ० १२×५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—शकुनाशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १८०८ आसोज बुदी ८ । पूर्ण । वै० सं० १६६६ । अ भण्डार ।

विशेष—पातिशाह के नाम पर रमलशास्त्र है ।

३१०७. शनिश्चरदृष्टिविचार..... । पत्र सं० १ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काव × । पूर्ण । वै० सं० १८४६ । अ भण्डार

विशेष—द्वादश राशिचक्र में से शनिश्चर दृष्टि विचार है ।

३१०८. शीघ्रबोध—काशीनाथ । पत्र सं० ११ से ३७ । आ० ८३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १६४३ । अ भण्डार ।

३१०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८३० । वै० सं० १८६ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० माणिकचन्द्र ने छोडीग्राम मे प्रतिलिपि की थी ।

३११०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८४८ आसोज सुदी ६ । वै० सं० १३८ । अ भण्डार ।

विशेष—संपतिराम खिन्दूका ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३१११. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७१ । ले० काल सं० १८६८ आषाढ बुदी १४ । वै० सं० २५५ । अ भण्डार ।

विशेष—आ० रत्नकीर्ति के शिष्य पं० सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी ।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार में ४ प्रतियां ( वै० सं० ६०४, १०५६, १५५१, २२०० ) अ भण्डार मे १ प्रति ( वै० सं० १८७ ) अ, अ तथा ट भण्डार मे एक एक प्रति ( वै० सं० १३८, १६२ तथा २११६ ) और हैं ।

३११२. शुभाशुभयोग ..... । पत्र सं० ७ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८७५ पौष सुदी १० । पूर्ण । वै० सं० १८८ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० हीरालाल ने जोबनेर मे प्रतिलिपि की थी ।

३११३. संक्रांतिफल..... । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २०१ । अ भण्डार ।

३११४. संक्रांतिकल.....। पत्र सं० १६। आ० ६४×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।  
२० काल ×। ले० काल सं० १६०१ भाद्रवा बुदी ११। वै० सं० २१३। ज भण्डार

३११५. संक्रांतिकर्ण.....। पत्र सं० २। आ० ६×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।  
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १६४६। अ भण्डार

३११६. समरसार—रामवाजपेय। पत्र सं० १८। आ० १३×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—  
ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल सं० १७१३। पूर्ण। वै० सं० १७३२। ट भण्डार

विशेष—योगिनोपुर ( विल्ली ) में प्रतिनिधि हुई। स्वर शास्त्र में लिया हुआ है।

३११७. संवत्सरी विचार.....। पत्र सं० ८। आ० ६×६३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—  
ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० २८६। झ भण्डार

विशेष—सं० १६५० से सं० २००० तक का वर्षफल है।

३११८. सामुद्रिकलक्षण.....। पत्र सं० १८। आ० ६×८ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—निमित्त  
शास्त्र। स्त्री पुरुषों के ग्रंथों के शुभाशुभ लक्षण आदि दिये हैं। २० काल ×। ले० काल सं० १५६८ पीप सुदी १२।  
पूर्ण। वै० सं० २८१। अ भण्डार

३११९. सामुद्रिकविचार.....। पत्र सं० १४। आ० ८३×४६ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—निमित्त।  
शान्त्र। २० काल ×। ले० काल सं० १७६१ पीप बुदी ४। पूर्ण। वै० सं० ६८। ज भण्डार।

३१२०. सामुद्रिकशास्त्र—श्रीनिधिसमुद्र। पत्र सं० ११। आ० १२×४३ इंच। भाषा—संस्कृत।  
विषय—निमित्त। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ११६। छ भण्डार।

विशेष—अत में हिन्दी में १३ शृङ्गार रस के दोहे ३ तथा स्त्री पुरुषों के ग्रंथों के लक्षण दिये हैं।

३१२१. सामुद्रिकशास्त्र.....। पत्र सं० ९। आ० १४×४ इंच। भाषा—प्राकृत। विषय—निमित्त।  
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ७८८। अ भण्डार।

विशेष—शुद्ध ८ तक संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं।

३१२२. सामुद्रिकशास्त्र.....। पत्र सं० ४१। आ० ८३×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—निमित्त।  
२० काल ×। ले० काल सं० १८२७ ज्येष्ठ सुदी १०। अपूर्णा। वै० सं० ११०६। अ भण्डार।

विशेष—स्वामी चेतनदास ने गुमानोराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। २, ३, ४ पत्र नहीं हैं।

३१२३. प्रति सं० २। पत्र सं० २३। ले० काल सं० १७६० फागुन बुदी ११। अपूर्णा। वै० सं०  
१४५। छ भण्डार।

विशेष—बीच के कई पत्र नहीं हैं।

३१२४. सामुद्रिकशास्त्र ... । पत्र सं० ८ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त ।

२० काल × । ले० काल सं० १८८० । पूर्ण । वै० सं० ८६२ । अ भण्डार ।

३१२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ११४७ । अ भण्डार ।

३१२६. सामुद्रिकशास्त्र ... । पत्र सं० १४ । आ० ८×६ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—निमित्त ।

२० काल × । ले० काल सं० १६०८ ग्रामोज बुदी ८ । पूर्ण । वै० सं० २७७ । क भण्डार ।

३१२७. सारणी ... । पत्र सं० ४ मे १३४ । आ० १२×४३ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—

ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १७१६ भादवा बुदी ८ । अपूर्ण । वै० सं० ३६३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ अपूर्ण प्रतियाँ ( वै० सं० ३६४, ३६५, ३६६, ३६७ ) भी हैं ।

३१२८. सारणी ... । पत्र सं० १ । आ० ११×३३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २०२५ । अ भण्डार ।

३१२९. सूर्यगमनविधि ... । पत्र सं० ५ । आ० ११३×४० इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २०५६ । अ भण्डार ।

विशेष—जैन ग्रन्थानुसार सूर्यचन्द्रगमन विधि दी हुई है । केवल गणित भाग दिया है ।

३१३०. सोमउत्पत्ति ... । पत्र सं० २ । आ० ८३×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २०

काल × । ले० काल सं० १८०३ । पूर्ण । वै० सं० १३८६ । अ भण्डार ।

३१३१. स्वप्नविचार ... । पत्र सं० १ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—निमित्तशास्त्र ।

२० काल × । ले० काल सं० १८१० । पूर्ण । वै० सं० ६०६ । अ भण्डार ।

३१३२. स्वप्नाध्याय ... । पत्र सं० ४ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त

शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २१४७ । अ भण्डार ।

३१३३. स्वप्नावली—द्वयनन्द । पत्र सं० ३ । आ० १२×७३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त

शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १६५८ भादवा बुदी १३ । पूर्ण । वै० सं० ८३६ । क भण्डार ।

३१३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वै० सं० ८३७ । क भण्डार ।

३१३५. स्वप्नावलि ... । पत्र सं० २ । आ० १०×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्तशास्त्र ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ८३५ । क भण्डार ।

३१३६. होराज्ञान ... । पत्र सं० १३ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । २० काल × । ले०

काल × । अपूर्ण । वै० सं० २०४५ । अ भण्डार ।



## विषय-आयुर्वेद

३१३७. अजीर्णरसमञ्जरी .....। पत्र सं० ५। भा० ११३×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-  
आयुर्वेद। १० काल ×। ले० काल सं० १७८८। पूर्ण। वे० सं० १०५१। अ भण्डार।

३१३८. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० १३६। छ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

३१३९. अजीर्णमञ्जरी—काशीराज। पत्र सं० ५। भा० १०३×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-  
आयुर्वेद। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८६। छ भण्डार।

३१४०. अद्भुतसागर .....। पत्र सं० ४०। भा० ११३×४३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद।  
१० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३४०। अ भण्डार।

३१४१. अमृतसागर—महाराजा सवाई प्रतापसिंह। पत्र सं० ११७ में १६४। भा० १२३×६३  
इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २९। छ भण्डार।

विशेष—संस्कृत ग्रन्थ के आधार पर है।

३१४२. प्रति सं० २। पत्र सं० ५३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३२। छ भण्डार।

विशेष—संस्कृत मूल भी दिया है।

छ भण्डार में २ प्रतिया ( वे० सं० ३०, ३१ ) अपूर्ण और हैं।

३१४३. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४ में १५०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०३६। ट भण्डार।

३१४४. अर्थप्रकाश—लंकानाथ। पत्र सं० ४७। भा० १०३×८ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-  
आयुर्वेद। १० काल ×। ले० काल सं० १९८४ सावग बुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ८८। ज भण्डार।

विशेष—आयुर्वेद विषयक ग्रन्थ है। प्रत्येक विषय को शतक में विभक्त किया गया है।

३१४५. आत्रेयवैद्यक—आत्रेयश्रुति। पत्र सं० ४२। भा० १०×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-  
आयुर्वेद। १० काल ×। ले० काल सं० १८०७ भादवा बुदी १४। वे० सं० २३०। छ भण्डार।

३१४६. आयुर्वेदिक नुस्खों का संग्रह .....। पत्र सं० १९। भा० १०×४३ इंच। भाषा-हिन्दी।  
विषय-आयुर्वेद। १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३०। छ भण्डार।

३१४७. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० ६३। ज भण्डार।

३१४८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ से ६२ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० २१८१ । ट अण्डार ।

विशेष—६२ से आगे के भी पत्र नहीं हैं ।

३१४९. आयुर्वेदिक नुस्खे..... । पत्र सं० ४ से २० । आ० ८×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

प्रायुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ६५ । क अण्डार ।

विशेष—प्रायुर्वेद सम्बन्धी कई नुस्खे दिये हैं ।

३१५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । वै० सं० २५९ । ख अण्डार ।

विशेष—एक पत्र में एक ही नुस्खा है ।

इसी अण्डार में ३ प्रतियाँ ( वै० सं० २६०, २६६, २६६ ) भी हैं ।

३१५१. आयुर्वेदिकग्रंथ..... । पत्र सं० १६ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—प्रायुर्वेद ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० २०७६ । ट अण्डार ।

३१५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ से ३० । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० २०६६ । ट अण्डार ।

३१५३. आयुर्वेदमहोदधि—मुखदेव । पत्र सं० २४ । आ० ९३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

प्रायुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वै० सं० ३५५ । ख अण्डार ।

३१५४. कक्षपुट—सिद्धनागार्जुन । पत्र सं० ४२ । आ० १४×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

प्रायुर्वेद एवं मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वै० सं० १३ । घ अण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का कुछ भाग फटा हुआ है ।

३१५५. कल्पस्थान ( कल्पव्याख्या )..... । पत्र सं० २१ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—प्रायुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १७०२ । पूर्णा । वै० सं० १८९७ । ट अण्डार ।

विशेष—सुश्रुतसंहिता का एक भाग है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति सुश्रुतीयायां संहितायां कल्पस्थानं समाप्तं ॥

३१५६. कालखान..... । पत्र सं० ३ से १९ । आ० १०×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—

प्रायुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० २०७८ । अ अण्डार ।

३१५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वै० सं० ३२ । ख अण्डार ।

विशेष—केवल अष्टम समुद्रेश है ।

३१५८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८४१ मंगसिर सुदी ७ । वै० सं० ३३ । ख अण्डार ।

विशेष—भिरुद् ग्राम में खेमचन्द के लिए प्रतिलिपि की गई थी । कुछ पत्रों की टीका भी दी हुई है ।

३१५६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ११८ । छ् भण्डार ।

३१६०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० १६७४ । ट भण्डार ।

३१६१. चिकित्सांजनम्—उपाध्यायविद्यापति । पत्र सं० २० । घ्रा० ६×८ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—आयुर्वेद । १० काल × । ले० काल सं० १६१५ । पूर्ण । वे० सं० ३५२ । व्य भण्डार ।

३१६२. चिकित्सासार..... । पत्र सं० ११ । घ्रा० १३×६३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८० । छ् भण्डार ।

३१६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५-३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७९ । ट भण्डार ।

३१६४. चूर्णाधिकार..... । पत्र सं० १२ । घ्रा० १३×६३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१६ । ट भण्डार ।

३१६५. उवरत्नचरण..... । पत्र सं० ४ । घ्रा० ११×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । १०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६२ । ट भण्डार ।

३१६६. उवरचिकित्सा..... । पत्र सं० ५ । घ्रा० १० $\frac{1}{2}$ ×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२३७ । अ भण्डार ।

३१६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ से ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६४ । ट भण्डार ।

३१६८. उवरतिमिरभास्कर—चामुंडराय । पत्र सं० ६४ । घ्रा० १०×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—आयुर्वेद । १० काल × । ले० काल सं० १८०६ माह मुदी १३ । वे० सं० १३०७ । अ भण्डार ।

विशेष—माधोपुर मे किशनलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३१६९. त्रिशती—शाङ्गधर । पत्र सं० ३२ । घ्रा० १० $\frac{1}{2}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

१० काल × । ले० काल × । वे० सं० ६३१ । अ भण्डार ।

३१७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १६१६ । वे० सं० २५३ । व्य भण्डार ।

विशेष—पद्य सं० ३३३ है ।

३१७१. नहनसीपाराविधि..... । पत्र सं० ३ । घ्रा० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३०६ । अ भण्डार ।

३१७२. नाडीपरीक्षा..... । पत्र सं० ६ । घ्रा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३० । छ् भण्डार ।

३१७३ निघंटु.....। पत्र सं० २ से ८८ । पत्र सं० ११×५ । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २०७७ । अ भण्डार ।

३१७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१ से ८६ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २०८४ । अ भण्डार ।

३१७५. पंचरूपपद्या.....। पत्र सं० ११ । पृ० १०×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १५५७ । अपूर्णा । वे० सं० २०८० । ट भण्डार ।

विशेष—केवल ११वां पत्र ही है । ग्रन्थ मे कुल १५८ श्लोक हैं ।

प्रशस्ति—सं० १५५७ वर्षे ज्येष्ठ बुदी ८ । देवगिरिनगरे राजा सूर्यमल्ल प्रवर्तमाने ब्र० ब्राह्मू लिखितं कर्म-धायनिमित्तं । ब्र० जालप जोषु पठनार्थं दत्तं ।

३१७६. पश्यापथ्यविचार.....। पत्र सं० ३ से ४४ । पृ० १२×५<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १६७६ । ट भण्डार ।

विशेष—श्लोको के ऊपर हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है । विषरोग पश्यापथ्य अधिकार तक है । १६ से प्रागे के पत्रो मे दीमक लग गई है ।

३१७७. पाराविधि.....। पत्र सं० १ । पृ० ६३×४<sup>३</sup> इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० २६६ । ख भण्डार ।

३१७८. भाषप्रकाश—मानमिश्र । पत्र सं० २७५ । पृ० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १८६१ बैशाख सुदी ६ । पूर्णा । वे० सं० ७३ । ज भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति श्रीमानमिश्रलटकनतनयश्रीमानमिश्रभावबिरचितो भावप्रकाशः संपूर्णः ।

प्रशस्ति—संवत् १८८१ मिति बैशाख शुक्ला ६ शुके लिखितमृषिणा फतेचन्द्रेण सवाई जयनगरमध्ये ।

३१७९. भावप्रकाश .....। पत्र सं० १६ । पृ० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० २०२२ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री जगु पंडित तनयदास पंडितकृते त्रिसप्तिकाया रसायन वा जारण समाप्त ।

३१८०. भावसंग्रह .....। पत्र सं० १० । पृ० १०<sup>३</sup>×६<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २०५६ । ट भण्डार ।

३१८१. मदनविनोद—मदनपाल । पत्र सं० १५ मे ६२ । आ० ८३×३३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १७६५ ज्येष्ठ सुदी १२ । अपूर्णा । वै० सं० १७६८ । जीर्ण । अ  
भण्डार ।

विशेष—पत्र १५ पर निम्न पुष्पिका है—

इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे अष्टादिवर्गः ।

पत्र १८ पर— यो राशो मुखतिलकः कटारमाल्लस्तेन श्रीमदनमुपेसा निर्मितेन ग्रन्थेऽस्मिन् मदनविनोदे षट्पादि पंचमवर्गः ।

लेखक प्रकृति—

ज्येष्ठ शुक्ला १२ शुदी तद्दिने लि.....शामजी विश्वकेन परोपकारार्थं । संवत् १७६५ विद्वेश्वर सविधो....

मदनपालविरचिते मदनविनोदे निघंटे प्रशस्ति वर्गश्रमुर्दशः ॥

३१८२. मंत्र व औषधि का नुरुखा..... । पत्र सं० १ । आ० १०×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २६८ । ख भण्डार ।

विशेष—तिल्ली काटने का मन्त्र भी है ।

३१८३. माधननिदान—साधव । पत्र सं० १२४ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २२६५ । अ भण्डार ।

३१८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५४ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० २००१ । ट भण्डार ।

विशेष—पं० ज्ञानमेरु कृत हिन्दी टीका सहित है ।

अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री पं० ज्ञानमेरु विनिमित्तो बालबोधसमाप्तोऽध्यायार्थो मधुकोष परमार्थः ।

पं० धनराला ऋषभचन्द रामचन्द की पुस्तक है ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे ३ प्रतियां ( वै० सं० ८०८, १३४५, १३४७ ) ख भण्डार में दो प्रतियां  
( वै० सं० १४३, १६५ ) तथा अ भण्डार मे एक प्रति ( वै० सं० ७४ ) और है ।

३१८५. मानविनोद—मानसिंह । पत्र सं० ६७ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० १४४ । ख भण्डार ।

प्रति हिन्दी टीका सहित है । ६७ वे आगे पत्र नहीं है

३१८६. सुष्ठिज्ञान—ज्योतिषाचार्य देवचन्द । पत्र सं० २ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—आयुर्वेद ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १८६१ । अ भण्डार ।

३१८७. योगचिन्तामणि—मनूसिंह । पत्र सं० १२ से ४८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१०२ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र १ से ११ तथा ४८ से आगे नहीं है ।

द्वितीय अधिकार की पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री वा. रत्नराजगिरि श्रंतेवासि मनूसिंहकृते योगचिन्तामणि बालावबोधे चूर्णाधिकारो द्वितीयः ।

३१८८. योगचिन्तामणि..... । पत्र सं० ४ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८०३ । ट भण्डार ।

३१८९. योगचिन्तामणि..... । पत्र सं० १२ से १०५ । आ० १० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १८५४ ज्येष्ठ बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० २००३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति जोर्य है । जयनगर में फतेहचन्द के पटनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

३१९०. योगचिन्तामणि..... । पत्र सं० २०० । आ० १०×४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३४६ । अ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है ।

३१९१. योगचिन्तामणिबीजक..... । पत्र सं० ५ । आ० ९ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५६ । अ भण्डार ।

३१९२. योगचिन्तामणि—उपाध्याय हर्षकीर्ति । पत्र सं० १५८ । आ० १० $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०४ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में संक्षिप्त अर्थ दिया हुआ है ।

३१९३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२८ । ले० काल × । वे० सं० २२०६ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३१९४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४१ । ले० काल सं० १७८१ । वे० सं० १६७८ । अ भण्डार ।

३१९५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५६ । ले० काल सं० १८३४ आषाढ बुदी २ । वे० सं० ८८ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है । सांगानेर में गांधो के चैत्यालय में पं० ईश्वरदास के चेले की पुस्तक में प्रतिलिपि की थी ।

३१९६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १७७९ वैशाख सुदी २ । वे० सं० ६६ । ज भण्डार ।

विशेष—मालपुरा में जीवराज वैद्य ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३१६७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०३ । ले० काल सं० १७६६ ज्येष्ठ बुदी ४ । अपूर्णा । वे० सं० ६६ ।  
ज भण्डार ।

विशेष—प्रति सटीक है । प्रथम दो पत्र नहीं है ।

३१६८. योगशात—वररुचि । पत्र सं० २२ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।  
१० काल × । ले० काल सं० १६१० श्रावण बुदी १० । पूर्णा । वे० सं० २००२ । ट भण्डार ।

विशेष—आयुर्वेद का संग्रह ग्रंथ है तथा उसकी टीका है । चंपावती ( चाटसू ) में पं० विनयचन्द्र ने व्यास  
मुनीलाल से लिखवाया था ।

३१६९. योगशातटीका..... । पत्र सं० २१ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×३ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० २०७६ । अ भण्डार ।

३२००. योगशातक..... । पत्र सं० ७ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।  
१० काल × । ले० काल सं० १६०६ । पूर्णा । वे० सं० ७२ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० विनय समुद्र ने स्वपठनार्थ प्रतिनिधि की थी । प्रति टीका सहित है ।

३२०१. योगशातक..... । पत्र सं० ७८ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ११३ । ख भण्डार ।

३२०२. रसमञ्जरी—शालिनाथ । पत्र सं० २२ । आ० १०×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
आयुर्वेद । १० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १८५६ । ट भण्डार ।

३२०३. रसमञ्जरी—शाङ्गधर । पत्र सं० २६ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
आयुर्वेद । १० काल × । ले० काल सं० १६४१ सावन बुदी ८ । पूर्णा । वे० सं० १६१ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० पद्मलाल जोषनेर निवार्मा ने जयपुर में चिन्तामणि की सन्दर्भ में शिष्य जयचन्द्र के पठ-  
नार्थ प्रतिनिधि की थी ।

३२०४. रसप्रकरणा..... । पत्र सं० ४ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । १०  
काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २०३१ । जीर्णा । ट भण्डार ।

३२०५. रसप्रकरणा..... । पत्र सं० १० । आ० ६×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।  
१० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १३६६ । अ भण्डार ।

३२०६. रामविनोद—रामचन्द्र । पत्र सं० २१६ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी पत्र ।  
विषय—आयुर्वेद । १० काल सं० १६२० । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १३४४ । अ भण्डार ।

विशेष—शाङ्गधर कृत वैद्यकसार ग्रन्थ का हिन्दी पद्यानुवाद है ।

३२०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६२ । ने० काल सं० १८५१ बैशाख सुदी ११ । वे० सं० १६३ । छ  
भण्डार ।

विशेष—जीवराजालजी के पठनार्थ भैमलाना ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३२०८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८३ । ने० काल × । वे० सं० २३० । छ भण्डार ।

३२०९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१ । ने० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १८८२ । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया अपूर्णा ( वे० सं० १६९९, २०१८, २०६२ ) और है ।

३२१०. रामायनिकशाम्भ्र ..... । पत्र सं० ५२ । आ० ५३×६३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
मायुर्वेद । १० काल > । ने० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ६६८ । च भण्डार ।

३२११. लक्ष्मणोत्सव—अमरसिंहात्मज श्री लक्ष्मण । पत्र सं० २ से ८९ । आ० ११३×५ इञ्च ।  
भाषा—संस्कृत । विषय—मायुर्वेद । १० काल × । ने० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १०८४ । अ भण्डार ।

३२१२. लङ्घनपञ्चनिर्याय..... । पत्र सं० १२ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
मायुर्वेद । १० काल > । ने० काल सं० १८२२ पीप सुदी २ । पूर्णा । वे० सं० १६६ । छ भण्डार ।

विशेष—५० जीवमलालजी पद्मालालजी के पठनार्थ लिखा गया था ।

३२१३. विपहरनविधि—संतोष कवि । पत्र सं० १२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
मायुर्वेद । १० काल सं० १७४१ । ने० काल सं० १८६६ माघ सुदी १० । पूर्णा । वे० सं० १४४ । छ भण्डार ।

सिम रिप वेद अर खंडले जेष्ठ मुकल हदाम ।

चंद्रापुरी संबन् गिनौ चंद्रापुरी मुकाम ॥२७॥

संबत यह संतोष कृत तावित कविता कौन ।

सशि मन गिर बिब विजय तादिन हम निख लीन ॥२८॥

३२१४. वैद्यकसार..... । पत्र सं० ५ से ५४ । आ० ९×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मायुर्वेद । १०  
काल > । ने० काल × । पूर्णा । वे० सं० ३३४ । च भण्डार ।

३२१५. वैद्यजीवन—लोलिम्भराज । पत्र सं० २१ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
मायुर्वेद । १० काल > । ने० काल × । पूर्णा । वे० सं० २१५७ । अ भण्डार ।

विशेष—५वां विलास तक है ।

३२१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१ से ३२ । ने० काल सं० १८३८ । वे० सं० १५७१ । अ  
भण्डार ।



३२१७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८७२ फायुण । वै० सं० १७६ । ख  
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतियां ( वै० सं० १८०, १८१ ) और है ।

३२१८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ६८१ । छ भण्डार ।

३२१९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वै० सं० २३० । छ भण्डार ।

३२२०. वैद्यजीवनग्रन्थ..... । पत्र सं० ३ में १८ । आ० १०५×४ ड० । भाषा—संस्कृत । विषय—  
आयुर्वेद । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ३३३ । च भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र भी नहीं है ।

३२२१. वैद्यजीवनटीका—रुद्रभट्ट । पत्र सं० २५ । आ० १०×५ ड० । भाषा—संस्कृत । विषय—  
आयुर्वेद । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ११६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतियां ( वै० सं० २०१६, २०१७ ) और है ।

३२२२. वैद्यमनोत्सव—नयनसुख । पत्र सं० ३२ । आ० ११×५ ड० । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।  
विषय—आयुर्वेद । १० काल सं० १६४६ आषाढ सुदी २ । ले० काल सं० १८५३ ज्येष्ठ सुदी १ । पूर्ण । वै० सं०  
१८७६ । अ भण्डार ।

३२२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८०८ । वै० सं० २०७६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ११६५ ) और है ।

३२२४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ में ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ६८० । ब भण्डार ।

३२२५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८६३ । वै० सं० १५७ । छ भण्डार ।

३२२६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६६ माघ सुदी १८ । वै० सं० २००८ । ट  
भण्डार ।

विशेष—पाटण में मुनिमुद्रत चैद्यालय में अट्टारक मुषेन्द्रकीर्ति के शिष्य पं० चम्पाराम ने स्वयं प्रतिलिपि  
की थी ।

३२२७. वैद्यवल्लभ..... । पत्र सं० १६ । आ० १०५×५ ड० । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।  
१० काल × । ले० काल सं० १६०१ । पूर्ण । वै० सं० १८७१ ।

विशेष—नेवारा में सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

३२२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वै० सं० २६७ । ख भण्डार ।

३२२६. वैद्यकसारोद्धार—संमहकृत् श्री हर्षकीर्त्तिसूरि । पत्र सं० १६७ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १७४६ आसोज बुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १८२ । ख अण्डार ।

विशेष—मानुमती नगर में श्रीगजकुशलगरि के शिष्य गरिसुन्दरकुशल ने प्रतिलिपि की थी । प्रति हिन्दी अनुवाद महित है ।

३२३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १७७३ माघ । वे० सं० १४६ । ज अण्डार ।

विशेष—प्रति का जीर्णोद्धार हुआ है ।

३२३१. वैद्यामृत—मारिक्वय भट्ट । पत्र सं० २० । आ० ६×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १६१६ । पूर्ण । वे० सं० ३५४ । ब्य अण्डार ।

विशेष—मारिक्वयभट्ट अहमदाबाद के रहने वाले थे ।

३२३२. वैद्यविनोद्... । पत्र सं० १८३ । आ० १०३×८३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३०६ । अ अण्डार ।

३२३३. वैद्यविनोद्—भट्टशंकर । पत्र सं० २०७ । आ० ८३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७२ । ख अण्डार ।

विशेष—पत्र १४० तक हिन्दी संकेत भी दिये हुये हैं ।

३२३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३१ । छ अण्डार ।

३२३५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११२ । ले० काल सं० १८७७ । वे० सं० १७३३ । ट अण्डार ।

विशेष—लेखक प्रगति—

संवत् १७५६ बैशाख मुदी ५ । वार चंद्रवासरे बर्ये शाके १६२३ पातिसाहजी नौरंगजीवजी महाराजाजी श्री जयसिंहराज्य हाकिम फोजदार खानअबुल्लाखाजी के नायबहज्जमखा स्याहीजी श्री स्याहमालमजी की तरफ मियां साहबजी अब्दुलफतेजी का राज्य श्रीमस्तु कल्याणक । सं० १८७७ शाके १७४२ प्रवर्तमाने कार्तिक १२ शुद्धारलिखितं मिश्रलालजी कस्य पुत्र रामनारायणे पठनार्थ ।

३२३६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ मे ४८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७० । ट अण्डार ।

३२३७. शाङ्गधरसंहिता—शाङ्गधर । पत्र सं० ५८ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०८५ । अ अण्डार ।

विशेष—इसी अण्डार मे ३ प्रतिमा ( वे० सं० ८०३, ११४२, १५७७ ) और है ।

३२३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७० । ले० काल × । वै० सं० १८५ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिया ( वै० सं० २७०, २७१ ) भी हैं ।

३२३९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४-४० । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २०८२ । ट भण्डार ।

३२४०. शाङ्ग धरसंहिताटीका—नाटमल्ल । पत्र सं० ४१३ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १८१२ पीप सुदी १३ । पूर्ण । वै० सं० १३१५ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम शाङ्ग धरदीपिका है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

वास्तधान्वयप्रकाश वेद्य श्रीभावसिंहामजेनाटमल्लेन विरचितायाम् शाङ्गधरदीपिकामुत्तरखण्डे नेत्रप्रसादन  
दर्माविधिं द्वाविंशोरध्यायः । प्रति मुद्रा है ।

३२४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०५ । ले० काल × । वै० सं० ७० । ज भण्डार ।

विशेष—प्रथमखण्ड तक है जिसके ७ अध्याय हैं ।

३२४२. शालिहोत्र (अश्वचिकित्सा)—नकुल पंडित । पत्र सं० ९ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—  
संस्कृत हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १७५६ । पूर्ण । वै० सं० १२३६ । अ भण्डार ।

विशेष—कालाढहरा में महात्मा कुमालसिंह के आत्मज्ञ हरिकृष्ण ने प्रतिनिधि की थी ।

३२४३. शालिहोत्र (अश्वचिकित्सा)..... । पत्र सं० १८ । आ० ७३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १७१८ आषाढ सुदी ९ । पूर्ण । जोग । वै० सं० १२८३ । अ  
भण्डार ।

३२४४. सन्तानविधि..... । पत्र सं० ३० । आ० ११-८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १९०७ । ट भण्डार ।

विशेष—सन्तान उत्पन्न होने के सम्बन्ध में कई नुस्खे हैं ।

३२४५. सन्निपातनिदान..... । पत्र सं० ८ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

२० काल । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २३० । छ भण्डार ।

३२४६. सन्निपातनिदानचिकित्सा—वाह्यदास । पत्र सं० १४ । आ० १२×५ इंच । भाषा—  
संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १८३९ पीप सुदी १२ । पूर्ण । वै० सं० २३० । छ  
भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

३२४७. सन्निपातकलिका.....। पत्र सं० ५ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
आयुर्वेद । १० काल × । ले० काल सं० १८७३ । पूर्ण । वे० सं० २८३ । अ भण्डार ।

विशेष—बीबनपुर में पं० जीवरुदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३२४८. मम्रविधि.....। पत्र सं० ७ । आ० ८३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । १०  
काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १४१७ । अ भण्डार ।

३२४९. सर्षपवरसमुच्चयदर्पण.....। पत्र सं० ४२ । आ० ९×३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
आयुर्वेद । १० काल × । ले० काल सं० १८८१ । पूर्ण । वे० सं० २२६ । अ भण्डार ।

३२५०. सारसंप्रह.....। पत्र सं० २७ से २५७ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
आयुर्वेद । १० काल × । ले० काल सं० १७८७ कार्तिक । अपूर्णा । वे० सं० ११५९ । अ भण्डार ।

विशेष—हरिदाविद ने प्रतिलिपि की थी ।

३२५१. मालोत्तरास .....। पत्र सं० ७३ । आ० ९×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद ।  
१० काल । ले० काल सं० १८६३ आसोज वृदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ७१४ । अ भण्डार ।

३२५२. सिद्धियोग.....। पत्र सं० ७ ने ४३ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।  
१० काल । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १३५७ । अ भण्डार ।

३२५३. हरडैकल्प.....। पत्र सं० ४ । आ० ५३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । १०  
काल । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१९ । अ भण्डार ।

विशेष—मालवागड़ी प्रयोग भी है । (अपूर्णा)



## विषय-छंद एवं अलङ्कार

३२५४. अमरचट्टिका..... | पत्र सं० ७५ | प्रा० ११×४<sup>३</sup> इंच | भाषा-हिन्दी पद्य | विषय-छंद  
अलङ्कार | २० काल × | ले० काल × | अपूर्ण | वे० सं० १३ | ज भण्डार ।

विशेष—चतुर्थ अधिकार तक है ।

३२५५. अलंकाररत्नाकर—दिलिपतराय बंशीधर । पत्र सं० ५१ | प्रा० ८२×५<sup>३</sup> इंच | भाषा-  
हिन्दी | विषय-अलङ्कार । २० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ३४ | ङ भण्डार ।

३२५६. अलङ्कारवृत्ति—जिनवर्द्धन सूरि । पत्र सं० २७ | प्रा० १२×८ इंच | भाषा-संस्कृत ।  
विषय-रस अलङ्कार । २० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ३४ | क भण्डार ।

३२५७. अलङ्कारटीका..... | पत्र सं० १४ | प्रा० ११×४ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-अलङ्कार ।  
२० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० १६८१ | ट भण्डार ।

३२५८. अलङ्कारशास्त्र..... | पत्र सं० ७ मे ११२ | प्रा० ११<sup>३</sup>×५ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-  
अलङ्कार । २० काल × | ले० काल × | अपूर्ण | वे० सं० २००१ | अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण शीर्ष है । बीच के पत्र भी नहीं है ।

३२५९. कविकर्पटी..... | पत्र सं० ९ | प्रा० १२×६ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-रस अलङ्कार ।  
२० काल × | ले० काल × | अपूर्ण | वे० सं० १८५० | ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका महित है ।

३२६०. कुवलयानन्द..... | पत्र सं० २० | प्रा० ११×५ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-अलङ्कार ।  
२० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० १७८१ | ट भण्डार ।

३२६१. प्रति सं० २ | पत्र सं० ५ | ले० काल × | वे० सं० १७८२ | ट भण्डार ।

३२६२. प्रति सं० ३ | पत्र सं० १० | ले० काल × | अपूर्ण | वे० सं० २०२५ | ट भण्डार ।

३२६३. कुवलयानन्द—अप्यय दीक्षित । पत्र सं० ६० | प्रा० १२×६ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-  
अलङ्कार । २० काल × | ले० काल सं० १७४३ | पूर्ण | वे० सं० ६५३ | अ भण्डार ।

विशेष—सं० १८०३ माह बुदी ५ को नैरासापर ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

३२६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० १२६ । ङ्ग अण्डार ।

विशेष—जयपुर मे महात्मा पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ०० । ले० काल सं० १६०४ बंशाख सुदी १० । वे० सं० ३१४ । ज अण्डार ।

विशेष—पं० सदाशुख के शिष्य फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १८०६ । वे० सं० ३०६ । ज अण्डार ।

३२६७. कुवलयानन्दकारिका..... । पत्र सं० ६ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अलङ्कार । २० काल × । ले० काल सं० १८१६ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २८६ । छ अण्डार ।

विशेष—पं० कृष्णदास ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । १७२ कारिकायें हैं ।

३२६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ३०६ । ज अण्डार ।

विशेष—हरदाम भट्ट की किताव है रामनारायण मिश्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६९. चन्द्रावलोक..... । पत्र सं० ११ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अलङ्कार । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२४ । अ अण्डार ।

३२७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । आ० १०×४५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अलङ्कारशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १६०६ कार्तिक सुदी ६ । वे० सं० ६१ । च अण्डार ।

विशेष—रूपचन्द्र साह ने प्रतिलिपि की थी ।

३२७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६२ । ज अण्डार ।

३२७२. छदानुशासनवृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ८ । आ० १२×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६ । अ अण्डार ।

विशेष—अन्तिम पृष्ठिका निम्न प्रकार है—

श्याचार्य श्रीहेमचन्द्रविरचिते व्यावर्गनोनाम अष्टमाऽध्याय समाप्त । समाप्तायग्रन्थः । श्री ..... भुवनकीर्ति शिष्य प्रमुख श्री ज्ञानभूषण योग्यस्य ग्रन्थः लिख्यत । मु० विनयमेरुणा ।

३२७३. छंदोशासक—हर्षकीर्ति ( चंद्रकीर्ति के शिष्य ) । पत्र सं० ७ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८१ । अ अण्डार ।

३२७४. छंदकोश—रत्नगोखर सुरि । पत्र सं० ३१ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६५ । ङ अण्डार ।

३२७५. छंदकोश.....। पत्र सं० २ मे २५ । आ० १०×४२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ६७ । च भण्डार ।

३२७६. नंदिताह्वयछंद..... । पत्र सं० ७ । आ० १०×४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—छंदशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । वै० सं० ४५७ । च भण्डार ।

३२७७. पिंगलछंदशास्त्र—माखनकवि । पत्र सं० ४६ । आ० १३×४२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—छंदशास्त्र । १० काल सं० १८६३ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ६४४ । च भण्डार ।

विशेष—४६ मे आगे पत्र नहीं है ।

आदिभाग— श्री गणेशायनमः अथ पिंगल । सर्वथा ।

मंगल श्री गुरुदेव गणेश किंगल गुपाल गिरा सरसानी ।  
वदन के पद पकड़ पावन माखन छंद विलास बखानी ॥  
कोविद वृंद वृंदनि कौ कल्पद्रुम का मधु का काम निधानी ।  
मारद ईंदु मयूष निसोतल मुन्दर मंस मुधारस बानी ॥१॥

टोडा— पिंगल सागर छंदमणि धरग वरग बहुरङ्ग ।  
रस उपमा उपमैय ते मुदर अरथ तरत ॥२॥  
नाने रच्यो विचारि के नर बानी नरहेन ।  
उदाहरण बहु रमान के वरग मुमति ममेन । ३॥  
विमल चरग भूपन कलित, बानी ललित रसान ।  
मदा मुकवि गोपाल कौ, श्री गोपाल कुपाल ॥४॥  
निन मुत माखन नाम है, उक्ति युक्ति त हीन ।  
एक समे गोपाल कवि, मासन हरिधर दीन ॥५॥  
पिंगल नाम विचारि मन, नारी बानीहि प्रकास ।  
यथा मुमति सौ कीजिये, माखन छंद विलास ॥६॥

टोहरागीत—

यह मुकवि श्री गोपाल कौ मुभ भई सासन हे जब ।  
पद जुगल वदन सुनिये उर मुमति बादी है तवे ।  
अति निम्न पिंगल सिंधु मैं मनमीन हूँ करि संचरयो ।  
मणि कादि छंद विनाम माखन कविन सो बिनती करयो ॥

दोहा—

हे कवि जन सरवज्ञ हो मति दोषन कछु देह ।  
 भूष्यो भ्रम तै हो बड़ा जहा सोधि किन लेह ॥८॥  
 संबत वसु रस लोक पर नखनह सा तिथि मास ।  
 सित वाए श्रुति दिन रच्यो माखन छंद बिलास ॥९॥

पिगल छंद में दोहा, चौबोला, छप्पय, भ्रमर दोहा, सोरठा आदि कितने ही प्रकार के छंदों का प्रयोग किया गया है । जिस छंद का लक्षण लिखा गया है उसका उसी छंद में वर्णन किया गया है । अन्तिम पत्र भी नहीं है ।

३२७८. पिगलशास्त्र—नागराज । पत्र सं० १० । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२७ । अ भण्डार ।

३२७९. पिगलशास्त्र..... । पत्र सं० ३ से २० । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५९ । अ भण्डार ।

३२८०. पिगलशास्त्र..... । पत्र सं० ४ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९६२ । अ भण्डार ।

३२८१. पिगलछंदशास्त्र ( छन्द रत्नावली )—हरिरामदास । पत्र सं० ७ । आ० १३×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—छंदशास्त्र । २० काल सं० १७९५ । ले० काल सं० १८२९ । पूर्ण । वे० सं० १८६९ । ट भण्डार ।

विशेष— संवतशर नव मुनि शशानभ नवमी गुरु मानि ।  
 ण्डिवाना दृढ रूप तहि ग्रन्थ जन्म-थल ज्यानि ॥  
 इति श्री हरिरामदास निरञ्जनी कृत छंद रत्नावली सपूर्ण ।

३२८२. पिगलप्रदीप—भट्ट लक्ष्मीनाथ । पत्र सं० ६८ । आ० ९×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—रम घलङ्कार । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१३ । अ भण्डार ।

३२८३. प्राकृतछंदकोष—रत्नशेखर । पत्र सं० ५ । आ० १३×५ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११९ । अ भण्डार ।

३२८४. प्राकृतछंदकोष—अल्लू । पत्र सं० १३ । आ० ८×५ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १९३..... पीप बुदो ९ । पूर्ण । वे० सं० ५२१ । क भण्डार ।

३२८५. प्राकृतछंदकोश..... । पत्र सं० ३ । आ० १०×५ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १७९२ आबण सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १८६२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण एवं फटी हुई है ।



३२८६. प्राकृतपिंगलशास्त्र.....। पत्र सं० २ । श्रा० ११×४<sup>३</sup> इ'च । भाषा—प्राकृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४८ । अ भण्डार ।

३२८७. भाषाभूषण—जसवंतसिंह राठौड़ । पत्र सं० १६ । श्रा० ६×६ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—अलङ्कार । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० ५७१ । अ भण्डार ।

३२८८. रघुनाथ विलास—रघुनाथ । पत्र सं० ३१ । श्रा० १०×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—रसालङ्कार । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम रसतरङ्गिणी भी है ।

३२८९. रत्नमंजूषा.....। पत्र सं० ९ । श्रा० ११<sup>३</sup>×५<sup>३</sup> इ'च । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६१६ । अ भण्डार ।

३२९०. रत्नमंजूषिका.....। पत्र सं० २७ । श्रा० १०<sup>३</sup>×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति रत्नमंजूषिकाया छंदो विचित्र्याभाव्यतोऽष्टमोऽध्याय ।

मङ्गलाचरण—ॐ पंचपरमेष्ठिन्यो नमो नमः ।

३२९१. वाग्भट्टालङ्कार—वाग्भट्ट । पत्र सं० १६ । श्रा० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इ'च । भाषा—संस्कृत । विषय—अलङ्कार । २० काल × । ले० काल सं० १६४६ कालिक मुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति— सं० १६४६ वर्षे कालिकामांशे शुक्रागते तृतीया तिथौ शुक्रवासरे लिखते पादे लूणा माहरोठमध्ये स्वान्यथा पठनीयै ।

३२९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६६४ फागुण मुदी ७ । वे० सं० ६५३ । अ भण्डार ।

विशेष—नेलक प्रशस्ति कटी हुई है । कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए हैं ।

३२९३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६५६ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे० सं० १७२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है जा कि चारो ओर हासिये पर लिखी हुई है ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ११६ ), अ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ६७२ ), अ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १३८ ), अ भण्डार में दो प्रतियां ( वे० सं० ६०, १४३ ), अ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० २१७ ), अ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १४६ ) और है ।

३२६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७०० कालिक बुदी ३ । वे० सं० ४५ । अ  
भण्डार ।

विशेष—ऋषि हंसा ने सादडी मे प्रतिलिपि कराई थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १४६ ) भी है ।

३२६५. वाग्भट्टालङ्कारटीका—वादिराजः । पत्र सं० ४० । भा० ६३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—अलङ्कार । २० काल सं० १७२६ कालिक बुदी ५५ (दीपावली) । ले० काल सं० १८११ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण  
वे० सं० १५२ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम कविचन्द्रिका है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत्सरे निधिदृगश्वशशाकमुक्ते (१७२६) दीपोत्सवास्त्यदिवसे सगुरौ सचित्रे ।

लम्नेऽलि नाम्नि च समीपगिरः प्रसादात् सद्वादिराजराचितकविचन्द्रकेयं ॥

श्रीराजसिंहनुपतिजयसिंह एव श्रीटांडाशकाख्यनगरी ग्रथहित्य तुन्या ।

श्रीवादिराजविबुधोऽपर वाग्भटोर्यं श्रीसूत्रवृत्तिरिह नंदतु चार्कचन्द्रः ॥

श्रीमद्भूमिनुपलम्जस्य बलिनः श्रीराजसिंहस्य मे मेवायामवकाशामस्य विहिता टीका शिशूनां हिता ।

श्रीनाथिकवचोयदत्र लिखितं तद्वंबुधैः क्षम्यता गार्हस्थ्यवनिनाथ मेवनाथिमासकः स्वछुताभाभूयात् ॥

इति श्री वाग्भट्टालङ्कारटीकाया पौमराजश्रेष्ठिमुल्लादिराजविरचिताया कविचन्द्रिकायां पंचमः परिच्छेदः  
ममाप्तः । सं० १८११ श्रावण सुदी ६ गुरुवासे लिखितं महात्मौहानगरका हेमराज सर्वाङ्ग जगपुरमध्ये । मुभं भूयात् ॥

३२६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १८११ श्रावण सुदी ६ । वे० सं० २५६ । अ  
भण्डार ।

३२६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १६६० । वे० सं० ६५४ । क भण्डार ।

३२६८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १७३१ । वे० सं० ६५५ । क भण्डार ।

विशेष—तक्षकगड मे महाराजा मानसिंह के शासनकाल मे ..... खण्डेलवालाख्ये सौगार्यी गौत्र बाने  
नम्राट गयामुहीन ने सम्मानित साह महिगा .. साह पोमा मुन वादिराज की भाया लौहडी ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि  
करवायी थी ।

३२६९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० ६५६ । क भण्डार ।

३३००. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० ६७३ । क भण्डार ।

३३०१. वाग्भट्टालङ्कार टीका..... पत्र सं० १३ । भा० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
अलङ्कार । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण ( पंचम परिच्छेद तक ) वे० सं० २० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३३०२. वृत्तरत्नाकर—भट्ट केदार । पत्र सं० ११ । मा० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५२ । अ भण्डार ।

३३०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १६८४ । वे० सं० ६८४ । अ भण्डार ।

विशेष—इनके प्रतिरिक्त अ भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० १५० ) स्र भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० २७५ ) अ भण्डार मे दो प्रतिया ( वे० सं० १७७, ३०६ ) प्रौर है ।

३३०४. वृत्तरत्नाकर—कालिदास । पत्र सं० ६ । मा० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७६ । स्र भण्डार ।

३३०५. वृत्तरत्नाकर..... । पत्र सं० ७ । मा० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८५ । ज भण्डार ।

३३०६. वृत्तरत्नाकरटीका—मुहण कवि । पत्र सं० ४० । मा० ११×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६८ । क भण्डार ।

विशेष—मुकवि हृदय नामक टीका है ।

३३०७. वृत्तरत्नाकरछंदटीका—समयमुन्दरगणि । पत्र सं० १ । मा० १०½×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२१६ । अ भण्डार ।

३३०८. श्रुतबोध—कालिदाम । पत्र सं० ६ । मा० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५६१ । अ भण्डार ।

विशेष—अष्टगण विचार तक है ।

३३०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८४६ फायुग मुदी है । वे० सं० ६०० । अ भण्डार ।

विशेष—पं० डालूराम के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

३३१०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ६२६ । अ भण्डार ।

विशेष—जीवराज वृत्त टिप्पण सहित है ।

३३११. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८६५ आवण मुदी है । वे० सं० ७२५ । अ भण्डार ।

३३१२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८०८ ज्येष्ठ मुदी है । वे० सं० ७२७ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० रामचंद्र ने मिलती नगर मे प्रतिलिपि की थी ।

३३१३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १७८१ चैत्र मुदी १ । वे० सं० १७८ । व्य  
अण्डार ।

विशेष—पं० मुखानन्द के शिष्य नैनमुल ने प्रतिलिपि की थी । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३३१४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १८११ । ट अण्डार ।

विशेष—आचार्य विमलकीर्ति ने प्रतिलिपि कराई थी ।

इसके अतिरिक्त अ्य अण्डार मे ३ प्रतियां ( वे० सं० ६४८, ६०७, ११६१ ) क, क, च और ज अण्डार  
मे एक एक प्रति ( वे० सं० ७०४, ७२६, ३४८, २८७ ) व्य अण्डार मे २ प्रतियां ( वे० सं० १५६, १८७ )  
शोर है ।

३३१५. श्रुतबोध—वररुचि । पत्र सं० ४ । भा० ११३×५ इञ्ज । भाषा—संस्कृत । विषय—द्वंद्वशास्त्र ।  
२० काल × । ले० काल सं० १८५६ । वे० सं० २८३ । छ अण्डार ।

३३१६ अतबोधटीका—मनोहररयाम । पत्र सं० ८ । भा० ११३×५ इञ्ज । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—द्वंद्वशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १८६१ आसोज मुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ६४७ । क अण्डार ।

३३१७. श्रुतबोधटीका..... । पत्र सं० ३ । भा० ११३×५ इञ्ज । भाषा—संस्कृत । विषय—द्वंद्वशास्त्र ।  
२० काल × । ले० काल सं० १८२८ मंगसर बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६४५ । अ्य अण्डार ।

३३१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ७०३ । क अण्डार ।

३३१९. श्रुतबोधवृत्ति—हर्षकीर्ति । पत्र सं० ७ । भा० १०३×४ इञ्ज । भाषा—संस्कृत । विषय—  
द्वंशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १७१६ कार्तिक मुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १६१ । ख अण्डार ।

विशेष—श्री ५ मुन्दरदास के प्रसाद से मुनिमुल ने प्रतिलिपि की थी ।

३३२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से १६ । ले० काल सं० १६०१ माघ मुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं०  
२३३ । छ अण्डार ।



## विषय-संगीत एवं नाटक



३३२१. अकलङ्कनाटक—श्री मकखनलाल । पत्र सं० २३ । भा० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १ । छ भण्डार ।

३३२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १६६३ कार्तिक सुदी ६ । वे० सं० १७२ । छ

भण्डार ।

३३२३. अभिज्ञान शाकुन्तल—कालिदास । पत्र सं० ७ । भा० १० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{3}{4}$  इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११७० । अ भण्डार ।

३३२४. कर्पूरमञ्जरी—राजशेखर । पत्र सं० १२ । भा० १२ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{3}{4}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

नाटक । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । मुनि ज्ञानकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी । ग्रन्थ के दोनों ओर ८ पत्र तक संस्कृत में व्याख्या दी हुई है ।

३३२५. ज्ञानसूर्योदयनाटक—वादिचन्द्रसूरि । पत्र सं० ६३ । भा० १० $\frac{3}{4}$ ×४ $\frac{3}{4}$  इञ्च । भाषा—

संस्कृत । विषय—नाटक । २० काल सं० १६४८ माघ सुदी ८ । ले० काल सं० १६६८ । पूर्ण । वे० सं० १८ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रामेर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३३२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८८७ माह सुदी ५ । वे० सं० २३१ । क

भण्डार ।

३३२७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १८६४ आशोज सुदी ६ । वे० सं० २३२ । क

भण्डार ।

विशेष—कृष्णगढ निवासी महात्मा राधाकृष्ण ने जयनगर में प्रतिलिपि की थी तथा इस संधी अमरचन्द दीवान के मन्दिरे में विराजमान की ।

३३२८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६३५ सावण सुदी ५ । वे० सं० २३० । क

भण्डार ।

३३२९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १७८० । वे० सं० १३४ । व्य भण्डार ।

विशेष—भट्टारक जगत्कीर्ति के शिष्य श्री ज्ञानकीर्ति ने प्रतिलिपि करके पं० दोदराज को भेंट स्वरूप दी थी । इसके अतिरिक्त इसी भण्डार में २ प्रतियां ( वे० सं० १४७, ३३७ ) और हैं ।

३३३०. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—पारसदास निगोत्या । पत्र सं० ४१ । घ्रा० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल सं० १९१७ बैशाख बुदी ६ । ले० काल सं० १९१७ पौष ११ । पूर्ण । वै० सं० २१६ । कृ भण्डार ।

३३३१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १९३६ । वै० सं० ५६३ । च भण्डार ।

३३३२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४८ मे ११५ । ले० काल सं० १९३६ । अपूर्ण । वै० सं० ३४४ । कृ भण्डार ।

३३३३. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—भागचन्द । पत्र सं० ४१ । घ्रा० १३×७ १/२ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल सं० १९३४ । पूर्ण । वै० सं० ५६२ । च भण्डार ।

३३३४. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—भगवतीदास । पत्र सं० ४० । घ्रा० ११ ३/४×७ ३/४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल सं० १८७७ भाद्रवा बुदी ७ । पूर्ण । वै० सं० २२० । कृ भण्डार ।

३३३५. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—बख्तावरलाल । पत्र सं० ८७ । घ्रा० ११×५ ३/४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल सं० १८५४ ज्येष्ठ सुदी २ । ले० काल सं० १९२८ बैशाख बुदी ८ । वै० सं० ५६४ । पूर्ण । च भण्डार ।

विशेष—जोहरीलाल खिन्डूका ने प्रतिलिपि की थी ।

३३३६. धर्मदशावतारनाटक..... । पत्र सं० ६६ । घ्रा० ११ ३/४×५ ३/४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—नाटक । २० काल सं० १९३३ । ले० काल × । वै० सं० ११० । ज भण्डार ।

विशेष—पं० फतेहलालजी की प्रेरणा से जवाहरलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की थी । इसका दूसरा नाम धर्मप्रदीप भी है ।

३३३७. नलदमयंती नाटक ..... । पत्र सं० ३ से २४ । घ्रा० ११×४ ३/४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—नाटक । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १९६८ । ट भण्डार ।

३३३८. प्रबोधचन्द्रिका—वैजल भूपति । पत्र सं० २६ । घ्रा० ६×४ ३/४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल सं० १९०७ भाद्रवा बुदी ४ । पूर्ण । वै० सं० ८१४ । अ भण्डार ।

३३३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वै० सं० २१६ । कृ भण्डार ।

३३४०. भविष्यदत्त तिलकामुन्दरी नाटक—न्यामतसिंह । पत्र सं० ४४ । घ्रा० १३×८ ३/४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १६७ । कृ भण्डार ।

३३४१. मदनपराजय—जिनदेवसूर । पत्र सं० ३६ । घ्रा० १० ३/४×४ ३/४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ८८५ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र सं० २ से ७, २७, २८ नहीं हैं तथा ३६ से आगे के पत्र भी नहीं हैं।

३३४२. प्रति सं० २। पत्र सं० ४५। ले० काल सं० १८२६। वे० सं० ५६७। क भण्डार।

३३४३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४१। ले० काल ×। वे० सं० ५७८। क भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के २५ पत्र नवीन लिखे गये हैं।

३३४४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४६। ले० काल ×। वे० सं० १००। क भण्डार।

३३४५. प्रति सं० ५। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १६१६। वे० सं० ६४। क भण्डार।

३३४६. प्रति सं० ६। पत्र सं० ३१। ले० काल सं० १८३६। माह मुदी ६। वे० सं० ४८। क भण्डार।

भण्डार।

विशेष—सवाई जयनगर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में पं० चोखन्द के मेवक पं० रामचन्द्र ने सवाईराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३३४७. प्रति सं० ७। पत्र सं० ४०। ले० काल ×। वे० सं० २०१।

विशेष—अध्याय ज्ञानीय भित्तल गौड़ यानि में प्रतिलिपि कराई थी।

३३४८. मदनपराजय..... पत्र सं० ३ से २५। आ० १०८१ डब्ब। भाषा—प्राकृत। विषय—नाटक। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० १६६५। अ भण्डार।

३३४९. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० १६६५। अ भण्डार।

३३५०. मदनपराजय—पं० स्वरूपचन्द्र। पत्र सं० ६२। आ० ११३×८ डब्ब। भाषा—हिन्दी। विषय—नाटक। २० काल सं० १६१८ मंगसिर मुदी ७। ले० काल ×। पूर्णा। वे० सं० ५७६। क भण्डार।

३३५१. रागमाला..... पत्र सं० ६। आ० ८३×५ डब्ब। भाषा—संस्कृत। विषय—मञ्जीत। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० १३७६। अ भण्डार।

३३५२. राग रागनियों के नाम..... पत्र सं० ८। आ० ८५×६ डब्ब। भाषा—हिन्दी। विषय—मञ्जीत। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्णा। वे० सं० ३०७। क भण्डार।



## विषय-लोक-विज्ञान

३३५३. अढाईद्वीप वर्णन.....। पत्र सं० १०। भा० १२×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-लोक विज्ञान-जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड, पुष्कराढ द्वीप का वर्णन है। २० काल ×। ले० काल सं० १८१५। पूर्ण। वे० सं० ३। छ मण्डार।

३३५४. प्रहोकी ऊंचाई एवं आयुवर्णन.....। पत्र सं० १। भा० ८ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-तक्षत्रों का वर्णन है। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २११०। अ मण्डार।

३३५५. चन्द्रप्रज्ञप्ति.....। पत्र सं० ६२। भा० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-चन्द्रमा गम्भीर वर्णन है। २० काल ×। ले० काल सं० १६६४ भादवा बुदी १२। पूर्ण। वे० सं० १६७३।

विशेष—प्रथिम पुष्पिका—

इति श्री चन्द्रपणनसी ( चन्द्रप्रज्ञप्ति ) संपूर्णा। लिलित परिप करमचंद्र।

३३५६. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति—नेमिचन्द्रचार्य। पत्र सं० ६०। भा० १२×६ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-जम्बूद्वीप सम्बन्धी वर्णन। २० काल ×। ले० काल सं० १८६६ फाल्गुन मुदी २। पूर्ण। वे० सं० १००। अ मण्डार।

विशेष—मधुपुरी नगरी में प्रतिनिधि की गयी थी।

३३५७. तीनलोककथन.....। पत्र सं० ६६। भा० १० $\frac{३}{४}$ ×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-लोक विज्ञान-तीनलोक वर्णन। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३५०। अ मण्डार।

३३५८. तीनलोकवर्णन.....। पत्र सं० १५४। भा० ६ $\frac{३}{४}$ ×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-लोक विज्ञान-तीन लोक का वर्णन है। २० काल ×। ले० काल सं० १८६१ सावण मुदी २। पूर्ण। वे० सं० १०। अ मण्डार।

विशेष—गोपाल व्यास उप्रियावास वाले ने प्रतिलिपि की थी। प्रारम्भ में मेमिनाथ के दश भव का वर्णन है। प्रारम्भ में लिखा है— हुं डार देश में सवाई जयपुर नगर स्थित प्राचार्य शिरोमणि श्री यशोदानन्द स्वामी के शिष्य पं० सदागुरु के शिष्य श्री पं० फतेहलाल की यह पुस्तक है। भादवा मुदी १० सं० १६११।

३३५९. तीनलोकचार्त्त.....। पत्र सं० १। भा० ५×६ $\frac{३}{४}$  इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-लोकविज्ञान। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३५। अ मण्डार।



विशेष—त्रिलोकसार के आधार पर बनाया गया है। तीनलोक की जानकारी के लिए बड़ा उपयोगी है।

३३६०. त्रिलोकचित्र.....। आ० २०×३० इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—लोकविज्ञान। २० काल ×। ले० काल सं० १५७५। पूर्ण। वे० सं० ५३६। अ भण्डार।

विशेष—कपडे पर तीनलोक का चित्र है।

३३६१. त्रिलोकदीपक—चामदेव। पत्र सं० ७२। आ० १६×७२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—लोकविज्ञान। २० काल ×। ले० काल सं० १८५२ आषाढ सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ५। ज भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ सचित्र है। जम्बूद्वीप तथा विदेह क्षेत्र का चित्र सुन्दर है तथा उस पर वेणु बूटे भी हैं।

३३६२. त्रिलोकसार—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० ८१। आ० १३×५ इंच। भाषा—प्राकृत। विषय—लोकविज्ञान। २० काल ×। ले० काल सं० १८१६ मगसिर बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ४६। अ भण्डार।

विशेष—पहिले पत्र पर ६ चित्र हैं। पहिले नेमिनाथ की मूर्ति का चित्र है जिसके बाईं ओर बलभद्र तथा दाईं ओर श्रीकृष्ण हाथ जोड़े खड़े हैं। तीसरा चित्र नेमिचन्द्राचार्य का है वे लकड़ी के सिंहासन पर बैठे हैं सामने लकड़ी के स्टेज पर ग्रन्थ है आगे पिन्दी और कमण्डलु हैं। उनके आगे दो चित्र और हैं जिनमें एक चामुण्डराय का तथा दूसरा और किसी श्रोता का चित्र है। दोनों हाथ जोड़े मोड़ी गालें बैठे हैं। चित्र बहुत सुन्दर हैं। इसके प्रतिरिक्त और भी लोक-विज्ञान सम्बन्धी चित्र हैं।

३३६३. प्रति सं० २। पत्र सं० ४५। ले० काल सं० १८६६ प्र० वैशाख सुदी ११। वे० सं० २८८। क भण्डार।

३३६४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६२। ले० काल सं० १८२६ धात्रण बुदी ५। वे० सं० २८३। क भण्डार।

३३६५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७२। ले० काल ×। वे० सं० २८६। क भण्डार।

विशेष—प्रति सचित्र है।

३३६६. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६८। ले० काल ×। वे० सं० २९०। क भण्डार।

विशेष—प्रति सचित्र है। कई पृष्ठों पर हाथिया में सुन्दर चित्रात्म हैं।

३३६७. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १७३३ माह सुदी ५। वे० सं० २८३। अ भण्डार।

विशेष—महाराजा रामसिंह के यामनकाल में वसवा में रामचन्द्र काला ने प्रतिनिधि करवायी थी।

३३६८. प्रति सं० ७। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १५५३। वे० सं० १६४४। अ भण्डार।

विशेष—कालज्ञान एवं ऋषिमंडल पूजा भी हैं।

इनके प्रतिरिक्त अ भण्डार में २ प्रतियां ( वे० सं० २६२, २६३, ) अ भण्डार में २ प्रतियां ( वे० सं० १४७, १४८ ) तथा ज भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ४ ) धीर है ।

३३६६. त्रिलोकसारदर्पणकथा—खड्गसेन । पत्र सं० ३२ से २२८ । प्रा० ११×४३ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—लोक विज्ञान । २० काल सं० १७१३ चैत सुदी ५ । ले० काल सं० १७५३ ज्येष्ठ सुदी ११ । अपूर्णा । वे० सं० ३६० । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है । प्रारम्भ के ३१ पत्र नहीं हैं ।

३३७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३६ । ले० काल सं० १७३६ द्वि० श्रैत्र सुदी ४ । वे० सं० १८२ । अ भण्डार ।

विशेष—साह लोहट ने ग्राम पठनार्थ प्रतिलिपि करवायी थी ।

३३७१. त्रिलोकसारभाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० २८६ । प्रा० १४×७ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—लोक विज्ञान । २० काल सं० १८४१ । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ३७६ । अ भण्डार ।

३३७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४४ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ३७३ । अ भण्डार ।

३३७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१८ । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० ४३ । अ भण्डार ।

विशेष—जैतराम साह के पुत्र कानूराम साह ने सोनपाल भौसा से प्रतिलिपि कराकर चौधरियों के मन्दिर में चढ़ाया ।

३३७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२५ । ले० काल × । वे० सं० ३६ । अ भण्डार ।

३३७५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३६४ । ले० काल सं० १६६६ । वे० सं० २८४ । अ भण्डार ।

विशेष—सेठ जवाहरलाल सुगनचन्द सोनी अजमेर वाले ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

३३७६. त्रिलोकसारभाषा..... । पत्र सं० ४५२ । प्रा० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल सं० १६४७ । पूर्णा । वे० सं० २६२ । अ भण्डार ।

३३७७. त्रिलोकसारभाषा..... । पत्र सं० १०८ । प्रा० ११×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २६१ । अ भण्डार ।

विशेष—अवनलोक वर्णन तक पूर्ण है ।

३३७८. त्रिलोकसारभाषा..... । पत्र सं० १५० । प्रा० १२×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ५८३ । अ भण्डार ।

३३७९. त्रिलोकसारभाषा ( वषट्ठिका )..... । पत्र सं० ३१० । प्रा० १०×७ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल सं० १८६५ । वे० सं० ८५ । अ भण्डार ।

३३८०. त्रिलोकसारवृत्ति—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव । पत्र सं० २४० । श्रा० १३×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल सं० १६४५ । पूर्ण । वै० सं० २८२ । क भण्डार ।

३३८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४२ । ले० काल × । वै० सं० ६६ । छ भण्डार ।

३३८२. त्रिलोकसारवृत्ति..... । पत्र सं० १० । श्रा० १०×११ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ८ । ज भण्डार ।

३३८३. त्रिलोकसारवृत्ति..... । पत्र सं० ३७ । श्रा० १२ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ७ । ज भण्डार ।

३३८४. त्रिलोकसारवृत्ति..... । पत्र सं० २५ । श्रा० १०×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २०३३ । ट भण्डार ।

३३८५. त्रिलोकसारवृत्ति..... । पत्र सं० ६३ । श्रा० १३×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २६७ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रत प्राचीन है ।

३३८६. त्रिलोकसारसंहृष्टि—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६३ । श्रा० १३ $\frac{१}{२}$ ×८ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २८४ । क भण्डार ।

३३८७. त्रिलोकसाररूपव्याख्या—उदयलाल गंगवालाल । पत्र सं० ५० । श्रा० १३×७ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—लोक विज्ञान । २० काल सं० १६४४ । ले० काल सं० १६०४ । पूर्ण । वै० सं० ६ । ज भण्डार ।

विशेष— मु० धनानाल भोरीवाल एवं चिमनलालजी की प्रेरणा मे ग्रन्थ रचना हुई थी ।

३३८८. त्रिलोकवर्णन..... । पत्र सं० ३६ । श्रा० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल सं० १८१० कर्मान्न मुदी ३ । पूर्ण । वै० सं० ७७ । ख भण्डार ।

विशेष—गाथायें नाने हैं केवल वर्णनमात्र है । लोक के चित्र भी हैं । जम्बूद्वीप वर्णन तक पूर्ण है भगवानन्दाम के पठनार्थ जयपुर में प्रतिनिधि हुई थी ।

३३८९. त्रिलोकवर्णन..... । पत्र सं० १५ मे ३७ । श्रा० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × अपूर्ण । वै० सं० ७६ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है । १ से १४, १८, २१ २३ से २६, २८ से ३४ तक पत्र नहीं है । पत्र सं० १५ ३६, तथा ३७ पर चित्र नहीं है । इसके प्रतिरिक्त तीन पत्र सचित्र और हैं जिनमें से एक में नरक का, दूसरे में चंद्र, सूर्यचक्र कुण्डलद्वीप और तीसरे में भोरा, मछली, कनखजूरा के चित्र हैं । चित्र सुन्दर एवं दर्शनीय हैं ।

३३६०. त्रिलोकवर्णन ... । एक ही लम्बे पत्र पर । ले० काल × । वे० सं० ७५ । ख भण्डार ।

विशेष—सिद्धशिला से स्वर्ग के विमल पटल तक ६३ पटलों का सच्चित्र वर्णन है । चित्र १४ फुट ८ इंच लम्बे तथा ४३ इंच चौड़े पत्र पर दिये हैं । कहीं कहीं पीछे कपडा भी चिपका हुआ है । मध्यलोक का चित्र १×१ फुट है । चित्र सभी बिन्दुओं में बने हैं । नरक वर्णन नहीं है ।

३३६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५२७ । व्य भण्डार ।

३३६२. त्रिलोकवर्णन..... । पत्र सं० ५ । भा० १७×११ इंच । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६ । ज भण्डार ।

३३६३. त्रैलोक्यसारटीका—सहस्रकीर्ति । पत्र सं० ७६ । भा० १२×५ इंच । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८६ । क भण्डार ।

३३६४ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल × । वे० सं० २८७ । क भण्डार ।

३३६५ भूगोलनिर्माण..... । पत्र सं० ३ । भा० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल सं० १५७१ । पूर्ण । वे० सं० ८६८ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० हर्षागम यशिव वाचनार्थ लिखित कोरटा नगरे सं० १५७१ वर्ष । जेनेतर भूगोल है जिसमें सतयुग, इषार एवं त्रेता में होने वाले भ्रवतारो का तथा जम्बूद्वीप का वर्णन है ।

३३६६. संघपरणटपत्र..... । पत्र सं० ६ से ४१ । भा० ६ इंच इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०३ । ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टब्बा टीका दी हुई है । १ से ५, १४, १५ । २० में २२, २६ । २८ से ३०, ३२, ३५, ३६ तथा ४१ में भागों त्र नहीं है ।

३३६७. सिद्धांत त्रिलोकदीपक—वामदेव । पत्र सं० ६४ । भा० १३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३११ । ख भण्डार ।



## विषय- सुभाषित एवं नीतिशास्त्र

३३६८. अकामन्दवासी.....। पत्र सं० २०। आ० १२×८६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित।  
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११। क मण्डार।

३३६९. प्रति सं० २। पत्र सं० २०। ले० काल ×। वे० सं० १२। क मण्डार।

३४००. उपदेराछत्तीसी—जिनहर्ष। पत्र सं० ५। आ० १०×४३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-  
सुभाषित। २० काल ×। ले० काल सं० १८३९। पूर्ण। वे० सं० ४२८। अ मण्डार।

विशेष—

प्रारम्भ—श्री सर्वज्ञेभ्यो नमः। अथ श्री जिनहर्षेण बीर चितायामुपदेश छत्तीसी कामहमेव लभ्यते स्यात्।

जिनस्तुति—

मकल रूप यामे प्रभुता अनूप भूप,  
धूप छामा माहे है न जगदीश जुं।  
पुष्य हि न पाप हे नसित हे न ताप हे,  
जाप के प्रताप कटे करम अतिसयुं ॥  
ज्ञान कौ अंगज पुंज सूख्य वृक्ष के निवृंज,  
अतिसय चौतिस कुनि वचन ये तिमयु।  
असे जिनराज जिनहर्ष प्रणमि उपवेग,  
की अतिसी कही सबइ एसतीसयु ॥१॥

अधिरत्व कथन—

अरे जिउ काश्चिनीउ ताहु परी अमार तीते,  
तो अतीगति करी जो रसी उठानि है।  
तु तो नही चेतता हे जाणे हे रहेगी बुढ,  
मेरी २ कर रह्यौ उयमि रति मानी हे ॥  
ज्ञान की नीजीर खोल देख न कवहे,  
तेरी मोह दारु मे भयो वकारणो अजानी हे।  
कहे जीवहर्ष डरु तन लगैगी वार,  
कागद की गुढी कौलू रहे जी हा परणो ॥२॥

अन्तिम— धर्म परीक्षा कथन सवैया—

धरम धरम कहै मरम न कोउ लहे,  
 भरम में भूलि रहै कुल रुढ कीजीये ।  
 कुल रुढ छोरे कौ भरम फंद तोरि कै,  
 मुमति गति कोरि कै मुज्ञान हट्टि दीजीये ॥  
 दया रूप सोइ धर्म धर्म ते कटे है मर्म,  
 भेद जिन धरम पीवृष रस पीजीये ।  
 करि कै परीक्षया जिनहरष धरम कीजीये,  
 कसि कै कसोटी जैसे कंचण क लीजीये ॥३५॥

अथ प्रथम समाप्त कथन सवैया इकतीसा

भई उपदेस की छतीसी परिपूर्णा चतुर नर  
 है जे याकौ मय्य रस पीजीये ।  
 मेरी है अलपमति तो भी में कोए कविन,  
 कविताह सो हौ जिन ग्रन्थ मान लीजीये ॥  
 सरन है हे वलाए जोऊ भवसर जाए,  
 दोइ तीन याकै भैया सवैया कहीजीयो ।  
 कहै जिनहरष संवत्त गुण सिंसि भक्ष कीनी,  
 बु गुण कै सावास मौकु दीजीयो ॥३६॥  
 इति श्री उपदेश छतीसी सपूर्णा ।

संस्कृत १८३६

गवडि पुछेरे गवडि आ, कवण भने री देश ।  
 संपत हूए तो घर भलो, नहीतर भलो विदेश ॥  
 गूरवलि तो सूहांमणी, कर मोहि गंग प्रवाह ।  
 माडल तणे प्रगणे पारणी अयग अयाह ॥२॥

३४०१. उपदेश शतक—द्यानतराय । पत्र सं० १४ । आ० १२३×७३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
 सुभाषित । १० काल × १० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५२६ । च भण्डार ।

३४०२. कर्पूरप्रकरण..... पत्र सं० २४ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।  
 २० काल × १० काल × । पूर्ण । वै० सं० १८६३ ।

विशेष—१७६ पद्य हैं। अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

श्री वज्रमेनस्य दुरोस्त्रिषष्टि  
सार प्रबंधस्तुट सदयुगस्य ।  
शिष्येण चक्रे हरिगोय मिष्टा  
सूतावली नेमिचरित्र कर्ता ॥१७६॥

इति कर्पूराभिध सुभाषित कोश. समाप्ताः ॥

३५०३. प्रति सं० २। पत्र सं० २०। ले० काल सं० १६४७ ज्येष्ठ सुदी ५। वे० सं० १०३। क  
भण्डार ।

३५०४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १२। ले० काल सं० १७७६ श्रावण ४। वे० सं० २७६। ज  
भण्डार ।

विशेष—सुधरदास ने प्रतिलिपि की थी।

३५०५. कामन्दकीय नीतिसार भाषा.....। पत्र सं० २ से १७। आ० १२×८ इंच। भाषा—हिन्दी  
गद्य। विषय—नीति। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० २८०। क भण्डार ।

३५०६. प्रति सं० २। पत्र सं० ३ से ६। ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० ६०८। अ भण्डार ।

३५०७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३ से ६८। ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० ६८। अ भण्डार ।

३५०८. चाणक्यनीति—चाणक्य। पत्र सं० ११। आ० १०×८ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—  
नीतिशास्त्र। २० काल ×। ले० काल सं० १८६६ मंगसिर बुदी १४। पूर्णा। वे० सं० ८११। अ भण्डार ।

इसी भण्डार में ५ प्रति ( वे० सं० ६३०, ६६१, ११००, १६५८, १६४५ ) और है।

३५०९. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १८४६ पीत सुदी ६। वे० सं० ७०। ग  
भण्डार ।

इसी भण्डार में १ प्रति ( वे० सं० ७१ ) और है।

३५१०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३४। ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० १७५। क भण्डार ।

इसी भण्डार में २ प्रति ( वे० सं० ३७, ६५७ ) और है।

३५११. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६ से १३। ले० काल सं० १८८५ मंगसिर बुदी ५५। अपूर्णा। वे०  
सं० ६३। अ भण्डार ।

इसी भण्डार में १ प्रति ( वे० सं० ६४ ) और है।

३५१२. प्रति सं० ५। पत्र सं० १३। ले० काल सं० १८७४ ज्येष्ठ बुदी ११। वे० सं० २४६। क  
भण्डार ।

इसी भण्डार में ३ प्रतियां ( वे० सं० १३८, २४८, २५० ) श्रीर है ।

३४१३. चाणक्यनीतिसार—मूलकर्त्ता—चाणक्य । संप्रहकर्त्ता—मथुरेश भट्टाचार्य । पत्र सं० ७ ।  
 आ० १०×४२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नीतिशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१० ।  
 अ भण्डार ।

३४१४. चाणक्यनीतिभाषा..... । पत्र सं० २० । आ० १०×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—नीति  
 शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५१६ । ट भण्डार ।

विशेष—६ अध्याय तक पूर्ण है । ७वे अध्याय के २ पद्य हैं । दोहा और कुण्डलियों का अधिक प्रयोग  
 हुआ है ।

३४१५. छंदशतक—वृन्दाबनदास । पत्र सं० २६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—  
 मुभाषित । २० काल सं० १८६= माघ मुदी २ । ले० काल सं० १६४० मंगसिर मुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १७८ । क  
 भण्डार ।

३४१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १६३७ फागुण मुदी ६ । वे० सं० १८१ । क  
 भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां ( वे० सं० १७६, १८० ) श्रीर है ।

३४१७. जैनशतक—भूधरदास । पत्र सं० १७ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—मुभाषित ।  
 २० काल सं० १७८१ पीप मुदी १२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १००५ । अ भण्डार ।

३४१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १६७७ फागुण मुदी ५ । वे० सं० २१८ । क  
 भण्डार ।

३४१९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० २१७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति नीले कागजों पर है । इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० २१६ ) श्रीर है ।

३४२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० ५६० । अ भण्डार ।

३४२१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १८८६ । वे० सं० १५८ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० २८४ ) श्रीर है जिसमें कर्म छत्तीसी पाठ भी है ।

३४२२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १८८१ । वे० सं० १६४० । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १६५१ ) श्रीर है ।

३४२३. ढालराग..... । पत्र सं० ८ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—मुभाषित । २०  
 काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३५ । क भण्डार ।



३४२४. तन्वधर्मासृत्.....। पत्र सं० ३३। आ० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित।

२० काल ×। ले० काल सं० १६३६ ज्येष्ठ सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ४६। अ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

संवत् १६३६ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे दशम्यांतिथौ बुधवासरे चित्रानक्षत्रे परिघषोमे अत्रा दिवसे। आदीश्वर चैत्यालये। चंपावतिनामनगरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलाकारगणे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टा० पद्मनन्दिदेवास्तपट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवास्तपट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवास्तपट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तपट्टे मंडलाचार्य श्री धर्म (चं) द देवास्तपट्टे मंडलाचार्य श्री ललितकीर्ति देवास्तपट्टे मंडलाचार्य श्री चन्दकीर्ति देवास्तदाम्नाये खंडेलवालाख्ये भसावक्या गोत्र साह हरजाज भार्या पुत्र द्विय प्रथम समनु द्वितिक पुत्र मेघराज। साह ममनु भार्या समतादे तत्र पुत्र लक्ष्मीदास। साह मेघराज तस्य भार्या द्विय प्रथम भार्या लक्ष्मदेइ द्वितिक .....। अपूर्ण।

३४२५. प्रति सं० २। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१४५। ट भण्डार।

विशेष—३० से आगे पत्र नहीं है।

प्रारम्भ— शुद्धात्मरूपमागन् प्रणिपत्य गुरा गुम्।

तन्वधर्मासृत् नाम वक्ष्य सत्यतः ॥

धर्मं श्रुते पापमुपैति नाशं धर्मं श्रुते पुण्यमुपैति वृद्धे।

स्वर्गापवर्गं प्रवरोरु मील्यं, धर्मं श्रुते रेव न चाप्यतास्ति ॥२॥

३४२६. दशबोले .....। पत्र सं० २। आ० १०×६ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—सुभाषित। २०

काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६४७। ट भण्डार।

३४२७. दृष्टान्तशतक.....। पत्र सं० १७। आ० ६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित।

२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८५६। अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी अर्थ दिया है। पत्र १५ में आगे ६३ फुटकर श्लोको का मग्रह अरि है।

३४२८. ज्ञाननविलास—ज्ञानतराय। पत्र सं० २ में १३। आ० ६×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—

सुभाषित। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३४४। अ भण्डार।

३४२९. धर्मविलास—ज्ञानतराय। पत्र सं० २३४। आ० ११ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—

सुभाषित। २० काल ×। ले० काल सं० १६५८ फागुण सुदी १। पूर्ण। वे० सं० ३४२। अ भण्डार।

३४३०. प्रति सं० २। पत्र सं० १३६। ले० काल सं० १८८१ आसोज सुदी २। वे० सं० ४५। अ

भण्डार।

विशेष—जैगरामजी साह के पुत्र शिवलालजी ने नेमिनाथ चैत्यालय ( चौधरियों का मन्दिर ) के लिए

बिम्बनलाल तेरापंधी से दोसा मे प्रतिलिपि करवायी थी।

३४३१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६१ । ले० काल सं० १६१६ । वे० सं० ३३६ । क भण्डार ।

विशेष—तीन प्रकार की लिपि है ।

इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ३४० ) झोर है ।

३४३२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६४ । ले० काल × । वे० सं० ५१ । झ भण्डार ।

३४३३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० १५६३ । ट भण्डार ।

३४३४. नवरत्न (कवित्त)..... । पत्र सं० २ । घा० ८×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३८८ । झ भण्डार ।

३४३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० १७८ । च भण्डार ।

३४३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १६३४ । वे० सं० १७६ । च भण्डार ।

विशेष—पंजरल झोर है । श्री विरधीचंद पाटोदी ने प्रतिलिपि की थी ।

३४३७. नीतिसार..... । पत्र सं० ६ । घा० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नीतिशास्त्र ।

१० काल × । ले० काल × । वे० सं० १०१ । छ भण्डार ।

३४३८. नीतिसार—इन्द्रनग्नि । पत्र सं० ६ । घा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नीति

शास्त्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६ । झ भण्डार ।

विशेष—पत्र ६ में भद्रबाहु कृत क्रियासार दिया हुआ है । अन्तिम ६वें पत्र पर दर्शनसार है किन्तु अपूर्ण है ।

३४३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६३७ भादवा मुदी ४ । वे० सं० ३८६ । क भण्डार ।

इसी भण्डार में २ प्रतिया ( वे० सं० ३८६, ४०० ) झोर है ।

३४४०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ मे ८ । ले० काल सं० १८२२ भादवा मुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० ३८१ । क भण्डार ।

३४४१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३२६ । ज भण्डार ।

३४४२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १७८४ । वे० सं० १७६ । च भण्डार ।

विशेष—अलायनगर में पार्वनाथ चैत्यालय में गोद्धर्नदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३४४३. नीतिशातक—भर्तृहरि । पत्र सं० ६ । घा० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । १० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७६ । क भण्डार ।

३४४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १४२ । च भण्डार ।

३४४५. नीतिवाक्यामृत—सोमदेव सूरि । पत्र सं० ५५ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—नीतिशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८४ । क भण्डार ।

३४४६. नीतिविनोद..... । पत्र सं० ४ । आ० ६×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—नीतिशास्त्र ।  
१० काल × । ले० काल सं० १६१८ । वे० सं० ३३५ । म् भण्डार ।

विशेष—मन्नालाल पांड्या ने संग्रह करवाया था ।

३४४७. नीलसूक्त । पत्र सं० ११ । आ० ६३×४२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । १०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२८ । ज् भण्डार ।

३४४८. नौशेरवां बादशाह की वस ताज । पत्र सं० ५ । आ० ४३×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
उपदेश । १० काल × । ले० काल सं० १६४६ बैशाल सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ४० । म् भण्डार ।

विशेष—गणेशलाल पांड्या ने प्रतिलिपि की थी ।

३४४९. पञ्चतन्त्र—पं० विष्णु शर्मा । पत्र सं१ ६४ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
नीति । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८१८ । अ् भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ६३७ ) और है ।

३४५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८६ । ले० काल × । वे० सं० १०१ । ख् भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३४५१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४ से १६८ । ले० काल सं० १८३२ चैत्र सुदी २ । अपूर्ण । १० सं०  
१६४ । च् भण्डार ।

विशेष—पूर्णचन्द्र सूरि द्वारा संशोधित, पुरोहित भागीरथ पल्लीवाल ब्राह्मण ने सवाई जयनगर ( जयपुर )  
में पृथ्वीसिंहजी के शासनकाल में प्रतिलिपि की थी । इस प्रति का जोरखोँडार सं० १८५५ फागुण बुदी ३ में हुआ था ।

३४५२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २८७ । ले० काल सं० १८८७ पीठ बुदी ४ । वे० सं० ६११ । च् भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है । प्रारम्भ में मंगरी दीवान अमरचंदजी के आग्रह से नन्दगुल व्यास के  
शिष्य माणिक्यचन्द्र ने पञ्चतन्त्र की हिन्दी टीका लिखी ।

३४५३. पञ्चतन्त्रभाषा..... । पत्र सं० २२ से १४३ । आ० ६×७३ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य ।  
विषय—नीति । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५७८ । ट् भण्डार ।

विशेष—विष्णु शर्मा के संस्कृत पञ्चतन्त्र का हिन्दी अनुवाद है ।

३४५४. पांचबोल..... । पत्र सं० ६ । आ० १०×४ इंच । भाषा—गुजराती । विषय—उपदेश । १०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६६ । ट् भण्डार ।

३४५५. पैसठबोल ..... । पत्र सं० १ भा० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—उपदेश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७६ । अ भण्डार ।

विलेख—अथ बोल ६५

[१] अरय लोभी [२] निरदई मनख होसी [३] विसवासघाती मंत्री [४] पुत्र सुत्रा घरना लोभा [५] नीचा पेवा भाई बंधव [६] असंतोष प्रजा [७] विद्यावंत दलद्री [८] पाखण्डी शास्त्र बाच [९] जती क्रोधी होइ [१०] प्रजाहीण नगमही [११] वेद रोगी हांसी [१२] हीरा जाति कला होसी [१३] सुधारक छल छद्र होसी [१४] सुभट कायर होसी [१५] गिवा काथा क्लेश घणु करमी दुष्ट बलवंत मुन सो [१६] जीवनवंतजर [१७] अकाल मृत्यु होसी [१८] पुद्रा जीव घणा [१९] अगहीण मनुख होसी [२०] अल्प मेघ [२१] उल्ल सात बीली ही ? [२२] वचन चूक मनुष होसी [२३] विसवासघाती छत्री होसी [२४] संवा ..... [२५] ..... [२६] ..... [२७] ..... [२८] ..... [२९] अणकीधान न कीधी कहसी [३०] आपको कीधी दोष पैला का लगावसी [३१] अमुद्र साध भगसी [३२] कुटल दया पालसी [३३] भेप धाराबैरागी होसी [३४] अहंकार ब्रैष मुख घणा [३५] मुरजादा लोप गज आदारा [३६] माता पिता मुन्देव मान नही [३७] दुरजन मु सनेह होसी [३८] सजन उपरा विरोध होसी [३९] पैना की निचा घणी करेमी [४०] कुलवंता नार लहोसी [४१] पैसा भगतण लज्या करसी [४२] अफल बर्वा होसी [४३] बाण्य की जात कुटिल होसी [४४] कवारी चपल होसी [४५] उलम घरकी स्त्री नीच मु होसी [४६] नीच घरका रूपवंत होमी [४७] मुहमाय्या भेप नही होसी [४८] धरतो मे मेह थोड़ो होसी [४९] मनख्यां में नेह थोड़ो होसी [५०] बिना देख्यां चुगली करसी [५१] जाको सरणो लेसी तामू ही ब्रैष करी खोटी करसी [५२] गज हीरा बाजा हांसासी [५३] न्याइ कहा हान क लेसी [५४] अवंबंसा राजा हो [५५] रोग सोग घणा होसी [५६] रतबा प्राप्त होसी [५७] नीच जात श्रदान होसी [५८] राडजांग घणा होमी [५९] अस्त्री क्लेश गराघण [६०] अस्त्री सोन हीरा घणी हांसी [६१] सोलवंतो विरली हांसी [६२] विष विकार घनो रगत होसी [६३] संसार चलावाता ते दुखी जाण जोसी ।

।। इति श्री पचायण बोल संपूरण ॥

३४५६. प्रबोधसार—यशःकोटि । पत्र सं० २३ । भा० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७५ । अ भण्डार ।

विलेख—संस्कृत मे मूल अथब्रंश का उल्पा है ।

३४५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६५७ । वे० सं० ४६५ । क भण्डार ।

३४५८. प्रश्नोत्तर रत्नमाला—तुलसीदास । पत्र सं० २ । आ० ६३×३३ इंच । भाषा—गुजराती ।  
विषय—सुभाषित । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७० । ट भण्डार ।

३४५९. प्रश्नोत्तररत्नमालिका—अमोघवर्ष । पत्र सं० २ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—सुभाषित । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०७ । अ भण्डार ।

३४६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १६७१ मंगतिर सुदी ५ । वे० सं० ५१६ । क  
भण्डार ।

३४६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० १०१ । झ भण्डार ।

३४६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १७६२ । ट भण्डार ।

३४६३. प्रस्तावित श्लोक..... । पत्र सं० ३६ । आ० ११×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
सुभाषित । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१४ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । विभिन्न ग्रन्थो मे मे उत्तम पद्यो का संग्रह है ।

३४६४. बारहखड़ी.....सूरत । पत्र सं० ७ । आ० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५६ । क भण्डार ।

३४६५. बारहखड़ी..... । पत्र सं० २० । आ० ५×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । १०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५६ । क भण्डार ।

३४६६. बारहखड़ी—पार्श्वदास । पत्र सं० ५ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित ।  
१० काल सं० १८६९ पीथ बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४० ।

३४६७. बुधजनविज्ञास—बुधजन । पत्र सं० ६४ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
संग्रह । १० काल सं० १८६९ कार्तिक सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८७ । क भण्डार ।

३४६८. बुधजन सतसई—बुधजन । पत्र सं० ४४ । आ० ८×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
सुभाषित । १० काल सं० १८७६ ज्येष्ठ बुदी ८ । ले० काल सं० १६८० माघ बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ४४४ । अ  
भण्डार ।

विशेष—७०० दोहो का संग्रह है ।

३४६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० ७६४ । अ भण्डार ।

दमी भण्डार मे २ प्रतियां ( वे० सं० ६५४, ६८४ ) और है ।

३४७०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५३४ । क भण्डार ।

३४७१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वै० सं० ७२६ । अ मण्डार ।

इसी मण्डार में १ प्रति ( वै० सं० ७४६ ) और है ।

३४७२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १६५५ आषाढ सुदी १० । वै० सं० १६४० । ट

मण्डार ।

इसी मण्डार में एक प्रति ( वै० सं० १६३२ ) और है ।

३४७३. बुधजन सतसई—बुधजन । पत्र सं० ३०३ । ले० काल × । वै० सं० ५३५ । क मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में १ प्रति ( वै० सं० ५३६ ) और है । हिन्दी अर्थ सहित है ।

३४७४. ब्रह्मविलास—भैया भगवतीदास । पत्र सं० २१३ । मा० १३×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—सुभाषित । २० काल सं० १७५५ बैशाख सुदी ३ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५३७ । क मण्डार ।

विशेष—कवि की ६७ रचनाओं का संग्रह है ।

३४७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३२ । ले० काल × । वै० सं० ५३६ । क मण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर है । चौकोर लाइने सुनहरी रंग की हैं । प्रति छुटके के रूप में है तथा प्रदर्शनी में रखने योग्य है ।

इसी मण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ५३८ ) और है ।

३४७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२० । ले० काल × । वै० सं० ५३८ । क मण्डार ।

३४७७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३७ । ले० काल सं० १८५७ । वै० सं० १२७ । ख मण्डार ।

विशेष—गाधोराजपुरा में महात्मा जयदेव जोबनेर वाले ने प्रतिलिपि की थी । मिति माह सुदी ६ सं० १८८६ में गोविन्दराम साहबदा ( छाबड़ा ) की मार्फत पन्ना के मन्दिर के वास्ते दिलाया । कुछ पत्र चूहे काट गये हैं ।

३४७८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १११ । ले० काल सं० १८८३ चैत्र सुदी ६ । वै० सं० ६५१ । च

मण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ हुकमचन्दजी बज ने दीवान अमरचन्दजी के मन्दिर में चढाया था ।

३४७९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २०३ । ले० काल × । वै० सं० ७३ । अ मण्डार ।

३४८०. ब्रह्मचर्याष्टक..... । पत्र सं० ५६ । मा० ६<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।

२० काल × । ले० काल सं० १७४८ । पूर्ण । वै० सं० १२६ । ख मण्डार ।

३४८१. भर्तृहरिशतक—भर्तृहरि । पत्र सं० २० । मा० ८<sup>३</sup>×५<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १३३८ । अ मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम शतकनय अथवा त्रिषतक भी है ।

इसी भण्डार में ८ प्रतियां ( वे० सं० ६५५, ३८१, ६२८, ६४६, ७६३, १०७४, ११३६, ११७३ )

घोर है ।

३४८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ से १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५६१ । ङ भण्डार ।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया ( वे० सं० ५६२, ५६३ ) अपूर्ण घोर है ।

३४८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० २६३ । च भण्डार ।

३४८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १८७५ चैत सुदी ७ । वे० सं० १३८ । छ भण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० २८८ ) घोर है ।

३४८५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १६२८ । वे० सं० २८४ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । मुखचन्द ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

३४८६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४५ । ले० काल × । वे० सं० १६२ । झ भण्डार ।

३४८७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ८ से २६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११७५ । ट भण्डार ।

३४८८. भावशतक—श्री नागराज । पत्र सं० १४ । ग्रा० ६×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १८३८ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ५७० । ङ भण्डार ।

३४८९. मनमोदनपंचशतीभाषा—छत्रपति जैसवाल । पत्र सं० ८६ । ग्रा० ११×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । २० काल सं० १६१६ । ले० काल सं० १६१६ । पूर्ण । वे० सं० ५६६ । क भण्डार ।

विशेष—सभी सामान्य विषयो पर छंदो का संग्रह है ।

इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ५६६ ) घोर है ।

३४९०. मान धावनी—मानकवि । पत्र सं० २ । ग्रा० ६३×३३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१६ । च भण्डार ।

३४९१. मित्रविलास—घासी । पत्र सं० ३४ । ग्रा० ११×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । २० काल सं० १७६६ फागुण सुदी ४ । ले० काल सं० १६५२ चैत बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ५७६ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक ने यह ग्रन्थ अपने मित्र भारामल तथा पिता बहालसिंह की सहायता से लिखा था ।

३४९२. रत्नकोष..... पत्र सं० ८ । ग्रा० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १७२२ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १०३८ । छ भण्डार ।

विशेष—विश्वसेन के शिष्य बलभद्र ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १०२१ ) तथा व्य भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ३४५ क ) भी है ।

३४६३. रत्नकोष ... पत्र सं० १४ । मा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२४ । क भण्डार ।

विशेष—१०० प्रकार की विविध बातों का विवरण है जैसे ४ पुरुषार्थ, ६३ राजवंश, ७ प्रंगराज्य, राजाश्रा के गुण, ४ प्रकार की राज्य विद्या, ६३ राक्ष्यपाल, ६३ प्रकार के राजविनोद तथा ७२ प्रकार की कला आदि ।

३४६४. राजनीतिशास्त्रभाषा—जसुराम । पत्र सं० १८ । मा० ५ $\frac{१}{२}$ ×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—राजनीति । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८ । भू भण्डार ।

विशेष—श्री गणेशायनमः श्रय राजनीति जसुराम कृत लीखतं ।

दाहा—

अछर अगम अपार गति कितहु वार न पाय ।  
सो मोकु दीजे सकती जे जे जे जग राय ॥

दृश्य—

वरनी उज्ज्वल वरन सरन जग अमरन सरनी ।  
कर करुना करन तरन सब तारन तरनी ॥  
शिर पर धरनी छत्र भरन मुख संपत भरनी ।  
भरनी अमृत भरन हरन दुख दारिद हरनी ॥  
धरनी त्रिमुख खपर धरन भव भय हरनी ।  
सकल भय जग बंध आदि वरनी जमु जे जग धरनी ॥ मात जे० ।

दाहा—

जे जग धरनी मात जे दीजे बुधि अपार ।

करी प्रनाम प्रसन्न कर राजनीति वीसतार ॥३॥

शक्ति—

लोक सीरकार राजी ओर सब राजी रहै ।

जाकरी के कीये विन लालच न चाइये ॥

किन हूं की भली बुरी कहिये न काहु भागै ।

सटका दे लखन कछु न आप साई है ॥

राय के उजीर नमु राख राख लेत रंग ।

येक टेक हूं की बात उमरनीवाहिये ॥

रीक स्त्रीक सिरकुं चढाय लीजे जसुराम ।

येक परापत कु येते गुन चाहीये ॥४॥



३४६५. राजनीति शास्त्र—देवीदास । पत्र सं० १७ । प्रा० ८३×६ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—राजनीत । २० काल × । ले० काल सं० १६७३ । पूर्ण । वे० सं० ३४३ । कृ भण्डार ।

३४६६. लघुचाणिक्य राजनीति—चाणिक्य । पत्र सं० ६ । प्रा० १२×५.३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—राजनीति । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । ज्ञ भण्डार ।

३४६७. वृन्दसतसई—कवि वृन्द । पत्र सं० ४ । प्रा० १३.३×६.३ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । २० काल सं० १७६१ । ले० काल सं० १८३४ । पूर्ण । वे० सं० ७७६ । अ भण्डार ।

३४६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । वे० सं० ६८५ । कृ भण्डार ।

३४६९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १८६७ । वे० सं० १६६ । कृ भण्डार ।

३४७०. वृहद् चाणिक्यनीतिशास्त्र भाषा—मिश्ररामराय । पत्र सं० ३८ । प्रा० ८.३×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—नीतिशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५५१ । अ भण्डार ।

विशेष—माणिक्यचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

३४७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५५२ । अ भण्डार ।

३४७२. पट्टिशतक टिप्पण—भक्तिशाल । पत्र सं० ५ । प्रा० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १५७२ । पूर्ण । वे० सं० ३५८ । अ भण्डार ।

विशेष—अंतिम पुष्पिका—

इति षष्टिशतकं समाप्तं । श्री भक्तिलाभोपाध्याय शिष्य पं० चारु चन्द्रेशनिधि ।

इसमें कुल १६१ गायों हैं । अंत की गायों में ग्रन्थकर्ता का नाम दिया है । १६०वीं गायों की संस्कृत टीका निम्न प्रकार है—

एवं मुगमा । श्री नेमिचन्द्र भाटारिक पूर्व गुरु विरहे धर्मस्य जातानाभूत । श्री जिनवल्लभमूर्ति श्रुगानश्रुत्या तत्काले पिंड विशुद्ध्यादि परिचयेन धर्मतत्त्वज्ञो ततस्तेन सर्वधर्म मूल सम्यक्त्व शुद्धि दृढताहितभूता ॥ १६० ॥ संख्या गायों विरचयां चक्रे इति सम्बन्ध ।

व्याख्यान्वय पूर्वाऽत्रचूर्णि रेषातुभक्तिलाभकृता ।

सुखार्थं ज्ञान फला विज्ञेया षष्टि क्षतवस्य ॥१॥

प्रशस्ति— सं० १५७२ वर्षे श्री विक्रमनगरे श्री जय सागरीराध्याय शिष्य श्री रत्नचन्द्रोपाध्याय शिष्य श्री भक्तिलाभोपाध्याय कृता स्वशिष्या वा. चारित्रसार पं० चारु चंद्रादिभिर्वाच्यमाना विर नदतात् । श्री कल्याणं भवतु श्री श्रमण संघस्य ।

३४७३. शुभसील..... । पत्र सं० २ । प्रा० ८.३×४ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४७ । कृ भण्डार ।

३५०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १४६ । छ मण्डार ।

विशेष—१३६ सोलो का वर्णन है ।

३५०५. सज्जनचित्तवल्लभ—मल्लिषेण । पत्र सं० ३ । भा० ११३×५३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—  
मुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वे० सं० १०५७ । अ मण्डार ।

३५०६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० ७३१ । क मण्डार ।

३५०७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६५४ पौष बुदी ३ । वे० सं० ७२८ । क  
मण्डार ।

३५०८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २६३ । छ मण्डार ।

३५०९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १७४६ आसोज मुदी ६ । वे० सं० ३०४ । अ  
मण्डार ।

विशेष—भट्टारक जगत्कीर्ति के शिष्य दोदराज ने प्रतिलिपि की थी ।

३५१०. सज्जनचित्तवल्लभ—शुभचन्द्र । पत्र सं० ४ । भा० ११×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
मुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६ । अ मण्डार ।

३५११. सज्जनचित्तवल्लभ ..... । पत्र सं० ४ । भा० १०३×४३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—  
मुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १७५६ । पूर्ण । वे० सं० २०४ । ख मण्डार ।

३५१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १५३ । ज मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३५१३. सज्जनचित्तवल्लभ—हरूलाल । पत्र सं० ६६ । भा० १२३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
मुभाषित । २० काल सं० १६०६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२७ । क मण्डार ।

विशेष—हरूलाल खतौली के रहने वाले थे । इनके पिता का नाम प्रीतमदास था । बाद में सहारनपुर  
चले गये थे वहाँ मित्रों की प्रेरणा से ग्रन्थ रचना की थी ।

इसी मण्डार में दो प्रतियाँ ( वे० सं० ७२६, ७३० ) भी हैं ।

३५१४. सज्जनचित्तवल्लभ—मिहरचंद्र । पत्र सं० ३१ । भा० ११×७ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—  
मुभाषित । २० काल सं० १६२१ कार्तिक मुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२६ । क मण्डार ।

३५१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ७२५ । क मण्डार ।

विशेष—हिन्दी पद्य में भी अनुवाद दिया है ।

३५१६. सद्भाषितावलि—सकलकीर्त्ति । पत्र सं० ३४ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ८५७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे १ प्रति ( वे० सं० १८६८ ) भी है ।

३५१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १८१० मंगसिर मुदी ७ । वे० सं० ४७२ । अ भण्डार ।

विशेष—धासीराम यति ने मन्दिर मे यह ग्रन्थ चढाया था ।

३५१८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० १६४६ । ट भण्डार ।

३५१९. सद्भाषितावलीभाषा—पद्मलाल चौधरी । पत्र सं० १३६ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १६४६ ज्येष्ठ मुदी १३ । पूर्णा । वे० सं० ७३२ । क भण्डार ।

विशेष—पृष्ठो पर पत्रों की सूची लिखी हुई है ।

३५२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १६४० । वे० सं० ७३३ । क भण्डार ।

३५२१. सद्भाषितावलीभाषा..... । पत्र सं० २५ । आ० १२×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । २० काल सं० १६११ सावन मुदी ५ । पूर्णा । वे० सं० ५६ । अ भण्डार ।

३५२२. सन्देहसमुच्चय—धर्मकलशासुरि । पत्र सं० १८ । आ० १०×८ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० २७१ । अ भण्डार ।

३५२३. सभासार नाटक—रघुराम । पत्र सं० १५ से ४३ । आ० ५ $\frac{३}{४}$ ×८ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १८८१ । अपूर्णा । वे० सं० २०७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ मे पचमेठ एवं नन्दीश्वरद्वीप पूजा है ।

३५२४. सभातरंग ..... । पत्र सं० ३८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १८७४ ज्येष्ठ मुदी ५ । पूर्णा । वे० सं० १०० । अ भण्डार ।

विशेष—गोधो के नेमिनाथ चैत्यालय सामानेर मे हरिवंशदास के शिष्य कृष्णचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३५२५. सभाशृङ्गार..... । पत्र सं० ४६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १७३१ कार्तिक मुदी १ । पूर्णा । वे० सं० १८७७ ।

विशेष—प्रारम्भ—

सकलगणि गजेंद्र श्री श्री साधु विजयगणिगुरुद्व्योनमः । यथा सभाशृङ्गार ग्रन्थ लिख्यते । श्री श्रद्धप देवाय नमः । श्री रत्नु ॥

नाभि नंदनु सकलमहीमंडनु पंचशत धनुष मानु तो..... तोरी सुवर्ण समानु हर गवल श्यामल कुंतलाबली  
विभूषित स्कंधु केवलज्ञान लक्ष्मी सनाथु भव्य लोकाङ्गिमुक्ति[क्ति]मार्गनी देखाउई । साध संसार शंभकूप (अधकूप )  
प्राणिवर्ग पडता दई हाव । युगला धर्म धर्म निवार वा समर्थ । भगवत श्री प्रादिनाथ श्री संघतणो मनोरथ पुरी ॥१॥  
शान्तराग वागा समार मनुत्तरिण्यो । महामोह विभ्रंसनी । दिनकरानुकारिणी । क्रोधाग्नि दावानलोपशामिनीमुक्तिमार्ग  
प्रकाशिनी । सर्व जन बिच सम्मोहकारिणी । प्रागमोदगारिणी शीतराग वाणी ॥२॥

विशेष प्रतीसय निधान सकलगुणप्रधान मोहोपकारविधेदन भानु त्रिभुवन सकलसंदेह छेदक । अखेय अभेद  
प्राणिवगुण हृदय भेदक अननानंत विज्ञान इसिउं अपनुं वेवलज्ञान ॥३॥

अन्तिम पाठ—

अथस्त्री गुणा— १ कुलीना २. शीलवती ३. विवेकी ४. दानसीला ५. कीर्त्तवती ६. विज्ञानवती ७.  
गुणप्राहणी ८. उपकारिणी ९. कृतज्ञा १०. धर्मवती ११. सौत्साहा १२. संभवभवा १३. क्लेशसही १४. अनुपतापीनी  
१५. सुपात्र मर्षार १६. जिनेन्द्रिया १७. संसूहा १८. प्रत्याहारा १९. अलंशला २०. अल्पनिद्रा २१. मितभाषिणी  
२२. चित्तज्ञा २३. जातरौषा २४. अलोभा २५. विनयवती २६. मरुता २७. सौभाग्यवती २८. सूचिवैवा २९.  
शुपाश्रया ३०. प्रमत्तगुर्वा ३१. मुप्रमाणशरीर ३२. मूलवणवती ३३. स्नेहवती । इतियोदगुणा ।

इति सभाशृङ्गार सपूर्णा ॥

प्रवाश्रय सख्या १००० संवत् १७३१ वर्षमास कार्तिक मृदी १४ वार सोमवारे लिखतं रूपविजयेम ॥

स्त्री पुत्रयो के विभिन्न लक्षण, कलाप्रो के लक्षण एवं सुभाषित के रूप मे विविध बातें दी हुई है ।

३५२६ सभाशृङ्गार..... । पत्र सं० २८ । प्र० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।  
२० काल × । ले० काल सं० १७३२ । पूर्ण । वे० सं० ७६४ । अ. भण्डार ।

३५२७. संबोधसत्ताणु—वीरचंद्र । पत्र सं० ११ । प्र० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७५६ । अ. भण्डार ।

प्रारम्भ—

परम पुरुष पद मन धरी, समरी सार नोकार ।  
परमारथ पण पवणशुं, संबोधसत्ताणु बीसार ॥१॥  
प्राधि अनादि ते प्रात्मा, अडवञ्जु ऐहप्रनिवार ।  
धर्म विद्वणो जीवणो, वापटु पंथो ये संसार ॥२॥

अन्तिम—

सूरी श्री विद्यानंदी जयो श्रीमङ्गिभूषण मुनिचंद्र ।  
तसपरि माहि मानिलो, गुरु श्री लक्ष्मीचन्द्र ॥ ६६ ॥

तेह कुले कमल दीवसगती जयन्ती जती वीरचंद ।

सुगता भगता ए भावना पीमीये परमानन्द ॥६७॥

इति श्री वीरचंद विरचिते संबोधमत्तप्रणुदुष्मा संपूर्ण ।

३५२८. सिन्दूरप्रकरण—सोमप्रभाचार्य । पत्र सं० ६ । मा० ६३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × १० काल × १ पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २१७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । सोमसागर के शिष्य कीर्त्तिसागर ने खला मे प्रतिलिपि की थी ।

३५२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ मे २७ । ले० काल सं० १६०३ । प्रपूर्ण । वे० सं० २००६ । ट भण्डार ।

विशेष—हर्षकीर्त्ति मूरि कृत मंस्कृत व्याख्या सहित है ।

अन्तिम— इति सिन्दूर प्रकरणव्यस्य व्याख्याणा हर्षकीर्त्तिभिः मूरिभिर्विहितायात ।

३५३०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ मे ३४ । ले० काल सं० १८७० श्रावण बुदी १२ । प्रपूर्ण । वे० सं० २०१६ । ट भण्डार ।

विशेष—हर्षकीर्त्ति मूरि कृत मंस्कृत व्याख्या सहित है ।

३५३१. सिन्दूरप्रकरणभाषा—जनारसीदाम । पत्र सं० २६ । मा० १०३×४ इंच । भाषा हिन्दी ।

विषय—सुभाषित । २० काल सं० १६६१ । ले० काल सं० १८५२ । पूर्ण । वे० सं० ८५६ ।

विशेष—सदामुख भावना मे प्रतिलिपि की थी ।

३५३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × १ वे० सं० ७१८ । क भण्डार ।

इसी भण्डार मे १ प्रति ( वे० सं० ७१७ ) और है ।

३५३३. सिन्दूरप्रकरणभाषा—सुन्दरदास । पत्र सं० २०७ । मा० १२×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—सुभाषित । २० काल सं० १६२६ । ले० काल सं० १६३६ । पूर्ण । वे० सं० ७६६ । क भण्डार ।

३५३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ मे ३० । ले० काल सं० १६३७ सावन बुदी ६ । वे० सं० ८२३ । क भण्डार ।

विशेष—भाषाकार बधावर के रहने वाले थे । बाद मे ये मालवदेश के इन्नावतिपुर मे रहने लगे थे ।

इसी भण्डार मे ३ प्रतिमा ( वे० सं० ७६८, ८२४, ८५७ ) और है ।

३५३५. सुगुरुशतक—जिनदास गोधा । पत्र सं० ४ । मा० १०३×५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—सुभाषित । २० काल सं० १८५२ चैत्र बुदी ८ । ले० काल सं० १६३७ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ८१० । क भण्डार ।

३५३६. सुभाषितमुक्तावली ' ' । पत्र सं० २६ । भा० ६×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २२६७ । अ मण्डार ।

३५३७ सुभाषितरत्नमन्दोह—आ० अमितिगति । पत्र सं० ५४ । भा० १०×३<sup>३</sup> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल सं० १०५० । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १८६६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वै० सं० २६ ) और है ।

३५३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १८२६ भादवा सुदी १ । वै० सं० ८२१ । क मण्डार ।

विशेष—संघामपुर में महाचन्द्र ने प्रतिनिधि की थी ।

३५३९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ में ४९ । ले० काल सं० १८६२ आसोज सुदी १४ । अपूर्ण । वै० सं० ८७९ । क मण्डार ।

३५४०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १९१० कार्तिक सुदी १३ । वै० सं० ४२० । च मण्डार ।

विशेष—हाथीराम खिन्दूका के पुत्र मोतीलाल ने स्वपठनार्थ पाठ्या नाथूलाल से पार्वनाथ मंदिर में प्रतिलिपि करवाई थी ।

३५४१. सुभाषितरत्नमन्दोहभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १८८ । भा० १२<sup>३</sup>×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सुभाषित । २० काल सं० १९३३ । ले० काल × । वै० सं० ८१८ । क मण्डार ।

विशेष—पहले मोतीलाल ने १८ अधिकार की रचना की फिर पन्नालाल ने भाषा की ।

इसी मण्डार में ४ प्रतियाँ ( वै० सं० ८१९, ८२०, ८१६, ८१६ ) और है ।

३५४२. सुभाषितार्णव—शुभचन्द्र । पत्र सं० ३८ । भा० १२×५<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १७८७ माह सुदी १५ । पूर्ण । वै० सं० २१ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र फटा हुआ है । क्षेमकीर्ति के शिष्य मोहन ने प्रतिलिपि की थी ।

अ मण्डार में १ प्रति ( वै० सं० १९७९ ) और है ।

३५४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वै० सं० २३१ । ख मण्डार ।

इसी मण्डार में २ प्रतियाँ ( वै० सं० २३०, २९८ ) और है ।

३५४४. सुभाषितसंग्रह ..... । पत्र सं० ३१ । भा० ८×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १८८३ बैशाल सुदी ५ । पूर्ण । वै० सं० २१०२ । अ मण्डार ।

विशेष—नैणवा नगर में भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति के शिष्य विद्वान रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

तेह कुले कमल दीवसपती जयन्ती जती वीरचंद ।

सुरता भगता ए भावना पीमीये परमानन्द ॥६७॥

इति श्री वीरचंद विरचिते संबोधमत्ताणुदुष्ठा संपूर्ण ।

३५२८. सिन्दूरप्रकरण—सोमप्रभाचार्य । पत्र सं० ६ । प्रा० ६१×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
मुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २१७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । शेमसागर के शिष्य कीर्त्तिसागर ने खळा में प्रतिलिपि की थी ।

३५२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ से २७ । ले० काल सं० १६०३ । अपूर्ण । वे० सं० २००६ । ट  
भण्डार ।

विशेष—हर्षकीर्त्ति सूरि कृत संस्कृत व्याख्या सहित है ।

प्रतिम— इति सिन्दूर प्रकरणख्यम्य व्याख्याया हर्षकीर्त्तिभिः सूरिभिर्विहितायात ।

३५३०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ से ३४ । ले० काल सं० १८७० । भावण मुदी १२ । अपूर्ण । वे०  
सं० २०१६ । ट भण्डार ।

विशेष—हर्षकीर्त्ति सूरि कृत संस्कृत व्याख्या सहित है ।

३५३१. सिन्दूरप्रकरणभाषा—बनारसीदाम । पत्र सं० २६ । प्रा० १०१×४३ । भाषा हिन्दी ।

विषय—मुभाषित । २० काल सं० १६६१ । ले० काल सं० १८५२ । पूर्ण । वे० सं० ८५६ ।

विशेष—सदासुख भावना ने प्रतिलिपि की थी ।

३५३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० ७१८ । च भण्डार ।

इसी भण्डार में १ प्रति ( वे० सं० ७१७ ) और है ।

३५३३. सिन्दूरप्रकरणभाषा—सुन्दरदास । पत्र सं० २०७ । प्रा० १२×४३ इच्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—मुभाषित । २० काल सं० १६२६ । ले० काल सं० १६३६ । पूर्ण । वे० सं० ७६६ । क भण्डार ।

३५३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ३० । ले० काल सं० १६३७ सावन बुदी ६ । वे० सं० ८२३ ।

क भण्डार ।

विशेष—भाषाकार बधावर के रहने वाले थे । बाद में ये मालवदेश के इंदावतपुर में रहने लगे थे ।

इसी भण्डार में ३ प्रतिषा ( वे० सं० ७६८, ८२४, ८५७ ) और है ।

३५३५. सुगुरुशतक—जिनदास गोधा । पत्र सं० ४ । प्रा० १०३×५ इच्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—मुभाषित । २० काल सं० १८५२ चैत्र बुदी ८ । ले० काल सं० १६३७ कार्तिक मुदी १३ । पूर्ण । वे० सं०  
८१० । क भण्डार ।

३५३६. सुभाषितमुक्तावली : ... । पत्र सं० २६ । आ० ६×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । १० काल × । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वै० सं० २२६७ । अ भण्डार ।

३५३७ सुभाषितरत्नमन्दाह—आ० अमितिगति । पत्र सं० ५४ । आ० १०×३ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । १० काल सं० १०५० । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वै० सं० १८६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० २६ ) और है ।

३५३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १८२६ भादवा सुदी १ । वै० सं० ८२१ । क भण्डार ।

विशेष—संघामपुर में महाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३५३९ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ से ४६ । ले० काल सं० १८६२ आसोज बुदी १४ । अपूर्णा । वै० सं० ८७६ । क भण्डार ।

३५४०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १९१० कार्तिक बुदी १३ । वै० सं० ४२० । च भण्डार ।

विशेष—हाथीराम सिन्दूका के पुत्र मोतीलाल ने स्वयंउनाथ पाठ्या नाथूलाल से पारवनाथ मंदिर में प्रतिलिपि करवाई थी ।

३५४१. सुभाषितरत्नमन्दाहभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १८८ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सुभाषित । १० काल सं० १९३३ । ले० काल  $\times$  । वै० सं० ८१८ । क भण्डार ।

विशेष—पहले भोलीलाल ने १८ अक्षिकार की रचना की फिर पन्नालाल ने भाषा की ।

इसी भण्डार में ४ प्रतियां ( वै० सं० ८१६, ८२०, ८१६, ८१६ ) और हैं ।

३५४२. सुभाषितार्णव—शुभचन्द्र । पत्र सं० ३८ । आ० १२×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । १० काल  $\times$  । ले० काल सं० १७८७ माह सुदी १५ । पूर्ण । वै० सं० २१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र फटा हुआ है । क्षेमकीर्ति के शिष्य मोहन ने प्रतिलिपि की थी ।

अ भण्डार में १ प्रति ( वै० सं० १९७६ ) और है ।

३५४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल  $\times$  । वै० सं० २३१ । ख भण्डार ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां ( वै० सं० २३०, २६८ ) और हैं ।

३५४४. सुभाषितसंग्रह..... । पत्र सं० ३१ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । १० काल  $\times$  । ले० काल सं० १८४३ बैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वै० सं० २१०२ । अ भण्डार ।

विशेष—नैणवा नगर में भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति के शिष्य विद्वान रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।



इसी भण्डार में १ प्रति पूर्ण ( वै० सं० २२५६ ) तथा २ प्रतिमां अपूर्ण ( वै० सं० १६६६, १६८० )

घोर हैं ।

३५४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वै० सं० ८८२ । ङ भण्डार ।

३५४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वै० सं० १४४ । छ भण्डार ।

३५४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १६३ । अ भण्डार ।

३५४८. सुभाषितसंग्रह ..... पत्र सं० ४ । आ० १०×४५ इंच । भाषा—संस्कृत प्राकृत । विषय—  
सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ८६२ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में टब्बा टीका दी हुई है । यति कर्मवन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३५४९. सुभाषितसंग्रह ..... पत्र सं० ११ । आ० ७×५ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—  
सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २११४ । अ भण्डार ।

३५५०. सुभाषितावली—सकलकीर्ति । पत्र सं० ५२ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १७४८ मंगसिर मुदी ६ । पूर्ण । वै० सं० १८५ । अ भण्डार ।

विशेष—लिखितमिदं चौबे रूपसी खीवसी ग्रामत ज्ञाति सनावद वरगुहटा मध्ये । लिखायत पहाड्या  
मयाचंद । सं० १७४८ वर्षे मार्गशीर्ष शुक्ला ६ रविवारसे ।

३५५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८०२ पीप मुदी १ । वै० सं० २२८ । अ  
भण्डार ।

विशेष—मालपुरा ग्राम में पं० नोनिध ने स्वरठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३५५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १६०२ पीप मुदी १ । वै० सं० २२७ । अ  
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६०२ समये पीप मुदी २ शुक्लवासरे श्रीमूनमये बलात्कारगणे मरस्वतीगच्छे कुंदकुदाचार्यान्वये  
भट्टारक श्री पद्मनदिदेवा. तत्तट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवाः तत्तट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा. तदाम्नाये मडलाचार्य श्री  
सिहन्निदेवाः तत्तट्टे मडलाचार्य श्रीधर्मकीर्तिदेवाः तत्तट्टे गणेश्वरी वंजागुजतधारिणी कीर्तिस्वोसिरि तत्तट्टे गणेश्वरी  
उदईसिरि पठनार्थं अग्रोतकान्वये मित्तलगात्रे साधु श्रीधाने भार्या रपवा तयो पुत्रा. त्रयाः प्रथमपुत्र साधु श्री रङ्गमल  
भार्या पदारथ । द्वितीय पुत्र चाङ्गमल भार्या अजैसिरि तयोः पुत्र परात । तृतीयपुत्र तत्पवपु क्रियाप्रतिपालकात् ऐकाददा  
प्रतिमा धारकान जिनशामन समुद्ररणाधीरात् साधु श्री कोडवा भार्या साध्वी परिमल तयो इदं ग्रन्थं लिखायति कर्मक्षय  
निमित्तं । लिखितंकायस्थगोडान्वयश्रीकेशव तत्पुत्र गनेस ॥

३५५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६४७ माघ सुदी । वे० सं० २३५ । अ  
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

भट्टारक श्रीमकलकीर्तिविरचिते सुभाषितरत्नावलीग्रन्थसमाप्तः । श्रीमच्छ्रीपद्मसागरमूर्तिविजयराज्ये संवत्  
१६४७ वर्ष माघमासे शुक्लपक्षे शुद्धवासरे लीपीकृतं श्रीमुनि सुभ्रमस्तु । लेखक पाठकयो ।

संवत्सरे पृथ्वीमुनीयतीन्द्रमिते ( १७७७ ) माघशितदशम्यां मालपुरेमध्ये श्रीआदिनाथचैत्यालये शुद्धी-  
कृतोऽयं सुभाषितरत्नावलीग्रन्थ पांडेश्रीतुलसीदासस्य शिष्येण त्रिलोकचंद्रेण ।

अ भण्डार मे ४ प्रतिया ( वे० सं० २८१, ७८७, ७८८, १८६४ ) और है ।

३५५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० ८१३ । क भण्डार ।

इसी भण्डार मे १ प्रति ( वे० सं० ८१४ ) और है ।

३५५५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १८४६ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० २३३ । ख भण्डार

विशेष—पं० माणकचन्द की प्रेरणा मे पं० स्वरूपचन्द ने पं० कपूरचन्द मे जवनपुर ( जोबनेर ) मे  
प्रतिलिपि कराई ।

३५५६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १६०१ चैत्र सुदी १३ । वे० सं० ८७४ । क  
भण्डार ।

विशेष—श्री पाल्हा बाकलीवाल ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे ५ प्रतियां ( वे० सं० ८७३, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८ ) और हैं ।

३५५७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १७६५ आमोव सुदी ८ । वे० सं० २६५ । छ  
भण्डार ।

३५५८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १६०४ माघ बुदी ४ । वे० सं० ११४ । ज  
भण्डार ।

३५५९. प्रति सं० १० । पत्र सं० ३ से ३० । ले० काल सं० १६३५ वैशाख सुदी १५ । अपूर्ण । वे०  
सं० २१३४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम २ पत्र नहीं है । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

३५६०. सुभाषितावली..... पत्र सं० २१ । आ० ११३५५३ इ. आ. भाषा—संस्कृत । विषय—  
सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १८१८ । पूर्ण । वे० सं० ४१७ । च भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ दीवान संगही जानचन्दजी का है ।

च भण्डार मे २ प्रतियां ( वे० सं० ४१८, ४१९ ) अ भण्डार में २ अपूर्ण प्रतिया ( वे० सं० ६३५, १२०१ ) तथा ट भण्डार १ ( वे० सं० १०८१ ) अपूर्ण प्रति धीर है ।

३५६१. सुभाषितावलीभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १०६ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१२ । क भण्डार ।

३५६२. सुभाषितावलीभाषा—दूलीचन्द्र । पत्र सं० १३१ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल सं० १६३१ ज्येष्ठ सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८८० । क भण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० ८८१ ) धीर है ।

३५६३. सुभाषितावलीभाषा..... । पत्र सं० ४५ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १८६३ प्र० आषाढ सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ११ । क भण्डार ।

विशेष—५०५ दोहे है ।

३५६४. सूक्तिमुक्तावली—सोमप्रभाचार्य । पत्र सं० १७ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसका नाम सुभाषितावली भी है ।

३५६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १६८४ । वे० सं० ११७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६८४ वर्षे श्रीकाष्ठसंधे नदीतटगच्छे विद्यागणे भ० श्रीरामसेनान्वये तत्पट्टे भ० श्री विश्वभूषणे तत्पट्टे भ० श्री यश.कीर्ति ब्रह्म श्रीमेघराज तत्शिष्यब्रह्म श्री करमसी स्वयमेव हस्तेन लिखितं पठनार्थं ।

अ भण्डार मे ११ प्रतिया ( वे० सं० १६५, ३३४, ३४८, ६३०, ७६१, ३७६, २०१०, २०४७, १३४८, २०३३, ११६३ ) धीर है ।

३५६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६३४ सावन सुदी ८ । वे० सं० ८२२ । क भण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० ८२४ ) धीर है ।

३५६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १७७१ आसोज सुदी २ । वे० सं० २३४ । क भण्डार ।

विशेष—ब्रह्मचारी खेतसी पठनार्थं मालपुरा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३५६८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० २२६ । क भण्डार ।

विशेष—दीवान आरतराम खिबूका के पुत्र कुंवर बलतराम के पठनार्थं प्रतिलिपि की गई थी । यशर मोटे एवं सुन्दर है ।

इसी भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतिया ( वे० सं० २३२, २६८ ) धीर है ।

३५६६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २ मे २२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका मिलित है ।

क भण्डार में ३ अपूर्ण प्रतिया ( वे० सं० ८८३, ८८४, ८८५ ) श्रीर है ।

३५७०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १६०१ प्र० श्रावण बुदी ५५ । वे० सं० ४२१ ।

घ भण्डार ।

इसी भण्डार में २ प्रतिया ( वे० सं० ४२२, ४२३ ) श्रीर है ।

३५७१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १७६६ भाद्रवा बुदी ६ । वे० सं० १०३ । छ

भण्डार ।

विशेष—रेनवाल में ऋषभनाथ चैत्यालय में आचार्य ज्ञानकीर्ति के शिष्य सेवल ने प्रतिनिधि की थी ।

इसी भण्डार में ( वे० सं० १०३ ) में ही ४ प्रतिया श्रीर है ।

३५७२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८६२ पीष मुदी २ । वे० सं० १८३ । ज

भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टिप्पा टीका सहित है ।

इसी भण्डार में १ प्रति ( वे० सं० ३६ ) श्रीर है ।

३५७३. प्रति सं० १० । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १७६७ आश्विन मुदी ८ । वे० सं० ८० । झ

भण्डार ।

विशेष—आचार्य क्षेमकीर्ति ने प्रतिनिधि की थी ।

इसी भण्डार में ३ प्रतिया ( वे० सं० १६५, २८६, ३७७ ) तथा ट भण्डार में २ अपूर्ण प्रतिया ( वे० सं० १६६४, १६३१ ) श्रीर है ।

३५७४. सूक्तावली..... । पत्र सं० ९ । प्रा० १०×४, इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।

२० काल × । ले० काल सं० १८६४ । पूर्ण । वे० सं० ३४७ । अ भण्डार ।

३५७५. स्फुटश्लोकसंग्रह ... । पत्र सं० १० मे २० । प्रा० ६×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १८८३ । अपूर्ण । वे० सं० २५७ । क भण्डार ।

३५७६. स्वरोदय—रनजीतदास (चरनदास) । पत्र सं० २ । प्रा० १३३×६ इंच । भाषा—हिन्दी ।

सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१५ । अ भण्डार ।

३५७७. हिनोपदेश—विष्णुशर्मा । पत्र सं० ३६ । प्रा० १२२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

नीति । २० काल × । ले० काल सं० १८७३ सावन मुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ८५४ । क भण्डार ।

विशेष—माणिक्यचन्द ने कुमार ज्ञानचंद्र के पठनार्थ प्रतिनिधि की थी ।

३४६ ]

[ सुभाषित एवं नीकशास्त्र

३५७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० २४६ । अ भण्डार ।

३५७९. द्वितीयदेशभाषा ' ... । पत्र सं० २६ । भा० ८×५ इत्थ । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१११ । अ भण्डार ।

३५८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८६ । ले० काल × । वे० सं० १८६२ । ट भण्डार ।



## विषय-मन्त्र-शास्त्र



३५८१ इन्द्रजाल..... पत्र सं० २ मे ४२ । आ० ८३'×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-तन्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १७७८ वैशाख सुदी ६ । अपूर्णा । वै० सं० २०१० । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र १६ पर गुणिका—

इति श्री राजाधिराज गोख साव वंश केसरीसिंह समाहितेन मनि मंडन मिश्र विरचिते पुरंदरमाया नाम ग्रन्थ बद्धित स्वामिका का माया ।

पत्र ४२ पर—इति इन्द्रजाल समाप्त ।

कई मुसबे तथा बशीकरण आदि भी हैं । कई कौतूहल की सी बातें हैं । मंत्र संस्कृत में हैं अजमेर में प्रतिनिधि हुई थी ।

३५८२ कर्मदहनत्रयमन्त्र..... पत्र सं० १० । आ० १०'×५' इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्र शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १६३६ भाद्रपदा सुदी ६ । पूर्ण । वै० सं० १०४ । छ भण्डार ।

३५८३ क्षेत्रपालमंत्र..... पत्र सं० ४ । आ० ८'×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १६०६ मगसिर सुदी ७ । पूर्ण । वै० सं० १९३७ । अ भण्डार ।

विशेष—सरस्वती तथा चौमठ योगिनीस्तोत्र भी अद्यावत् दृश्य हैं ।

३५८४ प्रति स० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल . । वै० सं० ३८ । ख भण्डार ।

३५८५ प्रति स० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६६६ । वै० सं० २८२ । अ भण्डार ।

विशेष—चक्रेश्वरी मंत्र भी है ।

३५८६ घटाकर्णकल्प..... पत्र सं० ५ । आ० १२'×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १६२२ । अपूर्ण । वै० सं० ४५ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र पर पुरुषाकार खड्गासन चित्र है । ५ यंत्र तथा एक घटा चित्र भी है । जिसमें तीन घण्टे दिये हुये हैं ।

३५८७ घटाकर्णमन्त्र..... पत्र सं० ५ । आ० १२'×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १६२५ । पूर्ण । वै० सं० ३०३ । ख भण्डार ।

३५८८. घंटाकर्णवृद्धिकल्प..... पत्र सं० ६ । आ० १०३×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १६१३ बैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १५ । घ भण्डार ।

३५८९. चतुर्विंशत्यह्नविधान..... पत्र सं० ३ । आ० ११२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६६ । अ भण्डार ।

३५९०. चिन्तामणितोत्र..... पत्र सं० २ । आ० ८१×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८७ । झ भण्डार ।

विशेष—चक्रेश्वरी स्तोत्र भी दिया हुआ है ।

३५९१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० २४५ । ब्य भण्डार ।

३५९२. चिन्तामणियन्त्र..... पत्र सं० ३ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-यन्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २६७ । ख भण्डार ।

३५९३. चौसठयोगिनीस्तोत्र..... पत्र सं० १ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया ( वे० सं० ११८७, ११९६, २०६४ ) और है ।

३५९४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल सं० १८८३ । वे० सं० ३६७ । ब्य भण्डार ।

३५९५. जैनगायत्रीमन्त्रविधान..... पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६० । ख भण्डार ।

३५९६. रामोकारकल्प..... पत्र सं० ४ । आ० ८१×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १६४६ । पूर्ण । वे० सं० २८८ । झ भण्डार ।

३५९७. रामोकारकल्प..... पत्र सं० ६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १६०८ । पूर्ण । वे० सं० ३५५ । अ भण्डार ।

३५९८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २७४ । ख भण्डार ।

३५९९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६६५ । वे० सं० २३२ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी मे मन्त्रसाधन की विधि एवं फल दिया हुआ है ।

३६००. रामोकारपैतृसी..... पत्र सं० ४ । आ० १२×५ इंच । भाषा-प्राकृत व पुरानी हिन्दी । विषय-मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३५ । छ भण्डार ।

३६०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १२५ । च भण्डार ।

३६०२. नमस्कारमन्त्र कल्पविधिसहित—सिंहनम्बि । पत्र सं० ४५ । घा० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । १० काल × । ले० काल सं० १६२१ । पूर्ण । वे० सं० १६० । अ भण्डार ।

३६०३. नमस्कारकल्प ..... । पत्र सं० ६ । घा० ६×४१ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६ । अ भण्डार ।

विशेष—घसरो की स्याही मिट जान मे पढने मे नही आता है ।

३६०४. पञ्चदश (१५) यन्त्र की विधि ..... । पत्र सं० २ । घा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । १० काल × । ले० काल सं० १६७६ फागुण बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० २४ । अ भण्डार ।

३६०५. पञ्चावतीकल्प ..... । पत्र सं० २ मे १० । घा० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । १० काल × । ले० काल सं० १६८२ । अ पूर्ण । वे० सं० १३३६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रणस्ति— संवत् १६८२ आसाढगलपुरे श्री मूलमधसूरि देवद्वकीसिम्नंदनेवासिभराचार्य श्री हर्षकीर्तिभिरिदमलवि । चिन्हें नंबतु पुस्तकम् ।

३६०६. बाजकोश ..... । पत्र सं० ६ । घा० १२×५ । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३५ । अ भण्डार ।

विशेष—संग्रह ग्रन्थ है । दूसरा नाम मातृका निर्घट भी है ।

३६०७. भुवनेश्वरीस्तोत्र ( सिद्ध महामन्त्र )—पृथ्वीधराचार्य । पत्र सं० ६ । घा० ६१×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६७ । अ भण्डार ।

३६०८. भूवल ..... । पत्र सं० ८ । घा० ११ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । अ पूर्ण । वे० सं० २६८ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्रथम पद्य मे 'अथातः सप्रवक्ष्यामि भूवलानि समासतः' आये हुये भूवल के आधार पर ही लिखा गया है ।

३६०९. भैरवपञ्चावतीकल्प—मल्लिधरा सूरि । पत्र सं० ०४ । घा० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५० । अ भण्डार ।

विशेष—३७ वं एवं विधि सहित है ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां ( वे० सं० ३२२, १२७६ ) भी हैं ।

३६१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४६ । ले० काल सं० १७६३ वैशाख बुदी १३ । वे० सं० ५६५ ।

अ भण्डार ।



विशेष—प्रति सचित्र है ।

इसी भण्डार में १ अपूर्ण सचित्र प्रति ( वे० सं० ५६३ ) और है ।

३६११. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल  $\times$  । वे० सं० ५७५-। छ भण्डार ।

३६१२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १८८८ चैत बुदी .... । वे० सं० २६६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में १ प्रति संस्कृत टीका सहित ( वे० सं० २७० ) और है ।

३६१३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १३ । ले० काल  $\times$  । वे० सं० १६३६ । ट भण्डार ।

विशेष—बीजाक्षरों में ३६ यंत्रों के चित्र हैं । यत्रविधि तथा मंत्रों सहित है । संस्कृत टीका भी है ।

पत्र ७ पर बीजाक्षरों में दोनो ओर दो त्रिकोण यन्त्र तथा विधि दी हुई है । एक त्रिकोण में आभूषण पहिने खड़े हुये नमन स्त्री का चित्र है जिसमें जगह २ अक्षर लिखे हैं । दूसरी ओर भी ऐसा ही नमन चित्र है । यत्रविधि है । ३ में ६ व ६ में ६ तक यत्र नहीं है । १-२ पत्र पर यत्र मंत्र सूची दी है ।

३६१४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८७ में ५७ । ले० काल सं० १८१७ ज्येष्ठ सुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० १६३७ । ट भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में परं चोखचन्द के गिफ्टा मुल्दराम ने प्रतिनिधि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति अपूर्ण ( वे० सं० १६३६ ) और है ।

३६१५. भैरवपद्मावलीकल्प ... । पत्र सं० ४० । आ० ६ $\times$ ८ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-मन्त्र शास्त्र । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वे० सं० ५७४ । छ भण्डार ।

३६१६ मन्त्रशास्त्र ... । पत्र सं० ८ । आ० ८ $\times$ ५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-मन्त्रशास्त्र । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वे० सं० ५३१ । च भण्डार ।

विशेष—निम्न मन्त्रों का संग्रह है ।

१. चौकी नाहरमिह की २. कामगु विधि ३. यत्र ४. हनुमान मंत्र ५. टिट्टी का मन्त्र ६. पर्माता भूत व चुडेल का ७. यत्र देवदल का ८. हनुमान का यन्त्र ९. सर्पाकार यन्त्र तथा मन्त्र १०. सर्वकाम सिद्धि यन्त्र ( चारो कोनों पर ओर-दुग्जेब का नाम दिया हुआ है ) ११. भूत डाकिली का यन्त्र ।

३६१७. मन्त्रशास्त्र ... । पत्र सं० १७ में २७ । आ० ६ $\frac{१}{२}$  $\times$ ५ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्र शास्त्र । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । अपूर्ण । वे० सं० ५८४ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतिया ( वे० सं० ५८५, ५८६ ) और है ।

३६१८. मन्त्रमहोदधि—पं० महीधर । पत्र सं० १२० । आ० ११<sup>५</sup>×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १८३८ माघ सुदी २ । पूर्णा । वै० सं० ६१६ । अ भण्डार ।

३६१९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वै० सं० ५८३ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्नपूर्णा नाम का मन्त्र है ।

३६२०. मन्त्रसंग्रह ..... । पत्र सं० फुटकर । आ० ..... । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्र । २० काल  
× । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५६८ । अ भण्डार ।

विशेष—करीब ११५ यन्त्रों के चित्र है । प्रतिष्ठा आदि विधानों में काम आने वाले चित्र है ।

३६२१. महाविद्या ( मन्त्रों का संग्रह ) ..... । पत्र सं० २० । आ० ११<sup>३</sup>×५ इंच । भाषा—  
संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ७९ । अ भण्डार ।

विशेष—रचना जैन कवि कृत है ।

३६२२. यज्ञिणीकल्प ..... । पत्र सं० १ । आ० १२×५<sup>१</sup> इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय मन्त्र  
शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६०५ । अ भण्डार ।

३६२३. यंत्र मंत्रविधिवल ..... । पत्र सं० १५ । आ० ६<sup>३</sup>×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—मन्त्र  
शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० १६६६ । अ भण्डार ।

विशेष—६२ यंत्र मन्त्र सहित दिये हुये हैं । कुछ यन्त्रों के खाली चित्र दिये हुये हैं । मन्त्र बीजाक्षरों  
में हैं ।

३६२४. बर्द्धमानविद्याकल्प—सिंहतिलक । पत्र सं० ६ से २६ । आ० १०<sup>३</sup>×४ इंच । भाषा—संस्कृत  
हिन्दी । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १४९५ । अपूर्णा । वै० सं० १९९७ । अ भण्डार ।

विशेष—१ से ५, ७, १०, १५, १६, १९ से २१ पत्र नहीं है । प्रति प्राचीन एवं जोर्ण है ।

नवे पृष्ठ पर— श्री विबुधचन्द्रगणभुछिष्यः श्रीमहतिवकमूरि रिमासाङ्गादेवतोन्बलविशदमनालिखत  
वात्कल्पं ॥९६॥ इति श्रीसिंहतिलक मूरिकृते बर्द्धमानविद्याकल्पः ॥

हिन्दी गद्य उदाहरण— पत्र न पंक्ति ५—

जाइ पुष्प सहस्र १२ जात । मृगल गज बीस सहस्र ॥१२॥ होम कीजइ विद्यालाभ हुई ।

पत्र न पंक्ति ९— ओ कुरु कुरु कामाख्यादेवी कामइ आवीज २ । जग मन मोहनी मूर्ती बइठी उठी  
जगमण हाथ जोडिकरि साम्ही आवइ । माहरी भक्ति गुरु की शक्ति बायदेवी कामाख्या माहरी शक्ति आकाषि ।

पृष्ठ २४— अन्तिम मुद्रिका— इति बर्द्धमानविद्याकल्पस्तुतीयाधिकारः ॥ ग्रन्थाग्रन्थ १७५ अक्षर १६  
सं० १४९५ वर्षे सगररूपशालाया अणुहल्लपाटकरपर्याये श्री रत्नमहानगरैज्जलि ।

पत्र २५— गुटिकाप्रो के चमत्कार है। दो स्तोत्र हैं। पत्र २६ पर मालिकेर कल्प विद्या है।

३६२५. विजययन्त्रविधान.....। पत्र सं० ७। मा० १०३×५ ड'च। भाषा—संस्कृत। विषय—मन्त्रशास्त्र। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५००। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिद्या ( वे० सं० ५६५, ५६६ ) तथा च भण्डार मे १ प्रति ( वे० सं० ३३१ ) श्रीर है।

३६२६. विद्यानुशासन.....। पत्र सं० ३७०। मा० ११×५३ ड'च। भाषा—संस्कृत। १० काल ×। ले० काल सं० १६०६ प्र० भादवा बुदी २। पूर्ण। वे० सं० ६५६। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ सम्बन्धित यन्त्र भी है। यह ग्रन्थ छोटीलालजी ठोलिया के पठनार्थ प० मांतीलालजी के द्वारा हीरालाल कासलीवाल से प्रतिलिपि कराई। पारिश्रमिक २४।-) लगा।

३६२७. प्रति सं० २। पत्र सं० २५५। ले० काल सं० १६३३ मगसिर बुदी ५। वे० सं० ६५। घ भण्डार।

विशेष—गङ्गाबक्स ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी।

३६२८. यंत्रसंग्रह.....। पत्र सं० ७। मा० १३३×६३ ड'च। भाषा—संस्कृत। विषय—मन्त्रशास्त्र। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५४५। अ भण्डार।

विशेष—लगभग ३५ यन्त्रों का संग्रह है।

३६२९. षट्कर्मकथन.....। पत्र सं० ३। मा० १०३×५ ड'च। भाषा—संस्कृत। विषय—मन्त्रशास्त्र। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१०३। ट भण्डार।

विशेष—मन्त्रशास्त्र का ग्रन्थ है।

३६३०. सरस्वतीकल्प.....। पत्र सं० २। मा० ११३×६ ड'च। भाषा—संस्कृत। विषय—मन्त्रशास्त्र। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७७०। क भण्डार।



## विषय-कामशास्त्र

३६३१. कोकशास्त्र ..... पत्र सं० ९ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कोक । २० काल × १० काल सं० १००३ । पूर्ण । वे० सं० १९५९ । ट भण्डार ।

विशेष—निम्न विषयो का वर्णन है ।

द्रावगविधि, स्तम्भनविधि, बाजीकरण, स्तूलीकरण, गर्भधान, गर्भस्तम्भन, मुखप्रसव, पुष्पाधिनिवारण, योनिमन्त्रादि आदि ।

३६३२. कोकसार ..... पत्र सं० ७ । आ० ९×६३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कामशास्त्र । २० काल × १० काल × अपूर्ण । वे० सं० १२९ । छ भण्डार ।

३६३३. कोकसार—आनन्द । पत्र सं० ५ । आ० १३३×६३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कामशास्त्र । २० काल × १० काल × अपूर्ण । वे० सं० ८९६ । अ भण्डार ।

३६३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × अपूर्ण । वे० सं० ३६ । ख भण्डार ।

३६३५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल × वे० सं० २९४ । झ भण्डार ।

३६३६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १७३९ प्र० चैत्र सुदी ५ । वे० सं० १५५२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति जोड़ी है । जट्टू व्यास ने नरायणा मे प्रतिलिपि की थी ।

३६३७. कामसूत्र—कविहाल । पत्र सं० ३२ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-कामशास्त्र । २० काल × १० काल × पूर्ण । वे० सं० २०५ । ख भण्डार ।

विशेष—इममे कामसूत्र की गायत्रे दी हुई है । इसका दूसरा नाम सत्सम्प्रसमत्त भी है ।



## विषय-शिल्प-शास्त्र



३६३८. विम्बनिर्माणविधि.....। पत्र सं० ९। आ० ११३×७३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-शिल्पशास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३३। क भण्डार।

३६३९. विम्बनिर्माणविधि.....। पत्र सं० ९। आ० ११×७३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-शिल्पशास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३४। क भण्डार।

३६४०. विम्बनिर्माणविधि.....। पत्र सं० ३६। आ० ८३×६३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-शिल्पकला [प्रतिष्ठा]। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४७। च भण्डार।

विशेष—कापी साइज है। पं० कस्तूरचन्दजी साहू द्वारा लिखित हिन्दी ग्रंथ सहित है। प्रारम्भ में ३ पंक्तों की भूमिका है। पत्र १ से २५ तक प्रतिष्ठा पाठ के श्लोकों का हिन्दी अनुवाद किया गया है। श्लोक ६१ तः। पत्र २६ से ३६ तक विम्ब निर्माणविधि भाषा दी गई है। इसी के साथ ३ प्रतिमासों के चित्र भी दिये गये हैं। (वे० सं० २४६) च भण्डार। कलशारोपण विधि भी है। (वे० सं० २४८) च भण्डार।

३६४१. वास्तुविन्यास.....। पत्र सं० ३। आ० ६३×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-शिल्पकला। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४५। छ भण्डार।



## विषय- लक्षणा एवं समीक्षा

३६४२. आगमपरीक्षा ..... । पत्र सं० ३ । भा० ७×३३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-समीक्षा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १६४५ । ट भण्डार ।

३६४३. छंदशिरोमणि—शोभनाथ । पत्र सं० ३१ । भा० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-लक्षण । २० काल सं० १८२५ ज्येष्ठ सुदी ..... । ले० काल सं० १८२६ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वै० सं० १६३६ । ट भण्डार ।

३६४४ छंदकीय कवित्त—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ६ । भा० १२×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-लक्षण ग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १८१४ । ट भण्डार ।

प्रतिम पृष्ठीका— इति श्री छंदकीयकवित्वे कामधेन्वाख्ये भट्टारकश्रीसुरेन्द्रकीर्तिविरचिते समभूतप्रकरणे समाप्त । प्रारम्भ मे कमलबंध कवित्त में चित्र दिये है ।

३६४५. धर्मपरीक्षाभाषा—दशरथ निगोत्या । पत्र सं० १६१ । भा० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी गद्य । विषय-समीक्षा । २० काल सं० १७१८ । ले० काल सं० १७५७ । पूर्ण । वै० सं० ३६१ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे मूल के साथ हिन्दी गद्य टीका है । टीकाकार का परिचय—

साहू श्री हेमराज मुत्त मात हमीरदे जाणिए ।  
कुल निगोत भावक धर्म दशरथ तज वखाणिए ॥  
संवत सतरासै सही अष्टादश अधिकाय ।  
फागुण तम एकादशी पूरण भई सुभाय ॥  
धर्म परीक्षा वचनिका सुंदरदास सहाय ।  
साधर्मि जन समभि ने दशरथ कृति चितलाय ॥

टीका— विषया कै वसि पठ्या किरण जीव पाय ।

करे छे सह्यो न जाई ती ये बुखी होइ मरे ॥

लेखक प्रसिद्ध— संवत् १७५७ वर्षे पौष शुक्ला १२ भुगोचारे विन्वसा नगर्मा (बीसा) जिन चैत्यालके लि० भट्टारक-श्रीनरेन्द्रकीर्ति तत्शिष्य पं० ( गिरधर ) कटा हुआ ।

३६५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४०५ । ले० काल सं० १७१६ मंगसिर सुदी ६ । वे० सं० ३३० । ऋ

भण्डार ।

विशेष—इति श्री प्रमित्तित्तिकृता धर्मपरीक्षा मूल तिहकी बालबोधनामटीका तत्र धर्मार्थो दशरथेन कृताः

समाप्ताः ।

३६५७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३५ । ले० काल सं० १८६६ भाद्रवा सुदी ११ । वे० सं० ३३१ । ऋ

भण्डार ।

३६५८. धर्मपरीक्षा—अमित्तित्तिकृता । पत्र सं० २५ । आ० १२×४<sup>१</sup> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—समीक्षा । २० काल सं० १०७० । ले० काल सं० १८८४ । पूर्णा । वे० सं० २१२ । अ भण्डार ।

३६५९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १८८६ चैत्र सुदी १५ । वे० सं० ३३२ । अ

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया ( वे० सं० ७८४, ६४५ ) श्रौर है ।

३६६०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३१ । ले० काल सं० १६३६ भाद्रवा सुदी ७ । वे० सं० ३३५ । ऋ

भण्डार ।

३६६१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १७८७ माघ सुदी १० । वे० सं० ३३६ । ऋ

भण्डार ।

३६६२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० १७१ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३६६३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३३ । ले० काल सं० १६५३ वैशाख सुदी २ । वे० सं० ५६ । छ

भण्डार ।

विशेष—अलाउद्दीन के शासनकाल मे लिखा गया है । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

इसी भण्डार मे २ प्रतियां ( वे० सं० ६०, ६१ ) श्रौर है ।

३६६४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । वे० सं० ११५ । व्य भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया ( वे० सं० ३४४, ४७४ ) श्रौर हैं ।

३६६५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १५६३ भाद्रवा सुदी १३ । वे० सं० २१५७ । ट

भण्डार ।

विशेष—रामपुर मे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय में जम्मे से लिखवाकर ऋ० श्री धर्मदास को दिया । अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

३६५६. धर्मपरीक्षाभाषा—मनोहरदास सोनी । पत्र सं० १०२ । भा० १०३×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—समीक्षा । २० काल १७०० । ले० काल सं० १८०१ फागुण सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ७७३ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे १ प्रति अपूर्ण ( वे० सं० ११६६ ) श्रौर है ।

३६५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १११ । ले० काल सं० १६५४ । वे० सं० ३३६ । क मण्डार ।

३६५८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११४ । ले० काल सं० १८२६ आषाढ सुदी ६ । वे० सं० ५६५ । च मण्डार ।

मण्डार ।

विशेष—हमराज ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी । पत्र चिपके हुये हैं ।

इसी मण्डार मे १ प्रति ( वे० सं० ५६६ ) श्रौर है ।

३६५९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६३ । ले० काल सं० १८३० । वे० सं० ३४५ । क मण्डार ।

विशेष—केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी मण्डार मे १ प्रति ( वे० सं० १३६ ) श्रौर है ।

३६६०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०३ । ले० काल सं० १८२५ । वे० सं० ५२ । ब मण्डार ।

विशेष—बलनराम गोधा ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी मण्डार मे १ प्रति ( वे० सं० ३१४ ) श्रौर है ।

३६६१. धर्मपरीक्षाभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ३८६ । भा० ११×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—समीक्षा । २० काल सं० १६३२ । ले० काल सं० १६४२ । पूर्ण । वे० सं० ३३८ । क मण्डार ।

३६६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२२ । ले० काल सं० १६३८ । वे० सं० ३३७ । क मण्डार ।

३६६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५० । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० ३३४ । क मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे २ प्रतिया ( वे० सं० ३३३, ३३५ ) श्रौर है ।

३६६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६२ । ले० काल × । वे० सं० १७०७ । ट मण्डार ।

३६६५. धर्मपरीक्षाभाषा—ब्र० जिनदास । पत्र सं० १८ । भा० ११×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—समीक्षा । २० काल × । ले० काल सं० १६०२ फागुण सुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० ६७३ । अ मण्डार ।

विशेष—१६ व १७वा पत्र नहीं है । अन्तिम १८वें पृष्ठ पर जीराबलि स्तोत्र है ।

आदिभाग—

धर्म जिणोसर २ नमूँ ते सार,

तीर्थकर जे पनरमु वाञ्छित फल बहु दान दातार,

सारदा स्वामिणि वली तबुँ बुधिसार,



शुभ देउमाता श्रीगणेश्वर स्वामी नमसकरंभी सकलकीर्ति भवतार,  
मुनि भवनकीर्ति पाय प्रणमनि कहिसूँ रासहूँ सार ॥१॥

ब्रह्मा— धरम परीक्षा कलं निरुमलो भवीयगु सुगु तहूँ सार ।  
ब्रह्म जिएदास कहि निरमनु जिम जागु विचार ॥२॥  
कनक रतन मारिगु आदि परीक्षा करी लीजिसार ।  
तिम धरम परीषीइ सत्य लीजि भवतार ॥३॥

अन्तिम प्रशस्ति—

ब्रह्मा— श्री सकलकीरतिगुणप्रणमीनि मुनिभवनकीरतिभवतार ।  
ब्रह्म जिएदास मारिगु अदु रासकीउ सविचार ॥६०॥  
धरमररीक्षादासनिरमनु धरमतगु निधान ।  
पढि गुणि जे साभलि तेहनि उरजि मति जान ॥६१॥

इति धर्मपरीक्षा रास समाप्तः

संवत् १६०२ वर्षे फागुण सुदी ११ दिने सूरतस्वाने श्री सीतलनाथ चैव्यालगे आचार्य श्री विनयकीर्ति-  
पंडित मेघराजकेन लिखितं स्वयमिदं ।

३६६६. धर्मपरीक्षाभाषा.....। पत्र सं० १ मे ५० । आ० ११×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
समीक्षा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३२ । कृ भण्डार ।

३६६७. मूर्खके लक्ष्मण.....। पत्र सं० २ । आ० ११×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्ष्मणग्रन्थ ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७६ । कृ भण्डार ।

३६६८. रत्नपरीक्षा—रामकवि । पत्र सं० १७ । आ० ११×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—लक्ष्मण  
ग्रन्थ । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३ । कृ भण्डार ।

विशेष—इन्द्रपुरी में प्रतिलिपि हुई थी ।

प्रारम्भ— शुक गणपति सरस्वति शमरि यातै वध है बुद्धि ।  
सरसबुद्धि छंवह रचौ रतन परीक्षा मुधि ॥१॥  
रतन दीपिका ग्रन्थ मे रतन परिछ्या जान ।  
सगुरु देव परताप ते भाषा वरमो आनि ॥२॥

अन्तिम— रत्न परीछ्या रंगसु कीन्ही राम कविद ।  
इन्द्रपुरी में आनि कै लिखी छु भामराण्य ॥६१॥

३६६६. रसमञ्जरीटीका—टीकाकार गोपालभट्ट । पत्र सं० १२ । प्रा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । १० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० २०५३ । ट अण्डार ।

विशेष—१२ से आगे पत्र नहीं है ।

३६७०. रसमञ्जरी—भानुदत्तमिश्र । पत्र सं० १७ । प्रा० १२×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । १० काल × । ले० काल सं० १८२७ पीप मुदी १ । पूर्णा । वै० सं० ६४१ । अ अण्डार ।

३६७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १६३५ आसोज सुदी १३ । वै० सं० २३६ । ज अण्डार ।

३६७२. वक्ताश्रोतालक्षण..... । पत्र सं० ६ । प्रा० १२ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—लक्षणग्रन्थ । १० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वै० सं० ६४२ । क अण्डार ।

३६७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वै० सं० ६४३ । क अण्डार ।

३६७४. वक्ताश्रोतालक्षण..... । पत्र सं० ४ । प्रा० १२×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । १० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वै० सं० ६४४ । क अण्डार ।

३६७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वै० सं० ६४५ । क अण्डार ।

३६७६. शृङ्गारतिलक—रुद्रभट्ट । पत्र सं० २४ । प्रा० १२ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । १० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ६३६ । अ अण्डार ।

३६७७. शृङ्गारतिलक—कालिदास । पत्र सं० २ । प्रा० १३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । १० काल × । ले० काल सं० १८३७ । पूर्णा । वै० सं० ११४१ । अ अण्डार ।

इति श्री कालिदास कृतौ शृङ्गारतिलक संपूर्णम्

प्रशस्ति— सर्वानुसरते सप्तत्रिकवस्त्रेदु मिते असाढसुदी १३ त्रयोदश्यां पंडितजी श्री हीरानन्दजी तत्स्त्रिय पंडितजी श्री चोक्षचन्द्रजी तत्स्त्रिय पंडित विनयवताजिनदासेन लिपीकृतं । भूरावलजी या प्राका ।।

३६८८. स्त्रीलक्षण..... । पत्र सं० ४ । प्रा० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । १० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ११८१ । अ अण्डार ।



## विषय- फागु रासा एवं वेति साहित्य

३६७६. अञ्जनारास—शांतिकुशल । पत्र सं० १२ से २७ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २० कान स० १६६७ माह मुद्रा २ । ले० काल सं० १६७६ । पूर्ण । वै० सं० २ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रतिम प्रशस्त निम्न प्रकार है—

रास रच्यु सती अञ्जना मइ जूनी चउपई जोई रे ।  
 अधिकु उद्धरं जे कहलं मुझ निथ्या दोकड होई रे ॥  
 संबन् सोलइ सतइ तठि माहा शुदि नी बीज बखामु रे ।  
 गोवन गिरिरास भाभीउ जइ सोलइ पुरु जागु रे ॥  
 तव गछ नायक गुगु निलउ विजय मेन सूरी सरगाजइ रे ।  
 प्राचारिज महिमा घगो विज देव सूरी पद छाजइ रे ॥  
 तात पचाडरिा दीपलु जस महिमा कीरति भरिउस ।  
 मात प्रेमनदे उरि धरया देव कइ पाठगे अवतारिउ रे ॥  
 विनयकुसन पडित वरु परगारा गुगुदरिउ रे ।  
 चरण कमल सेवा लही शांतिकुशल डम रास करिउ रे ॥  
 अधिचलकीरति अञ्जना जा रवि सम होइइ प्राकाश रे ।  
 पढै गुणै जे साभलइ रहि लखिमी तस घर पासइ रे ॥

३६८०. आदीश्ररकाग—ज्ञानभूषण । पत्र सं० ४० । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
 फागु ( भगवान प्रादिनाथ का वर्णन है ) । २० कान × १० काल सं० १५२२ बेशाल मुद्री १० । पूर्ण । वै० सं०  
 ७१ । ख भण्डार ।

विशेष—श्री मूलमंथे भट्टारिक श्री ज्ञानभूषण धुल्लिवा बाई कल्याणमती कर्मक्षयार्थ लिखितं ।

३६८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ से ५ । ले० काल × १० सं० ७२ । ख भण्डार ।

३६८२. कर्मप्रकृतिविधानारास—वनारसीदास । पत्र सं० १८ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—रासा । २० काल सं० १७०० । ले० काल सं० १७८४ । पूर्ण । वै० सं० १६२७ । ट भण्डार ।

३६८३. चन्दनबालारास..... पत्र सं० २। प्रा० ६३×४३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—सती चन्दनबाला की कथा है। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१६५। अ भण्डार।

३६८४. चन्द्रलेखारास—मतिकुशल। पत्र सं० २६। प्रा० १०×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—रामा (चन्द्रलेखा की कथा है) २० काल सं० १७२८ आसोज बुदी १०। ले० काल सं० १८२६ आसोज बुदी। पूर्ण। वे० सं० २१७१। अ भण्डार।

विशेष—अकबराबाद में प्रतिलिपि की गयी थी। दशा जीर्ण शीर्ण तथा लिपि विकृत एवं अशुद्ध है। प्रारम्भिक २ पद्य पत्र फटा हुआ होने के कारण नहीं लिखे गये हैं।

सामाहक मुधा करो, त्रिकरुण सुद्ध त्तिकाल।

सत्रु मित्र समतागणिए, तिमनुटे जग जाल ॥३॥

मरुदेवि भरथादि मुनि, करी समाहक सार।

केवल कमला तिए बरी, पाम्यो भवनो पार ॥४॥

सामाहक मन सुद्ध करी, पामी द्राम पकत।

तिय ऊगरिन्दु साभलो, चंद्रलेहा चरित्र ॥५॥

वचन कला तेह वनिछै, सरसंध रसाल।

तीरो जाणु सक्त पडसो, सोभलतां खुस्याल ॥६॥

प्रतिम—

संबत् मिद्धि कर मुनिससो जी वद धामू दसम विचार।

थी पभीयाव मै प्रेम सुं, एह रळ्यो अधिकार ॥१२॥

खरतर गगपति मुखकळंजी, श्री जिन सूरिद।

वडवतो जिम साखा लयनीजी, जो धू रजनीस दिराद ॥१३॥

मुयुग श्री मुयुगकीरति गणोजी, वाचक पदवी धरंत।

प्रतयवास्तो चिर गयो जी, मतिवल्लभ महंत ॥१४॥

प्रथमत मुसी प्रति प्रेम स्युंजी, मतिकुसल कहै एम।

सामाहक मन सुद्ध करो जी, जीव वए भ्रहं लेहा जेम ॥१५॥

रतनवल्लभ गुरु सानिधम, ए कीयो प्रथम धम्यास।

छसय चौबीस गाहा भळै जी, उगुणतीस ढाल उल्हास ॥१६॥

भगी उरां मुसी भावस्युं जी, गरुभातरण गुण जेह।

मन मुध जिनधर्म तें करै जी, श्री भुवन पति हुवै तेह ॥१७॥

सर्व गाथा ६२४। इति चन्द्रलेखारास संपूर्ण ॥

३६८५. जलगालगुरास—ज्ञानभूषण । पत्र सं० २ । भा० १०५×४५ इंच । भाषा—हिन्दी युवराती ।

विषय—रासा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १९७ । ट भण्डार ।

विशेष—जल छानने की विधि का वर्णन रास के रूप में किया गया है ।

३६८६. धन्नाशालिभद्ररास—जिनराजसूरि । पत्र सं० २६ । भा० ७५×४५ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—रासा । १० काल सं० १६७२ प्रासोज बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १९८८ । अ भण्डार ।

विशेष—मुनि इन्द्रविजयगण ने गिरधोर नगर में प्रतिनिधि की थी ।

३६८७. धर्मरासा..... । पत्र सं० २ से २० । भा० ११×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । १० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १९४८ । ट भण्डार ।

विशेष—पहिला, छठा तथा २० में धामों के पत्र नहीं हैं ।

३६८८. नवकाररास..... । पत्र सं० २ । भा० १०×४५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—गमोकार मन्त्र महात्म्य वर्णन है । १० काल × । ले० काल सं० १८३१ फागुण बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ११०२ । अ भण्डार ।

३६८९. नेमिनाथरास—विजयदेवसूरि । पत्र सं० ४ । भा० १०×४५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—रासा ( भगवान् नेमिनाथ का वर्णन है ) । १० काल × । ले० काल सं० १८२६ पौष बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १०२६ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में साहिबराय ने प्रतिनिधि की थी ।

३६९०. नेमिनाथरास—ऋषि रामचन्द्र । पत्र सं० ३ । भा० १५×४५ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—रामा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४० । अ भण्डार ।

विशेष—आदिभाग—

दूहा— अर्द्धसिध ने आपरीया उपजाया अग्नवार ।

पंचिपद तेहुनमूँ, अठोत्तर सो वार ॥१॥

मोखगामी दोनु हुवा, राजमती रह नेम ।

चित्रकतर लीया मणी, साभल जे धर प्रेम ॥२॥

डाल जिलेसुर मुनिराया..... ।

मुखकारी सोरठ देसे राज कीसन रेम मन मोहीलाल ।

दीपती नगरी दुवारकाए ॥१॥

समुद विजे तिहुंभूप सेवा देजी राणी रुरेरु ।

महाराणी मानी जतीए ॥२॥

जाण जन(म)मीया अरिहन्त देव इह कोसट सारे ।

ज्यारी नेव में बाल ब्रह्मचारी बावा समोए ॥३॥

अन्तिम—

सिल ऊरर पच डालियो दीठो होय मुत्रा मे निचोडरे ।

तिरा धनुमार माफक है, रिधि रामचं,जी कीनी जाठ रे ॥१३॥

इति लिखतु श्री श्री उमाजारी तन् सांपर्गा छाटाजारी चेलीह सतु लीखतु पाली मदे । पाली मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३६६१. नेमोश्वरफागु—अध्वारायमल्ल । पत्र सं० ८ मे ७० । मा० ६×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—फागु । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ३८३ । छ भण्डार ।

३६६२. पंचेन्द्रियरास .. . . . । पत्र सं० ३ । मा० ६×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—रासा ( पांचों इंद्रियों के विषय का वर्णन है ) । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० १३५६ । अ भण्डार ।

३६६३. पत्यविधानरास—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ५ । मा० ८<sup>२</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—रासा । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ४४३ । छ भण्डार ।

विशेष—पत्यविधानव्रत का वर्णन है ।

३६६४. बंकचूलरास—जयकीर्ति । पत्र सं० ४ मे १७ । मा० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

रासा ( कथा ) । २० काल सं० १६८५ । ले० काल सं० १६६३ फागुग बुढी १३ । अपूर्णा । वे० सं० २०६२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३ पत्र मही है । ग्रन्थ प्रशस्ति—

कथा सुरी बंकचूलनी श्रेणिक धरी उल्लास ।

बोरनि वादी भावसु पुहुत राजग्रह बास ॥१॥

संवत सोल पब्ब्यासीइ मूर्जर देस मफार ।

कल्पबल्लोपुर सोभर्ता इन्द्रपुरी भवतार ॥२॥

नरनिघपुरा वाणिक बसि दया धर्म मुखकंद ।

चैत्यालि श्री वृषभवि ध्रावि भवोयरा वृंद ॥३॥

काष्ठासंध विद्यागणे श्री सोमकीर्ति मही सोम ।

विजयसेन विजयाकर यशकीर्ति यशस्तोम ॥४॥

उदयसेन महीमोदय त्रिभुवनकीर्ति विख्यात ।

रत्नभूषण गच्छपती हवा भुवनरथग जेहजात ॥५॥

तस पट्टि सूरीवरभनु जयकीर्ति जयकार ।  
 जे भवियरु भवि सांभलो ते पामी भवपार ॥६॥  
 रूपकुमार रलीया मगु बकचूल बीखु नाम ।  
 तेह राम रच्यु रुवहु जयकीर्ति मुखधाम ॥७॥  
 नीम भाव निर्मल हुई गुणवचने निर्द्वार ।  
 सांभलता मंपद् मलि ये भणि नरतिनार ॥८॥  
 याहु सायर नन्न महीचंद सूर जिनभास ।  
 जयकीर्ति कहिता रहु बंकचूलनु रास ॥९॥  
 इति बंकचूलरास समाप्तः ।

संवत् १६९३ वर्षे फागुण बुदी १३ पिपलाइ ग्रामे लक्षतं भट्टारक श्री जयकीर्ति उपाध्याय श्री वीरचंद  
 ब्रह्मा श्री जसवंत वाइ कपूरा या बीच रास ब्रह्मा श्री जसवंत लक्षतं ।

३६६५. भविष्यदत्तरास—ब्रह्मरायमल्ल । पत्र सं० ३९ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
 रासा-भविष्यदत्त की कथा है । २० काल सं० १६३३ कालिक मुदी १४ । वे० काल × । पूर्ण । वे० स ६८६ । अ  
 भण्डार ।

३६६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६९ । ले० काल सं० १७८५ । वे० सं० १९३० । ट भण्डार ।

विशेष—ग्रामेर मे श्री मल्लिनाथ चैत्यालय मे श्री भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य दयाराम सोनी ने प्रतिलिपि  
 की थी ।

३६६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० ५९६ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० छाजूराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

इनके अतिरिक्त ख भण्डार मे १ प्रति ( वे० सं० १३२ ) छू भण्डार मे १ प्रति ( वे० सं० १६१ ) तथा  
 अ भण्डार मे १ प्रति ( वे० सं० १३५ ) और है ।

३६६८. रुक्मिणीविधाहबेलि ( कृष्णरुकमिणीबेलि )—पृथ्वीराज राठौड । पत्र सं० ५१ से  
 १२१ । आ० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—बेलि । २० काल सं० १६३८ । ले० काल सं० १७१९ चैत्र बुदी ५ ।  
 अपूर्ण । वे० सं० १६४ । ख भण्डार ।

विशेष—देवगिरी मे महात्मा जगन्नाथ ने प्रतिलिपि की थी । ६३० पक्ष है । हिन्दी गद्य मे टीका भी दी  
 हुई है । ११२ पृष्ठ से आगे अन्य पाठ हैं ।

३६६६. शीलरासा—विजयदेव सूरि । पत्र सं० ४ मे ७ । आ० १०३×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—रामा । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ फागुण सुदी १३ । वै० सं० १६६६ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

मवत् १६३७ वर्षे फागुण सुदी १३ गुरुवारे श्रीखरतरगच्छे ब्राह्मण्य श्री राजरत्नसूरि दिव्य पं० नदिन्य  
लियावत् । उसवेमसंघ बालेचा. गोत्रे सा हीरा पुत्री रतन सु श्राविका नाली पठनार्थं लिखितं दारुमध्ये ।

अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

श्रीपूज्यपासचद तरुण्ड सुपसाय.

सीस धरी निज निरमल भाइ ।

नयर जानउरहि जागनु,

नेमि नमउ नित बेकर जोडि ॥

बानता एह जि वीनवउ,

दक लिंग प्रमह मन वीन विछोडि ।

साल गधानड जा प्रीतडी,

उत्तराध्ययन बाबीसमु जोड ॥

बली मने राय थरी अरथ ब्राजा विना जे कहमु होइ ।

विफल हूं यो मुझ पातक सोइ, जिम जिन भाष्यउ ते सही ॥

दुरित नइ दुःख सहइ दूरि, बेगि मनारथ माहरा पूरि ।

भाग्यमुसंघम आगिया, टम वीनवड श्री विजयदेव सूरि ॥

॥ इति शील रासउ समाप्तः ॥

३७००. प्रति म० २ । पत्र म० २ म ७ । ले० काल सं० १७०५ आसोज सुदी १४ । वै० सं० २०६१ ।

अ भण्डार ।

विशेष—ग्रामेर मं प्रतिनिधि हुई थी ।

३७०१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वै० सं० २१७ । अ भण्डार ।

३७०२. श्रीपालरास—जिनहर्षगणि । पत्र सं० १० । आ० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
रासा ( श्रीराल रासा की कथा है ) । २० काल म० १७४२ चैत्र बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ८३० ।

अ भण्डार ।

विशेष—आदि एवं अन्त भाग निम्न प्रकार है—



श्रीजिनाय नमः ॥ डाल सिधनी ॥

चउबीसे प्रणमुं जिणराय, जास पसायइ नवनिधि पाय ।  
सुयदेवा धरि रिदय मभारि, कहिस्युं नवपदनउ अधिकार ॥  
मंत्र जत्र छइ धवर धनेक, पिरिण नवकार समउ नही एक ।  
सिद्धचक्र नवपद सुपसायइ, सुख पाय्या श्रीपाल नररायइ ॥  
आबिल तप नव पद संजोग, गलित सरीर थयो नीरोग ।  
तास चरित्र कहु हित भास्यो, सुणिज्यो नरनारी मुक वाग्यो ॥

अन्तिम—

श्रीपाल चरित्र निहालनइ, सिद्धचक्र नवपद धारि ।  
ध्याईयइ तउ सुख पाईयई, जगमा जस विस्तार ॥८५॥  
श्री गच्छरतर पति प्रगट श्री जिनचन्द्र सरीर ।  
गणि छाति हरष वाचक तरणो, कहइ जिनहरष मुमोम ॥८६॥  
सतर बमालीमै समै, बदि चैत्र नेरसि जगण ।  
ए रास पाटण मा रब्धो, मुगुता सदा कन्याण ॥८७॥  
इति श्रीपाल रास संपूर्ण । पत्र स० २८७ ह ।

३७०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १७७२ भादवा बुदी १३ । वे० सं० ७२२ । ङ  
अण्डार ।

३७०४. पट्लेश्यावेलि—साह लोहट । पत्र सं० २२ । आ० ८३×४३ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
मिज्ञात । २० काल सं० १७३० आसोज मुदी ६ । ले० काल < । पूर्ण । वे० सं० ८० । ङ अण्डार ।

३७०५. मुकुमालस्वामीरास—ब्रह्म जिनदाम । पत्र सं० ३४ । आ० १०३×४३ इच । भाषा—  
हिन्दी गुजराती । विषय—रासा ( मुकुमाल मुनि का वर्णन ) । ले० काल सं० १६३५ । पूर्ण । वे० सं० ७९६ । अ  
अण्डार ।

३७०६. सुदर्शनरास—ब्रह्म रायमल्ल । पत्र सं० १३ । आ० १२×६ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
रासा ( गेठ सुदर्शन का वर्णन है ) । २० काल सं० १६२६ । वे० काल सं० १७५६ । पूर्ण । वे० सं० १०४६ । अ  
अण्डार ।

विशेष—साह लालचन्द कासलीबास ने प्रतिलिपि की थी ।

३७०७. प्रति स० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १७६२ सावण सुदी १० । वे० सं० १०६ । पूर्ण  
अ अण्डार ।

३७०८. सुभौमचक्रवर्तिरास—ब्रह्मजिनदास । पत्र सं० १३ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १६२ । क अण्डार ।

३७०९. इमीररासो—महेरा कवि । पत्र सं० ८८ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—रास  
( ऐतिहासिक ) । २० काल × । ले० काल सं० १८८३ आसोज मुदी ३ । प्रपूर्ण । वै० सं० ६०४ । क अण्डार ।



## विषय- गणित-शास्त्र

३७१०. गणितनाममाला—हरदत्त । पत्र सं० १४ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
गणितशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४० । अ भण्डार ।

३७११. गणितशास्त्र ..... । पत्र सं० ६१ । आ० ६×३६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-गणित । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६ । अ भण्डार ।

३७१२. गणितसार—हेमराज । पत्र सं० ५ । आ० १२×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-गणित ।  
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२२१ । अ भण्डार ।

विशेष—हाशिये पर मुन्दर बेलबूटे है । पत्र जीर्ण है तथा बीच में एक पत्र नहीं है ।

३७१३. पट्टी पहाड़ों की पुस्तक ..... । पत्र सं० ८७ । आ० ६ ६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय—  
गणित । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के पत्रों में खेतों की डारों आदि डालकर नापने की विधि दी है । पुनः पत्र १ से ३ तक  
' सीधों वर्ग समान्नायः । आदि की पाँचों गंधियों ( पाठियों ) का वर्णन है । पत्र ८ में १० तक वाग्निक्य नीति के  
दलोंक है । पत्र १० से ३१ तक पहाड़ों है । किन्ती २ जगह पहाड़ों पर मुभापित पथ है । ३१ से ३६ तक नाप तार के  
गुण दिये हुये हैं । निम्न पाठ श्रौत है ।

१. हरिनाममाला—शङ्कराचार्य । संस्कृत पत्र ३७ तक ।

२. गोकुलगांवकी लीला— हिन्दी पत्र ६५ तक ।

विशेष—कृष्ण ऊधव का वर्णन ।

३. समश्लोकीगीता— पत्र ६६ तक ।

४. स्नेहलीला— पत्र ८७ ( अपूर्ण )

३७१४. राजप्रमाण ..... । पत्र सं० २ । आ० ८२×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय गणितशास्त्र ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६२७ । अ भण्डार ।

३७१५. लीलावतीभाषा—मोहनमिश्र । पत्र सं० ८ । आ० ११×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय—  
गणितशास्त्र । २० काल सं० १७१४ । ले० काल सं० १८३८ फायुस बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६४० । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रवृत्ति पूर्ण है

३७१६. लीलावतीभाषा—ज्यास मथुरादास । पत्र सं० ३ । प्रा० ६×४३ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—गणितशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ६४१ । क भण्डार ।

३७१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५५ । ले० काल × । वै० सं० १४४ । व्य भण्डार ।

३७१८. लीलावतीभाषा..... । पत्र सं० १३ । प्रा० १३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—गणित ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ६७१ । च भण्डार ।

३७१९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १६४२ । ट भण्डार ।

३७२०. लीलावती—भास्कराचार्य । पत्र सं० १७६ । प्रा० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—गणित । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १३६७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित मुद्रर एवं नवीन है ।

३७२१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८६२ भादवा बुदी २ । वै० सं० १७० । ख भण्डार ।

भण्डार ।

विशेष—महाराजा जगतसिंह के शासनकाल में माणिकचन्द के पुत्र मनोरथराम सेठी ने हिण्डौन में प्रति-

लिपि की थी ।

३७२२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५४ । ले० काल × । वै० सं० ३२३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिया ( वै० सं० ३२८ से ३२७ तक ) और हैं ।

३७२३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १७६५ । वै० सं० २१६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतिया ( वै० सं० २२०, २२१ ) और हैं ।

३७२४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १६६३ । ट भण्डार ।



## विषय- इतिहास



३७२५. आचार्यों का ज्यौरो..... पत्र सं० ६। भा० १२३×५३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। २० काल ×। ले० काल सं० १७१६। पूर्ण। वे० सं० २६७। ख मण्डार।

विशेष—सुवानन्द सोमाणी ने प्रतिलिपि की थी। इसी वेष्टन मे १ प्रति धोर है।

३७२६. खंडेलवालोट्यत्तिवर्णन ..... पत्र सं० ८। भा० ७×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५। अ मण्डार।

विशेष—८४ गोत्रों के नाम भी दिये हुये हैं।

३७२७. गुर्वावलीवर्णन ..... पत्र सं० ५। भा० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३०। अ मण्डार।

३७२८. चौरासीहातिहृद..... पत्र सं० १। भा० १०×५३ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६०३। ट मण्डार।

३७२९. चौरासीजाति की जयमाल—विनांदीलाल। पत्र सं० २। भा० ११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। २० काल ×। ले० काल सं० १८७३ योग बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० २८१। छ मण्डार।

३७३०. छुटा आरा का विस्तार..... पत्र सं० २। भा० १०×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१८६। अ मण्डार।

३७३१. जयपुर का प्राचीन ऐतिहासिक वरण..... पत्र सं० १२७। भा० ६×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। २० काल ×। ले० काल ×। अ पूर्ण। वे० सं० १६८६। ट मण्डार।

विशेष—रामगढ सर्वाईमाधापुर आदि बसाने का पूर्ण विवरण है।

३७३२. जैनवद्री मूढवद्री की यात्रा—भट्ट सुरेन्द्रकीर्ति। पत्र सं० ४। भा० १०३/४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३००। ख मण्डार।

३७३३. तीर्थङ्करपरिचय ..... पत्र सं० ४। भा० १२×५३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। २० काल ×। ले० काल ×। अ पूर्ण। वे० सं० ६८०। अ मण्डार।

३७३४. तीर्थङ्करों का अन्तराल..... पत्र सं० १। भा० ११×५३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। २० काल ×। ले० काल सं० १७२४ आगोज बुदी १२। पूर्ण। वे० सं० २१४२। अ मण्डार।

३७३५. दादूपसावली ... पत्र सं० १ । प्रा० १०×३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास ।

२० पान × १ ले० कान × १ पूर्ण । वे० सं० १३६४ । अ भण्डार ।

दादूजी दयान पाट गरोब मसकीन ठाट ।

जुगलबाई निराट निराणै बिराज ही ॥

बखर्नास कर राक जमी चाकौ प्राय टाक ।

बडो हू गोपाल ताक छुछारे राजही ॥

सागानेर रजबसु देवन दयाल दास ।

घडसी कडाला बसे घरम कीमा जही ॥

ईड वैठू जनदाम तेजानन्द जोधपुर ।

मोहन मु भजनीक आसोपमि वाज ही ॥

गूलर मे माधोदाम विदाध मे हरिसिंह ।

चतरदास सिध्धावट कीधो तनकात्र ही ॥

विहाराणी पिरामदान षोडवाने है प्रसिद्ध ।

मुन्दरदाम जू सरसु फतेहपुर द्यात्रही ॥

बाबा वनवारी हरदाम दोऊ रतीय मे ।

साधु एक माडोडो मे नोके नित्य द्वाजही ॥

गुडर प्रहलाद दास घाटडैगु छोड़ माहि ।

पूरब चतरभुज रामपुर द्वाजही ॥ १ ॥

निरामदास माडास्यो सडांग माहि ।

इकलीब रणतभंवर डाड चरणदास जानियो ॥

हाडोनी मेवाट जामे साखूजी मगन भये ।

जगोजी भड़ीच मध्य प्रचाधारी मानियो ॥

लालदास नायक सो पीरान पटरदास ।

फाकली मेवाड माहि टोलोजी प्रमानियो ॥

साधु परमानद टडोखनी मे रहे जाय ।

जेमल बुहाण भलो खालड हरगानियो ॥

जेमल जोगो कुछाहो वनमानी चोक्क्योस ।

सांभर भजन सो बितान तानियो ॥

मोहन दफतरीसु मारोठ चितार्ई भली ।  
 रुघनाथ भेडतैसु भावकर ग्रानियो ॥  
 कालैडहरे चत्रदास टीकोदास नांगल मैं ।  
 भोटवाडे भाङ्गुमांङ्गु लघु गोपाल धानियो ॥  
 आंबावती जगनाथ राहोरी जनगोपाल ।  
 बाराहदरी संतदास चावळ्ठुलु भानियो ॥  
 आंधी मे गरीबदास भानगढ माधव कै ।  
 मोहन मेवाड़ा जोग साधन सी रहे है ॥  
 टहट्टे मैं नागर निजाम हू भजन कियो ।  
 दास जय जीवन छोसा हर लहे है ॥  
 मोहन दरियायीसो सम नागरचाल मध्य ।  
 बोकडास संत जूहि गोलगिर भये है ॥  
 चैनराम कारीता मे गोदेर कवलमुनि ।  
 स्यामदास भालाणीसू चोड कै मे ठये है ॥  
 सोधया लाखा नरहर अलूदे भजन कर ।  
 महाजन खंबेलवाल दाडू गुर गहे है ॥  
 पूरशदास ताराचन्द महाजन सुम्हेर धाली ।  
 आंधी मे भजन कर काम क्रीष दहे है ॥  
 रामदास राणीबाई क्रांजल्या प्रगट भई ।  
 महाजन डिगाइचसू जाति बोल महे है ॥  
 बावन ही धामा अरु बावन ही म्हत ग्राम ।  
 दाडूपंधी चत्रदास सुने जैसे कहे है ॥ ३ ॥  
 जे नमो गुर दाडू परमात्म आडू सब संतन के हितकारा ।  
 मैं आयो सरनि तुम्हारी ॥ टेक ॥  
 जे निरालंब निरवाना हम संत तै जाना ।  
 संतनि को सरना दीजे, अब मोहि अपन्न कर लीजे ॥१॥  
 सबके अंतरयामी, अब करो कृपा मोरे स्वामी  
 अबगति अबनामी देवा, दे बरन कवल की सेवा ॥२॥  
 जे दाडू दीन दयाला काढो जग जंजाला ।  
 सतचित्त आनंद में बासा, गावै बखतावरदासा ॥३॥

## राग रामगरी—

शेम पीव क्यूं पाइये, मन चंचल भाई ।  
 आख मीच मूनी भया मंछी गढ कार्ड ॥टेक॥  
 छारा तिलक बनाय करि नाचै अरु नाचै ।  
 आपण तो समझे नही, श्रीरां समझावै ॥१॥  
 भगति कौ पाखंड की, करणी का काचा ।  
 कहै कबीर हरि क्यूं मिलै, हिरदै नही साचा ॥२॥  
 ॥ इति ॥

३७३६. देहली के बादशाहों का व्यौरा.....। पत्र सं० १६ । आ० ५३×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।  
 विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६ । भू अण्डार

३७३७. पञ्चाधिकार.....। पत्र सं० ५ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—इतिहास ।  
 २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६४७ । ट अण्डार ।

विशेष—जिनमें कृत धवल टीका तक का प्रारम्भ में आचार्यों का ऐतिहासिक वर्णन है ।

३७३८. पट्टावली.....। पत्र सं० १० । आ० ८×६३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २०  
 काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३० । भू अण्डार ।

विशेष—दिगम्बर पट्टावली का नाम दिया हुआ है । १८७६ के संबन्ध की पट्टावली है । अन्त में खंबेलवाल  
 वंगोत्पत्ति भी दी हुई है ।

३७३९. पट्टावलि.....। पत्र सं० ४ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २०  
 काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३३ । छ अण्डार ।

विशेष—सं० ८४० तक होने वाले भट्टारको का नामोत्पत्ति है ।

३७४०. पट्टावलि.....। पत्र सं० २ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २०  
 काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५७ । छ अण्डार ।

विशेष—प्रथम चौरासी जातियों के नाम हैं । पीछे संबन्ध १७६६ में नागौर के गच्छ में अजमेर का गच्छ  
 निकला उसके भट्टारको के नाम दिये हुये हैं । स० १५७२ में नागौर में अजमेर का गच्छ निकला । उसके सं० १=५२  
 तक होने वाले भट्टारको के नाम दिये हुये हैं ।

३७४१. प्रतिष्ठाकुंभपत्रिका.....। पत्र सं० १ । आ० २५×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
 इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४५ । छ अण्डार ।



विशेष—सं० १६२७ फागुन मास का कुंकुमपत्र विपलोन की प्रतिष्ठा का है। पत्र कार्तिक बुदी १३ का लिखा है। इसके साथ सं० १६३६ की कुंकुमपत्रिका छपी हुई शिलर सम्मेल की और है।

३७४२. प्रतिष्ठानामावलि..... पत्र सं० २०। आ० ६×७ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—इतिहास। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४३। छ. भण्डार।

३७४३. प्रति सं० २। पत्र सं० १८। ले० काल ×। वे० सं० १४३। छ. भण्डार।

३७४४. बलात्कारगणगुर्यावलि..... पत्र सं० ३। आ० ११३×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—इतिहास। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०६। अ. भण्डार।

३७४८. भट्टारक पट्टावलि। पत्र सं० १। आ० ११×४३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—इतिहास। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८३७। अ. भण्डार।

विशेष—सं० १७०० तक की भट्टारक पट्टावलि की हुई है।

३७४६. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ११८। अ. भण्डार।

विशेष—संवत् १८८० तक होने वाले भट्टारकों के नाम दिये हैं।

३७५०. यात्रावर्णन..... पत्र सं० २ से २६। आ० ६×४३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—इतिहास। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६१४। अ. भण्डार।

३७५१. रथयात्राप्रभाव—अमोलकचंद्र। पत्र सं० ३। आ० १०२×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—इतिहास। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३०८। अ. भण्डार।

विशेष—जयपुर की रथयात्रा का वर्णन है।

११३ पद्य है— अन्तिम—

एकान्विशतशतदेग सहायपे मानस्यपञ्चमी दिनेनित फागुनस्य श्रीमज्जिमेस्य वर मय्यरथगयाया मेनायक जयपुर प्रकटे वभूव ॥११२॥

रथयात्राप्रभावोऽयं कथितो हृष्टपूर्वकः

मान्ना मौलिक्यचन्द्रेण साहायोर्यै या संमुदा ॥११३॥

॥ इति रथयात्रा प्रभाव समाप्ता ॥ शुभं भूयात् ॥

३७५२. राजप्रशस्ति..... पत्र सं० ५। आ० ६×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—इतिहास। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८६५। अ. भण्डार।

विशेष—दो प्रशस्ति ( अपूर्ण ) हैं अत्रिका आत्रक वनिता के विशेषण दिये हुए हैं।

३७५३. विज्ञप्तिपत्र—हंसराज । पत्र सं० १ । प्रा० ८×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास ।  
१० काल × । ले० काल सं० १८०७ फागुन सुदी १३ । पूर्णा । वै० सं० ५३ । अ. भण्डार ।

विशेष—भोपाल निवासी हंसराज ने जयपुर के जैन पंक्तों के नाम अपना विज्ञप्तिपत्र व प्रतिज्ञा-पत्र लिखा है । प्रारम्भ—

स्वस्ति श्री सवाई जयपुर का सकल पंच साधर्मो बडो पंचायत तथा छोटी पंचायत का तथा दीवानजी नाहिव का मन्दिर सम्बन्धी पंचायत का पत्र आदि समस्त साधर्मो भाइयन को भोपाल का वासी हंसराज को या विज्ञप्ति है सो नोका अवधारन कीयो । इसमे जयपुर के जैना का अछ्छा वर्णन है । अमरचन्द्रजी दीवान का भी नामोल्लेख है । इसमे प्रतिज्ञा पत्र ( आषाढी पत्र ) भी है जिनमे हंसराज के त्यागमय जीवन पर प्रकाश पड़ना है । यह एक जन्म-पत्र की तरह गोल सिमटा हुआ लम्बा पत्र है । सं० १८०० फागुन सुदी १३ गुरुवार को प्रतिज्ञा ली गई उसी का पत्र है ।

३७५४. शिलालेखसंग्रह... । पत्र सं० ८ । प्रा० ११×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—इतिहास ।  
१० काल × । ले० काल × । अ. पूर्णा । वै० सं० ६६१ । अ. भण्डार ।

विशेष—निम्न लेखों का संग्रह है ।

१. बालुचय वंशोत्थाय तुलकेगी का शिलालेख ।
२. भद्रवाहु प्रशस्ति
३. मल्लिधरेण प्रशस्ति

३७५५. आषाढ उरुपत्तिवर्णन... । पत्र सं० १ । प्रा० ११×२८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
इतिहास । १० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वै० सं० १६०८ । अ. भण्डार ।

विशेष—चौरासी गीत, वंश तथा कुलदेवियों का वर्णन है ।

३७५६. आषाढों की चौरासी जातियां... । पत्र सं० १ । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । १०  
काल × । ले० काल × । पूर्णा । वै० सं० ७३१ । अ. भण्डार ।

३७५७. आषाढों की ७२ जातियां... । पत्र सं० २ । प्रा० १२×५२ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।  
विषय—इतिहास । १० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वै० सं० २०२६ । अ. भण्डार ।

विशेष—जातियों के नाम निम्न प्रकार हैं ।

१. गोलाराडे २. गोलसिघाड़े ३. गोलापूर्व ४. लंबेचु ५. जैसवाल ६. खंबेलवाल ७. बचेलवाल ८. अमरवाल, ९. सहलवाल, १०. अमरवापोरवाड, ११. वीमलापोरवाड, १२. दुसरवापोरवाड, १३. जायडापोरवाड, १४. परवाड, १५. बरहीया, १६. भैसरपोरवाड, १७. सोरडीपोरवाड, १८. पचावतीपोरवा, १९. खंधड, २०. खुसर

२१. बाहरमेन, २२. गहोड, २३. अरुणग क्षत्री २४. सद्वाग, २५. अजोभ्यापुरी, २६. गोरवाड, २७. बिदलस्वा, २८. कठनेरा, २९. नाम, ३०. गुजरपल्लीवाल, ३१. चीकडा, ३२. गागरवाडा, ३३. बोरवाड, ३४. खडेरवाल, ३५. हर सुला, ३६. नेगडा, ३७. सहरीया, ३८. मेवाडा, ३९. खराडा, ४०. चीतोडा, ४१. नरनगपुरा, ४२. नागदा, ४३. बाब, ४४. हूमड, ४५. रायकवाडा, ४६. बदनोरा, ४७. दमगुआवक, ४८. पचमआवक, ४९. हलधरआवक, ५०. सावरआवक, ५१. हमार, ५२. लवर, ५३. बवल, ५४. बलगारा, ५५. कर्मआवक, ५६. वरिकर्मआवक ५७. बेमर ५८. सुदेवज, ५९. बलसीगुल, ६०. कोमडी, ६१. गंगरका, ६२. गुनपुर, ६३. तुलाआवक, ६४. कचंगआवक, ६५. हेवगाआवक, ६६. भोगाआवक ६७. सोमनआवक, ६८. दाउदाआवक, ६९. नंगवनीआवक, ७०. पणीसंगा, ७१. वगोरिया, ७२. काकनीवाल,

नोट—हूमड जाति को दो बार गिनाने मे १ संख्या बढ गई है ।

३७५८. श्रुतस्कंध—ब्र० हेमचन्द्र । पत्र सं० ७ । आ० ११।४४ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१ । अ भण्डार ।

३७५९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ७२२ । अ भण्डार ।

३७६०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० २१६१ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र ७ मे आगे श्रुतावतार श्रीधर कृत भी है, पर पत्रा पर अधर मिट गये है ।

३७६१. श्रुतावतार—पं० श्रीधर । पत्र सं० ५ । आ० १०।४४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६ । अ भण्डार ।

३७६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८६१ पीप मुदा १ । वे० सं० २०१ । अ भण्डार ।

विशेष—चम्पालाल टोग्या ने प्रतिलिपि की थी ।

३७६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ७०२ । अ भण्डार ।

३७६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५१ । अ भण्डार ।

३७६५. संघपञ्चीमी—द्यानतराय । पत्र सं० ६ । आ० ८।५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल सं० १८८८ । पूर्ण । वे० सं० २१३ । अ भण्डार ।

विशेष—निर्वागकाण्ड भाषा भैया भगवतीदास कृत भी है ।

३७६६. सबत्सरवर्णन..... । पत्र सं० १ से ३७ । आ० १०।३।४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६५ । अ भण्डार ।

३७६७. स्थूलमद्र का चौमासा वर्षान.....। पत्र सं० २ । छा० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—इतिहास । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २११८ । अ. अण्डार ।

ईदर आबा आबली रे ए देसी

सावण मास सुहावणो रे लाल जो पीउ होवे पास ।  
 घरज कर्क घरे भावजो रे लाल हूं छूं ताहरी दास ।  
 बनुर नर भावो हम बर छा रे सुवण नर तू छ प्राप्त धाधार ॥१॥  
 भादवडे पीउ वेगलो रे लाल हूं कीम कर्क लणगारे ।  
 घरज कर्क घर भावजो रे लाल मोरा छंछत सार ॥२॥  
 भासोजा मासनी चांदणी रे लाल फुलतणी बीछाह तेज ।  
 रंग रा मत कीजिम रे लाल ध्राणी हीमडे तेज ॥३॥  
 कातीक महीने कामीनि रे लाल जो पीउ होवे पास ।  
 संदेसा सयख भण रे लाल धलगायो केम ॥४॥  
 नजर निहालो बाल हो रे लाल भावो मीगसर मास ।  
 लोक कहवत कह्य करो जी पीउडा परम निवास ॥५॥  
 पोस बालम वेगलो रे लाल ध्रवडो मुज दोस ।  
 परीत पनोतर पालीये रे लाल ध्राणी मन मे रोस ॥६॥  
 सीयाले ध्रती ध्रणी दोहलो रे लाल ते माहे बल माह ।  
 पोताने घर भावज्यो रे लाल बीलन कीजे नाह । ७॥  
 लाल गुलाल ध्रबीरमुं रे लाल खेलण लागा लोग ।  
 तुज विण मुज नेइहा ए फली रे लाल फाणुख जाये फोक ॥८॥  
 सुदर पान्न सुहामणो रे लाल कुल तरां मही मास ।  
 बीतारया घरे भावज्यो रे लाल तो करमु गेह गाट ॥९॥  
 बीसारयो न बीसरे रे लाला जे तुम बोल्या बोल ।  
 बेसाखे तुम नेम छुं रे लाल तो बजउ डोल ॥१०॥  
 केहता दीसे कामो रे लाल काइ करावो बैठ ।  
 दीठ बणो हवे कहा करो लाल ध्राणी लायो जेठ ॥११॥

भसाढो धरमुमछोरे लाल बीच बीच जदुके बीजली रे लाल ।  
 तुज बीना मुज नैहारै लाल धरम भावे खीज ॥१२॥  
 रे रे सखी उतावली रे लाल सजी सोला सखगार ।  
 घेर बली पंवी सुदरहरै लाल धे छोबी नार ॥१३॥  
 चार बही नी अब छकी रे लाल भायो मास अरसाढ ।  
 कामण भालो कंत जी रे लाल सखी न भाव्यो भाज ॥१४॥  
 ते उठी उलट धरी रे लाल बालम जोवे भास ।  
 शूलभद्र गुरु भावैस थो रे लाल ऐह बठयो बीमास ॥१५॥

३७६८. हमीर चौपई.....। पत्र सं० १३ मे ३७ । प्रा० ८×६ डब्ब । भाषा—हिन्दी । विषय—  
 इतिहास । र० काल × । ले० का० × । अपूर्ण । वे० सं० १५१६ । ट भण्डार ।

विशेष—रचना में नामोल्लेख कहीं नहीं है। हमीर व अनाउद्दीन के युद्ध का रोचक वर्णन दिया हुआ है ।



## विषय-स्तोत्र साहित्य

३७६६. अकलंककामुक.....। पत्र सं० ५। प्रा० ११३×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र।  
 २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १५०। ज मण्डार।
३७७०. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल ×। वै० सं० २५। व्य मण्डार।
३७७१. अकलंककामुकभाषा-सदासुख कासलीवाल। पत्र सं० २२। प्रा० ११३×५ इंच। भाषा-  
 हिन्दी। विषय-स्तोत्र। २० काल सं० १६१५ श्रावण सुदी २। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ५। क मण्डार।  
 विशेष—दूसी मण्डार मे २ प्रतिपा ( वै० सं० ६ ) ग्रीर हैं।
३७७२. प्रति सं० २। पत्र सं० २८। ले० काल ×। वै० सं० ३। क मण्डार।
३७७३. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १६१५ श्रावण सुदी २। वै० सं० १८७ ष च  
 मण्डार।
३७७४. अजितशांतिस्तवन.....। पत्र सं० ७। प्रा० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र।  
 २० काल ×। ले० काल सं० १६६१ आसोज सुदी १। पूर्ण। वै० सं० ३५७। व्य मण्डार।  
 विशेष—प्रारम्भ मे भक्तामर स्तोत्र भी है।
३७७५. अजितशांतिस्तवन-नन्दिषेण। पत्र सं० १५। प्रा० ८३×४ इंच। भाषा-प्राकृत।  
 विषय-स्तवन। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ८४२। अ मण्डार।
३७७६. अनाघीमृष्टिस्वाध्याय.....। पत्र सं० १। प्रा० ६३×४ इंच। भाषा-हिन्दी गुजराती।  
 विषय-स्तवन। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १६०८। ट मण्डार।
३७७७. अनादिनिधनस्तोत्र। पत्र सं० २। प्रा० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र।  
 २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ३६१। व्य मण्डार।
३७७८. अरहन्तस्तवन.....। पत्र सं० ६ से २४। प्रा० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-  
 स्तवन। २० काल ×। ले० काल सं० १६५२ कार्तिक सुदी १०। अपूर्ण। वै० सं० १६८४। अ मण्डार।
३७७९. अर्धतिपार्श्वजिनस्तवन-हर्षसूरि। पत्र सं० २। प्रा० १०×४ इंच। भाषा-हिन्दी।  
 विषय-स्तवन। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ३५६। व्य मण्डार।  
 विशेष—७८ पद्य हैं।

३७८०. आत्मनिर्दास्तवन—रत्नाकर । पत्र सं० २ । भा० ६३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७ । छ भण्डार ।

विशेष—२५ श्लोक हैं । ग्रन्थ आरम्भ करने से पूर्व पं० विजयहंस गरिण को नमस्कार किया गया है । पं०  
जय विजयगरिण ने प्रतिलिपि की थी ।

३७८१. आराधना..... । पत्र सं० २ । भा० ८×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । १० काल  
× । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६ । क भण्डार ।

३७८२. इष्टोपदेश—पूज्यपाद । पत्र सं० ५ । भा० ११३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५ । छ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संक्षिप्त टीका भी हुई है ।

३७८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ७१ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ७२ ) भी है ।

३७८४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ७ । घ भण्डार ।

विशेष—देवीदास की हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३७८५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १६४० । वे० सं० ६० । छ भण्डार ।

विशेष—संधी पन्नालाल दूनीवाले कुल हिन्दी अर्थ सहित है । सं० १६३५ में भाषा की थी ।

३७८६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६७३ पीघ बुदी ७ । वे० सं० ४०८ । व्य  
भण्डार ।

विशेष—वेणुदास ने जगह में प्रतिलिपि की थी ।

३७८७. इष्टोपदेशटीका—आशाधर । पत्र सं० ३६ । भा० १२३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७० । क भण्डार ।

३७८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ६१ । छ भण्डार ।

३७८९. इष्टोपदेशभाषा ..... । पत्र सं० २५ । भा० १२×७३ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—  
स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२ । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ को लिखाने व कागज में ४(11)॥ व्यय हुये है ।

३७९०. उपदेशसम्झाव—ऋषि रामचन्द्र । पत्र सं० १ । भा० १०×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६० । छ भण्डार ।

३७६१. उपदेशसङ्ग्राह्य—रंगविजय । पत्र सं० ४ । प्रा० १०×४<sup>३</sup> इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८३ । अ भण्डार ।

विशेष—रंगविजय श्री रत्नहर्ष के शिष्य थे ।

३७६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१६१ । अ भण्डार ।

विशेष—३रा पत्र नहीं है ।

३७६३. उपदेशसङ्ग्राह्य—देवादिल । पत्र सं० १ । प्रा० १०×४<sup>३</sup> इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६२ । अ भण्डार ।

३७६४. उपमर्गहरस्तोत्र—पूर्णाचन्द्राचार्य । पत्र सं० १४ । प्रा० ३<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×४<sup>३</sup> इंच । भाषा—संस्कृत  
प्राकृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १५५३ आसोज मुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ४१ । च भण्डार ।

विशेष—श्री बृहद्गच्छीय भट्टारक गुणदेवसूरि के शिष्य गुणनिधाम ने इसकी प्रतिलिपि की थी । प्रति  
यन्त्र सहित है । निर्मालिखित स्तोत्र है ।

| नाम स्तोत्र   | कर्ता | भाषा            | पत्र   | विशेष   |
|---|-------|-----------------|--------|---------|
| १. अजितशांतिस्तोत्र—                                | ×     | प्राकृत संस्कृत | १ से ६ | ३६ गाथा |
| विशेष—प्राचार्य गोविन्दकृत संस्कृत वृत्ति सहित है । |       |                 |        |         |

|                 |   |         |         |  |
|-----------------|---|---------|---------|--|
| २. भयहरस्तोत्र— | × | संस्कृत | ६ मे १० |  |
|-----------------|---|---------|---------|--|

विशेष—स्तोत्र अक्षरार्थ मन्त्र गर्भित सहित है । इस स्तोत्र की प्रतिलिपि सं० १५५३ आसोज मुदी १२  
की मेदपाट देश में राजा राममल्ल के शासनकाल में कोठारिया नगर में श्री गुणदेवसूरि के उपदेश से उनके शिष्य ने  
की थी ।

|                 |   |   |          |  |
|-----------------|---|---|----------|--|
| ३. भयहरस्तोत्र— | × | " | ११ से १४ |  |
|-----------------|---|---|----------|--|

विशेष—इसमें पार्श्वयक्ष मन्त्र गर्भित अष्टादश प्रकार के यन्त्र की कल्पना मानवुंगाचार्य कृत की हुई है ।

३७६५. अष्टभदेवस्तुति—जिनसेन । पत्र सं० ७ । प्रा० १०<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४६ । छ भण्डार ।

३७६६. अष्टभदेवस्तुति—पद्मनन्दि । पत्र सं० ११ । प्रा० १२×६<sup>३</sup> इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—  
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४६ । अ भण्डार ।

विशेष—८वे पृष्ठ से दर्शनस्तोत्र दिया हुआ है । दोनों ही स्तोत्रों के संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये  
हुये हैं ।



३७६७. ऋषभस्तुति..... पत्र सं० ५ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अमूर्ण । वे० सं० ६५१ । अ भण्डार ।

३७६८. ऋषिमंडलस्तोत्र—गौतमस्वामी । पत्र सं० ३ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४ । अ भण्डार ।

३७६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८५६ । वे० सं० १३२७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया ( वे० सं० ३३८, १४२६, १६०० ) और है ।

३८००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ६१ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ तथा मन्त्र साधन विधि भी दी हुई है ।

३८०१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २१ ।

विशेष—कृष्णलाल के पठनार्थ प्रति लिखी गई थी । ख भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० २६१ ) और है ।

३८०२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० २६० ) और है ।

३८०३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १७६८ । वे० सं० १४ । अ भण्डार ।

३८०४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७६ मे १०१ । ले० काल × । वे० सं० १८३६ । ट भण्डार ।

३८०५. ऋषिमंडलस्तोत्र..... पत्र सं० ५ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०४ । म भण्डार ।

३८०६. एकाक्षरीस्तोत्र—(तकाराक्षर)..... पत्र सं० १ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८६१ ज्येष्ठ मुदी । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । प्रदर्शन योग्य है ।

३८०७. एकीभाषस्तोत्र—वादिराज । पत्र सं० ११ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८८३ भाष कृष्णा ६ । पूर्ण । वे० सं० २५४ । अ भण्डार ।

विशेष—अमोलकचन्द्र ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० १३८ ) और है ।

३८०८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६६ । ख भण्डार ।

३८०९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ६३ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ६४ ) और है ।

३८१०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ५३ । च भण्डार ।

विशेष—महावन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी । प्रति संस्कृत टीका तर्हित है ।

इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति ( वे० सं० ५२ ) और है ।

३८११. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० १२ । छ भण्डार ।

३८१२. एकीभावस्तोत्रभाषा—भूधरदास । पत्र सं० ३ । प्रा० १०२×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच । भाषा—हिन्दी  
पद्य । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०३६ । अ भण्डार ।

विशेष—बारह भावना तथा शांतिनाथ स्तोत्र और है ।

३८१३. एकीभावस्तोत्रभाषा—पद्मालाल । पत्र सं० २२ । प्रा० १२३×५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—स्तोत्र । २० काल सं० १६३० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३ । क भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ६४ ) और है ।

३८१४. एकीभावस्तोत्रभाषा..... । पत्र सं० १० । प्रा० ७×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल सं० १६१८ । पूर्ण । वे० सं० ३५३ । झ भण्डार ।

३८१५. ओंकारवचनिका ..... । पत्र सं० ३ । प्रा० १२३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५ । क भण्डार ।

३८१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १६३६ आसोज बुदी ५ । वे० सं० ६६ । क  
भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ६७ ) और है ।

३८१७. कल्पमूत्रमहिमा..... । पत्र सं० ४ । प्रा० ६<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×४<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—महात्म्य ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

३८१८. कल्याणक—समन्तभद्र । पत्र सं० ५ । प्रा० १०<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×४<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—

स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६ । छ भण्डार ।

विशेष—

परिविचि चउवीसवि तिथ्यर,

मुरणर विसहर भुव चलणा ।

पुगु भणमि पंच कथ्याण दिण,

भविहृ गिमुणह इकमणा ॥

अन्तिम—

करि कल्याणपुञ्ज जियराहहो,

अगु दिगु चित्त अविचलं ।

कहिय समुच्च एण ते कविया

लिज्जइ इमणुव भव फलं ॥

इति श्री समन्तभद्र कृत कल्याणक समाप्ता ॥

३८१६. कल्याणमन्दिरस्तोत्र—कुमुदचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५ । आ० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पार्वनाथ स्तवन । २० काश × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५१ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतियां ( वे० सं० ३८४, १२३६, १२६२ ) और है ।

३८८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० २६ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया और हे ( वे० सं० ३०, २६४, २८१ ) ।

३८२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८१७ माघ सुदी १ । वे० सं० ६२ । च

भण्डार ।

३८२२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६४६ माह सुदी १५ । अपूर्णा । वे० सं० २५६ ।

छ भण्डार ।

विशेष—५वां पत्र नहीं है । इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० १३४ ) और है ।

३८२३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १७१४ माह सुदी ३ । वे० सं० ७ । म भण्डार ।

विशेष—साह जोधराज गोदीकाने आनंदराम मे सांगानेर मे प्रतिलिपि करवायी थी । यह पुस्तक जांधराज गादीका की है ।

३८२४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १७६६ । वे० सं० ७० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति हर्षकीर्ति कृत संस्कृत टीका सहित है । हर्षकीर्ति नागपुरीय तपागच्छ प्रधान चण्डीकीर्ति के शिष्य थे ।

३८२५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७४६ । वे० सं० १६६८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति कल्याणमञ्जरी नाम विनयमागर कृत संस्कृत टीका सहित है । अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति सकलकुमरकुवदस्वडचडचंडरश्मिःश्रीकुमुदचन्द्रपूरिविरचित श्रीकल्याणमन्दिरस्तोत्रस्य कल्याणमञ्जरी टीका संपूर्ण । दयाराम ऋषि ने स्वामज्जान हेतु प्रतिलिपि की थी ।

३८०६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८६६ । वे० सं० २०६५ । ट भण्डार ।

विशेष—छोटेलाल ठोलिया भारोठ वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

३८२७. कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका—पं० आशाधर । पत्र सं० ४ । मा० १०×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५३१ । अ भण्डार ।

३८२८. कल्याणमंदिरस्तोत्रवृत्ति—देवतिलक । पत्र सं० १५ । मा० ६<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×४<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १० । अ भण्डार ।

विशेष—टीकाकार परिचय—

श्रीउपेयाशयान्धिवन्धमदया विद्वज्जनाह्लादयन्,

प्रवीण्यधनमारपाठकधरा राजन्ति भास्वातर ।

तच्छिष्यः कुमुदापिदेवतिलकः सद्बुद्धिबुद्धिप्रदा,

श्रेयोमन्दिरमस्तवस्य मुदितो वृत्तिः श्वभादद्भुतं ॥१॥

कल्याणमंदिरस्तोत्रवृत्तिः सौभाग्यमञ्जरी ।

वाच्यमानाज्जनैर्नदाश्वद्रावर्क मुदा ॥२॥

इति श्रेयोमंदिरस्तोत्रस्य वृत्तिसमाप्ता ॥

३८२९. कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका—... । पत्र सं० ४ से ११ । मा० १०×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ११० । क भण्डार ।

३८३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ मे १२ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २३३ । क भण्डार ।

विशेष—रूपबन्ध चौधरी कनेमु मुन्दरदास अजमेरी मोल लीनी । ऐसा अन्तिम पत्र पर लिखा है ।

३८३१. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा—पन्नालाल । पत्र सं० ४७ । मा० १२<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल सं० १६३० । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १०७ । क भण्डार ।

३८३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वै० सं० १०८ । क भण्डार ।

३८३३. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा—ऋषि रामचन्द्र । पत्र सं० ५ । मा० १०×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १८७ । क भण्डार ।

३८३४. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा—चनारसीदास । पत्र सं० ८ । मा० ६×३<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा—हिन्दी । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २२४० । अ भण्डार ।

३८३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वै० सं० १११ । क भण्डार ।

३८३६. केवलज्ञानीसम्भाष्य—विनयचन्द्र । पत्र सं० २ । मा० १०×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २१८८ । अ भण्डार ।

३८३७. क्षेत्रपालेनामावली.....। पत्र सं० ३। प्रा० १०×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।  
१० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० २४४। अ भण्डार।

३८३८. गीतप्रबन्ध.....। पत्र सं० २। प्रा० १०×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। १०  
काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १२४। क भण्डार।

विशेष—हिन्दी में वसन्तराम में एक भजन है।

३८३९. गीत वीतराग—पंडिताचार्य अभिनवचारूकीर्ति। पत्र सं० २६। प्रा० १०×५ इंच।  
भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। १० काल ×। ले० काल सं० १८८९ ज्येष्ठ बुदी ५५। पूर्ण। वै० सं० २०२। अ  
भण्डार।

विशेष—जयपुर नगर में श्री चुन्नीलाल ने प्रतिलिपि की थी।

गीत वीतराग संस्कृत भाषा की रचना है जिसमें २४ प्रबंधों में भिन्न भिन्न राग रागिनियों में भगवान  
आदिनाथ का पौराणिक आस्थान वर्णित है। ग्रन्थकार की पंडिताचार्य उपाधि में ऐसा प्रकट होता है कि वे अपने समय  
के विशिष्ट विद्वान् थे। ग्रन्थ का निर्माण कब हुआ यह रचना में ज्ञात नहीं होता किन्तु वह समय निश्चय ही मंत्र  
१८८९ से पूर्व है क्योंकि ज्येष्ठ बुदी अमावस्या सं० १८८९ को जयपुरस्थ लक्ष्मण के मन्दिर के पास रहने वाले श्री  
चुन्नीलालजी साहू ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि की है प्रति मुंदर अक्षरों में लिखी हुई है तथा शुद्ध है। ग्रन्थकार ने ग्रन्थ  
को निम्न रागों तथा तालों में संस्कृत गीतों में रूपा है—

राग रागनी— मालव, गुर्जरी, वसंत, रामकली, कालहरा कर्णटक, देशमिश्र, देवचैराडी, गुणकरी, मालवगौड,  
गुर्जराग, भैरवी, विराडी, विभास, कानरो।

तान— रूपक, एकताल, प्रतिमण्ड, परिमण्ड, तितानो, अठनाल।

गीतों में म्हायी, अन्तरा, संचारी तथा आभोग ये चारों ही चरण हैं इस सबमें ज्ञात होता है कि ग्रन्थकार  
संस्कृत भाषा के विद्वान होने के साथ ही साथ अर्द्ध मंगीनज्ञ भी थे।

३८४०. प्रति सं० २। पत्र सं० ३२। ले० काल सं० १९३४ ज्येष्ठ मुदी ८। वै० सं० १२५। क  
भण्डार।

विशेष—संघर्षात् अक्षरचन्द्र के मेवक माणिक्यचन्द्र ने सुरंगपत्तन की यात्रा के अवसर पर आनन्ददाम के  
वचनानुसार सं० १८८४ वाली प्रति में प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० १२६ ) भी है।

३८४१. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४। ले० काल ×। वै० सं० ४२। अ भण्डार।

३८४२. शुण्डस्तवन.....। पत्र सं० १५। प्रा० १२×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तवन। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८५८। ट भण्डार।

३८४३. गुरुसहस्रनाम .....। पत्र सं० ११। प्रा० १०×४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल सं० १७४६ वैशाख बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० २६८। ख भण्डार।

३८४४. गोम्मटसारस्तोत्र .....। पत्र सं० १। प्रा० ७×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७३। अ भण्डार।

३८४५. घटघरनिसारी—जिनहपे। पत्र सं० २। प्रा० १०×५ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०१। छ भण्डार।

विषय—पार्श्वनाथ की स्तुति है।

प्राग्—

मुख संपति मुर नायक परनधि पास जिगंदा है।

जाकी छवि कांति अनोपम उपमा दीपत जात दिगंदा है।

अग्निम—

निद्रा दावा मानहार हासा दे सेवक विलंबदा है।

घग्घर नीमागो पास वखारो गुणी जिनहरष कहंदा है।

इति श्री घग्घर निसारी संपूर्ण ॥

३८४६. चक्रेश्वरीस्तोत्र.....। पत्र सं० १। प्रा० १०½×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २६१। ख भण्डार।

३८४७. चतुर्विंशतिजिनस्तुति—जिनलाभसूरि। पत्र सं० ६। प्रा० ८×५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तवन। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८५। ख भण्डार।

३८४८. चतुर्विंशतितीर्थङ्कर जयमाल.....। पत्र सं० १। प्रा० १०½×५ इंच। भाषा—प्राकृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१४८। अ भण्डार।

३८४९. चतुर्विंशतिस्तवन.....। पत्र सं० ५। प्रा० १०×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२६। अ भण्डार।

विशेष—प्रथम ४ पत्रों में वसुधारा स्तोत्र है। पं० विजयगिरि ने पट्टनमध्ये स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३८५०. चतुर्विंशतिस्तवन.....। पत्र सं० ४। प्रा० ९½×४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५७। छ भण्डार।

विशेष—१२वें तीर्थङ्कर तक की स्तुति है। प्रत्येक तीर्थङ्कर के स्तवन में ४ पद्य हैं।

प्रथम पद्य निम्न प्रकार है—

भव्यांभोजविबोधनैकतरणे विस्तारिकर्ममावली

रम्भासामजनभिनंदनमहानष्टा पदाभागुरैः ।

भवत्या वंदितपादपद्यविदुषा संपादयाभोजिकता ।

रंभासाम जनभिनंदनमहानष्टा पदाभागुरैः ॥१॥

३८५१. चतुर्विंशति तीर्थङ्करस्तोत्र—कमलविजयगण्डि । पत्र सं० १५ । आ० १२३×५ इंच ।  
भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३८५२. चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति—माघनन्दि । पत्र सं० ३ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१८ । ब्य भण्डार ।

३८५३. चतुर्विंशति तीर्थङ्करस्तुति..... । पत्र सं० १ । आ० १०३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६१ । अ्य भण्डार ।

३८५४. चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति..... । पत्र सं० ३ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० २३७ । अ्य भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३८५५. चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तोत्र..... । पत्र सं० ६ । आ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६८२ । ट भण्डार ।

विशेष—स्तोत्र कट्टर बीसपन्थी ग्राम्नाय का है । सभी देवी देवताओं का वर्णन स्तोत्र में है ।

३८५६. चतुष्पदीस्तोत्र..... । पत्र सं० ११ । आ० ८३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५७५ । अ्य भण्डार ।

३८५७. चामुण्डस्तोत्र—पृथ्वीधराचार्य । पत्र सं० २ । आ० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३८१ । अ्य भण्डार ।

३८५८. चिन्तामणिपार्ष्वनाथ जयमालस्तवन..... । पत्र सं० ४ । आ० ८×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—स्तवन । २० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३४ । अ्य भण्डार ।

३८५९. चिन्तामणिपार्ष्वनाथ स्तोत्रमंत्रसहित..... । पत्र सं० १० । आ० ११×५ इंच । भाषा—  
संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६० । अ्य भण्डार ।

३८६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८३० आसोज सुदी २ । वै० सं० १८१ । छ  
भण्डार ।

३८६१. चित्रबंधस्तोत्र ..... । पत्र सं० ३ । प्रा० १२×३ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २४८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र चिपके हुये है ।

३८६२. चैत्यबंधना ..... । पत्र सं० ३ । प्रा० १२×३ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २१०३ । अ भण्डार ।

३८६३. चौबीसस्तवन ..... । पत्र सं० १ । प्रा० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २०  
काल × । ले० काल सं० १९७७ फागुन बुदी ७ । पूर्ण । वै० सं० २१२२ । अ भण्डार ।

विशेष—बलशोराम ने भरतपुर में रणधीरसिंह के राज्य में प्रतिनिधि की थी ।

३८६४. छंदसंग्रह ..... । पत्र सं० ६ । प्रा० ११ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २०५२ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न छंद है—

| नाम छंद          | नाम कर्त्ता  | पत्र | विशेष |
|------------------|--------------|------|-------|
| महावीर छंद       | शुभचन्द      | १ पर | ×     |
| विजयकीर्ति छंद   | ”            | २ ”  | ×     |
| शुभ छंद          | ”            | ३ ”  | ×     |
| पार्श्व छंद      | ब्र० लेखराज  | ३ ”  | ×     |
| गुरु नामावलि छंद | ×            | ४ ”  | ×     |
| भारती संग्रह     | ब्र० जिनदास  | ४ ”  | ×     |
| चन्द्रकीर्ति छंद | —            | ४ ”  | ×     |
| कृपण छंद         | चन्द्रकीर्ति | ५ ”  | ×     |
| नेमिनाथ छंद      | शुभचन्द्र    | ६ ”  | ×     |

३८६५. जगन्नाथाष्टक—शाङ्कराचार्य । पत्र सं० २ । प्रा० ७×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।  
( जैनतर साहित्य ) । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २३३ । छ भण्डार ।



३८६६. जिनवरस्तोत्र..... पत्र सं० ३। प्रा० ११<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र।

२० काल ×। ले० काल सं० १८८६। पूर्ण। वे० सं० १०२। च भण्डार।

विशेष—भोगीलाल ने प्रतिलिपि की थी।

३८६७. जिनगुरुमाला..... पत्र सं० १६। प्रा० ८×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। २०

काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४१। झ भण्डार।

३७६८. जिनचैत्यबन्दना..... पत्र सं० २। प्रा० १०×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तवन।

२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०३५। झ भण्डार।

३८६९. जिनदर्शनाष्टक..... पत्र सं० १। प्रा० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। २०

काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०२६। ट भण्डार।

३८७०. जिनपंजरस्तोत्र..... पत्र सं० २। प्रा० ६<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र।

२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१५४। ट भण्डार।

३८७१. जिनपंजरस्तोत्र—कमलप्रभाचार्य। पत्र सं० ३। प्रा० ८<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×४<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इञ्च। भाषा-संस्कृत।

विषय-स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६। म् भण्डार।

विशेष—पं० मन्नालाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

३८७२. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल ×। वे० सं० ३०। ग भण्डार।

३८७३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० २०५। झ भण्डार।

३८७४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं० २६५। झ भण्डार।

३८७५. जिनवरदर्शन—पद्मनन्दि। पत्र सं० २। प्रा० १०<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-

स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल सं० १८६४। पूर्ण। वे० सं० २०८। झ भण्डार।

३८७६. जिनवाणीस्तवन—जगताराम। पत्र सं० २। प्रा० ११×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-

स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७३३। च भण्डार।

३८७७. जिनशतकटीका—शंभुसाधु। पत्र सं० २६। प्रा० १०<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×४<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच। भाषा-संस्कृत।

विषय-स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६१। क भण्डार।

विशेष—अन्तिम— इति शंभु साधुविरचित जिनशतक पंजिकायां वाग्दर्शन नाम चतुर्थपरिच्छेद समाप्त।

३८७८. प्रति सं० २। पत्र सं० ३४। ले० काल ×। वे० सं० ४६८। झ भण्डार।

३८७६. जिनशतकटीका—नरसिंहभट्ट । पत्र सं० ३३ । प्रा० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६४ चैत्र सुदी १४ । वे० सं० २६ । अ भण्डार ।

विशेष—ठाकर ब्रह्मदास ने प्रतिनिधि की थी ।

३८८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १६५६ पौष बुदी १० । वे० सं० २०० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिया ( वे० सं० २०१, २०२, २०३, २०४ ) श्रौर है ।

३८८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १६१५ भाद्रवा बुदी १३ । वे० सं० १०० । क भण्डार ।

३८८२. जिनशतकालङ्कार—समंतभट्ट । पत्र सं० १४ । प्रा० १३×७३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३० । ज भण्डार ।

३८८३. जिनशतवनद्वान्निशिका..... । पत्र सं० ६ । प्रा० ६३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६६ । ट भण्डार ।

विशेष—गुजराती भाषा सहित है ।

३८८४. जिनस्तुति—शोभनमुनि । पत्र सं० ६ । प्रा० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १८७ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

३८८५. जिनसहस्रनामस्तोत्र—आशाधर । पत्र सं० १७ । प्रा० ६×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०७६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतिया ( वे० सं० ५२१, ११२६, १०७६ ) श्रौर हैं ।

३८८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ५७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ५७ ) श्रौर है ।

३८८७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८३३ कार्तिक बुदी ४ । वे० सं० ११४ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र ६ से आगे हिन्दी में तीर्थङ्करो की स्तुति श्रौर है ।

इसी भण्डार में २ प्रतिया ( वे० सं० ११६, ११७ ) श्रौर है ।

३८८८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२४ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० २३३ ) श्रौर है ।

३८८६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८६३ आसोज बुदी ४ । वै० सं० २८ । ज  
मण्डार ।

विशेष—इसके प्रतिरिक्त लघु मामयिक, लघु स्वयम्स्तोत्र, लघुसहस्रनाम एवं चैत्यबंदना भी है । प्रकुरा-  
रोपण मंडल का चित्र भी है ।

३८८७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४९ । ले० काल सं० १६५३ । वै० सं० ४७ । ज मण्डार ।

विशेष—मवन् मोल १६५३ त्रेपनावर्ष श्रीमूलसंघे भ० श्री विद्यानन्दि तत्पट्टे भ० श्री मल्लिभूषणतत्पट्टे  
भ० श्री लक्ष्मीचंद तत्पट्टे भ० श्रीवीरचंद तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषण तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्र तत्पट्टे भ० वादिचंद्र  
तेषामध्ये श्री प्रभाचन्द्र चेली बाइ तेजमती उपदेशनार्य बाइ अजीतमती नारायणग्रामे इद सहस्रनाम स्तोत्र निजकर्म  
क्षयार्थं लिखितं ।

इसी मण्डार में एक प्रति ( वै० सं० १८९ ) भी है ।

३८९१. जिनसहस्रनामस्तोत्र—जिनसेनाचार्य । पत्र सं० २८ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—  
संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३३६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ४ प्रतियां ( वै० सं० ५३२, ५४३, १०९४, १०९८ ) भी हैं ।

३८९२ प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वै० सं० ३१ । अ मण्डार ।

३८९३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल × । वै० सं० ११७ क । च मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतियां ( वै० सं० ११६, ११८ ) भी हैं ।

३८९४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १९०३ आसोज बुदी १३ । वै० सं० १९५ । ज  
मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वै० सं० १२५ ) भी है ।

३८९५ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३३ । ले० काल २ । वै० सं० २६६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वै० सं० २६७ ) भी है ।

३८९६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १८८४ । वै० सं० ३२० । ज मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ३१६ ) भी है ।

३८९७. जिनसहस्रनामस्तोत्र—सिद्धसेन द्विवाकर । पत्र सं० ४ । आ० १२×७ इंच । भाषा—  
संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २८ । च मण्डार ।

३८९८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १७२६ आषाढ बुदी १० । पूर्ण । वै० सं० ८ ।

अ मण्डार ।

विशेष—पहले गद्य है तथा अन्त में ५२ श्लोक दिये हैं ।

अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीसिद्धयेनदिवाकरमहाकवीश्वरविरचिनं श्रीसहस्रनामस्तोत्रसंपूर्णं । दुबै ज्ञानचन्द से जोधराज गोदीका ने ग्रामपठनार्थं प्रतिलिपि कराई थी ।

३६६६. जिनसहस्रनामस्तोत्र ' ... । पत्र सं० २६ । श्रा० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८११ । ङ भण्डार ।

३६००. जिनमहस्रनामस्तोत्र ' ... । पत्र सं० ४ । श्रा० १२×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६ । घ भण्डार ।

विशेष—इसके अनिर्दिष्ट निम्नपाठ और है— घंटाकरण मत्र, जिनपंजरस्तोत्र पत्रो के दोनो विनारो पर मुन्दर बेलबूटे है । प्रति दर्शनीय है ।

३६८१. जिनसहस्रनामटीका'''''''' । पत्र सं० १२१ । श्रा० १२×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६३ । क भण्डार ।

विशेष—यह पुस्तक ईश्वरदाम ठोलिया की थी ।

३६०२. जिनसहस्रनामटीका—श्रुतसागर । पत्र सं० १८० । श्रा० १२×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १६५८ अष्टाष्ट मुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १६२ । क भण्डार ।

३६०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ से १६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८१० । ङ भण्डार ।

३६०४. जिनसहस्रनामटीका—अमरकौत्ति । पत्र सं० ८१ । श्रा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८८४ पीप मुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १६१ । अ भण्डार ।

३६०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १७२५ । वे० सं० २६ । घ भण्डार ।

विशेष—ब्रध गोपालपुरा में प्रतिनिपि हुई थी ।

३६०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० २०६ । ङ भण्डार ।

३६०७. जिनसहस्रनामटीका'''''''' । पत्र सं० ७ । श्रा० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८२२ श्रावण । पूर्ण । वे० सं० ३०६ । अ भण्डार ।

३६०८. जिनसहस्रनामस्तोत्रभाषा—नाथूराम । पत्र सं० १६ । श्रा० ७×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल सं० १६५६ । ले० काल सं० १६८४ चैत्र मुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २१० । ङ भण्डार ।

३६०९. जिनोपकारस्मरण'''''''''' । पत्र सं० १३ । श्रा० १२ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७ । क भण्डार ।

३६१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० २१२ । ङ भण्डार ।

३६११. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १०६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ७ प्रतिमां ( वे० सं० १०७ मे ११३ तक ) श्रौत है ।

३६१२. रामोकारादिपाठ ..... । पत्र सं० ३०४ । आ० १२×७<sup>२</sup> इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८८२ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २३३ । ङ भण्डार ।

विशेष—११८८ बार एमोकार मन्त्र लिखा हुआ है । अन्त मे चानतराय कृत समाधि मरण पाठ तथा २१८ बार श्रीमद्बृषभादि वर्द्धमानतिम्बोनमः । यह पाठ लिखा हुआ है ।

३६१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २३४ । ङ भण्डार ।

३६१४. रामोकारस्तवन..... । पत्र सं० १ । आ० ६<sup>३</sup>×४<sup>२</sup> इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६३ । अ भण्डार ।

३६१५. तकाराक्षरीस्तोत्र..... । पत्र सं० २ । आ० १२<sup>३</sup>×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०३ । अ भण्डार ।

विशेष—स्तोत्र की संस्कृत मे व्याख्या भी दी हुई है । ताता ताती तनेता तननि ततना ताति तातीत तता इत्यादि ।

३६१६. तीसचौबीसीस्तवन ..... । पत्र सं० ११ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १७५८ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २७६ । ङ भण्डार ।

३६१७. दलालीनी सञ्ज्ञाय..... । पत्र सं० १ । आ० ६×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २१३७ । अ भण्डार ।

३६१८. देवतामनुति—पद्मनंदि । पत्र सं० ३ । आ० १०×४<sup>२</sup> इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६७ । अ भण्डार ।

३६१९. देवागमस्तोत्र—आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं० ४ । आ० १२×५<sup>२</sup> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १७६५ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० ३०८ ) श्रौत है ।

३६२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८६६ वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १६६ । च भण्डार ।

विशेष—अभयचंद साहू ने सवाई जयपुर मे स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे २ प्रतिमां ( वे० सं० १६४, १६५ ) श्रौत है ।

३६२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १८७१ ज्येष्ठ सुदी १३ । वै० सं० १३४ । छ  
भण्डार ।

३६२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६२३ बैशाख बुदी ३ । वै० सं० ७६ । ज  
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० २७७ ) भी है ।

३६२३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७२५ फागुन बुदी १० । वै० सं० ६ । क  
भण्डार ।

विशेष—गढ़े दीनाजी ने सांगानेर में प्रतिलिपि की थी । माह जोधराज गोदीका के नाम पर स्याही पोत  
दी गई है ।

३६२४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वै० सं० १८१ । ख भण्डार ।

३६२५. देवागमस्तोत्रटीका—आचार्य वसुनंदि । पत्र सं० २५ । भा० १३×५ इंच । भाषा—  
संस्कृत । विषय—स्तात्र ( दर्शन ) । २० काल × । ले० काल सं० १५५६ भादवा सुदी १२ । पूर्ण । वै० सं० १२३ ।  
क भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५५६ भाद्रपद सुदी २ श्री मूलसधे नयाम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये  
भट्टारक श्री पद्मनंदि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तत्पिण्डे मुनि श्रीरत्नकीर्ति-  
दवाम्निशिष्य मुनि हेमचंद्र देवास्तदात्मनाय श्रीपथावास्तव्ये खण्डेलवालाण्वये बोडुबागोषे सा. मदन भार्या हरिसिणी पुत्र  
सा. परिसराम भार्या भयी एतैसास्त्रमिद लेखयित्वा ज्ञानपात्राय मुनि हेमचन्द्राय भक्त्याविधिना प्रदत्तं ।

३६२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६४४ भादवा बुदी १२ । वै० सं० १६० । ज  
भण्डार ।

विशेष—कुछ पत्र पानी में थोड़े गम गये हैं । यह पुस्तक पं० कलेहलालजी की है ऐसा लिखा हुआ है ।

३६२७. देवागमस्तोत्रभाषा—जयचंद्र झाषड़ा । पत्र सं० १३४ । भा० १२×७ इंच । भाषा—  
हिन्दी । विषय—न्याय । २० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी १४ । ले० काल सं० १६३८ माह सुदी १० । पूर्ण । वै० सं०  
३०६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ३१० ) भी है ।

३६२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ ले० ८ । ले० काल सं० १८६८ । वै० सं० ३०६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ३०८ ) भी है ।

३६२६. देवागमस्तोत्रभाषा ..... पत्र सं० ८ । आ० ११×७३ इ.च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—  
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । ( द्वितीय परिच्छेद तक ) वे० सं० ३०७ । क. भण्डार ।

विशेष—न्याय प्रकरण दिया हुआ है ।

३६३०. देवाग्रभस्तोत्रवृत्ति—विजयसेनमूरि के शिष्य अणुभा । पत्र सं० ६ । आ० ११×८ इ.च ।  
भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८६४ ज्येष्ठ मुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १६६ । क.  
भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका महित है ।

३६३१. धर्मचन्द्रप्रबन्ध—धर्मचन्द्र । पत्र सं० १ । आ० ११×४३ इ.च । भाषा—प्राकृत । विषय—  
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०७२ । अ. भण्डार ।

विशेष—पूरी प्रति विन्न प्रकार है—

वीतरागाधनमः । साटा छंद—

सत्वगो सदद तिस्राल दिसऊ मवग्व वव्यूगदा ।  
विस्सचकव्यूवरो स आ अविमऊ जो ईम भाऊ ममो ।  
ममदंसगएगामखरिअदोईमो मुगोणा ममो पताणा  
त चउट्टउ मविमलो मिदो बमं कृजजमो ॥१॥

विज्जुमाला छंद—

देवारणं मेवा काओरणं बाणीए अदाडाऽऽरा ।  
गुरुगदो साराहीत्ताणं विज्जुमाला सोहायाग ॥२॥

भुजंगप्रयात छंद—

वरे मूलमंथे जनात्कारगणो मग्मतिगछे पभंदोपयणो ।  
वरो तस्स विम्सो धम्मेटु जीआ बुदो चारुचारित भूअगनाओ ॥३॥

आर्याछंद—

सअल कलापव्हीगो वंगो परमागमम्म मत्वम्मि ।  
भट्टि अजण उट्टारो धम्मचदो जओ मुग्गिदो ॥४॥

कामावतारछंद—

मिद्धक अक्खेण आईमरेण आट्टियुष्णारा पव्वज्जविभाग । ॥१॥  
मिस्सारा मारीण सत्थाण दग्गेण धम्मोपमेण बूहाणरजेण ॥२॥  
मिद्ध..... तण्णससूरेण दूममत फेहेण मुअव्वपूरेण ॥३॥  
भव्वारा भव्वेण लाअण लोणण भासणि भूहेण कम्मह हूएण ॥४॥  
जित्थोइ मादेण कामावताररेण ईदीकूरेण मोक्खवकरत्तेण ॥५॥

जलाचंदेवारा मन्वाज्जणेभारा भलाजईभारा कलासुहभारा ॥६॥

धम्मदुकदेण सद्धम्मचंदेण एम्मोत्थुकारेण भलिव्वभारेण ॥

त्थुउ अरिट्ठेण सोमोवि तित्थेण दासेण बूहेण संकुज्जभनेण ॥८॥

द्वानिशत्यत्र कमलबंधः ॥

भार्याछंद—

कोहो लोहोचतो भतो अजईए सासणे लीणो ।

मा अमोहवि स्त्रीषो मारत्वी कंक्णो छेमी ॥६॥

भुजगप्रयातछंद—

मुचिन्तो वितित्तो विभामो जईसो मुमीनो मुलीनो मुसोहो विईसो ।

मुधम्मो सुरम्मो मुकम्मो मुसीसो विराधो विमाधो विचिट्ठो विमोसो ॥१०॥

भार्याछंद—

सम्मदं सरणणायं सञ्चारितं तहे वसु णायो ।

चरइ चरावइ धम्मो चंदो अविपुष्ण विक्खाम्भो ॥११॥

भौतिकदामछंद—

तिलग हिमाचल मालव भ्रंग वरठ्वर केरल कण्णड वंग ।

तिलास कालिग कुरंगडहाल कराडअ गुज्जर डंड तमाल ॥१२॥

मुपोट अवंति किरात अकीर मुनुक्क तुरुक्क बराठ मुवीर ।

मरुत्थल दक्खण पूरवदेस मुणागवचाल मुकुभ लसेस ॥१३॥

चऊड गऊड मुक्कणलाट, मुवेट मुभोट मुदव्विड राट ।

मुदेस विदेसहं आचइ राम, विवेक विचक्खण पुजइ पाप ॥१४॥

मुचक्कल पीरणभोहरि णारि, रणग्गण रोउर पाइ विधारि ।

मुविब्भम अंति अहाउ विभाउ, मुगावइ गीउ मणोहरसाउ ॥१५॥

मुउज्जल मुत्ति अहीर पवाल, मुपूरउ रिणम्मल रंगिहि बाल ।

चउक्क विउणरि धम्मविचंद बधामउ अक्खहि वास मुभंद ॥१६॥

भार्याछंद—

जइ जणदिसिवर सहिधो, सम्मदिट्ठि साव आइ परि आरिउ ।

जिणधम्मभवणखंभो विस अंख अंकरो जघो जअइ ॥१०॥



अग्निबलीछंद—

जत पत्तिद्व विबाह उदारकं सिस्स सत्वाण दाणाभरो माणकं ।

धम्मणी राणुधारा ए भव्वाणकं चारुसस्स एउ द्वारणिग्गदकं ॥१८॥

छद्दा भग्गली भावणाभावण, दस्सधम्मा वरा सम्पदा पालण ।

चारु चारित्तहिं भूसिधो विग्गहो, धम्मचंदो जघो जित इदिग्गहो ॥१९॥

पद्यछंद—

गुरणर खगचरखचर चारु चच्चि प्रक्रम जिणवर ।

चरण कमलहिं अघरण सरण गोयम अइ जहवर ।

पोसि अचित्तर धम्म सोसि अक्कमपबलतर ।

उदारी कयसमि वग्गभव चातक जलधर ।

धम्मह सप्य दप्प हरणवर समत्थ तारण तरण ।

अय धम्मधुरंधर धम्मचंदे सयलसंध मंगलकरण ॥२०॥

इति धर्मचन्द्रप्रबंध समाप्तः ॥

३६३२. नित्यपाठसंग्रह..... पत्र सं० ७ । प्रा० ८३×४३ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८२० । अग्र भण्डार ।

विशेष—मिम्न पाठो का संग्रह है ।

|                |         |                     |
|----------------|---------|---------------------|
| बडा दर्शन—     | संस्कृत | —                   |
| छोटा दर्शन—    | हिन्दी  | बुधजन               |
| भूतकाल चौबीसी— | ”       | ×                   |
| पंचमंगलपाठ—    | ”       | रूपचंद ( २ सगल है ) |
| प्रभियेक विधि— | संस्कृत | ×                   |

३६३३. निर्वाणकासहगाथा..... पत्र सं० ५ । प्रा० ११×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तवन ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६५ । अग्र भण्डार ।

विशेष—महावीर निर्वाण कल्याणक पूजा भी है ।

३६३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ३७२ । अग्र भण्डार ।

३६३५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० १८७ । अग्र भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १८८ ) भी है ।

३६३६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार ३ प्रतिमां ( वे० सं० १३६, २५६ २५६/२ ) धीर है ।

३६३७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ४०३ । व्य मण्डार ।

३६३८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १८६३ । ट मण्डार ।

३६३९. निर्वाणकाण्डटीका..... । पत्र सं० २४ । घा० १०×५ इंच । भाषा—प्राकृत संस्कृत । विषय—  
स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६ । ख मण्डार ।

३६४०. निर्वाणकाण्डभाषा—भैया भगवतीदास । पत्र सं० ३ । घा० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—स्तवन । २० काल सं० १७४१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७५ । क मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे २ अर्पण प्रतिमां ( वे० सं० ३७३, ३७४ ) धीर है ।

३६४१. निर्वाणभक्ति..... । पत्र सं० २४ । घा० ११×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८२ । क मण्डार ।

३६४२. निर्वाणभक्ति..... । पत्र सं० ६ । घा० ६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । २०  
काल × । ले० काल × । अर्पण । वे० सं० २०७५ । ट मण्डार ।

विशेष—१६ पद्य तक है ।

३६४३. निर्वाणसप्तशतीस्तोत्र..... । पत्र सं० ६ । घा० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
स्तवन । २० काल × । ले० काल सं० १६२३ घासोत्र बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० । ज मण्डार ।

३६४४. निर्वाणस्तोत्र..... । पत्र सं० ३ मे ५ । घा० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।  
२० काल × । ले० काल × । अर्पण । वे० सं० २१७५ । ट मण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका दी हुई है ।

३६४५. नेमिनरेन्द्रस्तोत्र—जगन्नाथ । पत्र सं० ८ । घा० ६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १७०४ भादवा बुद. २ । पूर्ण । वे० सं० २३२ । व्य मण्डार ।

विशेष—पं० दामोदर ने शेरपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

३६४६. नेमिनाथस्तोत्र—पं० शाली । पत्र सं० १ । घा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८८६ । पूर्ण । वे० सं० ३४० । अ मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । द्वयक्षरी स्तोत्र है । प्रदर्शन योग्य है ।

३६४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० १८३० । ट मण्डार ।

३६४८. नेमिस्तवन—शुचि शिव । पत्र सं० २ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
स्तवन । २० काल × । ले० काल । पूर्ण । वे० सं० १२०८ । अ भण्डार ।

विशेष— बीस तीर्थङ्कर स्तवन भी है ।

३६४९. नेमिस्तवन—जितसागरगणी । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१५ । अ भण्डार ।

विशेष—दूसरा नेमिस्तवन भी है ।

३६५०. पञ्चकल्याणकपाठ—हरचंद्र । पत्र सं० १ । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल ×  
१८३३ ज्येष्ठ सुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३८ । अ भण्डार ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न है—

प्रारम्भ—

कल्याण नायक नमो, कला कुरुह कुलवाद ।

कल्पय दुर कल्याण कर, बुधि कुल कमल दिनद ॥१॥

मंगल नायक वंदिके, मंगल पंच प्रकार ।

वर मंगल मुक्त दीजिये, मंगल वरनन सार ॥२॥

अन्तिम—घन छंद—

यह मंगल माला सब जनविधि है,

सिब साना गल में धरनी ।

बाला ब्रध तरुन सब जग को,

मुख समूह की है भरनी ॥

मन वच तन प्रधान करै गुन,

तिनके चहुगति दुख हरनी ॥

साने भविजन पडि कडि जगते,

पंचम गति बामा वरनी ॥११६॥

दीर्घा—

श्रीम शंभुल न नापिये, गनिये मधवा धार ।

उडगन मित भू पैड्यो, ल्यो गुन वरने सार ॥११७॥

तीनि तीनि वनु चंद्र, संबतसर के श्रंक ।

बेष्ट शुक्ल सप्तम दिवस, पूरन पढी निमंक ॥११८॥

॥ इति पंचकल्याणक संसूच्य ॥

३६५१. पञ्चनमस्कारस्तोत्र—आचार्य विद्यानंदिं । पत्र सं० ४ । प्रा० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ काष्ठुण । पूर्ण । वे० सं० ३५ । अ भण्डार ।

३६५२. पञ्चमंगलपाठ—रूपचंद्र । पत्र सं० ६ । प्रा० १२३×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८४४ कागज सुधी २ । पूर्ण । वे० सं० ५०२ ।

विशेष—ग्रन्थ में तीस चौबीसी के नाम भी दिये हुये हैं । पं० खुन्वानन्द ने प्रतिनिधि की थी ।

इसी भण्डार में ३ प्रतियां ( वे० सं० ६५७, ७७१, ६६० ) धौर है ।

३६५३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६३७ । वे० सं० ४१४ । क भण्डार ।

३६५४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । वे० सं० ३६४ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति धौर है ।

३६५५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८८६ प्रासोज मुदी १५ । वे० सं० ६१८ । च

भण्डार ।

विशेष—पत्र ४ चोया नहीं है । इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० २३६ ) धौर है ।

३६५६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १४५ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० २३६ ) धौर है ।

३६५७. पंचस्तोत्रसंग्रह..... । पत्र सं० ५३ । प्रा० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१८ । अ भण्डार ।

विशेष—पाचों ही स्तोत्र टीका सहित है ।

| स्तोत्र             | टीकाकार        | भाषा    |
|---------------------|----------------|---------|
| १. एकीभाव           | नागचन्द्र सूरी | संस्कृत |
| २. कल्पारामन्दिर    | हर्षकीर्ति     | "       |
| ३. विद्यापहार       | दीपचन्द्रसूरी  | "       |
| ४. भूपालचतुर्विधति  | प्राभाधर       | "       |
| ५. सिद्धिमियस्तोत्र | —              | "       |

३६५८. पंचस्तोत्रसंग्रह..... । पत्र सं० २४ । प्रा० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४०० । अ भण्डार ।

३६५९. पंचस्तोत्रटीका..... । पत्र सं० ५० । प्रा० १२×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २००३ । ट भण्डार ।

विशेष—भकार, विद्यापहार, एकीभाव, कल्याणमदिर, भूपालचतुर्विंशति इन पाच स्तोत्रो की टीका है ।

३६६०. पद्मावत्यष्टकवृत्ति—पार्वदेव । पत्र सं० १५ । घा० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
स्नात्र । २० काल × । ले० काल म० १८६७ । पूर्ण । वै० सं० १४४ । छ् भण्डार ।

विशेष—प्रन्तिम—अस्याया पार्श्वदेवविरचिताया पद्मावत्यष्टकवृत्ती यन् किमप्यबंधयति तत्सर्वं सर्वाभिः  
अंतव्य देवनाभिरपि । वर्षाणां द्वादशभिः शतैर्गतिस्तुल्यैरियं वृत्तिं वैशाखे सूर्यदिने ममाप्ता गुह्यं चम्या अस्याक्षरगणनातः  
पचशतानि ज्ञानानिदाविशदक्षगणि वामदनुष्यच्छं दसा प्रायः ।

इति पद्मावत्यष्टकवृत्तिसमाप्ता ।

३६६१. पद्मावतीस्तोत्र—..... । पत्र सं० १५ । घा० ११ $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।  
२० काल । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १३२ । ज भण्डार ।

विशेष—पद्मावती पूजा तथा शान्तिनाथस्तोत्र, एकीभावस्तोत्र और विद्यापहारस्तोत्र भी है ।

३६६२. पद्मावती की डाल .. . . . । पत्र सं० २ । घा० ६ $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्नात्र ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २१८० । अ भण्डार ।

३६६३. पद्मावतीदण्डक .. . . . । पत्र सं० १ । घा० ११ $\frac{1}{2}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्नात्र ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २५१ । अ भण्डार ।

३६६४. पद्मावतीमहामनाम .. . . . । पत्र सं० १२ । घा० १०×५ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
स्नात्र । २० काल × । ले० काल सं० १६०० । पूर्ण । वै० सं० ६६५ । अ भण्डार ।

विशेष—शान्तिनाथाष्टक एवं पद्मावती कवच ( मंत्र ) भी दिये हुये हैं ।

३६६५. पद्मावतीस्तोत्र .. . . . । पत्र सं० ६ । घा० ६ $\frac{1}{2}$ ×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २१५३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिष्ठा ( वै० सं० १०३२, १८६८ ) भी हैं ।

३६६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल म० १६३३ । वै० सं० २६४ । अ भण्डार ।

३६६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वै० सं० २०६ । अ भण्डार ।

३६६८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वै० सं० ४२६ । अ भण्डार ।

३६६९. परमयोगिनीस्तोत्र—अनारमोदाम । पत्र सं० १ । घा० १२ $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$  इंच । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २२११ । अ भण्डार ।

३६७०. परमात्मराजस्तवन—पद्मनेदि । पत्र सं० २ । घा० ६×५ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
स्नात्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १२३ । अ भण्डार ।

३६७१. परमात्मराजस्तोत्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० ३ । पृ० १०×३ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—स्तोत्र । ७० काल × । १० काल × । पूर्ण । वै० मं० ६६१ । अ मण्डार ।

एतद् परमात्मराज स्तोत्र लिख्यते

यन्नामसंस्तवफलात् महता महस्प्यष्टौ, विभुद्वय इहाशु भवति पूर्णाः ।  
सर्वार्थसिद्धजनकाः स्वचिदेकमूर्ति, भक्त्यास्तुवैतमनिशं परमात्मराजं ॥१॥  
यदधानवच्छहननामहता प्रमाति, कर्माद्रयोति विद्यमा. शतचूर्णता च ।  
श्रान्तिगाव्रसुराणाः प्रकटाभवेयुर्भवत्यास्तुवैतमनिशं परमात्मराजं ॥२॥  
अप्यवबोधकलनात्त्रिजगत्प्रदीपं, श्रीकेशोदयमनंतसुखाब्जिमाशु ।  
सत. श्रयन्ति परमं भुवनार्च्यं वंद्य, भक्त्यास्तुवैतमनिशं परमात्मराज ॥३॥  
यदृशनेनमुनयो मलयोगलीना, ध्याने निजात्मन इह त्रिजगत्पदार्थान् ।  
पश्यन्ति केवलदृशा स्वकराश्रितान्वा, भक्त्यास्तुवैतमनिशं परमात्मराजं ॥४॥  
गद्गावनादिकरणाद्भुवनाशानाच्च, प्रगद्यन्ति कर्मरिपवोभवकोटि जाताः ।  
ग्रन्थन्तरेऽत्रविधिधाः सकलादर्थयः स्युर्भक्त्यास्तुवैतमनिशं परमात्मराजं ॥५॥  
सन्नाममात्रजपनात् स्मरणाच्च यस्य, दुःकर्मदुर्मलचयाद्विमला भवति  
दक्षा जिनेन्द्रगाम्भृत्पुपर्द लभते, भक्त्यास्तुवैतमनिशं परमात्मराज ॥६॥  
यं स्वान्तरेणु विमलं विमलाविवृद्धय, शुक्लेन तन्वममं परमार्थरूपं ।  
महंत्पद त्रिजगता शरणां श्रयन्ते, भक्त्यास्तुवैतमनिशं परमात्मराज ॥७॥  
यदधानशुक्लपविनाखिलकर्मणैलान्, हृत्वा समाप्यशिवदाः स्तववंदनार्थाः ।  
सिद्धासदष्टगुणभूषणभाजनाः स्युर्भक्त्यास्तुवैतमनिशं परमात्मराजं ॥८॥  
यस्याप्तये मुगरिणो विधिनाचरन्ति, ह्याचारयन्ति यमिनो वरपञ्चभेदान् ।  
प्राचारसारजनितान् परमार्थबुद्ध्या, भक्त्यास्तुवैतमनिशं परमात्मराज ॥९॥  
य ज्ञानुमात्मगुविदो यातपाठकाश्च, सर्वगुणपूर्वजलधैर्लघु याति पार ।  
अन्यान्नयंतिशिवदं परतत्त्वबीज, भक्त्यास्तुवैतमनिशं परमात्मराजं ॥१०॥  
ये साध्यति वरयोगवलेन नित्यमध्यात्ममार्गनिरतावनपर्वतादी ।  
श्रीसाधवः शिवगतेः करम तिरस्थं, भक्त्यास्तुवैतमनिशं परमात्मराजं ॥११॥  
रागदोषमलिनोऽपि निर्मला, देहवानपि च देह वर्जितः ।  
कर्मवानपि कुकर्मदूरगो, निश्चयेन भुवि यः स नन्दतु ॥१२॥

जन्ममृत्युकलितो भवात्क, एकं रूपं इह योऽप्यनेकधा ।

व्यक्त एव यमिना न रागिणां, यश्चिदात्मक इहास्तुनिर्मलः ॥१३॥

यत्तत्त्वं ध्यानधर्म्यं परपदकर तीर्थनाथादितिव्य ।

कर्मैघ्नं ज्ञानदेहं भवभयमेधनं ज्येष्ठमानदभूलं ॥

धर्मतोते गुणान्तरहितविधिगग सिद्धसादृश्यरूपं ।

तद्वदे स्वात्मतैवं शिवमुखगतये स्तोमि युक्त्याभजेहं ॥१४॥

पठति नित्यं परमात्मराजमहात्मत्वं ये विबुधोः किल मे ।

तेषां चिदात्मात्वंरतोगद्वरो ध्यानी गुणो स्यात्परमात्मैवः ॥१५॥

इत्येव यो वारंवारं गुणगगारचनैर्वदितः संस्तुतोऽस्मिन्

सारे शन्ये चिदात्मा समं गुणजलधिः सोस्तुमे व्यक्तकृपः ।

ज्येष्ठं स्वध्यानदेतांखिलविधिवगुणा ज्ञानये चिसंस्तुदेवै

सन्मन्त्रैवोऽधकर्ता प्रकटनिजगुणो धैर्यगानो च शुद्धः ॥१६॥

इति श्री संकलकीर्तिभट्टारकविरचितं परमान्मराजस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

३६७२. परमानन्दपंचविंशतिः ... । पत्र सं० १ । धा० ६४४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १३३ । अ भण्डार ।

३६६३. परमानन्दस्तोत्रं ... । पत्र सं० ३ । धा० ७३ ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ११३० । अ भण्डार ।

३६७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वै० सं० २६८ । अ भण्डार ।

३६७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वै० सं० २१२ । अ भण्डार ।

विशेष—कूलचन्द्र विन्दायका ने प्रतिनिधि की थी । इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० २११ ) धार है ।

३६७६. परमानन्दस्तोत्रं ... । पत्र सं० ३ । धा० ११ ७३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल सं० १६६७ फागुण बुदी १४ । पूर्ण । वै० सं० ४३८ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी ग्रंथ भी दिया हुआ है ।

३६७७. परमार्थस्तोत्रं ... । पत्र सं० ४ । धा० ११६ × ५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १०८ । अ भण्डार ।

विशेष—सूर्य की स्तुति की गयी है । प्रथम पत्र में कुछ गिनत से रह गया है ।

३६७८ पाठसंग्रह ..... पत्र सं० ३६ । आ० ४ $\frac{१}{२}$ ×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६२८ । अ भण्डार ।

निम्न पाठ है — जैन गायत्री उर्फ वज्रयज्ञ, शान्तिस्तोत्र, एकीभावरतोत्र, गुणोकारकर, न्हाव

३६७९. पाठसंग्रह ..... । पत्र सं० १० । आ० १२×७ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६८ । अ भण्डार ।

३६८० पाठसंग्रह—संग्रहकर्ता-जैतराम बाफला । पत्र सं० ७० । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६१ । क भण्डार ।

३६८१ पात्रकेशरीस्तोत्र ... । पत्र सं० १७ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—५० श्लोक है । प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

३६८२ पार्थिवेश्वरचिन्तामणि ..... । पत्र सं० ७ । आ० ८ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८६० भादवा मुदी ८ । वे० सं० २३४ । ज भण्डार ।

विशेष—वृन्दावन ने प्रतिनिधि को थी ।

३६८३. पार्थिवेश्वर ..... । पत्र सं० ३ । आ० ७ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १५६४ । पूर्ण । अ भण्डार ।

३६८४. पार्श्वनाथ पद्मावतीस्तोत्र ..... । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

३६८५ पार्श्वनाथ लक्ष्मीस्तोत्र—पद्मप्रभदेव । पत्र सं० १ । आ० ६×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६४ । ख भण्डार ।

३६८६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६२ । क भण्डार ।

३६८७. पार्श्वनाथ एवं बद्धमानस्तवत ..... । पत्र सं० १ । आ० १०×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४८ । छ भण्डार ।

३६८८. पार्श्वनाथस्तोत्र ..... । पत्र सं० ३ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×१ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४३ । अ भण्डार ।

विशेष—लघु सामायिक भी है ।



३६८६. पार्श्वनाथस्तोत्र ..... । पत्र सं० १२ । प्रा० १०×४<sup>३</sup> इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।  
 १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २५३ । अ भण्डार ।  
 विशेष-मन्त्र सहित स्तोत्र है । अक्षर सुन्दर एवं मोटे है ।
३६६७. पार्श्वनाथस्तोत्र ..... । पत्र सं० १ । प्रा० १२<sup>३</sup>×७<sup>३</sup> इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।  
 १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७६६ । अ भण्डार ।  
 ३६६१. पार्श्वनाथस्तोत्र ..... । पत्र सं० १ । प्रा० १०<sup>३</sup>×८ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र ।  
 १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६६३ । अ भण्डार ।
३६६२. पार्श्वनाथस्तोत्रटीका ..... । पत्र सं० २ । प्रा० ११×५<sup>३</sup> इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-  
 स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३४२ । अ भण्डार ।
३६६३. पार्श्वनाथस्तोत्रटीका ..... । पत्र सं० २ । प्रा० १०×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-  
 स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६८७ । अ भण्डार ।
३६६४. पार्श्वनाथस्तोत्रभाषा-द्यानतराय । पत्र सं० १ । प्रा० १०×५<sup>३</sup> इ च । भाषा-हिन्दी ।  
 विषय-स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २०५५ । अ भण्डार ।
३६६५. पार्श्वनाथाष्टक ..... । पत्र सं० ४ । प्रा० १०×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।  
 १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३५७ । अ भण्डार ।  
 विशेष-प्रति मन्त्र सहित है ।
३६६६. पार्श्वमहिम्नस्तोत्र-महामुनि राजसिंह । पत्र सं० ४ । प्रा० ११<sup>३</sup>×३ इ च । भाषा-संस्कृत ।  
 विषय-स्तोत्र । १० काल × । ले० काल सं० १६८७ । पूर्ण । वै० सं० ७७० । अ भण्डार ।
३६६७. प्रश्नोत्तरस्तोत्र ..... । पत्र सं० ७ । प्रा० ८×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । १०  
 काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १८६ । अ भण्डार ।
३६६८. प्रातःस्मरणमन्त्र ..... । पत्र सं० १ । प्रा० ८<sup>३</sup>×८ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।  
 १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १४८६ । अ भण्डार ।
३६६९. भक्तामरपञ्जिका ..... । पत्र सं० ८ । प्रा० १३×८ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।  
 १० काल × । ले० काल सं० १७८१ । पूर्ण । वै० सं० ३२८ । अ भण्डार ।  
 विशेष-श्री हीरानन्द ने द्रव्यपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

४०००. भक्तामरस्तोत्र—मानतुंगाचार्य । पत्र सं० ८ । प्रा० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
स्तीव । २० काल × १० काल × । पूर्ण । वै० सं० १२०३ । अ भण्डार ।

४००१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १७२० । वै० सं० २६ । अ भण्डार ।

४००२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १७५५ । वै० सं० १०१५ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी ग्रंथ सहित है ।

४००३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वै० सं० २२०१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति ताडपत्रीय है । प्रा० ५×२ इंच है । इसके अतिरिक्त २ पत्र पुट्टों की जगह है । २×१३ इंच चौड़े पत्र पर रामोकार मन्त्र भी है । प्रति प्रदर्शन योग्य है ।

४००४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १७५५ । वै० सं० १०१५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ६ प्रतियाँ ( वै० सं० ४४१, ६५६, ६७३, ८६०, ६२०, ६५६, ११३५, ११०६, ५३६६ ) शीर हैं ।

४००५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८६७ पौष बुदी ८ । वै० सं० २५१ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं । मूल प्रति मथुरावास में निमलपुर में लिखी तथा उदैराम ने टिप्पण किया । इसी भण्डार में नान प्रतियाँ ( वै० सं० १२८, २८८, १८५६ ) शीर हैं ।

४००६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वै० सं० ७४ । अ भण्डार ।

४००७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ६ म ११ । ले० काल सं० १८७८ ज्येष्ठ बुदी ७ । पूर्ण । वै० सं० ५४६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में १८ प्रतियाँ ( वै० सं० ५३६ से ५६५ तथा ५७७ से ५५०, ५५२ ) शीर हैं ।

४००८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वै० सं० ७३८ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । इसी भण्डार में ७ प्रतियाँ ( वै० सं० २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, ७३८, ७३९ ) शीर हैं ।

४००९. प्रति सं० १० । पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १८२२ चैत्र बुदी ६ । वै० सं० १३४ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ६ प्रतियाँ ( वै० सं० १३४ (६) १३६, २२६ ) शीर हैं ।

४०१०. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वै० सं० १७० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार एक प्रति ( वै० सं० २१५ ) शीर है ।

४०११. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ५ । ले० काल ५ । वे० सं० १७५ । ज भण्डार ।

४०१२. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८७ पीप बुदी १ । वे० सं० २६३ । अ.

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया ( वे० सं० २६६, ३३६, ५२५ ) और है ।

४०१३. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ३ मे ३६ । ले० काल सं० १६३२ । अपूर्ण । वे० सं० २०१३ । ट

भण्डार ।

विशेष—इस प्रति मे ५२ श्लोक है । पत्र १, २, ४, ६, ७, ९, १६ यह पत्र नहीं है । प्रति हिन्दी व्याख्या सहित है । इसी भण्डार मे ४ प्रतिया ( वे० सं० १६३४, १७०४, १६६६, २०१४ ) और है ।

४०१४. भक्तामरस्तोत्रवृत्ति—ब्र० रायमल । पत्र सं० ३० । प्रा० ११३×६ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल सं० १६६६ । ले० काल सं० १७६१ । पूर्ण । वे० सं० १०७६ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की टीका श्रीवापुर मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे की गयी । प्रति कबा महित है ।

४०१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८८ । ले० काल सं० १७०८ आसोज बुदी ६ । वे० सं० २८७ । अ

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० १८३ ) और है ।

४०१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४० । ले० काल सं० १६११ । वे० सं० ५४४ । क भण्डार ।

४०१७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४६ । ले० काल ५ । वे० सं० ६५ । ग भण्डार ।

विशेष—फतेचन्द गंगवाल ने मधालाल कामलीवाल मे प्रतिलिपि कराई ।

४०१८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १७५४ पीप बुदी ८ । वे० सं० ५५७ । क

भण्डार ।

४०१९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १८३२ पीप बुदी २ । वे० सं० ६६ । छ

भण्डार ।

विशेष—मागानेर म प० मवाईगाम ने नेमिनाथ चैत्यालय मे ईसरदाम की पुस्तक मे प्रतिलिपि की थी ।

४०२०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८७३ चैत्र बुदी ११ । वे० सं० १५ । ज

भण्डार ।

विशेष—हार्नरारामस ब्राह्मण ने प० काञ्चुराम के पठनार्थ धादिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

४०२१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १६८८ फागुन बुदी ८ । वे० सं० २८ । व्य

भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति— संवत् १६८८ वर्षे फागुण बुदी ८ शुक्लवार मन्थिन धनुराध व्यतिपात नाम जोगे महा-  
राजाधिराज श्री महाराजाराव छत्रमालजी बूंदीराज्ये इदमुत्तमकं लिखाइतं । साह श्री स्तोपा तत्पुत्र सहलाल तत् पुत्र  
साह श्री धरणराज भाई मनराज योगे वटवोड जाती बबेरवान इद पुस्तकं पुनिस्य दोमते । लिखतं जोसो नराइण्ण ।

४०२२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १७६१ फागुण । वे० सं० ३०३ । अ भण्डार ।

४०२३. भक्तामरस्तोत्रटीका—हर्षकीर्त्तिमूर्ति । पत्र सं० १० । प्रा० १०×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७६ । अ भण्डार ।

४०२४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६४० । वे० सं० १६२५ । अ भण्डार ।

विशेष—इस टीका का नाम भक्तामर प्रदीपिका दिया हुआ है ।

४०२५. भक्तामरस्तोत्रटीका..... । पत्र सं० १२ । प्रा० १०×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६१ । अ भण्डार ।

४०२६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० १८४४ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र चित्रके हुये हैं ।

४०२७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८७२ पौष बुदी १ । वे० सं० २१०६ । अ

भण्डार ।

विशेष—मन्त्रालाल ने शीतलनाथ के चंभालय में प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ११६८ ) भी है ।

४०२८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० सं० ५६६ । अ भण्डार ।

४०२९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४६ ।

विशेष—३६वें काष्ठ तक है ।

४०३०. भक्तामरस्तोत्रटीका..... । पत्र सं० ११ । प्रा० १२ $\frac{१}{२}$ ×८ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १६१८ जैन बुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १६१२ । अ भण्डार ।

विशेष—अक्षर मोटे हैं । संस्कृत तथा हिन्दी में टीका दी हुई है । संग्रही मन्त्रालय ने प्रतिलिपि की थी ।

अ भण्डार में एक अपूर्ण प्रति ( वे० सं० २०८२ ) भी है ।

४०३१. भक्तामरस्तोत्र श्रद्धामंत्र सहित..... । पत्र सं० २७ । प्रा० १०×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८४३ वैशाख बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० २८५ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री नयनसागर ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी। अन्तिम २ पृष्ठ पर उपसर्ग हर स्तोत्र दिया हुआ है। इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १५१ ) और है।

४०३२. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १८१३ वैशाख सुदी ७। वे० सं० १२९। ख भण्डार।

विशेष—गोविन्दगढ़ में पुस्तोत्तमसागर ने प्रतिलिपि की थी।

४०३३. प्रति सं० ३। पत्र सं० २५। ले० काल सं० १८३०। वे० सं० ६७। ख भण्डार।

विशेष—मन्त्रों के चित्र भी है।

४०३४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३१। ले० काल सं० १८२१ वैशाख सुदी ११। वे० सं० ८१। ख भण्डार।

विशेष—पं० मदाराम के शिष्य गुलाब ने प्रतिलिपि की थी।

४०३५. भक्तारम्भस्तोत्रभाषा—जयचन्द छाबड़ा। पत्र सं० ६४। भा० १०३। ४ टंक। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—स्तोत्र। २० काल सं० १८७० कालिक सुदी १२। पूर्ण। वे० सं० ५४१।

विशेष—क भण्डार में २ प्रतियाँ ( वे० सं० ५८२, ५८३ ) और हैं।

४०३६. प्रति सं० २। पत्र सं० २१। ले० काल सं० १८६०। वे० सं० ५५६। क भण्डार।

४०३७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४५। ले० काल सं० १८३०। वे० सं० ३५८। ख भण्डार।

४०३८. प्रति सं० ४। पत्र सं० २०। ले० काल सं० १८०८ वैशाख सुदी ११। वे० सं० १७६। ख भण्डार।

४०३९. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३२। ले० काल सं० १८३३। वे० सं० २७३। ख भण्डार।

४०४०. भक्तारम्भस्तोत्रभाषा—हेमराज। पत्र सं० ८। भा० ८३। ६ टंक। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। २० काल सं० १८७०। ले० काल सं० ११२५। ख भण्डार।

४०४१. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १८८८ माघ सुदी २। वे० सं० ६४। ग भण्डार।

विशेष—दीवान अमरचन्द के मन्दिर में प्रतिलिपि की गयी थी।

४०४२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६ मे १०। ले० काल सं० १८७०। वे० सं० ५५१। ख भण्डार।

४०४३. भक्तारम्भस्तोत्रभाषा—गंगाराम। पत्र सं० २ मे २७। भा० १२३। ५ टंक। भाषा—संस्कृत हिन्दी। विषय—स्तोत्र। २० काल सं० १८६७। पूर्ण। वे० सं० २००७। ट भण्डार।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है। पहिले मूल फिर गंगाराम कृत सबैया, हेमचन्द्र कृत पद्य, कही २ भाया तथा इसमें आगे ऋद्धि मन्त्र सहित है।

अन्त में लिखा है—साहजी जानजी रामजी उनके २ पुत्र शोलालजी, लघु भ्राता चैनमुखजी ने ऋषि भागचन्द्रजी जती को यह पुस्तक पुष्पार्थ दिया स० १८७२ का साल में ककीड़ में रहे छे।

४८४४ अक्षामरस्तोत्रभाषा ... । पत्र सं० ६ से १०। आ० १०×५ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। २० काल ... । ले० काल स० १७८७। पूर्ण। वे० सं० १२६४। अ भण्डार।

४८४५ प्रति स० २। पत्र सं० ३३। ले० काल स० १८२८ मंगसिर बुदी ६। वे० सं० २३६। अ भण्डार।

विशेष—भूधरदास के पुत्र के लिये मभूराम ने प्रतिलिपि की थी।

४८४६ प्रति सं० ३। पत्र स० २०। ले० काल ×। वे० सं० ६५३। अ भण्डार।

४८४७ प्रति सं० ४। पत्र स० २१। ले० काल सं० १८६२। वे० सं० १५७। अ भण्डार।

विशेष—त्रयपुर में पत्रलाल ने प्रतिलिपि की थी।

४८४८ प्रति स० ५। पत्र सं० ३३। ले० काल सं० १८०१ चैत्र बुदी १३। वे० सं० २८०। अ भण्डार।

४८४९ अक्षामरस्तोत्रभाषा ... । पत्र स० ३। आ० १०<sup>१</sup>×७<sup>१</sup> इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। २० काल ... । ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३५२। अ भण्डार।

४८५० भूपालचतुर्विंशतिकाम्बोत्र—भूपाल कवि। पत्र सं० ८। आ० ६<sup>१</sup>×४<sup>१</sup> इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ... । ले० काल स० १८४३। पूर्ण। वे० सं० ४१। अ भण्डार।

विशेष—हिन्दा टब्बा टीका सहित है। अ भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ३२३ ) और है।

४८५१ प्रति स० २। पत्र स० ३। ले० काल ×। वे० सं० २६८। अ भण्डार।

४८५२ प्रति सं० ३। पत्र स० ३। ले० काल ×। वे० सं० ५७२। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ५७३ ) है।

४८५३ भूपालचतुर्विंशतिटीका—आशाधर। पत्र सं० १४। आ० ६<sup>१</sup>×४<sup>१</sup> इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल सं० १७७८ भाद्रवा बुदी १२। पूर्ण। वे० सं० ६। अ भण्डार।

विशेष—श्री विनयचन्द्र के पठनार्थ पं० आशाधर ने टीका लिखी थी। पं० हीराचन्द्र के शिष्य चोलचन्द्र के रठनार्थ मंत्रभावाद में प्रतिलिपि कराई गई।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है— संवत्सरे वसुमुनिस्सप्लेन्दु ( १७७८ ) मिते भाद्रपद कृष्णा द्वादशी तिथी मोजमाबादनगरे श्रीमूलसंधे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकोत्तम श्री श्री १०८ देवेन्द्रकीर्तिजी कस्य धामनकारी बुधजी श्रीहीरानन्दजीकस्य शिष्येन विनयवता चोक्षचन्द्रेशुश्रवशयेन स्वपठनार्थं लिखितेय भूपाल चतुर्विंशतिका टीका विनयचन्द्रस्यार्थमित्याशाधरविरचिताभूपालचतुर्विंशते जिनेन्द्रस्तुतेष्टीका परिसमाप्ता ।

श्रु भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ४० ) प्रौर है ।

४०५४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल स० १५३२ मगसिर सुदी १० । वे० सं० २३१ । अ भण्डार ।

विशेष— प्रशस्ति—सं० १५३२ वर्षे मार्ग सुदी १० गुरुवासरे श्रीघाटमगुरुशुभस्थाने श्रीचन्द्रप्रभृचेत्यालय लिख्यते श्रीमूलसंधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये । ... ।

४०५५. भूपालचतुर्विंशतिकास्तोत्रटीका—विनयचन्द्र । पत्र सं० ६ । प्रा० १२७४ ई३ । भाषा— संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२० ।

विशेष—श्री विनयचन्द्र नरेन्द्र द्वारा भूपाल चतुर्विंशति स्तोत्र रचा गया था एसा टीका की वृत्तिका में लिखा हुआ है । इसका उल्लेख २७वें पद्य में निम्न प्रकार है ।

यः विनयचन्द्रनामायतीवरो जनि समभूत । ललितचक्रात् । उपशमदधोपक्षेपतेयदुःशम सादाःसृष्टिसाम् । सः कथंभूतः मन्वकोरचन्द्रः संतः पंडिताः एव चकोराः तेषां प्रमोदने द्वितीयश्चन्द्रः यस्यगुणि चरितं चरिवतोः । गुणि च तच्चरितं च तच्चरग शीर्षं गुणि चरितं चरिणुः तस्य वाचो वाच्यं जगल्लोकाधिपत्यं न कथमुतावाचः अमृतगर्भा अमृतगर्भा यामा तात्मनोवताः शास्त्रसंदर्भगर्भाः सात्रस्रणा संदर्भाः विस्माराः माश्रमदभर्मिन्तेगर्भे यामा तास्तासा ॥२७॥ इति विनयचन्द्रनरेन्द्र विरचितं भूपाल स्तोत्र समाप्तं ।

प्रारम्भ में टीकाकार का मंगलाचरण नहीं है । मूल स्तोत्र की टीका प्रारम्भ करदी गई है ।

४०५६. भूपालचौबीसीभाषा—पञ्जालाल चौधरी । पत्र सं० २४ । प्रा० १२६५ ई३ । भाषा— हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल सं० १६३० चैत्र सुदी ४ । ले० काल स० १६३० । पूर्ण । वे० सं० ५६१ । क भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ५६२ ) प्रौर है ।

४०५७. मृत्युमहोत्सव..... । पत्र सं० १ । प्रा० ११×५ ई३ । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६३ । अ भण्डार ।

४०५८. महर्षिसत्त्वन ..... । पत्र सं० ३१ में ७४ । प्रा० ५×५ ई३ । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अ पूर्ण । वे० सं० ५८८ । क भण्डार ।

४०५६. महापिस्तवन.....। पत्र सं० २। मा० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०६३। अ भण्डार।

विषय—घन्त में पूजा भी दी हुई है।

४०६०. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल सं० १८३१ चैत्र बुदी १४। वे० सं० ६११। अ भण्डार।

विषय—संस्कृत में टीका भी दी हुई है।

४०६१. महामहिम्नस्तोत्र.....। पत्र सं० ४। मा० ८×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल सं० १६०६ फागुन बुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ३११। अ भण्डार।

४०६२. प्रति सं० २। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं० ३१५। अ भण्डार।

विषय—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४०६३. महामहिम्नस्तवनटीका.....। पत्र सं० २। मा० ११३×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४८। अ भण्डार।

४०६४. महालक्ष्मीस्तोत्र.....। पत्र सं० १०। मा० ८३×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६५। अ भण्डार।

४०६५. महालक्ष्मीस्तोत्र.....। पत्र सं० ६ में ६। मा० ६×३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—वैदिक मान्य स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७८२।

४०६६. महावीराष्टक—भागवतम्। पत्र सं० ४। मा० ११२×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५७३। अ भण्डार।

विषय—इमा प्रति में जिनायवगोपकारस्मर स्तोत्र एवं प्रादिनाथ स्तोत्र भी है।

४०६७. महिम्नस्तोत्र.....। पत्र सं० ७। मा० ६×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६। अ भण्डार।

४०६८. यमकाष्टकस्तोत्र—भ० अमरकीर्ति। पत्र सं० १। मा० १२×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल सं० १८२२ पीष बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ५८६। अ भण्डार।

४०६९. युगादिदेवमहिम्नस्तोत्र.....। पत्र सं० २ से १४। मा० ११×७ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०६४। अ भण्डार।

विषय—प्रथम तीन पत्रों में पार्श्वनाथ स्तोत्र रघुनाथदास कृत अपूर्ण है। इससे प्रागे महिम्नस्तोत्र है।



४०७०. राधिकानाममाला.....। पत्र सं० १। मा० १०<sup>१</sup>×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तवन।  
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७६६। ट अण्डार।

४०७१. रामचन्द्रस्तवन.....। पत्र सं० ११। मा० १०×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।  
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३। छ अण्डार।

विशेष—ग्रन्थिम- श्रीसनत्कुमारसंहितायां नारदीयं श्रीरामचन्द्रस्तवराज संपूरणम् ॥ १०० पद्य है।

४०७२. रामवतीसी—जगनकवि। पत्र सं० ६। मा० ६<sup>१</sup>×६ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र।  
२० काल ×। ले० काल सं० १७३५ प्रथम चैत्र बुदी ७। पूर्ण। वे० सं० १५१०। ट अण्डार।

विशेष—कवि पौहकरना (पुष्करना) जाति के थे। नरायण मे ऋट्ट व्यास ने प्रतिलिपि की थी।

४०७३. रामस्तवन.....। पत्र सं० ११। मा० १०<sup>१</sup>×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २०  
काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २११२। ट अण्डार।

विशेष—११ से घागे पत्र नहीं है। पत्र नीचे की धार में फटे हुए है।

४०७४. रामस्तोत्र.....। पत्र सं० १। मा० १०×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २०  
काल ×। ले० काल सं० १७२५ फागुण सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ६५८। क अण्डार।

विशेष—जोधराज गोदीका ने प्रतिलिपि करवायी थी।

४०७५. लघुशान्तिस्तोत्र। पत्र सं० १। मा० १०×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २०  
काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१४६। अ अण्डार।

४०७६. लक्ष्मीस्तोत्र—पद्मप्रमदेव। पत्र सं० २। मा० १३×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।

२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११३। अ अण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। इसी अण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०२६) और है।

४०७७. प्रति सं० २। पत्र सं० १। ले० काल ×। वे० सं० १४८। छ अण्डार।

विशेष—इसी अण्डार में एक प्रति (वे० सं० १८८) और है।

४७८०. प्रति सं० ३। पत्र सं० १। ले० काल ×। वे० सं० १८२८। ट अण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत व्याख्या सहित है।

४०७६. लक्ष्मीस्तोत्र.....। पत्र सं० ४। मा० ६×३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २०  
काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४२१। अ अण्डार।

विशेष—ट अण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २०६७) और है।

४०८०. लघुस्तोत्र ... । पत्र सं० २ । पृ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०  
ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३६६ । अ भण्डार ।

४०८१. वज्रपंजरस्तोत्र ..... । पत्र सं० १ । पृ० ८<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।  
२० काल × । ले० काल × । वै० सं० ६६८ । अ भण्डार ।

४०८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वै० सं० १६१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र में होम का मन्त्र है ।

४०८३. वद्वैमानद्वित्रिशिका—सिद्धसेन दिवाकर । पत्र सं० १२ । पृ० १२×५<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच । भाषा—  
संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० १८६७ । अ भण्डार ।

४०८४. वद्वैमानस्तोत्र—आचार्य गुणभद्र । पत्र सं० १२ । पृ० ४<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×७ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १६३३ पामोज मुदी ८ । पूर्ण । वै० सं० १४ । अ भण्डार ।

विशेष—गुणभद्राचार्य कृत उलरपुराण की राजा धेरिक की स्मृति है तथा ३३ श्लोक है । संग्रहकर्ता श्री  
फतेहलाल शर्मा है ।

४०८५. वद्वैमानस्तोत्र ..... । पत्र सं० ५ । पृ० ७<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×६<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १३२८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र ३ में प्राणे निर्वाणकाण्ड भाषा भी है ।

४०८६. वसुधारापाठ ..... । पत्र सं० १६ । पृ० ८×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६० । अ भण्डार ।

४०८७. वसुधारास्तोत्र ..... । पत्र सं० १६ । पृ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २७६ । अ भण्डार ।

४०८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ६७१ । अ भण्डार ।

४०८९. विद्यमानधीसनीर्थकरस्तवन—मुनि दीप । पत्र सं० १ । पृ० ११.५<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच । भाषा—  
हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १६३३ ।

४०९०. विद्यापहारस्तोत्र—धनंजय । पत्र सं० ४ । पृ० १२<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×६ । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।  
२० काल × । ले० काल सं० १८१२ फाणुण बुदी ८ । पूर्ण । वै० सं० ६६६ ।

विशेष—संस्कृत टीका भी वी हुई है । इसकी प्रतिलिपि प० मोहनदासजी ने अपने शिष्य गुमानारामजी के  
पठनार्थ लेमकराजी की पुस्तक में बसई ( बस्सी ) नगर में गान्तिनाथ जैत्यालय में की थी ।

४०६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६७६ । क अण्डार ।

४०६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० १५२ । अ अण्डार ।

विशेष—सिद्धिप्रियन्तोत्र भी है ।

४०६३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० १६११ । ट अण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४०६४. विद्यापहारस्तोत्रटीका—नागचन्द्रसूरि । पत्र सं० १४ । आ० १०×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच । भाषा—  
संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५ । अ अण्डार ।

४०६५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ८ मे १६ । ले० काल ८० १७७८ मादवा बुदी ६ । वे० सं० ८८६ ।

अ अण्डार ।

विशेष—मौजमावाद नगर मे पं० चोखणन्द ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

४०६६. विद्यापहारस्तोत्रभाषा—पद्मालाल । पत्र सं० ३१ । आ० १२<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तोत्र । २० काल सं० १६३० फागुण मुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६४ । क अण्डार ।

विशेष—सो अण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० ६६५ ) भी है ।

४०६७. विद्यापहारस्तोत्रभाषा—अचलकीर्ति । पत्र सं० ६ । आ० ६<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५८५ । ट अण्डार ।

४०६८. वीतरागस्तोत्र—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६ । आ० ६<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५७ । छ अण्डार ।

४०६९. वीरछत्तीसी..... । पत्र सं० २ । आ० १०×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५० । अ अण्डार ।

४१००. वीरस्तवन..... । पत्र सं० १ । आ० ६<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० १२४८ । अ अण्डार ।

४१०१. वैराग्यगीत—अहमद । पत्र सं० १ । आ० ८×३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२६ । अ अण्डार ।

विशेष—'भून्यो भयरा रे काई भयी' ११ अंतर है ।

४१०२. षट्पाठ—बुधजन । पत्र सं० १ । आ० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २०

काल × । ले० काल सं० १८५० । पूर्ण । वे० सं० ५३५ । अ अण्डार ।

४१०३. षट्पाठ.....। पत्र सं० ६ । आ० ४×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × ।  
ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७ । अ भण्डार ।

४१०४. शान्तिघोषास्तुति.....। पत्र सं० २ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६६ । पूर्ण । वे० सं० ८३४ । अ भण्डार ।

४१०५. शान्तिनाथस्तवन—ऋषि लालचन्द । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—स्तवन । २० काल सं० १८५६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२३५ । अ भण्डार ।

विशेष—शान्तिनाथ का एक स्तवन शीर है ।

४१०६. शान्तिनाथस्तवन .....। पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।  
२० काल × । ले० काल > । पूर्ण । वे० सं० १६५६ । अ भण्डार ।

विशेष—शान्तिनाथ तीर्थद्वार के पूर्वभव की कथा भी है ।

ग्रन्थमप्य—

मुन्दकुन्दाचार्य विनती, शान्तिनाथ पुण्ड्र ह्यि मे धरे ।

रोग मोग सताप दूर जाय, दर्शन दीठा नवनिधि ठाया ॥

इति शान्तिनाथस्तोत्रं संपूर्णम् ।

४१०७. शान्तिनाथस्तोत्र—मुनिभद्र । पत्र सं० १ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०७० । अ भण्डार ।

विशेष—अथ शान्तिनाथस्तोत्र निम्नानि—

काव्य—

नाना विचित्रं भवतु खराशि, नामा प्रकारं मोहामिनपाशं ।

पाशानि दोषानि हरन्ति देवा, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥१॥

संसारमध्ये मिथ्यात्वचिन्ता, मिथ्यात्वमध्ये कर्माणिबंध ।

ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥२॥

कामं च क्रोध मायाविलोभं, चतुःकषायं इह जीव बंधं ।

ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥३॥

नोद्वावयहीने कठिनस्यचित्ते, परजीवविदा मनसा च बाचा ।

ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥४॥

चारित्रहीने नरजन्ममध्ये, सभ्यस्त्वरत्नं परिपालनीयं ।

ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥५॥

४१२४. सरस्वतीस्तोत्र—बृहस्पति । पत्र सं० १ । श्रा० ८३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ( जैनेतर ) । २० काल × । ले० काल सं० १८५१ । पूर्ण । वे० सं० १५५० । अ भण्डार ।

४१२५. सरस्वतीस्तोत्र—श्रुतसागर । पत्र सं० २६ । श्रा० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७७४ । ट भण्डार ।

विशेष—बोच के पत्र नहीं है ।

४१२६. सरस्वतीस्तोत्र ..... । पत्र सं० ३ । श्रा० ८×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०६ । छ भण्डार ।

४१२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० ४३६ । झ भण्डार ।

विशेष—रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी । भारतीस्तोत्र भी नाम है ।

४१२८. सरस्वतीस्तोत्रमाला ( शारदा-स्तवन ) ..... । पत्र सं० २ । श्रा० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२६ । झ भण्डार ।

४१२९. सहस्रनाम ( लघु )—श्राचार्य समन्तभद्र । पत्र सं० ४ । श्रा० ११२×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १७१४ आश्विन वृद्धी १० । पूर्ण । वे० सं० ६ । झ भण्डार ।

विशेष—इसके प्रतिरिक्त भद्रबाहु विरचित ज्ञानाकुश पाठ भी है । ४३ प्लक ह । आनन्दराम ने श्रेय जोधराज गोदीका के पठनाथ प्रतिलिपि की थी । 'पीथी जोधराज गोदीका; की पढिबा की छै' पत्र ८ मु० भाषानेर ।

४१३०. सारवतुविंशति ..... । पत्र सं० ११२ । श्रा० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८६० पीप सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २८८ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रथम ६५ पृष्ठों में सकलकीर्ति कृत श्रावकाचार है ।

४१३१. सायसन्ध्यापाठ ..... । पत्र सं० ७ । श्रा० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८२४ । पूर्ण । वे० सं० २७८ । ख भण्डार ।

४१३२. सिद्धवेदना ..... । पत्र सं० ८ । श्रा० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८८६ फाल्गुन सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ६० । ग भण्डार ।

विशेष—श्रीमणिक्वचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

४१३३. सिद्धस्तवन ..... । पत्र सं० ८ । श्रा० ८३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६५२ । ट भण्डार ।

४१३४. सिद्धिप्रियस्तोत्र—देवमंदि । पत्र सं० ८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । १० काल × । ले० काल सं० १८८६ आसोज बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २००८ । अ भण्डार ।

४१३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ८०६ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका भी दी हुई है ।

४१३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २६२ । ख भण्डार ।

विशेष—हासिये में कठिन शब्दों के अर्थ दिये हैं । प्रति सुन्दर तथा प्राचीन है । अक्षर काफी मोटे हैं ।

मुनि विशालकीर्ति ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में २ प्रतियाँ ( वे० सं० २६३, २६८ ) भी हैं ।

४१३७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ८५३ । क भण्डार ।

४१३८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८६२ आसोज बुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० ४०६ ।

च भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । जयपुर में अश्वमेध साह ने प्रतिलिपि की थी ।

४१३९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १०२ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

इसी भण्डार में २ प्रतियाँ ( वे० सं० ३८, १०३ ) भी हैं ।

४१४०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८६८ । वे० सं० १०६ । ज भण्डार ।

४१४१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १६८ । झ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अमरसी ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० २४७ )

भी है ।

४१४२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १८२५ । ट भण्डार ।

४१४३. सिद्धिप्रियस्तोत्रटीका..... । पत्र सं० ५ । आ० १३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल सं० १७५६ आसोज बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ३६ । व भण्डार ।

विशेष—त्रिलोकदास ने अपने हाथ से स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

४१४४. सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा—पद्मलाल चौधरी । पत्र सं० ३६ । आ० २२×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । १० काल सं० १६३० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०५ । क भण्डार ।

४१४५. सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा—नथमल । पत्र सं० ८ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४७ । क भण्डार ।

४१४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वै० सं० ८५१ । छ अष्टार ।

विशेष—इसी अष्टार में एक प्रति ( वै० सं० ८५२ ) शीर है ।

४१४७. सिद्धिप्रियस्तोत्र..... । पत्र सं० १३ । पृ० ११३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ८०४ । क अष्टार ।

४१४८. सुगुरुस्तोत्र..... । पत्र सं० १ । पृ० १०३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २०५८ । अ अष्टार ।

४१४९. वसुधारास्तोत्र..... । पत्र सं० १० । पृ० ९३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २४९ । ज अष्टार ।

विशेष—अन्त में लिखा है— अथ घंटाकर्णकल्प लिख्यते ।

४१५०. सौंदर्यलहरीस्तोत्र—भट्टारक जगद्भुषण । पत्र सं० १० । पृ० १२०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८४४ । पूर्ण । वै० सं० १८२७ । ट अष्टार ।

विशेष—कुन्दावती कब्रट से पार्श्वनाथ चैत्यालय से भट्टारक मुग्धकीर्ति ग्रामेर वालो से सर्वमुक्त् के पठनाथ प्रतिनिधि की थी ।

४१५१. सौंदर्यलहरीस्तोत्र..... । पत्र सं० ७४ । पृ० ९३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८३७ भाववा बुद्धी २ । पूर्ण । वै० सं० २७४ । ज अष्टार ।

४१५२. स्तुति..... । पत्र सं० १ । पृ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १८६७ । अ अष्टार ।

विशेष—भगवान महावीर की स्तुति है । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

प्रारम्भ—

प्राता प्राता महाप्राता भर्ता भर्ता जगत्प्रभु

बीरो बीरो महाबीरोस्त्वं देवासि नमोस्तुति ॥१॥

४१५३. स्तुतिसंग्रह..... । पत्र सं० २ । पृ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १२४० । अ अष्टार ।

४१५४. स्तुतिसंग्रह..... । पत्र सं० २ से १७ । पृ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २१०६ । ट अष्टार ।

विशेष—पञ्चपरमेष्ठीस्तवन, बीसतीर्थशुद्धस्तवन आदि हैं ।

४१५५. स्तोत्रसंग्रह..... । पत्र सं० १ । प्रा० ११३×५ इंच । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।  
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५३ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्नलिखित स्तोत्र है ।

| नाम स्तोत्र           | कला         | भाषा    |
|-----------------------|-------------|---------|
| १. शान्तिकरस्तोत्र    | मुद्ररसूर्य | प्राकृत |
| २. भयहरस्तोत्र        | ×           | "       |
| ३. लघुशान्तिस्तोत्र   | ×           | संस्कृत |
| ४. बृहद्शान्तिस्तोत्र | ×           | "       |
| ५. राजतशान्तिस्तोत्र  | ×           | "       |

२२। पत्र नहीं है । सभी श्वेताम्बर स्तोत्र है ।

४१५६ स्तोत्रसंग्रह..... । पत्र सं० १० । प्रा० १२×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०  
काल । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३०४ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र है ।

|   |             |
|---|-------------|
| १. पद्मावतीस्तोत्र —                      | ×           |
| २. कलिकुण्डपूजा तथा स्तोत्र —             | ×           |
| ३. चिन्तामणि पार्ष्वनाथपूजा एवं स्तोत्र — | लक्ष्मीसेन  |
| ४. पार्ष्वनाथपूजा —                       | ×           |
| ५. लक्ष्मीस्तोत्र —                       | पद्मप्रभदेव |

४१५७. स्तोत्रसंग्रह..... । पत्र सं० २३ । प्रा० ८१×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०  
काल । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३८५ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है— १. एकीभाव, २. विद्यापहार, ३. स्वयंभूस्तोत्र ।

४१५८. स्तोत्रसंग्रह..... । पत्र सं० ४६ । प्रा० ८१×५ इंच । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।  
२० काल × । ले० काल सं० १७७९ कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १३१२ । अ भण्डार ।

विशेष—२ प्रतियो का मिश्रण है । निम्न संग्रह है—

|                             |   |         |
|-----------------------------|---|---------|
| १. निर्वाणकाण्डभाषा—        | × | हिन्दी  |
| २. श्रीपालस्तुति            | × | संस्कृत |
| ३. पद्मावतीस्तवन मंत्र सहित | × | "       |



४. एकीभावस्तोत्र, ५. ज्वालामानिनी, ६. जिनपञ्जरस्तोत्र, ७. लक्ष्मीस्तोत्र,  
८. पार्ष्वनाथस्तोत्र

९. वीतरागस्तोत्र—

पद्यनदि

संस्कृत

१०. बद्धमानस्तोत्र

×

”

अपूर्णा

११. चौमठयो.गनीस्तोत्र, १२. शनिस्तोत्र, १३. शारदाष्टक, १४. त्रिकालचौबीसीनाम

१५. पद, १६. विनती (ब्रह्मजिनदास), १७. माता क सालहस्वान, १८. परमानन्दस्तवन ।

मुखानन्द के शिष्य नेनमुल ने प्रतिलिपि की थी ।

४१५६. स्तोत्रसंग्रह ..... पत्र सं० २६ । आ० ८×७ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ७६० । अ. भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र है ।

१. जिनदर्शनस्तुति, २. ऋषिमंडलस्तोत्र ( गौतम गुरुधर ), ३. लघुशान्तिनाम-त्र,  
४. उपसर्गहरस्तोत्र, ५. निरञ्जनस्तोत्र ।

४१६०. स्तोत्रपाठसंग्रह ..... पत्र सं० २२१ । आ० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत, पावत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २६० । अ. भण्डार ।

विशेष—पत्र सं० १७, १८, १९ नहीं है । निम्न नैमित्तिक स्तोत्र पाठो का संग्रह है ।

४१६१. स्तोत्रसंग्रह ..... पत्र सं० २७६ । आ० १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ६७ । अ. भण्डार ।

विशेष—२४८, २४९वा पत्र नहीं है । साधारण पूजापाठ तथा स्तुति संग्रह है ।

४१६२. स्तोत्रसंग्रह ..... पत्र सं० १५३ । आ० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १०६७ । अ. भण्डार ।

४१६३. स्तोत्रसंग्रह ..... पत्र सं० १८ । आ० ७×६ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ३५३ । अ. भण्डार ।

४१६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० ३५६ । अ. भण्डार ।

४१६५. स्तोत्रसंग्रह ..... पत्र सं० ११ । आ० ८×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० २६० । अ. भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है—

भगवतोस्तोत्र, परमानन्दस्तोत्र, पार्वनाथस्तोत्र, घण्टाकर्णमन्त्र आदि स्तोत्रो का संग्रह है ।

४१६६. स्तोत्रसंग्रह ... । पत्र सं० ८२ । आ० ११३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३२ । क मण्डार ।

विशेष—अन्तिम स्तोत्र अपूर्णा है । कुछ स्तोत्रों की संस्कृत टीका भी साथ में दी गई है ।

४१६७ प्रति सं० २ । पत्र सं० २५७ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ८३३ । क मण्डार ।

४१६८. स्तोत्रपाठसंग्रह ... । पत्र सं० ५७ । आ० १३×६ इंच । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ८३१ । क मण्डार ।

विशेष—पाठो का संग्रह है ।

४१६९. स्तोत्रसंग्रह ... । पत्र सं० ८१ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत, राज्जल । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८२६ । क मण्डार ।

विशेष —निम्न संग्रह है ।

| नामस्तोत्र                       | कर्त्ता       | भाषा             |
|----------------------------------|---------------|------------------|
| प्रतिक्रमण                       | ×             | प्राकृत, संस्कृत |
| सामायिक पाठ                      | ×             | संस्कृत          |
| श्रुतभक्ति                       | ×             | प्राकृत          |
| नत्वार्यसूत्र                    | उमास्वाति     | संस्कृत          |
| सिद्धभक्ति तथा अन्य भक्ति संग्रह | —             | प्राकृत          |
| स्वयंभूस्तोत्र                   | समन्तभद्र     | संस्कृत          |
| देवागमस्तोत्र                    | "             | संस्कृत          |
| जिनसहस्रनाम                      | जिनसेनाचार्य  | "                |
| भक्ताभरस्तोत्र                   | मानतुंगाचार्य | "                |
| कल्याणमन्दिरस्तोत्र              | कुमुदचन्द्र   | "                |
| एकीभावस्तोत्र                    | वादिराज       | "                |
| सिद्धिप्रियस्तोत्र               | देवनन्दि      | "                |
| विषाहहारस्तोत्र                  | धनञ्जय        | "                |
| भूपालचतुर्विधस्तोत्र             | भूपालकवि      | "                |
| महिम्नस्तवन                      | अयकीर्ति      | "                |
| समवशरण स्तोत्र                   | विष्णुसेन     | "                |

| नाम स्तोत्र             | कर्ता        | भाषा    |
|-------------------------|--------------|---------|
| महर्षि तत्रन            | ×            | संस्कृत |
| ज्ञानाकुशस्तोत्र        | ×            | "       |
| चित्रबंधस्तोत्र         | ×            | "       |
| लक्ष्मीस्तोत्र          | पद्मप्रभ देव | "       |
| नेमिनाथ एकाक्षरीस्तोत्र | पं० शालि     | "       |
| लघु सामायिक             | ×            | "       |
| चतुर्विंशतिस्तवन        | ×            | "       |
| यमकाष्टक                | भ० शमरसीति   | "       |
| यमकबध                   | ×            | "       |
| पार्वभाषस्तोत्र         | ×            | "       |
| बद्धमानस्तोत्र          | ×            | "       |
| जिनोपकारस्मरणस्तोत्र    | ×            | "       |
| मह.वीराष्टक             | भागवन्द      | "       |
| लघुनामायिक              | ×            | "       |

५१७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२८ । ले० काल १० । वे० सं० ८२८ । क भण्डार ।

विशेष—प्रथिकांश उक्त पाठो का ही संग्रह है ।

५१७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११८ । ले० काल १० । वे० सं० ८२९ । क भण्डार ।

विशेष—उक्त पाठों के अतिरिक्त निम्नपाठ भीर है ।

|                            |   |         |
|----------------------------|---|---------|
| बीरनाथस्तवन                | × | संस्कृत |
| श्रीपार्ष्वजिनेश्वरस्तोत्र | × | "       |

५१७२. स्तोत्रसंग्रह..... । पत्र सं० ११७ । प्रा० १२१.१.७ ड ब । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल x । ले० काल x । पूर्ण । वे० सं० ८२७ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

| नाम स्तोत्र    | कर्ता | भाषा    |
|----------------|-------|---------|
| प्रतिक्रमण     | ×     | संस्कृत |
| सामायिक        | ×     | "       |
| शक्तिपाठसंग्रह | ×     | "       |

| नाम स्तोत्र     | कृष्ता    | भाषा    |
|-----------------|-----------|---------|
| तत्त्वार्थसूत्र | उमास्वाति | संस्कृत |
| स्वयंभूस्तोत्र  | समन्वभद्र | "       |

४१७३. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० १० । मा० ११३×७३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३० । क भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

|                      |   |         |
|----------------------|---|---------|
| नेमिनाथस्तोत्र सटीक  | × | संस्कृत |
| इन्द्रधरस्तवन        | × | "       |
| स्वयंभूस्तोत्र       | × | "       |
| चन्द्रप्रसन्नस्तोत्र | × | "       |

४१७४. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० ८ । मा० १२३×५६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३६ । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र है ।

|                     |             |         |
|---------------------|-------------|---------|
| कल्याणमन्दिरस्तोत्र | कुमुदचन्द्र | संस्कृत |
| बिद्यापहारस्तोत्र   | धनञ्जय      | "       |
| सिद्धिप्रियस्तोत्र  | देवर्षि     | "       |

४१७५. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० २२ । मा० १२३×५६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३८ । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र है ।

|                                |         |         |
|--------------------------------|---------|---------|
| एकीभाव                         | बादिराज | संस्कृत |
| सरस्वतीस्तोत्र मन्त्र सहित     | ×       | "       |
| ऋषिमण्डलस्तोत्र                | ×       | "       |
| भक्ताभरस्तोत्र ऋद्धिमंत्र सहित | ×       | "       |
| हनुमानस्तोत्र                  | ×       | "       |
| ज्वालामालिनीस्तोत्र            | ×       | "       |
| बकवधरीस्तोत्र                  | ×       | "       |

४१७६. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० १४। प्रा० ७×४<sup>३</sup> इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल सं० १८४४ माह मुदी ६। पूर्ण। वे० सं० २३७। ख अण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है।

ज्वालामालिनी, मुनीश्वरों की जयमाल, ऋषिमंडलस्तोत्र एवं नमस्कारस्तोत्र।

४१७७. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० २४। प्रा० ६×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३६। ख अण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है।

|                   |       |         |               |
|-------------------|-------|---------|---------------|
| पद्मावतीस्तोत्र   | ×     | संस्कृत | १ से १० पत्र  |
| चक्रेश्वरीस्तोत्र | ×     | "       | ११ से २० पत्र |
| स्वर्णाकर्षणविधान | महीधर | "       | २४            |

४१७८. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० ८१। प्रा० ७<sup>३</sup>×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८६६। क अण्डार।

४१७९. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० २७। प्रा० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८६८। क अण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं।

भक्तामर, एकीभाव, विद्यापहार, एवं भूपालचतुर्विंशतिका।

४१८०. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० ३ से ५६। प्रा० ६×६ इंच। भाषा—हिन्दी, संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८६७। क अण्डार।

४१८१. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० २३ से १४१। प्रा० ८×५ इंच। भाषा—संस्कृत, हिन्दी। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८६६। क अण्डार।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

|                       |        |         |        |
|-----------------------|--------|---------|--------|
| नाम स्तोत्र           | कर्ता  | भाषा    |        |
| पंचमंगल               | रूपचंद | हिन्दी  | अपूर्ण |
| कलशविधि               | ×      | संस्कृत |        |
| देवसिद्धपूजा          | ×      | "       |        |
| शान्तिपाठ             | ×      | "       |        |
| जिनेन्द्रभक्तिस्तोत्र | ×      | हिन्दी  |        |

| नाम स्तोत्र             | कृत्ता    | भाषा   |
|-------------------------|-----------|--------|
| कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा | बनारसीदास | हिन्दी |
| जैनशतक                  | भूषरदास   | "      |
| निर्वाणकाण्डभाषा        | भगवतीदास  | "      |
| एकीभावस्तोत्रभाषा       | भूषरदास   | "      |
| नेरहवाठिया              | बनारसीदास | "      |
| चैत्यबंदना              | ×         | "      |
| भक्तामरस्तोत्रभाषा      | हेमराज    | "      |
| चक्रकल्याणपूजा          | ×         | "      |

४१८०. स्तोत्रसंग्रह... पत्र सं० ५१ । प्रा० ११×७२ इ च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । विषय—

स्तोत्र । १० काल × । ले० बाल × । पूर्ण । वै० सं० ८६५ । छ अक्षर ।

विशेष—निम्न प्रकार संयह है ।

|                         |               |         |         |
|-------------------------|---------------|---------|---------|
| निर्वाणकाण्डभाषा        | भैया भगवतीदास | हिन्दी  | अपूर्णा |
| सामायिकपाठ              | पं० महाचन्द्र | "       | पूर्णा  |
| सामायिकपाठ              | ×             | "       | अपूर्णा |
| पंचपरमेष्ठीगुण          | ×             | "       | पूर्णा  |
| नक्षुसामायिक            | ×             | संस्कृत | "       |
| बारहभावना               | नवलकवि        | हिन्दी  | "       |
| इष्यसग्रहभाषा           | ×             | "       | अपूर्णा |
| निर्वाणकाण्डभाषा        | ×             | प्राकृत | पूर्णा  |
| चतुर्विंशतिस्तोत्रभाषा  | भूषरदास       | हिन्दी  | "       |
| चौबीसदंडक               | दीनतराम       | "       | "       |
| परमानन्दस्तोत्र         | ×             | "       | अपूर्णा |
| भक्तामरस्तोत्र          | मानदुंग       | संस्कृत | पूर्णा  |
| कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा | बनारसीदास     | हिन्दी  | "       |
| स्वयंभूस्तोत्रभाषा      | दानतराम       | "       | "       |
| एकीभावस्तोत्रभाषा       | भूषरदास       | "       | अपूर्णा |
| शालोचनापाठ              | ×             | "       | "       |
| सिद्धिप्रियस्तोत्र      | देवर्षि       | संस्कृत | "       |

| नामं स्तोत्र      | काली | भाषा   |       |
|-------------------|------|--------|-------|
| विशेषहस्तोत्रभाषा | ×    | हिन्दी | पूर्ण |
| संबोधपंचासिका     | ×    | "      | "     |

४१८३. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० २१। पृ० १०५×७ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८६४। छ भण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्रो का संग्रह है।

नवग्रहस्तोत्र, योगनीस्तोत्र, पद्मावतीस्तोत्र, तीर्थकुरम्बोत्र, सामायिकपाठ ग्राहक है।

४१८४. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० २५। पृ० १०५×८ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८६३। छ भण्डार।

विशेष—भक्तान्तर ग्रादि स्तोत्रों का संग्रह है।

४१८५. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० २६। पृ० ८५×८ इंच। भाषा—संस्कृत। हिन्दी। विषय—स्तोत्र। १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८६२। छ भण्डार।

४१८६. स्तोत्र—आचार्य जसवंत। पत्र सं० १। पृ० १५×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८६१। छ भण्डार।

४१८७. स्तोत्रपूजासंग्रह.....। पत्र सं० ६। पृ० ११×११ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्रपूजा। १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८६०। छ भण्डार।

४१८८. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० १३। पृ० १०×८ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८५९। छ भण्डार।

४१८९. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० ७ मे ४७। पृ० ६×८ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८५८। छ भण्डार।

४१९०. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० ६ से १६। पृ० ११५×१५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४२६। च भण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्र है।

|                     |             |         |
|---------------------|-------------|---------|
| एकीभावस्तोत्र       | वादिराज     | संस्कृत |
| कल्याणमन्दिरस्तोत्र | कुमुदचन्द्र | "       |

ग्रंथ प्राचीन है। संस्कृत टीका सहित है।

४१६१. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० २ मे ४८। आ० ८×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।  
२० काल /। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४३०। च भण्डार।

४१६२. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० १४। आ० ८३×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २०  
काल ×। ले० काल सं० १८५७ ज्येष्ठ सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ४३१। च भण्डार।

विशेष—निम्न संग्रह है।

|                       |                 |         |
|-----------------------|-----------------|---------|
| १. सिद्धिप्रियस्तोत्र | देवनिधि         | संस्कृत |
| २. कल्याणमन्दिर       | कुमुदबन्दाचार्य | "       |
| ३. भक्तामरस्तोत्र     | मानतुंगाचार्य   | "       |

४१६३. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० ७ म १७। आ० ११×०३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।  
२० काल /। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४३२। च भण्डार।

४१६४. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० २४। आ० १२×७३ इंच। भाषा—हिन्दी, प्राकृत, संस्कृत।  
विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१६३। ट भण्डार।

४१६५. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० ५ मे ३५। आ० १०×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।  
२० काल /। ले० काल सं० १८७५। अपूर्ण। वे० सं० १८७२। ट भण्डार।

४१६६. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० १५ मे ३४। आ० १२×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।  
२० काल /। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४३३। च भण्डार।

विशेष—निम्न संग्रह है।

|                    |      |         |        |
|--------------------|------|---------|--------|
| मार्मार्य बडा      | ×    | संस्कृत | अपूर्ण |
| मार्मार्य लघु      | ×    | "       | पूर्ण  |
| सहस्रनाम लघु       | ×    | "       | "      |
| सहस्रनाम बडा       | ×    | "       | "      |
| शुद्धिपत्रस्तोत्र  | ×    | "       | "      |
| निबन्धाकाङ्क्षभाषा | ×    | "       | "      |
| नवकारमन्त्र        | ×    | "       | "      |
| ब्रह्मन्वकार       | ×    | अपभ्रंश | "      |
| शीतरागस्तोत्र      | तथैव | संस्कृत | "      |
| जिनपञ्जरस्तोत्र    | ×    | "       | "      |



| नाम स्तोत्र               | कर्त्ता | भाषा    |   |
|---------------------------|---------|---------|---|
| पद्यावतीचक्रेश्वरीस्तोत्र | ×       | "       | " |
| वन्द्यपंजरस्तोत्र         | ×       | "       | " |
| हनुमानस्तोत्र             | ×       | हिन्दी  | " |
| बडादर्शन                  | ×       | संस्कृत | " |
| धाराधना                   | ×       | प्राकृत | " |

४१६७. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० ४। आ० ११ × ४ $\frac{1}{2}$  इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४८। छ। भण्डार।

विशेष—निम्नलिखित स्तोत्र है।

एकीभाव, भूपालचौकीसी, विषाहहार, नेत्रिणीत भूधरवृत्त हिन्दी में है।

४१६८. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० ७। आ० ४ $\frac{1}{2}$  × ३ $\frac{1}{2}$  इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—भाव। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३४। छ। भण्डार।

निम्नलिखित स्तोत्र है।

| नाम स्तोत्र        | कर्त्ता | भाषा    |
|--------------------|---------|---------|
| पार्वतीनाथस्तोत्र  | ×       | संस्कृत |
| तीर्थविन्दोस्तोत्र | ×       | "       |

विशेष—ज्योतिषी देवों में स्थित जिनकेन्द्रों की स्तुति है।

|                     |         |         |
|---------------------|---------|---------|
| ब्रह्मेश्वरीस्तोत्र | ×       | संस्कृत |
| गिनपञ्जरस्तोत्र     | कमलप्रभ | "       |

श्री रुद्रपञ्चायवरेण गच्छः देवप्रभाचार्यपदाब्जहंसः।

वादीन्द्रब्रह्माभारण्य जैनो जियादसो कमलप्रभाष्यः॥

४१६९. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० १४। आ० ४ $\frac{1}{2}$  × ३ $\frac{1}{2}$  इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १३४। छ। भण्डार।

|                 |             |         |
|-----------------|-------------|---------|
| नरमीस्तोत्र     | पद्मप्रभदेव | संस्कृत |
| नेमिस्तोत्र     | ×           | "       |
| पद्यावतीस्तोत्र | ×           | "       |

४२०० स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० १३। भा० १३×७३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८१। ज अण्डार।

विशेष—निम्नलिखित स्तोत्र हैं।

एकीभाव, सिद्धिप्रिय, कल्याणमन्दिर, भक्तामर तथा परमानन्दस्तोत्र।

४२०१. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० १५२। भा० ६३×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४१। ज अण्डार।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है। प्रति गुटका साइज एवं सुन्दर है।

४२०२ स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० ३२। भा० ४३×६३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल सं० १६०२। पूर्ण। वे० सं० २६४। म अण्डार।

विशेष—गणपती, ज्वालामालिनी, जिनपञ्जर प्रादि स्तोत्रों का संग्रह है।

४२०३. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० ११ से २२७। भा० ६३×५ इंच। भाषा—संस्कृत, प्राकृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २७१। म अण्डार।

विशेष—गुटका के रूप में है तथा प्राचीन है।

४२०४. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० १४। भा० ६×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७७। व अण्डार।

विशेष—भक्तामर, कल्याणमन्दिर स्तोत्र प्रादि हैं।

४२०५. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० २१। भा० १०×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५२४। व अण्डार।

विशेष—कल्याणमन्दिर, भक्तामर एवं एकीभाव स्तोत्र हैं।

४२०६. स्वयंभूस्तोत्र—समन्तभद्राचार्य। पत्र सं० ५१। भा० १२३×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८४०। क अण्डार।

विशेष—प्रति हिन्दी टम्बा टीका सहित है। इसका दूसरा नाम जिनचतुर्विधाति स्तोत्र भी है।

४२०७. प्रति सं० २। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १७५६ ज्येष्ठ बुदी १३। वे० सं० ४३५। व अण्डार।

विशेष—कामराज ने प्रतिलिपि की थी।

इसी अण्डार में दो प्रतियाँ ( वे० सं० ४३४, ४३६ ) भी हैं।

२०८. प्रति सं० ३। पत्र सं० २४। ले० काल ×। वे० सं० २६। ज्ञ भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है।

४२०६. प्रति सं० ४। पत्र सं० २४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५४। ज्ञ भण्डार।

विशेष—संस्कृत में संकेतार्थ दिये गये हैं।

४२१०. स्वयंभूस्तोत्रटीका—प्रभाचन्द्राचार्य। पत्र सं० ४३। भा० ११×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत।

विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल सं० १८६१ मँगसिर सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० ८४१। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम क्रियाकलाप टीका भी दिया हुआ है।

इसी भण्डार में दो प्रतियाँ ( वे० सं० ८३२, ८३६ ) झोर हैं।

४२११. प्रति सं० २। पत्र सं० ११६। ले० काल सं० १११५ पाँच सुदी १३। वे० सं० ८४। ।

भण्डार।

विशेष—तनुमुखलाल पांड्या चौधरी चाटसू के मार्फत श्री.लाल पाटनी से प्रतिलिपि कराई।

४२१२. स्वयंभूस्तोत्रटीका.....। पत्र सं० ३२। भा० १०×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—

स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८८४। ज्ञ भण्डार।



## पद भजन गीत आदि



४२१३. अनाथाजोचोटाक्या—खेम । पत्र सं २ । प्रा० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२१ । अ भण्डार ।

विशेष—राजा शेरशाह ने भगवान महावीर स्वामी से अपने आपको अनाथ कहा था उसी पर चार ढालो में प्रार्थना की गयी है ।

४२१४. अनाथामुनि सङ्गाथ..... । पत्र सं० ५ । प्रा० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
गीत । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७३ । अ भण्डार ।

४२१५. अहंनकचौडालियागीत—विमल बिनय ( बिनयचरंग )..... । पत्र सं० ३ । प्रा० १०×४ ;  
५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । १० काल × । ले० काल १६८१ प्रासोत्र सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ८४२ । अ  
भण्डार ।

। विशेष—घाँद अन्त भाग निम्न है—

|         |  |
|---------|--|
| धारम्भ— | धर्द मान चउवीसमउ जिनवंदी जगदीस ।<br>अरहंनक मुनिवर बरीय भणिए सुधरीय जमीस ॥१॥  |
| चौपई—   | सु जमीसधरी मनसाहे, कहिसि संबंउ उछाहे ।<br>अरहंनक जिममत लीधउ, जिम ते तारी बसि कीधउ ॥२॥<br>मिज भात... सुइ उपसेसइ, बलिजत आदरीय विसेसइ ।<br>पहुतउ ते देव चिमानि, सुणिय्यो भवियण तिम कानि ॥३॥ |
| रोहा—   | पयरा नबरी जाणीबइ अलकापुरि अवतार ।<br>बसइ तिहा विवहारीयउ सुदत नाम सुविचार ॥४॥   |
| चौपई—   | सुविचार सुभडा बरणी..... ।<br>तसु नंदन रूप निधान, अरहंनक नाम प्रधान ॥५॥   |
| अन्तम—  | ध्यार सरण बित चोतवइ जी, परिहरि अ्यारि कराय ।<br>बोप तबइ अत उबरइ जी, सत्य रहित निरमाय ॥५५॥  |

असनपास खादम बली जी सादिम सेवे निहार ।  
 इति भाव ए सवि परिहरी जी, मन समरइ नवकार ॥५६॥  
 सिला संधारउ भादरया जी, मूर किरण तनि ताप ।  
 महइ परीसह साहसी जी, छेदइ भवना पाप ॥५७॥  
 समतारस माहि भीलतउ जी, मनेधरतउ सुभ ध्यान ।  
 काल करी तियो पामीयउ जी, सुंदर देव विमान ॥५८॥  
 सुरग तया सुख भोगवी जी, परमाणंद उलास ।  
 तिहां थी चवि बलि पामेरयइ जी, अनुक्रमि सिवपुर वास ॥५९॥  
 अरहंनक निमते धरइ जी, अंत ममय मुभभाण ।  
 जनम सकल करि ते सही जी, पामइ परम कल्याण ॥६०॥  
 श्री खरतर गच्छ दीपता जी, श्री जिनचंद मुग्गिण ।  
 जयवंता जय जाणीयइ जी, दरसण परमाणंद ॥६१॥  
 श्री गुण सेखर गुण निलउ जी, वाचक श्री नयरंग ।  
 तामु सीस भावइ भणइ जी, विमलविनय मतिरंग ॥६२॥  
 ए संबंध सुहायउ जी, जे गावइ नर नारि ।  
 ते पामइ सुख संपदा जी, दिन दिन जय जयकार ॥६३॥  
 इति अरहंनक चउठानियागोतम समाप्तम् ॥

संवत् १९८१ वर्षे आमु सुदी १४ दिने बुधवारे पंडित श्री हर्षसिंहगणेशाख्यहर्षकीर्तिगार्गादाख्यगः  
 पद्यरंगमु नना लेलि । श्री गुरुवचनगरे ।

४२१६. आदिजिनधररतुति—कमलकीर्ति । पत्र सं० ५ । आ० १०<sup>१</sup>×५ उ च । भाषा—गुजराती ।  
 विषय—गीत । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७४ । ट अण्डार ।

विशेष—दो गीत हे दोनो हां के कर्ता कमलकीर्ति हैं ।

४२१७. आदिनाथगीत—मुनिहेमसिद्ध । पत्र सं० १ । आ० ६२×४<sup>२</sup> इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
 गीत । २० काल सं० १९३६ । ले० काल × । वे० सं० २३३ । छ अण्डार ।

विशेष—भाषा पर गुजराती का प्रभाव है ।

४२१८ आदिनाथ सक्क्याय..... पत्र सं० १ । आ० ६<sup>१</sup>×४ इ ३ । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत ।  
 २० काल × । ले० काल । पूर्ण । वे० सं० २१६८ । अ अण्डार ।

४२१६. आदीश्वरविजयति..... । पत्र सं० १ । प्रा० ६३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत ।  
१० काल सं० १५६२ । ले० काल सं० १७४१ वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वै० सं० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३१ पद्य नहीं हैं । कुल ४५ पद्य रचना में हैं ।

अन्तिम पद्य—

पनरवासतृि जिनमूर अविचल पद पाथी ।

वीनतडी कुलट पूगीया ग्रामुमस वदि दशम दिहाई मनि बेरागे इम भगीया ॥४५॥

४२२०. कृष्णबालबिलास—श्री क्रिशनलाल । पत्र सं० १५ । प्रा० ८×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—पद । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १२८ । छ भण्डार ।

४२२१. गुरुस्तवन—भूधरदास । पत्र सं० ३ । प्रा० ८३×६३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १४५ । छ भण्डार ।

४२२२. चतुर्विंशति तीर्थस्तवन—हेमबिमलसूरि शिष्य आर्णद । पत्र सं० २ । प्रा० ८३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । १० काल सं० १५६२ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १८८३ । ट भण्डार ।  
विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४२२३. चम्पाशतक—चम्पाबाई । पत्र सं० २४ । प्रा० १२×८३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २२३ । छ भण्डार ।

विशेष—एक प्रति धीर है । चम्पाबाई ने ६६ वर्ष की उम्र में रुग्णावस्था में रचना की थी जिसके प्रभाव में रोग दूर होगया था । यह प्यारेलाल अग्नीगड (उ० प्र०) की छोटी बहिन थी ।

४२२४. चेलना सज्जाय—समयसुन्दर । पत्र सं० १ । प्रा० ६३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । १० काल × । ले० काल सं० १८६२ माह सुदी ४ । पूर्ण । वै० सं० २१७५ । छ भण्डार ।

४२२५. चैत्यपरिपाटी..... । पत्र सं० १ । प्रा० ११३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १२५५ । छ भण्डार ।

४२२६. चैत्यबंदना ..... । पत्र सं० ३ । प्रा० ६×८३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २६५ । छ भण्डार ।

४२२७. चौबीसी जिनस्तुति—क्षेमचंद । पत्र सं० ६ । प्रा० १०×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । १० काल × । ले० काल × । ले० काल सं० १७६५ वैशख सुदी १ । पूर्ण । वै० सं० १८४ । छ भण्डार ।

४२२८. चौबीसतीर्थस्तुतिपरिचय..... । पत्र सं० १ । प्रा० १०×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २१२० । छ भण्डार ।

४२२६. चौबीसतीर्थङ्करस्तुति—ब्रह्मदेव । पत्र सं० १७ । प्रा० ११२×५६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १४१ । अ मण्डार ।

[विशेष—रतनचन्द पांड्या ने प्रतिलिपि की थी ।

४२२७. चौबीसीस्तुति..... । पत्र सं० १५ । प्रा० ८×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल सं० १६०० । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २३६ । छ मण्डार ।

४२२९. चौबीसतीर्थङ्करवर्णन..... । पत्र सं० ११ । प्रा० ६३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १५८३ । ट मण्डार ।

४२३२. चौबीसतीर्थङ्करस्तवन—लूणकरण कासलीवाल । पत्र सं० ८ । प्रा० १५×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५५७ । च मण्डार ।

४२३३. जलङ्गी—रामकृष्ण । पत्र सं० ५ । प्रा० १०२×६३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १६८ । छ मण्डार ।

४२३४. जन्मकुमार सन्माय..... । पत्र सं० १ । प्रा० ६२×४६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २१३६ । अ मण्डार ।

४२३५. जयपुर के मंदिरों की बंदना—स्वरूपचन्द । पत्र सं० १० । प्रा० ६×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल सं० १६१० । ले० काल सं० १६४७ । पूर्ण । वै० सं० २७८ । म मण्डार ।

४२३६. जियाभक्ति—हर्षकीर्ति । पत्र सं० १ । प्रा० १२×५२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १८४३ । अ मण्डार ।

४२३७. जिनपक्षीसी व अन्य संग्रह..... । पत्र सं० ४ । प्रा० ८३×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २०४ । छ मण्डार ।

४२३८. ज्ञानपञ्चमीस्तवन—समयसुन्दर । पत्र सं० १ । प्रा० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल सं० १७८५ । श्रावण सुदी २ । पूर्ण । वै० सं० १८८५ । अ मण्डार ।

४२३९. मलङ्गी श्रीमन्दिरजीकी..... । पत्र सं० ४ । प्रा० ७३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २३१ । छ मण्डार ।

४२४०. भोग्रियानुषोढालया..... । पत्र सं० २ । प्रा० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २२३६ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—

सीता ता मनि संकर डाल—

रमती बरखै सीत नमावी, प्रणमी ततपुह पाया रे ।  
 भाभरिया श्रुति ना गुण पाता, उलटै भाज सवाया रे ॥  
 भविष्य बंदो मुनि भाभरिया, संभार समुद्र जे तरियो रे ।  
 सबल साहा परिसा मन सुधै, सीत रबण करि भारियो रे ॥२॥  
 पइठतपुर मकरपुज राजा, मदनसेन तस रएली रे ।  
 तस मुत मदन भरम बाबुडो, किरत जास कहाली रे ॥

जीजी डाल भपूर्ण है । भाभरिया दुनि का बर्णन है ।

४२४१. खमोकारपचीसी—श्रुति ठाकुरसी । पत्र सं० १ । पृ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तोत्र । २० काल सं० १८२८ भाषाठ मुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २१७८ । अ भण्डार ।

४२४२. तमाखू की जयमाल—आखंडमुनि । पत्र सं० १ । पृ० १०½×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—गीत । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २१७० । अ भण्डार ।

४२४३. दर्शनपाठ—सुधजन । पत्र सं० ७ । पृ० १०×४½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २८८ । अ भण्डार ।

४२४४. दर्शनपाठस्तुति..... । पत्र सं० ८ । पृ० ८×६½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २०

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १६२७ । अ भण्डार ।

४२४५. देवकी की डाल—लुणकारण कासलीवाल । पत्र सं० ४ । पृ० १०½×४½ इंच । भाषा—

हिन्दी । विषय—गीत । २० काल × । ले० काल सं० १८८५ वैशाल मुदी १४ । पूर्ण । जीर्ण । वै० सं० २२४६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ दोहा—

रड नेमा नामे हुवा लखण सरव संजोग ।  
 पाठ सहस लखण धरो गोमकार गछ जोग ॥१॥  
 सहत घठारा साथ जी भजाया बालीस हजार ।  
 भोटार मुनिवर विचरज्या रा सार ॥२॥  
 ....  
 वसुदेव राजा डाकरा देवाकीण धंगजात ॥३॥  
 मन्वन छ देव का तया सा राखा कै उणहार ।  
 बसली सुख श्री नेम का साचउ संजसार ॥४॥



साधरों मुख धारो देस मछतनी नाम ।

बेनेरमावण स्वामी जी करावो जीव जीव ॥१॥

मखनाग—

देव छी तगाइ नंदए बादवारे उभी श्री नेम जिलोसवार ।

नन्धणा साधा न देल नर कारवालाग। इम अरवीनार ॥

साध्या साहो देवकी देखी नर उभा रहा छ नजर नीहान रे ।

कसती...टाछ काब वाताणीर छुटी छे हुद तलीए धार रे ॥२॥

तनमन बाग सोहाबडो उलस्यो र फल में कुली छे जेहना कायरे ।

बनाया माहा तो माव रही रे देव तो लीचन तीरपत न बायरे ॥३॥

बीबकी तो साधान छु दिला करी र पाछा घाइ छ माहीलो माहारे ।

सोच फिकर देवकीरे ज्योर मोहतली ए बातरे ॥४॥

सासो तो भाज्यो श्री नेमबीरे एतो छहु धारा बालरे ।

आख्या माहो आमु पटेरे जाणो मा त्यारे टुटा मानरे ॥५॥

दन्तिम—

मरजी ताब छोडो सगला नगर मकारो,

मुहुमागा दीजे धरारे मरिण मणक भंडार ।

मरिण मणक बहु दोधा देवकी मनरा इच्छा काइ न राखी ॥

रुणकरण ए डाल ज भावा तीज बोध डमही ए साखी ग ॥६॥

इति श्री देवकी की डाल सं० ॥०॥ अन्तर्ग ॥

दत्तवत कुनीमान छावडा चैतराम ठाकरका बेटा छोटका छे वाच पठे ज्यासू जय। जोग बाबबयो । मिनी  
देशास्य बुदा १४ सं० १८८५ ।

देवकी की डाल— रतनचन्दकृत और है । प्रति गल गठ है । कई अश नष्ट हागये । पढन मे नही  
पाता है ।

प्रान्तम— गुण गाथा जी मारवाह मभार कर जोडि रतनचंद भरो ॥१०॥

४२४६. द्वीपायनडाल—गुणसारसूरि । पत्र सं० १ । भा०, १०३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी गुज-  
रानी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६४ । क भण्डार ।

४२४७. नेमिनाथ के नवमञ्जल—बिनोदीलाल । पत्र सं० १ । भा० १६३×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।  
विषय म्नुति । २० काल सं० १७७५ । ले० काल सं० १८३२ मंगसिर सुदी २ । वे० सं० ५८ । क भण्डार ।

विषय—धोमू मे प्रतिस्तिथि हुई थी । अन्तपत्री की तरह गोल सिमटा हुआ है ।

४२४८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० २१४३ । ट भण्डार ।

विशेष—लिख्या मंगल फौजी दौलतरामजी की मुकाम पुन्या के मध्ये तोपखाना ।

१० पत्र से आगे नेमिराजुलपञ्चीसी विनोदीलाल कृत भी है ।

४२४९. नागश्री सज्जाय—विनयचंद्र । पत्र सं० १ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४८ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल ३रा पत्र है ।

अन्तिम—

आपरा बांधो आप भोगवै कोण गुरु कुरा चेला ।

संजम लेइ गई स्वर्ग पांचमें अजुही नादी न वेरारे ॥१५॥ आ०॥

महा विदेह मुकते जाती मोटी गर्म बसेरा रै ।

विनयचंद्र जिनधर्म भराधो सब दुख जान परेरे ॥१६॥

इति नागश्री सज्जाय कुचामणै लिखिते ।

४२५०. निर्वाणकायडभाषा—भैया भगवतीदास । पत्र सं० ८ । आ० ८×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तुति । २० काल म० १७४१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७ । अ भण्डार ।

४२५१. नेमिगीत—पासचन्द्र । पत्र सं० १ । आ० १२३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४७ । अ भण्डार ।

४२५२. नेमिराजमतीकी घोड़ी..... । पत्र सं० १ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७७ । अ भण्डार ।

४२५३. नेमिराजमती गीत—छीतरमल । पत्र सं० १ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

गीत । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१३५ । अ भण्डार ।

४२५४. नेमिराजमतीगीत—हीरानन्द । पत्र सं० १ । आ० ८३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

गीत । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७४ । अ भण्डार ।

सूरतर ना पीर दोहिलोरे, पाम्यो नर भवसार ।

भालइ जन्म महारिड भोरै, कांइ करधारे मन मांहि विचार ॥१॥

मति राचो रै रमणी ने रंग क सेबोरे जीण वाणी ।

तुम रमन्चो रै संजम न संगक चेतो रै बित प्राणी ॥२॥

अरिहंत देव भराधाइघोजी, रै गुर गरुधा श्री साध ।

धर्म केवलानो भालीउ, ए समकित वै रतन जिम लादक ॥३॥

पहिलो समकित सेबीय रे, जे छे धर्मनो मूल ।  
 संजम सकित बाहिरो, जिए भाख्यो रे तुस खंडण तुलिक ॥४॥  
 तहत करिन सरबहो रे, जे भाखो जलनाथ ।  
 पाबेइ भाखव परिहरो, जिम मिलीइ रे सिवपुरनो साथक ॥५॥  
 जीव सङ्गजी जीवेवा बांछिरे, मरण न बांछे कोइ ।  
 अपस राखा लेखवा, तस थावर रे हए जो मत कोइ ॥६॥  
 चोरी लीजे पर तराी रे, तिए तो लागे पाप ।  
 धन कंचण किम चोरीय, जिए बांधइ रे भव भवना संताप क ॥७॥  
 भजस भकीरत रा भव रे, पेरे भव दुख भनेक ।  
 कुठ कहता पामीइ, काइ भाएगी रे मन माहि विवेक ॥८॥  
 महिला संग छुइ हर, नव लख सम जुत ।  
 कुए सुख कारण ए तला, किम काजे रे हिम्या मतवत ॥९॥  
 पुत्र कलत्र घर हाट भरि, ममता काजे फोक ।  
 जु परिगह डाग माहि छै ते छाडरे गया बहूला लोक ॥१०॥  
 मात पिता बंधव सुतरे, पुत्र कलत्र परवार ।  
 सवार्थ्या सङ्ग कौ सगा, कोइ पर भव रे नही राखणहार ॥११॥  
 अंजुल जल नीपरै रे, खिए रे तुटइ आउ ।  
 जाइ ते बेला नही रे बाहुडि जरा घालरे थोवन ने घाड ॥१२॥  
 व्याधि जरा जब लग नहीं रे, तब लभ धर्म संमाल ।  
 धारा हर घण बरसते, कोइ समरथि रे बाषेगीपाल क ॥१३॥  
 भ्रलप दीवस को पाहुरा रे, सङ्ग कोइए संसार ।  
 एक दिन उठो जाइवउ, कवण जाणइ रे किए हो भवतारक ॥१४॥  
 क्रोध मान माया तजो रे, लोभ मेघरब्धो लीगारे ।  
 समतारस भवपुरीय बली दौहिलो रे नर भवतारक ॥१५॥  
 आरंभ छाडा अन्तमा रे पीउ संजम रसपुरि ।  
 सिद्ध बधु से सङ्ग को बटो, इम बोलै सखज देवसुरक ॥१७॥

बाल बुमबारही जिए वाइससमा ॥

समदविजइजी रा नंद हो, बैरागी माहरो मन लागो हो नेम जिएंद सू  
जाइव कुल केरा चंद हो ॥ बाल० ॥१॥

देव घणा छइ हौ बुभ जीदोवला ( देवला )

तेतो न चइइ चेत हो, केइक रे चेत-व्युत्त हो ॥ बाल० ॥२॥

केइक दोस करइ नर नारनइ मांमइ तेलसिद्धर हर हो ।

वाके इक बन बासै बासै बास, कक बनवासो करइ ।

( कष्ट ) कसट सहइ भरपुर हो ॥३॥

तु नर मोह्यो रे नर माया तरौ, तु जग दीनदयाल हो ।

नोजोवनबती ए सुंदरी तजीठ राखुल नार हो ॥४॥

राजल के नारिपयो उदरी पहुतीठ मुकति मभार ।

हीरानंद संवैग साहिबा, जी बी नव म्हारी बीनतेडा भवधारि हो ॥५॥

॥ इति नेमि गीत ॥

४२४५. नेमिराजुलसउभाय..... पत्र सं० १ । ग्रा० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।

१० काल सं० १८५१ चैत्र .... ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २१८४ । अ भण्डार ।

४२४६. पञ्चपरमेष्ठीस्त्वन—जिनवल्लभ सूरि । पत्र सं० २ । ग्रा० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्त्वन । १० काल × । ले० काल सं० १८३६ । पूर्ण । वै० सं० ३८८ । अ भण्डार ।

४२४७. पद—ऋषि शिवलाल । पत्र सं० १ । ग्रा० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २१२८ । अ भण्डार ।

विशेष—पुरा पद निम्न है—

या जग म का तेरा भवे ॥या०॥

जैसे पंखी बीरछ वसेरा, बीछरे होय सवेरा ॥१॥

कोडी २ कर धन जोड्या, ले धरती मे गाडा ।

भंत समै चलख की बेला, ज्यौं गाडा राहो छाडारे ॥२॥

ऊंचा २ महल बणावे, जीव कह इहा रेणा ।

बल गया हंस पडी रही काया, लेय कलेवर दया ॥३॥

मात पिता सु पतनी रे भारी, तीण धन जोवन लाया ।

उड गया हंस काया का भंडण, काडो प्रेत पराया ॥४॥

करी कमाइ इण भो धाया, उलटी पूछी खोइ ।  
 मेरी २ करकै जनम गमाया, चलता संक न होइ ॥५॥  
 पाप की पोट भणी सिर लीनी, हे मूरल भोरा ।  
 हलकी पोट करी तु चाहे, तो होम कुदुम्बसुं न्यारा ॥६॥  
 मात पिता सुत साजन मेरा, मेरा धन परिवारो ।  
 मेरा २ पडा पुकारै चलता, नही कछु तारो ॥७॥  
 जो तेरा तेरे संग न चलता, भेद न जाका पाया ।  
 मोह बस पदारथ बीराणी, हीरा जनम गमाया ॥८॥  
 धास्या देखत केते चल गए जगमै, माखरु धापुही चलया ।  
 भौसर बीता बहु पछतावे, माखी जु ताथ मसलया ॥९॥  
 भ्राज करु धरम काल करु, माहीं व नीयत धारे ।  
 काल भचांणो घाटी पकडी, जब क्या कारज सारे ॥१०॥  
 ए जोगवाइ पाइ दुहेली, फेर न नारु वारो ।  
 होमत होम तो डील न कीजै, कूद पडो निरधारो ॥११॥  
 सीह मुले जीम मीरगलो आयो, फेर नइ छूटया हारो ।  
 इण दीसदते मरण मुले जीव, पाप करी निरधारो ॥१२॥  
 सुगर सुदेव धरम कु सेवो, लेवो जीन का सरना ।  
 दीप सोबलाल कहे भो प्राणी, आतम कारज करणा ॥१३॥

॥इति॥

४२५८. पदसंग्रह .....। पत्र सं० ५६। भा० १२×५ इच्छ। भाषा—हिन्दी। विषय—भजन। २०  
 काल ×। ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० ४२७। क भण्डार।

४२५९. पदसंग्रह .....। पत्र सं० १। ले० काल ×। वे० सं० १२७३। अ भण्डार।

विशेष—त्रिभुवन साहब सावला .....।

इसी भण्डार में २ पदसंग्रह ( वे० सं० १११७, २१३० ) भी है।

४२६०. पदसंग्रह .....। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ४०५। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ११ पदसंग्रह ( वे० सं० ४०४, ४०६ से ४१५ ) तक भी है।

४२६१. पदसंग्रह .....। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० ६२५। च भण्डार।

४२६२. पदसंग्रह.....। पत्र सं० १२ । ले० काल × । वै० सं० ३३ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २७ पदसंग्रह ( वै० सं० ३४, ३५, १४८, २३७, ३०६, ३१०, २६६, ३००, ३०१ में ६ तक, ३११ में ३२४ ) और हैं ।

नोट—वै० सं० ३१८वें में जयपुर की राजबंशावलि भी है ।

४२६३. पदसंग्रह " " । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वै० सं० १७५६ । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ पदसंग्रह ( वै० सं० १७५२, १७५३, १७५८ ) और हैं ।

नोट—छानतराय, हीराचन्द, भूधरदास, दौलतराम प्रादि कवियों के पद हैं ।

४२६४. पदसंग्रह.....। पत्र सं० ३ । भा० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । २० काल

× । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १४७ । छ भण्डार ।

विशेष—केवल ४ पद हैं—

१. मोहि तारी सामि भव सिधु तै ।
२. राहुल कहै तुमे वेग सिधावे ।
३. मिद्वचक वंदो रे जयकारी ।
४. चरम जिणैसर जिहो साहिबा  
चरम धरम उपमार बाल्हेसर ॥

४२६५. पदसंग्रह .....। पत्र सं० १२ में २५ । भा० १२×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २००८ । ट भण्डार ।

विशेष—भागचन्द, नयनमुख, छानत, जगतराम, जादूराम, जोधा, बुधजन, साहिबराम, जगराम, लाल बखतराम, भूलाभूराम, सेमराज, नवल, भूधर, चैनविजय, जीवणदास, विश्वभूषण, मनोहर प्रादि कवियों के पद हैं ।

४२६६. पदसंग्रह—उत्तमचन्द । पत्र सं० १८ । भा० ६×६३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १५२८ । ट भण्डार ।

विशेष—उत्तम के छोटे २ पदोका संग्रह है । पदों के प्रारम्भ में रागरागवियों के नाम भी दिये हैं ।

४२६७. पदसंग्रह—ब्र० कपूरचन्द । पत्र सं० १ । भा० ११३×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २०४३ । छ भण्डार ।

४२६८. पद—केशरगुलाब । पत्र सं० १ । भा० ७×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २२४१ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—

श्रीधर नन्दन नयनानन्दन सांभादेव हमारो जी ।

दिलजानी जिनवर प्यारा वो

दिल दे बीच बसत है निसदिन, कबहू न होबत न्यारा वो ।।

४०६६. पदसंग्रह—चैनसुख । पत्र सं० २ । भा० २४×३३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । १० काल × । ले० काव × । पूर्ण । वे० सं० १७५७ । ट भण्डार ।

४०७०. पदसंग्रह—जयचन्द छावड़ा । पत्र सं० ५२ । भा० ११×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । १० काल सं० १८७४ भाषाठ सुदी १० । ले० काल सं० १८७४ भाषाठ सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ४३७ । क भण्डार ।

विशेष—प्रतिम २ पत्रों में विषय सूची दे रखी है । लगभग २०० पदों का संग्रह है ।

४२७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८७४ । वे० सं० ४३८ । क भण्डार ।

४२७२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १ मे ४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६० । ट भण्डार ।

४२७३. पदसंग्रह—देवागढ़ । पत्र सं० ४४ । भा० ६×६३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद भजन । १० काल × । ले० काल सं० १८६३ । पूर्ण । वे० सं० १७५१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति गुटकाकार है । विभिन्न राग रागिनियों में पद दिये हुये हैं । प्रथम पत्र पर लिखा है— श्री देवसागरजी सं० १८६३ का बेबाख सुदी १२ । सुकाम बसवे नैराचंद ।

४२७४. पदसंग्रह—दौलतराम । पत्र सं० २० । भा० ११×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४२६ । क भण्डार ।

४२७५. पदसंग्रह—बुधजन । पत्र सं० २६ मे ६२ । भा० ११३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद भजन । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६७ । अ भण्डार ।

४२७६. पदसंग्रह—भागचन्द । पत्र सं० २५ । भा० ११×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद व भजन । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३१ । क भण्डार ।

४२७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ४३२ । क भण्डार ।

विशेष—धोड़े पदों का संग्रह है ।

४२७८. पद—मल्लकचंद । पत्र सं० १ । भा० ६×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—

पंच सखी मिल मोहियो जीवा,

काहा पावेगो तु धाम हो जीवा ।

समभो स्थुंत राज ॥

४२७६. पदसंग्रह—मंगलचंद्र । पत्र सं० १० । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद व भजन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३४ । क भण्डार ।

४२८०. पदसंग्रह—सायिकचंद्र । पत्र सं० ५४ । आ० ११×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद व भजन । २० काल × । ले० काल सं० १६५५ मंगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४३० । क भण्डार ।

४२८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । वे० सं० ४३८ । क भण्डार ।

४२८२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७५४ । ट भण्डार ।

४२८३. पदसंग्रह—सेवक । पत्र सं० १ । आ० ८३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५० । ट भण्डार ।

विशेष—केवल २ पद है ।

४२८४. पदसंग्रह—हीराचन्द्र । पत्र सं० १० । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद व भजन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३३ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिष्ठा ( वे० सं० ४३५, ४३६ ) भी हैं ।

४२८५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । वे० सं० ४१६ । क भण्डार ।

४२८६. पद व स्तोत्रसंग्रह..... । पत्र सं० ८८ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३६ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है ।

| नाम              | कर्ता   | भाषा   | पत्र |
|------------------|---------|--------|------|
| पञ्चमङ्गल        | रूपचन्द | हिन्दी | ८    |
| सुशुच्यवतक       | जिनदास  | "      | १०   |
| जिनबशमङ्गल       | सेवगराम | "      | ४    |
| जिनगुणपत्नीसी    | "       | "      | —    |
| गुरुभो की स्तुति | भूधरदास | "      | —    |



| नाम                       | कर्ता       | भाषा   | पत्र |
|---------------------------|-------------|--------|------|
| एकीभावस्तोत्र             | सुंदरदास    | हिन्दी | १४   |
| वचनानि चक्रवर्ति की भावना | "           | "      | —    |
| पदसंग्रह                  | भाणिकचन्द्र | "      | ४    |
| तेरहवें वषपञ्चीसी         | "           | "      | ११   |
| हुंदावसपिणीकालदोष         | "           | "      | "    |
| चौबीस दडक                 | दौलतराम     | "      | १२   |
| दशबोलपञ्चीसी              | द्यानतराय   | "      | १७   |

४२८७. पार्श्वजिनगीत—छाजू ( समयमुन्दर के शिष्य ) । पत्र सं० १ । भा० १०×४ डब्ब ।

भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । २० काल × १० काल × १ पूर्ण । वे० सं० १८५८ । अ भण्डार ।

४२८८. पार्श्वनाथ की निशानी—जिनहर्ष । पत्र सं० ३ । भा० १०×४ डब्ब । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तवन । २० काल × १० काल × १ पूर्ण । वे० सं० २२४७ । अ भण्डार ।

विशेष—२२ पत्र से—

प्रारम्भ—  
मुझ संपति दायक मुरनर नायक परनिख पास जिगदा है ।  
जाकी छवि काति मनोपम मोपम त्रिपति जाग दिगंदा है ॥

अन्तिम—  
तिहा सिधादावास तिहा रे बामा दे मेवक विनबंदा है ।  
घघर निसारणी पास बखागुण गुण जिनहर्ष गावंदा है ॥

प्रारम्भ के पत्र पर क्रोध, मान, माया, लोभ की मज्जाय दी है ।

४२८९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८२२ । वे० सं० २१३३ । अ भण्डार ।

४२९०. पार्श्वनाथचौपई—पं० लास्रो । पत्र सं० १७ । भा० १२½×५२ डब्ब । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तवन । २० काल सं० १७३४ कार्तिक मुदी । ले० काल सं० १७९३ ज्येष्ठ मुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १९१८ ।

ट भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति—

संबत् सतरासैं चौतीस, कार्तिक शुक्ल पक्ष शुभ दीस ।

नौरंग तप दिल्ली मुलितान, सबै नृपति वहै चिरि आथ ॥२६६॥

नागर बाल देश सुभ ठाम, नगर बणहटो उत्तम धाम ।

सब आषक पूजा जिनधर्म, करै भक्ति पावै बहु धर्म ॥२६७॥

कर्मक्षय कारणा युग्हेत, पार्वनाथ चौपई संवेत ।

पंडित लालो लाल सभाव, सेवो धर्म ललो मुमथान ॥२६८॥

भाचार्य श्री महेंद्रकीर्ति पार्वनाथ चौपई संपूर्ण ।

भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य पाठे दयाराम सोनीने भट्टारक महेंद्रकीर्ति के शासन मे दिल्ली के जयसिंहपुरा के देऊर में प्रतिलिपि की थी ।

४२६१. पार्वनाथ जीरोछन्दमत्तरी.....। पत्र सं० २ । प्रा० ६×४ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तवन । २० काल × । ले० काल सं० १७८१ वैशाल बुदी ६ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० १८६५ । अ भण्डार ।

४२६२. पार्वनाथस्तवन.....। पत्र सं० १ । प्रा० १०×४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४८ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी वेष्टन में एक पार्वनाथ स्तवन भीर है ।

४२६३. पार्वनाथस्तोत्र.....। पत्र सं० २ । प्रा० ८३×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६६ । अ भण्डार ।

४२६४. वन्दनाजलझी—बिहारीदास । पत्र सं० ४ । प्रा० ८×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । २० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१३ । अ भण्डार ।

४२६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६२ । अ भण्डार ।

४२६६. वन्दनाजलझी—बुधजन । पत्र सं० ४ । प्रा० १०×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६७ । अ भण्डार ।

४२६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ५२४ । अ भण्डार ।

४२६८. बारहखड़ी एवं पद्य.....। पत्र सं० २२ । प्रा० ५३×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५ । अ भण्डार ।

४२६९. बाहुबली सञ्जय—विमलकीर्ति । पत्र सं० १ । प्रा० ६३×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२४५ ।

विशेष—इयामसुन्दर कृत पाटनपुर सञ्जय भीर है ।

४३००. भक्तिपाठ—बनाराल चौधरो । पत्र सं० १७६ । प्रा० १२×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४५ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न भक्तिया है ।

स्वाध्यायपाठ, सिद्धभक्ति, श्रुतभक्ति, चारित्रभक्ति, प्राचार्यभक्ति, योगभक्ति, बीरभक्ति, निर्वासभक्ति और नंदीश्वरभक्ति ।

४३०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०८ । ले० काल × । वे० सं० ५४७ । क भण्डार ।

४३०२. भक्तिपाठ..... पत्र सं० ६० । प्रा० ११३×७३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४६ । क भण्डार ।

४३०३. भजनसंग्रह—नयन कवि । पत्र सं० ४१ । प्रा० ६×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जोर । वे० सं० २४० । छ भण्डार ।

४३०४. मरुदेवी की सवभाय—श्रुषि लालचन्द । पत्र सं० १ । प्रा० ८३×४४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल सं० १८०० कार्तिक सुदी ४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८७ । अ भण्डार ।

४३०५. महावीरजी का चौदाल्या—श्रुषि लालचन्द । पत्र सं० ४ । प्रा० ६३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८७ । अ भण्डार ।

४३०६. मुनिमुन्नतविनती—देवाब्रह्म । पत्र सं० १ । प्रा० १०३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६७ । अ भण्डार ।

४३०७. राजारानी सवभाय..... पत्र सं० १ । प्रा० ६४×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६६ । अ भण्डार ।

४३०८. रांछपुरास्तवन..... पत्र सं० १ । प्रा० ६×५३ इंच । भाषा हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६३ । अ भण्डार ।

विशेष—राठपुरा ग्राम में रचित आदिनाथ की स्तुति है ।

४३०९. विजयकुमार सवभाय—श्रुषि लालचन्द । पत्र सं० ६ । प्रा० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल सं० १८६१ । ले० काल सं० १८७२ । पूर्ण । वे० सं० २१६१ । अ भण्डार ।

विशेष—कोटा के रामपुरा में ग्रन्थ रचना हुई । पत्र ४ में आगे स्थूलमद्र सवभाय हिन्दी में और है । जिस का २० काल सं० १८६४ कार्तिक सुदी १५ है ।

४३१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० २१८६ । अ भण्डार ।

४३११. विनतीसंग्रह..... पत्र सं० २ । प्रा० १२×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल सं० १८५१ । पूर्ण । वे० सं० २०१३ । अ भण्डार ।

विशेष—महात्मा शम्भूराम ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

४३१२. विनतीसंग्रह—ब्रह्मदेव । पत्र सं० ३८ । प्रा० ७३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।  
२० काल × १० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३१ । अ भण्डार ।

विशेष—सासू बहू का भगड़ा भी है ।

इसी भण्डार में २ प्रतिधा ( वे० सं० ६६३, १०४३ ) धौर है ।

४३१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० १७३ । अ भण्डार ।

४३१४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ६७८ । अ भण्डार ।

४३१५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८४८ । वे० सं० १६३२ । अ भण्डार ।

४३१६. वीरभक्ति तथा निर्वाणभक्ति..... । पत्र सं० ६ । प्रा० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६७ । अ भण्डार ।

४३१७. शीतलनाथस्तवन—ऋषि लालचन्द्र । पत्र सं० १ । प्रा० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१३४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रतिम—

पूज्य श्री श्री दोलतराय जी बहुशुण्य भगवानी ।

रिषलाल जी करि जोडि वीनवे कर सिर चरणाणी ॥

सहर माधोपुर संबत् पंचावन कातीग मुदी जाणी ।

श्री सीतल जिन गुण गाया प्रति उलास भारणी ॥ सीतल ॥ १२ ॥

॥ इति सीतलनाथ स्तवन संपूर्ण ॥

४३१८. श्रेयांसस्तवन—विजयमानसूरि । पत्र सं० १ । प्रा० ११ इंच । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४१ । अ भण्डार ।

४३१९. सतियोंकी सभ्माय—ऋषि खजमल । पत्र सं० २ । प्रा० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी  
गुजराती । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २२४५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रतिम भाग निम्न है—

इतीदक सतियारां गुण कहाये मुण्य सभलो ।

उत्तम पराणी खजमल जी कहइ..... ॥३४॥

चिन्तामणि पार्वनाथ स्तवन भी दिया है ।

४३२०. सभ्माय ( चौदह षोडश )—ऋषि रायचन्द्र । पत्र सं० १ । प्रा० १०×४ इंच । भाषा—  
हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८१ । अ भण्डार ।

४३२१. सबर्षिसिद्धिसम्भाय... । पत्र सं० १ । भा० १०×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

विशेष—पूर्वपण स्तुति भी है ।

४३२२. सरस्वतीअष्टक..... । पत्र सं० ३ । भा० ६×७ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११ । क भण्डार ।

४३२३. साधुवंदना—भाणिकचन्द्र । पत्र सं० १ । भा० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

स्तवन । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५४ । ट भण्डार ।

विशेष—श्वेताम्बर ब्रह्मनाथ की साधुवंदना है । कुल २७ पद्य है ।

४३२४. साधुवंदना—पुष्यसागर । पत्र सं० ६ । भा० १०×४ इञ्च । भाषा—पुरानी हिन्दी । विषय—

स्तवन । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३८ । अ भण्डार ।

४३२५. सारचौबीसीभाषा—पारसदास निगोन्धा । पत्र सं० ४७० । भा० १२ $\frac{१}{२}$ ×७ इंच । भाषा—

हिन्दी । विषय—स्तुति । १० काल सं० १६१८ कार्तिक मुदी २ । ले० काल सं० १६३६ चैत्र मुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ७८५ । क भण्डार ।

४३२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५०५ । ले० काल सं० १६४८ वैशाख मुदी २ । वे० सं० ७८६ । क

भण्डार ।

४३२७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५७१ । ले० काल × । वे० सं० ८१६ । क भण्डार ।

४३२८. सीतादाल..... । पत्र सं० १ । भा० ६ $\frac{१}{२}$ ×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । १०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६७ । अ भण्डार ।

विशेष—फलेहमल कृत चतन दाल भी है ।

४३२९. सोलहसतीसम्भाय... । पत्र सं० १ । भा० १०×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१८ । अ भण्डार ।

४३३०. स्थूलभद्रसम्भाय..... । पत्र सं० १ । भा० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८२ । अ भण्डार ।



## पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य

४३३१. अंकुरोपणविधि—इन्द्रनन्दि । पत्र सं० १५ । प्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
प्रतिष्ठादि का विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७० । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र १४-१५ पर यंत्र है ।

४३३२. अंकुरोपणविधि—पं० आशाधर । पत्र सं० ३ । प्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—  
प्रतिष्ठादि का विधान । २० काल १३वीं लतान्दि । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठापाठ मे से लिया गया है ।

४३३३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । २रा पत्र नहीं है । संस्कृत में कठिन शब्दों का अर्थ दिया हुआ है ।

४३३४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ३१६ । ज भण्डार ।

४३३५. अंकुरोपणविधि ... । पत्र सं० २ मे २७ । प्रा० ११½×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
प्रतिष्ठादि का विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है ।

४३३६. अकृत्रिमजिनचैत्यालय जयमाल..... । पत्र सं० २६ । प्रा० १२×७½ इंच । भाषा—  
प्राकृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल । पूर्ण । वे० सं० १ । च भण्डार ।

४३३७. अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—जिनदास । पत्र सं० २६ । प्रा० १२×५ इंच । भाषा—  
संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १७६४ । पूर्ण । वे० सं० १८५६ । ट भण्डार ।

४३३८. अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—लालजीत । पत्र सं० २१४ । प्रा० १४×८ इंच । भाषा—  
हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १८७० । ले० काल सं० १८७२ । पूर्ण । वे० सं० ५०१ । च भण्डार ।

विशेष—गोपाचलदुर्ग (ग्वालियर) में प्रतिलिपि हुई थी ।

४३३९. अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—चैनसुख । पत्र सं० ४८ । प्रा० १३×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—पूजा । २० काल सं० १६३० फाल्गुन सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०५ । अ भण्डार ।

४३४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४ । ले० काल × । वे० सं० ४१ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६) भीर है ।

४३४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १६३३ । वे० सं० ५०३ । ऋ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ५०२ ) भी है ।

४३४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० २०८ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतियाँ ( वे० सं० २०८ में ही ) भी हैं ।

४३४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० सं० १६६ । झ भण्डार ।

विशेष—भाषाङ्क सुदी ५ सं० १६६७ को यह ग्रन्थ रघुनाथ चाववाड ने चढाया ।

४३४४. अकृत्रिमचैत्यालयपूजा—मनरङ्गलाल । पत्र सं० ३० । भा० ११×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल सं० १६३० माघ सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०४ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थकार परिचय—

नाम 'मनरंग' धर्मरश्मि सी मो प्रति राखी प्रीति ।

चोईसी महाराज को पाठ रख्यो जिन रीति ॥

प्रेरकता प्रतितास की रख्यो पाठ मुभनात ।

ग्राम नग एकोहमा नाम भगवती सत ॥

रचना संवत् संबंधीपद्य—

बिंशति इक शत शतक पै त्रिंशतसंमत जानि ।

माघ शुक्ल त्रयोदशी पूर्ण पाठ महान ॥

४३४५. अक्षयनिधिपूजा..... । पत्र सं० ३ । भा० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० ४० । क भण्डार ।

४३४६. अक्षयनिधिपूजा..... । पत्र सं० १ । भा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८३ । अ भण्डार ।

विशेष—जयमाल हिन्दी में है ।

४३४७. अक्षयनिधिपूजा—ज्ञानभूषण । पत्र सं० ५ । भा० ११३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १७८३ सावन सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ४ । क भण्डार ।

विशेष—श्री देव स्वैताम्बर जैन ने प्रतिलिपि की थी ।

४३४८. अक्षयनिधिविधान..... । पत्र सं० ४ । भा० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १६७२ ) भी है ।

४३४६. अट्टाई ( साठ्ठ ह्य ) द्वीपपूजा—अ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ६१ । प्रा० ११×५३ ह्य । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० का१ × । अपूर्णा । वै० सं० ५५० । अ भण्डार ।  
 विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति ( वै० सं० १०४४ ) शीर है ।
४३४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५१ । ले० काल सं० १८२४ उरेष्ठ बुदी १२ । वै० सं० ७८७ । क भण्डार ।  
 विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति ( वै० सं० ७८८ ) शीर है ।
४३४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १८६२ माष बुदी ३ । वै० सं० ८४० । क भण्डार ।  
 विशेष—इसी भण्डार मे २ अपूर्णा प्रतियां ( वै० सं० ५, ४१ ) शीर हैं ।
४३४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८८४ भादवा सुदी १ । वै० सं० १३१ । क भण्डार ।  
 विशेष—विजयराम पाड्या ने प्रतिलिपि की थी ।
४३४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १८६० । वै० सं० ४२ । ज भण्डार ।
४३४४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८३ । ले० काल × । वै० सं० १२६ । क भण्डार ।  
 विशेष—विजयराम पाड्या ने प्रतिलिपि की थी ।
४३४५. अट्टाईद्वीपपूजा—विश्वभूषण । पत्र सं० ११३ । प्रा० १०३×७३ ह्य । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १६०२ वैशाख सुदी १ । पूर्णा । वै० सं० २ । क भण्डार ।
४३४६. अट्टाईद्वीपपूजा..... । पत्र सं० १२३ । प्रा० ११×५ ह्य । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १८६२ पीष सुदी १३ । पूर्णा । वै० सं० ५०५ । अ भण्डार ।  
 विशेष—प्रभावती निवासी पिरागदास बाकलीवाल मधुभा बाले ने प्रतिलिपि की थी ।  
 इसी भण्डार मे एक प्रति ( वै० सं० ५३४ ) शीर है ।
४३४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२१ । ले० काल सं० १८८० । वै० सं० २१४ । ख भण्डार ।  
 विशेष—महात्मा जोशी जीवण ने जोबनेर मे प्रतिलिपि की थी ।
४३४८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १८७० कार्तिक सुदी ४ । वै० सं० १२३ । घ भण्डार ।  
 विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति [ वै० सं० १२२ ] शीर है ।
४३४९. अट्टाईद्वीपपूजा—डालूराम । पत्र सं० १६३ । प्रा० १२३×५ ह्य । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । १० काल सं० चैत सुदी ६ । ले० काल सं० १६३६ वैशाख सुदी ४ । पूर्णा । वै० सं० ८ । क भण्डार ।  
 विशेष—अमरचन्द दीवान के कहने से डालूराम अग्रवाल ने माधोराजपुरा मे पूजा रचना की ।



४३६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० १६५७ । वै० सं० ५०६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिमा [ वै० सं० ५०४, ५०५ ] झोर है ।

४३६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४४ । ले० काल × । वै० सं० २०१ । अ भण्डार ।

४३६२. अनन्तचतुर्दशीपूजा—शांतिदास । पत्र सं० १६ । भा० ८३×७ इंच । भाषा संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रतोद्यापन विधि सहित है । यह पुस्तक गणेशजी गंगवाल ने बेगमों के मन्दिर मे चढाई थी ।

४३६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वै० सं० ३८६ । अ भण्डार ।

विशेष—पूजा विधि एवं जयमाल हिन्दी गद्य मे है ।

इसी भण्डार मे एक प्रति सं० १८२० की [ वै० सं० ३६० ] झोर है ।

४३६४. अनन्तचतुर्दशीव्रतपूजा ..... । पत्र सं० १३ । भा० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५८८ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रादिनाथ से अनन्तनाथ तक पूजा है ।

४३६५. अनन्तचतुर्दशीपूजा—श्री भूषण । पत्र सं० १८ । भा० १०३×७ इंच । भाषा—हिन्द ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३८ । अ भण्डार ।

४३६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १८२७ । वै० सं० ४२१ । अ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर मे ए० रामचन्द्र ने प्रतिनिधि की थी ।

४३६७. अनन्तचतुर्दशीपूजा ..... । पत्र सं० २० । भा० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत, हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५ । अ भण्डार ।

४३६८. अनन्तजिनपूजा—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० १ । भा० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । वै० सं० २०४२ । अ भण्डार ।

४३६९. अनन्तनाथपूजा—श्री भूषण । पत्र सं० २ । भा० ७×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २१५५ । अ भण्डार ।

४३७०. अनन्तनाथपूजा ..... । पत्र सं० १ । भा० ८३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ८२१ । अ भण्डार ।

४३७१. अनन्तनाथपूजा—सेवरा । पत्र सं० ३ । भा० ८३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३०३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नीचे मे कटा हुआ है ।

४३७२. अनन्तनाथपूजा ..... पत्र सं० ३ । भा० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११४ । अ मण्डार ।

४३७३. अनन्तव्रतपूजा..... पत्र सं० २ । भा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६४ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतिमां ( वे० सं० ५२०, ६६५ ) और हैं ।

४३७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । अ मण्डार ।

४३७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० २३० । अ मण्डार ।

४३७६. अनन्तव्रतपूजा ..... पत्र सं० २ । भा० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३५२ । अ मण्डार ।

विशेष—जैनतर पूजा ग्रन्थ है ।

४३७७. अनन्तव्रतपूजा—भ० विजयकीर्ति । पत्र सं० २ । भा० १२×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४१ । अ मण्डार ।

४३७८. अनन्तव्रतपूजा—साह सेवारात्र । पत्र सं० ३ । भा० ८×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६६ । अ मण्डार ।

४३७९. अनन्तव्रतपूजाविधि..... पत्र सं० १८ । भा० १०३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८५८ भादवा सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १ । ग मण्डार ।

४३८०. अनन्तपूजाव्रतमहात्म्य..... पत्र सं० ६ । भा० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८४१ । पूर्ण । वे० सं० १३६३ । अ मण्डार ।

४३८१. अनन्तव्रतोद्यापनपूजा—आ० गुणचन्द्र । पत्र सं० १८ । भा० १२×५ इंच । भाषा—  
संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल सं० १६३० । ले० काल सं० १८४५ भाद्रपद सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४६७ । अ  
मण्डार ।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

इथाचार्याश्रीगुणचन्द्रविरचिता श्रीअनन्तनाथव्रतपूजा परिपूर्णा समाप्ता ॥

संवत् १८४५ का— अश्विनीमासे शुक्लपक्षे तृतीये च चौथि लिखितं पिरामदास मोहा का जाति बाकलीवान  
प्रतापसिंहराज्ये सुरेन्द्रकोटि मट्टारक विराजमाने सति पं० कल्याणदासतत्सेवक भ्रात्राकारी पंडित लुप्त्यालचन्द्रेण इदं  
अनन्तव्रतोद्यापनलिखापितं ॥१॥

इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ५३६ ) श्रीर है ।

४३६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६२८ आसोज बुदी १५ । वे० सं० ७ । अ मण्डार ।

४३६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० १२ । अ मण्डार ।

४३६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० १२६ । अ मण्डार ।

४३६५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १६४ । वे० सं० २०७ । अ मण्डार ।

४३६६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । वे० सं० ४३२ । अ मण्डार ।

विशेष—२ चित्र मण्डल के हैं । श्री शाकम्भगपुर चूहद्वंश के हर्ष नामक दुर्गा वशिष्ठ ने ग्रन्थ रचना कराई थी ।

४३६७. अभिषेकपाठ..... । पत्र सं० ४ । आ० १२×५<sup>३</sup> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—भगवान के अभिषेक के समय का पाठ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६१ । अ मण्डार ।

४३६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ५७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५२ । अ मण्डार ।

विशेष—विधि विधान सहित है ।

४३६९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० ७३२ । अ मण्डार ।

४३७०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १६२२ । अ मण्डार ।

४३७१. अभिषेकविधि—लक्ष्मीसेन । पत्र सं० १५ । आ० ११×५<sup>३</sup> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—भगवान के अभिषेक के समय का पाठ एवं विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ३१ ) श्रीर है जिसे भास्कराम साह ने जीवनराम सेठी के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । चित्तामणि पार्वनाथ स्तोत्र संग्रहमें कृत भी है ।

४३७२. अभिषेकविधि..... । पत्र सं० ८ । आ० ११×५<sup>३</sup> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—भगवान के अभिषेक की विधि एवं पाठ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७८ । अ मण्डार ।

४३७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ११६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० २७० ) श्रीर है ।

४३७४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २११४ । अ मण्डार ।

४३७५. अभिषेकविधि । पत्र सं० १ । आ० ८<sup>३</sup>×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—भगवान के अभिषेक की विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३३२ । अ मण्डार ।

४३६६. अष्टिष्टाभ्यास ..... पत्र सं० ६ । प्रा० ११×२ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—सल्लेसणा विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७ । अ भण्डार ।

विशेष—२०१ कुल याथायें हैं— अन्यका नाम रिदुह है । जिसका संस्कृत रूपान्तर अष्टिष्टाभ्यास है । आदि भन्त की याथायें निम्न प्रकार हैं—

पणमंत सुरासुरमउ लिरयसवरकिरणकंतविद्युरियं ।  
बीरजिष्णपाक्युयल एमिजस असेमि रिक्काइ ॥१॥  
संसारम्मि भमंतो जीवो बहुभेष भिष्ण जोणिसु ।  
पुरकेण क्कवि पावइ सुहमणु भतं ण संवेहो ॥२॥

भन्त—

पुणु विज्जवेज्जहणुणा वारउ एव वीस सामिय्यं ।  
सुभीब मुमंतेयां रइय भणियं मुणि ङोर वरि देहि ॥२०१॥  
सूर्द भूमिले फलए समरे हाहि विराम परिहाणो ।  
कहिजइ भूमिए समंबरे हातयं वच्छा ॥२०२॥  
भट्टाट्टारह छिणे जे लडीह लच्छरेहाउं ।  
पडमोहिरे धंरं गविजए याहि णं तच्छ ॥२०३॥  
इति अष्टिष्टाभ्यासशास्त्रं समाप्तम् । ब्रह्मवस्ता लेखिनं ॥श्री॥ छ ॥

इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० २४१ ) भी है ।

४३६७. अष्टाह्निकाजयमाल ..... पत्र सं० ४ । प्रा० ६२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अष्टा-  
ह्निका पर्व की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०३१ ।

विशेष—जयमाला प्राकृत में है ।

४३६८. अष्टाह्निकाजयमाल ..... पत्र सं० ४ । प्रा० १३×४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—अष्टा-  
ह्निका पर्व की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ३१ ) भी है ।

४३६९. अष्टाह्निकापूजा ..... पत्र सं० ४ । प्रा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अष्टाह्निका  
पर्व की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ६६० ) भी है ।

४४००. अष्टाह्निकापूजा ..... पत्र सं० ३१ । प्रा० १०<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
अष्टाह्निका पर्व की पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १५३३ । पूर्ण । वे० सं० ३३ । क भण्डार ।

विशेष—संवत् १५३३ में इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि कराई जाकर भट्टारक श्री रत्नकीर्ति की भेंट की गई थी । जयमाला प्रकृत में है ।

४४०१. अष्टाह्निकापूजाकथा—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ६ । प्रा० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय अष्टाह्निका पर्व की पूजा तथा कथा । २० काल सं० १८५१ । ले० काल सं० १८६८ घाषाढ सुदी १० । वे० सं० ५६६ । छ भण्डार ।

विशेष—पं० मुशालचन्द ने जोधराज पाटोदी के बनवाये हुए मन्दिर में अपने हाथ से प्रतिलिपि की थी ।

भट्टारकोऽमृतमवादिकीर्ति श्रीमूलसये वरशारदायाः ।

गच्छेहि तत्पट्टनुराजिराजि देवेन्द्रकीर्ति ममभूततश्च ॥१३७॥

तत्पट्टपूर्वाचलभानुकक्षः श्रीकुंदकुंदान्वलयम्भमुख्यः ।

महेन्द्रकीर्तिः प्रवभूवपट्टे क्षेमेन्द्रकीर्तिः गुरुरस्थमेऽभूत ॥१३८॥

योऽभूत्क्षेमेन्द्रकीर्तिः भुवि सगुणभरभारुचारिणधारी ।

श्रीमद्भट्टारकेन्द्रो विलसदवगमो भव्यसंधे प्रबंधः ।

तस्य श्रीकारशिष्यागमजलधिपट्टः श्रीसुरेन्द्रकीर्ति ।

रेनां पुण्याचकार प्रत्युत्पतिविदा बांधलापार्जगन्धैः ॥१३९॥

मिति घषाढमासे शुक्लपक्षेदशम्या तिथौ संवत् १८७८ का सवाई जयपुर के श्रीऋषभदेवचैत्यायै निवास  
पं० कल्याणदासस्य शिष्य सुक्यालचन्द्रेण स्वहस्तेन लिपीकृत जोधराज पाटोदी कृत चैत्यालये ॥ शुभं भूयात् ॥

इसके अतिरिक्त यह भी लिखा है—

मिति माहसुदी ३ सं० १८८८ मुनिराज दीय प्राय । बडा वृषभमेनजी लघु बाहुबलि मालपुरामुं प्रकाशमे  
प्राया । सागानेर मुं भट्टारकजी की नसिया मे दिन चढ़ां च्यार चक्रा जयपुर मे दिन सवा पहर पाछे मदिरा दर्शन  
संगही का पाटोदी उगहर ( बगैरह ) मंदिर १० कीया पाछे मोहनवाड़ी नंदमालजी की कीर्तिसंभ की नसिया संगही  
विरधोचदजी प्रापकी हवेली मे रात्रि १ रह्या भोजनकरि साहीवाड रात्रिवास कीयो समेदगिरि यात्रापधारया पराकृत  
बोले श्री ऋषभदेवजी सहाय ।

इमी भण्डार मे एक प्रति सं० १८८८ की ( वे० सं० ५४२ ) और है ।

४४०२. अष्टाह्निकापूजा—द्यानतराय । पत्र सं० ३ । प्रा० ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०३ । छ भण्डार ।

विशेष—पत्रो का कुछ भाग जम गया है ।

४४०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६३१ । वे० सं० ३२ । क मण्डार ।

४४०४. अष्टाह्निकापूजा..... पत्र सं० ४४ । भा० ११×५३ इच्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अष्टाह्निका पर्व की पूजा । २० काल सं० १८७६ कार्तिक बुदी ६ । ले० काल सं० १६३० । पूर्ण । वे० सं० १० । क मण्डार ।

४४०५. अष्टाह्निकाव्रतोद्यापनपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ३ । भा० ११×४ इच्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अष्टाह्निका व्रत विधान एवं पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२३ । च मण्डार ।

४४०६. अष्टाह्निकाव्रतोद्यापन..... पत्र सं० २२ । भा० ११×५३ इच्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-अष्टाह्निका व्रत एवं पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६ । क मण्डार ।

४४०७. आचार्य शान्तिसागरपूजा—भगवानदास । पत्र सं० ४ । भा० ११३×६३ इच्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल सं० १६८४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२२ । छ मण्डार ।

४४०८. आठकोटिमुनिपूजा—विश्वभूषण । पत्र सं० ४ । भा० १२×६ इच्च । भाषा-संस्कृत । वषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६ । छ मण्डार ।

४४०९. आदित्यव्रतपूजा—केशवसेन । पत्र सं० ८ । भा० १२×५३ इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-रविव्रतपूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५०० । अ मण्डार ।

४४१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १७८३ श्रावण सुदी ६ । वे० सं० ६२ । क मण्डार ।

४४११. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६०५ भासोज सुदी २ । वे० सं० १८० । म मण्डार ।

४४१२. आदित्यव्रतपूजा..... पत्र सं० ३५ से ४७ । भा० १३×५ इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-रविव्रत पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १७६१ । अपूर्णा । वे० सं० २०६८ । ट मण्डार ।

४४१३. आदित्यवारपूजा..... पत्र सं० १४ । भा० १०×४३ इच्च । भाषा-हिन्दी । विषय-रवि व्रतपूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ५२० । च मण्डार ।

४४१४. आदित्यवारव्रतपूजा..... पत्र सं० ६ । भा० ११×५ इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-रवि व्रतपूजा । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ११७ । छ मण्डार ।

४४१५. आदिनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० ४ । भा० १०३×५ इच्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४८ । अ मण्डार ।

४४१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ५१६ । च मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ५१७ ) भी है ।

४४१७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० २३२। अ मण्डार।

विशेष—प्रारम्भ में तीन चौबीसी के नाम तथा लघु वर्णन पाठ भी हैं।

४४१८. आदिनाथपूजा.....। पत्र सं० ४। आ० १२३×५ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा।  
१० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१४५। अ मण्डार।

४४१९. आदिनाथपूजाष्टक.....। पत्र सं० १। आ० १०३×७ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा।  
१० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १२२३। अ मण्डार।

विशेष—नेमिनाथ पूजाष्टक भी है।

४४२०. आदीश्वरपूजाष्टक.....। पत्र सं० २। आ० १०३×५ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—प्रादि-  
नाथ तीर्थङ्कर की पूजा। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२२६। अ मण्डार।

विशेष—महावीर पूजाष्टक भी है जो संस्कृत में है।

४४२१. आराधनाविधान.....। पत्र सं० १७। आ० १०×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—  
विषय—विधान। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४१५। अ मण्डार।

विशेष—त्रिकाल चौबीसी, षोडशकारण प्रादि विधान दिये हुये हैं।

४४२२. इन्द्रध्वजपूजा—भ० विरवभूषण। पत्र सं० ६८। आ० १२×५ इंच। भाषा—संस्कृत।  
विषय—पूजा। १० काल ×। ले० काल सं० १८५६ बेशाल बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ४६१। अ मण्डार।

विशेष—‘विशालकीर्त्यात्मज भ० विश्वभूषण विरचिताया’ ऐसा लिखा है।

४४२३. प्रति सं० २। पत्र सं० ६२। ले० काल सं० १८५० द्वि० बेशाल बुदी ३। वे० सं० ४८७।  
अ मण्डार।

विशेष—कुछ पत्र चिपके हुये हैं। ग्रन्थ की प्रतिलिपि जयपुर में महाराजा प्रतापसिंह के शासनकाल में  
हुई थी।

४४२४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६६। ले० काल ×। वे० सं० ८८। अ मण्डार।

४४२५. प्रति सं० ४। पत्र सं० १०६। ले० काल ×। वे० सं० १३०। अ मण्डार।

विशेष—अ मण्डार में २ अपूर्ण प्रतिया (वे० सं० ३५, ४३०) भी हैं।

४४२६. इन्द्रध्वजमंडलपूजा.....। पत्र सं० ६७। आ० ११२×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—  
मेलो एव उत्सवो प्रादि के विधान में की जाने वाली पूजा। १० काल ×। ले० काल सं० १६३६ फागुण सुदी ५।  
पूर्ण। वे० सं० १६। अ मण्डार।

विशेष—पं० पन्नालाल जोबनेर वाले ने श्योजीलालजी के मन्दिर में प्रतिलिपि की। मण्डल की सूचो भी  
की हुई है।

४४२७. उपवासप्रहृत्यविधि..... । पत्र सं० १ । घा० १०×५ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—उपवास विधि । १० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२२५ । पूर्ण । अ भण्डार ।

४४२८. ऋषिमंडलपूजा—प्राचाय गुण्यनन्दि । पत्र सं० ११ से ३० । घा० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विभिन्न प्रकार के मुनियों की पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १६१५ बैशाख बुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० ६६८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र १ से १० तक ग्रन्थ पूजायें हैं । प्रमास्ति निम्न प्रकार हैं ।

संबन् १६१५ वर्षे बैशाख बदि ५ पुस्वासरे श्री भूलसंघे नचाम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगण्ड्ये गुण्यनन्दि-मुनीन्द्राय रचितामक्तिभावतः । शतभाषिकाशीतिलोकानां ग्रन्थ संख्यव्या । ग्रन्थाग्रन्थ ३८०॥

इसी भण्डार भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ५७२ ) श्रौर है ।

४४२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । अ भण्डार ।

विशेष—अष्टाङ्गिका जयमाल एवं निर्वाणकाण्ड श्रौर है । ग्रन्थ के दोनो श्रौर सुन्दर बेल बूटे हैं । श्री भादिनाथ व महावीर स्वामी के चित्र उनके वर्णानुसार हैं ।

४४३०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १३७ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ के दोनो श्रौर स्वर्ण के बेल बूटे हैं । प्रति दर्शनीय है ।

४४३१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १७७५ । वे० सं० १३७ (क) अ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णश्रारों में है प्रति सुन्दर एवं दर्शनीय है ।

इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १३८ ) श्रौर है ।

४४३२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० ६५ । अ भण्डार ।

४४३३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ७६ । अ भण्डार ।

४४३४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० २१० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ४३३ ) श्रौर है जो कि मूलसंघ के आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

४४३५. ऋषिमंडलपूजा—मुनि ज्ञानभूषण । पत्र सं० १७ । घा० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६२ । अ भण्डार ।

४४३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० १२७ । अ भण्डार ।

४४३७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २५६ ।



विशेष—प्रथम पत्र पर सकलीकरण विधान दिया हुआ है।

४४३८. ऋषिमंडलपूजा.....। पत्र सं० १८। प्रा० ११३×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।  
२० काल ×। ले० काल १७६८ चैत्र बुदी १२। पूर्ण। वै० सं० ४८। च अण्डार।

विशेष—महात्मा मानजी ने घामेर मे प्रतिनिधि को थी।

४४३९. ऋषिमंडलपूजा.....। पत्र सं० ८। प्रा० ६३×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।  
२० काल ×। ले० काल सं० १८०० कार्तिक बुदी १०। पूर्ण। वै० सं० ४९। च अण्डार।

विशेष—प्रति मंत्र एवं जाप्य सहित है।

४४४०. ऋषिमंडलपूजा—दौलत आसेरी। पत्र सं० ९। प्रा० ६३×६३ इंच। भाषा—हिन्दी।  
विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १९३७। पूर्ण। वै० सं० २९०। झ अण्डार।

४४४१. कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा.....। पत्र सं० ७। प्रा० ११×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—  
पूजा एवं विधि। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ६५। च अण्डार।

विशेष—कांजीवारस का व्रत भाष्वापुरी १२ को किया जाता है।

४४४२. कंजिकाव्रतोद्यापन.....। पत्र सं० ६। प्रा० ११३×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।  
२० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० ६४। च अण्डार।

विशेष—जयमाल अपभ्रंश मे है।

४४४३. कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा.....। पत्र सं० १२। प्रा० १०३×५ इंच। भाषा—संस्कृत हिन्दी।  
विषय—पूजा एवं विधि। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ६७। झ अण्डार।

विशेष—पूजा संस्कृत मे है तथा विधि हिन्दी मे है।

४४४४. कर्मचूरव्रतोद्यापन.....। पत्र सं० ८। प्रा० ११×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।  
२० काल ×। ले० काल सं० १९०४ भाद्रवा सुदी १। पूर्ण। वै० सं० ५९। च अण्डार।

विशेष—इसी अण्डार मे एक प्रति ( वै० सं० ६० ) और है।

४४४५. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। प्रा० १२×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल  
×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १०४। क अण्डार।

४४४६. कर्मचूरव्रतोद्यापनपूजा—लक्ष्मीसेन। पत्र सं० १०। प्रा० १०×५३ इंच। भाषा—संस्कृत।  
विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ११७। झ अण्डार।

४४४७. प्रति सं० २। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वै० सं० ४१३। च अण्डार।

४४४८. कर्मदहनपूजा—भ० शुभचंद्र । पत्र सं० ३० । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—कर्मों के नष्ट करने के लिए पूजा । २० काल × १० काल सं० १७६४ कालिक बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं०  
१६ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति ( वे० सं० ३० ) भी है ।

४४४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६७२ आमोज । वे० सं० २१३ । ख भण्डार ।

४४४०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १६३५ मंगसिर बुदी १० । वे० सं० २२५ । ख  
भण्डार ।

विशेष—आ० नेमिचन्द्र के पठनार्थ लिखा गया था ।

इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० २६७ ) भी है ।

४४४१. कर्मदहनपूजा..... । पत्र सं० ११ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कर्मों के  
नष्ट करने की पूजा । २० काल × १० काल सं० १८३६ मंगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ५२५ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार एक प्रति ( वे० सं० ५१३ ) भी है जिसका ले० काल सं० १८२४ भाद्रवा मुदी  
१३ है ।

४४४२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८८८ माघ शुक्ला ८ । वे० सं० १० । घ  
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

४४४३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १७०८ भाद्रवा मुदी २ । वे० सं० १०१ । ख  
भण्डार ।

विशेष—माइदास ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां ( वे० सं० १००, १०१ ) भी हैं ।

४४४४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४३ । ले० काल × । वे० सं० ६३ । च भण्डार ।

४४४५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० १२५ । छ भण्डार ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड भाषा भी दिया हुआ है । इसी भण्डार मे भी इसी विष्टन में १ प्रति भी है ।

४४४६. कर्मदहनपूजा—टेकचन्द्र । पत्र सं० २२ । आ० ११×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कर्मों  
को नष्ट करने के लिये पूजा । २० काल × १० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०६ । ख भण्डार ।

४४४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ११ । घ भण्डार ।

४४४८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६८ फागुण बुदी ३ । वे० सं० ५३२ । च  
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां ( वे० सं० ५३१, ५३३ ) भी हैं ।

४४५६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८११ । वे० सं० १०३ । छ अण्डार ।

४४६०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १९५८ । वे० सं० २२१ । छ अण्डार ।

विशेष—अजमेर बालो के चौबारे जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

इसी मण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० २३६ ) और है ।

४४६१. कलशविधान—मोहन । पत्र सं० ६ । भा० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कलश एवं अभिषेक आदि की विधि । र० का० सं० १९१७ । ले० काल सं० १९२२ । पूर्ण । वे० सं० २७ । छ अण्डार ।

विशेष—भैरवसिंह के शासनकाल मे शिवकर ( सीकर ) नगर मे मटंभ नामक जिन मन्दिर के स्थापित करने के लिए यह विधान रचा गया ।

अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

लिखितं पं० पन्नालाल अजमेर नगर मे भट्टारकजी महाराज श्री १०८ श्री रत्नभूषणजी के पाठ भट्टारक जी महाराज श्री १०८ श्री ललितकीर्तिजी महाराज पाठ विराज्या वैशाख सुदी ३ ने त्यांकी दिशा मे आया जंबनेरमुं पं० होरालानजी पन्नालाल जयचंद उतरघा दोलतरामजी लोढा भोसवान की होनी मे पंडितराज नोगावा का उतरघा एक जायगां ११ ताई रह्या ।

४४६२. कलशविधान..... पत्र सं० ६ । भा० १०३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कलश एवं अभिषेक आदि की विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६ । अ अण्डार ।

४४६३. कलशविधि—विश्वभूषण । पत्र सं० १० । भा० ६३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४८ । अ अण्डार ।

४४६४. कलशारोपणविधि—आशाधर । पत्र सं० ५ । भा० १२×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्दर के शिखर पर कलश चढाने का विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०७ । छ अण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ का अंग है ।

४४६५. कलशारोपणविधि..... पत्र सं० ६ । भा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्दिर के शिखर पर कलश चढाने का विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२ । छ अण्डार ।

विशेष—इसी अण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० १२२ ) और है ।

४४६६. कलशाभिषेक—आशाधर । पत्र सं० ६ । भा० १०<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
प्रभिषेक विधि । १० काल × १ ले० काल सं० १८३८ भाद्रवा बुदी १० । पूर्ण । वै० सं० १०६ । ॐ अष्टार ।

विशेष—पं० शम्भूराम ने विमलनाथ स्वामी के चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

४४६७. कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा—भ० प्रभाचन्द्र । पत्र सं० ३४ । भा० १०<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५ इंच । भाषा—  
संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × १ ले० काल सं० १६२६ चैत्र सुदी १३ । पूर्ण । वै० सं० ५८१ । ॐ अष्टार ।

विशेष—प्रशस्ति विम्ब प्रकार है—

संवत् १६२६ वर्षे चैत्र सुदी १३ बुधे श्रीमूनसंघे नंद्याम्नाये बलाकारणणे सरस्वतीगन्धे श्रीकुंदकुंदाचार्या-  
न्वये भ० पद्मनंदिदेवास्तरट्टे भ० श्रीगुणचन्द्रदेवास्तरट्टे भ० श्रीगणेशचन्द्रदेवास्तरट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवा तच्छिष्य  
श्रीमंडनाचार्यधर्मचंद्रदेवा तच्छिष्य मडनाचार्यश्रीललितकीर्तिदेवा तदाम्नाये खंडेलवापान्वये मंडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्र तत्-  
शिष्यगिण बाई लानी इदं शास्त्रं लिखापि मुनि हेमचन्द्रायदत्तं ।

४४६८. कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा..... । पत्र सं० ७ । भा० १०<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । १० काल × १ ले० काल × १ पूर्ण । वै० सं० ४१९ । ॐ अष्टार ।

४४६९. कलिकुण्डपूजा..... । पत्र सं० ३ । भा० १०<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
१० काल × १ ले० काल × १ पूर्ण । वै० सं० ११८३ । ॐ अष्टार ।

४४७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × १ वै० सं० १०८ । ॐ अष्टार ।

४४७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल × १ वै० सं० २५६ । ॐ अष्टार । श्रीर भी पूजायें है ।

४४७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल × १ वै० सं० २२४ । ॐ अष्टार ।

४४७३. कुण्डलगिरिपूजा—भ० विश्वभूषण । पत्र सं० ९ । भा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—कुण्डलगिरि क्षेत्र की पूजा । १० काल × १ ले० काल × १ पूर्ण । वै० सं० ५०३ । ॐ अष्टार ।

विशेष—रुचिकरगिरि, मानुपोत्तरगिरि तथा पुष्कराढ की पूजायें श्रीर हैं ।

४४७४. क्षेत्रपालपूजा—श्री विश्वसेन । पत्र सं० २ से २८ । भा० १०<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । १० काल × १ ले० काल सं० १८७४ भाद्रवा बुदी ९ । प्रपूर्ण । वै० सं० १३३ । (क) ॐ अष्टार ।

४४७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १९३० ज्येष्ठ सुदी ४ । वै० सं० १२४ । ॐ  
अष्टार ।

विशेष—गणेशलाल पांड्या चौधरी चादसू बाने के लिए पं० मनसुखजी ने गोधो के मन्दिर मे प्रतिलिपि  
की थी ।

४४७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६१६ वैशाख बुदी १३ । वे० सं० ११८ । अ  
भण्डार ।

४४७७. क्षेत्रपालपूजा..... पत्र सं० ६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—जैन  
मान्यतानुसार भैरव की पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८६० फागुण बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ७६ । अ  
भण्डार ।

विशेष—कंवरजी श्री चंपालालजी टोम्या खंडेलवाल ने पं० क्यामलाल ब्राह्मण से प्रतिनिधि करवाई थी ।  
४४७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८६१ चैत्र सुदी ६ । वे० सं० ४८६ । अ  
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार से २ प्रतिमां ( वे० सं० ८२२, १२२८ ) भी हैं ।

४४७९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० १२४ । अ भण्डार ।

विशेष—२ प्रतिमां भी हैं ।

४४८०. कंजिकाप्रतोद्यापनपूजा—मुनि ललितकीर्ति । पत्र सं० ५ । आ० १२×५ इंच । भाषा—  
संस्कृत विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५११ । अ भण्डार ।

४४८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ११० । क भण्डार ।

४४८२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६२८ । वे० सं० ३०२ । ख भण्डार ।

४४८३. कंजिकाप्रतोद्यापन..... पत्र सं० १७ से २१ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८ । अ भण्डार ।

४४८४. गजपथामंडलपूजा—भ० क्षेमेन्द्रकीर्ति ( नागौर पट्ट ) । पत्र सं० ८ । आ० १२×५ इंच ।  
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६४० । पूर्ण । वे० सं० ३६ । ख भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति—

मूलसंधे बलाकारे गच्छे सारस्वते भवत् ।

कुन्दकुन्दान्वये जातः श्रुतसागरपारगः ॥१६॥

नागौरिपट्टे पि अन्तकीर्तिः तत्पट्टधारी शुभ हर्षकीर्तिः ।

तत्पट्टबिद्यादिमुग्रषणाख्यः तत्पट्टहेमादिमुकीर्तिमाख्यः ॥२०॥

हेमकीर्तिमुनेः पट्टे क्षेमेन्द्रादियशाःप्रभुः ।

तस्याज्ञया विरचितं गजपथमुपजनं ॥२१॥

विदुषा शिवजिद्रक्तः नामधेयेन मोहनः ।

प्रेम्णा यात्राप्रसिद्धपर्यं कैकाल्विरचितं चिरं ॥२२॥

जीयादिर्यं पूजनं च विश्वभूषणघुर्षं ।

तस्यानुसारतो ज्ञेयं न च बुद्धिकृतं त्विदं ॥२३॥

इति नामोपरपट्टविराजमान श्रीभट्टारवक्षेमेन्द्रकीर्तिविरचितं गजपंथमंडलपूजनविधानं समाप्तम् ॥

४४८५. गणधरचरणारविन्दपूजा..... पत्र सं० ३ । आ० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

४४८६. गणधरजयमाला..... पत्र सं० १ । आ० ८×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१०० । अ भण्डार ।

४४८७. गणधरबलयपूजा..... पत्र सं० ७ । आ० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४२ । क भण्डार ।

४४८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ७ । ले० काल × । वे० सं० १३४ । क भण्डार ।

४४८९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिया ( वे० सं० ११९, १२२ ) झीर है ।

४४९०. गणधरबलयपूजा..... पत्र सं० २२ । आ० ११×४ इंच । भाषा-विषय-पूजा । २० काल

× । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२१ । अ भण्डार ।

४४९१. गिरिनारक्षेत्रपूजा—भ० विश्वभूषण । पत्र सं० ११ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल सं० १७५६ । ले० काल सं० १९०४ माघ बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ९१२ । अ भण्डार ।

४४९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । वे० सं० ११९ । छ भण्डार ।

विशेष—एक प्रति झीर है ।

४४९३. गिरिनारक्षेत्रपूजा..... पत्र सं० ४ । आ० ८×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २०

काल × । ले० काल सं० १९६० । पूर्ण । वे० सं० १४० । क भण्डार ।

४४९४. चतुर्दशीभ्रतपूजा..... पत्र सं० १३ । आ० ११<sup>३</sup>×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५३ । क भण्डार ।

४४९५. चतुर्विंशतिजयमाल—यति माघनादि । पत्र सं० २ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २९८ । छ भण्डार ।

४४६६. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा.....। पत्र सं० ५१। भा० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३८। ज भण्डार।

विशेष—केवल ग्रन्थ पत्र नहीं है।

४४६७. प्रति सं० २। पत्र सं० ४६। ले० काल सं० १६०२ वैशाख बुदी १०। वे० सं० १३६। ज भण्डार।

४४६८. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा.....। पत्र सं० ४६। भा० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १। अ भण्डार।

विशेष—दलजी बज मुखरफ ने चढाई थी।

४४६९. प्रति सं० २। पत्र सं० ४१। ले० काल सं० १६०६। वे० सं० ३३१। अ भण्डार।

४४७०. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा.....। पत्र सं० ४४। भा० १०२×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६७। अ भण्डार।

विशेष—कही २ जयमाला हिन्दी में भी है।

४४७१. प्रति सं० २। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १६०१। वे० सं० १५६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० १५५) भी है।

४४७२. प्रति सं० ३। पत्र सं० २८। ले० काल ×। वे० सं० ८६। अ भण्डार।

४४७३. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—सेवाराम नाह। पत्र सं० ४३। भा० १२×७ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। २० काल सं० १८२४ मंगसिर बुदी ६। ले० काल सं० १८५४ भासाज सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० ७१५। अ भण्डार।

विशेष—भाभूराम ने प्रतिलिपि की थी। कवि ने अपने पिता वलतराम के बनाये हुए मिथ्यात्वखंडन और बुद्धिविलास का उल्लेख किया है।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७१४) भी है।

४४७४. प्रति सं० २। पत्र सं० ६०। ले० काल सं० १६०२ भाषाड सुदी ८। वे० सं० ७१४। अ भण्डार।

४४७५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५२। ले० काल सं० १६४० फागुण बुदी १३। वे० सं० ४६। अ भण्डार।

४४७६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४६। ले० काल सं० १८८३। वे० सं० २३। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिभा (वे० सं० २१, २२) भी हैं।

४५०७. चतुर्विंशतिपूजा.....। पत्र सं० २०। आ० ११×५ $\frac{१}{२}$  इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा।  
१० काल ×। ले० कान ×। अपूर्ण। वै० सं० १२०। छ मण्डार।

४५०८. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—घृन्दावन। पत्र सं० ६६। आ० ११×५ $\frac{१}{२}$  इंच। भाषा—हिन्दी।  
विषय—पूजा। १० कान सं० १८१६ कार्तिक बुदी ३। ले० काल सं० १६१५ आषाढ बुदी ५। पूर्ण। वै० सं० ७१६।  
अ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार मे २ प्रतिधा ( वै० सं० ७२०, ६२७ ) और है।

४५०९. प्रति सं० २। पत्र सं० ४६। ले० काल ×। वै० सं० १४५। क मण्डार।

४५१०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६५। ले० काल ×। वै० सं० ४७। ख मण्डार।

४५११. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४६। ले० काल सं० १६५६ कार्तिक सुदी १०। वै० सं० २६। ग  
मण्डार।

४५१२. प्रति सं० ५। पत्र सं० ५५। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० २५। घ मण्डार।

विशेष—बीच के कुछ पत्र नहीं है।

४५१३. प्रति सं० ६। पत्र सं० ७०। ले० काल सं० १६२७ सावन सुदी ३। वै० सं० १६०। ङ  
मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार मे ४ प्रतिधा ( वै० सं० १६१, १६२, १६३, १६४ ) और है।

४५१४. प्रति सं० ७। पत्र सं० १०५। ले० काल ×। वै० सं० ५४४। च मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार मे ३ प्रतिधा ( वै० सं० ५४२, ५४३, ५४५ ) और है।

४५१५. प्रति सं० ८। पत्र सं० ४७। ले० काल ×। वै० सं० २०२। छ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार मे ४ प्रतिधा ( वै० सं० २०४ मे ३ प्रतिधा, २०५ ) और है।

४५१६. प्रति सं० ९। पत्र सं० ६७। ले० काल सं० १६४२ चैत्र सुदी १५। वै० सं० २६१। ज  
मण्डार।

४५१७. प्रति सं० १०। पत्र सं० ८१। ले० काल ×। वै० सं० १८६। झ मण्डार।

विशेष—सर्वमुखी गोधा मे सं० १६०० भादवा सुदी ५ को बढाया था।

इसी मण्डार मे एक प्रति ( वै० सं० १४५ ) और है।

४५१८. प्रति सं० ११। पत्र सं० ११५। ले० काल सं० १६४६ सावन सुदी २। वै० सं० ४४५। ञ  
मण्डार।

४५१९. प्रति सं० १२। पत्र सं० १४७। ले० काल सं० १६३७। वै० सं० १७०६। ट मण्डार।

विशेष—द्वोटेलाल भांबसा ने स्वपठनार्थ श्रीलाल से प्रतिलिपि कराई थी।



४५२०. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० ६० । आ० ११×५३ इंच । भाषा-हिन्दी  
पद्य । विषय-पूजा । २० काल सं० १८५४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे २ प्रतियां ( वे० सं० २१५८, २०८५ ) और हैं ।

४५२१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५० । ले० काल सं० १८७१ आसोज बुदी ६ । वे० सं० २४ । ग  
ण्डार ।

विशेष—सदामुल कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी मण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० २५ ) और है ।

४५२२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १९९६ । वे० सं० १७ । घ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे २ प्रतियां ( वे० सं० १६, २४ ) और हैं ।

४५२३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५७ । ले० काल × । वे० सं० १५७ । ङ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे ३ प्रतियां ( वे० सं० १५८, १५९, ७८७ ) और है ।

४५२४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५९ । ले० काल सं० १९२६ । वे० सं० ५४६ । च मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे ३ प्रतियां ( वे० सं० ५४६, ५४७, ५४८ ) और है ।

४५२५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १८६१ । वे० सं० २१९ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे ५ प्रतियां ( वे० सं० २१७, २१८, २२०/३ ) और है ।

४५२६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६९ । ले० काल × । वे० सं० २०७ । ज मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० २०८ ) और है ।

४५२७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १८६१ श्रावण बुदी ४ । वे० सं० १८ । झ  
मण्डार ।

विशेष—जैतराम रावका ने प्रतिलिपि कराई एवं नाथूराम रावका ने विजैराम पाठ्या के मन्दिर मे चढाई  
की । इसी मण्डार मे २ प्रतियां ( वे० सं० ५८, १८१ ) और है ।

४५२८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १८५२ आषाढ बुदी १५ । वे० सं० ६४ । ञ  
मण्डार ।

विशेष—महात्मा जयदेव ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

इसी मण्डार मे २ प्रतियां ( वे० सं० ३१५, ३२१ ) और है ।

४५२९. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—नेमीचन्द्र पाटनी । पत्र सं० ६० । आ० ११३×५३ इंच । भाषा-  
हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल सं० १८८० भाद्रवा बुदी १० । ले० काल सं० १९१८ आसोज बुदी १२ । वे० सं०  
१४४ । क मण्डार ।

विशेष—अन्त में कवि का संक्षिप्त परिचय दिया हुआ है तथा बतलाया गया है कि कवि वीवान अमरचंद्र जी के मन्दिर में कुछ समय तक ठहरकर नागपुर चले गये तथा वहाँ से अमरावती गये ।

४५३०. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—मनरंगलाल । पत्र सं० ५१ । भा० ११×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२१ । अ भण्डार ।

४५३१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० १४३ । क भण्डार ।

विशेष—पूजा के अन्त में कवि का परिचय भी है ।

४५३२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । वे० सं० २०३ । क भण्डार ।

४५३३. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—वस्तुवावरलाल । पत्र सं० ५४ । भा० ११३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १८५४ मंगसिर बुदी ६ । ले० काल सं० १६०१ कालिक मुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ५५० । च भण्डार ।

विशेष—तनमुखराय ने प्रतिलिपि की थी ।

४५३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ मे ६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५ । क भण्डार ।

४५३५. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—सुगनचन्द्र । पत्र सं० ६७ । भा० ११३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६२६ चैत्र बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ५५५ । च भण्डार ।

४५३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १६२८ वैशाख मुदी ५ । वे० सं० ५५६ । च भण्डार ।

४५३७. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा..... पत्र सं० ७७ । भा० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६१६ चैत्र मुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६२६ । अ भण्डार ।

४५३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५४ । क भण्डार ।

४५३९. चन्दनपष्ठीव्रतपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० १० । भा० ६×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८ । अ भण्डार ।

४५४०. चन्दनपष्ठीव्रतपूजा—चोखचन्द्र । पत्र सं० ८ । भा० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१६ । अ भण्डार ।

विशेष—‘वनुर्थ पूजा की जयमाल’ यह नाम दिया हुआ है । जयमाल हिन्दी में है ।

४५४१. चन्दनपष्ठीव्रतपूजा—भ० देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ६ । भा० ८३×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चन्द्रप्रभ की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७१ । क भण्डार ।

४५४२. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा.....। पत्र सं० २१। घा० १२×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—तीर्थङ्कर चन्द्रप्रभ की पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८०५। ट भण्डार।

विशेष—निम्न पूजायें श्रीर हैं— पञ्चमी व्रतोद्यापन, नवग्रहपूजाविधान।

४५४३. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा.....। पत्र सं० ३। घा० १२×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१६२। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २१६३) श्रीर है।

४५४४. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०६३। ट भण्डार।

४५४५. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा.....। पत्र सं० ६। घा० ११½×५½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६५७। अ भण्डार।

विशेष—३रा पत्र नहीं है।

४५४६. चन्द्रप्रभजिनपूजा—रामचन्द्र। पत्र सं० ७। घा० १०½×५ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १८७६ प्रासोज बुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ४२७। अ भण्डार।

विशेष—सदामुख बाकलीवाल महामा वाले ने प्रतिनिधि की थी।

४५४७. चन्द्रप्रभजिनपूजा—देवेन्द्रकीर्ति। पत्र सं० ५। घा० ११×४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १७६२। पूर्ण। वे० सं० ५७६। अ भण्डार।

४५४८. प्रति सं० २। पत्र सं० ५। ले० काल सं० १८६३। वे० सं० ४३०। अ भण्डार।

विशेष—ग्रामेरमें सं० १८७२ में रामचन्द्र की लिखी हुई प्रत से प्रतिनिधि की गई थी।

४५४९. चमत्कारअतिशयक्षेत्रपूजा.....। पत्र सं० ५। घा० ७×५ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १६२७ बैशाख बुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ६०२। अ भण्डार।

४५५०. चारित्रशुद्धिविधान—श्री भूषण। पत्र सं० १७०। घा० १२½×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एवं पूजायें। २० काल ×। ले० काल सं० १८८८ पीष बुदी ८। पूर्ण। वे० सं० ४४५। अ भण्डार।

विशेष—इसका दूसरा नाम बारहसी चौतीसाव्रत पूजा विधान भी है।

४५५१. प्रति सं० २। पत्र सं० ८६। ले० काल ×। वे० सं० १५२। क भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है।

४५५२. चारित्रशुद्धिविधान—सुमतिब्रह्म । पत्र सं० ८४ । प्रा० ११२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एवं पूजायें । २० काल × । ले० काल सं० १२३७ बैशाख सुदी १५ । पूर्ण । वै० सं० १२३ । अ भण्डार ।

४५५३. चारित्रशुद्धिविधान—शुभचन्द्र । पत्र सं० ६६ । प्रा० ११२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एवं पूजायें । २० काल × । ले० काल सं० १७१४ फाल्गुण सुदी ४ । पूर्ण । वै० सं० २०४ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रकृति—

संवत् १७१४ वर्षे काठगुमाने शुक्लपक्षे चतुर्थ तिथौ शुक्रवासरे । घडसोलास्थाने मुंडलदेशे श्रीधर्मनाथ चैतन्ये श्रीमूलमन्त्रे सरस्वतीगण्ड्ये बलात्कारमणौ श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री ५ रत्नचन्द्राः तत्पट्टे अ० हर्षचन्द्राः तदाम्नाये ब्रह्म श्री ठाकरसी तदिशब्ध ब्रह्म श्री गणुदास तदिशब्ध ब्रह्म श्री महीदासेन स्वज्ञानावरणीं कर्म क्षयार्थ उवापन कारये चोत्रोमु स्वहस्तेन लिखितं ।

४५५४. चिन्तामणिपूजा ( वृहद् )—विद्याभूषण सूरि । पत्र सं० ११ । प्रा० २३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५५१ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र ३, ८, १० नहीं है ।

४५५५. चिन्तामणिपार्वनाथपूजा ( वृहद् )—शुभचन्द्र । पत्र सं० १० । प्रा० ११२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५७४ । अ भण्डार ।

४५५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८२ । ले० काल सं० १६६१ पीष बुदी ११ । वै० सं० ४१७ । अ भण्डार ।

४५५७. चिन्तामणिपार्वनाथपूजा ..... । पत्र सं० ३ । प्रा० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । वै० सं० ११८४ । अ भण्डार ।

४५५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वै० सं० २८ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजायें धार हैं । चिन्तामणिस्तोत्र, कलि कुण्डस्तोत्र, कलिकुण्डपूजा एवं पद्मावतीपूजा ।

४५५९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वै० सं० ६६ । अ भण्डार ।

४५६०. चिन्तामणिपार्वनाथपूजा ..... । पत्र सं० ११ । प्रा० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५८३ । अ भण्डार ।

४५६१. विन्तामणिपार्वेनाथपूजा..... पत्र सं० ५। घा० ११३×५३ इंच। भाषा—संस्कृत।  
विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० २२१४। अ भण्डार।

विशेष—यज्ञविधि एवं स्तोत्र भी दिया है।

इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० १८४० ) भी है।

४५६२. चौदहपूजा..... पत्र सं० १६। घा० १०×७ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० २६६। ज भण्डार।

विशेष—शुभभनाथ से लेकर अनंतनाथ तक पूजायें हैं।

४५६३. चौसठशुद्धिपूजा—स्वरूपचन्द। पत्र सं० ३५। घा० ११३×५ इंच। भाषा—हिन्दी।  
विषय—६४ प्रकार की शुद्धि धारण करने वाले मुनियोंकी पूजा। २० काल सं० १६१० सावन मुदी ७। ले० काल सं० १६५१। पूर्ण। वै० सं० ६६४। अ भण्डार।

विशेष—इसका दूसरा नाम बृहद्गुर्वाजलि पूजा भी है।

इसी भण्डार में ४ प्रतियाँ ( वै० सं० ७१६, ७१७, ७१८, ७३७ ) भी हैं।

४५६४. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १६१०। वै० सं० ६७०। क भण्डार।

४५६५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३२। ले० काल सं० १६५२। वै० सं० २६। ग भण्डार।

४५६६. प्रति सं० ४। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १६२६ फागुण मुदी १२। वै० सं० ७६। घ भण्डार।

४५६७. प्रति सं० ५। पत्र सं० २५। ले० काल ×। वै० सं० १६३। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० १६४ ) भी है।

४५६८. प्रति सं० ६। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वै० सं० ७३४। च भण्डार।

४५६९. प्रति सं० ७। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १६२२। वै० सं० २१६। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियाँ ( वै० सं० १४३, २१६/३ ) भी हैं।

४५७०. प्रति सं० ८। पत्र सं० ४५। ले० काल ×। वै० सं० २०६। ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियाँ ( वै० सं० २६२/२ २६५ ) भी हैं।

४५७१. प्रति सं० ९। पत्र सं० ४६। ले० काल ×। वै० सं० ५३४। झ भण्डार।

४५७२. प्रति सं० १०। पत्र सं० ४३। ले० काल ×। वै० सं० १६१३। ट भण्डार।

४५७३. छोटितिनचारणविधि..... पत्र सं० ३। घा० ११×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—  
विधान। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १८७८। अ भण्डार।

४५७४. जम्बूद्वीपपूजा—पांडे जिनदास । पत्र सं० १६ । घा० १०३×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । १० काल १७वीं शताब्दी । ले० काल सं० १८२२ मंगसिर बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १८३ । कृ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्रकृत्रिम जिनालय तथा भूत, भविष्यत्, वर्तमान जिनपूजा सहित है । पं० चोखन्द ने माहचन्द्र से प्रतिलिपि करवाई थी ।

४५७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १८८४ ज्येष्ठ सुदी १४ । वे० सं० १८८ । कृ भण्डार ।

विशेष—भवानीचन्द भावासा किनाय वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४५७६. जम्बूस्वामीपूजा ... । पत्र सं० १० । घा० ८×५ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-प्रतिम केवली जम्बूस्वामी की पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १६४८ । पूर्ण । वे० सं० ६०१ । अ भण्डार ।

४५७७. जयमाल—रायचन्द । पत्र सं० १ । घा० ८ $\frac{१}{२}$ ×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । १० काल सं० १८५५ काठुण सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१३२ । अ भण्डार ।

विशेष—भोजराज जी ने किशनगढ में प्रतिलिपि की थी ।

४५७८. जलहरतेलाविधान ... । पत्र सं० ४ । घा० ११ $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विधान । १० काल × । ले० काल × । वे० सं० ३२३ । ज भण्डार ।

विशेष—जलहर तेले (वत) की विधि है । इसका दूसरा नाम भरतेला व्रत भी है ।

४५७९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १६२८ । वे० सं० ३०२ । कृ भण्डार ।

४५८०. जलयात्रापूजाविधान..... । पत्र सं० २ । घा० ११×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६३ । ज भण्डार ।

विशेष—भगवान के अभिषेक के लिए जल लाने का विधान ।

४५८१. जलयात्राविधान—महा पं० आशाधर । पत्र सं० ४ । घा० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-जन्माभिषेक के लिए जल लाने का विधान । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६६ । अ भण्डार ।

४५८२. जलयात्रा ( तीर्थौदकादानविधान ) ..... । पत्र सं० २ । घा० ११×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२ । कृ भण्डार ।

विशेष—जलयात्रा के यन्त्र भी दिये हैं ।

४५८३. जिनगुणसंपत्तिपूजा—भ० रत्नचन्द्र । पत्र सं० ६ । घा० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०२ । कृ भण्डार ।

४४८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६८३ । वे० सं० १७१ । अ भण्डार ।

विशेष—श्रीपति जोशी ने प्रतिनिधि की थी ।

४४८५. जिनगुणसंपत्तिपूजा..... । पत्र सं० ११ । भा० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय -

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६७ । अ भण्डार ।

विशेष—४वां पत्र नहीं है ।

४४८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६२१ । वे० सं० २६३ । अ भण्डार ।

४४८७. जिनगुणसंपत्तिपूजा..... । पत्र सं० ५ । भा० ७३×६३ इंच । भाषा—संस्कृत प्राकृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१५ । अ भण्डार ।

४४८८. जिनपुरन्दरव्रतपूजा..... । पत्र सं० १४ । भा० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०६ । अ भण्डार ।

४४८९. त्रिनृजाफतप्रामिकथा ..... । पत्र सं० ५ । भा० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८३ । अ भण्डार ।

विशेष—पूजा के साथ २ कथा भी है ।

४४९०. जिनयज्ञकल्प ( प्रतिष्ठासार )—महा पं० आशाधर । पत्र सं० १०२ । भा० १०३×४

इंच । भाषा—संस्कृत । विषय मूनि, वेदी प्रतिष्ठादि विधानों की विधि । २० काल सं० १२८५ फासोज बुदी ८ । ले० काल सं० १४६५ माघ बुदी ८ (शक्र सं० १३६०) पूर्ण । वे० सं० २८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १४६५ शाके १३६० वर्षे माघ वदि ८ शुक्लवासरे..... (पूर्ण)

४४९१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १६३३ । वे० सं० ४५६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—संवत् १६३३ वर्षे..... ।

४४९२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८८५ भाद्रवा बुदी १३ । वे० सं० २७ । अ भण्डार ।

विशेष—मथुरा में श्रीरङ्गदेव के शासनकाल में प्रतिनिधि हुई ।

लेखक प्रशस्ति—

श्रीमूलसंघेषु सरस्वतीया गच्छे बलाकारणे प्रसिद्धे ।

सिंहासनी श्रीमन्वस्य खेटे मुदधिराशा विषये विलीने ।

श्रीकुम्भकुंदाखिलयोगनाथ पट्टानुगानेकमुनीन्द्रवर्याः ।  
 दुर्वादिवाग्नुमथनैकस्रज्ज विद्यामुर्नदीवरसूरिपुष्पः ॥  
 तद्रथये योऽमरकोतिनाम्ना भट्टारको वादिगजेमशत्रुः ।  
 तस्यानुशिष्युभ्रचन्द्रसूरि श्रीमालके नर्मदयोपगायां ॥  
 पुर्यां शुभायां पट्टपशाश्रुवत्यां सुवरांकाराप्रत नीचकार ॥

४४६३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १६५६ भादवा सुदी १२ । वे० सं० २२३ ।  
 ऋ भण्डार ।

विशेष—वंगाल में प्रकचरां नगर में राजा सवाई मानसिंह के शासनकाल में आचार्य कुम्भकुन्द के वना-  
 त्कारगण सरस्वतीगच्छ में भट्टारक पद्मनदि के शिष्य न० शुभचन्द्र भ० जिनचन्द्र भ० चन्द्रकीर्ति की आत्मानाय में खंडेल-  
 बाल बंशोत्पन्न पाटनीगोत्र वाले साह श्री पट्टिराज. वसू, फरना, कपूरा, नाथू आदि में से कपूरा ने शीकशाकारण व्रतोद्या-  
 पन में पं० श्री जयवंत को यह प्रति भेंट की थी ।

४४६४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११६ । ले० काल × । वे० सं० ४२ । ऋ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

नंद्यान् खडिग्लवंशोत्पः केल्हगोण्यासवित्तरः ।  
 लेखितोयेन पाठार्यमस्य प्रणमं पुस्तकं ॥२०॥

४४६५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६६२ भादवा बुदी २ । वे० सं० ४२५ । ऋ  
 भण्डार ।

विशेष—संवन् १६६२ वर्षे भाद्रपद वदि २ शोमे अर्चोह राजपुरनगरव्रतस्थं आम्ब.सरनगरज्ञाती  
 पंचोली त्याहसामाट्टमुत नरसिहेन निखितं ।

ऋ भण्डार में एक अपूर्ण प्रति ( वे० सं० २०७ ) च भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां ( वे० सं० १२०,  
 १०५ ) तथा ऋ भण्डार में एक अपूर्ण प्रति ( वे० सं० २०७ ) और है ।

४४६६. जिनयज्ञविधानं... । पत्र सं० १ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान ।  
 २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७८३ । ट भण्डार ।

४४६७. जिनरत्नपन ( अभिवेक पाठ )..... । पत्र सं० १४ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
 विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १२१ बैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० १७७८ । ट भण्डार ।

४४६८. जिनसंहिता..... । पत्र सं० ४६ । आ० १३×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा प्रति-  
 हादि एवं आचार सम्बन्धी विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७ । छ भण्डार ।



४५६६. जिनसंहिता—भद्रबाहु । पत्र सं० १३० । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा प्रतिष्ठादि एवं आचार सम्बन्धी विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १६६ । क मण्डार ।

४६००. जिनसंहिता—भ० एकसंधि । पत्र सं० ८४ । आ० १३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा प्रतिष्ठादि एवं आचार सम्बन्धी विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ चैत्र बुदी ११ । पूर्ण । वै० सं० १६७ । क मण्डार ।

विशेष—५७, ५८, ८१, ८२ तथा ८३ पत्र खाली हैं ।

४६०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १८५३ । वै० सं० १६८ । क मण्डार ।

४६०२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १११ । ले० काल × । वै० सं० ५६ । ख मण्डार ।

४६०३. जिनसंहिता..... पत्र सं० १०६ । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा प्रतिष्ठादि एवं आचार सम्बन्धी विधान । २० काल × । ले० काल सं० १८५६ भाद्रवा बुदी ५ । पूर्ण । वै० सं० १६५ । क मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम पूजासार भी है । यह एक संग्रह ग्रन्थ है जिसका विषय वीरमेत, जिनमेत पूज्यपाद तथा गुरुभद्रादि ब्राह्मणों के ग्रन्थों से संग्रह किया गया है । ६६ पृष्ठों के प्रतिरिक्त १० पत्रों में ग्रन्थ से सम्बन्धित ४३ यन्त्र दे रखे हैं ।

४६०४. जिनसहस्रनामपूजा—धर्मभूषण । पत्र सं० १२६ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६०६ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । वै० सं० ४३८ । अ मण्डार ।

विशेष—लिखमणसास से पं० सुखलालजी के पठनार्थ हीरानालजी रैणवाल तथा पंचेवर बानो ने किला खण्डार में प्रतिलिपि करवाई थी ।

अन्तिम प्रशस्तित— या पुस्तक लिखाई किला खण्डारिके कोटडिराज्ये श्रीमानसिंहजी तत् कंवर फतेसिंहजी बुलाया रैणवाल लूँ बैदगी निमित्त श्रीसहस्रनाम को मंडलजी मंडायो उत्सव करायो । श्री श्चषभदेवजी का मन्दिर मे माल लियो दरोगा चन्नभुजजी बासी वगरूक ः शोत पाटणो रु० १५) साहजी गणेशलालजी साह ज्याकी सहाय मूँ हुयो ।

४६०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८७ । ले० काल × । वै० सं० १६४ । क मण्डार ।

४६०६. जिनसहस्रनामपूजा—स्वरूपचन्द्रविलासा । पत्र सं० ६५ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १६१६ आसोज सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ८७१३ । क मण्डार ।

४६०७. जिनसहस्रनामपूजा—चैनसुख लुहाडिया । पत्र सं० २६ । आ० १२×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६३६ माह सुदी ५ । पूर्ण । वै० सं० ७७२ । क मण्डार ।

४६०८. जिनसहस्रनामपूजा.....। पत्र सं० १८ । प्रा० १३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२४ । अ भण्डार ।

४६०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । वे० सं० ७२४ । अ भण्डार ।

४६१०. त्रिनाभिये त्रिनिर्णय ... । पत्र सं० १० । प्रा० १२×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—अभिषेक

विधान । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११ । क भण्डार ।

विशेष—विद्वज्जनबोधक के प्रथमकाण्ड में सातवें उल्लास की हिन्दी भाषा है ।

४६११. जैनप्रतिष्ठापाठ ... । पत्र सं० २ से ३५ । प्रा० ११२×४२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

विधि विधान । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११९ । अ भण्डार ।

४६१२. जैनाववाहपद्धति... । पत्र सं० ३४ । प्रा० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विवाह

विधि । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५ । क भण्डार ।

विशेष—आचार्य जिनसेन स्वामी के मतानुसार संग्रह किया गया है । प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

४६१३ प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । वे० सं० १७ । ज भण्डार ।

४६१४ ज्ञानपंचविशतिकाग्रनोद्यापन—भ० सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० १६ । प्रा० १०<sup>३</sup>×५ इंच ।

भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल सं० १८४७ चैत्र बुदी ९ । ले० काल सं० १८९३ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १२२ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में चन्द्रप्रभु चैत्यालय में रचना की गई थी । सोनजी पांड्या ने प्रतिलिपि की थी ।

४६१५. ज्येष्ठजिनवरपूजा ... । पत्र सं० ७ । प्रा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५०४ । अ भण्डार ।

विशेष—डमी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ७२३ ) भी है ।

४६१६. ज्येष्ठजिनवरपूजा.....। पत्र सं० १२ । प्रा० ११<sup>३</sup>×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१९ । क भण्डार ।

४६१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १९२१ । वे० सं० २९३ । अ भण्डार ।

४६१८. ज्येष्ठजिनवरव्रतपूजा.....। पत्र सं० १ । प्रा० ११<sup>३</sup>×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १८९० आषाढ सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २२१२ । अ भण्डार ।

विशेष—विद्वान् खुवाल ने जोधराज के बनवाये हुए पाटोदी के मन्दिर में प्रतिलिपि की । क्लरडो सुरेन्द्र-कीर्तिजी को रच्यो ।

४६१६. एमोकारपैतीसपूजा—अक्षयराम । पत्र सं० ३ । प्रा० १२×५ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा-संस्कृत ।  
विषय—एमोकार मन्त्र पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६६ । क भण्डार ।

विशेष—महाराजा जयसिंह के शासनकाल में ग्रन्थ रचना की गई थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ५७८ ) भी है ।

४६२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १७६५ प्र० घासोज बुदी १ । वे० सं० ३६४ । क  
भण्डार ।

४६२१. एमोकारपैतीसोत्रविधान—आ० श्री कनककीर्ति । पत्र सं० ५ । प्रा० १२×५ इंच ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा एवं विधान । २० काल × । ले० काल सं० १८२५ । पूर्ण । वे० सं० २३६ । क  
भण्डार ।

विशेष—डूंगरसी कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

४६२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४ । क भण्डार ।

४६२३. तत्त्वार्थसूत्रदशाध्यायपूजा—दयाचन्द्र । पत्र सं० १ । प्रा० ११×४ इंच । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति वे० सं० २६१ । भी है ।

४६२४. तत्त्वार्थसूत्रदशाध्यायपूजा..... । पत्र सं० २ । प्रा० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-  
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६२ । क भण्डार ।

विशेष—केवल १०वें अध्याय की पूजा है ।

४६२५. तीनचौबीसीपूजा..... । पत्र सं० ३८ । प्रा० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-भूत,  
भविष्यत् तथा वर्तमान काल के चौबीसों तीर्थङ्गरो की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७४ ।  
क भण्डार ।

४६२६. तीनचौबीसीसमुच्चयपूजा..... । पत्र सं० ५ । प्रा० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८०६ । ट भण्डार ।

४६२७. तीनचौबीसीपूजा—नेमीचन्द्र पाटवी । पत्र सं० ६७ । प्रा० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा-  
हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल सं० १८६४ कार्तिक बुदी १४ । ले० काल सं० १६२८ भाद्रपद बुदी ७ । पूर्ण । वे०  
सं० २७५ । क भण्डार ।

४६२८. तीनचौबीसीपूजा..... । पत्र सं० ५७ । प्रा० ११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।  
१० काल सं० १८८२ । ले० काल सं० १८८२ । पूर्ण । वे० सं० २७३ । क भण्डार ।



४६४०. तेरहद्वीपपूजा—भ० विश्वभूषण । पत्र सं० १०२ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—जैन मान्यतानुसार १३ द्वीपों की पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८७ भादवा सुदी २ । वै० सं० १२७ ।  
क मण्डार ।

विशेष—विजैरामजी पाठ्या ने जनदेव ब्रह्मण से लिखवाई थी ।

४६४१. तेरहद्वीपपूजा..... । पत्र सं० २४ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—जैन  
मान्यतानुसार १३ द्वीपों की पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८११ । पूर्ण । वै० सं० ४३ । ज मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक अपूर्णा प्रति ( वै० सं० ५० ) भी है ।

४६४२. तेरहद्वीपपूजा..... । पत्र सं० २०८ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल सं० १६२४ । पूर्ण । वै० सं० ५३५ । अ मण्डार ।

४६४३. तेरहद्वीपपूजा—लालजीत । पत्र सं० २३२ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
पूजा । २० काल सं० १८७७ कालिक सुदी १२ । ले० काल सं० १६६२ भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वै० सं० २७७ । क  
मण्डार ।

विशेष—गोविन्दराम ने प्रतिलिपि की थी ।

४६४४. तेरहद्वीपपूजा..... । पत्र सं० १७६ । आ० ११×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल × । वै० सं० ५८१ । च मण्डार ।

४६४५. तेरहद्वीपपूजा..... । पत्र सं० २६४ । आ० ११×७ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल सं० १६६६ कालिक सुदी ४ । पूर्ण । वै० सं० ३४३ । ज मण्डार ।

४६४६. तेरहद्वीपपूजाविधान..... । पत्र सं० ८६ । आ० ११×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० १०६१ । अ मण्डार ।

४६४७. त्रिकालचौबीसीपूजा—त्रिभुवनचन्द्र । पत्र सं० १३ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—तीनों काल में होने वाले तीर्थङ्गुओं की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५७५ । अ  
मण्डार ।

विशेष—शिवलाल ने नेवटा में प्रतिलिपि की थी ।

४६४८. त्रिकालचौबीसीपूजा..... । पत्र सं० ६ । आ० १०×६ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
पूजा । २० का। × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २७८ । क मण्डार ।

४६४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १७०४ पौष सुदी ६ । वै० सं० २७६ । क  
मण्डार ।

विशेष—बसवा में आचार्य पूर्णचन्द्र ने अपने चार शिष्यों के साथ में प्रतिलिपि की थी ।

४६५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६६१ भाद्रवा सुदी ३ । वै० सं० २२२ । छ  
भण्डार ।

विशेष—श्रीमती चतुरमती अत्रिका की पुस्तक है ।

४६५१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १७४७ फाल्गुन बुदी १३ । वै० सं० ४११ । छ  
भण्डार ।

विशेष—विद्याविनोद ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० १७५ ) और है ।

४६५२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वै० सं० २१६२ । ट भण्डार ।

४६५३. त्रिकालपूजा..... । पत्र सं० १६ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५३० । अ भण्डार ।

विशेष—भूत, भविष्यन्, वर्तमान के त्रैसठ शलाका पुरुषों की पूजा है ।

४६५४. त्रिलोकक्षेत्रपूजा..... । पत्र सं० ५१ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।  
२० काल सं० १८४२ । ले० काल सं० १८८६ चैत्र सुदी १४ । पूर्ण । वै० सं० ५८२ । च भण्डार ।

४६५५. त्रिलोकस्थजिनालयपूजा..... । पत्र सं० ६ । आ० ११×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १२८ । ज भण्डार ।

४६५६. त्रिलोकसारपूजा—अभयनन्दि । पत्र सं० ३६ । आ० १३३×७ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वै० सं० ५४४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६वें पत्र में नवीन पत्र जोड़े गये हैं ।

४६५७. त्रिलोकसारपूजा..... । पत्र सं० २६० । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल सं० १६३० भाद्रवा सुदी २ । पूर्ण । वै० सं० ४८६ । अ भण्डार ।

४६५८. त्रेपनक्रियापूजा..... । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल सं० १८२३ । पूर्ण । वै० सं० ५१६ । अ भण्डार ।

४६५९. त्रेपनक्रियाव्रतपूजा..... । पत्र सं० ५ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
पूजा । २० काल सं० १६०४ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २८७ । क भण्डार ।

विशेष—शाचार्य पूर्णचन्द्र ने सांगानेर में प्रतिलिपि की थी ।

४६६०. त्रैलोक्यसारपूजा—सुमतिसागर । पत्र सं० १७२ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८२६ भाद्रवा बुदी ४ । पूर्ण । वै० सं० १३२ । छ भण्डार ।

४६६१. त्रैलोक्यसारमहापूजा..... पत्र सं० १४५। मा० १०×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १६१६। पूर्ण। वे० सं० ७६। ख अण्डार।

४६६२. दशलक्षजयमाल—पं० रङ्गू। मा० १०×५ इंच। भाषा—मगधभाषा। विषय—धर्म के दश भेदों की पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६८। ख अण्डार।

विशेष—संस्कृत में पर्यायान्तर दिया हुआ है।

४६६३. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १७६५। वे० सं० ३०१। ख अण्डार।

विशेष—संस्कृत में सामान्य टीका दी हुई है। इसी अण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०२) भी है।

४६६४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० सं० २६७। क अण्डार।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं। इसी अण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६६) भी है।

४६६५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १८०१। वे० सं० ८३। ख अण्डार।

विशेष—जोशी लुशालीराम ने टोक में प्रांतलिपि की थी।

इसी अण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ८२, ८३/१) भी हैं।

४६६६. प्रति सं० ५। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० सं० २६४। क अण्डार।

विशेष—संस्कृत में संकेत दिये हुये हैं। इसी अण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २६२) भी है।

४६६७. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० १२६। च अण्डार।

विशेष—इसी अण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५०) भी है।

४६६८. प्रति सं० ७। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १७८२ काष्ठुण सुदी १२। वे० सं० १२६। ख अण्डार।

४६६९. प्रति सं० ८। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १८६८। वे० सं० ७३। म अण्डार।

विशेष—इसी अण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० १६८, २०२) भी हैं।

४६७०. प्रति सं० ९। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १७४६। वे० सं० १७०। च अण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। इसी अण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० २६८, २८५) भी हैं।

४६७१. प्रति सं० १०। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वे० सं० १७८६। ट अण्डार।

विशेष—इसी अण्डार में ३ प्रतियाँ (वे० सं० १७८७, १७८८, १७६४) भी हैं।

४६७२. दशलक्षजयमाल—पं० भाव शर्मा। पत्र सं० ८। मा० १२×५ इंच। भाषा—प्राकृत।

विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १८११ भाववा सुदी ११। अपूर्ण। वे० सं० २६८। ख अण्डार।

विशेष—संस्कृत में टीका दी हुई है। इसी अण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४८१) भी है।

४६७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १७३४ पीव सुदी १२ । वे० सं० ३०२ । क  
अण्डार ।

विशेष—अमरावती जिले में समरपुर नामक नगर में आचार्य पूर्णबन्धु के शिष्य गिरधर के पुत्र लक्ष्मण ने  
स्वयं के पढ़ने के लिए प्रतिलिपि की थी ।

इसी अण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ३०१ ) भी है ।

४६७४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १९१२ । वे० सं० १८१ । क अण्डार ।

विशेष—जयपुर के जोबनेर के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी ।

४६७५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८६२ भाद्रवा सुदी ८ । वे० सं० १५१ । च  
अण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं ।

४६७६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० १२६ । क अण्डार ।

४६७७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २०५ । च अण्डार ।

विशेष—इसी अण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ४८१ ) भी है ।

४६७८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० १७८४ । ट अण्डार ।

विशेष—इसी अण्डार में ४ प्रतियां ( वे० सं० १७८६, १७९०, १७९२, १७९४ ) भी हैं ।

४६७९. दशलक्षणजयमाला..... । पत्र सं० ८ । घा० १०×५ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा ।  
१० काल × । ले० काल सं० १७८४ फागुण सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २९३ । क अण्डार ।

४६८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० २०६ । म अण्डार ।

४६८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ७२६ । अ अण्डार ।

४६८२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६० । क अण्डार ।

विशेष—इसी अण्डार में २ प्रतियां ( वे० सं० २६७, २६८ ) भी हैं ।

४६८३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १८६६ भाद्रवा सुदी ३ । वे० सं० १५३ । च  
अण्डार ।

विशेष—महात्मा चौधमल नेवटा वाले ने प्रतिलिपि की थी । संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

इसी अण्डार में २ प्रतियां ( वे० सं० १५२, १५४ ) भी हैं ।

४६८४. दशलक्षणजयमाला..... । पत्र सं० ५ । घा० ११<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा—प्राकृत, संस्कृत ।

विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११५ । अ अण्डार ।



४६८५. दशलक्षणजयमाला..... पत्र सं० ६ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल सं० १७३६ श्रावण बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ८४ । अ भण्डार ।

विशेष—नागौर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४६८६. दशलक्षणजयमाला..... पत्र सं० ७ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४५ । अ भण्डार ।

४६८७. दशलक्षणपूजा—अभ्रदेव । पत्र सं० ६ । आ० १३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०८२ । अ भण्डार ।

४६८८. दशलक्षणपूजा—अभयनन्दि । पत्र सं० १५ । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६ । अ भण्डार ।

४६८९. दशलक्षणपूजा..... पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० १२०४ ) और है ।

४६९०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १७४७ काष्ठग बुदी ८ । वे० सं० ३०३ । अ भण्डार ।

विशेष—सागानेर मे विद्याविनोद ने पं० गिरधर के वाचनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० २६८ ) और है ।

४६९१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १७८५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० १७८१ ) और है ।

४६९२. दशलक्षणपूजा..... पत्र सं० ३७ । आ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८६३ । पूर्ण । वे० सं० १५५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४६९३. दशलक्षणपूजा—द्यानतराय । पत्र सं० १० । आ० ८२×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२५ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र सं० ७ तक रत्नत्रयपूजा दी हुई है ।

४६९४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६३७ चैत्र बुदी २ । वे० सं० ३०० । अ भण्डार ।

४६९५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ३०० । अ भण्डार ।

४६६६. दशलक्षणपूजा.....। पत्र सं० ३५। आ० १२३×७३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा।  
२० काल ×। ले० काल सं० १६५४। पूर्ण। वै० सं० ५८८। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ५८६ ) शीर है।

४६६७. प्रति सं० २। पत्र सं० २५। ले० काल सं० १६३७। वै० सं० ३१७। च भण्डार।

४६६८. दशलक्षणपूजा.....। पत्र सं० ३। आ० ११×५ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। २०  
काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० १६२०। ट भण्डार।

विशेष—स्थापना छानतराय कृत पूजा की है अष्टक तथा जयमाला किसी अन्य कवि की है।

४६६९. दशलक्षणमंडलपूजा.....। पत्र सं० ६३। आ० ११२×५३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—  
पूजा। २० काल सं० १८८० चैत्र सुदी १३। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ३०३। क भण्डार।

४७००. प्रति सं० २। पत्र सं० ५२। ले० काल ×। वै० सं० ३०१। क भण्डार।

४७०१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३४। ले० काल सं० १६३७ भाद्रवा सुदी १०। वै० सं० ३००। क  
भण्डार।

४७०२. दशलक्षणप्रतपूजा—सुमतिसागर। पत्र सं० २२। आ० १०३×५ इंच। भाषा—संस्कृत।  
विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १८६६ भाद्रवा सुदी ३। पूर्ण। वै० सं० ७६६। अ भण्डार।

४७०३. प्रति सं० २। पत्र सं० १४। ले० काल सं० १८२६। वै० सं० ४६८। अ भण्डार।

४७०४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १३। ले० काल सं० १८७६ आसोज सुदी ५। वै० सं० १४६। च  
भण्डार।

विशेष—मदामुख बाकलीवाम ने प्रतिलिपि की थी।

४७०५. दशलक्षणप्रतोद्यापन—जिनचन्द्र सूरि। पत्र सं० १६ - २५। आ० १०३×५ इंच।  
भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० २६१। क भण्डार।

४७०६. दशलक्षणप्रतोद्यापन—मङ्गिभूषण। पत्र सं० १४। आ० १२३×६ इंच। भाषा—संस्कृत।  
विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १२६। छ भण्डार।

४७०७. प्रति सं० २। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वै० सं० ७५। क भण्डार।

४७०८. दशलक्षणप्रतोद्यापन.....। पत्र सं० ४३। आ० १०×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—  
पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। वै० सं० ७०। क भण्डार।

विशेष—मण्डलविधि भी दी हुई है।

४७०६. इशानकृष्णविधानपूजा.....। पत्र सं० ३०। भा० १२३×८ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० २०७। छ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार मे २ प्रतिमां इसी वेष्टन में श्रीर हैं।

४७१०. देवपूजा—इन्द्रनन्दि योगीन्द्र। पत्र सं० ५। भा० १०<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १६०। च मण्डार।

४७११. देवपूजा.....। पत्र सं० ११। भा० ६<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १८५३। अ मण्डार।

४७१२. प्रति सं० २। पत्र सं० ४ से १२। ले० काल ×। अर्धपूर्ण। वै० सं० ४६। घ मण्डार।

४७१३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वै० सं० ३०५। छ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार मे एक प्रति ( वै० सं० ३०६ ) श्रीर है।

४७१४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वै० सं० १६१। च मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार मे २ प्रतिमां ( वै० सं० १६२, १६३ ) श्रीर है।

४७१५. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १८८३ गोष बुदी ८। वै० सं० १३३। ज मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतिमां ( वै० सं० १६६, १७८ ) श्रीर है।

४७१६. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १३५० घाषाड बुदी १२। वै० सं० २१४२। ट मण्डार।

विशेष—छोतरमल ब्राह्मण मे प्रतिलिपि की थी।

४७१७. देवपूजाटीका.....। पत्र सं० ८। भा० १२×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १८८६। पूर्ण। वै० सं० ११६। छ मण्डार।

४७१८. देवपूजाभाषा—जयचन्द्र छःबड़ा। पत्र सं० १७। भा० १२×५ इंच। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १८४३ कार्तिक सुदी ८। पूर्ण। वै० सं० ५१६। अ मण्डार।

४७१९. देवसिद्धपूजा.....। पत्र सं० १५। भा० १२×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १५६। च मण्डार।

विशेष—इसी वेष्टन में एक प्रति श्रीर है।

४७२०. द्वादशमृतपूजा—पं० अश्वदेव। पत्र सं० ७। भा० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ५८४। अ मण्डार।

४७२१. द्वादशमृतोद्यापनपूजा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० १६ । भा० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल सं० १७३२ माघ सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५३३ । अ भण्डार ।

४७२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वै० सं० ३२० । क भण्डार ।

४७२३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वै० सं० ११७ । कू भण्डार ।

४७२४. द्वादशमृतोद्यापनपूजा—पद्मनन्दि । पत्र सं० ६ । भा० ७३×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५६३ । अ भण्डार ।

४७२५. द्वादशमृतोद्यापनपूजा—भ० जगतकीर्ति । पत्र सं० ६ । भा० १०२×६ इंच । भाषा—

संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १५६ । अ भण्डार ।

४७२६. द्वादशमृतोद्यापन..... । पत्र सं० ५ । भा० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल सं० १८०४ । पूर्ण । वै० सं० १३५ । ज भण्डार ।

विशेष—गोर्धनदास ने प्रतिलिपि की थी ।

४७२७. द्वादशमृतपूजा—डालूराम । पत्र सं० १६ । भा० ११×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । २० काल सं० १८७६ ज्येष्ठ सुदी ६ । ले० काल सं० १६३० भाषाढ सुदी ११ । पूर्ण । वै० सं० ३२४ । क भण्डार ।

विशेष—पद्मलाल चौधरी ने प्रतिलिपि की थी ।

४७२८. द्वादशमृतपूजा..... । पत्र सं० ८ । भा० ११३×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल सं० १८८६ माघ सुदी १५ । पूर्ण । वै० सं० ५६२ ।

विशेष—इसी वेष्टन मे २ प्रतियां और हैं ।

४७२९. द्वादशमृतपूजा..... । पत्र सं० ६ । भा० १२×७३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३२६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति ( वै० सं० ३२७ ) और है ।

४७३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वै० सं० ४४४ । अ भण्डार ।

४७३१. धर्मचक्रपूजा—यशोनन्दि । पत्र सं० १६ । भा० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५१८ । अ भण्डार ।

४७३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६४२ फागुण सुदी १० । वै० सं० ८६ । कू भण्डार ।

भण्डार ।

विशेष—पद्मानास जोबनेर बाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४७३३. धर्मचक्रपूजा—साधु रत्नमङ्गल । पत्र सं० ८ । आ० ११×५ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८८१ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वै० सं० ५२८ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० लुयालचन्द ने जोधराज पाटोदी के मन्दिर में प्रतिमिपि की थी ।

४७३४. धर्मचक्रपूजा..... । पत्र सं० १० । आ० १२×५ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५०६ । अ भण्डार ।

४७३५. ध्वजारोपण..... । पत्र सं० ११ । आ० ११×५ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजाविधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १२२ । छ भण्डार ।

४७३६. ध्वजारोपणमंत्र..... । पत्र सं० ४ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५२३ । अ भण्डार ।

४७३७. ध्वजारोपणविधि—पं० आशाधर । पत्र सं० २७ । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्दिर में ध्वजा लगाने का विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । च भण्डार ।

४७३८. ध्वजारोपणविधि..... । पत्र सं० १३ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विषय—मन्दिर में ध्वजा लगाने का विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिमा ( वै० सं० ४३८, ४८८ ) भी हैं ।

४७३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६१६ । वै० सं० ३१८ । ज भण्डार ।

४७४०. ध्वजारोहणविधि..... । पत्र सं० ८ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×७ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६२७ । पूर्ण । वै० सं० २७३ । छ भण्डार ।

४७४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ - ४ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १८२२ । ट भण्डार ।

४७४२. नन्दीश्वरजयमाल..... । पत्र सं० २ । आ० ६ $\frac{१}{२}$ ×८ इञ्च । भाषा—प्रपञ्चंग । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १७७६ । ट भण्डार ।

४७४३. नन्दीश्वरजयमाल..... । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १८७० । ट भण्डार ।

४७४४. नन्दीश्वरद्वीपपूजा—रत्ननन्द । पत्र सं० १० । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १६० । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४७४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८६१ आषाढ बुदी ३ । वे० सं० १९१ । च  
मण्डार ।

विशेष—पत्र चूहों ने खा रत्ने हैं ।

४७४६. नन्दीश्वरद्वीपपूजा..... । पत्र सं० ४ । भा० ८×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०० । अ मण्डार ।

विशेष—जयमाल प्राकृत मे है । इसी मण्डार मे एक अपूर्ण प्रति ( वे० सं० ७६७ ) भी है ।

४७४७. नन्दीश्वरद्वीपपूजा—मङ्गल । पत्र सं० ३१ । भा० १२×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८०७ पीव बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ५९९ । च मण्डार ।

४७४८. नन्दीश्वरपंक्तिपूजा..... । पत्र सं० ९ । भा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल सं० १७४९ भादवा बुदी ९ । पूर्ण । वे० सं० ५२६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० ५५७ ) भी है ।

४७४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ३९३ । क मण्डार ।

४७५०. नन्दीश्वरपंक्तिपूजा... । पत्र सं० ३ । भा० १० ३/४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८८३ । अ मण्डार ।

४७५१. नन्दीश्वरपूजा..... । पत्र सं० ९ । भा० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४०० । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे ३ प्रतिया ( वे० सं० ४०६, २१२, २७४ ले० काल सं० १८२४ ) भी है ।

४७५२. नन्दीश्वरपूजा... । पत्र सं० ४ । भा० ८ ३/४ इंच । भाषा प्राकृत । विषय—पूजा । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११५२ । अ मण्डार ।

४७५३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ३४८ । क मण्डार ।

४७५४. नन्दीश्वरपूजा..... । पत्र सं० ४ । भा० ९×७ इंच । भाषा—मगध श । विषय—पूजा । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११९ । अ मण्डार ।

विशेष—लक्ष्मीचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी । संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

४७५५. नन्दीश्वरपूजा... । पत्र सं० ३१ । भा० ९ ३/४ इंच । भाषा—संस्कृत, प्राकृत । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६ । अ मण्डार ।

४७५६. नन्दीश्वरपूजा... । पत्र सं० ३० । भा० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २०  
काल × । ले० काल सं० १९९१ । पूर्ण । वे० सं० ३४९ । क मण्डार ।

४७५७. नन्दीश्वरभक्तिभाषा—पद्मालाल । पत्र सं० २६ । भा० ११३×७ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । १० काल सं० १६२१ । ले० काल सं० १६४६ । पूर्ण । वै० सं० ३६४ । कृ. भण्डार ।

४७५८. नन्दीश्वरविधान—जिनेश्वरदास । पत्र सं० १११ । भा० १३×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय पूजा । १० काल सं० १६६० । ले० काल सं० १६६२ । पूर्ण । वै० सं० ३५० । कृ. भण्डार ।

विशेष—लिखाई एवं कागज में केवल १५) सं० अर्च हुये थे ।

४७५९. नन्दीश्वरत्रतोद्यापनपूजा—नन्दिषेण । पत्र सं० २० । भा० १२३×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १६२ । च. भण्डार ।

४७६०. नन्दीश्वरत्रतोद्यापनपूजा—छन्ननकीर्ति । पत्र सं० १३ । भा० ८३×४ इंच । भाषा—

संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १८५७ घाटबुदी ६ । प्रपूर्णा । वै० सं० २०१७ । ट. भण्डार ।

विशेष—दूसरा । पत्र नहीं है । तथकपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

४७६१. नन्दीश्वरत्रतोद्यापनपूजा..... । पत्र सं० ५ । भा० १११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ११७ । छ. भण्डार ।

४७६२. नन्दीश्वरत्रतोद्यापनपूजा..... । पत्र सं० ३० । भा० ८×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १८८६ भादवा सुदी ८ । पूर्ण । वै० सं० ३५१ । कृ. भण्डार ।

विशेष—स्योजीराम भावसा ने प्रतिलिपि की थी ।

४७६३. नन्दीश्वरपूजाविधान—टेकचन्द । पत्र सं० ४६ । भा० ८३×६ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १८८५ सावन सुदी १० । पूर्ण । वै० सं० १७८ । कृ. भण्डार ।

विशेष—कठेहलाल पापडोवाल ने जयपुर वाले रामलाल पहाड़िया ने प्रतिलिपि कराई थी ।

४७६४. नन्दसप्तमीत्रतोद्यापनपूजा..... । पत्र सं० १० । भा० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १६४७ । पूर्ण । वै० सं० ५६२ । अ. भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ३०३ ) शीर है ।

४७६५. नवग्रहपूजाविधान—भद्रबाहु । पत्र सं० ८ । भा० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २२ । ज. भण्डार ।

४७६६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वै० सं० २३ । ज. भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र पर नवग्रहका चित्र है तथा किस ग्रह की शांति के लिए किस तीर्थंकर की पूजा करनी

चाहिए, यह लिखा है ।

४७६७. नवग्रहपूजा.....। पत्र सं० ७। प्रा० ११३×६३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ७०६। अ भण्डार।

विशेष—इसो भण्डार मे ५ प्रतिमां ( वै० सं० ४७५, ४६०, ५७३, १२७१, २११२ ) धोर है।

४७६८. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १६२८ ज्येष्ठ बुदी ३। वै० सं० १२७। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिमां ( वै० सं० १२७ ) धोर है।

४७६९. प्रति सं० ३। पत्र सं० १२। ले० काल सं० १६८८ कार्तिक बुदी ७। वै० सं०। २०३ अ भण्डार।

विशेष—इसो भण्डार मे ३ प्रतिमां ( वै० सं० १८५, १६३, २८० ) धोर है।

४७७०. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वै० सं० २०१५। अ भण्डार।

४७७१. नवग्रहपूजा.....। पत्र सं० २६। प्रा० ६×६३ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० १११६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति ( वै० सं० ७१३ ) धोर है।

४७७२. प्रति सं० २। पत्र सं० १७। ले० काल ×। वै० सं० २२१। अ भण्डार।

४७७३. नित्यकृत्यवर्णन.....। पत्र सं० १०। प्रा० १०३×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—नित्य करने योग्य पूजा पाठ है। १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० ११६६। अ भण्डार।

विशेष—इरा घुट नही है।

४७७४. नित्यक्रिया .....। पत्र सं० ६८। प्रा० ८<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—नित्य करने योग्य पूजा पाठ। १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० ३६६। अ भण्डार।

विशेष—प्रति संक्षिप्त हिन्दी अर्थ सहित है। ५५ ६७, तथा ६८ से प्रागे के पत्र नही हैं।

४७७५. नित्यनियमपूजा.....। पत्र सं० २६। प्रा० ६×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ३७५। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिमां ( वै० सं० ३७०, ३७१ ) धोर हैं।

४७७६. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वै० सं० ३६७। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिमां ( वै० सं० ३६० से ३६३ ) धोर है।

४७७७. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १८६३। वै० सं० ५२६। अ भण्डार।



४७७८. नित्यनियमपूजा.....। पत्र सं० १५। मा० १०×७ इंच। भाषा—संस्कृत हिन्दी। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७१२। अ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतिमां ( वे० सं० ७०८, १११४ ) धोर है।

४७७९. प्रति सं० २। पत्र सं० २१। ले० काल सं० १६४० कार्तिक बुदी १२। वे० सं० ३६८। क मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ३६९ ) धोर है।

४७८०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १६५४। वे० सं० २२२। छ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में ४ प्रतिमां ( वे० सं० १२१/२, २२२/२ ) धोर हैं।

४७८१. नित्यनियमपूजा—पं० सदासुख कासलीवाल। पत्र सं० ४६। मा० ९३×६३ इंच। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—पूजा। २० काल सं० १६२१ माघ सुदी २। ले० काल सं० १६२३। पूर्ण। वे० सं० ४०१। अ मण्डार।

४७८२. प्रति सं० २। पत्र सं० १३। ले० काल सं० १६२८ सावन सुदी १०। वे० सं० ३७७। क मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ३७६ ) धोर है।

४७८३. प्रति सं० ३। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १६२१ माघ सुदी २। वे० सं० ३७१। क मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ३७० ) धोर है।

४७८४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३५। ले० काल सं० १६५५ ज्येष्ठ सुदी ७। वे० सं० २१४। छ मण्डार।

विशेष—पत्र फटे हुये एवं जोर्य है।

४७८५. प्रति सं० ५। पत्र सं० ४४। ले० काल ×। वे० सं० १३०। क मण्डार।

विशेष—इसका पुट्टा बहुत सुन्दर एवं प्रदर्शनी में रखने योग्य है।

४७८६. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४२। ले० काल सं० १६३३। वे० सं० १८६६। ट मण्डार।

४७८७. नित्यनियमपूजा। भाषा.....। पत्र सं० १६। मा० ८३×७ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १६६५ भाद्रवा सुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ७०७। अ मण्डार।

विशेष—ईश्वरलाल चांदवाड़े ने प्रतिलिपि की थी।

४७८८. प्रति सं० २। पत्र सं० २८। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४७। ग मण्डार।

विशेष—जयपुर में शुक्लार की सहेली (संगीत सहेली) सं० १६५६ में स्थापित हुई थी। उसकी स्थापना के समय का बनाया हुआ मजन है।

४७८६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १६६६ चादवा बुदी १३ । वे० सं० ५८ । ग  
भण्डार ।

४७८७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १६६७ । वे० सं० २६२ । ऋ भण्डार ।

४७८९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १६५६ । वे० सं० १२१ । ज भण्डार ।

विशेष— पं० मोतीलालजी सेठी ने यति यशोदानन्दजी के मन्दिर में चढाई ।

४७९२. नित्यनैमित्तिकपूजापाठसंग्रह..... । पत्र सं० ५८ । भा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत,  
हिन्दी । विषय—पूजा पाठ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१ । छ भण्डार ।

४७९३. नित्यपूजासंग्रह..... । पत्र सं० ८ । भा० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत, प्रपञ्च । विषय—  
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७७ । ट भण्डार ।

४७९४. नित्यपूजासंग्रह..... । पत्र सं० ५ । भा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५ । च भण्डार ।

४७९५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १६१६ वैशाल बुदी ११ । वे० सं० ११७ । ज  
भण्डार ।

४७९६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० १८६८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति ध्रुतसागरी टीका सहित है । इसी भण्डार मे २ प्रतियां ( वे० सं० १६६५, २०६३ )  
भीर हैं ।

४७९७. नित्यपूजासंग्रह..... । पत्र सं० २-३० । भा० ७ इंच × २ इंच इंच । भाषा—संस्कृत, प्राकृत ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६५६ चैत्र सुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० १८२ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां ( वे० सं० १८३, १८४ ) भीर हैं ।

४७९८. नित्यपूजासंग्रह..... । पत्र सं० ३६ । भा० १० इंच × ७ इंच । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । विषय—  
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६५७ । अपूर्ण । वे० सं० ७११ । छ भण्डार ।

विशेष—पत्र सं० २७, २८ तथा ३५ नहीं है कुछ पत्र भोग गये हैं । इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे०  
सं० १३२२ ) भीर हैं ।

४७९९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ६०२ । च भण्डार ।

४८००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० १७४ । ज भण्डार ।

४८०१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २-३२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२६ । ट भण्डार ।

विशेष—नित्य व नैमित्तिक पाठों का भी संग्रह है ।

४८०२. नित्यपूजा..... पत्र सं० १५ । आ० १२×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७८ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिमां ( वे० सं० ३७२, ३७३, ३७४, ३७६ ) भीर हैं ।

४८०३ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिमां ( वे० सं० ३६४, ३६५ ) भीर हैं ।

४८०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० ६०३ । ख भण्डार ।

४८०५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ से १८ । ले० काल × । अनूर्ण । वे० सं० १६५८ । ट भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमज्जिमवचने प्रकाशक..... संग्रहीतविद्वज्जबोधके तृतीयकाण्डे पूजनवर्णनी नाम अष्टोत्सास समाप्त ।

४८०६. निर्वाणकल्याणकपूजा..... पत्र सं० २ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२८ । व्य भण्डार ।

४८०७ निर्वाणकांडपूजा..... पत्र सं० ५ । आ० ८ १/२ × ७ इंच । भाषा—संस्कृत, प्राकृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६६८ सावण मुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ११११ । अ भण्डार ।

विशेष—इसकी प्रतिलिपि कोकलचन्द्र पसारी ने ईश्वरलाल चादवाड़ में कराई थी ।

४८०८. निर्वाणक्षेत्रमंडलपूजा—स्वरूपचन्द्र । पत्र सं० १६ । आ० १३×७ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल सं० १६१६ कानिक बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६ । ग भण्डार ।

४८०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १६२७ । वे० सं० ३७६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिमां ( वे० सं० ३७७, ३७८ ) भीर हैं ।

४८१०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १६३५ गेय मुदी ३ । वे० सं० ६०४ । ख भण्डार ।

विशेष—जवाहरलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की थी । इन्द्रराज बोहरा ने पुस्तक लिखाकर मेघराज लुहा-डिया के मन्दिर में बढायी । इसी भण्डार में २ प्रतिमां ( वे० सं० ६०५, ६०७ ) भीर हैं ।

४८११. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६४३ । वे० सं० २११ । क भण्डार ।

विशेष—गुन्दरलाल पांडे चौधरी चाकमू वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४८१२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० २५५ । ज भण्डार ।

४८१३. निर्वाणसूत्रपूजा..... पत्र सं० ११ । प्रा० ११×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।  
१० काल सं० १८७१ । ले० काल सं० १६६६ । पूर्ण । वै० सं० १३०५ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे ५ प्रतिमां ( वै० सं० ७१०, ८२३, ८२४, १०६८, १०६९ ) प्रौर हैं ।

४८१४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८७१ भादवा बुदी ७ । वै० सं० २६६ । ज  
मण्डार । [ छटका साइज ]

४८१५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८८४ मंगसिर बुदी २ । वै० सं० १८७ । म  
मण्डार ।

४८१६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ६०६ । अ मण्डार ।

विशेष—दूसरा पत्र नहीं है ।

४८१७. निर्वाणपूजा..... पत्र सं० १ । प्रा० १२×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । १०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १७१८ । अ मण्डार ।

४८१८. निर्वाणपूजापाठ—मनरंगलाल । पत्र सं० ३३ । प्रा० १०<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×४<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा-हिन्दी ।  
विषय-पूजा । १० काल सं० १८४२ भादवा बुदी २ । ले० काल १० १८८८ चैत्र बुदी ३ । वै० सं० ८२ । म  
मण्डार ।

४८१९. नेमिनाथपूजा—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ५ । प्रा० ६×३<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-  
पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५६५ । अ मण्डार ।

४८२०. नेमिनाथपूजा..... पत्र सं० १ । प्रा० ७×५<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । १०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १३१४ । अ मण्डार ।

४८२१. नेमिनाथपूजाष्टक—शंभूराम । पत्र सं० १ । प्रा० ११<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-  
पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १८४२ । अ मण्डार ।

४८२२. नेमिनाथपूजाष्टक..... पत्र सं० १ । प्रा० ६<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १२२४ । अ मण्डार ।

४८२३. पञ्चकल्याणकपूजा—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० १६ । प्रा० ११<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५७६ । क मण्डार ।

४८२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८७६ । वै० सं० १०३७ । अ मण्डार ।

४८२५. पञ्चकल्याणकपूजा—शिवजीलाल । पत्र सं० १२६ । प्रा० ८×४ इंच । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५५६ । अ मण्डार ।

४८२६. पञ्चकन्यायकपूजा—अरुणमणि । पत्र सं० ३६ । भा० १२×८ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । २० काल सं० १६२३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५० । अ भण्डार ।

४८२७. पञ्चकन्यायकपूजा—गुणकीर्ति । पत्र सं० २२ । भा० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल १६११ । पूर्ण । वे० सं० ५४ । अ भण्डार ।

४८२८. पञ्चकन्यायकपूजा—बादीभसिंह । पत्र सं० १८ । भा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८६ । अ भण्डार ।

४८२९. पञ्चकन्यायकपूजा—सुयशकीर्ति । पत्र सं० ७-२६ । भा० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५८५ । अ भण्डार ।

४८३०. पञ्चकन्यायकपूजा—सुधासागर । पत्र सं० १६ । भा० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४०६ । अ भण्डार ।

४८३१. पञ्चकन्यायकपूजा..... । पत्र सं० १६ । भा० १०३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६०८ भादवा सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १००७ । अ भण्डार ।

४८३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० ३०१ । अ भण्डार ।

४८३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३८४ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० ३८५ ) भीर है ।

४८३४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १६३६ भासोज सुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० १२५  
अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां ( वे० सं० १३७, १८० ) भीर है ।

४८३५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० १६३ । अ भण्डार ।

४८३६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८२१ । वे० सं० २३६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० १५५ ) भीर है ।

४८३७. पञ्चकन्यायकपूजा—छोटेलाल मत्तल । पत्र सं० १६ । भा० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—पूजा । २० काल सं० १६१० भादवा सुदी १३ । ले० काल सं० १६५२ । पूर्ण । वे० सं० ७३० । अ भण्डार ।

विशेष—छोटेलाल बनारस के रहने वाले थे । इसी भण्डार में २ प्रतियां ( वे० सं० ६७१, ६७२ )  
भीर हैं ।

४८३८. पञ्चकन्यायकपूजा—रूपचन्द । पत्र सं० १०४ । भा० १२×५ । भाषा—हिन्दी । विषय—  
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८६२ । पूर्ण । वे० सं० ५३७ । अ भण्डार ।

४८३६. पञ्चकल्याणकपूजा—टेकचन्द । पत्र सं० २२ । प्रा० १०३×५३ इंच । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—पूजा । १० काल सं० १८८७ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६६२ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतिमां ( वै० सं० १०८०, ११२० ) और हैं ।

४८४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६५४ चैत्र सुदी १ । वै० सं० ५० । ग  
मण्डार ।

४८४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६५४ माह सुदी ११ । वै० सं० ६७ । घ  
मण्डार ।

विशेष—कशनलाल पापड़ीवाल ने प्रतिलिपि की थी । इसी मण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ६७ )  
और है ।

४८४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १६६१ ज्येष्ठ सुदी १ । वै० सं० ६१२ । अ  
मण्डार ।

४८४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वै० सं० २१५ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी वेष्टन में एक प्रति और है ।

४८४४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वै० सं० २६८ । ज मण्डार ।

४८४५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वै० सं० १२० । क मण्डार ।

४८४६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १६२८ । वै० सं० ५३६ । ख मण्डार ।

४८४७. पञ्चकल्याणकपूजा—पन्नालाल । पत्र सं० ७ । प्रा० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
पूजा । १० काल सं० १६२२ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३८८ । ङ मण्डार ।

विशेष—नीले कागजों पर है ।

४८४८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । वै० सं० २१५ । च मण्डार ।

विशेष—संघोजी के मन्दिर की पुस्तक है ।

४८४९. पञ्चकल्याणकपूजा—भैरवदास । पत्र सं० ३१ । प्रा० ११३×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—पूजा । १० काल सं० १६१० भाद्रवा सुदी १३ । ले० काल सं० १६१६ । पूर्ण । वै० सं० ६१५ । च मण्डार ।

४८५०. पञ्चकल्याणकपूजा..... । पत्र सं० २५ । प्रा० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६६६ । छ मण्डार ।

४८५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १६३६ । वै० सं० १०० । छ मण्डार ।

४८५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वै० सं० ३८६ । ङ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक अपूर्ण प्रति ( वै० सं० ३८७ ) और हैं ।

४८५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ६११ । च अण्डार ।

विशेष—इसी अण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ६१४ ) धोर है ।

४८५४. पञ्चकुमारपूजा..... । पत्र सं० ७ । भा० ८३×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२ । अण्डार ।

४८५५. पञ्चोत्तरपालपूजा—गङ्गादास । पत्र सं० १४ । भा० १०×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६४ । अण्डार ।

४८५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६२१ । वे० सं० २६२ । अण्डार ।

४८५७. पञ्चगुरुकल्पयणपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० २५ । भा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १६३५ मंगसिर बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ४२० । अण्डार ।

विशेष—भाचार्य नेलिचन्द्र के शिष्य पांडे ब्रूंगर के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

४८५८. पञ्चपरमेष्ठीउद्यापन..... । पत्र सं० ६१ । भा० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल सं० १८६२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१० । अण्डार ।

४८५९. पञ्चपरमेष्ठीसमुच्चयपूजा..... । पत्र सं० ४ । भा० ८३×६३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६५३ । अण्डार ।

४८६०. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० २४ । भा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७७ । अण्डार ।

४८६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० १६६ । अण्डार ।

४८६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० १४० । अण्डार ।

४८६३. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—यशोनन्दि । पत्र सं० ३२ । भा० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १७६१ कालिक बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ५३८ । अण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की प्रतिलिपि शाहजहानाबाद में जयसिंहपुरा में पं० मनोहरदास के पठनार्थ हुई थी ।

४८६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १८५६ । वे० सं० ४११ । अण्डार ।

विशेष—बूरे ग्राम में जानकीदास ने प्रतिलिपि की थी ।

४८६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १८७३ मंगसिर बुदी १ । वे० सं० ६६ । अण्डार ।

४८६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८३१ । वे० सं० १६७ । अण्डार ।

विशेष—इसी अण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १६५ ) धोर है ।

४८६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० १६३ । क मण्डार ।

४८६८. पञ्चपरमेष्ठीपूजा..... । पत्र सं० १५ । भा० १२×५ । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१३ । क मण्डार ।

४८६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८६२ । भाषा—बुद्धि । वे० सं० ३६२ । क मण्डार ।

४८७०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १७६७ । क मण्डार ।

४८७१. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—टेकचन्द । पत्र सं० १५ । भा० १२×५ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२० । क मण्डार ।

४८७२. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—डालूराम । पत्र सं० ३५ । भा० १० १/२×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १० काल सं० १८६२ मंगसिर बुद्धि ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७० । क मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १०८६ ) भी है ।

४८७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १८६२ ज्येष्ठ बुद्धि ६ । वे० सं० ५१ । ग मण्डार ।

४८७४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १६८७ । वे० सं० ३८६ । क मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ३६० ) भी है ।

४८७५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४५ । ले० काल × । वे० सं० ६१६ । क मण्डार ।

४८७६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १६२६ । वे० सं० ५१ । क मण्डार ।

विशेष—धनलाल सोनी ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी ।

४८७७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १६१३ । वे० सं० १८७६ । क मण्डार ।

विशेष—ईसरदा में प्रतिलिपि हुई थी ।

४८७८. पञ्चपरमेष्ठीपूजा..... । पत्र सं० ३६ । भा० १३×५ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६१ । क मण्डार ।

४८७९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० ६१७ । क मण्डार ।

४८८०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० ३२१ । क मण्डार ।

४८८१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ३१६ । क मण्डार ।

४८८२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६८१ । वे० सं० १७१० । क मण्डार ।

विशेष—दानतराय कुल रत्नमय पूजा भी है ।



४८८३. पञ्चबालयतिपूजा..... पत्र सं० ६ । मा० ६×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२२ । छ मण्डार ।

४८८४. पञ्चमङ्गलपूजा..... पत्र सं० २५ । मा० ८×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४ । झ मण्डार ।

४८८५. पञ्चमासचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा—भ० सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ४ । मा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल सं० १८२८ भादवा सुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४ । झ मण्डार ।

४८८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ३६७ । ङ मण्डार ।

४८८७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८८३ श्रावण सुदी ७ । वे० सं० १६८ । च मण्डार ।

विशेष—महात्मा शम्भुनाथ ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी । इसी मण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० १६६ ) भी है ।

४८८८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । छ मण्डार ।

४८८९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८६२ श्रावण बुदी ५ । वे० सं० १७० । ज मण्डार ।

विशेष—जयपुर नगर मे श्री विमलनाथ चैत्यालय मे गुरु हीरानन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

४८९०. पञ्चमीव्रतपूजा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ५ । मा० १२×५<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१० । झ मण्डार ।

४८९१. पञ्चमीव्रतोद्यापन—श्री हर्षकीर्ति । पत्र सं० ७ । मा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८८८ आसोज सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३६८ । ङ मण्डार ।

विशेष—शम्भुराम ने प्रतिलिपि की थी ।

४८९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६१५ आसोज बुदी ५ । वे० सं० २०० । च मण्डार ।

४८९३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । मा० १०<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६१२ कार्तिक बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ११७ । छ मण्डार ।

४८९४. पञ्चमीव्रतोद्यापनपूजा..... पत्र सं० १० । मा० ८<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५३ । झ मण्डार ।

विशेष—गाजी नारायण शर्मा ने प्रतिलिपि की थी ।

४८१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १६०५ आसोज बुदी १२ । वे० सं० ६४ । क मण्डार ।

४८१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ३८८ । मण्डार ।

४८१७. पञ्चमेरुपूजा—टेकचन्द । पत्र सं० ३३ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७३२ । अ मण्डार ।

४८१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८८३ । वे० सं० ६१६ । अ मण्डार ।

४८१९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६७६ । वे० सं० २१३ । क मण्डार ।

विशेष—अजमेर वालों के चौबारे जयपुर में लिखा गया । कीमत ४ ।।।)

४६००. पञ्चमेरुपूजा—द्यानतराय । पत्र सं० ६ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १६६१ कालिक सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ५४७ । अ मण्डार ।

४६०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ३६५ । क मण्डार ।

४६०२. पञ्चमेरुपूजा—भूधरदास । पत्र सं० ८ । आ० ८३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६५६ । अ मण्डार ।

विशेष—अन्त में संस्कृत पूजा भी है जो अपूर्णा है । इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ५६८ ) और है ।

४६०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० १४६ । क मण्डार ।

विशेष—बीस विरहमान जयमाल तथा स्नपन विधि भी दी हुई है ।

४६०४. पञ्चमेरुपूजा—डालूराम । पत्र सं० ४४ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल सं० १६३० । पूर्ण । वे० सं० ४१५ । क मण्डार ।

४६०५. पञ्चमेरुपूजा—सुखानन्द । पत्र सं० २२ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । क मण्डार ।

४६०६. पञ्चमेरुपूजा..... । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६६ । अ मण्डार ।

४६०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ४८७ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक अपूर्णा प्रति ( वे० सं० ४७६ ) और है ।

४६०८. पञ्चमेरुठ्यापनपूजा—भ० रत्नचन्द । पत्र सं० ६ । आ० १०½×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १८६३ प्र० सावन सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २०१ । अ मण्डार ।

४६०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ७४ । अ मण्डार ।

४६१०. पद्मावतीपूजा..... पत्र सं० ५ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वै० सं० ११८५ । अ मण्डार ।

विशेष—पद्मावती स्तोत्र भी है ।

४६११. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वै० सं० १२७ । च मण्डार ।

विशेष—पद्मावतीस्तोत्र, पद्मावतीकवच, पद्मावतीनटल, एवं पद्मावतीसहस्रनाम भी है । अन्त में २ यन्त्र भी दिये हुये हैं । अष्टगंध लिखने की विधि भी दी हुई है । इसी मण्डार में एक प्रति ( वै० सं० २०५ ) भी है ।

४६१२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १ । ले० काल × । अ० पूर्ण । वै० सं० १८० । ब्य मण्डार ।

४६१३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वै० सं० १४४ । छ मण्डार ।

४६१४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वै० सं० २०० । ज मण्डार ।

४६१५. पद्मावतीमंडलपूजा..... पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ११७६ । अ मण्डार ।

विशेष—शांतिमंडल पूजा भी है ।

४६१६. पद्मावतिशान्तिक..... पत्र सं० १७ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २६३ । ख मण्डार ।

विशेष—प्रति मण्डल सहित है ।

४६१७. पद्मावतीसहस्रनाम व पूजा..... पत्र सं० १४ । आ० १०×७ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४३० । छ मण्डार ।

४६१८. पल्यविधानपूजा—ललितकीर्ति । पत्र सं० ७ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २११ । ब्य मण्डार ।

विशेष—खुशालचन्द ने प्रतिनिधि की थी ।

४६१९. पल्यविधानपूजा—रत्ननन्दि । पत्र सं० १४ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १०६५ । अ मण्डार ।

विशेष—नरसिंहदास ने प्रतिनिधि की थी ।

४६२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वै० सं० २१५ । च मण्डार ।

४६२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७६० । गैशाल बुदी ६ । वै० सं० ३६२ । ब्य

मण्डार ।

विशेष—बासी नगर ( बुंदी प्रान्त ) में आचार्य श्री ज्ञानकीर्ति के उपदेश से प्रतिनिधि हुई थी ।

४६२२. पल्लविधानपूजा—अनन्तकीर्ति । पत्र सं० ६ । मा० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । १० काल × १ ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४५३ । छ मण्डार ।

४६२३. पल्लविधानपूजा..... । मा० १०×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × ।  
ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६७५ । अ मण्डार ।

४६२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ५ । ले० काल सं० १८२१ । अपूर्णा । वै० सं० १०५४ । अ  
मण्डार ।

विशेष—पं० नैनसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

४६२५. पल्लवप्रतोद्यापन—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ६ । मा० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५५५ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतिमा ( वै० सं० ५८२, ६०७ ) और है ।

४६२६. पल्लवमौपवासाविधि..... । पत्र सं० ४ । मा० १०×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
पूजा एवं उजवास विधि । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४८४ । अ मण्डार ।

४६२७. पार्श्वजिनपूजा—साह लोहट । पत्र सं० २ । मा० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५६० । अ मण्डार ।

४६२८. पार्श्वनाथपूजा..... । पत्र सं० ४ । मा० ७×५ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ११३२ । अ मण्डार ।

४६२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ४६१ । छ मण्डार ।

४६३०. पुर्याहवाचन ..... । पत्र सं० ५ । मा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—शान्ति  
विधान । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४७६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ३ प्रतिमा ( वै० सं० ५५६, १३६१, १८०३ ) और है ।

४६३१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वै० सं० १२२ । छ मण्डार ।

४६३२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६०६ ज्येष्ठ बुदी ६ । वै० सं० २७ । अ  
मण्डार ।

विशेष—पं० देवीलालजी ने स्वयंठनार्थ किशन ने प्रतिलिपि कराई थी ।

४६३३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १६६४ चैत्र सुदी १० । वै० सं० २००६ । ट  
मण्डार ।

४६३४. पुरंदरप्रतोद्यापन.....। पत्र सं० १। भा० ११×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।  
१० काल ×। ले० काल सं० ११११ भाषाख सुदी ६। पूर्ण। वै० सं० ७२। छ मण्डार।

४६३५. पुष्पाञ्जलिप्रतपूजा—भ० रतनचन्द। पत्र सं० ५। भा० १०३×७३ इंच। भाषा—संस्कृत।  
विषय—पूजा। १० काल सं० १६८१। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० २२३। च मण्डार।

विशेष—यह रचना सागवाठपुर में श्रावको की प्रेरणा से भट्टारक रतनचन्द ने सं० १६८१ में लिखी थी।

४६३६. प्रति सं० २। पत्र सं० १५। ले० काल सं० १६२४ आसोज सुदी १०। वै० सं० ११७। छ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति इसी वेष्टन में झोर है।

४६३७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वै० सं० ३८७। छ मण्डार।

४६३८. पुष्पाञ्जलिप्रतपूजा—भ० शुभचन्द्र। पत्र सं० ६। भा० १०×५ इंच। भाषा—संस्कृत।  
विषय—पूजा। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ५५३। छ मण्डार।

४६३९. पुष्पाञ्जलिप्रतपूजा.....। पत्र सं० ८। भा० १०×५ इंच। भाषा—संस्कृत प्राकृत। १० काल ×। ले० काल सं० १८६३ द्वि० आशुष सुदी ५। पूर्ण। वै० सं० २२२। च मण्डार।

४६४०. पुष्पाञ्जलिप्रतोद्यापन—पं० गंगादास। पत्र सं० ८। भा० ८×५ इंच। भाषा—संस्कृत।  
विषय—पूजा। १० काल ×। ले० काल सं० १८६६। पूर्ण। वै० सं० ४८०। छ मण्डार।

विशेष—गंगादास भट्टारक धर्मचन्द के शिष्य थे। इसी मण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ३३६ ) झोर है।

४६४१. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १८८२ आसोज सुदी १४। वै० सं० ७८। छ मण्डार।

४६४२. पूजाक्रिया.....। पत्र सं० २। भा० ११३×५ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा करने की विधि का विधान। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १२३। छ मण्डार।

४६४३. पूजापाठसंग्रह.....। पत्र सं० २ से ४०। भा० ११×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० २०५५। ट मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में एक अपूर्ण प्रति ( वै० सं० २०७८ ) झोर है।

४६४४. पूजापाठसंग्रह.....। पत्र सं० ३८। भा० ७×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १३१६। छ मण्डार।

विशेष—पूजा पाठ के ग्रन्थ प्रायः एक से हैं। अधिकांश ग्रन्थों में वे ही पूजायें मिलती हैं, फिर भी जिनका विशेष रूप में उल्लेख करना आवश्यक है उन्हें यहाँ दिया जा रहा है।

४६४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १६३७ । वे० सं० ५६० । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाधो का संग्रह है ।

- |                           |         |                  |
|---------------------------|---------|------------------|
| १. पुष्पदन्त जिनपूजा      | —       | संस्कृत          |
| २. चतुर्विधतिसमुद्भवपूजा  | ”       | ”                |
| ३. चन्द्रप्रभपूजा         | ”       | ”                |
| ४. धान्तिनाथपूजा          | ”       | ”                |
| ५. मुनिसुव्रतनाथपूजा      | ”       | ”                |
| ६. दर्शनस्तोत्र—पद्मनन्दि | प्राकृत | ले० काल सं० १६३७ |
| ७. ऋषभदेवस्तोत्र          | ”       | ”                |

४६४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १८६६ डि० चैत्र बुदी ५ । वे० सं० ४५३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिर्था ( वे० सं० ७२६, ७३३, १३७०, २०६७ ) भीर है ।

४६४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२० । ले० काल सं० १८२७ चैत्र सुदी ४ । वे० सं० ४८१ । क भण्डार ।

विशेष—पूजाधो एवं स्तोत्रो का संग्रह है ।

४६४८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १८५ । ले० काल × । वे० सं० ४८० । क भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजायें हैं ।

|                          |            |         |
|--------------------------|------------|---------|
| पल्पविधानप्रतोद्यापनपूजा | रत्ननन्दि  | संस्कृत |
| बृहद्दशोदशकारणपूजा       | —          | ”       |
| जैष्ठ्यजिनवरउद्यापनपूजा  | —          | ”       |
| त्रिकालचीबीसीपूजा        | —          | प्राकृत |
| चन्दनपष्ठिप्रतपूजा       | विजयकीर्ति | संस्कृत |
| पञ्चपरमेष्ठीपूजा         | यशोनन्दि   | ”       |
| जम्बूद्वीपपूजा           | पं० जिनदास | ”       |
| अक्षयनिधिपूजा            | —          | ”       |
| कर्मचूरप्रतोद्यापनपूजा   | —          | ”       |

४६४६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १ से ११६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४६७ । क मण्डार ।

विशेष—मुख्य पूजार्थे निम्न प्रकार हैं—

| जिनसहस्रनाम            | —             | संस्कृत |
|------------------------|---------------|---------|
| षोडशकारणपूजा           | श्रुतसागर     | ”       |
| जिनगुणसंपत्तिपूजा      | म० रत्नचन्द्र | ”       |
| रावकारपञ्चविंशतिकापूजा | —             | ”       |
| सारस्वतसंनपूजा         | —             | ”       |
| धर्मचक्रपूजा           | —             | ”       |
| सिद्धचक्रपूजा          | प्रभाचन्द्र   | ”       |

इसी मण्डार में २ प्रतियां ( वे० सं० ४७६, ४७९ ) शीर हैं ।

४६५०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २७ से ५७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२६ । च मण्डार ।

विशेष—सामान्य पूजा एवं पाठों का संग्रह है ।

४६५१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०४ । ले० काल × । वे० सं० १०४ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १३६ ) शीर है ।

४६५२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १२३ । ले० काल सं० १८८४ आसोज सुदी ४ । वे० सं० ४३९ । व्य

मण्डार ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ संग्रह है ।

४६५३. पूजापाठसंग्रह..... । पत्र सं० २२ । आ० १२×८ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा पाठ । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२८ । अ मण्डार ।

विशेष—भक्तामर, तत्त्वार्थसूत्र आदि पाठों का संग्रह है । सामान्य पूजा पाठोंकी इसी मण्डार में ३ प्रतियां ( वे० सं० ८८२, ९९४, १००० ) शीर हैं ।

४६५४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८९ । ले० काल सं० १६५३ आषाढ सुदी १४ । वे० सं० ४९८ । क मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ६ प्रतियां ( वे० सं० ४७४, ४७५, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४९१, ४९२ ) शीर हैं ।

४६५५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५ से ६१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६५४ । ट मण्डार ।

४६४६. पूजापाठसंग्रह..... पत्र सं० ४० । भा० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७३५ । कृ. भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है ।

|                              |         |                 |
|------------------------------|---------|-----------------|
| भादिनाथपूजा                  | मनहरषेव | हिन्दी          |
| सम्मोदखिलरपूजा               | —       | ”               |
| वित्तमानवीसतीर्थकुटी की पूजा | —       | १० काल सं० १६४५ |
| ग्रनुभव विलास                | —       | ले० ” १६४६      |
| [ पदसंग्रह ]                 | —       | हिन्दी          |

४६४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० ७५६ । कृ. भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ५ प्रतिमां ( वे० सं० ४७७, ४७८, ४६६, ७६१/२ ) प्रौर हैं ।

४६४८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० २४१ । कृ. भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजा पाठ है—

|                     |   |         |
|---------------------|---|---------|
| श्रीबीसदण्डक        | — | दीनतराम |
| बिनती गुरुघो की     | — | भूषणदास |
| बीस तीर्थङ्कर जयमाल | — | —       |
| सोलहकारणपूजा        | — | बानतराय |

४६४९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १८६० फागुण सुखी २ । वे० सं० २२० । कृ. भण्डार ।

४६६०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ से २२२ । ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० सं० २७० । कृ. भण्डार ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ संग्रह है ।

४६६१. पूजापाठसंग्रह—स्वरूपचन्द । पत्र सं० । भा० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४६ । कृ. भण्डार ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है—

|                                       |            |        |
|---------------------------------------|------------|--------|
| जयपुर नगर सम्बन्धी चैद्यालयो की वंदना | स्वरूपचन्द | हिन्दी |
| ऋद्धि सिद्धि क्षतक                    | ”          | ”      |
| महावीरस्तोत्र                         | ”          | ”      |
| जिनपञ्जरस्तोत्र                       | ”          | ”      |
| विलोकसार चौपई                         | ”          | ”      |
| चमत्कारजिनेश्वरपूजा                   | ”          | ”      |
| सुगंधोदसमीपूजा                        | ”          | ”      |



४६६२. पूजाप्रकरण—उमास्वामी । पत्र सं० २ । भा० १०×४<sup>३</sup> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२ । छ मण्डार ।

विशेष—पूजक आदि के लक्षण दिये हुये हैं । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमदुमास्वामीविरचितं प्रकरणं ॥

४६६३. पूजामहात्म्यविधि..... । पत्र सं० ३ । भा० ११<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४ । च मण्डार ।

४६६४. पूजावणविधि..... । पत्र सं० ६ । भा० ८<sup>३</sup>×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजाविधि । २० काल × । ले० काल सं० १८२३ । पूर्ण । वे० सं० १४८७ । अ मण्डार ।

४६६५. पूजापाठ ..... । पत्र सं० १४ । भा० १०<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८३६ बैशाल मुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १०६ । ख मण्डार ।

विशेष—मार्गकचन्द ने प्रतिलिपि की थी । अन्तिम पत्र बाद का लिखा हुआ है ।

४६६६. पूजाविधि ..... । पत्र सं० १ । भा० १०×४<sup>३</sup> इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७८६ । अ मण्डार ।

४६६७. पूजाविधि..... । पत्र सं० ४ । भा० १०×४<sup>३</sup> इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११७ । छ मण्डार ।

४६६८. पूजाष्टक—आशानन्द । पत्र सं० १ । भा० १०<sup>३</sup>×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२११ । अ मण्डार ।

४६६९. पूजाष्टक—लोहट । पत्र सं० १ । भा० १०<sup>३</sup>×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२०६ । अ मण्डार ।

४६७०. पूजाष्टक—अभयचन्द्र । पत्र सं० १ । भा० १०<sup>३</sup>×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१० । अ मण्डार ।

४६७१. पूजाष्टक..... । पत्र सं० १ । भा० १०<sup>३</sup>×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१३ । अ मण्डार ।

४६७२. पूजाष्टक..... । पत्र सं० ११ । भा० ८<sup>३</sup>×५<sup>३</sup> इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८७८ । ट मण्डार ।

४६७३. पूजाष्टक—विश्वभूषण । पत्र सं० १ । प्रा० १०३×५ इ'च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१२ । अ भण्डार ।

४६७४. पूजासंग्रह..... । पत्र सं० ३३१ । प्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १०  
काल × । ले० काल सं० १८६३ । पूर्ण । वे० सं० ४६० मे ४७४ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

| नाम                                       | कर्त्ता            | भाषा    | पत्र सं० | वे० सं० |
|---|--------------------|---------|----------|---------|
| १. कांजीव्रतोद्यापनमंडलपूजा               | ×                  | संस्कृत | १०       | ४७४     |
| २. श्रुतज्ञानव्रतोद्योतनपूजा              | ×                  | हिन्दी  | २०       | ४७३     |
| ३. रोहिणीव्रतपूजा                         | मंडलाचार्य केशवमेन | संस्कृत | १२       | ४७२     |
| ४. दशलक्षायव्रतोद्यापनपूजा                | ×                  | "       | २७       | ४७१     |
| ५. नन्दिबिधानपूजा                         | ×                  | "       | १२       | ४७०     |
| ६. ध्वजारोपणपूजा                          | ×                  | "       | ११       | ४६९     |
| ७. रोहिणीव्रतोद्यापन                      | ×                  | "       | १३       | ४६८     |
| ८. अनन्व्रतोद्यापनपूजा                    | प्रा० गुराचन्द्र   | "       | ३०       | ४६७     |
| ९. रत्नत्रयव्रतोद्यापन                    | ×                  | "       | १६       | ४६६     |
| १०. श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन                 | ×                  | "       | १२       | ४६५     |
| ११. दानुक्कयगिरिपूजा                      | अ० विश्वभूषण       | "       | २०       | ४६४     |
| १२. गिरिनारक्षेत्रपूजा                    | ×                  | "       | २२       | ४६३     |
| १३. त्रिलोकसारपूजा                        | ×                  | "       | ८        | ४६२     |
| १४. पार्वतीनाथपूजा (नवग्रहपूजाविधान सहित) |                    | "       | १८       | ४६१     |
| १५. त्रिलोकसारपूजा                        | ×                  | "       | १०       | ४६०     |

इसी भण्डार मे २ प्रतिमां ( वे० सं० ११२६, २२१६ ) धौर है जिनमे सामान्य पूजायें है ।

४६७५ प्रति सं० २ । पत्र सं० १४३ । ले० काल सं० १९५८ । वे० सं० ४७५ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह हैं—

| नाम                    | कर्त्ता | भाषा    |
|------------------------|---------|---------|
| त्रिपञ्चाशतव्रतोद्यापन | —       | संस्कृत |

| नाम                          | कर्ता      | भाषा    |
|------------------------------|------------|---------|
| पञ्चपरमेष्ठीपूजा             | —          | संस्कृत |
| पञ्चकल्याणकपूजा              | —          | "       |
| बौसठ दिवकुमारका काजी की पूजा | ललितकीर्ति | "       |
| गणधरवल्लयपूजा                | —          | "       |
| सुमंथदसमीकथा                 | धुनसागर    | "       |
| चन्दनषष्ठिकथा                | "          | "       |
| पोडसकारणविधानकथा             | मदनकीर्ति  | "       |
| नन्दीश्वरविधानकथा            | हृदयेण     | "       |
| मेघमालावतकथा                 | धुनसागर    | "       |

४६७६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८०। ले० काल सं० १६५६। वे० सं० ४८३। क भण्डार।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है—

| नाम                                 | कर्ता       | भाषा    |
|-------------------------------------|-------------|---------|
| सुखमपतिव्रतोद्यापनपूजा              | ×           | संस्कृत |
| नन्दीश्वरपंक्तिपूजा                 | ✓           | "       |
| सिद्धचक्रपूजा                       | प्रभाचन्द्र | "       |
| प्रतिमासातचतुर्वेदी व्रतोद्यापनपूजा | ✓           | "       |

विशेष—ताराचन्द्र [ जयसिंह के मन्त्रों ] ने प्रतिनिधि की थी।

लघुकल्याण

✓

संस्कृत

सकलीकरणविधान

×

"

इसी भण्डार में २ प्रतिया ( वे० सं० ४७७, ४७८ ) और है जिनमें सामान्य पूजाये हैं।

४६७७. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल ८। वे० सं० १११। ख भण्डार।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है— सिद्धचक्रपूजा, कलिकुण्डमन्त्रपूजा, श्रानन्द स्तवम एवं गणधरवल्लय जयमाल। प्रति प्राचीन तथा मन्त्र विधि सहित है।

४६७८. प्रति सं० ५। पत्र सं० १२। ले० काल ४। वे० सं० ४६४। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिया ( वे० सं० ४६०, ४६४ ) और है।

४६७६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल X । वे० सं० २२३ । अ भण्डार ।

विशेष—मानुषोत्तर पूजा एवं इषवाकार पूजा का संग्रह है ।

४६८०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १५ मे ७३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १२३ । छ भण्डार ।

४६८१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३८ से ३१५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २५३ । झ भण्डार ।

४६८२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १८०० प्रागाड सुदी १ । वे० सं० ६६ । अ

भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाधो का संग्रह है—

| नाम                 | कर्त्ता   | भाषा    | पत्र  |
|---------------------|-----------|---------|-------|
| धर्मचक्रपूजा        | यशोनिधि   | संस्कृत | १-१६  |
| नन्दीश्वरपूजा       | —         | "       | १६-२४ |
| सकलकारगविधि         | —         | "       | २४-२५ |
| सधुस्वयभूपाठ        | समन्तभद्र | "       | २५-२६ |
| समन्तजनपूजा         | भीभूषण    | "       | २६-३३ |
| भक्त्यामस्तात्रपूजा | केशवमेन   | "       | ३३-३६ |

भाषाय विश्वकोक्ति की सहायता से रचना की गई थी ।

एकमोक्षणपूजा केदावमेन " ३६-४५

इसी भण्डार में २ प्रतियाँ ( वे० सं० ४६६, ४७० ) धीरे हैं जिनमें नैमित्तिक पूजायें हैं ।

४६८३ प्रति सं० १० । पत्र सं० ८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १८३८ । ट भण्डार ।

४६८४. पूजासंग्रह..... । पत्र सं० ३४ । प्रा० १०<sup>३</sup> X ५ इञ्च । संस्कृत, प्राकृत । विषय—पूजा । १० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २२१५ । अ भण्डार ।

विशेष—देवपूजा, भक्त्यामस्तात्रपूजा, सिद्धपूजा, पुत्रावलीपूजा, भीसतीर्षङ्करपूजा, क्षेत्रपालपूजा, घोडघ कारगपूजा, धोरत्रनिधिपूजा, सम्बन्धीपूजा ( ज्ञानभूषण ) एवं शान्तिपाठ धादि है ।

४६८५. पूजासंग्रह..... । पत्र सं० २ से ४५ । प्रा० ७<sup>१</sup> X ५<sup>३</sup> इंच । भाषा—प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी ।

विषय—पूजा । १० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २२७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० २२८ ) धीरे है ।

४६८६. पूजासंग्रह..... । पत्र सं० ४६७ । प्रा० १२ X ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी ।

विषय—संग्रह । १० काल X । ले० काल सं० १८२६ । पूर्ण । वे० सं० ५४० । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

| नाम                                | कर्त्ता            | भाषा           | २० काल              | ज्ञे० काल                | पत्र    |
|------------------------------------|--------------------|----------------|---------------------|--------------------------|---------|
| १. भक्तामरपूजा                     | —                  | संस्कृत        |                     |                          |         |
| २. सिद्धकूटपूजा                    | विश्वप्रपल्ल       | "              |                     | सं० १८८६ ज्येष्ठ सुदी ११ |         |
| ३. बीसतीर्थशुद्धपूजा               | —                  | "              |                     | ×                        | अपूर्णा |
| ४. नित्यनियमपूजा                   | —                  | संस्कृत हिन्दी |                     |                          |         |
| ५. अनन्तपूजा                       | —                  | संस्कृत        |                     |                          |         |
| ६. षण्चतिसोत्रपालपूजा              | विश्वमेन           | "              | ×                   | सं० १८८६                 | पूर्णा  |
| ७. ज्येष्ठजिनवरपूजा                | सुरेन्द्रकीर्ति    | "              |                     |                          |         |
| ८. नन्दीश्वरजयमाल                  | कनककीर्ति          | अपभ्रंश        |                     |                          |         |
| ९. पुष्पाञ्जलिघ्नतपूजा             | गङ्गादास           | संस्कृत        | [ मंडल चित्र सहित ] |                          |         |
| १०. रत्नत्रयपूजा                   | —                  | "              |                     |                          |         |
| ११. प्रतिमासान्त चतुर्वशीपूजा      | अक्षयराम           | "              | २० काल १८००         | ज्ञे० काल १८२७           |         |
| १२. रत्नत्रयजयमाल                  | श्रेष्ठभदास बुधदास | "              |                     | " "                      | १८२६    |
| १३. बारहस्रोतों का श्योरा          | —                  | हिन्दी         |                     |                          |         |
| १४. पंचमेरूपूजा                    | देवेन्द्रकीर्ति    | संस्कृत        |                     | ज्ञे० काल १८२०           |         |
| १५. पञ्चकल्याणकपूजा                | सुधासागर           | "              |                     |                          |         |
| १६. पुष्पाञ्जलिघ्नतपूजा            | गङ्गादास           | "              |                     | ज्ञे० काल १८६२           |         |
| १७. पंचाधिकार                      | —                  | "              |                     |                          |         |
| १८. पुरन्दरपूजा                    | —                  | "              |                     |                          |         |
| १९. अष्टाङ्गिकाघ्नतपूजा            | —                  | "              |                     |                          |         |
| २०. परमसप्तस्थानकपूजा              | सुधासागर           | "              |                     |                          |         |
| २१. पल्यविधानपूजा                  | रत्ननन्दि          | "              |                     |                          |         |
| २२. रोहिणीघ्नतपूजा मंडल चित्र सहित | केशवसेन            | "              |                     |                          |         |
| २३. जिनद्वयसंपत्तिपूजा             | —                  | "              |                     |                          |         |
| २४. सौम्यवाक्यघ्नतोद्यापन          | अक्षयराम           | "              |                     |                          |         |

|                          |            |                |                  |
|--------------------------|------------|----------------|------------------|
| २५. कर्मचूरव्रतोद्यापन   | लक्ष्मीसेन | संस्कृत        |                  |
| २६. सोलहकारण व्रतोद्यापन | केशवसेन    | "              |                  |
| २७. द्विपंचकन्याणकपूजा   | —          | "              | से० काल सं० १८३१ |
| २८. गन्धकुटीपूजा         | —          | "              |                  |
| २९. कर्मदहनपूजा          | —          | "              | से० काल सं० १८२८ |
| ३०. कर्मदहनपूजा          | —          | "              |                  |
| ३१. दशलक्षणपूजा          | —          | "              |                  |
| ३२. षोडशकारणजयमाल        | रङ्गू      | अपभ्रंश        | अपूर्य           |
| ३३. दशलक्षणजयमाल         | भावशर्मा   | प्राकृत        |                  |
| ३४. त्रिकालचीवीसीपूजा    | —          | संस्कृत        | से० काल १८५०     |
| ३५. लब्धिविधानपूजा       | अभ्रदेव    | "              |                  |
| ३६. अंकुरारोपणविधि       | भावाधर     | "              |                  |
| ३७. रामोकारपैतिसी        | कनककीर्ति  | "              |                  |
| ३८. मौनव्रतोद्यापन       | —          | "              |                  |
| ३९. शांतिचक्रपूजा        | —          | "              |                  |
| ४०. सप्तपरमस्थानकपूजा    | —          | "              |                  |
| ४१. सुखसंपत्तिपूजा       | —          | "              |                  |
| ४२. क्षेत्रपालपूजा       | —          | "              |                  |
| ४३. षोडशकारणपूजा         | सुमतिसागर  | "              | से० काल १८३०     |
| ४४. चन्दनपद्मोन्नतकथा    | श्रुतसागर  | "              |                  |
| ४५. रामोकारपैतिसीपूजा    | धरूपराम    | "              | से० काल १८२७     |
| ४६. पञ्चमीउद्यापन        | —          | संस्कृत हिन्दी |                  |
| ४७. त्रिपञ्चाशतक्रिया    | —          | "              |                  |
| ४८. कञ्जिकाव्रतोद्यापन   | —          | "              |                  |
| ४९. मेघमालाव्रतोद्यापन   | —          | "              |                  |
| ५०. पञ्चमीव्रतपूजा       | —          | "              | से० काल १८२७     |

|                   |       |                |              |
|-------------------|-------|----------------|--------------|
| ११. नवग्रहपूजा    | —     | संस्कृत हिन्दी |              |
| १२. रत्नत्रयपूजा  | —     | "              | वे० काल १=१७ |
| १३. दशसंभारराजमाल | रहस्य | अपभ्रंश        |              |

टम्बा टीका सहित है।

४६८७. पूजासंग्रह\*\*\*\*। पत्र सं० १११। मा० ११२×५३ इंच। भाषा—संस्कृत हिन्दी। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११०। छ मण्डार।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

|                  |                 |         |                 |
|------------------|-----------------|---------|-----------------|
| अमन्तव्रतपूजा    | ×               | हिन्दी  | २० काल सं० १८६८ |
| सन्मैदशिक्षरपूजा | ×               | "       |                 |
| निर्वाणलोकपूजा   | ×               | "       | २० काल सं० १८१७ |
| पञ्चपरमेष्ठीपूजा | ×               | "       | २० काल सं० १८६७ |
| गिरनाम्नैपूजा    | ×               | "       |                 |
| वास्तुपूजाविधि   | ×               | संस्कृत |                 |
| मादीमंगलपूजा     | ×               | "       |                 |
| शुद्धिविधान      | देवेन्द्रकीर्ति | "       |                 |

४६८८. प्रति सं० २। पत्र सं० ४०। ले० काल ×। वे० सं० १४५। छ मण्डार।

४६८९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८५। ले० काल ×। वे० सं० ३६। छ मण्डार।

विशेष—निम्न संग्रह है—

|                      |           |         |          |
|----------------------|-----------|---------|----------|
| पञ्चकल्पाराकमंगल     | रूपचन्द्र | हिन्दी  | पत्र १-३ |
| पञ्चकल्पाराकपूजा     | ×         | संस्कृत | " ४-१२   |
| पञ्चपरमेष्ठीपूजा     | टेकचन्द्र | हिन्दी  | " १३-२६  |
| पञ्चपरमेष्ठीपूजाविधि | मद्योनन्द | संस्कृत | " २७-४६  |
| कर्मबहनपूजा          | टेकचन्द्र | हिन्दी  | " १-११   |
| मन्दीश्वरव्रतविधान   | "         | "       | " १२-२६  |

४६९०. प्रति सं० ४। ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० १८६०। छ मण्डार।

४६६१. पूजा एवं कथा संग्रह—सुरासूत्रचन्द्र । पत्र सं० ५० । मा० ८×४<sup>३</sup> इंच । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १८७३ पीथ बुदी १२ । पूर्ण । वै० सं० ५६१ । अ मण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं तथा कथाओं का संग्रह है ।

कन्दनचण्डीपूजा, वसलक्षणपूजा, षोडशकारणपूजा, रत्नत्रयपूजा, अमन्तचतुर्दशीव्रतकथा व पूजा । तप  
लक्षणकथा, मेरुपत्ति तप की कथा, सुगन्धदशमीव्रतकथा ।

४६६२. पूजासंग्रह—हीराचन्द्र । पत्र सं० ५१ । मा० ६<sup>३</sup>×५<sup>३</sup> इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५८२ । क मण्डार ।

४६६३. पूजासंग्रह..... । पत्र सं० ६ । मा० ८<sup>३</sup>×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७२७ । अ मण्डार ।

विशेष—पंचमेरु पूजा एवं रत्नत्रय पूजा का संग्रह है ।

इसी मण्डार में ४ प्रतियाँ ( वै० सं० ७३४, ६७१, १३१६, १३७७ ) धीर हैं जिनमें सामान्य पूजायें हैं ।

४६६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वै० सं० ६० । ग मण्डार ।

४६६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४३ । ले० काल × । वै० सं० ४७६ । क मण्डार ।

४६६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २५ । ले० काल ४<sup>०</sup> १६५५ मंगसिर बुदी २ । वै० सं० ७३ । अ  
मण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

देषपूजा, सिद्धपूजा एवं शान्तिपाठ, पंचमेरु, नन्दीश्वर, सोलहकारण एवं दशलक्षण पूजा खानतराय कृत ।  
अमन्तव्रतपूजा, रत्नत्रयपूजा, सिद्धपूजा एवं शास्त्रपूजा ।

४६६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७५ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ४८६ । क मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ५ प्रतियाँ ( वै० सं० ४८७, ४८८, ४८९, ४८५, ४९३ ) धीर हैं जो सभी  
अपूर्ण हैं ।

४६६८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८५ । ले० काल × । वै० सं० ६३७ । अ मण्डार ।

४६६९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वै० सं० २२२ । क मण्डार ।

५०००. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३४ । ले० काल × । वै० सं० १२२ । अ मण्डार ।

विशेष—पंचकल्याणकपूजा, पंचपरमेष्ठीपूजा एवं नित्य पूजायें हैं ।

५००१. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १६३५ । ट मण्डार ।



५००२. पूजासंग्रह—रामचन्द्र । पत्र सं० २० । भा० ११३×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६५ । क भण्डार ।  
विशेष—आदिनाथ से चन्द्रप्रभ तक की पूजायें हैं ।
५००३. पूजासार ... । पत्र सं० ८६ । भा० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा एवं  
विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५४ । अ भण्डार ।  
५००४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४७ । ले० काल × । वे० सं० २२६ । अ भण्डार ।  
विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० २३० ) भी है ।
५००५. प्रतिमासान्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा—अक्षयराम । पत्र सं० १४ । भा० १०×५३ इंच ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६०० भाद्रवा सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ५८७ । अ  
भण्डार ।  
विशेष—दीवान ताराचन्द्र ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।
५००६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८०० भाद्रवा सुदी १० । वे० सं० ४८४ । क  
भण्डार ।
५००७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८०० चैत्र सुदी ५ । वे० सं० २८५ । अ  
भण्डार ।
५००८. प्रतिमासान्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० १२ । भा० १२<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×५ इंच ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८०० चैत्र सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ३८६ । अ  
भण्डार ।  
विशेष—श्री जयसिंह महाराज के दीवान ताराचन्द्र श्रावक ने रचना कराई थी ।
५००९. प्रतिमासान्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा ... । पत्र सं० १३ । भा० १०×७ इंच । भाषा-  
संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८०० । पूर्ण । वे० सं० ५०० । क भण्डार ।
५०१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८७६ आसोज सुदी ६ । वे० सं० २३३ । अ  
भण्डार ।  
विशेष—सदामुख बाकलीवाल मोहा का ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । दीवान अमरचन्द्र जी संग्रही ने  
प्रतिलिपि करवाई थी ।
५०११. प्रतिष्ठादर्श—श्री राजकीर्ति । पत्र सं० २१ । भा० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-प्रतिष्ठा ( विधान ) । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५०१ क भण्डार ।

५०१२. प्रतिष्ठादीपक—पंक्तिवाचार्थ जरेगुसेन । पत्र सं० १४ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल सं० १८६१ चैत्र बुदी १५ । पूर्ण । वै० सं० ५०२ । क मण्डार ।

विषय—भट्टारक राजकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

५०१३. प्रतिष्ठापाठ—आ० बसुनन्दि ( अपर नाम जयसेन ) । पत्र सं० १३६ । आ० ११३×८३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६४६ कानिक सुदी ११ । पूर्ण । वै० सं० ४८५ । क मण्डार ।

विषय—इसका दूसरा नाम प्रतिष्ठासार भी है ।

५०१४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १६४६ । वै० सं० ४८७ । क मण्डार ।

विषय—३६ पत्रों पर प्रतिष्ठा सम्बन्धी चित्र दिये हुये हैं ।

५०१५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५५ । ले० काल सं० १६४६ । वै० सं० ४८६ । क मण्डार ।

विषय—बालावस्त्रा व्यास ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । ग्रन्थ में एक अतिरिक्त पत्र पर ब्रह्मस्थापनार्थ मूर्ति का रेखाचित्र दिया हुआ है । उसमें ब्रह्म लिखे हुये हैं ।

५०१६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०३ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २७१ । ज मण्डार ।

विषय—ग्रन्थिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमत्कुन्दकुन्दाचार्य षट्पदयभूषणरविबामणि श्रीवनुविन्दाचार्येण जयसेनापरनामकेन विरचितः । प्रतिष्ठा-मारः पूर्णमगमतः ।

५०१७. प्रतिष्ठापाठ—आशाधर । पत्र सं० ११६ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल सं० १२८५ आसोज सुदी १५ । ले० काल सं० १८८४ भाद्रवा सुदी ५ । पूर्ण । वै० सं० १२ । ज मण्डार ।

५०१८. प्रतिष्ठापाठ..... । पत्र सं० १ । आ० ३३ गज लंबा १० इंच चौड़ा । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल सं० १५१६ ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण । वै० सं० ४० । अ मण्डार ।

विषय—यह पाठ कपड़े पर लिखा हुआ है । कपड़े पर लिखी हुई ऐसी प्राचीन चीजें कम ही मिलती हैं । यह कपड़े की १० इंच चौड़ी पट्टी पर सिमटता हुआ है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

॥६०॥ सद्धिः ॥ भौं नमो बीहतरागव ॥ संवतु १५१६ वर्षे न्येष्ठ बुदी १३ तेरसि सोमवासरे अश्विनि नक्षत्रे श्रीहृत्कृष्णपत्रे श्रीसर्वज्ञचैत्यालये श्रीमूलसंवे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये बलात्कारपण्ये सरस्वतीपन्थे भट्टारक श्रीरत्नकीर्ति देवाः तत्पट्टे श्रीप्रभाषणदेवाः तत्पट्टे श्रीपद्मनन्दिदेवाः तत्पट्टे श्रीशुभचन्द्रदेवाः ॥ तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवाः ॥

५०१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १८६१ वैश्व सुदी ४ । अपूर्णा । वै० सं० १०४ ।

क अष्टार ।

विशेष—हिन्दी में प्रथम ६ पद्य में प्रतिष्ठा में काम धाने वाली सामग्री का विवरण दिया हुआ है ।

५०२०. प्रतिष्ठापाठभाषा—बाबा दुलीचंद । पत्र सं० २६ । प्रा० ११२×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वै० सं० ४८६ । क अष्टार ।

विशेष—भूलकर्ता आचार्य वसुविन्दु हैं । इनका दूसरा नाम जयसेन भी दिया हुआ है । दक्षिण में कुंकुण कामके देश सहदुघाचल के समीप रत्नगिरि पर लालाह नामक राजाका बनबाया हुआ विधान चैत्यासय है । उसकी प्रतिष्ठा होने के निमित्त ग्रन्थ रचा गया ऐसा लिखा है ।

इसी अष्टार में एक प्रति ( वै० सं० ४६० ) भी है ।

५०२१. प्रतिष्ठाविधि..... । पत्र सं० १७६ से १६६ । प्रा० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ५०३ । क अष्टार ।

५०२२. प्रतिष्ठासार—पं० शिवजीलाल । पत्र सं० ६६ । प्रा० १२×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

विधि विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६५१ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्णा । वै० सं० ४६१ । क अष्टार ।

५०२३. प्रतिष्ठासार..... । पत्र सं० ८५ । प्रा० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि

विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ भाद्रपद सुदी १० । वै० सं० २८६ । ज अष्टार ।

विशेष—पं० फतेहलाल ने प्रतिनिधि की थी । पत्रों के नीचे के भाग पानी से गले हुये हैं ।

५०२४. प्रतिष्ठासारसंग्रह—आ० वसुनन्दि । पत्र सं० २१ । प्रा० १३×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वै० सं० १२१ । अ अष्टार ।

५०२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १६६० । वै० सं० ४५६ । अ अष्टार ।

५०२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १६७७ । वै० सं० ४६२ । क अष्टार ।

५०२७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १७३६ वैशाख सुदी १३ । अपूर्णा । वै० सं० ६८ ।

अ अष्टार ।

विशेष—तीसरे परिच्छेद से है ।

५०२८. प्रतिष्ठासारोद्धार..... । पत्र सं० ७६ । प्रा० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वै० सं० २३४ । अ अष्टार ।

५०२९. प्रतिष्ठासूक्तिसंग्रह..... । पत्र सं० २१ । प्रा० १३×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६५१ । पूर्णा । वै० सं० ४६३ । क अष्टार ।

५०३०. प्राणप्रतिष्ठा..... । पत्र सं० ३ । प्रा० ६३×६६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३७ । अ मण्डार ।

५०३१. बाल्यकालवर्णन..... । पत्र सं० ४ से २३ । प्रा० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

विधि विधान । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २६७ । अ मण्डार ।

विशेष—बालक के गर्भमे धात्री के प्रथम मास से लेकर दसवें वर्ष तक के हर प्रकार के सांस्कृतिक विधान का वर्णन है ।

५०३२. बीसतीर्थक्षरपूजा—धानजी अजमेरा । पत्र सं० १८ । प्रा० १२३×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—विदेह क्षेत्र के विद्यमान बीस तीर्थक्षरों की पूजा । १० काल सं० १६३४ आसोज सुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण वै० सं० २०६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे इसी षष्टन में एक प्रति प्रीर है ।

५०३३. बीसतीर्थक्षरपूजा..... । पत्र सं० ५३ । प्रा० १३×७२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल सं० १६४५ पौष सुदी ७ । पूर्ण । वै० सं० ३२२ । अ मण्डार ।

५०३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ७१ । अ मण्डार ।

५०३५. भक्ताभरणपूजा—श्री ज्ञानभूषण । पत्र सं० १० । प्रा० ११×३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५३६ । अ मण्डार ।

५०३६. भक्ताभरणपूजास्थापन—श्री भूषण । पत्र सं० १३ । प्रा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २३२ । अ मण्डार ।

विशेष— १०, ११, १२वां पत्र नहीं है ।

५०३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १८५८ प्र० ज्येष्ठ सुदी ३ । वै० सं० १२२ । अ मण्डार ।

विशेष—नेमिनाथ अस्थालय में हरबंसालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

५०३८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८६३ आश्व सुदी ५ । वै० सं० १२० । अ मण्डार ।

५०३९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६११ आसोज सुदी १२ । वै० सं० ५० । अ मण्डार ।

विशेष—जयमाला हिन्दी में है ।

५०४०. भक्ताभरणप्रतोद्यापनपूजा—विश्वकीर्ति । पत्र सं० ७ । प्रा० १०३×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । १० काल सं० १६६६ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५३७ । अ मण्डार ।

विशेष— निधि निधि रस चंद्रोसंख्य संबत्सरेहि  
विशयनभसिमासे सप्तमी मंडवारे ।  
नलवरवरदुर्गे चन्द्रनाथस्य चैत्ये  
विरचितमिंत भक्त्या केशवामंतसेन ॥

५०४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ५३८ । छ मण्डार ।

५०४२. भक्तामरस्तोत्रपूजा..... । पत्र सं० ८ । प्रा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३७ । छ मण्डार ।

५०४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २५१ । च मण्डार ।

५०४४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ४४४ । क मण्डार ।

५०४५. भाद्रपदपूजासंग्रह—द्यानतराय । पत्र सं० २६ से ३६ । प्रा० १२३×७३ इंच । भाषा—

हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२२ । छ मण्डार ।

५०४६. भाद्रपदपूजासंग्रह..... । पत्र सं० २४ से ३६ । प्रा० १२३×७३ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२२ । छ मण्डार ।

५०४७. भक्तखिनपूजा..... । पत्र सं० १ । प्रा० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २००७ । ट मण्डार ।

५०४८. भावनापक्षीसीम्रतोद्यापन..... । पत्र सं० ३ । प्रा० १२३×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०२ । छ मण्डार ।

५०४९. मंडलों के चित्र..... । पत्र सं० १४ । प्रा० ११×५ इंच । भाषा हिन्दी । विषय—पूजा

सम्बन्धी मण्डलों का चित्र । ले० काल × । वे० सं० १३८ । छ मण्डार ।

विशेष—चित्र सं० ५२ है । निम्नलिखित मण्डलों के चित्र हैं—

|                       |              |                    |           |
|-----------------------|--------------|--------------------|-----------|
| १. ध्रुतस्कंध         | ( कोष्ठ २ )  | ७. ऋषिमंडल         | ( " ५६ )  |
| २. त्रेपनक्रिया       | ( कोष्ठ ५३ ) | ८. सप्तऋषिमंडल     | ( " ७ )   |
| ३. बृहदसिद्धचक्र      | ( " ६६ )     | ९. सोलहकारण        | ( " २५६ ) |
| ४. जिनगुणसंपत्ति      | ( " १०६ )    | १०. चौबीसीमहाराज   | ( " १२० ) |
| ५. सिद्धकूट           | ( " १०६ )    | ११. धातिचक्र       | ( " २४ )  |
| ६. चित्तामणियावर्षनाथ | ( " ५६ )     | १२. भक्तामरस्तोत्र | ( " ४८ )  |

|                                   |  |
|-----------------------------------|--|
| ११. बारहनास की बीसत ( कोष्ठ १६६ ) | ३२. शंकरारोपण ( कोष्ठ )                        |
| १४. पांचमाह की बीसत ( " २५ )      | ३३. गद्यधरबलय ( " ४८ )                         |
| १५. अश्लत का मंडल ( " १६६ )       | ३४. नवग्रह ( " ६ )                             |
| १६. मेषमालाप्रत ( " १५० )         | ३५. सुगन्धदशमी ( " ६० )                        |
| १७. रोहिण्योषत ( कोष्ठ ६१ )       | ३६. सारसुतयंत्रमंडल ( " २८ )                   |
| १८. लम्बिविधान ( " ८१ )           | ३७. वास्तुजी का मंडल ( " १२ )                  |
| १९. रत्नत्रय ( " २६ )             | ३८. अक्षयनिधिर्मंडल ( " १५० )                  |
| २०. पञ्चकन्याएक ( " १२० )         | ३९. अठारई का मंडल ( " ५२ )                     |
| २१. पञ्चपरमेष्ठी ( " १६३ )        | ४०. शंकरारोपण ( " — )                          |
| २२. रविबारघत ( " ८१ )             | ४१. कलिकुंडपादर्वनाथ ( " ८ )                   |
| २३. मुक्तावली ( " ८१ )            | ४२. विमानसुद्धिशांतिक ( " १०८ )                |
| २४. कर्मदहन ( " १४८ )             | ४३. बासठकुमार ( " ५२ )                         |
| २५. कांजीबारस ( " ६४ )            | ४४. धर्मचक्र ( " १५७ )                         |
| २६. कर्मपूर ( " ६४ )              | ४५. लघुशांतिक ( " — )                          |
| २७. ज्येष्ठविनवर ( " ४६ )         | ४६. विमानसुद्धिशांतिक ( " ८१ )                 |
| २८. बारहमाह की पञ्चमी ( " ६५ )    | ४७. छिनवै शैवपाल व<br>बीबीस तीर्थशुकर ( " २४ ) |
| २९. बारमाह की पञ्चमी ( " २५ )     | ४८. श्रुतज्ञान ( " १५८ )                       |
| ३०. फलफांदल [पञ्चमेह] ( " २५ )    | ४९. दशसकल ( " १०० )                            |
| ३१. पांचवासों का मंडल ( " २५ )    |  |

५०५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वै० सं० १३८ क । छ मण्डार ।

५०५१. मंडपविधि..... । पत्र सं० ४ । भा० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान ।  
१० काल × । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वै० सं० १२४० । छ मण्डार ।

५०५२. मंडपविधि..... । पत्र सं० १ । भा० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—विधि  
विधान । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १८८८ । छ मण्डार ।

५०५३. मण्डकोकपूजा..... । पत्र सं० ५६ । भा० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
१० काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण । वै० सं० १२५ । छ मण्डार ।

१०५५. महावीरनिर्वाणपूजा..... पत्र सं० ३। घा० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १८२१। पूर्ण। वै० सं० ११०। अ मण्डार।

विशेष—निर्वाणकाण्ड गाथा प्राकृत में श्रीर है।

१०५५. महावीरनिर्वाणकल्याणपूजा..... पत्र सं० १। घा० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १२००। अ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वै० सं० १२१६ ) श्रीर है।

१०५६. महावीरपूजा—वृन्दावन। पत्र सं० ६। घा० ८×५ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० २२२। छ मण्डार।

१०५७. मांगीतुङ्गीगिरिसंडलपूजा—विश्वभूषण। पत्र सं० १३। घा० १२×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल सं० १७५६। ले० काल सं० १६४० बेताल बुदी १४। पूर्ण। वै० सं० १४२। ख मण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के १८ पद्यों में विश्वभूषण कृत शतनाम स्तोत्र है।

अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्रीमूलसंधे दिनकृदिभाति श्रीकुन्दकुन्दास्मयुनीद्रबन्दः।

महदबलाकारगणादिगच्छे नम्यप्रतिष्ठा किलपंचनाम ॥१॥

जातोऽग्री किलधर्मकीर्तिरमल वादीभ सादूँनवत

साहित्यागमतर्कपाठनपटुचारित्र भारोद्दह ।

तत्पट्टे मुनिशीलभूषणगणिया शीलांबरवेष्टितः

तत्पट्टे मुनि ज्ञानभूषणमहान सौख्यलला केवनी

धीमज्जमद्भूषणवैदभूषणनैयायिकाचारविचारदसः ।

कवीन्द्रबन्दोरिव कालिदासःपट्टे तदीये रभवत्प्रतापी ॥३॥

तत्पट्टे प्रकटी जात विश्वभूषण योगिनः ।

तेनेदं रचितो यज्ञ भव्याऽमासुख हेतवे ॥४॥

षट्वक्त्रि रिषिश्वन्द्रनासरे माघमासके

एकादश्यामगमत्युर्गमिवहात्मिकपुरे ॥५॥

१०५८. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १८१६। वै० सं० १६७६। ट मण्डार।

विशेष—मागी तु गी की कमलाकार मण्डल रचना भी है। पद्यों का कुछ हिस्सा जूहीने काट रखा है।

५०५६. मुकुटसप्तमीव्रतोद्यापनपूजा ..... पत्र सं० २ । प्रा० १२ $\frac{१}{२}$ ×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६२८ । पूर्ण । वे० सं० ३०२ । छ भण्डार ।

५०६०. मुक्तावलीव्रतपूजा ..... पत्र सं० २ । प्रा० १२×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७४ । छ भण्डार ।

५०६१. मुक्तावलीव्रतोद्यापनपूजा ..... पत्र सं० १६ । प्रा० ११ $\frac{३}{४}$ ×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० २७६ । छ भण्डार ।

विशेष—महादया जोशी पत्रालाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

५०६२. मुक्तावलीव्रतविधान ..... पत्र सं० २४ । प्रा० ८ $\frac{३}{४}$ ×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा एवं विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६२५ । पूर्ण । वे० सं० २४८ । छ भण्डार ।

५०६३. मुक्तावलीपूजा—बर्षी सुखसागर । पत्र सं० ३ । प्रा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६५ । छ भण्डार ।

५०६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ५६६ । छ भण्डार ।

५०६५. मेघमालाविधि ..... पत्र सं० ६ । प्रा० १०×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्रत विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६६ । अ भण्डार ।

५०६६. मेघमालाव्रतोद्यापनपूजा ..... पत्र सं० ३ । प्रा० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्रत पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८६२ । पूर्ण । वे० सं० ५८० । अ भण्डार ।

५०६७. रत्नत्रयव्रतोद्यापनपूजा ..... पत्र सं० २६ । प्रा० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६२६ । पूर्ण । वे० सं० ११६ । छ भण्डार ।

विशेष—१ अर्पूर्ण प्रति भीर है ।

५०६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० ६६ । छ भण्डार ।

५०६९. रत्नत्रयव्रतमाला ..... पत्र सं० ४ । प्रा० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६७ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में धर्म दिया हुआ है । इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० २७१ ) भीर है ।

५०७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६१२ भावदा सुवी १ । पूर्ण । वे० सं० १५८ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १५६ ) भीर है ।



५०७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ६४३ । छ मण्डार ।

५०७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८६२ भावना सुदी १२ । वे० सं० २१७ । च मण्डार ।

५०७३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २०० । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० २०१ ) भी है ।

५०७४. रत्नत्रयजयमाला..... पत्र सं० ६ । प्रा० १०×७ इंच । भाषा—अपभ्रंस । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८३३ । वे० सं० १२६ । छ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं । पत्र ५ से अनन्तव्रतकथा श्रुतसागर कृत तथा अनन्त नाम पूजा दी हुई है ।

५०७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८१६ सावन सुदी १३ । वे० सं० १२६ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतिया इसी वेष्टन में भी हैं ।

५०७६. रत्नत्रयजयमाला..... पत्र सं० ६ । प्रा० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८२७ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० १८८ । च मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ७४१ ) भी है ।

५०७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ७४४ । च मण्डार ।

५०७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० २०३ । छ मण्डार ।

५०७९. रत्नत्रयजयमालाभाषा—नथमल । पत्र सं० ५ । प्रा० १२×७ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १९२२ फागुन सुदी ८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३३ । च मण्डार ।

५०८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १९३७ । वे० सं० ६३१ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ५ प्रतियां ( वे० सं० ६२९, ६३०, ६२७, ६२८, ६२५ ) भी हैं ।

५०८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० ८५ । च मण्डार ।

५०८२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १९२८ कार्तिक सुदी १० । वे० सं० ६४४ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतियां ( वे० सं० ६४४, ६४६ ) भी हैं ।

५०८३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ११० । छ मण्डार ।

४०८४. रत्नत्रयजयमाल ..... पत्र सं० ३ । प्रा० १३ $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल × । वै० सं० ६३६ । क अण्डार ।

४०८५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वै० सं० ६६७ । च अण्डार ।

४०८६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १६०७ द्वि० मासोज बुदी १ । वै० सं० १८५ । क अण्डार ।

४०८७. रत्नत्रयपूजा—पं० आशाधर । पत्र सं० ४ । प्रा० ८ $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १११० । क अण्डार ।

४०८८. रत्नत्रयपूजा—केरावसेन । पत्र सं० १२ । प्रा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २६६ । च अण्डार ।

४०८९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वै० सं० ४७६ । क अण्डार ।

४०९०. रत्नत्रयपूजा—पद्मानन्द । पत्र सं० १३ । प्रा० १० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३०० । च अण्डार ।

४०९१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८६३ मंगसिर बुदी ६ । वै० सं० ३०५ । च अण्डार ।

४०९२. रत्नत्रयपूजा ..... पत्र सं० १५ । प्रा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४७८ । क अण्डार ।

विशेष—इसी अण्डार में ५ प्रतिमां ( वै० सं० ५८३, ६६६, १२०५, २१५६ ) धीर हैं ।

४०९३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६८१ । वै० सं० ३०१ । क अण्डार ।

४०९४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वै० सं० ८६ । च अण्डार ।

४०९५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६१६ । वै० सं० ६४७ । क अण्डार ।

विशेष—छोट्टलाल धजमेरा ने विजयलाल कासलीवाल से प्रतिलिपि करवायी थी ।

४०९६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८५८ पीष सुदी ३ । वै० सं० ३०१ । च अण्डार ।

विशेष—इसी अण्डार में ३ प्रतिमां ( वै० सं० ३०२, ३०३, ३०४ ) धीर हैं ।

४०९७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वै० सं० ६० । क अण्डार ।

विशेष—इसी अण्डार में २ प्रतिमां ( वै० सं० ४८२, ५२६ ) धीर हैं ।

४०९८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १६७५ । क अण्डार ।

४०९९. रत्नत्रयपूजा—द्यानतराय । पत्र सं० २ से ५ । प्रा० १० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १६३७ बीष बुदी ३ । अपूर्ण । वै० सं० ६३३ । क अण्डार ।

५१००. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३०१ । अ मण्डार ।

५१०१. रत्नत्रयपूजा—श्लेषभद्रास । पत्र सं० १७ । भा० १२×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी ( पुरानी )  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८४६ पौष बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४६६ । अ मण्डार ।

५१०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । भा० १२ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इंच । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८५ ।  
अ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत प्राकृत तथा अपभ्रंश तीनो ही भाषा के शब्द हैं ।

अन्तिम—

सिंहि रिसिकिति मुहसीसे,  
रिसह दास बुहबास भणीसे ।  
इय तेरह पयार चारितउ,  
संखेवे भानिय उपवित्तउ ॥

५१०३. रत्नत्रयपूजा..... । पत्र सं० ५ । भा० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २०  
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४२ । अ मण्डार ।

५१०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४३ । ले० काल × । वे० सं० ६२२ । क मण्डार ।

५१०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १६६४ पौष बुदी २ । वे० सं० ६४६ । क  
मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ६४८ ) भी है ।

५१०६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १०६ । झ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १०६ ) भी है ।

५१०७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १६७८ । वे० सं० २१० । छ मण्डार ।

५१०८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । वे० सं० ३१८ । व्य मण्डार ।

५१०९. रत्नत्रयमंडलविधान..... । पत्र सं० ३५ । भा० १०×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।  
१० काल × । ले० काल × । वे० सं० ५७ । व्य मण्डार ।

५११०. रत्नत्रयविधानपूजा—पं० रत्नकीर्ति । पत्र सं० ८ । भा० १०×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा एवं विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५१ । क मण्डार ।

५१११. रत्नत्रयविधान..... । पत्र सं० १२ । भा० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा  
एवं विधि विधान । २० काल × । ले० काल सं० १८८२ फागुन सुदी ३ । वे० सं० १६६ । अ मण्डार ।

५११२. रत्नत्रयविधानपूजा—हेकवन्द । पत्र सं० ३६ । प्रा० १३×७२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १६७७ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । म मण्डार ।

५११३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३३ । ले० काल × । वे० सं० १६७ । म मण्डार ।

५११४. रत्नत्रयप्रतीक्षापन..... । पत्र सं० ६ । प्रा० ७×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५० । क मण्डार ।

बिषेय—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ६५३ ) धीर है ।

५११५. रत्नावलीव्रतविधान—म० कृष्णदास । पत्र सं० ७ । प्रा० १०×४२ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—विधि विधान एवं पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १६८५ चैत्र बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ३८३ । अ मण्डार ।

बिषेय—प्रारम्भ— श्री भूषभदेवसत्यः श्रीसरस्वती नमः ॥

अथ जय नाभि नरेन्द्रमुक्त सुरगण सेवित पाद ।

तत्त्व सिधु साधर ललित योजन एक निभाद ॥

सारद शुक चरणे नमी नमु निरञ्जन हंस ।

रत्नावलि तप विधि कर्तुं तिम वाधि मुख वंश ॥२॥

जुवाई—

जंबूद्वीप भरत उदार, बहूंबही धरणीधर सार ।

तेह मध्य एक धार्य मुलंड, पञ्चम्लेखमर्माति धर्षंड ॥

बंद्रपुरो मयरी उद्दाम, स्वर्गलोक सम हीसिधाम ।

उन्नेस्तर जिनबर प्रासाद, अन्तर डोल पट्टहात नाद ॥

अन्तिम—

अनुक्रमि मुतनि देईराज, बिक्षा लेई करि भ्रातम काज ।

शुक्ति काम द्रुप हुजं प्रमाण, ए ब्रह्म पूरमल्लह बाण ॥१८॥

रूहा—

रत्नावलि विधि धारक, भावि सूं नरनारि ।

तिम मन बंछित कल लहु, धाधु भव विस्तारि ॥१९॥

मनह मनोरब संपत्ति होई, नारी वेद विखेद ।

पाप पङ्क सबि कुभाभि, रत्नावलि बहु भेद ।

जे कसिसुणसि सुविधि, त्रिभुवन होइ तस दास ।

हर्ष सुत नकुल कमल रवि, कहि ब्रह्म कृष्ण उल्लास ॥

इति श्री रत्नावली व्रत विधान निरूपण श्री पास अर्वांतर सम्बन्ध समाप्त ॥

सं० १६८५ वर्षे चैत्र सुदी २ सोमे व० कृष्णदास पुरनमन्नाजी तत्प्राप्य व० चर्द्धमान लिखित ॥

५११६. रविप्रतोद्यापनपूजा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ६ । घा० १२×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ५०१ । अ० अण्डार ।

५११७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८०८ । वे० सं० १०६० । अ० अण्डार ।

५११८. देवानदीपूजा—विश्वभूषण । पत्र सं० ६ । घा० १२ $\frac{३}{४}$ ×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल सं० १७३६ । ले० काल सं० १६४० । पूर्ण । वे० सं० ३०३ । अ० अण्डार ।

विशेष—प्रन्तिम—

सरत्समेष्टनितत्वचन्द्रे कायुन्यमासे किल कृष्णपक्षे ।

नवरंगग्रामे परिपूर्णातास्युः भव्या जनानां प्रबदातु सिद्धिः ॥

इति श्री देवानदी पूजा समाप्ता ।

इसका दूसरा नाम झाड़ूब कोटि पूजा भी है ।

५११९. रैद्वज्रत—गंगाराम । पत्र सं० ४ । घा० १३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ४३६ । अ० अण्डार ।

५१२०. रोहिणीव्रतमंडलविधान—केशवसेन । पत्र सं० १४ । घा० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा विधान । २० काल × । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वे० सं० ७३८ । अ० अण्डार ।

विशेष—जयमाला हिन्दी में है । इसी अण्डार में २ प्रतिधा ( वे० सं० ७३६, १०६४ ) भी हैं ।

५१२१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८६२ । पौष बुदी १३ । वे० सं० १३४ । अ० अण्डार ।

विशेष—इसी अण्डार में २ प्रतिधां ( वे० सं० २०२, २६२ ) भी हैं ।

५१२२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १६७६ । वे० सं० ६१ । अ० अण्डार ।

५१२३. रोहिणीव्रतोद्यापन..... । पत्र सं० ५ । घा० ११×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अ० पूर्ण । वे० सं० ५५८ । अ० अण्डार ।

विशेष—इसी अण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ७४० ) भी है ।

५१२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६२२ । वे० सं० २६२ । अ० अण्डार ।

५१२५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ६६६ । अ० अण्डार ।

विशेष—इसी अण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ६६५ ) भी है ।

५१२६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३२४ । अ० अण्डार ।

५१२७. लघुश्रमिषेकविधान..... पत्र सं० ३। प्रा० १२<sup>१</sup>×५<sup>३</sup> इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—  
भगवान् के श्रमिषेक की पूजा व विधान। १० काल ×। ले० काल सं० १६६६ वैशाख सुदी १४। पूर्ण। वे० सं०  
१७७। अ भण्डार।

५१२८. लघुकल्याण..... पत्र सं० ८। प्रा० १२×६ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—श्रमिषेक  
विधान। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६३७। क भण्डार।

५१२९. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० १८२९। ट भण्डार।

५१३०. लघुअनन्तव्रतपूजा..... पत्र सं० ३। प्रा० १२×५<sup>३</sup> इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—  
पूजा। १० काल ×। ले० काल सं० १८३९ आसीत बुदी १२। पूर्ण। वे० सं० १८५७। ट भण्डार।

५१३१. लघुशांतिकपूजाविधान..... पत्र सं० १५। प्रा० १०<sup>३</sup>×५<sup>३</sup> इ च। भाषा—संस्कृत।  
विषय—पूजा। १० काल ×। ले० काल सं० १६०६ माघ बुदी ८। पूर्ण। वे० सं० ७३। अ भण्डार।

५१३२. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १८६०। अपूर्णा। वे० सं० ८८३। अ भण्डार।

५१३३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १६७१। वे० सं० ६९०। क भण्डार।

विशेष—राजूनाल भौसा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

५१३४. प्रति सं० ४। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १८८६। वे० सं० ११६। छ भण्डार।

५१३५. प्रति सं० ५। पत्र सं० १४। ले० काल ×। वे० सं० १४२। अ भण्डार।

५१३६. लघुश्रेयविधि—अभयनम्दि। पत्र सं० ६। प्रा० १०<sup>३</sup>×७ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—  
विधि विधान। १० काल ×। ले० काल सं० १६०६ फागुण सुदी २। पूर्ण। वे० सं० १५८। अ भण्डार।

विशेष—इसका दूसरा नाम श्रेयोविधान भी है।

५१३७. लघुस्नपनटीका—पं० भाषाहार्मी। पत्र सं० २२। प्रा० १२×१५<sup>३</sup> इ च। भाषा—संस्कृत।  
विषय—श्रमिषेक विधि। १० काल सं० १५६०। ले० काल सं० १८१५ कार्तिक सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० २३२। अ  
भण्डार।

५१३८. लघुस्नपन..... पत्र सं० ५। प्रा० ८×४ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—श्रमिषेक विधि।  
१० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७३। ग भण्डार।

५१३९. लक्ष्मिविधानपूजा—हर्षकीर्ति। पत्र सं० २। प्रा० ११<sup>३</sup>×५<sup>३</sup> इ च। भाषा—संस्कृत।  
विषय—पूजा। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२०६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १६४९ ) भी है।

५१४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वै० सं० ६६४ । क अम्बार ।

५१४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल । वै० सं० ७७ । क अम्बार ।

५१४२. लक्ष्मिविधानपूजा..... । पत्र सं० ६ । मा० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।  
१० काल × । ले० काल × । प्रपूर्णा । वै० सं० ४७६ । अ अम्बार ।

विशेष—इसी अम्बार मे २ प्रतिमा ( वै० सं० ४६४, २०२० ) शीर है ।

५१४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वै० सं० १६८ । अ अम्बार ।

५१४४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वै० सं० ८७ । अ अम्बार ।

५१४५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६२० । वै० सं० ६६३ । क अम्बार ।

५१४६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वै० सं० ३१८ । अ अम्बार ।

विशेष—इसी अम्बार मे २ प्रतिमा ( वै० सं० ३१६, ३२० ) शीर है ।

५१४७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वै० सं० ११७ । अ अम्बार ।

५१४८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २ से ८ । ले० काल सं० १६०० भावना सुवी १ । प्रपूर्णा । वै० सं०  
३१७ । अ अम्बार ।

विशेष—इसी अम्बार मे एक प्रति ( वै० सं० १६७ ) शीर है ।

५१४९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १६१२ । वै० सं० २१४ । क अम्बार ।

५१५०. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८८७ माह सुवी १ । वै० सं० ५३ । अ  
अम्बार ।

विशेष—मंडल का चित्र भी दिया हुआ है ।

५१५१. लक्ष्मिविधानप्रतोद्यापनपूजा..... । पत्र सं० ६ । मा० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । १० काल × । ले० काल सं० भावना सुवी ३ । पूर्णा । वै० सं० ७४ । ग अम्बार ।

विशेष—मन्त्रालाल कायलीबाल मे प्रतिनिधि करके चौधरियो के मन्त्र मे चढाई ।

५१५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वै० सं० १७६ । क अम्बार ।

५१५३. लक्ष्मिविधानपूजा—ज्ञानचन्द्र । पत्र सं० २१ । मा० ११×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-  
पूजा । १० काल सं० १६५३ । ले० काल सं० १६६२ । पूर्णा । वै० सं० ७४४ । अ अम्बार ।

विशेष—इसी अम्बार मे २ प्रतिमा ( वै० सं० ७४३, ७४४/१ ) शीर है ।

५१५४. लक्ष्मिविधानपूजा..... । पत्र सं० ३५ । मा० १२×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वै० सं० ६७० । अ अम्बार ।

५१५७. कक्षिचविधानउद्यापनपूजा ..... पत्र सं० = । प्रा० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १११७ । पूर्ण । वे० सं० ६१२ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे एक अपूर्ण प्रति ( वे० सं० ६११ ) भीर है ।

५१५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० ११२६ । वे० सं० २२७ । ज मण्डार ।

५१५७. वास्तुपूजा ..... पत्र सं० ५ । प्रा० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ग्रह प्रवेश पूजा एवं विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२४ । अ मण्डार ।

५१५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० ११३१ वैशाल सुदी ८ । वे० सं० ११६ । छ मण्डार ।

विशेष—उल्लङ्गल पांख्या ने प्रतिलिपि की थी ।

५१५९. प्रात सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १११६ वैशाल सुदी ८ । वे० सं० २० । ज मण्डार ।

५१६०. विद्यमानबीसतीर्थङ्करपूजा—नरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० २ । प्रा० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८१० । पूर्ण । वे० सं० ६७२ । अ मण्डार ।

५१६१. विद्यमानबीसतीर्थङ्करपूजा—जौहरीकाल बिलाखा । पत्र सं० ४२ । प्रा० १२×७३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० ११४९ सावन सुदी १४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७३६ । अ मण्डार ।

५१६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ६७५ । छ मण्डार ।

५१६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० ११५३ द्वि० ज्येष्ठ बुदी २ । वे० सं० ६७८ । ज मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ६७९ ) भीर है ।

५१६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४३ । ले० काल × । वे० सं० २०६ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे इसी वेष्टन में एक प्रति भीर है ।

५१६५. विमानशुद्धि—चन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ६ । प्रा० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान एवं पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७ । अ मण्डार ।

विशेष—कुछ षष्ठ पावी में भीग गये हैं ।

५१६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । छ मण्डार ।

विशेष—गोधो के मन्दिर में लक्ष्मीचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।



५१६७ विमानयुद्धिपूजा.....। पत्र सं० १२। प्रा० १२३×७ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १६२०। पूर्ण। वे० सं० ७४६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०६२) भी है।

५१६८ प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वे० सं० १६८। अ भण्डार।

विशेष—शान्तिपाठ भी दिया है।

५१६९. विवाहपद्धति—सोमसेन। पत्र सं० २५। प्रा० १२×७ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय जैन विवाह विधि। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६२। क भण्डार।

५१७०. विवाहविधि .. .....। पत्र सं० ८। प्रा० ६×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-जैन विवाह विधि। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११३६। अ भण्डार।

५१७१. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० १७४। ख भण्डार।

५१७२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० १४४। छ भण्डार।

५१७३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १७६८ ज्येष्ठ बुदी १२। वे० सं० १२२। छ भण्डार।

५१७४. प्रति सं० ५। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं० ३४६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २४६) भी है।

५१७५. विष्णुकुमार मुनिपूजा—बाबूलाल। पत्र सं० ८। प्रा० ११×७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७४५। अ भण्डार।

५१७६. विहार प्रकरण .. .....। पत्र सं० ७। प्रा० ८×३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय विधान। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७७३। अ भण्डार।

५१७७. व्रतनिर्णय—मोहन। पत्र सं० ३४। प्रा० १३×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-विधि विधान। २० काल सं० १६३२। ले० काल सं० १६४३। पूर्ण। वे० सं० १८३। ख भण्डार।

विशेष—अजयपुर में रहने वाले विद्वान् ने इस ग्रन्थ की रचना की थी। अजमेर में प्रतिलिपि हुई।

५१७८. व्रतनाम .. .....। पत्र सं० १०। प्रा० १३×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-व्रतो के नाम। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८३७। ट भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त २ पत्रों पर ध्वजा, माला तथा छत्र आदि के चित्र हैं। कुल ६ चित्र हैं।

५१७९. व्रतपूजासंग्रह.....। पत्र सं० ३६८। प्रा० १२३×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२८। छ भण्डार।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है ।

| नाम पूजा   | कर्त्ता    | भाषा    | विशेष                   |
|--|------------|---------|-------------------------|
| बारहती चौतीसवतपूजा                               | श्रीगुरुण  | संस्कृत | से० काल स० १८००         |
| विशेष—देवगिरि मे पार्श्वनाथ मठ्यालय मे लिखी गई । |            |         | शेष बुदी ५              |
| अम्बुद्वीपपूजा                                   | जिनदास     | "       | से० काल १८०० पीप बुदी ६ |
| रत्नप्रथपूजा                                     | —          | "       | " " " शेष बुदी ६        |
| बीसतीर्थशुद्धपूजा                                | —          | हिन्दी  |                         |
| श्रुतपूजा  | ज्ञानगुरुण | संस्कृत |                         |
| गुरुपूजा   | जिनदास     | "       |                         |
| सिद्धपूजा  | पद्मनन्दि  | "       |                         |
| शोडशकारण   | —          | "       |                         |
| दशानक्षरपूजाजयमाल                                | रङ्ग       | धपन्न थ |                         |
| लघुस्वयम्भूस्तोत्र                               | —          | संस्कृत |                         |
| नन्दीश्वर उद्यापन                                | —          | "       | से० काल स० १८००         |
| सप्तशरणापूजा                                     | रत्नशेखर   | "       |                         |
| श्रधिमदलपूजाविधान                                | गुणनन्दि   | "       |                         |
| तत्त्वार्थसूत्र                                  | उयास्वाति  | "       |                         |
| तीसचौबीसीपूजा                                    | शुभचन्द    | संस्कृत |                         |
| धर्मचक्रपूजा                                     | —          | "       |                         |
| जिनगुणसपत्तिपूजा                                 | केसवसेन    | "       | २० काल १६६३             |
| रत्नप्रथपूजा जयमाल                               | श्रधमदास   | धपन्न थ |                         |
| नवकार पैंतीसीपूजा                                | —          | संस्कृत |                         |
| कर्मबहनपूजा                                      | शुभचन्द    | "       |                         |
| रविचारपूजा                                       | —          | "       |                         |
| पञ्चकल्याणकपूजा                                  | सुधासागर   | "       |                         |

५१८० अतविधान..... । पत्र स० ४ । भा० ११२×४३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-विधि विधान । २० काष्ठ × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६७६ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार से ३ प्रतिधा ( वे० स० ४२४, ६६२, २०३७ ) श्रीर हैं ।

५१८१ प्रति स० २ । पत्र स० ३० । ले० काल × । वे० स० ६६० । छ मण्डार ।

५१८२ प्रति स० ३ । पत्र स० १६ । ले० काल × । वे० स० ६७६ । छ मण्डार ।

५१८३ प्रति स० ४ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० १७८ । छ मण्डार ।

विशेष—बोवीस तीथक्करो के पचकल्याणक की तिथियां भी दी हुई हैं ।

५१८४ अतविधानरासो—दौलतरामसधी । पत्र स० ३२ । भा० ११×४३ इ च । भाषा-हिन्दी ।

विषय-विधान । २० काल स० १७६७ आसोज सुदी १० । ले० काल स० १८३२ प्र० भाववा बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० १६६ । छ मण्डार ।

५१८५ अतविवरण । पत्र स० ४ । भा० १०३×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-अत विधि ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८८१ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार से एक प्रति ( वे० स० १२४६ ) श्रीर हैं ।

५१८६ प्रति स० २ । पत्र स० ६ से १२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८२३ । छ मण्डार ।

५१८७ अतविवरण । पत्र स० ११ । भा० १०×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-अत विधि ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८३६ । छ मण्डार ।

५१८८ अतसगर—आ० शिवकोटि । पत्र स० ६ । भा० ११×४३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-अत विधान । २० काष्ठ × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७६४ । छ मण्डार ।

५१८९ अतोशापनसमग्र " । पत्र स० ४५६ । भा० ११×४३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-अतपूजा । २० काल × । ले० काल स० १८६७ । अपूर्ण । वे० स० ४५२ । छ मण्डार ।

विशेष—विम्ब पाठो का सग्रह है—

| नाम             | कर्ता     | भाषा    |
|-----------------|-----------|---------|
| पत्थमडलविधान    | शुभचन्द्र | संस्कृत |
| अक्षयवशमीविधान  | —         | "       |
| मीनिव्रतोद्यापन | —         | "       |
| मीनिव्रतोद्यापन | —         | "       |

|                                 | शुद्धरदात्त     | शक्ति   |
|---------------------------------|-----------------|---------|
| पञ्चमेदमयमाला                   | शुद्धरदात्त     | शक्ति   |
| पञ्चमिर्मङ्गलपूजा               | शुद्धरदात्त     | संस्कृत |
| पद्मावतीस्तोत्रपूजा             | —               | "       |
| पञ्चमेदपूजा                     | —               | "       |
| भनन्तव्रतपूजा                   | —               | "       |
| मुक्तावलिपूजा                   | —               | "       |
| शास्त्रपूजा                     | —               | "       |
| षोडशकारण व्रतोद्यापन            | केसवसेन         | "       |
| मेघमालाव्रतोद्यापन              | —               | "       |
| चतुर्विंशतिव्रतोद्यापन          | —               | "       |
| दशलक्षणपूजा                     | —               | "       |
| पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा [ बृहद् ]   | —               | "       |
| पञ्चमीव्रतोद्यापन               | कवि हर्षकन्यास  | "       |
| रत्नत्रयव्रतोद्यापन [ बृहद् ]   | केसवसेन         | "       |
| रत्नत्रयव्रतोद्यापन             | —               | "       |
| भनन्तव्रतोद्यापन                | शुद्धचन्द्रसूरि | "       |
| द्वादशमासात्चतुर्दशीव्रतोद्यापन | —               | "       |
| पञ्चमासचतुर्दशीव्रतोद्यापन      | —               | "       |
| मष्टाङ्गिकाव्रतोद्यापन          | —               | "       |
| भक्तयनिधिपूजा                   | —               | "       |
| सीस्यव्रतोद्यापन                | —               | "       |
| ज्ञानपञ्चविंशतिव्रतोद्यापन      | —               | "       |
| रामोकार्पणोत्थीपूजा             | —               | "       |
| रत्नावलिव्रतोद्यापन             | —               | "       |
| जिनशुद्धसंपत्तिपूजा             | —               | "       |
| सतपरमस्थानव्रतोद्यापन           | —               | "       |

|                         |            |         |
|-------------------------|------------|---------|
| मेषवक्रिणव्रतोद्यापन    | —          | संस्कृत |
| श्राद्धित्यव्रतोद्यापन  | —          | "       |
| रोहिणीव्रतोद्यापन       | —          | "       |
| कर्मभूतव्रतोद्यापन      | —          | "       |
| अक्रामरस्तोत्रपूजा      | धी मूषण    | "       |
| जिनसहस्रनामस्तवन        | श्राव्यावर | "       |
| द्वादशव्रतमन्त्रोद्यापन | —          | "       |
| नन्दिविधानपूजा          | —          | "       |

५१६०. प्रति सं० २। पत्र सं० २३६। ले० काल X। वै० सं० १८५। अ मन्थार।

निम्न पूजाओं का संग्रह है—

| नाम                           | कर्त्ता            | भाषा    |
|-------------------------------|--------------------|---------|
| नन्दिविधानोद्यापन             | —                  | संस्कृत |
| रोहिणीव्रतोद्यापन             | —                  | हिन्दी  |
| मत्स्यव्रतोद्यापन             | केशवसेन            | संस्कृत |
| दशमस्कण्डव्रतोद्यापन          | मुमतिसागर          | "       |
| रत्नत्रयव्रतोद्यापन           | —                  | "       |
| धनन्तरव्रतोद्यापन             | गुणचंद्रसूरि       | "       |
| पुष्पाञ्जलिव्रतोद्यापन        | —                  | "       |
| शुक्लपञ्चमीव्रतपूजा           | —                  | "       |
| पञ्चमासचतुर्दशीपूजा           | म० सुरेन्द्रकीर्ति | "       |
| प्रतिमासातचतुर्दशीव्रतोद्यापन | —                  | "       |
| कर्मदहनपूजा                   | —                  | "       |
| श्राद्धित्यवारव्रतोद्यापन     | —                  | "       |

५१६१. बृहस्पतिविधान " " "। पत्र सं० १। मा० ६X४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान।

४० काल X। ले० काल X। पुरा। वै० सं० १८८७। अ मन्थार।

५१६२ वृहद्गुरावलीशांतिमंडलपूजा (चौसठ ऋद्धिपूजा)—स्वरूपचंद्र । पत्र सं० ५६ । प्रा० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १६१० । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६७० । क मण्डार ।

५१६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वै० सं० ६५ । घ मण्डार ।

५१६४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वै० सं० ६८० । च मण्डार ।

५१६५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ६८६ । छ मण्डार ।

५१६६. षण्णवतिस्त्रैत्रपूजा—विश्वसेन । पत्र सं० १७ । प्रा० १०<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७१ । झ मण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

श्रीमच्छ्रीकाष्ठ्यासंघे यतिपतितिलके रामसेनस्वयंसे ।

गच्छे नंदोतटास्थे यगदितिह मुले तु छकर्मामुनीन्द्र ॥

श्यातोसोविश्वसेनोविमलतरमतिर्येनयज्ञचकार्षीत् ।

सोमसुयामबासे भविजनकलिते क्षेत्रपालाना शिवाय ॥

चौबीस तीर्थक्षुरो के चौबीस क्षेत्रपालों की पूजा है ।

५१६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २६२ । झ मण्डार ।

५१६८ षोडशकारणजयमाल ..... । पत्र सं० १८ । प्रा० ११<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८६४ भादवा सुदी १३ । वै० सं० ३२६ । झ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं । इसी मण्डार में ५ प्रतिमां ( वै० सं० ६६७, २६६, ३०४, १०६३, २०४४ ) भी हैं ।

५१६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १७६० प्रासोज सुदी १४ । वै० सं० ३०३ । झ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत में भी अर्घ्य दिया हुआ है ।

५२००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वै० सं० ७२० । क मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में १ प्रति ( वै० सं० ७२१ ) भी है ।

५२०१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वै० सं० १६८ । झ मण्डार ।

५२०२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६०२ मंगसिर सुदी १० । वै० सं० ३६० । च मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक अपूर्ण प्रति ( वै० सं० ३५६ ) भी है ।

५२०३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २०५ । अ मन्डार ।

५२०४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १५०२ मगसिर बुवी ११ । वे० सं० २०५ । अ मन्डार ।

५२०५. षोडशकारणजयमाल—रङ्गू । पत्र सं० २१ । अ० ११×५ इंच । भाषा—अपभ्रंश ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४७ । अ मन्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । इसी मन्डार में एक प्रति ( वे० सं० ५६६ ) भी है ।

५२०६. षोडशकारणजयमाला..... । पत्र सं० १३ । अ० १३×५ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—  
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १११ । अ मन्डार ।

५२०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० १२६ । अ मन्डार ।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण दिया हुआ है । इसी मन्डार में एक प्रति ( वे० सं० १२६ ) भी है ।

५२०८. षोडशकारणव्याप्त ..... । पत्र सं० १५ । अ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १७६३ भाषा बुवी १३ । पूर्ण । वे० सं० २५१ । अ मन्डार ।

विशेष—गांधी के मन्दिर में पं० सदाशिव के वाचनार्थ प्रतिष्ठापित हुई थी ।

५२०९. षोडशकारणजयमाला..... । पत्र सं० १० । अ० ११×५ इंच । भाषा—प्रकृत, संस्कृत ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४२ । अ मन्डार ।

५२१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० ७१७ । अ मन्डार ।

५२११. षोडशकारणजयमाल ..... । पत्र सं० ५२ । अ० १२×५ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० ११६५ भाषा बुवी ५ । पूर्ण । वे० सं० ६१६ । अ मन्डार ।

५२१२. षोडशकारणतथा दशलक्षण जयमाल—रङ्गू । पत्र सं० ३३ । अ० १०×७ इंच । भाषा—  
अपभ्रंश । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १११ । अ मन्डार ।

५२१३. षोडशकारणपूजा—केशवसेन । पत्र सं० १३ । अ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल सं० १६६४ भाषा बुवी ७ । ले० काल सं० १५२३ भाषा बुवी १ । पूर्ण । वे० सं० ५१२ ।  
अ मन्डार ।

विशेष—इसी मन्डार में एक प्रति ( वे० सं० ५०५ ) भी है ।

५२१४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । वे० सं० ३०० । अ मन्डार ।

५२१५. षोडशकारणपूजा..... । पत्र सं० २ । अ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६५ । अ मन्डार ।

विशेष—इसी मन्डार में एक प्रति ( वे० सं० ६२५ ) भी है ।

५२१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । अर्घ्य । वे० सं० ७५१ । अ मण्डार ।

५२१७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ से २२ । ले० काल × । अर्घ्य । वे० सं० ४२४ । अ मण्डार ।

बिलेय—प्राचार्य पूर्णचन्द्र के जीवन-काल में प्रतिस्तिपि की थी । प्रति प्राचीन है ।

५२१८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८६३ सावण सुदी ११ । वे० सं० ४२५ । अ मण्डार ।

बिलेय—इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ४२६ ) भी है ।

५२१९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० ७२ । अ मण्डार ।

५२२०. षोडशकारणपूजा ( बुद्ध ) ... । पत्र सं० २६ । घा० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

बिलेय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१८ । अ मण्डार ।

५२२१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से २२ । ले० काल × । अर्घ्य । वे० सं० ४२६ । अ मण्डार ।

५२२२. षोडशकारण प्रतोद्यापनपूजा—राजकीर्ति । पत्र सं० ३७ । घा० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । बिलेय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १७६६ घासोज सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ५०७ । अ मण्डार ।

५२२३. षोडशकारणप्रतोद्यापनपूजा—सुमतिसागर । पत्र सं० २१ । घा० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । बिलेय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१४ । अ मण्डार ।

५२२४. शत्रुक्षयगिरिपूजा—भट्टारक विश्वभूषण । पत्र सं० ९ । घा० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । बिलेय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६७ । अ मण्डार ।

५२२५. शरदुत्सवदीपिका . मङ्गल विधान पूजा—सिंहलन्दि । पत्र सं० ७ । घा० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । बिलेय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६४ । अ मण्डार ।

बिलेय—प्रारम्भ— श्रीवीर सिरसा नखा वीरनरदिमहागुरु ।

सिंहलन्दि(हं) वन्दे शरदुत्सवदीपिका ॥१॥

अथाह भारते क्षेत्रे जंबूद्वीपमहोदरे ।

एवमेवेति विख्याता विचिदानाम्पतः पुरी ॥२॥

अन्तिमपाठ—

एवं महप्रभावं च दृष्ट्वा लम्बास्तथा जनाः ।

कतुं प्रभावनायं च ततोऽनेन प्रवर्तते ॥२३॥

तदाप्रमुखांरन्वेदं प्रसिद्धं जगतीत्ये ।

दृष्ट्वा दृष्ट्वा गृहीतं च वैष्णवाविकीर्तकैः ॥२४॥



जातो नामपुरे मुनिर्बरतरः श्रीभूषसंभोवरः ।

सूर्यः श्रीवरपूज्यपाद समलः श्रीवीरनंथाह्वयः ॥

तच्छिष्यो वर सिचनंदिमुनियस्तेनेयमाशिक्षता ।

नोकोद्वोधनहेतवे मुनिवरः कुर्वतु भो सज्जनाः ॥२५॥

इति श्री शरदुत्सवकथा समाप्ताः ॥१॥

इसके पश्चात् पूजा भी हुई है ।

५२२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १६२२ । वे० सं० ३०१ । ख मण्डार ।

५२२७. शांतिकविधान ( प्रतिष्ठापाठ का एक भाग ) ..... । पत्र सं० ३२ । घा० १२३×५३

इं'च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६३२ फागुन सुदी १० । वे० सं० ५३७ । ख मण्डार ।

बिषेध—प्रतिष्ठा में काम धाने वाली सामग्री का वर्णन दिया हुआ है । प्रतिष्ठा के लिये गुटका महत्त्व-पूर्ण है ।

मण्डलाचार्य श्रीचन्द्रकीर्ति के उपदेश से इस ग्रन्थ की प्रतिनिधि की गई थी । १४वें पत्र में यन्त्र दिये हुये हैं जिनकी संख्या ६८ है । प्रकाशित निम्न प्रकार है—

ॐ नमो वीतरागायनमः । परिभेष्टिने नमः । श्री गुरुवे नमः ॥ सं० १६३२ वर्ष फागुन सुदी १० गुरो श्री भूलसंघे भ० श्रीपधर्मदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीभुवचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचंद्रदेवा तत्पट्टे मंडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्रदेवा तत् मंडलाचार्य ललितकीर्तिदेवा तच्छिष्यमंडलाचार्य श्रीचन्द्रकीर्ति उपदेशात् ।

इसी मण्डार में २ प्रतियां ( वे० सं० ५६२, ५५५ ) प्रौर हैं ।

५२२८. शांतिकविधान ( वृहद् ) ..... । पत्र सं० ७५ । घा० १२×५३ इं'च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—विधि विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६२६ भाद्रवा सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १७७ । ख मण्डार ।

बिषेध—पं० पत्रालालजी ने शिष्य जयचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

५२२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ३३८ । ख मण्डार ।

५२३०. शांतिकविधि—आहूहो व । पत्र सं० ५१ । घा० ११३×५३ इं'च । भाषा—संस्कृत । विषय—

संस्कृत । विषय विधि विधान । २० काल × । ले० काल सं० १८६८ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ६८६ । क मण्डार ।

५२३१. शांतिविधि..... । पत्र सं० ५ । घा० १०×४ इं'च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ६८५ । क मण्डार ।

५२३२. शांतिपाठ ( बृहद् ) .....। पत्र सं० ४० । घा० १०×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १६५ । ज भण्डार ।

विशेष—यं फतेहलाल ने प्रतिनिधि की थी ।

५२३३. शान्तिचक्रपूजा .....। पत्र सं० ४ । घा० १० $\frac{३}{२}$ × $\frac{५}{२}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १७६७ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १३६ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १७६ ) भी है ।

५२३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वे० सं० १२२ ) भी है ।

५२३५. शान्तिनामपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० २ । घा० ११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०५ । ज भण्डार ।

५२३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६८२ । ज भण्डार ।

५२३७. शान्तिमंडलपूजा .....। पत्र सं० ३८ । घा० १० $\frac{३}{२}$ × $\frac{५}{२}$  इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०६ । ज भण्डार ।

५२३८. शांतिपाठ .....। पत्र सं० १ । घा० १० $\frac{३}{२}$ ×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा के अन्त में पढ़ा जाने वाला पाठ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२७ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियाँ ( वे० सं० १२३८, १३१८, १३२४ ) भी हैं ।

५२३९. शांतिरत्नसूची .....। पत्र सं० ३ । घा० ८ $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ से उद्धृत है ।

५२४०. शान्तिहोमविधान—आशाधर । पत्र सं० ५ । घा० ११ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४७ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठापाठ में से संग्रहीत है ।

५२४१. शास्त्रगुरुजयमाला .....। पत्र सं० २ । घा० ११×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० ३४२ । ज भण्डार ।

५२४२. शास्त्रजयमाला—ज्ञानभूषण । पत्र सं० ३ । घा० १३ $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८८ । क भण्डार ।

५२४३ शास्त्रप्रवचन प्रारम्भ करने की विधि.....। पत्र सं० १। मा० १०३×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—विधान। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १८८४। अ भण्डार।

५२४४ शासनदेवतार्चनविधान.....। पत्र सं० २१ से २५। मा० ११×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा विधि विधान। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ७०७। अ भण्डार।

५२४५ शिखरविलासपूजा.....। पत्र सं० ७३। मा० ११×५३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ६८६। अ भण्डार।

५२४६ शीतलनाथपूजा—धर्मभूषण। पत्र सं० ६। मा० १०३×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १६२१। पूर्ण। वै० सं० २६३। अ भण्डार।

५२४७ प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १६३१ प्र० आषाढ सुदी १४। वै० सं० १२५। अ भण्डार।

५२४८ शुक्रपञ्चमीव्रतपूजा.....। पत्र सं० ७। मा० १२×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल सं० १८...। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ३४४। अ भण्डार।

विशेष—रचना सं० निम्न प्रकार है— अन्धे रंघ यमलं वसु चन्द्र।

५२४९ शुक्रपञ्चमीव्रतोद्यापनपूजा.....। पत्र सं० ५। मा० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ५१७। अ भण्डार।

५२५० अतज्ञानपूजा.....। पत्र सं० ५। मा० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १८६१ आषाढ सुदी १२। पूर्ण। वै० सं० ७२३। अ भण्डार।

५२५१ प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वै० सं० ६८७। अ भण्डार।

५२५२ प्रति सं० ३। पत्र सं० १३। ले० काल ×। वै० सं० ११७। अ भण्डार।

५२५३ अतज्ञानव्रतपूजा.....। पत्र सं० १०। मा० ११×८ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १६६। अ भण्डार।

५२५४ अतज्ञानव्रतोद्यापनपूजा.....। पत्र सं० ११। मा० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ७२४। अ भण्डार।

५२५५ अतज्ञानव्रतोद्यापन.....। पत्र सं० ८। मा० १०३×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १६२२। पूर्ण। वै० सं० ३००। अ भण्डार।

५२५६ अतपूजा.....। पत्र सं० ४। मा० १०३×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० ज्येष्ठ सुदी ३। पूर्ण। वै० सं० १०७८। अ भण्डार।

५२५७. श्रुतस्कंधपूजा—श्रुतसागर। पत्र सं० २ से १३। भा० ११३×५ इंच। भाषा—संस्कृत।  
विषय—पूजा। १० काल × १ ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ७०५। क्व भण्डार।

५२५८. प्रति सं० २। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वै० सं० ३४६। क्व भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ३५० ) भी है।

५२५९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वै० सं० १८४। क्व भण्डार।

५२६०. श्रुतस्कंधपूजा ( ज्ञानपञ्चविंशतिपूजा )—सुरेन्द्रकीर्ति। पत्र सं० ५। भा० १२×५ इंच।  
भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। १० काल सं० १८४७। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ५२२। क्व भण्डार।

विशेष—इस रचना को श्री सुरेन्द्रकीर्तिजी ने ५३ वर्ष की अवस्था में किया था।

५२६१. श्रुतस्कंधपूजा..... पत्र सं० ५। भा० ८३×७ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।  
१० काल ×। १० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ७०२। क्व भण्डार।

५२६२. प्रति सं० २। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वै० सं० २६२। क्व भण्डार।

५२६३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वै० सं० १८८। क्व भण्डार।

५२६४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वै० सं० ४६०। क्व भण्डार।

५२६५. श्रुतस्कंधपूजाकथा ..... पत्र सं० २८। भा० १२३×७ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—  
पूजा तथा कथा। १० काल ×। १० काल वीर सं० २४३४। पूर्ण। वै० सं० ७२८। क्व भण्डार।

विशेष—चावली ( आगरा ) निवासी श्री लालाराम ने लिखा फिर वीर सं० २४५७ को पन्नालालजी  
गोधा ने तुकीगञ्ज इन्दौर में लिखाया। जौहरीलाल फिरोजपुर जि० मुद्गगाबा।

बनारसीदास कृत सरस्वती स्तोत्र भी है।

५२६६. सकलीकरणविधि..... पत्र सं० ३। भा० ११×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—  
विधि विधान। १० काल ×। १ ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ७५। क्व भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतिया ( वै० सं० ८०, ५७१, ६९१ ) भी हैं।

५२६७. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल ×। वै० सं० ७२३। क्व भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ७२४ ) भी है।

५२६८. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वै० सं० ३६८। क्व भण्डार।

विशेष—आचार्य हर्षकीर्ति के वाचकों के लिए प्रतिलिपि हुई थी।

५२६६. सकलीकरण..... । पत्र सं० २१ । मा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि

विधान । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५७१ । अ भण्डार ।

५२७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वै० सं० ७५७ । क भण्डार ।

५२७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वै० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ११६ ) भी है ।

५२७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वै० सं० १६४ । ज भण्डार ।

५२७३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वै० सं० ४२४ । अ भण्डार ।

विशेष—हासिया पर संस्कृत टिप्पण दिया हुआ है । इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ४६३ ) भी है ।

५२७४. संधाराविधि..... । पत्र सं० १ । मा० १०×६ इंच । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय

विधान । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १२१६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० १२५१ ) भी है ।

५२७५. सप्तपदी..... । पत्र सं० २ में १६ । मा० ७<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १६६६ । अ भण्डार ।

५२७६. सप्तपरमस्थानपूजा..... । पत्र सं० ३ । मा० १०<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६६६ । अ भण्डार ।

५२७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वै० सं० ७६२ । क भण्डार ।

५२७८. सप्तर्षिपूजा—त्रिणदास । पत्र सं० ७ । मा० ८<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २२२ । छ भण्डार ।

५२७९. सप्तर्षिपूजा—लक्ष्मीसेन । पत्र सं० ६ । मा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १२७ । छ भण्डार ।

५२८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १८२० कालिक सुदी २ । वै० सं० ४०१ । अ

भण्डार ।

५२८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वै० सं० २१६० । ट भण्डार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति द्वारा रचित चांदनपुर के महावीर की संस्कृत पूजा भी है ।

५२८२. सप्तर्षिपूजा—विश्वभूषण । पत्र सं० १६ । मा० १०<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १६१७ । पूर्ण । वै० सं० ३०१ । ख भण्डार ।

५२८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६३० ज्येष्ठ सुदी ८ । वे० सं० १२७ । छ  
मण्डार ।

५२८४. समर्षिपूजा..... । पत्र सं० १३ । भा० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६१ । छ मण्डार ।

५२८५. समवशरणपूजा—कलितकीर्ति । पत्र सं० ४७ । भा० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १८७७ मंगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ४५१ । छ मण्डार ।

विशेष—लुधियानजी ने जयपुर नगर में महात्मा शंभुराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

५२८६. समवशरणपूजा ( गृहद् )—रूपचन्द्र । पत्र सं० ६४ । भा० ६३×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । १० काल सं० १५६२ । ले० काल सं० १८७६ पीष बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४५५ । छ मण्डार ।

विशेष—रवनाकाल निम्न प्रकार है— धृतीवेदगनन्दभद्रासकृत परिमिते कृष्णपक्षे मासे ॥

५२८७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १६३७ चैत्र बुदी १५ । वे० सं० २०६ । छ  
मण्डार ।

विशेष—पं० पद्मालालजी जोबनेर वालों ने प्रतिलिपि की थी ।

५२८८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५१ । ले० काल सं० १६४० । वे० सं० १३३ । छ मण्डार ।

५२८९. समवशरणपूजा—सोमकीर्ति । पत्र सं० २८ । भा० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १८०७ बैशाख सुदी १ । वे० सं० ३८४ । छ मण्डार ।

विशेष—अन्तिम श्लोक—

वाजस्तुत्यार्चा गुणवीतरागः ज्ञानार्कसाम्राज्यविकासमानः ।

श्रीसोमकीर्तिविकासमानः रत्नेष्वरत्नाकरचार्ककीर्तिः ॥

जयपुर में सदानन्द नौगाणों के पठनार्थ छाजूराम पाटनी की पुस्तक से प्रतिलिपि की थी ।

इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ४०५ ) भी है ।

५२९०. समवशरणपूजा..... । पत्र सं० ७ । भा० ११×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
१० काल × । ले० काल × । मपूर्ण । वे० सं० ७७४ । छ मण्डार ।

५२९१. सम्भेदशिवरूपपूजा—गङ्गादास । पत्र सं० १० । भा० ११३×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १८८६ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २०११ । छ मण्डार ।

विशेष—गंगादास धर्मचन्द्र भट्टारक के शिष्य थे । इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० ५०६ ) भी है ।

५२९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १६२१ मंगसिर बुदी ११ । वे० सं० २१० । छ  
मण्डार ।

५२६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८६३ बैशाख सुदी ३ । वै० सं० ५३६ । अ  
भण्डार ।

५२६४. सम्भेदशिखरपूजा—पं० जवाहरलाल । पत्र सं० १२ । भा० १२×८ इ च । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७५८ । अ भण्डार ।

५२६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । २० काल सं० १८६१ । ले० काल सं० १९१२ । वै० सं० ११६ ।  
अ भण्डार ।

५२६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १९५२ आसोज सुदी १० । वै० सं० २४० । अ  
भण्डार ।

५२६७. सम्भेदशिखरपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० ८ । भा० ११३×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १९५५ आश्विन सुदी ६ । पूर्ण । वै० सं० ३६३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ११२३ ) भी है ।

५२६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १९५८ माघ सुदी १६ । वै० सं० ७०१ । अ  
भण्डार ।

५२६९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वै० सं० ७६३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ७६४ ) भी है ।

५३००. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वै० सं० २२२ । अ भण्डार ।

५३०१. सम्भेदशिखरपूजा—भागवत । पत्र सं० १० । भा० १३१×६ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल सं० १९२९ । ले० काल सं० १९३० । पूर्ण । वै० सं० ७६७ । अ भण्डार ।

विशेष—पूजा के पश्चात् पद भी दिये हुये हैं ।

५३०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वै० सं० १६७ । अ भण्डार ।

विशेष—सिद्धलेशो की स्तुति भी है ।

५३०३. सम्भेदशिखरपूजा—भ० सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० २१ । भा० ११×५ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १९१२ । पूर्ण । वै० सं० ५९१ । अ भण्डार ।

विशेष—१०वें पत्र से आगे पञ्चमेक पूजा दी हुई है ।

५३०४. सम्भेदशिखरपूजा... । पत्र सं० ३ । भा० ११×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १२३१ । अ भण्डार ।

५३०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । भा० १०×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × ।

ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७९१ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ७९२ ) भी है ।

५३०६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं० २९१। म् भण्डार।

५३०७. सर्वतोभद्रपूजा .....। पत्र सं० ५। भा० ९×३½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।  
१० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३९३। अ भण्डार।

५३०८. सरस्वतीपूजा—पद्मनन्द। पत्र सं० १। भा० ९×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।  
१० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३३४। अ भण्डार।

५३०९. सरस्वतीपूजा—ज्ञानभूषण। पत्र सं० ६। भा० ८×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।  
१० काल ×। ले० काल १९३०। पूर्ण। वे० सं० १३९७। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिमां ( वे० सं० ९८९, १३११, ११०८, १०१० ) प्रौर हैं।

५३१०. सरस्वतीपूजा.....। पत्र सं० ३। भा० ११×५½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।  
१० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८०३। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० ८०२ ) प्रौर है।

५३११. सरस्वतीपूजा—संघी पन्नालाल। पत्र सं० १७। भा० १२×८ इंच। भाषा—हिन्दी।  
विषय—पूजा। १० काल सं० १९२१। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२१। क् भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे इसी वेष्टन मे १ प्रति प्रौर है।

५३१२. सरस्वतीपूजा—नेमीचन्द्र बखशी। पत्र सं० ८ से १७। भा० ११×५ इंच। भाषा—  
हिन्दी। विषय—पूजा। १० काल सं० १९२५ ज्येष्ठ सुदी ५। ले० काल सं० १९३७। पूर्ण। वे० सं० ७७१। क  
भण्डार।

५३१३. प्रति सं० २। पत्र सं० १५। ले० काल ×। वे० सं० ८०४। क भण्डार।

५३१४. सरस्वतीपूजा—पं० बुधजनजी। पत्र सं० ५। भा० ९×४½ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—  
पूजा। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १००६। अ भण्डार।

५३१५. सरस्वतीपूजा.....। पत्र सं० २१। भा० १२×५ इंच। भाषा हिन्दी। विषय—पूजा।  
१० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७०६। च भण्डार।

विशेष—महाराजा माधोसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि की गयी थी।

५३१६. सहस्रकूटजिनालयपूजा.....। पत्र सं० १११। भा० ११½×४½ इंच। भाषा—संस्कृत।  
विषय—पूजा। १० काल ×। ले० काल सं० १९२९। पूर्ण। वे० सं० २१३। ख भण्डार।

विशेष—पं० पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी।



५३१७. सहस्रगुणितपूजा—अ० धर्मकीर्ति । पत्र सं० ६६ । आ० १२३×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ आषाढ सुदी २ । पूर्ण । वै० सं० ५३६ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ५५२ ) भीर है ।

५३१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८२ । ले० काल सं० १६२२ । वै० सं० २५६ । छ मण्डार ।

५३१९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२२ । ले० काल सं० १६६० । वै० सं० ८०६ । छ मण्डार ।

५३२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वै० सं० ६३ । छ मण्डार ।

५३२१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६५ । ले० काल × । वै० सं० ६६ । छ मण्डार ।

विशेष—आचार्य हर्षकीर्ति ने जिहानावाद में प्रतिलिपि कराई थी ।

५३२२. सहस्रगुणितपूजा..... पत्र सं० १३ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ११७ । छ मण्डार ।

५३२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८८ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ३५ । छ मण्डार ।

५३२४. सहस्रनामपूजा—धर्मभूषण । पत्र सं० ६६ । आ० १०<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ३८३ । च मण्डार ।

५३२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ से ६६ । ले० काल सं० १८८५ ज्येष्ठ सुदी ५ । अपूर्ण । वै० सं०

३८५ । च मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में २ अपूर्ण प्रतिष्ठा ( वै० सं० ३८५, ३८६ ) भीर हैं ।

५३२६. सहस्रनामपूजा..... पत्र सं० १३६ से १५८ । आ० १२×५<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३८२ । च मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ३८७ ) भीर है ।

५३२७. सहस्रनामपूजा—चैनसुख । पत्र सं० २२ । आ० १२<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×८<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २२१ । छ मण्डार ।

५३२८. सहस्रनामपूजा..... पत्र सं० १८ । आ० ११×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७०७ । च मण्डार ।

५३२९. सारस्वतयन्त्रपूजा..... पत्र सं० ५ । आ० १०<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५७७ । छ मण्डार ।

५३३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वै० सं० १२२ । छ मण्डार ।

५३३१. सिद्धक्षेत्रपूजा—धानतराय । पत्र सं० २ । प्रा० १३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६१० । ट अण्डार ।

५३३२. सिद्धक्षेत्रपूजा (बृहद् —स्वरूपचन्द्र) । पत्र सं० ५३ । प्रा० ११३×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । १० काल सं० १६१६ कालिक बुदी १३ । ने० काल सं० १६४१ फागुण सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ८६ । ग अण्डार ।

विशेष—घन्त मे मण्डल विधि भी दी हुई है । रामलालजी बज ने प्रतिलिपि की थी । इसे मुगनचन्द्र मंगवान ने चौधरियो के मन्दिर मे बढ़ाया ।

५३३३. सिद्धक्षेत्रपूजा..... । पत्र सं० १३ । प्रा० १३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल सं० १६४४ । पूर्ण । वे० सं० २०४ । छ अण्डार ।

५३३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० २६४ । ज अण्डार ।

५३३५. सिद्धक्षेत्रमहात्म्यपूजा..... । पत्र सं० १२६ । प्रा० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १६४० माघ सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० २२० । ख अण्डार ।

विशेष—प्रतिघायक्षेत्र पूजा भी है ।

५३३६. सिद्धचक्रपूजा (बृहद्)—भ० भानुकीर्ति । पत्र सं० १४३ । प्रा० १०३×५ इंच । भाषा—

संस्कृत । विषय पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १६२२ । वे० सं० १७८ । ख अण्डार ।

५३३७. सिद्धचक्रपूजा (बृहद्)—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ४१ । प्रा० १२×८ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १६७२ । पूर्ण । वे० सं० ७५० । ग अण्डार ।

विशेष—इसी अण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० ७५१ ) भीर है ।

५३३८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० ८४५ । क अण्डार ।

५३३९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४४ । ले० काल × । वे० सं० १२६ । छ अण्डार ।

विशेष—सं० १६६६ फागुण सुदी २ को पुष्पचन्द्र अजमेरा ने संशोधित की । ऐसा अन्तिम पत्र पर लिखा है । इसी अण्डार मे एक प्रति ( वे० सं० २१२ ) भीर ।

५३४०. सिद्धचक्रपूजा—भुतसागर । पत्र सं० ३० से ६० । प्रा० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । धपूर्णा । वे० सं० ८४४ । क अण्डार ।

५३४१. सिद्धचक्रपूजा—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० ६ । प्रा० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६२ । क अण्डार ।

५३४२. सिद्धचक्रपूजा ( वृहद् ) ..... पत्र सं० ३४ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६८७ । क मण्डार ।

५३४३. सिद्धचक्रपूजा..... पत्र सं० ३ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५२६ । अ मण्डार ।

५३४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वै० सं० ४०५ । अ मण्डार ।

५३४५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८६० श्रावण सुदी १८ । वै० सं० २१ ।  
अ मण्डार ।

५३४६. सिद्धचक्रपूजा ( वृहद् )—संतलाल । पत्र सं० १०८ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६८१ । पूर्ण । वै० सं० ७४६ । अ मण्डार ।

विशेष—ईश्वरलाल चादवाड़ ने प्रतिनिधि की थी ।

५३४७. सिद्धचक्रपूजा..... पत्र सं० ११३ । आ० १२×७३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ८४६ । क मण्डार ।

५३४८. सिद्धपूजा—रत्नभूषण । पत्र सं० २ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल सं० १७६० । पूर्ण । वै० सं० २०६० । अ मण्डार ।

विशेष—श्रीरत्नजेब के शासनकाल में संग्रामपुर में प्रतिनिधि हुई थी ।

५३४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । आ० ८३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × ।  
ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७६६ । क मण्डार ।

५३५०. सिद्धपूजा—महा पं० आशाधर । पत्र सं० २ । आ० ११३×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वै० सं० ७६४ । क मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ७६५ ) भी है ।

५३५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १८२३ मंगसिर सुदी ८ । वै० सं० २३३ । अ  
मण्डार ।

विशेष—पूजा के प्रारम्भ में स्थापना नहीं है किन्तु प्रारम्भ में ही जल चढ़ाने का मन्त्र है ।

५३५२. सिद्धपूजा..... पत्र सं० ४ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १६३० । ट मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वै० सं० १६२४ ) भी है ।

४३४३. सिद्धपूजा.....। पत्र सं० ४४। भा० ६×५ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। १० काल ×। ले० काल सं० १६५६। पूर्ण। वै० सं० ७१५। क मण्डार।
४३४४. सीमंघरस्वामीपूजा.....। पत्र सं० ७। भा० ८×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ८५८। क मण्डार।
४३४५. सुखसंपत्तिप्रतोद्यापन—सुरेन्द्रकीर्ति। पत्र सं० ७। भा० ८×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। १० काल सं० १८६६। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १०४१। क मण्डार।
४३४६. सुखसंपत्तिप्रतपूजा—अख्यराम। पत्र सं० ९। भा० १२×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय पूजा। १० काल सं० १८००। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ८०८। क मण्डार।
४३४७. सुगन्धदशमीप्रतोद्यापन.....। पत्र सं० १३। भा० ८×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १११२। क मण्डार।
- विशेष—इसी मण्डार में ७ प्रतियाँ ( वै० सं० १११३, ११२४, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६) धोर हैं।
४३४८. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १६२८। वै० सं० ३०२। क मण्डार।
४३४९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वै० सं० ८६६। क मण्डार।
४३५०. प्रति सं० ४। पत्र सं० १३। ले० काल सं० १६५६ भासोज बुढी ७। वै० सं० २०३४। ट मण्डार।
४३५१. सुपार्वनाथपूजा—रामचन्द्र। पत्र सं० ५। भा० १२×५ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। १० काल। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ७२३। क मण्डार।
४३५२. सूतकर्णाय.....। पत्र सं० २१। भा० ८×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—विधि विधान। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ५। क मण्डार।
- विशेष—सूतक के प्रतिरिक्त जाप्य, इष्ट अनिष्ट विचार, माला करने की विधि आदि भी हैं।
४३५३. प्रति सं० २। पत्र सं० ३२। ले० काल ×। वै० सं० २०६। क मण्डार।
४३५४. सूतकवर्णन.....। पत्र सं० १। भा० १०×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—विधि विधान। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ५४०। क मण्डार।
४३५५. प्रति सं० २। पत्र सं० १। ले० काल सं० १८४५। वै० सं० १२१४। क मण्डार।
- विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वै० सं० २०३२) धोर है।
४३५६. सोनागिरपूजा—आशा। पत्र सं० ८। भा० ५×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। १० काल ×। ले० काल सं० १६३८ फागुन बुढी ७। पूर्ण। वै० सं० ३५६। क मण्डार।

विशेष—पं० गंगाधर सोनागिरि वासी ने प्रतिलिपि की थी ।

५३६७. सोनागिरिपूजा..... पत्र सं० ८ । घा० ८३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ८८५ । कृ भण्डार ।

५३६८. सोलहकारणपूजा—द्यानतराय । पत्र सं० २ । घा० ८×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १३२६ । अ भण्डार ।

५३६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १६३७ । वै० सं० २५ । कृ भण्डार ।

५३७०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वै० सं० ६३ । ग भण्डार ।

५३७१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वै० सं० ३०२ । ज भण्डार ।

विषय—इसके प्रतिरिक्त पञ्चमेश भाषा तथा सोलहकारण संस्कृत पुजायें धीर है ।

इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० १६४ ) धीर है ।

५३७२. सोलहकारणपूजा..... । पत्र सं० १४ । घा० ८×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७५२ । कृ भण्डार ।

५३७३. सोलहकारणसंमेलनविधान—टेकचन्द । पत्र सं० ४८ । घा० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ८८७ । कृ भण्डार ।

५३७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वै० सं० ७२४ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ७२५ ) धीर है ।

५३७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५ । ले० काल × । वै० सं० २०६ । कृ भण्डार ।

५३७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४५ । ले० काल × । वै० सं० २६४ । ज भण्डार ।

५३७७. सौख्यत्रयोद्यापनपूजा—अक्षयराम । पत्र सं० १२ । घा० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय पूजा । १० काल सं० १८२० । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५८६ । अ भण्डार ।

५३७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८६५ चंद्र बुदी ६ । वै० सं० ४२७ । च भण्डार ।

५३७९. स्नपनविधान ..... । पत्र सं० ८ । घा० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—विधान ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४२२ । अ भण्डार ।

५३८०. स्नपनविधि ( वृहद् ) ..... । पत्र सं० २२ । घा० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । १० काल × । ले० काल × । वै० सं० ५७० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रतिमें २ पृष्ठी में त्रिलोकसार पूजा है जो कि अपूर्ण है ।

## गुटका-संग्रह

(शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पाठों की, जयपुर)

५३८१. गुटका सं० १। पत्र सं० २८४। मा० ६×९ इंच। भाषा—हिन्दी संस्कृत। विषय—संग्रह।

ने० कान सं० १८१८ ज्येष्ठ सुदी ६। मयूरती। दशा—सामान्य।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

| विषय-सूची               | कर्त्ता का नाम | भाषा           | विशेष |
|-------------------------|----------------|----------------|-------|
| १. भट्टामिश्रक          | ×              | संस्कृत        | पूर्व |
| २. रत्नत्रयपूजा         | ×              | "              | "     |
| ३. पञ्चमेरूपपूजा        | ×              | "              | "     |
| ४. धनन्तचतुर्वसीपूजा    | ×              | "              | "     |
| ५. पौडमकारणपूजा         | मुमतिमागर      | संस्कृत        | "     |
| ६. दशलक्षराउद्यापनपाठ   | ×              | "              | "     |
| ७. सूर्यप्रतीद्यापनपूजा | श्रद्धाजयसागर  | "              | "     |
| ८. मुनिमुत्रतच्छन्द     | श० प्रभाषन्द   | संस्कृत हिन्दी | "     |

मुनिमुत्रत छन्द लिख्यते—

१२०-१२४

पुष्पापुष्पनिरूपकं गुणनिधि शुद्धवत मुत्रतं

स्याद्वादाभूततपितास्त्रिजनं दुःशान्निधाराधरं ।

क्रोधारण्यधनेजयं धनकरं प्रध्वस्तकर्मारिणं

बंधे तद्गुणसिद्धये हरिमुनं सोमात्मजं सौख्यदं ॥१॥

जलधिसमगभीरं प्रातःतजन्माश्वितीरः

प्रबलधवनवीरः पंचधामुक्तवीरः

हवशिष्यबिकारः सततत्वप्रचारः

स जयति गुणधारः सुजतो विष्णुहारः ॥२॥

भार्या—

त्रिभुवनजनहितकर्ता भर्ता सुपवित्रमुक्तिवरलक्ष्म्याः ।

कन्दर्पदर्पहर्ता मुञ्जतदेवी जयति गुराभर्ता ॥१॥

यो ब्रह्ममौलिसंगतमुकुटमहारत्नरक्तनखनिकरं ।

प्रतिपालितवरवरणं केवलबोधे मंडितमुभयं ॥२॥

तं मुनिमुञ्जतनाथं नत्वा कथयामि तम्य छन्दोहं ।

शृण्वन्तु सकलभग्याः जिनधर्मपराः मौनमंयुक्ताः ॥३॥

भट्टिल्लखंद—

प्रथम कन्याया कहु मनमोहन, मगध मुदेश बने प्रति मोहन ।

राजगेह नयारि वर सुन्दर, मुमित्र भूप तिहां जिसे पुरंदर ॥१॥

चन्द्रमुखीमृगनयनी बाला, तम रागी सोमा मुविशाला ।

पछिमरयणी अतिकूलबाला, स्वप्न मोन देखे गुरामाना ॥२॥

इन्द्रादे से प्रति मु विवधगा, छपान कुमारि मेवे शुभलक्षणा ।

रत्नवृष्टि करे धनद मनोहर, एम छमास गया मुभ मुंलकर ॥३॥

हरिदम्मा भूपति भुवि मंगल, प्राणत स्वयं हबो आश्लषडन ।

श्रावणवदि बीजं गुराधारी, जननी गर्भ रक्षो मुलकारी ॥४॥

भुजङ्गप्रपात—

धरति धनगे पर गर्भभारं न रेखात्रय भ्रममापन्नसारं ।

तदा भागता इन्द्रचन्द्रानरेन्द्रामुरादारणायामा न युक्तः सुभद्रा ॥१॥

पुरं त्रिःपरिव्याखिलं देवसंघा शुद्धं प्रातः सोमित्र कृते यता या ।

स्थित गर्भवासि जिनं निवृत्तकं प्रगम्यादराते गताहिस्वनाक ॥२॥

कुमार्यां हि मेवां प्रकुर्वन्ति गाढं कियन्थीञ्जलदोपसुहृत्पुत्रवाढं ।

वरं पत्रपुत्रं देवानामुत्तुर्णं प्रकीर्णं सितं छत्रकं कुंभं सुपूर्णं ॥३॥

मुरद्रीदवमासे भवसंस्वयित्र लसदरत्नवृष्टि शुभ पुण्यरात्रं ।

जिनं गर्भवासिं विनिर्मुक्तदेहं परे स्तोमि सोमात्मजं मौक्त्यगेहं ॥४॥

भट्टिल्लखन्द—

श्रीजिनवर अवतरणी महिं त्रिभुवन चित्त हवां गुरगता महि ।

घंटा सिंह सख परहारवे, मुरपतिं सहसा करे जय जबरव ॥१॥

बैशाख वदी दसमी जिन जायो, मुरनरवृंद वेगें तब घायो ।

ऐरावत्य आकड पुरंदर, सखीसहित सोहें गुरामंदिर ॥२॥

मोतीरत्नसूक्तं—

तत्र ऐश्वर्या सजकरी, बन्धो सतमुस धारणं भरी ।  
 अस छोटी सताबीस छे भमरी, करे भीत नृत्य बनीये भमरी ॥३॥  
 गज काने छोहें भोवगर्ग भमरी, घण्टा टङ्कार वदि सह भरी ।  
 धासण्डलधं कुशबेसंधरी, उद्धवमंगल गया जिन नयरी ॥  
 राजबसों मलया इन्द्रसह, बाजे वाजिन सुरंग बहु ।  
 धक्के कङ्कू बिनवर लावे सही, इन्द्राणी तब घर मजे गई ॥  
 जिन बालक बीठो निज नयणे, इन्द्राणी बोले वर बयणें ।  
 माया मेसि मुतहि एक कीयो, जिनवर युगतें जड इन्द्र दीयो ॥

इसी प्रकार तप, ज्ञान और मोक्ष कल्याण का वर्णन है । सबसे अधिक जन्म कल्याण का वर्णन है जिसका रचना के आधे से अधिक भाग में वर्णन किया गया है इसमें दत्त, छन्दो के प्रतिरिक्त, लीलावती छन्द, हनुमंतछन्द, दूहा, बंभोग छन्दों को भी प्रयोग हुआ है । अन्त का पाठ इस प्रकार है—

कवस—

बोस धनुष जस देह जहे जिन कक्षप सांछन ।  
 प्रोस सहस्र बरं वर्षं धायु सज्जन मन रञ्जन ॥  
 हरवंशी भुलबीमल, भक्त दारिद्र विहंडन ।  
 मनबांछितदातार, नयरबालोडमृ मडन ॥  
 श्री मूलसंघ संघद तिलक, ज्ञानभूषण भट्टाभरण ।  
 श्रीप्रभाषण्ड सुरिबर नहे, मुनिसुवतमंगलकरण ॥

इति मुनिसुवत छंद मन्मूर्थाय ॥

पत्र १२० पर निम्न प्रशस्ति दी हुई है—

संवत् १८१६ वर्षे शाके १६८४ प्रवर्त्तमाने ज्येष्ठ शुदी ६ सोमवासरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कार-  
 गले श्रीकुंबकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनिन्द तत्पट्टे भ० श्रीदेवेन्द्रनाथि तत्पट्टे भ० श्रीविद्यानिन्द तत्पट्टे भट्टारक श्री  
 मल्लभूषण तत्पट्टे भ० श्रीलक्ष्मीचन्द्र भ० तत्पट्टे श्रीबोरचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषण तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्र तत्पट्टे  
 भ० श्रीबाबीचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीमल्लीचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीमेरुचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीजैनचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीविद्यानिन्द तच्छिष्य  
 शङ्खनेमसागर पठनार्थ । पुष्पार्थ पुस्तक लिखायित श्रीसूर्यपुरे श्रीमादिनाथ चैत्यासये ।



| विषय                            | कर्ता             | भाषा           | विशेष                  |
|---------------------------------|-------------------|----------------|------------------------|
| ९. मातापद्मावतीछन्द             | महीचन्द्र भट्टारक | संस्कृत हिन्दी | १२५-२८                 |
| १०. पार्वतीपूजा                 | ×                 | संस्कृत        |                        |
| ११. कर्मबहनपूजा                 | वादिचन्द्र        | ॥              |                        |
| १२. अनन्तव्रतराम                | ब्रह्मजिनदास      | हिन्दी         |                        |
| १३. अष्टक [पूजा]                | नेमिदत्त          | संस्कृत        | पं० राघव की प्रेरणा से |
| १३. अष्टक                       | ×                 | हिन्दी         | भक्ति पूर्वक दी गई     |
| १५. अन्तरिक्ष पार्वतीपूजा अष्टक | ×                 | संस्कृत        |                        |
| १६. नित्यपूजा                   | ×                 | ॥              |                        |

विशेष—पत्र न० १६८ पर निम्न लेख लिखा हुआ है—

भट्टारक श्री १०८ श्री विद्यानन्दजी सं० १८२१ ता वर्षे साके १९६६ प्रवर्त्तमाने कालिकामासे वृषभपक्षे प्रतिपदादिने रात्रि पहर पाण्डुलोद्देवलोके यथा क्षेत्रे ।

५३८२. गुटका सं० २ । पत्र सं० ६३ । प्रा० ८३×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १८२० । ले० काल सं० १८३५ । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—इस गुटके में बलतराम साह वृत्त मिथ्यात्व लण्डन नाटक है । यह प्रति स्वयं लेखक द्वारा लिखा हुआ है । अन्तिम पृष्ठिका निम्न प्रकार है—

इति श्री मिथ्यात्वलण्डन नाटक सम्पूर्णा । लिखितं बलतराम साह । सं० १८३५ ।

५३८३. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ७५ । प्रा० ४४×४४ इंच । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । विषय—× । ले० काल सं० १६०४ । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—फतेहराज गोदीका ने लिखा था ।

|                     |           |         |       |
|---------------------|-----------|---------|-------|
| १. रसायनविधि        | ×         | हिन्दी  | १-३   |
| २. परमज्योति        | बनारसीदास | ॥       | ५-१२  |
| ३. रत्नशय्यापाठविधि | ×         | संस्कृत | १३-४३ |
| ४. अन्तरायबर्णन     | ×         | हिन्दी  | ४३-४४ |
| ५. मंगलाष्टक        | ×         | संस्कृत | ४५-४६ |
| ६. पूजा             | पद्मनन्दि | ॥       | ५०-५४ |

|                  |   |   |       |
|------------------|---|---|-------|
| ७. शेषपानस्तोत्र | × | ॥ | ५५-५६ |
| ८. पूजा व जयमाल  | × | ॥ | ५६-७५ |

५३८४. गुटका सं० ४ । पत्र सं० २५ । प्रा० ३×२ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।  
दशा-सामान्य ।

विशेष—इस गुटके में ज्वालामालिनीस्तोत्र, अष्टादशसहस्रशीलभेद, षट्शेक्यावर्तन, जैनसंस्थामन्त्र आदि पाठों का संग्रह है ।

५३८५. गुटका सं० ५ । पत्र सं० २३ । प्रा० ८×६ इंच । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—अनुहरिगतक ( नीतिगतक ) हिन्दी अर्थ सहित है ।

५३८६. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २८ । प्रा० ८×६ । भाषा-हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—पूजा एवं शांतिपाठ का संग्रह है ।

५३८७. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ११६ । प्रा० ६×७ इंच । ले० काल १८५८ आसोज बुदी ४  
मनिवार । पूर्ण ।

|  |           |        |        |
|--|-----------|--------|--------|
| १. नाटकसभ्यसार                             | बनारसीदास | हिन्दी | १-६७   |
| २. पद-होत्री म्हारो कंथ<br>चतुर दिलजानी हो | विश्वभूषण | ॥      | ६७     |
| ३. सिन्दूरप्रकरण                           | बनारसीदास | ॥      | ६८-११६ |

५३८८. गुटका सं० ८ । पत्र सं० २१२ । प्रा० ६×६ इञ्च । ले० काल सं० १७६८ । दशा-सामान्य ।

विशेष—पं० धनराज ने लिखवाया था ।

५३८९. गुटका सं० ९ । पत्र सं० ३५ । प्रा० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—जिनदास, नवल आदि के पदों का संग्रह है ।

५३९०. गुटका सं० १० । पत्र सं० १५३ । प्रा० ६×५ इञ्च । ले० काल सं० १९५४ भावण सुदी  
१३ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

|                                    |          |        |   |
|------------------------------------|----------|--------|---|
| १. पद-जिनवाणीमाता दर्शन की बलिहारी | ×        | हिन्दी | १ |
| २. बारहभाषना                       | दीनतराम  | ॥      |   |
| ३. आसोबनापाठ                       | जीहरीलाल | ॥      |   |
| ४. बचलक्षणपूजा                     | भूषणदास  | ॥      |   |

|                                 |           |                |        |
|---------------------------------|-----------|----------------|--------|
| ५. पञ्चमेरु एवं नंदीश्वरपूजा    | द्यानतराय | हिन्दी         | २-१५   |
| ६. तीन चौबीसी के नाम व दर्शनपाठ | ×         | संस्कृत हिन्दी |        |
| ७. परमानन्दस्तोत्र              | बनारसीदास | "              | १      |
| ८. लक्ष्मीस्तोत्र               | द्यानतराय | "              | ६      |
| ९. निर्वाणकाण्डभाषा             | भगवतीदास  | "              | ५-६    |
| १०. तत्त्वार्थसूत्र             | उमास्वामी | "              |        |
| ११. देवशास्त्रगुरुपूजा          | ×         | हिन्दी         |        |
| १२. चौबीस तीर्थङ्करों की पूजा   | ×         | "              | १५३ तक |

५३६१. गुटका सं० ११। पत्र सं० २२२। भा० १०५×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी। ने० काल मं०

१७४६।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

|  |                |             |       |
|--|----------------|-------------|-------|
| १. रामायण महाभारत कथा<br>[४६ प्रश्नों का उत्तर है] | ×              | हिन्दी गद्य | ३-१६  |
| २. कर्मचूरव्रतवेलि                                 | मुनि सकलकीर्ति | "           | १५-१८ |

अथ वेलि लिख्यने—

दीहा—

कर्मचूर व्रत जे कर, जीनवागी तंतमार ।

नरनारि भव भंजन धरे, उतर चौरासी गु पार ॥

कीधी कुरी कुरा भारंभ्यो सकलकीर्ति नाम,

कर्म सेइय कीधी गुणी कोसंबी वसि गाम ॥

नमणी गुरु निरगंध ने, सारद दसगुण पुरे ।

कहो बरत वेलि उदयु करमनेग कर्मचुरे ॥

जानावरण दर्ल साता वेदनी मोह मंदराई ।

अन्हें जीतने चेति होसी, कहायु कर वखरा मुहाई ॥

नाम कर्म पांचमोय कुछुगे आयु भेदो ।

गोय नीच गति पोहो चाहै, अन्तराई भय भेदो ॥

बितामणि मुचित प्रबिलागी, कर्ममेग गुणगाई ॥१॥

दोहा—

एक कर्म को वेदना, मुँजे है सब लोई ।  
नरनारी करि उधरे, चरण गुणसंस्थान संजोई ॥१॥

शक्तिमपाठ— कवित—

सकलकीर्ति मुनि आप सुनत सिटें संताप चौरासी मरि जाई फिर अजर अमर पद पाइये ॥  
जुनी पोषी भई अक्षर बीसी नहीं फेर उतारी बंध छंद कवित बेली बनाई क गाईये ॥  
चंप नेरी चाटमू केते भट्टारक भये साधा पार अहमठि जेहि कर्मचूर बरज नहो है वखाई ध्याइये ॥  
संबत् १७४६ सोमवार ७ करकौबु कर्मचूर ब्रत बैठगौ अमर पद कुरी सोर सीधातंम जाइये ॥

नोट—पाठ एक दम अशुद्ध है । लीपि भी विकृत है ।

|                              |          |         |                       |
|------------------------------|----------|---------|-----------------------|
| २. ऋषिमण्डलमन्त्र            | ×        | संस्कृत | ते० काल १७३६<br>१७-१९ |
| ४. चितामणि पार्श्वनाथस्तोत्र | ×        | ”       | अपूर्णा २०            |
| ५. अंजना को रास              | धर्मभूषण | हिन्दी  | २१-२४                 |

प्रारम्भ—

पहैलो रे अर्हत पाय नमै ।

हरै भव दुख अंजन त्वं भगवंत कर्म कायातना का पसी ।

पाप ना प्रभव असि सौ अंत तौ रास भरो इति अंजना

तै तौ मंयम साधि न गई स्वर लोक तौ सती न सरोमणि बंदीये ॥१॥

बसं विधाधर अपनी मय, नामै तीन वनंधि संपजे ।

भाव करंता हौ भवदुख जाय, सतो न सरोमणि बंदये । २॥

ब्राह्मी नै सुंदरी बंदये, राजा हौ रसभ तरौ घर द्यैय ।

बाल परौ तप बन गई काम ना भोगन बंछीय जे हतौ ॥ सती म ..... ३ ॥

मेघ सेनापति नै अरुमारि अंजना सो मदलसा ।

त्यारे न कोने सीयाल लगार तो ... ॥ सती न " ..... ४ ॥

पंचसै किसन कुमारिका, ईनि बाल कुबारी सामी रे पावै ।

जावव जग ज्ञानी करि, द्वारिका रहन मुनि तप जाय ।

हरी तनी अंजना बंदीय जिने राग छोडी मन में अरघौ बैराग तो ॥ सती न ..... ५ ॥

## अस्तिमपाठ—

वंस विद्याधरे वरुणि मात, नामे नवनिधि पावसो ।  
 भाव करंता हो भव दुख जायतो, साती न सरोमणि बंदीये ॥ ५८ ॥  
 इम गावे घर्मभूषण रास, रत्नमाल गुंधो रचि रास ।  
 सर्व पंढमिलि मंगल धयो, कहे ता रास ऊपजे रस बिलास ॥  
 डाल भवन केरी इम भरो, कंठ बिना राग किम होई ।  
 बुधि बिना ज्ञान नविसीई, गुरु बिना मारग कीम पानी सी ।  
 दीपक बिना मंदर अघकार, देवभक्ति भाव बिना सब द्वार तो ॥५९॥  
 रस बिना स्वाद न ऊपजे, तिम तिम मति वर्षे देव गुरु पसाव ।  
 लिमा विन सील करे कुल हाणि, निर्मल भाव राखो सदा ।  
 केतन कलक भ्रानि कुल जाय, कुमति विनास निर्मल भावसू ।  
 ते समभो सबही नरनारि, ग्रहंत बिना दुर्लभ सरावक भवतार ।  
 उहि समता भावसूं स्थोपुरवास, एह कथी सब मंगल करो ॥  
 इति श्री भ्रंजनारास सती मुंदरी हनुमंत प्रसादान् संपूरण ॥

स्वस्ति श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीजगन्कीर्ति तः३४० भ०  
 श्रीदेवेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे भ० श्रीमहेन्द्रकीर्ति तस्य भ० श्रीक्षेमेन्द्रकीर्ति तस्थोपदेश गुणकीर्तिना इत्यादि तन्मध्ये पंडित  
 कुस्वामि लिखामि बोराव नगरे मुथाने श्रीमहाबीरबैत्यालये अमुक थावके सर्व वधेरवान ज्ञात बुधिति यमरात रहा  
 श्रीबुधनाथ यात्रा निमित्त गवन उपदेश मासोत्तममासे शुभे शुक्रवदे आसोज वदी ३ दोतवार संवत् १८२० शानिवाहने  
 १६७६ शुभंमस्तु ।

|                          |   |         |  |
|--------------------------|---|---------|--|
| ६. न्हवणनिधि             | × | संस्कृत | ले० काल १८२० आसोज वदी ३                    |
| ७. छियालीसगुण            | × | हिन्दी  |  |
| ८.                       | × | „       | पृष्ठ ३६वें पर चौबीसवें तीर्थङ्करोके चित्र |
| ९. चौबीस तीर्थङ्कर परिचय | × | हिन्दी  | ३६-५०                                      |

विशेष—पत्र ४०वें पर भी एक चित्र है सं० १८२० मे पं० खुनालचन्द ने बीराठ मे प्रतिलिपि की थी ।

|                         |    |         |        |       |
|-------------------------|----|---------|--------|-------|
| १०. अविध्यदत्तपञ्चमीकथा | ब० | रायमल्ल | हिन्दी | ४१-८१ |
|-------------------------|----|---------|--------|-------|

रचनाकाल सं० १६३३ पृष्ठ ५० पर रेखाचित्र ले० काल सं० १८२१ बोराव ( बोराज ) मे खुनालचन्द  
 ने प्रतिलिपि की थी । पत्र ८२ पर तार्थङ्करो के ३ चित्र हैं ।

|                         |                |         |                          |
|-------------------------|----------------|---------|--------------------------|
| ११. हनुमंतकथा           | ब्रह्म रायमल्ल | हिन्दी  | ८२-१०६                   |
| १२. बीस बिरहमामपूजा     | हर्षकीर्ति     | "       | ११०                      |
| १३. निर्घण्टिकाष्टभाषा  | भगवतीदास       | "       | १११                      |
| १४. सरस्वतीत्रयमाला     | ज्ञानभूषण      | संस्कृत | ११२                      |
| १५. धर्मविकपाठ          | ×              | "       | ११२                      |
| १६. रविवतकथा            | भाउ            | हिन्दी  | ११२-१२१                  |
| १७. चिन्तामणिलालन       | ×              | संस्कृत | मे० काल १८२१ १२२         |
| १८. प्रद्युम्नकुमाररासो | शहारायमल्ल     | हिन्दी  | १२३-१५१                  |
|                         |                |         | १० काल १६२८ मे० काल १८११ |
| १९. श्रुतपूजा           | ×              | संस्कृत | १५२                      |
| २०. विद्यापहारस्तोत्र   | धनञ्जय         | "       | १५३-१५६                  |
| २१. मन्दूरप्रकरण        | जनारसीदास      | हिन्दी  | १५७-१६६                  |
| २२. पूजासंग्रह          | ×              | "       | १६७-१७२                  |
| २३. कल्याणमन्दिरस्तोत्र | कुमुदचन्द्र    | संस्कृत | १८३                      |
| २४. पानाकेवली           | ×              | हिन्दी  | १८४-२१७                  |
| २५. पञ्चकन्याशकपाठ      | रूपचन्द्र      | "       | २१७-२२२                  |

विशेष—कई जगह पत्रों के दोनों धोर मुन्दर बेलें हैं ।

५२६२. गुटका सं० १२ । पत्र सं० १०६ । घा० १०२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. यज्ञ की सामघी का व्यौरा × हिन्दी १

विशेष—( अथ जागी की मोजे सिमरिया में प्र० देवाराज नै ताकी सामा झाई संख्या १७६७ माह सुदी पूर्णिमा पुरानी पोषी में से उतारी । पोषी जीरण होगई तब उतरी । सब बीजों का निरल भी दिया हुआ है ।

२. यज्ञमहिमा × हिन्दी २

विशेष—मोजे सिमरिया में माह सुदी १५ सं० १७६७ में यज्ञ किया उसका परिचय है । सिमरिया में कोहान वंश के राजा श्रीराज थे । मावाराज वीरान के पुत्र देवाराज थे । यज्ञाचार्य मोरेना के पं० टेकचन्द थे । यह यज्ञ सात दिन तक चला था ।

३. कर्मविपाक

×

संस्कृत

३-११

विशेष—ब्रह्मा नारद संबाद मे मे लिया गया है । तीन अध्याय है ।

४. आदीश्वर व। समवशरण

×

हिन्दी १६६७ कातिक सुदी

१२-१६

आदीश्वर को समोशरण—आदिभाग—

गुर गनर्वा न मन ध्याऊं, चित चरन सरन ल्याउ ।

मति मांनि लेउ ब्रैसी, मुनि मांनि लौह जैसी ॥१॥

आदीश्वर गुगु गाऊं, वरु साध सगु (र) पाउं ।

चारित्र जिनैस लोया, भय को राखु दीया ॥२॥

तजि राज होइ भिलारी, जिन मोन बरत धारी ।

तव प्रापनी कमाई, भई उदय अंतराई ॥३॥

मुनि भीस काज जावइ, नहि भानु न्याय प्रावट ।

तेइ कन्या सरुषा, काई रतन अति प्रनूया ॥४॥

अन्तिमभाग—

रिचि सहस गुन गावइ, फल बोधि बीहु पावट ।

वर जोडिइ मुख भामइ, प्रभु चरन सरन राखइ ॥७१॥

दोहरा—

समोशरण जिनरायो कौ, गावहि जे तरनादि ।

मनवद्विग फल भागवई, निरि पट्टबहि भयवार ॥७२॥

मोलसह गडमठि वरण, कातिक मुदो बालराज ।

मालकोट मुन यानवर जयउ मिष जिनराज ॥७३॥

इति श्री आदीश्वरजी को समोशरण समाप्त ॥

५. द्वितीय समोशरण

ब्रह्मगुणान

हिन्दी

१४-१६

आदिभाग—

प्रथम मुमरि जिनराज अन्त, मुख निधान मंगल सिध संत

जिनवासी मुमरित सनु बहै, ज्यो पुनछान छिनु कछिनु चहै ॥१॥

गुणद सेवहु ब्रह्म गुलात्, देवसाय्य गुर मंगल माल ।

इनहि मुमरि बल्यो मुखसार, समबचरन जेने बिसतार ॥२॥

सोठ बुधि मन भायां करे, मूरिल तक ध्यान पायो डरे ।

गुनहु भव्य मेरे परवान, समोसरन को करौ बखान ॥३॥

मुम आसन दिड जोग ध्यान, वड्ढ'मान भयो केवल ज्ञान ।  
समोसरण रचना प्रति बनी, परम धरम महिमा प्रति तरणी ॥५॥

अन्तिमभाग—

चल्पी नगर फिरि अपने राइ, चरण-सरण जिन प्रति मुक्त पाई ।  
समोसरणय पूरण मयी, मुनल पंडित पालिय गलि गयी ॥६५॥

दोहरा—

सोरह सैं अठमठि समै, माच दसै सित पक्ष ।  
गुनालब्रह्म अनि गीत गति, जसोनेदि पद सिद्ध ॥६६॥  
गुरदेस हथि कंसपुर, राजा बरुम साहि ।  
गुनालब्रह्म जिन धर्मु जय, उपमा दीजे काहि ॥६७॥

डनि मभोसरन ब्रह्मगुलान कृत संपूर्ण ॥

६. भेमिजी को मगन

जगतभूवरण के निष्प  
विश्वभूषण

हिन्दी

१६-१७

रचना सं० १६६८ श्रावण सुदी ८

१६भाग—

प्रथम जपी परभेछि लो गुर हीयी धरी ।  
सस्वती करहुं प्रणाम कवित्त जिन उच्चरी ॥  
मोरठि देस प्रसिद्ध डारिका प्रति बनी ।  
रबो इन्द्र ने घाई सुरनि मनि बहुकनी ॥  
बहु कनीय मविर चैय लीयो, देखि गुरनर हरषीयो ।  
समुद विजे वर भूप राजा, सक सोभा निरखीयो ॥  
प्रिया जा सिव देवि जानो, रूप भमरो ऊरसा ।  
राति मुंदरि सेन सूती, देखि मुपने षोडसा ॥१॥

अन्तिम भाग—

संवन सोलह सैं अठमठिवा जास्यो ।  
सावन मास प्रसिद्ध अष्टमी मान्यो ॥  
गाऊं सिकंदराबाह यार्थजिन देहुरे ।  
अ.वग कीया सुजान धर्म सौ नेहुरे ॥  
धरे धर्म सौ नेहु प्रति ही देही सबको दान जू ।  
स्थावबाद बानी ताहि मानै करै पंडित मान जू ॥



जनतमूषण भट्टारक जै विश्वमूषण मुनिवर ।

वर नारी मंगलचार गाये पढत पालिग निस्त ॥

इति नेमिनाथ जू कौ मंगल समाप्ता ॥

७. पार्श्वनाथचरित्र

विश्वमूषण

हिन्दी

१७-१९

शक्तिभाग राघुनट—

पारस जिनदेव को मुनहु चरितु मनु लाई ॥ टेक ॥

मनउ सारदा माइ, भजौ मनघर बिलुलाई ।

पारस कथा संबंध, कहौ भाषा सुखलाई ॥

जंबू दक्खिन भरथ मै, नगर पोदना माऊ ।

राजा श्री क्षरिविद जू, सुगतै सुख भवाभः ॥ पारस जिन० ॥

विप्र तहा एकु वमै, पुत्र द्वी राज मुचारा ।

कमठु बडौ विपरीत, विमन सेवे जु अचारा ॥

लघु भेया मरभूति सो, वनुधरि दई ता नाम ।

रति बीडा मेज्या रच्यौ, हो कमठ भाव के धाम ॥ पारस जिन० ॥

कापु कीयौ मरभूति, कहौ मंत्री सो राब्यो ।

सोख दई नही गह्यो काम रस अंतर साब्यो ॥

कमठ त्रियै रस कारने, अमर भूति बाधौ जाई ।

सो मरि वन हाथी भयो, हृषिकि भई त्रिय आड ॥ पारस जिन० ॥

शक्तिमवाठ—

अथधि हेत करि बात सही देवनि तव जानी ।

पदमात्रनि धरगेंद्र छत्र मस्तिग पर तानी ॥

मत्र उपमगु<sup>०</sup> निवारिकै, पार्श्वनाथ जिनंद ।

सकल करम पर जारिकै, भये मुक्ति त्रियचंद ॥ पारस जिन० ॥

मूलसंध पट्ट विश्वमूषण मुनि राई ।

उत्तर देखि पुराण रचि, या वई सुभाई ॥

वसै महाजन लीग जु, दान चतुर्विधि का देत ।

पार्श्वकथा निहचै सुनी, हो मोछि प्राप्ति फल लेत ॥

पारस जिनदेव को, मुनहु चरितु मन लाइ ॥२५॥

इति श्री पार्श्वनाथजी कौ चरितु संपूर्ण ॥

|                        |              |         |   |
|------------------------|--------------|---------|---|
| १. बीरजिसंबनील         | भगौतीदास     | हिन्दी  | १६-२०   |
| २. सम्बन्धानी भनाल     | "            | "       | २०-२१   |
| १०. स्मृत्यभद्रशीलरासो | ×            | "       | २१-२२   |
| ११. पार्ष्वनाथस्तोत्र  | ×            | "       | २२-२३   |
| १२. "                  | धानतराय      | "       | २३  |
| १३. "                  | ×            | संस्कृत | २३  |
| १४. पार्ष्वनाथस्तोत्र  | राजसेन       | "       | २४  |
| १५. "                  | पद्मनन्दि    | "       | २४  |
| १६. हनुमतकथा           | ब्र० रायमल्ल | हिन्दी  | २० काल १६१६ २५-७५<br>मे० काल १८३४ ज्येष्ठ सुदी ३. |
| १७. सीताचरित्र         | ×            | हिन्दी  | अपूर्णा ७७-१०६                                    |

५३६३. गुटका सं० १३। पत्र सं० ३७। भा० ७३×१० इञ्च। ले० काल सं० १८६२ आसोज बुदी.

७। पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—निम्न पूजा पाठो का संग्रह है—

|   |             |                |       |
|---|-------------|----------------|-------|
| १. कल्पामन्दिरस्तोत्रभाषा               | बनारसीदास   | हिन्दी         | पूर्ण |
| २. लक्ष्मीस्तोत्र ( पार्ष्वनाथस्तोत्र ) | पद्मप्रभदेव | संस्कृत        | "     |
| ३. तत्त्वार्थसूत्र                      | उमास्वामी   | "              | "     |
| ४. भक्तान्तरस्तोत्र                     | भा० मानतुंग | "              | "     |
| ५. देवपूजा                              | ×           | हिन्दी संस्कृत | "     |
| ६. सिद्धपूजा                            | ×           | "              | "     |
| ७. बसलक्षरूपपूजा जयमाल                  | ×           | संस्कृत        | "     |
| ८. षोडशकारणपूजा                         | ×           | "              | "     |
| ९. पार्ष्वनाथपूजा                       | ×           | हिन्दी         | "     |
| १०. शांतिपाठ                            | ×           | संस्कृत        | "     |
| ११. सहजनामस्तोत्र                       | पं० आशाधर   | "              | "     |
| १२. पञ्चमेरूपपूजा                       | सूचरयाते    | हिन्दी         | "     |

|                       |          |         |   |
|-----------------------|----------|---------|---|
| १३. प्रष्टाह्निकापूजा | ×        | संस्कृत | " |
| १४. अश्विपैकविधि      | ×        | "       | " |
| १५. निर्वाणकांडभाषा   | भगवतीदास | हिन्दी  | " |
| १६. पञ्चमङ्गल         | रूपचन्द  | "       | " |
| १७. धनन्तपूजा         | ×        | संस्कृत | " |

विशेष—यह पुस्तक सुखलालजी बज के पुत्र मनसुख के पढ़ने के लिए लिखी गई थी ।

५३६४. गुटका नं० १४ । पत्र सं० १३ । पृ० ४×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । पूर्ण । दशा—सामा य ।

विशेष—शारदाष्टक ( हिन्दी ) तथा ८४ आसादनों के नाम हैं ।

५३६५. गुटका नं० १५ । पत्र सं० ४३ । पृ० ५×३१ इंच । भाषा—हिन्दी । ने० काल १८६० । पूर्ण

विशेष—पाठ प्रशुद्ध है—

|   |            |        |       |
|---|------------|--------|-------|
| १. कहज्योजी नेमजीसूँ जाय म्हेतो धाही संग चावां            | ×          | हिन्दी | १     |
| २. हो मुनिबर कब मिलि है उपगारी                            | भागचन्द    | "      | १-२   |
| ३. ध्यावांला हो प्रभु भावसोजी                             | ×          | "      | २-८   |
| ४. प्रभु धाकीजो मूरत मनडो मोहियो                          | ब्रह्मकपूर | "      | ८-६   |
| ५. गरज गरज गहै नवरसै देखी भाई                             | ^          | "      | ६     |
| ६. मान लीज्यो म्हारी झरज रिषम जिनजी                       | ×          | "      | १०    |
| ७. तुम सी रमा विचारी तजि                                  | ×          | "      | ११    |
| ८. कहज्योजी नेमिजीसूँ जाय म्हे तो                         | ×          | "      | १२    |
| ९. मुके तारोजी भाई साइधं                                  | ×          | "      | १३    |
| १०. सबोधपंचासिकाभाषा                                      | बुधचन      | "      | १३-२० |
| ११. कहज्योजी नेमिजीसूँ जाय म्हेतो धांकही संगवालां राजचन्द |            | "      | २१-२३ |
| १२. मान लीज्यो म्हारी धाज रिषम जिनजो                      | ×          | "      | २३    |
| १३. तजिकै गये पीया हसकै तुमसी रमा विचारी                  | ×          | "      | २३-२४ |
| १४. म्हे ध्यावालां हो प्रभु भावसूँ                        | ×          | "      | २४    |
| १५. साबु दिगंबर लगन उर पद नवर भूषणधारी                    | ×          | "      | २५    |

|                           |       |   |       |
|---------------------------|-------|---|-------|
| ११. श्वे निशिविन ध्यावाला | बुधजन | " | २६    |
| १७. वर्धनपाठ              | ×     | " | २६-२७ |
| १८. कवित                  | ×     | " | २८-२९ |
| १९. वारहभवन               | नवल   | " | ३३-३५ |
| २०. विनती                 | ×     | " | ३६-३७ |
| २१. वारहभवन               | दलजो  | " | ३८-३९ |

५३६६. गुटका सं० १६ । पत्र सं० २२६ । घा० ५३×५ इञ्च । ले० काल १७५१ कार्तिक सुदी १ ।

पूर्णा । दशा-सामान्य ।

विशेष—दो गुटकाओं को मिला दिया गया है ।

विषयसूची—

|   |               |                |       |
|---|---------------|----------------|-------|
| १. बृहद्रकन्याग्रह                      | ×             | हिन्दी         | ३-१२  |
| २. मुक्तावलिप्रत की तिथिया              | ×             | "              | १२    |
| ३. भाड़ा देने का मन्त्र                 | ×             | "              | १२-१६ |
| ४. राजा प्रजाको वशमे व रनेका मन्त्र     | ×             | "              | १७-१८ |
| ५. मुर्चांशुओं की जयमाल                 | ब्रह्म जिनदास | "              | २३-२४ |
| ६. दश प्रकार के ब्राह्मण                | ×             | संस्कृत        | २५-२६ |
| ७. सूतकवर्णन (यशस्तिलक से)              | श्रीमदेव      | "              | ३०-३१ |
| ८. वृद्धप्रवेशविचार                     | ×             | "              | ३२    |
| ९. भक्तिनामवर्णन                        | ×             | हिन्दी संस्कृत | ३३-३५ |
| १०. दीपावतारमन्त्र                      | ×             | "              | ३६    |
| ११. काले विष्णुके डङ्कु उतारने का मंत्र | ×             | हिन्दी         | ३८    |

नोट—यहां में फिर सख्या प्रादम्भ होती है ।

|                     |           |         |       |
|---------------------|-----------|---------|-------|
| १२. स्वाध्याय       | ×         | संस्कृत | १-३   |
| १३. तत्त्वार्थसूत्र | बसवस्वामि | "       | १ ३   |
| १४. प्रतिक्रमसुपाठ  | ×         | "       | १९-३७ |
| १५. भक्तिपाठ (सात)  | ×         | "       | ३७-७२ |

|                            |                  |                 |         |
|----------------------------|------------------|-----------------|---------|
| १६. बृहत्सत्र्यं सूक्तोत्र | समन्तभद्राचार्य  | "               | ७३-८६   |
| १७. बलात्कारमरण शुर्वाचलि  | ×                | "               | ८६-९३   |
| १८. श्रावकप्रतिक्रमण       | ×                | प्राकृत संस्कृत | ९४-१०७  |
| १९. श्रुतस्कांध            | ब्रह्म हेमचन्द्र | प्राकृत         | १०७-११८ |
| २०. श्रुतावतार             | श्रीधर           | संस्कृत गद्य    | ११८-१२३ |
| २१. झालोचना                | ×                | प्राकृत         | १२३-१३२ |
| २२. लघु प्रतिक्रमण         | ×                | प्राकृत संस्कृत | १३२-१४९ |
| २३. भक्तामरस्तोत्र         | मानतुंगाचार्य    | "               | १४९-१५५ |
| २४. वंदेता, न की जयमाला    | ×                | संस्कृत         | १५५-१५६ |
| २५. झाराधनासार             | देवनेन           | प्राकृत         | १५६-१६७ |
| २६. संबोधपचासिका           | ×                | "               | १६८-१७२ |
| २७. सिद्धिप्रियस्तोत्र     | देवमन्दि         | संस्कृत         | १७२-१७६ |
| २८. भूगालचौबीसी            | भूपालकवि         | "               | १७७-१८० |
| २९. एकीभावस्तोत्र          | वादिराज          | "               | १८०-१८४ |
| ३०. विषापहारस्तोत्र        | धनञ्जय           | "               | १८५-१८८ |
| ३१. दशलक्षराजयमाल          | प० रङ्गू         | अपभ्रंश         | १८९-१९५ |
| ३२. कल्याणमदिरस्तोत्र      | कुमुदचन्द्र      | संस्कृत         | १९६-२०३ |
| ३३. लघुस्तोत्र             | पद्मप्रभदेव      | "               | २०३-२०४ |
| ३४. मन्त्रादिसंग्रह        | ×                | "               | २०५-२२६ |

प्रशस्ति—संवत् १७५१ वर्षे शाके १६१६ प्रवर्तमाने कालिकमाने शुद्धवदे प्रतिपदा १ तिथी मङ्गलवारं  
 प्राचार्य श्री चारुकीर्ति पं० गगाराम पठनार्थं बाचनार्थं ।

५३६७. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ४०७ । भा० ७५५ इति ।

|                       |   |         |                           |
|-----------------------|---|---------|---------------------------|
| १. अज्ञानसमितितस्वरूप | × | प्राकृत | संस्कृत व्याख्या सहित १-३ |
| २. भयहरस्तोत्रमन्त्र  | × | संस्कृत | ४                         |
| ३. बंधस्थिति          | × | "       | मूलाचार से उद्धृत ५-६     |
| ४. स्वरविचार          | × | "       | ७                         |

|   |                 |                 |                         |
|---|-----------------|-----------------|-------------------------|
| ५. संहति  | ×               | संस्कृत         | ६-११                    |
| ६. मन्त्र   | ×               | "               | १४                      |
| ७. उपवास के दशभेद   | ×               | "               | १५                      |
| ८. फुटकर ज्योतिष पद्य                                     | ×               | "               | १५                      |
| ९. धडाई का खीरा   | ×               | "               | १८                      |
| १०. फुटकर पाठ   | ×               | "               | १८-२०                   |
| ११. पाठसंग्रह   | ×               | संस्कृत प्राकृत | २१-२४                   |
| गौमट्टसार, समयसार, द्रव्यसंग्रह आदि में संगृहीत पाठ हैं । |                 |                 |                         |
| १२. प्रश्नोत्तररत्नमाला                                   | धर्मोपनिषद्     | संस्कृत         | २४-२५                   |
| १३. सज्जनचित्तवस्त्रम्                                    | मल्लिषेयाचार्य  | "               | २६-२८                   |
| १४. गुरुस्थानव्याख्या                                     | ×               | "               | २९-३१                   |
| प्रवचनसार तथा टीका आदि में संगृहीत                        |                 |                 |                         |
| १५. छातीमुल की घोषधि का नुस्खा                            | ×               | हिन्दी          | ३२                      |
| १६. जयमाल ( मालारोहण )                                    | ×               | अपभ्रंश         | ३२-३५                   |
| १७. उपवासविधान  | ×               | हिन्दी          | ३५-३६                   |
| १८. पाठसंग्रह   | ×               | प्राकृत         | ३६-३७                   |
| १९. अन्वयोग्यवच्छेदकद्वित्रिणिका                          | हेमचन्द्राचार्य | संस्कृत         | मन्त्र आदि भी हैं ३८-४० |
| २०. गर्भ कल्याणक क्रिया में भक्तिया                       | ×               | हिन्दी          | ४१                      |
| २१. जिनमहलनामस्तोत्र                                      | जिनसेनाचार्य    | संस्कृत         | ४२-४६                   |
| २२. भक्त्यामरस्तोत्र                                      | मानवुंगाचार्य   | "               | ४६-४७                   |
| २३. बतिभावनाष्टक  | भा० कुंदकुंद    | "               | ४७                      |
| २४. भावनाद्वात्रिणिका                                     | भा० अमितगति     | "               | ४७-४८                   |
| २५. आराधनासार   | देवसेन          | प्राकृत         | ४८-४९                   |
| २६. संबोधपंचासिका   | ×               | अपभ्रंश         | ४९-६०                   |
| २७. तत्त्वार्थसूत्र                                       | उमास्वामि       | संस्कृत         | ६१-६७                   |
| २८. प्रतिक्रमण  | ×               | प्राकृत संस्कृत | ६७-८८                   |
| २९. भक्तिस्तोत्र (आचार्यभक्ति तक)                         | ×               | संस्कृत         | ८९-१०७                  |

| क्र० | स्वयंभूस्तोत्र     | षा० समन्तभद्र | संस्कृत         | १०८-११८ |
|------|--------------------|---------------|-----------------|---------|
| ३१.  | लक्ष्मीस्तोत्र     | पद्मप्रभदेव   | "               | ११८     |
| ३२.  | दर्शनस्तोत्र       | सकलचन्द्र     | "               | ११९     |
| ३३.  | मुद्रभातस्नवन      | ×             | "               | ११९-१२१ |
| ३४.  | दर्शनस्तोत्र       | ×             | प्राकृत         | १२१     |
| ३५.  | बलात्कार गुरावनी   | ×             | संस्कृत         | १२२-२४  |
| ३६.  | परमात्मन्दस्तोत्र  | पूज्यदाद      | "               | १२४-२५  |
| ३७.  | नाममाला            | धनञ्जय        | "               | १२५-१३७ |
| ३८.  | वीतरामस्तोत्र      | पद्मनन्दि     | "               | १३८     |
| ३९.  | कच्छपाष्टकस्तोत्र  | "             | "               | १३९     |
| ४०.  | सिद्धिप्रियस्तोत्र | दत्तनन्दि     | "               | १३९-१४१ |
| ४१.  | समयसारमाथा         | आ० कुन्दकुन्द | "               | १४१     |
| ४२.  | अर्हद्भूतिविधान    | ×             | "               | १४१-१४३ |
| ४३.  | स्वस्वययनविधान     | ×             | "               | १४४-१४६ |
| ४४.  | रत्नत्रयपूजा       | ×             | "               | १४६-१६२ |
| ४५.  | जिनमन्त्र          | ×             | "               | १६२-१६८ |
| ४६.  | कलिकुण्डपूजा       | ×             | "               | १६८-१७१ |
| ४७.  | पांडशकारणपूजा      | ×             | "               | १७२-१७३ |
| ४८.  | दशमक्षणापूजा       | ×             | "               | १७३-१७५ |
| ४९.  | मित्रस्तुति        | ×             | "               | १७५-१७६ |
| ५०.  | मिद्धपूजा          | ×             | "               | १७६-१८० |
| ५१.  | गुह्यमालिका        | श्रीधर        | "               | १८२-१९२ |
| ५२.  | मारसमुच्चय         | कुलभद्र       | "               | १९२-२०६ |
| ५३.  | जाति-गोत्र         | ×             | " ५८ १७ ७७ जाति | २०७-२०८ |
| ५४.  | कुटुम्ब-वर्ग       | ×             | "               | २०९     |
| ५५.  | षोडशकारणपूजा       | ×             | "               | २१०     |

गुटका-संग्रह ]

[ ४७४ ]

|                                  |                  |           |         |
|----------------------------------|------------------|-----------|---------|
| ५६. धीषधियों के मुसले            | ×                | हिन्दी    | २११     |
| ५७. संग्रहसूक्ति                 | ×                | संस्कृत   | २१२     |
| ५८. दीक्षापटल                    | ×                | "         | २१३     |
| ५९. पार्वतीनाथपूजा (मन्त्र सहित) | ×                | "         | २१४     |
| ६०. दीक्षा पटल                   | ×                | "         | २१८     |
| ६१. सरस्वतीस्तोत्र               | ×                | "         | २२३     |
| ६२. क्षेत्रपालस्तोत्र            | ×                | "         | २२३-१२४ |
| ६३. सुभाषितसंग्रह                | ×                | "         | २२५-२२८ |
| ६४. तत्वसार                      | देवसेन           | प्राकृत   | २३१-२३५ |
| ६५. योगसार                       | योगचन्द्र        | संस्कृत   | २३१-२३५ |
| ६६. द्रव्यसंग्रह                 | नेमिचन्द्राचार्य | प्राकृत   | २३६-२३७ |
| ६७. भावकप्रतिक्रमण               | ×                | संस्कृत   | २३७-२४५ |
| ६८. भावनापद्धति                  | पद्यनन्दि        | "         | २४६-२४७ |
| ६९. रत्नत्रयपूजा                 | "                | "         | २४८-२५९ |
| ७०. कल्याणमाला                   | पं० आशाधर        | "         | २५९-२६० |
| ७१. एकीभावस्तोत्र                | बादिराज          | "         | २६०-२६३ |
| ७२. समयसारवृत्ति                 | धमृतचन्द्र मूरि  | "         | २६४-२८५ |
| ७३. परमात्मप्रकाश                | योगेन्द्रदेव     | धयम्भ्रंश | २८६-३०३ |
| ७४. कल्याणमन्दिरस्तोत्र          | कृमुदचन्द्र      | संस्कृत   | ३०४-२०६ |
| ७५. परमेष्ठियों के गुण व प्रतिशय | ×                | प्राकृत   | ३०७     |
| ७६. स्तोत्र                      | पद्यनन्दि        | संस्कृत   | ३०८-३०९ |
| ७७. प्रमाणप्रमेयकलिका            | नरेन्द्रमूरि     | "         | ३१०-३२१ |
| ७८. देवागमस्तोत्र                | धा० समन्तभद्र    | "         | ३२२-३२७ |
| ७९. अकल कुट्टक                   | अष्टाकलकु        | "         | ३२८-३२९ |
| ८०. सुभाषित                      | ×                | "         | ३३०-३३१ |
| ८१. जिनगुणस्तवन                  | ×                | "         | ३३१-३३२ |



|   |                  |                                       |         |
|---|------------------|---------------------------------------|---------|
| ८२. क्रियाकलाप                                | ×                | ”                                     | ३३२-३३४ |
| ८३. संभवनाथपद्धती                             | ×                | अपभ्रंश                               | ३३४-३३७ |
| ८४. स्तोत्र                                   | लक्ष्मीचन्द्रदेव | प्राकृत                               | ३३५-३३६ |
| ८५. स्त्रीशृङ्गारवर्णन                        | ×                | संस्कृत                               | ३३६-३४१ |
| ८६. चतुर्विधतिस्तोत्र                         | माघनन्दि         | ”                                     | ३४२-३४३ |
| ८७. पञ्चनमस्कारस्तोत्र                        | उमास्वामि        | ”                                     | ३४४     |
| ८८. मृत्युमहोत्सव                             | ×                | ”                                     | ३४५     |
| ८९. अनन्तर्गठीवर्णन (मन्त्र सहित)             | ×                | ”                                     | ३४६-३४८ |
| ९०. आयुर्वेद के नुसले                         | ×                | ”                                     | ३४६     |
| ९१. पाठसंग्रह                                 | ×                | ”                                     | ३५०-३५४ |
| ९२. आयुर्वेद नुसला संग्रह एवं मंत्रादि संग्रह | ×                | संस्कृत हिन्दी भोगगत वैद्यक गे मंशुती | ३५७-३८७ |
| ९३. अन्य पाठ                                  | ×                | ”                                     | ३८८-४०७ |

इनके अतिरिक्त निम्नपाठ इस गुटके में और हैं ।

१. कल्याण बडा २. मुनिश्वरोकी जयमाल (ब्रह्म जिनदास) ३. दशप्रकार विप्र (मन्मथपुराणगु कथिते)  
४. मृतकविधि (यद्यस्तिलक चम्पू से) ५. गृहविबलक्षण ६. दोगावतारमन्त्र

५३६८. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ५५ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८०४  
श्रावण बुदी १२ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. जिनराज महिमास्तोत्र × हिन्दी १-३  
२. सतसई विहारीलाल ” ले० काल १७७४ फागुण बुदी १ १-४८  
३. रसकौतुक रास सभा रञ्जन गङ्गादास ” ” १८०४ श्रावण बुदी १२ ४६-५५

दीहा— अथ रस कौतुक लिख्यते—

गंगाधर सेवहु सदा, गाहक रसिक प्रवीन ।

राज सभा रंजन कहत, मन हुलास रस लीन ॥१॥

दंपति रति नैरोग तन, विधा मुघन मुगेह ।

जाँ दिन जाय अर्नंद सौ, जीतव को फन देह ॥२॥

मुंदर पिय मन भावती, भाल भरी सकुमारि ।  
 सोइ नारि सतेवरी, जाकी कोठि ज्वारि ॥३॥  
 हित सौ राज सुता, बिलसि तन न निहारि ।  
 ज्यां हाषां रे वरह ए, पास्यां मैड कारन भारि ॥४॥  
 तरसे हूं परसें नहो, नौडा रहत उदास ।  
 जे सर सूकै भादवै, को सी उन्हालै ग्राम ॥५॥

अन्तिमभाग—

भयये रति पोसति नहो, नाहुरि मिलै बिनु नेह ।  
 श्रीसरि चुक्यो मेहरा, काई वरसि करैह ॥६८॥  
 मुदरो नै खलस्यो कल्यै, श्री हौं फिर ना पैद ।  
 काम सरै दुख बीसरे, वैरी हूवो वैद ॥६९॥  
 मानवतो निस दिन हरे, बोसत खरीबदास ।  
 नदी किनारै क्लखडौ, जब तब होइ विनास ॥१००॥  
 सिव सुखदायक प्रानपति, जरो प्रान को भोग ।  
 नासै देखी क्लखंडां, ना परदेसी लोग ॥१०१॥  
 गंता प्रेम समुद्र है, गाहक बनुर मुजान ।  
 राज सभा इहै, मन हित प्रीति निदान ॥१०२॥

इति श्री गंगाराम कृत रस कोतुक राजसभा रञ्जन समस्या प्रबंध प्रभाव । श्री मितो सावरण वदि १२  
 बुधवार संवत् १८०४ सवाई जयपुरमध्ये लिखी दीवान ताराचन्दजी को पोषी लिखतं माणिकचन्द बज बाचै जीहेने  
 जिना माफिक बंन्या ।

५३६६. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ३६ । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १६३० भाषाठ मुदी १५ ।  
 पूर्ण ।

विशेष—रत्नालकुंवर की बीपई—नखरू कवि कृत है ।

५४००. गुटका सं० २० । पत्र सं० ६८ । आ० ६×३ इञ्च । ले० काल सं० १६६५ ज्येष्ठ बुदी १२ ।  
 पूर्ण । इसा—सामान्य ।

विशेष—महीधर विरचित मन्त्र महीदधि है ।

४५ १. गुटका सं० २१ । पत्र सं० ३१६ । भा० ६×५ इञ्च । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

|                            |                 |         |                  |         |
|----------------------------|-----------------|---------|------------------|---------|
| १. सामायिकपाठ              | ×               | संस्कृत | प्राकृत          | १-२४    |
| २. सिद्ध भक्ति-घादि संग्रह | ×               |         | प्राकृत          | २५-७०   |
| ३. समन्तभद्रस्तुति         | समन्तभद्र       |         | संस्कृत          | ७२      |
| ४. सामायिकपाठ              | ×               |         | प्राकृत          | ७३-८१   |
| ५. सिद्धप्रियस्तोत्र       | देवनन्दि        |         | संस्कृत          | ८२-८६   |
| ६. पार्वनाथ का स्तोत्र     | ×               |         | "                | ९७-१००  |
| ७. चतुर्विंशतिजिनाष्टक     | शुभचन्द्र       |         | "                | १०१-१४६ |
| ८. पञ्चस्तोत्र             | ×               |         | "                | १४७-१५० |
| ९. जिनवरस्तोत्र            | ×               |         | "                | १७०-२०० |
| १०. मुनीश्वरों की जयमाला   | ×               |         | "                | २०१-२५० |
| ११. सक्लीकरणविधान          | ×               |         | "                | २५१-३०० |
| १२. जिनचोबीसभवान्तररास     | विमलन्द्रकीर्ति | हिन्दी  | पद्य पद्य सं० ४८ | ३०१-८   |

भादिभाग—

जिनवर चुबीसइ जगि भानू पाय तर्मा कहु भवहो विचार ।

भाविइ सुणत य सत ॥१॥

यज्ञक्षय राजा प.रा भणोइ, भाग भूमि घाट पगि मुगोइ ।

श्रीधर ईशानि देव ॥२॥

शुचिराज सातयट भवि जागु, अन्धुनेन्द्र सोलम वखागु ।

बखनाभि चन्द्रेश ॥३॥

तर करि सर्वाथ मिद्धि पामी, भव धम्मारम वृढमह स्वामी ।

मुगितई म्या जगनाह ॥४॥

विमलबाहना राजा धरि जायुं, पंचामुत्तरि अहमिन्द्र मुभागुं ।

इशं भवजिन परमपद पास्तू ॥५॥

विमल बाहन राजा धरि जायुं, पंचामुत्तरि अहमिन्द्र बसागुं ।

अजित धमर पद पास्तू ॥६॥

विमल बाह्य राजा धरि सुणीइ, प्रथमश्रीवि ग्रहमिद्र सुमणीइ ।

शंभव जिन भवतार ॥७॥

शान्तिभग—

शान्तिनाथ श्रम्यान भवान्तर, चन्द्रप्रभ भव सात तोहेकर ।

शान्तिनाथ भवपार ॥४५॥

नमिनाथ भवदशा तन्हे जागुं, पार्वनाथ भव दसइ बलागुं ।

महावीर भव तेनीसइ ॥४६॥

प्रजितनाथ जिन श्रादि कही जइ, मठार जितेश्वर हिइ धरीजई ।

त्रिणि त्रिणि भव सही जागु ॥४७॥

जिन बुबीस भवांतर सारो, भगता मुगता पुष्य भवारो ।

श्री विमलेन्द्रकीर्ति इम बोलइ ॥४८॥

इति जिन बुबीस भवान्तर रास समाप्ता ॥

|                               |        |             |         |
|-------------------------------|--------|-------------|---------|
| १३. मानोरसां                  | जिनदास | हिन्दी पद्य | ३०८-३१० |
| १४. नन्वीश्वरपुपराञ्जलि       | ×      | संस्कृत     | ३११-१३  |
| १५. पद-जीवारे जिएवर नाम भजे   | ×      | हिन्दी      | ३१४-१५  |
| १६. पद-जीया प्रभु न मुमरयो रे | ×      | "           | ३१६     |

५४०२. गुटका सं० २२ । पत्र सं० १५४ । मा० ६×५३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-भजन । ले०

काल सं० १८५६ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

|                               |              |   |     |
|-------------------------------|--------------|---|-----|
| १. नेमि दुगल गाऊ वाञ्छित पाऊं | महीचन्द मूरि | हिन्दी  | १   |
|                               |              | बाय नगर मे सं० १८८२ मे पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी । |     |
| २. पार्वनाथजी की निवाणो       | हर्ष         | हिन्दी  | १-६ |
| ३. रे जीव जिनधर्म             | समय सुन्दर   | "   | ६   |
| ४. सुख कायण सुमरो             | ×            | "   | ७   |
| ५. कर जोर रे जीवा जिनजी       | पं० फतेहचन्द | "   | ८   |
| ६. चरण सारण भव श्राद्धो       | "            | "   | ८   |
| ७. स्वत फिरघो भनादिबो रे जीवा | "            | "   | -   |

| क्र. | नाम                          | फतेहचन्द    | हिन्दी | २० काल स० १८५० | २  |
|------|------------------------------|-------------|--------|----------------|----|
| ८.   | जादम जात्र बरणाथ             |             |        |                |    |
| ९.   | दर्शन दुहेलो जी              | "           | "      |                | १० |
| १०.  | उपसेन घर बारणौ जी            | "           | "      |                | ११ |
| ११.  | बारीजी जिनंदजी बारी          | "           | "      |                | १२ |
| १२.  | जामन मरण का                  | "           | "      |                | १३ |
| १३.  | तुम जाय मनावो                | "           | "      |                | १३ |
| १४.  | अब ल्यू' नेमि जिनंदा         | "           | "      |                | १४ |
| १५.  | राज ऋषभ चरण नित बंदिये       | "           | "      |                | १५ |
| १६.  | कर्म भरमाये                  | "           | "      |                | १६ |
| १७.  | प्रधुजी थांके सरणौ भ्राया    | "           | "      |                | १७ |
| १८.  | पार उतारो जिनजी              | "           | "      |                | १७ |
| १९.  | थाकी सांबरी मूरति छवि प्यारी | "           | "      |                | १८ |
| २०.  | तुम जाय मनावो                | "           | "      | मपूर्णा        | १८ |
| २१.  | जिन चरणा बिललाघो             | "           | "      |                | १९ |
| २२.  | म्हारो मन लाप्योजी           | "           | "      |                | १९ |
| २३.  | चञ्चल जीव जरे                | नेमोचन्द    | "      |                | २० |
| २४.  | मो मनरा प्यारा               | मुखदेव      | "      |                | २१ |
| २५.  | घाठ भवारो बाहलो              | खेमचन्द     | "      |                | २२ |
| २६.  | समदविजयजोरो जादुराय          | "           | "      |                | २३ |
| २७.  | नामिजो के नन्दन              | मनसाराम     | "      |                | २३ |
| २८.  | त्रिभुवन गुरु स्वामी         | भूषरदास     | "      |                | २४ |
| २९.  | नाभिराय मोरां देवी           | विजयकीर्ति  | "      |                | २६ |
| ३०.  | वारि २ हो बोमांजी            | जीवणराम     | "      |                | २६ |
| ३१.  | श्री ऋषभेश्वर प्रणमू' पाय    | सदासागर     | "      |                | २७ |
| ३२.  | परम महा उत्कृष्ट आदि सुरि    | अजैराम      | "      |                | २७ |
| ३३.  | वै गुरु मेरे उर वसो          | भूषरदास     | "      |                | २८ |
| ३४.  | करो निज सुखदाई जिनधमं        | त्रिलोककौलि | ४      |                | २९ |
|      |                              |             | "      |                | ३० |

|  |               |        |                          |
|--|---------------|--------|--------------------------|
| ३५. श्रीजिनराज की प्रतिमा बंदी जाम       | जिनोककीर्ति   | हिन्दी | ३१                       |
| ३६. होजी बांकी सांखली सूरत               | पं० फतेहचन्द  | "      | ३२                       |
| ३७. कबही मिलसी हो मुनिबर                 | ×             | "      | ३३                       |
| ३८. नेमीसुर गुह सरस्वती                  | सूरजमल        | "      | ३३                       |
| ३९. श्री जिन तुमसै बीनऊ                  | धरधराज        | "      | ३५                       |
| ४०. समदविजयभीरो नंदको                    | मुनि हीराचन्द | "      | ३५                       |
| ४१. शंभुजारी वासी प्यारो                 | नथविमल        | "      | ३६                       |
| ४२. मन्दिर धाखालां                       | ×             | "      | ३६                       |
| ४३. ध्यान धरघाजी मुनिबर                  | जिनदास        | "      | ३७                       |
| ४४. ज्यारे सोभै राजि                     | निर्मल        | "      | ३८                       |
| ४५. केंसर हे केंसर भीनो म्हारा राज       | ×             | "      | ३९                       |
| ४६. समकित थारी सहलकीजी                   | पुरुषोत्तम    | "      | ४०                       |
| ४७. धवगति मुक्ति जह्री छै रे             | रामचन्द्र     | "      | ४१                       |
| ४८. वधावा                                | "             | "      | ४२                       |
| ४९. श्रीमंदरजी मुणज्यो मोरी बीनती        | गुणचन्द्र     | "      | ४३                       |
| ५०. करकसारी बीनती                        | भगोमाह        | "      | ४४-४५                    |
| मूफ्रा नगर मे सं० १८२६ में रचना हुई थी । |               |        |                          |
| ५१. उपदेशबावनी                           | ×             | हिन्दी | ४५-६१                    |
| ५२. जैनजट्टी देशकी पत्नी                 | मजलमराज       | "      | सं० १८२१ ६२-६६           |
| ५३. ८५ प्रकार के मूखों के भेद            | ×             | "      | ६७-६९                    |
| ५४. रागमाला                              | ×             | "      | ३६ रामनियों के नाम है ७० |
| ५५. प्रात भयो सुसरदेव                    | जगतरामगोदीका  | "      | राग भंके ७०              |
| ५६. जबि २ हो जबि दर्शन काजे              | "             | "      | ७१                       |
| ५७. देवो जिनराज देव सेव                  | "             | "      | ७२                       |
| ५८. महाभीर जिन मुक्ति पधारे              | "             | "      | ७२                       |
| ५९. हमरैतो प्रभु सुरति                   | "             | "      | ७३                       |

|  |                 |              |    |
|--|-----------------|--------------|----|
| ६०. श्रीरिष-जी को ध्यान धरो                  | जगत-राम गोदीका  | हिन्दी       | ७३ |
| ६१. प्रातः प्रथम ही जपो                      | "               | "            | ७४ |
| ६२. जागे श्री नेमिकुमार                      | "               | " राग रामकली | ७४ |
| ६३. प्रभु के दर्शन को मैं आयां               | "               | "            | ७५ |
| ६४. गुरुही भ्रम रोग मिटावे                   | "               | "            | ७५ |
| ६५. झूल कंदरी नेमि पडावे                     | "               | "            | ७५ |
| ६६. निदा तू जागत क्यों नहिरे                 | "               | "            | ७६ |
| ६७. उतो मेरे प्राण को पियारो                 | "               | "            | ७६ |
| ६८. राखोजी जिनराज सरन                        | "               | "            | ७६ |
| ६९. जिनजी से मेरी लगन लगी                    | "               | "            | ७६ |
| ७०. सुनि हूँ अरज तेरे पाप पगो                | "               | "            | ७७ |
| ७१. मेरो कौन गति होमी                        | "               | "            | ७७ |
| ७२. देखारो नेम कैसी रिद्धि पाई               | "               | "            | ७८ |
| ७३. भ्राजि बधाई राजा नाभि के                 | "               | "            | ७८ |
| ७४. बीतराग नाम मुमरि                         | मुनि बिजयकान्ति | "            | ७९ |
| ७५. या चेतन सब बुद्धि गई                     | बनारसीदास       | "            | ७९ |
| ७६. इस नगरी में किस बिध रहना                 | बनारसीदास       | "            | ७९ |
| ७७. मैं पाये तुम त्रिभुवन राय                | हरीसिंह         | "            | ८० |
| ७८. ऋषभप्रजित संभव हरगा                      | भ० विजयकान्ति   | "            | ८० |
| ७९. उठां तेरो मुख देखूँ                      | ब्रह्मटींडर     | "            | ८० |
| ८०. देखारो आदीश्वरस्वामी कैमा ध्यान लगाया है | खुशालचंद        | "            | ८१ |
| ८१. जे जे जे जे जिनराज                       | मालचन्द         | "            | ८१ |
| ८२. प्रभुजी तिहारो कृपा                      | हरीसिंह         | "            | ८१ |
| ८३. धमकि २ घुम तांगड दि दा ना                | रामभगत          | "            | ८२ |
| ८४. विषय त्याग सुभ कारज लागो                 | नवल             | "            | ८२ |
| ८५. छवि जिन देखी देवकी                       | फलेहचन्द        | "            | ८२ |

|   |            |        |    |
|---|------------|--------|----|
| ८६. बेलि प्रभु दरस कील                        | फतेहचन्द   | हिन्दी | ८३ |
| ८७. प्रभु नेयका भजन करि                       | बलतराम     | "      | ८३ |
| ८८. धाजि उदै घर संपदा                         | खेमचन्द    | "      | ८४ |
| ८९. भज धी श्रवण जिनंद                         | शोभाचन्द   | "      | ८४ |
| ९०. मेरे तो योही भाव है                       | ×          | "      | ८४ |
| ९१. मुनिमुवत जिनराज की                        | भानुकीर्ति | "      | ८४ |
| ९२. मारे प्रभु सूं प्रीति लगी                 | दीपचन्द    | "      | ८४ |
| ९३. शीतल गंगादिक जल                           | विजयकीर्ति | "      | ८५ |
| ९४. तुम धातम गुण जानि                         | बनारसीदास  | "      | ८५ |
| ९५. सब स्वार्थ के मीत है                      | ×          | "      | ८५ |
| ९६. तुम जिन झटके रे मन                        | श्रीभूषण   | "      | ८५ |
| ९७. कहा रे भ्रमानी जीवकू'                     | ×          | "      | ८६ |
| ९८. जिन नाम मुमर मन बावरे                     | छानतराम    | "      | ८६ |
| ९९. सहस राम रस पीजये                          | रामदास     | "      | ८६ |
| १००. मुनि मेरी मनसा मालखी                     | ×          | "      | ८६ |
| १०१. बा साधु सनार मे                          | ×          | "      | ८७ |
| १०२. जिनमुद्रा जिन सारसी                      | ×          | "      | ८७ |
| १०३. इणबिधि देव भदेव की मुद्रा लखि लीजे       | ×          | "      | ८७ |
| १०४. विद्यमान जिनसारसी प्रतिमा जिनबरकी        | लालचंद     | "      | ८८ |
| १०५. काया बाडी काठके सीचत सूके भाप मुनिपधतिलक |            | "      | ८८ |
| १०६. ऐसे क्यों प्रभु पाइये                    | ×          | "      | ८९ |
| १०७. ऐसे क्यों प्रभु पाइये                    | ×          | "      | ८९ |
| १०८. ऐसे क्यों प्रभु पाइये सुनि पंडित प्राणी  | ×          | "      | ९० |
| १०९. नेटो बिधा हमारी                          | नयनसुख     | "      | ९० |
| ११०. प्रभुकी जो तुम तारक नाम बरायो            | हरलचन्द    | "      | ९० |
| १११. रे मन बिषयां भूमियो                      | भानुकीर्ति | "      | ९१ |



|                                      |            |        |    |
|--------------------------------------|------------|--------|----|
| ११२. सुभरन ही मे त्यारे              | द्यानतराय  | हिन्दी | ११ |
| ११३. श्रव ले जैनधर्म को सरणो         | ×          | "      | ११ |
| ११४. बैठे वषट्दन्त भूपाल             | द्यानतराय  | "      | ११ |
| ११५. इह सुंदर मूरत पार्व्व की        | ×          | "      | १२ |
| ११६. उठि संबारे कीजिये दरसरा         | ×          | "      | १२ |
| ११७. कौन कुवाण परी रे मना तेरी       | ×          | "      | १२ |
| ११८. राम भरथ ली कहे सुभाय            | द्यानतराय  | "      | १३ |
| ११९. कहे भरतजी मुगिा हो राम          | "          | "      | १३ |
| १२०. मूरति कैसे राजे                 | जगतराम     | "      | १३ |
| १२१. देखो सबि कौन है नेम कुमार       | विजयकीर्ति | "      | १३ |
| १२२. जिनबरजीसूं प्रीति करी रो        | "          | "      | १४ |
| १२३. भोर ही आये प्रभु दर्शन को       | हरसुचन्द   | "      | १४ |
| १२४. जिनेमुरदेव आये करण तुम मेव      | जगतराम     | "      | १४ |
| १२५. ज्यो बने त्यों तारि मोङ्ग       | मुनाबकृष्ण | "      | १४ |
| १२६. हमारो बारि श्री नेमिकुमार       | ×          | "      | १४ |
| १२७. आछे रङ्ग राचे भली भई            | ×          | "      | १५ |
| १२८. एरी बलो प्रभुको दर्श करा        | जगतराम     | "      | १५ |
| १२९. नैना मेरे दर्शन है सुभाय        | ×          | "      | १५ |
| १३०. लागी सामी प्रीति तू सामे        | ×          | "      | १५ |
| १३१. तै तो मेरी मुधि हू न लई         | ×          | "      | १५ |
| १३२. मानो मैं तो शिव सिधि लाई        | ×          | "      | १६ |
| १३३. जानीयें तो जानी तेरे मनकी कहानी | विजयकीर्ति | "      | १६ |
| १३४. नयन लगे मेरे नयन नगे            | ×          | "      | १६ |
| १३५. मुम्भरै महारि करो महाराज        | विजयकीर्ति | "      | १६ |
| १३६. चेतन चेत निज घट माहि            | "          | "      | १७ |
| १३७. पिव बिन पल छिन वरस बिहात        | "          | "      | १७ |

|  |           |        |     |
|--|-----------|--------|-----|
| १३८. अजित जिन सरण तुम्हारी               | मानुकीति  | हिन्दी | ६७  |
| १३९. तेरी मूर्ति रूप बनी                 | रूपचन्द   | "      | ६७  |
| १४०. अघिर नरमब जागिरे                    | विजयकीति  | "      | ६८  |
| १४१. हम हूँ श्रीमहावीर                   | "         | "      | ६८  |
| १४२. भलैयल भासकली मुझ धाज                | "         | "      | ६८  |
| १४३. कहाँ लो दास तेरी पूज करे            | "         | "      | ६८  |
| १४४. भाज ऋषभ धरि जावे                    | "         | "      | ६९  |
| १४५. प्रात भयो बसि जाऊँ                  | "         | "      | ६९  |
| १४६. जागो जागोजी जागो                    | "         | "      | ६९  |
| १४७. प्रात समै उठि जिन नाम लीजै          | हर्षचन्द  | "      | ६९  |
| १४८. ऐमे जिनबर मे मेरे मन बिलसयो         | अनन्तकीति | "      | १०० |
| १४९. भायो सरण तुम्हारी                   | ×         | "      | "   |
| १५०. सरण तिहारी भायो प्रभु मैं           | अक्षयराम  | "      | "   |
| १५१. बीस तीर्थङ्कर प्रात सभारो           | विजयकीति  | "      | १०१ |
| १५२. कहिये दीनदयाल प्रभु तुम             | धानतराय   | "      | "   |
| १५३. म्हारे प्रकटे देब निरङ्गन           | बनारसीदास | "      | "   |
| १५४. हूँ सरणगत तोरी रे                   | ×         | "      | "   |
| १५५. प्रभु मेरे देखत आनन्द भये           | जगतराम    | "      | १०२ |
| १५६. जीवडा नू जागिने प्यारा समकित महलमें | हरीसिंह   | "      | "   |
| १५७. घोर घटाकरि भायोरी जलधर              | अयकीति    | "      | "   |
| १५८. कौन दिखसूँ भायो रे बनधर             | ×         | "      | "   |
| १५९. सुमति जिनंद गुणमाला                 | गुणचन्द   | "      | १०३ |
| १६०. जिन बादल अडि भायो हूँ जगमे          | "         | "      | "   |
| १६१. प्रभु हम चरणन सरन करी               | ऋषभहरी    | "      | "   |
| १६२. दिन २ देही होत पुरानी               | जनमन      | "      | "   |
| १६३. सुख मेरे बरसत ज्ञान करी             | हरलचन्द   | "      | १०४ |

|                                   |            |        |     |
|-----------------------------------|------------|--------|-----|
| १६४. क्या सोचत प्रति भारी रे मन   | द्यानतराय  | हिन्दी | १०४ |
| १६५. समकित उल्लम भाई जगतमे        | "          | "      | "   |
| १६६. रे मेरे घटज्ञान घनागम छायो   | "          | "      | १०५ |
| १६७. ज्ञान सरोवर सोइ हो भविजन     | "          | "      | "   |
| १६८. हो परमगुरु बरसत ज्ञानभरी     | "          | "      | "   |
| १६९ उ न ।। । जिन दर्शन की नेम     | देवनेन     | "      | "   |
| १७०. मेरे धव घुफ है प्रभु ते बकसो | हर्षकीर्ति | "      | १०६ |
| १७१. बनहारो खुदा के वन्दे         | जानि मोहमद | "      | "   |
| १७२. मै तो तेरी आज महिमा जानी     | भूधरदास    | "      | "   |
| १७३. देखोरी आज नेमोगुर मुनि       | ×          | "      | "   |
| १७४. कहारो कहु कहु कहत न धावै     | द्यानतराय  | "      | १०७ |
| १७५. रे मन करि सदा संतोष          | बना-सीदास  | "      | "   |
| १७६. मेरी २ करता जनम गयो रे       | रूचन्द     | "      | "   |
| १७७. देह बुढाना रे मै जानी        | विजयकीर्ति | "      | "   |
| १७८. साधो लं ज्यो मुमति भकेली     | बनारसीदास  | "      | १०८ |
| १७९. तनिक त्रिया जग               | विजयकीर्ति | "      | "   |
| १८०. तन धन जाबन मान जगन मे        | ×          | "      | "   |
| १८१. देख्या बन मे ठाडो वीर        | भूधरदास    | "      | १०९ |
| १८२. चेतन नेकु न तोहि संभार       | बनारसीदास  | "      | "   |
| १८३. लागि रह्योरे धरे             | बसतराम     | "      | "   |
| १८४. लागि रह्यो जीव परभाव मे      | ×          | "      | "   |
| १८५. हुम लागे आलमराम सो           | द्यानतराय  | "      | ११० |
| १८६. निरन्तर ध्याऊ नेमि जिनंद     | विजयकीर्ति | "      | "   |
| १८७. कित गयोरे पंथो बोल ता        | भूधरदास    | "      | "   |
| १८८. हम बैठे आनी मान मे           | बनारसीदास  | "      | "   |
| १८९. बुविधा कब जैहैमा             | ×          | "      | १११ |

|                                   |               |            |     |
|-----------------------------------|---------------|------------|-----|
| १९०. जयत में सो देवन को देख       | बनारसीदास     | हिन्दी     | १११ |
| १९१. मन लाग्यो श्री नवकारसू'      | गुणबन्द       | "          | "   |
| १९२. बेलन धब खोजिये               | "             | राय सारङ्ग | ११२ |
| १९३. धामे जिनवर मनके आवतें        | राजसिंह       | "          | "   |
| १९४. कतो नाभि कंबरजी को धारनी     | लालचन्द       | "          | "   |
| १९५. री भांको वेद रटत ब्रह्मा रटत | नन्ददास       | "          | ११३ |
| १९६. तें नरभव पाय कहा कियो        | रूपचन्द       | "          | "   |
| १९७. धंखिया जिन दर्शन की प्यासी   | ×             | "          | "   |
| १९८. बलि जइये नेमि जिनवकी         | भाउ           | "          | "   |
| १९९. सब स्वारथ के विरोग लोग       | विजयकीर्ति    | "          | ११४ |
| २००. मुक्तागिरी बंदन जइये री      | देवेन्द्रभूषण | "          | "   |

स० १८२१ मे विजयकीर्ति ने मुक्तागिरी की बंदना की थी।

|                                 |            |        |     |
|---------------------------------|------------|--------|-----|
| २०१. उमाहां लाग रह्यो दरशन को   | जयतराम     | हिन्दी | ११४ |
| २०२. नाभि के नद चरण रज वदी      | बिसनदास    | "      | "   |
| २०३. लाग्यो भालमराम सो नेह      | धानतराय    | "      | "   |
| २०४. धनि मेरी धाजको घरी         | ×          | "      | ११५ |
| २०५. मेरो मन बम कीनो जिनराज     | चन्द       | "      | "   |
| २०६. धनि वो पीव धनि वा प्यारी   | ब्रह्मदयाल | "      | "   |
| २०७. धाज में नीके दर्शन पायो    | कर्मचन्द   | "      | "   |
| २०८. देखो भाई माया लागत प्यारी  | ×          | "      | ११६ |
| २०९. कलिबुध में ऐमे ही दिन जाये | हर्षकीर्ति | "      | "   |
| २१०. श्रीनेमि बले राबुल तजके    | ×          | "      | "   |
| २११. नेमि कंबर वर कीद बिराजे    | ×          | "      | ११७ |
| २१२. तेइ बड़भागी तेइ बड़भागी    | सुंदरभूषण  | "      | "   |
| २१३. धरे मन के के बर समभायो     | ×          | "      | "   |
| २१४. कब मिलहो नेम प्यारे        | विहारीदास  | "      | "   |

|   | सकलकीर्ति    | हिन्दी | ११८ |
|---|--------------|--------|-----|
| २१५. नेमिजिनंद बर्नन काँ                      |              |        |     |
| २१६. श्रब छात्रको दाव बन्यो है भजले श्रीभगवान | ×            | "      | "   |
| २१७. रे मन जायगी कित ठौर                      | ×            | "      | "   |
| २१८. निश्चय होणहार सो होय                     | ×            | "      | "   |
| २१९. समझ नर जीवन धोरो                         | रूपचन्द      | "      | "   |
| २२०. लग गई लगन हमारी                          | जगतराम       | "      | ११९ |
| २२१. धरे तो को कैसे २ कह समभावे               | चैन विजय     | "      | "   |
| २२२. माधुरी जैनबाणी                           | जगतराम       | "      | "   |
| २२३. हम प्राये है जिनराज तोरे बन्दन काँ       | द्यानतराय    | "      | "   |
| २२४. मन अटकयो रं. अटकयो                       | धर्मपाल      | "      | "   |
| २२५. जैन धर्म नही कीना वैरन देही पापा         | ब्रह्मजिनदास | "      | १२० |
| २२६. इन नैनों दा यही मुभाव                    | "            | "      | "   |
| २२७. नैना मफल भयो जिन दरसन पायो               | रामदास       | "      | "   |
| २२८. सब परि करम है परधान                      | रूपचन्द      | "      | "   |
| २२९. सब परि बल चेत जान                        | हरिकीर्ति    | "      | "   |
| २३०. रे मन जायगी कित ठौर                      | जगतराम       | "      | १२१ |
| २३१. मुनि मन नेमजी के वैन                     | द्यानतराय    | "      | "   |
| २३२. तनक ताहि है री ताहि आपनो दरस             | जगतराम       | "      | "   |
| २३३. चलत प्राण क्यों रोयेरी काया              | ×            | "      | "   |
| २३४. बाजत रंग मुदग रसाला                      | जयकीर्ति     | "      | "   |
| २३५. श्रब तुम जागो चेतनराया                   | गुणचन्द      | "      | १२२ |
| २३६. कैसा ध्यान धरया है                       | जगतराम       | "      | "   |
| २३७. करि रे अ तम हित करि नै                   | द्यानतराय    | "      | "   |
| २३८. साहिब खेलत है चौगान                      | नरपाल        | "      | "   |
| २३९. देव मोरा हो ऋषभजी                        | ममयमुन्दर    | "      | १२३ |
| २४०. बंदी चेरी हो पिया मै                     | द्यानतराय    | "      | "   |

|  |            |        |     |
|--|------------|--------|-----|
| २४१. मैं बंदा तेरा ही स्वामी                     | द्यानतराय  | हिन्दी | १२३ |
| २४२. जै जै हो स्वामी जिनराव                      | रूपचन्द    | "      | "   |
| २४३. तुम ज्ञान बिम्बो फूली वसंत                  | द्यानतराय  | "      | १२४ |
| २४४. नैननि ऐसी बानि परि गई                       | जगताराम    | "      | "   |
| २४५. लागि लौ नाबिनंदन स्वी                       | भूषरदास    | "      | "   |
| २४६. हम धातम को पहिचाना है                       | द्यानतराय  | "      | "   |
| २४७. कौन सयान रन कीन्होरे जीव                    | जगताराम    | "      | "   |
| २४८. निपट हो कठिन हेरी                           | विजयकीर्ति | "      | "   |
| २४९. ही जो प्रभु दीनदयाल मैं बंदा तेरा           | अक्षयाराम  | "      | १२५ |
| २५०. जिनवाग्नी दरबाब मन मेरा                     | गुराचन्द्र | "      | "   |
| २५१. मनहु महागज राज प्रभु                        | "          | "      | "   |
| ५२ इन्द्रिय ऊपर असवार चेतन                       | "          | "      | "   |
| २५३. धारसी देखत मोहि धारसी लागी                  | ममयमुन्दर  | "      | १२६ |
| २५४. काँके गढ फौज चढी है                         | ×          | "      | "   |
| २५५. दरवाजे बंदा खोलि खानि                       | अमृतचन्द्र | "      | "   |
| २५६. चेति रे हित चेति चेति                       | द्यानतराय  | "      | "   |
| २५७. चितामणि स्वामी सोचा साहब मेरा               | बनारमोदास  | "      | "   |
| २५९. मुनि मामा ठगिनी तैं सब ठगि न्याया           | भूषरदास    | "      | १२७ |
| २५९. बलि परसें श्री गिस्वरममेद गिरिरी            | ×          | "      | "   |
| २६०. जिन गुण गावो रो                             | ×          | "      | "   |
| २६१. बीतराग तेरी मोहिनी मूरत                     | विजयकीर्ति | "      | "   |
| २६२. प्रभु सुमरन की या विरियां                   | "          | "      | १२८ |
| २६३. किये धाराधना तेरी                           | नवल        | "      | "   |
| २६४. षडो धन धाजकी ये ही                          | नवल        | "      | "   |
| २६५. मैया अपराध क्या किया                        | विजयकीर्ति | "      | १२९ |
| २६६. तजिके गये पीव हमको तक्रसोर क्या विचारी, नवल | "          | "      | "   |

|  |            |            |
|--|------------|------------|
| २६७. मैया री गिरि जानेदे मोहि नेमजीसू' काम है, श्रीराम | "          | १२६        |
| २६८. नेम व्याहनकू' छाया नेम सेहरा बंधाया विनोदीलान     | "          | १३०        |
| २६९. धन्य तुम धन्य तुम पतित पावन                       | ×          | १३१        |
| २७०. चेतन नाडी भूलिये                                  | नवल        | "          |
| २७१. ग्यारो आ महावीर मोकू' दीन जानिके सवाईराम          | "          | "          |
| २७२. मेरो मन बस कोन्हा महावीर (चाधनपुरके) हर्षकीति     | "          | "          |
| २७३. राघो सीता चनहु गेह                                | छानतराय    | "          |
| २७४. कह सीताजी मुनि रामचन्द्र                          | "          | १३२        |
| २७५. नहि धाडा हो जिनराज नाम                            | हर्षकीति   | "          |
| २७६. देवगुरु पत्रिचान वदे                              | ×          | "          |
| २७७. नेमि जिनद गिरनेरया                                | जीवराम     | १३३        |
| २७८. क्या ररदमी का पनिपारो                             | हर्षकीति   | हिन्दी १३३ |
| २७९. चेतन मान नी नाडो तिया                             | छानतराय    | "          |
| २८०. मावरी भूरत घेरे मन बसी है माई                     | नवल        | "          |
| २८१. धायो रे बुडारो बेरी                               | भूधरदास    | "          |
| २८२. माईबा धा जीवनडो ध्यारो                            | जिनहरा     | " १३४      |
| २८३. पच महाबनधारा                                      | विश्वनासिह | "          |
| २८४. तेगी बनिहारो हा जिनराज                            | ×          | "          |
| २८५. देव्या दुंनया बिच वे काई धत्रब लमाशा, भूधरदास     | "          | १३५        |
| २८६. घटके नेता नहो बहैया                               | नवल        | "          |
| २८७. कला जिनददिये ग्री मन्ना                           | छानतराय    | "          |
| २८८. जगतनन्दन गग नायक त्रादो—वसि                       | ×          | "          |
| २८९. प्राछिन गदिय मानु नेमजी ध्यारो धकिया राजाराम      | "          | १३६        |
| २९०. हाजा डक ध्यान संतजी का घटना                       | हृयराम     | "          |
| २९१. भला ज्ञा माडे माइ हो                              | ×          | "          |
| २९२. नू कड़ा भूलो, नू कड़ा भूलो अजाना रे प्राणो        | कनाशकीदास  | "          |

|   |                                     |                 |        |                    |
|---|-------------------------------------|-----------------|--------|--------------------|
| २६३.  | होजी हो सुषातम एह निज पद भूलि रह्या | ×               | हिन्दी | १३६                |
| २६४.  | मुनि कनक कीर्ति की जकड़ी            | मोतीराम         | "      | १३७                |
| रचना काल सं० १८५३ लेखन काल संवत् १८५६ नागौर मे पं० रामकन्द ने लिपि की । |                                     |                 |        |                    |
| २६५.  | श्रीक विचार                         | ×               | हिन्दी | ले० काल १८५७ १३७   |
| २६६.  | मांवरिया झरज सुनो मुझ दीन की हो     | पं० खेमचंद      | हिन्दी | १३८                |
| २६७.  | चांबलेटी मे प्रभुजी राजिया          | "               | "      | "                  |
| २६८.  | ज्यो जानत प्रभु जोग धरपो है         | चन्द्रभान       | "      | "                  |
| २६९.  | भादिनाथ की विनती                    | मुनि कनक कीर्ति | "      | २० काल १८५६ १३९-४० |
| ३००.  | पावर्ननाथ की धारती                  | "               | "      | १४०                |
| ३०१.  | नगरों की वमायत का संबन्धवार विवरण   | "               | "      | १४१                |

संवत् ११११ नागौर मडाणो ब्राह्मा तीज रै दिन ।

- ॥ ६०९ दिल्ली बसाई अमंगपाल तुंबर वैशाल सुदी १२ भीम ।
- ॥ १६१२ अरुबर पातथाह धामरो बसायो ।
- ॥ ७३१ राजा भोज उंजणी बसाई ।
- ॥ १४०७ अहमदाबाद अहमद पातसाह बसाई ।
- ॥ १५१५ राजा जोधे जोधपुर बसायो जेठ सुदी ११ ।
- ॥ १५४५ बीकानेर राव बीकै बसाई ।
- ॥ १५०० उदयपुर राणो उदयसिंह बसाई ।
- ॥ १४४५ राव हमीर न रावत फलोधी बसाई ।
- ॥ १०७७ राजा भोज रै बेटे वीर नारायण सेवाणो बसायो ।
- ॥ १५६६ रावल बीदै महेवो बसायो ।
- ॥ १२१२ भाटी जेते जैसलमेर बसायो सां ( वन ) सुदी १२ रवो ।
- ॥ ११०० पवार नाहरराव मंडोवर बसायो ।
- ॥ १६११ राव मालवे माल कोट करायो ।
- ॥ १५१८ राव जोधमलत मेहतो बसायो ।
- ॥ १७८३ राजा जैसिंह जैपुर बसायो कछाने ।



- संवत् १३०० जालौर सोनडार बसाई ।
- ” १७१४ श्रीरंगसाह पातसाह श्रीरंगाबाद बसायो ।
- ” १३३७ पातसाह अलावद्दीन लोदी वीरमदे काम आयो ।
- ” ६०२ अणहल गुवाल पाटण बसाई वैसाख सुदी ३ ।
- ” २०२ ( १२०२ ) ? राव अजेपाल पवार अजमेर बसाई ।
- ” ११४८ सिधराव जैसिह देहो पाटणा में ।
- ” १४५२ देवडो सिरोही बसाई ।
- ” १६१६ पातसाह अकबर मुलतान लीयो ।
- ” १५६६ रावजी तैतवो नगर बसायो ।
- ” ११८१ फलोधी पारसनायजी ।
- ” १६२६ पातसाह अकबर अहमदाबाद लोधी ।
- ” १५६६ राव मालदे बीकानेर लोधी मास २ रहो राव जैतमो ग्राम आयो ।
- ” १६६६ राव किसनसिह किशनगड बसायो ।
- ” १६१६ मालपुरो बसायो ।
- ” १४५५ रैणपुरो देहूरा थापना ।
- ” ६०२ बीतोड चित्रंगद मोडीयै बसाई ।
- ” १२४५ विमल मंधीस्वर हूवो विमल बसाई ।
- ” १६०६ पातसिह अकबर बीतोड लोधी जे० सुदी १२ ।
- ” १६३६ पातसाह अकबर राजा उदैसिहजी नुं म्हाराजा गे विताव दीयो ।
- ” १६३४ पातसाह अकबर कछोविदा लोधी ।

|                                  |   |             |         |
|----------------------------------|---|-------------|---------|
| ३०२. श्वेताम्बर मत के चौरासी बोल |   | हिन्दी      | १८३-४६  |
| ३०३. जैन मत का संकल्प            | × | संस्कृत     | अपूर्णा |
| ३०४. साहू मारोठ की पत्नी         | × | हिन्दी पद्य | १५१     |

सं० १८५८ अमाठ वदी १४

सर्वज्ञजिन प्रणामिहितं, सुअथान पलाडा धी निमित्तं ।

सुमुनी महीचन्द्रजि की विदयं, नवनंद हूकम लुगा सदयं ॥१॥

किरपा फुसि बोह्लन जीरुसामं, धपरंपुर मारोठ बलकर्म ।  
 सरवोपम लायक बान छजै, गुरु देख सु धाराय भक्ति यजै ॥२॥  
 तोर्यङ्कर ईस भक्ति धरै, जिन पूज पुरंदर जेम करै ।  
 चतुसंध सुभार धुरंधरयं, जिन चैति चैत्यालय कारकयं ॥३॥  
 व्रत द्वादस पालस मुद्र खरा, सतरै पुनि नेम धरै सुधरा ।  
 बहु दान चतुविध देय सदा, गुरु शास्त्र मुदेब पुजै सुखदा ॥४॥  
 धर्म प्रदन जु श्रेणिक भूप जिखा, सद्यश्रेयास दानपति जु तिसा ।  
 निज वंस जु व्योम दिवाकरयं, गुण सौख्य कलानिधि बोधमयं ॥५॥  
 सु इत्यादिक बोयम योगि बहु, लिखियो जु कहां लग बोय सहै ।  
 दयुद्धा गोठि जु श्रावण पंच नसे, शुद्धि वृद्धि समृद्धि ध्यानन्द वसे ॥६॥  
 तिह योगि लिखै ध्रम वृद्धि सदा, लहियो सुख सपति भोग मुदा ।  
 ..... ॥७॥

इह धानक ध्यानन्द देव जपै, उत चाहत खेम जिनेन्द्र कृपै ।  
 धपरंध जु कागद भाइ इतै, समाचार बाच्या परसेन तितै ॥८॥  
 सह वात जु लाय ध्रमकरं, ध्रम देव गुरु पति भक्ति भरं ।  
 मर्याद सुधारक लायक हो, कल्पद्रुम काम मुदायक हो ॥९॥  
 यशवंत बिनैवंत दानु गहो, गुणशील दयाध्रम पालक हो ।  
 इत है ब्यवहार सदा तुम को, उपरांति तुमै नहि धोरन को ॥१०॥  
 लिखियो लघु को बिधमान यहू, सुख पत्र जु बाहुडतां लिखि हू ।  
 वसूँ वासूँ-वसूँ पुनि चन्द्राँ किमं, वदि मास असाठ चतुर्दिशियं ॥११॥  
 इह भोटक छद सुबाल मही, लिखवो पतरो हित रीति बही ।  
 ..... ॥१२॥

तुम भेजि हूं येक संकर नै, समचार कक्षा मुख तै मुइनै ।  
 इनके समाचार इतै मुख तै, करज्यो परवानं सवै सुखतै ॥१३॥  
 ॥ इति पत्रिक सहूर म्हारोठ को पद्यायती नुं ॥

४४०३. गुटका सं० २३ । पत्र सं० १८२ । भा० ८×५३ इ'च । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—विभिन्न रचनाओं में विविध पाठों का संग्रह है ।

४४०४. गुटका सं० २४ । पत्र सं० ८१ । भा० ७×६ इ'च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा ।

पूर्ण । दशा-सामान्य ।

|                           |              |         |       |
|---------------------------|--------------|---------|-------|
| १. अनुविशति तीर्थचूराष्टक | चन्द्रकीर्ति | संस्कृत | १-६५  |
| २. जिनचैत्यालय जयमाल      | रत्नभूषण     | हिन्दी  | ६६-६६ |
| ३. समस्त व्रत की जयमाल    | चन्द्रकीर्ति | "       | ७०-७३ |
| ४. घादिनाथाष्टक           | ×            | "       | ७३-७५ |
| ५. मगिरत्नाकर जयमाल       | ×            | "       | ७५-७७ |
| ६. घादीश्वर आरती          | ×            | "       | ८१    |

४४०५. गुटका सं० २५ । पत्र सं० १५७ । भा० ६×५ इ'च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं०

१०५५ आर्माज मुद्रो १३ ।

|                        |                         |         |         |
|------------------------|-------------------------|---------|---------|
| १. दशलक्षणपूजा         | ×                       | संस्कृत | १-५     |
| २. लघुम्बर्यभू स्तोत्र | ×                       | "       | १६-१८   |
| ३. शास्त्रपूजा         | ×                       | "       | १९-२४   |
| ४. पीडदाकार्गपूजा      | ×                       | "       | २४-२७   |
| ५. जिनसहस्रनाम (लघु)   | ×                       | "       | २७-३१   |
| ६. सोलकारगरास          | मुनि सकलकीर्ति          | हिन्दी  | ३३-३८   |
| ७. देवपूजा             | ×                       | संस्कृत | ५०-६६   |
| ८. सिद्धपूजा           | ×                       | "       | ६७-७३   |
| ९. पञ्चमेरूपपूजा       | ×                       | "       | ७४-७५   |
| १०. अष्टाङ्गकामिनि     | ×                       | "       | ७६-८६   |
| ११. तत्त्वार्थसूत्र    | उमास्वामी               | "       | ९०-१०५  |
| १२. रत्नत्रयपूजा       | पंडिताचार्य नरेन्द्रसेन | "       | ११६-१३७ |
| १३. क्षमावरीणपूजा      | ब्रह्मसेन               | "       | १३८-१४५ |
| १४. सोलहतिथिवर्णन      | ×                       | हिन्दी  | १४६     |

|                               |   |         |        |
|-------------------------------|---|---------|--------|
| १५. बीसविद्यमान तीर्थङ्करपूजा | × | संस्कृत | १५१-५४ |
| १६. शास्त्रजयमाला             | × | प्राकृत | १५५-५१ |

५१०६ गुटका सं० २६ । पत्र सं० १५३ । भा० ५×४ इञ्च । ले० काल सं० १६८८ ज्येष्ठ बुदी २ ।

पूर्वा । दशा-जीर्वा ।

|                                |                   |         |         |
|--------------------------------|-------------------|---------|---------|
| १. विद्यापहारस्तोत्र           | धनञ्जय            | संस्कृत | १-५     |
| २. भूपालस्तोत्र                | भूपाल             | "       | ५-६     |
| ३. सिद्धिप्रियस्तोत्र          | देवनान्द          | "       | ६-१३    |
| ४. सामयिक पाठ                  | ×                 | "       | १३-३२   |
| ५. भक्तिपाठ (मिष्ट भक्ति भाषि) | ×                 | "       | ३३-७०   |
| ६. स्वयंभूस्तोत्र              | समन्त द्वाव       | "       | ७१-८७   |
| ७. वन्देत्तान की जयमाला        | ×                 | "       | ८८-८९   |
| ८. तण्डुलसूत्र                 | उमास्वामि         | "       | ८९-१०७  |
| ९. भावकप्रतिक्रमण              | ×                 | "       | १०८-१३  |
| १०. सुर्वावलि                  | ×                 | "       | १२४-३३  |
| ११. कल्पागमनिन्दरस्तोत्र       | कुमुदचन्द्राचार्य | "       | १३४-१३९ |
| १२. एकीभावस्तोत्र              | वाढिराज           | "       | १३९-१४३ |

सन् १६८८ वर्षे ज्येष्ठ बुदी द्वितीया रवौदिने प्रबोह श्री धनोचन्द्रने श्रीचन्द्रप्रभचैत्यालये श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलाङ्कारगणे कुंडकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीविद्यानन्द पट्टे भ० श्रीमल्लिभूषणपट्टे भ० श्रीलक्ष्मीचन्द्रपट्टे भ० श्रीप्रभयचन्द्रपट्टे भ० श्रीप्रभयनन्दपट्टे भ० श्रीरत्नकीर्ति तत्पट्टे भ० श्रीकुमुदचन्द्रस्तत्पट्टे भ० श्रीप्रभयचन्द्र बह्म श्री प्रभयसागर सहायनेदं क्रियाकलापपुस्तक लिखितं श्रीमदधनोचन्द्रगच्छेः हुंबडजातीयः लघुवालायां सपुत्रप्रस्य परिल-  
रविदासस्य भार्या बाई कीकी तयोः संभवा मुला घलाहनाम्ने प्रदत्तं पठनार्थं च ।

५१०७. गुटका सं० २७ । पत्र सं० १५७ । भा० ६×५ इञ्च । ले० काल सं० १८८७ । पूर्वा । दशा-  
सामान्य ।

विलोच-पं० तेजपाल ने प्रतिलिपि की थी ।

|                    |   |         |     |
|--------------------|---|---------|-----|
| १. शास्त्र पूजा    | × | संस्कृत | १-२ |
| २. स्फुट हिवी पद्य | × | हिन्दी  | ३-७ |

|                                    |               |         |         |
|------------------------------------|---------------|---------|---------|
| ३. मंगल पाठ                        | ×             | संस्कृत | ८-६     |
| ४. नामस्वली                        | ×             | "       | ६-११    |
| ५. तीन श्रीबीसी नाम                | ×             | हिन्दी  | १२-१३   |
| ६. दर्शनपाठ                        | ×             | संस्कृत | १३-१४   |
| ७. शैरवनामस्तोत्र                  | ×             | "       | १४-१५   |
| ८. पञ्चमेरूपूजा                    | भूषरदास       | हिन्दी  | १५-२०   |
| ९. शृष्टाङ्गिकापूजा                | ×             | संस्कृत | २१-२५   |
| १०. षोडशकारणपूजा                   | ×             | "       | २५-२७   |
| ११. दशलक्षणपूजा                    | ×             | "       | २७-२९   |
| १२. पञ्चपरमेष्ठीपूजा               | ×             | "       | २९-३०   |
| १३. अनन्तशतपूजा                    | ×             | हिन्दी  | ३१-३३   |
| १४. जिनसंघस्रनाम                   | आधाधर         | संस्कृत | ३४-४६   |
| १५. भक्त्यामरस्तोत्र               | मानतुंगाचार्य | संस्कृत | ४७-५३   |
| १६. लक्ष्मीस्तोत्र                 | पद्मप्रभदेव   | "       | ५२-५५   |
| १७. पद्मावतीस्तोत्र                | ×             | "       | ५६-६०   |
| १८. पद्मावतीसहस्रनाम               | ×             | "       | ६१-७१   |
| १९. तत्त्वार्थसूत्र                | उमान्वामि     | "       | ७२-८७   |
| २०. सम्भेद शिखर निर्वाण काण्ड      | ×             | हिन्दी  | ८८-९१   |
| २१. श्रुतिमण्डलस्तोत्र             | ×             | संस्कृत | ९२-९७   |
| २२. तत्त्वार्थसूत्र ( १-५ अध्याय ) | उमान्वामि     | "       | ९९-१००  |
| २३. भक्त्यामरस्तोत्रभाषा           | हेमराज        | हिन्दी  | १००-१६  |
| २४. कल्याणमन्दिरस्तोत्र भाषा       | बनारसीदास     | "       | १०७-१११ |
| २५. निर्वाणकाण्डभाषा               | भगवतीदास      | "       | ११२-१३  |
| २६. स्वरोदयविचार                   | ×             | "       | ११४-११६ |
| २७. बार्हस्पतिपरिबह                | ×             | "       | १२०-१२५ |
| २८. सांघायिकपाठ लघु                | ×             | "       | १२५-२६  |

|                                  |            |         |         |
|----------------------------------|------------|---------|---------|
| २६. आचम की करणी                  | हर्षकीर्ति | हिन्दी  | १२६-२८  |
| ३०. वैशंपायनपूजा                 | ×          | "       | १२८-३२  |
| ३१. चितामणीपावर्धनामपूजा स्तोत्र | ×          | संस्कृत | १३२-३६  |
| ३२. कलिकुण्डपावर्धनाथ पूजा       | ×          | हिन्दी  | १३६-३९  |
| ३३. पद्यावतीपूजा                 | ×          | संस्कृत | १४०-४२  |
| ३४. सिद्धप्रियस्तोत्र            | देवनन्दि   | "       | १४३-४६  |
| ३५. ज्योतिष चर्चा                | ×          | "       | १४७-१५७ |

५४०८. गुटका सं० २८ । पत्र सं० २० । भा० ८२×७ इच्छ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—प्रतिष्ठा सम्बन्धी पाठो का संग्रह है ।

५४०९ गुटका सं० २९ । पत्र सं० २१ । भा० ६३×४ इच्छ । ले० काल सं० १८४६ मंगलिर मुदी १० । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—सामान्य शुद्ध । इसमें संस्कृत वर सामायिक पाठ है ।

५४१०. गुटका सं० ३० । पत्र सं० ८ । भा० ७×४ इच्छ । पूर्ण ।

विशेष—इसमें भक्तामर स्तोत्र है ।

५४११. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० १२ । भा० ६३×४ इच्छ । भाषा-हिन्दी, संस्कृत ।

विशेष—इसमें नित्य नियम पूजा है ।

५४१२. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० १०२ । भा० ६३×४ इच्छ । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८६६ फागुण बुदी ३ । पूर्ण एवं शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष—इसमें पं० जयचन्द्रजी कृत सामायिक पाठ ( भाषा ) है । तनमुख मोनी ने धनवर में साह दुलीचन्द की कचहरी में प्रतिलिपि की थी । अन्तिम तीन पत्रों में लघु सामायिक पाठ भी है ।

५४१३. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० २४० । भा० ५×६ इच्छ । विषय-भजन संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—जैन कवियों के भजनों का संग्रह है ।

५४१४. गुटका सं० ३४ । पत्र सं० ४१ । भा० ६३×४ इच्छ । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १९०८ पूर्ण । सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

१. ज्योतिषसार

कृपाराम

हिन्दी

१-३०

र० काल सं० १७६२ कार्तिक सुदी १० ।

प्रादिभाग- दोहा—

सकल जगत मुर भ्रमुर नर, परसत गरुपति पाम ।  
 सो गरुपति बुधि दीजिये, जन भ्रपनों चितलाय ॥  
 भ्रर परसो चरनन कमल, युगल राधिका स्याम ।  
 धरत ध्यान जिन चरन को, मुर न (र) मुनि प्राठों जाम ॥  
 हरि राधा राधा हरि, जुगल एकता प्राण ।  
 जगत प्रारसी में नमो, दूजो प्रतिबिम्ब जान ॥  
 सोभति छोटे मत्त पर, एकहि जुगल किंसार ।  
 मनो लस घन मोक्ष समि, दामिनी चारुं धोर ॥  
 परसे भ्रति जय चित्त कै, चरन राधिका म्याम ।  
 नमस्कार कर जोरि कै, भापत किरपाराम ॥  
 साहिजहापुर सहर में, कायथ राजाराम ।  
 तुलाराम तिहि बंस मे, ता मुन किरपाराम ॥६॥  
 लघु जातक को ग्रन्थ यह, मुनों पंडितन पाम ।  
 ताके सबै श्लोक कै, दोहा करे प्रकास ॥७॥  
 भ्रो प्रवहु जे मुनो, लयो जु भ्ररथ निकारि ।  
 ताको बहुविधि हेत सौ, कह्यो ग्रन्थ विस्तार ॥८॥  
 संबन् मत्तरह सैं वरस, धोर बाणवे जानि ।  
 कार्तिक सुदी दशमी गुरु, रच्यो ग्रन्थ पहचानि ॥९॥  
 सब ज्योतिष को सार यह, लियो जु भ्ररथ निकारि ।  
 नाम धरघो या ग्रन्थ को, ताते ज्योतिष सार ॥१०॥  
 ज्योतिष सार जु ग्रन्थ को, कल्प बद्ध मनु लेलि ।  
 ताको नव साखा लसत, बुदो बुदो फल देखि ॥११॥

धन्तिष—

धय वरस फल लिखते—

संबन् महे हीन करि, जनम वर (ब) ली मित ।  
 रहै सेष सो गत वरष, भावरदा में वित्त ॥६०॥  
 भये वरष गत झङ्कु घर, निख घर बाहू ईस ।  
 प्रथम बेक मन्दर है, ईह वही इकतीस ॥६१॥  
 भरतीस पहलै बूरवा, भंक को दिन भपने मन जानि ।  
 दूजै घर फल तांसरो, चौथे भ झखिर ज ठान ॥६२॥  
 भये वरष गत भंक को, गुन धरवावी चित्त ।  
 गुणकार के भंक में, भाग सात हरि मित ॥६३॥  
 भाग हरे ते सात कौ, लबष भंक सो जानि ।  
 जो मिने य पल में बहुरि, फल ते घटी बखानि ॥६४॥  
 घटिका मै ते दिवस मै, मिलि जै है जो भंक ।  
 तामे भाग जु सख को, हरि ये मित न सं ॥६५॥  
 भाग रहै जो मेष सो, बचै भक पहिचानि ।  
 तिन में फल घटीका दसा, जन्म मिलावो भानि ॥६६॥  
 जन्मकाल के भत रवि, जितने बीते जानि ।  
 उतने वाते भंस रवि, वरस लिख्यो पहचानि ॥६७॥  
 वरस लख्यो जा भंत में, सोइ देत चित धारि ।  
 वादिन इतनी घटी जु, पल बीते लगुन बीबारि ॥६८॥  
 लगन लिखै ते गोरह जो, जा घर बैठो जाइ ।  
 ता घर के फल सुफल को, दीजे मित बनाइ ॥६९॥  
 इति श्री किरपाराम कृत ज्योतिषसार संपूर्णम्

१. पासाकेवली

×

द्विन्वी

३१-३६

२. शुभमुहूर्त

×

॥

३६-४१



५४१५. गुटका सं० ३५। पत्र सं० १८। प्रा० ६३×५३ इञ्च। भाषा-×। विषय-संग्रह। ले० काल सं० १८८६ भादवा बुदी ५। पूर्ण। मृगुड। दशा-सामान्य।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की गई थी।

|                       |                   |             |                  |
|-----------------------|-------------------|-------------|------------------|
| १. नेमिनाथजी के दश भव | ×                 | हिन्दी पद्य | १-५              |
| २. निर्वाण काण्ड भाषा | भगवतीदास          | ,,          | २० काल १७४१, ५ ७ |
| ३. दर्शन पाठ          | ×                 | संस्कृत     | ८                |
| ४. पार्वतीनाथ पूजा    | ×                 | हिन्दी      | १-१०             |
| ५. दर्शन पाठ          | ×                 | ,,          | ११               |
| ६. राजलपञ्चमी         | लालचन्द विनोदीशाल | ,,          | १२-१८            |

५४१६. गुटका सं० ३६। पत्र सं० १०६। प्रा० ८१×८६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। ले० काल १७८२ माह बुदी ८। पूर्ण। मृगुड। दशा-जीर्ण।

विशेष—गुटका जीर्ण है। लिपि विकृत एवं बिलकुल मृगुड है।

|                        |   |   |
|------------------------|---|---|
| १. डोला मारुणी की बात  | × | • हिन्दी प्राचीन पद्य सं० ८१५, १-२४           |
| २. बदरीनाथजी के छन्द   | × | ,, २८-३०<br>ले० काल १७८२ माह बुदी ८           |
| ३. दान सीला            | × | हिन्दी ३०-३१                                  |
| ४. प्रह्लाद चरित्र     | × | ,, ३१-३४                                      |
| ५. मोहम्मद राजा की कथा | × | ,, ३५-४२<br>११५ पद्य। पौराणिक कथा के आधार पर। |
| ६. भगतवत्सावलि         | × | हिन्दी ४२-४४<br>म० १७८२ माह बुदी १३।          |
| ७. भ्रमर गीत           | × | ,, १२१ पद्य, ४४-४३                            |
| ८. धुलीला              | × | ,, ५३-५५                                      |
| ९. गज मोक्ष कथा        | × | ,, ५५-५६                                      |
| १०. धुलीला             | × | ,, पद्य सं० २४ ५६-६०                          |

|                          |   |               |       |
|--------------------------|---|---------------|-------|
| ११. भारहृल्लवी           | × | हिन्दी        | ६०-६२ |
| १२. बिरहमञ्जरी           | × | "             | ६२-६८ |
| १३. हरि बोना विभावली     | × | " पद्य सं० २६ | ६८-७० |
| १४. जगन्नाथ नारायण स्तवन | × | "             | ७०-७४ |
| १५. रामस्तोत्र कवच       | × | संस्कृत       | ७५-७७ |
| १६. हरिरस                | × | हिन्दी        | ७८-८५ |

विशेष—शुटका सानहानावाद जयसिंहपुरा में लिखा गया था। लेखक रामजी मीरा था।

५४१७. शुटका सं० ३७। पत्र सं० २४०। प्रा० ७३×५१ इञ्च।

|                           |           |         |                  |
|---------------------------|-----------|---------|------------------|
| १. नमस्कार मंत्र सटीक     | ×         | हिन्दी  | ३                |
| २. मानबावनी               | मानकवि    | "       | ५३ पद्य सं० ४-२८ |
| ३. चौबीस तीर्थङ्कर स्तुति | ×         | "       | ३२               |
| ४. प्रायुर्वेद के नुसखे   | ×         | "       | ३५               |
| ५. स्तुति                 | कनककीर्ति | "       | ३७               |
| ६. नन्दीश्वरद्वीप पूजा    | ×         | संस्कृत | ४१               |

लिपि सं० १७६६ ज्येष्ठ सुदी २ रविवार

कुशला सौगाणी ने सं० १७७० में सा० फतेहचन्द गोदीका के भ्रोल्ये से लिखी।

|                          |               |         |                       |         |
|--------------------------|---------------|---------|-----------------------|---------|
| ७. तत्त्वार्थसूत्र       | उमास्वामि     | संस्कृत | ६ अध्याय तक           | ६१      |
| ८. नेमोश्वररास           | ब्रह्मरायमल्ल | हिन्दी  | २० सं० १६१५           | १७२     |
| ९. जोगीरासी              | जिनदास        | "       | लिपि सं० १७१०         | १७६     |
| १०. पद                   | ×             | "       |                       | "       |
| ११. भ्रादिव्यवहार कथा    | भाऊ कवि       | "       |                       | २०४     |
| १२. दानशीलतपभावना        | ×             | "       |                       | २०५-२३६ |
| १३. चतुर्विधसिद्धि छप्पय | गुणकीर्ति     | "       | २० सं० १७७७ असाढ़ वदी | १४      |

आदि भाग--

भ्रादि अंत जिन देव, सेब मुर नर मुक्त करता।

जय जय ज्ञान पवित्र, नामु लेतहि अथ हरता ॥

सरपुति लबह पसाह, जान मनबांछित पूरह ।  
 सारद लागो पाह, जेमि दुख दालिद्र भरह ॥  
 गुरु निरघन्थ प्रणाम्य कर, जिन चउवीसो मन धरउ ।  
 गुनकीति इम उच्चरह, मुभ वसाह रु देला तरउ ॥१॥

नाभिराय कुलचन्द, नंद मरुदेवि जानउ ।  
 काह धनुष शत पञ्च, वृधभ लाछन जु बलानउ ॥  
 हेम वर्ष कहि कायु, प्रापु लक्ष्य जु लौरासी ।  
 पूरव गनती एह, जन्म अयोध्या वासी ॥  
 भरघहि राजु नु सोपि कर, अस्तापद सीधउ तदा ।  
 गुनकीति इम उच्चरह, मुभवित लोक बन्दहु मदा ॥१॥

## अन्तिम भाग—

श्रीमूलमघ विन्ध्यातगच्छ सरमुनिय वखानउ ।  
 तिहि महि जिन चउवीस, ऐह सिखा मन जानउ ॥  
 पराय छह प्रसादु, उन्नय मूलचन्द प्रभुजानी ।  
 साहिजिहा पतिमाहि, राजु दिलीपति प्राणी ॥  
 सतरहसइह सतोसरा, वदि असाढ चउदम करना ।  
 गुनकीति इम उच्चरह, मु सकल मघ जिनवर सरना ॥

॥ इति श्री चतुर्विंशततीर्थकर छन्दस मधुर्ग ॥

११. सोनरास गुणकीति हिन्दी रचना सं० १७१३ २४०

२४१८. गुटका सं० ३८—पत्रसंख्या—२२६ । —प्रा० १०×७॥ दशा—जीर्ग ।

विशेष—३४ पृष्ठ तक आयुर्वेद के अक्षरे नुसवे है ।

१ प्रभावती कल्प × हिन्दी कई रोगों का एक नुसखा है ।

२. नाड़ी परीक्षा × संस्कृत

करीब ७२ रोगों को चिकित्सा का विस्तृत वर्णन है ।

३. नील सुदर्शन रासी × हिन्दी ३७-४२

४. पृष्ठ संख्या ५२ तक निम्न ध्वनतारों के सामान्य रंगीन चित्र हैं जा प्रदर्शनी के योग्य हैं।

( १ ) रामावतार ( २ ) कृष्णावतार ( ३ ) परशुरामावतार ( ४ ) मच्छावतार ( ५ ) कच्छावतार  
( ६ ) बरह्मवतार ( ७ ) तुलिह्यावतार ( ८ ) कल्किावतार ( ९ ) बुढावतार ( १० ) ह्यभीषावतार तथा  
( ११ ) पार्वनाथ चैत्यालय ( पार्वनाथ की मूर्ति सहित )

५. लकुनावली × संस्कृत ५६

६. पाठ्याभिवली ( बोध परीक्षा ) × हिन्दी ६६

जन्म कुण्डली विचार

७. पृष्ठ ६८ पर भगे हुए व्यक्ति के वारिस घाने का पत्र है।

८. भक्तामरम्बाध मानतुं य संस्कृत ७३

९. वैखमनोन्सव ( भाषा ) नयन सुख हिन्दी ७४-८१

१०. राम विनाद ( प्रायुर्वेद ) × " ८२-९८

११. सामुद्रिक भाष्य ( भाषा ) × " ९९-११२

विषी कर्ता—मुखराम ब्राह्मण पचोली

१२. शांघ्रवांध काशीनाथ संस्कृत

१३. पूजा संग्रह × " १९४

१४. योगीरासो जिनदास हिन्दी १९७

१५. तत्त्वार्थनूत्र उमा स्वामि संस्कृत २०७

१६. कल्याणमंदिर (भाषा) बनारसीदास हिन्दी २१०

१७. रविचारत्रत कथा × " २२१

१८. व्रतो का व्योरा × " "

अन्त में ६४ योगिनी भावि के यत्र है।

५४१६ गुटका सं० ३९—पत्र सं० २४। भा० ६×६ इञ्च। पूर्ण। दवा—सामान्य।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

५४२० गुटका सं० ४०—पत्र सं० १०३ । आ० ८॥५६ इञ्ज । भाषा—हिन्दी । ले० सं० १८८० पूर्ण । सामान्य शुद्ध ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह तथा श्रुत ८० से नरक स्वर्ग एवं पृथ्वी आदि का परिचय दिया हुआ है ।

५४२१ गुटका सं० ४१—पत्र संख्या—२५७ । आ०—८५६॥ इञ्ज । लेखन काल—संभव १८७५ माह बुदी ७ । पूर्ण । दशा उत्तम ।

|   |                  |         |                         |                 |
|---|------------------|---------|-------------------------|-----------------|
| १. समयसारनाटक   | बनारसीदास        | हिन्दी  | रच० म० १८६३             | आमां.मु १३ १-५१ |
| २. मारिण्क्यमाला  | संग्रह कर्ता     | हिन्दी  | संस्कृत प्राकृत मुभाषित | ५२-१११          |
| अथप्रभोत्तरी  | ब्रह्म ज्ञाननागर |         |                         |                 |
| ३. देवागमस्तोत्र  | आचार्य समन्तभद्र | संस्कृत | लिपि मंथन               | १८६६            |
| कृपारामसोमनाथ ने करौली राजा के पठनार्थ हाड़ीनी गांव में प्रति लिपि की । पृष्ठ-१११से ११५ । |                  |         |                         |                 |
| ४. अनादिनिधनस्तोत्र   | ×                | "       | लिपि म० १८६२            | ११५-११६         |
| ५. परमानंदस्तोत्र   | ×                | संस्कृत |                         | ११६-११७         |
| ६. सामायिकपाठ   | अमितगति          | "       |                         | ११७-११८         |
| ७. पंडितमरण   | ×                | "       |                         | ११९             |
| ८. चौबीसतीर्थश्रद्धाभक्ति   | ×                | "       |                         | ११९-२०          |

लेखन म० १६७० बेगाव मुर्दा ३

|                            |           |         |  |         |
|----------------------------|-----------|---------|--|---------|
| ९. तेरह काठिया             | बनारसीदास | हिन्दी  |  | १२०     |
| १०. दर्शनपाठ               | ×         | संस्कृत |  | १२३     |
| ११. पंचमंगल                | रूपचंद्र  | हिन्दी  |  | १२३-१२८ |
| १२. कल्याणमंदिर भाषा       | बनारसीदास | "       |  | १२८-३०  |
| १३. विद्यापहारस्तोत्र भाषा | अचलकीर्ति | "       |  | १२०-३२  |

रचना काल १७१५ ।

|                                |         |        |  |        |
|--------------------------------|---------|--------|--|--------|
| १४. मत्कायर स्तोत्र भाषा       | हेमराज  | हिन्दी |  | १३२-३५ |
| १५. बज्रनाभि चक्रवर्तिकी भाषना | भूधरदास | "      |  | १३५-३६ |

|                         |                   |         |         |
|-------------------------|-------------------|---------|---------|
| १६. निर्वर्ण काण्ड भाषा | भगवती दास         | "       | १३-३७   |
| १७. भीपाल स्तुति        | ×                 | हिन्दी  | १३७-३८  |
| १८. तत्त्वार्थसूत्र     | उमास्वामी         | संस्कृत | १३८-४५  |
| १९. सामायिक बड़ा        | ×                 | "       | १४५-५२  |
| २०. लघु सामायिक         | ×                 | "       | १४२-५३  |
| २१. एकीभावस्तोत्र भाषा  | जगजीवन            | हिन्दी  | १५३-५४  |
| २२. बार्देस परिषद्      | भूधरदास           | "       | १५४-५७  |
| २३. जिनदर्शन            | "                 | "       | १५७-५८  |
| २४. संनोधपंचासिका       | द्यानतराय         | "       | १५८-६०  |
| २५. बीसतीर्थकर की जकड़ी | ×                 | "       | १६०-६१  |
| २६. नेमिनाथ मंगल        | लाल               | हिन्दी  | १६१-१६७ |
| २० सं० १७४४ सावण सु० ६  |                   |         |         |
| २७. दान बावनी           | द्यानतराय         | "       | १६७-७१  |
| २८. जेतनकर्म चरित्र     | श्रेय्या भगवतीदास | "       | १७१-१८३ |
| २० १७३६ जेठ वदी ७       |                   |         |         |
| २९. जिनसहस्रनाम         | घांशाधर           | संस्कृत | १८४-८९  |
| ३०. भक्तामरस्तोत्र      | मानतुंग           | "       | १८९-९२  |
| ३१. कल्याणमन्दिरस्तोत्र | कुमुदचन्द         | संस्कृत | १९२-९४  |
| ३२. विद्यापहारस्तोत्र   | धनञ्जय            | "       | १९४-९६  |
| ३३. सिद्धप्रियस्तोत्र   | देवनन्दि          | "       | १९६-९८  |
| ३४. एकीभावस्तोत्र       | बादिराज           | "       | १९८-२०० |
| ३५. भूपालचीवीसी         | भूपाल कवि         | "       | २००-२०२ |
| ३६. देवपूजा             | ×                 | "       | २०२-२०५ |
| ३७. विरहनाथ पूजा        | ×                 | "       | २०५-२०६ |
| ३८. सिद्धपूजा           | ×                 | "       | २०६-२०७ |

६०६ ]

[ गुटका-संग्रह

|                                   |          |               |                 |
|-----------------------------------|----------|---------------|-----------------|
| १६. सोलहकारणपूजा                  | ×        | "             | २०७-२०८         |
| ४०. दशलक्षणपूजा                   | ×        | "             | २०८-२०९         |
| ४१. रत्नत्रयपूजा                  | ×        | "             | २०९-१४          |
| ४२. कलिकुण्डलपूजा                 | ×        | "             | २१४-२२५         |
| ४३. चित्तामणि पार्वतीनाथपूजा      | ×        | "             | २२५-२६          |
| ४४. शांतिभावस्तोत्र               | ×        | "             | २२६             |
| ४५. पार्वतीनाथपूजा                | ×        | "             | श्रृणुणी २२६-२७ |
| ४६. चौबीस तीर्थक्षुर स्तवन        | देवमन्दि | "             | २२६-३७          |
| ४७. नवग्रहार्चित पार्वतीनाथ स्तवन | ×        | "             | २३७-४०          |
| ४८. कलिकुण्ड पार्वतीनाथस्तोत्र    | ×        | "             | २४०-४१          |
| लेखन काल १८६३ माघ सुदी ५          |          |               |                 |
| ४९. परमानन्दस्तोत्र               | ×        | "             | २४१-४३          |
| ५०. लघुजिनमन्त्रनाम               | ×        | "             | २४३-४६          |
| लेखन काल १८७० वैशाख सुदी ५        |          |               |                 |
| ५१. सूक्तिमुक्तावलिस्तोत्र        | ×        | "             | २४६-५१          |
| ५२. जिवेन्द्रस्तोत्र              | ×        | "             | २५२-५४          |
| ५३. बहत्तरकला पुरुष               | ×        | त्रिन्दी गद्य | २५७             |
| ५४. चौसठ कला स्त्री               | ×        | "             | "               |

५४२२. गुटका सं० ४२ । पत्र सं० ३२९ । प्रा० ७/४ डब्ब । पूर्ण ।

विशेष—इसमें भूधरबामनी का चर्चा समाधान है ।

५४२३. गुटका सं० ४३ — पत्र सं० ५८ । प्रा० ९३/५ डब्ब । भाषा-सम्बृत । ले० काल १७८७  
कालिक शुक्ल १३ । पूर्ण एवं युद्ध ।

विशेष—ब धेरबालान्वय माहर् थी जगहर के पठनाई भट्टारक थी देवचन्द्र ने प्रतिनिधि की थी । प्रति  
संस्कृत टीका सहित है । सामायिक पाठ आदि का संग्रह है ।

५४२४. गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ८३ । प्रा० १०/५ डब्ब । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । दत्ता जीर्ण ।

विशेष—चर्चाओं का संग्रह है ।

४४२५ शुद्धका सं० ४५ । पत्र सं० १४० । भा० ६३×५५ इञ्च । पूर्ण ।

|                          |                   |         |         |
|--------------------------|-------------------|---------|---------|
| १. देवशास्त्रसुन्दर पूजा | ×                 | संस्कृत | १-७     |
| २. कमलाष्टक              | ×                 | "       | ६-१०    |
| ३. छुस्सुति              | ×                 | "       | १०-११   |
| ४. सिद्धपूजा             | ×                 | "       | १२-१५   |
| ५. कलिकुण्डस्तवन पूजा    | ×                 | "       | २६-१९   |
| ६. षोडशकारणपूजा          | ×                 | "       | २९-२२   |
| ७. दशलक्षणगूढा           | ×                 | "       | २२-३२   |
| ८. नन्दीशवरपूजा          | ×                 | "       | ३२-३६   |
| ९. पंचमेरुपूजा           | भट्टारक महीचन्द्र | "       | ३६-४३   |
| १०. अनन्तचतुर्दशीपू.     | " मेरुचन्द्र      | "       | ४५-५७   |
| ११. ऋषिमठनपूजा           | गीतमस्वामी        | "       | ५७-६५   |
| १२. जिनसहस्रनाम          | आशाधर             | "       | ६६-७४   |
| १३. महाभियेक पाठ         | ×                 | "       | ७४-८६   |
| १४. रत्नत्रयपूजाविधान    | ×                 | "       | ८७-१२१  |
| १५. ज्येष्ठजिनवरपूजा     | ×                 | हिन्दी  | १२२-२५  |
| १६. शैवराज की धारणा      | ×                 | "       | १२६-२७  |
| १७. गणधरबलवर्धनत्र       | ×                 | संस्कृत | १२८     |
| १८. आदित्यनारकथा         | बाद्रीचन्द्र      | हिन्दी  | १२९-३१  |
| १९. गीत                  | विद्याभूषण        | "       | १३१-३३  |
| २०. लघु सामायिक          | ×                 | संस्कृत | १३४     |
| २१. पद्मवतीछंद           | भ० महीचन्द्र      | "       | १३४-१४० |

४४८६. शुद्धका सं० ४६—पत्र सं० ४६ । भा० ७२×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । पूर्ण एवं अशुद्ध ।

विशेष—वसंतराज कृत शकुन शास्त्र है ।



५४२७. गुटका सं० ४७ । पत्र सं० ३४० । आ० ८×४ इञ्च पूर्ण । दशा-सामान्य ।

|                          |           |         |         |
|--------------------------|-----------|---------|---------|
| १. सूर्य के कस नाम       | ×         | संस्कृत | १       |
| २. बन्दो योस स्तोत्र     | ×         | "       | १-२     |
| ३. निर्वाणविधि           | ×         | "       | २-३     |
| ४. मार्कण्डेयपुराण       | ×         | "       | ४-५६    |
| ५. कालीसहस्रनाम          | ×         | "       | ५८-१३२  |
| ६. नृसिंहपूजा            | ×         | "       | १३३-३५  |
| ७. देवीसूक्त             | ×         | "       | १३६-६५  |
| ८. मंत्र-संहिता          | ×         | संस्कृत | १६६-२३३ |
| ९. ज्वालामालिनी स्तोत्र  | ×         | "       | २३३-३६  |
| १०. हरगौरी सबाद          | ×         | "       | २३६-७३  |
| ११. नारायण कवच एवं अष्टक | ×         | "       | २७३-७६  |
| १२. बामुण्डोपनिषद्       | ×         | "       | २७६-२८१ |
| १३. पीठ पूजा             | ×         | "       | २८२-८७  |
| १४. योगिनी कवच           | ×         | "       | २८८-३१० |
| १५. भानंदलहरी स्तोत्र    | यकराचार्य | "       | ३११-२४  |

५४२८ गुटका नं० ४८ । पत्र सं०—२२२ । आ०—६१×५१ इञ्च पूर्ण । दशा-सामान्य ।

|                |               |         |        |
|----------------|---------------|---------|--------|
| १. जिनयज्ञकल्प | पं० आशाधर     | संस्कृत | १-१४१  |
| २. प्रशस्ति    | ब्रह्म दामोदर | "       | १४१-४५ |

दोहा— ॐ नमः सरस्वत्ये । अथ प्रशस्ति ।

भीमंतं सन्मतिदेवं, निःकर्माणाम् जगद्गुरुम् ।

भक्त्या प्रणम्य बध्नेऽहं प्रशस्तिं तां गुणोत्तमाम् ॥ १ ॥

स्याद्वादिनी ब्राह्मी ब्रह्मतत्त्व-प्रकाशिनी ।

सद्गिरारारिषितां चापि ष्टंदा सत्त्वशकरी ॥ २ ॥

गण्डिनो गौतमादीश्व संसारार्णवतारकात् ।

जिन-प्रणीत-सच्छास्त्रकैरवामलचंद्रकात् ॥ ३ ॥

- मूलसंघे वजात्कारगणे सारस्वते सति ।  
 गच्छे विषयपदच्छाने बंधे वृं दारकादितिः ॥ ४ ॥  
 नंदिसंधोभवत्तत्र नंदितामरनायकः ।  
 कुं वकुं दार्यसंशोऽप्री वृत्तरत्नाकरो महाय् ॥ ५ ॥  
 तत्पट्टकमतो जातः सर्वसिद्धान्तपारगः ।  
 हमीर-भूपतेभ्योयं धर्मचंद्रो यतीश्वरः ॥ ६ ॥  
 तत्पट्टे विश्वतत्वज्ञो नानाग्रंथविशारदः ।  
 रत्नत्रयकृताभ्यासो रत्नकीर्तिरभून्मुनिः ॥ ७ ॥  
 शकस्वामिसभामध्ये प्राप्तमानशतोत्सवः ।  
 प्रभाचंद्रो जगद्धंघो परवादिभयंकरः ॥ ८ ॥  
 कवित्वे वापि वक्तृत्वे मेधावी शान्तमुद्रकः ।  
 पद्यनंदी जिताक्षीमूत्तपट्टे यतिनायकः ॥ ९ ॥  
 तच्छिष्योजनिभ्योषूजितांहिषिशुद्धधीः ।  
 श्रुतचंद्रो महासाधुः साधुलोककृतार्थकः ॥ १० ॥  
 प्रमाणिकः प्रमाणोऽभूदरगमाध्यात्मविश्वधीः ।  
 लक्षणो लक्षणार्थज्ञो भूपालवृंदसेवितः ॥ ११ ॥  
 बर्हत्प्रणीततत्त्वार्थजादः पति निशापतिः ।  
 हतपंचेचुरमृतरिजिनचद्रो विचक्षणः ॥ १२ ॥  
 जम्बूदुर्मांकिते जम्बूदीपे द्वीपप्रधानको ।  
 तत्रास्ति भारतं क्षेत्रं सर्वभोगफलप्रदं ॥ १३ ॥  
 मध्यदेशो भवत्तत्र सर्वदेशोत्तमोत्तमः ।  
 धनधान्यसमाकीर्णप्रामैर्देवहितिसमैः ॥ १४ ॥  
 नानावृक्षकुलैर्भाति सर्वसत्वसुखंकरः ।  
 मनोगतमहाभोगः दाता दातृसमन्वितः ॥ १५ ॥  
 तोडाक्षीभूत्समहादुर्गो दुर्गमुख्यः श्रियापरः ।  
 तच्छास्त्रानगरं योषि विषयभूतिविधायकम् ॥ १६ ॥

- स्वच्छपानीयसंपूरणैः वापिकृपादिभिर्महत् ।  
 श्रीमद्वनहटानामहदृष्ट्यापारभूषितं ॥ १७ ॥  
 प्रहृत्यैत्यालये रेजे जगदानंदकारकैः ।  
 विचित्रमडमंदोहे वरिष्ठजनमुर्मंदिरो ॥ १८ ॥  
 अजन्त्याधिपतिस्त्वय प्रजापालो लसद्गुणैः ।  
 कान्त्याचंदो विभात्येष तेजसापद्यबाधवः ॥ १९ ॥  
 शिष्यस्य पालको जातो दुष्टनिग्रहकारकः ।  
 पंचागमंत्रविच्छूरो विद्याशास्त्रविधारदः ॥ २० ॥  
 शौर्योदार्यगुणोपेतो राजनीतविदावरः ।  
 रामसिंहो विभुर्धोमान् भूत्यनेन्द्रो महायशोः ॥ २१ ॥  
 धार्मसाक्षात्कारकवरस्तत्र जैनधर्मपरायणः ।  
 पात्रदानादरः श्रेष्ठो हरिचन्द्रोमुखाधरणी ॥ २२ ॥  
 धावकाचारसंपन्नो दत्ताहागदिदानकरः ।  
 शीलभूमिरभूत्तस्य शूत्ररिप्रियवादिनी ॥ २३ ॥  
 पुत्रस्तयोरभूत्साधुव्यक्ताहंस्तुर्भाक्तकः ।  
 परोपकरणाम्दातो विनार्चनक्रियोद्यतः ॥ २४ ॥  
 श्रवकाचारतस्वजो ब्रुकारण्यवारिधः ।  
 देह्ना साधु ब्रुताक्षरी राजदत्तप्रतिष्ठकः ॥ २५ ॥  
 तस्य भाव्या महाभाघ्नी क्षीनकोरतरंगिणी ।  
 प्रियवदा हितावास्तवाली भोजन्यधारिणी ॥ २६ ॥  
 तयोः क्रमेण संजातो पुत्रो लावण्यसन्दुग्धैः ।  
 अगण्यपुण्यमम्बानी रामलक्ष्मणकाविदः ॥ २७ ॥  
 विनयजोत्सवानन्दकारिणो व्रतधारिणी ।  
 प्रहृतीर्थमहापात्राशंकरकप्रविधाविनी ॥ २८ ॥  
 रामसिंहमहाभूपयधानपुरुषो क्षुभो ।  
 समुद्रतजिनागारी धर्मानियुमहोत्तमो ॥ २९ ॥

तथ्यादरोमवद्वीरो नरक्यै स्वचन्द्रमाः ।  
 लोकप्रशस्यस्यस्कीर्ति धर्मसिद्धो हि धर्मयुत् ॥ ३० ॥  
 तस्कायिनी महच्छीलधारिणी सिवकारिणी ।  
 चन्द्रस्य वसती उभोत्सना पापध्वान्तापहारिणी ॥३१॥  
 कुनद्रमविशुद्धासीत् सचमत्तित्पुरुषणा ।  
 धर्मानन्दितचेतस्का धर्मश्रीर्भर्तृ प्राक्तिकाः ॥३२॥  
 पुत्रावाप्सन्तयोः स्वीयकृजनिजितमन्मथी ।  
 लक्षणाक्षरसद्गाथो योषिन्मानसबल्लभौ ॥३३॥  
 अर्हं हि वसुसिद्धान्तपुरुभक्तिमुद्यती ।  
 विद्वज्जनप्रियौ सौम्यौ मोहहृद्यपदार्थकी ॥३४॥  
 नुषारविष्णोरसमानकीर्तिः कुटुम्बनिर्वाहकरो यथस्वी ।  
 प्रतापवान्धर्मधरो हि श्रीमान् खण्डेलवासान्वयकंजमानुः ॥३५॥  
 भूपेन्द्रकार्यार्थकरो दयाढ्यो पूढ्यो पूर्येन्दुसंकसमुच्चोवरिष्ठः ।  
 श्रेष्ठी विवेकाहितमानसोऽसौ सुधीर्नन्दतुमुत्तमेऽस्मिन् ॥३६॥  
 हस्तद्वये यस्य जिनार्चनं वैजैन.बराबरमुल्लपंकजे च ।  
 हृद्यक्षरं बहृत्समयं वा करोषु राज्यं पुरुषोत्तमोयं ॥३७॥  
 तत्प्राणवल्लभाजाता जैनव्रतविधात्रिनी ।  
 सती मतल्लिका श्रेष्ठी दानोत्कण्ठा यशस्विनी ॥३८॥  
 चतुर्धिस्य संघस्य भक्त्युल्लासि मनोरया ।  
 नैनश्रोः सुधावात्कव्योकीर्त्याभोजसन्मुक्षी ॥३९॥  
 हर्षमदे सहर्षात् द्वितीया तस्य बल्लभा ।  
 दानमानोन्सबानन्दवद्विताशेषचेतसः ॥४०॥  
 श्रीरामसिंहेन गुणेण मान्यक्षतुर्विधभीवरसंभक्तः ।  
 प्रद्योतितशेषपुराणलोको नाधू विवेको चिरमेवजीयान् ॥४१॥  
 भाङ्गारशास्त्रोषधजीवरक्षा दानेषु सर्वार्थकरेषु साधुः ।  
 कल्पद्रुमोवाचककामधेनुनष्टुसुसाधुर्जयतात्परिभ्यां ॥४२॥

मानव जन्म बड़ो जलमान के काज बिना मतु कूप मे डारो ।

नेमी कहे सुन राहुल तू सब मोह तजि ने काज सवारो ॥ १८ ॥

अन्तिम भाग—राहुलोवाच—

श्रावक धर्म क्रिया मुभ श्रेयन साध कि सगत वेग मुनाइ ।

भोग तजि मन सुध करि जिन नेम तएी जब सगत पाइ ॥

भेद भनक कर टुडता जिन माए की सब बात सुनाई ।

लोच करी मन भाव धरी करी राहुल नार भई तव बाई ॥ ३१ ॥

कलश—

श्रादि रचन्हा विवेक सबस युक्ती समभायो ।

नमिनाथ टुड बित्त कचहु राहुल कु समाभायो ॥

राजमति प्रबाध के सुध भाव समय लाया ।

ब्रह्म जानसागर वहे बाद नाम राहुल काया ॥ ३२ ॥

॥ दात नेमीश्वर राहुल विवाद सपूर्णम् ॥

|                                |               |         |       |
|--------------------------------|---------------|---------|-------|
| ४ अष्टाङ्गिकाग्रत कथा          | विनयकांत      | हिन्दी  | ३२-३३ |
| ५ पार्श्वनाथस्तात्र            | पद्मप्रभदेव   | संस्कृत | ३४    |
| ६ क्षातिनाथस्तात्र             | मुनिष्टुणभद्र | "       | "     |
| ७. वर्धमानस्तोत्र              | ×             | "       | ३६    |
| ८ चित्तामरिणुपार्श्वनाथस्तात्र | /             | "       | ३७    |
| ९ निर्वाणवाग्द भाषा            | भगवतादास      | हिन्दी  | ३८    |
| १० भावनास्तोत्र                | दानतराय       | "       | ३९    |
| ११ गुरुविनती                   | भूधरदास       | "       | ४०    |
| १२ जानपञ्चोसी                  | बनारसीदास     | "       | ४१-४२ |
| १३. प्रभाती अजरुगभवर श्रवै     | ×             | "       | ४२    |
| १४ मा गरीब कू साहब ताराजी      | गुनाबकिशन     | "       | "     |
| १५ शब तेरा मुख देखू            | टोडर          | "       | ४४    |
| १६ प्रात हुवा गुमर देव         | भूधरदास       | "       | ४३    |

|  |               |         |                 |
|--|---------------|---------|-----------------|
| १७. ऋषभजिनव्यकुहार केसरियो             | भानुकीर्ति    | द्वितीय | ४५              |
| १८. ककू घराषना तेरी                    | नवल           | "       | "               |
| १९. मूल भ्रमारा केई भवे                | ×             | "       | ४६              |
| २०. श्रीपालदर्शन                       | ×             | "       | ४७              |
| २१. भक्तामर भाषा                       | ×             | "       | ४८-४९           |
| २२. सांघरिया तेरे बार बार वारि जाऊ     | जगताराम       | "       | ४९              |
| २३. तेरे दरवार स्वामी इन्द्र दो कहे है | ×             | "       | ५३              |
| २४. जिनजी याकी सूरत मनहो माछो          | ब्रह्मकपूर    | "       | "               |
| २५. पारबनाथ नाथ                        | छानतराय       | "       | ५५              |
| २६. बिभुवन गुन स्वामी                  | जिनदास        | "       | २० सं० १७५५, ५४ |
| २७. भहो जग-गुरु देव                    | भूषरदास       | "       | ५६              |
| २८. चिंतामणि स्वामी साबा साहब मेरा     | बनारसीदास     | "       | ५६-५७           |
| २९. कन्यारामन्दिरस्ताथ                 | कुमुद         | "       | ५७-६०           |
| ३०. कलियुग की जिनती                    | ब्रह्मदेव     | "       | ६१-६३           |
| ३१. शीतघ्नत क भेद                      | ×             | "       | ६३-६४           |
| ३२. पदसंग्रह                           | गंगाराम वैद्य | "       | ६५-६८           |

४५५१. गुटका सं० ७१। पत्र सं० १०६। भा० ८५६ इ'ब। विषय-संग्रह। ले० काल १७६६ फगण सुदी ४ मंगलवार। पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—सवाई जयपुर मे लिपि की गई थी।

|                                    |            |         |                 |
|------------------------------------|------------|---------|-----------------|
| १. भावनासारमंगल                    | बामुण्डराय | संस्कृत | १-९६            |
| २. भक्तामरस्तोत्र हिन्दी टीका सहित | ×          | "       | सं० १८०० ९१-१०६ |

४५३२. गुटका सं० ५१ क। पत्र सं० १४२। भा० ८५६ इ'ब। ले० काल १७६३ माघ सुवी २। पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—विधानसिंह कुल क्रियाकोश भाषा है।

४५३३ गुटका सं० ५२। पत्र सं० १६४+६८+६६। भा० ८५७ इ'ब।

विशेष—तीन भूर्णुण सुरको का मिश्रण है ।

|                              |               |               |
|------------------------------|---------------|---------------|
| १. पञ्चममण्डल                | ×             | प्राकृत       |
| २. पञ्चमण्डल                 | ×             | "             |
| ३. मन्दे गू सूत्र            | ×             | "             |
| ४. शंभुपावर्तनास्तवन (बृहत्) | मुनिप्रभयदेव  | पुराणा हिन्दी |
| ५. अजितघातिस्तवन             | ×             | "             |
| ६. "                         | ×             | "             |
| ७. भगवद्स्तोत्र              | ×             | "             |
| ८. सर्वादिष्टनिवारणस्तोत्र   | जिनदत्तसूरि   | "             |
| ९. गुरुपरलंघन एवं सप्तस्मरण  | "             | "             |
| १०. अक्षयस्तोत्र             | आचार्यमानतु ग | संस्कृत       |
| ११. कल्याणमन्दिरस्तोत्र      | कुमुदचन्द्र   | "             |
| १२. शक्तिस्तवन               | देवसूरि       | "             |
| १३. सप्तविंशतिस्तवन          | ×             | प्राकृत       |

स्तिपि सवत् १७५० आसाज मुदा ४ का सोभाग्य ऋषे न प्रतिस्तिपि का था ।

|                                |               |                 |
|--------------------------------|---------------|-----------------|
| १४. जीवमिचार                   | आमानदेवसूरि   | प्राकृत         |
| १५. नवतल्लिचार                 | ×             | "               |
| १६. अजितघातिस्तवन              | मेरुनन्दन     | पुराणा हिन्दी   |
| १७. सीमंघरस्वामीस्तवन          | ×             | "               |
| १८. शीतलनाथस्तवन               | समयमुन्दर गगि | राजस्थानी       |
| १९. शंभुपावर्तनाथस्तवन लघु     | ×             | "               |
| २०. "                          | ×             | "               |
| २१. आदिनाथस्तवन                | समयमुन्दर     | "               |
| २२. चतुर्विंशति जिनस्तवन       | अमसागर        | हिन्दी          |
| २३. चौबीसजिन मात पिता नामस्तवन | आनन्दसूरि     | " रचना० म० १५६२ |
| २४. फलवधो पावर्तनाथस्तवन       | समयमुन्दरगशि  | राजस्थानी       |

| क्र.सं.  | नाम                     | समयमुन्दरपत्र         | राजस्थानी |
|--|-------------------------|-----------------------|-----------|
| २५.  | पार्ष्वनाथस्तवन         | समयमुन्दरपत्र         | राजस्थानी |
| २६.  | "                       | "                     | "         |
| २७.  | श्रीश्रीपार्ष्वनाथस्तवन | "                     | "         |
| २८.  | "                       | जोधराज                | "         |
| २९.  | बितामण्णपार्ष्वनाथस्तवन | लालचंद                | "         |
| ३०.  | तीर्थमालास्तवन          | नेत्रराम              | हिन्दी    |
| ३१.  | "                       | समयमुन्दर             | "         |
| ३२.  | वीसविरहमानजकड़ी         | "                     | "         |
| ३३.  | नेमिराजमतीराम           | रत्नमुक्ति            | "         |
| ३४.  | गौतमस्वामीराम           | ×                     | "         |
| ३५.  | बुद्धिराम               | शालिभद्र द्वारा सकनित | "         |
| ३६.  | शीलराम                  | विजयदेवसूरि           | "         |
| जोधराज ने श्रीवैभी की भार्या के पठनार्थ लिखा ।   |                         |                       |           |
| ३७.  | साधुवंदना               | आनंद सूरि             | "         |
| ३८.  | दानतपशीलमंवाद           | समयमुन्दर             | राजस्थानी |
| ३९.  | आपादभूतिचौडालिया        | वन्धसोम               | हिन्दी    |
| २० काल १६३८ । लिपि काल सं० १७५० कार्तिक बुदी ५ । |                         |                       |           |
| ४०.  | आडकुमार धमान            | "                     | "         |
| रचना सबत् १६४४ । अमरसर मे रचना हुई थी ।          |                         |                       |           |
| ४१.  | मेषकुमार चौडालिया       | "                     | हिन्दी    |
| ४२.  | अमाव्रतोत्ती            | समयमुन्दर             | "         |
| लिपि संबत् १७५० कार्तिक सुदी १३ । अबरयाबाद ।     |                         |                       |           |
| ४३.  | कर्मवतीसी               | राजसमुद               | हिन्दी    |
| ४४.  | बादहभाषना               | जबसोमण्ण              | "         |
| ४५.  | पद्मावतीरानीआराधना      | समयमुन्दर             | "         |
| ४६.  | धनुजधरास                | "                     | "         |



|                             |                 |         |               |
|-----------------------------|-----------------|---------|---------------|
| ४७. नेमिजिनस्तवन            | जोधराज मुनि     | हिन्दी  |               |
| ४८. मछीपार्वनामस्तवन        | "               | "       |               |
| ४९. पञ्चकल्पारणकस्तुति      | ×               | प्राकृत |               |
| ५०. पंचमीस्तुति             | ×               | संस्कृत |               |
| ५१. संगीतबन्धपार्वजिनस्तुति | ×               | हिन्दी  |               |
| ५२. जिनस्तुति               | ×               | "       | लिपि सं० १७५० |
| ५३. नवकारमहिमास्तवन         | जिनवल्लभसूरि    | "       |               |
| ५४. नवकारसञ्ज्ञाय           | पद्मराजगण       | "       |               |
| ५५. "                       | शुभाप्रभसूरि    | "       |               |
| ५६. गीतमस्वामिसञ्ज्ञाय      | समयमुन्दर       | "       |               |
| ५७. "                       | ×               | "       |               |
| ५८. जिनदत्तसूरिगीत          | मुन्दरगण        | "       |               |
| ५९. जिनकुशलसूरि चौ५ई        | जयसामर उपाध्याय | "       | २० संवत् १४८१ |
| ६०. जिनकुशलसूरिस्तवन        | ×               | "       |               |
| ६१. नेमिराजुलवारहमाला       | मानन्दसूरि      | "       | २० सं० १९८९   |
| ६२. नेमिराजुल गीत           | शुवनकीर्ति      | "       |               |
| ६३. "                       | जिनहर्षसूरि     | "       |               |
| ६४. "                       | ×               | "       |               |
| ६५. शूलभद्र गीत             | ×               | "       |               |
| ६६. नमिराजसि सञ्ज्ञाय       | समयमुन्दर       | "       |               |
| ६७. सञ्ज्ञाय                | "               | "       |               |
| ६८. अरहनासञ्ज्ञाय           | "               | "       |               |
| ६९. मेघकुमारसञ्ज्ञाय        | "               | "       |               |
| ७०. श्रनाथीमुनिसञ्ज्ञाय     | "               | "       |               |
| ७१. सीताजीरी सञ्ज्ञाय       | ×               | हिन्दी  |               |

|                            |               |        |
|----------------------------|---------------|--------|
| ७२. बेलना री सञ्जाय        | ×             | हिन्दी |
| ७३. जीवकाया ”              | भुवनकोलि      | ”      |
| ७४. ” ”                    | राजसमुद्र     | ”      |
| ७५. धातमशिव्या ”           | ”             | ”      |
| ७६. ” ”                    | पद्मकुमार     | ”      |
| ७७. ” ”                    | साल्य         | ”      |
| ७८. ” ”                    | प्रसन्नचन्द्र | ”      |
| ७९. स्वार्थबीसी            | मुनिभीसार     | ”      |
| ८०. शत्रुंजयमास            | राजसमुद्र     | ”      |
| ८१. सोलह सतियों के नाम     | ”             | ”      |
| ८२. बलदेव महापुनि सञ्जाय   | समयसुन्दर     | ”      |
| ८३. शेरिकराजसञ्जाय         | ”             | हिन्दी |
| ८४. बाहुबलि ”              | ”             | ”      |
| ८५. शालिमद्र महापुनि ”     | ×             | ”      |
| ८६. बंधणवाड़ी स्तवन        | कमलकलाश       | ”      |
| ८७. शत्रुघ्नस्तवन          | राजसमुद्र     | ”      |
| ८८. राणपुर का स्तवन        | समयसुन्दर     | ”      |
| ८९. गीतमपृच्छा             | ”             | ”      |
| ९०. मेघिराजमति का चौमासिया | ×             | ”      |
| ९१. स्तूलिमद्र सञ्जाय      | ×             | ”      |
| ९२. कर्मखतोसी              | समयसुन्दर     | ”      |
| ९३. पुष्पक्षतोसी           | ”             | ”      |
| ९४. गौड़ीपार्वनाथस्तवन     | ”             | ”      |
| ९५. पञ्चपतिस्तवन           | समयसुन्दर     | ”      |
| ९६. मन्वन्धेणमहापुनिसञ्जाय | ×             | ”      |
| ९७. क्षीमवसीसी             | ×             | ”      |

६८. भौनएकावशी स्तवन

समयसुन्दर

हिन्दी

रचना सं० १६८१ । जैसलमेर में रची गई । लिपि सं० १७५१ ।

५५३४. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० २६१ । मा० ८३×४३ इञ्च । लेखनकाल १७७५ । पूर्ण ।

वधा—सामान्य ।

|   |               |        |
|---|---------------|--------|
| १. राजाचन्द्रपुत्र की बीपई                                  | ब्रह्मरायनल्ल | हिन्दी |
| २. निवर्णिकाण्ड भाषा  | भैया भगवतीदास | "      |
| षट्—  |               |        |
| ३. प्रभुजी जो तुम तारक नाम धरायो                            | हर्षचन्द्र    | "      |
| ४. आज नामि के द्वार भीर                                     | हरिसिंह       | "      |
| ५. तुम सेवामें जाय सो ही सफल घरी                            | दलाराम        | "      |
| ६. चरन कमल उठि प्रातःखेल में                                | "             | "      |
| ७. सोही सन्त शिरोमनि जिनवर पुन गावे                         | "             | "      |
| ८. मगन भारती कीजे भोर                                       | "             | "      |
| ९. भारती कीजे श्री नेमकंवरकी                                | "             | "      |
| १०. वंदौ दिगम्बर गुरु चरन जग तरन<br>तारन जान                | भूधरदास       | "      |
| ११. विभुवन स्वामीजी करुणा निधि नामीजी                       | "             | "      |
| १२. बाजा बजिया गहरा जहाँ जन्म्या हो<br>ऋषभ कुमार            | "             | "      |
| १३. नेम कंवरजी ये सजि आया                                   | साईदास        | "      |
| १४. भट्टारक महेन्द्रकीतिजी की जकड़ो                         | महेन्द्रकीति  | "      |
| १५. झहो जगत्गुरु जगपति परमानंद निषान                        | भूधरदास       | "      |
| १६. देख्या दुमिया के बीच के कोई<br>भ्रजव तमाशा              | "             | "      |
| १७. विनती—बंदों श्री भरहंतदेव सारद<br>नित्य सुभरख हिरदै धरू | "             | "      |

| राजमती बीनरी केवजी मजी<br>तुम क्यों चढ़ा गिरनारि (बिनती)      | विश्वभूषण       | हिन्दी                                       |
|---|-----------------|--|
| १९. नेमोववररास  | बहा रामगल       | " २० फाल्गु सं० १६१५<br>लिपिकार बंधाराम सोनी |
| २०. चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्नों का फल                        | ×               | "  |
| २१. निर्वाणकाण्ड  | ×               | प्राकृत                                      |
| २२. चौबीस तीर्थङ्कर परिचय                                     | ×               | हिन्दी                                       |
| २३. पांच परबीजत की कथा  | केलीदास         | " लेखन संवत् १७७९                            |
| २४. पद  | बनारसीदास       | "  |
| २५. मुनिस्वरो की जयमाला                                       | ×               | "  |
| २६. भारती   | छान्तराम        | "  |
| २७. नेमिश्वर का मीत   | नेमिचन्द्र      | "  |
| २८. बिनति-(बंबहु श्री जिनराय मनबच<br>काब करोजी )              | कनककीर्ति       | "  |
| २९. जिन भक्ति पद  | हर्षकीर्ति      | "  |
| ३०. प्राणो रो गीत ( प्राणीड़ा रेतू काई<br>सोवै रैन बिस्त )    | ×               | "  |
| ३१. जकड़ी ( रिषभ जिनेश्वर बंदस्यी )                           | देवेन्द्रकीर्ति | "  |
| ३२. बीव संबोधन गीत ( होजोव<br>नव मास रस्यो गर्भ वासा )        | ×               | "  |
| ३३. लुहरि ( नेमि नगीना नाथ यां परि<br>बारी म्हारालाल )        | ×               | "  |
| ३४. मोरड़ो ( म्हारो रै मन मोरड़ा तूतो<br>उठि गिरनारि जाइ रे ) | ×               | "  |
| ३५. बटोइ ( तू लोजिन भजि बिलम न लाम<br>बटोई मारण भूली रे )     | ×               | हिन्दी                                       |
| ३६. पंचम गति की बेलि  | हर्षकीर्ति      | " २० सं० १६८३                                |

|  |                  |                          |
|--|------------------|--------------------------|
| ३७. करम हिम्बोलखा  | ×                | हिन्दी                   |
| ३८. पद-( ज्ञान सरोवर मांहि भूलै रे हंसा )                | सुरेन्द्रकीर्ति  | "                        |
| ३९. पद-( चौदीसो तीर्थकर करो<br>भवि बबल )                 | नेमिचन्द         | "                        |
| ४०. करमां की गति न्यारी हो                               | ब्रह्मनाथ        | "                        |
| ४१. भारती ( करौं नामि कंवरजी की<br>भारती )               | सालबन्द          | "                        |
| ४२. भारती  | ज्ञानतराय        | "                        |
| ४३. पद-( जीबड़ा पूबो श्री पारस<br>बिनेन्द्र रे )         | "                | "                        |
| ४४. गीत ( बोरी थे लगबो ही नेमजी<br>का नाम स्यो )         | पांडे नाथुराम    | "                        |
| ४५. सुहरि-( सो ससार भनादि को सोही<br>बाग बभ्यो री लो )   | नेमिचन्द         | "                        |
| ४६. सुहरि-( नेमि कुवर व्याहन चढयो<br>राजुस करै इ सिगार ) | "                | "                        |
| ४७. जोगोरासो   | पांडे जिनदास     | "                        |
| ४८. कलियुग की कथा  | केशव             | " ४४ पद्य । ले० सं० १७७६ |
| ४९. राजुलपञ्चीसी   | सालबन्द विनोदलाल | " "                      |
| ५०. भट्टान्हिका व्रत कथा                                 | "                | हिन्दी                   |
| ५१. द्रुनिषवरो की जयमाल                                  | बहाजिनदास        | "                        |
| ५२. कल्याणमन्दिरस्तोत्र भाषा                             | बनारसीदास        | "                        |
| ५३. तीर्थङ्कर जकड़ी                                      | हर्यकीर्ति       | "                        |
| ५४. जगत में सो देवन को देव                               | बनारसीदास        | "                        |
| ५५. हम बैठे अपने मौन से                                  | "                | "                        |
| ५६. कहा भक्तानी जीवको गुप्त ज्ञान बतावे                  | "                | "                        |

|  |           |         |
|--|-----------|---------|
| ५७. रंग बनाने की विधि                      | ×         | हिन्दी  |
| ५८. स्फुट बोहे                             | "         | "       |
| ५९. मुखवेलि ( चन्दन वाला गीत )             | "         | "       |
| ६०. श्रीपालस्तवन                           | "         | "       |
| ६१. तीन भियां की जकड़ी                     | धनराज     | "       |
| ६२. सुखपद्मी                               | "         | "       |
| ६३. कक्का बीनती ( बारहसडी )                | "         | "       |
| ६४. झठारह नाते कीकथा                       | लोहट      | "       |
| ६५. झठारह नाता का न्यौरा                   | ×         | "       |
| ६६. भावित्यवार कथा                         | ×         | "       |
| ६७. धर्मरासो                               | ×         | "       |
| ६८. पद-देखो भाई भाजि रिषभ परि भावे         | ×         | "       |
| ६९. क्षेत्रपालगीत                          | शुभचन्द्र | "       |
| ७०. गुरुओं की स्तुति                       | —         | संस्कृत |
| ७१. सुभाषित पद्य                           | ×         | हिन्दी  |
| ७२. पार्वनाथपूजा                           | ×         | "       |
| ७३. पद-उठो तेरो मुख देखूं नाभित्री के नन्द | टोडर      | "       |
| ७४. जगत मे सो देवन को देव                  | बनारसीदास | "       |
| ७५. बुविषा कज जइ या मन की                  | ×         | "       |
| ७६. इह चेतन की सब सुधि गई                  | बनारसीदास | "       |
| ७७. नेत्रीसुरजी को जनम हुयो                | ×         | "       |
| ७८. चौबीस तीर्थकुंठों के बिल्ल             | ×         | "       |
| ७९. दोहासंग्रह                             | तानिगनास  | "       |
| ८०. धार्मिक चर्चा                          | ×         | "       |
| ८१. दूरि गयो जग जेती                       | धनश्याम   | "       |
| ८२. देखो माइ भाज रिषभ पर भावे              | ×         | "       |

|  |                 |        |
|--|-----------------|--------|
| ८३. चरलकमल को ध्यान भेरे                         | ×               | हिन्दी |
| ८४. जिनजी बांकीजी मूरत मनबो मोहियो               | ×               | "      |
| ८५. नारी सुकृति पंच बट पारी नारी                 | "               | "      |
| ८६. सभभि नर जीवन धोरो                            | रूपचन्द         | "      |
| ८७. नेमजी वे काई हठ मारघो महाराज                 | हर्षकीर्ति      | "      |
| ८८. देखरी कहूँ नेमि कुमार                        | "               | "      |
| ८९. प्रभु तेरी मूरत रूप बनी                      | रूपचन्द         | "      |
| ९०. चितामणी स्वामी सांघा साहब मेरा               | "               | "      |
| ९१. सुखबड़ी कब आवेगी                             | हर्षकीर्ति      | "      |
| ९२. चेतन तू तिहूँ काल भ्रकेला                    | "               | "      |
| ९३. पंच मंगल                                     | रूपचन्द         | "      |
| ९४. प्रभुजी थांका दरसण सूँ सुख पावां             | ब्रह्म कपूरचन्द | "      |
| ९५. लघु मंगल                                     | रूपचन्द         | "      |
| ९६. सम्भेद सिलर चली टै झोवड़ा                    | ×               | "      |
| ९७. हम आये है जिनराज तुम्हारे बन्दन को           | द्यानतराय       | "      |
| ९८. ज्ञानपञ्चीसी                                 | बनारसीदास       | "      |
| ९९. तू भ्रम मूलिन न रे प्राणी सज्जानी            | ×               | "      |
| १००. हुजिये दयाल प्रभु हुजिये दयाल               | ×               | "      |
| १०१. मेरा मन की बात कानु कहिये                   | सबलसिंह         | "      |
| १०२. मूरत तेरी सुन्दर सोहो                       | ×               | "      |
| १०३. प्यारे हो लाल प्रभु का दरस की बलिहारी       | ×               | "      |
| १०४. प्रभुजी त्यारियां प्रभु आप जाणिले त्यारियां | ×               | "      |
| १०५. ज्यों जाणै ज्यों त्यारोजी दयानिधि           | सुशालचन्द       | "      |
| १०६. मोहि लगता श्री जिन प्यारा                   | हठमलदास         | "      |
| १०७. सुमरन ही मे त्यारे प्रभुजी तुम              |                 | "      |
| सुमरन ही में त्यारे                              | द्यानतराय       | "      |

१०८. पार्वनाथ के दर्शन

वृन्दावन

हिन्दी

१० सं० १७६८

१०९. प्रभुजी में तुम चरणचरण गहने

बालकन्द

”

५४३५. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ८८ । आ० ८×६ इञ्च । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

बिषय—इस गुटके में पृष्ठ ६४ तक पण्डिताचार्य धर्मदेव विरचित महाशांति पूजा विधान है । ६५ से ८१ तक अन्य प्रतिष्ठा सन्बन्धी पूजाएं एवं विधान हैं । पत्र ८२ पर अपभ्रंश में चौबीस तीर्थक्षुर स्तुति है । पत्र ८५ पर राजस्थानी भाषा में 'रे मन रमि रहू चरणजिनन्द' नामक एक बड़ा ही सुन्दर पद है जो नीचे उद्धृत किया जाता है ।

रे मन रमिरहु चरण जिनन्द । रे मन रमिरहु चरणजिनन्द ॥डाला॥

जह पठावहि तिहुवरा इई ॥ रे मन० ॥

यहु संसार असार मुरो घिगु कव जिय धम्मु दयालं ।

परगय तच्छु मुराहि परमेद्धिह मुमरौह धम्पु गुराल ॥ रे मन० ॥ १ ॥

जीउ भजोउ दुविहु पुराु आसव बन्धु मुराहि चउभेयं ।

संवह निजह मोषु बियाग्राहि पुष्पापाप मुबिरोयं ॥ रे मन० ॥ १ ॥

जीउ दुभेउ मुक्त संसारी मुक्त सिद्ध सुवियाणे ।

बनु गुण बुस कलक्कु विबजिद भासिये केवलराणे ॥ रे मन० ॥ ३ ॥

जे संसारि भमहि जिय संबुल लख जोरिण चउरासी ।

थावर बियालिविय सयलिविय, ते पुमाल सहवासी ॥ रे मन० ॥ ४ ॥

पच भजीव पढयमु तहि पुगलु, धम्पु भधम्पु आगासं ।

कालु भकाउ पंच कायासी, ऐच्छह दठव पयास ॥ रे मन० ॥ ५ ॥

आसउ दुविहु दम्बभावहं, पुराु पंच पयार जिरासुं ।

मिच्छा बिरय पमाय कसायहं जोपह जोव प्रमुत्तं ॥ रे मन० ॥ ६ ॥

चारि पयार बन्धु पमडिय हिवि तह अणुभाव पयूत्तं ।

जोगा पबकि पयूत्तठियापणु भाव कसाय वितेसं ॥ रे मन० ॥ ७ ॥

सुह परिणामे होइ सुहसउ, अमुहि अमुह बियाणे ।

सुह परिणामु करहु हो अबिचहु, जिम सुह होय नियाणे ॥ रे मन० ॥ ८ ॥



संवरु करहि जीव जग सुन्दर घासव दार निरोहं ।

अरुह सिध समु प्रापु विद्याणहु, सोहं सोहं सोहं ॥ रे मन० ॥ ६ ॥

गिु वर जरह विद्यामहु फारगु, जिय जियुवयण संभाले ।

बारह विह तव दमविह संजमु, पंच महावय पाले ॥ रे मन० ॥ १० ॥

घडविहि कम्मविमुक्कु परमपउ, परमपयकुलिय वासो ।

रिणचलु मुलुलिय रञ्जनु तहिगुरि, ईच्छियु ईच्छइ वासो ॥ रे मन० ॥ ११ ॥

जागिु असरण कहु वया करणा, पडितु मनह विचारइ ।

जिणवर सासगु तवु पयासगु, सो हिय बुइ थिर धारइ ॥ रे मन० ॥ १२ ॥

५४३६ गुटका सं० ५५ । पत्र सं० २४० । आ० ६×६९ इञ्च । भाषा—हिन्दी सम्कृत । ले० कान

१० १६८८ ।

विशेष—पूजा पाठ एव स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

५४३७. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० १५० । आ० ६९×४३ इञ्च । पूर्ण एवं जीर्ण । अधिकाय पाठ

घण्टा है । लिपि विकृत है ।

विशेष—इसमें निम्न पाठों का संग्रह है ।

|                                     |   |         |       |
|-------------------------------------|---|---------|-------|
| १ कर्मनोकर्म वर्णन                  | × | प्राकृत | ३-५   |
| २ ग्याह अग एवं चौदह पूर्वो का विवरण | × | हिन्दी  | ६-१०  |
| ३. श्वेताम्बरो के ८४ वाद            | × | "       | १२-१३ |
| ४ महान नाम                          | × | "       | १३    |
| ५. संधोतरति कथन                     | × | "       | १४    |

ॐ नमः श्री पार्वतीनाय काले बुद्धकीर्तिना एकस्य मिय्यात्वबौद्ध स्थापितं ॥ १ ॥

संवत् १३६ वर्षे भद्रबाहुशिष्येण गिनचन्द्रेण संशयमिध्यात्वं श्वेतपटमते स्थापितं ॥ २ ॥

श्री शीतलताथङ्करकाने क्षीरकदम्बाचार्यपुत्रेण पर्व्वतेन विपरीतमर्न मिध्यात्व स्थापितं ॥ ३ ॥

सर्वतीर्थङ्कराणां काले विनयमिध्यात्वं ॥ ४ ॥

श्रीपार्वतीनाथगणेश शिष्येण मस्कारपूर्णाज्ञानमिध्यात्वं श्री महावीर काले स्थापितं ॥ ५ ॥

संवत् ५२६ वर्षे श्री पूज्यपादशिष्येण प्राभृतकवैदिना वज्रनदिना पङ्कवणकप्रक्षेणे द्वाविडसंघः स्थापितः ।

संवत् २०५ वर्षे श्वेतपटात् श्रीकलशात् प्रायलाक संधोतरतिजीता । ७ ॥

चतुः संघोरसि कथ्यते । श्रीभद्रबाहुशिष्येण श्रीमूलसंघमठितेन ग्रहद्विभुक्तिगुप्ताचार्यविशाखाचार्येति नामत्रय चारकेण श्रीगुप्ताचार्येण नन्दिसंघः, सिद्धसंघः, मेनसंघः, देवसंघः इति चत्वारः संघाः स्थापिताः । तेष्यो यथाक्रमं ब्रह्मकारणराजयो गणाः सरस्वतराजयो गक्षाश्च जातानि तेषां प्राञ्जयादिषु कर्मसु कोऽपि भेदोऽस्ति ॥ ८ ॥

संबन् २५३ वर्षे विनयमेनस्य शिष्येण सन्यासभंगयुक्तेन कुमारसेनेन दारुसंघ स्थापितं ॥ ९ ॥

संबन् ९५३ वर्षे सम्यक्तप्रकृत्यदयेन रामसेनेन निःपिच्छत्वं स्थापितं ॥ १० ॥

संबन् १८०० वर्षे प्रतीते वीरचन्द्रमुनेः सकाशात् भिन्नसंघोत्पत्ति भविष्यति ॥

एष्योतान्येषामुत्पत्ति पञ्चमकालावसाने सर्वेषामेव ॥

गृहस्थानां शिष्याण विनासो भविष्यत्येक जिनमतं किमकाल स्वाध्यतीतिज्ञेयमिति दर्शनसारे उक्तं ॥

|                             |   |          |        |        |
|-----------------------------|---|----------|--------|--------|
| ६. गुणस्थान चर्चा           | × | प्राकृत  | १५-२०  |        |
| ७. जिनान्तर                 |   | धीरचंद्र | हिन्दी | २१-२३  |
| ८. सामुद्रिक शास्त्र भाषा   | × |          | "      | २४-२७  |
| ९. स्वर्गनरक वर्णन          | × |          | "      | ३२-३७  |
| १०. धृति ग्रहाहार वा १६ शोध | × |          | "      | ३७     |
| ११. लोक वर्गन               | × |          | "      | ३८-५३  |
| १२. चउबीस ठागा चर्चा        | × |          | "      | ५४-८९  |
| १३. ग्रन्थस्फुट पाठ सग्रह   | × |          | "      | ९०-११० |

४५३८ गुटका सं० ७७-१३ सं० ४-१२१ । आ० ९×६ इञ्च । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

|                        |   |         |       |
|------------------------|---|---------|-------|
| १. त्रिकालदेववंदना     | × | संस्कृत | ५-१२  |
| २. सिद्धभक्ति          | × | "       | १२-१४ |
| ३. नंदीश्वरादिभक्ति    | × | प्राकृत | १४-१६ |
| ४. चौतीस धर्तिसय भक्ति | × | संस्कृत | १६-१९ |
| ५. श्रुतज्ञान भक्ति    | × | "       | १९-२१ |
| ६. दर्शन भक्ति         | × | "       | २१-२२ |
| ७. ज्ञान भक्ति         | × | "       | २२    |
| ८. चरित्र भक्ति        | × | संस्कृत | २२-२४ |
| ९. अनापार भक्ति        | × | "       | २४-२६ |

|                                  |                  |         |         |
|----------------------------------|------------------|---------|---------|
| १०. योग बलि                      | ×                | "       | २६-२८   |
| ११. निर्वणिकाष्प                 | ×                | प्राकृत | २८-३०   |
| १२. बृहत्स्वयंभु स्तोत्र         | समन्तभद्राचर्य   | संस्कृत | ३०-४१   |
| १३. गुरावली ( लघु आचार्य भक्ति ) | ×                | "       | ४१-४४   |
| १४. चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति  | ×                | "       | ४४-४६   |
| १५. स्तोत्र संग्रह               | ×                | "       | ४६-५०   |
| १६. भाषना बतौसी                  | ×                | "       | ५१-५२   |
| १७. धाराबनासार                   | देवनेन           | प्राकृत | ५३-६०   |
| १८. संबोधन चासिका                | ×                | "       | ६१-६८   |
| १९. द्रव्यसंग्रह                 | नेमिचंद्र        | "       | ६८-७१   |
| २०. भक्ततामरस्तोत्र              | मानतुंगाचार्य    | संस्कृत | ७१-७५   |
| २१. डाढसी गायत्रि                | ×                | "       | ७५-८३   |
| २२. परमानंद स्तोत्र              | ×                | "       | ८३-८४   |
| २३. अणुस्तमिति संधि              | हरिश्चन्द्र      | प्राकृत | ८५-८९   |
| २४. चूनडीरास                     | विनयचन्द्र       | "       | ९०-९४   |
| २५. समाधिमरण                     | ×                | धरत्रय  | ९४-९९   |
| २६. निर्भरपंचमी विधान            | यतिविनयचन्द्र    | "       | ९९-१०५  |
| २७. सुष्यदोहा                    | ×                | "       | १०५-११० |
| २८. द्वादशानुप्रेक्षा            | ×                | "       | ११०-११२ |
| २९. "                            | जल्हण            | "       | ११२-११४ |
| ३० योगि चर्चा                    | महात्मा ज्ञानचंद | "       | ११४-११९ |

५४३९. गुटका सं० ५८ । पत्र सं० १३-५१ । प्रा० ६×६ । अक्षर ।

विशेष—गुटका प्राचीन है ।

१. जिनरात्रिविधानकथा नरसेन यत्रत्रय अक्षर १३-२०

अन्तिम भाग—

कतिय किष्क चउद्दमि रत्तिहि, गउ सम्मइ जिगु पंचम छत्तिहि ।

इय सम्बन्धु कहिउ सयलामलो, जिनरत्ति हि फनु भविपह् मंगलो ।

भवदधि जोशरति करेसइ, सो मरद्वयखंड लहेसइ ।  
 सारउ मुउ महियलि भुंजेसइ, रइ समाए कुल उत्तिरमेसइ ॥  
 पुणु सोहम्म समी जाएसइ, सहु कीलेसइ शिरु सुकुमालिहि ।  
 मगुवसुखु भुंजिवि जाएसइ, सिवपुरि वामु सोवि पावेसइ ।  
 इय जिगुरति बिहाणु पयोमिउ, जइजिरासासणि गरुहरि भासिउ ।  
 जे हीगाहिउ काइमि कुत्तउ, तं बुहारण मठु खमहु गिरुत्तउ ।  
 एहु मच्छु जो लिहइ लिहावइ, पढइ पढावइ कहइ कहावइ ।  
 जो नर नारि एहमणि भावइ, पुण्णइ अहिउ पुण्ण फलु पावइ ।

धत्ता—

सिरि गरमेणह नामिउ, सिवपुरि गामिउ, बड्ढमाण तिण्णकरु ।  
 जइ मागिउ देइ करण करेइ देउ मुबोहि लाहु परमेसरु ॥ २७ ॥  
 इय सिरि बड्ढमाणकट्ठपूराणे सिघादिभवभावावण्णणे जिराराइविहाणफलसंपत्ती ॥  
 सिरि गरमेण विरइए मुभवसासण्णारिणमिते पढम परिछेह सम्मत्तो ।

॥ इति जिराराणि विधान कथा समाप्तः ॥

२. रोहिणिविधान

मुण्णिसुणभद्र

अपभ्रंश

२१-२५

प्रारम्भिक भाग—

वासवनुमपायहो हरिपविसायहो निज्जिय कायहो पयजुलु ।  
 सिवमभासहायहो केवलकायहो रिसहहो पणविवि कयकमलु  
 परमेट्ठि पञ्च पणविवि महंत, भवजलहि पोय विहडिय कयंत ।  
 सारभ सारस ससि जोल्ल जेम, रिण्णमल वरिण्णज केणकेम ।  
 जिहि गोयमए विण्णिव वरस्स, सेणिय रायस्स असोहरस्स ।  
 तिह रोहिणी वय कह कहमि भव्व, जह सत्तिणि वारिय पावणञ्च ।  
 इय जइदीव हो भरइ खेत्ति, कुंरु जंगल ए सिवि गए जलोत्ति ।  
 हण्णिसाउरु पुरजण पवररिड्ढु, जणु वसइ जिल्थु सह सय समिड्ढु ।  
 तहि वीयसोउ गयसोउ भूउ, बिण्णु पहरइ रइ हियय भूउ ।  
 तहां एावणु कुलणन्दण भसोउ, जंमिल्लवि गउ अइ पूरि सोउ ।

तह भंग किसइ जरा कुरुह बिसए चंगाउरि पयउ गुलाइ बिसए ।  
 मट्टइ खाभिसी उलाइवतु, सिरिमइ पियलकिउ रिउ कयन्तु ।  
 सुय भट्ट तामु भरि जरिय तामु, रोहिसी कण्णारां कामपामु ।  
 कत्तिय भट्टाहिव सोपवास, गयपुर वहि जिया वमु पुज्जवास ।  
 जिया भच्चिव मुण्णि वंदिवि भसेस, सिरि वामुपुज्ज पयलविसेस ।  
 मह मज्झिमि सण्णहो एणवह देइ गोहिसी जातराया भंजलइ ।  
 भवलोइवि सुव जुव्वराण समेय, परिणयण चित हयमरिण भमेय ।  
 रियायमति मंतु गिष्ठीवि भभेउ, रिया बुद्धि वियारिवि विहियसेउ ।

धत्ता—

ता पुरवउ वहिरि कि परिउ साहि, रिबद्ध मंच चउ पासहि ।  
 करणमयमु खच्चिय रयण करच्चिय, मडिय मडव पासहि ॥ १ ॥

अन्तिम भाग—

निसुणइ जिरावरिण सावहणु वियलइण करननु भावमानु ।  
 वग्धा घायो जह सराणुणत्थिय, मय सावहो जीवहो सहणसन्थिय ।  
 भणु हवइ मुहामुह एक्कुजोउ, तरणु भिणुणु लेइ मरणाउ भोउ ।  
 मसार सहकम्भु पूरकर समुद्धु, भणुजि धाउ विहलु कुमुद्धु ।  
 भ.सवइ कम्भु जो एहि विच्च, तहो विलयं संवर होइ कच्च ।  
 सम भावि सहियइ कम्भुधाउ, परिभमित लोहू जीविउ सपाउ ।  
 दुक्कहु जिरा धम्मु समुत्ति मम्भु, एणवि संगहियउ कम्मेषु लग्गउ ।  
 इउ मुग्गिबि सवि जिरा सिक्ख दिक्ख, हुउ गराहरु राउ भसोउ भिक्ख ।  
 सगहिय उवाध्यायउ भममलराणु, केवलु गउ मोक्खहु मुह बिहाणु ।  
 रहि तरणउ चरिवि पवण्णसम्मि भच्छु, एच्छि दिवि धी निणु भग्गी ।  
 धीयउ विसम्मि संपत्त भज्ज, वउधरी दिक्खिय सुवहु सज्ज ।  
 हव केवमोक्ख गयहरिण विकम्म, भणु हवहि एणरंतर मुत्ति सम्म ।  
 चउधरिय लक्खणसो धरि सुलच्छि, रां परासिरि नाम इन्दी बलच्छि ।  
 राह्वेउ विहिउ ताइणउ, रोहिसि कहरिइय तामु हेउ ।

धृष्या—

सिरि गुणभद्रमुगीसरेण विहिय क्हा बुधी भरेण ।  
 सिरि मलयकिंति पयल जुयलणाविधि, सावयलभो यह मणुछुविधि ।  
 रांदउ सिरि त्रिणसंख, रांदउ तहभूमि बालुणि विम्भं ।  
 रांदउ लकखणु लकखं, दिनुं सया कयतरु बजइ मिक्खं ।

॥ इति श्री रोहिणी विधानं समाप्तं ॥

|                       |                   |         |       |
|-----------------------|-------------------|---------|-------|
| ३. जिनरात्रिविधान कथा | ×                 | प्रपञ्च | २६-२६ |
| ४. दशमशयुकथा          | मुनि गुणभद्र      | "       | ३०-३३ |
| ५. चदनपद्मोत्रकथा     | प्राचार्य छत्रसेन | संस्कृत | ३३-३६ |

नरदेव के उपदेश से प्राचार्य छत्रसेन ने कथा की रचना की थी ।

आरम्भ—

जिनं प्रणम्य चंद्राम कमौषध्वान्तभास्करं ।  
 विधान चदनपद्मत्र भयानां कथमिहा ॥ १ ॥  
 द्वीपे जम्बूद्वीपं केम्बिन्दु क्षेत्रे भरतनामनि ।  
 काशी देशोऽस्ति विख्यातो वर्जितो बहुधावुषेः ॥ २ ॥

शान्तम—

प्राचार्यछत्रसेनेन नरदेवोपदेशतः ।  
 कृत्वा चंदनपद्मीयं कृत्वा मोक्षफलप्रदा ॥ ७७ ॥  
 श्री भव्यः कुक्षते विधानममलं स्वर्गावर्गप्रदा ।  
 शान्तः कार्यते करोति भविनं व्याख्याय संबोधनं ॥  
 सुखासी नरदेवयोर्ध्वरसुखं सच्छत्रसेनाश्रिता ।  
 शास्यतो जिननायकेन महते प्राप्तेति जैनं धीया ॥ ७८ ॥

॥ इति चंदनपद्मी समाप्तं ॥

|                  |   |         |       |
|------------------|---|---------|-------|
| ६. मुक्तावली कथा | × | संस्कृत | ३६-३८ |
|------------------|---|---------|-------|

आरम्भ—

प्रादि देवं प्रणम्योक्तं मुक्तावलीं विमुक्तिदं ।  
 पथ संक्षेपतो वक्ष्ये कथा मुक्तावलिबिधिः ॥ १ ॥

७. सुगंधदशमी कथा

रामकीर्ति के शिष्य

अपभ्रंश

३८-४१

विमल कीर्ति

आदि भाग

परावैष्णु सम्मद् जिरोसरहो जा पुव्वसूरि प्रागम भगिया ।  
 शिगुरिण्जहु भवियहु इक्कमना, कहकहमि सुगंधदसमी हितशरिया ॥  
 दसमिहि सुअंध विहाणुकरेविणु तइय कल्प उअपण्य मरेविणु ।  
 चउदह प्राहरयेहि पसाहिय साभी मुहइ भुजइ अविणंठिय ॥  
 पुहवी मण्डराणु पुरु मुरु दुल्लहु, राउ पषाउ दयाअरा वल्लहु ।  
 मानस मु दरि गति उपण्णो मयणावलि नामि संपुण्णो ॥  
 दिरिण दिरिण कुमरि वियावहु भत्ती भव्वलोय माराम मोअती ।  
 सामवण्ण मण्णवि सुरहि तणु जिणुवरु सामिउ पज्जइ अणु दिणु ॥  
 दाणु चउविह दिति ए त्थक्कइ तह व छल्ल का वण्ण ग मकट ।  
 धम्मनंत वेलि गरराहि पोमाइयइ धम्म अमगदि ।  
 रायं सापरिणाविय जामहि, पुत्त कलनहि वट्टियतामदि ॥  
 रामकिन्ति गुरुविणुउ करेविणु विणु विमल कीर्ति मट्टिअनि पव्वियणु ।  
 पछइ पुणु तव परणु करेविणु सइ अणुक्कमेण सोमक्कुवउत्तेमइ ॥  
 जो करउ करावइ एहविहि वक्खाराणुय विभवियह दाउंउ ।  
 सो जिणुणह भासियहु सणु माक्खु कव पावइ ॥ ८ ॥

इति सुगंधदशमीकथा समाप्ता

८. पुष्पाञ्जलि कथा

×

अपभ्रंश

४१-४६

आरम्भ

जज जय अरुह जिरोसर हयवम्मीसर मुत्तिसिरीवरगणधरणा ।  
 अयमय गणभामुर सहयमहीसर जुत्ति गिराधर भमकरणा ॥ ६ ॥  
 बलवत्तरागिण रयणाकिति मुगिण सिस्स वृहिवं दिज्जइ ।  
 भावकिति जुउ अनंतकित्तिपुरु पुण्णुं जनि विहि किज्जइ ॥ ११ ॥

अन्तिम अक्षा

पुष्पाञ्जलि कथा समाप्ता

| ६. अनंतविधान कथा   | ×                | अपभ्रंश         | ४६-५१      |
|--|------------------|-----------------|------------|
| ५५४० गुटका सं० ५६—पत्र संख्या—१=३ । आ०-७॥×६ । वया सामान्यजीर्ण । |                  |                 |            |
| १. नित्यवंदना सामायिक  | ×                | संस्कृत प्राकृत | १-१२       |
| २. नैमित्तिकप्रयोग   | ×                | संस्कृत         | १५         |
| ३. स्तुतभक्ति  | ×                | "               | १५         |
| ४. चारित्रभक्ति  | ×                | "               | १६         |
| ५. आचार्यभक्ति   | ×                | "               | २१         |
| ६. निर्बाणभक्ति  | ×                | "               | २३         |
| ७. योगभक्ति  | ×                | "               | "          |
| ८. नंदीश्वरभक्ति   | ×                | "               | २६         |
| ९. स्वयंपूस्तोत्र  | आचार्य समस्तभद्र | "               | ४३         |
| १०. गुर्वावलि  | ×                | "               | ४५         |
| ११. स्वाध्यायपाठ   | ×                | प्राकृत संस्कृत | ५७         |
| १२. तत्त्वार्थसूत्र  | उमास्वामि        | संस्कृत         | ६७         |
| १३. मुद्रभाताष्टक  | यतिनेमिचंद्र     | "               | पद्य सं० ८ |
| १४. मुद्रभातिकस्तुति   | भुवनभूषण         | "               | " २५       |
| १५. स्वप्नावलि   | मुनि देवर्नादि   | "               | " २१       |
| १६. सिद्धिप्रिय स्तोत्र  | "                | "               | " २५       |
| १७. भूपालस्तवन   | भूपाल कवि        | "               | " २५       |
| १८. एकीभावस्तोत्र  | बाहिराज          | "               | " २६       |
| १९. विद्यापहाद स्तोत्र   | धनञ्जय           | "               | " ४०       |
| २०. पार्वर्चनाथस्तवन   | देवचंद्र सूरि    | "               | " ४४       |
| २१. कल्याण मंदिर स्तोत्र   | कुमुदचन्द्रसूरि  | संस्कृत         |            |
| २२. भावना बत्तीसी  | ×                | "               |            |
| २३. कल्याणष्टक   | पद्मनंदी         | "               |            |
| २४. बीतराज गाथा  | ×                | प्राकृत         |            |



|                  |             |         |       |
|------------------|-------------|---------|-------|
| २५. मंगलाष्टक    | ×           | संस्कृत |       |
| २६. भावना बीतीसो | अ० पद्यनंदि | ”       | ६२-६५ |

## आरम्भ

शुद्धप्रकाशमहिमास्तसमन्तमोहं, निद्रातिरेकमसमावगमस्वभाषं ।  
 प्रानंदकंदमुदयास्तदशानभिजं स्वार्थभुवं भवतु धाम मता गिवाय ॥ १ ॥  
 श्रीगीतमप्रभुतयोषि विभोर्महिम्नः प्रायः क्षमानयनयः स्तवनं विधातुं ।  
 ग्रथं विचार्य जहंतस्तद्गुणलोके सौख्याप्तये जिन भविष्यंत मे किमन्यत् ॥ २ ॥

## अन्तिम

श्रीमत्प्रभेन्दुप्रभुवाक्यरदिम विचारिचित्तः कुमदः प्रमोदात् ।  
 श्रीभावनापद्धतिःमात्मशुद्धयै श्रीपद्यनंदी स्वयं चकार ॥ ३४ ॥  
 इति श्री भट्टारक पद्यनंदिदेव विरचितं चतुस्त्रिंशद् भावना समाप्तमिति ।

|                      |                |         |    |
|----------------------|----------------|---------|----|
| २७. भक्त्यामःस्तोत्र | आचार्य मानतुंग | संस्कृत |    |
| २८. बीतरामस्तोत्र    | अ० पद्यनंदि    | ”       | ६६ |

## आरम्भ

स्वास्मावबोधविशदं परमं पवित्रं ज्ञानैकमूर्तिमरावद्युगैकपात्रं ।  
 धाम्नादिताक्षयमुखाब्जलसत्परागं, पश्यन्ति पुण्यसहिता भुवि बीतरागं ॥ १ ॥  
 उधत्तपस्तपरागोजितपापपकं चैतन्यविन्दमचलं विभलं विपाकं ।  
 देवैन्द्रकुन्दमहितं करुणालतागं पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि बीतरागं ॥ २ ॥  
 जाग्रद्विशुद्धिमहिमावधिमस्तशोकं, धर्मादेवाविधिबिधितभव्यलाकं ।  
 ध्याचारवन्द्युरमति जनतामुरागं, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि बीतरागं ॥ ३ ॥  
 कदर्पं सर्पं मदनासनवेननेमं, या पाप हरिजगत्कुलमनामधेयं ।  
 ससारसिधु परिमथन मदरागं, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि बीतरागं ॥ ४ ॥  
 शिवाशङ्कमुकमुकमवारनिकं विदंभं, वद्विष्णु सद्व्रतवर्चयामृतपूर्णाकुंभं ।  
 बनावद्विमोहतस्त्रण्डनचण्डनागं, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि बीतरागं ॥ ५ ॥  
 प्राणंदकद सररीकृतधर्मपथं, ध्याग्निदध्यागिल्लोद्धतकर्मकथं ।  
 व्यन्ताजवार्नि मरुघात विधाय जोगं, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि बीतरागं ॥ ६ ॥

स्वच्छोच्छलव्यतिष्ठतिगिज्जितमेवम.वं, स्याद्वादेवाहितमयाकृतसद्विचार्य ।  
 निःसीमसंजममुधारसततद्वागं पश्यन्ति पुष्य सहिता युधि वीतरागं ॥ ७ ॥  
 सम्यक्प्रमाणकुमुदाकरपूर्णाचन्द्रं भांगत्यकारस्वमनंतपुर्यां वितन्द्रं ।  
 इष्टप्रमाणविधिपोषितसूत्रिभागं, पश्यन्ति पुष्य सहिता युधि वीतरागं ॥ ८ ॥

श्रीपद्मनन्दिरचितं किलवांतरागस्तोत्रं,  
 पवित्रमणवचमनादिनादी ।

य कोमेनेन वचसा विनयाविधीते,  
 स्वर्गापवर्षकमलातमलं वृणीत ॥ ९ ॥

॥ इति भट्टारक श्रीपद्मनन्दिरचिते वांतरागस्तोत्रं समाप्तेति ॥

|                               |                |                               |             |
|-------------------------------|----------------|-------------------------------|-------------|
| २६. धारापनामार                | देवसेन         | अपभ्रंश                       | १० सं० १०८६ |
| २०. हनुमतानुमेक्ष             | महाकवि स्वयंभू | ,, स्वयंभू रामयण का एक भाग    | ११६         |
| २१. कालावलीपदडी               | ×              | ,,                            | ११६         |
| २२. जानपिण्ड की विधिति पदडिका | ×              | ,,                            | १३१         |
| २३. जानाकुश                   | ×              | संस्कृत                       | १३२         |
| २४. इष्टोपदेश                 | पूज्यपाद       | ,,                            | १३६         |
| २५. सूक्तिमुक्तावलि           | आचार्य सोमदेव  | ,,                            | १४६         |
| २६. श्रावकाचार                | महापंडित आशाधर | ,, ७ वें अध्याय से आगे अपूर्ण | १८३         |

४४४१. गुडका सं० ६० । पत्र सं० ५६ । प्रा० ८×६ इञ्च । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

|                    |   |         |       |
|--------------------|---|---------|-------|
| १. रत्नत्रयपूजा    | × | प्राकृत | २२-२७ |
| २. पंचमेरु की पूजा | × | ,,      | २७-३१ |
| ३. लक्षुसामायिक    | × | संस्कृत | ३२-३३ |
| ४. धारती           | × | ,,      | ३४-३५ |
| ५. निर्वाणकाण्ड    | × | प्राकृत | ३६-३७ |

४४४२. गुडका सं० ६१ । पत्र सं० ५६ । प्रा० ८½×६ इञ्च । अपूर्ण ।

विषय—देवा ब्रह्मकृत हिन्दी पद संग्रह है ।

३४४३. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १२८ । भा० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८२८  
अपूर्णा ।

विशेष—प्रति वीरार्णवीर्ण भवत्या में है । मधुमालती की कथा है ।

३४४४. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० १२५ । भा० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । दशा-सामान्य

|                        |       |         |        |
|------------------------|-------|---------|--------|
| १. तीर्थोत्सवविधान     | ×     | संस्कृत | १-११   |
| २. जिनसहस्रनाम         | आशाधर | "       | १२-२२  |
| ३. देवशास्त्रशुक्लपूजा | "     | "       | २२-३६  |
| ४. जिनयज्ञकल्प         | "     | "       | ३७-१२५ |

३४४५. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ४० । भा० ७×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है ।

३४४६ गुटका सं० ६५—पत्र संख्या-८६-४११ । भा०-८×६।। . लेखनकाल—१६६१ । अपूर्णा ।

दशा-जीर्ण ।

|                                   |           |         |                |
|-----------------------------------|-----------|---------|----------------|
| १. सहस्रनाम                       | पं० आशाधर | संस्कृत | अपूर्णा। ८६-८७ |
| २. रत्नत्रयपूजा                   | पद्मनादि  | अपभ्रंश | " ८७-९३        |
| ३. नंदीश्वरपंक्तिपूजा             | "         | संस्कृत | " ९३-९७        |
| ४. बड़ीमिट्टपूजा ( कर्मदहन पूजा ) | सोमदत्त   | "       | ९८-१०६         |
| ५. सारस्वतयंत्र पूजा              | ×         | "       | १०७            |
| ६. बृहदकलिकुण्डपूजा               | ×         | "       | १०७-१११        |
| ७. गंगाधरवल्लभपूजा                | ×         | "       | १११-११५        |
| ८. नंदीश्वर रजयमाल                | ×         | प्राकृत | ११६            |
| ९. बृहत्सोऽपाकारणपूजा             | ×         | संस्कृत | ११६-१२८        |
| १०. ऋषिर्मंडलपूजा                 | मान शूषण  | "       | १२८-३६         |
| ११. क्षातिषक्पूजा                 | ×         | "       | १३७-३८         |
| १२. पञ्चमेरुपूजा ( पुष्पाञ्जलि )  | ×         | अपभ्रंश | १३९-४१         |
| १३. पराकरहा जयमाल                 | ×         | "       | १४२            |
| १४. बारह अनुप्रेक्षा              | ×         | "       | १४३-४७         |

|                                  |                |                 |   |
|----------------------------------|----------------|-----------------|---|
| १५. कुशीनरौ की जयमाल             | ×              | धपन्न घ         | १४७                                     |
| १६. श्यामोत्तर कामकी कबजाल       | ×              | "               | १४९                                     |
| १७. शीवीस जिनव जयमाल             | ×              | "               | १५०-१५२                                 |
| १८. दशलक्षण जयमाल                | रघु            | "               | १५३-१५५                                 |
| १९. भक्तामरस्तोत्र               | मानतुङ्गाचार्य | संस्कृत         | १५५-१५७                                 |
| २०. कल्याणमदिरस्तोत्र            | कुमुदचंद्र     | "               | १५७-१५८                                 |
| २१. एक्रीमावस्तोत्र              | वाविराज        | "               | १५८-१६०                                 |
| २२. धकलकाष्टक                    | स्वामी शकलक    | "               | १६०                                     |
| २३. भूगालचतुर्विंशति             | भूगाल          | "               | १६१-६२                                  |
| २४. स्वयंभूस्तोत्र ( इष्टोपदेश ) | पूज्यपाद       | "               | १६२-६४                                  |
| २५. लक्ष्मीमहास्तोत्र            | पद्मनिधि       | "               | १६४                                     |
| २६. लघुसहस्रनाम                  | ×              | "               | १६५                                     |
| २७. सामायिकपाठ                   | ×              | प्राकृत संस्कृत | ले० सं० १६७५, १६५-७०                    |
| २८. सिद्धिप्रियस्तोत्र           | देवनिधि        | संस्कृत         | १७१                                     |
| २९. भावनार्द्रात्रिशिका          | ×              | "               | १७१-७२                                  |
| ३०. विद्यावहारस्तोत्र            | धनञ्जय         | "               | १७२-७४                                  |
| ३१. तत्त्वार्थसूत्र              | उमास्वामि      | "               | १७४-७८                                  |
| ३२. परमात्मप्रकाश                | योगीन्द्र      | धपन्न घ         | १७९-८८                                  |
| ३३. सुष्यथोहा                    | ×              | ×               | ले० सं० १६६१ वैद्याल सुदी ५ ।<br>१८८-९० |
| ३४. परमार्द्रस्तोत्र             | ×              | संस्कृत         | १९१                                     |
| ३५. धतिभावनाष्टक                 | ×              | "               | "                                       |
| ३६. कर्मशाष्टक                   | पद्मनिधि       | "               | १९२                                     |
| ३७. लक्ष्मणर                     | देवसेन         | प्राकृत         | १९४                                     |
| ३८. तुर्लनागुणेश्वर              | ×              | "               | "                                       |
| ३९. वैराग्यगीत ( उच्चरगीत )      | छोहल           | हिन्दी          | १९५                                     |
| ४०. सुमिसुप्रतवात्मस्तुति        | ×              | धपन्न घ         | धनुर्मा १९५                             |

|   |   |         |                  |
|---|---|---------|------------------|
| ४१. सिद्धचक्रपूजा                       | × | संस्कृत | १६६-६७           |
| ४२. जिनशासनभक्ति                        | × | प्राकृत | धर्मपुरा १६६-२०० |
| ४३. धर्मदुहेला जेनी का ( त्रेपनक्रिया ) | × | हिन्दी  | २०२-३७           |

विशेष—लिपि र वन्द १६६६। प्रा० शुभचन्द्र ने गुटके की प्रतिलिपि करायी तथा श्री माधवसिंहजी के शासनकाल में गढ़कोटा ग्राममें हरजी जोशी ने प्रतिलिपि की।

|   |                                       |          |                     |
|---|---------------------------------------|----------|---------------------|
| ४४. नैमिषिनन्द व्याहृतो                         | संतमी                                 | हिन्दी   | २३७-४२              |
| ४५. मरुधरवल्लभसंश्रमण्डन ( कोठे )               | ×                                     | "        | २४२                 |
| ४६. कर्मवहन वा मण्डल                            | ×                                     | "        | २४३                 |
| ४७. दत्तलक्ष्मणव्रतोद्यानपूजा                   | मुमतिनागर                             | हिन्दी   | २४३-६४              |
| ४८. पंचमीव्रतोद्यानपूजा                         | केशवमेन                               | "        | २६४-७४              |
| ४९. रोहिणीप्रत पूजा                             | ×                                     | "        | २७५                 |
| ५०. त्रेपनक्रियोद्यान                           | देवेन्द्रकीर्ति                       | संस्कृत  | २७५-८६              |
| ५१. जिनधुरा उद्यान                              | ×                                     | हिन्दी   | धर्मपुरा २८६-६४     |
| ५२. पंचेन्द्रवर्षिक                             | श्रीहृत्                              | हिन्दी   | धर्मपुरा ३०३        |
| ५३. नैमीशुर कवित्त ( नैमीशुर<br>राजसर्तवर्षिक ) | कवि ठक्कुरसी<br>( कविदेव्ह का पुत्र ) | "        | ३०७-०६              |
| ५४. विजयचक्र की जयमाल                           | ×                                     | "        | ३०६-६१              |
| ५५. हनुमानचुनार जयमाल                           | ×                                     | प्रारभंग | ३११-१४              |
| ५६. निर्वाणकाण्डनाम्ना                          | >                                     | प्राकृत  | ३१४                 |
| ५७. कृष्णसद्वन्द                                | उज्जुरमी                              | हिन्दी   | ३१४-१७              |
| ५८. मानलघुवाचना                                 | मनामाह                                | "        | ३१५-२१              |
| ५९. मान की बर्षा बावनी                          | "                                     | "        | ३२२-२८              |
| ६०. नैमीश्वर की राम                             | भाउकवि                                | "        | ३२६-३३              |
| ६१. "   | ब्रह्मरायसस                           | "        | र० सं० १६१५, ३३३-४१ |
| ६२. नैमिषावरास                                  | रत्नकीर्ति                            | "        | ३४१-३४३             |
| ६३. श्रीरामरास                                  | ब्रह्मरायसस                           | "        | र. सं. १६३० ३४३-५५  |

## गुटका-संग्रह ]

[ ६३६ ]

६४ सुदर्शनरासो ब्रह्म रायमल्ल हिन्दी र स. १६२६ ३५६-६६  
संवत् १६६१ मे महाराजाधिराज भाबोसिंहजी के शासन काल मे मालपुरा मे श्रीलाला भावसा ने प्रथम

कृष्णमार्थ लिखवाया ।

|                       |               |        |        |
|-----------------------|---------------|--------|--------|
| ६५ जोगीरासा           | जिनदास        | हिं दी | ३६७-६८ |
| ६६ सोबहकारखुरास       | भ० सकलकाति    | "      | ३६८-६९ |
| ६७ प्रद्युम्नकुमाररास | ब्रह्मरायमल्ल | "      | ३६९-८३ |

रचना संवत् १६२८ । गढ़ हरखीर मे रचना की गई थी ।

|                   |   |         |                 |
|-------------------|---|---------|-----------------|
| ६८ सकलीकरगविधि    | × | संस्कृत | ३८३-९५          |
| ६० बीसबिरहमाणपूजा | × | "       | ३९५-९७          |
| ७० पकत्याणकपूजा   | × | "       | अपूर्णा ३९८-४११ |

४४५७ गुटका स ९९ । पत्र स० ३७ । भा० ७×५ इञ्च । अपूर्णा । दशा-सामान्य ।

|                             |               |         |       |
|-----------------------------|---------------|---------|-------|
| १ भक्तामरस्तोत्र मंत्र सहित | मानतु गाचार्य | संस्कृत | १-२६  |
| २ पधावतीसहस्रनाम            | ×             | "       | २६-२७ |

४४५८ गुटका स० ९७ । पत्र स० ७० । भा० ८३×६ इञ्च । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

|                   |           |         |      |
|-------------------|-----------|---------|------|
| १ नवकारमंत्र आदि  | ✓         | प्र कृत | १    |
| २ तत्त्वार्थसूत्र | उमास्वामि | संस्कृत | ८-२१ |

हिन्दी अर्थ सहित । अपूर्ण

|                      |          |        |                    |
|----------------------|----------|--------|--------------------|
| ३ जम्बूस्वामा चरित्र | ✓        | हिन्दी | अपूर्णा            |
| ४ बन्दहसकथा          | टीकमचन्द | "      | र स १७०८ । अपूर्णा |
| ५ आपालजी की स्तुति   | "        | "      | पूर्ण              |
| ६ स्तुति             | "        | "      | अपूर्णा            |

४४५९. गुटका स० ९८ । पत्र स० ८८-११२ । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । ले० काल स० १७०० वैत्र  
वदी १३ ।

विशेष—प्रारम्भ मे वैद्य मनोत्सव एक बाद मे आयुर्वेदिक तुसले हैं ।

४४६० गुटका स० ९९ । पत्र स० ११८ । भा० ९×६ इ च । हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—बनारसीदास त समयसार नाटक है ।

३४३१. गुटका सं० ७०। पत्र सं० १४। मा० ८२×६ इच। भाषा संस्कृत हिन्दी। विष्णु-विद्यालय  
अपूर्ण एवं अक्षुद्र। दशा-वीर।

बिषय—इस गुटके में उमास्वामि कृत उत्तरार्धसूत्र की ( हिन्दी ) टीका दी हुई है। टीका सुन्दर एवं विस्तृत  
है तथा पाठ्य रूपचन्द्रजी कृत है।

३४३२ गुटका सं० ७१। पत्र सं० ३५-२२२। मा० ८'×६ इच। अपूर्ण। दशा-सामान्य।

|                                  |           |         |        |
|----------------------------------|-----------|---------|--------|
| १. स्वरोदय                       | ×         | हिन्दा  | ३५-४१  |
| २. सूर्यकवच                      | ×         | संस्कृत | ४२     |
| ३. राजकीर्तिशास्त्र              | चारणक्य   | "       | ४३-५७  |
| ४. देवसिद्धपूजा                  | ×         | "       | ५८-६३  |
| ५. दशलक्षसूजा                    | ×         | "       | ६४-६५  |
| ६. रत्नत्रयपूजा                  | ×         | "       | ६५-७३  |
| ७. सोलहकारणपूजा                  | ×         | "       | ७३-७५  |
| ८. पार्श्वनाथपूजा                | ×         | "       | ७५-७६  |
| ९. कलिकुण्डपूजा                  | ×         | "       | ७६-७८  |
| १०. क्षेत्रपालपूजा               | ×         | "       | ७८-८२  |
| ११. नृवन्दविधि                   | ×         | "       | ८२-८५  |
| १२. सप्तमीस्तोत्र                | ×         | "       | ८५     |
| १३. उत्तरार्धसूत्र तीन अध्याय तक | उमास्वामि | "       | ८५-८७  |
| १४. शान्तिपाठ                    | ×         | "       | ८८     |
| १५. रामचिनोद भाषा                | रामचिनोद  | हिन्दी  | ८९-२२२ |

३४३३ गुटका सं० ७२। पत्र सं० २०४। मा० ९'×६' इच। पूर्ण। दशा-सामान्य।

|                   |           |        |                              |
|-------------------|-----------|--------|------------------------------|
| १. नाटक समयसार    | बनारसीदास | हिन्दी | १-१११                        |
|                   |           |        | रचना सन् १६९३ लिपि सं० १७७९। |
| २. बनारसीविद्यास  | "         | हिन्दी | अपूर्ण                       |
| ३. हवीमुक्तिमण्डन | ×         | "      | अपूर्ण पद्य सं० ३९-७०        |

५४५४. गुटका सं० ७३ । पत्र सं० १५२ । प्रा० ७×६ इंच । अपूर्ण । क्या-जीर्ण शीर्ष ।

१. राघु वासावरी रूपचन्द अपभ्रंश १  
प्रारम्भ—

विसउरामेण कुरुजंगले तहि यर वाउ जीउ राजे ।  
धरकणसायर पूरियउ करण्यपह धरउत जीउ राज ॥ १ ॥

विशेष— गीत अपूर्ण है तथा अप्सष्ट है ।

२. पढड़ी ( कौमुदीमध्यात् ) सहृगपाल अपभ्रंश २-७  
प्रारम्भ—

हाहउ धम्मभुउ हिडिउ ससारि असारउ ।  
कोइपए मुणउ, पुणदिठु सख बिलु वारइ ॥ छ ॥

अन्तिम घत्ता—

पुणुमति कहइ सिवाय मुणि, साहणमेयहु किज्जइ ।  
परिहरि विणेहु सिरि सतियत सधि सुमइ साहिज्जइ ॥ ६ ॥

॥ इति सहृगपालकृते कौमुदीमध्यात् पढड़ी छन्द लिखितं ॥

३. कल्याणकविधि मुनि विनयचन्द अपभ्रंश ७-१३  
प्रारम्भ—

सिद्धि मुहकरसिद्धियहु  
पणविधि तिजइ पयासण केवलसिद्धिहि कारणपुणमिहउं ।  
सयलवि जिण कल्लाण निहयमल सिद्धि मुहकरसिद्धियहु ॥ १ ॥

अन्तिम—

एवमत्तु एवकु जि कल्लाणउ विहिसिन्धियडि अहवइ गणणउ ।  
अहवासय लहलवणविहि, विणयचंदि मुणि कहिउ समस्यहु ॥  
सिद्धि मुहकर सिद्धियहु ॥ २५ ॥

॥ इति विनयचन्द कृतं कल्याणकविधि समाप्ता ॥

४. जूनड़ी ( विणयं वविधि पंच पुर ) यति विनयचन्द अपभ्रंश १३-१७



| क्र. सं.   | ग्रन्थनाम                    | लेखक              | प्रकाशक            | पृ. सं. |
|--|------------------------------|-------------------|--------------------|---------|
| ५.   | अणुबभिति संधि                | हरिश्चन्द्र अयवाज | अपभ्रंश            | १७-२४   |
| ६.   | सम्माधि                      | >                 | "                  | २४-२७   |
| ७.   | मणुवसंधि                     | <                 | "                  | २७-३१   |
| ८.   | गामर्गापठ                    | >                 | "                  | ३१-४५   |
| विशेष— २० कडवक है।   |                              |                   |                    |         |
| ९.   | धावकावार दाहा                | रामनेत्र          | "                  | ४५-५६   |
| १०.  | दशलाभणीकराम                  | "                 | "                  | ५६-६०   |
| ११.  | शुनपञ्चमीवया                 | स्वयम्भू          | "                  | ६१-६७   |
| ( हरिवंश मन्थानु विदुष वंशध्वनयानके )                        |                              |                   |                    |         |
| १२.  | पडडी                         | यशःकीर्ति         | "                  | ६७-७०   |
| ( यशःकीर्ति विरचित वदपभ्रंश (सम्माधि) )                      |                              |                   |                    |         |
| १३.  | रिदुलोमि चरित ( १७७८ मति )   | स्वयम्भू          | " ( प्रकाशित )     | ७०-८६   |
| १४.  | धोरचरित्र ( अनुपमा भाग )     | रट्टु             | "                  | ८६-८९   |
| १५.  | चतुर्गति क. गडडी             | "                 | "                  | ८९-९१   |
| १६.  | सम्यक्त्वकौमुदी ( भाग १ )    | महामाया           | "                  | ९१-९४   |
| १७.  | भादना उगरीनी                 | "                 | "                  | ९४-९८   |
| १८.  | गोत्रमपञ्चा                  | <                 | प्रकाशक            | १००-१०२ |
| १९.  | धार्मिपुत्राणा ( कृष्ण भाग ) | कण्ठक             | आभार्य             | १०२-३११ |
| २०.  | धर्मो गवर्धन ( कृष्ण भाग )   | "                 | "                  | ११२-४७  |
| ४४४४ गुटका सं० ३४ : एन सं० २३ म ६० । सा० ६५ ( १४ ) प्रमुगा । |                              |                   |                    |         |
| १.   | कृष्णक वख                    | <                 | द्विती             | २१-३१   |
| २.   | पञ्चमूर्ति                   | कवचन्द            | "                  | ३२-४३   |
| ३.   | वर्णाष्टक                    | "                 | "                  | ४४      |
| ४.   | वाचस्पतिसंस्कृत              | नाटक              | "                  | ४५      |
| ५.   | विनयी                        | भूषणदास           | "                  | ४७      |
| ६.   | ले गुण मेरु उर नयो           | "                 | " ले० काय सं० १७६६ | ४६      |

|                                    |                   |        |                    |
|------------------------------------|-------------------|--------|--------------------|
| ७. जकड़ी                           | द्यानतराम         | हिन्दी | ५१                 |
| ८. मगन रहो रे तू प्रभु के भजन मे   | वृन्दावन          | "      | ५२                 |
| ९. हम प्राये है जिनराज तोरे वदन को | द्यानतराम         | "      | ने० काल सं० १७९६ " |
| १०. राबुलपञ्चीसी                   | विनोदोपाल लालचन्द | "      | ५३-६०              |

विशेष—ले० काल सं० १७९६ । दयाचन्द लुहाडिया ने प्रतिलिपि की थी । पं० फकीरचन्द कासलीवाल ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

|   |                      |         |       |
|---|----------------------|---------|-------|
| ११. निर्वाणकाण्डभाषा                                | भगवतीदास             | हिन्दी  | ६१-६३ |
| १२. श्रीपालजी की स्तुति                             | "                    | "       | ६३-६४ |
| १३. मना रे प्रभु चरणा ल बुलाय                       | हरीसिंह              | "       | ६४    |
| १४. हमारी कन्या न्यो जिनराज                         | पधनन्दि              | "       | ६४    |
| १५. पानीका पतना जैसा ननका नमाणा है [कवित्त] केसवदाग | "                    | "       | ६६-६८ |
| १६. कवित्त  | जयकिशन मुंदरदाम घादि | "       | ६९-७२ |
| १७. गुणवैल  | ×                    | हिन्दी  | ७५    |
| १८. पद—बारा देग मे रा लाल गद बडो गिरनार             | ×                    | "       | ७७    |
| १९. कवका  | गुलाबचन्द            | "       | ७८-८२ |
| २०. पंचबधावा  | ×                    | हिन्दी  | ८४    |
| २१. मोक्षपैटी                                       | ×                    | "       | ८६    |
| २२. भजन संग्रह                                      | ×                    | "       | ९२    |
| २३. दानकीर्वाणती                                    | जतीदास               | संस्कृत | ९३    |

२० काल सं० १७९० ने० काल सं० १८००

निहालचन्द अजमेरा ने प्रतिलिपि की संवत् १८१४ ।

|                         |   |        |                     |
|-------------------------|---|--------|---------------------|
| २४. शकुनावती            | × | हिन्दी | लिपिकान १७९७ ९९-१०५ |
| २५. फुटकर पद एवं कवित्त | × | "      | १२३                 |

४४५६ गुटका सं० ७५—१त्र संख्या—११६ । आ०—४३×४३ ४ ५ । ले० काल सं० १८५८ । दगा सामरय । अपूर्ण ।

|                     |           |        |
|---------------------|-----------|--------|
| १. निर्वाणकाण्डभाषा | भगवतीदास  | हिन्दी |
| २. कल्याणमंदिरभाषा  | बनारसीदास | "      |

|                            |             |         |                         |
|----------------------------|-------------|---------|-------------------------|
| ३. लक्ष्मीस्तोत्र          | पद्मप्रभदेव | संस्कृत |                         |
| ४. श्रीपालजी की स्तुति     | ×           | हिन्दी  |                         |
| ५. साधुवन्दना              | बनारसीदास   | "       |                         |
| ६. बीसतीर्थङ्करों की जकड़ी | हर्षकीर्ति  | "       |                         |
| ७. बारहभावना               | ×           | "       |                         |
| ८. दर्शनाष्टक              | ×           | हिन्दी  | भव दर्शनों का वर्णन है। |
| ९. पद-चरणा केवल को ध्यान   | हरीसिंह     | "       | "                       |
| १०. भक्तामरस्तोत्रभाषा     | ×           | "       | "                       |

४४५७ गुटका सं० ७६। पत्र संख्या—१८०। प्रा०—५। टा. लखन सं० १७८३। तीसरा।

|                             |               |         |  |
|-----------------------------|---------------|---------|--|
| १. तत्त्वार्थमूत्र          | उमास्वामि     | संस्कृत |  |
| २. नित्यपूजा व भाद्रपद पूजा | ×             | "       |  |
| ३. नंदीश्वरपूजा             | ×             | "       |  |
|                             |               |         | पृथिन नगराज ने हरमण्डा में प्रतिनिधि की। |
| ४. श्रीसोमेश्वरजी की जकड़ी  | ×             | हिन्दी  | प्रतिनिधि गुटा में की गई।                |
| ५. सिद्धिप्रियस्तोत्र       | दत्तनाथ       | संस्कृत |  |
| ६. एकीभावस्तोत्र            | चादिराज       | "       |  |
| ७. जिनजपिजिन जपि जीवरा      | ×             | हिन्दी  |  |
| ८. चिन्तामणिजी की जयमाल     | मन्तरथ        | "       | जोधनेरमें नगराजने प्रतिनिधि की थी।       |
| ९. क्षेत्रपालस्तोत्र        | ×             | संस्कृत |  |
| १०. भक्तामरस्तोत्र          | आचार्यमानमुंग | "       |  |

४४५९ गुटका सं० ७७। पत्र सं० १२५। प्रा० ६। ट. व. भाषा—संस्कृत। ले० सं० काल १८१६

माह सुदी १२।

|                  |   |         |       |
|------------------|---|---------|-------|
| १. देवसिद्धपूजा  | × | संस्कृत | १-३५  |
| २. नंदीश्वरपूजा  | × | "       | ३३-४४ |
| ३. सोलहकारण पूजा | × | "       | ४४-५० |
| ४. दशमशरणपूजा    | × | "       | ५०-५५ |

|                    |           |        |        |
|--------------------|-----------|--------|--------|
| ५. रत्नत्रयपूजा    | ×         | हिन्दी | ५६-६१  |
| ६. पार्श्वनाथपूजा  | ×         | "      | ६२-६७  |
| ७. शान्तिपाठ       | ×         | "      | ६७-६९  |
| ८. तत्त्वार्थसूत्र | उमास्वामि | "      | ७०-११४ |

५४५६. गुटका स० ७८ । पत्र संख्या १९० । भा० ६×४ इ च । अपूर्ण । दगा-जीर्ण ।

विशेष—दो गुटकों का सम्मिश्रण है ।

|                               |              |        |                 |
|-------------------------------|--------------|--------|-----------------|
| १. ऋषिमण्डल स्तवन             | ×            | सस्कृत | २०-२७           |
| २. चतुर्विधाति तीर्थङ्कर पूजा | ×            | "      | २८-३१           |
| ३. चिन्तामणिस्तोत्र           | ×            | "      | ३६              |
| ४. लक्ष्मास्तोत्र             | ×            | "      | ३७-३८           |
| ५. पार्श्वनाथस्तवन            | ×            | हिन्दी | ३९-४०           |
| ६. कर्मदहन पूजा               | भ० शुभचन्द्र | सस्कृत | १-४३            |
| ७. चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तवन | ×            | "      | ४३-४८           |
| ८. पार्श्वनाथस्तोत्र          | ×            | "      | ४८-५३           |
| ९. पद्मावतीस्तोत्र            | ×            | "      | ५४-६१           |
| १०. चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा | भ० शुभचन्द्र | "      | ६१-८९           |
| ११. गणधरवल्लय पूजा            | ×            | "      | ८९-११४          |
| १२. अष्टाङ्गिका कथा           | धनःकीर्ति    | "      | १०४-११२         |
| १३. अनन्तव्रत कथा             | ललितकीर्ति   | "      | ११२-११६         |
| १४. सुगन्धदशमी कथा            | "            | "      | ११८-१२७         |
| १५. षोडशकारण कथा              | "            | "      | १२७-१३६         |
| १६. रत्नत्रय कथा              | "            | "      | १३६-१४१         |
| १७. जिनचरित्र कथा             | "            | "      | १४१-१४७         |
| १८. आकाशार्धचमी कथा           | "            | "      | १४७-१५३         |
| १९. रोहिरणीव्रत कथा           | "            | "      | अपूर्णा १५४-१५७ |

६५६ ]

[ गुटका-संग्रह

|                         |                |         |         |
|-------------------------|----------------|---------|---------|
| २०. ज्वालामालिनीस्तोत्र | ५              | संस्कृत | १५८-१६१ |
| २१. क्षेत्रपालस्तोत्र   | ५              | "       | १६२-६३  |
| २२. नागतक होम विधि      | ५              | "       | १७४-७६  |
| २३. चौबीसी विनती        | भक्त-रत्नसूत्र | हिन्दी  | १८६-८८  |

५४६०. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० ३३ । पान ७५-८२ इति । अर्गुण ।

|                    |           |         |       |
|--------------------|-----------|---------|-------|
| १. रामोत्तिशास्त्र | भागवत     | संस्कृत | १-२८  |
| २. एकोत्सोक रामायण | "         | "       | २९    |
| ३. एकोत्सोक भागवत  | "         | "       | "     |
| ४. रामोत्ताराशनाम  | "         | "       | ३०-३१ |
| ५. नवग्रहस्तोत्र   | विद्वानाम | "       | ३२-३३ |

५४६१. गुटका सं० ८० । पत्र सं० १८-१८१ । पान ३०-३१ इति । भाषा-संस्कृत तथा हिन्दी।

अर्गुण ।

विशेष—पद्ममगल, बार्दम परिषद देवगुजात्रय-संस्थापक द्वारा प्रकाशित है ।

५४६२. गुटका सं० ८१ । पत्र सं० २-२६ । पान १७-१८ इति । भाषा-संस्कृत । अर्गुण, देवगुजात्रय-संस्थापक द्वारा प्रकाशित है ।

सामान्य ।

विशेष—सिन्धु पुस्तकालय राधा का मुद्रण है ।

५४६३. गुटका सं० ८२ । पत्र सं० १-११ । पान ६५-६६ इति । भाषा-संस्कृत । पत्र सं० १८-२० ।

विशेष—दयावती स्त्रीसंस्थान, विनमयशनाम (पुस्तकालय) द्वारा प्रकाशित है ।

५४६४. गुटका सं० ८३ । पत्र सं० १८-२१ । पान १-१० इति ।

|                     |   |         |       |
|---------------------|---|---------|-------|
| १. स्वस्थयन्त्रविधि | ५ | संस्कृत | १८-२० |
| २. सिद्धपूजा        | ५ | "       | २१-२३ |
| ३. पाठशकारगुणा      | " | "       | २४-२५ |
| ४. दशवक्त्रगुणा     | ५ | "       | २६-२७ |
| ५. रत्नत्रयगुणा     | ५ | "       | २८-३७ |
| ६. पुण्यनाटक        | ५ | "       | ३८-३९ |

|                   |           |         |       |
|-------------------|-----------|---------|-------|
| ७. वितामणिपूजा    | ×         | संस्कृत | ३६-४१ |
| ८. तृत्वार्यसूत्र | उमास्वामि | "       | ४२-४९ |

४४६५. गुटका सं० ८५ । पत्र सं० २० । प्रा० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । अपूर्णा । दशा—सामान्य ।

विशेष—पत्र ३-६ नहीं है । जिनमनावायं कृत् जिन सहस्रनाम स्तोत्र है ।

४४६६. गुटका सं० ८६ । पत्र सं० ५ से २५ । प्रा० ६×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—१८ में ८७ मंत्रों का संग्रह है किन्तु किम ग्रंथ के है यह अज्ञात है ।

४४६७. गुटका सं० ८७ । पत्र सं० ३३ । प्रा० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

|                        |              |         |       |
|------------------------|--------------|---------|-------|
| १. जैनरक्षास्तोत्र     | ×            | संस्कृत | १-३   |
| २. जिनपिजरस्तोत्र      | ×            | "       | ४-५   |
| ३. पार्वन्दायस्तोत्र   | ×            | "       | ६     |
| ४. चर्केश्वरीस्तोत्र   | ×            | "       | ७     |
| ५. पद्मावतीस्तोत्र     | ×            | "       | ७-१३  |
| ६. ज्वालामालिनीस्तोत्र | >            | "       | १५-१८ |
| ७. ऋषि मंडलस्तोत्र     | श्रीराम गणधर | "       | १८-२४ |
| ८. सरस्वतीस्तुति       | श्याधर       | "       | २४-२६ |
| ९. शीतलाष्टक           | ×            | "       | २७-३२ |
| १०. शेत्रवानस्तोत्र    | ×            | "       | ३२-३३ |

४४६८. गुटका सं० ८८ । पत्र सं० २१ । प्रा० ७×५ इञ्च । अपूर्णा । दशा—सामान्य ।

विशेष—गर्गाचार्य विरचित पाशा केवल है ।

४४६९. गुटका सं० ८९ । पत्र सं० ११४ । प्रा० ६×५, ३ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । अपूर्णा ।

विशेष—प्रारंभ में पूजाओं का संग्रह है तथा अन्त में अचलकीर्ति कृत मंत्र त्रयकाररास है ।

४४७० गुटका सं० ९० । पत्र सं० ५० से १२० । प्रा० ८×४, २ इंच । भाषा—संस्कृत । अपूर्णा ।

विशेष—भक्ति पाठ तथा चतुर्विंशति तीर्थङ्कर स्तुति ( आचार्य समन्तभद्रकृत ) है ।

४४७१ गुटका सं० ९१ । पत्र सं० ७ से २२ । प्रा० ६×६ इंच । विषय—स्तोत्र । अपूर्णा । दशा—

|                            |           |        |       |
|----------------------------|-----------|--------|-------|
| १. संबोध पंचासिकाभाषा      | दानतराय   | हिन्दी | ७-८   |
| २. भक्तामरभाषा             | हेमराज    | "      | ९-१४  |
| ३. कल्याण मंथिरस्तोत्रभाषा | बनारसीदास | "      | १५-२२ |

५४७२. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १३०-२०३ । प्रा० ८×८ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ने०

काल १८३३ । अपूर्ण । दशा सामान्य ।

|                          |         |         |         |
|--------------------------|---------|---------|---------|
| १. भविष्यदत्तरास         | रायमल्ल | हिन्दी  | १३०-८५  |
| २. जिनपञ्जरस्तोत्र       | ×       | संस्कृत | १८५ ८७  |
| ३. पार्ष्वनाथस्तोत्र     | ×       | "       | १८८     |
| ४. स्तवन (शरिहन्त मत का) | ×       | हिन्दी  | १८९-९३  |
| ५. चेतनचरित्र            | ×       | "       | १९३-२०३ |

५४७३. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० २५-१०८ । प्रा० ५×३ इंच । अपूर्ण ।

विशेष—प्रारम्भ के २४ पत्र नहीं हैं ।

|   |                |         |           |
|---|----------------|---------|-----------|
| १. पार्ष्वनाथपूजा                                 | ×              | हिन्दी  | २५        |
| २. भक्तामरस्तोत्र                                 | माननुं गाचार्य | संस्कृत | ५४        |
| ३. लक्ष्मीस्तोत्र                                 | पद्यप्रभदेव    | "       | ६२        |
| ४. सामू बहू का भगडा                               | ब्रह्मदेव      | हिन्दी  | ६५        |
| ५. पिया चले गिरवर कूँ                             | ×              | "       | ६७        |
| ६. नाभि नरेन्द्र के नंदन कू जय बदन                | ×              | "       | ६८        |
| ७. सीताजी की विनती                                | ×              | "       | ७१        |
| ८. तत्त्वार्थसूत्र                                | उमास्वामि      | संस्कृत | ७२-९४     |
| ९. पव- श्ररज करा छा जिनराजजी राग मारंग            | ×              | हिन्दी  | अपूर्ण ९६ |
| १०. " की परि करोजी गुमान ये कै दिनका महमान, बुधजन |                | "       | ९७        |
| ११. " लगनि मोरी लगी ऐसी                           | ×              | "       | ९९        |
| १२. " शुभ गति पावन याही चित धारोजी                | नवल            | "       | ९९        |
| १३. " जाऊंगी संगि नेम कंवार                       | ×              | "       | १००       |
| १४. " टुक नजर महर की करना                         | भूधरदास        | "       | १०२       |

|   |             |        |             |
|---|-------------|--------|-------------|
| १५. शैलत है होरी मिलि साजन की दोरी                | हरिश्चन्द्र | हिन्दी | १०२         |
| ( राग काफी )                                      |             |        |             |
| १६. देखो करमा सूं फुन्द रही अजरी                  | किशनदास     | "      | १०३         |
| १७. खकी नेमीजीसूं मोहे मिलाबोरी (रागहोरी) घानतराय |             | "      | "           |
| १८. दुरमति दूरि खड़ी रही री                       | देवीदास     | "      | १०५         |
| १९. अरज सुनो म्हारी अन्तरजामी                     | शेखरदास     | "      | १०६         |
| २०. जिनजी की खवि मुन्दर या मेरे मन आई             | X           | "      | अपूर्णा १०८ |

५४७४. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ३-४७ । आ० ५×५ इंच । ले० काल सं० १८२१ । अपूर्णा ।

विषय—पत्र संख्या २९ तक केशवदास कृत वैद्य मनोत्सव है । आधुनिक के नुसले हैं । तेजरी, इकांतरा आदि के मंत्र है । सं० १८२१ में श्री हरलाल ने पावटा में प्रतिमिपि की थी ।

५४७५. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० १८७ । आ० ४×३ इंच । पूर्ण । दगा—सामान्य ।

|                       |              |         |         |
|-----------------------|--------------|---------|---------|
| १. धादिपुराण          | जिनसेनाचार्य | संस्कृत | १-११८   |
| २. अर्वासामान         | शुभरदास      | हिन्दी  | ११९-१३७ |
| ३. सूर्यस्तोत्र       | X            | संस्कृत | १३८     |
| ४. सामायिकपाठ         | X            | "       | १३८-१४४ |
| ५. मुनीश्वरो की जयमाल | X            | "       | १४५-१४६ |
| ६. धातिनाथस्तोत्र     | X            | "       | १४७-१४८ |
| ७. जिनपंजरस्तोत्र     | कमलमलसूरि    | "       | १४९-१५१ |
| ८. भेरवाष्टक          | X            | "       | १५१-१५६ |
| ९. अकलंकवाष्टक        | अकलंक        | "       | १५६-१५९ |
| १०. पूजापाठ           | X            | "       | १६०-१६७ |

५४७६. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० १९० । आ० ३×३ इंच । ले० काल सं० १८५७ फागुण सुदी ८ ।

पूर्ण । दगा—सामान्य ।

|                       |        |         |     |
|-----------------------|--------|---------|-----|
| १. विद्यापहार स्तोत्र | धनञ्जय | संस्कृत | १-५ |
| २. अशालामानिनीस्तोत्र | X      | "       |     |



|   |           |         |        |
|---|-----------|---------|--------|
| ३. चितामणिपार्वनाथस्तोत्र                               | ×         | संस्कृत |        |
| ४. लक्ष्मीस्तोत्र                                       | ×         | "       |        |
| ५. चैत्यवन्दना  | ×         | "       |        |
| ६. ज्ञानपञ्चोसो   | बनारसीदास | हिन्दी  | २०-२४  |
| ७. श्रीपालस्तुति  | ×         | "       | २५-२८  |
| ८. विद्यापहारस्तोत्रभाष्य                               | ग्रबलकीति | "       | २९-३१  |
| ९. चौबीसतीर्थङ्करस्तवन                                  | ×         | "       | ३३-३७  |
| १०. पंचमंगल   | रूपचंद    | "       | ३८-४७  |
| ११. तत्त्वार्थसूत्र                                     | उमास्वामि | संस्कृत | ४८-५९  |
| १२. पद-मेरी रे लगाओ जिनजी का नावसूँ                     | ×         | हिन्दी  | ६०     |
| १३. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाष्य                             | बनारसीदास | "       | ६१-७०  |
| १४. नेमीपवर की स्तुति                                   | भूधरदास   | हिन्दी  | ७१-७२  |
| १५. जकड़ी   | रूपचंद    | "       | ७३-७५  |
| १६. "   | भूधरदास   | "       | ७६-८३  |
| १७. पद- लीयो जाय तो लीजे रे मानी<br>जिनजी को नाम सब भनो | ×         | "       | ८४-८५  |
| १८. निर्वाणकाण्डभाष्य                                   | भगवतीदास  | "       | ८५-८९  |
| १९. घण्टाकर्णमंत्र                                      | ×         | "       | ९०-९६  |
| २०. तीर्थङ्करादि परिचय                                  | ×         | "       | ९७-१६२ |
| २१. दर्शनपाठ  | ×         | संस्कृत | १६३-६५ |
| २२. पारसनाथजी की नियोगी                                 | ×         | हिन्दी  | १६६-७७ |
| २३. स्तुति  | कनककीति   | "       | १८०-८२ |
| २४ पद-( बहूँ श्रीजिनराय मनबब काय करानी )                | ×         | "       |        |

१४७७. गुटका सं० ९७ । पत्र सं० ७५ । भा० ३×५<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इञ्च । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । दत्ता सामान्य ।

विशेष-गुटकाजीर्ण शरीर हो चुका है । यक्षर मिट चुके हैं ।

|                       |                |   |       |
|-----------------------|----------------|---|-------|
| २. ब्रह्माभरस्तोत्र   | मानतुङ्गाचार्य | " |       |
| ३. एक्रीमाभस्तोत्र    | बादिराज        | " |       |
| ४. कल्याणमंदिरस्तोत्र | कुमुदचंद्र     | " |       |
| ५. पार्वतीनाथस्तोत्र  | ×              | " |       |
| ६. वर्षमानस्तोत्र     | ×              | " |       |
| ७. स्तोत्र संग्रह     | ×              | " | ३६-७३ |

३४७८. गुटका सं० ६८ पत्र सं० १३-११५। प्रा० २३×२३ इञ्च। भाष्य-संस्कृत। अपूर्ण।

दशा सामान्य।

विवेक-नित्य पूजा एवं षोडशकाररगादि भाद्रपद पूजाओं का संग्रह है।

३४७९. गुटका सं० ६९। पत्र सं० ४-१०५। प्रा० ४×३ इञ्च।

|                         |           |        |                |
|-------------------------|-----------|--------|----------------|
| १. कनकावतीसी            | ×         | हिन्दी | ४-१३           |
| २. त्रिकालचौवीसी        | ×         | "      | १४-१७          |
| ३. भक्तिपाठ             | कनकतीति   | "      | १७-२०          |
| ४. तीसचौवीसी            | ×         | "      | २१-२३          |
| ५. पहलिया               | माल       | "      | २४-६३          |
| ६. तीनचौवीसीरास         | ×         | "      | ६४-६६          |
| ७. निर्वाणकाण्डभाषा     | भगवतीदास  | "      | ६७-७३          |
| ८. श्रीपाल वीनती        | ×         | "      | ७४-७८          |
| ९. भजन                  | ×         | "      | ७९-८०          |
| १०. नवकार बडी वीनती     | ब्रह्मदेव | "      | सं० १८४५ ८१-८२ |
| ११. राहुल पञ्चीसी       | विनोदीलाल | "      | ८३-१०१         |
| १२. नेमीश्वर का व्याहला | लालचन्द   | "      | अपूर्ण १०१-१०५ |

३४८०. गुटका सं० १००। पत्र सं० २-८०। प्रा० १०×६ इञ्च। अपूर्ण। दशा सामान्य।

|                |          |         |     |
|----------------|----------|---------|-----|
| १. जिनपञ्चीसी  | नवलराम   | हिन्दी  | २   |
| २. धादिमाथपूजा | रामचंद्र | "       | २-३ |
| ३. सिद्धपूजा   | ×        | संस्कृत | ४-५ |

|  |              |         |       |
|--|--------------|---------|-------|
| ५. एक्रीभास्तोत्र                            | बादिराज      | संस्कृत | ५-६   |
| ६. जिनपूजाविष्णु ( देवपूजा )                 | ×            | हिन्दी  | ७-१५  |
| ६. छद्मदामा                                  | दानतराय      | "       | १६-१८ |
| ७. भक्तप्रभस्तोत्र                           | मानतु गाचायं | संस्कृत | १३-१५ |
| ८. तत्त्वार्थसूत्र                           | उमास्वामि    | "       | १५-२१ |
| ९. सोमहकारणपूजा                              | ×            | "       | २२-२४ |
| १०. कपालजलपूजा                               | ×            | "       | २५-३२ |
| ११. रत्नत्रयपूजा                             | ×            | "       | ३३-३६ |
| १२. पञ्चपरमेष्ठीपूजा                         | ×            | हिन्दी  | ३७    |
| १३. नंदीश्वरद्वीपपूजा                        | ×            | संस्कृत | ३७-३९ |
| १४. शास्त्रपूजा                              | ×            | "       | ४०    |
| १५. सरस्वतीपूजा                              | ×            | हिन्दी  | ४१    |
| १६. तीर्थक्षुरपरिचय                          | ×            | "       | ४२    |
| १७. नरक-स्वर्ग के ग्रन्थ पृथ्वी आदि का वर्णन | ऋ            | "       | ४३-४० |
| १८. जैनशतक                                   | भूधरदाम      | "       | ४१-४९ |
| १९. एकीभावस्तोत्रभाषा                        | "            | "       | ६०-६१ |
| २०. द्वादशानुश्रेया                          | ×            | "       | ६१-६३ |
| २१. दर्शनस्तुति                              | ×            | "       | ६३-६४ |
| २२. साधुवंदना                                | बनारसीदास    | "       | ६४-६५ |
| २३. पंचमङ्गल                                 | रूपचन्द      | हिन्दी  | ६५-६९ |
| २४. ओमीरासो                                  | जिनदास       | "       | ६९-७० |
| २५. वचनैः                                    | ×            | "       | ७०-८० |

५४८१. गुटका सं० १०१। पत्र सं० २-२१। मा० ८३×८२ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-वर्षा।  
अपूर्णा। वषा-सामान्य। चौबीस ठण्णा का पाठ है।

५४८२. गुटका सं० १०२। पत्र सं० २-२३। मा० ५×४ इंच। भाषा-हिन्दी। अपूर्णा। वषा-  
छामाम्ब। निम्न कवियों के पदों का संग्रह है।

|  |        |        |    |
|--|--------|--------|----|
| १. भूल क्यों गया जी म्हातें                      | ×      | हिन्दी | २  |
| २. जिन छवि पर जाऊं मैं बारी                      | राम    | "      | २  |
| ३. धक्किया सगी तेरे                              | ×      | "      | २  |
| ४. हगनि मुक्त पायो जिनवर देखि                    | ×      | "      | २  |
| ५. सगन मोहे सगी देखन की                          | बुधजन  | "      | ३  |
| ६. जिनजी का ध्यान में मन लगि रह्यो               | ×      | "      | ३  |
| ७. प्रभु मिल्पा दीवानी बिलौवा कैसे किया सद्ग्यां | ×      | "      | ४  |
| ८. नही ऐसो जनम बारम्बार                          | नवलराम | "      | ४  |
| ९. धानन्द मङ्गल भ्राज हमारे                      | ×      | "      | ४  |
| १०. जिनराज भजो सोहो जीत्यो                       | नवलराम | "      | ५  |
| ११. सुभ पंथ लगे ज्यो होय भला                     | "      | "      | ५  |
| १२. छांडे मनकी हो कुटिमता                        | "      | "      | ५  |
| १३. सबन मे दया है धर्म को मूल                    | "      | "      | ६  |
| १४. दुल काहू नही दीजे रे भाई                     | ×      | "      | ६  |
| १५. मारण लाय्यो                                  | नवलराम | "      | ६  |
| १६. जिन चरणों बित लगाय मन                        | "      | "      | ७  |
| १७. हे मा जा मिलिये श्री नेमकवार                 | "      | "      | ७  |
| १८. म्हारो लाय्यो प्रभु सूं नेह                  | "      | "      | ८  |
| १९. बां ही संग नेह लय्यो है                      | "      | "      | ९  |
| २०. बां पर बारी हो जिनराय                        | "      | "      | ९  |
| २१. मो मन बां ही संग लाय्यो                      | "      | "      | ९  |
| २२. धनि चढ़ी ये भई देखे प्रभु नैना               | "      | "      | ९  |
| २३. बीर री पीर मोरी कासों कहिये                  | "      | "      | १० |
| २४. जिनराय ध्यावो भवि भाव से                     | "      | "      | १० |
| २५. समो जाय जावो पति को समझावो                   | "      | "      | ११ |
| २६. प्रभुवी म्हारी बिनती भवभारो हो राज           | "      | "      | ११ |

|  |           |        |       |
|--|-----------|--------|-------|
| २७. ईं' बिष खेलिये हो चतुर नर            | नवलराम    | हिन्दी | १२    |
| २८. प्रभु तुल गावो भविक जन               | "         | "      | १२    |
| २९. यो मन म्हारो जिनजी सूं लाग्यो        | "         | "      | १३    |
| ३०. प्रभु चूक तकसीर मेरी माफ करो के      | "         | "      | १३    |
| ३१. दरसन करत अष सब नसे                   | "         | "      | १३    |
| ३२. रे मन लोभिया रे                      | "         | "      | १४    |
| ३३. भक्त मुप वैरागे चित भीनो             | "         | "      | १५    |
| ३४. देव दीन को दयाल जानि चरण शरणा प्रायो | "         | "      | "     |
| ३५. गावो हे थो जिन विकल्प छारि           | "         | "      | "     |
| ३६. प्रभुजी म्हारा घरज मुनो चितलाय       | "         | "      | १६    |
| ३७. ये शिक्षा चित लाई                    | "         | "      | १६-१७ |
| ३८. मैं पूजा फल बात मुनो                 | "         | "      | १८    |
| ३९. जिन मुमरन की बार                     | "         | "      | "     |
| ४०. सामायिक स्तुति वदन करि के            | "         | "      | १९    |
| ४१. जिनन्दजी की रख रख नैन लाय            | संतदाम    | "      | "     |
| ४२. बेनो क्यों न जानी जिया               | "         | "      | २०    |
| ४३. एक घरज मुनो साहब मोटी                | द्याननराय | "      | "     |
| ४४. मो मे अपना कर दवार रिखभ दीन नेरा     | बुधजन     | "      | २०    |
| ४५. अपना रग मे रग दयोजी साहब             | ×         | "      | "     |
| ४६. मेरा मन मनुकर घटकयो                  | ×         | "      | २१    |
| ४७. भैया नुम चोरी त्यागोजी               | पारमदास   | "      | "     |
| ४८. घड़ी २ पल २ छिन २                    | दोलनराम   | "      | "     |
| ४९. घट घट नटवर                           | ×         | "      | २२    |
| ५०. मारग अपनो जोय मुजानी डोरे            | ×         | "      | "     |
| ५१. मुनि जीया रे चिरकाल रे सोयो          | ×         | "      | "     |
| ५२. जग इसिया रे भाई                      | भूधरदास   | "      | "     |

|                                |        |        |         |
|--------------------------------|--------|--------|---------|
| ३३. भाई सोही सुष्ठु बबानि १    | नवलराम | हिन्दी | २३      |
| ३४. हो मन जिनजी न क्यो नही रटै | "      | "      | "       |
| ३५. की परि इतनी मगरूरी करी     | "      | "      | अपूर्णा |

३४८३. गुटका सं० १०३ । पत्र सं० ३-२० । भा० ६×५ इञ्च । अपूर्णा । दशा-जीर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

३४८४. गुटका सं० १०४ । पत्र सं० ३०-१४४ । भा० ६×५ इञ्च । ने० काल स० १७२८ कालिक

सूची १५ । अपूर्णा । दशा-जीर्ण ।

|   |                |         |         |
|---|----------------|---------|---------|
| १. रत्नत्रयपूजा                         | ×              | प्राकृत | ३०-३२   |
| २. नन्दीशवरद्वीप पूजा                   | ×              | "       | ३३-४७   |
| ३. स्नपनविधि                            | ×              | संस्कृत | ४८-९०   |
| ४. क्षेत्रपालपूजा                       | ×              | "       | ६०-६४   |
| ५. क्षेत्रपालाष्टक                      | ×              | "       | ६४-६५   |
| ६. वन्देतान की जयमाला                   | ×              | "       | ६५-६६   |
| ७. पार्वनाथ पूजा                        | ×              | "       | ७०      |
| ८. पार्वनाथ जयमाल                       | ×              | "       | ७०-७३   |
| ९. पूजा धमाल                            | ×              | संस्कृत | ७४      |
| १०. चिंतामणि की जयमाल                   | ब्रह्मरायमल    | हिन्दी  | ७५      |
| ११. कलिकुण्डस्तवन                       | ×              | प्राकृत | ७६-७८   |
| १२. विद्यमान बीस तीर्थद्वार पूजा        | नरेन्द्रकीर्ति | संस्कृत | ८२      |
| १३. पद्यावतीपूजा                        | "              | "       | ८२      |
| १४. रत्नाबन्दी व्रतों की तिथियों के नाम | "              | हिन्दी  | ८५-८७   |
| १५. ढाल मंगल की                         | "              | "       | ८८-८९   |
| १६. जिनसहस्रनाम                         | भासाधर         | संस्कृत | ८९-१०२  |
| १७. जिनयज्ञाविधिधान                     | ×              | "       | १०२-१२१ |
| १८. व्रतों की तिथियों का व्यौरा         | ×              | हिन्दी  | १२१-१३६ |

३४८५. गुटका सं० १०५ । पत्र सं० ११७ । भा० ६×६ इंच ।

|  |        |        |         |       |
|--|--------|--------|---------|-------|
| १. षट्शतसुवर्णं बारह माता                          | जनराज  | हिन्दी | अपूर्णा | २४-४३ |
| २. कवित्त संग्रह                                   | ×      | "      |         | ४३-६१ |
| विभिन्न कवियों के नायक नायिका संबन्धी कवित्त हैं । |        |        |         |       |
| ३. उपदेश पद्योसो                                   | ×      | हिन्दी | अपूर्णा | ६२-६३ |
| ४. कवित्त  | मुसलाल | "      |         | ६६-६७ |

५४८६. गुटका सं० १०६ । पत्र सं० २४ । भा० ६×६ इच्च । भाषा-संस्कृत । पूर्णा । जीर्ण ।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्वार्थसूत्र है ।

५४८७. गुटका सं० १०७ । पत्र सं० २०-२४ । भा० २×५ इच्च । भाषा-हिन्दी । से० काल सं० १७४८

वैशाख सुदी १४ । अपूर्णा । वधा-सामान्य ।

१. कृष्णस्वमणिरबेलि हिन्दी गद्य टीका सहित पृथ्वीराज हिन्दी २०-५४  
लेखन काल सं० १७४८ वैशाख सुदी १४ । २० काल सं० १६३७ । अपूर्णा ।

अन्तिस पाठ—

रमता जगदीश्वरतरी रहसी रस मिय्यावचन न ता सम है ।

सरसति रुकमिणी तरिण सहचरि कहि या मुपैतियज कहे ॥ १० ॥

टीका—रहसि एकान्तई रुकमणी साथइ श्रीभूकराजो तइ रमता कीडातां जे रस ते दृष्टि दीवा मरील कहुँ । पर ते वचन माही कूडउ नेमतं मानउ साथ मानिज्यौ । रुकमणी सरस्वतीनो सहचरी । सरस्वती तिराइ गुत-बात कही मुकनई आपराउं जाणी ॥ जाणी सर्वबात कही तेहना मुल थकी सुरी तिमही ज कही ॥ १० ॥

रूप लक्षण गुरा तरास रु०मोणि जहिवा समरथीक कुरा ।

जाणिया जिका सातिसाँ जपिया गोविंद राणि तरा गुरा ॥ ११ ॥

टीका—रुकमणि नउ रूप लक्षण गुरा काहेवा भणि समर्थ कुरा समर्थ तर छइ अपितु को नहि परमइ ।

माहरि मतिइ अनुसार जिसा ज्याप्या तित्स्या ग्रन्थ माहि धूम्या कहुँ तिरा कारण हू ताहरउ बालक छूँ मो परि कृपा करिज्यौ ॥ ११ ॥

बसु शिब नयन रस शशि बल्दर विजयबसमि रावि रिध वररोल ।

किसन रुकमणी बेलि कल्पतरु कीधी कमथ ज कल्याण उत ॥ १२ ॥

टीका—अचल पर्वत सत्त्व रज्जु तम गुरा ३ अग ६ शशिशन्दमा १ संवत् १६३७ वर अचल गुरा रवि ससि संधि तात वीयउ जस ॥ करि श्री भरतार श्रवणे दिन रात कंठ करि श्रीफल भगति अपार विषइ श्री लक्ष्मी नउ मत्तारि रुकमणी कृष्णान श्री रुकमणी जस करी भावना कीधी ए बेली ग्रहो भगतो श्रवणे सांभसिउ रत दिन गलइ करउ श्री लक्ष्मी रूप फल पामइ ।

वेद बीज जल बयण मुकवि जड मंडीस धर ।  
 पत्र दूहा गुण पुहपवाम भोगी लिखमी बर ॥  
 पसरी दीप प्रदीप अधिक गहरी या डवर ।  
 मनबुजेराति अंब फल पामिइ अबर ॥  
 बिलतार कोष बुबि बुगी विमल धरणी किलन बहगहार धन ।  
 अमृत बेलि पीधल अरनइ रोपी कवियारा तनुज ॥ ३१३ ॥

अर्थ—मूल वेद पाठ तीको बीज जल पारणी तिको कवियोग निये बधरो करि जडभाडीम हठ परिगइ ॥  
 दूहा ते पत्र दूहा गुण ते फूल मुगन्ध वाम भोगी भमर श्रीकृष्णजी बेलिठं मावहड करो विन्तरी जगत्र नइ विषी दीप प्रदीप ।  
 व दीवा थी अधिक अयन्त विन्तरी जिके मन सुधी एह तउ की जागइ तीको डमा फल पामइ । अबर कहिता स्वर्ग  
 ना गुन पाभे । विन्तार करी जगत्र नइ विपठ विमल कहीता निर्मल श्रीकिसनजी बेलि मा धरणी नइ कहणु हार धन्य  
 तिको सिंग प्रमृत रूपयाः बेलि पृथ्वी नइ लिखइ प्रविचय पृथ्वी नई बविराज थी कस्याग तम बेटा पृथ्वीराजड कट्या ।

उति पृथ्वीराज वृत कृपया रुक्मिणी बेलि संपूर्ण । मुगि जग विमल वाचगार्थ । सबत १७४८ वर्ष बैशाख  
 मासे कील्या गर्ध तिथि १८ अष्टुथायरे लिखतं जसिंयरा नय ॥ थो ॥ ररुनु ॥ उति मगत ॥

|                       |           |        |                  |
|-----------------------|-----------|--------|------------------|
| २. कोकर्मचरी          | ×         | हिन्दी | ५४               |
| ३. विरहमंजरी          | नंददास    | "      | ५५-६१            |
| ४. बावनी              | हेमराज    | "      | ४६ पद्य है ६१-६७ |
| ५. भैरवाजमलि बारहमासा | ×         | "      | ६७               |
| ६. पृच्छाबलि          | ×         | "      | ६९-८७            |
| ७. नाटक समयसार        | बनारसीदास | "      | ८८-११४           |

५४८८. गुटका सं० १०७ क । पत्र सं० २३५ । आ० ५×४ इञ्च । विपय-पूना एव स्तोत्र ।

|                   |          |         |     |
|-------------------|----------|---------|-----|
| १. देवपूजाष्टक    | ×        | संस्कृत | १-४ |
| २. सरस्वती स्तुति | जानभूषण  | "       | ४-६ |
| ३. श्रुताष्टक     | ×        | "       | ६-७ |
| ४. गुस्तवन        | शांतिदास | "       | ८   |
| ५. पुर्वाष्टक     | बादिराज  | "       | ९   |



६३८ ]

[ गुटका-संग्रह ]

|                            |                  |                 |        |
|----------------------------|------------------|-----------------|--------|
| ६. सरस्वती जयमाल           | ब्रह्मजिनदास     | हिन्दी          | १०-१२  |
| ७. ब्रह्मजयमाला            | "                | "               | १३-१५  |
| ८. लघुस्नपनविधि            | ×                | संस्कृत         | १६-२३  |
| ९. सिद्धबकपूजा             | ×                | "               | २४-३०  |
| १०. कलिकुण्डपाशर्वनाथपूजा  | यशोविजय          | "               | ३१-३५  |
| ११. षोडशकारणपूजा           | ×                | "               | ३५-३९  |
| १२. दशलक्षणपूजा            | ×                | "               | ३९-४२  |
| १३. नन्दीश्वरपूजा          | ×                | "               | ४३-४५  |
| १४. जिनसहस्रनाम            | भ्राशाधर         | "               | ४६-५९  |
| १५. भद्र-भूक्तिविधान       | ×                | "               | ५९-६२  |
| १६. सम्यक्दर्शनपूजा        | ×                | "               | ६२-६४  |
| १७. सरस्वतीस्तुति          | भ्राशाधर         | संस्कृत         | ६४-६६  |
| ५८. ज्ञानपूजा              | ×                | "               | ६७-७१  |
| १६. महर्षिस्तवन            | ×                | "               | ७१-७३  |
| २०. स्वस्वयनविधान          | ×                | "               | ७३-७९  |
| २१. चारित्र्यपूजा          | ×                | "               | ७९-८१  |
| २२. रत्नत्रयजयमाल तथा विधि | ×                | प्राकृत संस्कृत | ८१-९१  |
| २३. बृहद्स्नपन विधि        | ×                | संस्कृत         | ९१-११९ |
| २४. श्रद्धिमण्डल स्तवनपूजा | ×                | "               | ११९-२९ |
| २५. अष्टग्लिकापूजा         | ×                | "               | १२९-५१ |
| २६. विरदावली               | ×                | "               | १५२-६० |
| २७. दर्शनस्तुति            | ×                | "               | १६१-६२ |
| २८. धाराधना प्रतिबोधसार    | विमलेन्द्रकीर्ति | हिन्दी          | १६३-६९ |

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

श्री जगन्नाथस्वामीण्यै नमः ।

कङ्क धाराधना सुविचार संक्षेपे सारो ब्रीह ॥ १ ॥

हो अथक वयस ध्रुवधारि, हवि बाल्यो तुम भवपारि ।  
हो शुद्ध कहुं तुम्ह भेड, धरी समकित पालन एहु ॥ २ ॥  
हवि जिनवरदेव धाराहि, तू' सिध समरि मन मांहि ।  
सुणि जीव दया धुरि धर्म, हवि छाडि भगुए कर्म ॥ ३ ॥  
मिध्यास कु संका टालो, गरुगुरु वचनि पावो ।  
हवि भान धरे मन धीर, ल्यो संजम दोहोलो वीर ॥ ४ ॥  
उपप्राबित करि व्रत सुधि, मन वचन काय निरोधि ।  
तू क्रोध मान मया छाडि, भागुए सू' सिलि मांदि ॥ ५ ॥  
हवि क्षमो क्षमावो सार, जिम पामो सुख भण्डार ।  
तु' मत्र समरे नवकार, धीए तन करे भवनार ॥ ६ ॥  
हवि सवे परिसह जिधि, धमंतर ध्याने दीधि ।  
वैराग्य धरे मन माहि, मन माकड गाडु साहि ॥ ७ ॥  
सुणि देह भोग सार, भवलघो वयस मां हार ।  
हवि भोजन पांखि छाडि, मन लेई भुगति मांदि ॥ ८ ॥  
हवि छुरणभस घुटि धायु, मनासि छांडो काय ।  
इं दीय बस करि धीर, कुटंब मोह मेल्ले वीर ॥ ९ ॥  
हवि मन मन गांडु बांधे, तू मरण समाधि साधि ।  
जे साथो मरण मुनेह, जेया स्वर्ग भुगतिय जसोय ॥ १० ॥

×

×

×

<

अन्तिम भाग

हवि हंइडि बाखि बिचार, धगु कहिइ किहि सु धरार ।  
लिखा धरुसणु वीक्या जस्य, सन्यास छांडो प्राण ॥ १३ ॥  
सन्यास लणं फल जोइ, स्वर्ग सुखि फलि सुखु होइ ।  
बलि ध्याक कोल तू' पामीइ, लही निर्वाण भुगती गामीइ ॥ १४ ॥  
जे बखि सुखिन नरनारी, ते जाइ भवनि पारि ।  
बी विमलेन्द्रकीर्ति कह्यो बिचार, धारावनर प्रतिकोषसार ॥ १५ ॥

|                             |                   |        |         |
|-----------------------------|-------------------|--------|---------|
| १६. पंचमेरूपूजा ( बुहत् )   | देवेन्द्रकीर्ति   | सम्बुत | १७०-१८० |
| ३०. अनन्तपूजा               | ब्रह्मशास्त्रिदास | हिन्दी | १८०-१९९ |
| ३१. गणेशरत्नसूजा'           | शुभचन्द्र         | सम्बुत | १९९-२११ |
| ३२. पञ्चकल्याणकोद्यापन पूजा | भ. ज्ञानसूपरा     | अपूर्ण | २११-३५  |

५४८६. गुटका सं० १०८ । पृष्ठ सं० १२० । आ० ४४४ । अक्ष । भाषा—हिन्दी । पूर्ण । दशा—जीर्ण ।

|                    |                |        |       |
|--------------------|----------------|--------|-------|
| १. जिनसहस्रनामभाषा | दत्तात्रेयीदास | हिन्दी | १-२१  |
| २. लघुसहस्रनाम     | "              | सम्बुत | २२-२७ |
| ३. स्तवन           | "              | अपूर्ण | २८    |
| ४. पद              | मनराम          | हिन्दी | २९    |

ल. का. १७२५ आधा । पूर्ण ।

चेतन इह घर माहि ।

घटपटादि नैनन गोचर जो, साहस सुनन जेना ।। १ ।।

तान सात कामनि मुन बनु, करण अथ का धेरा ।

करि है गौन आनमनि की जग, ताहि गरी आवन सेना ।। ६ ।।

अमन अमत सनाए रहन बन, कौयो अति अमरा ।

मिथ्या मोह उदै ते समझी, इह नदन है मेरो ।। ७ ।।

सदगुरु वचन जोइ घट दीपन, मिने अनादि अमेरा ।

असमयात परदेस म्यान सब, ज्यो नाम आचरु हरग ।। ८ ।।

नाना विकल्प म्यागि आपका, आप आप माहि हेरो ।

जो मनराम अचतन परमो, नदने होइ निवेरो ।

|                                  |       |        |       |
|----------------------------------|-------|--------|-------|
| ५. पद—मो प्रिय चिदानंद परधोन     | मनराम | हिन्दी | ३०    |
| ६. चेतन समझि देखि घरमाहि         | "     | "      | ३१    |
| ७. कै परमेश्वरी की अरचा विधि     | "     | "      | ३२    |
| ८. जयति आदिनाथ जिनदेव व्यान गाऊ' | "     | "      | ३३    |
| ९. सम्भक्तव पणविवि सिरिपास हो    | "     | "      | ३४-३५ |

|                          |            |         |                         |
|--------------------------|------------|---------|-------------------------|
| १०. पंचमगति वैशि         | हर्षकीर्ति | हिन्दी  | सं० १६८३ श्रावण अपूर्णि |
| ११. पंच सभावा            | ×          | "       | "                       |
| १२. मेघकुमारगीत          | पूनी       | हिन्दी  | ४०-४५                   |
| १३. भक्तानरस्तोत्र       | हेमराज     | "       | ४६                      |
| १४. पद-धब मोहे कफून उपाय | रूपचंद     | "       | ४७                      |
| १५. पंचपरमेष्ठीस्तवन     | ×          | प्राकृत | ४७-४८                   |
| १६. धातिपाठ              | ×          | संस्कृत | ५०-५२                   |
| १७. स्तवन                | धाराधर     | "       | ५२                      |
| १८. बारह भावना           | कविधामु    | हिन्दी  |                         |
| १९. पंचमंगल              | रूपचंद     | "       |                         |
| २०. जकड़ी                | "          | "       |                         |
| २१. "                    | "          | "       |                         |
| २२. "                    | "          | "       |                         |
| २३. "                    | दरिगह      | "       |                         |

मुनि मुनि जियरा रे तू त्रिभुवन का राज रे ।

तू तजि परंपरवारै चेतसि सहज सुभाव रे ॥

चेतसि सहज सुभाव रे जियरा परस्वी मिलि क्या राच रहे ।

धरपा पर जाध्या पर धरपाणा चउगइ दुख्य धरणाइ सहे ॥

धवसो गुरा कीजै कर्म हं छीजै सुगह न एक उपाव रे ।

दंसए राण चरणामय रे जिउ तू त्रिभुवन का राज रे ॥ १ ॥

करमनि बसि पडिया रे प्रणया मूढ़ विभाव रे ।

मिध्या मद नडिया रे मोह्या मोहि अणाइ रे ॥

मोह्या मोह अणाइ रे जिय रे मिध्यामद नित माचि रह्या ।

पड पडिहार लखन नदिदावत ज्ञानावरणी भादि कछ्या ॥

हडि चित्त कुलाल भडभारीण अष्टाउदीधे चताई रे ।

रे जीवड़े करमनि बसि पडिया प्रणया मूढ़ विभाव रे ॥ २ ॥

तू मति सोवहि न बीता रे बैरिन मै काहा बास रे ।  
 भवभव दुखदाय करै तिनका करै विसास रे ॥  
 तिनका करहि विसास रे जबबे तू भूझा नहि निमणु बरे ।  
 जम्मण मरण जरा दुखदायक तिनस्यो तू नित नेह करे ॥  
 घापे ग्याता घापे द्रिष्टा कहि समझाऊँ कास रे ।  
 रे जीउ तू मति सोवहि न बीता बैरिन मे काहाबास रे ॥  
 ते जगमाहि जामे रे रहे भन्तरल्पवलाइ रे ।  
 केवल विगत भयारे, प्रगटी जोति मुभाइ रे ॥  
 प्रगटी जोति मुभाइ रे जीवबे मिय्या रैणि विहाराणी ।  
 स्वपरभेद कारण जिन्ह मिलिया ते जग हूवा वाणो ॥  
 सुगुरु सुधर्म पंच परमेष्ठी तिनके लागो पाय रे ।  
 कहै दरिगह जिन त्रिभुवन मेवे रहे भतर ल्यवनाइ रे ॥ ४ ॥

|                            |           |         |                          |
|----------------------------|-----------|---------|--------------------------|
| २४. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा | बनारसीदास | हिन्दी  | ले० काल १७३५ आसोज बुदी ९ |
| २५. निर्वाणकाण्ड गायी      | ×         | प्राकृत |                          |
| २६. पूजा संग्रह            | ×         | हिन्दी  |                          |

५४६०. गुटका सं० १०६ । पत्र सं० १५२ । आ० ६×४ दश । ले० काल १८३६ सावण बुदी ६ ।

अपूर्णा । दशा-जोर्णशीर्षा ।

विशेष-लिपि विकृत एव अक्षुद्र है ।

|  |            |        |               |
|--|------------|--------|---------------|
| १. शनिश्चरदेव की कथा                               | ×          | हिन्दी | ११४           |
| २. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा                          | बनारसीदास  | ”      | १५-२४         |
| ३. नैमिनाथ का बारहमासा                             | ×          | ”      | अपूर्णा २५-२६ |
| ४. जकड़ी   | नैमिचन्द्र | ”      | २७            |
| ५. सवेया (सुख होत मरीरको दाहिद भागि जाइ)           | ×          | ”      | २८            |
| ६. कवित्त (श्री जिनराज के ध्यान को उछाह मोहै लागे) |            | ”      | २९            |
| ७. निर्वाणकाण्डभाषा                                | अणवतीदास   | ”      | ३०-३३         |

|   |             |         |       |
|---|-------------|---------|-------|
| ८. स्तुति (भाग्य प्रभु को जब भयो)                     | ×           | हिन्दी  | ३४-३६ |
| ९. बारहमासा   | ×           | "       | ३७-३९ |
| १०. पद व भजन  | ×           | "       | ४०-४७ |
| ११. पार्वतीपूजा                                       | हर्षकीर्ति  | "       | ४८-४९ |
| १२. ग्राम मीठू का ऋगडा                                | ×           | "       | ५०-५१ |
| १३. पद-काँइ समुद विजयमुत्त सार                        | ×           | "       | ५२-५७ |
| १४. गुरुओं की स्तुति                                  | भूधरदास     | "       | ५८-५९ |
| १५. दर्शनपाठ  | ×           | संस्कृत | ६०-६३ |
| १६. विनती ( त्रिभुवन गुरु स्वामीजी )                  | भूधरदास     | हिन्दी  | ६४-६६ |
| १७. लक्ष्मीस्तोत्र                                    | पद्मप्रभदेव | संस्कृत | ६७-६८ |
| १८. पद-मेरा मन बस कीना जिनराज                         | ×           | हिन्दी  | ७०    |
| १९. मेरा मन बस कीनो महावीरा                           | हर्षकीर्ति  | "       | ७१    |
| २०. पद-(नैना सफल भयो प्रभु दरमण पाय)                  | रामदास      | "       | ७२    |
| २१. नलो जिनन्द बंदस्या                                | ×           | "       | ७३-७३ |
| २२. पद-प्रभुजी तुम मैं चरण धारण गछ्यो                 | ×           | "       | ७४    |
| २३. धामेर के राजाधो के नाम                            | ×           | "       | ७५    |
| २४. " " "   | ×           | "       | ७६    |
| २५. विनती-बोल २ भूली रे आई                            | नेमिचन्द्र  | "       | ७८-७९ |
| २६. पद-वैतन मानि ले बात                               | ×           | "       | ७९    |
| २७. मेरा मन बस कीनो जिनराज                            | ×           | "       | ८०    |
| २८. विनती-बंदू श्री धरहन्तदेव                         | हरिसिंह     | "       | ८१-८२ |
| २९. पद-सेवक हूँ महाराज तुम्हारी                       | दुलीचन्द    | "       | ८३-८४ |
| ३०. मन धरी ये होत उछावा                               | ×           | "       | ८४-८६ |
| ३१. धरम का डोल बजाये सूणी                             | ×           | "       | ८७    |
| ३२. सब मोहि तारोजी जगद्गुरु                           | मनसारास     | "       | ८८    |
| ३३. लागो दीर लागो दीर प्रभुजी का ध्यानमे मन । पूरणदेव |             | "       | ८८    |
| ३४. धासरा जिनराज तेरा                                 | ×           | "       | ८८    |

|   |                |         |         |
|---|----------------|---------|---------|
| ३५. छु जाणे ज्यों तारो जी               | ×              | हिन्दी  | ८६      |
| ३६. तुम्हारे दर्श देखत ही               | जोधराज         | "       | ९०      |
| ३७. सुनि २ रे जीब मेरा                  | मनसाराम        | "       | ९०-९१   |
| ३८. भरमत २ संसार बतुर्गति दुख सहा       | ×              | "       | ९१-९३   |
| ३९. श्रीनेमकुवार हमको क्यों न उतारो पार | ×              | "       | ९५      |
| ४०. धारती                               | ×              | "       | ९६-९७   |
| ४१. पद—बिनती कराछां प्रभु मानो जो       | किसानगुलाब     | "       | ९८      |
| ४२. ये जी प्रभू तुम ही उतारोगे पार      | "              | "       | ९९      |
| ४३. प्रभूजी भोह्या छै तन मन भाए         | ×              | "       | ९९      |
| ४४. बंदू श्रीबिनरोज                     | कनककीर्ति      | "       | १००-१०१ |
| ४५. बाजा बज्य्या प्यारा २               | ×              | "       | १०२     |
| ४६. सफल बडी हो प्रभुजी                  | सुगालचन्द      | "       | १०३     |
| ४७. पद                                  | देवसिंह        | "       | १०४-१०५ |
| ४८. बरला बलता नांही रे                  | भूधरदास        | "       | १०६     |
| ४९. अक्तामरस्तोत्र                      | मानतुङ्गाचार्य | संस्कृत | १०७-१०८ |
| ५०. चौबीस तीर्थकर स्तुति                | "              | हिन्दी  | ११६-२१  |
| ५१. मेघकुमारवार्ता                      | "              | "       | १२१-२४  |
| ५२. शनिचर की कथा                        | "              | "       | १२५-४१  |
| ५३. कर्मयुद्ध की बिनती                  | "              | "       | १४२-४३  |
| ५४. पद—अरज कर्क छूँ वीतराग              | "              | "       | १४६-४७  |
| ५५. स्फुट पाठ                           | "              | "       | १४८-५३  |

५४६१. गुटका सं० ११० । पत्र सं० १४३ । आ० ६×८ इंच । नापा-हिन्दी संस्कृत ।

|                   |            |         |       |
|-------------------|------------|---------|-------|
| १. नित्यपूजा      | ×          | संस्कृत | १-२९  |
| २. शोलाशास्त्र    | जयसवामि    | "       | २९-४९ |
| ३. अक्तामरस्तोत्र | आ० मानतुंग | "       | ५०-५८ |
| ४. पंचमंगल        | रूपचन्द    | "       | ५८-६८ |

|                            |           |        |         |
|----------------------------|-----------|--------|---------|
| १. कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा | बनारसीदास | हिन्दी | ६८-७५   |
| ६. पूजासंग्रह              | ×         | "      | ७५-१०२  |
| ७. विनतीसंग्रह             | देवाग्रह  | "      | १०२-१४३ |

५४६२. गुटका सं० १११ । पत्र सं० २८ । धा० ६ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । दगा-मामान्य

|                   |               |               |       |
|-------------------|---------------|---------------|-------|
| १. भक्तामरस्तोत्र | मानतुं गाथायं | संस्कृत       | १-६   |
| २. लक्ष्मीस्तोत्र | पद्मप्रभदेव   | "             | ११    |
| ३. चरवा           | ×             | प्राकृतहिन्दी | ११-२६ |

विशेष—“पुस्तक भक्तामरजी की पं० विल्लनीचन्द रैनवाल हवाला की छै । मिति चैत सुदी ६ संवत् १६५४ का में मिनी मार्कन राम श्री राठीइजी की मूँ पंचाम् ।” यह पुस्तक के ऊपर उल्लेख है ।

५४६३. गुटका सं० ११२ । पत्र सं० १५ । धा० ६×६ इंच । भाषा-संस्कृत । अधूर्ण ।

विशेष—पूजाभो का संग्रह है ।

५४६४. गुटका सं० ११३ । पत्र सं० १६-२२ । धा० ६ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । अधूर्ण । दगा-मामान्य ।

अथ डोकरी घर राजा भोज की वार्ता लिख्यते । पत्र सं० १८-२० ।

डोकरी ने राजा भोज कहाँ डोकरी हे राम राम । बीरा राम राम । डोकरी यो मारण कहा जाय छै । बीरा ई मारण परयो भाई घर परयो गई ॥ १ ॥ डोकरी मेहे बटाउ हे बटाउ । ना बीरा ये बटाऊ नाही । बटाऊ तो संसार माही दोष धोर ही छै ॥ एक तो बाद घर एक सूरज ॥ २ ॥ डोकरी मेहे राजा हे राजा ॥ ना बीरा ये तो राजा नाही । राजा तो संसार मे दोय धोर ही । एक तो धन्न घर एक पाणी ॥ ३ ॥ डोकरी मेहे चोर हे चोर । ना बीरा ये चोर ना । चोर तो संसार में दोय धोर ही छै । एक नेत्र चोर धोर एक मन चोर छै ॥ ४ ॥ डोकरी मेहे तो हलवा हे हलवा । ना बीरा ये तो हलवा नाही । हलवा तो संसार मे दोय धोर ही छै । कोई पराये घर बसत मागिबा जाइ उका घर मे छै पणि नट जाय सो हलबो ॥ ५ ॥ डोकरी तू माहा के माता हे माता । ना बीरा माता तो दोय धोर ही छै । एक तो उबर माही मूँ काड़े सो माता । दूसरी भाय माता ॥ ६ ॥ डोकरी मेहे ते हारपा हे हरपा । ना बीरा ये क्या ने हारपो । हारपो तो संसार में तीन धोर ही छै । एक तो मारण बालतो हारपो । दूसरो बेटी जाई सो हारपो तोसरी जैकी भोडी अरुनी होइ सो हारपो ॥ ७ ॥ डोकरी मेहे बापवा हे बापवा । ना बीरा ये बापवा नाही । बापवा तो ब्यारा धोर छै । एक तो गऊ को जायो बापवा । दूसरो छुधाली को जायो बापवा । तीसरो जै की माता जन्मला ही सर गई सो बापवा । चौथा बामण बाण्या की बेटी बिधवा हो जाय सो बापवा ॥ ८ ॥ डोकरी ब्राया मिला हे



मिला । बीरा मिलवा वाला तो संसार मे अपार घोर ही छै । जैको बाप विरथा होसी सो बा मिलसी । घर के को बेटो परदेस सूं घामो होसी सो बा मिलसी । दूसरो सांवरण भाववा को मेह बरस सी सो समन्बर सूं । तीसरो भाणज को भात पैराबा ज़ासी सो वो मिलसी । चौथा स्त्री पुरुष मिलसी । डोकरी जाप्या हे जाप्या । अरिया कहे न उजलेउ मलसी घाधा । पुरुषा घाई वारषा बोलार लाधा ॥ १० ॥

॥ इति डोकरो राजा भोज की वार्ता सम्पूर्णा ॥

५४६५. गुटका सं० ११४ । पत्र सं० ६-७२ । प्रा० ६३×५३ इञ्च ।

विशेष—स्तोत्र एक पूजा संग्रह है ।

५४६६. गुटका सं० ११५ । पत्र सं० १६८ । प्रा० ६×५ इंच । भाषा—हिन्दी । अपूर्ण । दशा—सामान्य

विशेष—पूजा संग्रह, जिनयज्ञकल्प ( आशाधर ) एक स्वयंभूस्तोत्र का संग्रह है ।

५४६७. गुटका सं० ११६ । पत्र सं० १६९ । प्रा० ६×५ इंच । भाषा—संस्कृत । पूर्ण । दशा—जीर्ण ।

विशेष—गुटके मे निम्न पाठ उल्लेखनीय है ।

४. भुवनकीर्ति गीत

बृचराज

हिन्दी

१२-१४

घ्राजि बढाउ मुगहू सहेली यहू मनु विषमइ जि महनीए ।

गोहि भनन्त नित कोटिहि गारिहि मुहु गुरु मुहु गुरु वेदहि मुकरि रलीए ॥

करि रली बन्दहू सखी मुहु गुरु लवधि गोदम सम सने ।

जमु देखि दरसगु टलहि नवदुख होइ नित नवनिधि धरे ॥

कर्ूर चन्दन अगर केसरि घ्राणि भावन भाव ए ।

श्रीभुवनकीर्ति चरण प्रणमोहू सखी घ्राज बढाव हो ॥ १ ॥

तेरहू विधि चारित प्री।पालइ दिनकर दिनकर जिम तपि सोहइ ए ।

सर्वाञ्जि भासिउ धर्म मुगावै वाणी हो वाणी भवु मन मोहइ ए ।

मोहन्ति वाणी सदा भवि सुनु ग्रन्थ प्रागम भाइए ।

पद् द्रव्य अरु पञ्चास्तिकाया सततत्व पयासए ॥

बाबीस परिग्रह सहइ अंगिहू गरुव मति नित गुणनिधो ।

श्रीभुवनकीर्ति चरण पणमि मु चारितु तनु तेरहू विधे ॥ २ ॥

मूल गुणाहं अठाइसइ धारइए मोहए मोहु महाभद्र ताडियो ए ।

रतिपति तिरणु दँति ह महिइउ पुगु कोवडुए कोवडुकरि तिहि रासीयो ए ॥

पालियो जिमि कं बँऽ करिहि वनउ करि दम बोलइ ।  
 शुभ शिवाल मेरह जिउम जंगमु पबस भइ किम बोलए ।  
 जो पंच विषय विरतु चित्तिहि किउउ भिउ कम्मह तरु ।  
 श्री भुवनकीर्ति चरण प्रणमइ धरइ भठाइस मूलछुणा ॥ ३ ॥  
 दस लाक्षण धर्म निजु धारि कुं संजमु संजमु भसणु बनिए ।  
 सत्रु मित्रु जो सम किरि देखई गुरनिरगंधु महा मुनीए ॥  
 निरगंधु शुभ मव भद्र परिहरि सबस जिव प्रतिपालए ।  
 भिप्यात तम निद्रंण दिन म जैणधर्म उजालए ॥  
 तेरअत्रतहं भक्कल बिबहं कियउ सक्थो जम ।  
 श्री भुवनकीर्ति चरण परामउ धरइ दशलक्षिए धर्मु ॥ ४ ॥  
 मुर तरु संघ कनिउ चित्तमणिए दुहिए दुहि ।  
 महो धरि धरि ए पंच सबद वाजहि उद्धरंगि हिए ॥  
 गावहि ए कामणिए मधुर सरे भति मधुर सरि गावति कामणिए ।  
 जिएह मन्दिर धबही भष्ट प्रकार हि करहि पूजा कुसमभाल चढावहि ॥  
 बूचराज भणिए श्री रत्नकीर्ति पाटिउ दयोसह गुरो ।  
 श्री भुवनकीर्ति भासीरवाइहि संघु कलियो सुरतरो ॥

॥ इति आचार्य श्री भुवनकीर्ति गीत ॥

|                     |        |         |        |
|---------------------|--------|---------|--------|
| ५. नाडी परीक्षा     | ×      | संस्कृत | १५-१८  |
| ६. आयुर्वेदिक नुसखे | ×      | हिन्दी  | १९-१०६ |
| ७. पार्श्वनाथस्तवन  | समयराज | ”       | १०७    |

मुन्दर सोहए गुरा निलउ, जग जीवण जिण चन्दोजी ।  
 मन मोहन महिमा निलउ, सदा २ चिरनंदो जी ॥ १ ॥  
 जेसलमेरु बुहारिए पाम्यउ परमानन्दोजी ।  
 पास जिलेसुर जग धणी फलियो सुरतरु कन्दोजी ॥ २ ॥ जे० ॥  
 मणिए मारिणक मोती जळ्मउ कचणरूप रसालो जी ।  
 सिधबर सेहर सोहूतउ पूनिम सतिदल भालोजी ॥ ३ ॥ जे० ॥

निरमल तिलक सौहमण्डल जिन मुख कमल रिसालोजी ।  
 कानों कुण्डल दीपतां फिक मिय भाक कमालोजी ॥ ४ ॥ जे० ॥  
 कंठि मनोहर कंठिलउ उरि वारि नव मिर हारोजी ।  
 बहिर लवहि भला करता भव भव कारोजी ॥ ५ ॥ जे० ॥  
 मरकत मणिए तनु दीपती मोहन सूरति मारोजी ।  
 मुख सोह्य संपद मिलइ जिगुवर नाम भवारोजी ॥ ६ ॥ जे० ॥  
 इन परि पास जिखेसरह भेटयउ कुल मिएगारोजी ।  
 जिगचन्द्र सूरि पसाउ लइ समयराज मुखकारोजी ॥ ७ ॥ जे० ॥  
 ॥ इति श्री पार्श्वनाथस्तवन समाप्तोऽय ॥

५४६८. गुटका सं० ११७ । पत्र सं० ३५० । भा० ६३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । प्रपूर्णा ।

दशा सामान्य ।

विशेष— विविध पाठो का संग्रह है । चर्चाएं पूजाएं एवं प्रतिष्ठादि विषयों में संबंधित पाठ हैं ।

५४६९. गुटका सं० ११८ । पत्र सं० १२९ । भा० ६×४ इञ्च ।

|                                 |             |         |       |
|---------------------------------|-------------|---------|-------|
| १. शिक्षा चतुष्क                | नवलराम      | हिन्दी  | ५     |
| २. श्री जिनवर पद बन्दि कौ जी    | वलतराम      | "       | ५-७   |
| ३. अरहंत चरनचित लाऊ             | रामविद्यान  | "       | ९-१०  |
| ४. चेतन हो तेरे परम निधान       | जिनदाम      | "       | ११-१२ |
| ५. चैत्यवंदना                   | मकलचन्द्र   | संस्कृत | १२-१३ |
| ६. कल्याणक                      | पद्मनिधि    | "       | २१    |
| ७. पद—भाजि दिवसि धनि लेखे लेखवा | रामचन्द्र   | हिन्दी  | ३७    |
| ८. पद—प्रातभयो सुमरि देव        | जगराम       | "       | ५३    |
| ९. पद—सुफलषड़ीजी प्रभु          | शुशालचन्द्र | "       | ७५    |
| १०. निर्वाणभूमि मंगल            | विश्वभूषण   | "       | ८६-९० |

संवत् १७२९ में भुमावर म पं० केमरीसिंह ने लिखा ।

११. पञ्चमगतिलेखि हर्षकीर्ति हिन्दी ११५-१८

रचना सं० १६८३ प्रति लिपि सं० १८३०

५५००. गुटका सं० ११६ । पत्र सं० २५१ । आ० ६३×६ इञ्च । ले० काल सं० १८३० प्रसाद बुदी  
८ । अपूर्ण । दवा-सामान्य ।

विशेष—पुरमे घाट जकपुर में ऋषभ देव बैर्यालय में रतना पुजारी ने स्व पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।  
इसमें कवि बालक कृत सीता चरित्र हैं जिसमें २५२ पद्य हैं । इस गुटके का प्रथम तथा मध्य के प्रत्येक पत्र नहीं है ।

५५०१. गुटका सं० १२० । पत्र सं० १३३ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय संग्रह ।  
पूर्ण । दवा-सामान्य ।

१. रविप्रतकथा जयकीर्ति हिन्दी २-३ ले० काल सं० १७६३ पीठ नु०=

प्रारम्भ—

सकल जिनेस्वर मन घरी सरसति चित भ्याऊं ।  
सद्वृत्त चरण कमल नमि रविप्रत गुण गाऊ ॥ १ ॥  
व.गारसी पुरी सोभती मतिसामर तह साह ।  
सात पुत्र मुहामरणा दीडे टाले दाह ॥ २ ॥  
मुनिवादि सेठे लीयो रविनीरस सा ।  
सांभालि कहूँ बहसा कीमा वत नंभो अपार ॥ ३ ॥  
नेहूँ भी धन कण सहमयो दुरजीयो चयो सेठ ।  
सात पुत्र चाल्या परदेस बजोध्या पुरनेठ ॥ ४ ॥

अन्तिम—

जे नरनारी भाव सहित रविनों वत कर सी ।  
त्रियुवन ना फल ने लही शिव रमनी वरसी ॥ २० ॥  
नवी तट शक्य विद्यागणी सूरि रावरल सुमूषन ।  
जयकीर्ति कही मरम नवी कछासंघ गति दूषण ॥ २१ ॥  
इति रविप्रत कथा संपूर्ण । इन्दोर मध्ये लिपि कृत ।  
ले० काठ सं० १७६३ पीठ बुदी ६ पं० दवाशराम ने लिपी की थी ।

२. धर्मसार चौपई

पं० शिरोमणि

हिन्दी

३-७३

२० काल १७३२ । ले० काल १७६४ अन्तिक पुरी में श्रीदयाराम ने प्रतिलिपि की ।

|   |               |         |       |
|---|---------------|---------|-------|
| ३. विषाणुहार स्तोत्रभाषा                                  | भरवलकीर्ति    | हिन्दी  | ८५-८८ |
| ४. दससूत्र अष्टक  | ×             | संस्कृत | ८९-९० |
| दयाराम ने सूरत में प्रतिनिधि की थी । सं० १७९४ । पूजा है । |               |         |       |
| ५. त्रिषष्टिशालाकाण्ड                                     | श्रीपाल       | संस्कृत | ९१-९३ |
| ६. पद—वेई वेई वेई नृत्यति भ्रमरो                          | कुमुदचन्द्र   | हिन्दी  | ९७    |
| ७. पद—प्रातः समै सुमरो जिनदेव                             | श्रीपाल       | ”       | ९७    |
| ८. पार्ष्णीव्रतती   | ब्रह्मनाथ     | ”       | ९८-९९ |
| ९. कवित्त   | ब्रह्मपुत्राल | ”       | १२५   |

गिरनार की यात्रा के समय सूरत में लिपि किया गया ।

५५०२. गुटका सं० १२१ । पत्र सं० ३३ । भा० ६२×४२ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है ।

५५०३. गुटका सं० १२२ । पत्र सं० १३० । भा० ५२×४२ इञ्च । भाषा—हिन्दी संस्कृत ।

विशेष—तीन चोवीसी नाम, दर्शनस्तोत्र ( संस्कृत ) कल्याणमंदिरस्तोत्र भाषा ( बनारसीदास ) भक्तभार स्तोत्र ( मानतुंगाचार्य ) नदमोस्तोत्र ( संस्कृत ) निर्वाणकाण्ड, पंचमगल, देवपूजा, सिद्धपूजा, सोलहकारण पूजा, पक्षीसौ ( नवल ), पार्वतीनाथस्तोत्र, सूरत की बारहखड़ी, बाईस परीषद्, जैनशतक ( भूषरदास ) सामायिक टीका ( हिन्दी ) आदि पाठों का संग्रह है ।

५५०४. गुटका सं० १२३ । पत्र सं० २९ । भा० ६×६ इञ्च भाषा—संस्कृत हिन्दी । दशा—जीर्णसर्प ।

|                                    |        |         |       |
|------------------------------------|--------|---------|-------|
| १. भक्तभारस्तोत्र ऋद्धि मंत्र महित | ×      | संस्कृत | २-१८  |
| २. पत्नीविधि                       | ×      | ”       | १८-२२ |
| ३. जैनपक्षीसौ                      | नवलराम | हिन्दी  | २२-२९ |

५५०५. गुटका सं० १२४ । पत्र सं० ६६ । भा० ७×६ इञ्च ।

विशेष—पूजाओं एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

५५०६. गुटका सं० १२५ । पत्र सं० ५६ । भा० १२×४ इञ्च । पूर्ण । सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

|                       |   |        |  |
|-----------------------|---|--------|--|
| १. कर्म प्रकृति चर्चा | × | हिन्दी |  |
| २. चोवीसठाणा चर्चा    | × | ”      |  |

|                           |   |        |
|---------------------------|---|--------|
| ३. बतुर्बेसामार्गणा चर्चा | × | हिन्दी |
| ४. द्वीप समुद्रों के नाम  | × | "      |
| ५. देशों ( भारत ) के नाम  | × | हिन्दी |

१. अंगदेश । २. अंगदेश । ३. कलिंगदेश । ४. तिलंगदेश । ५. राष्ट्रदेश । ६. लाट्टदेश ।  
 ७. कर्णाटदेश । ८. मेघनाददेश । ९. वैराटदेश । १०. गौरदेश । ११. चीरदेश । १२. द्राविडदेश । १३. महाराष्ट्र-  
 देश । १४. सौराष्ट्रदेश । १५. कासमोरदेश । १६. कीरदेश । १७. महाकीरदेश । १८. मगधदेश । १९. सूरसेतुदेश ।  
 २०. कावेरदेश । २१. कम्बोजदेश । २२. कम्बजदेश । २३. उत्करदेश । २४. करहाटदेश । २५. कुरुदेश ।  
 २६. क्ल्वाणदेश । २७. कच्छदेश । २८. कौसिकदेश । २९. सकदेश । ३०. भयानकदेश । ३१. कौसिकदेश । ३२. ....  
 ..... ३३. कारुतदेश । ३४. कापूनदेश । ३५. कच्छदेश । ३६. मंठाकच्छदेश । ३७. भोटदेश । ३८. महामोटदेश ।  
 ३९. कीटिकदेश । ४०. केकिकदेश । ४१. कोल्लगिरिदेश । ४२. कामरुदेश । ४३. कुण्डणदेश । ४४. कुंतलदेश ।  
 ४५. कलकूटदेश । ४६. करकटदेश । ४७. केरलदेश । ४८. खगदेश । ४९. खर्परदेश । ५०. खेटदेश । ५१. बिल्लर-  
 देश । ५२. वेदिदेश । ५३. जालंधरदेश । ५४. टंकल टक्क । ५५. मॉडियाणदेश । ५६. नहालदेश । ५७. तुङ्गदेश ।  
 ५८. लावकदेश । ५९. कौसलदेश । ६०. दशार्णदेश । ६१. दण्डकदेश । ६२. देशसभदेश । ६३. नेपालदेश । ६४. नर्तक-  
 देश । ६५. पञ्जासदेश । ६६. पल्लवदेश । ६७. पूंड़देश । ६८. पाण्ड्यदेश । ६९. प्रय्यदेश । ७०. अंबुददेश । ७१. वसु-  
 देश । ७२. गंभीरदेश । ७३. महिष्मकदेश । ७४. महोदयदेश । ७५. मुरण्डदेश । ७६. मुरलदेश । ७७. मरुस्थलदेश ।  
 ७८. मुद्गरदेश । ७९. मंगनदेश । ८०. मल्लवर्तदेश । ८१. पवनदेश । ८२. धारामदेश । ८३. राठकदेश । ८४.  
 ब्रह्मोत्तरदेश । ८५. ब्रह्मावर्तदेश । ८६. ब्रह्मणदेश । ८७. बाहकदेश । विदेहदेश । ८८. वनवासदेश । ८९. वनायुक्-  
 देश । ९०. वाल्हाकदेश । ९१. वल्लवदेश । ९२. ध्वन्तिदेश । ९३. बर्हिदेश । ९४. सिंहलदेश । ९५. सुह्यदेश ।  
 ९६. सूपरदेश । ९७. मुह्यदेश । ९८. मस्मकदेश । १००. ह्रणदेश । १०१. हूर्मकदेश । १०२. हूर्मजदेश ।  
 १०३. हंसदेश । १०४. हृहकदेश । १०५. हेरकदेश । १०६. बीरादेश । १०७. महावीणदेश । १०८. भट्टीयदेश ।  
 १०९. गोप्यदेश । ११०. गांडाकदेश । १११. गुजरातदेश । ११२. पारसकुलदेश । ११३. शवालभदेश ।  
 ११४. कोलबदेश । ११५. शाकभरिदेश । ११६. कनउजदेश । ११७. धादनदेश । ११८. उबीबिसदेश । ११९. नीला-  
 वरदेश । १२०. गंगापारदेश । १२१. संजामणदेश । १२२. कनकगिरिदेश । १२३. नवसारिदेश । १२४. भांगिरिदेश ।

|                             |   |        |
|-----------------------------|---|--------|
| ६. क्रियावाचियों के ३६३ भेद | × | हिन्दी |
|-----------------------------|---|--------|

❦नोट— यह नाम शुद्धि के लाली छोड़ा हुआ है ।

|                                 |   |                |                            |
|---------------------------------|---|----------------|----------------------------|
| ७. स्फुट कवित्त एवं पद्य संग्रह | × | हिन्दी संस्कृत |                            |
| ८. द्वादशानुप्रेक्षा            | × | संस्कृत        |                            |
| ९. सूक्तावलि                    | × | ,,             | ले० काल १८३६ भावण सुकला १० |
| १०. स्फुट पद्य एवं मंत्र आदि    | × | हिन्दी         |                            |

५५०७. गुटका सं० १२६। पत्र सं० ४५। भा० १०। ५५ इञ्च। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विशेष-चर्चा विशेष-चर्चाओं का संग्रह है।

५५०८. गुटका सं० १२७। पत्र सं० ३३। भा० ७। ५५ इञ्च।

विशेष-पूजा पाठ संग्रह है।

५५०९. गुटका सं० १२७ क। पत्र सं० ५५। भा० ७। ५५ इञ्च।

|                                    |         |         |       |
|------------------------------------|---------|---------|-------|
| १. शीघ्रबोध                        | ×       | संस्कृत | १-१६  |
| २. लघुवाचणी                        | ×       | ,,      | १७-३९ |
| विशेष-वैष्णवधर्म। ले० काल सं० १८०७ |         |         |       |
| ३. ज्योतिष्यटलमाला                 | श्रीपति | संस्कृत | ४०-५१ |
| ४. सारणी                           | ×       | हिन्दी  | ५१-५५ |

ग्रंथों का देवहर वर्षा होने का योग

५५१०. गुटका सं० १२८। पत्र सं० ३-६०। भा० ७। ५५ इञ्च। भाषा-संस्कृत।

विशेष-सामान्य पाठों का संग्रह है।

५५११. गुटका सं० १२९। पत्र सं० ८-२४। भा० ७। ५५ इञ्च। भाषा-संस्कृत।

विशेष-क्षेत्रपालस्तोत्र, लक्ष्मीस्तोत्र (सं०) एवं पञ्चमङ्गलपाठ है।

५५१२. गुटका सं० १३०। पत्र सं० ६८। भा० ६। ५५ इञ्च। ले० काल १७५२ भाषा-सुदी १०।

|                           |            |         |       |
|---------------------------|------------|---------|-------|
| १. चतुर्विंशतीर्षङ्करपूजा | ×          | संस्कृत | १-५४  |
| २. चौबीसदण्डक             | दीक्षितराम | हिन्दी  | ५५-६७ |
| ३. पीठप्रक्षालन           | ×          | संस्कृत | ६८    |

५५१३. गुटका सं० १३१। पत्र सं० १४। भा० ७। ५५ इञ्च। भाषा-संस्कृत हिन्दी।

विशेष-सामान्य पाठों का संग्रह।

५५१४. गुटका सं० १३२। पत्र सं० १४-४१। भा० ६। ५५ इञ्च। भाषा-हिन्दी।

|              |              |        |              |       |
|--------------|--------------|--------|--------------|-------|
| १. पञ्चासिका | त्रिभुवनचन्द | हिन्दी | से० काल १८२६ | १५-२२ |
| २. स्तुति    | ×            | "      |              | २३-२३ |
| ३. दोहासतक   | रूपचन्द      | "      |              | २५-३८ |
| ४. स्फुटबोहे | ×            | "      |              | ३४-४१ |

३५१६. गुटका सं० १३३ । पत्र सं० १२१ । प्रा० ५३×४ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।

विषय—छहदाला ( धानतराय ), पंचमङ्गल ( रूपचन्द ), पूजार्थ एवं तत्त्वार्थसूत्र, भक्त्यामरस्तोत्र आदि का संग्रह है ।

३५१६. गुटका सं० १३४ । पत्र सं० ४१ । प्रा० ५३×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—शांतिनाथस्तोत्र, स्कन्दपुराण, भगवद्गीताके कुछ स्थल । से० काल सं० १८६१ पाच सुदी ११ ।

३५१७. गुटका सं० १३५ । पत्र सं० १३-१३४ । प्रा० ३३×४ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण

विषय—पंचमङ्गल, तत्त्वार्थसूत्र, आदि सामान्य पाठों का संग्रह है ।

३५१८. गुटका सं० १३६ । पत्र सं० ५-१०८ । प्रा० ८३×२ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—भक्त्यामरस्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र, श्लोक आदि हैं ।

३५१९. गुटका सं० १३७ । पत्र सं० १६ । प्रा० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । अपूर्ण ।

१. मोरपिच्छधारी (कृष्ण) के कवित्त धर्मवास, कपोल, विचित्र देव हिन्दी ३ कवित्त हैं ।

२. बाजिदजी के शक्ति वाजिद "

बाजिद के कवित्तों के ६ संग्रह हैं । जिनमें ६० पद्य हैं । इनमें से विरह के संग्रह के ३ छन्द नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं ।

वाजीद विपत्ति बेहद बहो कहां तुम्ह सों । सर कमान की प्रीत करी पीव मुझ सों ।

पहले धपनी धोर तीर की तान ही, परि हां पीछे झारत दूरि जगत सब जानई ॥२॥

जिन बालम बेहाल रह्यो क्यों जोव रे । जरद हरद सो भई बिना तोहि पीवरे ।

शरिर् मांस के तास है क चास है । परि हां जब जोव लाग्य पीव धोर क्यों देखना ॥२५॥

कहिसे सुनिये राम धोर न बित रे । हरि ठाकुर की ध्यान स धरिये नित रे ।

जीव बिलम्ब्यां पीव दुहाई राम की । परि हां सुख संपति बाजिद कहो क्यों काम की २६॥

३५२०. गुटका सं० १३६ । पत्र सं० ९ । प्रा० ७×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । पूर्ण

एव शुद्ध । दशम-सामान्य ।

विषय—मुक्तावली व्रतकथा भाषा ।



५५२२. गुटका सं० १४०। पत्र सं० ८। पृ० ६३×४६ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। ले० काल सं० १९३५ अषाढ सुदी १५। पूर्ण एवं शुद्ध दशा—सामान्य।

विशेष—सोनागिरि पूजा है।

५५२२. गुटका सं० १४१। पत्र सं० ३७। पृ० ३×३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।

विशेष—विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र है।

५५२३. गुटका सं० १४२। पत्र सं० २०। पृ० ५×४ इंच। भाषा—हिन्दी। ले० काल सं० १९१८ अषाढ सुदी १४।

विशेष—घुटके में निम्न २ पाठ उल्लेखनीय हैं।

|          |        |        |       |
|----------|--------|--------|-------|
| १. अहवाल | आनतराय | हिन्दी | १-६   |
| २. अहवाल | किसान  | "      | १०-१२ |

५५२४. गुटका सं० १४३। पत्र सं० १७४। पृ० ५१×४ इंच। भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले० काल १८९७। पूर्ण।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

५५२५. गुटका सं० १४४। पत्र सं० ६१। पृ० ८×६ इंच। भाषा—संस्कृत हिन्दी। पूर्ण।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

५५२६. गुटका सं० १४५। पत्र सं० ११। पृ० ६×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पञ्जीशास्त्र। ले० काल १८७४ ज्येष्ठ सुदी १४।

#### प्रारम्भ के पद्य—

नमस्कृत्यमहादेवं गुरु शास्त्रविशारदं।

अविष्यदर्शबोधाय वक्षते पत्ररक्षिणः ॥१॥

अनेन शास्त्रसारेण लोके कालत्रयं मतिः।

फलाफल विद्युन्वन्ते सर्वकार्येषु निश्चितं ॥२॥

५५२७. गुटका सं० १४६। पत्र सं० २५। पृ० ७×५ इंच। भाषा—हिन्दी। अपूर्ण। दशा—सामान्य

विशेष—आदिनाथ पूजा ( सेवकराम ) भजन एवं नेमिनाथ की भक्तना ( शेषकराम ) का संग्रह है।

पट्टी पहाड़े भी लिखे गये हैं। अधिकांश पत्र खाली हैं।

३३२८. गुटका सं० १५७। पत्र सं० ३-२७। पृ० ६×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष।  
बधा-जीर्ण शीर्ष।

विशेष—शीघ्रवीथ है।

३३२९. गुटका सं० १५८। पत्र सं० २५। पृ० ७×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र संग्रह है।

३३३०. गुटका सं० १५९। पत्र सं० ८६। पृ० ६×६ इंच। भाषा-हिन्दी। से० काल सं० १८४९

कार्तिक सुषी ९। पूर्ण। बधा-जीर्ण।

|                |           |   |       |
|----------------|-----------|---|-------|
| १. बिहारीसतसई  | बिहारीलाल | हिन्दी                                      | १-३५  |
| २. मन्त्र सतसई | कृष्णकवि  | "   | ३६-८० |
|                |           | ७०८ पद्य हैं। से० काल सं० १८४९ चैत सुषी १०। |       |
| ३. काविल       | बेनीदास   | हिन्दी                                      | ३६-८० |

३३३१. गुटका सं० १६०। पत्र सं० १३५। पृ० ६३×४ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। से० काल  
सं० १८४५। बधा-जीर्ण शीर्ष।

विशेष—तिरि विकृत है। कनका बलीसी, राम बीतण का डूहा, फूल भीतण का डूहा, धार्मि पाठ है।  
अधिकार्थ पत्र बाली है।

३३३२. गुटका सं० १६१। पत्र सं० १८। पृ० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—यहाँ तथा विनतियो का संग्रह है तथा जैन पञ्चीसी ( मङ्गलद्वय ) बारह भावना ( बीलतराम )  
निर्वाणकाण्ड है।

३३३३. गुटका सं० १६२। पत्र सं० १०७। पृ० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। बधा-जीर्ण  
शीर्ष।

विशेष—विभिन्न ग्रन्थों में से छोटे २ पाठों का संग्रह है। पत्र १०७ का अट्टारक पट्टारक उल्लेखनीय है।

३३३४. गुटका सं० १६३। पत्र सं० ६०। पृ० ८×५ इंच। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-संग्रह  
कपूर्ण। बधा-साधारण्य।

विशेष—भक्तानर स्तोत्र, तत्त्वार्थ सूत्र, पूजाएं एवं पञ्चमयल पाठ है।

३३३५. गुटका सं० १६४। पत्र सं० ८६। पृ० ६×४ इंच। से० काल १८७६।

|                      |   |         |      |
|----------------------|---|---------|------|
| १. धामवत             | × | संस्कृत | १-८  |
| २. मंत्र अ.वि संग्रह | × | "       | ९-१२ |

|  |   |         |       |
|--|---|---------|-------|
| ३. बसुन्तोकी गीता                        | × | "       | २३-२४ |
| ४. भागवत महिमा                           | × | हिन्दी  | २५-५१ |
| तीनों के नाम एवं देवाधिदेव स्तोत्र हैं । |   |         |       |
| ५. महाभारत विष्णु सहस्रनाम               | × | संस्कृत | ५२-८९ |

५५३६. गुटका सं० १५५ । पत्र सं० ९८ । ६×६ इंच । भाषा-संस्कृत । पूर्ण ।

|                         |              |         |       |
|-------------------------|--------------|---------|-------|
| १. योगेन्द्र पूजा       | ×            | संस्कृत | १-३   |
| २. पार्वतीय जयमाल       | ×            | "       | ४-१३  |
| ३. सिद्धपूजा            | ×            | "       | १-२   |
| ४. पार्वतीपाष्टक        | ×            | "       | ३-६   |
| ५. धोढशकारणपूजा         | भाचार्य केशव | "       | १-१४  |
| ६. सोनहकारण जयमाल       | ×            | भारभंडा | ३६-५० |
| ७. दगलक्षण जयमाल        | ×            | "       | ५१-६३ |
| ८. द्वादशव्रतपूजा जयमाल | ×            | संस्कृत | ६४-८० |
| ९. रामोत्तार पैंतीसी    | ×            | "       | ८१-८५ |

५५३७. गुटका सं० १५६ । पत्र सं० १७ । भा० ५×३ इंच । ने० काल १७७९ ज्येष्ठ सुदी २ ।

भाषा-हिन्दी । पत्र सं० ७९ ।

विशेष—पादक बंदावलि बरणि है ।

५५३८. गुटका सं० १५७ । पत्र सं० ३२ । भा० ६×५ इंच । ने० काल १८३२ ।

विशेष—मत्कामरस्तोत्र, अक्षर बावनी, ( घानतराय ) एवं पंचमंगल के पाठ हैं । पं० सवाईराम ने नेमिनाथ चैत्यालय मे सं० १८३२ में प्रति लिपि की ।

५५३९. गुटका सं० १५७ (क) पत्र सं० १४१ । भा० ६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विभिन्न कवियों के पद्यों का संग्रह है ।

५५४०. गुटका सं० १५८ । पत्र सं० ९८ । भा० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । ने० काल १८१० ।

वशा-शीर्ष ।

विशेष—सामान्य बर्चाओं पर पाठ हैं ।

५५४१. गुटका सं० १५९ । पत्र सं० ३५० । भा० ७×४ । ने० काल-श्री वशा-शीर्ष । विभिन्न कवियों के पद्यों का संग्रह है ।

५५५२. गुटका सं० १६० । पत्र सं० ६५ । भा० ७×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष-सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५५५३. गुटका सं० १६१ । पत्र सं० २६ । भा० ५×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल १७३७ पूर्ण । सामान्य पाठ है ।

५५५४. गुटका सं० १६२ । पत्र सं० ११ । भा० ६×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । अपूर्ण । पूजाओं का संग्रह है ।

५५५५. गुटका सं० १६३ । पत्र सं० २१ । भा० ५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।

विशेष-म कामर स्तोत्र एवं वर्धन पाठ शामिल हैं ।

५५५६. गुटका सं० १६४ । पत्र सं० १०० । भा० ४×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल १६३४ पूर्ण ।

विशेष-पद्मपुराण में से गीता महत्त्व लिया हुआ है । प्रारम्भ के ७ पत्रों में सम्बन्ध में भगवत गीता माला दी हुई है ।

५५५७. गुटका सं० १६५ । पत्र सं० ३० । भा० ६३×५३ इञ्च । विशेष-प्रायुर्वेद । अपूर्ण । बधा-जीर्ण ।

विशेष-प्रायुर्वेद के नुसले हैं ।

५५५८. गुटका सं० १६६ । पत्र सं० ६८ । भा० ४×२३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । दवा-सामान्य ।

|                        |           |        |       |
|------------------------|-----------|--------|-------|
| १. प्रायुर्वेदिक नुसले | ×         | हिन्दी | १-४०  |
| २. कर्मप्रकृतिविभाग    | बनारसीबाग | "      | ४१-६८ |

५५५९. गुटका सं० १६७ । पत्र सं० १४८-२४७ । भा० २×२ इञ्च । अपूर्ण ।

५५६०. गुटका सं० १६८ । पत्र सं० ४० । भा० ६×६ इञ्च । पूर्ण ।

५५६१. गुटका सं० १६९ । पत्र सं० २२ । भा० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल १७८०

भाषण सुची २ । पूर्ण । बधा-सामान्य ।

|              |   |        |      |
|--------------|---|--------|------|
| १. धर्मरत्नी | × | हिन्दी | १-१८ |
|--------------|---|--------|------|

अथ धर्म रत्नी लोचनते—

पहली बंधो जिएवर राह, तिहि बंधा दुल बालिद्र जाह ।

रोग कमेस न संबरे, पाप करम सब जाह पुतार्द ॥

निश्चै भुक्ति पब संबरे, ताको जिन धर्म होई सहार्द ॥ १ ॥

धर्म दुहेली जैन हो, छह बरसन के दू परधान ।  
 धारण जन मुण्डिजे दे वान, भव्यनीच बित सभलो ॥  
 पडा बित सुख होई निधान, धर्म दुहेलो जैन को ॥ २ ॥  
 दूजा बरौ सारद भाई, भूलो धारण धारणो हाइ ॥  
 कुमति कलस न उरजे, महा मुमति बरौ धारिकाइ ॥  
 जिएधर्म रासो बरौउ, तिहि पढत मन होइ उछाह ॥  
 धर्म दुहेली जैन को ॥ ४ ॥

धन्तिम—

ऊमो जीमण जावे सही, धामम बात जिएतुर कही ।  
 कर पाथा माहार तै, ये भट्टाईल मूलछुण जागि ॥  
 धन जती के पालहो, ते अनुकम पदुके निरवारिण ।  
 धर्म दुहेलो जैन का ॥१५२॥

सूळ देव दुवशास्त्र बखारिण नङ्ग बट भनायतन जाणि ।  
 घाठ दोष गङ्गा घादि दे घाठ मद सो तवे पबोसि ॥  
 ते निदबे सम्यक कले ऐसी विधि भासे जगदंश ।  
 धर्म दुहेली जैन का ॥१५३॥

इति श्री धर्मरासो समाप्ता ॥१॥ स० १७६० नावग छंदो २ सायानावर मध्ये ।  
 ५५५२ गुटका स० १७० । पत्र स० ५ । प्रा० ६×६ इ च । भाषा संस्कृत । विषय पूजा ।

विशेष—सिद्धपूजा है ।

५५५३ गुटका स० १७१ । पत्र स० ६ । प्रा० ६×७ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय पूजा ।

विशेष—सम्पेदशिलर पूजा है ।

५५५४ गुटका स० १७२ । पत्र स० १५ ६० । प्रा० ३×३ इ च । भाषा संस्कृत हिन्दी । ले०

कन स० १७६८ । सावण सुदी १० ।

विशेष—पूजा पद एवं विनतियो का सग्रह है ।

५५५५ गुटका स० ७३ । पत्र स० १०५ । प्रा० ६×४ इ च । धरुणा । वशा-जीम ।

विशेष—धामुर्वेद के मुमल मन्त्र, त-त्रादि सामग्री है । कोई उल्लेखनीय रचना नहीं है ।

४४४६. गुटका सं० १०१ । पत्र सं० ४-६३ । भा० ६४४३ इ'ब । भाषा-हिन्दी । विषय-शृङ्गार  
रत्न । ले० काल सं० १७४७ जेठ बुध १ ।

विशेष—इन्द्रजीत विरचित रसिकप्रिया का संग्रह है ।

४४४७. गुटका सं० १०४ । पत्र सं० २४ । भा० ६४४ इ'ब । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।

विशेष—पूजा संग्रह है ।

४४४८. गुटका सं० १०६ । पत्र सं० ८ । भा० ६४३ इ'ब । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । ले०  
काल सं० १८०२ । पूर्ण ।

विशेष—पद्यालोस्तोत्र ( ज्वालामालिनी ) है ।

४४४९. गुटका सं० १७७ । पत्र सं० २१ । भा० ५'४३ इ'ब । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—पद एष विनती संग्रह है ।

४४६०. गुटका सं० १७८ । पत्र सं० १७ । भा० ६४४ इ'ब । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—प्रारम्भ मे बादशाह अहागीर के तख्त पर बैठने का समय लिखा है । सं० १६८४ मंगसिर सुबो  
१२ । तारातन्त्रोत्त की जो यात्रा की गई थी वह उसीके प्रादेश के अनुसार धरतीकी लहर मगाने के लिए की गई थी ।

४४६१. गुटका सं० १७९ । पत्र सं० १४ । भा० ६४४ इ'ब । भाषा-हिन्दी । विषय-पद संग्रह ।  
अपूर्ण ।

विशेष—हिन्दी पद संग्रह है ।

४४६२. गुटका सं० १८० । पत्र सं० २१ । भा० ६४४ इ'ब । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—निर्दोषसप्तमीकथा ( बहारायमल्ल ), आदिपवरकथा के पाठ का मुख्यत संग्रह है ।

४४६३. गुटका सं० १८१ । पत्र सं० २१-४९ ।

|                          |          |        |                                 |
|--------------------------|----------|--------|---------------------------------|
| १. चन्द्रवरदाई की वार्ता | ×        | हिन्दी | २३-२६                           |
|                          |          |        | पद्य सं० ११९ । ले० काल सं० १७१६ |
| २. सुन्दरसीख             | ×        | हिन्दी | २८-३०                           |
| ३. कनकावलीखी             | बहायुवान | "      | २० काल सं० १७९५ ३०-३४           |
| ४. धन्यपाठ               | ×        | "      | ३४-४९                           |

विशेष—प्रथिकांश पत्र खाली हैं ।

४४६४. गुटका सं० १८२ । पत्र सं० १६ । भा० ६४६ इ'ब । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । अपूर्ण ।

विशेष—नित्य नियम पूजा है ।

५५६५. गुटका सं० १८३ । पत्र सं० २० । मा० १०×६ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण ।  
बसा—जै.ए. सी.ए. ।

विशेष—प्रथम ५ पत्रों पर पृच्छायें हैं । तथा पत्र १०-२० तक शकुनवाचन है । हिन्दी गद्य में है ।

५५६६. गुटका सं० १८४ । पत्र सं० २४ । मा० ६३×९ इंच । भाषा—हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—बृन्द विनोद सतसई के प्रथम पद्य से २५० पद्य तक है ।

५५६७. गुटका सं० १८५ । पत्र सं० ७-८८ । मा० १०×१३ इंच । भाषा—हिन्दी । ले० बाल सं०  
१८२३ बंगाल सुची नं ।

विशेष—बीकानेर में प्रतिलिपि की गई थी ।

|                      |              |        |  |
|----------------------|--------------|--------|--|
| १. समयसारनाटक        | बनारसीदास    | हिन्दी | ७-७६   |
| २. अनाथीसाध चौदालिया | विमल विनयगणि | "      | ७३ पद्य हैं ७६-७८  |
| ३. अभ्यन गीत         | ×            | हिन्दी | ७८-८३  |
|                      |              |        | दस अध्याय में अलग अलग गीत हैं । अन्त में चूलिका गीत है । |
| ४. स्फुट पद          | ×            | हिन्दी | ८४-८८  |

५५६८. गुटका सं० १८६ । पत्र सं० ५२ । मा० ९×५ इंच भाषा—हिन्दी । विश्व पद मयह ।

विशेष—१४२ पदों का संग्रह है मुख्यतः घातनराय के पद हैं ।

५५६९. गुटका सं० १८७ । पत्र सं० ७७ । पूर्ण ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं ।

|                                       |   |        |       |
|---------------------------------------|---|--------|-------|
| १. चौरासी गीत                         | × | हिन्दी | १-२   |
| २. कछवाहा वंश के राजाओं के नाम        | × | "      | २-४   |
| ३. देहली राजाओं की बंशावली            | × | "      | ५-१६  |
| ४. देहली के बादशाहों के परगनों के नाम | × | "      | १७-१८ |
| ५. सीमा सतरी                          | × | "      | १९-२० |
| ६. ३६ कारखानों के नाम                 | × | "      | २१    |
| ७. बीबीस ठाणा चर्चा                   | × | "      | २२-४५ |

५५७०. गुटका सं० १८८ । पत्र सं० ११-७३ । मा० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी संस्कृत ।

विशेष—गुटके में अक्ताभरस्तोत्र बलाणमन्दिरस्तोत्र हैं ।

१. पारसनाथस्तवन एवं अन्य स्तवन यतिसागर के शिष्य जगन्नाथ हिन्दी १० सं० १८००

आगे पत्र छुटे हुए हैं एवं विकृत लिपि में लिखे द्यते हैं ।

५५७१. गुटका सं० १८६। पत्र सं० ६-७८। आ० ५३×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-

इतिहास ।

विशेष—मकर वादगाह एवं बीरबल झाड़ि की वार्ताएं हैं। बीच बीच के एवं आदि अन्त भाग नहीं हैं।

५५७२. गुटका सं० १६०। पत्र सं० १७। आ० ४×३ इञ्च। भाषा-हिन्दी।

विशेष—रूपकन्द कृत पञ्चमंगल पाठ है।

५५७३. गुटका सं० १६१। पत्र सं० २८। आ० ८३×६ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—मुन्दरदास कृत सबैये एवं अन्य पद्य है। अपूर्ण है।

५५७५. गुटका सं० १६२। पत्र सं० ४५। आ० ८३×६ इंच। भाषा-प्राकृत संस्कृत। ले० काल

१८००।

१. कवित्त × हिन्दी १-४

२. भयहरस्तोत्र × प्राकृत ५-६

हिन्दी गद्य टीका सहित है।

३. शांतिहरस्तोत्र विद्यासिद्धि ” ७-६

४. नमिऊणस्तोत्र × ” ६-१२

५. अजितशांतिस्तवन नन्दिषेण ” १३-२२

६. भक्तामरस्तोत्र माननुं गाथावर्ष संस्कृत २३-३०

७. कल्याणमंदिरस्तोत्र × संस्कृत ३१-३६ हिन्दी गद्य टीकासहित है।

८. शांतिपाठ × प्राकृत ४०-४५ ”

५५७५. गुटका सं० १६३। पत्र सं० १७-३२। आ० ८३×५३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। ले० काल १८६७।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र एवं भक्तामरस्तोत्र है।

५५७६. गुटका सं० १६४। पत्र सं० १३। आ० ६×६ इंच। भाषा- हिन्दी। विषय-कामशासन।

अपूर्ण। दशा-रामायण। कोकस्तार है।

५५७७. गुटका सं० १६५। पत्र सं० ७। आ० ६×६ इंच। भाषा-संस्कृत।

विशेष—भट्टारक महीषन्द्रकृत त्रिलोकस्तोत्र है। ४६ पद्य हैं।



५५७८. गुटका सं० १६६। पत्र सं० २२। आ० ६×६ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष - नाटकसमयसार है।

५५७९. गुटका सं० १६७। पत्र सं० ३०। आ० ८×६ इंच। भाषा-हिन्दी। ले० कान १८६४ आशुष बुधो १४। बुधजन के पदों का संग्रह है।

५५८०. गुटका सं० १६८। पत्र सं० ३६। आ० ८ $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$  इंच। अपूर्ण। पूजा पाठ संग्रह है।

५५८१. गुटका सं० १६९। पत्र सं० २-५६। आ० ८×५ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी अपूर्ण।

दशा-जीर्ण।

विशेष-पूजा पाठ संग्रह है।

५५८२. गुटका सं० २००। पत्र सं० ३४। आ० ६ $\frac{1}{2}$ ×८ इंच। पूर्ण। दशा-सामान्य

- |  |           |                |        |
|--|-----------|----------------|--------|
| १. जिनदत चौई   | रत्नकवि   | प्राचीन हिन्दी |        |
| रचना संवत् १३५४ भाद्रवा सुदी ५। ले० कान सवन् १७५२। पालव निवासी महानन्द ने प्रतिलिपि की थी। |           |                |        |
| २. आदोशर रेखना   | सहस्रकृति | प्राचीन हिन्दी | अपूर्ण |

२० कान सं० १६६७। रचना श्याम-सालबोट। ले० कान-सं० १७८३ मगनिर सुदी ७। महानन्द ने प्रतिलिपि की थी। १२ रय मे ४५ वे तक ६१ तक के पद्य हैं।

- |                                   |                      |                      |          |
|-----------------------------------|----------------------|----------------------|----------|
| ३. पंचवधावो                       | ×                    | रात्रम्यानी गेरगढ की | ॥        |
| ४. कवित                           | बुंदावनदास           | हिन्दी               |          |
| ५. पद-रेमन रेमन जिनबिन कटुन विचार | भद्रमीसागर           | ॥                    | रागमन्हा |
| ६. तूही तू ही मेरे साहिव          | ॥                    | ॥                    | रागकाको  |
| ७. तूती तूही २ तूती बील           | ॥                    | ॥                    | ×        |
| ८. कवित                           | बहा गुलाल एव बुंदावन | ॥                    | पत्र १६  |

ले० बाम सं० १७५० फागण बुदो १४। फकीरचन्द जैसाल ने प्रतिलिपि की थी। कैलास का वासी गोत तैला।

- |                      |           |        |       |
|----------------------|-----------|--------|-------|
| ९. जेष्ठ प्रणिमा कथा | ×         | हिन्दी | पूर्ण |
| १०. कवित             | बहा गुलाम | ॥      |       |
| ११. "                | ×         | ॥      |       |

१२. समुद्र विजय सुत सांभरे रंग भीने हो

×

ले० काल १७७२ भीतीहटका देहरा दिल्ली में प्रतिलिपि की थी ।

१३. पञ्चकल्पारणुपूजा अष्टक

×

संस्कृत ले० काल सं० १७५२ ले० १० ।

१४. घट्टरस कथा

×

संस्कृत ले० काल सं० १७५२ ।

५५८३. गुटका सं० २०१ । पत्र सं० ३६ । प्रा० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । पूर्ण ।

विशेष—प्रादित्यवारकथा ( भाऊ ) बुधालचंद कृत शनिश्चरदेव कथा एव लालचन्द कृत राखुल परचीसी के पाठ घोर हैं ।

५५८४. गुटका सं० २०२ । पत्र सं० २८ । प्रा० ६×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १७५० ।

विशेष पूजा पाठ संग्रह के प्रतिरिक्त शिवचन्द मुनि कृत हिण्डोलना, ब्रह्मचन्द कृत दशारास पाठ भी है ।

५५८५. गुटका सं० २०३ । पत्र सं० २०-१६, १८५ से २०३ । प्रा० ६×५½ इंच । भाषा संस्कृत

हिन्दी । अपूर्ण । दशा-सामान्य । मुख्यतः निम्न पाठ है ।

|                    |                |         |         |
|--------------------|----------------|---------|---------|
| १. जिनसहस्रनाम     | प्राधाधर       | संस्कृत | २०-२६   |
| २. ऋषिमण्डलस्तवन   | ×              | "       | ३०-३६   |
| ३. जलयात्राविधि    | ब्रह्मजिनदास   | "       | १६२-१६६ |
| ४. गुरुओं की जयमाल | "              | हिन्दी  | १६६-१६७ |
| ५. रामोकार छन्द    | ब्रह्मलाल सागर | "       | १६७-२२० |

५५८६. गुटका सं० २०४ । पत्र सं० १४० । प्रा० ६×४ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७६१ चैत्र सुदी ६ । अपूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—उज्जैन में प्रतिलिपि हुई थी । मुख्यतः समयसार नाटक ( बनारसीदास ) पार्श्वनाथरत्नन ( ब्रह्मनाथ ) का संग्रह है ।

५५८७. गुटका सं० २०५ । नित्य नियम पूजा संग्रह । पत्र सं० ६७ । प्रा० ८½×५½ । पूर्ण एव शुद्ध । दशा-सामान्य ।

५५८८. गुटका सं० २०६ । पत्र सं० ४७ । प्रा० ८½×७ । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । दशा सामान्य । पत्र सं० २ नहीं है ।

|                 |           |        |              |
|-----------------|-----------|--------|--------------|
| १. सुंदर भृंगार | महाकविराय | हिन्दी | पत्र सं० ८३१ |
|-----------------|-----------|--------|--------------|

महाराजा पृथ्वीसिंहजी के शासनकाल में झांमेर निवासी मालीराम काला ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२. श्यामवतीसी

नन्ददास

११

बीकानेर निवासी महात्मा फकीरा ने प्रतिनिधि की । मालीराम कालाने सं० १८३२ में प्रतिनिधि कराई की ।

अन्तिम भाग—

दोहा—कृष्ण ध्यान चरासु भठ भवनहि सुत प्रबांन ।

कहत श्याम कलमल कल्लू रहत न रंच समान ॥ ३६ ॥

छन्द मत्स्यगन्द—

स्यो सन ।।दिक नारदस्मेद ब्रह्म सेस महेस जु पार न पायो ।

सो सुख ध्यास विरंचि बलानत निगम कुं सोचि भयम बतायो ॥

संभ भाभ नहि भाग जसोमति नन्दलला बृज धानि कहायो ।

सो कवि या कवि कहाव्य करी जु कल्यान जु स्यांम भले गुनगायो ॥३७॥

इति श्री नन्ददास कृत श्याम वतीसी संपूर्ण ॥ लिखतं महात्मा फकीरा बासी बीकानेर का । लिखावतु मालीराम काला संवत् १८३२ मिति भादवा सुदी १४ ।

५५८६. गुटका सं० २८७ । पत्र सं० २०० । भा० ७×५ इंच । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १६८६ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ, पद एवं भजनो का संग्रह है ।

५५६०. गुटका सं० २०८ । पत्र सं० १७ । भा० ६३ ६ ३ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—चाणक्य नीतिसार तथा माधुराम कृत जातकसार है ।

५५६१. गुटका सं० २०६ । पत्र सं० १६-२४ । भा० ६×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—सूरदास, परमानन्द आदि कवियों के पदों का संग्रह है । विशेष—कृष्ण भक्ति है ।

५५६२. गुटका सं० २१० । पत्र सं० २८ । भा० ६३×५३ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—चतुर्वेद गुणस्वान चर्चा है ।

५५६३. गुटका सं० २११ । पत्र सं० ४६-८७ । भा० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । ले० काल १८१० ।

विशेष—ब्रह्मराममल्ल कृत श्रीपालरास का संग्रह है ।

५५६४. गुटका सं० २१२ । पत्र सं० ६-१३० । भा० ६×६ इंच ।

विशेष—स्वीय, पूजा एवं पद संग्रह है ।

५५६५. गुटका सं० २१३। पत्र सं० ११७। प्रा० ६×५ इंच। भाषा—हिन्दी। के० काल १८५७।

विशेष—बीच के २० पत्र नहीं हैं। सम्बोधन—बासिका (दानतराय) बृजलाल की बारह भावना,

• "भय पक्षीसी (सगवतोदस) भानोबनापाठ, पद्मावतीस्तोत्र (समयमुन्दर) राजुल पक्षीसी (विनोदीलाल) आदित्य-  
वार कथा (भाऊ) भक्तमरुस्तोत्र आदि पाठों का संग्रह है।

५५६६. गुटका सं० २१४। पत्र सं० ८४। प्रा० ६×६ इंच।

विशेष—मुन्दर शृंगार का संग्रह है।

५५६७. गुटका सं० २१५। पत्र सं० १३२। प्रा० ६×६ इंच। भाषा—हिन्दी।

|   |                                   |        |                    |
|---|-----------------------------------|--------|--------------------|
| १. कनिष्ठ की विनती  | देवाग्रह                          | हिन्दी | ५-७                |
| २. सीताजी की विनती  | ×                                 | "      | ७-८                |
| ३. हंस की डाल तथा विनती डाल                               | ×                                 | "      | ९-१२               |
| ४. जिनवरजी की विनती                                       | देवापाण्डे                        | "      | १२                 |
| ५. होली कथा   | छीतरठोलिया                        | "      | २० सं० १६६० : ३-१८ |
| ६. विनतिया, ज्ञानपक्षीसी, बारह भावना<br>राजुल पक्षीसी आदि | ×                                 | "      | १९-४०              |
| ७. पाच परबी कथा   | ब्रह्मवैरगु (भ जयकीर्ति के मित्र) | "      | ७६ पृष्ठ हैं ४१-४० |
| ८. चतुर्विंशति विनती                                      | चन्द्रकवि                         | "      | ४५-६७              |
| ९. वधावा एवं विनती  | ×                                 | "      | ६७-६९              |
| १०. नव मंगल   | विनोदीलाल                         | "      | ६९-७७              |
| ११. कबका बतीसी  | ×                                 | "      | ७७-८१              |
| १२. बडा कवका  | गुलाबराय                          | "      | ८०-८१              |
| १३. विनतियां  | ×                                 | "      | ८१-१३२             |

५५६८. गुटका सं० २१६। पत्र सं० १६४। प्रा० ११×६ इंच। भाषा—हिन्दी संस्कृत।

विशेष—गुटके के उल्लेखनीय पाठ निम्न प्रकार हैं।

|                         |           |        |                            |
|-------------------------|-----------|--------|----------------------------|
| १. जिनवरव्रत जयमाला     | ब्रह्मलाल | हिन्दी | १-२                        |
|                         |           |        | भट्टारक पट्टावली दी गई है। |
| २. भाराधाना प्रतिबोधसार | सकसकीर्ति | हिन्दी | १३-१५                      |

|                             |              |         |         |
|-----------------------------|--------------|---------|---------|
| ३. मुक्तावलि गीत            | सकलकीर्ति    | हिन्दी  | १५      |
| ४. चौबीस गएधरस्तवन          | शुणकीर्ति    | "       | २०      |
| ५. अष्टाह्निकागीत           | म० शुभचन्द्र | "       | २१      |
| ६. मिच्छा दुष्कड            | ब्रह्मजिनदास | "       | २२      |
| ७. क्षेत्रपालपूजा           | मरिचभद्र     | संस्कृत | ३७-३८   |
| ८. जिनसखहनाम                | प्राणाधर     | "       | १०६-११६ |
| ९. भट्टारक विजयकीर्ति अष्टक | X            | "       | १५०     |

५५६६. गुटका सं० २१७ । पत्र सं० १७१ । मा० ८२×६३ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—पूजा पाठो का संग्रह है ।

५६००. गुटका सं० २१८ । पत्र सं० १६६ । मा० ६५×५३ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—१४ पूजाओं का संग्रह है ।

५६०१. गुटका सं० २१९ । पत्र सं० १८४ । मा० ६५×८ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—सङ्गमने कृत त्रिलोकदर्पणकथा है । जे० काल १७५३ ज्येष्ठ बुद्धी ७ बुधवार ।

५६०२. गुटका सं० २२० । पत्र सं० ८० । मा० ७३×५५ इंच । भाषा-अक्षरंग संस्कृत ।

|                     |            |         |       |
|---------------------|------------|---------|-------|
| १. त्रिशतजिगुचऊबीसी | महर्षिसिंह | अपभ्रंश | १-७०  |
| २. नाममाला          | धनञ्जय     | संस्कृत | ७०-८० |

विशेष—गुटके के अधिकारा पत्र जोर्रा तथा फटे हुए है एवं गुटका अपूर्ण है ।

५६०३. गुटका सं० २२१ । पत्र सं० ५१-१६० । मा० ८२×६ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—जोधराज गोदीका की सम्यक्त्वं कौमुदी ( अपूर्ण ), प्रीत्यकरचरित्र, एवं नयचक्र की हिन्दी

सय टीका अपूर्ण है ।

५६० . गुटका सं० २२२ । पत्र सं० ११६ । मा० ५५×६ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५६०५. गुटका सं० २२३ । पत्र सं० ५२ । मा० ७५×४ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—यन्त्र, पृच्छाएं एवं उनके उत्तर दिये हुए है ।

५६०६. गुटका सं० २२४ । पत्र सं० १४० । मा० ७५×३ इंच । भाषा-संस्कृत प्राकृत । वशा-जोर्णा शीर्षा एवं अपूर्ण ।

विशेष—पुरावली ( अपूर्ण ), भक्तिवाठ, स्वयम्भूस्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र एवं सामायिक पाठ आदि हैं ।

५६०८. गुटका सं० २०३ । पत्र सं० ११-१७७ । प्रा० १०×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—हिन्दी ।

१. बिहारी सतसई सटीक—टीकाकार हरिचरणदास । टीकाकाल सं० १८३४ । पत्र सं० ११ सं

१३१ । ले० काल सं० १८५२ माघ कृष्णा ७ रविवार ।

विशेष—पुस्तक में ७१४ पद्य हैं एवं ८ पद्य टीकाकार के परिचय के हैं ।

अन्तिम भाग— पुरुषोत्तमदास के दोहे हैं—

अद्यपि है सोभा सहज मुक्त न तऊ मुदेग ।

पौये डोर कुठोर के सरमें होत विशेष ॥७१॥

इस पर ७१५ संख्या है । वे सातवीं से अष्टिक जो दोहे है वे दिये गये हैं । टीका सभी की दी हुई है ।

केवल ७१४ की जो कि पुरुषोत्तमदास का है, टीका नहीं है । ७१४ दोहों के प्रागे निम्न प्रशस्ति दी है ।

दोहा—

मालशामी सरबु जह मिली गंगसो प्राय ।

अन्तराल में देख सो हरि कवि को सरसाय ॥१॥

लिखे दूहा भूषन बहुत अनवर के अनुसार ।

कहुं धीरे कहुं धीर हू निकलेंगे लङ्कार ॥२॥

सेवी चुगल कस्तोर के प्राननाथ जी नाव ।

सप्तसती तिनसो पट्टी बसि सिंगार बट टांव ॥३॥

जमुना तट शृङ्गार बट तुलसी विपिन सुदेस ।

सेवत संत महत जहि देखत हरत कलेस ॥४॥

पुरोहित धीनन्द के मुनि सडिल्य महान ।

हम हैं ताके गीत में मोहन मो जजमान ॥५॥

मोहन महा उदार तजि धीर जाचिये काहि ।

सम्पत्ति मुदामा को दई इन्द्र लही नही जाहि ॥६॥

गहि अंक सुमनु तात तै बिधि को बस लखाय ।

राधा नाम कहूँ मुनें प्रानन काल बढाय ॥७॥

संबव् अठारहसो बिते ता परि तीसरु चारि ।

जन्माठै पुरो कियो कृप्य चरन मन धारि ॥८॥

इति हरचरणदास कृता बिहारी रचित सप्तशती टीका हरिप्रकाशाख्या सम्पूर्णा । संवत् १८५२ माघ कृष्ण

७ रविवारसरे शुभमस्तु ।

२. कविबल्लभ—प्रमथकार हरिचरणदास । पत्र सं० १३१-१७७ । भाषा—हिन्दी पद्य ,

विषय— ३६७ तक पद्य हैं । भागे के पत्र नहीं हैं ।

प्रारम्भ— मोहन चरन पयो न मे, है तुलसी को वास ।  
ताहि मुमरि हरि भक्त सब, करत विघ्न को नास ॥१॥

कवि— भानन्द को कन्द वृषभान जाको मुखचन्द,  
सीला ही ते मोहन के मानस को चीर है ।  
दूजो तैसो रचिवै को चाहत विरचि निति,  
समि को बनावे भजो मन कोन मोरे है ।  
फेरत है सान ग्राममान पै चढाय फेरि,  
पाणि पै चढाय वे को वारिधि मे मोरे है ।  
राधिका के भ्रानन के जोट न बिलोके विधि,  
द्रक द्रक तोरै पुनि द्रक द्रक जोरे है ॥

अथ दीप लक्षणा दोहा—

रस भानन्द सकृप कौं दूवै ते हे दीप ।  
भ्रातमा कौ ज्यो अंधता और वधिरता रोप ॥३॥

अन्तिम भाग—

दोहा— साका सतरह सौ पुजी संवत् पैंतीस जन्म ।  
अठारह सो जेठ बुदि ने सति रवि दिन प्राप्त ॥२८४॥

इति श्री हरिचरणजी विरचित कविबल्लभो ग्रन्थ सम्पूर्णा । सं० १८५२ माघ कृष्ण १४ रविवारसरे ।

५६०६. गुटका सं० २२६ । पत्र सं० १०० । आ० ६३×६६ च । भाषा-हिन्दी । ले० काल १८२५

जेठ बुदा १५ । पूर्णा ।

|                 |           |        |       |
|-----------------|-----------|--------|-------|
| १. सप्तभंगीवाणी | भगवतीदास  | हिन्दी | १     |
| २. समयसारनाटक   | बनारसीदास | "      | १-१०० |

५६१८. गुटका सं० २२७ । पत्र सं० २६ । आ० ६४×५३ । भाषा-हिन्दी । विषय—मायुर्वेद । ले०

काल सं० १८४७ प्रयाग बुदी ६ ।

विशेष—रससागर नाम का धातुबैदिक ग्रंथ है। हिन्दी पद्य में है। बोधी लिखी बंकिम चूंगरसी की सो देखि लिखी—द्वि० प्रसाद बुदी ६ बार सोमवार सं० १८४७ लिखी सवाईराम गोषा ।

५६११. गुटका सं० २२८ । पत्र सं० ४९ से ६२ । भा० ६×७ इ० । भाषा—प्राकृत हिन्दी । वि० काल १६५४ । ग्रन्थ संग्रह की भाषा टीका है ।

५६१२. गुटका सं० २२९ । पत्र सं० १८ । भा० ६×७ इ० । भाषा हिन्दी ।

|                    |   |        |       |
|--------------------|---|--------|-------|
| १. पंचपास वेंतीसो  | × | हिन्दी | १-६   |
| २. भंकपनाचार्यपूजा | × | "      | ७-१२  |
| ३. विष्णुकुमारपूजा | × | "      | १३-३० |

५६१३. गुटका सं० २३० । पत्र सं० ४२ । भा० ७×६ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत ।

विशेष—नित्य नियम पूजा संग्रह है ।

५६१४. गुटका सं० २३१ । पत्र सं० २५-४७ । भा० ६×६ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—धामुबेद ।

विशेष—नयमसुखदास कृत वैद्यमनोत्सव है ।

५६१५. गुटका सं० २३२ । पत्र सं० १४-१५७ । भा० ७×५ इ० । भाषा—हिन्दी । प्रपूरी ।

विशेष—श्रेया भगवतीदास कृत अनित्य पञ्चीसी, बारह भावना, शत प्रहोत्तरी, जैनसतक, (सुभरदास) दान बावनो (दानतराय) चेतनकर्मचरित्र (भगवतीदास) कर्मखसीसी, ज्ञानपञ्चीसी, अक्कामरस्तोत्र, कल्याण मंदिर भाषा, दानवर्तन, परिग्रह वर्तन का संग्रह है ।

५६१६. गुटका सं० २३३ । पत्र संख्या ४२ । भा० १०×४३ भाषा—हिन्दी संस्कृत ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६१७. गुटका सं० २३४ । पत्र सं० २०३ । भा० १०×७३ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । पूजा पाठ, बनारसी विलास, चौबीस ठाणा चर्चा एवं समयसार नाटक है ।

५६१८. गुटका सं० २३५ । पत्र सं० १६८ । भा० १०×६३ इ० । भाषा—हिन्दी ।

|                                       |  |                |      |
|---------------------------------------|--|----------------|------|
| १. तरंगार्थसूत्र ( हिन्दी टीका सहित ) |  | हिन्दी संस्कृत | ३-६० |
|---------------------------------------|--|----------------|------|

६३ पत्र तक बीमक ने का रखा है ।

|                  |   |        |        |
|------------------|---|--------|--------|
| २ चौबीसठाणाचर्चा | × | हिन्दी | ६१-१६४ |
|------------------|---|--------|--------|

५६१९. गुटका सं० २३६ । पत्र सं० १४० । भा० ६×७ इ० । भाषा हिन्दी ।

विशेष—पूजा, स्तोत्र आदि सामान्य पाठों का संग्रह है ।



५६२०. गुटका सं० २३८। पत्र सं० २५०। भा० ६×६३ इ०। भाषा-हिन्दी।। से० काल सं०

१७४८ आसोज बुदी १३।

|                  |                       |        |                          |        |
|------------------|-----------------------|--------|--------------------------|--------|
| १. कुम्भलिया     | अगरदास एवं अन्य कविगण | हिन्दी | लिविकार विजयराज          | १-३३   |
| २. पद            | मुकुन्ददास            | "      | "                        | ३३-३४  |
|                  |                       |        | से० काल १७७५ भावण सुदी ५ |        |
| ३. बिलोकदर्पणकथा | सद्गसेन               | हिन्दी | "                        | ३४-२५० |

५६२१. गुटका सं० २३६। पत्र सं० १६८। भा० १३३×६ इ०। भाषा-हिन्दी।

|                      |   |        |   |        |
|----------------------|---|--------|---|--------|
| १. प्रामुख्यिक मुसजे | × | हिन्दी | " | १-१४   |
| २. कथाकोष            | × | "      | " | १४-८४  |
| ३. बिलोक दर्पण       | × | "      | " | ८४-१६८ |

५६२२. गुटका सं० २४०। पत्र सं० ४८। भा० १२२×८ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र।

विशेष—पहिले भक्तान्तर स्तोत्र टीका सहित तथा बाद में यन्त्र मंत्र सहित दिया हुआ है।

५६२३. गुटका सं० २४१। पत्र सं० ५-१७७। भा० ४×३ इ०। भाषा-हिन्दी।। से० काल १८१७

शैवाल बुदी अभावस्था।

विशेष—लिखितं महात्म्या शंभूराम। ज्ञानदीपक नामक ग्रन्थ का ग्रन्थ है।

५६२४. गुटका सं० २४२। पत्र सं० १-२००, ४०० ५६५, ६०५ स ७६४। भा० ४×३ इ०।

भाषा-हिन्दी गद्य।

विशेष—भावदीपक नामक ग्रन्थ है।

५६२५. गुटका सं० २४३। पत्र सं० २४०। भा० ६×४ इ०। भाषा-संस्कृत।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

५६२६. गुटका सं० २४४। पत्र सं० २२। भा० ६×४ इ०। भाषा-संस्कृत।

|                        |            |         |              |       |
|------------------------|------------|---------|--------------|-------|
| १. त्रैलोक्य मोहन कवच  | राममल      | संस्कृत | से० काल १७६१ | ४     |
| २. दशरामाष्टविस्तोत्र  | शंकराचार्य | "       | "            | ५-७   |
| ३. दशमलोकेशंभुस्तोत्र  | ×          | "       | "            | ७-८   |
| ४. हरिहरतामावलिस्तोत्र | ×          | "       | "            | ८-१०  |
| ५. द्वादशराशि फल       | ×          | "       | "            | १०-१२ |

|                   |   |    |              |       |
|-------------------|---|----|--------------|-------|
| १. बृहस्पति विचार | X | १० | ले० काल १७६२ | ६२-६४ |
| ७. धर्मस्तोत्र    | X | १० |              | १५-२२ |

५६३७. गुटका सं० २४५ । पत्र सं० २-४६ । पान० ७×५ इ० ।

विशेष—स्तोत्र संग्रह है ।

५६३८. गुटका सं० २४६ । पत्र सं० ११३ । पान० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—नन्दराम कृत मानमञ्जरी है । प्रति नवीन है ।

५६३९. गुटका सं० २४७ । पत्र सं० ६-७७ । पान० ७×४ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।

विशेष—पूजापाठ संग्रह है ।

५६३७. गुटका सं० २४८ । पत्र सं० १२ । पान० ८१/२×७ इ० । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—तीर्थङ्करो के पंचकन्याण्य आदि का वर्णन है ।

५६३९. गुटका सं० २४९ । पत्र सं० ८ । पान० ८३/२×७ इ० । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—पद संग्रह है ।

५६३२. गुटका सं० २५० । पत्र सं० १५ । पान० ८३/२×७ इ० । भाषा—संस्कृत ।

विशेष—बृहत्संयमस्तोत्र है ।

५६३३. गुटका सं० २५१ । पत्र सं० २० । पान० ७×५ इ० । भाषा—संस्कृत ।

विशेष—सयन्तभद्र कृत रत्नकरण्ड आवकाचार है ।

५६३४. गुटका सं० २५२ । पत्र सं० ३ । पान० ८३/२×६ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल १९३३ ।

विशेष—मकलकुण्डक स्तोत्र है ।

५६३५. गुटका सं० २५३ । पत्र सं० ८ । पान० ६×४ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल सं० १९३३ ।

विशेष—भक्तान्तर स्तोत्र है ।

५६३६. गुटका सं० २५४ । पत्र सं० १० । पान० ८×५ इ० । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—विम्ब निर्वण विधि है ।

५६३७. गुटका सं० २५५ । पत्र सं० १६ । पान० ७×६ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।

विशेष—बुधजन कृत इष्ट छत्तीसी पंचमंगल एवं पूजा आदि हैं ।

५६३८. गुटका सं० २५६ । पत्र सं० ६ । पान० ८३/२×७ इ० । भाषा—हिन्दी । ग्रन्थ ।

विशेष—वर्षीचन्द्र कृत रामचन्द्र चरित्र है ।

५६३६. गुटका सं० २५७। पत्र सं० ८। आ० ८×५ इ०। भाषा—हिन्दी। दशा—वीरशैली।

विशेष—सन्तराम कृत कवित्त संग्रह है।

५६४०. गुटका सं० २५८। पत्र सं० ९। आ० ५×४ इ०। भाषा—संस्कृत। अपूर्ण।

विशेष—ऋषिमण्डलस्तोत्र है।

५६४१. गुटका सं० २५९। पत्र सं० ९। आ० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल १८३०।

विशेष—हिन्दी पद एवं नापु कृत लहरी है।

५६४२. गुटका सं० २६०। पत्र सं० ४। आ० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी।

विशेष—नबल कृत दोहा स्तुति एवं दर्शन राठ है।

५६४३. गुटका सं० २६१। पत्र सं० ६। आ० ७×५ इ०। भाषा—हिन्दी। २० काल १८६१।

विशेष—सोनागिरि पञ्चीसी है।

५६४४. गुटका सं० २६२। पत्र सं० १०। आ० ६×४ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। अपूर्ण।

विशेष—ज्ञानोपदेश के पद्य हैं।

५६४५. गुटका सं० २६३। पत्र सं० १६। आ० ६<sup>१</sup>/<sub>४</sub> इ०। भाषा—संस्कृत।

विशेष—शंकराचार्य विरचित आराधसूदनस्तोत्र है।

५६४६. गुटका सं० २६४। पत्र सं० ९। आ० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी।

विशेष—सप्तलोक की गीता है।

५६४७. गुटका सं० २६५। पत्र सं० ४। आ० ५<sup>२</sup>/<sub>४</sub> इ०। भाषा—संस्कृत।

विशेष—बराहपुराण में से सूक्तस्तोत्र है।

५६४८. गुटका सं० २६६। पत्र सं० १०। आ० ६×४ इ०। भाषा संस्कृत। ले० काल १८८७। पीथ सुदी १।

विशेष—पत्र १-७ तक महागणपति कवच है।

५६४९. गुटका सं० २६७। पत्र सं० ७। आ० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी।

विशेष—भूधरदास कृत एकौभाव स्तोत्र भाषा है।

५६५०. गुटका सं० २६८। पत्र सं० ३५। आ० ५<sup>२</sup>/<sub>४</sub> इ०। भाषा—संस्कृत। ले० काल १८८३। पीथ सुदी २।

विशेष—महात्मा संतराम ने प्रतिस्तिपि की थी। पद्मावती पूजा, बसुण्ठी स्तोत्र एवं जिनसहस्रनाम (आधाधर) है।

५६५१. गुटका सं० २६६। पत्र सं० २७। मा० ७३×५३ इ०। भाषा-संस्कृत। पूर्ण।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है।

५६५२. गुटका सं० २७०। पत्र सं० ८। मा० ६३×४ इ०। भाषा-संस्कृत। से० काल सं० १६३२। पूर्ण।

विशेष—तीन चौबीसी व वर्सान पाठ हैं।

५६५३. गुटका सं० २७१। पत्र सं० ३१। मा० ६×५ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय-संग्रह। पूर्ण।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, श्रद्धामूलमन्त्र सहित, जिनपञ्जरस्तोत्र हैं।

५६५४. गुटका सं० २७२। पत्र सं० ६। मा० ६×४ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय-संग्रह। पूर्ण।

विशेष—अनन्तव्रतपूजा है।

५६५५. गुटका सं० २७३। पत्र सं० ४। मा० ७×५ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा।

विशेष—स्वरूपचन्द्र कृत भक्तारजी की पूजा है। भक्तार क्षेत्र संवत् १८८६ में भाद्रवा सुदी २ को प्रकट हुआ था। सवाई माधोपुर में प्रतिमिति हुई थी।

५६५६. गुटका सं० २७४। पत्र सं० १६। मा० १०×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। पूर्ण।

विशेष—इसमें रामचन्द्र कृत शिखर विलास है। पत्र ८ से घाने खाली पड़ा है।

५६५७. गुटका सं० २७५। पत्र सं० ६३। मा० ५३×५ इ०। पूर्ण।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है तीन चौबीसी नाम, जिनपञ्चीसी (नवल), वर्सानपाठ, नित्यपूजा भक्तामरस्तोत्र, पञ्चमङ्गल, कल्याणमन्दिर, नित्यपाठ, संशोधनशासिका (दानतराज)।

५६५८. गुटका सं० २७६। पत्र सं० १०। मा० ६३×६ इ०। भाषा-संस्कृत। से० काल सं० १८४३। अपूर्ण।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, बड़ा कनका (हिन्दी) श्राधि पाठ हैं।

५६५९. गुटका सं० २७७। पत्र सं० २-२३। मा० ५३×५ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पद।

अपूर्ण।

विशेष—हरसचन्द्र के पदों का संग्रह है।

५६६०. गुटका सं० २७८। पत्र सं० १-४०। मा० ६×४ इ०। अपूर्ण।

विशेष—बीच के कई पत्र नहीं हैं। गोपीन्द्रदेव कृत परमहंसप्रकाश है।

५६६१. गुटका सं० २७९। पत्र सं० ६-३५। मा० ६×४ इ०। अपूर्ण।

विशेष—नित्यपूजा संग्रह है।

५६६२. गुटका सं० २८० । पत्र सं० २-४१ । भा० ५२×४ इ० । भाषा-हिन्दी गद्य । अपूर्ण ।

विशेष—कथाओं का वर्णन है ।

५६६३. गुटका सं० २८१ । पत्र सं० ६२ । भा० ६×६ इ० । भाषा-× । पूर्ण ।

विशेष—भारहलड़ी, पूजासंग्रह, दशलक्षण, सोलहकारण, पञ्चमेरूपूजा, रत्नत्रयपूजा, तत्त्वार्थसूत्र आदि पाठों का संग्रह है ।

५६६४. गुटका सं० २८२ । पत्र सं० १२-८४ । भा० ६३×४३ इ० ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है—जैनपञ्चीसी, पद ( भूधरदास ) भक्ताभरभाषा, परमज्योतिभाषा विद्यापहारभाषा ( भक्तकीर्ति ), निर्वाणकाण्ड, एकीभाव, अङ्गनिमनेत्यालय अयमाल ( भववतीदास ), सहस्रनाम, आपुत्रबना, विनती ( भूधरदास ), नित्यपूजा ।

५६६५. गुटका सं० २८३ । पत्र सं० ३३ । भा० ७३×५ इ० । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-अध्यात्म । अपूर्ण ।

विशेष—३३ से आगे के पत्र खाली हैं । बनारसीदास कृत समयसार है ।

५६६६. गुटका सं० २८४ । पत्र सं० २-३५ । भा० ८×६३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । अपूर्ण ।

विशेष—जर्वागतक ( धानतराय ), ध्रुतबीध ( कालिदास ) ये दो रचनयें हैं ।

५६६७. गुटका सं० २८५ । पत्र सं० ३-४६ । भा० ८×६३ इ० । भाषा-संस्कृत प्राकृत । अपूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजा, स्वाध्यायपाठ, चौबीसठाणाजर्वा ये रचनयें हैं ।

५६६८. गुटका सं० २८६ । पत्र सं० ३१ । भा० ८×६ इ० । पूर्ण ।

विशेष—द्रव्यसंग्रह संस्कृत एवं हिन्दी टीका सहित ।

५६६९. गुटका सं० २८७ । पत्र सं० ३२ । भा० ७३×५३ इ० । भाषा-संस्कृत । पूर्ण ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र, नित्यपूजा है ।

५६७०. गुटका सं० २८८ । पत्र सं० २-४२ । भा० ६×४ इ० । विषय-संग्रह । अपूर्ण ।

विशेष—ग्रह फल आदि दिया हुआ है ।

५६७१. गुटका सं० २८९ । पत्र सं० २० । भा० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-शृङ्गार । पूर्ण ।

विशेष—दशकराय कृत स्नेहलीला में से उद्धृत गोपी संवाद दिया है ।

आरम्भ—

एक समय ब्रजवास की सुरति आई हरिराई ।

विराजत अपनी जानि के ऊधो लियो बुनाई ॥

भीकिरसन बचन ऐस कहे ऊषव तुम सुनि ले ।  
नन्द जसोवा धारि दे ब्रज जाइ सुख दे ॥ २ ॥  
ब्रज वासी बल्लभ सदा मेरे जीउनि प्रान ।  
तानै नीमष न बीसक' भीहे नन्दराय की प्रान ॥

अन्वित—

यह लीला ब्रजवास की गोपी किरसन सनेह ।  
जन मोहन जो बाब ही ते नर पाठ देह ॥ १२२ ॥  
जो मात्र सोष सुर गमन तुम बचन सहेत ।  
रसिक राघ पूरन कीया मन बाँझित फल देत ॥ १२३ ॥

नोट—घागे नाग लीला का पाठ भी दिया हुआ है ।

५६७२, गुटका सं० २६० । पत्र सं० ५२ । भा० ६×५६० । अमूर्त ।

विशेष—मुख्य विन्न पाठों का संग्रह है ।

|                         |               |             |            |
|-------------------------|---------------|-------------|------------|
| १. सोलहकारकथा           | रत्नपाल       | संस्कृत     | ५-१३       |
| २. दमलक्षणीकथा          | मुनि ललितकोटि | "           | १३-१७      |
| ३. रत्नप्रव्रतकथा       | "             | "           | १७-१९      |
| ४. पुषराजसिप्रतकथा      | "             | "           | १९-२३      |
| ५. अशयदसमीकथा           | "             | "           | २३-२६      |
| ६. धनन्तबतुर्वशीप्रतकथा | "             | "           | २७         |
| ७. वैद्यमनोत्सव         | नयनसुख        | हिन्दी पद्य | पूरण ३१-५२ |

विशेष—लासेरो ग्राम में दीवान श्री बुधसिंहजी के राज्य में मुमि मेघविमल ने प्रतिलिपि की की ।

गुटका काफी जीर्ण है । पत्र चूहों के लिये हुए है । सेलनकाल स्पष्ट नहीं है ।

५६७३, गुटका सं० २६१ । पत्र सं० ११७ । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—संग्रह ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है । संस्कृत में समयसार कन्दमुपूजा भी है ।

५६७४, गुटका सं० २६२ । पत्र सं० ४८ ।

|                   |   |         |                  |
|-------------------|---|---------|------------------|
| १. ज्योतिषशास्त्र | × | संस्कृत | १९-३६            |
| २. फुटकर दोहे     | × | हिन्दी  | ३१ दोहा है ३६-३७ |

३. पद्यकीय

गोवर्धन

संस्कृत

३७-४८

ले० काल सं० १७६३ संत हरिवंशदास ने लवाण में प्रतिलिपि की थी।

५६७५ गुटका सं० २६३। संग्रह कर्ता पाण्डे टोडरमनजी। पत्र सं० ७६। प्रा० ५×६ इञ्च। ले० काल सं० १७३३। झपूर्णा। दया-जीर्ण।

विशेष—भ्रायुर्वेद के मुखले एवं मंत्रों का संग्रह है।

५६७६ गुटका सं० २६४। पत्र सं० ७७। प्रा० ६×४ इञ्च। ले० काल १७८८ पीप सुदी ६। पूर्णा। सामान्य छुट। दया-जीर्ण।

विशेष—पं० गोबर्द्धन ने प्रतिलिपि की थी। पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है।

५६७७ गुटका सं० २६५। पत्र सं० ३१-६२। प्रा० ४×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल शक सं० १६२५ सावन सुदी ५।

विशेष—गुण्याहवाचन एवं भक्तामरस्तोत्र भाषा है।

५६७८ गुटका सं० २६६। पत्र सं० ३-४१। प्रा० ३×३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। झपूर्णा। दया-सामान्य।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र एवं तत्त्वार्थ सूत्र है।

५६७९ गुटका सं० २६७। पत्र सं० २५। प्रा० ६×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। झपूर्णा।

विशेष—भ्रायुर्वेद के मुखले हैं।

५६८० गुटका सं० २६८। पत्र सं० ६२। प्रा० ६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। पूर्णा।

विशेष—प्रारम्भ के ३१ पत्र खाली हैं। ३१ से आगे फिर पत्र १ से प्रारम्भ है। पत्र १० तक शृङ्गार के कवित्त हैं।

१. बारह मासा—पत्र १०-२१ तक। चूहर कवि का है। १२ पद हैं। वर्णन मुन्बर है। कविता में पत्र लिखकर बताया गया है। १७ पद्य हैं।

२. बारह मासा—गोविन्द का—पत्र २६-३१ तक।

५६८१ गुटका सं० २६९। पत्र सं० ४१। प्रा० ७×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-शृङ्गार।

विशेष—कोकसार है।

५६८२ गुटका सं० ३००। पत्र सं० १२। प्रा० ६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-मन्त्रशास्त्र।

विशेष—मन्त्रशास्त्र, भ्रायुर्वेद के मुखले। पत्र ७ से आगे खाली है।

५६८३. गुटका सं० ३०१ । पत्र सं० १८ । भा० ४३×३३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-संग्रह ।

से० काल १९१८ । पूर्ण ।

विशेष—लावणी मांगीतुंभी की- हर्षकीर्ति ने सं० १९०० ज्येष्ठ सुदी ५ को यात्रा को थी ।

५६८४. गुटका सं० ३०२ । पत्र सं० ४२ । भा० ४×३३ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-संग्रह । पूर्ण

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५६८५. गुटका सं० ३०३ । पत्र सं० १०५ । भा० ४३×४३ इ० । पूर्ण ।

विशेष—३० मन्त्र दिये हुये हैं । कई हिन्दी तथा उर्दू में लिखे हैं । आगे मन्त्र तथा मन्त्रविधि दी हुई है । उनका फल दिया हुआ है । जन्मत्रो सं० १८१७ की जगताराम के पीत्र माणकचन्द के पुत्र की धातुवेद के नुसले दिये हुये हैं ।

५६८६. गुटका सं० ३०३ क । पत्र सं० १५ । भा० ८×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—प्रारम्भ में विश्वामित्र विरचित रामकवच है । पत्र ३ से तुलसीदास कृत कवित्तबंध रामचरित्र है । इसमें छप्पय छन्दो का प्रयोग हुआ है । १-२० पद्य तक संख्या ठीक हैं । इसमें आगे ३५९ संख्या से प्रारम्भ कर ३८२ तक संख्या चली है । इसके आगे २ पत्र खाली हैं ।

५६८७. गुटका सं० ३०४ । पत्र सं० १६ । भा० ७३×५५ इ० । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—४ से ९ तक पत्र नहीं हैं । अजयराज, रामदास, बनारसीदास, जगताराम एवं विजयकीर्ति के पदों का संग्रह है ।

५६८८. गुटका सं० ३०५ । पत्र सं० १० । भा० ७×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । पूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजा है ।

५६८९. गुटका सं० ३०६ । पत्र सं० ६ । भा० ६३×४३ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा पाठ ।

पूर्ण । विशेष—घातिपाठ है ।

५६९०. गुटका सं० ३०७ । पत्र सं० १४ । भा० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—नन्ददास की नाममञ्जरी है ।

५६९१. गुटका सं० ३०८ । पत्र सं० १० । भा० ५×४३ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । पूर्ण

विशेष—मत्तारम्भमन्त्र सहित है ।



## क भण्डार [ शास्त्रभण्डार बाबा दुलीचन्द जयपुर ]

५६६२. गुटका सं० १ । पत्र सं० २७१ । आ० ६३×७ $\frac{१}{२}$  इञ्च । वै० सं० ८५७ । पूर्ण ।

१. भाषाभूषण धीरजसिंह राठौड हिन्दी १-८

२. अठोत्तरा सनाथ विधि × " ले० काल सं० १७५६ १३

श्रीरंगजेब के समय में पं० अश्वमेधुन्दर ने बह्यपुरी में प्रतिलिपि की थी ।

३. जैनशतक भूषरदास हिन्दी १५

४. समयसार नाटक बनारसीदास " ११७

बादशाह शाहजहा के शासन काल में सं० १७०८ में लाहौर में प्रतिलिपि हुई थी ।

५. बनारसी विलास × " १२६

विशेष—बादशाह शाहजहां के शासनकाल सं० १७११ में जिहानाबाद में प्रतिलिपि हुई थी ।

५६६३. गुटका सं० २ । पत्र सं० २२५ । आ० ८×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । अर्धपूर्ण । वै० सं० ८५८ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजा पाठ संग्रह है ।

५६६४. गुटका सं० ३ । पत्र सं० २४ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इ० । भाषा—हिन्दी । पूर्ण । वै० सं० ८५९ ।

१. शक्तिनाम × हिन्दी १

२. महाभयिक सामग्री × " १-८

३. प्रतिष्ठा में काम आने वाले ६६ यंत्रों के चित्र × " ६-२४

५६६५. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ६३ । आ० ५ $\frac{३}{४}$ ×८ $\frac{३}{४}$  इ० । पूर्ण । वै० सं० ८६० ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५६६६. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ५६ । आ० ६×४ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । अर्धपूर्ण । वै० सं० ८६१ ।

विशेष—सुभाषित पाठों का संग्रह है ।

५६६७. गुटका सं० ६ । पत्र सं० ३३४ । आ० ६×४ इ० । भाषा—संस्कृत । पूर्ण । अर्धपूर्ण । वै० सं० ८६२ ।

विशेष—विभिन्न स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७६८. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ८१६ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×५ इ० । ले० काल सं० १८०५ अष्टावध सुदी ५ पूर्ण । वै० सं० ८६३ ।

|                         |           |                                     |
|-------------------------|-----------|-------------------------------------|
| १. पूजा पाठ संग्रह      | ×         | संस्कृत हिन्दी                      |
| २. प्रतिष्ठा पाठ        | ×         | "                                   |
| ३. चौबीस तीर्थङ्कर पूजा | रामचन्द्र | हिन्दी ले० काल १८७५ भाद्रवा सुदी १० |

३६६६. गुटका सं० ८१ पत्र सं० ३१७। प्रा० ६×५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १७६२ आशोज सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० ८६४।

विशेष—पूजा एवं प्रतिष्ठा सम्बन्धी पाठों का संग्रह है। षष्ठ २०७ पत्र भक्तारस्तोत्र की पूजा विशेषतः उल्लेखनीय है।

३७००. गुटका सं० ६। पत्र सं० १४। प्रा० ४×४ इ०। भाषा-हिन्दी। पूर्ण। वे० सं० ८६२।

विशेष—जगतगम, गुमान्नीराम, हरीसिंह, जोधराज, लाल, रामचन्द्र आदि कवियों के भजन एवं पदों का संग्रह है।

## ख भण्डार [ शास्त्रभण्डार दि० जैन मन्दिर जोबनेर जयपुर ]

३७०१. गुटका सं० १। पत्र सं० २१२। प्रा० ६×४ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण।

|                          |        |         |                  |         |
|--------------------------|--------|---------|------------------|---------|
| १. होडाचक्र              | ×      | संस्कृत | अपूर्ण           | ८       |
| २. नाममाला               | धनञ्जय | "       | "                | ६-३२    |
| ३. श्रुतपूजा             | ×      | "       | "                | ३३-३६   |
| ४. पञ्चकल्याणकपूजा       | ×      | "       | ले० काल १७८३     | ३६-६५   |
| ५. मुक्ताबलीपूजा         | ×      | "       | "                | ६५-६६   |
| ६. द्वाविंशत्यतोद्यापन   | ×      | "       | "                | ६६-८६   |
| ७. त्रिकालचतुर्दशीपूजा   | ×      | "       | ले० काल सं० १७८३ | ८६-१०२  |
| ८. नवकार्त्तिसी          | ×      | "       | "                |         |
| ९. प्राक्षित्यकारकथा     | ×      | "       | "                |         |
| १०. शोधोपवास व्रतोद्यापन | ×      | "       | "                | १०३-२१२ |
| ११. नन्दीश्वरपूजा        | ×      | "       | "                |         |
| १२. पञ्चकल्याणकपाठ       | ×      | "       | "                |         |
| १३. पञ्चमेष्टपूजा        | ×      | "       | "                |         |

५७०२. गुटका सं० २। पत्र सं० १६६। आ० ६×६३ इ०। ले० काल ×। यथा-जीर्ण जीर्ण।

|                                 |           |                |         |
|---------------------------------|-----------|----------------|---------|
| १. तिलोकर्णव                    | ×         | संस्कृत हिन्दी | १-१०    |
| २. कल्पचक्रवर्त्तन              | ×         | हिन्दी         | ११-१४   |
| ३. विचारमाषा                    | ×         | प्राकृत        | १५-१६   |
| ४. बौद्धीसतीर्थङ्कर परिचय       | ×         | हिन्दी         | १६-३१   |
| ५. चण्डबीसठाणाचर्चा             | ×         | "              | ३२-७८   |
| ६. धाम्यव त्रिमञ्जी             | ×         | प्राकृत        | ७९-११२  |
| ७. भावसंग्रह ( भावत्रिमञ्जी )   | ×         | "              | ११३-१३३ |
| ८. त्रेपनक्रिया धावकाधार टिप्पण | ×         | संस्कृत        | १३४-१५४ |
| ९. तत्त्वार्थसूत्र              | उमास्वामि | "              | १५४-१६८ |

५७०३. गुटका सं० ३। पत्र सं० २१५। आ० ६×६ इ०। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—नित्यपूजापाठ तथा मन्त्रसंग्रह है। इसके अतिरिक्त निम्नपाठ संग्रह है।

|                              |               |               |         |
|------------------------------|---------------|---------------|---------|
| १. धनुष्जयतीर्थरास           | समयमुन्दर     | हिन्दी        | ३३      |
| २. बारहभावना                 | जितचन्द्रमूरि | " २० काल १६१६ | ३३-४०   |
| ३. दशवैकालिकगीत              | जैतसिंह       | "             | ४१-४९   |
| ४. शालिभद्र चौपद             | जितसिंहमूरि   | " २० काल १६०८ | ४९-९४   |
| ५. चतुर्विंशति जिनराजस्तुति  | "             | "             | ९४-१०६  |
| ६. बौद्धीसतीर्थङ्करजिनस्तुति | "             | "             | १०६-११७ |
| ७. महावीरस्तवन               | जितचन्द्र     | "             | ११७-११९ |
| ८. धादीश्वरस्तवन             | "             | "             | १२०     |
| ९. पादर्वजिनस्तवन            | "             | "             | १२०-१२१ |
| १०. बिनती, पाठ व स्तुति      | "             | "             | १२२-१४१ |

५७०४. गुटका सं० ४। पत्र सं० ७१। आ० ५३×३ इ०। भाग-हिन्दी। ले० काल सं० १९०४।

पूर्णा।

विशेष—नित्यपाठ व पूजाभोग का संग्रह है। लक्ष्मर में प्रतिलिपि हुई थी।

५७०५. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ४८ । प्रा० ५×४ इ० । ले० काल सं० १६०१ । पूर्ण ।

विशेष—कर्मप्रकृति बर्णन (हिन्दी), कल्याणमन्दिरस्तोत्र, सिद्धिप्रियस्तोत्र (संस्कृत) एवं विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है ।

५७०६ गुटका सं० ६ । पत्र सं० ८० । प्रा० ८ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{१}{२}$  इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—गुटके में निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है ।

|                  |          |        |         |       |
|------------------|----------|--------|---------|-------|
| १. चौरासीबोल     | कौरपाल   | हिन्दी | अपूर्णा | ४-१६  |
| २. आदिपुराणविनती | गङ्गादास | "      |         | १७-४३ |

विशेष—मूरत में नरसीपुरा ( नरसिंघपुरा ) जाति वाले वरिष्णक पर्वत के पुत्र गङ्गादास ने विनती रचना की थी ।

|                              |            |        |        |       |
|------------------------------|------------|--------|--------|-------|
| ३. पद-जिण जपि जिण जपि जिबड़ा | हर्षकीर्ति | हिन्दी |        | ४४-४५ |
| ४. अष्टकपूजा                 | विश्वभूषण  | "      | पूर्णा | ५१    |
| ५. समकितविणवोधर्म            | ब० जिनदास  | "      | "      | ५८    |

५७०७. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ५० । प्रा० ५ $\frac{२}{२}$ ×४ $\frac{२}{२}$  इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—४८ यन्त्रों का मन्त्र सहित संग्रह है । मन्त्र में कुछ प्रायुर्वेदिक नुसले भी दिये हैं ।

५७०८. गुटका सं० ८ । पत्र सं० × । प्रा० ५×२ $\frac{३}{२}$  इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—स्फुट कवित्त, उगवासो का ब्योरा, सुभाषित (हिन्दी व संस्कृत) स्वर्ग नरक आदि का वर्णन है ।

५७०९. गुटका सं० ९ । पत्र सं० ५१ । प्रा० ७×५ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-संग्रह । ले० काल सं० १७८३ । पूर्ण ।

विशेष—प्रायुर्वेद के नुसले, पाशा केवली, नाम माला आदि है ।

५७१०. गुटका सं० १० । पत्र सं० ८५ । प्रा० ६×३ $\frac{३}{२}$  इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद संग्रह । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—लिपि स्पष्ट नहीं है तथा असुद्ध भी है ।

५७११. गुटका सं० ११ । पत्र सं० १२-६२ । प्रा० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी पाठों का संग्रह है ।

५७१२. गुटका सं० १२। पत्र सं० २२३। भा० ६×४ इ०। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले० काल सं० १६०५ वैशाख बुदी १४। पूर्ण।

विशेष—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है।

५७१३. गुटका सं० १३। पत्र सं० १६३। भा० ५×५ इ०। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—सामान्य स्तोत्र एवं पूजा पाठों का संग्रह है।

५७१४. गुटका सं० १४। पत्र सं० ४२। भा० ८<sup>३</sup>×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण।

|                          |   |        |       |       |
|--------------------------|---|--------|-------|-------|
| १. त्रिलोकवर्णन          | × | हिन्दी | पूर्ण | १-१८  |
| २. खंडेला की वरचा        | × | "      | "     | १६-२६ |
| ३. चैसठ जलाका पुण्यवर्णन | × | "      | "     | २६-४२ |

५७१५. गुटका सं० १५। पत्र सं० ७६। भा० ६×५ इ०। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्रों का संग्रह है।

५७१६. गुटका सं० १६। पत्र सं० १२०। भा० ६×५ इ०। ले० काल सं० १७६३ वैशाख बुदी ३। पूर्ण।

|                           |           |        |  |         |
|---------------------------|-----------|--------|--|---------|
| १. समयसारनाटक             | बनारसीदास | हिन्दी |  | १०-१०६  |
| २. पार्श्वनाथजीकी निसारणी | ×         | "      |  | ११०-११६ |
| ३. शान्तिनाथस्तवन         | धृष्टसागर | "      |  | ११५-११६ |
| ४. गुरुदेवकीविनती         | ×         | "      |  | ११७-१२० |

५७१७. गुटका सं० १७। पत्र सं० ११५। भा० ६×५ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है।

५७१८. गुटका सं० १८। पत्र सं० १६४। भा० ५<sup>३</sup>×५ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों का संग्रह है।

५७१९. गुटका सं० १९। पत्र सं० २६३। भा० ५×३ इ०। ले० काल × पूर्ण।

विशेष—नित्य पाठ व मंत्र आदि का संग्रह है तथा प्रायुर्वेद के नुसले भी विषये कृपे है।

५७२०. गुटका सं० २०। पत्र सं० १३२। भा० ७×६ इ०। ले० काल सं० १८२२। अपूर्ण।

विशेष—नित्यपूजापाठ, पार्श्वनाथ स्तोत्र (पद्मप्रभदेव) जिनस्मृति (रूपचन्द्र, हिन्दी) पद (शुभ चन्द्र एवं कनकक्रीति) खड्गेनवानों की उत्पत्ति तथा सामुद्रिक शास्त्र आदि पाठों का संग्रह है।

५७२१. गुटका सं० २१ । पत्र सं० ५-६२ । पृ० ५३×५३ इ० । ले० काल × । प्रपूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—समयसार माया, सामायिकपाठ वृत्ति सहित, तत्त्वार्थसूत्र एवं भक्तामरस्तोत्र के पाठ हैं ।

५७२२. गुटका सं० २२ । पत्र सं० २१६ । पृ० ६×६ इ० । ले० काल सं० १८६७ जैन मुदी १५ ।

पूर्ण ।

विशेष—५० मन्त्रों एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७२३. गुटका सं० २३ । पत्र सं० ६७-२०६ । पृ० ६×५ इ० । ले० काल × । प्रपूर्ण ।

|   |          |        |        |         |
|---|----------|--------|--------|---------|
| १. पद- ( वह पानी मुलतान गये )                       | ×        | हिन्दी | -पूर्ण | ६७      |
| २. ( पद-कौन कस्तामेरोमे न जानी तजि के चले मिरनारि ) | ×        | "      | "      | "       |
| ३. पद-( प्रभू तेरे दरसन की बालहारी )                | ×        | "      | "      | "       |
| ४. आदित्यवारकथा                                     | ×        | "      | "      | ६६-१२५  |
| ५. पद-(चलो पिय पूजन श्री वीर जिनंब )                | ×        | "      | "      | १७८-१७९ |
| ६. जोगीरासो   | जिनदास   | "      | "      | १६०-१६२ |
| ७. पञ्चेन्द्रिय वेलि                                | ठक्कुरसो | "      | "      | १६२-१६५ |
| ८. जैनविद्वीवेश की पत्रिका                          | मजलसराय  | "      | "      | १६५-१६७ |

## ग भगडार [ शास्त्रभगडार दि० जैन मन्दिर चौधरियों का जयपुर ]

५७२४. गुटका सं० १ । पृ० ८×५ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०० ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

|   |                |         |
|---|----------------|---------|
| १. पद- सांवरिया पारसनाय मोहे तो चाकर राखो         | खुशालचन्द      | हिन्दी  |
| २. " मुझे है चाव दरसन का बिल्ला दोगे तो क्या होगा | ×              | "       |
| ३. दर्शनपाठ                                       | ×              | संस्कृत |
| ४. तीन चौबीसीनाम                                  | ×              | हिन्दी  |
| ५. कल्याणमन्दिरभाषा                               | बनारसीदास      | "       |
| ६. भक्तामरस्तोत्र                                 | मानतुङ्गाचार्य | संस्कृत |
| ७. लक्ष्मीस्तोत्र                                 | पद्मप्रभदेव    | "       |

|  |               |                |
|--|---------------|----------------|
| ८. देवपूजा                                     | ×             | हिन्दी संस्कृत |
| ९. श्रद्धात्रय शिव चैत्यालय जयमाल              | ×             | हिन्दी         |
| १०. सिद्ध पूजा                                 | ×             | संस्कृत        |
| ११. सोलहकारणपूजा                               | ×             | "              |
| १२. दशालक्षणपूजा                               | ×             | "              |
| १३. शान्तिपाठ                                  | ×             | "              |
| १४. पार्वतीनाथपूजा                             | ×             | "              |
| १५. पंचमेरूपूजा                                | भूधरदास       | हिन्दी         |
| १६. नन्दीश्वरपूजा                              | ×             | संस्कृत        |
| १७. तत्त्वार्थसूत्र                            | उमास्वामि     | भूपरी "        |
| १८. रत्नत्रयपूजा                               | ×             | "              |
| १९. श्रद्धात्रय चैत्यालय जयमाल                 | ×             | हिन्दी         |
| २०. निर्वाणकाण्ड भाषा                          | भैया भगवतीराम | "              |
| २१. शुद्धियों की विनती                         | ×             | "              |
| २२. जिनपञ्चोत्ती                               | नवलराम        | "              |
| २३. तत्त्वार्थसूत्र                            | उमास्वामि     | पूर्णा संस्कृत |
| २४. पञ्चकल्याणमंगल                             | रूपचन्द       | हिन्दी         |
| २५. पद- जिन देखा बिन रह्यो न जम्भ              | किशानमिह      | "              |
| २६. " कीजी हो भयन सो प्यार                     | धाननराय       | "              |
| २७. " प्रभू यह धरज सुगो मेरी                   | नन्द कवि      | "              |
| २८. " भयो सुख चरन देखत ही                      | "             | "              |
| २९. " प्रभू मेरी सुनो विनती                    | "             | "              |
| ३०. " परधो संसार की धारा जिनको वार नही धारा    | "             | "              |
| ३१. " कला दीदार प्रभू तेरा भया कर्मन सनुर हेरा | "             | "              |
| ३२. स्तुति                                     | बुधजन         | "              |
| ३३. नेमिनाथ के दश भव                           | ×             | "              |
| ३४. पद- जैन मत परखो रे भाई                     | ×             | "              |

५७२५. गुटका सं० २ । पत्र सं० ८३-४०३ । आ० ४३×३ इ० । अपूर्ण । वे० सं० १०१ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

|  | बनारसीदास      | हिन्दी          | अपूर्ण ८३-६३   |
|--|----------------|-----------------|----------------|
| १. कल्याणमन्त्र भाषा                               |                |                 |                |
| २. देवसिद्धयुक्ता                                  | ×              | "               | ६३-११५         |
| ३. सोलहकारणपूजा                                    | ×              | अपभ्रंश         | ११५-१२२        |
| ४. दशलक्षणपूजा                                     | ×              | अपभ्रंश संस्कृत | १२३-१२६        |
| ५. रत्नत्रयपूजा                                    | ×              | संस्कृत         | १२८-१६७        |
| ६. नन्दीश्वरपूजा                                   | ×              | प्राकृत         | १६८-१८१        |
| ७. धान्तिपाठ                                       | ×              | संस्कृत         | १८१-१८६        |
| ८. पञ्चमंगल  | रूपबन्ध        | हिन्दी          | १८७-२१२        |
| ९. तत्त्वार्थसूत्र                                 | उमास्वामि      | संस्कृत         | अपूर्ण २१३-२२४ |
| १०. सहस्रनामस्तोत्र                                | जिनमेनाचार्य   | "               | २२५-२६८        |
| ११. भक्तामरस्तोत्र मन्त्र एव हिन्दी<br>पर्याय सहित | मानतुङ्गाचार्य | संस्कृत हिन्दी  | २६९-४०३        |

५७२६. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ८६ । आ० १०×६ इ० । विषय-संग्रह । वे० काल सं० १८७६

श्रावण मुद्री १५ । पूर्ण । वे० सं० १०५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

|                     | दानतराय | हिन्दी |
|---------------------|---------|--------|
| १. चौबीसतीर्थकरपूजा |         |        |
| २. अष्टाङ्गिकापूजा  | "       | "      |
| ३. षोडशकारणपूजा     | "       | "      |
| ४. दशलक्षणपूजा      | "       | "      |
| ५. रत्नत्रयपूजा     | "       | "      |
| ६. पंचभेरुपूजा      | "       | "      |
| ७. सिद्धलक्षणपाठ    | "       | "      |
| ८. दर्शनराज         | ×       | "      |
| ९. पद-धरज हमारो मुन | ×       | "      |



१०. भक्तामरस्तोत्रोत्पत्तिकथा ×  
 ११ भक्तामरस्तोत्राद्धर्मत्रसहित ×

”

संस्कृत हिन्दी

नयमल कृत हिन्दी अर्थ सहित ।

५७२७. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ५५ । आ० ८×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १९५४ ।

पूर्णा । वै० सं० १०३ ।

विशेष—जैन कवियों के हिन्दी पद्यो का संग्रह है । इसमें दौलतराम, छानतराय, जोधराज, नवल, बुधजन  
 भैया भाग्यदास के नाम उल्लेखनीय हैं ।

## घ भण्डार [ दि० जैन नया मन्दिर वैराठियों का जयपुर ]

५७२८. गुटका सं० १ । पत्र सं० ३०० । आ० ६५×६ इ० । ले० काल × । पूर्णा । वै. सं० १४० ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है—

|                          |                |         |         |
|--------------------------|----------------|---------|---------|
| १. भक्तामरस्तोत्र        | मानवुं गाचार्य | संस्कृत | १-६     |
| २. घंटाकाररामन्द         | ×              | ”       | ६       |
| ३. बनारसीबिलास           | बनारसीदास      | हिन्दी  | ७-१६६   |
| ४. कविस                  | ”              | ”       | १६७     |
| ५. परमार्थदोहा           | रूपचन्द        | ”       | १६८-१७४ |
| ६. नामगानाभाग            | बनारसीदास      | ”       | १७५-१९० |
| ७. अत्रकाथनाममाला        | नन्दकवि        | ”       | १९०-१९७ |
| ८. जिनविगलछदकोश          | ×              | ”       | १९७-२०६ |
| ९. जिनसतमर्त             | ×              | ”       | २०७-२११ |
| १०. विगलभाषा             | रूपदीप         | ”       | २११-२२१ |
| ११. देवपूजा              | ×              | ”       | २२२-२६२ |
| १२. जैनवातक              | भूधरदाम        | ”       | २६२-२८३ |
| १३. भक्तामरभाषा ( पद्य ) | ×              | ”       | २८४-३०० |

विशेष—श्री टेकचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

५७२६. गुटका सं० २ । पत्र सं० २३३ । प्रा० ६×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १४१  
विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

|   |                  |         |         |
|---|------------------|---------|---------|
| १. परमात्मप्रकाश                        | योगीन्द्रदेव     | अपभ्रंश | १-१०६   |
| विशेष—संस्कृत गद्य में टीका भी हुई है । |                  |         |         |
| २. धर्माधर्मस्वरूप                      | ×                | हिन्दी  | ११०-१७० |
| ३. ढाढसीगाथा                            | ढाढसीमुनि        | प्राकृत | १७१-१६२ |
| ४. पंचलम्बिविचार                        | ×                | "       | १६३-१६४ |
| ५. अठावीस मूलगुणरास                     | ब्र० जिनदास      | हिन्दी  | १६४-१६६ |
| ६. दानकथा                               | "                | "       | १६७-२१५ |
| ७. बारह अनुप्रेक्षा                     | ×                | "       | २१५-२१७ |
| ८. हंसतिलकरास                           | ब्र० अजित        | हिन्दी  | २१७-२१७ |
| ९. चित्र प्रभाम                         | ×                | "       | २२०-२१७ |
| १०. आदिनाथकल्याणकथा                     | ब्रह्म ज्ञानसागर | "       | २२८-२३३ |

५७३०. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ६८ । प्रा० ५३×४ इ० । ले० काल सं० १६२१ पूर्ण । वै० सं० १४२

|                                     |                  |         |       |
|-------------------------------------|------------------|---------|-------|
| १. जिनमहलनाम                        | जिनमेनाचार्य     | संस्कृत | १-३५  |
| २. आदित्यवार कथा भाषा टीका सहित     | मू० क० सकलकीर्ति | हिन्दी  | ३६-६० |
| भाषाकार—सुरेन्द्रकीर्ति २० काल १७४१ |                  |         |       |
| ३. पञ्चपरमेष्ठिगुणस्तवन             | ×                | "       | ६१-६८ |

५७३१. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ७० । प्रा० ७३×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १७४३

|                    |               |         |       |
|--------------------|---------------|---------|-------|
| १. तत्त्वार्थसूत्र | उमास्वामि     | संस्कृत | ५-२५  |
| २. भक्तामरभाषा     | हेमराज        | हिन्दी  | २६-३२ |
| ३. जिनस्तवन        | बीलतराम       | "       | ३२-३३ |
| ४. छहवाला          | "             | "       | ३४-५६ |
| ५. भक्तामरस्तोत्र  | मानतुं गार्थ  | संस्कृत | ६०-६७ |
| ६. रविचारकथा       | देवेन्द्रभूषण | हिन्दी  | ६८-७० |

५७३२. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ३६ । आ० ८३×७७ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।  
वे० सं० १४४ ।

विषय—पूजाओं का संग्रह है ।

५७३३. गुटका सं० ६ । पत्र सं० ६-३६ । आ० ६३×५५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।  
वे० सं० १४७ ।

विषय—पूजाओं का संग्रह है ।

५७३४. गुटका सं० ७ । पत्र सं० २-३३ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय—पूजा ।  
ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४८ ।

५७३५. गुटका सं० ८ । पत्र सं० १७-४८ । आ० ६३×५५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।  
अपूर्ण । वे० सं० १४९ ।

विषय—बनारसीविलास तथा कुछ पदों का संग्रह है ।

५७३६. गुटका सं० ९ । पत्र सं० ३२ । आ० ६३×४३ इ० । ले० काल० सं० १८०१ कागुल ।  
पूर्ण । वे० सं० १४५ ।

विषय—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५७३७. गुटका सं० १० । पत्र सं० ४० । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा पाठ संग्रह ।  
ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५० ।

५७३८. गुटका सं० ११ । पत्र सं० २५ । आ० ७७×५५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा पाठ संग्रह ।  
ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५१ ।

५७३९. गुटका सं० १२ । पत्र सं० ३४-८९ । आ० ८२×६३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा  
पाठ संग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६ ।

विषय—स्फुट पाठों का संग्रह है ।

५७४०. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ४८ । आ० ८२×६३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा पाठ संग्रह ।  
ले० काल × अपूर्ण । वे० सं० १५२ ।

## ॐ भगडार [ शास्त्रभगडार दि० जैन मन्दिर संघीजी ]

५७४१. गुटका सं० १ । पत्र सं० १०७ । आ० ८३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × ।  
अपूर्ण ।

विषय—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७४२. गुटका सं० २। पत्र सं० ६६। भा० ६×५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १८७६ वेणाल सुक्ला १०। अपूर्ण।

विशेष—बि० रामसुक्लाजी हंगरसोजी के पुत्र के पठनार्थ पुजारी राधाकृष्ण ने मंडा नगर में प्रतिनिधि की थी। पूजाओं का संग्रह है।

५७४३. गुटका सं० ३। पत्र सं० ६६। भा० ६३×६ इ०। भाषा-प्राकृत संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—भक्तिपाठ, संबोधपञ्चासिका तथा सुभाषितावली आदि उल्लेखनीय पाठ है।

५७४४. गुटका सं० ४। पत्र सं० ४-६६। भा० ७×८ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १८६८। अपूर्ण।

विशेष—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है।

५७४५. गुटका सं० ५। पत्र सं० २८। भा० ८×६ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल सं० १९०७। पूर्ण।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है।

५७४६. गुटका सं० ६। पत्र सं० २७६। भा० ६×४ इ०। ले० काल सं० १९६... माह बुवी ११। अपूर्ण।

विशेष—भट्टारक चन्द्रकीर्ति के शिष्य आचार्य लालचन्द के पठनार्थ प्रतिनिधि की थी। पूजा स्तोत्रों के अतिरिक्त निम्न पाठ उल्लेखनीय है :—

|                   |           |         |
|-------------------|-----------|---------|
| १. आराधनासार      | देवसेन    | प्राकृत |
| २. संबोधपञ्चासिका | ×         | "       |
| ३. श्रुतस्कन्ध    | हेमचन्द्र | संस्कृत |

५७४७. गुटका सं० ७। पत्र सं० १०४। भा० ६३×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—मादित्यवार कथा के साथ अन्य कथाये भी है।

५७४८. गुटका सं० ८। पत्र सं० ३४। भा० ४३×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है।

५७४९. गुटका सं० ९। पत्र सं० ७८। भा० ७३×४ इ०। भाषा-हिन्दी। विशेष-पूजा एवं स्तोत्र संग्रह। ले० काल ×। पूर्ण। जीर्ण।

५७५०. गुटका सं० १० । पत्र सं० १० । आ० ७ $\frac{१}{२}$ ×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—भानन्दचन एवं सुन्दरदास के पदों का संग्रह है ।

५७५१. गुटका सं० ११ । पत्र सं० २० । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्ण ।

विशेष—भूधरदास आदि कवियों की स्तुतियों का संग्रह है ।

५७५२. गुटका सं० १२ । पत्र सं० ५० । आ० ६×४ $\frac{३}{४}$  इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

विशेष—पञ्चमङ्गल रूपचन्द कृत, वधावा एव विनतियों का संग्रह है ।

५७५३. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ६० । आ० ८×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

|              |           |        |
|--------------|-----------|--------|
| १. धर्मविलास | ज्ञानतराय | हिन्दी |
| २. जैनगतक    | भूधरदास   | ”      |

५७५४. गुटका सं० १४ । पत्र सं० १५ मे १३४ । आ० ६×६ $\frac{३}{४}$  इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × ।

पूर्ण ।

विशेष—चर्चा संग्रह है ।

५७५५. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ४० । आ० ७ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५७५६. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ११४ । आ० ६×४ $\frac{३}{४}$  इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × ।

अपूर्ण ।

विशेष—पूजापाठ एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७५७. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—गङ्गा, विहारी आदि कवियों के पदों का संग्रह है ।

५७५८. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ५७ । आ० ६×६ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।

जीरा ।

विशेष—नटचार्यमूक एवं पूजायें हैं ।

५७५९. गुटका सं० १९ । पत्र सं० १७३ । आ० ६×७ $\frac{३}{४}$  इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

|                    |              |        |        |
|--------------------|--------------|--------|--------|
| १. सिन्दूरप्रकरण   | बनारसीदास    | हिन्दी | अपूर्ण |
| २. जम्बुवामो चौबई  | ब्र० रायमल्ल | ”      | पूर्ण  |
| ३. धर्मचरीक्षाभाषा | ×            | ”      | अपूर्ण |
| ४. समाधिमरणभाषा    | ^            | ”      | ”      |

५७६०. गुटका सं० २० । पत्र सं० ५३ । भा० ८३×६३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्ण ।

विशेष—धुमानोरामजी ने प्रतिलिपि की थी ।

१. बसंतराजशाकुनावली × संस्कृत हिन्दी १० काल सं० १८२५  
सावन सुदी ५ ।

२. नाममाला धनञ्जय संस्कृत ×

५७६१. गुटका सं० २१ । पत्र सं० ८-७४ । भा० ८×५३ इ० । ले० काल सं० १८२० अषाढ सुदी

६ । अपूर्ण ।

१. डोलामारणी की वार्ता × हिन्दी

२. शनिश्चरकया × "

३. बन्दकुंवर की वार्ता × "

५७६२. गुटका सं० २२ । पत्र सं० १२७ । भा० ८×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है ।

५७६३. गुटका सं० २३ । पत्र सं० ३६ । भा० ६३×५३ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७६४. गुटका सं० २४ । पत्र सं० १२८ । भा० ७×५३ इ० । ले० काल सं० १७७४ । अपूर्ण । जीर्ण

१. यशोधरकथा लुशालबन्द काला हिन्दी १० काल १७७५

२. पद्म व स्तुति × " "

विशेष—लुशालबन्दजी ने स्वयं प्रतिलिपि की थी ।

५७६५. गुटका सं० २५ । पत्र सं० ७७ । भा० ६×४६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५७६६. गुटका सं० २६ । पत्र सं० ३६ । भा० ६३×५३ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण

१. पद्मावतीसहस्रनाम × संस्कृत

२. ब्रह्मसंग्रह × प्राकृत

५७६७. गुटका सं० २७ । पत्र सं० ३३८ । भा० ८×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१. पूजासंग्रह × संस्कृत

|                  |               |        |
|------------------|---------------|--------|
| २. प्रद्युम्नरास | ब्रह्मरायमल्ल | हिन्दी |
| ३. सुदर्शनरास    | "             | "      |
| ४. श्रीपालरास    | "             | "      |
| ५. धादित्यदारकथा | "             | "      |

५७६८. गुटका सं० २८ । पत्र सं० २७६ । मा० ७×४ $\frac{१}{२}$  इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—गुटके में निम्न पाठ उल्लेखनीय है ।

|                       |                   |         |
|-----------------------|-------------------|---------|
| १. नाममाला            | धनंजय             | संस्कृत |
| २. अकलंकष्टक          | अकलंकदेव          | "       |
| ३. त्रिलोकतिसकस्तोत्र | भट्टारक महीचन्द्र | "       |
| ४. जिनसहस्रनाम        | भाशाधर            | "       |
| ५. योगीरासो           | जिनदास            | हिन्दी  |

५७६९. गुटका सं० २९ । पत्र सं० २५० । मा० ७×४ $\frac{१}{२}$  इ० । ले० काल सं० १८७४ वैशाख कृष्ण

९ । पूर्ण ।

|                        |           |                                       |
|------------------------|-----------|---------------------------------------|
| १. नित्यनियमपूजासंग्रह | ×         | हिन्दी                                |
| २. चौबीस तीर्थंकर पूजा | रामचन्द्र | "                                     |
| ३. कर्मदहनपूजा         | टेकचन्द्र | "                                     |
| ४. पंचपरमेष्ठिपूजा     | ×         | " २० काल सं० १८६२<br>ले० का० सं० १८७९ |

स्वीजोराम भावसा ने प्रतिलिपि की थी ।

|                      |         |        |
|----------------------|---------|--------|
| ५. पंचकल्याणकपूजा    | ×       | हिन्दी |
| ६. द्रव्यसंग्रह भाषा | यानतराय | "      |

५७७०. गुटका सं० ३० । पत्र सं० १०० । मा० ६×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

|                     |           |         |
|---------------------|-----------|---------|
| १. पूजापाठसंग्रह    | ×         | संस्कृत |
| २. सिन्दूरप्रकरण    | बनारसोदास | हिन्दी  |
| ३. लघुचाणक्यराजनीति | चाणक्य    | "       |
| ४. वृद्ध " "        | "         | "       |

५. नाममाला

धनञ्जय

संस्कृत

५७०१. गुटका सं० ३१। पत्र सं० ६०-११०। भा० ७×५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले०

काल ×। अपूर्ण।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

५७०२. गुटका सं० ३२। पत्र सं० ६२। भा० ५½×५½ इ०। ले० काल ×। पूर्ण।

|                             |   |                |
|-----------------------------|---|----------------|
| १. कनकावलीसी                | × | हिन्दी         |
| २. पूजापाठ                  | × | संस्कृत हिन्दी |
| ३. विक्रमादित्य राजा की कथा | × | "              |
| ४. शनिदशरदेव की कथा         | × | "              |

५७०३. गुटका सं० ३३। पत्र सं० ८४। भा० ६×४½ इ०। ले० काल ×। पूर्ण।

|                     |        |        |
|---------------------|--------|--------|
| १. पाशाकेवली (धननद) | ×      | हिन्दी |
| २. ज्ञानोपदेशवलीसी  | हरिदास | "      |
| ३. स्वामवलीसी       | ×      | "      |
| ४. पाशाकेवली        | ×      | "      |

५७०४. गुटका सं० ३४। भा० ५×५ इ०। पत्र सं० ८४। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—पूजा व स्तोत्रो का संग्रह है।

५७०५. गुटका सं० ३५। पत्र सं० ६६। भा० ६×४½ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १६४०।

१६ पूर्ण।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है। बचूलाल छावटा ने प्रतिलिपि की थी।

५७०६. गुटका सं० ३६। पत्र सं० १५ से ७६। भा० ७×५ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—पूजाओं एवं पद संग्रह है।

५७०७. गुटका सं० ३७। पत्र सं० ७३। भा० ६×५ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण।

|                      |         |        |
|----------------------|---------|--------|
| १. जैनशतक            | भूधरदास | हिन्दी |
| २. संक्षिप्तपंचासिका | धानतराय | "      |
| ३. पद-संग्रह         | "       | "      |



५७७८. गुटका सं० ३८ । पत्र सं० २६० । प्रा० ५३×३३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पूजाओं तथा स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७७९. गुटका सं० ३९ । पत्र सं० ११८ । प्रा० ८३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० ३८६१ । पूर्ण ।

विशेष—नागू गोधा ने गाजी के थाना में प्रतिनिधि की थी ।

|                                  |             |         |                                |
|----------------------------------|-------------|---------|--------------------------------|
| १. गुलालपञ्चोसी                  | ब्रह्मगुलाल | हिन्दी  |                                |
| २. चंद्रहंसकथा                   | हर्षकवि     | ”       | २ का सं. १७०८ ले. का. सं. १८११ |
| ३. मोहविवेकयुद्ध                 | बनारसीदास   | ”       |                                |
| ४. भ्रातृसंबोधन                  | द्यानतराय   | ”       |                                |
| ५. पूजासंग्रह                    | ×           | ”       |                                |
| ६. भक्तामरस्तोत्र ( मंत्र सहित ) | ×           | संस्कृत | ले० का० सं० १८११               |
| ७. प्रादित्यवार कथा              | ×           | हिन्दी  | ले० का० सं० १८६१               |

५७८०. गुटका सं० ४० । पत्र सं० ८२ । प्रा० ५३×४८ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

|                      |   |        |  |
|----------------------|---|--------|--|
| १. नलशिल्वरणीन       | × | हिन्दी |  |
| २. आयुर्विज्ञानसूत्र | × | ”      |  |

५७८१. गुटका सं० ४१ । पत्र सं० २०० । प्रा० ७३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—ज्योतिष संबंधी साहित्य है ।

५७८२. गुटका सं० ४२ । पत्र सं० १५८ । प्रा० ८५×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा स्थापना । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—मनोहरलाल कृत ज्ञानचित्तमणि है ।

५७८३. गुटका सं० ४३ । पत्र सं० ८० । प्रा० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा क पत्र । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—शनिश्चर एवं प्रादित्यवार कथाये तथा पदो का संग्रह है ।

५७८४. गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ६० । प्रा० ६×५ इ० । ले० काल सं० १६५६ फायुन बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्रसंग्रह है ।

५७८५. गुटका सं० ४५ । पत्र सं० ६० । भा० ८×५३ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

|                |           |                |
|----------------|-----------|----------------|
| १. नित्यपूजा   | ×         | हिन्दी संस्कृत |
| २. पञ्चमङ्गल   | रामचन्द्र | "              |
| ३. जिनसहस्रनाम | भाषाधर    | संस्कृत        |

५७८६. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० २४५ । भा० ४×३ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × ।  
अपूर्ण ।

विशेष—पूजाघो तथा रतीघो का संग्रह है ।

५७८७. गुटका सं० ४७ । पत्र सं० १७१ । भा० ६×४ इ० । ले० काल सं० १८३१ भादवा बुदा  
७ । पूर्ण ।

|                 |                 |                    |
|-----------------|-----------------|--------------------|
| १. भर्तृहरिसानक | भर्तृहरि        | संस्कृत            |
| २. वैद्यजीवन    | लोनिम्मरात्र    | "                  |
| ३. सप्तमती      | गोवर्द्धनाचार्य | ले० काल सं० १७३१ " |

विशेष—जयपुर में शुभानसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

५७८८. गुटका सं० ४८ । पत्र सं० १७२ । भा० ६×४ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

|                 |           |        |
|-----------------|-----------|--------|
| १. बारहखंडी     | सूरत      | हिन्दी |
| २. कक्काबत्तीसी | ×         | "      |
| ३. बारहखंडी     | रामचन्द्र | "      |
| ४. पद व विनती   | ×         | "      |

विशेष—अधिकतर त्रिभुवनचन्द्र के पद है ।

५७८९. गुटका सं० ४९ । पत्र सं० २८ । भा० ८१×६ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं०  
१६५१ । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७९०. गुटका सं० ५० । पत्र सं० १५५ । भा० १०२×७ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं ।

|                        |          |         |
|------------------------|----------|---------|
| १. धातिनाथस्तोत्र      | मुनिभद्र | संस्कृत |
| २. स्वयम्भूस्तोत्रभाषा | दानतराय  | "       |

|                      |               |         |
|----------------------|---------------|---------|
| ३. एकीभावस्तोत्रभाषा | भूधरदास       | हिन्दी  |
| ४. सबीधपञ्चासिकाभाषा | खानतराय       | "       |
| ५. निर्वीणकाण्डगाथा  | ×             | प्राकृत |
| ६. जैनशतक            | भूधरदास       | हिन्दी  |
| ७. सिद्धपूजा         | झाशाधर        | संस्कृत |
| ८. लघुदामायिक भाषा   | महाचन्द्र     | "       |
| ९. सरस्वतीपूजा       | मुनिपद्मनन्दि | "       |

५७६१ गुटका सं० ३१ । पत्र सं० १४ । प्रा० ६३×४३ इ० । ले० काल सं० १९१७ चैत्र सुदी १०

अपूर्णा ।

विशेष—चिमनलाल भांवसा ने प्रतिलिपि की थी ।

|   |   |        |
|---|---|--------|
| १. विद्यानहारस्तोत्रभाषा                  | × | हिन्दी |
| २. रथयात्रावर्णन                          | × | "      |
| ३. सांवलजी के मन्दिर की रथयात्रा का वर्णन | × | "      |

विशेष—यह रथयात्रा सं० १९२० फागुण बुदी ८ मंगलवार को हुई थी ।

५७६२. गुटका सं० ५२ । पत्र सं० १३२ । प्रा० ६×५३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं०

१८१८ । अपूर्णा ।

विशेष—पूजा स्तोत्र व पद संग्रह है ।

५७६३. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० ७० । प्रा० १०×७ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

पूर्णा ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५७६४. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ५० । प्रा० ८×५३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १७४४

भासोज सुदी १० । अपूर्णा । जीर्ण शीर्षा ।

विशेष—नेमिनाथ रासो ( ब्रह्मरायमल्ल ) एवं अन्य सामान्य पाठ हैं ।

५७६५. गुटका सं० ५५ । पत्र सं० ७-१२८ । प्रा० ६×५३ इ० । ले० काल × । अपूर्णा ।

विशेष—गुटके में मुख्यतः समयसार नाटक ( बनारसीदास ) तथा धर्मपरीक्षा भाषा ( मनोहरलाल )

कृत है ।

५७६६. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० ७६ । भा० ६५४३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८१५ वैशाख बुदी ८ । पूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—कंवर बल्लराम के पठनार्थ पं० आशादास ने प्रतिस्विपि की की ।

|                 |        |         |
|-----------------|--------|---------|
| १. नीतिशास्त्र  | चारण्य | संस्कृत |
| २. नवरत्नकवित्त | X      | हिन्दी  |
| ३. कवित्त       | X      | "       |

५७६७. गुटका सं० ५७ । पत्र सं० २१७ । भा० ६३५३ इ० । ले० काल X । अपूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५७६८. गुटका सं० ५८ । पत्र सं० ११२ । भा० ६३५६ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल X ।

अपूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५७६९. गुटका सं० ५९ । पत्र सं० ६० । भा० ५५४ इ० । भाषा—प्राकृत-संस्कृत । ले० काल X ।

पूर्ण ।

विशेष—लघु प्रतिक्रमण तथा पूजाओं का संग्रह है ।

५८००. गुटका सं० ६० । पत्र सं० ३४४ । भा० ६५६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण ।

विशेष—ब्रह्मराजमल्ल कृत श्रीपालरास एवं हनुमतरास तथा अन्य पाठ भी है ।

५८०१. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० ७२ । भा० ६५४ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल X ।

पूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है । पुद्गों के दोनों ओर गणेशजी एवं हनुमानजी के कलापूर्ण चित्र हैं ।

५८०२. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १२१ । भा० ६५४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण ।

५८०३. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० ७-४६ । भा० ६३५६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल X ।

अपूर्ण ।

५८०४. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० २० । भा० ७५५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण ।

५८०५. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ६० । भा० ३३५३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण ।

विशेष—पदों का संग्रह है ।

५८०६. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ८ । भा० ८५४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण ।

विशेष—प्रवचनसार भाषा है ।

## च भण्डार [ दि० जैन मन्दिर छोटे दीवानजी जयपुर ]

५८०७. गुटका सं० १ । पत्र सं० १६२ । मा० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १७५२ पीष । पूर्ण । वे० सं० ७४७ ।

विशेष—प्रारम्भ में आयुर्वेद के नुसले हैं तथा फिर सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

५८०८. गुटका सं० २ । संग्रहकर्ता पं० फतेहचन्द नागौर । पत्र सं० २४८ । मा० ४×३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४८ ।

विशेष—ताराचन्द्रजी के पुत्र सेवाराजजी पाटणी के पठनार्थ लिखा गया था—

|                             |          |           |                  |
|-----------------------------|----------|-----------|------------------|
| १. नित्यनियम के दोहे        | ×        | हिन्दी    | ले० काल सं० १८५७ |
| २. पूजन व नित्य पाठ संग्रह  | ×        | ” संस्कृत | ले० काल सं० १८५६ |
| ३. शुभशील                   | ×        | हिन्दी    | १०८ शिष्याय है । |
| ४. ज्ञानपदवी                | मनोहरदास | ”         |                  |
| ५. चैत्यवन्दना              | ×        | संस्कृत   |                  |
| ६. चन्द्रपुत्र के १६ स्वप्न | ×        | हिन्दी    |                  |
| ७. आदित्यवार की कथा         | ×        | ”         |                  |
| ८. नवकार मंत्र चर्चा        | ×        | ”         |                  |
| ९. कर्म प्रकृति का व्यौरा   | ×        | ”         |                  |
| १०. लघुसामायिक              | ×        | ”         |                  |
| ११. पाशाकेवली               | ×        | ”         | ले० काल सं० १८६६ |
| १२. जैन ब्रह्मदेश की पत्री  | ×        | ”         | ”                |

५८०९. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ५७ । मा० ६×४३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४९ ।

५८१०. गुटका सं० ४ । पत्र सं० २०६ । मा० ५×५ इ० । भाषा हिन्दी । विषय-पद भजन । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५० ।

५८११. गुटका सं० ५ । पत्र सं० १२५ । मा० ६३×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५१ ।

विशेष-सामान्य पूजा पाठ संग्रह है :

५८१२. गुटका सं० ६ । पत्र सं० १५१ । भा० ६३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५२ ।

विशेष-प्रारम्भ में आयुर्वेदिक नुसले भी हैं ।

५८१३. गुटका सं० ७ । भा० ६×६३ इ० भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजापाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५३ ।

५८१४. गुटका सं० ८ । पत्र सं० १३७ । भा० ७३×५३ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७५४ ।

५८१५. गुटका सं० ९ । पत्र सं० ७२ । भा० ७३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण वे० सं० ७५५ ।

५८१६. गुटका सं० १० । पत्र सं० ३५७ । भा० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७५६ ।

५८१७. गुटका सं० ११ । पत्र सं० १२८ । भा० ६३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण वे० सं० ७५७ ।

५८१८. गुटका सं० १२ । पत्र सं० १४६-७१२ । भा० ६×४ इ० । भाषा संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७५८ ।

विशेष-निम्नपाठो का संग्रह है—

|                     |             |        |
|---------------------|-------------|--------|
| १. दर्शनपञ्चीसी     | ×           | हिन्दी |
| २. पञ्चास्तिकायभाषा | ×           | "      |
| ३. मोक्षपैडी        | बनारसीदास   | "      |
| ४. पञ्चमेरुजयमाल    | ×           | "      |
| ५. साधुबंदना        | बनारसीदास   | "      |
| ६. जलझडी            | भूषणदास     | "      |
| ७. धुरणमञ्जरी       | ×           | "      |
| ८. लघुपंगल          | रूपचन्द     | "      |
| ९. लक्ष्मीस्तोत्र   | पद्मप्रभदेव | "      |

|                                |                |         |              |
|--------------------------------|----------------|---------|--------------|
| १०. अकृत्रिमचैत्र्यालय जयमाल   | भैया भगवतीदास  | ”       | २० सं० १७४५  |
| ११. बार्डिस परिषद्             | भूषरदास        | ”       |              |
| १२. निर्वाणकण्ड भाषा           | भैया भगवतीदास  | ”       | २० सं० १७३९  |
| १३. बारह भावना                 | ”              | ”       |              |
| १४. एकीभावस्तोत्र              | भूषरदास        | ”       |              |
| १५. मंगल                       | विनोदीलाल      | ”       | २० सं० १७४४  |
| १६. पञ्चमंगल                   | रूपचन्द        | ”       |              |
| १७. भक्तामरस्तोत्र भाषा        | नथमल           | ”       |              |
| १८. स्वर्गसुख वर्णन            | ×              | ”       |              |
| १९. कुदेवस्वरूप वर्णन          | ×              | ”       |              |
| २०. समवसारनाटक भाषा            | बनारसीदास      | ”       | ले० सं० १८६१ |
| २१. दशलक्षस्यपूजा              | ×              | ”       |              |
| २२. एकीभावस्तोत्र              | बादिराज        | संस्कृत |              |
| २३. स्वयंभूस्तोत्र             | समंतभद्राचार्य | ”       |              |
| २४. जिनसहस्रनाम                | भासाधर         | ”       |              |
| २५. देवायमस्तोत्र              | समंतभद्राचार्य | ”       |              |
| २६. चतुर्विंशतितोषंशुकर स्तुति | चन्द           | हिन्दी  |              |
| २७. चौबीसठण्णा                 | नेमिबन्दाचार्य | प्राकृत |              |
| २८. कर्मप्रकृति भाषा           | ×              | हिन्दी  |              |

५८-१६. गुटका सं० १३। पत्र सं० ५३। मा० ६३×४३ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० कान ×  
पूरु। वे० सं० ७५९।

विशेष—पूजा पाठ के अतिरिक्त लघु चरण्य राजनीति भी है।

५८-२०. गुटका सं० १४। पत्र सं० ×। मा० १०×६३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण  
वे० सं० ७६०।

विशेष—पञ्चास्तिकाय भाषा टीका सहित है।

५८-२१. गुटका सं० १५। पत्र सं० ३-१८४। मा० ६३×५३ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विशेष—  
पूजा पाठ। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७६१।

५८२२. गुटका सं० १६ । पत्र सं० १२७ । आ० ६३×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६२ ।

५८२३. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ७-२३० । आ० ८३×७३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७६३ आसोज बुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० ७६३ ।

विशेष—यह गुटका बसवा निवासी पं० दीनलरामजी ने स्वयं के पढ़ने के लिए पारमराम ब्राह्मण ने लिखाया था ।

|   |           |        |             |
|---|-----------|--------|-------------|
| १. नाटकसमयसार                                 | बनारसीदास | हिन्दी | अपूर्ण १-८१ |
| २. बनारसीविलास                                | "         | "      | ८२-१०३      |
| ४. तीर्थङ्करी के ६२ स्थान                     | ×         | "      | १४४-२२०     |
| ४. संभेलवालों की उत्पत्ति धीर उनके ८४ गोत्र × | "         | "      | २२५-२३०     |

५८२४. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ५-३१५ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६४ ।

५८२५. गुटका सं० १९ । पत्र सं० ४७ । आ० ८३×६३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-स्तोत्र ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६५ ।

विशेष—सामान्य स्तोत्रों का संग्रह है ।

५८२६. गुटका सं० २० । पत्र सं० १६५ । आ० ८×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६६ ।

५८२७. गुटका सं० २१ । पत्र सं० १२८ । आ० ६×३ इ० । भाषा- × । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६७ ।

विशेष—गुटका पानी में डोया हुआ है ।

५८२८. गुटका सं० २२ । पत्र सं० ४६ । आ० ७×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद संग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६८ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।



## छ भण्डार [ दि० जैन मन्दिर गोधों का जयपुर ]

५८२६. गुटका सं० १। पत्र सं० १७०। भा० ५×५ इ०। भाषा हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×।  
 अपूर्ण। वे० सं० २३२।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है। नीच के अधिकांश पत्र गले एवं फटे हुए हैं। मुख्य पाठों का संग्रह

निम्न प्रकार है।

|                          |                |         |                                  |
|--------------------------|----------------|---------|----------------------------------|
| १. नेमीश्वररास           | मुनिरतनकीर्ति  | हिन्दी  | ६५ पद्य है।                      |
| २. नेमीश्वर की बेलि      | ठनकुरसी        | "       | ८८-६५                            |
| ३. पंचेन्द्रियबेलि       | "              | "       | ६६-१०१                           |
| ४. चौबीसतीर्थकररास       | ×              | "       | १०१-१०३                          |
| ५. विवेकजकडी             | जिनदास         | "       | १२६-१३३                          |
| ६. मेघकुमारगीत           | पुनो           | "       | १४८-१५१                          |
| ७. टडाशामीत              | कविबूषा        | "       | १५१-१५१                          |
| ८. वारहमनुप्रेक्षा       | भवभू           | "       | १५३-१६०                          |
|                          |                |         | ले० काल सं० १६६२ जेष्ठ शुक्ली १२ |
| ९. शान्तिनाथस्तोत्र      | गुरुभद्रस्वामी | संस्कृत | १६०-१६३                          |
| १०. नेमीश्वर का हिंडोलना | मुनिरतनकीर्ति  | हिन्दी  | १६३-१६४                          |

५८२७. गुटका सं० २। पत्र सं० २२। भा० ६×६ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय—संग्रह। ले०  
 काल ×। मूला। वे० सं० २३२।

|                 |         |        |                  |
|-----------------|---------|--------|------------------|
| १. नेमिनाथमगल   | लालचन्द | हिन्दी | २० काल १७४४ १-११ |
| २. राजुलपन्थीसी | ×       | "      | १२-२२            |

५८२९. गुटका सं० ३। पत्र सं० ४-५४। भा० ८×६ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण।

वे० सं० २३३।

|                          |             |        |       |
|--------------------------|-------------|--------|-------|
| १. प्रद्युम्नरास         | कृष्णराय    | हिन्दी | ४-२७  |
| २. आदिनाथविमती           | कान्दकीर्ति | "      | ३२    |
| ३. बीस तीर्थकरो की जयमाल | हर्षकीर्ति  | "      | ३२-२६ |

४. बन्दरपुत के तोहसखन × हिन्दी ५२-५४  
 इनके अतिरिक्त बिनती संग्रह है किन्तु पूर्णतः अशुद्ध है ।  
 १८३२. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ७४ । भा० ६३×६६० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × ।  
 अपूर्ण । वे० सं० २३४ ।

विशेष-प्रायुर्वेदिक नुसलों का संग्रह है ।

१८३३. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ३०-७५ । भा० ७×६६० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं०  
 १७६१ माह सुबी ५ । अपूर्ण । वे० सं० २३४ ।

|                        |           |        |        |       |
|------------------------|-----------|--------|--------|-------|
| १. आश्विनवार कथा       | भाऊ       | हिन्दी | अपूर्ण | ३०-३२ |
| २. सप्तव्यसनकवित       | ×         | "      |        |       |
| ३. पार्श्वनाथस्तुति    | बनारसीदास | "      |        |       |
| ४. अठारहवाते का बीडाला | लोहट      | "      |        |       |

१८३४. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २-४२ । भा० ६३×६६० । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । ले०  
 काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३४ ।

विशेष-सनिश्चरजी की कथा है ।

१८३५. गुटका सं० ७ । पत्र सं० १२-६५ । भा० १३×५३३६० । ले० काल × । अपूर्ण । वे०  
 सं० २३५ ।

|   |        |         |        |       |
|---|--------|---------|--------|-------|
| १. चाणक्यनीति   | चाणक्य | संस्कृत | अपूर्ण | १३    |
| २. साक्षी   | कबीर   | हिन्दी  |        | १३-१६ |
| ३. ऋद्धिमन्त्र  | ×      | संस्कृत |        | १९-२१ |
| ४. प्रतिष्ठाविधान की सामग्री एवं बतों का चित्र सहित बर्णन |        | हिन्दी  |        | ६५    |

१८३६. गुटका सं० ८ । पत्र सं० २-३९ । भा० ६×५३६० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २९७ ।

|                             |             |        |        |       |
|-----------------------------|-------------|--------|--------|-------|
| १. बलभद्रगीत                | ×           | हिन्दी | अपूर्ण | २-६   |
| २. जोगीरासा                 | पंडे जिनदास | "      |        | ७-११  |
| ३. कनकाबत्तीसी              | ×           | "      |        | ११-१४ |
| ४. "                        | ममराय       | "      |        | १४-१८ |
| ५. पद-साथी छोडो कुमति अकेली | बिनोदीनाल   | "      |        | १८    |
| ६. " रे भीव जगत सुरनों जान  | छीहल        | "      |        | २०    |

|  |                |         |       |
|--|----------------|---------|-------|
| ७. " अरत भून घरही में बरागी            | कनककीर्ति      | "       | २०-२१ |
| ८. छुहरी- हो सुन जीव धरज हमारी या      | समोचन्द        | "       | २१-२२ |
| ९. बरभारण छुहरी                        | ×              | "       | २२-२३ |
| १०. पद- अवि जीववदि ते चन्द्रस्वामी     | रूपचन्द        | "       | २७    |
| ११. " जीव सिव देसब ले पघारो            | सुन्दर         | "       | २८    |
| १२. " जीव मेरे जिएखर नाम अजो           | ×              | "       | २९    |
| १३. " योगी या तु भावणे इए देग          | ×              | "       | २९    |
| १४. " धरहंत गुण गापी भावो मन भावी      | भजनराज         | "       | २९-३१ |
| १५. " गिर देखत दासिद्र भाज्या          | ×              | "       | ३१    |
| १६. परमानन्दस्तीच                      | कुमुदचन्द्र    | संस्कृत | ३२-३५ |
| १७. पद- घट पटादि नैननि गोबर जो         | मनराम          | हिन्दी  | ३६    |
| नाटिक पुद्गल कैरो                      |                |         |       |
| १८. " जिय तैं नरभव योही खोयो           | मनराम          | "       | ३२    |
| १९. " अक्षियां आज पवित्र भई            | "              | "       |       |
| २०. " वनो बन्यो है आजि हेमी नेमीपुर    |                |         |       |
| जिन देखीयो                             | कगताराम        |         | ५०    |
| २१. " नमो नमो जै श्री धरिहंत           | "              | "       | ५१    |
| २२. " माधुरी जिनबानी सुन हे माधुरी     | "              | "       | ५२-५४ |
| २३. सिव देवी माता को आठवो              | मुनि शुभचन्द्र | "       | ५४-५६ |
| २४. पद-                                | "              | "       | ५६-५८ |
| २५. "                                  | "              | "       | ५८-५९ |
| २६. " हलदी चहौडी तेल चहोखी खपन         |                |         |       |
| कुमारि का                              | "              | "       | ५९-५१ |
| २७. " ये जदि साहिए ल्यामी नीसी पोड़ीया | "              | "       | ५१-५३ |
| २८. अन्ध पद                            | "              | "       | ५३-५९ |

५८३८. गुटका सं० १०। पत्र सं० ४। भा० ८३×६ इ०। विषय-संग्रह। ले० काल ×। वे० सं०

२६६।

|                   |         |        |     |
|-------------------|---------|--------|-----|
| १. जिनपक्षीसी     | नवल     | हिन्दी | १-२ |
| २. संबोधपत्रासिका | धानतराय | "      | २-४ |

५८३९. गुटका सं० ११। पत्र सं० १०-६०। भा० ५३×४३ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×।

वे० सं० ३००।

विषय—पूजाओं का संग्रह है।

५८४० गुटका सं० ११। पत्र सं० ११५। भा० ६३×६ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा स्तोत्र।

ले० काल ×। वे० सं० ३०१।

५८४१. गुटका सं० १२। पत्र सं० १३०। भा० ६३×६ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा स्तोत्र।

ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३०२।

५८४२. गुटका सं० १३। पत्र सं० ६-१७। भा० ६३×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा स्तोत्र।

ले० सं० ×। अपूर्ण। वे० सं० ३०३।

५८४३. गुटका सं० १४। पत्र सं० २०१। भा० ११×५ इ०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३०४

विषय—पूजा स्तोत्र संग्रह है।

५८४४. गुटका सं० १५। पत्र सं० ७७। भा० १०×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। ले० काल

सं० १६०३ सावन सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ३०५।

विषय—इक्ष्वाकु मह सनीन पुस्तक को हिन्दी भाषा में लिखा गया है। मूल पुस्तक फारसी भाषा में है।

छोटी २ कहानियां हैं।

५८४५. गुटका सं० १६। पत्र सं० १२६। भा० ६×४ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३०६

विषय—रामचन्द्र ( कवि बालक ) कृत सीता चरित्र है।

५८४६. गुटका सं० १७। पत्र सं० ३-२६। भा० ४×२ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×।

अपूर्ण। वे० सं० ४०७।

|                              |         |        |
|------------------------------|---------|--------|
| १. देवपूजा                   | संस्कृत | अपूर्ण |
| २. धूलभद्रजी का रासो         | हिन्दी  | १०-२१  |
| ३. नेमिनाथ राजुल का बारहमासा | "       | २१-६६  |

५८४७. गुटका सं० १८ । पत्र सं० १६० । प्रा० ८३×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३०८  
विशेष—पत्र सं० १ ले ३८ तक सामान्य गठों का संग्रह है ।

|                         |              |        |                           |         |
|-------------------------|--------------|--------|---------------------------|---------|
| १. सुन्दर शृङ्गार       | कविराजसुन्दर | हिन्दी | ३७४ पद्य है               | ३६-८०   |
| २. विहारीसतसई टीका सहित | ×            | "      | अपूर्ण                    | ८१-८५   |
|                         |              |        | ७४ पद्यों की ही टीका है । |         |
| ३. बख्त विलास           | ×            | "      |                           | ६६-१०३  |
| ४. बृहत्खंडाकर्णिकल्प   | कवि भोगीलाल  | "      |                           | १०४-६६० |

विशेष—प्रारम्भ के ८ पत्र नहीं हैं प्रागे के पत्र भी नहीं हैं ।

इति श्री कछवाहा कुलभवननरुकासी राजराजा बक्ष्तावरसिंह धानन्द कृते कवि भोगीलाल विरचिते बख्त विलासे विभाव वर्णनी नाम तृतीय विलासः ।

पत्र ८-५६ नायक नायिका वर्णन ।

इति श्री कछवाहा कुलभूषननरुकासी राजराजा वस्तावर सिंह धानन्द कृते भोगीलाल कवि विरचिते बख्तविलासनायकवर्णन नामाष्टको विलासः ।

५८४८. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ५४ । प्रा० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।  
वे० सं० ३०६ ।

विशेष—खुशालचन्द कृत धन्यकुमार चरित है पत्र जीर्ण है किन्तु नवीन है ।

५८४९. गुटका सं० २० । पत्र सं० २१ । प्रा० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।  
वे० सं० ३१० ।

|                                    |        |        |  |      |
|------------------------------------|--------|--------|--|------|
| १. ऋषिमंडलपूजा                     | सदामुल | हिन्दी |  | १-१० |
| २. अकम्पनाचार्यादि मुनियों की पूजा | ×      | "      |  | १६   |
| ३. प्रतिष्ठानामावलि                | ×      | "      |  | २१   |

५८५०. गुटका सं० २० (क) । पत्र सं० १०२ । प्रा० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।  
पूर्ण । वे० सं० ३११ ।

५८५१. गुटका सं० २१ । पत्र सं० २८ । प्रा० ८३×६ इ० । ले० काल सं० १६३७ भाषण बुवी  
६ । पूर्ण । वे० सं० ३१३ ।

विशेष—मढलाचार्य केशवसेन इण्डियेन विरचित रोहिणी व्रत पूजा है ।

४८४२. गुटका सं० २२ । पत्र सं० १६ । प्रा० ११×३ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१४ ।

|                               |   |        |       |
|-------------------------------|---|--------|-------|
| वज्रवन्तचक्रवर्ति का वारहमासा | × | हिन्दी | ६     |
| २. सीताजी का वारहमासा         | × | "      | ६-१२  |
| ३. मुनिराज का वारहमासा        | × | "      | १३-१६ |

४८४३. गुटका सं० २३ । पत्र सं० २३ । प्रा० ८३×६ इ० । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१५ ।

विशेष—गुटके में अष्टात्मिकावतकथा दी हुई है ।

४८४४. गुटका सं० २४ । पत्र सं० १५ । प्रा० ८३×६ इ० । भाषा-हिन्दी विषय-पूजा । ले० काल सं० १६=३ पीथ बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ३१६ ।

विशेष—गुटके में ऋषिमंडलपूजा, धनन्तव्रतपूजा, चौबीसतीर्थकर पूजादि पाठों का संग्रह है ।

४८४५. गुटका सं० २५ । पत्र सं० ३५ । प्रा० ८×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१७ ।

विशेष—धनन्तव्रतपूजा तथा ध्रुतज्ञानपूजा है ।

४८४६. गुटका सं० २६ । पत्र सं० ५६ । प्रा० ७×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । ले० काल सं० १६२१ माघ बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ३१८ ।

विशेष—रामचन्द्र कृत चौबीस तीर्थकर पूजा है ।

४८४७. गुटका सं० २७ । पत्र सं० ५३ । प्रा० ६×५ इ० । ले० काल सं० १६५४ । पूर्ण । वे० सं० ३१९ ।

विशेष—गुटके में निम्न रचनायें उल्लेखनीय हैं ।

|                     |           |         |      |
|---------------------|-----------|---------|------|
| १. धर्मबाह          | ×         | हिन्दी  | २    |
| २. बंदनाजसठी        | विहारीबास | "       | ३-४  |
| ३. सम्प्रेयशिलरपूजा | गंगाबास   | संस्कृत | ५-२० |

४८४८ गुटका सं० २८ । पत्र सं० १६ । प्रा० ८×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२० ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र उपासनायामि कृत है ।

४८४९. गुटका सं० २९ । पत्र सं० १७९ । प्रा० ९×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२१ ।

विशेष—विहारीबास कृत सतसह है । दोहा सं० ७०७ है । हिन्दी गद्य पद्य दोनों में ही धर्म है टीका-काल सं० १७८५ । टीकाकार कवि कृष्णदास हैं । भाषा अन्तभाग निम्न है:—

प्रारम्भः—

अथ विहारी सतसई टीका कवित्त बंध लिख्यतेः—

मेरी भव वाधा हरी, राधा नागरी सोइ ।

जातन की भाई परै, स्याम हरित दुति होइ ॥

टीका—यह संगलाचरन है तहां श्री राधा जू की स्तुति ग्रंथ कर्ता कवि करतु है । तहां राधा भीर बटे याते जा तन की भाई परै स्याम हरित दुति होइ या पद ते श्री वृषभान सुता की प्रतीति हुई —

कवित्त—

जाकीप्रभा भवलोक्त ही तिहु लोक की मुन्दरता गहि वारि ।

कृष्ण कहे सरसो रहे नैननि की नामु यहा मुद मंगल कारो ॥

जातन की भलकै भलकै हरित दुति स्याम की होत निहारी ।

श्री वृषभान कुंमारि कृपा के सुराधा हरी भव वाधा हमारी ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

माधुर विप्रु, ककोर कुल सखी कृष्ण कवि नाउ ।

सेवकु ही सब कविनु को बसतु मधुपुरी गांउ ॥ २४ ॥

राजा मल्ल कवि कृष्ण पर दरघो कृपा के दर ।

भाति भाति विपदा हरी दीनी दरवि अवार ॥ २५ ॥

एक दिना कवि सौ नृपति कही कही को जात ।

दोहा दोहा प्रति करी कवित बुद्धि भवदात ॥ २६ ॥

पहले हूँ मेरे यह हिय मैं हूँ तो विचार ।

करौ नाइका भेद को ग्रंथ बुद्धि अनुसार ॥ २७ ॥

जे कोने पूरव कवितु सरस ग्रंथ सुखदाइ ।

तिनहि छाडि मेरे कवित को पाडि है मनुनाइ ॥ २८ ॥

जागिय है अपने हिये किमो न ग्रंथ प्रकाम ।

नृप को आइस पाइके हिय मे अये हुलास ॥ २९ ॥

करे सात सौ दोहरा सु कवि विहारीदास ।

सब कोऊ तिनकी पढे गुने गुने सविनाइ ॥ ३० ॥

बडौ भरोसों जानि नै गह्यौ भासरो आइ ।

यातैं इन दोहानु संग दीनै कवित लगाइ ॥ ३१ ॥

उक्ति बुक्ति दोहानु की झरर जोरि नवीन ।  
करै सातसी कवित में सीसै सकल प्रवीन ॥ ३२ ॥  
मै अंत ही दीज्यौ करी कवि कुल सरल सुभाइ ।  
मूल चूक कथ्यु होइ सो लीजौ लामि बनाइ ॥ ३३ ॥  
सत्रह सतसे आगरे भसी बरस रविवार ।  
कातिक बदि चौथि अये कवित सकल रससार ॥ ३४ ॥  
इति श्री बिहारीसतसई के दोहा टीका सहित संपूर्ण ।

सतसे ग्रंथ लिख्यो श्री राधा भी राजा साहिबजी श्रीराजामल्लजी कीं । लेखक लेखराज भी वास्तव वासी  
मीजे अंजनगीई के अग्रनै पछोर के । मिति माह सुदी ७ बुद्धवार संवत् १७६० मुकाम प्रवेश जयपुर ।

५८६०. गुटका सं० ३० । पत्र सं० १६८ । भा० ८×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण वै० सं० ३१२ ॥  
१. तत्त्वार्थसूत्रभाषा कलककीर्ति हिन्दी व० अपूर्ण  
२. शानिभद्रचौपई जिनसिंह सूरि के शिष्य मतिसागर ” प० १० काल १६७८ ”  
ले० काल सं० १७४३ भाववा सुदी ४ । अजमेर प्रतिनिधि हुई थी ।  
३. स्फुट पाठ × ”

५८६१. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० ६० । भा० ७×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा । ले०  
काल × । अपूर्ण । वै० सं० ३२३ ।

विषय—पूजाओं का संग्रह है ।

५८६२. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० १७४ । भा० ८×६ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय पूजा पाठ । ले०  
काल × । पूर्ण । वै० सं० ३२४ ।

विषय—पूजा पाठ संग्रह है । तथा ८८ हिन्दी पद नेत्र (सुलनयनानन्द) के हैं ।

५८६३. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ७५ । भा० ९×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।  
वै० सं० ३२५ ।

विषय—रामचन्द्र कृत चतुर्विंशतिजिनपूजा है ।

५८६४. गुटका सं० ३४ । पत्र सं० ८६ । भा० ९×६ इ० । विषय—पूजा । ले० काल सं० १८६१  
भावण सुदी ११ । वै० सं० ३२६ ।

विषय—चौबीस तीर्थकर पूजा ( रामचन्द्र ) एवं स्तोत्र संग्रह है । हिण्डीन के जती रामचन्द्र ने प्रतिनिधि  
की थी ।



७३० ]

५८६५. गुटका सं० ३५ । पत्र सं० १७ । प्रा० ६×७ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

वे० सं० ३२७ ।

विशेष—पाषाणरि सोनागिर पूजा है ।

५८६६. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० ७ । प्रा० ८×५ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय पूजा पाठ एवं

ज्योतिषपाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२८ ।

१. बृहत्सोपनिषद् पूजा

×

संस्कृत

२. ब्राह्मणवनीति शास्त्र

ब्राह्मण्य

”

३. शालिहोत्र

×

संस्कृत

अपूर्ण

५८६७. गुटका सं० ३७ । पत्र सं० ३० । प्रा० ७×६ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।

वे० सं० ३२९ ।

५८६८. गुटका सं० ३८ । पत्र सं० २४ । प्रा० ५×४ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

वे० सं० ३३० ।

विशेष—पूजाग्रो का संग्रह है । इसी में प्रकाशित पुस्तकें भी बन्धी हुई हैं ।

५८६९. गुटका सं० ३९ । पत्र सं० ४४ । प्रा० ६×४ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

वे० सं० ३३१ ।

विशेष—देवसिद्धपूजा आदि दी हुई हैं ।

५८७०. गुटका सं० ४० । पत्र सं० ८० । प्रा० ४×५ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय आयुर्वेद । ले०

काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३२ ।

विशेष—आयुर्वेद के मुसले दिये हुये हैं पदार्थों के गुणों का वर्णन भी है ।

५८७१. गुटका सं० ४१ । पत्र सं० ७१ । प्रा० ७×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

पूर्ण । वे० सं० ३३३ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५८७२. गुटका सं० ४२ । पत्र सं० ८६ । प्रा० ७×५ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं०

१८४६ । अपूर्ण । वे० सं० ३३४ ।

विशेष—विदेह क्षेत्र के बीस तीर्थंकरों की पूजा एवं अठारह द्वीप पूजा का संग्रह है । दोनों ही अपूर्ण हैं ।

जोहरी काला ने प्रतिस्तिरि की थी ।

१८७३. गुटका सं० ४३। पत्र सं० २८। भा० ८३×७६०। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३५।

१८७४. गुटका सं० ४४। पत्र सं० ५८। भा० ६×५६०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३६।

विशेष—हिन्दी पद एवं पूजा संग्रह है।

१८७५. गुटका सं० ४५। पत्र सं० १०८। भा० ८३×३३३६०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। विषय—पूजा पाठ। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३७।

विशेष—देवपूजा, सिद्धपूजा, तत्त्वार्थसूत्र, कल्याणमन्दिरस्तोत्र, स्वयंभूस्तोत्र, दशलक्षण, सोलहकारण आदि का संग्रह है।

१८७६. गुटका सं० ४६। पत्र सं० ५५। भा० ८×५६०। भाषा—हिन्दी संस्कृत। विषय—पूजा पाठ ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३३८।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र, हवनविधि, सिद्धपूजा, पार्व्वपूजा, सोलहकारण दशलक्षण पूजाएं हैं।

१८७७. गुटका सं० ४७। पत्र सं० ६६। भा० ७×५६०। भाषा हिन्दी। विषय—कथा। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३९।

| १. जेष्ठजिनवरकथा      | सुबालचन्द्र | हिन्दी  | १-६                        |
|-----------------------|-------------|---------|----------------------------|
|                       |             |         | २० काल सं० १७८२ जेठ सुदी ६ |
| २. आदित्यव्रतकथा      | "           | हिन्दी  | ६१-१६                      |
| ३. सप्तपरमरथान        | "           | "       | १६-२६                      |
| ४. मुकुटसप्तमीव्रतकथा | "           | "       | २६-३०                      |
| ५. दशलक्षणव्रतकथा     | "           | "       | ३०-३४                      |
| ६. पुनःशुलिव्रतकथा    | "           | "       | ३४-४०                      |
| ७. रक्षाविधानकथा      | "           | संस्कृत | ४१-४५                      |
| ८. उमेभरस्तोत्र       | "           | "       | ४६-६६                      |

१८७८. गुटका सं० ४८। पत्र सं० १२८। भा० ६×५६०। भाषा—हिन्दी। विषय—अभ्यास। २० काल सं० १६६३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३४०।

विशेष—बनारसीदास कृत समयसार नाटक है।

५८७६. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० ४६ । आ० ५×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × ।  
पूर्य । वे० सं० ३४१ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

|                    |            |                |       |
|--------------------|------------|----------------|-------|
| १. जैनशतक          | भूधरदास    | हिन्दी         | १-१३  |
| २. ऋषिमण्डलस्तोत्र | गौतमस्वामी | संस्कृत        | १४-२० |
| ३. कवकावलीसी       | नन्दराम    | ” ले० काल १८८८ | ३४-४२ |

५८८०. गुटका सं० ५० । पत्र सं० २५४ । आ० ५×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा  
पाठ ले० काल × । पूर्य । वे० सं० ३४२

५८८१. गुटका सं० ५१ । पत्र सं० १६३ । आ० ७२×४२ इ० । भाषा-हिन्द संस्कृत । ले० काल  
सं० १८८२ । पूर्य । वे० सं० ३४३ ।

विशेष—गुटके के निम्न पाठ मुख्यतः उल्लेखनीय हैं ।

|                           |               |        |       |
|---------------------------|---------------|--------|-------|
| १. नवग्रहामितपार्वस्तोत्र | ×             | प्रकृत | १-२   |
| २. जीवविचार               | आ० नेमिचन्द्र | ”      | ३-८   |
| ३. नवतत्त्वप्रकरण         | ×             | ”      | ९-१४  |
| ४. चौबीसदण्डकविचार        | ×             | हिन्दी | १५-६८ |
| ५. तेईस बोल विवरण         | ×             | ”      | ६९-९५ |

विशेष—

दाता की कसौटी दुरमिच्छ परे जान जाइ ।

सूर की कसौटी दोई अनी बुरे रत में ॥

मित्र की कसौटी मामलो प्रगट होय ।

हीरा की कसौटी है जोहरी के धन में ॥

कुल की कसौटी आदर सनमान जानि ।

सोने की कसौटी सराफन के जतन में ॥

कहै जिननाम जैसी बस्त तैसी कीमति सौं ।

साधु की कसौटी है दुष्टन के बीच में ॥

१. विनती

समयमुन्दर

हिन्दी

१०३-१०३

|                          |   |        |                      |
|--------------------------|---|--------|----------------------|
| २. श्रव्यसंग्रहभाषा      | हेमराज  | "      | ११७-१४१              |
|                          | ३० काल सं० १७३१ माघ सुदी १० । ले० काल सं० १८७६ फाल्गुन सुदी ६ । |        |                      |
| ३. गोविंदाष्टक           | शङ्कराचार्य   | हिन्दी | १४४-१४५              |
| ४. पारश्वनाथस्तोत्र      | ×   | "      | ले० काल १८८१ १४६-१४७ |
| ५. कृष्णएपचीसी           | विनोदीलाल   | " " "  | १८८२ १४७-१४४         |
| ६. तेरापन्य बीमपन्य भेद— | ×   | "      | १४५-१६३              |

५८८२. गुटका सं० ५२ । पत्र सं० ३५ । भा० ७३×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८८६ कार्तिक बुदी १३ । वे० सं० ३४४ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है । प० सदासुखजी ने प्रतिलिपि की थी ।

५८८३. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० ८० । भा० ६३×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४५ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५८८४. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ४४ । भा० ६३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । वे० सं० ३४६

विशेष—भूषरदास कृत चर्चा समाधान तथा चन्द्रसागर पूजा एवं शान्तिपाठ है ।

५८८५. गुटका सं० ५५ । पत्र सं० २० । भा० ६३×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा पाठ ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४७ ।

५८८६. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० ६८ । भा० ६३×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं ३४८ ।

५८८७. गुटका सं० ५७ । पत्र सं० १७ । भा० ६३×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४९ ।

विशेष—रत्नत्रय व्रतविधि एव कथा दी हुई है ।

५८८८. गुटका सं० ५८ । पत्र सं० १०४ । भा० ७×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५८८९. गुटका सं० ५९ । पत्र सं० १२९ । भा० ६३×५ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-भागवेद । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५१ ।

विशेष—हमनिदिबन्ध नामक ग्रंथ है ।

५८६०. गुटका सं० ६० । पत्र सं० ११३ । भा० ४×३ ६० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।  
पूर्णा । वै० सं० ३५२ ।

विशेष—पूजा, स्तोत्र एवं बनारसी विवास के कुछ पद एवं पाठ हैं ।

५८६१. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० २२३ । भा० ४×३ ६० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।  
पूर्णा । वै० सं० ३५३ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५८६२. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० २०८ । भा० ६×४ ६० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।  
पूर्णा । वै० सं० ३५४ ।

विशेष—सामान्य स्तोत्र एवं पूजा पाठों का संग्रह है—

५८६३ गुटका सं० ६२ । पत्र सं० २६३ । भा० ६×४ ६० । भाषा-हिन्दी ले० काल × । मपूर्णा ।  
वै० सं० ३५५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

|                         |               |                                 |         |
|-------------------------|---------------|---------------------------------|---------|
| १. हनुमतरास             | ब्रह्मरायमञ्ज | हिन्दी                          | २४-६७   |
|                         |               | ले० काल सं० १८६० फागुण बुदी ७ । |         |
| २. शालिभद्रसज्जम        | ×             | हिन्दी                          | ६८-६६   |
| ३. जलानगाहाणी की बार्ता | ×             | "                               | १०१-१४७ |
|                         |               | ले० काल १८५६ माह बुदी ३         |         |

विशेष—कोठ्यारी प्रतापसिंह पठनार्थ लिखी हलसूरिमध्ये ।

|                               |           |   |                     |
|-------------------------------|-----------|---|---------------------|
| ४. संत्रसार                   | ×         | " | पद्य सं० ४८ १४८-१५२ |
| ५. चन्द्रकुंवर की बार्ता      | ×         | " | १५२-१६४             |
| ६. घण्टरनिसाणी                | । जिनहर्ष | " | १६५-१६६             |
| ७. मुद्यवच्छसानिगरी की बार्ता | ×         | " | मपूर्णा १७०-२६३     |

५८६४. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ६७ । भा० ६×४ ६० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । पूर्णा । ले० काल  
× । वै० सं० ३५६ ।

विशेष—नवमञ्जल विनोदीलाल कृत एवं पद स्तुति एवं पूजा संग्रह है ।

५८६५ गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ६३ । भा० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५७ ।

विशेष—सिद्धचक्रपूजा एवं पद्मावती स्तोत्र है ।

५८६६ गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ४५ । भा० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—पूजा । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५८ ।

५८६७ गुटका सं० ६७ । पत्र सं० ४६ । भा० ५३×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५९ ।

विशेष—भक्तानन्दस्तोत्र, पंचमंगल, देवपूजा आदि का संग्रह है ।

५८६८ गुटका सं० ६८ । पत्र सं० ६४ । भा० ४×३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—स्तोत्र-संग्रह । ले० काल × । वे० सं० ३६० ।

५८६९ गुटका सं० ६९ । पत्र सं० १५१ । भा० ७ × इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६१ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

|                     |             |           |             |
|---------------------|-------------|-----------|-------------|
| १. सत्तरभेदपूजा     | साधुकीर्ति  | हिन्दी    | १-१४        |
| २. महावीरस्तवनपूजा  | समयमुन्दर   | "         | १४-१६       |
| ३. धर्मारोक्षा भाषा | विशालकीर्ति | " ले० काल | १८६४ ३०-१५१ |

विशेष—नागपुर में पं० चतुर्भुज ने प्रतिलिपि की थी ।

५९०० गुटका सं० ७० । पत्र सं० ५६ । भा० ५३×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८०२ । पूर्ण । वे० सं० ३६२ ।

|             |   |             |                    |
|-------------|---|-------------|--------------------|
| १. महावण्डक | × | हिन्दी      | ३-५३               |
|             |   | ले० काल सं० | १८०२ पीप बुकी १३ । |

विशेष—उदयचिमल ने प्रतिलिपि की थी । शिवपुरी में प्रतिलिपि की गई थी ।

|        |   |   |       |
|--------|---|---|-------|
| २. बोल | × | " | ५४-५६ |
|--------|---|---|-------|

५९०१ गुटका सं० ७१ । पत्र सं० १२३ । भा० ६३×४ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—स्तोत्रसंग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६३ ।

५६००. गुटका सं० ७२। पत्र सं० १५७। प्रा० ४×३ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×।  
पूर्य। वे० सं० ३६४।

विशेष—पूजा पाठ व स्तोत्र आदि का संग्रह है।

५६०३. गुटका सं० ७३। पत्र सं० १६६। प्रा० ४×३ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×।  
पूर्य। वे० सं० ३६५।

|                     |   |                |       |
|---------------------|---|----------------|-------|
| १ पूजा पाठ संग्रह   | × | संस्कृत हिन्दी | १-४४  |
| २. आयुर्वेदिक नुसले | × | हिन्दी         | ४५-६६ |

५६०४. गुटका सं० ७४। पत्र सं० ५०। प्रा० ५३×५३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण  
वे० सं० ३६६।

विशेष—प्रारम्भ में पूजा पाठ तथा नुसले दिये हुये हैं तथा अन्त के १७ पत्रों में संवत् १-३३ में भारत  
के राजाओं का परिचय दिया हुआ है।

५६०५. गुटका सं० ७५। पत्र सं० ६०। प्रा० ५२×५३ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×।  
अपूर्ण। वे० सं० ३६७।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

५६०६. गुटका सं० ७६। पत्र सं० १२-१३७। प्रा० ७×३ इ०। भाषा हिन्दी संस्कृत। ले०  
काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३६८।

विशेष—प्रारम्भ में कुछ मंत्र हैं तथा फिर आयुर्वेदिक नुसले दिये हुये हैं।

५६०७. गुटका सं० ७७। पत्र सं० २७। प्रा० ६३×४३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण  
वे० सं० ३६९।

|                         |          |        |              |       |
|-------------------------|----------|--------|--------------|-------|
| १. ज्ञानविन्तामणि       | मनोहरदास | हिन्दी | १२६ पद्य हैं | १-१६  |
| २. बखन-भिचकवती की भावना | भूपरदास  | "      |              | १६-२३ |
| ३ सम्मेदगिरिपूजा        | ×        | "      | अपूर्ण       | २२-२७ |

५६०८. गुटका सं० ७८। पत्र सं० १२०। प्रा० ६×३ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण  
ले० सं० ३७१।

विशेष—नाममाला तथा लब्धिसार आदि में से पाठ है।

५६०६. गुटका सं० ७६। पत्र सं० ३०। भा० ६३×४३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८१ पूर्ण। वे० सं० ३७१।

विशेष—ब्रह्मरायण कृत प्रद्युम्नरास है।

५६१०. गुटका सं० ८०। पत्र सं० ५४-१३६। भा० ६३×६ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३७२।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है।

|                       |           |         |        |        |
|-----------------------|-----------|---------|--------|--------|
| १. श्रुतस्फुट         | हेमचन्द्र | प्राकृत | अपूर्ण | ५४-७६  |
| २. मूलसंध की पट्टावलि | ×         | संस्कृत |        | ८०-८३  |
| ३. गर्भपट्टारचक्र     | देवगन्धि  | "       |        | ८४-९०  |
| ४. स्तोत्रत्रय        | ×         | संस्कृत |        | ९०-१०५ |

एकीभाव, अक्तामर एवं भूपालचतुर्विंशति स्तोत्र हैं।

|                      |                          |         |             |         |
|----------------------|--------------------------|---------|-------------|---------|
| ५. वीतरागस्तोत्र     | भ० पद्मगन्धि             | "       | १० पद्य हैं | १०५-१०६ |
| ६. पार्श्वनावस्तवन   | राजसेन [वीरसेन के शिष्य] | "       | ६ "         | १०६-१०७ |
| ७. परमात्मराजस्तोत्र | पद्मगन्धि                | "       | १४ "        | १०७-१०८ |
| ८. सामायिक पाठ       | अभितियति                 | "       |             | ११०-११३ |
| ९. तद्वसाार          | देवसेन                   | प्राकृत |             | ११३-११८ |
| १०. आराधनासार        | "                        | "       |             | १२४-१३४ |
| ११. समयसारगाथा       | भा० कुन्दकुन्द           | "       |             | १३४-१३८ |

५६११. गुटका सं० ८१। पत्र सं० २-५६। भा० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १७३०

भादवा सुवी १३। अपूर्ण। वे० सं० ३७४।

विशेष—कामशास्त्र एवं नायिका वर्णन है।

५६१२. गुटका सं० ८२। पत्र सं० ६३×६ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३७४।

विशेष—पूजा तथा कथाओं का संग्रह है। अन्त में १०६ से ११३ तक १८ वीं शताब्दी का (१७०१ से १७५६ तक) वर्षा प्रकाल युद्ध आदि का योग दिया हुआ है।

५६१३. गुटका सं० ८३। पत्र सं० ८६। भा० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३७५।



|   |   |        |                |       |
|---|---|--------|----------------|-------|
| १. कृष्णरास                                 | × | हिन्दी | पद्य सं० ७६ है | १-१६  |
| महापुराण के दशम स्कन्ध में से लिया गया है । |   |        |                |       |
| २. कालीनागदमन कथा                           | × | "      |                | १६-२६ |
| ३. कृष्णभेमाष्टक                            | × | "      |                | २६-२८ |

५६१४. गुटका सं० ८४ । पद्य सं० १५२-२४१ । प्रा० ६३×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × ।

अपूर्णा । वे० सं० ३७६ ।

विशेष—वैद्यकसार एवं वैद्यकज्ञान ग्रन्थों का संग्रह है ।

५६१५. गुटका सं० ८५ । पद्य सं० ३०२ । प्रा० ८×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्णा ।

वे० सं० ३७७ ।

विशेष—दो गुटकों का एक गुटका कर दिया है । निम्न पाठ मुख्यतः उल्लेखनीय है ।

|                                   |                  |        |            |       |
|-----------------------------------|------------------|--------|------------|-------|
| १. चिन्तामणिजयमाल                 | ठक्कुरसी         | हिन्दी | ११ पद्य है | २०-२२ |
| २. बेसि                           | छीहल             | "      |            | २२-२५ |
| ३. टंङ्गागामीत                    | बूचा             | "      |            | २५-२८ |
| ४. चेतनगीत                        | मुनिसिंहनन्दि    | "      |            | २८-३० |
| ५. जिनलाहू                        | ब्रह्मरायमल्ल    | "      |            | ३०-३१ |
| ६. नेमीश्वरचोमासा                 | सिंहनन्दि        | "      |            | ३२-३३ |
| ७. पंथीगीत                        | छीहल             | "      |            | ४१-४२ |
| ८. नेमीश्वर के १० भव              | ब्रह्मधर्मराज    | "      |            | ४३-४७ |
| ९. गीत                            | कवि पल्ल         | "      |            | ४७-४८ |
| १०. सीमंघरस्तवन                   | ठक्कुरसी         | "      |            | ४९-५० |
| ११. आदिनाथस्तवन                   | कवि पल्ल         | "      |            | ४९-५० |
| १२. स्तोत्र                       | म० जिनचन्द्र देव | "      |            | ५०-५१ |
| १३. पुरन्दर चौपई                  | ब्र० मालदेव      | "      |            | ५२-८७ |
| ले० काल सं० १६०७ फागुण बुद्धो ९ । |                  |        |            |       |
| १४. मेघकुमार गीत                  | पूको             | "      |            | १२-१५ |
| १५. चन्द्रगुप्त के १६ स्तव        | ब्रह्मरायमल्ल    | "      |            | २६-२९ |

गुटका-संग्रह

[ ७३६ ]

|                         |           |   |                        |
|-------------------------|-----------|---|------------------------|
| १६. बलिभद्र गीत         | अभयचन्द्र | ” | ३०-३६                  |
| १७. भविष्यदत्त कथा      | बहुरायगण  | ” | ४०-८५                  |
| १८. निर्दोषवत्समीपत कथा | ”         | ” | ले० काल १६४३ आसोज १३ । |
| १९. हनुमन्तरास          | ”         | ” | अपूर्णा                |

५६१६. गुटका सं० ८६ । पत्र सं० १८८ । आ० ६×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा एवं स्तोत्र । ले० काल सं० १८४२ भाद्रपद सुदी १ । पूर्णा । वे० सं० ३७८ ।

५६१७. गुटका सं० ८७ । पत्र सं० ३०० । आ० ५ $\frac{१}{२}$ ×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल ५ । पूर्णा । वे० सं० ३७९ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्रो के प्रतिरिक्त रुचन्द, बनारसोदास तथा विनोदीलाल आदि कवियों कृत हिन्दो पाठ है ।

५६१८. गुटका सं० ८८ । पत्र सं० ५८ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल ५ । अपूर्णा । वे० सं० ३८० ।

विशेष—भगतराम कृत हिन्दी पदो का संग्रह है ।

५६१९. गुटका सं० ८९ । पत्र सं० २-२६६ । आ० ८×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल ५ । अपूर्णा । वे० सं० ३८१ ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है ।

|                                 |           |                |                        |
|---------------------------------|-----------|----------------|------------------------|
| १. पद्मनभस्कारस्तोत्र           | उमास्वामि | संस्कृत        | १८-२०                  |
| २. बारह अपुत्रेभा               | ×         | प्राकृत        | ४७ गायार्थे है । २१-२५ |
| ३. भावनाचतुर्विधति              | पद्मनन्दि | संस्कृत        |                        |
| ४. अग्न्य स्फुट पाठ एवं पूजायें | ×         | संस्कृत हिन्दी |                        |

५६२०. गुटका सं० ९० । पत्र सं० ३-६१ । आ० ८×५ $\frac{१}{२}$  इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद संग्रह । ले० काल ५ । पूर्णा । वे० सं० ३८२ ।

विशेष—नलवराम के पदों का संग्रह है ।

५६२१. गुटका सं० ९१ । पत्र सं० १४-४६ । आ० ८ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$  इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल ५ । पूर्णा । वे० सं० ३८३ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पाठों का संग्रह है ।

५६२२. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० २६ । भा० ६×५ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८५ ।

विशेष—सम्बेदगिरि पूजा है ।

५६२३. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० १२३ । भा० ६×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८५ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

|                         |                 |         |         |
|-------------------------|-----------------|---------|---------|
| १. चेतनचरित             | भैया भगवतीदास   | हिन्दी  | १-१०    |
| २. जिनसहस्रनाम          | आशाधर           | संस्कृत | ११-१५   |
| ३. लघुतत्त्वार्थसूत्र   | ×               | "       | ३३-३४   |
| ४. चौरासी जाति की जयमाल | ×               | हिन्दी  | ३६-४०   |
| ५. सोलहकारणकथा          | ब्रह्मज्ञानसागर | हिन्दी  | ७१-७४   |
| ६. रत्नत्रयकथा          | "               | "       | ७४-७६   |
| ७. आर्द्रत्यवारकथा      | भाऊकवि          | "       | ७६-८६   |
| ८. दोहाशतक              | रूपचन्द         | "       | ६४-६६   |
| ९. श्रेयनक्रिया         | ब्रह्मगुलाल     | "       | ६७-८६   |
| १०. अष्टाहिनिका कथा     | ब्रह्मज्ञानसागर | "       | १००-१०४ |
| ११. अन्यपाठ             | ×               | "       | १०५-१२३ |

५६२४. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ७-७६ । भा० ५×३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८६ ।

विशेष—देवाब्रह्म के पदों का संग्रह है ।

५६२५. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ३-६६ । भा० ६×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८७ ।

|                |             |        |                          |         |
|----------------|-------------|--------|--------------------------|---------|
| १. भविष्यदलकथा | ब्रह्मरायमल | हिन्दी | अपूर्ण                   | ३-७०    |
|                |             |        | ले० काल सं० १७६० कार्तिक | सुदी १२ |
| २. हनुमतकथा    | "           | "      |                          | ७१-६६   |

५६२६. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ८६ । भा० ६×६ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—मंत्र शास्त्र । ले० काल सं० १८६५ । पूर्ण । वे० सं० ३८८ ।

|   |                |         |       |
|---|----------------|---------|-------|
| १. अक्षामरस्तोत्र ऋद्धिर्धनयोगसहित        | मल्लतुंगाचार्य | संस्कृत | १-४३  |
| २. पद्मानतीकवच                            | ×              | "       | ४३-५२ |
| ३. पद्मानतीसहस्रनाम                       | ×              | "       | ५२-६३ |
| ४. पद्मानतीस्तोत्र बीजमंत्र एवं साधन विधि | ×              | "       | ६३-८६ |
| ५. पद्मानतीपटल                            | ×              | "       | ८६-८७ |
| ६. पद्मानतीदंडक                           | ×              | "       | ८७-८८ |

५६२७. गुटका सं० ६७ । पत्र सं० ६-११३ आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।  
वे० सं० ३८६ ।

|                 |   |        |         |        |
|-----------------|---|--------|---------|--------|
| १. स्फुटवार्ता  | × | हिन्दी | अपूर्णा | ६-२२   |
| २. हरिचन्द्रशतक | × | "      | "       | २३-६६  |
| ३. धीध्रुवरित   | × | "      | "       | ६७-६३  |
| ४. मल्हारवरित   | × | "      | अपूर्णा | ६३-११३ |

५६२८. गुटका सं० ६८ । पत्र सं० ५३ । आ० ५×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।  
अपूर्णा । वे० सं० ३६० ।

विशेष—स्तोत्र एवं तत्त्वार्थसूत्र आदि सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६२९. गुटका सं० ६९ । पत्र सं० ६-१२६ । आ० ८२×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले०  
काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६१ ।

५६३०. गुटका सं० १०० । पत्र सं० ८८ । आ० ८×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।  
वे० सं० ३६२ ।

|                               |   |        |  |       |
|-------------------------------|---|--------|--|-------|
| १. आदित्यवारकथा               | × | हिन्दी |  | १४-३४ |
| २. पक्की स्याही बनाने की विधि | × | "      |  | ३५    |
| ३. संकट चौपई कथा              | × | "      |  | ३८-४३ |
| ४. कक्का बत्तीसी              | × | "      |  | ४५-४७ |
| ५. निरंजन शतक                 | × | "      |  | ५१-८४ |

विशेष—लिपि विकृत है पढ़ने में नहीं आती ।

५६३१. गुटका सं० १०१। पत्र सं० २३। प्रा० ६१×४३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×।

अपूर्णा। सं० ३६३।

विशेष—कवि सुन्दर कृत नायिका लक्षण दिया हुआ है। ४२ से १५० पद्य तक है।

५६३२. गुटका सं० १०२। पत्र सं० ७८-१०१। प्रा० ८५×७ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह।

ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० ३६४।

१. अतुर्दशी कथा

डानूराम

हिन्दी १० काल १७६५ प्र. जेठ सुदी १०

ले० काल सं० १७६५ जेठ सुदी १४। अपूर्णा।

विशेष—२६ पद्य से २३० पद्य तक हैं।

मध्य भाग—

माता एं सो हठ मति करी, संजम विना जीव न निततरै।

कांकी माता काको बाप, धातमराम अकेलो भाप ॥ १७६ ॥

दोहा—

भाप देखि पर देखिये, दुख सुख दोउ भेद।

धातम ऐक विचारिये, भरमन कहू न खेद ॥ १७७ ॥

मंगलाचार कंवर को कीयो, दिख्या नेण कवर जब गयो।

सुवामी भागै जोड्या हाथ, दोख्य दोह मुनीमुर नाथ ॥ १७८ ॥

अन्तिमपाठ—

बुधि सारु कथा कही, राजघाटी मुलतान।

करम कटक में देहरो बेटो पचे सु जाण ॥ २२८ ॥

सतरासे पचावने प्रथम जेठ सुदि जानि।

सोमवार दसमी मानी पूरण कथा बखानि ॥ २२९ ॥

खंबेलवाव बौहरा गोत, धावावती में बास।

डानु कहै मति मो हंसौ, हू सबन को दास ॥ २३० ॥

महाराजा बीसनसिंहजी भाया, साहाया छाल को लार।

जो या कथा पढै सुणै, सो पुरिप में सार ॥ १३१ ॥

चौदश की कथा संपूर्ण। मिति प्रथम जेठ सुदी १४ संवत् १७६५

२. चौदशकीजयमाल

×

हिन्दी

६३-६४

३. तारातंबोलकी कथा

×

„ ले० काल सं० १७६३ ६४-६६

|                  |           |   |                 |
|------------------|-----------|---|-----------------|
| ४. नवरत्न कवित्त | भनारसीदास | ” | ६७-६६           |
| ५. ज्ञानपञ्चीसी  | ”         | ” | ६८-१००          |
| ६. पद            | ×         | ” | अपूर्णा १००-१०१ |

५६३३. गुटका सं० १०३ । पत्र सं० १०-५५ । भा० ८३×६३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्णा । वे० सं० ३६५ ।

विशेष—महाराजकुमार इन्द्रजीत विरचित रसिकप्रिया है ।

५६३४. गुटका सं० १०४ । पत्र सं० ७ । भा० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्णा ।

वे० सं० ३६७ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

## ज भगडार [ दि० जैन मन्दिर यति यशोदानन्दजी जयपुर ]

५६३५. गुटका सं० १ । पत्र सं० १४० । भा० ७३×५३ इ० । लिपि काल × ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

|  |               |                                 |            |
|--|---------------|---------------------------------|------------|
| १. देहली के बादशाहों की नाभावलि एवं<br>परिचय | ×             | हिन्दी                          | १-१६       |
| २. नवित्तसंग्रह                              | ×             | ले० काल सं० १८५२ जेठ बुदी ५ ।   |            |
| ३. शनिश्चर की कथा                            | ×             | ”                               | २०-४४      |
| ४. कवित्त एवं दोहा संग्रह                    | ×             | ”                               | गद्य ४५-६७ |
| ५. द्वादशमान्ना                              | कवि राजमुन्दर | ”                               | ६८-६४      |
|  |               | ले० काल १८५३ ज्यैष्ठ्य बुदी ५ । |            |

विशेष—राणधम्भोर में लक्ष्मणदास पाटनी ने प्रतिलिपि की थी ।

५६३६. गुटका सं० २ । पत्र सं० १०६ । भा० ५×४ इ० ।

विशेष—बुजा पाठ संग्रह है ।

५६३७. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ३-१५३ । भा० ६×५ इ० ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

|                   |   |        |     |
|-------------------|---|--------|-----|
| १. गीत-धर्मकीर्ति | × | हिन्दी | ३-४ |
|-------------------|---|--------|-----|

( जिरावर ध्याइयबावे, मनि बित्या फलु पाया )

२. गीत—( जिरावर हो स्वामी जरण मनाय, सरसति त्वाभिषिञ्ज बौनऊ हो )

|                      |                  |         |         |
|----------------------|------------------|---------|---------|
| १. पुष्पाञ्जलिजयमाल  | ×                | अपभ्रंश | ७-२४    |
| २. लघुकव्यासपाठ      | ×                | हिन्दी  | २४-२६   |
| ३. तत्वसार           | देवसेन           | प्राकृत | ४६-६०   |
| ४. शाराधनासार        | "                | "       | ८३-१००  |
| ५. द्वादशानुप्रेक्षा | लक्ष्मीसेन       | "       | १००-१११ |
| ६. पार्वनाथस्तोत्र   | पद्मनिधि         | संस्कृत | १११-११२ |
| ७. द्रव्यसंग्रह      | श्री० नेमिचन्द्र | प्राकृत | १४६-१५१ |

५६३८. गुटका सं० ४ । पत्र सं० १८६ । श्रा० ६×८ ३० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८४२

भाषाठ सुदी १५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

|                        |             |        |                     |
|------------------------|-------------|--------|---------------------|
| १. पार्वपुराण          | भूधरदास     | हिन्दी | १-१०२               |
| २. एकसोयुनहतरजीव वर्णन | ×           | "      | १८४२ १०४            |
| ३. हनुमन्त चौपाई       | श्री० रायमल | "      | १८२२ भाषाठ सुदी ३ " |

५६३९. गुटका सं० ५ । पत्र सं० १४० । श्रा० ७३×४ ३० । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५६४०. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २१३ । श्रा० ६×५ ३० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५८४१. गुटका सं० ७ । पत्र सं० २२० । श्रा० ६×७३ ३० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पं० देवीचन्द्रकृत हितोपदेश (संस्कृत) का हिन्दी भाषामें अर्थ दिया हुआ है । भाषा गद्य और पद्य दोनों में है । देवीचन्द्र ने प्रगना कोई परिचय नहीं लिखा है । जबपुर में प्रतिलिपि की गई थी । भाषा साधारण है —

धन तेरी सेवा में रहि हो । श्रेय कहि गंगदत्त कुवा महि ते नोकरो ।

दोहा—छूटी काल के गाल में धन कही काल न धाय ।

श्री नर धरहट मालतै नयो जनम तन पाय ॥

वार्त्ता—धाय की दाढ़ में ते छूटी अरु कही नयो जनम पायो । कूने में ते बाहरि धाय यो कही वहां सांय कितनेक बेर तो वाट देखी । न धायो जब धानुर भयो । तब यो कही मे कहा कीयो । जदपि कुवा के मेंडक सब छायो दे जब लग गंगावत्त को न लायो तब लग रञ्ज कहु छायो नही ।

५६४६. गुटका सं० ८ । पत्र सं० १६६-४३० । आ० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्णा ।

विशेष—बुलाकीदास कृत पांडवपुराण भाषा है ।

५६४७. गुटका सं० ६ । पत्र सं० १०१ । आ० ७½×६½ इ० । विषय-संग्रह । ले० काल × । पूर्णा ।

विशेष—स्तोत्र एवं सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६४४. गुटका सं० १० । पत्र सं० ११८ । आ० ८½×६ इ० । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-संग्रह ।

ले० काल सं० १८६० माह बुदी ५ । पूर्णा ।

१. मुन्दरविलास मुन्दरदास हिन्दी १ मे ११६

विशेष—ब्राह्मण चतुर्भुज लंबेनवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२. बारहलखड़ी दत्तलाल ”

विशेष—६ पद्य हैं ।

५६४५. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ४२ । आ० ८½×६ इ० । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल सं० १९०८ चैत बुदी ६ । पूर्णा ।

विशेष—बृहदसतसई है जिसमे ७०१ दोहे हैं । दसकत चौमनलाल कालख हाना का ।

५६४६. गुटका सं० १२ । पत्र सं० २० । आ० ८×६½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९६० आसोज बुदी ६ । पूर्णा ।

विशेष—पंचमेरु तथा रत्नत्रय एवं पार्वनाथस्तुति है ।

५६४७. गुटका सं० १३ । पत्र सं० १५५ । आ० ८×६½ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७६० ज्येष्ठ सुदी १ । अपूर्णा ।

निम्नलिखित पाठ हैं—

कल्याणमंदिर भाषा, श्रीपालस्तुति, अठारा नाते का चौडाल्या, भक्तामरस्तोत्र, सिद्धपूजा, पार्वनाथ स्तुति [ पद्यप्रभदेव कृत ] पंचपरमेष्ठी गुणमाल, शान्तिनाथस्तोत्र आदित्यवार कथा [ भाउकृत ] नवकार रासो, जोगी रासो, भ्रमरगीत, पूजाष्टक, चिन्तामणि पार्वनाथ पूजा, नेमि रासो, गुरुस्तुति आदि ।

बीच के १०० से १३२ पत्र नहीं हैं । पीछे काटे गये मालूम होते हैं ।



## ॠ भगडार [ शास्त्र भगडार दि० जैन मन्दिर विजयराम पाड्या जयपुर ]

५६४८. गुटका सं० १ । पत्र सं० २० । आ० ५१×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल सं० १९५८ । पूर्ण । वे० सं० २७ ।

विशेष—ग्रालोचनापाठ, सामायिकपाठ, छहडाला ( दौलतराम ), कर्मप्रकृतिविधान ( बनारसीदास), भङ्गत्रिम चैत्यालय जयमाल आदि पाठों का संग्रह है ।

५६४९. गुटका सं० २ । पत्र सं० २२ । आ० ५२×४ इ० । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २९ ।

विशेष—वीररस के कवितो का संग्रह है ।

५६५०. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ६० । आ० ६×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । जीर्णो जीर्ण । वे० सं० ३० ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६५१. गुटका सं० ४ । पत्र सं० १०१ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

|                       |           |        |       |
|-----------------------|-----------|--------|-------|
| १. जिनसहस्रनामस्तोत्र | बनारसीदास | हिन्दी | १-११  |
| २. लहुरी नेमोश्वरकी   | विश्वभूषण | "      | १९-२१ |
| ३. उद-आतम रूप मुहावना | द्यानतराय | "      | २२    |
| ४. विनती              | ×         | "      | २३-२४ |

विशेष—रूपचन्द ने आगरे में स्वपठनार्थ निम्नो यी ।

|                      |           |   |       |
|----------------------|-----------|---|-------|
| ५. सुत्वघटी          | हृपकीर्ति | " | २४-२५ |
| ६. मिन्दूरप्रकरण     | बनारसीदास | " | २५-४७ |
| ७. अर्ध्यात्मदोहा    | रूपचन्द   | " | ४७-५५ |
| ८. साधुवदना          | बनारसीदास | " | ५५-५८ |
| ९. मोक्षपैठी         | "         | " | ५८-६१ |
| १०. कर्मप्रकृतिविधान | "         | " | ७६-९१ |

११. विनती एक पत्रसंग्रह

×

हिन्दी

११-१०१

५६५२. शुटका सं० ५ । पत्र सं० ६-२९ । भा० ४×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।  
 अपूर्ण । वे० सं० ३२ ।

विशेष—नेमिः (तुलपञ्चीसी ( विनोदीलाल ), बारहमासा, ननब भोजई का ऋगडा प्रादि पाठो का संग्रह है ।

५६५३. शुटका सं० ६ । पत्र सं० १६ । भा० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।  
 वे० सं० ४१ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—पद, चौरासी न्यात की जबमाल, चौरासी जाति वर्णन ।

५६५४. शुटका सं० ७ । पत्र सं० ७ । भा० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १६४३  
 बेशाल मुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० ४२ ।

विशेष—विषाणहारस्तोत्र भाषा एवं निर्वणिकाण्ड भाषा है ।

५६५५. शुटका सं० ८ । पत्र सं० १८४ । भा० ७×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।  
 ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३ ।

|                         |              |         |        |
|-------------------------|--------------|---------|--------|
| १. उपदेशशतक             | ज्ञानतराय    | हिन्दी  | १-३५   |
| २. छहडाला ( अक्षरचरनी ) | "            | "       | ३५-३६  |
| ३. धर्मपञ्चीसी          | "            | "       | ३६-४२  |
| ४. तत्त्वसारभाषा        | "            | "       | ४२-४६  |
| ५. सहस्रनामपूजा         | धर्मचन्द्र   | संस्कृत | ४६-१७५ |
| ६. जिनमहानामस्तवन       | जिनसेनाचार्य | "       | १-१२   |

ले० काल सं० १७६८ फागुन मुदी १०

५६५६. शुटका सं० ९ । पत्र सं० १३ । भा० ६२×४ इ० । भाषा-प्राकृत हिन्दी । ले० काल सं०  
 १६१८ । पूर्ण । वे० सं० ४४ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५६५७. शुटका सं० १० । पत्र सं० १०५ । भा० ८×७ इ० । ले० काल × ।

|                  |              |         |       |
|------------------|--------------|---------|-------|
| १. परमात्मप्रकाश | योगीन्द्रदेव | अपभ्रंश | १-१६  |
| २. तत्त्वसार     | देवसेन       | प्राकृत | २०-२४ |

|             |   |               |       |
|-------------|---|---------------|-------|
| ३. बारहसखरी | × | संस्कृत       | २४-२७ |
| ४. समाधिरास | × | पुरानी हिन्दी | २७-२९ |

विशेष—१० डागुराम ने अपने पठने के लिए लिखा था ।

|                   |                  |               |         |
|-------------------|------------------|---------------|---------|
| ५. द्वादशानुमेधा  | ×                | पुरानी हिन्दी | २९-३१   |
| ६. योगीरासो       | योगीन्द्रदेव     | अपभ्रंश       | ३२-३३   |
| ७. शालकाचार दोहा  | रामसिंह          | ”             | ५३-६३   |
| ८. बट्पाहुड       | कुन्दकुन्दाचार्य | प्राकृत       | ८४-१०४  |
| ९. बटलेस्या वर्णन | ×                | संस्कृत       | १०४-१०५ |

५६५८. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ३५ । ( छुले हुये शास्त्राकार ) प्रा० ७२×५ इ० । भाषा—हिन्दी  
ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है ।

५६५९. गुटका सं० १२ । पत्र सं० ५० । प्रा० ६×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।  
वे० सं० १०० ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है ।

५६६०. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ४० । प्रा० ६×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।  
वे० सं० १०१ ।

|            |         |        |      |
|------------|---------|--------|------|
| १. चन्दकथा | लक्ष्मण | हिन्दी | १-२१ |
|------------|---------|--------|------|

विशेष—९७ पद्य में २९२ पद्य तक घाभासेरी के राजा चन्द को कथा है ।

|                 |        |   |       |
|-----------------|--------|---|-------|
| २. फुटकर कवित्त | अगरदास | ” | २२-४० |
|-----------------|--------|---|-------|

विशेष—चन्दन मलियागिरि कथा है ।

५६६१. गुटका सं० १४ । पत्र सं० ३६९ । प्रा० ७×६ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं०  
१६५३ । पूर्ण । वे० सं० १०२ ।

|                    |   |        |      |
|--------------------|---|--------|------|
| १. चौदासो जाति भेद | × | हिन्दी | १-१९ |
|--------------------|---|--------|------|

|                 |           |   |       |
|-----------------|-----------|---|-------|
| २. नेमिनाथ फाणु | पृष्यरत्न | ” | २०-२५ |
|-----------------|-----------|---|-------|

विशेष—अन्तिम पाठ :—

समुद्र विजय तन गुण मिलत सेव करइ जसु सुर नर वृन्द ।

पृष्यरत्न मुनिवर अणुइ श्रीसंघ मुद्रयन नेमि जिएन्द ॥ ६४ ॥

॥ इति श्री नेमिनाथ फाणु समाप्त ॥

कुल ६४ पद्य हैं ।



२२. पद— कायु बोलै रै भव दुल बोलरणी

न धावै ।

हर्षकीर्ति

”

३३२

२३. रथिन्नत कथा

भानुकीर्ति

”

१० काल १६८७

३३६

( आठ सात सोलह के अंक वर्ण रचै सु कथा विमल )

२४. पद - जो बनीया का जोरा माही श्री जिए

कोप न ध्यावै रै ।

शिवसुन्दर

”

३४१

२५. धीलबलीसी

अकूमल

”

३४८

२६. टंडाराण गीत

बृचराज

”

३६२

२७. भ्रमर गीत

मनसिंघ

”

१६ पद हैं

३६५

( बाढी फूली अति भली सुन भ्रमरा रे )

१६६२. गुटका सं० १५ । पत्र सं० २७५ । भा० ५×४३ इ० । ले० कुल सं० १७२७ । पूर्ण । वे०

सं० १०३ ।

१. नाटक समयसार

बनारसीदास

हिन्दी

१६३

१० काल सं० १६६३ । ले० काल सं० १७६३

२. मेघकुमार गीत

पुनी

”

१६३-१६६

३. तेरहकाठिया

बनारसीदास

”

१८८

४. विवेकजकडी

जिनदास

”

२०६

५. गुणाक्षरमाला

मनराम

”

६. मुनीश्वरों की जयमाल

जिनदास

”

७. बावनी

बनारसीदास

”

२४३

८. नगर स्थापना का स्वरूप

×

”

२५४

९. पंचमगति को वेल

हर्षकीर्ति

”

२६६

१६६३. गुटका सं० १६ । पत्र सं० २१२ । भा० ६×६ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

वे० सं० १०८ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

१६६४. गुटका सं० १७ । पत्र सं० १४२ । भा० ६×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

वे० सं० १०८ ।

१. भविष्यदत्त चौपई

३० रायमल्ल

हिन्दी

११६

२. चौबीस तीर्थङ्कर परिचय

×

१४२

५६६५. शुटका सं० १७ । पत्र सं० ८७ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । ले० काल  
× । पूर्ण । वे० सं० ११० ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा है ।

५६६६. शुटका सं० १८ । पत्र सं० ८८ । आ० ७×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८७४ ।  
पूर्ण । वे० सं० १११ ।

१. लगनचन्द्रिका भाषा

स्थोजीराम सोगानी

हिन्दी

१-४३

प्रारम्भ—धादि मंत्र कूँ सुमरिदं, जगतारणु जगदीश ।

जगत धरिण लखि तिन तज्यो, जिनै नमाउ सीस ॥ १ ॥

दूजा पूजूं सारदा, तीजा गुरु के पाय ।

लगन चन्द्रिका ग्रन्थ की, भाषा करुं बरगाय ॥ २ ॥

गुरन मोहि भ्राग्या दर्ई, मसतक धरि के बाह ।

लगन चन्द्रिका ग्रंथ की, भाषा करुं बरगाय ॥ ३ ॥

मेरे श्री गुरुदेव का, आंवावती निवास ।

नाम धीजैचन्द्रजी, पंडित बुध के वास ॥ ४ ॥

लालचन्द पंडित तण्णे, नाती बेला नेह ।

फतेचद के सिध तिनै, मौजूं हुकम करेह ॥ ५ ॥

कवि सोगारणी गोत्र है, जैन मतो पहचानि ।

कंवरपाल को नंद ते, स्थोजीराम बखारिण ॥ ६ ॥

ठाराले के साल परि, बरष सात चालीस ।

माघ मुकल की पंचमी, बार गुरनकोईस ॥ ७ ॥

लगन चन्द्रिका ग्रंथ की, भाषा कही बु सार ।

जे यासंखे ते नरा ज्योतिस को ले पार ॥ ५२३ ॥

अन्तिम—

२. वृन्दसतसई

वृन्दकवि

हिन्दी ५० ले० काल वैशाख सुदी १० १८७४

विशेष—७०६ पद्य है ।



विशेष—समयसार नाटक, भक्तान्तरस्तोत्र भाषा-एवं सामान्य कथायें हैं ।

५६७७. गुटका सं० २६ । पत्र सं० ११६ । प्रा० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-संग्रह  
ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५४ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र तथा अन्य साधारण पाठों का संग्रह है ।

५६७८. गुटका सं० ३० । पत्र सं० २० । प्रा० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत प्राकृत । विषय-स्तोत्र ।  
ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५५ ।

विशेष—सहलनाम स्तोत्र एवं निर्वाणकाण्ड गाथा हैं ।

५६७९. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० ४० । प्रा० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । ले०  
काल × । पूर्ण । वे० सं० १६२ ।

विशेष—रविव्रत कथा है ।

५६८०. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० ४४ । प्रा० ४२×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले०  
काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७६ ।

विशेष—बीच २ में से पत्र खाली १ बुलासीदास खत्री की बरत जो सं० १६८४ यिती मंगसिर सुदी ३  
को आगरे से ग्रहमदाबाद गई, का विवरण दिया हुआ है । इसके अतिरिक्त पद, गणेशछंद, लहरियामी की पूजा आदि है ।

५६८१. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ३२ । प्रा० ६२×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूरा ।  
वे० सं० १६३ ।

|                        |                  |        |
|------------------------|------------------|--------|
| १. राजुलपन्चीसी        | विनोदीलाल लालचंद | हिन्दी |
| २. नेमिनाथ का बारहमासा | ”                | ”      |
| ३. राजुलमंगल           | ×                | ×      |

प्रारम्भ—

तुम नीकस भवन सुढाढे, जब कमरी भई बरागी ।

प्रभुजी हमने भी ले चालो साथ, तुम विन नहीं रहे विन रात ।

अन्तिम—

भाषा दोनु ही मुकती मिलाना, तहां फेर न होय भावागवना ।

राजुल अटल मुषडी नोहाइ, तिहां राणी नही छै कोई,

सोये राजुल मंगल गावत, मन बेछित फल पावत ॥१८॥

इति श्री राजुल मंगल संपूर्ण ।



५६८२. गुटका सं० ३४ । पत्र सं० १६० । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३३ ।

विशेष—पूजा, स्तोत्र एवं टीकम की चतुर्विध कथा है ।

५६८३. गुटका सं० ३५ । पत्र सं० ४० । आ० ५×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३४ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ है ।

५६८४. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० २४ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल स० १७७६ काष्ठण बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २३५ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र एवं कल्याण मंदिर संस्कृत और भाषा है ।

५६८५. गुटका सं० ३७ । पत्र सं० २१३ । आ० ५×७ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पूजा, स्तोत्र, जैन शतक तथा पदो का संग्रह है ।

५६८६. गुटका सं० ३८ । पत्र सं० ५६ । आ० ७×४ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा स्तोत्र । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४२ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

५६८७. गुटका सं० ३९ । पत्र सं० ५० । आ० ७×४ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४३ ।

|                        |            |         |       |
|------------------------|------------|---------|-------|
| १. श्रावकप्रतिक्रमण    | ×          | प्राकृत | १-१४  |
| २. जयतिहुवरास्तोत्र    | अभवदेवमूरि | "       | १५-१६ |
| ३. अजितशान्तिजनस्तोत्र | ×          | "       | २०-२५ |
| ४. श्रीवंतत्रयस्तोत्र  | ×          | "       | २६-३२ |

अन्य स्तोत्र एवं गीतमरासा आदि पाठ है ।

५६८८. गुटका सं० ४० । पत्र सं० २५ । आ० ५×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४४ ।

विशेष—सामायिक पाठ है ।

५६८९. गुटका सं० ४१ । पत्र सं० ५० । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४६ ।

विशेष—हिन्दी पाठ संग्रह है ।

गुटका-संघद ]

१७५५

५६६० गुटका सं० ४२। पत्र सं० २०। भा० ५×४ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४७।

विशेष-सामायिक पाठ, कल्याणमन्दिरस्तोत्र एव जिन मन्त्रीसी है।

५६६१. गुटका सं० ४३। पत्र सं० ४८। भा० ५×४ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४८।

५६६२ गुटका सं० ४४। पत्र सं० २५। भा० ६×४ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४९।

विशेष-ज्योतिष सम्बन्धी सामग्री है।

५६६३. गुटका सं० ४५। पत्र सं० १८। भा० ८×५ इ०। भाषा हिन्दी। विषय-गणित। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २५०।

५६६४. गुटका सं० ४६। पत्र सं० १७७। भा० ७×५ इ०। ले० काल सं० १७५४। पूर्ण। वे० सं० २५१।

|                                |              |                 |         |
|--------------------------------|--------------|-----------------|---------|
| १. भक्तामरस्तोत्र भाषा         | ब्रह्मपरराज  | हिन्दी गद्य     | १-३४    |
| २. इष्टोपदेश भाषा              | ×            | "               | ३४-५२   |
| ३. सम्बोध संवासिका             | ×            | प्राकृत संगृह्य | ५३-७१   |
| ४. सिन्दूरप्रकरण               | बनारसोदास    | हिन्दी          | ७२-९२   |
| ५. चरवा                        | ×            | "               | ९२-१०३  |
| ६. योगसार दोहा                 | गोर्गाम्भदेव | "               | १०४-१११ |
| ७. श्रव्यसंग्रह गाथा भाषा सहित | ×            | मार्तल हिन्दी   | ११२-१३३ |
| ८. अन्तिपर्यवाशिका             | शिशुवनचन्द्र | "               | १०४-१४७ |
| ९. जत्रदी                      | रूपचन्द्र    | "               | १४८-१५४ |
| १०. "                          | दरिगह        | "               | १५५-१६६ |
| ११. "                          | रूपचन्द्र    | "               | १५७-१६२ |
| १२. पद                         | "            | "               | १६४-१६९ |
| १३. श्राव्यसंबोध जयमाल आदि     | ×            | "               | १७०-१७७ |

५६६५ गुटका सं० ४७। पत्र सं० १६। भा० ५×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २५४।

५६६६. गुटका सं० ४८ । पत्र सं० १०० । आ० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७०५ पूर्ण । वे० सं० २५५ ।

विशेष—शास्त्रियभारकथा ( भाऊ ) विरहमंजरी ( नन्ददास ) एवं धार्मिक पुस्तकें हैं ।

५६६७. गुटका सं० ४९ । पत्र सं० ४-११६ । आ० ५×४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५७ ।

विशेष--सामान्य पाठों का संग्रह है ।

• ५६६८. गुटका सं० ५० । पत्र सं० १८ । आ० ५×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५८ ।

विशेष—पदो एवं सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६६९. गुटका सं० ५१ । पत्र सं० ४७ । आ० ८×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५९ ।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ के पाठों का संग्रह है ।

६०००. गुटका सं० ५२ । पत्र सं० ६८ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० सं० १७२५ भावना बुद्धी २ । पूर्ण । वे० सं० २६० ।

विशेष—समयसार नाटक तथा बनारसीविलास के पाठ हैं ।

६००१. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० २२८ । आ० ६×७ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७५२ । पूर्ण । वे० सं० २६१ ।

|                |           |        |      |
|----------------|-----------|--------|------|
| १. समयसार नाटक | बनारसीदास | हिन्दी | १-६१ |
|----------------|-----------|--------|------|

विशेष—बिहारीदास के पुत्र नैनसी के पठनार्थ सदाराम ने लिखा था ।

|               |                    |        |       |
|---------------|--------------------|--------|-------|
| २. सोताचरित्र | रामचन्द्र ( बालक ) | हिन्दी | १-१३७ |
|---------------|--------------------|--------|-------|

|       |             |   |  |
|-------|-------------|---|--|
| ३. पद | कवि संतीदास | " |  |
|-------|-------------|---|--|

|                 |        |   |  |
|-----------------|--------|---|--|
| ४. ज्ञानस्वरोदय | चरणदास | " |  |
|-----------------|--------|---|--|

|               |   |   |  |
|---------------|---|---|--|
| ५. षट्पचासिका | × | " |  |
|---------------|---|---|--|

६००२. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ५८ । आ० ४×३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८२७ जेठ बुद्धी १३ । पूर्ण । वे० सं० २६२ ।

|            |        |      |
|------------|--------|------|
| १. स्वरोदय | हिन्दी | १-२७ |
|------------|--------|------|

विशेष—उमा महेश संवाद में से है ।

२. पंचाम्यामी

”

२८-५८

बिसेष—कोटपुतली वास्तव्य श्रीबन्तलाल फकीरचन्द के पठनार्थ लिखी गई थी ।

६००३. गुटका सं० ५५ । पत्र सं० ७-१२६ । भा० ५३×३३ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल

× । पूर्ण । वे० सं० २७२ ।

|                   |             |        |       |
|-------------------|-------------|--------|-------|
| १. धनन्त के छप्पय | भ० धर्मचन्द | हिन्दी | १४-२० |
| २. पद             | विनोदीलाल   | ”      |       |
| ३. पद             | जगताराम     | ”      |       |

( नेमि रंगीलो छवीलो हटीलो चटकीले मुगति बधु संग मिलो )

|  |               |         |               |
|--|---------------|---------|---------------|
| ४. सरस्वती चूर्ण का मुसला                  | ×             | ”       |               |
| ५. पद— प्रात उठी ले गौतम नाम जिम मन        |               |         |               |
| वांछित सींभे काम ।                         | कुमुदचन्द     | हिन्दी  |               |
| ५. जीव वेलडी                               | देवीदास       | ”       |               |
| ( सतगुर कहत मुनो रे भाई यो संसार भ्रसारा ) |               | ”       | २१ पद्य हैं । |
| ७. नारीरासो                                | ×             | ”       | ३१ पद्य हैं । |
| ८. चेतावनी गीत                             | नाथु          | ”       |               |
| ९. जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र                   | भ० जिराचन्द्र | संस्कृत |               |
| १०. महावीरस्तोत्र                          | भ० धम्मरकीति  | ”       |               |
| ११. नेमिनाथ स्तोत्र                        | भ० क्षालि     | ”       |               |
| १२. पद्मावतीस्तोत्र                        | ×             | ”       |               |
| १३. षट्मल चरचा                             | ×             | ”       |               |
| १४. धाराधनत्सार                            | बिनदास        | हिन्दी  | ३९ पद्य हैं । |
| १५. बिनती                                  | ”             | ”       | २० पद्य हैं । |
| १६. राजुल की सज्जाम                        | ”             | ”       | ३७ पद्य हैं । |
| १७. झूलना                                  | गंगादास       | ”       | १२ पद्य हैं । |
| १८. ज्ञानपैडी                              | मनोहरदास      | ”       |               |
| १९. धावकाक्रिया                            | ×             | ”       |               |

विशेष—विभिन्न कवित्त एवं भीतराग स्तोत्र प्रादि हैं ।

६००४. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० १२० । श्रा० ४३×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० २७३ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६००५. गुटका सं० ५७ । पत्र सं० ३-८८ । श्रा० ६३×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १८४३ चैत बुदी १४ । श्रपूर्वा । वे० सं० २७४ ।

विशेष—भक्तारस्तोत्र, स्तुति, कल्याणमन्दिर भाषा, धातिपाठ, तीन चौबीसी के नाम, एवं देवा पूजा प्रादि है

६००६. गुटका सं० ५८ । पत्र सं० ५६ । श्रा० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७६ ।

१. तीसचौबीसी

×

हिन्दी

२. तीसचौबीसी चौपई

श्याम

,,

२० काल १७४६ चैत सुदी ५

ले० काल सं० १७४६ कार्तिक बुदी ५

अन्तिल—नाम चौपई ग्रन्थ यह, जोरि करी कवि स्याम ।

जेसराज सुल ठोलिया, जोवनपुर तस धाम ॥२१६॥

सतरासै उनवास मे, पूरन ग्रन्थ सुभाय ।

चैत्र उजाली पंचमी, विजे स्कन्ध नृपराज ॥२१७॥

एक वार जे सरदहै, श्रयवा करिसि पाठ ।

नरक नीच गति कै विषे, गाढे जडे कपाट ॥२१८॥

॥ इति श्री तीस चोइसो जी की चौपई ॥

६००७. गुटका सं० ५९ । पत्र सं० ५२ । श्रा० ६×४ इ० । भाषा—संस्कृत प्राकृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६३ ।

विशेष—तीनचौबीसी के नाम, भक्तामर स्तोत्र, पंचरत्न परीक्षा की गाथा, उपदेवा रत्नमाला की गाथा प्रादि है ।

६००८. गुटका सं० ६० । पत्र सं० ३४ । श्रा० ६×८ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १९४३, पूर्ण । वे० सं० २९३ ।

१. समन्तभद्रकथा

जोधराज

हिन्दी

१० काल १७२२ वैशाख बुदी ७

|                                  |   |        |
|----------------------------------|---|--------|
| २. भावकों की उत्पत्ति तथा ८४ गीत | × | हिन्दी |
| ३. सामुद्रिक पाठ                 | × | "      |

अभितम—सद्युन ध्वलन सुमत सुम सब जनकं सुल देत ।

भाषा सामुद्रिक रच्यो, सजन जनो के हेत ॥

६००६. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० ११-५८ । आ० ८३×६६ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १६१६ । अपूर्णा । वै० सं० २६६ ।

विशेष—विरहमान तीर्थङ्कर जकडी (हिन्दी) दशलक्षण, रत्नत्रय पूजा (संस्कृत) पंचमेरु पूजा (सुधरदास) नन्दीश्वर पूजा जयमाल (संस्कृत) भ्रमन्तजिन पूजा (हिन्दी) चमत्कार पूजा (स्वरूपचन्द) (१६१६), पंचकुमार पूजा आदि है ।

६०१०. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १६ । आ० ८३×६६ इ० । ले० काल× । पूर्णा । वै० सं० २६७ ।

विशेष—हिन्दी पदो का संग्रह है ।

६०११. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० १६ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—संग्रह ।

ले० काल × । पूर्णा । वै० सं० ३०८ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह एवं ज्ञानस्वरोदय है ।

६०१२. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ३६ । आ० ६×७ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्णा ।

वै० सं० ३२५ ।

विशेष—( १ ) कवित्त पद्याकर तथा अन्य कवियों के ( २ ) चौदह विद्या तथा कारखाने जात के नाम ( ३ ) भामिने के राजाश्रो का वशावली, ( ४ ) मनोहरपुरा की पीठियों का वर्णन, ( ५ ) खंडेला की वंशावली, ( ६ ) खंडेलवाली के गीत, ( ७ ) कारखानो के नाम, ( ८ ) भामिने राजाश्रो का राज्यकाल का विवरण, ( ९ ) विल्ली के बादशाहो पर कवित्त आदि है ।

६०१३. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ४२ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × ।

पूर्णा । वै० सं० ३२६ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

६०१४. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ११-३२ । आ० ७×४ इ० भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल

× । अपूर्णा । वै० सं० ३२७ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

६०१५. गुटका सं० ६७। पत्र सं० ५२। भा० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×।

पूर्णा। वे० सं० ३२५।

विशेष—कवित्त एवं आयुर्वेद के मुसल्लों का संग्रह है।

६०१६. गुटका सं० ६८। पत्र सं० २६। भा० ३२×४२ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। ले०

काल ×। पूर्णा। वे० सं० ३३०।

विशेष—पदों एवं कविताओं का संग्रह है।

६०१७. गुटका सं० ६९। पत्र सं० ८४। भा० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्णा।

वे० सं० ३३२।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है।

६०१८. गुटका सं० ७०। पत्र सं० ४०। भा० ६२×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्णा।

वे० सं० ३३३।

विशेष—पदों एवं पूजाओं का संग्रह है।

६०१९. गुटका सं० ७१। पत्र सं० ९८। भा० ४२×३२ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-कामशास्त्र।

ले० काल ×। पूर्णा। वे० सं० ३३४।

६०२०. गुटका सं० ७२। स्फुट पत्र। वे० सं० ३३६।

विशेष—कर्मों की १४८ प्रकृतियाँ, इष्टधर्तीसी एवं जोधराज पञ्चीसी का संग्रह है।

६०२१. गुटका सं० ७३। पत्र सं० २८। भा० ८२×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्णा।

वे० सं० ३३७।

विशेष—ब्रह्मविलास, चौबीसदण्डक, मार्गशास्त्रविधान, अकलङ्काष्टक तथा मन्मन्त्रपञ्चीसी का संग्रह है।

६०२२. गुटका सं० ७४। पत्र सं० ३६। भा० ८२×४ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। ले०

काल ×। पूर्णा। वे० सं० ३३८।

विशेष—विनितियाँ, पद एवं अन्य पाठों का संग्रह है। पाठों की संख्या १९ है।

६०२३. गुटका सं० ७५। पत्र सं० १४। भा० ५×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १९५९।

पूर्णा। वे० सं० ३३९।

विशेष—नरक दुःख वर्णन एवं नेमिनाथ के १२ अवों का वर्णन है।

६०२४. गुटका-सं० ७६। पत्र सं० २५। भा० ८३×६ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण।  
वे० सं० ३४२।

विशेष—भ्रायुर्वेदिक एवं भूतानी मुसकों का संग्रह है।

६०२५. गुटका सं० ७७। पत्र सं० १४। भा० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। ले०  
काल ×। वे० सं० ३४१।

विशेष—जोगीरासा, पद एवं वित्तियों का संग्रह है।

६०२६. गुटका-सं० ७८। पत्र सं० १६०। भा० ६×५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×।  
पूर्ण। वे० सं० ३५१।

विशेष—सामान्य-पूजा पाठ संग्रह है। प्रष्ठ ६४-१४६ तक वशीधर कृत द्रव्यसंग्रह की वालावबोध टीका  
है। टीका हिन्दी गद्य में है।

६०२७. गुटका सं० ७९। पत्र सं० ८६। भा० ७×४ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पद-संग्रह। ले०  
काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३५२।

## ज भण्डार [ शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, जयपुर ]

६०२८. गुटका सं० १। पत्र सं० २५८। भा० ६×५ इ०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है। लक्ष्मीसेन का चितामणिस्तवन तथा देवेन्द्रकीर्ति कृत प्रतिमासान्त  
चतुर्विंशती पूजा है।

६०२९. गुटका सं० २। पत्र सं० ५४। भा० ६×५ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं०  
१८४३। पूर्ण।

विशेष—जीवराम कृत पद, भक्तामर स्तोत्र एवं सामान्य पाठ संग्रह है।

६०३०. गुटका सं० ३। पत्र सं० ५३। भा० ६×५। भाषा संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण।

जिनयम विधान, श्रद्धिक पाठ, गणेश्वर बलय पूजा, श्रद्धि मंडल पूजा, तथा कर्मदहन पूजा के पाठ हैं।

६०३१. गुटका सं० ४। पत्र सं० १२४। भा० ८×७ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं०  
१६२६। पूर्ण।

विशेष—नित्य पूजा पाठ के अतिरिक्त निम्न पाठों का संग्रह है—



|                          |                |         |
|--------------------------|----------------|---------|
| २. सूडता जनांकुश इत्यादि | ×              | ११      |
| ३. जेपनक्रिया            | ×              | ११      |
| ४. समयसार                | भा० कुन्वकुन्व | प्राकृत |
| ५. आदित्यदारकथा          | भाऊ            | हिन्दी  |
| ६. पोसहरास               | भानभूषण        | ११      |
| ७. धर्मतरुगीत            | जिनदास         | ११      |
| ८. बहुगतचोपई             | ×              | ११      |
| ९. संसारघटनी             | ×              | ११      |
| १०. चेतनगीत              | जिनदास         | ११      |

सं० १६२६ मे अंवावती मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६०३२. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ७५ । आ० ६×५ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल सं० १६८२ । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्रो का संग्रह है ।

सं० १६८२ में नागौर मे बाई ने दिक्षा ली उसका प्रतिज्ञा पत्र भी है ।

६०३३. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २२ । आ० ६×५ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । ले० काल ×  
वे० सं० ६ ।

|                         |         |        |   |
|-------------------------|---------|--------|---|
| १. नेमीश्वर का बारहमासा | खेतसिंह | हिन्दी | ८ |
| २. आदीश्वर के दशभव      | गुणचंद  | ११     |   |
| ३. शीरहीर               | ×       | ११     |   |

६०३४. गुटका सं० ७ । पत्र सं० १७७ । आ० ६×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—नित्यनैमित्तक पाठ, सुभाषित ( भूधरदास ) तथा नाटक समयसार ( बनारसीदास ) हैं ।

६०३५. गुटका सं० ८ । पत्र सं० १४६ । आ० ६×५ इ० । भाषा—संस्कृत, अपभ्रंश ।

ले० काल × । पूर्ण ।

|                            |               |         |
|----------------------------|---------------|---------|
| १. चिन्तामणिपादवैनाथ जयमाल | सोम           | अपभ्रंश |
| २. ऋषिमंडलपूजा             | मुनि गुणवंदि. | संस्कृत |

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह भी है ।

६०३६. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २० । प्रा० ६×४ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह, लोक का वर्णन, अकृत्रिम बैत्यालय वर्णन, स्वर्गनरक दुःख वर्णन, चारों गतियों की श्रायु श्रादि का वर्णन, इष्ट धर्तीसी, पञ्चमङ्गल, श्राधोचना पाठ श्रादि हैं ।

६०३७. गुटका सं० १० । पत्र सं० ३८ । प्रा० ७×६ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—सामायिक पाठ, दर्शन, कल्याणमंदिर स्तोत्र एवं सहस्रनाम स्तोत्र है ।

६०३८. गुटका सं० ११ । पत्र सं० १६६ । प्रा० ४×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

|   |           |   |
|---|-----------|---|
| १. अक्षामर स्तोत्र ढब्वाटीका              | ×         | संस्कृत हिन्दी ले० काल सं० १७२७ नैतमुदी ५ |
| २. पद— हर्षकीर्ति                         | ×         | ”   |
| ( जिला जिला जप जीवडा तीन भवन में सारोजी ) |           |   |
| ३. पंचसुख श्री जयमाल                      | ३० रायगढ़ | ” ले० काल सं० १७२६                        |
| ४. कवित्त                                 | ×         | ”   |
| ५. हितोपदेश टीका                          | ×         | ”   |
| ६. पद—तै नर भव पाय कहा कियो               | रूपचन्द   | हिन्दी                                    |
| ७. जकड़ी                                  | ×         | ”   |
| ८. पद—मोहिनी बहकायो सब जग मोहनी           | मनोहर     | ”   |

६०३९. गुटका सं० १२ । पत्र सं० १३८ । प्रा० १०×८ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । निम्न पाठ है—

क्षेत्रपाल पूजा ( संस्कृत ) क्षेत्रपाल जयमाल ( हिन्दी ) नित्यपूजा, जयमाल ( संस्कृत हिन्दी ) सिद्धपूजा ( सं० ) षोडशकारण, दशलक्षण, रत्नत्रयपूजा, कलिकुण्डपूजा श्रीर जयमाल ( प्राकृत ) नंदीश्वरपत्तिपूजा भवन्तचतु-दशोपूजा, अक्षयनिधिपूजा तथा पादबंधनास्तोत्र, श्रायुर्वेद ग्रंथ ( संस्कृत ले० काल सं० १६८१ ) तथा कई तरह की रेखाओं के चित्र भी हैं, राक्षसक श्रादि भी विधे हुये हैं ।

६०४०. गुटका सं० १३ । पत्र सं० २८३ । प्रा० ७×५ इ० । ले० काल सं० १७३८ । पूर्ण ।

गुटके में मुख्यतः निम्न पाठ है—

|                    |               |        |
|--------------------|---------------|--------|
| १. जिनस्तुति       | सुमतिकीर्ति   | हिन्दी |
| २. ब्रह्मस्थानकगीत | ३० श्री बद्धन | ”      |

अन्तिम-मण्डित की बर्द्धन ब्रह्म एह वाजी भविष्यण सुख करेह

- |   |            |         |
|---|------------|---------|
| ३. सम्यक्त्व जयमाल  | ×          | अपभ्रंश |
| ४. परमार्थगीत   | रूपचन्द    | हिन्दी  |
| ५. पद- छहो मेरे जीय तू कत भरमायो, तू<br>चेतन यह जड परम है यामै कहा लुभायो । मनराम   |            | ”       |
| ६. मेघकुमारगीत  | पूनी       | ”       |
| ७. मनोरथमाला<br>अचला तिहि तरणा गुण गाइल्यो,   | अचलकीर्ति  | ”       |
| ८. सहेलीगीत   | मुन्दर     | हिन्दी  |
| सहेल्यो हे यो संसार असार भो चित में या उपनी जी सहेल्यो है<br>ज्यो रांचै सो गवार तन घन जोवन थिर नही ।  |            |         |
| ९. पद-  | मोहन       | हिन्दी  |
| जा दिन हँस चलै घर छोडि, कोई न साथ लडा है गोडि ॥<br>जरा जरा कै मुख ऐसी वाणी, बडो वेग मिलो अन पाणी ॥<br>अग बिडहूँ उनगै सरीर, खोसि खोसि ले तनक चीर ।<br>चारि जरा जङ्गल मे जाहि, घर मैं घडी रहण दे नाहि ।<br>जबता बूढ विडा मे वास, यो मन मेरा मया उदास ।<br>काया माया भूडी जानि, मोहन होऊ भजन परमाण ॥६॥ |            |         |
| १०. पद-   | हर्षकीर्ति | हिन्दी  |
| नहि छोडी हो जिनराज नाम, मोहि और मिथ्यात से क्या बने काम ।   |            |         |
| ११. ”   | मनोहर      | हिन्दी  |
| मेद तो जिन साहिब की कीजै नरभव लाहो लीजै   |            |         |
| १२. पद-   | जिणदास     | हिन्दी  |
| १३. ”   | स्यामदास   | ”       |
| १४. मोहविधेकपुढ   | बनारसीदास  | ”       |
| १५. द्वादशाभुषेभा   | सूरज       | ”       |

|                     |         |   |
|---------------------|---------|---|
| १६. द्वावधानुप्रेसा | ×       | " |
| १७. विनती           | रूपचन्द | " |

जै जै जिन देवनि के देवा, सुर नर सकल करै तुम सेवा ।

|                                  |            |        |                 |
|----------------------------------|------------|--------|-----------------|
| १८. पंचेन्द्रयवेनि               | ठमकुरसी    | हिन्दी | २० काल सं० १५८५ |
| १९. पञ्चगतिवेनि                  | हर्षकीर्ति | " "    | " " १८९३        |
| २०. परमार्थ हिबोलना              | रूपचन्द    | "      |                 |
| २१. पंथीगीत                      | छीहल       | "      |                 |
| २२. मुक्तिपीहरगीत                | ×          | "      |                 |
| २३. पद-प्रब मोहि घौर कछु न मुहाय | रूपचन्द    | "      |                 |
| २४. पदसंग्रह                     | बनारसीदास  | "      |                 |

६०४१. गुटका सं० १४ । पत्र सं० १०९-२३७ । प्रा० १०×७ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × ।

विशेष—स्तोत्र, पूजा एवं उसकी विधि दी हुई है ।

६०४२. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ४३ । प्रा० ७×५ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पद संग्रह । ले० काल × । पूर्ण ।

६०४३. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ५२ । प्रा० ७×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—सामान्य पाठ संग्रह । ले० काल × । पूर्ण ।

६०४४. गुटका सं० १७ । पत्र सं० १६६ । प्रा० १३×३ इ० । ले० काल सं० १६१३ ज्येष्ठ बुदा । पूर्ण ।

|                 |            |         |    |
|-----------------|------------|---------|----|
| १. छियालीस ठाणा | ब० राममल्ल | संस्कृत | १९ |
|-----------------|------------|---------|----|

विशेष—चौबीस तीर्थक्षुरों के नाम, नगर नाम, कुल, वंश, पंचकल्याणको की तिथि आदि विवरण है ।

|                     |   |                                     |    |
|---------------------|---|-------------------------------------|----|
| २. चौबीस ठाणा चर्चा | × | "                                   | २८ |
| ३. जीबसमाप्त        | × | प्राकृत ले० काल सं० १६१३ ज्येष्ठ ५९ |    |

विशेष—ब० राममल्ल ने देहली में प्रतिनिधि की थी ।

|                        |          |         |    |
|------------------------|----------|---------|----|
| ४. सुपय दोहा           | ×        | हिन्दी  | ८० |
| ५. परमात्म प्रकाश भाषा | प्रभुदास | "       | ९२ |
| ६. रत्नकरण्णभावकाचार   | समंतभद्र | संस्कृत | ९४ |

६०४५. गुटका सं० १८ । पत्र सं० १५० । प्रा० ७×२३ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

## ट भण्डार [ आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर ]

६०४६. गुटका सं० १ । पत्र सं० ३७ । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५०१ ।

|               |   |        |      |
|---------------|---|--------|------|
| १. मनोहरमंजरी | मनोहर मिश्र   | हिन्दी | १-२६ |
| प्रारम्भ—     | अथ मनोहर मंजरी, अथ नव जीवना लक्षणं ।<br>याके योवनु अंकुरयो, अंग अंग छवि धोर ।<br>सुनि सुखान नव योवना, कहत भेद द्वे ओर ॥   |        |      |
| अन्तिमः—      | सहलहाति अति रसमसो, बहु सुबाहु भपाठ (?)<br>निरलि मनोहर मजरी, रसिक शृङ्ग मंडरात ॥<br>सुनि सुजनि अभिमान तजि मन विचारि मुन बांध ।<br>कहा विरहु कित प्रेम रनु, तही होत दुख मोख ॥<br>बंध अत द्वे वीप के, अंक बीच आकास ।<br>करी मनोहर मंजरी, मकर चादनी ग्याम ॥<br>माधुर का हो मधुपुरी, बसन महोली पोरि ।<br>करी मनोहर मंजरी, अनूप रस सोरि ॥ |        |      |

इति श्र सक्ललोककृतमणिमयीविमंजरीनिकःनोराजितपदद्वन्द्वुदावनबिहारकारिलयाकटाकल्लटोपासक मनोहर मिश्र विरचिता मनोहरमंजरी समाप्ता ।

कुल ७४ पद्य हैं । सं० ७२ तक ही दिये दूये हैं । नायिका भेद वर्णन है ।

|               |   |        |       |
|---------------|---|--------|-------|
| २. फुटकर दोहा | × | हिन्दी | ३०-३६ |
|---------------|---|--------|-------|

विशेष— ७० दोहे हैं ।

|                   |   |   |    |
|-------------------|---|---|----|
| ३. आधुनिक नृत्यले | × | " | ३७ |
|-------------------|---|---|----|

६०४७. गुटका सं० २ । पत्र सं० २-५८ । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७६४ । अपूर्ण । वे० सं० १५०२ ।

|                  |        |        |              |       |
|------------------|--------|--------|--------------|-------|
| १. नाममजरी       | नंददास | हिन्दी | पद्य सं० २६१ | २-२५  |
| २. अनेकार्थमंजरी | "      | "      |              | २८-४० |

स्वामी खेमदास ने प्रतिलिपि की थी ।

|            |         |    |       |
|------------|---------|----|-------|
| ३. कवित्त  | ×       | ३३ | ४१-४३ |
| ४. भोजरासो | उदयमानु | ३३ | ४३-४८ |

प्रारम्भ—

श्री गणेशाय नमः । दोहरा ।  
 कुंजर कर कुंजर करन कुंजर भानंद देव ।  
 सिधि समपन सत्त सूब सुतर कीजिय देव ॥ १ ॥  
 जगत जननि जग उच्चरन जगत हुँस धरधंग ।  
 भीन विचित्र बिरामकर हुँसासन सरधंग ॥ २ ॥  
 सूर शिरोमणि सूर सुत सूर टरें नहि भान ।  
 जहां लहां सुवन सुभ जिये तहां भूपति भोज वल्लान ॥ ३ ॥

अन्तिम—इति श्री भोजरासो को रासो उदैभानजी को कियो । लिखतं स्वामी खेमदास मिली काणुए सुदी ११ संवत् १७६५ । इसमें कुल १४ पद्य हैं जिनमें भोजरासो का वैभव व यश वर्णन किया गया है ।

|           |      |        |            |      |
|-----------|------|--------|------------|------|
| ५. कवित्त | टोबर | हिन्दी | कवित्त हैं | ४६-४ |
|-----------|------|--------|------------|------|

विशेष—ये महाराज टोबरमल के नाम से प्रसिद्ध थे और अकबर के मुमिकर विभाग के मंत्री थे ।

६०४८. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ११८ । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १७२६ । अपूर्ण । वे० सं० १५०३ ।

|                        |   |             |        |
|------------------------|---|-------------|--------|
| १. मायाब्रह्म का विचार | × | हिन्दी गद्य | अपूर्ण |
|------------------------|---|-------------|--------|

विशेष—प्रारम्भ के कई पद्य फटे हुये हैं गद्य का नमूना इस प्रकार है ।

“मामा काहे तै कहिये ब्रंभन्वो सबल है तातै माया कहिये । अकास काहे तै कहिये विद ब्रह्मांड का आदि आकार है तातै आकास कहिये । सुनी ( शून्य ) काहे तै कहिये—जब है तातै सुनी कहिये । सवती काहे तै कहिये सकल संसार को जीति रही है तातै सकती कहिये ।”

अन्तिम—एता माया ब्रह्म का विचार परम हंस का म्यान ब्रंभ जगीस संपूर्ण समाप्ता । श्रीशंकाचारीज कीरन्व्यते । विती असाठ सुदी १० स० १७२६ का हुकाम गुहाटी उर कोस दोइ देईवान चारण की पोथीस्ये उतारी पोथी सा..... न डोल्या साह नेवसी का बेटा..... कर महाराज श्री रघनाबस्यंचजी ।

|                |           |        |        |
|----------------|-----------|--------|--------|
| २ गोरक्षपदावली | गोरक्षनाथ | हिन्दी | अपूर्ण |
|----------------|-----------|--------|--------|

विशेष—करीब ६ पद्य हैं ।

म्हारा रँ बेरापी जोगी जोगणि संग न छावै जी ।

भान सरोवर मनस भुलती भावै गगन मड मंड मारैजी ॥

३. सतसई                      बिहारीलाल                      हिन्दी                      अपूर्णा                      ३-६५  
ले० काल सं० १७२५ माघ सुदी २ ।

विशेष—प्रारम्भ के १२ दोहे नहीं हैं । कुल ७१० दोहे हैं ।

४. वैद्यमनोत्सव                      नयनमुल                      ,,                      अपूर्णा ६७-११८  
६०४६. गुटका सं० ४ । पत्र सं० २५ । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । ले० काल सं० १८३६ पौष  
सुदी ७ । पूर्णा । वे० सं० १५०४ ।

विशेष—चारुष्य नीति का वर्णन है । श्रीचन्दजी गंगवान के पठनार्थ जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

६०५०. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ४० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८३१ । अपूर्णा । वे० सं०  
१५०५ ।

विशेष—विभिन्न कवियों के शृङ्गार के अष्टौ कवित है ।

६०५१. गुटका सं० ६ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×४ ६० । भाषा हिन्दी । २० काल सं० १६८८ ।  
ले० काल सं० १७६८ कार्तिक सुदी ६ । पूर्णा । वे० सं० १५०६ ।

विशेष—सुन्दरदास कुल सुन्दरशृङ्गार है । श्रेयदास गोधा मालपुरा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

६०५२. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ४५ । आ० ६×७ ३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८३१  
वैशाख बुदी ८ । अपूर्णा । वे० सं० १५०७ ।

१. कवित                      अग्र ( अग्रदास )                      हिन्दी                      अपूर्णा                      १-१०

विशेष—कुल ६३ पद्य है पर प्रारम्भ के ७ पद्य नहीं हैं । इनका छन्द कुण्डलिया सा लगता है एक छन्द  
निम्न प्रकार है—

आंधो बाटै जेवरी पाछै बछरा खाय ।

पाछै बछरा खाय कहत गुरु सीख न मानै ।

ग्यान पुरान मसाल छिनक मै घरम भुलानै ॥

करो विप्रलो रीत मृतग धन लेत न लाजै ।

गोच न समझै मीच परत विषया कै काजै ।

अगर जीव प्रादि तै यह बंध्योस करे उपाय ।

आंधो बाटै जेवरी पाछै बछरा खाय ॥१०॥

३. द्वादशानुप्रेक्षा

सोहट

हिन्दी

१७-२१

मे० काल सं० १८३१ वैशाख बुदी ८ ।

विशेष—१२ सवैये १२ कवित्त छप्पय तथा अन्त में १ दोहा इस प्रकार कुन २५ छंद हैं ।

अन्तिम—

अनुप्रेक्षा द्वादश मुनत, गयो तिमिर अज्ञान ।

अष्ट करम तसकर दुरे, उय्यो अगुनै मान ॥ २५ ॥

इति द्वादशानुप्रेक्षा संपूर्ण । मिती वैशाख बुदी ८ संवत् १८३१ दसकत देव करण का ।

४. कर्मपञ्चीसी

भारमल

हिन्दी

२१-२४

विशेष—कुल २२ पद्य हैं ।

अन्तिमपद्य—

करम आ तोर पंच महावरत अरुं जगू चौबीस जिरांदा ।

अरहंत ध्यान लैव अहूं साह लोयण बंदा ॥

प्रकृति पञ्चासी जाणिए कै करम पञ्चीसी जान ।

सूदर भारमल ..... स्वीपुर धान ॥ कर्म अति० ॥ २२ ॥

॥ इति कर्म पञ्चीसी संपूर्ण ॥

५. पद—( बासुरी दीजिये ब्रज नारि )

सूरदास

”

२६

६. पद—हम तो ब्रज को बसिबो ही तज्यो

”

”

२७-२८

ब्रज मे बसि वैरिणिए नू बंसुरी

७ श्याम बलीसी

श्याम

”

३७-४०

विशेष—कुल ३५ पद्य हैं जिनमे ३४ सवैये तथा १ दोहा हैः—

अन्तिम—

कृष्ण ध्यान चतु अष्ट मे श्रवणम मुनत प्रनाम ।

कहत श्याम कलमल कहु रहत न रञ्जक नाम ॥

८. पद—बिन माली जो लगानै बाग

मनराम

हिन्दी

४०

९. दोहा—कबीर भीशुन एक ही गुण है

कबीर

”

”

साख करोरि

१० फुटकर कवित्त

×

”

४१

११ जम्भूद्वीप सम्बन्धी पंच भेर का बर्णन

×

”

अपूर्व

४१-४५



६०५३. गुटका सं० ८ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×८ इ० । ले० काल सं० १७७६ भाषण बुदी ६ ।

पूर्णा । वे० सं० १५०८ ।

|                     |                 |                    |      |
|---------------------|-----------------|--------------------|------|
| १. कृष्णरामरिण वेलि | पृथ्वीराज राठीर | राजस्थानी डिंगल    | १-८५ |
|                     |                 | २० काल० सं० १६३७ । |      |

विशेष—ग्रंथ हिन्दी गद्य टीका सहित है । पहिले हिन्दी पद्य हैं फिर गद्य टीका दी गई है ।

|                                     |          |         |       |
|-------------------------------------|----------|---------|-------|
| २. विष्णु पंजर रक्षा                | ×        | संस्कृत | ८६    |
| ३. भजन (गढ बंका कैसे लीजे रे भाई)   | ×        | हिन्दी  | ८७-८८ |
| ४. पद—(बैठे नव निकुंज कुटीर)        | चतुर्भुज | "       | ८९    |
| ५. " (धुनिमुनि मुरली बन बाजे)       | हरीदास   | "       | "     |
| ६. " ( सुन्दर साबरो भावे चलयो सखी ) | नंददास   | "       | "     |
| ७. " ( बालगोपाल खैगन मेरे )         | परमानन्द | "       | "     |
| ८. " ( बन ते भावत गावत गौरी )       | ×        | "       | "     |

६०५४. गुटका सं० ६ । पत्र सं० ८५ । आ० ६×७ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्णा ।

वे० सं० १५०६ ।

विशेष—केवल कृष्णरामरिणी वेलि पृथ्वीराज राठीर कृत है । प्रति हिन्दी टीका सहित है । टीकाकार अज्ञात है । गुटका सं० ८ मे भाई हुई टीका से भिन्न है । टीका काल नहीं दिया है ।

६०५५. गुटका सं० १० । पत्र सं० १७०-२०२ । आ० ६×७ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × ।

प्रपूर्णा । वे० सं० १५११ ।

|           |                 |        |
|-----------|-----------------|--------|
| १. कवित्त | राजस्थानी डिंगल | १७१-७३ |
|-----------|-----------------|--------|

विशेष—शृङ्गार रस के सुन्दर कवित्त है । विरहिनी का वर्णन है । इसमें एक कवित्त छीहल का भी है ।

|                              |         |                |         |
|------------------------------|---------|----------------|---------|
| २. श्रीरामरिणकृष्णजी को रासो | तिपरदास | राजस्थानी पद्य | १७३-१८५ |
|------------------------------|---------|----------------|---------|

विशेष—इति श्री रामरिणी कृष्णजी को रासो तिपरदास कृत संपूर्णा ॥ संबद् १७३६ वर्षे प्रथम चैत्र मासे शुभ सुक्ल पले तियो दशमां बुधवासरे श्री मुकन्दपुर मध्ये लिखापितं साह सजन कोष्ठ साह लुराजी तत्पुत्र सजन साह श्रेष्ठ छाजूनी वाचनाय । निखतं व्यास जट्टना नाम्ना ।

|          |   |        |         |
|----------|---|--------|---------|
| ३ कवित्त | × | हिन्दी | १८६-२०२ |
|----------|---|--------|---------|

विशेष—सूधरदास, सुखराम, विहारो तथा केशवदास के कवित्तों का संग्रह है । ४७ कवित्त हैं ।

६०३६. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ४६ । भा० १०×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

वे० सं० १५१४ ।

१. रसिकप्रिया केसावधेव हिन्दी अपूर्ण १-४८  
ले० काल सं० १७६१ जेष्ठ सुदी १४

२. कवित × ” ४६

६०३७. गुटका सं० १२ । पत्र सं० २-२६ । भा० ५×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण  
विशेष—निम्न पाठ उल्लेखनीय है ।

१. स्नेहलीला जनमोहन हिन्दी ६-१५

अन्तिम—या लीला ब्रज वास की गोपी कृष्ण सनेह ।

जनमोहन जो गाव ही सो पावे नर देह ॥११६॥

जो गावे सोखे मुने भाव भक्ति करि हेत ।

रसिकराय पूरण कृपा मन वाञ्छित फल वेत ॥१२०॥

॥ इति स्नेहलीला संपूर्ण ॥

विशेष—ग्रन्थ मे कृष्ण ऊधव एवं ऊधव गोपी संबाद है ।

६०५८. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ७६ । भा० ८×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० × ।

पूर्ण । वे० सं० १५२२ ।

१. रागमाला श्याम मिश्र हिन्दी १-१२

१० बाल सं० १६०२ फागुण बुदी १० । ले० काल सं० १७४६ सावन सुदी १५ ।

विशेष—ग्रन्थ के आदि में कासिमला का वर्णन है । श्रव का दूसरा नाम कासिम रसिक विलास भी है ।

अन्तिम—सबद् सीरह से बरए ऊपर बीते शेष ।

फागुन बदी सनो बसी सुनो मुनी जन लोच ॥

पोधी रबी सहौर स्याम भ्रमरे नवर के ।

राजघाट है ठौर पुत्र चतुर्भुज मिश्र के ॥

इति रागमाला ग्रन्थ श्याम मिश्र कृत संपूर्ण । संवत् १७४६ वर्षे सावण सुदी १५ सोववार पोधी तेरवठ

प्रगने हिंडोरा का में साह गोरधनदास भ्रमबाल की पोधी से लिखी लिखत मीजीराम ।

२. द्वादशमासा (बारहमासा) महाकविराजसुन्दर हिन्दी

विशेष—कुल २४ कवित्त है। प्रत्येक मास का बिरहिनी वर्णन किया गया है। प्रत्येक कवित्त में सुन्दर शब्द हैं। सम्भव है रचना सुन्दर कवि की है।

३. नक्षत्रिखवर्णन केसवदास हिन्दी १४-२०

मे० काल सं० १७४६ माह बुदी १४।

विशेष—शेरगढ में प्रतिलिपि हुई थी।

४. कवित्त— गिरधर, मोहन सेवग आदि के हिन्दी

६०५६. गुटका सं० १४। पत्र सं० ३६। भा० ५×५ इ०। भाषा—हिन्दी। मे० काल ×। पूर्ण।

वे० सं० १५२३।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है।

६०६०. गुटका सं० १५। पत्र सं० ३६। भा० ५×६ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय—पद एवं पूजा।

मे० काल सं० १८३३ आसोज बुदी १३। पूर्ण। वे० सं० १५२४।

१. पदसंग्रह हिन्दी १-५८

विशेष—जिनदास, हरीसिंह, बनारसीदास एवं रामदास के पद हैं। राग रागिनियों के नाम भी दिये हुये हैं।

२. चौबीसतीर्थकुरूपूजा रामचन्द्र हिन्दी ५८-१६८

६०६१. गुटका सं० १६। पत्र सं० १७१। भा० ७×६ इ०। भाषा—हिन्दी संस्कृत। मे० काल सं० १६४७। अपूर्ण। वे० सं० १५२५।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठो का संग्रह है।

१. बिरदावली × संस्कृत

विशेष—पूरी भट्टारक पट्टावली दी हुई है।

२. ज्ञानबावनी मतिशेखर हिन्दी ६८-१०२

विशेष—रचना प्राचीन है। ५३ पद्यों में कवि ने अक्षरों की बावनी लिखी है। मतिशेखर की लिखी हुई अष्टा अक्षरों के जिसका रचनाकाल सं० १५७४ है।

३. त्रिभुवन की विनती गङ्गादास

विशेष—इसमें १०१ पद्य हैं जिसमें ६३ शलाका पुरुषों का वर्णन है। भाषा गुजराती लिपि हिन्दी है।

६०६२. गुटका सं० १७। पत्र सं० ३२-७०। भा० ५×६ इ०। भाषा—हिन्दी। मे० काल सं० १८४७। अपूर्ण। वे० सं० १५२६।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०६३. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ७० । प्रा० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८६४

ज्येष्ठ बुदी ५५ । पूर्ण । वे० सं० १५२७ ।

१. चतुर्विंशकथा टोकम हिन्दी २० काल सं० १७१२  
विशेष—३५७ पद्य हैं ।

२. कलियुग की कथा द्वारकादास ”  
विशेष—पंचेवर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३. फुटकर कवित्त, रागों के नाम, रागमाला के दोहे तथा विनोदोलाल कृत चौबीसी स्तुति है ।

४. कपडा माला का दूहा सुन्दर राजस्थानी  
विशेष—इसमें ३१ पद्यां में कवि ने नायिका को भ्रमण २ कपड़े पहिना कर विरह जागृत किया तथा फिर पिय मिलन कराया है । कविता सुन्दर है ।

६०६४. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ५७-३०५ । प्रा० ६ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—संग्रह । ले० काल सं० १६६० द्वि० वैशाख सुदी २ । अपूर्णा । वे० सं० १५३० ।

१. भविष्यदत्तचौपई ब्र० रायभल्ल हिन्दी अपूर्णा ५७-१०६

२. श्रीपालचरित्र परिमल्ल ” १०७-२८३

विशेष—कवि का पूर्ण परिचय प्रशस्ति में है । अकबर के शासन काल में रचना की गई थी ।

३ धर्मरास ( श्रावकाचाररास ) × ” २८३-२६८

६०६५. गुटका सं० २० । पत्र सं० ७३ । प्रा० ६×६ $\frac{३}{४}$  इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८३६ ज्येष्ठ बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १५३१ ।

विशेष—स्तोत्र पूजा एवं पाठों का संग्रह है । बनारसीदास के कवित्त भी है । उसका एक उदाहरण निम्न है:—

कपडा की रीस जायै हैवर की हीस जायै ।

न्याय भी नवेरि जायै राज रीस माणिवौ ॥

राग तो छत्तीस जायै लविए बलीस जायै ।

जूँप चतुराई जायै महल में माणिवौ ॥

बात जायै संवाद जायै खूबी खसबोई जायै ।

सगपग साधि जायै अर्थ को जाणिवौ ।

कहत बखारसीदास एक जिन गाँव बिना ।

..... ब्रह्म सब जाणिवौ ॥

६०६६. गुटका सं० २१ । पत्र सं० १६४ । भा० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय संग्रह ।

ले० काल सं० १८६७ । अपूर्ण । वे० सं० १५३२ ।

विशेष—सामान्य स्तोत्र पाठ संग्रह है ।

६०६७. गुटका सं० २२ । पत्र सं० ४८ भा० १०×७ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—संग्रह ।

ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५३३ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पदो का संग्रह है ।

६०६८. गुटका सं० २३ । पत्र सं० १५-६२ । भा० ५×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८०८ । अपूर्ण । वे० सं० १५३४ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है:—भक्तामर भाषा, परमज्योति भाषा, भादिनाथ की बीनती, ब्रह्म जिनदास एवं कनककीर्ति के पद, निर्वाणकाण्ड गाथा, त्रिभुवन की बीनती तथा मेघकुमारचौपई ।

६०६९. गुटका सं० २४ । पत्र सं० २० । भा० ६×४ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल १८८० । अपूर्ण । वे० सं० १५३५ ।

विशेष—जेन नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

६०७०. गुटका सं० २५ । पत्र सं० २४ । भा० ५×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५३६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है:—विषाणहार भाषा ( भञ्जलकीर्ति ) भूगलचौकीसी भाषा, भक्तामर भाषा ( हेमराज )

६०७१. गुटका सं० २६ । पत्र सं० ६० । भा० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८७३ । अपूर्ण । वे० सं० १५३७ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६०७२. गुटका सं० २७ । पत्र सं० १५-१२० । भाषा—संस्कृत । ले० काल १८६५ । अपूर्ण । वे० सं० १५३८ ।

विशेष—स्तोत्र संग्रह है ।

६०७३. गुटका सं० २८ । पत्र सं० १५० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७५३ । अपूर्ण । वे० सं० १५३९ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है । सं० १७५३ अष्टादश सुदी ३ पु० मी० नन्दपुर गंगाजी का तट । दुर्गादास बांदवाई की पुस्तक से मन्तरूप ने प्रतिलिपि की थी ।

६०७४. गुटका सं० २६ । पत्र सं० १६ । प्रा० ५×६ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—पूजापाठ ।  
ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १५४० ,

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६०७५. गुटका सं० ३० । पत्र सं० १५५ । प्रा० ६×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।  
वै० सं० १५४१ ।

|                   |            |        |                               |
|-------------------|------------|--------|-------------------------------|
| १. अविष्यदत चौपाई | ब० रायमल्ल | हिन्दी | १-७६                          |
|                   |            |        | २० सं० १६३३ कार्तिक सुदी १४ । |

विशेष—फतेराम बज ने जयपुर में सं० १८१२ अषाढ सुदी १० को प्रतिलिपि की थी ।

|                          |      |        |       |
|--------------------------|------|--------|-------|
| २. वीरजिगान्द की संभावनी | पूनी | हिन्दी | ७७-७९ |
|--------------------------|------|--------|-------|

विशेष—भेषकुमार गीत है ।

|                      |      |   |       |
|----------------------|------|---|-------|
| ३. अठारह नाते की कथा | लोहट | " | ८०-८३ |
|----------------------|------|---|-------|

|               |           |   |                 |
|---------------|-----------|---|-----------------|
| ४. रविवार कथा | खुशालचन्द | " | २० काल सं० १७७५ |
|---------------|-----------|---|-----------------|

विशेष—लिखतं फतेराम ईसरदास बज वासी सांगानेर का ।

|                 |           |   |  |
|-----------------|-----------|---|--|
| ५. ज्ञानपञ्चीसी | बनारसीदास | " |  |
|-----------------|-----------|---|--|

|                            |          |   |    |
|----------------------------|----------|---|----|
| ६. चौबीसतीर्थकरों की बंदना | शैमीचन्द | " | ६७ |
|----------------------------|----------|---|----|

|                |   |   |     |
|----------------|---|---|-----|
| ७. फुटकर सैबधा | × | " | ११३ |
|----------------|---|---|-----|

|                   |            |   |                     |
|-------------------|------------|---|---------------------|
| ८. षट्पेश्या बेलि | हर्षकीर्ति | " | २० काल सं० १६८३ ११६ |
|-------------------|------------|---|---------------------|

|               |               |   |     |
|---------------|---------------|---|-----|
| ९. जिन स्तुति | जोधराज गोदीका | " | ११८ |
|---------------|---------------|---|-----|

|                      |              |   |         |
|----------------------|--------------|---|---------|
| १०. प्रीत्यंकर चौपाई | मु० नेमीचन्द | " | ११६-१३४ |
|----------------------|--------------|---|---------|

२० काल सं० १७७१ वैशाख सुदी ११

६०७६. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० ४-२६५ । प्रा० ८२×६ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले०  
काल × । अपूर्ण । वै० सं० १५४२ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है ।

६०७७. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० ११६ । प्रा० ६×४३ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल ×  
पूर्ण वै० सं० १५४४ ।

विशेष—नित्य एवं भाद्रपद पूजा संग्रह है ।

६०७८. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ३२४ । प्रा० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७५६  
 वर्षाब्द सुदी ३ । अपूर्णा । वे० सं० १५४५ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६०७९. गुटका सं० ३५ । पत्र सं० १३८ । प्रा० ९×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्णा ।  
 वे० सं० १५४६ ।

विशेष—मुख्यतः नाटक समयसार की प्रति है ।

६०८०. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० २४ । प्रा० ५×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विशेष-पद संग्रह । ले०  
 काल × । पूर्णा । वे० सं० १५४७ ।

६०८१. गुटका सं० ३७ । पत्र सं० १७० । प्रा० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × ।  
 पूर्णा । वे० सं० १५४८ ।

विशेष-नित्यपूजा पाठ संग्रह है ।

६०८२. गुटका सं० ३८ । पत्र सं० ९४ । प्रा० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल १८४२  
 पूर्णा । वे० सं० १५४८ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

|                                   |                   |        |
|-----------------------------------|-------------------|--------|
| १. पदसंग्रह                       | मनराम एवं भूधरदास | हिन्दी |
| २. स्तुति                         | हरीसिंह           | "      |
| ३. पार्ष्वनाथ की गुरणमाला         | मोहट              | "      |
| ४. पद- ( दर्शन दीज्यो जी नेमकुमार | मेलीराम           | "      |
| ५. आरती                           | गुभचन्द           | "      |

विशेष—प्रतिम-आरती करना आरति भाजें, गुभचन्द ज्ञान मगन में साजें ॥८॥

|                                      |           |                |
|--------------------------------------|-----------|----------------|
| ६. पद- ( मैं तो थारी आज महिमा जानी ) | मैला      | "              |
| ७. शारदाष्टक                         | बनारसीदास | " ले० काल १८१० |

विशेष—जयपुर में कालीदास के मकान में लालाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

|   |           |        |
|---|-----------|--------|
| ८. पद- मोह नौद में छकि रहे हो लाल       | हरीसिंह   | हिन्दी |
| ९. " उठि तेरो मुख देखूँ नाभि जू के नंबा | टोबर      | "      |
| १०. बनुबिषातिस्तुति                     | बिनोदीलाल | "      |
| ११. विनती                               | अजैराज    | "      |

६०८७. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० २-१५६ । प्रा० ५×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण ।

वे० सं० १५५० । मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है:—

|   |                |        |                   |
|---|----------------|--------|-------------------|
| १. भारती संग्रह                         | द्यानतराय      | हिन्दी | ( ५ भारतीयों है ) |
| २. भारती-किहू विधि भारती करी प्रभु तेरी | मानसिंह        | "      |                   |
| ३. भारती-इहूविधि भारती करों प्रभु तेरी  | दीपचन्द        | "      |                   |
| ४. भारती-करी भारती आतम देवा             | विहारीदास      | "      | ३                 |
| ५. पद संग्रह                            | द्यानतराय      | "      | १७                |
| ६. पद-संसार अथिर भाई                    | मानसिंह        | "      | ४०                |
| ७. पूजाष्टक                             | विनोदीलान      | "      | ५३                |
| ८. पद-संग्रह                            | भूधरदास        | "      | ६७                |
| ९. पद-जाग पियारी अब क्या सोवै           | कवीर           | "      | ७७                |
| १०. पद-क्या सोवै उठि जाग रे प्रभानी मन  | समयमुन्दर      | "      | ७७                |
| ११. सिद्धपूजाष्टक                       | दौलतराम        | "      | ८०                |
| १२. भारती सिद्धो की                     | कुशासचन्द      | "      | ८१                |
| १३. गुरुभूष्टक                          | द्यानतराय      | "      | ८३                |
| १४. साधु की भारती                       | हेमराज         | "      | ८५                |
| १५. वारी भूष्टक व जयमाल                 | द्यानतराय      | "      | "                 |
| १६. पार्श्वनाथाष्टक                     | मुनि सकलकीर्ति | "      | "                 |

अन्तिम--भूष्ट विधि पूजा अर्घ उतारो सकलकीर्तिमुनि काज मुदा ॥

|   |                       |        |     |
|---|-----------------------|--------|-----|
| १७. नेमिनाथाष्टक                        | भूधरदास               | हिन्दी | ११७ |
| १८. पूजासंग्रह                          | लालचन्द               | "      | १३८ |
| १९. पद-उठ तेरो मुख देखूँ नाभिजी के नंदा | टोडर                  | "      | १४५ |
| २०. पद-देखो माई आज रिषम घरि आधै         | साहकीरत               | "      | "   |
| २१. पद-संग्रह                           | शोभाचन्द शुभचन्द आनंद | "      | १४६ |
| २२. नृवरण मंगल                          | बंसी                  | "      | १४७ |
| २३. क्षेत्रपाल भैरवगीत                  | शोभाचन्द              | "      | १४९ |



|  |               |   |        |     |
|--|---------------|---|--------|-----|
| २४   | न्हवण भारती   | बिस्वाल   | हिन्दी | १५० |
| अन्तिम—  |               | केदावनंदन करहिन्दु सेव, थिरुपाल भगौ गिए चरण सेव ॥ |        |     |
| २५.  | भारती सरस्वती | ब्र० जिनदास                                       | ”      | १५३ |
| ६०८५. गुटका सं० ५० । पत्र सं० ७-६८ । प्रा० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८८४ । अपूर्ण । वे० सं० १५५१ । |               |   |        |     |

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६०८७. गुटका सं० ४१ । पत्र सं० २२३ । प्रा० ८×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७४२ । अपूर्ण । वे० सं० १५५२ ।

पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है । तथा समयसार नाटक भी है ।

६०८६. गुटका सं० ४२ । पत्र सं० १३६ । प्रा० ५×४ इ० । ले० काल १७२६ चैत सुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० १५५३ ।

विशेष—मुख्य २ पाठ निम्न है —

|    |                    |          |         |    |
|----|--------------------|----------|---------|----|
| १. | चतुर्विंशति स्तुति | ×        | प्राकृत | ६  |
| २. | लखिविधान चौई       | भीषम अवि | हिन्दी  | ३० |

२० काल सं० १६१७ फागुण सुदी १३ । ले० काल सं० १७३२ वैशाख बुदी ३ ।

विशेष—संबत सोलसौ सतरी, फागुण मास जबे उत्तरी ।

उजलपायि तेरस तिथि जागि, तादिन कथा बढी परवारि ॥१६६॥

बरतै निवानां माहि विख्यात, जेनि धर्म तसु गोवा जानि ।

बह कवा भीषम कबि बही, जिनपुराण मांहि जैसी लहौ ॥१६७॥

× × × × ×

कवा बन्ध चौपटै जागि, पूरा हूमा दोइसै प्रमारि ।

जिनवारिणी का अगत न जास, भवि जीव जे लहे मुखवास ॥

इति श्री लखि विधान चौपटै संपूर्ण । लिखितं बोला निखारितं साह श्री भोगीदास ठठनार्थ । सं० १७३२ वैशाख बुदि ३ कृष्णपक्ष ।

|    |                    |            |        |
|----|--------------------|------------|--------|
| ३. | जिनकुमान की स्तुति | साधुकीर्ति | हिन्दी |
| ४  | नेमिनी श्री लहुरि  | विश्वगुण   | ”      |

|  |            |                 |
|--|------------|-----------------|
| ५. नेमीश्वर राञ्जुल की लहुरि (बारहमासा) खेनमिह साह |            | हिन्दी          |
| ६. ज्ञानर्षबमीबुहद् स्तवन                          | समयमुन्दर  | "               |
| ७. श्यादीश्वरगीत                                   | रंगविजय    | "               |
| ८. कुशलशुस्तवन                                     | जिनरंगमूरि | "               |
| ९. "   | समयमुन्दर  | "               |
| १०. बीबीसीस्तवन                                    | जयसागर     | "               |
| ११. जिनस्तवन                                       | कनककीर्ति  | "               |
| १२. भोमोदास को जन्म कुण्डनी                        | ×          | " जन्म सं० १६६७ |

६०८७. गुटका सं० ४३ । पत्र सं० ०१ । आ० ५ $\frac{१}{२}$ ×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १७३०

अपूर्णा । वै० सं० १५५४ ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र तथा पद्मावतीस्तोत्र है । मलारना मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६०८८. गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ४-७६ । आ० ७×४ $\frac{३}{४}$  इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल× । अपूर्णा

वै० सं० १५५५ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न है ।

१. श्वेताम्बर मत के ८८ बोल जगरूप हिन्दी २० काल सं० १८११ ले० काल सं० १८६६ आसोज सुदी ३ ।

२. जनविधानरासो दौलतराम राठनी हिन्दी ४० काल सं० १७६७ आसोज सुदी १०

६०८९. गुटका सं० ४५ । पत्र सं० ५-१०३ । आ० ६ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं०

१८६९ । अपूर्णा । वै० सं० १५५६ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न है ।

१. मुदामा की बारहखंडी × हिन्दी ३२-३४

विशेष—कुल २८ पद्य हैं ।

२. जन्मकुण्डनी महाराजा सवाई जगतसिंहजी की × संस्कृत १०३

विशेष—जन्म सं० १८४२ चैत शुदी ११ रवी ७।३० चनेष्टा ५।१२४ सिध योग जन्म नाम सदागुप्त ।

६०९०. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० ३० । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल ×

पूर्ण । वै० सं० १५५७ ।

विशेष—हिन्दी पद संग्रह है ।

६०६१. गुटका सं० ४७। पत्र सं० ३६। भा० ६×५३ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५५८।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६०६२. गुटका सं० ४८। पत्र सं० २। भा० ६×५३ इ०। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० १५५९।

विशेष—अनुसूतिस्वरूपाचार्य कृत सारस्वत प्रक्रिया है।

६०६३. गुटका सं० ४९। पत्र सं० ६५। भा० ६×५३ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल सं० १८६८। सावन बुधो १२। पूर्णा। वे० सं० १५६२।

विशेष—देवाग्रह कृत विनती संग्रह तथा लोहट कृत अठारह नाते का चौढालिया है।

६०६४. गुटका सं० ५०। पत्र सं० ७४। भा० ६×५३ इ०। भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५६४।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है।

६०६५. गुटका सं० ५१। पत्र सं० १७०। भा० ५३×४६ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५६३।

विशेष—निम्न मुख्य पाठ है।

|           |            |        |         |
|-----------|------------|--------|---------|
| १. कवित्त | कन्हैयालाल | हिन्दी | १०५-१०७ |
|-----------|------------|--------|---------|

विशेष—३ कवित्त हैं।

|                    |         |   |         |
|--------------------|---------|---|---------|
| २. रायमाला के दोहे | जैतश्री | ” | ११३-११८ |
|--------------------|---------|---|---------|

|             |       |   |                     |
|-------------|-------|---|---------------------|
| ३. बारहमासा | जसराम | ” | १२ दोहे हैं ११८-१२१ |
|-------------|-------|---|---------------------|

६०६६. गुटका सं० ५२। पत्र सं० १७८। भा० ६३×६ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० १५६६।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०६७. गुटका सं० ५३। पत्र सं० ३०४। भा० ६३×५ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १७८३ माह बुधो ४। पूर्णा। वे० सं० १५६७।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

|                    |            |        |     |
|--------------------|------------|--------|-----|
| १. अष्टाङ्गिकारासो | विनयकीर्ति | हिन्दी | १५८ |
|--------------------|------------|--------|-----|

२. रोहिणी विधिकथा

बंसीदास

हिन्दी

१५६-६०

२० काल सं० १९६५ ज्येष्ठ सुदी २ ।

विशेष—

सोरह से पच्यानऊ डई, ज्येष्ठ कृष्ण सुतिया भई  
फातिहाबाद नगर सुखमात, प्रप्रवाल शिव जातिप्रधान ॥  
मूलसिंह कीरति विख्यात, विशालकीर्ति गोयम सममान ।  
ता शिष बंसीदास सुजान, मानै जिनवर की धान ॥८६॥  
प्रभर पद तुक तनै जु हीन, पढी बनाइ सदा परवीन ॥  
धमो शारदा पंडितराइ पढत सुनत उपजै धर्मो सुभाइ ॥८७॥  
इति रोहिणीविधि कथा समाप्त ॥

|                                  |           |         |         |
|----------------------------------|-----------|---------|---------|
| १. सोलहकारणरासो                  | सकलकीर्ति | हिन्दी  | १७२     |
| २. रत्नत्रयका महार्घ व क्षमावरणी | ब्रह्ममेन | संस्कृत | १७५-१८६ |
| ५. विनती चौपड की                 | मान       | हिन्दी  | २४३-२४४ |
| ६. पावर्तनाथजयमाल                | लोहट      | "       | २५१     |

६०६८. गुटका सं० ५५ । पत्र सं० २२-३० । प्गो० ६३×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।  
प्रपूर्णा । वे० सं० १५६८ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

६०६९. गुटका सं० ५५ । पत्र सं० १०५ । प्गो० ६×५३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं०  
१८८४ । प्रपूर्णा । वे० सं० १५६९ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

|               |          |         |           |       |
|---------------|----------|---------|-----------|-------|
| १. अश्वत्थशरण | पं० नकुल | संस्कृत | प्रपूर्णा | १०-२६ |
|---------------|----------|---------|-----------|-------|

विशेष—श्लोकों के नीचे हिन्दी अर्थ भी है । अध्याय के अन्त में पृष्ठ १२ पर—

इति श्री महाराजि नकुल पंडित विरचिते अश्वत्थ शुभ विरचित प्रथमोध्यायः ॥

|               |      |        |
|---------------|------|--------|
| २. फुटकर दोहे | कवीर | हिन्दी |
|---------------|------|--------|

६१००. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० १४ । प्गो० ७३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्णा ।  
वे० सं० १५७० ।

विशेष—फोई उल्लेखनीय पाठ नहीं है ।

६१०१. गुटका सं० ३७ । पत्र सं० ७५ । मा० ६×४<sup>१</sup> इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल० सं० १८४७  
जेठ सुदी ५ । पूर्णा । वे० सं० १५७१ ।

विशेष—निम्न पाठ है—

|                    |              |        |               |
|--------------------|--------------|--------|---------------|
| १. वृन्दसतसई       | वृन्द        | हिन्दी | ७१२ बोहे है । |
| २. प्रश्नावलि कवित | वैद्य नंदलाल | "      |               |
| ३. कवित सुगलखोर का | शिवलाल       | "      |               |

६१०२. गुटका सं० ५८ । पत्र सं० ८२ । मा० ५×५<sup>१</sup> इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।  
पूर्णा । वे० सं० १५७२ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

६१०३. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० ६-६६ । मा० ७×४<sup>१</sup> इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल ×  
अपूर्णा । वे० सं० १५७३ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

६१०४. गुटका सं० ६० । पत्र सं० १८० । मा० ७×५<sup>१</sup> इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।  
अपूर्णा । वे० सं० १५७४ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार है ।

|                       |   |         |            |
|-----------------------|---|---------|------------|
| १. लघुतत्त्वार्थसूत्र | × | संस्कृत |            |
| २. आराधना प्रतिबोधसार | × | हिन्दी  | ५५ पद्य है |

६१०५. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० ६७ । मा० ६×४ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं०  
१८१४ भाद्रवा सुदी ६ । पूर्णा । वे० सं० १५७५ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार है ।

|  |           |        |    |
|--|-----------|--------|----|
| १. बारहखंडी  | ×         | हिन्दी | ३६ |
| २. विनती—प.स.र्ष विनेश्वर वदिये रे<br>साहित्य मुक्ति तगूँ दातार रे | कुदालविजय | "      | ४० |
| ३. पद—किये आराधना तेरी हिये आलम्ब<br>व्यापत है                     | नवलराम    | "      | "  |
| ४. पद—हेवी देहकी कित जाय छै नेम िंवार                              | टीलाराम   | "      | "  |

|   |  |        |          |
|---|--|--------|----------|
| ५. पद-नेमकंवार रो वाटडी हो राणी<br>राकुल जोवे खडी हो खडी          | छुद्यालचंद                                   | हिन्दी | ४१       |
| ६. पद-पल नही लगदी माय मैं पल नहि लगदी<br>पीया मो मन भावे नेम पिया | बखतराम                                       | "      | ४३       |
| ७. पद-जिनजी को बरसण नित करां हो<br>सुमति सहेल्यो                  | रूपचन्द                                      | "      | "        |
| ८. पद-नुम नेम का भतन कर जिसवे तेरा भला हो                         | बखतराम                                       | "      | ४४       |
| ९. बिनती  | भजेराज                                       | "      | ४८       |
| १०. हमीररासो  | ×  | हिन्दी | भूपरी ४९ |
| ११. पद-भोग दुलदाई तत्रभदि   | जगताराम                                      | "      | ५०       |
| १२. पद  | नवलराम                                       | हिन्दी | ५१       |
| १३. " ( मङ्गल प्रभाती )   | विनोदीलाल                                    | "      | ५२       |
| १४. रेखाचित्र   | आदिनाथ, चन्द्रप्रभ, वर्द्धमान एवं पार्वतीनाथ | "      | ५७-५८    |
| १५. वसंततूजा  | भजेराज                                       | "      | ५९-६१    |

विशेष—अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है :—

आवेरि सहर सुहावणू रति बसंत कूँ पाय ।

भजेराज करि जोरि कौ गावे हो मन वच काय ॥

६१०६. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १२० । प्रा० ६×५ $\frac{३}{४}$  इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९३८  
भूपरी । वे० सं० १५७६ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

६१०७. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० १७ । प्रा० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । भूपरी ।  
वे० सं० १५=१ ।

विशेष—देवात्रय कृत पद एवं भूधरदास कृत श्रुतियों की स्तुति है ।

६१०८. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ४० । प्रा० ८ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १८६७ ।  
भूपरी । वे० सं० १५८० ।

६१०६. गुटका सं० ६५। पत्र सं० १७३। मा० ६३×४३ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।  
वे० सं० १५८१।

विशेष—पूजा पाठ स्तोत्र संग्रह है।

६११०. गुटका सं० ६६। पत्र सं० ३२। मा० ६३×४३ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×।  
अपूर्ण। वे० सं० १५८२।

विशेष—पंचमेरु पूजा, अष्टाङ्गिका पूजा तथा सोलहकारण एवं दशलक्षण पूजाएं हैं।

६१११. गुटका सं० ६७। पत्र सं० १८५। मा० ८३×७ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल  
सं० १७४३। पूर्ण। वे० सं० १५८६।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६११२. गुटका सं० ६८। पत्र सं० ११५। मा० ६×५ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।  
वे० सं० १५८८।

विशेष—पूजा पाठों का संग्रह है।

६११३. गुटका सं० ६९। पत्र सं० १५१। मा० ४३×४ इ०। भाषा—संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण।  
वे० सं० १५८८।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है।

६११४. गुटका सं० ७०। पत्र सं० १७-५०। मा० ७३×५ इ०। भाषा—संस्कृत। ले० काल ×।  
पूर्ण। वे० सं० १५८९।

विशेष—नित्य पूजा पाठों का संग्रह है।

६११५. गुटका सं० ७१। पत्र सं० १८। मा० ५×५ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×।  
पूर्ण। वे० सं० १५९०।

विशेष—चोबीस ठाणा चर्चा है।

६११६. गुटका सं० ७२। पत्र सं० ३८। मा० ४३×३ इ०। भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×।  
पूर्ण। वे० सं० १५९१।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह एवं श्रीराल स्तुति आदि है।

६११७. गुटका सं० ७३। पत्र सं० ३-५०। मा० ६३×५ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल  
। अपूर्ण। वे० सं० १५९५।

६११८. गुटका सं० ७४ । पत्र सं० ६ । भा० ६३×५३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।  
 वे० सं० १५६६ ।

विशेष—मनोहर एवं पूनी कवि के पद हैं ।

६११९. गुटका सं० ७५ । पत्र सं० १० । भा० ६×५३ इ० भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।  
 वे० सं० १७६८ ।

विशेष—याशाकेवली भाषा एवं बार्दिस परीपह बर्णन है ।

६१२०. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० २६ । भा० ६×४ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय सिद्धान्त ।  
 ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५६६ ।

विशेष—उमस्वामि कृत तत्त्वार्थसूत्र है ।

६१२१. गुटका सं० ७७ । पत्र सं० ६-४२ । भा० ६×४३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।  
 वे० सं० १६०० ।

विशेष—सम्बन्ध दृष्टि की भावना का बर्णन है ।

६१२२. गुटका सं० ७८ । पत्र सं० ७-२१ । भा० ६×४३ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × ।  
 अपूर्ण । वे० सं० १६०१ ।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्त्वार्थ सूत्र है ।

६१२३. गुटका सं० ७९ । पत्र सं० ३० । भा० ७×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।  
 अपूर्ण । वे० सं० १६०२ । सामान्य पूजा पाठ हैं ।

६१२४. गुटका सं० ८० । पत्र सं० ३४ । भा० ४×३३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × ।  
 अपूर्ण । वे० सं० १६०५ ।

विशेष—देवाज्ञा, भूपरवास, जगराम एवं बुधजन के पदों का संग्रह है ।

६१२५. गुटका सं० ८१ । पत्र सं० २-२० । भा० ४×३ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—विनती संग्रह ।  
 ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०६ ।

६१२६. गुटका सं० ८२ । पत्र सं० २८ । भा० ४×३ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा स्तोत्र । ले०  
 काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०७ ।

६१२७. गुटका सं० ८३ । पत्र सं० २-२० । भा० ६३×५३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल ×  
 अपूर्ण । वे० सं० १६०९ ।

विशेष—सहस्रनाम स्तोत्र एवं पदों का संग्रह है ।



६१२८. गुटका सं० ८५ । पत्र सं० १५ । आ० ८२×९ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।  
वे० सं० १६११ ।

विशेष— देवाग्रह कृत पदों का संग्रह है ।

६१२९. गुटका सं० ८६ । पत्र सं० ४० । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १७२३ ।  
पूर्ण । वे० सं० १६५६ ।

विशेष— उदयराम एवं बहराम के पद तथा मेनोराम कृत कल्याणमन्दिरगतोत्रभाषा है ।

६१३०. गुटका सं० ८७ । पत्र सं० ७०-१२८ । आ० ६×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १-६४  
अपूर्ण । वे० सं० १६५७ ।

विशेष— पूजाओं का संग्रह है ।

६१३१. गुटका सं० ८८ । पत्र सं० २८ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण  
वे० सं० १६५८ ।

विशेष— नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों का संग्रह है ।

६१३२. गुटका सं० ८९ । पत्र सं० १६ । आ० ७×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।  
वे० सं० १६५९ ।

विशेष— शगवानदास कृत आचार्य शान्तिरागर की पूजा है ।

६१३३. गुटका सं० ९० । पत्र सं० २६ । आ० ६३×७ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १९१८ ।  
पूर्ण । वे० सं० १६६० ।

विशेष— स्वरूपचन्द कृत सिद्ध क्षेत्रों की पूजाओं का संग्रह है ।

६१३४. गुटका सं० ९१ । पत्र सं० ७२ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल म० १९१४  
पूर्ण । वे० सं० १६६१ ।

विशेष— प्रारम्भ के १९ पत्रों पर १ से ५० तक पहाड़े हैं जिनके ऊपर नीति तथा शृङ्गार रस के ४७  
दोहे हैं । गिरधर के कवित्त तथा दानिधर देव की कथा आदि है ।

६१३५. गुटका सं० ९२ । पत्र सं० २० । आ० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।  
वे० सं० १६६२ ।

विशेष— कौतुक रत्नमञ्जूषा ( मंत्र तंत्र ) तथा ज्योतिष सम्बन्धी साहित्य है ।

६१३६. गुटका सं० ९३ । पत्र सं० ३७ । आ० ५×४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।  
वे० सं० १६६३ ।

विशेष—संचीजी श्रीदेवजी के पठनार्थ लिखा गया था । स्तोत्रों का संग्रह है ।

६१३७. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ८-११ । पृ० ६५५ इ० । भाषा पुजराती । ले० काल × ।  
अपूर्णा । वे० सं० १६६४ ।

विशेष—बल्लभकृत रुमगिण विवाह वर्णन है ।

६१३८. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ४२ । पृ० ४५३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।  
पूर्णा । वे० सं० १६६७ ।

विशेष—तस्वार्थसूत्र एवं पद ( चारुं रथ की बजत बधाई जी सब जनमन धानन्व दाई ) है । चारों  
रथों का मेला सं० १६१७ फागुण बुदी १२ को जयपुर हुआ था ।

६१३९. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ७६ । पृ० ८५५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।  
पूर्णा । वे० सं० १६६८ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६१४०. गुटका सं० ६७ । पत्र सं० ६० । पृ० ६३५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।  
पूर्णा । वे० सं० १६६९ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है ।

६१४१. गुटका सं० ६८ । पत्र सं० ५८ । पृ० ७७७ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्णा ।  
वे० सं० १६७० ।

विशेष—सुभाषित दोहे तथा सवैये, लक्षण तथा नीतिग्रन्थ एवं शनिश्चरदेव की कथा है ।

६१४२. गुटका सं० ६९ । पत्र सं० २-१२ । पृ० ६५५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।  
अपूर्णा । वे० सं० १६७१ ।

विशेष—मन्त्र यन्त्रविधि, आयुर्वेदिक नुसने, सप्टेलवालो के ८४ गोत्र, तथा दि० जेनों की ७२ जातियां  
जिसमें से ३२ के नाम दिये हैं तथा बाणव्य नीति आदि है । गुमानोराम की पुस्तक से चाकसू मे सं० १७२७ में लिखा  
गया ।

६१४३. गुटका सं० १०० । पत्र सं० ५४ । पृ० ६५३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।  
अपूर्णा । वे० सं० १६७२ ।

विशेष—बनारसीदास कृत समयसार नाटक है । ५४ से आगे पत्र लाली हैं ।

६१४४. गुटका सं० १०१ । पत्र सं० ८-२५ । पृ० ६५३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले०  
काल सं० १८५२ । अपूर्णा । वे० सं० १६७३ ।

विशेष—स्तोत्र संस्कृत एवं हिन्दी पाठ हैं ।

६१४४. गुटका सं० १०२ । पत्र सं० ३३ । घा० ७×७ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल ।  
अपूर्णा । वे० सं० १६७४ ।

विशेष—बारहखडी ( झुरत ), नरक दोहा ( झुंघर ), तत्पार्यभूत ( उमास्वामि ) तथा फुटकर सवैया हैं ।

६१४६. गुटका सं० १०३ । पत्र सं० १६ । घा० ५×५ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्णा ।  
वे० सं० १६७५ ।

विशेष—विषाणहार, निर्वाणकाण्ड तथा भक्तामरस्तोत्र एवं परीषद् वर्णन है ।

६१४७. गुटका सं० १०४ । पत्र सं० ३८ । घा० ६×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्णा ।  
वे० सं० १६७६ ।

विशेष—पद्मपरमेष्ठीगुण, बारहभावना, बाईस परिवह, सोलहकारण भावना आदि हैं ।

६१४८. गुटका सं० १०५ । पत्र सं० ११-४७ । घा० ६×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × ।  
अपूर्णा । वे० सं० १६७७ ।

विशेष—स्वरोदय के पाठ है ।

६१४९. गुटका सं० १०६ । पत्र सं० ३६ । घा० ७×३ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्णा ।  
वे० सं० १६७८ ।

विशेष—बारह भावना, पंचमंगल तथा दशलक्षण पूजा है ।

६१५०. गुटका सं० १०७ । पत्र सं० ८ । घा० ७×५ । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्णा । वे०  
सं० १६७९ ।

विशेष—सम्पेदशिक्षरमहात्म्य निर्वाणकाण्ड ( सेवग ) फुटकर उद एवं नेमिनाथ के दश भव हैं ।

६१५१. गुटका सं० १०८ । पत्र सं० २-४ । घा० ७×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × ।  
अपूर्णा । वे० सं० १६८० ।

विशेष—देवाज्ञा कृत कलियुग की वीनती है ।

६१५२. गुटका सं० १०९ । पत्र सं० ६६ । घा० ९×६ इ० । भाषा—हिन्दी । विशेष—संग्रह । ले०  
काल × । अपूर्णा । वे० सं० १६८१ ।

विशेष—१ से ४ तथा ३४ से ५२ पत्र नहीं हैं । निम्न पाठ है —

१. हरजी के बाह । × हिन्दी ।

विशेष—७६ से २१४, ४४७ से ५५१ दोहे तक हैं आगे नहीं है ।

हरजी रसना सो कहैं, ऐसो रस न आर ।

तिसना तु पीबत नही, फिर पीहे किहि ठौर ॥ १६३ ॥

हरजी हरजी ओ कहै रसना बारंबार ।

पिस तजि मन हू क्यो न हूँ जमन नाहि तिहि बार ॥ १६४ ॥

|                                 |         |        |               |
|---------------------------------|---------|--------|---------------|
| २. पुष्ट-स्त्री सवाय            | रामचन्द | हिन्दी | १२ पद्य हैं । |
| ३. फुटकर कवित्त ( श्रृ गार रस ) | ×       | ”      | ४ कवित्त है । |
| ४. बिल्ली राज्य का ब्यौरा       | ×       | ”      |               |

विशेष—बौहान राज्य तक वर्णन दिया है ।

५. आषाढीयो के मत्र व मन्त्र हैं ।

६१५३. गुटका सं० ११० । पत्र सं० ६५ । भा० ७×४ २० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—संग्रह ।  
ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६८२ ।

विशेष—निर्वाणभण्ड, भक्तभरस्तोत्र, सत्त्वार्थसूत्र, एकीभावस्तोत्र आदि पाठ हैं ।

६. ५४. गुटका सं० १११ । पत्र सं० ३८ । भा० ६×४ ३० । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । ले० काल × ।  
पूर्ण । वे० सं० १६८३ ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड-सेवग पद संग्रह—सुधरदास, जोषा, मनोहर, सेवग, पद—महेन्द्रकीर्ति ( ऐसा देव  
जिनद है सेबो भवि प्राणी ) तथा चौरासी गोत्रोत्पत्ति वर्णन आदि पाठ हैं ।

६१५५ गुटका सं० ११२ । पत्र सं० ६१ । भा० ५×६ ३० । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । ले०  
काल × । पूर्ण । वे० सं० १६८४ ।

विशेष—जैनेतर स्तोत्रो का संग्रह है । गुटका पेमासिंह भाटी का लिखा हुआ है ।

६१५६. गुटका सं० ११३ । पत्र सं० १३६ । भा० ६×४ ३० । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । ले०  
काल × । १८८३ । पूर्ण । वे० सं० १६८५ ।

विशेष—२० का १०००० का, १५ का २० का मत्र, दोहे, पाशा केवली, भक्तभरस्तोत्र, पद संग्रह  
सथा राजस्थानी में श्रृंगार के दोहे हैं ।

६/५७. गुटका सं० ११४ । पत्र सं० १२३ । भा० ७×६ ३० । भाषा—संस्कृत । विषय—अष्ट परोक्षा ।  
ले० काल × । १८०४ अष्टाद बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १६८६ ।

विशेष—पुस्तक ठाकुर हमीरसिंह गिलवाडी वालों की है खुशालचन्द ने पारदा में प्रतिलिपि की थी ।  
गुटका सजिन्द है ।

६१५८. गुटका सं० ११५। पत्र सं० ३२। आ० ६१×६६०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×।  
अपूर्णा। वे० सं० ११५।

विशेष—आधुनिक नुसले हैं।

६१५९. गुटका सं० ११६। पत्र सं० ७७। आ० ८×६६०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्णा।  
वे० सं० १७०२।

विशेष—गुटका सजिल्द है। लण्डेलवानो के ८४ गीत, विभिन्न कवियों के पद, तथा दोवाण भ्रमयबन्दजी  
के पुत्र भानन्दीलान को सं० १९१९ की जन्म पत्नी तथा आधुनिक नुसले हैं।

६१६०. गुटका सं० ११७। पत्र सं० ६१। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्णा। वे० सं० १७०३।

विशेष—नित्य नियम पूजा संग्रह है।

६१६१. गुटका सं० ११८। पत्र सं० ७६। आ० ८×६६०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×।  
अपूर्णा। वे० सं० १७०५।

विशेष—पूजा पाठ एवं स्तोत्र संग्रह है।

६१६२. गुटका सं० ११९। पत्र सं० २८०। आ० ६×४६०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८६१  
अपूर्णा। वे० सं० १७११।

विशेष—भागवत, गीता हिन्दी पद्य टीका तथा नासिकेतोपाल्यान हिन्दी पद्य में द्वे दोनों ही अपूर्णा है।

६१६३. गुटका सं० १२०। पत्र सं० ३२-१२८। आ० ४×४६०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×।  
अपूर्णा। वे० सं० १७१२।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

|                    |         |        |         |       |
|--------------------|---------|--------|---------|-------|
| १. नवपदपूजा        | देवचन्द | हिन्दी | अपूर्णा | ३२-४३ |
| २. अष्टप्रकारोपूजा | "       | "      | "       | ४४-५० |

विशेष—पूजा का क्रम श्वेताम्बर मान्यतानुसार निम्न प्रकार है—जल, चन्दन, पुटा, धूप, दीप, अक्षत,  
नेत्रेण, फन इनकी प्रत्येक की घनग घनग पूजा है।

|                   |            |   |             |       |
|-------------------|------------|---|-------------|-------|
| ३. सत्तरभेदी पूजा | साधुकीर्ति | " | २० सं० १६७८ | ५०-६५ |
| ४. पदसंग्रह       | ×          | " |             |       |

६१६४. गुटका सं० १२१। पत्र सं० ६-१२२। आ० ६×४६०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल  
×। अपूर्णा। वे० सं० १७१३।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार है —

|                       |                |         |         |
|-----------------------|----------------|---------|---------|
| १. गुरुजयमाला         | ब्रह्म जिनदास  | हिन्दी  | १३      |
| २. नन्दीश्वरपूजा      | मुनि सकलकीर्ति | संस्कृत | ३८      |
| ३. सरस्वतीस्तुति      | भाशाधर         | "       | ५२      |
| ४. देवशास्त्रगुरुपूजा | "              | "       | ६८      |
| ५. गणेशः खलप पूजा     | "              | "       | १०७-११२ |
| ६. आरती पत्रपरमेष्ठी  | पं० चिमना      | हिन्दी  | ११४     |

ग्रन्थ में लेखक प्रशंसित दी है। भट्टारको का विवरण है। सरस्वती गच्छ बनात्कार गण मूल संघ के विद्यालय कीर्ति देव के पट्ट में भट्टारक शांतिकीर्ति ने नागपुर (नागौर) नगर में पार्ष्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

६१६५. गुटका सं० १२२। पत्र सं० २८-१२६। आ० ५३×५३ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी।

ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७१४।

विशेष—पूजा स्तोत्र संग्रह है।

६१६६. गुटका सं० १२३। पत्र सं० ६-४६। आ० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×।

अपूर्ण। वे० सं० १७१५।

विशेष—विभिन्न कवियों ने हिन्दी पदों का संग्रह है।

६१६७। गुटका सं० १२४। पत्र सं० २५-७०। आ० ४×५ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×।

अपूर्ण। वे० सं० १७१६।

विशेष—विनती संग्रह है।

६१६८. गुटका सं० १२५। पत्र सं० २-४५। आ० संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७१७।

विशेष—स्तोत्र संग्रह है।

६१६९. गुटका सं० १२६। पत्र सं० ३६-१८२। आ० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×।

अपूर्ण। वे० सं० १७१८।

विशेष—भूषणदास कृत पार्ष्वनाथ पुराण है।

६१७०. गुटका सं० १२७। पत्र सं० ३६-२६६। आ० ८×४ इ०। भाषा—गुजराती। लिपि—

हिन्दी। विषय—व्या। २० काल सं० १७८३। ले० काल सं० १६०५। अपूर्ण। वे० सं० १७१९।

विशेष—मोहन विजय कृत चन्दना चरित्र है।

६१७१. गुटका सं० १२८ । पत्र सं० ३१-६२ । आ० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७२० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६१७२. गुटका सं० १२९ । पत्र सं० १२ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७२१ ।

विशेष—भक्तानर भाषा एवं चौबीसी स्तवन आदि है ।

६१७३. गुटका सं० १३० । पत्र सं० ५-१६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी पद । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७२२ ।

रसकौतुक(राजसभारंजन ३२ से १०० तक पद्य है ।

अन्तिम— कंता प्रेम समुद्र है गाहक बतुर मुजान ।

राजसभा रंजन यहै, मन हित प्रीति निदान ॥१॥

इति श्री रसकौतुकराजसभारंजन समव्या प्रबन्ध प्रथम भाग मंजूरी ।

६१७४. गुटका सं० १३१ । पत्र सं० ६-४१ । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १८६१ । अपूर्ण । वे० सं० १७२३ ।

विशेष—भवानी सहस्रनाम एवं कवच है ।

६१७५. गुटका सं० १३२ । पत्र सं० ३-१६० । आ० १०×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७८७ । अपूर्ण । वे० सं० १७२४ ।

विशेष—हनुमन्त कथा ( ज्ञ० रायमल ) घंटाकरण मंत्र, यिनती, वशावलि, ( भगवान महावीर से लेकर सं० १८२२ सुरेन्द्रकीर्ति भट्टारक तक ) आदि पाठ है ।

६१७६. गुटका सं० १३३ । पत्र सं० ५२ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७१५ ।

विशेष—समयसार नाटक एवं सिन्दूर प्रकरण दोनों के ही अपूर्ण पाठ है ।

६१७७. गुटका सं० १३४ । पत्र सं० १६ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७२६ ।

विशेष—सामान्य पाठ संग्रह है ।

६१७८. गुटका सं० १३५ । पत्र सं० ४६ । आ० ७×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८१८ । अपूर्ण । वे० सं० १७२८ ।

|   |           |        |
|---|-----------|--------|
| १. पद— राक्षो हो कुजराज साज मेरो                    | सूरदास    | हिन्दी |
| २. " माहको बिसरि गई सोह कोउ कालन                    | मल्लूकदास | "      |
| ३. पद—राजा एक पंडित पोली मुहारी                     | सूरदास    | हिन्दी |
| ४. पद—मेरो मुखनीको भक तेरो मुख घारी ०               | चंद       | "      |
| ५. पद—घब मैं हरिरस चाला लागी भक्ति खुमारी ०         | कबीर      | "      |
| ६. पद—बादि गये दिन साहिब बिना सतग्रुह चरण सनेह बिना | "         | "      |
| ७ पद—जा दिन मन पंछी उडि जौ है                       | "         | "      |

फुटकर मंत्र, शीषधियों के नुसले आदि हैं ।

६१७६. गुटका सं० १३६ । पत्र सं० ५-१६ । प्रा० ७×५ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । ले० काल १७८४ । अपूर्ण । वे० सं० १७५५ ।

विशेष—वक्तराम, देवाब्रह्म, चैनमुल आदि के पदों का संग्रह है । १० पत्र से आगे खाली हैं ।

६१८०. गुटका सं० १३७ । पत्र सं० ८८ । प्रा० ६१×५ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १७५६ ।

विशेष—बनारसोबिलास के कुछ पाठ एवं बिलाराम, दौलतराम, जिनदास, सेवग, हरीसिंह, हरषचन्द, लानचन्द, गरीबदास, भूधर एवं किसनगुलाब के पदों का संग्रह है ।

६१८१. गुटका सं० १३८ । पत्र सं० १२१ । प्रा० ६१×५ इ० । वे० सं० २०४३ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न हैं:—

|                     |                |                   |
|---------------------|----------------|-------------------|
| १. बीस बिरहमान पूजा | नरेन्द्रकीर्ति | हिन्दी संस्कृत    |
| २. नेमिनाथ पूजा     | कुशलचन्द       | संस्कृत           |
| ३. क्षीरोदानी पूजा  | प्रभयचन्द      | "                 |
| ४. हेमभारी          | विश्वभूषण      | हिन्दी            |
| ५. क्षेत्रपालपूजा   | सुमतिकीर्ति    | "                 |
| ६. शिखर विलास भाषा  | धनराज          | " २० काल सं० १८४८ |

६१८२. गुटका सं० १३९ । पत्र सं० ३-४६ । प्रा० १०३×७ इ० । भाषा—हिन्दी प० । ले० काल सं० १९५५ । अपूर्ण वे० सं० २०४० ।

विशेष—जातकाभरण ज्योतिष का ग्रन्थ है इसका दूसरा नाम जातकालंकार भी है । भैरवलाल जोशी ने प्रतिलिपि की थी ।



६१८३. गुटका सं० १४० । पत्र सं० ४-४३ । भा० १०३×७ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १६०६ द्वि० भाववा बुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० २०४५ ।

विशेष—अमृतचन्द सूरि कृत समयसार वृत्ति है ।

६१८४. गुटका सं० १४१ । पत्र सं० ३-१०६ । भा० १०२×६२ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८५३ अषाढ बुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० २०४६ ।

विशेष—नयनसुख कृत वैद्यमनोत्सव ( २० सं० १६४६ ) तथा बनारसीविलास प्रादि के पाठ हैं ।

६१८५. गुटका सं० १४२ । पत्र सं० ८-६३ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०४७ ।

विशेष—दानतराय कृत चर्चाशतक हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

६१८६. गुटका सं० १४३ । पत्र सं० १६-१७१ । भा० ७३×६३ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १६१५ । अपूर्ण । वे० सं० २०४८ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र आदि पाठों का संग्रह है ।

संवत् १६१५ वर्षे क्वार सुदी ५ दिने श्री मूलसंघे सरस्वतीयन्त्रे बलाकारगणे श्रीप्रादिनाथचंत्पालयनु-  
बामी शुभस्थाने भ० श्रोसकलकीर्ति, भ० भुवनकीर्ति, भ० ज्ञानभूषण, भ० विजयकीर्ति, भ० शुभचन्द्र, भा० गुरुदेवान्  
प्रा० श्रीरत्नकीर्ति प्रा० यशःकीर्ति गुणचन्द्र ।

६१८७. गुटका सं० १४४ । पत्र सं० ४६ । भा० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । ले० काल सं० १६२० । पूर्ण । वे० सं० २०४९ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

|                       |                                       |        |                 |
|-----------------------|---------------------------------------|--------|-----------------|
| १. मुत्तत्रवलिकथा     | भारमल्ल                               | हिन्दी | २० काल सं० १७८८ |
| २. रोहिणीव्रतकथा      | ×                                     | "      |                 |
| ३. पुष्पाङ्गनिव्रतकथा | ललितकीर्ति                            | "      |                 |
| ४. दशलक्षणाव्रतकथा    | ब० ज्ञानसागर                          | "      |                 |
| ५. अष्टाङ्गिकाकथा     | विनयकीर्ति                            | "      |                 |
| ६. सङ्कटचौयव्रतकथा    | देवेन्द्रभूषण [भ० विश्वभूषण के शिष्य] | "      |                 |
| ७. आकाशपञ्चमीकथा      | पांडे हरिकृष्ण                        | "      | २० काल सं० १७०६ |
| ८. निर्दोषसप्तमीकथा   | "                                     | "      | " " १७७१        |

|                          |                 |        |
|--------------------------|-----------------|--------|
| ९. निशल्याष्टमीकथा       | पाण्डे हरिकृष्ण | हिन्दी |
| १०. सुगन्धोदयमीकथा       | हेमराज          | "      |
| ११. अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा | पाण्डे हरिकृष्ण | "      |
| १२. बारहसौ चौतीसव्रतकथा  | जिनेन्द्रभूषण   | "      |

६१८८. गुटका सं० १४५। पत्र सं० २१९। भा० ६×६३ इ०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०५०।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं।

|                          |                              |         |     |
|--------------------------|------------------------------|---------|-----|
| १. विबदाबली ( पट्टाबलि ) | ×                            | संस्कृत | ७   |
| २. सोलहकारणपूजा          | ब० जिनदास                    | "       | ६१  |
| ३. दशलक्षणा जयमाल        | मुमतिसागर [अभयनन्द के शिष्य] | हिन्दी  | ८०  |
| ४. दशलक्षणा जयमाल        | सोमसेन                       | संस्कृत | ९०  |
| ५. मेरुपूजा              | "                            | "       |     |
| ६. चौरासो न्यातिमाला     | ब० जिनदास                    | हिन्दी  | १४७ |

विशेष—इन्हीं की एक चौरासो जातिमाला भी है।

|                        |                                  |         |     |
|------------------------|----------------------------------|---------|-----|
| ७. प्रादिनाथपूजा       | ब० शांतिदास                      | "       | १५० |
| ८. अनन्तनाथपूजा        | "                                | "       | १६६ |
| ९. सप्तशुद्धिपूजा      | भ० देवेन्द्रकोलि                 | संस्कृत | १७६ |
| १०. ज्येष्ठानवरमोटा    | श्रुतसागर                        | "       | १७८ |
| ११. ज्येष्ठजिनवर लाहान | ब० जिनदास                        | संस्कृत | १७८ |
| १२. पञ्चलेशपालपूजा     | सोमसेन                           | हिन्दी  | १९१ |
| १३. शीतलनाथपूजा        | धर्मभूषण                         | "       | २१० |
| १४. व्रतजयमाला         | मुमतिसागर                        | हिन्दी  | २१३ |
| १५. प्रादित्यवारकथा    | पं० गङ्गादास [धर्मचन्द का शिष्य] | "       | २१९ |

६१८९. गुटका सं० १४६। पत्र सं० ११-८८। भा० ८३×४३ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १७०१। अपूर्णा। वे० सं० २०५१।

विशेष—बनारस, विलास एवं नाममाला आदि के पाठों का संग्रह है।

६१६० गुटका सं० १४७। पत्र सं० ३०-६३। आ० ४४४<sup>१</sup> इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×।

अपूर्णा। वे० सं० २१८६।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है।

६१६१. गुटका सं० १४८। पत्र सं० ३५। आ० ८×१० इ०। ले० काल सं० १८४३। पूर्णा। वे० सं० २१८७।

१. पञ्चमरुपाणक

हरिचन्द्र

हिन्दी

१-२०

१० काल सं० १८३३ ज्येष्ठ सुदी ७

२. त्रैलोक्याप्ततोषासन

देवेन्द्रकीर्ति

संस्कृत

विशेष—नीमैडा मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

३. पट्टावलि

×

हिन्दी

३५

६१६२. गुटका सं० १४९। पत्र सं० २१। आ० ६×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। ले०

काल सं० १८२६ ज्येष्ठ सुदी १५। पूर्णा। वे० सं० २१९१।

विशेष—गिरनार यात्रा का वर्णन है। चांदनगाँव के महावीर का भी उल्लेख है।

६१६३. गुटका सं० १५०। पत्र सं० २४६। आ० ८×६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल १७१७। पूर्णा। वे० सं० २१९२।

विशेष—पूजा पाठ एवं दिल्ली की वादशाहत का श्लोका है।

६१६४ गुटका सं० १५१। पत्र सं० ६२। आ० ६×६ इ०। भाषा-प्राकृत-हिन्दी। ले० काल ×।  
अपूर्णा। वे० सं० २१९५।

विशेष—मार्गणा बौबीस ठाणा चर्चा तथा भक्तामरस्तोत्र आदि हैं।

६१६५ गुटका सं० १५२। पत्र सं० ४०। आ० ७<sup>१</sup>×५<sup>१</sup> इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×  
अपूर्णा। वे० सं० २१९६।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६१६६. गुटका सं० १५३। पत्र सं० २७-२२१। आ० ६<sup>३</sup>×६ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० २१९७।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६१६७. गुटका सं० १५४। पत्र सं० २७-१४७। आ० ८×७ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×।  
अपूर्णा। वे० सं० २१९८।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६१६८. गुटका सं० १५४ क। पत्र सं० ३२। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१६६।

विशेष—समवधारण पूजा है।

६१६९. गुटका सं० १५५। पत्र सं० ५७-१५२। भा० ७३×६ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२००।

विशेष—नासिकेत पुराण हिन्दी गद्य तथा गोरख संवाद हिन्दी पद्य में है।

६२००. गुटका सं० १५६। पत्र सं० १८-३६। भा० ७३×६ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२०१।

विशेष—पूजा पाठ स्तोत्र आदि है।

६२०१. गुटका सं० १५७। पत्र सं० १०। भा० ७३×६ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय—प्रायुर्वेद। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२०२।

विशेष—प्रायुर्वेदिक मुसले है।

६२०२. गुटका सं० १५८। पत्र सं० २-३०। भा० ७×५ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १८२७। अपूर्ण। वे० सं० २२०३।

विशेष—मंत्रो एवं स्तोत्रो का संग्रह है।

६२०३. गुटका सं० १५९। पत्र सं० ६३। भा० ७३×६ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२०४।

विशेष—कछुवाहा वंश के राजाओं की वंशावली, १०० राजाओं के नाम दिये हैं। सं० १७५६ तक वंशावली है। पत्र ७ पर राजा पृथ्वीसिंह का गद्दी पर सं० १८२४ में बैठना लिखा है।

२. दिल्ली नगर की बसापत तथा बादशाहत का ज्योरा है कित्त बादशाह ने कितने वर्ष, महोने, दिन तथा घड़ी राज्य किया इसका वृत्तान्त है।

३. बारहमासा, प्राणीडा गीत, जिनवर स्तुति, शृङ्गार के सवैया आदि है।

६२०४. गुटका सं० १६०। पत्र सं० ५६। भा० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२०५।

विशेष—बनारसी विलास के कुछ पाठ तथा भक्तामर स्तोत्र आदि पाठ हैं।

६२०५. गुटका सं० १६१। पत्र सं० ३५। आ० ७×६ इ०। भाषा-प्राकृत हिन्दी। ले० काल ×।  
अपूर्णा। वे० सं० २२०६।

विशेष—आवक प्रतिक्रमण हिन्दी अर्थ सहित है। हिन्दी पर गुजराती का प्रभाव है।

१ से ५ तक की गिनती के यंत्र है। इसके बीस यंत्र है १ से ६ तक की गिनती के १६ खानों का यंत्र है। इसके १२० पंख है।

६२०६. गुटका सं० १६२। पत्र सं० १६-४६। आ० ६३×७ $\frac{१}{२}$  इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पद।  
ले० काल सं० १६५५। अपूर्णा। वे० सं० २२०८।

विशेष—सेवग, जगताराम, नवल, बलदेव, माणक, धनराज, बनारसीदास, सुधानन्द, बुधजन, न्यामत  
आदि कवियों के विभिन्न राग रागिनियों में पद है।

६२०७. गुटका सं० १६३। पत्र सं० ११। आ० ५ $\frac{३}{४}$ ×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×।  
अपूर्णा। वे० सं० २२०७।

विशेष—नित्य नियम पूजा पाठ है।

६२०८. गुटका सं० १६४। पत्र सं० ७७। आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×६ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×।  
अपूर्णा। वे० सं० २२०९।

विशेष—विभिन्न स्तोत्रों का संग्रह है।

६२०९. गुटका सं० १६५। पत्र सं० ५२। आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पद। ले०  
काल ×। अपूर्णा। वे० सं० २२१०।

विशेष—नबन, जगताराम, उदयराम, गुनपूरण, चैनविजय, रत्नराज, जोधराज, चैनमुख, धर्मपान,  
भगताराम, भूधर, साहिबराम, विनांदीलाल आदि कवियों के विभिन्न राग रागिनियों में पद है। पुस्तक गोमतीलालजी  
ने प्रतिलिपि करवाई थी।

६२१०. गुटका सं० १६६। पत्र सं० २४। आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×।  
अपूर्णा। वे० सं० २२११।

|                           |             |        |      |
|---------------------------|-------------|--------|------|
| १. अठारह नाते का चौडालिया | लोहट        | हिन्दी | १-७  |
| २. मुहूर्तमुक्तावलीभाषा   | शङ्कराचार्य | "      | १-२३ |

६२११. गुटका सं० १६७। पत्र सं० १४। आ० ६×४ $\frac{३}{४}$  इ०। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र।  
ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० २२१२।

विशेष—पद्मावतीयन्त्र तथा युद्ध में जीत का यन्त्र, सीसा जाने का यन्त्र, नजर तथा बलीकरण यन्त्र तथा महालक्ष्मीसप्त भाविकस्तोत्र है ।

६२१२. गुटका सं० १६८ । पत्र सं० १२-३६ । पृ० ७३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१३ ।

विशेष—कुन्द सतसई है ।

६२१३. गुटका सं० १६६ । पत्र सं० ४० । पृ० ८३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१४ ।

विशेष—भक्तामर, कल्याणमन्दिर प्रादि स्तोत्रों का संग्रह है ।

६२१४. गुटका सं० १७० । पत्र सं० ६६ । पृ० ८×५३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१५ ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, रसिकप्रिया (कियाव) एवं रत्नकोश हैं ।

६२१५. गुटका सं० १७१ । पत्र सं० ३-८१ । पृ० ५३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१६ ।

विशेष—ब्रह्मतराम के पदों का संग्रह है । एक पद हरीसिंह का भी है ।

६२१६. गुटका सं० १७२ । पत्र सं० ५१ । पृ० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१७ ।

विशेष—प्रायुर्वेदिक नुसले एवं रति रहस्य है ।

## अवशिष्ट-साहित्य

६२१७. अष्टोत्तरीनामविधि..... । पत्र सं० १ । पृ० १०×५३ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । २० काल × । ले० का० × । पूर्ण । वे० सं० २६१ । अ भण्डार ।

६२१८. जन्माष्टमोपूजन ..... । पत्र सं० ७ । पृ० ११३×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ११५७ । अ भण्डार ।

६२१९. तुलसीविवाह ..... । पत्र सं० ५ । पृ० ६३×५ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-विधिविधान । २० काल × । ले० काल सं० १८८६ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २२२२ । अ भण्डार ।

६२२०. परमाणुनामविधि (नाप तोल परिमाण)..... । पत्र सं० २ । पृ० ६३×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-नापने तथा तोलने की विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१३७ । अ भण्डार ।

६२२१. प्रतिष्ठापाठविधि.....। पत्र सं० २०। घा० ८३×६३ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा विधि। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ७७२। अ मण्डार।

६२२२. प्रायश्चित्तचूल्हिकाटीका—नन्दिरु। पत्र सं० २५। घा० ८×५ इ०। भाषा—संस्कृत। विषय—प्राचारशास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ५२८। क मण्डार।

विशेष—बाबा दुलीचन्द ने प्रतिनिधि की थी। इसी मण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ५२९ ) धोर है।

६२२३. प्रति सं० २। पत्र सं० १०५। ले० काल ×। वै० सं० ६५। घ मण्डार।

विशेष—टीका का नाम 'प्रायश्चित्त विनिश्चयवृत्ति' दिया है।

६२२४. भक्तिरत्नाकर—बनमाली भट्ट। पत्र सं० १६। घा० ११३×५ इ०। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। जोर्या। वै० सं० २२६१। अ मण्डार।

६२२५. भद्रबाहुसंहिता—भद्रबाहु। पत्र सं० १७। घा० ११३×४३ इ०। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० ५१। ज मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वै० सं० १६६ ) धोर है।

६२२६. विधि विधान.....। पत्र सं० ७२-१५३। घा० १२×५ इ०। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा विधान। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० १०८३। अ मण्डार।

६२२७. प्रति सं० २। पत्र सं० ५२। ले० काल ×। वै० सं० ६६१। क मण्डार।

६२२८. समवशरणपूजा—पन्नालाल दूनीवाले। पत्र सं० ८५। घा० १२३×८ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। २० काल सं० १६२१। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ७७५। क मण्डार।

६२२९. प्रति सं० २। पत्र सं० ४३। ले० काल सं० १-२६ भाद्रव शुक्ला १२। वै० सं० ७७७। क मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ७७६ ) धोर है।

६२३०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७५। ले० काल सं० १६२८ भाद्रव शुक्ला ३। वै० सं० २००। क मण्डार।

६२३१. प्रति सं० ४। पत्र सं० १३६। ले० काल ×। वै० सं० २७८। अ मण्डार।

६२३२. समुष्यचौबीसतीर्थकरपूजा.....। पत्र सं० २। घा० ११३×५ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल <। पूर्ण। वै० सं० २०५०। अ मण्डार।



## ग्रन्थानुक्रमिका

### अ

| ग्रन्थ नाम                  | लेखक            | भाषा     | वृष्ट सं०     | ग्रन्थ नाम                      | लेखक                | भाषा          | वृष्ट सं० |
|-----------------------------|-----------------|----------|---------------|---------------------------------|---------------------|---------------|-----------|
| प्रकबर बीरबल बाली           | —               | (हि०)    | ६८१           | प्रक्षयदशमीकथा                  | ललितकीर्ति          | (सं०)         | ६६५       |
| प्रकलङ्कचरित्र              | —               | (हि० ग०) | १६०           | प्रक्षयदशमीविधान                | —                   | (सं०)         | ५३८       |
| प्रकलङ्कचरित्र              | नाथूराम         | (हि०)    | १६०           | प्रक्षयनिधिपूजा                 | —                   | (सं०)         | ४५४       |
| प्रकलङ्कदेव कथा             | —               | (सं०)    | २१३           |                                 |                     | ५०६, ५३६, ७६३ |           |
| प्रकलङ्कनाटक                | मकलनलाल         | (हि०)    | ३१६           | प्रक्षयनिधिपूजा                 | ज्ञानभूषण           | (हि०)         | ४५४       |
| प्रकलङ्काष्टक               | भट्टाकलङ्क      | (सं०)    | ५७५           | प्रक्षयनिधिमुष्टिकाविधानव्रतकथा | —                   | (सं०)         | २१३       |
|                             |                 |          | ६३७, ६४६, ७१२ | प्रक्षयनिधिमठल [मंडलचित्र]      | —                   |               | ५२५       |
| प्रकलङ्काष्टक               | —               | (सं०)    | ३७६           | प्रक्षयनिधिविधान                | —                   | (सं०)         | ४५४       |
| प्रकलङ्काष्टकभाषा           | सदासुख कासलीवाल | (हि०)    | ३७६           | प्रक्षयनिधिविधानकथा             | —                   | (सं०)         | २४४       |
| प्रकलङ्काष्टक               | —               | (हि०)    | ७६०           | प्रक्षयनिधिव्रतकथा              | खुशालचन्द           | (हि०)         | २४४       |
| प्रकंपनाचार्यपूजा           | —               | (हि०)    | ६८६           | प्रक्षयविधानकथा                 | —                   | (सं०)         | २४६       |
| प्रकलयदवार्ता               | —               | (हि०)    | ३२४           | प्रक्षयबावनी                    | द्यानतराय           | (हि०)         | १५, ६७६   |
| प्रकृत्रिमजिनचैत्यालय जयमाल | —               | (प्रा०)  | ४५३           | प्रजितपुराण                     | पंडिताचार्य अरुणमणि | (सं०)         | १४२       |
| प्रकृत्रिमजिनचैत्यालय जयमाल | भगवतोदास        | (हि०)    | ६६४           | प्रजितनाथपुराण                  | विजयसिंह            | (ग्र०)        | १४२       |
|                             |                 |          | ७२०           | प्रजितशान्तिजिनस्तोत्र          | —                   | (प्रा०)       | ७५४       |
| प्रकृत्रिमचैत्यालय जयमाल    | —               | (हि०)    | ७०४, ७४६      | प्रजितशान्तिस्तवन               | गन्धिपण             | (प्रा०)       | ३७६       |
| प्रकृत्रिमचैत्यालयपूजा      | मनरङ्गलाल       | (हि०)    | ४५४           |                                 |                     |               | ६८१       |
| प्रकृत्रिमचैत्यालयपूजा      | —               | (सं०)    | ५१५           | प्रजितशांतिस्तवन                | —                   | (प्रा० सं०)   | ३८१       |
| प्रकृत्रिमचेरियालय वर्धन    | —               | (हि०)    | ७६३           | प्रजितशांतिस्तवन                | —                   | (सं०)         | ३७६       |
| प्रकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा   | जिनदास          | (सं०)    | ४५३           | प्रजितशांतिस्तवन                | मेरुनन्दन           | (हि०)         | ६१६       |
| प्रकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा   | चैनसुख          | (हि०)    | ४५३           | प्रजितशांतिस्तवन                | —                   | (हि०)         | ६१६       |
| प्रकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा   | लालजीत          | (हि०)    | ४५३           | प्रजितशांतिस्तवन                | —                   | (सं०)         | ४२३       |
| प्रकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा   | पांडे जिनदास    | (सं०)    | ४५३           | प्रजीरसंमञ्जरी                  | काशीराज             | (सं०)         | २६६       |





| ग्रन्थ नाम              | लेखक                | भाषा       | पृष्ठ सं०     | ग्रन्थ नाम                   | लेखक               | भाषा  | पृष्ठ सं० |
|-------------------------|---------------------|------------|---------------|------------------------------|--------------------|-------|-----------|
| ग्रन्तव्रतपूजा          | श्री भूषण           | (सं०)      | ५१५           | ग्रनेकार्यमञ्जरी             | नन्ददाम            | (हि०) | २७१ ७६६   |
| ग्रन्तव्रतपूजा          | —                   | (सं०)      | ४५७           | ग्रनेकार्यशत                 | भ० हर्षकीर्ति      | (सं०) | २७१       |
|                         |                     |            | ५३६, ६६३, ७२८ | ग्रनेकार्यसंग्रह             | हेमचन्द्राचार्य    | (सं०) | २७१       |
| ग्रन्तव्रतपूजा          | भ० विजयकीर्ति       | (हि०)      | ४५७           | ग्रनेकार्यसंग्रह [महोपकोश]   | —                  | (सं०) | २७१       |
| ग्रन्तव्रतपूजा          | साह सेवगराम         | (हि०)      | ४५७           | ग्रन्तरायवर्णन               | —                  | (हि०) | ५६०       |
| ग्रन्तव्रतपूजा          | —                   | (हि०)      | ५१८           | ग्रन्तरिक्षपाशवंताष्टक       | —                  | (सं०) | ५६०       |
|                         |                     |            | ५१६, ५८६, ७२८ | ग्रन्थयोगव्यवच्छेदकट्टीभणिका | हेमचन्द्राचार्य    | (सं०) | ५७३       |
| ग्रन्तव्रतपूजाविधि      | —                   | (सं०)      | ४५७           | ग्रन्थकुट पाठ संग्रह         | —                  | (हि०) | ६२७       |
| ग्रन्तव्रतविधान         | मदनकीर्ति           | (सं०)      | २१४           | ग्रन्तराधनुदनस्तोत्र         | शङ्कराचार्य        | (सं०) | ६६२       |
| ग्रन्तव्रतरास           | ब्र० जिनदास         | (हि०)      | ५६०           | ग्रन्तव्रदकेवली              | —                  | (सं०) | २७६       |
| ग्रन्तव्रतौघारनपूजा     | श्या० गुणचन्द्र     | (सं०)      | ४५७           | ग्रन्तिजान साकुलन            | कालिदास            | (सं०) | ३१६       |
|                         |                     |            | ५१३, ५३६, ५४० | ग्रन्तिधानकोश                | पुरुषोत्तमदेव      | (सं०) | २७१       |
| ग्रन्तपारभक्ति          | —                   | (सं०)      | ६२७           | ग्रन्तिधानविताभाग्यमानमाला   | हेमचन्द्राचार्य    | (सं०) | २७१       |
| ग्रन्तार्थ कृषि एवाधाय  | —                   | (हि० युज०) | ३७६           | ग्रन्तिधानरत्नाकर            | धर्मचन्द्राणि      | (सं०) | २७२       |
| ग्रन्तार्थानाचोडात्या   | खेम                 | (हि०)      | ४३५           | ग्रन्तिप्रधानसार             | पं० शिवजीलाल       | (सं०) | २७२       |
| ग्रन्तार्थसाध चौडानिया  | विमलविनयगणि         | (हि०)      | ६८०           | ग्रन्तिपेक पाठ               | —                  | (सं०) | ४५८       |
| ग्रन्तार्थीमुनि सङ्काय  | समयसुन्दर           | (हि०)      | ६१८           |                              |                    |       | ५६५, ७६१  |
| ग्रन्तार्थीमुनि सङ्काय  | —                   | (हि०)      | ४३५           | ग्रन्तिपेकविधि               | लक्ष्मीसेन         | (सं०) | ४५८       |
| ग्रन्तार्थिनिधनस्तोत्र  | —                   | (सं०)      | ३७६, ६०४      | ग्रन्तिपेकविधि               | —                  | (सं०) | ३६८       |
| ग्रन्तार्थकारिका        | —                   | (सं०)      | २५७           |                              |                    |       | ४५८, ५७०  |
| ग्रन्तार्थकारिकावचूरि   | —                   | (सं०)      | २५७           | ग्रन्तिपेकविधि               | —                  | (हि०) | ४५८       |
| ग्रन्तित्यपञ्चोसी       | भगवतीदास            | (हि०)      | ६८६           | ग्रन्तरकोश                   | अमरसिंह            | (सं०) | २७२       |
| ग्रन्तित्यपञ्चासिका     | त्रिभुवनचन्द्र      | (हि०)      | ७५५           | ग्रन्तरकोशटीका               | भानुजी दीक्षित     | (सं०) | २७२       |
| ग्रन्तुभवनप्रकाश        | दीपचन्द्र कासलतोवाल | (हि०)      | ४८            | ग्रन्तरचन्द्रिका             | —                  | (हि०) | ३०८       |
| ग्रन्तुभवविलास          | —                   | (हि०)      | ५११           | ग्रन्तरुसगतक                 | —                  | (सं०) | १६०       |
| ग्रन्तुभवानन्द          | —                   | (हि० ग०)   | ४८            | ग्रन्तुतधर्मरसकाव्य          | गुणचन्द्रदेव       | (सं०) | ४८        |
| ग्रन्तेकार्यध्वनिमञ्जरी | महीक्ष्णणकवि        | (सं०)      | २७१           | ग्रन्तुतसागर                 | म० सवाई प्रतापसिंह | (हि०) | २६६       |
| ग्रन्तेकार्यध्वनिमञ्जरी | —                   | (सं०)      | २७१           | ग्रन्तरहना सङ्काय            | समयसुन्दर          | (हि०) | ६१८       |
| ग्रन्तेकार्यनाममाला     | नन्दिकवि            | (हि०)      | ७०६           | ग्रन्तरहन्तस्तवन             | —                  | (सं०) | ३७६       |

| ग्रन्थ नाम              | लेखक                | भाषा     | पृष्ठ सं० | ग्रन्थ नाम                    | लेखक              | भाषा    | पृष्ठ सं०               |
|-------------------------|---------------------|----------|-----------|-------------------------------|-------------------|---------|-------------------------|
| अरिष्टकर्ता             | —                   | (सं०)    | २७६       | अष्टप्रकारीपूजा               | देवचन्द्र         | (हि०)   | ७६०                     |
| अरिष्टाप्याय            | —                   | (प्रा०)  | ४५६       | अष्टशती [दिवागम स्तोत्र टीका] | अकलङ्कदेव         | (सं०)   | १२६                     |
| अरिहन्त केवलीपाशा       | —                   | (सं०)    | २७६       | अष्टसहस्री                    | आ० विद्यानन्दि    | (सं०)   | १२६                     |
| अर्थदीपिका              | जिनभद्ररायि         | (प्रा०)  | १         | अष्टागसम्भारदर्शनकथा          | सकलकीर्त्ति       | (सं०)   | २१५                     |
| अर्थप्रकाश              | लङ्कानाथ            | (सं०)    | २६६       | अष्टागोपाख्यान                | पं० मेधावी        | (सं०)   | २१५                     |
| अर्थप्रकाशिका           | सदामुख कासलीबाल     | (हि० ग०) | १         | अष्टादशसहस्रशीलभेद            | —                 | (सं०)   | ५६१                     |
| अर्थसार टिप्पण          | —                   | (सं०)    | १७        | अष्टाङ्गिकाकथा                | यशःकीर्त्ति       | (सं०)   | ६५५                     |
| अर्हन्प्रवचन            | —                   | (सं०)    | १         | अष्टाङ्गिकाकथा                | शुभचन्द्र         | (सं०)   | २१५                     |
| अर्हन्प्रवचन व्याख्या   | —                   | (सं०)    | २         | अष्टाङ्गिकाकथा                | ब्र० ज्ञानसागर    | (हि०)   | ७४०                     |
| अर्हन्कचोढालियामीत      | विमल विनय [विनयरंग] | (हि०)    | ४३५       | अष्टाङ्गिकाकथा                | नयमल              | (हि०)   | २१५                     |
| अर्हन्कृत्तिकाविधान     | —                   | (सं०)    | ५७४, ६५८  | अष्टाङ्गिका कौमुदी            | —                 | (सं०)   | २१५                     |
| अलङ्कारटीका             | —                   | (सं०)    | ३०८       | अष्टाङ्गिकागीत                | भ० शुभचन्द्र      | (हि०)   | ६८६                     |
| अलङ्काररत्नाकर          | दलपतिराय वंशीधर     | (हि०)    | ३०८       | अष्टाङ्गिका जयमाल             | —                 | (सं०)   | ४५६                     |
| अलङ्कारवृत्ति           | जिनवर्द्धन सूरि     | (सं०)    | ३०८       | अष्टाङ्गिका जयमान             | —                 | (प्रा०) | ४५६                     |
| अलङ्कारशास्त्र          | —                   | (सं०)    | ३०८       | अष्टाङ्गिकापूजा               | —                 | (सं०)   | ४५६, ५७०, ५६६, ६५८, ७८४ |
| अवन्ति पार्वनाथजिनस्तवन | हर्षसूरि            | (हि०)    | ३७६       | अष्टाङ्गिकापूजा               | द्यानतराय         | (हि०)   | ४६०, ७०५                |
| अव्ययप्रकरण             | —                   | (सं०)    | २५७       | अष्टाङ्गिकापूजा               | —                 | (हि०)   | ४६१                     |
| अव्ययार्थ               | —                   | (सं०)    | २५७       | अष्टाङ्गिकापूजा               | सुरेन्द्रकीर्त्ति | (सं०)   | ४६०                     |
| अक्षनसमितिस्वरूप        | —                   | (प्रा०)  | ५७२       | अष्टाङ्गिकापूजाकथा            | —                 | (सं०)   | ५६४                     |
| अशोकरोहिणीकथा           | श्रुतसागर           | (सं०)    | २१६       | अष्टाङ्गिकाप्रतकथा            | विनयकीर्त्ति      | (हि०)   | ६१४                     |
| अशोकरोहिणीव्रतकथा       | —                   | (हि० ग०) | २१६       | अष्टाङ्गिकाव्रतकथा            | —                 | (सं०)   | ७८०, ७६४                |
| अश्वलक्षणा              | पं० नकुल            | (हि०)    | ७८१       | अष्टाङ्गिकाव्रतकथा            | —                 | (सं०)   | २१५                     |
| अश्वपरीक्षा             | —                   | (सं०)    | ७८६       | अष्टाङ्गिकाव्रतकथासंग्रह      | गुणचन्द्रसूरि     | (सं०)   | २१६                     |
| अषाढएकादशीमहत्त्व       | —                   | (सं०)    | २१५       | अष्टाङ्गिकाव्रतकथा            | लालचंद विनोदीलाल  | (हि०)   | ६२२                     |
| अष्टक [पूजा]            | नेमिदत्त            | (सं०)    | ५६०       | अष्टाङ्गिकाव्रतकथा            | ब्र० ज्ञानसागर    | (हि०)   | २२०                     |
| अष्टक [पूजा]            | —                   | (हि०)    | ५६०, ७०१  | अष्टाङ्गिकाव्रतकथा            | —                 | (हि०)   | २४७, ७२७                |
| अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन    | —                   | (सं०)    | १         | अष्टाङ्गिकाव्रतपूजा           | —                 | (सं०)   | ५१६                     |
| अष्टपाहड                | कुन्दकुन्दाचार्य    | (प्रा०)  | ६६        | अष्टाङ्गिकाव्रतपूजा           | —                 | (सं०)   | ५१६                     |
| अष्टपाहडभाषा            | जयचन्द्र छाबड़ा     | (हि० ग०) | ६६        | अष्टाङ्गिकाव्रतोद्यापनपूजा    | भ० शुभचन्द्र      | (हि०)   | ५६१                     |



| ग्रन्थनाम             | लेखक           | भाषा     | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम                               | लेखक             | भाषा    | पृष्ठ सं० |
|-----------------------|----------------|----------|-----------|---|------------------|---------|-----------|
| आदित्यव्रतपूजा        | —              | (सं०)    | ४६१       | आदीश्वर का समयसरण                       | —                | (हि०)   | ५६६       |
| आदित्यव्रतप्रतोद्यापन | —              | (सं०)    | ५४०       | आदीश्वरस्तवन                            | जितचन्द्र        | (हि०)   | ७००       |
| आदित्यव्रतकथा         | लुशा।लचन्द्र   | (हि०)    | ७३१       | आदीश्वरविज्यन्ति                        | —                | (हि०)   | ४३७       |
| आदित्यव्रतपूजा        | केशवसेन        | (सं०)    | ४६१       | आशुकुमारधमान                            | वनकसोम           | (हि०)   | ६१७       |
| आदित्यव्रतोद्यापन     | —              | (सं०)    | ५४०       | आध्यात्मिकगाथा                          | भ० लक्ष्मीचन्द्र | (ग्रा०) | १०३       |
| आदिनाथकल्याणकथा       | ब्र० ज्ञानसागर | (हि०)    | ७०७       | आनन्दनहरीस्तोत्र                        | शङ्कराचार्य      | (सं०)   | ६०८       |
| आदिनाथ गीत            | मुनि हेमसिद्ध  | (हि०)    | ४३६       | आनन्दम्नवन                              | —                | (सं०)   | ५१४       |
| आदिनाथपूजा            | मनहरदेव        | (हि०)    | ५११       | आप्तपरोक्षा                             | विद्यानिदि       | (सं०)   | १३६       |
| आदिनाथपूजा            | रामचन्द्र      | (हि०)    | ४६१       | आप्तमीमासा                              | समन्तभद्राचार्य  | (सं०)   | १३०       |
| आदिनाथपूजा            | ब्र० शांतिदास  | (हि०)    | ७६५       | आप्तमीमासाभाना                          | जयचन्द्र छात्रहा | (हि०)   | १३०       |
| आदिनाथपूजा            | सेवगराम        | (हि०)    | ६७४       | आप्तमीमासानकृति                         | विद्यानिदि       | (सं०)   | १३०       |
| आदिनाथपूजा            | —              | (हि०)    | ४६२       | आप्तमीवृ का भवटा                        | —                | (हि०)   | ६६३       |
| आदिनाथ की विनती       | —              | (हि०)    | ७७४       | आमेर के राजाशोक राज्यकान विवरण          | —                | (हि०)   | ७४६       |
| आदिनाथ विनती          | कनककीर्ति      | (हि०)    | ७२२       | आमेर के राजाशोकी वंशावलि                | —                | (हि०)   | ७४६       |
| आदिनाथसम्झाप          | —              | (हि०)    | ४३६       | आयुर्दैनिक ग्रन्थ                       | —                | (सं०)   | २६७, ७६३  |
| आदिनाथस्तवन           | कवि पल्ल       | (हि०)    | ७३२       | आयुर्दैनिक मुसवे                        | —                | (सं०)   | २६७, ५७६  |
| आदिनाथस्तोत्र         | समयसुन्दर      | (हि०)    | ६१६       | आयुर्दैनिक मुसवे                        | —                | (हि०)   | ६०१       |
| आदिनाथाष्टक           | —              | (हि०)    | ५६४       | ६६७, ६७७, ६६०, ६८६, ६६७, ७०१, ७०२, ७१४, |                  |         |           |
| आदिपुराण              | जिनसेनाचार्य   | (सं०)    | १४२       | ७१८, ७१६, ७२३, ७३०, ७३६, ७६०, ७६१, ७६६, |                  |         |           |
| आदिपुराण              | पुष्पदन्त      | (ग्रा०)  | १४३       | ७६७, ७६६                                |                  |         |           |
| आदिपुराण              | दौलतराम        | (हि० ग०) | १४४       | आयुर्वेद मुसखो का संग्रह                | —                | (हि०)   | २६६       |
| आदिपुराण टिप्पण       | प्रभाचन्द्र    | (सं०)    | १४३       | आयुर्वेदमहोदधि                          | मुख्यदेव         | (सं०)   | २६७       |
| आदिपुराण विनती        | गङ्गादास       | (हि०)    | ७०१       | आरती                                    | —                | (सं०)   | ६३५       |
| आदीश्वर धारती         | —              | (हि०)    | ५६४       | आरती                                    | द्यानतराय        | (हि०)   | ६२१, ६२२  |
| आदीश्वरगीत            | रङ्गविजय       | (हि०)    | ७७६       | आरती                                    | द्रीपचन्द्र      | (हि०)   | ७७७       |
| आदीश्वर के १० भव      | गुणचन्द्र      | (हि०)    | ७६२       | आरती                                    | मानसिंह          | (हि०)   | ७७७       |
| आदीश्वरपूजाष्टक       | —              | (हि०)    | ४६२       | आरतो                                    | लालचन्द्र        | (हि०)   | ६२२       |
| आदीश्वरफाग            | ज्ञानभूषण      | (हि०)    | ३६०       | आरती                                    | बिहारीदास        | (हि०)   | ७७७       |
| आदीश्वररेलता          | सदस्यकीर्ति    | (हि०)    | ६८२       | आरती                                    | शुभचन्द्र        | (हि०)   | ७७६       |

| ग्रन्थनाम           | लेखक                         | भाषा     | पृष्ठ सं० |
|---------------------|------------------------------|----------|-----------|
| भारती पञ्चपरमेष्ठी  | पं० चिमना                    | (हि०)    | ७६१       |
| भारती सरस्वती       | ब्र० जिनदास                  | (हि०)    | ३८६       |
| भारती संग्रह        | ब्र० जिनदास                  | (हि०)    | ३८६       |
| भारती संग्रह        | धानतराय                      | (हि०)    | ७७७       |
| भारती विद्यों की    | मुशालचन्द                    | (हि०)    | ७७७       |
| भाराधना             | —                            | (प्रा०)  | ४३२       |
| भाराधना             | —                            | (हि०)    | ३८०       |
| भाराधना कथा कोश     | —                            | (सं०)    | २१६       |
| भाराधना प्रतिबोधसार | विमलेन्द्रकीर्त्ति           | (हि०)    | ६५८       |
| भाराधना प्रतिबोधनार | सकलकीर्त्ति                  | (हि०)    | ६८५       |
| भाराधना प्रतिबोधसार | —                            | (हि०)    | ७८२       |
| भाराधना विधान       | —                            | (सं०)    | ४६२       |
| भाराधनासार          | देवसेन                       | (प्रा०)  | ४६        |
|                     | ५७३, ६२८, ६३५, ७०६, ७३७, ७४४ |          |           |
| भाराधनासार          | जिनदास                       | (हि०)    | ७५७       |
| भाराधनासारप्रबन्ध   | प्रभाचन्द                    | (सं०)    | २१६       |
| भाराधनासारभाषा      | पद्मालाल चौधरी               | (हि०)    | ४६        |
| भाराधनासारभाषा      | —                            | (हि०)    | ५०        |
| भाराधनासार बधनिका   | बा० दुर्जीचन्द               | (हि० ग०) | ५०        |
| भाराधनासारकुत्ति    | पं० आशाधर                    | (सं०)    | ५०        |
| भारामखोभाकथा        | —                            | (सं०)    | २१७       |
| भालापद्धति          | देवसेन                       | (सं०)    | १३०       |
| भालोचना             | —                            | (प्रा०)  | ५७२       |
| भालोचनपाठ           | जौहरीलाल                     | (हि०)    | ५६१       |
| भालोचनपाठ           | —                            | (हि०)    | ४२६       |
|                     | ६८५, ७६३, ७४६                |          |           |
| भाषवत्रिभङ्गी       | नेमिचन्द्राचार्य             | (प्रा०)  | २         |
| भाषवत्रिभङ्गी       | —                            | (प्रा०)  | ७००       |
| भाषवत्रिभङ्गी       | —                            | (हि०)    | २         |

| ग्रन्थनाम               | लेखक           | भाषा       | पृष्ठ सं० |
|-------------------------|----------------|------------|-----------|
| भाषव वर्णन              | —              | (हि०)      | २         |
| भाषावभूति चौडालिया      | कनकसोम         | (हि०)      | ६१७       |
| भाहार के ४६ शोधवर्णन    | भैया भगवतीदास  | (हि०)      | ५०        |
|                         | <b>ह</b>       |            |           |
| इक्कीसठारणाचर्चा        | सिद्धसेन सूरि  | (प्रा०)    | २         |
| इन्द्रजाल               | —              | (हि०)      | ३४७       |
| इन्द्रध्वजपूजा          | विश्वभूषण      | (सं०)      | ४६२       |
| इन्द्रध्वजमण्डलपूजा     | —              | (सं०)      | ४६२       |
| इष्टछत्तीसी             | बुधजन          | (हि०)      | ६६१       |
| इष्टछत्तीसी             | —              | (हि०)      | ७६०, ७६३  |
| इष्टोपदेश               | पूज्यपाद       | (सं०)      | ३८०       |
| इष्टोपदेशटीका           | पं० आशाधर      | (सं०)      | ३८०       |
| इष्टोपदेशभाषा           | —              | (हि०)      | ७५५       |
| इष्टोपदेशभाषा           | —              | (हि० गद्य) | ३८०       |
|                         | <b>श</b>       |            |           |
| ईश्वरवाद                | —              | (सं०)      | १३१       |
|                         | <b>उ</b>       |            |           |
| उच्चग्रहफल              | बलदत्त         | (सं०)      | २७६       |
| उद्यादिभूषणसंग्रह       | उज्वलदत्त      | (सं०)      | २५७       |
| उत्तरपुराण              | गुरुभद्राचार्य | (सं०)      | १४५, १४५  |
| उत्तरपुराणटिप्पण        | प्रभाचन्द      | (सं०)      | १४५       |
| उत्तरपुराणभाषा          | मुशालचन्द      | (हि० पद्य) | १४५       |
| उत्तरपुराणभाषा          | संधी पद्मालाल  | (हि० गद्य) | १४६       |
| उत्तराध्ययन             | —              | (प्रा०)    | २         |
| उत्तराध्ययनभाषाटीका     | —              | (हि०)      | ३         |
| उदयसत्ताबंधप्रकृतिवर्णन | —              | (सं०)      | ३         |
| उद्वगोपीसंवाद           | रसिकरास        | (हि०)      | ६६४       |
| उद्वगसंदेशाध्ययनप्रबन्ध | —              | (सं०)      | १६०       |
| उपदेशछत्तीसी            | जिनहर्ष        | (हि०)      | ३२४       |
| उपदेशपञ्चोसी            | —              | (हि०)      | ६५६       |

| ग्रन्थनाम                  | लेखक              | भाषा       | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम  | लेखक                | भाषा    | पृष्ठ सं०               |
|----------------------------|-------------------|------------|-----------|--|---------------------|---------|-------------------------|
| पदेशरत्नमाला               | सकलभूषण           | (सं०)      | ५०        | ऋद्धिघतक   | स्वरूपचन्द्र विलासा | (हि०)   | ५२ ५११                  |
| उपदेशरत्नमाला              | धर्मदासगणि        | (प्रा०)    | ७५८       | ऋषभदेवस्तुति   | जिनसेन              | (सं०)   | ३८१                     |
| उपदेशरत्नमालागाथा          | —                 | (प्रा०)    | ५२        | ऋषभदेवस्तुति   | पद्यानन्द           | (प्रा०) | ३८१ ५०६                 |
| उपदेशरत्नमालाभाषा          | देवीसिंह छाबडा    | (हि० पद्य) | ५२        | ऋषभनाथचरित्र   | भ० सकलकीर्ति        | (सं०)   | १६०                     |
| उपदेशरत्नमालाभाषा          | बा० तुलीचन्द्र    | (हि०)      | ५१        | ऋषभस्तुति  | —                   | (सं०)   | ३८२                     |
| उपदेशघतक                   | द्यानतराय         | (हि०)      | ३२५ ७५७   | ऋषिमण्डल [चित्र]   | —                   | (सं०)   | ५२४                     |
| उपदेशसञ्क्राम्य            | देवादिल           | (हि०)      | ३८१       | ऋषिमण्डलपूजा   | आ० गुणानन्द         | (सं०)   | ५६३                     |
| उपदेशसञ्क्राम्य            | रंगविजय           | (हि०)      | ३८१       | ऋषिमण्डलपूजा   | आ० गुणानन्द         | (सं०)   | ५३७, ५३६, ७६२           |
| उपदेशसञ्क्राम्य            | ऋषि रामचन्द्र     | (हि०)      | ३८०       | ऋषिमण्डलपूजा   | मुनि ज्ञानभूषण      | (सं०)   | ५६३ ६३६                 |
| उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला     | भंडारी नेमिचन्द्र | (प्रा०)    | ५१        | ऋषिमण्डलपूजा   | —                   | (सं०)   | ५६४ ७६१                 |
| उपदेशसिद्धान्तरत्नमालाभाषा | भागचन्द्र         | (हि०)      | ५१        | ऋषिमण्डलपूजा   | दौलत आसेरी          | (हि०)   | ५६४                     |
| उपवासप्रह्लादविधि          | —                 | (प्रा०)    | ५६३       | ऋषिमण्डलपूजा   | —                   | (हि०)   | ७२७                     |
| उपवास के दश भेद            | —                 | (सं०)      | ५७३       | ऋषिमण्डलपूजा   | सदासुख कासलीवाल     | (हि०)   | ७२६                     |
| उपवासविधान                 | —                 | (हि०)      | ५७३       | ऋषिमण्डलमन्त्र   | —                   | (सं०)   | ५६३                     |
| उपवासो का भ्यौरा           | —                 | (हि०)      | ७०१       | ऋषिमण्डलस्तवन  | —                   | (सं०)   | ६४५ ६८३                 |
| उपसर्गहरस्तोत्र            | पूर्णचन्द्राचार्य | (सं०)      | ३८१       | ऋषिमण्डलस्तवनपूजा  | —                   | (सं०)   | ६५८                     |
| उपसर्गहरस्तोत्र            | —                 | (सं०)      | ४२४       | ऋषिमण्डलस्तोत्र  | गौतमस्वामी          | (सं०)   | ३८२                     |
| उपसर्गार्थविवरण            | बुवाचार्य         | (सं०)      | ५२        | ऋषिमण्डलस्तोत्र  | —                   | (सं०)   | ४२४, ४२८, ४३१, ६४७, ७३२ |
| उपांगनलितप्रतकथा           | —                 | (सं०)      | २१७       | ऋषिमण्डलस्तोत्र  | —                   | (सं०)   | ३८२ ६६२                 |
| उपाधिभ्याकरण               | —                 | (सं०)      | २५७       | ए  | —                   | (हि०)   | ७४४                     |
| उपासकाचार                  | —                 | (सं०)      | ५२        | एकाधरकींश  | क्षुण्णक            | (सं०)   | २७४                     |
| उपासकाचारदीहा              | आ० लक्ष्मीचन्द्र  | (प्रप०)    | ५२        | एकाधरनाममाला   | —                   | (सं०)   | २७४                     |
| उपासकाध्ययन                | —                 | (सं०)      | ५२        | एकाधरीकींश   | वररुचि              | (सं०)   | २७४                     |
| उपेश्वरस्तोत्र             | —                 | (सं०)      | ७३१       | एकाधरीकींश   | —                   | (सं०)   | २७४                     |
| ऋ                          |                   |            |           | एकाधरीस्तोत्र [वकाराक्षर]  | —                   | (सं०)   | ३८२                     |
| ऋणसम्बन्धकथा               | अभयचन्द्रगणि      | (प्रा०)    | २१८       | एकाधरस्तोत्र   | वादिाराज            | (सं०)   | २२४                     |
| ऋतुसंहार                   | कालिदास           | (सं०)      | १६१       | ३८२, ४२४, ४२५, ४२८, ४३०, ४३२, ४३३, ५७२, ५७५, ५६५, ६०५, ६३३, ६३७, ६४४, ६५१, ६५२, ६६४, ७२०, ७३७, ७६६ |                     |         |                         |
| ऋद्धिमन्त्र                | —                 | (सं०)      | ७२३       |  |                     |         |                         |

| ग्रन्थनाम                       | लेखक                         | भाषा  | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम              | लेखक             | भाषा        | पृष्ठ सं०     |
|---------------------------------|------------------------------|-------|-----------|------------------------|------------------|-------------|---------------|
| एकीभावस्तोत्रटीका               | नागचन्द्रसूरी                | (सं०) | ४०१       | कथासंग्रह              | —                | (सं० हि०)   | २२०           |
| एकीभावस्तोत्रभाषा               | भूधरदास                      | (हि०) | ३८३       | कथासंग्रह              | —                | (प्रा० हि०) | २२०           |
|                                 | ४२६, ४४८, ६५२, ६६२, ७१६, ७२० |       |           | कथासंग्रह              | ब्र० ज्ञानसागर   | (हि०)       | २२०           |
| एकीभावस्तोत्रभाषा               | पद्मलाल                      | (हि०) | ३८३       | कथामंग्रह              | —                | (हि०)       | ७३७           |
| एकीभावस्तोत्रभाषा               | जगजीवन                       | (हि०) | ६०५       | कपटामावा का दूहा       | सुन्दर           | (राज०)      | ७७३           |
| एकीभावस्तोत्रभाषा               | —                            | (हि०) | ३८३       | कमलाष्टक               | —                | (सं०)       | ६०७           |
| एकश्लोकरामायण                   | —                            | (सं०) | ६४६       | कव्यप्रज्ञाचीपई        | जिनचन्द्रसूरी    | (हि० रा०)   | २२१           |
| एकीश्लोकभागवत                   | —                            | (सं०) | ६४६       | करकण्डवृत्तित्त        | भ० शुभचन्द्र     | (सं०)       | १६१           |
|                                 |                              |       |           | करकुण्डवरित्त          | मुनि कनकामर      | (धप०)       | १६१           |
| प्रोपधियों के नुमने             | —                            | (हि०) | ५७५       | करणकौतूहल              | —                | (सं०)       | २७६           |
|                                 |                              |       |           | करलववण                 | —                | (प्रा०)     | २७६           |
|                                 |                              |       |           | कनगाष्टक               | पद्मनन्दि        | (सं०)       | ६३३           |
|                                 |                              |       |           |                        |                  |             | ६३७, ६६८      |
| ककका                            | गुलाबचन्द                    | (हि०) | ६४३       | कनगाष्टक               | —                | (हि०)       | ६४२           |
| कककावलीसी                       | ब्र० गुलाल                   | (हि०) | ६७६       | कर्णागिशाक्तियोयन्त्र  | —                | (सं०)       | ६१२           |
| कककावलीसी                       | नन्दराम                      | (हि०) | ७३२       | कर्पूरचक्र             | —                | (सं०)       | २७६           |
| कककावलीसी                       | मनराम                        | (हि०) | ७२३       | कर्पूरप्रकरण           | —                | (सं०)       | ३२५           |
| कककावलीसी                       | —                            | (हि०) | ६५१       | कर्पूरमञ्जरी           | राजशेखर          | (सं०)       | ३१६           |
|                                 | ६७५, ६८५, ७१३, ७१५, ७२३, ७४१ |       |           | कर्मग्रन्थमन्त्री      | —                | (प्रा०)     | ३             |
| ककका विनता [वारहखंडा]           | धनराज                        | (हि०) | ६२३       | कर्मचूर [मण्डलचित्र]   | —                |             | ५२५           |
| कण्ठवातार [चित्र]               | —                            |       | ६०३       | कर्मचूरव्रतवेलि        | मुनि सकलकीर्त्ति | (हि०)       | ५६२           |
| कण्ठवाहा वंशके राजाधोके नाम     | —                            | (हि०) | ६८०       | कर्मचूरव्रतोद्यापनपूजा | लक्ष्मीसेन       | (सं०)       | ४६४, ५१६      |
| कण्ठवाहा वंश के राजाधोकी वशावलि | —                            | (हि०) | ७६७       | कर्मचूरव्रतोद्यापन     | —                | (सं०)       | ५०६, ४६४, ५४० |
| कठियार कानडरीचीपई               | मानसागर                      | (हि०) | २१८       | कर्मछलीसी              | समयसुन्दर        | (हि०)       | ६१६           |
| कथाकोश                          | हरिपेणाचार्य                 | (सं०) | २१६       | कर्मछलीसी              | —                | (हि०)       | ६८६           |
| कथाकोश [भारधनाकथाकोश]           | ब्र० नेमिदत्त                | (सं०) | २१६       | कर्मदहनपूजा            | बादिचन्द्र       | (सं०)       | ५६०           |
| कथाकोश                          | देवेन्द्रकीर्त्ति            | (सं०) | २१६       | कर्मदहनपूजा            | शुभचन्द्र        | (सं०)       | ४६५           |
| कथाकोश                          | —                            | (सं०) | २१६       |                        |                  |             | ५३७, ६४५      |
| कथाकोश                          | —                            | (हि०) | २१६       | कर्मदहनपूजा            | —                | (सं०)       | ४६५           |
| कथारत्नसागर                     | नारचन्द्र                    | (सं०) | २२०       |                        |                  |             | ५१७, ५४०, ७६१ |
| कथासंग्रह                       | —                            | (सं०) | २२०       |                        |                  |             |               |



| ग्रन्थनाम                | लेखक             | भाषा    | पृष्ठ सं०     | ग्रन्थनाम                            | लेखक              | भाषा                    | पृष्ठ सं० |
|--------------------------|------------------|---------|---------------|--------------------------------------|-------------------|-------------------------|-----------|
| कर्मदहनपूजा              | टेकचन्द्र        | (हि०)   | ४६५           | कलशारोपणविधि                         | —                 | (सं०)                   | ४६६       |
| कर्मदहन [मण्डल चित्र]    | —                | (हि०)   | ५२५           | कलिकुण्डपादर्वनाथपूजा भ० प्रभाचन्द्र | —                 | (सं०)                   | ४६७       |
| कर्मदहन का मण्डल         | —                | (हि०)   | ६३८           | कलिकुण्डपादर्वनाथपूजा यशोभिक्षय      | —                 | (सं०)                   | ६५८       |
| कर्मदहनब्रतमन्त्र        | —                | (सं०)   | ३४७           | कलिकुण्डपादर्वनाथपूजा                | —                 | (हि०)                   | ५६७       |
| कर्म नाकर्म वर्णन        | —                | (प्रा०) | ६२६           | कलिगुणधर्षनाथ [मंडलचित्र]            | —                 | —                       | ५२५       |
| कर्म बीसा                | भारमल            | (हि०)   | ७६६           | कलिकुण्डपादर्वनाथस्तवन               | —                 | (सं०)                   | ६०६       |
| कर्मप्रकृति              | नेमिचन्द्राचार्य | (प्रा०) | ३             | कलिकुण्डपूजा                         | —                 | (सं०)                   | ४६७       |
| कर्मप्रकृतिचर्चा         | —                | (हि०)   | ५, ७२०        | —                                    | —                 | ४७५, ५१६, ५७४, ६०६, ६४० |           |
| कर्मप्रकृतिचर्चा         | —                | (हि०)   | ६००           | कलिगुणधर्षनाथ स्तवन                  | —                 | (प्रा०)                 | ७६३       |
| कर्मप्रकृतिटीका          | सुमतिकीर्ति      | (सं०)   | ५             | कलिगुणधर्षनाथ                        | —                 | (सं०)                   | ६०७       |
| कर्मप्रकृति का व्योरा    | —                | (हि०)   | ७१८           | कलिकुण्डस्तवन                        | —                 | (प्रा०)                 | ६५५       |
| कर्मप्रकृतिवर्णन         | —                | (हि०)   | ७०१           | कलिगुणधर्षनाथ                        | —                 | (सं०)                   | ६०५       |
| कर्मप्रकृतिविधान         | वनारमीडास        | (हि०)   | ५             | कलियुग की कथा                        | केशव              | (हि०)                   | ६२२       |
| —                        | —                | —       | ३६०, ६७७, ७४६ | कलियुग की कथा                        | द्वारकादास        | (हि०)                   | ७७०       |
| कर्मबलीसौ                | राजसमुद्र        | (हि०)   | ६१७           | कलियुग की विनती                      | द्वैवाश्रम        | (हि०)                   | ६१५       |
| कर्मगुह की विनती         | —                | (हि०)   | ६६४           | —                                    | —                 | —                       | ६८५, ७८८  |
| कर्मविपाक                | —                | (सं०)   | २२१, ५६६      | कलिप्रवतार [चित्र]                   | —                 | —                       | ६०३       |
| कर्मविपाकटीका            | सकलकीर्ति        | (सं०)   | ५             | कलसत्रसूत्रा                         | —                 | (सं०)                   | ६६५       |
| कर्मविपाकफल              | —                | (हि०)   | २८०           | कलसमन्तान शत                         | —                 | (प्रा०)                 | ६         |
| कर्मशाफल [कर्मविपाक]     | —                | (सं०)   | २८०           | कलसूत्र                              | भद्रबाहु          | (प्रा०)                 | ६         |
| कर्मस्तवसूत्र            | देवेन्द्रमूर्ति  | (प्रा०) | ५             | कलसूत्र                              | भिवम् श्यमभरण     | (प्रा०)                 | ६         |
| कर्महिण्डोलना            | —                | (हि०)   | ६०२           | कलसूत्रमहिमा                         | —                 | (हि०)                   | ३८३       |
| कर्मों को १४८ प्रकृतियाँ | —                | (हि०)   | ७६०           | कलसूत्रटीका                          | समयमुद्रगोपाध्याय | (सं०)                   | ७         |
| कलशाविधान                | मोहन             | (सं०)   | ४६६           | कलसूत्रवृत्ति                        | —                 | (प्रा०)                 | ७         |
| कलशाविधान                | —                | (सं०)   | ४६६           | कलस्थान [कलाध्याय्या]                | —                 | (सं०)                   | २६७       |
| कलशाविधि                 | —                | (सं०)   | ४२८, ६१२      | कल्याणक                              | समन्तभद्र         | (प्रा०)                 | ३८३       |
| कलशाविधि                 | विश्वरूपण        | (हि०)   | ४६६           | कल्याणक [बहा]                        | —                 | —                       | ५७६       |
| कलशाभिषेक                | पं० आशाधर        | (सं०)   | ४६७           | कल्याणकसङ्घरी                        | विनयमागर          | (सं०)                   | ३८४       |
| कलशारोपणविधि             | पं० आशाधर        | (सं०)   | ४६६           | कल्याणकमन्दिर                        | दृषकीर्ति         | (सं०)                   | ४०१       |

| ग्रन्थनाम                               | लेखक            | भाषा     | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम            | लेखक             | भाषा    | पृष्ठ सं० |     |
|---|-----------------|----------|-----------|----------------------|------------------|---------|-----------|-----|
| कल्याणमन्दिरस्तोत्र                     | कुमुदचन्द्र     | (सं०)    | ३८४       | कवित्त               | बनारसीदास        | (हि०)   | ७०६, ७७३  |     |
| ४०२, ४२५, ४३०, ४३१, ४३३, ५६५, ५७२, ५७५  |                 |          |           | कवित्त               | मोहन             | (हि०)   | ७७२       |     |
| ५६५, ६०५, ६१५, ६१६, ६३३, ६३७, ६५१, ६८०  |                 |          |           | कवित्त               | वृन्दावनदास      | (हि०)   | ६८२       |     |
| ६८१, ६६३, ७०१, ७३१, ७६३                 |                 |          |           | कवित्त               | मन्तराम          | (हि०)   | ६६२       |     |
| कल्याणमन्दिरस्तोत्रटीका                 | —               | (सं०)    | ३८५       | कवित्त               | सुखलाल           | (हि०)   | ६५६       |     |
| कल्याणमन्दिरस्तोत्रवृत्ति               | देवतिलक         | (म०)     | ३८५       | कविता                | सुन्दरदास        | (हि०)   | ६४३       |     |
| कल्याणमन्दिरस्तोत्र हिन्दी टीका         | —               | (म० हि०) | ६८१       | कवित्त               | संवग             | (हि०)   | ७७२       |     |
| कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा                 | पन्नालाल        | (हि०)    | ३८५       | कवित्त               | — (राज० डिगल)    |         | ७७०       |     |
| कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा                 | बनारसमोदास      | (हि०)    | ३८५       | कवित्त               | —                | (हि०)   | ६८१       |     |
| ४०६, ५६६, ५६६, ६०३, ६०८, ६२२, ६४३, ६४८, |                 |          |           | कवित्त               | वृणमखोर का       | शिवलाल  | (हि०)     | ७८२ |
| ६६२, ६६५, ६७७, ७०२, ७०५                 |                 |          |           | कवित्त-ग्रह          | —                | (हि०)   | ६५६, ७४३  |     |
| कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा                 | मेनेराम         | (हि०)    | ७८६       | कविप्रिया            | केशवदेव          | (हि०)   | १६१       |     |
| कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा                 | ऋषि रामचन्द्र   | (हि०)    | ३८५       | कविवल्लभ             | हरिचरणदास        | (हि०)   | ६८८       |     |
| कल्याणमन्दिरभाषा                        | —               | (हि०)    | ६८६       | कक्षापुट             | भिद्वानागुर्जन   | (सं०)   | २६७       |     |
| ७४५, ७५४, ७५५, ७५८, ७६८                 |                 |          |           | कान्ठटीका            | —                | (सं०)   | २५७       |     |
| कल्याणमाला                              | पं० आशाधर       | म०)      | ५७५, ३८५  | कान्ठरूपमानाटीका     | दौर्गसिंह        | (सं०)   | २५८       |     |
| कल्याणविधि                              | मुनि विनयचन्द्र | (स्र०)   | ६४१       | काक्यरुमानाटीका      | —                | (सं०)   | २५८       |     |
| कल्याणपुस्तकस्तोत्र                     | पद्मनन्दि       | (सं०)    | ५७४       | कान्ठविभ्रममूलावचूरी | चारित्र्यसिंह    | (सं०)   | २५७       |     |
| कवलचन्द्रायणव्रतकथा                     | —               | (सं०)    | २०१, २४६  | कान्ठव्याकरण         | शिववर्मा         | (म०)    | २५६       |     |
| कविकपंटी                                | —               | (सं०)    | ३०६       | कादम्बरीटीका         | —                | (सं०)   | १६१       |     |
| कवित्त                                  | अमदास           | (हि०)    | ७६८       | कामन्दकीयनोतारभाषा   | —                | (हि०)   | ३२६       |     |
| कवित्त                                  | कन्हैयालाल      | (हि०)    | ७८०       | कामशास्त्र           | —                | (हि०)   | ७३७       |     |
| कवित्त                                  | कंसवदास         | (हि०)    | ६४३       | कामयूत्र             | कविहाल           | (प्रा०) | ३५३       |     |
| कवित्त                                  | गिरधर           | (हि०)    | ७७२, ७८६  | कारकप्रक्रिया        | —                | (सं०)   | २५६       |     |
| कवित्त                                  | प्र० गुलाल      | (हि०)    | ६७०, ६८२  | कारकविवेचन           | —                | (सं०)   | २५६       |     |
| कवित्त                                  | झीहल            | (हि०)    | ७७०       | कारकसमामप्रकरण       | —                | (सं०)   | २५६       |     |
| कवित्त                                  | जयकिशन          | (हि०)    | ६४३       | कारखानों के नाम      | —                | (हि०)   | ७५६       |     |
| कवित्त                                  | देवीदास         | (हि०)    | ६७५       | कार्तिकेयानुपदेश     | स्वामी कार्तिकेय | (प्रा०) | १०३       |     |
| कवित्त                                  | पद्माकर         | (हि०)    | ७५६       |                      |                  |         |           |     |

| ग्रन्थनाम                          | लेखक            | भाषा       | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम                   | लेखक             | भाषा         | पृष्ठ सं० |
|------------------------------------|-----------------|------------|-----------|-----------------------------|------------------|--------------|-----------|
| कार्तिकेयानुप्रेषाटीका             | शुभचन्द्र       | (सं०)      | १०४       | कृष्णरुक्मणिवेनिलि          | पृ० श्रीरज राठौर | (राज० डिंगल) | ७७०       |
| कार्तिकेयानुप्रेषाटीका             | —               | (सं०)      | १०४       | कृष्णरुक्मणिवेनिलीका        | —                | —            | ७७०       |
| कार्तिकेयानुप्रेषाभाषा             | जयचन्द्र छावड़ा | (हि० गद्य) | १०४       | कृष्णरुक्मणिवेनिलि          | हिन्दोटीका सहित  | (हि०)        | ६५६       |
| कालचक्रवर्णन                       | —               | (हि०)      | ७७०       | कृष्णरुक्मणिवेनिलि          | पद्म भगत         | (हि०)        | २२१       |
| कालीनागदमनकथा                      | —               | (हि०)      | ७३८       | कृष्णरावतारचित्र            | —                | —            | ६०३       |
| कालीसहस्रनाम                       | —               | (सं०)      | ६०८       | कवचज्ञान का व्यास           | —                | (हि०)        | ५३        |
| काले विच्छूके डङ्कु उतारनेका मंत्र | —               | (सं० हि०)  | ५७१       | कवचज्ञानीमञ्जुषा            | विनयचन्द्र       | (हि०)        | ३८५       |
| काव्यप्रकाशटीका                    | —               | (सं०)      | १६१       | कोकमञ्जरी                   | —                | (हि०)        | ६५७       |
| कासिम रसिकविलास                    | —               | (हि०)      | ७७१       | कोकशास्त्र                  | —                | (सं०)        | ३५३       |
| किरातार्जुनीय                      | महाकवि भारवि    | (सं०)      | १६१       | कोकसार                      | आनन्द            | (हि०)        | ३५३       |
| कुण्डलक्षरा                        | —               | (हि०)      | ५५        | कोकसार                      | —                | (हि०)        | ३५३, ६६६  |
| कुण्डलनिरिपूजा                     | भ० विश्वभूषण    | (सं०)      | ४६७       | कोकिलासुमीकथा               | ब्र० हर्षा       | (हि०)        | २२८       |
| कुण्डलिया                          | अगरदाम          | (हि०)      | ६६०       | कौतुकरत्नमञ्जुषा            | —                | (हि०)        | ७८६       |
| कुदेवस्वरूपवर्णन                   | —               | (हि०)      | ७२०       | कौतुकनीलावली                | —                | (सं०)        | २८०       |
| कुमारसम्भव                         | कालिदास         | (सं०)      | १६२       | कौमुदीकथा                   | आ० धर्मकीर्ति    | (सं०)        | २२२       |
| कुमारसम्भवटीका                     | कनकनागर         | (सं०)      | १६२       | कञ्जिकाप्रतोयासनपूजा        | ललितकीर्ति       | (सं०)        | ४६८       |
| कुञ्जलानन्द                        | अपय दीक्षित     | (सं०)      | ३०८       | कञ्जिकाप्रतायारन            | —                | (सं०)        | ४६६       |
| कुञ्जलानन्द                        | —               | (सं०)      | ३०८       | —                           | —                | ४६८, ५१७     |           |
| कुञ्जलानन्दकारिका                  | —               | (सं०)      | ३०६       | काजीवारस ( मण्डन चित्र )    | —                | —            | ५२५       |
| कुशलस्तवन                          | जिनःङ्गमूरि     | (हि०)      | ७७६       | काजीवारसारासमञ्जलपूजा       | —                | (सं०)        | ५१३       |
| कुशलस्तवन                          | समयसुन्दर       | (हि०)      | ७७६       | क्रियाकलाप                  | —                | (सं०)        | ५७६       |
| कुशलानुबन्धि                       | ध्रुवभुगंग      | (ग्रा०)    | १०४       | क्रियाकलापटीका              | प्रभाचन्द्र      | (सं०)        | ५३, ४३४   |
| कुशीलखण्डन                         | जयलाल           | (हि०)      | ५२        | क्रियाकलापटीका              | —                | (सं०)        | ५३        |
| कुदन्तपाठ                          | —               | (सं०)      | २५६       | क्रियाकलापवृत्ति            | —                | (ग्रा०)      | ५३        |
| कृपणछन्द                           | ठककुरमी         | (हि०)      | ६३८       | क्रियाकाव्यभाषा             | किशनसिंह         | (हि०)        | ५३, ६१५   |
| कृपणछन्द                           | चन्द्रकीर्ति    | (हि०)      | ३८६       | क्रियाकाव्यभाषा             | —                | (हि०)        | ५३        |
| कृपणपञ्चमी                         | विनोदीलाल       | (हि०)      | ७३३       | क्रियावादीयों के ३६ भेद     | —                | (हि०)        | ६७१       |
| कृष्णप्रेमाष्टक                    | —               | (हि०)      | ७३८       | क्रोधमानसायातोंभ की सज्जमाय | —                | (हि०)        | ४४८       |
| कृष्णबालविलास                      | श्री किशनलाल    | (हि०)      | ४३७       | क्षत्रचूडामण्डि             | वादीभसिंह        | (सं०)        | १६२       |
| कृष्णरास                           | —               | (हि०)      | ७३८       | क्षणसारटीका                 | —                | (सं०)        | ७         |

| ग्रन्थनाम                 | लेखक                         | भाषा    | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम                              | लेखक               | भाषा    | पृष्ठ सं० |
|---------------------------|------------------------------|---------|-----------|--|--------------------|---------|-----------|
| क्षपणसारवृत्ति            | माधवचन्द्र त्रैविधदेव        | (सं०)   | ७         | क्षप्वेलवालोल्लसितवर्णन                | —                  | (हि०)   | ३७०       |
| क्षपणसारभाषा              | पं० टोडरमल्ल                 | (हि०)   | ७         | क्षप्वेलवालो की उतरति                  | —                  | (हि०)   | ७०२       |
| क्षमाच्छतीसी              | समथसुन्दर                    | (हि०)   | ६१७       | क्षप्वेलवालोंकी उतरति और उनके ८४ गोत्र | —                  | (हि०)   | ७२१       |
| क्षमावतीसी                | जिनचन्द्रसूरि                | (हि०)   | ५४        | क्षप्वेला की बरका                      | —                  | (हि०)   | ७०२       |
| क्षमावर्गांपूजा           | ब्रह्मसेन                    | (सं०)   | ५६४       | क्षप्वेला की बशावलि                    | —                  | (हि०)   | ७५६       |
| क्षीर नीर                 | —                            | (हि०)   | ७६२       | क्ष्याल गा गोचन्द्रका                  | —                  | (हि०)   | २२२       |
| क्षीरव्रतनिधिपूजा         | —                            | (सं०)   | ५१५       |  |                    |         |           |
| क्षीरोदानीपूजा            | अभयचन्द्र                    | (सं०)   | ७६३       |  |                    |         |           |
| क्षेत्रपाल की धारती       | —                            | (हि०)   | ६०७       | गजपथामण्डलपूजा                         | भ० सेमेन्द्रकीर्ति | (सं०)   | ४६८       |
| क्षेत्रपालगीत             | शुभचन्द्र                    | (हि०)   | ६२३       | गजमोक्षकथा                             | —                  | (हि०)   | ६००       |
| क्षेत्रपाल जयमाल          | —                            | (हि०)   | ७६३       | गजसिंहकुमारचरित्र                      | बिनयचन्द्रसूर      | (सं०)   | १६३       |
| क्षेत्रपाल नामावली        | —                            | (सं०)   | ३८६       | गडाराशातिकविधि                         | —                  | (सं०)   | ६१२       |
| क्षेत्रपालपूजा            | मण्डिमद्र                    | (सं०)   | ६८६       | गणधरचरणारविदपूजा                       | —                  | (सं०)   | ४६६       |
| क्षेत्रपालपूजा            | विश्वसेन                     | (सं०)   | ४६७       | गणधरजयमान                              | —                  | (प्रा०) | ४६६       |
| क्षेत्रपालपूजा            | —                            | (सं०)   | ४६८       | गणधरवल्लयपूजा                          | शुभचन्द्र          | (सं०)   | ६६०       |
|                           | ५१५, ५१७, ५६७, ६४०, ६५५, ७६३ |         |           | गणधरवल्लयपूजा                          | आशाधर              | (सं०)   | ७६१       |
| क्षेत्रपालपूजा            | सुमतिकीर्ति                  | (हि०)   | ७१३       | गणधरवल्लयपूजा                          | —                  | (सं०)   | ४६६       |
| क्षेत्रपाल भैरवी गीत      | शोभाचन्द्र                   | (हि०)   | ७७७       | गणधरवल्लय [ मङ्गलचित्र ]               | ५१५, ६३६, ६४५, ७६१ |         |           |
| क्षेत्रपालमंत्रात्र       | —                            | (सं०)   | ३४७       | गणधरवल्लयमन्त्र                        | —                  | (सं०)   | ६०७       |
|                           | ५६१, ५७५, ६४४, ६४६, ६४७      |         |           | गणधरवल्लयमन्त्रमंडल [कोठे]             | —                  | (हि०)   | ६३८       |
| क्षेत्रपालाष्टक           | —                            | (सं०)   | ६५५       | गणपाठ                                  | बादिराज जगन्नाथ    | (सं०)   | २५६       |
| क्षेत्रपालव्यवहार         | —                            | (सं०)   | २८०       | गणसार                                  | —                  | (सं०)   | ५४        |
| क्षेत्रसमासटीका           | हरिभद्रसूरि                  | (सं०)   | ५४        | गणितनाममाला                            | —                  | (सं०)   | ३६८       |
| क्षेत्रसमासप्रकरण         | —                            | (प्रा०) | ५४        | गणितसार                                | —                  | (सं०)   | ३६८       |
|                           | स्व                          |         |           | गणितसार                                | हेमराज             | (हि०)   | ३६८       |
| क्षुद्रप्रचारितिकाव्य     | —                            | (सं०)   | १६३       | गणेशछन्द                               | —                  | (हि०)   | ७५३       |
| क्षप्वेलवालगोत्र          | —                            | (हि०)   | ७५६       | गणेशद्वन्द्वनाम                        | —                  | (सं०)   | ६४६       |
| क्षप्वेलवालों के ८४ गोत्र | —                            | (हि०)   | ७६०       | गर्भमनोरमा                             | —                  | (सं०)   | २८०       |
|                           |                              |         |           | गर्भसंहिता                             | गर्गशब्दि          | (सं०)   | २८०       |

| ग्रन्थनाम                   | लेखक            | भाषा    | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम                              | लेखक        | भाषा    | पृष्ठ सं०                    |
|-----------------------------|-----------------|---------|-----------|--|-------------|---------|------------------------------|
| गर्भकल्याणकक्रियामे भक्तिया | —               | (हि०)   | ५७३       | गुरास्थानवर्णन                         | —           | (हि०)   | ९                            |
| गर्भपञ्चरत्नक               | देवनन्दि        | (स०)    | १३१, ७३७  | गुरास्थानव्याख्या                      | —           | (सं०)   | ५७३                          |
| गिरनारक्षेत्रपूजा           | भ० विश्वभूषण    | (स०)    | ४६६       | गुराशरमाला                             | मनराम       | (हि०)   | ७५०                          |
| गिरनारक्षेत्रपूजा           | —               | (हि०)   | ४६६, ५१३  | गुरावनी                                | —           | (सं०)   | ६२८, ६८६                     |
| गिरनारक्षेत्रपूजा           | —               | (हि०)   | ५१८       | गुरुमष्टक                              | द्यानतराय   | (हि०)   | ७७७                          |
| गिरनारया-नावरण              | —               | (हि०)   | ७६६       | गुरुद्वन्द्व                           | शुभचन्द्र   | (हि०)   | ३८६                          |
| गीत                         | कवि पल्ल        | (हि०)   | ७३८       | गुरुत्रयमाल                            | ब्र० जिनदास | (हि०)   | ६५८                          |
| गीत                         | धर्मेकीर्ति     | (हि०)   | ७४३       |  |             |         | ६८५, ७६१                     |
| गीत                         | पाडे नाथूराम    | (हि०)   | ६२२       | गुरुदेव की विनती                       | —           | (हि०)   | ७०२                          |
| गीत                         | विद्याभूषण      | (हि०)   | ६०७       | गुरुनामावलिछन्द                        | —           | (हि०)   | ३८६                          |
| गीत                         | —               | (हि०)   | ७४३       | गुरारतन्त्र एवं सतस्मरण                | जिनदत्तसूरि | (हि०)   | ६१६                          |
| गीतगोविद                    | जयदेव           | (स०)    | १६३       | गुरुपूजा                               | जिनदास      | (हि०)   | ५३७                          |
| गीतप्रबन्ध                  | —               | (सं०)   | ३८६       | गुरुपूजाष्टक                           | —           | (सं०)   | ६४६                          |
| गीतमहात्म्य                 | —               | (स०)    | ६७७       | गुरुसहस्रनाम                           | —           | (स०)    | ३८७                          |
| गीतवीतराम                   | अभिनवचारुकीर्ति | (सं०)   | ३८६       | गुरुस्तवन                              | शान्तिदास   | (स०)    | ६५७                          |
| गुरावेलि [चन्दनवाजा गीत]    | —               | (हि०)   | ६२३       | गुरुस्तुति                             | —           | (स०)    | ६०७                          |
| गुरावेलि                    | —               | (हि०)   | ६४०       | गुरुस्तुति                             | भूधरदास     | (हि०)   | १५                           |
| गुरामञ्जरी                  | —               | (हि०)   | ७१६       |  |             |         | ४३७, ४४७, ६१४, ६४२, ६६३, ७८४ |
| गुरास्तवन                   | —               | (स०)    | ३२७       | गुरुप्रो की विनता                      | —           | (हि०)   | ७०४                          |
| गुरास्थानगीत                | श्रीवर्द्धन     | (हि०)   | ७६३       | गुरुप्रो की स्तुति                     | —           | (स०)    | ६२३                          |
| गुरास्थानक्रमारोहसूत्र      | रत्नशेखर        | (स०)    | ८         | गुरार्ष्टक                             | बादिराज     | (सं०)   | ६५७                          |
| गुरास्थानचर्चा              | —               | (प्रा०) | ८, ६०८    | गुरार्वांस्त                           | —           | (स०)    | ५६५, ६३३                     |
| गुरास्थानचर्चा              | चन्द्रकीर्ति    | (हि०)   | ८         | गुरार्वांस्तपूजा                       | —           | (सं०)   | ५१६                          |
| गुरास्थानचर्चा              | —               | (हि०)   | ७५१       | गुरार्वांस्तवर्णन                      | —           | (हि०)   | ३७१                          |
| गुरास्थानचर्चा              | —               | (स०)    | ८         | गोकुलगायत्रीलीला                       | —           | (हि०)   | ३६८                          |
| गुरास्थानप्रकरण             | —               | (स०)    | ८         | गोम्मतसार [कर्मकाण्ड] नेमिचन्द्राचार्य | —           | (प्रा०) | १२                           |
| गुरास्थानभेद                | —               | (सं०)   | ८         | गोम्मतसार [कर्मकाण्ड] टीका कनकनन्दि    | —           | (सं०)   | १२                           |
| गुरास्थानमार्मरगा           | —               | (हि०)   | ८         | गोम्मतसार [कर्मकाण्ड] टीका ज्ञानभूषण   | —           | (सं०)   | १२                           |
| गुरास्थानमार्मरगा रचना      | —               | (सं०)   | ८         | गोम्मतसार [कर्मकाण्ड] टीका             | —           | (सं०)   | १३                           |
| गुरास्थानवर्णन              | —               | (स०)    | ९         |  |             |         |                              |

| ग्रन्थनाम                             | लेखक             | भाषा    | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम                            | लेखक       | भाषा    | पृष्ठ सं० |
|---------------------------------------|------------------|---------|-----------|--------------------------------------|------------|---------|-----------|
| गोम्मतसार [कर्मकांड] भाषा             | पं० टोडरमल       | (हि०)   | १३        | ग्यारह ग्रंथ एक बीहड़ पूर्व का वर्णन | —          | (हि०)   | ६२६       |
| गोम्मतसार [कर्मकांड] भाषा             | हेमराज           | (हि०)   | १३        | गृहप्रवेश विचार                      | —          | (सं०)   | ५७१       |
| गोम्मतसार [जावकांड]                   | नेमिचन्द्राचार्य | (प्रा०) | ६         | गृहबिबलसारा                          | —          | (सं०)   | ५७६       |
| गोम्मतसार [जीवकांड] (तत्त्वप्रदीपिका) | —                | (सं०)   | १२        | ग्रहव्यावर्णन                        | —          | (सं०)   | २८०       |
| गोम्मतसार [जीवकांड] भाषा              | टोडरमल           | (हि०)   | १०        | ग्रहफल                               | —          | (हि०)   | ६६४       |
| गोम्मतसारटीका                         | धर्मचन्द्र       | (सं०)   | ६         | ग्रहफल                               | —          | (सं०)   | २८०       |
| गोम्मतसारटीका                         | सकलभूषण          | (सं०)   | १०        | ग्रहो की ऊंचाई एवं प्रायुर्वर्णन     | —          | (हि०)   | ३१६       |
| गोम्मतसारभाषा                         | टोडरमल           | (हि०)   | १०        | <b>घ</b>                             |            |         |           |
| गोम्मतसारपीठिकाभाषा                   | टोडरमल           | (हि०)   | ११        | घटकारिकाव्य                          | घटकपर्ष    | (सं०)   | १६४       |
| गोम्मतसारवृत्ति                       | केरावबर्षी       | (सं०)   | १०        | घषरानिसाणी                           | जिनहर्ष    | (सं०)   | ३८७, ७३४  |
| गोम्मतसारवृत्ति                       | —                | (सं०)   | १०        | घष्टाकार्यकल्प                       | —          | (सं०)   | ३४७       |
| गोम्मतसार संट्टि                      | पं० टोडरमल       | (हि०)   | १२        | घष्टाकार्यमन्त्र                     | —          | (सं०)   | ३४७       |
| गोम्मतसारस्तोत्र                      | —                | (सं०)   | ३८७       | घष्टाकार्यमन्त्र                     | —          | (हि०)   | ६५०, ७६२  |
| गोरक्षनदावली                          | गोरक्षनाथ        | (हि०)   | ७६७       | घष्टाकार्यवृद्धिकल्प                 | —          | (हि०)   | ३४८       |
| गोरक्षसंवाद                           | —                | (हि०)   | ७६४       | <b>च</b>                             |            |         |           |
| गोविन्दष्टक                           | शाङ्कराचार्य     | (सं०)   | ७३३       | चतुर्बीसीठाग्याचर्चा                 | —          | (हि०)   | ७००       |
| गोडोपार्श्वनाथस्तवन                   | जोधराज           | (राज०)  | ६१७       | चतुर्भरप्रकरण                        | —          | (प्रा०) | ५४        |
| गोडोपार्श्वनाथस्तवन                   | समयसुन्दरराशि    | (राज०)  | ६१७, ६१६  | चक्रवर्ति की बारहभानना               | —          | (हि०)   | १०५       |
| गौतमकुलक                              | गौतमस्वामी       | (प्रा०) | १४        | चक्र शरीन्तोत्र                      | —          | (सं०)   | ३४८       |
| गौतमकुलक                              | —                | (प्रा०) | १४        | ३८७, ४३२, ४२८, ६४७                   | —          |         |           |
| गौतमपृच्छा                            | —                | (प्रा०) | ६४३       | चतुर्गति की पढवी                     | —          | (सं०)   | ६४२       |
| गौतमपृच्छा                            | समयसुन्दर        | (हि०)   | ६१६       | चतुर्दशगुणसंभवर्चा                   | —          | (हि०)   | ६८४       |
| गौतमरासा                              | —                | (हि०)   | ७५४       | चतुर्दशतीर्थक्षुरपूजा                | —          | (सं०)   | ६७२       |
| गौतमस्वामीचरित्र                      | धर्मचन्द्र       | (सं०)   | १६३       | चतुर्दशमार्गरावर्चा                  | —          | (हि०)   | ६७१       |
| गौतमस्वामीचरित्रभाषा                  | पन्नालाल चौधरी   | (सं०)   | १६३       | चतुर्दशमूत्र                         | बिनयचन्द्र | (सं०)   | १४        |
| गौतमस्वामीरास                         | —                | (हि०)   | ६१७       | चतुर्दशसूत्र                         | —          | (प्रा०) | १४        |
| गौतमस्वामीसम्भ्राय                    | समयसुन्दर        | (हि०)   | ६१८       | चतुर्दशगन्धाहविवरण                   | —          | (सं०)   | १४        |
| गौतमस्वामीसम्भ्राय                    | —                | (हि०)   | ६१८       | चतुर्दशशोकथा                         | टीकम       | (हि०)   | ७५४, ७७३  |
| गणकुटीपूजा                            | —                | (सं०)   | ५१७       |                                      |            |         |           |

| ग्रन्थनाम                   | लेखक              | भाषा    | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम                 | लेखक             | भाषा    | पृष्ठ सं० |
|-----------------------------|-------------------|---------|-----------|---------------------------|------------------|---------|-----------|
| चतुर्दशीकथा                 | डाल्काराम         | (हि०)   | ७४२       | चतुर्विंशतितीर्थङ्कराष्टक | चन्द्रकीर्ति     | (सं०)   | ५६४       |
| चतुर्दशीविधानकथा            | —                 | (सं०)   | २२२       | चतुर्विंशतिपूजा           | —                | (हि०)   | ४७१       |
| चतुर्दशीव्रतपूजा            | —                 | (सं०)   | ४६६       | चतुर्विंशतियज्ञविधान      | —                | (हि०)   | ३४८       |
| चतुर्विधध्यान               | —                 | (सं०)   | १०५       | चतुर्विंशतिविनती          | चन्द्रकवि        | (हि०)   | ६८५       |
| चतुर्विंशति                 | गुणकीर्ति         | (हि०)   | ६०१       | चतुर्विंशतिप्रतोषायान     | —                | (सं०)   | ५३६       |
| चतुर्विंशतिपुरास्थानपीठिका  | —                 | (सं०)   | १८        | चतुर्विंशतिस्व्यानक       | नेमिचन्द्राचार्य | (प्रा०) | १८        |
| चतुर्विंशतिजयमान            | यति माघनन्दि      | (सं०)   | ४६६       | चतुर्विंशतिसमुच्चयपूजा    | —                | (सं०)   | ५०६       |
| चतुर्विंशतिजिनपूजा          | रामचन्द्र         | (हि०)   | ७२६       | चतुर्विंशतिस्तवन          | —                | (सं०)   | ३८७ ४२६   |
| चतुर्विंशतिजिनराजस्मृति     | जितसिंहसूरि       | (हि०)   | ७००       | चतुर्विंशतिस्तुति         | —                | (प्रा०) | ७७८       |
| चतुर्विंशतिजिनस्तवन         | जयसागर            | (हि०)   | ६१६       | चतुर्विंशतिस्मृति         | विनोदीलाल        | (हि०)   | ७७६       |
| चतुर्विंशतिजिनस्मृति        | जिनलालभसूरि       | (सं०)   | ३८७       | चतुर्विंशतिस्तोत्र        | भूधरदास          | (हि०)   | ४२६       |
| चतुर्विंशतिजिनाष्टक         | शुभचन्द्र         | (सं०)   | ५७८       | चतुर्विंशतीकीर्ति         | —                | (सं०)   | ६७६       |
| चतुर्विंशतितोर्थङ्कर जयमान  | —                 | (प्रा०) | ३८७       | चतुर्विंशतीस्तोत्र        | —                | (सं०)   | ६६२       |
| चतुर्विंशतितोर्थङ्करपूजा    | —                 | (सं०)   | ४७०, ६४५  | चतुर्विंशतीस्तोत्र        | —                | (सं०)   | ३८८       |
| चतुर्विंशतितोर्थङ्करपूजा    | ने दीचन्द्र पाटनी | (हि०)   | ४७२       | चन्द्रकथा                 | लक्ष्मण          | (हि०)   | ७४८       |
| चतुर्विंशतितोर्थङ्करपूजा    | बलदावरलाल         | (हि०)   | ४७३       | चन्द्रकुवर की वार्ता      | —                | (हि०)   | ७३४       |
| चतुर्विंशतितोर्थङ्करपूजा    | मनरङ्गलाल         | (हि०)   | ४७३       | चन्दनबालारास              | —                | (हि०)   | ३८१       |
| चतुर्विंशतितोर्थङ्करपूजा    | रामचन्द्र         | (हि०)   | ४७२       | चन्दनमलय्यागिरीकथा        | भद्रसेन          | (हि०)   | २२२       |
| चतुर्विंशतितोर्थङ्करपूजा    | वृन्दावन          | (हि०)   | ४७१       | चन्दनमलय्यागिरीकथा        | चतर              | (हि०)   | २२३       |
| चतुर्विंशतितोर्थङ्करपूजा    | सुगनचन्द्र        | (हि०)   | ४७३       | चन्दनमलय्यागिरीकथा        | —                | (हि०)   | ७४८       |
| चतुर्विंशतितोर्थङ्करपूजा    | सेखाराम साह       | (हि०)   | ४७०       | चन्दनपञ्चिका              | ब्र० श्रुतसागर   | (सं०)   | २२४, ५१४  |
| चतुर्विंशतितोर्थङ्करपूजा    | —                 | (हि०)   | ४७३       | चन्दनपञ्चिका              | —                | (सं०)   | २२४       |
| चतुर्विंशतितोर्थङ्करस्तवन   | हेमविमलसूरि       | (हि०)   | ४३७       | चन्दनपञ्चिका              | प० हरिचन्द्र     | (प्रा०) | २४३       |
| चतुर्विंशतितोर्थङ्करस्तोत्र | कमलविजयगण्डि      | (सं०)   | ३८८       | चन्दनपञ्चिका              | सुशालचन्द्र      | (हि०)   | ५१६       |
| चतुर्विंशतितोर्थङ्करस्तुति  | चन्द्र            | (हि०)   | ७२०       | चन्दनपञ्चिकाविधानकथा      | —                | (प्रा०) | २४६       |
| चतुर्विंशतितोर्थङ्करस्तुति  | समन्तभद्र         | (सं०)   | ६४७       | चन्दनपञ्चिकाव्रतकथा       | ब्र० छत्रसेन     | (सं०)   | ६३१       |
| चतुर्विंशतितोर्थङ्करस्तुति  | —                 | (सं०)   | ३८८ ६२८   | चन्दनपञ्चिकाव्रतकथा       | श्रुतसागर        | (सं०)   | ५१०       |
| चतुर्विंशतितोर्थङ्करस्तोत्र | माघनन्दि          | (सं०)   | ३८८ ५७६   | चन्दनपञ्चिकाव्रतकथा       | सुशालचन्द्र      | (हि०)   | २२४       |
| चतुर्विंशतितोर्थङ्करस्तोत्र | —                 | (सं०)   | ३८८       |                           |                  |         |           |

| ग्रन्थनाम                       | लेखक            | भाषा    | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम                 | लेखक              | भाषा         | पृष्ठ सं०     |
|---------------------------------|-----------------|---------|-----------|---------------------------|-------------------|--------------|---------------|
| चन्दनपट्टीप्रतपूजा              | चोखचन्द्र       | (म०)    | ४७३       | चन्द्रहंसकथा              | दृषकवि            | (हि०)        | ७१४           |
| चन्दनपट्टीप्रतपूजा              | देवेन्द्रकीर्ति | (सं०)   | ४७३       | चन्द्रावलीक               | —                 | (सं०)        | ३०६           |
| चन्दनपट्टीप्रतपूजा              | विजयकीर्ति      | (म०)    | ५०६       | चन्द्रोन्मीलन             | —                 | (म०)         | २५६           |
| चन्दनपट्टीप्रतपूजा              | शुभचन्द्र       | (सं०)   | ४७३       | चमत्कारस्रान्तशयशैत्रपूजा | —                 | (हि०)        | ४७४           |
| चन्दनपट्टीप्रतपूजा              | —               | (सं०)   | ४७४       | चमत्कारपूजा               | स्वरूपचन्द्र      | (हि०)        | ५११           |
| चन्दनाचरित्र                    | शुभचन्द्र       | (सं०)   | १६४       |                           |                   |              | ६६३, ७५६      |
| चन्दनाचरित्र                    | मोहनविजय        | (पु०)   | ७६१       | चम्पागतक                  | चम्पाबाई          | (हि०)        | ४३७           |
| चन्द्रकीर्तिछन्द                | —               | (हि०)   | ३८६       | चरवा                      | —                 | (प्रा०, हि०) | ६६५           |
| चन्द्रकुंवर की बाली             | प्रतापनिह       | (हि०)   | २२३       | चरवा                      | —                 | (हि०)        | ६५२, ७५५      |
| चन्द्रकुंवर की बाली             | —               | (हि०)   | ७११       | चरवाविर्गन                | —                 | (हि०)        | १५            |
| चन्द्रगुप्त के मालह स्वप्न      | —               | (हि०)   | ७१८       | चरवागतक                   | द्यानतराय         | (हि०)        | १४            |
|                                 |                 |         | ७०३, ७३८  |                           |                   |              | ६६४, ७६४      |
| चन्द्रगुप्तके मानव स्वप्नोका फल | —               | (हि०)   | ६२१       | चर्चामाधान                | भूयरदास           | (हि०)        | १५            |
| चन्द्रप्रजति                    | —               | (प्रा०) | ३१६       |                           |                   |              | ६०६, ६४६, ७३३ |
| चन्द्रप्रभचरित्र                | वीरलनिन्द       | (म०)    | १६४       | चर्चानागर                 | चम्पालाल          | (हि०)        | १६            |
| चन्द्रप्रभकाव्यासकथा            | गुणानिन्द       | (सं०)   | १६५       | चर्चासागर                 | —                 | (हि०)        | १६            |
| चन्द्रप्रभचरित्र                | शुभचन्द्र       | (सं०)   | १६४       | चर्चासार                  | शिवजीलाल          | (हि०)        | १६            |
| चन्द्रप्रभचरित्र                | दामोदर          | (मप०)   | १६५       | चर्चासार                  | —                 | (हि०)        | १६            |
| चन्द्रप्रभचरित्र                | यशःकीर्ति       | (मप०)   | १६५       | चर्चासंग्रह               | —                 | (सं० हि०)    | १५            |
| चन्द्रप्रभचरित्र                | जयचन्द्र छावड़ा | (हि०)   | १६६       | चर्चासंग्रह               | —                 | (हि०)        | १५, ७१०       |
| चन्द्रप्रभचरित्रपञ्चिका         | —               | (म०)    | १६५       | चहुगति चौपई               | —                 | (हि०)        | ७६२           |
| चन्द्रप्रभजिनपूजा               | देवेन्द्रकीर्ति | (सं०)   | ४७४       | चाणक्यनीति                | चाणक्य            | (सं०)        | ३२६           |
| चन्द्रप्रभजिनपूजा               | रामचन्द्र       | (हि०)   | ४७४       |                           |                   |              | ७२३, ७६८      |
| चन्द्रप्रभपुराण                 | हीरालाल         | (हि०)   | १४६       | चाणक्यनीतिभाषा            | —                 | (हि०)        | ३२७           |
| चन्द्रप्रभपूजा                  | —               | (सं०)   | ५०६       | चाणक्यनीतिसारसंग्रह       | मधुरेश भट्टाचार्य | (सं०)        | ३२७           |
| चन्द्रलेहास                     | मतिकुशल         | (हि०)   | ३६१       | चादनपुरके महाधोरकीपूजा    | सुरेन्द्रकीर्ति   | (सं०)        | ५४८           |
| चन्द्रवरदाई की बाली             | —               | (हि०)   | ६७६       | चामुष्कस्तोत्र            | पृथ्वीधराचार्य    | (सं०)        | ३८८           |
| चन्द्रसागरपूजा                  | —               | (हि०)   | ७३३       | चामुष्कोपनिषद्            | —                 | (सं०)        | ६०८           |
| चन्द्रहंसकथा                    | टीकमचन्द्र      | (हि०)   | २२४, ६३६  | चारभावना                  | —                 | (सं०)        | ५५            |



| ग्रन्थनाम                                  | लेखक | भाषा  | पृष्ठ सं०     | ग्रन्थनाम   | लेखक   | भाषा | पृष्ठ सं० |
|--|------|-------|---------------|---|--------|------|-----------|
| चारमाहकी पञ्चमी [मंडलचित्र] —              |      |       | ५२५           | चिन्तामणिसार्वभौमपूजा एक स्तोत्र लक्ष्मीसेन (सं०) |        |      | ४२३       |
| चारमिथो की कथा अजयराज                      |      | (हि०) | २२५           | चिन्तामणिसार्वभौमपूजास्तोत्र —                    | (सं०)  |      | ५६७       |
| चारित्रपूजा —                              |      | (सं०) | ६५८           | चिन्तामणिसार्वभौमपूजनवन —                         | (सं०)  |      | ६४५       |
| चारित्रभक्ति —                             |      | (सं०) | ६२७, ६३३      | चिन्तामणिसार्वभौमपूजनवन लालचन्द्र                 | (राज०) |      | ६१७       |
| चारित्रभक्ति पन्नालाल चौधरी                |      | (हि०) | ४५०           | चिन्तामणिसार्वभौमपूजनवन —                         | (हि०)  |      | ४५१       |
| चारित्रशुद्धिविधान श्रीभूषण                |      | (सं०) | ४७४           | चिन्तामणिसार्वभौमपूजास्तोत्र —                    | (सं०)  |      | ५६३       |
| चारित्रशुद्धिविधान शुभचन्द्र               |      | (सं०) | ४७५           |   |        |      | ६१४, ६५०  |
| चारित्रशुद्धिविधान मुक्तिब्रह्म            |      | (सं०) | ४७५           | चिन्तामणिसार्वभौमपूजास्तोत्र [मंत्र सहित]         | (सं०)  |      | ३८८       |
| चारित्रसार श्रीमद्भाग्युडाराय              |      | (सं०) | ५५            | चिन्तामणिसार्वभौमपूजा [बृहत्] विशाभूषणमूर्ति      | (सं०)  |      | ४७५       |
| चारित्रसार —                               |      | (सं०) | ५६            | चिन्तामणिसार्वभौमपूजा —                           | (सं०)  |      | ६४७       |
| चारित्रसांग्रह्य मन्नालाल                  |      | (हि०) | ५६            | चिन्तामणिसार्वभौमपूजा —                           | (सं०)  |      | ३४८       |
| चारुदत्तचारित्र कल्याणकीर्ति               |      | (हि०) | १६७           | चिन्तामणिसार्वभौमपूजा —                           | (सं०)  |      | ५६४       |
| चारुदत्तचारित्र उदयबाल                     |      | (हि०) | १६६           | चिन्तामणिसार्वभौमपूजास्तोत्र लक्ष्मीसेन           | (सं०)  |      | ७६१       |
| चारुदत्तचारित्र भागमल्ल                    |      | (हि०) | १६८           | चिन्तामणिसार्वभौमपूजास्तोत्र —                    | (सं०)  |      | ३४८       |
| चारो गतिदोको प्रायु पादिका वरगं            |      | (हि०) | ७६३           |   |        |      | ४७५, ६४५  |
| चिकित्सासार —                              |      | (हि०) | २६८           | चिद्विद्विमान दीपचन्द्र कामलीवाल                  | (हि०)  |      | १०५       |
| चिकित्साग्रन्थ उपाध्याय विद्यापति          |      | (सं०) | २६८           | चूतडी विनयचन्द्र                                  | (धर०)  |      | ६४१       |
| चित्र तीर्थङ्कर —                          |      |       | ५६६           | चूतडोरस विनयचन्द्र                                | (धर०)  |      | ६२८       |
| चित्रबन्धस्तोत्र —                         |      | (सं०) | ३८६ ४२६       | चूर्णाधिकार —                                     | (सं०)  |      | २६७       |
| चित्रमेनकथा —                              |      | (सं०) | २२५           | चेतनकर्मचरित्र भगवतीदाम                           | (हि०)  |      | ६०५, ६०६  |
| चित्रपूजा —                                |      | (हि०) | ७७७           | चेतनगीत जिनदाम                                    | (हि०)  |      | ७६२       |
| चिन्तामणिसार्वभौम ठक्करभी                  |      | (हि०) | ७३८           | चेतनगीत मुनि सिंहनन्द                             | (हि०)  |      | ७३८       |
| चिन्तामणिसार्वभौम ब्र० रायमल्ल             |      | (हि०) | ६५५           | चेतनचरित्र भगवतीदाम                               | (हि०)  |      | ६१३       |
| चिन्तामणिसार्वभौम मन/थ                     |      | (हि०) | ६४६           |   |        |      | ६४८, ७४०  |
| चिन्तामणिसार्वभौम [मण्डलचित्र] ५२६         |      |       |               | चेतनदाम फतेहमल                                    | (हि०)  |      | ४५२       |
| चिन्तामणिसार्वभौमपूजास्तोत्र सोम           |      | (सं०) | ७६२           | चेतननारीशुभाय —                                   | (हि०)  |      | ६१६       |
| चिन्तामणिसार्वभौमपूजास्तोत्र जयमानवस्तवन — |      | (सं०) | ३८८           | चेतननारीगीत नाथू                                  | (हि०)  |      | ७५७       |
| चिन्तामणिसार्वभौमपूजास्तोत्र शुभचन्द्र     |      | (सं०) | ४७५           | चेतननास्तकनाथ समयसुन्दर                           | (हि०)  |      | ४३७       |
|  |      |       | ६०६, ६४५, ७४५ | चैत्यपरिपाटी —                                    | (हि०)  |      | ४३७       |

| ग्रन्थनाम          | लेखक             | भाषा  | पुस्तक                       | ग्रन्थनाम                                | लेखक                    | भाषा    | क्रमसं०  |
|--------------------|------------------|-------|------------------------------|--|-------------------------|---------|----------|
| बैल्यवंदना         | सकलचन्द्र        | (सं०) | ६३८                          | बीबीसतीर्थकुररास                         | —                       | (हि०)   | ७२२      |
| बैल्यवंदना         | —                | (सं०) | ३६६, ६५०, ७१८                | बीबीसतीर्थकुरवर्गन                       | —                       | (हि०)   | ४३८      |
| बैल्यवंदना         | —                | (हि०) | ४६६, ४३७                     | बीबीसतीर्थकुरस्तवन                       | देवनग्नि                | (सं०)   | ६०६      |
| बीबीसतीर्थकुरस्तवन | —                | (हि०) | ४६६, ४३७                     | बीबीसतीर्थकुरस्तवन                       | लक्षणकरणाकामलीबाल       | (हि०)   | ४३८      |
| बीबीसतीर्थकुरस्तवन | जोधराज           | (हि०) | २२५                          | बीबीसतीर्थकुरस्तवन                       | —                       | (हि०)   | ६५०      |
| बीबीसतीर्थकुरस्तवन | —                | (सं०) | ६२७                          | बीबीसतीर्थकुरस्तुति                      | —                       | (भ्रम०) | ६२५      |
| बीबीसतीर्थकुरस्तवन | —                | (सं०) | ७८२                          | बीबीसतीर्थकुरस्तुति                      | ब्रह्मदेव               | (हि०)   | ४३८      |
| बीबीसतीर्थकुरस्तवन | अन्वयराज         | (हि०) | १६                           | बीबीसतीर्थकुरस्तुति                      | —                       | (हि०)   | ६०१, ६६४ |
| बीबीसतीर्थकुरस्तवन | —                | (सं०) | ४७६                          | बीबीसतीर्थकुररा के विद्वा                | —                       | (सं०)   | ६२३      |
| बीबीसतीर्थकुरस्तवन | —                | (हि०) | १६                           | बीबीसतीर्थकुररा के रञ्जन्यायक की तिथिया— | (हि०)                   | ५३८     |          |
| बीबीसतीर्थकुरस्तवन | —                | (हि०) | ७२६                          | बीबीसतीर्थकुररा की वदना                  | —                       | (हि०)   | ७७५      |
| बीबीसतीर्थकुरस्तवन | शुण्णकीर्ति      | (हि०) | ६८६                          | बीबीसतीर्थकुररा के वदना                  | दौलतराम                 | (हि०)   | ५६       |
| बीबीसतीर्थकुरस्तवन | आनन्दमूर्ति      | (हि०) | ६१६                          | —  | ४२६, ४४८, ५११, ६७२, ७६० |         |          |
| बीबीसतीर्थकुरस्तवन | —                | (सं०) | ६३७                          | बीबीसदण्डकविचार                          | —                       | (हि०)   | ७३२      |
| बीबीसतीर्थकुरस्तवन | सोमचन्द्र        | (हि०) | ४३७                          | बीबीसस्तवन                               | —                       | (हि०)   | ३८६      |
| बीबीसतीर्थकुरस्तवन | —                | (सं०) | १८, ७६५                      | बीबीसतीर्थकुररा (मदनचित्र)               | —                       |         | ५२४      |
| बीबीसतीर्थकुरस्तवन | नेमिचन्द्राचार्य | (सं०) | १६                           | बीबीसतीर्थकुररा की वदना                  | भ० रञ्जचन्द्र           | (हि०)   | ६४६      |
| बीबीसतीर्थकुरस्तवन | —                |       | ७२०, ६६६                     | बीबीसतीर्थकुररा की वदना                  | जयसामर                  | (हि०)   | ७७६      |
| बीबीसतीर्थकुरस्तवन | —                | (हि०) | १८                           | बीबीसतीर्थकुररा की वदना                  | —                       | (हि०)   | ४३७, ७७३ |
| बीबीसतीर्थकुरस्तवन | —                |       | ६२७, ६७०, ६८०, ६८६, ६६४, ७८६ | बीबीसतीर्थकुररा की वदना                  | —                       | (हि०)   | ५७       |
| बीबीसतीर्थकुरस्तवन | —                | (सं०) | १८                           | बीबीसतीर्थकुररा की वदना                  | —                       | (हि०)   | ६८०      |
| बीबीसतीर्थकुरस्तवन | —                | (हि०) | ४३७                          | बीबीसतीर्थकुररा की वदना                  | —                       | (हि०)   | ७८६      |
| बीबीसतीर्थकुरस्तवन | —                | (हि०) | ५६४                          | बीबीसतीर्थकुररा की वदना                  | —                       | (हि०)   | ३७०      |
| बीबीसतीर्थकुरस्तवन | —                |       | ६२१, ७००, ७५१                | बीबीसतीर्थकुररा की वदना                  | —                       | (हि०)   | ३७०      |
| बीबीसतीर्थकुरस्तवन | [समुच्चय] आनतराय | (हि०) | ७०५                          | बीबीसतीर्थकुररा की वदना                  | —                       | (हि०)   | ७४०      |
| बीबीसतीर्थकुरस्तवन | रामचन्द्र        | (हि०) | ६६६                          | बीबीसतीर्थकुररा की वदना                  | —                       | (हि०)   | ७४८      |
| बीबीसतीर्थकुरस्तवन | —                |       | ७२२, ७२७, ७७२                | बीबीसतीर्थकुररा की वदना                  | —                       | (हि०)   | ७४७      |
| बीबीसतीर्थकुरस्तवन | —                | (हि०) | ५६२, ७२७                     | बीबीसतीर्थकुररा की वदना                  | —                       | (हि०)   | ७४७      |
| बीबीसतीर्थकुरस्तवन | —                | (सं०) | ६०४                          | बीबीसतीर्थकुररा की वदना                  | भ० जिनदास               | (हि०)   | ७६५      |

| ग्रन्थनाम                | लेखक         | भाषा  | पृष्ठ सं० |
|--------------------------|--------------|-------|-----------|
| चौरासीबोल                | कवरपाल       | (हि०) | ७०१       |
| चौरासीलाखउत्तरगुण        | —            | (हि०) | ५७        |
| चौसठकृद्विपुत्रा         | स्वरूपचन्द्र | (हि०) | ४७६       |
| चौसठकला                  | —            | (हि०) | ६०६       |
| चौसठयोगिनीयन्त्र         | —            | (स०)  | ६०३       |
| चौसठयोगिनीस्तोत्र        | —            | (सं०) | ३४८, ४२६  |
| चौसठशिवकुमारकाजी की पूजा | ललितकौत्सि   | (स०)  | ५१६       |

## छ

|   |                    |         |               |
|---|--------------------|---------|---------------|
| छठा प्रारा का विस्मार                   | —                  | (हि०)   | ३७०           |
| छत्तीस कारखानोके नाम                    | —                  | (हि०)   | ६८०           |
| छहढाला                                  | किशन               | हि०)    | ६७४           |
| छहढाना                                  | द्यानतराय          | (हि०)   | ६५२           |
|   |                    |         | ५७३, ६७४, ७४७ |
| छहढाला                                  | दौलतराम            | हि०)    | ५७            |
|   |                    |         | ७०७, ७४६      |
| छहढाला                                  | वृधजन              | (हि०)   | ५७            |
| छातीसुखकी श्लोधि वा मुग्धा              | —                  | (हि०)   | ५७३           |
| छिनवै शेषपाल व चाबोम तीर्थङ्कः [महल चर] | —                  |         | ५२५           |
| छियालीसगुण                              | —                  | (हि०)   | ५६६           |
| छियालीसठागा                             | ब्र० रायमल्ल       | स०)     | ७६५           |
| छियालीसठागाचर्चा                        | —                  | (स०)    | १६            |
| छंदविण्ड                                | इन्द्रनान्द        | (प्रा०) | ५७            |
| छोटादर्शन                               | वृधजन              | (हि०)   | ३६८           |
| छोतीनिवारणविधि                          | —                  | (हि०)   | ४७६           |
| छंदकोयकविन                              | भ० सुरेन्द्रकौत्सि | (स०)    | ३५५           |
| छंदकोश                                  | —                  | (स०)    | ३१०           |
| छंदकोश                                  | रत्नशेखरसुरि       | (सं०)   | ३०६           |
| छंदसतक                                  | युन्दावनदास        | (हि०)   | ३२७           |

| ग्रन्थनाम        | लेखक            | भाषा  | पृष्ठ सं० |
|------------------|-----------------|-------|-----------|
| छंदशिरोमग        | सोमनाथ          | (हि०) | ३५५       |
| छंदसंग्रह        | —               | (हि०) | ३८६       |
| छंदानुशासनवृत्ति | हंमचन्द्राचार्य | (सं०) | ३०६       |
| छंदगतक           | दृषकोत्ति       | (सं०) | ३०६       |

## ज

|                                       |                  |         |               |
|---------------------------------------|------------------|---------|---------------|
| जकडी                                  | दरिगह            | (हि०)   | ७५५, ६६१      |
| जकडी                                  | द्यानतराय        | (हि०)   | ६४३           |
|                                       |                  |         | ६५०, ७१६      |
| जकडी                                  | देवेन्द्रकौत्सि  | (हि०)   | ६०१           |
| जकडी                                  | नेमिचन्द्र       | (हि०)   | ६६२           |
| जकडी                                  | रामकृष्ण         | (हि०)   | ४३८           |
| जकडी                                  | रूपचन्द्र        | (हि०)   | ६५०           |
|                                       |                  |         | ६६१, ७५२, ७५५ |
| जकडी                                  | —                | (हि०)   | ७६३           |
| जगन्नाथनारायणकवच                      | —                | (हि०)   | ६०१           |
| जगन्नाथपत्र                           | शङ्कराचार्य      | (सं०)   | ३८६           |
| जन्मकृ इत्यादि महाराजास्यवाट जगन्मिहः | —                | (स०)    | ७७६           |
| जन्मकृ उन्नीचिचार                     | —                | (हि०)   | ६०३           |
| जन्मरत्रो दीवाग प्रानदीनाथ            | —                | (हि०)   | ७६०           |
| जन्मकुमारमन्त्राय                     | —                | (हि०)   | ४३८           |
| जन्मवृद्धांगू वा                      | पांडे जिनदास     | (सं०)   | ४७७           |
|                                       |                  |         | ५०६, ५३७      |
| जन्मवृद्धारजसि                        | नेमिचन्द्राचार्य | (प्रा०) | ३१६           |
| जन्मवृद्धोपकन                         | —                | (सं०)   | १६            |
| जन्मवृद्धोप सम्बन्धी पञ्चमहर्षिगन     | —                | (हि०)   | ७६६           |
| जन्मवृद्धामोचरित्र                    | ब्र० जिनदास      | (सं०)   | १६८           |
| जन्मवृद्धामोचरित्र                    | पं० राजमल्ल      | (सं०)   | १६६           |
| जन्मवृद्धामोचरित्र                    | विजयकौत्सि       | (हि०)   | १६६           |
| जन्मवृद्धामोचरित्रभाषा                | पद्मलाल चौधरी    | (हि०)   | १६६           |

| ग्रन्थनाम                              | लेखक           | भाषा     | वृष्ट सं० | ग्रन्थनाम                 | लेखक               | भाषा    | वृष्ट सं० |
|--|----------------|----------|-----------|---------------------------|--------------------|---------|-----------|
| जम्बूस्वामीचरित्र                      | नाथूराम        | (हि०)    | १६६       | जिनगुणसंपत्तिपूजा         | केशवसेन            | (स०)    | ५३७       |
| जम्बूस्वामीचरित्र                      | —              | (हि०)    | ६३६       | जिनगुणसंपत्तिपूजा         | रत्नचन्द           | (सं०)   | ४७७, ५११  |
| जम्बूस्वामीचौपई                        | ब्र० रायमल्ल   | (हि०)    | ७१०       | जिनगुणसंपत्तिपूजा         | —                  | (सं०)   | ५३६       |
| जम्बूस्वामीपूजा                        | —              | (हि०)    | ४७७       | जिनगुणस्तवन               | —                  | (सं०)   | ५७५       |
| जयकुमार मुनोचना कथा                    | —              | (हि०)    | २२५       | जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र     | म० जिणचन्द्र       | (सं०)   | ५५७       |
| जयतिहृवणस्तोत्र                        | अभयदेवसूरि     | (प्रा०)  | ७५४       | जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र     | —                  | (सं०)   | ४३३       |
| जयपुरका प्राचीन ऐतिहासिकवर्णन          | —              | (हि०)    | ३७०       | जिनचरित्र                 | ललितकीर्त्ति       | (सं०)   | ६४५       |
| जयपुरके मंदिराकी वंदना स्वरूपचन्द      | (हि०)          | ४३८, ५३८ |           | जिनचरित्रकथा              | —                  | (सं०)   | १६६       |
| जयमान [मालाराहण]                       | —              | (प्रप०)  | ५७३       | जिनचैत्यबंदना             | —                  | (सं०)   | ३६०       |
| जयमान                                  | रायचन्द        | (हि०)    | ४७७       | जिनचैत्यालयजयमाल          | रत्नभूषण           | (हि०)   | ५६४       |
| जलगालगुरास                             | ज्ञानभूषण      | (हि०)    | ३६२       | जिनबोबोमभवन्तररास         | विमलेन्द्रकीर्त्ति | (हि०)   | ५७८       |
| जलयात्रा [तीर्थोदकदानविधान]            | —              | (स०)     | ४७७       | जिनदत्तचरित्र             | गुणभद्राचाय        | (सं०)   | १६६       |
| जलयात्रा                               | ब्र० जिनदास    | (स०)     | ६-३       | जिनदत्तचरित्रभाषा         | पन्नालाल चौधरी     | (हि०)   | १७०       |
| जलयात्रापूजाविधान                      | —              | (हि०)    | ४७७       | जिनदत्त चौपई              | रत्न कवि           | (हि०)   | ६८२       |
| जलयात्राविधान                          | पं० आशावर      | (स०)     | ४७७       | जिनदत्तसूरिगीत            | सुन्दरगणि          | (हि०)   | ६१८       |
| जलहरतेलाविधान                          | —              | (हि०)    | ४७७       | जिनदत्तसूरि चौपई          | जयसागर उपाध्याय    | (हि०)   | ६१८       |
| जनालगाहाणों की वार्ता                  | —              | (हि०)    | ४७७       | जिनदर्शन                  | भूधरदास            | (हि०)   | ६०५       |
| जातकसार                                | नाथूराम        | (हि०)    | ६८४       | जिनदर्शनस्तुति            | —                  | (सं०)   | ४२४       |
| जातकाभरण [जातकालङ्कार]                 | —              | (हि०)    | ७६३       | जिनदर्शनाष्टक             | —                  | (सं०)   | ३६०       |
| जातकवर्णन                              | —              | (सं०)    | ५७४       | जिनपञ्चमी                 | नवलराम             | (हि०)   | ६५१       |
| जाप्य इष्ट प्रानष्ट [माना करनेकी विधि] | (स०)           | ५५५      |           |                           | ६६३, ७०४, ७२५, ७५५ |         |           |
| जिनकुशलकी स्तुति                       | साधुकीर्त्ति   | (हि०)    | ७७८       | जिनपञ्चमी व ग्रन्थ संग्रह | —                  | (हि०)   | ४३८       |
| जिनकुशलसूरिस्तवन                       | —              | (हि०)    | ६१८       | जिनपिगलखंडकोश             | —                  | (हि०)   | ७०६       |
| जिनगुणउद्यान                           | —              | (हि०)    | ६३८       | जिनपुस्तकत्रयपूजा         | —                  | (सं०)   | ४७८       |
| जिनगुणपञ्चमी                           | सेवगराम        | (हि०)    | ४४७       | जिनपूजापुरन्दरकथा         | सुरालचन्द          | (हि०)   | २४४       |
| जिनगुणमाला                             | —              | (हि०)    | ३६०       | जिनपूजापुरन्दरविधानकथा    | अमरकीर्त्ति        | (प्रप०) | २४६       |
| जिनगुणसंपत्ति [मंडलचित्र]              | —              |          | ५२४       | जिनपूजाफलप्राप्तिकथा      | —                  | (सं०)   | ४७८       |
| जिनगुणसंपत्तिकथा                       | —              | (सं०)    | २२५, २४६  | जिनपूजाविधान              | —                  | (हि०)   | ६५२       |
| जिनगुणसंपत्तिकथा                       | ब्र० ज्ञानसागर | (हि०)    | २२८       | जिनपञ्जरस्तोत्र           | कमलप्रभाचार्य      | (सं०)   | ३६०, ४३२  |

| ग्रन्थनाम                               | लेखक                  | भाषा    | पृष्ठ सं०     | ग्रन्थनाम                                     | लेखक                | भाषा            | पृष्ठ सं० |
|---|-----------------------|---------|---------------|---|---------------------|-----------------|-----------|
| जिनपरञ्जरस्तोत्र                        | —                     | (सं०)   | ३६०           | ६५८, ६८३, ६८६, ६९२, ७१२, ७१५, ७२०, ७५२, ७५० । | जिनसहस्रनाम         | जिनसेनाचार्थ    | (सं०) ३६३ |
| जिनपरञ्जरस्तोत्रभाषा                    | स्वरूपचन्द्र          | (हि०)   | ५११           | ४२५, ५७३, ७०७, ७४७                            | जिनसहस्रनाम         | सिद्धसेन दिवाकर | (स०) ३६३  |
| जिनप्रतिपद                              | हर्षकीर्ति            | (हि०)   | ४३८, ६२१      | जिनसहस्रनाम [लघु]                             | —                   | (स०)            | ३६३       |
| जिनमुखाङ्गलोकनकथा                       | —                     | (सं०)   | २४६           | जिनसहस्रनामभाषा                               | बनारसीदास           | (हि०)           | ६६०, ७४६  |
| जिनप्रज्ञकल्प [प्रतिष्ठासार]            | पं० आशाधर             | (सं०)   | ४७८           | जिनसहस्रनामभाषा                               | नाथूराम             | (हि०)           | ३६३       |
| जिनप्रज्ञविधान                          | —                     | (सं०)   | ४७६, ६६७, ७६१ | जिनसहस्रनामटीका                               | अमरकीर्ति           | (सं०)           | ३६३       |
| जिनयशमङ्गल                              | सेवगराम               | (हि०)   | ४४७           | जिनसहस्रनामटीका                               | अनसागर              | (स०)            | ३६३       |
| जिनराजमहिमास्तोत्र                      | —                     | (हि०)   | ५७६           | जिनसहस्रनामटीका                               | —                   | (सं०)           | ३६३       |
| जिनरात्रिविधानकथा                       | —                     | (स०)    | २४२           | जिनसहस्रनामपूजा                               | धर्मभूषण            | (सं०)           | ४८०       |
| जिनरात्रिविधानकथा                       | नरसेन                 | (अप०)   | ६२८           | जिनसहस्रनामपूजा                               | —                   | (स०)            | ५१०       |
| जिनरात्रिविधानकथा                       | —                     | (अप०)   | २४६, ६३१      | जिनसहस्रनामपूजा                               | चैतन्य लुहाडिया     | (हि०)           | ४८०       |
| जिनरात्रिव्रतकथा                        | ब्र० ज्ञानसागर        | (हि०)   | २२०           | जिनसहस्रनामपूजा                               | स्वरूपचन्द्र विलाला | (हि०)           | ४८०       |
| जिनसाहू                                 | ब्र० रायमल्ल          | (हि०)   | ७३८           | जिनमनपन [प्रतिपेकपाठ]                         | —                   | (स०)            | ४७६, ५७४  |
| जिनवरको चिनतो                           | देवापाडे              | (हि०)   | ६८५           | जिनमहस्रनामपूजा                               | —                   | (हि०)           | ४८१       |
| जिनवर दर्शन                             | पद्मानन्दि            | (प्रा०) | ३६०           | जिनगतवन                                       | कनककीर्ति           | (हि०)           | ७७६       |
| जिनवरव्रतजयमाल                          | ब्र० गुलाल            | (हि०)   | ३६०           | जिनस्तवन                                      | दौलतराम             | (हि०)           | ७०७       |
| जिनवरस्तुति                             | —                     | (हि०)   | ७६७           | जिनस्तवनद्वात्रिंशिका                         | —                   | (स०)            | ३६१       |
| जिनवरस्तोत्र                            | —                     | (सं०)   | ३६०, ५७८      | जिनस्तुति                                     | शोभनमुनि            | (सं०)           | ३६१       |
| जिनवाणीस्तवन                            | अगताराम               | (हि०)   | ३६०           | जिनस्तुति                                     | जोधराज गोदीका       | (हि०)           | ४७६       |
| जिनशतकटीका                              | नरसिंह                | (स०)    | ३६१           | जिनस्तुति                                     | रूपचन्द्र           | (हि०)           | ७०२       |
| जिनशतकटीका                              | शंभुसाधु              | (सं०)   | ३६०           | जिनसहिता                                      | सुमतिकीर्ति         | (हि०)           | ७६३       |
| जिनशतकालङ्कार                           | समन्तभद्र             | (स०)    | ३६१           | जिनस्तुति                                     | —                   | (हि०)           | ६१८       |
| जिनशासनभक्ति                            | —                     | (प्रा०) | ६३८           | जिनानन्तर                                     | धीरचन्द्र           | (हि०)           | ६२७       |
| जिनसतसई                                 | —                     | (हि०)   | ७०६           | जिनातिथेकनिर्याय                              | —                   | (हि०)           | ४८१       |
| जिनसहस्रनाम                             | पं० आशाधर             | (सं०)   | ३६१           | जिनेन्द्रपुराण                                | भ० जिनेन्द्रभूषण    | (स०)            | १४६       |
| ५१०, ५६६, ६०५, ६०७, ६३६, ६४६, ६४७, ६५५, | जिनेन्द्रभक्तिस्तोत्र | —       | (हि०)         | ४२८   |                     |                 |           |

| ग्रन्थनाम                    | लेखक            | भाषा        | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम   | लेखक             | भाषा  | पृष्ठ सं० |
|------------------------------|-----------------|-------------|-----------|---|------------------|-------|-----------|
| जिनेन्द्रस्तोत्र             | —               | (सं०)       | ६०६       | ४२६, ६५२, ६७०, ६८६, ६९८, ७०६, ७१०, ७१३, ७१६, ७३२, ७५४ |                  |       |           |
| जिनोपदेशोपकारस्मरस्तोत्र     | —               | (सं०)       | ४१३       |   |                  |       |           |
| जिनोपकारस्मरणस्तोत्र         | —               | (सं०)       | ४२६       | जैनसदाचार मान्यग्रन्थनामक पत्रका प्रत्युत्तर          | बा० दुल्लोचन्द्र | (हि०) | २०        |
| जिनोपकारस्मरणस्तोत्रभाषा     | —               | (हि०)       | ३६३       | जैनगारप्रक्रिया                                       | बा० दुल्लोचन्द्र | (हि०) | ५७        |
| जीवकायासङ्ग्रह               | भुवनकीर्ति      | (हि०)       | ६१६       | जैनेन्द्रमहावृत्ति                                    | अभयनन्दि         | (सं०) | २६०       |
| जीवकायासङ्ग्रह               | राजसमुद्र       | (हि०)       | ६१६       | जैनेन्द्रव्याकरण                                      | देवनन्दि         | (सं०) | २५६       |
| जीवजीनसंहार                  | जैतराम          | (हि०)       | २२५       | जोगीरामो  | पांडे जिनदास     | (हि०) | १०५       |
| जीवन्धरचरित्र                | भ० शुभचन्द्र    | (सं०)       | १७०       | ६०१, ६२२, ६३६, ६५२, ७०३, ७२३, ७४५, ७६१                |                  |       |           |
| जीवन्धरचरित्र                | नथमल घिलाला     | (हि०)       | १७०       | जीधराजपञ्चमी  | —                | (हि०) | ७६०       |
| जीवन्धरचरित्र                | प्रमालाल चौधरी  | (हि०)       | १७१       | ज्येष्ठजिनवर [ मङ्गलविष ]                             | —                |       | ५२५       |
| जीवन्धरचरित्र                | —               | (हि०)       | १७१       | ज्येष्ठजिनवर उद्यापनपूजा                              | —                | (सं०) | ५०६       |
| जीवविचार                     | मानदेवमुरि      | (प्रा०)     | ६१६       | ज्येष्ठजिनवरकथा                                       | —                | (सं०) | २२५       |
| जीवविचार                     | —               | (प्रा०)     | ७३२       | ज्येष्ठजिनवरकथा                                       | जसकीर्ति         | (हि०) | २२५       |
| जीव वेलडी                    | देवीशम          | (हि०)       | ७५७       | ज्येष्ठजिनवरपूजा                                      | श्रुतसागर        | (सं०) | ७६५       |
| जीवसमास                      | —               | (प्रा०)     | ७६५       | ज्येष्ठजिनवरपूजा                                      | सुरेन्द्रकीर्ति  | (सं०) | ५१६       |
| जीवसमासटिप्पण                | —               | (प्रा०)     | १६        | ज्येष्ठजिनवरपूजा                                      | —                | (सं०) | ४८१       |
| जीवसमासभाषा                  | —               | (प्रा० हि०) | १६        | ज्येष्ठजिनवरपूजा                                      | —                | (हि०) | ६०७       |
| जीवस्वरूपवर्णन               | —               | (सं०)       | १६        | ज्येष्ठजिनवरलाहान                                     | ब्र० जिनदास      | (सं०) | ७६५       |
| जीवाजीवविचार                 | —               | (सं०)       | १६        | ज्येष्ठजिनवरव्रतकथा                                   | मुशालचन्द्र      | (हि०) | २४४, ७३१  |
| जीवाजीवविचार                 | —               | (प्रा०)     | १६        | ज्येष्ठजिनवरव्रतपूजा                                  | —                | (सं०) | ४८१       |
| जैनघाघनीमन्त्रविधान          | —               | (सं०)       | ३४८       | ज्येष्ठपूरिणीमाकथा                                    | —                | (हि०) | ६८२       |
| जैनपञ्चमी                    | नवलराम          | (हि०)       | ६७०       | ज्योतिषचर्चा  | —                | (सं०) | ५६७       |
|                              |                 |             | ६७५, ६६४  | ज्योतिष   | —                | (सं०) | ७१४       |
| जैनबन्दी सूत्रबन्दीकी यात्रा | सुरेन्द्रकीर्ति | (हि०)       | ३७०       | ज्योतिषपटलमाला  | श्रीपति          | (सं०) | ६७२       |
| जैनबन्दी देशकी पत्रिका       | मजलसराय         | (हि०)       | ७०३, ७१८  | ज्योतिषशास्त्र  | —                | (सं०) | ६६५       |
| जैनमतका संकल्प               | —               | (हि०)       | ५६२       | ज्योतिषसार  | कृपाराम          | (हि०) | ५६८       |
| जैनरक्षास्तोत्र              | —               | (सं०)       | ६४७       | ज्वरचिकित्सा  | —                | (सं०) | २६८       |
| जैनविवाहपद्धति               | —               | (सं०)       | ४८१       | ज्वरतिमिरभास्कर                                       | चामुण्डराय       | (सं०) | २६८       |
| जैनवातक                      | भूधरदास         | (हि०)       | ३२७       | ज्वरलक्षण   | —                | (हि०) | २६८       |

| ग्रन्थनाम                         | लेखक             | भाषा   | पृष्ठ सं०                    | ग्रन्थनाम              | लेखक             | भाषा  | पृष्ठ सं० |
|-----------------------------------|------------------|--------|------------------------------|------------------------|------------------|-------|-----------|
| ज्वालामालिनीस्तोत्र               | —                | (सं०)  | ४२४                          | जानाकुष                | —                | (सं०) | ६३५       |
| ४२८, ४३३, ४६१, ६०८, ६४६, ६४७, ६४६ |                  |        |                              | जाकाकुषपाठ             | भद्रबाहु         | (सं०) | ४२०       |
| ज्ञानचिन्तामणि                    | मनोहरदाम         | (हि०)  | ५८                           | जानाकुषस्तोत्र         | —                | (सं०) | ४२६       |
|                                   |                  |        | ७१४, ७३६                     | जानागंभव               | शुभचन्द्राचार्य  | (सं०) | १०६       |
| ज्ञानदर्पण                        | साह दीपचन्द्र    | हि०    | १०५                          | जानागंवरटीका [गद्य]    | श्रुतसागर        | (सं०) | १०७       |
| ज्ञानदीपक                         | —                | (हि०)  | १३०, ६६०                     | जानागंवरटीका           | नयाबिलास         | (सं०) | १०८       |
| ज्ञानदीपकवृत्ति                   | —                | (हि०)  | १३१                          | जानागंवरभाषा           | जयचंद्र झाबड़ा   | (हि०) | १०८       |
| ज्ञानपञ्चोसी                      | बनारसीदास        | (हि०)  | ६१४                          | जानागंवरभाषाटीका       | लालचंद्र घिमसिंग | (हि०) | १०८       |
|                                   |                  |        | ६३४, ६४०, ६८५, ६८६, ७४३, ७७५ | ज्ञानोपदेश के पद्य     | —                | (हि०) | ६६२       |
| ज्ञानपञ्चमीस्तवन                  | समयसुन्दर        | (हि०)  | ४३८                          | ज्ञानोपदेशबलीमा        | —                | (हि०) | ६६२       |
| ज्ञानपदवी                         | मनोहरदाम         | (हि०)  | ७१८                          |                        |                  |       |           |
| ज्ञानपञ्चविंशतिका प्रनोद्यापन     | सुरेन्द्रकीर्ति  | (सं०)  | ४८१                          |                        |                  |       |           |
|                                   |                  |        | ५३६                          |                        |                  |       |           |
| ज्ञानपञ्चमीवृहदस्तवन              | समयसुन्दर        | (हि०)  | ७७६                          | कलहों श्री मन्दिरजी की | —                | (हि०) | ४३८       |
| ज्ञानविण्डकी विद्यतिपद्धटिका      | —                | (प्र०) | ६३५                          | भाडा देनेका मन्त्र     | —                | (हि०) | ५७१       |
| ज्ञानपूजा                         | —                | (सं०)  | ६५८                          | भाभरियानु चोटा-गवा     | —                | (हि०) | ४३८       |
| ज्ञानपेढो                         | मनोहरदाम         | (हि०)  | ७५७                          | भूलना                  | रंगाराम          | (हि०) | ७५७       |
| ज्ञानबावना                        | मतिशेखर          | (हि०)  | ७७२                          |                        |                  |       |           |
| ज्ञानभक्ति                        | —                | (सं०)  | ६२७                          |                        |                  |       |           |
| ज्ञानसूर्योदयनाटक                 | वाटिचन्द्रमूरि   | (सं०)  | ३१६                          |                        |                  |       |           |
| ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा             | पारमदाम निगोत्या | (हि०)  | ३१७                          |                        |                  |       |           |
| ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा             | बन्वताशरमल       | (हि०)  | ३१७                          |                        |                  |       |           |
| ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा             | भगवतीदास         | (हि०)  | ३१७                          |                        |                  |       |           |
| ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा             | भागचन्द          | (हि०)  | ३१७                          |                        |                  |       |           |
| ज्ञानस्वरोदय                      | चरणदाम           | (हि०)  | ७५६                          |                        |                  |       |           |
| ज्ञानस्वरोदय                      | —                | (हि०)  | ७५६                          |                        |                  |       |           |
| ज्ञानानन्द                        | रायमल्ल          | (हि०)  | ५८                           |                        |                  |       |           |
| ज्ञानबावनी                        | बनारसीदाम        | (हि०)  | १०५                          |                        |                  |       |           |
| ज्ञानसागर                         | मुनि पद्मसिंह    | (प्र०) | १०५                          |                        |                  |       |           |

म्ह

ट-उ-ड-ढ-ण

|                                  |            |        |          |
|----------------------------------|------------|--------|----------|
| टंडागाणीत                        | धूचराज     | (हि०)  | ७५०      |
| टागाग मूत्र                      | —          | (सं०)  | २०       |
| ढोकरा श्रर राजा भोजराज की वार्ता | —          | (हि०)  | ६६५      |
| ढाढमी गाय                        | —          | (प्र०) | ६०८      |
| ढाढमी गाय                        | ढाढमी मुनि | (प्र०) | ७०७      |
| ढालगण                            | —          | (हि०)  | ३२७      |
| ढाल मङ्गलमकी                     | —          | (हि०)  | ६५५      |
| ढोना मास्की की बात               | —          | (हि०)  | २२६, ६०० |
| ढोला मास्की की वार्ता            | —          | (हि०)  | ७११      |
| ढोला मास्की की चौपाई             | कुशल लाल   | (हि०)  | राज० २२५ |
| एवकार पंचविंशति पूजा             | —          | (सं०)  | ५१०      |
| एमोकारकल्प                       | —          | (सं०)  | ३४८      |

| ग्रन्थनाम            | लेखक           | भाषा    | वृष्ट सं०                   | ग्रन्थनाम   | लेखक             | भाषा     | वृष्ट सं० |
|----------------------|----------------|---------|-----------------------------|---|------------------|----------|-----------|
| एमोकारणद             | प्र० लालसाग    | (हि०)   | ६८३                         | तत्त्वार्थबोध   | —                | (हि०)    | २१        |
| एमोकारणपञ्चमीसो      | ऋषि ठाकुरसी    | (हि०)   | ४३६                         | तत्त्वार्थबाध   | बुधजन            | (हि०)    | २१        |
| एमोकारणव्यञ्जीवयमाल  | —              | (प्र०)  | ६३७                         | तत्त्वार्थबोधिनीटीका  | —                | (सं०)    | २१        |
| एमोकारणपैतसी         | कनककीर्ति      | (सं०)   | ५१७, ४८२, ६७६               | तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर   | प्रभाचन्द्र      | (सं०)    | २१        |
| एमोकारणपैतसी         | —              | (प्र०)  | ३४८                         | तत्त्वार्थराजवार्तिक  | भट्टाकलकदेश      | (सं०)    | २२        |
| एमोकारणपैतसीपूजा     | अक्षयराम       | (सं०)   | ४८२, ५१७, ५३६               | तत्त्वार्थराजवार्तिकभाषा  | —                | (हि०)    | २२        |
| एमोकारणव्यञ्जिकापूजा | —              | (सं०)   | ५४०                         | तत्त्वार्थवृत्ति  | पं० योगदेव       | (सं०)    | २२        |
| गमोकारणं कथा         | —              | (हि०)   | २२६                         | तत्त्वार्थसार   | अमृतचन्द्राचार्य | (सं०)    | २२        |
| गमोकारणस्वन          | —              | (हि०)   | ३६४                         | तत्त्वार्थसारदीपक   | भ० सकलकीर्ति     | (सं०)    | २३        |
| गमोकारणदि पाठ        | —              | (प्र०)  | ३६४                         | तत्त्वार्थसारदीपकभाषा   | पन्नालाल चौधरी   | (हि०)    | २३        |
| ग्याणपिण्ड           | —              | (प्रप०) | ६४२                         | तत्त्वार्थ सूत्र  | उमाश्रवामि       | (सं०)    |           |
| गेमिगाहचारिउ         | लक्ष्मणदेव     | (प्रप०) | १७१                         | ४२५, ४२७, ५३७, ५६१, ५६६ ५७३, ५६४, ५६५, ५६६, ६०३ ६०४, ६३३, ६३७, ६४०, ६४५, ६४६, ६४७, ६४८, ६५० ६५२, ६५६, ६७३, ६७५, ६८१, ६८६, ६६४, ६८६, ७००, ७०३, ७०४, ७०५, ७०७, ७१०, ७२७, ७३१, ७४१, ७७६, ७८७, ७८८, ७८९, ७९०, ७९१, ७९२, ७९३, ७९४, ७९५, ७९६, ७९७, ७९८, ७९९, ८००, ८०१, ८०२, ८०३, ८०४, ८०५, ८०६, ८०७, ८०८, ८०९, ८१०, ८११, ८१२, ८१३, ८१४, ८१५, ८१६, ८१७, ८१८, ८१९, ८२०, ८२१, ८२२, ८२३, ८२४, ८२५, ८२६, ८२७, ८२८, ८२९, ८३०, ८३१, ८३२, ८३३, ८३४, ८३५, ८३६, ८३७, ८३८, ८३९, ८४०, ८४१, ८४२, ८४३, ८४४, ८४५, ८४६, ८४७, ८४८, ८४९, ८५०, ८५१, ८५२, ८५३, ८५४, ८५५, ८५६, ८५७, ८५८, ८५९, ८६०, ८६१, ८६२, ८६३, ८६४, ८६५, ८६६, ८६७, ८६८, ८६९, ८७०, ८७१, ८७२, ८७३, ८७४, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८, ८७९, ८८०, ८८१, ८८२, ८८३, ८८४, ८८५, ८८६, ८८७, ८८८, ८८९, ८९०, ८९१, ८९२, ८९३, ८९४, ८९५, ८९६, ८९७, ८९८, ८९९, ९००, ९०१, ९०२, ९०३, ९०४, ९०५, ९०६, ९०७, ९०८, ९०९, ९१०, ९११, ९१२, ९१३, ९१४, ९१५, ९१६, ९१७, ९१८, ९१९, ९२०, ९२१, ९२२, ९२३, ९२४, ९२५, ९२६, ९२७, ९२८, ९२९, ९३०, ९३१, ९३२, ९३३, ९३४, ९३५, ९३६, ९३७, ९३८, ९३९, ९४०, ९४१, ९४२, ९४३, ९४४, ९४५, ९४६, ९४७, ९४८, ९४९, ९५०, ९५१, ९५२, ९५३, ९५४, ९५५, ९५६, ९५७, ९५८, ९५९, ९६०, ९६१, ९६२, ९६३, ९६४, ९६५, ९६६, ९६७, ९६८, ९६९, ९७०, ९७१, ९७२, ९७३, ९७४, ९७५, ९७६, ९७७, ९७८, ९७९, ९८०, ९८१, ९८२, ९८३, ९८४, ९८५, ९८६, ९८७, ९८८, ९८९, ९९०, ९९१, ९९२, ९९३, ९९४, ९९५, ९९६, ९९७, ९९८, ९९९, १००० |                  |          |           |
| गेमिगाहचारिउ         | दामोदर         | (प्रप०) | १७१                         | तत्त्वार्थसूत्रटीका   | ध्रुतमागर        | (सं०)    | २८        |
| <b>त</b>             |                |         |                             | तत्त्वार्थसूत्रटीका   | आ० कनककीर्ति     | (हि०)    | ३०, ७२६   |
| तकराक्षरीमनोव        | —              | (सं०)   | ३६४                         | तत्त्वार्थसूत्रटीका   | छोटीलाल जैसवाल   | (हि०)    | ३०        |
| तत्वकौमुभ            | पन्नालाल सघी   | (हि०)   | १०                          | तत्त्वार्थसूत्रटीका   | पं० राजमल्ल      | (हि०)    | ३०        |
| तत्वज्ञानतरंगिणी     | भ० ज्ञानभूषण   | (सं०)   | ५८                          | तत्त्वार्थसूत्रटीका   | जयचंद्र झावडा    | (हि०)    | २६        |
| तत्वदीपिका           | —              | (हि०)   | २०                          | तत्त्वार्थसूत्रटीका   | पांडे जयवंत      | (हि०)    | २६        |
| तत्वधर्मावृत         | —              | (सं०)   | ३२८                         | तत्त्वार्थसूत्रटीका   | —                | (हि०)    | ६८६       |
| तत्वबोध              | —              | (सं०)   | १०८                         | तत्त्वार्थवशाभ्यासपूजा  | दयाचंद्र         | (सं०)    | ४८२       |
| तत्ववर्णन            | शुभचन्द्र      | (सं०)   | २०२                         | तत्त्वार्थसूत्र भाषा  | शिखरचन्द्र       | (हि०)    | ३०        |
| तत्वसार              | देवसेन         | (प्र०)  | २०, ५७५, ६३७, ७३७, ७४४, ७४७ | तत्त्वार्थसूत्र भाषा  | सदासुख कासलीवाल  | (हि०)    | २८        |
| तत्वसारभाषा          | द्यानतराय      | (हि०)   | ७४७                         | तत्त्वार्थसूत्र भाषा  | —                | (हि०)    | ३०        |
| तत्वसारभाषा          | पन्नालाल चौधरी | (हि०)   | २१                          | तत्त्वार्थसूत्र भाषा  | —                | (हि० प०) | ३१        |
| तत्त्वार्थद्वय       | —              | (सं०)   | २१                          | तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति  | सिद्धसेन गण्डि   | (सं०)    | २८        |
| तत्त्वार्थबोध        | —              | (सं०)   | २१                          | तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति  | —                | (सं०)    | २८        |



| ग्रन्थनाम                                   | लेखक               | भाषा     | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम            | लेखक         | भाषा   | पृष्ठ सं० |
|---|--------------------|----------|-----------|----------------------|--------------|--------|-----------|
| द्विद्वि प्रक्रिया                          | —                  | (सं०)    | २६०       | तीर्थमालस्तवन        | समयसुन्दर    | (राज०) | ११७       |
| तपनक्षण कथा                                 | सुरशालचंद्र        | (हि०)    | ५१९       | तीर्थवनीस्तोत्र      | —            | (सं०)  | ४३२       |
| तमाखु की जयमाल                              | आशांद्मुनि         | (हि०)    | ४३८       | तीर्थोदकविधान        | —            | (सं०)  | ६३६       |
| तर्कदीपिका                                  | —                  | (सं०)    | १३१       | तीर्थकरजकडी          | हर्षकीर्ति   | (हि०)  | ६२२, ६४४  |
| तर्कप्रकरण                                  | —                  | (सं०)    | १३१       | तीर्थकरपरिचय         | —            | (हि०)  | ३७०       |
| तर्कप्रमाण                                  | —                  | (सं०)    | १३२       |                      |              |        | ६५०, ६५२  |
| तर्कभाषा                                    | केशव मिश्र         | (सं०)    | १३२       | तीर्थकरस्तोत्र       | —            | (सं०)  | ४३०       |
| तर्कभाषा प्रकाशिका                          | बालबन्धु           | (सं०)    | १३२       | तीर्थकरो का इतराल    | —            | (हि०)  | ३७०       |
| तर्करहस्य दीपिका                            | गुणारत्न सूरि      | (सं०)    | १३२       | तीर्थकरो के ६२ स्थान | —            | (हि०)  | ७२०       |
| तर्कसंग्रह                                  | अग्नेभट्ट          | (सं०)    | १३२       | तीसचौबीसी            | —            | (हि०)  | ६५१, ७५८  |
| तर्कसंग्रहटीका                              | —                  | (सं०)    | १३३       | तीसचौबीसीचौपई        | श्याम        | (हि०)  | ७५८       |
| तारातंबोल की कथा                            | —                  | (हि०)    | ७४२       | तीसचौबीसीनाम         | —            | (हि०)  | ४८३       |
| तार्किकलिरोमणि                              | रघुनाथ             | (सं०)    | १३३       | तीसचौबीसीपूजा        | शुभचन्द्र    | (सं०)  | ५३७       |
| तीनचौबीसी                                   | —                  | (हि०)    | ६९३       | तीसचौबीसीपूजा        | वृन्दावन     | (हि०)  | ४८३       |
| तीनचौबीसीनाम                                | —                  | (हि०)    | ५९६       | तीसचौबीसीसमुच्चयपूजा | —            | (हि०)  | ४८३       |
|   | ६७०, ६९३, ७०३, ७५८ |          |           | तीसचौबीसीस्तवन       | —            | (सं०)  | ३९४       |
| तीनचौबीसीपूजा                               | —                  | (सं०)    | ४८२       | तीसचौबीसीविधान       | —            | (हि०)  | ७३२       |
| तीनचौबीसीपूजा                               | नेमीचन्द्र         | (हि०)    | ४८२       | तेरहकाठिया           | बनारसीदास    | (हि०)  | ४२९       |
| तीनचौबीसीपूजा                               | —                  | (हि०)    | ४८२       |                      |              |        | ६०४, ७५०  |
| तीनचौबीसीराम                                | —                  | (हि०)    | ६५१       | तेरहद्वीपपूजा        | शुभचन्द्र    | (सं०)  | ४८३       |
| तीनचौबीसीसमुच्चयपूजा                        | —                  | (सं०)    | ४८२       | तेरहद्वीपपूजा        | भ० बिश्वभूषण | (सं०)  | ४८४       |
| तीनमिया की त्रकडी                           | धनराज              | (हि०)    | ६२३       | तेरहद्वीपपूजा        | —            | (सं०)  | ४८४       |
| तीनलोककथन                                   | —                  | (हि०)    | ३१९       | तेरहद्वीपपूजा        | लालजीत       | (हि०)  | ४८४       |
| तीनलोकचाट                                   | —                  | (हि०)    | ३१९       | तेरहद्वीपपूजा        | —            | (हि०)  | ४८४       |
| तीनलोकपूजा [त्रिलोक मार पूजा, त्रिलोक पूजा] | —                  |          |           | तेरहद्वीपपूजाविधान   | —            | (सं०)  | ४८४       |
|   | नेमीचन्द्र         | (हि०)    | ४८३       | तेरहद्वीपपूजाविधान   | —            | (सं०)  | ४८४       |
| तीनलोकपूजा                                  | टेकचन्द्र          | (हि०)    | ४८३       | तेरहद्वीपपूजा        | माणिकचन्द्र  | (हि०)  | ४८८       |
| तीनलोककथान                                  | —                  | (हि० ग०) | ३१९       | तेरहन्यबीसपन्चभेद    | —            | (हि०)  | ७३३       |
| तीर्थमालस्तवन                               | तेजराज             | (हि०)    | ६१७       | तंत्रसार             | —            | (हि०)  | ७३४       |
|   |                    |          |           | त्रयोविशतिका         | —            | (सं०)  | १०९       |

| ग्रन्थनाम                  | लेखक             | भाषा     | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम                  | लेखक                    | भाषा     | पृष्ठ सं० |
|----------------------------|------------------|----------|-----------|----------------------------|-------------------------|----------|-----------|
| त्रिकाम्बलेश्वरी [प्रमकोश] | अमरसिंह          | (सं०)    | २७४       | त्रिलोकवर्णन               | —                       | (हि०)    | ६६०       |
| त्रिकाम्बलेश्वरविधान       | पुरुषोत्तमदेव    | (सं०)    | २७५       |                            |                         | ७००      | ७०२       |
| त्रिकालचतुर्दशीपूजा        | —                | (सं०)    | ६६६       | त्रिलोकसार                 | नेमिचन्द्राचार्य        | (प्रा०)  | ३२०       |
| त्रिकालचौबीसी              | —                | (हि०)    | ६५१       | त्रिलोकसारकथा              | —                       | (हि०)    | २२७       |
| त्रिकालचौबीसीकथा [रोटतीज]  | अभ्रदेव (सं०)    | २२६, २४२ |           | त्रिलोकसारचौपई             | स्वरूपचन्द्र            | (हि०)    | ५११       |
| त्रिकालचौबीसीकथा [रोटतीज]  | गुगानन्दि (सं०)  | २२६      |           | त्रिलोकसारपूजा             | अभयनन्दि                | (सं०)    | ४८५       |
| त्रिकालचौबीसीनाम           | —                | (सं०)    | ४२४       | त्रिलोकसारपूजा             | — (सं०)                 | ४८५, ५१३ |           |
| त्रिकालचौबीसीपूजा          | त्रिभुवनचन्द्र   | (सं०)    | ४८४,      | त्रिलोकसारभाषा             | टोडरमल                  | (हि०)    | ३२१       |
| त्रिकालचौबीसीतूजा          | —                | (सं०)    | ४८४, ५१७  | त्रिलोकसारभाषा             | —                       | (हि०)    | ३२१       |
| त्रिकालचौबीसीपूजा          | —                | (प्रा०)  | ५०६       | त्रिलोकसारभाषा             | —                       | (हि०)    | ३२१       |
| त्रिकालदेवबंदना            | —                | (हि०)    | ६०७       | त्रिलोकसारकृत              | माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव | (सं०)    | ३२२       |
| त्रिकालपूजा                | —                | (सं०)    | ४८५       | त्रिलोकसारकृत              | —                       | (सं०)    | ३२२       |
| त्रिचतुर्विंशतिविधान       | —                | (सं०)    | २४६       | त्रिलोकसारसहस्रष्ट         | नेमिचन्द्राचार्य        | (प्रा०)  | ३२२       |
| त्रिपंचाशतक्रिया           | —                | (हि०)    | ५१७       | त्रिलोकस्तोत्र             | भ० महीचन्द्र            | (हि०)    | ६८१       |
| त्रिपंचाशतप्रतोद्यापन      | —                | (सं०)    | ५१३       | त्रिलोकस्थजिनानयूपूजा      | —                       | (हि०)    | ४८५       |
| त्रिभुवन की विनती          | गंगादाम          | (हि०)    | ७७२       | त्रिलोकस्वरूप व्याख्या     | उदयलाल गगवाल            | (हि०)    | ३२२       |
| त्रिभुवन की विनती          | —                | (हि०)    | ७७४       | त्रिबर्णाचार               | भ० सोमसेन               | (सं०)    | ५८        |
| त्रिभंगीसार                | नेमिचन्द्राचार्य | (प्रा०)  | ३१        | त्रिशती                    | शार्ङ्गधर               | (सं०)    | २६८       |
| त्रिभंगीसारटीका            | त्रिवेकानन्दि    | (सं०)    | ३२        | त्रिषाष्टशलाकाखंड          | श्रीपाल                 | (सं०)    | ६७०       |
| त्रिलोकक्षेत्रपूजा         | —                | (हि०)    | ४८५       | त्रिषष्टशलाका दृष्टवर्णन   | —                       | (सं०)    | १४६       |
| त्रिलोकचित्र               | —                | (हि०)    | ३२०       | त्रिषाष्टस्मृति            | आशाधर                   | (सं०)    | १४६       |
| त्रिलोकतिलकस्तोत्र         | भ० महीचन्द्र     | (सं०)    | ७१२       | त्रिषाष्टशलाकाचौबीसी       | महेशसिंह                | (प्रा०)  | ६८६       |
| त्रिलोकदीपक                | वामदेव           | (सं०)    | ३२०       | त्रेपनक्रिया               | —                       | (सं०)    | ५६, ७६२   |
| त्रिसोकदर्पणकथा            | खड्गसेन          | (हि०)    | ६८६,      | त्रेपनक्रिया               | भ० गुलाल                | (हि०)    | ७४०       |
|                            |                  |          | ६६०, ३२१  | त्रेपनक्रियाकोश            | दौलतराम                 | (हि०)    | ५६        |
| त्रिलोकवर्णन               | —                | (सं०)    | ३२२       | त्रेपनक्रियापूजा           | —                       | (सं०)    | ४८५       |
| त्रिलोकवर्णन               | —                | (प्रा०)  | ३२२       | त्रेपनक्रिया [मण्डल चित्र] | —                       |          | ५२४       |
| त्रिलोकवर्णन [चित्र]       | —                |          | ३२३       | त्रेपनक्रियाप्रतपूजा       | —                       | (सं०)    | ४८५       |
| त्रिलोकवर्णन               | —                | (सं०)    | ३२३       | त्रेपनक्रियाप्रतोद्यापन    | देवेन्द्रकीर्ति         | (सं०)    | ६३८, ७६६  |

| ग्रन्थनाम                              | लेखक           | भाषा    | पृष्ठ सं०     |
|--|----------------|---------|---------------|
| त्रैपनक्रियाप्रतोद्यापन                | —              | (सं०)   | ५४०           |
| त्रेपठशालाकापुरुषविभ्र                 | —              | (प्रा०) | १७१           |
| त्रेपठशालाकापुरुषवर्णन                 | —              | (हि०)   | ७०२           |
| त्रैलोक्य लीक कथा                      | ब्र० ह्यानसागर | (हि०)   | २२०           |
| त्रैलोक्य मोहनकवच                      | रायमल्ल        | (सं०)   | ६६०           |
| त्रैलोक्यसारटीका                       | सहस्रकीर्ति    | (प्रा०) | ३२३           |
| त्रैलोक्यसारपूजा                       | सुमतिसागर      | (सं०)   | ४८५           |
| त्रैलोक्यसारमहापूजा                    | —              | (सं०)   | ४८६           |
| <b>थ</b>                               |                |         |               |
| थूलभद्रजीकारामो                        | —              | (हि०)   | ७२५           |
| थंभरुपाशर्वनाथस्तवन                    | मुनि अश्वदेव   | (हि०)   | ६१६           |
| थंभरुपाशर्वनाथस्तवन                    | —              | (राज)   | ६१६           |
| <b>द</b>                               |                |         |               |
| दक्षरामूर्तिस्तोत्र                    | शङ्कराचार्य    | (सं०)   | ६६०           |
| दण्डकपाठ                               | —              | (सं०)   | ५६            |
| दत्तात्रय                              | —              | (सं०)   | २२७           |
| दर्शनकथा                               | भारामल्ल       | (हि०)   | २२७           |
| दर्शनकथाकोश                            | —              | (सं०)   | २०७           |
| दर्शनपञ्चासी                           | —              | (हि०)   | ७१६           |
| दर्शनपाठ                               | —              | (सं०)   | ५६६           |
| ६००, ६०४, ६५०, ६६३, ६७७, ६६३, ७०३, ७६३ |                |         |               |
| दर्शनपाठ                               | बुधजन          | (हि०)   | ४३६           |
| दर्शनपाठ                               | —              | (हि०)   | ६००           |
|  |                |         | ६६२, ६६३, ७०५ |
| दर्शनपाठस्तुति                         | —              | (हि०)   | ४३६           |
| दर्शनपाठद्विभाषा                       | —              | (हि०)   | १०६           |
| दर्शनप्रतिमास्वरूप                     | —              | (हि०)   | ५६            |
| दर्शनभक्ति                             | —              | (सं०)   | ६२७           |

| ग्रन्थनाम            | लेखक         | भाषा        | पृष्ठ सं० |
|----------------------|--------------|-------------|-----------|
| दर्शनसार             | देवसेन       | (प्रा०)     | १३३       |
| दर्शनसारभाषा         | नथमल         | (हि०)       | १३३       |
| दर्शनसारभाषा         | शिवजीलाल     | (हि०)       | १३३       |
| दर्शनसारभाषा         | —            | (हि०)       | १३३       |
| दर्शनस्तुति          | —            | (सं०)       | ६५८, ६७०  |
| दर्शनस्तुति          | —            | (हि०)       | ६५२       |
| दर्शनस्तोत्र         | मवलचन्द्र    | (सं०)       | ५७४       |
| दर्शनस्तोत्र         | —            | (सं०)       | ३८१       |
| दर्शनस्तोत्र         | पद्मानन्दि   | (प्रा०)     | ५०६       |
| दर्शनस्तोत्र         | —            | (प्रा०)     | ५७४       |
| दर्शनाष्टक           | —            | (हि०)       | ६४४       |
| दलार्मीनीसज्जाय      | —            | (हि०)       | ३६४       |
| दण प्रकाशके ब्राह्मण | —            | (सं०)       | ५७१       |
| दणप्रकार विप्र       | —            | (सं०)       | ५७६       |
| दणवाल                | —            | (हि०)       | ३२८       |
| दणबानपञ्चोमी         | द्यानतराय    | (हि०)       | ४६८       |
| दणभक्त               | —            | (हि०)       | ५६        |
| दणपञ्चोमी कथा        | —            | (हि०)       | २२७       |
| दणलक्षणउद्यापन पाठ   | —            | (सं०)       | ५५७       |
| दणलक्षणकथा           | लोकसेन       | (सं०)       | २२७       |
| दणलक्षणकथा           | —            | (सं०)       | २२७       |
| दणलक्षणकथा           | मुनि गुणभद्र | (अप०)       | ६३१       |
| दणलक्षणकथा           | सुशालचन्द्र  | (हि०)       | २४४       |
| दणलक्षण जयमान        | सामसेन       | (सं०)       | ७६५       |
| दणलक्षणजयमान         | पं० भावशर्मा | (प्रा०)     | ४२६, ५१७  |
| दणलक्षणजयमान         | —            | (प्रा०)     | ४८७       |
| दणलक्षणजयमान         | —            | (प्रा० सं०) | ४८७       |
| दणलक्षणजयमान         | पं० रङ्गधू   | (अप०)       | २४३       |

| ग्रन्थनाम  | लेखक           | भाषा        | पृष्ठ सं०    | ग्रन्थनाम                                | लेखक           | भाषा    | पृष्ठ सं० |
|--|----------------|-------------|--------------|--|----------------|---------|-----------|
| दशलक्षणत्रयमाल   | सुमतिसागर      | (हि०)       | ७६५          | दशलक्षणिकया                              | जलितकीर्ति     | (सं०)   | ६६५       |
| दशलक्षणत्रयमाल   | —              | (हि०)       | ४८८          | दशलक्षणराम                               | —              | (प्रप०) | ६४२       |
| दशलक्षणधर्मवर्णन पं० सदासुख कासलीवाल   | (हि०)          | ५६          | दशवैकालिकनीत | जैतसिंह                                  | (हि०)          | ७००     |           |
| दशलक्षणधर्मवर्णन   | —              | (हि०)       | ६०           | दशवैकालिकसूत्र                           | —              | (प्रा०) | ३२        |
| दशलक्षणपूजा  | अभयनन्दि       | (सं०)       | ४८८          | दशवैकालिकमूत्रटीका                       | —              | (सं०)   | ३२        |
| दशलक्षणपूजा  | —              | (सं०)       | ४८८          | दशश्लोकीगम्भूस्तोत्र                     | —              | (सं०)   | ६६०       |
| ५१७, ५३६, ५७४, ५६४, ५६६, ६०६, ६०७, ६४०, ६४४, ६४६, ६४२, ६५८, ६६४, ७०४, ७३१, ७५६, ७६३, ७८४ |                |             |              | दशसूत्राष्टक                             | —              | (सं०)   | ६७०       |
| दशलक्षणपूजा  | —              | (प्रप० सं०) | ७०५          | दशाराम                                   | ब्र० चन्द्र    | (सं०)   | ६८३       |
| दशलक्षणपूजा  | अभ्रदेव        | (सं०)       | ४८८          | दादूपद्यावली                             | —              | (हि०)   | ३७१       |
| दशलक्षणपूजा  | सुरालचन्द्र    | (हि०)       | ५१६          | दानकथा                                   | ब्र० जिनदास    | (हि०)   | ७०७       |
| दशलक्षणपूजा  | द्यानतराय      | (हि०)       | ४८८          | दानकथा                                   | भारामल्ल       | (हि०)   | २२८       |
|  |                |             |              | दानकुल                                   | —              | (प्रा०) | ६०        |
| दशलक्षणपूजा  | भूधरदास        | (हि०)       | ५६१          | दानतपशीलसंवाद                            | समयसुन्दर      | (राज०)  | ६१७       |
| दशलक्षणपूजा  | —              | (हि०)       | ४८६          | दानपञ्चाशत                               | पद्मनन्दि      | (सं०)   | ६०        |
|  |                |             |              | दानभावनी                                 | द्यानतराय      | (हि०)   | ६०५, ६८६  |
| दशलक्षणपूजाजयमाल   | —              | (सं०)       | ५६६          | दानलीला                                  | —              | (हि०)   | ६००       |
| दशलक्षण [मंडलचित्र]  | —              |             | ५२५          | दानवर्णन                                 | —              | (हि०)   | ६८६       |
| दशलक्षणमण्डलपूजा   | —              | (हि०)       | ४८६          | दानविनती                                 | जतोदास         | (हि०)   | ६४३       |
| दशलक्षणविधानकथा  | लोकसेन         | (सं०)       | २४२, २४६     | दानशालतपभावना                            | —              | (सं०)   | ६०        |
| दशलक्षणविधानपूजा   | —              | (हि०)       | ४६०          | दानशालतपभावना                            | धर्मसी         | (हि०)   | ६०        |
| दशलक्षणव्रतकथा   | श्रुतसागर      | (सं०)       | २२७          | दानशालतपभावना का चौडात्या                | समयसुन्दरगण्डि | (हि०)   | ६०, ६०१   |
| दशलक्षणव्रतकथा   | सुरालचन्द्र    | (हि०)       | ७३१          |  |                | (हि०)   | २२८       |
| दशलक्षणव्रतकथा   | ब्र० ज्ञानसागर | (हि०)       | ७६४          | दिल्ली की बादशाहतका व्यौरा               | —              | (हि०)   | ७६६       |
| दशलक्षणव्रतकथा   | —              | (हि०)       | २४७          | दिल्लीके बादशाहों पर कवित्त              | —              | (हि०)   | ७५६       |
| दशलक्षणव्रतीद्यापन   | जिनचन्द्रसूरि  | (सं०)       | ४८६          | दिल्ली नगरको बसापत तथा बादशाहत का व्यौरा | —              |         |           |
| दशलक्षणव्रतीद्यापनपूजा   | सुमतिसागर      | (सं०)       | ४८६          |  |                | (हि०)   | ७८४       |
|  |                |             |              | दिल्ली राजका व्यौरा                      | —              | (हि०)   | ७८६       |
|  |                |             |              | दीक्षापटल                                | —              | (सं०)   | ५७५       |
| दशलक्षणव्रतीद्यापनपूजा   | —              | (सं०)       | ५१३          | दीपमालिका निर्याय                        | —              | (हि०)   | ६०        |

| ग्रन्थनाम                      | लेखक                 | भाषा      | पृष्ठ सं०               | ग्रन्थनाम                           | लेखक              | भाषा                  | पृष्ठ सं०          |
|--------------------------------|----------------------|-----------|-------------------------|-------------------------------------|-------------------|-----------------------|--------------------|
| दीपावतारमन्त्र                 | —                    | (सं०)     | ५७१, ५७६                | देवागमस्तोत्रभाषा                   | —                 | (हि० पद्य)            | ३६६                |
| दुभारसविधानकथा                 | मुनि विनयचन्द्र      | (प्रप०)   | २४४                     | देवाग्रभस्तोत्रवृत्ति               | आराधुभा           | [त्रिव्य विजयसेनसूरि] |                    |
| दुर्घटकाव्य                    | —                    | (सं०)     | १७१                     |                                     |                   | (सं०)                 | ३६६                |
| दुर्लभानुप्रेक्षा              | —                    | (प्रा०)   | ६३७                     | देवीमूक्त                           | —                 | (सं०)                 | ६०८                |
| देवकीढाल                       | रतनचन्द्र            | (हि०)     | ४४०                     | देशो [भारत] के नाम                  | —                 | (हि०)                 | ६७१                |
| देवकीढाल                       | लूणकरण कासलीवाल      | (हि०)     | ४३६                     | देहलीके बादशाहोकी नामावली एवं परिचय | —                 |                       |                    |
| देवतास्तुति                    | पद्मानन्द            | (हि०)     | ३६४                     |                                     |                   | (हि०)                 | ७४३                |
| देवपूजा                        | इन्द्रनगिद योगीन्द्र | (सं०)     | ४६०                     | देहलीके बादशाहोके परगनाके नाम       | —                 | (हि०)                 | ६८०                |
| देवपूजा                        | —                    | (सं०)     | ४१५                     | देहलीके बादशाहोका व्योरा            | —                 | (हि०)                 | ३७२                |
|                                |                      |           | ५६४, ६०५, ७२५, ७३१      | देहलीके राजाओकी वंशावलि             | —                 | (हि०)                 | ६८०                |
| देवपूजा                        | —                    | (हि० सं०) | ५६६, ७०४                | दोहा                                | कबीर              | (हि०)                 | ७६६                |
| देवपूजा                        | द्यानतराय            | (हि०)     | ५१६                     | दोहापहुड                            | रामसिंह           | (प्रप०)               | ६०                 |
| देवपूजा                        | —                    | (हि०)     | ६४६                     | दोहागतक                             | रूपचन्द्र         | (हि०)                 | ६७३, ७४०           |
|                                |                      |           | ६७०, ७०६, ७३५, ७५८      | दोहासग्रह                           | नानिगराम          | (हि०)                 | ६२३                |
| देवपूजाटीका                    | —                    | (सं०)     | ४६०                     | दोहासग्रह                           | —                 | (हि०)                 | ७४३                |
| देवपूजाभाषा                    | जयचन्द्र छाबड़ा      | (हि०)     | ४६०                     | द्याननविलास                         | द्यानतराय         | (हि०)                 | ३२८                |
| देवपूजाष्टक                    | —                    | (सं०)     | ६५७                     | द्रव्यसंग्रह                        | नेमिचन्द्राचार्ये | (प्रा०)               | ३२                 |
| देवराज बच्छराज चौगई सोमदेवसूरि | (हि०)                | २२८       |                         |                                     |                   |                       | ५७५, ६२८, ७४४, ७११ |
| देवलीकलकथा                     | —                    | (सं०)     | २२८                     | द्रव्यसंग्रहटीका                    | —                 | (सं०)                 | ३५, ६६४            |
| देवशास्त्रगुरुपूजा             | आशाधर                | (सं०)     | ६३६, ७६१                | द्रव्यसंग्रहगाथा भाषा सहित          | (प्रा० हि०)       | ७४५, ६८६              |                    |
| देवशास्त्रगुरुपूजा             | —                    | (सं०)     | ६०७                     | द्रव्यसंग्रहबालावबोध टीका           | वंशीधर            | (हि०)                 | ७६१                |
| देवशास्त्रगुरुपूजा             | —                    | (हि०)     | ५६२                     | द्रव्यसंग्रहभाषा                    | जयचन्द्र छाबड़ा   | (हि० पद्य)            | ३६                 |
| देवसिद्धपूजा                   | —                    | (सं०)     | ४२८                     | द्रव्यसंग्रहभाषा                    | जयचन्द्र छाबड़ा   | (हि० गद्य)            | ३६                 |
|                                |                      |           | ४६०, ६४०, ६४४, ७३०      | द्रव्यसंग्रहभाषा                    | बा० तुलीचन्द्र    | (हि० गद्य)            | ३७                 |
| देवसिद्धपूजा                   | —                    | (हि०)     | ७०५                     | द्रव्यसंग्रहभाषा                    | द्यानतराय         | (हि०)                 | ७१२                |
| देवागमस्तोत्र                  | आ० समन्तभद्र         | (सं०)     | ३६४                     | द्रव्यसंग्रहभाषा                    | पन्नालाल चौधरी    | (हि०)                 | ३६                 |
|                                |                      |           | ३६४, ४२४, ५७५, ६०४, ७२० | द्रव्यसंग्रहभाषा                    | हेमराज            | (हि०)                 | ७३३                |
| देवागमस्तोत्रभाषा              | जयचन्द्र छाबड़ा      | (हि०)     | ३६५                     | द्रव्यसंग्रहभाषा                    | —                 | (हि०)                 | ३५                 |
|                                |                      |           |                         | द्रव्यसंग्रहभाषा                    | पर्वत धर्मार्थी   | (ग्रन्थ०)             | ३६                 |

| ग्रन्थनाम                       | लेखक              | भाषा       | पृष्ठसं० | ग्रन्थनाम                     | लेखक            | भाषा          | क्रम सं० |
|---------------------------------|-------------------|------------|----------|-------------------------------|-----------------|---------------|----------|
| द्रव्यसंग्रहवृत्ति              | ब्रह्मदेव         | (सं०)      | ३४       | द्वादशानुप्रेक्षा             | —               | (हि०)         | १०६      |
| द्रव्यसंग्रहवृत्ति              | प्रभाचन्द्र       | (सं०)      | ३४       |                               |                 | ६५२, ७४८, ७६५ |          |
| द्रव्यस्वरूपवर्णन               | —                 | (सं०)      | ३७       | द्वादशांगपूजा                 | —               | (सं०)         | ४६१      |
| दृष्टान्तशतक                    | —                 | (सं०)      | ३२८      | द्वादशांगपूजा                 | डालूराम         | (हि०)         | ४६१      |
| द्वादशभावनाटीका                 | —                 | (हि०)      | १०६      | द्वाभयकाम्य                   | हेमचन्द्राचार्य | (सं०)         | १७१      |
| द्वादशभावनादृष्टान्त            | —                 | (युग०)     | १०६      | द्विजवचनकपेटा                 | —               | (सं०)         | १३३      |
| द्वादशमात्रा                    | कवि राजसुन्दर     | (हि०)      | ७४३      | द्वितीयसमोसरण                 | ब्र० गुलाल      | (हि०)         | ५६६      |
| द्वादशमासा [वारहमिषा]           | कवि राइसुन्दर     | (हि०)      | ७७१      | द्विचक्रन्यायकपूजा            | —               | (सं०)         | ५१७      |
| द्वादशमासांतचतुर्दशीव्रतोद्यापन | —                 | (सं०)      | ५३६      | द्विसंधानकाम्य                | धनञ्जय          | (सं०)         | १७१      |
| द्वादशराशिफल                    | —                 | (सं०)      | ६६०      | द्विसंधानकाम्यटीका [पदकोमुदी] | नेमिचन्द्र      | (सं०)         | १७२      |
| द्वादशव्रतकथा                   | पं० अश्वमेध       | (सं०)      | २२८      | द्विसंधानकाम्यटीका            | बिनयचन्द्र      | (सं०)         | १७२      |
|                                 |                   |            | २४६, ४६० | द्विसंधानकाम्यटीका            | —               | (सं०)         | १७२      |
| द्वादशव्रतकथा                   | अन्द्रसागर        | (हि०)      | २२८      | द्वीपसमुद्रो के नाम           | —               | (हि०)         | ६७१      |
| द्वादशव्रतकथा                   | —                 | (सं०)      | २२८      | द्वीपायनढाल                   | गुणसागरसूरि     | (हि०)         | ४४०      |
| द्वादशव्रतपूजाजयमान             | —                 | (सं०)      | ६७६      |                               |                 |               |          |
| द्वादशव्रतमण्डलोद्यापन          | —                 | (सं०)      | ५४०      |                               |                 |               |          |
| द्वादशव्रतोद्यापन               | —                 | (सं०)      | ४६१, ६६६ | धनदत्त सेठ की कथा             | —               | (हि०)         | २२६      |
| द्वादशव्रतोद्यापन               | जगतकीर्त्ति       | (सं०)      | ४६१      | धन्नाकथानक                    | —               | (सं०)         | २२६      |
| द्वादशव्रतोद्यापनपूजा           | देवेन्द्रकीर्त्ति | (सं०)      | ४६१      | धन्नाचौपई                     | —               | (हि०)         | ७७२      |
| द्वादशव्रतोद्यापनपूजा           | पद्मनन्दि         | (सं०)      | ४६१      | धन्नाशलिभद्रचौपई              | —               | (हि०)         | २२६      |
| द्वादशानुप्रेक्षा               | —                 | (सं०)      | १०६, ६७२ | धन्नाशलिभद्ररास               | जिनराजसूरि      | (हि०)         | ३६२      |
| द्वादशानुप्रेक्षा               | लक्ष्मीसेन        | (सं०)      | ७४४      | धन्यकुमारचरित्र               | भ्रा० गुणभद्र   | (सं०)         | १७२      |
| द्वादशानुप्रेक्षा               | —                 | (प्रा०)    | १०६      | धन्यकुमारचरित्र               | ब्र० नेमिदत्त   | (सं०)         | १७३      |
| द्वादशानुप्रेक्षा               | जलदहण             | (प्रप०)    | ६२८      | धन्यकुमारचरित्र               | सकलकीर्त्ति     | (सं०)         | १७२      |
| द्वादशानुप्रेक्षा               | —                 | (प्रप०)    | ६२८      | धन्यकुमारचरित्र               | —               | (सं०)         | १७४      |
| द्वादशानुप्रेक्षा               | साह आलु           | (हि०)      | १०६      | धन्यकुमारचरित्र               | सुरालचन्द्र     | (हि०)         | १७३, ७२६ |
| द्वादशानुप्रेक्षा               | काँच छत्त         | (हि० पद्य) | १०६      | धर्मवक्र [मण्डल चित्र]        | —               |               | ५२५      |
| द्वादशानुप्रेक्षा               | लोहट              | (हि०)      | ७६६      | धर्मवक्रपूजा                  | यशोनिन्द        | (सं०)         | ४६१, ५६५ |
| द्वादशानुप्रेक्षा               | सूरत              | (हि०)      | ७६४      | धर्मवक्रपूजा                  | साधु रायमल्ल    | (सं०)         | ४६२      |

ध

| ग्रन्थनाम                                | लेखक           | भाषा     | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम                   | लेखक               | भाषा    | पृष्ठ सं० |
|--|----------------|----------|-----------|-----------------------------|--------------------|---------|-----------|
| धर्मचक्रपूजा                             | —              | (सं०)    | ५६२       | धर्मरासा                    | —                  | (हि०)   | ३६२       |
|  |                |          | ५१०, ५३७  | धर्मरासो                    | —                  | (हि०)   | ६२३, ६७७  |
| धर्मचन्द्रप्रबंध                         | धर्मचन्द्र     | (प्रा०)  | ३६६       | धर्मलक्षण                   | —                  | (सं०)   | ६२        |
| धर्मचाह                                  | —              | (हि०)    | ७२७       | धर्मविलास                   | द्यानतराय          | (हि०)   | ३२८, ७१०  |
| धर्मचाहना                                | —              | (हि०)    | ६१        | धर्मशर्माभृदय               | महाकवि हरिश्चन्द्र | (सं०)   | १७५       |
| धर्मतस्मोत                               | जिनदास         | (हि०)    | ७६२       | धर्मशर्माभृदयटीका           | यशःकीर्ति          | (सं०)   | १७५       |
| धर्मदशावतार नाटक                         | —              | (सं०)    | ३१७       | धर्मशास्त्रप्रदीप           | —                  | (सं०)   | ६३        |
| धर्म दुहेला जैनी का [त्रयण क्रिया]       | —              | (हि०)    | ६३८       | धर्मसरोवर                   | जोधराज गोदीका      | (हि०)   | ६३        |
| धर्मपञ्चोस                               | द्यानतरा       | (हि०)    | ७५७       | धर्ममार [चौपई]              | पं० शिरोमणिदास     | (हि०)   | ६३, ६६६   |
| धर्मपरीक्षा                              | अमितिगति       | (सं०)    | ३५५       | धर्मसग्रहभावकाचार           | प० मेघावो          | (सं०)   | ६२        |
| धर्मपरीक्षा                              | विशालकीर्ति    | (हि०)    | ७३५       | धर्मसग्रहभावकाचार           | —                  | (सं०)   | ६३        |
| धर्मपरीक्षाभाषा                          | मनोहरदास सोनी  | ३५७, ७१६ |           | धर्मसग्रहभावकाचार           | —                  | (हि०)   | ६३        |
| धर्मपरीक्षाभाषा                          | दशरथ [नगोत्या] | (हि० ग०) | ३५६       | धर्मार्धमस्वरूप             | —                  | (हि०)   | ७०७       |
| धर्मपरीक्षाभाषा                          | —              | (हि०)    | ३५८, ७१०  | धर्मोद्युतसूक्तिग्रह        | आशाधर              | (सं०)   | ६५        |
| धर्मपरीक्षाराम                           | ब्र० जिनदास    | (हि०)    | ३५७       | धर्मोपदेशवीरुपपत्र.भावकाचार | सिंहनन्दि          | (सं०)   | ६५        |
| धर्मपंचविशतिका                           | ब्र० जिनदास    | (हि०)    | ६१        | धर्मोपदेशभावकाचार           | अमोधवर्ष           | (सं०)   | ६५        |
| धर्मप्रदीपभाषा                           | पद्मलाल संधी   | (हि०)    | ६१        | धर्मोपदेशभावकाचार           | ब्र० नेमिदत्त      | (सं०)   | ६५        |
| धर्मग्रन्थोत्तर                          | विमलकीर्ति     | (सं०)    | ६१        | धर्मोपदेशभावकाचार           | —                  | (सं०)   | ६५        |
| धर्मग्रन्थोत्तर                          | —              | (हि०)    | ६१        | धर्मोपदेशसंग्रह             | सेवारासनाह         | (हि०)   | ६५        |
| धर्मग्रन्थोत्तर श्रावकाचार भाषा          | —              | (सं०)    | ६१        | धवन                         | —                  | (प्रा०) | ३७        |
| धर्मग्रन्थोत्तर श्रावकाचार भाषा चम्पाराम | —              | (हि०)    | ६१        | धानुपाठ                     | हेमचन्द्राचार्य    | (सं०)   | २६०       |
| धर्मग्रन्थोत्तरी                         | —              | (हि०)    | ६१        | धानुपाठ                     | —                  | (सं०)   | २६०       |
| धर्मबुद्धिचौपई                           | लालचन्द्र      | (हि०)    | २२६       | धानुप्रथय                   | —                  | (सं०)   | २६१       |
| धर्मबुद्धि पाप बुद्धि कथा                | —              | (सं०)    | २२६       | धानुरावलि                   | —                  | (सं०)   | २६१       |
| धर्मबुद्धि मंत्री कथा                    | वृन्दावन       | (हि०)    | २२६       | ध्रु लीला                   | —                  | (हि०)   | ६००       |
| धर्मरत्नाकर                              | पं० मंगल       | (सं०)    | ६२        | श्रीधुचरित्र                | —                  | (हि०)   | ७५१       |
| धर्मरसायन                                | पद्मनदि        | (प्रा०)  | ६२        | ध्वजारोपसामूत्रा            | —                  | (सं०)   | ५१३       |
| धर्मरसायन                                | —              | (सं०)    | ६२        | ध्वजारोपसामंत्र             | —                  | (सं०)   | ५६२       |
| धर्मरास [श्रावकाचार]                     | —              | (हि०)    | ७७३       | ध्वजारोपसामंत्र             | —                  | (सं०)   | ५६२       |

| ग्रन्थनाम                       | लेखक           | भाषा    | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम                 | लेखक        | भाषा        | पृष्ठ सं० |
|---------------------------------|----------------|---------|-----------|---------------------------|-------------|-------------|-----------|
| ध्वजारोपणविधि                   | भारशाधर        | (सं०)   | ४६२       | नन्दीश्वरपूजा             | —           | (प्रा०)     | ४६३, ७०५  |
| ध्वजारोपणविधि                   | —              | (सं०)   | ४६२       | नन्दीश्वरपूजा             | —           | (सं० प्रा०) | ४६३       |
| ध्वजारोहणविधि                   | —              | (सं०)   | ४६२       | नन्दीश्वरपूजा             | —           | (घट०)       | ४६३       |
|                                 | <b>न</b>       |         |           | नन्दीश्वरपूजा             | —           | (हि०)       | ४६३       |
| नक्षत्रशिवगणन                   | केशवदास        | (हि०)   | ७७२       | नन्दीश्वरपूजा जयमाल       | —           | (सं०)       | ७५६       |
| नक्षत्रशिवगणन                   | —              | (हि०)   | ७१५       | नन्दीश्वरपूजाविधान        | टेकचन्द     | (हि०)       | ४६४       |
| नगर स्थापना का स्वरूप           | —              | (हि०)   | ७५०       | नन्दीश्वरपत्तिपूजा        | पद्मनन्द    | (सं०)       | ६३६       |
| नगरो की बसावत का संवत्वार विवरण |                |         |           | नन्दीश्वरपत्तिपूजा        | —           | (सं०)       | ४६३       |
|                                 | मुनि कनककीर्ति | (हि०)   | ५६१       | नन्दीश्वरपत्तिपूजा        | —           | (हि०)       | ४६३       |
| नन्द भोलाई का भगडा              | —              | (हि०)   | ७४७       | नन्दीश्वरभक्ति            | —           | (सं०)       | ६३३       |
| नन्दिताम्बखंड                   | —              | (प्रा०) | ३१०       | नन्दीश्वरभक्ति            | पद्मलाल     | (हि०)       | ४६४, ४५०  |
| नन्दिवेरा महामुनि गज्जाय        | —              | ?       | ६१६       | नन्दीश्वरविधान            | जिनेश्वरदास | (हि०)       | ४६४       |
| नन्दीश्वरउद्यापन                | —              | (सं०)   | ५३७       | नन्दीश्वरविधानकथा         | हरिषेण      | (सं०)       | २२६, ५१४  |
| नन्दीश्वरकथा                    | भ० शुभचन्द्र   | (सं०)   | २२६       | नन्दीश्वरविधानकथा         | —           | (सं०)       | २२६, २४६  |
| नन्दीश्वरजयमाल                  | —              | (सं०)   | ४६२       | नन्दीश्वरव्रतविधान        | टेकचन्द     | (हि०)       | ५१८       |
| नन्दीश्वरजयमाल                  | —              | (प्रा०) | ६३६       | नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा  | अनन्तकीर्ति | (सं०)       | ४६४       |
| नन्दीश्वरजयमाल                  | कनककीर्ति      | (घट०)   | ५१६       | नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा  | नन्दिषेण    | (सं०)       | ४६४       |
| नन्दीश्वरजयमाल                  | —              | (घट०)   | ४६२       | नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा  | —           | (सं०)       | ४६४       |
| नन्दीश्वरद्वीपपूजा              | रत्ननन्द       | (सं०)   | ४६२       | नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा  | —           | (हि०)       | ४६४       |
| नन्दीश्वरद्वीपपूजा              | —              | (सं०)   | ४६३       | नन्दीश्वरादिभक्ति         | —           | (प्रा०)     | ६२७       |
|                                 |                |         | ६०१, ६५२  | नागदीवृष                  | —           | (प्रा०)     | ३७        |
| नन्दीश्वरद्वीपपूजा              | —              | (प्रा०) | ६५५       | नन्दूसमीप्रतोद्यापन       | —           | (सं०)       | ४६४       |
| नन्दीश्वरद्वीपपूजा              | द्यानतराय      | (हि०)   | ५१६, ५६२  | नमस्कारमन्त्रकल्पविधिसहित | सिंहनन्द    | (सं०)       | ३४६       |
| नन्दीश्वरद्वीपपूजा              | मङ्गल          | (हि०)   | ४६३       | नमस्कारमन्त्रस्टोक        | —           | (सं० हि०)   | ६०१       |
| नन्दीश्वरपुष्पाञ्जलि            | —              | (सं०)   | ५७६       | नमस्कारस्तोत्र            | —           | (सं०)       | ४२८       |
| नन्दीश्वरपूजा                   | सकलकीर्ति      | (सं०)   | ७६१       | नमिऋणस्तोत्र              | —           | (प्रा०)     | ६८१       |
| नन्दीश्वरपूजा                   | —              | (सं०)   | ४६३       | नयचक्र                    | देवसेन      | (प्रा०)     | १३४       |
|                                 |                |         |           | नयचक्रटीका                | —           | (हि०)       | ६८६       |



| ग्रन्थनाम                             | लेखक         | भाषा      | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम          | लेखक           | भाषा       | पृष्ठ सं० |
|---------------------------------------|--------------|-----------|-----------|--------------------|----------------|------------|-----------|
| नयषक्रभाषा                            | हेमराज       | (हि०)     | १३४       | नवग्रहपूजाविधान    | भद्रबाहु       | (सं०)      | ४६४       |
| नयषक्रभाषा                            | —            | (हि०)     | १३४       | नवग्रहस्तोत्र      | वेदठ्यास       | (सं०)      | ६४६       |
| नरकदुःखवर्णन [कोहा]                   | भूधरदास      | (हि०)     | ६५        | नवग्रहस्तोत्र      | —              | (सं०)      | ४३०       |
|                                       |              |           | ७६०, ७८८  | नवग्रहस्थापनाविधि  | —              | (सं०)      | ६१२       |
| नरकवर्णन                              | —            | (हि०)     | ६५        | नवतत्वगाथा         | —              | (प्रा०)    | ३७        |
| नरकस्वर्गकेयन्त्र पृथ्वी धादिका वर्णन | —            | (हि०)     | ६५२       | नवतत्वप्रकरण       | —              | (प्रा०)    | ७३२       |
| नरपतित्रयचर्चा                        | नरपति        | (सं०)     | २२५       | नवतत्वप्रकरण       | लक्ष्मीबल्लभ   | (हि०)      | ३७        |
| नन दमयन्ती नाटक                       | —            | (सं०)     | ३१७       | नवतत्ववैदिक        | पन्नालाल चौधरी | (हि०)      | ३८        |
| ननोदयकाव्य                            | कालिदास      | (सं०)     | १७५       | नवतत्ववर्णन        | —              | (हि०)      | ३८        |
| ननोदयकाव्य                            | माणिक्यसूरि  | (सं०)     | १७४       | नवतत्वविचार        | —              | (हि०)      | ६१६       |
| नवकारकल्प                             | —            | (सं०)     | ३४६       | नवतत्वविचार        | —              | (हि०)      | ३८        |
| नवकारपैतृसो                           | —            | (सं०)     | ६६६       | नवपदपूजा           | देवचन्द्र      | (हि०)      | ७६०       |
| नवकारपैतृमीपूजा                       | —            | (सं०)     | ५३७       | नवमङ्गल            | विनोदीलाल      | (हि०)      | ६८५, ७३४  |
| नवकार बड़ो बिनती                      | ब्रह्मदेव    | (हि०)     | ६५१       | नवरत्नकवित्त       | —              | (सं०)      | ३२६       |
| नवकारमहिमास्तवन                       | जिनवल्लभसूरि | (हि०)     | ६१८       | नवरत्नकवित्त       | बनारसीदास      | (हि०)      | ७४३       |
| नवकारमन्त्र                           | —            | (सं०)     | ४३१       | नवरत्नकवित्त       | —              | (हि०)      | ७१७       |
| नवकारमन्त्र                           | —            | (प्रा०)   | ६३६       | नवरत्नकाव्य        | —              | (सं०)      | १७५       |
| नवकारमन्त्रचर्चा                      | —            | (हि०)     | ७१८       | नष्टादिष्ट         | —              | (सं०)      | ६५        |
| नवकारग्राम                            | अचलकीर्ति    | (हि०)     | ६४७       | नहनमीपाराविधि      | —              | (हि०)      | २६८       |
| नवकारग्राम                            | —            | (हि०)     | ३६२       | नामकुमारचरित्र     | धर्मधर         | (सं०)      | १७६       |
| नवकारग्रामो                           | —            | (हि०)     | ७४५       | नागकुमारचरित्र     | मल्लिषेयसूरि   | (सं०)      | १७५       |
| नवकारश्रावकाचार                       | —            | (प्रा०)   | ६५        | नागकुमारचरित्र     | —              | (सं०)      | १७६       |
| नवकारसज्जाध                           | गुणप्रभसूरि  | (हि०)     | ६१८       | नागकुमारचरित्र     | उदयनाल         | (हि०)      | १७६       |
| नवकारसज्जाध                           | पद्मराजगणि   | (हि०)     | ६१८       | नागकुमारचरित्र     | —              | (हि०)      | १७८       |
| नवग्रह [मण्डलचित्र]                   | —            |           | ५२५       | नागकुमारचरित्रटीका | प्रभाचन्द्र    | (सं०)      | १७६       |
| नवग्रहशक्तिपार्ष्णनायकस्तवन           | —            | (सं०)     | ६०६       | नागमंता            | —              | (हि० राज०) | २२६       |
| नवग्रहशक्तिपार्ष्णस्तोत्र             | —            | (प्रा०)   | ७३२       | नागनीला            | —              | (हि०)      | ६६५       |
| नवग्रहपूजा                            | —            | (सं०)     | ४६५       | नागशकबा            | ब्र० नेमिदत्त  | (सं०)      | २३१       |
| नवग्रहपूजा                            | —            | (सं० हि०) | ५१८       | नागश्रीकथा         | किरानसिंह      | (हि०)      | २३१       |



| ग्रन्थनाम  | लेखक           | भाषा    | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम           | लेखक              | भाषा  | पृष्ठ सं० |
|--|----------------|---------|-----------|---------------------|-------------------|-------|-----------|
| निर्वाणकाण्डभाषा   | —              | (प्रा०) | ३६८       | नीतिवाक्यामृत       | सोमदेवसूरि        | (सं०) | ३३०       |
| ४२६, ४३१, ४२६, ६२२, ६२८, ६३५, ६३८, ६६२, ६७०, ६६४, ७१६, ७५३, ७७४, ७८८, ७८६                |                |         |           | नीतिविनोद           | —                 | (हि०) | ३३०       |
| निर्वाणकाण्डटीका   | —              | (प्रा०) | ३६६       | नीतिशतक             | भर्तृहरि          | (सं०) | ३२६       |
| निर्वाणकाण्डपूजा   | —              | (सं०)   | ६६८       | नीतिशास्त्र         | चाणक्य            | (सं०) | ७१७       |
| निर्वाणकाण्डभाषा   | भैया भगवतीदास  | (सं०)   | ३६६       | नीतिसार             | इन्द्रनन्दि       | (सं०) | ३२६       |
| ४२३, ४२६, ४४१, ४६२, ४७०, ४६६, ६००, ६०५, ६१४, ६६५, ६४३, ६५०, ६५१, ६६२, ६७४, ७०६, ७२०, ७४७ |                |         |           | नीतिसार             | —                 | (सं०) | ३२६       |
| निर्वाणकाण्डभाषा   | सेधन           | (हि०)   | ७८८       | नीलकण्ठताम्रिक      | नीलकण्ठ           | (सं०) | २८५       |
| निर्वाणक्षेत्रपूजा   | —              | (हि०)   | ४६६, ५१८  | नीलमूक्त            | —                 | (सं०) | ३३०       |
| निर्वाणक्षेत्रमण्डलपूजा  | —              | (हि०)   | ८६२       | नेमिगीत             | पामचन्द           | (हि०) | ४४१       |
| निर्वाणपूजा  | —              | (सं०)   | ४६६       | नेमिगीत             | भूधरदास           | (हि०) | ४३२       |
| निर्वाणपूजापाठ   | मनरङ्गलाल      | (हि०)   | ४६६       | नेमिजिनदव्याहृतो    | खेतसी             | (हि०) | ६३८       |
| निर्वाणप्रकरण  | —              | (हि०)   | ६५        | नेमिनाथनस्तवन       | मुनि जोधराज       | (हि०) | ६१८       |
| निर्वाणभक्ति   | —              | (सं०)   | ३६६, ६३०  | नेमिनाथका चरित्र    | आणन्द             | (हि०) | १७६       |
| निर्वाणभक्ति   | पञ्जालाल चौधरी | (हि०)   | ४५०       | नेमिनाथकी लहरी      | विश्वभूषण         | (हि०) | ७७६       |
| निर्वाणभक्ति   | —              | (हि०)   | ३६६       | नेमिदूतकाव्य        | महाकवि विक्रम     | (सं०) | १७६       |
| निर्वाणभूमिमङ्गल   | विश्वभूषण      | (हि०)   | ६६८       | नेमिनरेंद्रस्तोत्र  | जगन्नाथ           | (सं०) | ३६६       |
| निर्वाणमोदकनिर्गम्य  | नेमिदास        | (हि०)   | ६५        | नेमिनाथकाशरीस्तोत्र | पं० शालि          | (सं०) | ४२६       |
| निर्वाणनिर्वाध   | —              | (सं०)   | ६०८       | नेमिनाथका बारहमामा  | विनोदीलाल लालचन्द | —     |           |
| निर्वाणनगरीस्तोत्र   | —              | (सं०)   | ३६६       | नेमिनाथका बारहमामा  | —                 | (हि०) | ७५३       |
| निर्वाणस्तोत्र   | —              | (सं०)   | ३६६       | नेमिनाथकी भावना     | सेधकराम           | (हि०) | ६७४       |
| निःशल्याष्टमीकथा   | —              | (सं०)   | २३१       | नेमिनाथ के दशभव     | —                 | (हि०) | १७७       |
| निःशल्याष्टमीकथा   | ब्र० ज्ञानसागर | (हि०)   | २२०       | नेमिनाथ के नवमङ्गल  | विनोदीलाल         | (हि०) | ४४०       |
| निःशल्याष्टमीकथा   | पांडे हरिकृष्ण | (हि०)   | ७६५       | नेमिनाथ के बारह भव  | —                 | (हि०) | ७६०       |
| निःश्लिभोजनकथा   | ब्र० नेमिदत्त  | (सं०)   | २३१       | नेमिनाथकी भावना     | जगतभूषण           | (हि०) | ५६७       |
| निःश्लिभोजनकथा   | —              | (हि०)   | २३१       | नेमिनाथचरित्र       | हेमचन्द्राचार्य   | (सं०) | १७७       |
| निःश्लेष्याध्वनि   | —              | (सं०)   | २८५       | नेमिनाथचन्द         | शुभचन्द्र         | (हि०) | ३८६       |

| ग्रन्थनाम                             | लेखक            | भाषा  | पृष्ठ सं०      | ग्रन्थनाम                           | लेखक           | भाषा  | पृष्ठ सं० |
|---------------------------------------|-----------------|-------|----------------|-------------------------------------|----------------|-------|-----------|
| नेमिनाथपुराण                          | ब्र० जिनदास     | (सं०) | १४७            | नेमिराजुलगीत                        | जिनहर्षसूरि    | (हि०) | ६१८       |
| नेमिनाथपुराण                          | भागचन्द         | (हि०) | १४६            | नेमिराजुलगीत                        | मुबनकीर्ति     | (हि०) | ६१८       |
| नेमिनाथपूजा                           | कुवल्यचन्द      | (सं०) | ७६३            | नेमिराजुलपञ्चीसी                    | चिनांदोलाल     | (हि०) | ४४१, ७४७  |
| नेमिनाथपूजा                           | सुरेन्द्रकीर्ति | (सं०) | ४६६            | नेमिराजुलसञ्जाय                     | —              | (हि०) | ४४३       |
| नेमिनाथपूजा                           | —               | (हि०) | ४६६            | नेमिरासी                            | —              | (हि०) | ७४५       |
| नेमिनाथपूजाष्टक                       | शंभूराम         | (सं०) | ४६६            | नेमिस्तवन                           | जितसागरगणी     | (हि०) | ४००       |
| नेमिनाथपूजाष्टक                       | —               | (हि०) | ४६६            | नेमिस्तवन                           | शृपि शिव       | (हि०) | ४००       |
| नेमिनाथफागु                           | पुस्यरत्न       | (हि०) | ७४८            | नेमिस्तोत्र                         | —              | (सं०) | ४३२       |
| नेमिनाथमङ्गल                          | लालचन्द         | (हि०) | ६०५            | नेमिमुक्कवित्त [नेमिपुर राजमतिवेलि] | कवि ठक्कुरसी   | (हि०) | ६३८       |
| नेमिनाथराजुल का बारहमासा              | —               | (हि०) | ७२५            | नेमीश्वरका गीत                      | नेमीचन्द       | (हि०) | ६२१       |
| नेमिनाथरास                            | शृषि रामचन्द    | (हि०) | ३६२            | नेमीश्वरका बारहमासा                 | खेतसिंह        | (हि०) | ७६२       |
| नेमिनाथस्तोत्र                        | पं० शालि        | (सं०) | ७४७            | नेमीश्वरकी वेलि                     | ठक्कुरसी       | (हि०) | ७२२       |
| नेमिनाथरास                            | ब्र० रायमल्ल    | (हि०) | ७१६, ७५२       | नेमीश्वरकी स्तुति                   | भूधरदास        | (हि०) | ६५०       |
| नेमिनाथरास                            | रत्नकीर्ति      | (हि०) | ६३८            | नेमीश्वरका हिडोलना                  | मुनि रतनकीर्ति | (हि०) | ७२२       |
| नेमिनाथरास                            | विजयदेवसूरि     | (हि०) | ३६२            | नेमीश्वरके दसाभव                    | ब्र० धर्मरांच  | (हि०) | ७३८       |
| नेमिनाथस्तोत्र                        | पं० शालि        | (सं०) | ३६६            | नेमीश्वरको रास                      | भाऊकावि        | (हि०) | ६२८       |
| नेमिनाथाष्टक                          | भूधरदास         | (हि०) | ७७७            | नेमीश्वरचोमासा                      | सिद्दहन्दि     | (हि०) | ७३८       |
| नेमिपुराण [हरिवंशपुराण] ब्र० नेमिदत्त | (सं०)           | १४७   | नेमीश्वरका फाग | ब्र० रायमल्ल                        | (हि०)          | ७६३   |           |
| नेमिनिर्वाण                           | महाकवि वाग्भट्ट | (सं०) | १७७            | नेमीश्वरराजुलकी नहरी                | खेतसिंह सां०   | (हि०) | ७७६       |
| नेमिनिर्वाणपञ्चिका                    | —               | (सं०) | १७७            | नेमीश्वरराजुलनाविवाद                | ब्र० ज्ञानसागर | (हि०) | ६१३       |
| नेमिब्याहलो                           | —               | (हि०) | २३१            | नेमीश्वररास                         | मुनि रतनकीर्ति | (हि०) | ७२२       |
| नेमिराजमतीका चोमासिमा                 | —               | (हि०) | ६१६            | नेमीश्वररास                         | ब्र० रायमल्ल   | (हि०) | ६०१       |
| नेमिराजमती की धोडी                    | —               | (हि०) | ४४१            |                                     |                |       | ६२१, ६३८  |
| नेमिराजमतीका गीत                      | हीरानन्द        | (हि०) | ४४१            |                                     |                |       |           |
| नेमिराजमति बारहमासा                   | —               | (हि०) | ६५७            | नेमितिक प्रयोग                      | —              | (सं०) | ६३३       |
| नेमिराजमतिरास                         | रत्नमुक्ति      | (हि०) | ६१७            | नेषधचरित्र                          | हर्षकीर्ति     | (सं०) | १७७       |
| नेमिराजलव्याहलो                       | गोपीकृष्ण       | (हि०) | २३२            | नौशेरावं बाघशाहकी दस ताज            | —              | (हि०) | ३३०       |
| मराजुलबारहमासा                        | जानन्दसूरि      | (हि०) | ६१८            | न्यायकुमुदचन्द्रिका                 | प्रभाचन्द्रदेव | (सं०) | १३४       |
| जषिसञ्जाय                             | समयसुन्दर       | (हि०) | ६१८            | न्यायकुमुदचन्द्रोदय                 | भट्टाकलङ्कदेव  | (सं०) | १३४       |

| ग्रन्थनाम             | लेखक                   | भाषा  | पृष्ठ सं०               | ग्रन्थनाम                  | लेखक            | भाषा     | पृष्ठ सं० |
|-----------------------|------------------------|-------|-------------------------|----------------------------|-----------------|----------|-----------|
| व्यायदीरिका           | यति धर्मभूषण           | (सं०) | १३५                     | पञ्चकल्याणकपूजा            | छोटेलाल मिश्र   | (हि०)    | ५००       |
| व्यायदीपिकाभाषा       | मंघी पन्नालाल          | (हि०) | १३५                     | पञ्चकल्याणकपूजा            | टेकचन्द्र       | (हि०)    | ५०१       |
| व्यायदीपिकाभाषा       | सदामुख कामलीबाल        | (हि०) | १३५                     | पञ्चकल्याणकपूजा            | पन्नालाल        | (हि०)    | ५०१       |
| व्यायमाता             | परमहंस परिव्राजकाचार्य | (सं०) | १३५                     | पञ्चकल्याणकपूजा            | मैरवदास         | (हि०)    | ५०१       |
| व्यायशास्त्र          | —                      | (सं०) | १३५                     | पञ्चकल्याणकपूजा            | रूपचन्द्र       | (हि०)    | ५००       |
| व्यायसार              | माधवदेव                | (सं०) | १३५                     | पञ्चकल्याणकपूजा            | शिवजीलाल        | (हि०)    | ५६६       |
| व्यायसार              | —                      | (सं०) | १३५                     | पञ्चकल्याणकपूजा            | —               | (हि०)    | ५२६       |
| व्यायसिद्धान्तमञ्जरी  | भ० चूडामणि             | (सं०) | १३६                     | पञ्चकल्याणकपूजा            | —               | ५०१, ७१२ |           |
| व्यायसिद्धान्तमञ्जरी  | जानकेश                 | (सं०) | १३५                     | पञ्चकल्याणकपूजाष्टक        | —               | (सं०)    | ६८३       |
| व्यायसूत्र            | —                      | (सं०) | १३६                     | पञ्चकल्याणक [ मण्डलचित्र ] | —               | —        | ५२५       |
| वृत्तिप्रवृत्ता       | —                      | (हि०) | ६०८                     | पञ्चकल्याणकस्तुति          | —               | (प्रा०)  | ६१८       |
| वृत्तिप्रवृत्तारवित्र | —                      | —     | ६०३                     | पञ्चकल्याणकोद्यापनपूजा     | ज्ञानभूषण       | (सं०)    | ६६०       |
| वृत्तप्रारम्भ         | विरूपा                 | (हि०) | ७७७                     | पञ्चकुमारपूजा              | —               | (हि०)    | ५०२, ७५६  |
| वृत्तप्रामुख्य        | वसी                    | (हि०) | ७७७                     | पञ्चशेखरपूजा               | गङ्गादास        | (सं०)    | ५०२       |
| वृत्तप्रवेदि          | —                      | (सं०) | ५६४, ६४०                | पञ्चशेखरपूजा               | सोमसेन          | (सं०)    | ७६५       |
| <b>प</b>              |                        |       |                         | पञ्चव्याण                  | —               | (प्रा०)  | ६१६       |
| पञ्चकरसामागिक         | सुरेश्वराचार्य         | (सं०) | २६१                     | पञ्चशुक्लव्याणपूजा         | शुभचन्द्र       | (सं०)    | ५०२       |
| पञ्चकल्याणकपाठ        | हरचन्द्र               | (हि०) | ४००                     | पञ्चशुक्ली जयमान           | ब्र० रायमल्ल    | (हि०)    | ७६३       |
| पञ्चकल्याणकपाठ        | हरिचन्द्र              | (हि०) | ७६६                     | पञ्चतत्त्वधारणा            | —               | (सं०)    | १०६       |
| पञ्चकल्याणकपाठ        | —                      | (सं०) | ६६६                     | पञ्चतन्त्र                 | पं० विष्णुशर्मा | (सं०)    | ३३०       |
| पञ्चकल्याणकपूजा       | अरुणमणि                | (सं०) | ५००                     | पञ्चतन्त्रभाषा             | —               | (हि०)    | ३३०       |
| पञ्चकल्याणकपूजा       | गुणकीर्ति              | (सं०) | ५००                     | पञ्चदश [१५] यन्त्रकी विधि  | —               | (सं०)    | ३४६       |
| पञ्चकल्याणकपूजा       | वादीर्भनिह             | (सं०) | ५७०                     | पञ्चनमस्कारस्तोत्र         | साम्बाभी        | (सं०)    | ५७६, ७३६  |
| पञ्चकल्याणकपूजा       | मुशामानर               | (सं०) | ५००                     | पञ्चनमस्कारस्तोत्र         | विद्यानिन्द     | (सं०)    | ४०१       |
|                       |                        |       | ५१६, ५३७                | पञ्चपरमेष्ठीउद्यापन        | —               | (सं०)    | ५०२       |
| पञ्चकल्याणकपूजा       | सुयशकीर्ति             | (सं०) | ५००                     | पञ्चपरमेष्ठीपुण्य          | —               | (हि०)    | ६६        |
| पञ्चकल्याणकपूजा       | सुरेन्द्रकीर्ति        | (सं०) | ५६६                     |                            |                 |          | ५२६, ७८८  |
| पञ्चकल्याणकपूजा       | —                      | (सं०) | ५००                     | पञ्चपरमेष्ठीपुण्यमाल       | —               | (हि०)    | ७५५       |
|                       |                        |       | ५१४, ५१८, ५१६, ६३६, ६६६ | पञ्चपरमेष्ठीपुण्यवर्णन     | दासुराम         | (हि०)    | ६६        |

| ग्रन्थनाम                 | लेखक            | भाषा      | पृष्ठ सं०          | ग्रन्थनाम                      | लेखक            | भाषा    | सं० पृष्ठ                               |
|---------------------------|-----------------|-----------|--------------------|--------------------------------|-----------------|---------|---|
| पञ्चपरमेष्ठीपुराणस्तवन    | —               | (हि०)     | ७०७                | पंचमीव्रतोद्यापन               | हर्षकल्याण      | (सं०)   | ५०४, ५३६                                |
| पञ्चपरमेष्ठीपूजा          | यशोनन्दि        | (सं०)     | ५०२, ५१८           | पंचमीव्रतोद्यापनपूजा           | केशवसेन         | (सं०)   | ६३८                                     |
| पञ्चपरमेष्ठीपूजा          | भ० शुभचन्द्र    | (सं०)     | ५०२                | पंचमीव्रतोद्यापनपूजा           | —               | (सं०)   | ५०४                                     |
| पञ्चपरमेष्ठीपूजा          | —               | (सं०)     | ५०३                | पंचमीस्तुति                    | —               | (सं०)   | ६१८                                     |
|                           |                 |           | ५१६, ५६६           | पंचमेरुउद्यापन                 | भ० रत्नचन्द्र   | (सं०)   | ५०५                                     |
| पञ्चपरमेष्ठीपूजा          | डालूगम          | (हि०)     | ५०३                | पंचमेरुजयमाल                   | भूधरदास         | (हि०)   | ५३६                                     |
| पञ्चपरमेष्ठीपूजा          | टेकचन्द्र       | (हि०)     | ५०३, ५१८           | पंचमेरुजयमाल                   | —               | (हि०)   | ७१७                                     |
| पञ्चपरमेष्ठीपूजा          | —               | (हि०)     | ५०३                | पंचमेरूपूजा                    | देवेन्द्रकीर्ति | (सं०)   | ५१६                                     |
|                           |                 |           | ५१८, ५१९, ६५२, ७१२ | पंचमेरूपूजा                    | भ० महीचन्द्र    | (सं०)   | ६०७                                     |
| पञ्चपरमेष्ठी [मण्डनचित्र] | —               |           | ५२५                | पंचमेरूपूजा                    | —               | (सं०)   | ५३६                                     |
| पञ्चपरमेष्ठीस्तवन         | —               | (सं०)     | ४२२                |                                |                 |         | ५५७, ४६४, ६६४, ६६६, ७८४                 |
| पञ्चपरमेष्ठीस्तवन         | —               | (प्रा०)   | ६६१                | पंचमेरूपूजा                    | —               | (प्रा०) | ६३५                                     |
| पञ्चपरमेष्ठीस्तवन         | जिनवल्लभसूरि    | (हि०)     | ४४३                | पंचमेरूपूजा                    | —               | (प्रा०) | ६३६                                     |
| पञ्चपरमेष्ठीसनुचयपूजा     | —               | (सं०)     | ५०२                | पंचमेरूपूजा                    | डालूराम         | (हि०)   | ५०५                                     |
| पञ्चपारावर्तन             | —               | (सं०)     | ३८                 | पंचमेरूपूजा                    | टेकचन्द्र       | (हि०)   | ५०५                                     |
| पञ्चपालपैतामो             | —               | (हि०)     | ६८६                | पंचमेरूपूजा                    | द्यानतराव       | (हि०)   | ५०५                                     |
| पञ्चपररूपगुण              | —               | (सं०)     | २६६                |                                |                 |         | ५१६, ५६२, ५६६, ७०४, ७५६                 |
| पञ्चवधावा                 | —               | (हि०)     | ६४३, ६६१           | पंचमेरूपूजा                    | सुखानन्द        | (हि०)   | ५०५                                     |
| पञ्चवधावा                 | —               | (राज०)    | ६८२                | पंचमेरूपूजा                    | —               | (हि०)   | ५०५                                     |
| पंचबालवतिपूजा             | —               | (हि०)     | ५०४                |                                |                 |         | ५१६, ७५४                                |
| पंचमगतित्रेणिलि           | हर्षकीर्ति      | (हि०)     | ६२१                | पंचमङ्गलपाठ, पंचमंकल्याणकमङ्गल | पंचमङ्गल        | —       |   |
|                           |                 |           | ६६१, ६६८, ७५०, ७६५ |                                | रूपचन्द्र       | (हि०)   | ३६८,                                    |
| पंचमासचतुर्दशीपूजा        | सुरेन्द्रकीर्ति | (सं०)     | ५४०                |                                |                 |         | ४२८, ४०१ ५०५, ५१८, ५६५, ५७०, ६०४, ६२४,  |
| पंचमासचतुर्दशीव्रतोद्यापन | सुरेन्द्रकीर्ति | (सं०)     | ५०४                |                                |                 |         | ६४२, ६४६, ६५०, ६५२, ६६१, ६६५, ६७०, ६७३, |
| पंचमासचतुर्दशीव्रतोद्यापन | —               | (सं०)     | ५३६                |                                |                 |         | ६७५, ६७६, ६८१, ६८३, ६८६, ७०४, ७०५, ७१०, |
| पंचमीउद्यापन              | —               | (सं० हि०) | ५१७                |                                |                 |         | ७१४, ७२०, ७३५, ७६३, ७८८                 |
| पंचमीव्रतपूजा             | केशवसेन         | (सं०)     | ५१५                | पंचयतिस्तवन                    | समयसुन्दर       | (हि०)   | ६१६                                     |
| पंचमीव्रतपूजा             | देवेन्द्रकीर्ति | (सं०)     | ५०४                | पंचरत्नपरीक्षा की गाथा         | —               | (प्रा०) | ७३८                                     |
| पंचमीव्रतपूजा             | —               | (सं० हि०) | ५१७                | पंचलन्धिविचार                  | —               | (प्रा०) | ७०७                                     |

| ग्रन्थनाम                | लेखक               | भाषा    | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम           | लेखक            | भाषा    | पृष्ठ सं०                         |
|--------------------------|--------------------|---------|-----------|---------------------|-----------------|---------|-----------------------------------|
| पंचसंग्रह                | आ० नेमिचन्द्र      | (प्रा०) | ३८        | पक्षीशास्त्र        | —               | (सं०)   | ६७४                               |
| पंचसंग्रहटीका            | अमितगति            | (सं०)   | ३६        | पट्टीपहाडोको पुस्तक | —               | (हि०)   | ३६८                               |
| पंचसंग्रहटीका            | —                  | (सं०)   | ४०        | पट्टीरिति           | विष्णुभट्ट      | (सं०)   | १३६                               |
| पंचसंग्रहवृत्ति          | अभयचन्द्र          | (सं०)   | ३६        | पट्टाबलि            | —               | (हि०)   | ३७३, ७६६                          |
| पंचसंधि                  | —                  | (सं०)   | २६१       | पट्टिकम्मरामुत्र    | —               | (प्रा०) | ६१६                               |
| पंचस्तोत्र               | —                  | (सं०)   | ५७८       | पराकरहाजयमान        | —               | (अप०)   | ६३६                               |
| पंचस्तोत्रटीका           | —                  | (सं०)   | ४०१       | पत्रपरीक्षा         | पात्रकेशरी      | (सं०)   | १३६                               |
| पंचस्तोत्रसंग्रह         | —                  | (सं०)   | ४०१       | पत्रपरीक्षा         | विद्यागन्धि     | (सं०)   | १२६                               |
| पंचाख्यान                | विष्णुशर्मा        | (सं०)   | २३२       | पथ्याभ्यविचार       | —               | (सं०)   | १३६                               |
| पंचाङ्ग                  | चण्डू              |         | २८५       | पद                  | अस्यैराम        | (हि०)   | ५८५                               |
| पंचागप्रबोध              | —                  | (सं०)   | २८५       | पद                  | अस्यैराम        | (हि०)   | ५८५                               |
| पंचाङ्गसाधन              | गणेश [विद्यवपुत्र] | (सं०)   | २८५       | पद                  | अजयराज          | (हि०)   | ५८१                               |
| पंचाधिकार                | —                  | (सं०)   | ३७३, ५१६  |                     |                 |         | ६६७, ७२४, ५८०                     |
| पंचाध्यायी               | —                  | (हि०)   | ७५६       | पद                  | अनन्तकीर्ति     | (हि०)   | ५८५                               |
| पंचासिका                 | त्रिभुवनचन्द्र     | (हि०)   | ६७३       | पद                  | अमृतचन्द्र      | (हि०)   | ५८६,                              |
| पंचास्तिकाय              | कुन्दकुन्दाचार्य   | (प्रा०) | ४०        | पद                  | उदयराम          | (हि०)   | ७८६, ७६८                          |
| पंचास्तिकायटीका          | अमृतचन्द्रमूर्ति   | (सं०)   | ४१        | पद                  | कनकीर्ति        | (हि०)   | ५६१                               |
| पंचास्तिकायभाषा          | बुधजन              | (हि०)   | ४१        |                     |                 |         | ६६६, ७०२, ७२४, ७७४                |
| पंचास्तिकायभाषा          | पं० हीरानन्द       | (हि०)   | ४१        | पद                  | ब्र० कपूरचन्द्र | (हि०)   | ५७०                               |
| पंचास्तिकायभाषा          | पांडे हेमराज       | (हि०)   | ४१        |                     |                 |         | ६१५, ६२४                          |
| पंचास्तिकायभाषा          | —                  | (हि०)   | ७१६, ७२०  | पद                  | कवीर            | (हि०)   | ७७७, ७६३                          |
| पंचेन्द्रयवेल            | झीहल               | (हि०)   | ७३८       | पद                  | कर्मचन्द्र      | (हि०)   | ५८७                               |
| पंचेन्द्रयवेल            | टककुरसी            | (हि०)   | ७०३       | पद                  | किशानगुलाब      | (हि०)   | ६६४, ७६३                          |
|                          |                    |         | ७२२, ७६५  | पद                  | किशानदास        | (हि०)   | ६४६                               |
| पंचेन्द्रपराम            | —                  | (हि०)   | ६६३       | पद                  | किशानसिंह       | (हि०)   | ५६०, ७०४                          |
| पंचितमरण                 | —                  | (सं०)   | ६०४       | पद                  | कुमुदचन्द्र     | (हि०)   | ७५७, ६७०                          |
| पंचोगीत                  | झीहल               | (हि०)   | ८३८, ७६५  | पद                  | केशरगुलाब       | (हि०)   | ४४५                               |
| पंचहृत्पथी               | —                  | (हि०)   | ११०       | पद                  | सुरालालचन्द्र   | (हि०)   | ५८२                               |
| पनकी स्थाही बनानेकी विधि | —                  | (हि०)   | ७४१       |                     |                 |         | ६२४, ६६४, ६६४, ६६८, ७०३, ७८३, ७६८ |

| ग्रन्थनाम | लेखक           | भाषा  | पृष्ठ सं०   |
|-----------|----------------|-------|---|
| पद        | खेमचन्द्र      | (हि०) | ५८०   |
|           |                |       | ५८३, ५९१, ६४९   |
| पद        | गरीबदास        | (हि०) | ७९३   |
| पद        | गुणचन्द्र      | (हि०) | ५८१   |
|           |                |       | ५८५, ५८७, ५८८   |
| पद        | गुनपूरण        | (हि०) | ७९८   |
| पद        | गुमानोराम      | (हि०) | ६९९   |
| पद        | गुलाबकृष्ण     | (हि०) | ५८४, ६१४  |
| पद        | घनश्याम        | (हि०) | ६२३   |
| पद        | चतुर्भुज       | (हि०) | ७७०   |
| पद        | चन्द्र         | (हि०) | ५८७, ७९३  |
| पद        | चन्द्रभान      | (हि०) | ५९१   |
| पद        | चैनविजय        | (हि०) | ५८८, ७९८  |
| पद        | चैनमुख         | (हि०) | ७९३   |
| पद        | छीहल           | (हि०) | ७२३   |
| पद        | जगतराम         | (हि०) | ५८१   |
|           |                |       | ५८२, ५८४, ५८५, ५८८, ५८९, ६१५, ६९७, ६९९,<br>७२४, ७५७, ७९८, ७९९ |
| पद        | जगराम          | (हि०) | ४४५, ७८५  |
| पद        | जनमल           | (हि०) | ५८५   |
| पद        | जयकीर्त्ति     | (हि०) | ५८५, ५८८  |
| पद        | जयचन्द्र काबका | (हि०) | ४४६   |
| पद        | जादूराम        | (हि०) | ४४५   |
| पद        | जानिमोहम्मद    | (हि०) | ५८६   |
| पद        | जिनदास         | (हि०) | ५८१   |
|           |                |       | ५८८, ६१५, ६६८, ७४९, ७६४, ७७४, ७९३,                            |
| पद        | जिनहर्ष        | (हि०) | ५९०   |
| पद        | जीवणादास       | (हि०) | ४४५   |
| पद        | जीवश्याम       | (हि०) | ५८०   |

| ग्रन्थनाम | लेखक            | भाषा  | पृष्ठ सं०   |
|-----------|-----------------|-------|---|
| पद        | जीशराम          | (हि०) | ५९०, ७६१  |
| पद        | जोधराज          | (हि०) | ४६४   |
|           |                 |       | ६९९, ७०६, ७८९, ७९८  |
| पद        | टोडर            | (हि०) | ५८२   |
|           |                 |       | ६१४, ६२३, ७७६, ७७७  |
| पद        | त्रिलोककीर्त्ति | (हि०) | ५८०, ५८१  |
| पद        | श्री दयाल       | (हि०) | ५८७   |
| पद        | दयालदास         | (हि०) | ७४९   |
| पद        | दरिगह           | (हि०) | ७४९   |
| पद        | दलजी            | (हि०) | ७४९   |
| पद        | दास             | (हि०) | ७४९   |
| पद        | दिलाराम         | (हि०) | ७९३   |
| पद        | दीपचन्द्र       | (हि०) | ५८३   |
| पद        | दुलीचन्द्र      | (हि०) | ६६३   |
| पद        | देवसेन          | (हि०) | ५८६   |
| पद        | देवाश्रम        | (हि०) | ७८५   |
|           |                 |       | ७८६, ७९३  |
| पद        | देवीदास         | (हि०) | ६४९   |
| पद        | देवीसिंह        | (हि०) | ६६४   |
| पद        | देवेन्द्रभूषण   | (हि०) | ५८७   |
| पद        | दौलतराम         | (हि०) | ६५४   |
|           |                 |       | ७०६, ७८२, ७९३   |
| पद        | द्यानतराय       | (हि०) | ५८३   |
|           |                 |       | ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ५९०, ६३२,<br>६२४, ६४३, ६४९, ६५४, ७०४, ७०६, ७१३, ७४६ |
| पद        | धर्मपाल         | (हि०) | ५८८, ७९८  |
| पद        | धनराज           | (हि०) | ७९८   |
| पद        | नथ विमल         | (हि०) | ५८१   |
| पद        | नन्ददास         | (हि०) | ५८७   |
|           |                 |       | ७७०, ७०४  |



| ग्रन्थनाम | श्लोक  | भाषा  | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम | श्लोक                                  | भाषा  | पृष्ठ सं० |
|-----------|--|-------|-----------|-----------|--|-------|-----------|
| पद        | नयनमुख   | (हि०) | ५८३       | पद        | भाष                                    | (हि०) | ५८७       |
| पद        | नरपाल  | (हि०) | ५८८       | पद        | भागचन्द                                | (हि०) | ५७०       |
| पद        | नखल  | (हि०) | ५७१       | पद        | मानुकीर्त्ति                           | (हि०) | ५८३       |
|           | ५८२, ५८६, ५६०, ६१५, ६४८, ६५३, ६५४, ६५५, ७०६, ७८२, ७८३, ७६८ |       |           |           | ५८५, ६१५                               |       |           |
| पद        | म० नाथू  | (हि०) | ६२२       | पद        | भूधरदास                                | (हि०) | ५८०       |
| पद        | निर्मल   | (हि०) | ५८१       |           | ५८६, ५८६, ५६०, ६१४, ६१५, ६४८, ६५४, ६६४ |       |           |
| पद        | नेमिचन्द   | (हि०) | ५८०       |           | ६६४, ७८५, ७६३, ७६८                     |       |           |
|           | ६२२, ६३३   |       |           | पद        | मञ्जलसराय                              | (हि०) | ५८१       |
| पद        | न्यामत   | (हि०) | ७६८       | पद        | मनराम                                  | (हि०) | ६६०       |
| पद        | पद्मतिलक   | (हि०) | ५८३       |           | ७२४, ७४६, ७६४, ७६६, ७७६                |       |           |
| पद        | पद्मनिन्द  | (हि०) | ६४३       | पद        | मनसाराम                                | (हि०) | ५८०       |
| पद        | परमानन्द   | (हि०) | ७७०       |           | ६६३, ६६४                               |       |           |
| पद        | पारसदास  | (हि०) | ६५४       | पद        | मनोहर                                  | (हि०) | ७६३       |
| पद        | पुरुषोत्तम   | (हि०) | ५८१       |           | ७६४, ७८५                               |       |           |
| पद        | पूनो   | (हि०) | ७८५       | पद        | मलूकचन्द                               | (हि०) | ४४६       |
| पद        | पूरणदेव  | (हि०) | ६६३       | पद        | मलूकदास                                | (हि०) | ७६३       |
| पद        | फतेहचन्द   | (हि०) | ५७६       | पद        | मदीचन्द                                | (हि०) | ५७६       |
|           | ५८०, ५८१, ५८२  |       |           | पद        | महेन्द्रकीर्त्ति                       | (हि०) | ६२०, ७८६  |
| पद        | बखतराम   | (हि०) | ५८३       | पद        | माणिकचन्द                              | (हि०) | ४४७       |
|           | ५८६, ६६८, ७८२, ७८६, ७६३                                    |       |           |           | ४४८, ७६८                               |       |           |
| पद        | बनारसीदास  | (हि०) | ५८२       | पद        | मुकन्ददास                              | (हि०) | ६६०       |
|           | ५८३, ५८५, ५८६, ५८७, ५८६, ६२१, ६२३, ६६७, ७६८                |       |           | पद        | मेला                                   | (हि०) | ७७६       |
| पद        | बलदेव  | (हि०) | ७६८       | पद        | मेलीराम                                | (हि०) | ७७६       |
| पद        | बालचन्द  | (हि०) | ६२५       | पद        | मोतीराम                                | (हि०) | ५६१       |
| पद        | बुधजन  | (हि०) | ५७०       | पद        | मोहन                                   | (हि०) | ७६४       |
|           | ५७१, ६५३, ६५४, ७०६, ७८५, ७६८                               |       |           | पद        | राजचन्द्र                              | (हि०) | ५७७       |
| पद        | भगताराम  | (हि०) | ७६८       | पद        | राजसिंह                                | (हि०) | ५८७       |
| पद        | भगवतीदास   | (हि०) | ७०६       | पद        | राजाराम                                | (हि०) | ५६०       |
| पद        | भगोसाह   | (हि०) | ५८१       | पद        | राम                                    | (हि०) | ६५३       |
|           |  |       |           | पद        | रामकिरान                               | (हि०) | ६६८       |

| ग्रन्थनाम | लेखक         | भाषा            | वृत्त सं०                              |
|-----------|--------------|-----------------|--|
| पद        | रामचन्द्र    | (हि०)           | ५८१                                    |
|           |              |                 | ६६८, ६६६                               |
| पद        | रामदास       | (हि०)           | ५८३                                    |
|           |              |                 | ५८८, ६६७                               |
| पद        | रामभगत       | (हि०)           | ५८२                                    |
| पद        | रूपचन्द्र    | (हि०)           | ५८५                                    |
|           |              |                 | ५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ६२४, ६६१, ७२४, ७४६ |
|           |              |                 | ७५५, ७६३, ७६५, ७८३                     |
| पद        | रेखराज       | (हि०)           | ७६८                                    |
| पद        | लक्ष्मीसागर  | (हि०)           | ६८२                                    |
| पद        | ऋषि लहरी     | (हि०)           | ५८५                                    |
| पद        | लालचन्द      | (हि०)           | ५८२                                    |
|           |              |                 | ५८३, ५८७, ६६६, ७६३                     |
| पद        | विजयकीर्त्ति | (हि०)           | ५८०                                    |
|           |              |                 | ५८२, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ६६७      |
| पद        | विनोदीलाल    | (हि०)           | ५६०                                    |
|           |              |                 | ७२३, ७५७, ७८३, ७६८                     |
| पद        | विश्वभूषण    | (हि०)           | ५६१, ६२१                               |
| पद        | विसनदास      | (हि०)           | ५८७                                    |
| पद        | बिहारीदास    | (हि०)           | ५८७                                    |
| पद        | वृन्दावन     | (हि०)           | ६४३                                    |
| पद        | ऋषि शिवलाल   | (हि०)           | ४४३                                    |
| पद        | शिवसुन्दर    | (हि०)           | ७५०                                    |
| पद        | शुभचन्द्र    | (हि०), ७०२, ७२४ |  |
| पद        | शोभाचन्द     | (हि०)           | ५८३                                    |
| पद        | श्रीपाल      | (हि०)           | ६७०                                    |
| पद        | श्रीभूषण     | (हि०)           | ५८३                                    |
| पद        | श्रीराम      | (हि०)           | ५६०                                    |

| ग्रन्थनाम | लेखक              | भाषा  | वृत्त सं०                              |
|-----------|-------------------|-------|--|
| पद        | सकलकीर्त्ति       | (हि०) | ५८८                                    |
| पद        | सन्तदास           | (हि०) | ६५४, ७५६                               |
| पद        | सबकसिंह           | (हि०) | ६२४                                    |
| पद        | समयसुन्दर         | (हि०) | ५७६                                    |
|           |                   |       | ५८८, ५८९, ७७७                          |
| पद        | श्यामदास          | (हि०) | ७६४                                    |
| पद        | सवाईराम           | (हि०) | ५६०                                    |
| पद        | साईदास            | (हि०) | ६२०                                    |
| पद        | साहकीर्त्ति       | (हि०) | ७७७                                    |
| पद        | साहिबराम          | (हि०) | ७६८                                    |
| पद        | सुखदेव            | (हि०) | ५८०                                    |
| पद        | सुन्दर            | (हि०) | ७२४                                    |
| पद        | सुन्दरभूषण        | (हि०) | ५८७                                    |
| पद        | सूरजमल            | (हि०) | ५८१                                    |
| पद        | सूरदास            | (हि०) | ७६६, ७६३                               |
| पद        | सुरेन्द्रकीर्त्ति | (हि०) | ६२२                                    |
| पद        | सेवग              | (हि०) | ७६३, ७६८                               |
| पद        | इटमलदास           | (हि०) | ६२४                                    |
| पद        | हरखचन्द           | (हि०) | ५८३                                    |
|           |                   |       | ५८४, ५८५, ७६३                          |
| पद        | हर्षकीर्त्ति      | (हि०) | ५८६                                    |
|           |                   |       | ५८५, ५८८, ५६०, ६२०, ६२४, ६६३, ७०१, ७५० |
|           |                   |       | ७६३, ७६४                               |
| पद        | हरिश्चन्द्र       | (हि०) | ६४६                                    |
| पद        | हरिसिंह           | (हि०) | ५८२                                    |
|           |                   |       | ५८५, ६२०, ६४३, ६४४, ६६३, ६६६, ७७२, ७७६ |
|           |                   |       | ७६३, ७६६                               |
| पद        | हरीदास            | (हि०) | ७७०                                    |
| पद        | मुनि हीराचन्द     | (हि०) | ५८१                                    |

| ग्रन्थनाम                              | लेखक          | भाषा   | पृष्ठ सं० |
|--|---------------|--------|-----------|
| पद                                     | हेमराज        | (हि०)  | ५६०       |
| पद                                     | —             | (हि०)  | ४४६       |
| ५७०, ५७६, ६०१, ६४३, ६४४, ६५०, ६५३, ७०३ |               |        |           |
| ७०४, ७०५, ७२४, ७३१, ७३३, ७३४, ७७०, ७७७ |               |        |           |
| पदवी                                   | यशःकीर्ति     | (प्र०) | ६४२       |
| पदवी                                   | सहस्रपाल      | (प्र०) | ६४१       |
| पद्यकोष                                | गोवर्धन       | (सं०)  | ६६६       |
| पद्यविरतसार                            | —             | (हि०)  | १७७       |
| पद्यपुराण                              | म० धर्मकीर्ति | (सं०)  | १४६       |
| पद्यपुराण                              | रविशेणाचार्य  | (सं०)  | १४८       |
| पद्यपुराण (रामपुराण) म० सोमसेन         | —             | (सं०)  | १४८       |
| पद्यपुराण (उत्तरखण्ड)                  | —             | (सं०)  | १४६       |
| पद्यपुराणभाषा                          | सुरालचन्द्र   | (हि०)  | १४६       |
| पद्यपुराणभाषा                          | दौलतराम       | (हि०)  | १४६       |
| पद्यनंदिपंचविशतिका                     | पद्मनंदि      | (सं०)  | ६६        |
| पद्यनंदिपंचविशतिकाटीका                 | —             | (सं०)  | ६७        |
| पद्यनंदिपंचविशतिका                     | जगतराय        | (हि०)  | ६७        |
| पद्यनन्दिपञ्चोसीभाषा मन्नालाल खिदूका   | —             | (हि०)  | ६८        |
| पद्यनंदिपञ्चोसीभाषा                    | —             | (हि०)  | ६८        |
| पद्यनंदिश्रावकाचार                     | पद्मनंदि      | (सं०)  | ६८        |
| पद्यावत्याष्टकवृत्त                    | पार्श्वदेव    | (सं०)  | ४०२       |
| पद्यावती की ढाल                        | —             | (हि०)  | ४०२       |
| पद्यावतीकल्प                           | —             | (सं०)  | ३४६       |
| पद्यावतीकवच                            | —             | (सं०)  | ५०६, ७४१  |
| पद्यावतीचक्रवर्तीस्तोत्र               | —             | (सं०)  | ४३२       |
| पद्यावतीछंद                            | महोचंद्र      | (सं०)  | ६०७       |
| पद्यावती दण्डक                         | —             | (सं०)  | ४०२, ७४१  |
| पद्यावतीपटल                            | —             | (सं०)  | ५०६, ७४१  |
| पद्यावतीपूजा                           | —             | (सं०)  | ४०२       |

| ग्रन्थनाम                              | लेखक          | भाषा  | पृष्ठ सं० |
|--|---------------|-------|-----------|
| पद्यावतीमण्डलपूजा                      | —             | (सं०) | ५०६       |
| पद्यावतीरानीप्राराधना                  | समयसुन्दर     | (हि०) | ६१७       |
| पद्यावतीशांतिक                         | —             | (सं०) | ५०६       |
| पद्यावतीसहस्रनाम                       | —             | (सं०) | ४०२       |
| ५०६, ५६६, ६३६, ७११, ७४१                |               |       |           |
| पद्यावतीसहस्रनामवपूजा                  | —             | (सं०) | ५०६       |
| पद्यावतीस्तवनमंत्रसहित                 | —             | (सं०) | ४२३       |
| पद्यावतीस्तोत्र                        | —             | (सं०) | ४०२       |
| ४२३, ४३०, ८२२, ४३३, ५०६, ५३६, ५६६, ६४५ |               |       |           |
| ६४६, ६६७, ६७६, ७३४, ७५७, ७७६           |               |       |           |
| पद्यावतीस्तोत्र                        | समयसुन्दर     | (हि०) | ६८५       |
| पद्यावतीस्तोत्रबीजएवसाधनविधि           | —             | (सं०) | ७४१       |
| पदविनती                                | —             | (हि०) | ७१५       |
| पद्यसंग्रह                             | प्रिहारी      | (हि०) | ७१०       |
| पद्यमयह                                | गंग           | (हि०) | ७१०       |
| पद्यमयह                                | आनन्दघन       | (हि०) | ७१०, ७७७  |
| पद्यसंग्रह                             | म० कपूरचंद्र  | (हि०) | ४४५       |
| पद्यसंग्रह                             | खेमराज        | (हि०) | ४४५       |
| पद्यसंग्रह                             | रामाराम वैद्य | (हि०) | ६१५       |
| पद्यसंग्रह                             | चैतन्यिजय     | (हि०) | ४४५       |
| पद्यसंग्रह                             | चैतन्यसुख     | (हि०) | ४४६       |
| पद्यसंग्रह                             | जगतराम        | (हि०) | ४४५       |
| पद्यसंग्रह                             | जिनदास        | (हि०) | ७७२       |
| पद्यसंग्रह                             | जोध्या        | (हि०) | ४४५       |
| पद्यसंग्रह                             | भांभूराम      | (हि०) | ४४५       |
| पद्यसंग्रह                             | दलाराम        | (हि०) | ६२०       |
| पद्यसंग्रह                             | देवानन्द      | (हि०) | ४४६       |

| ग्रन्थनाम | लेखक       | भाषा  | पृष्ठ सं०                 |
|-----------|------------|-------|---------------------------|
| पदसंग्रह  | दौलतराम    | (हि०) | ४४५, ४४६                  |
| पदसंग्रह  | द्यानतराय  | (हि०) | ४४५, ७७७                  |
| पदसंग्रह  | नयनमुख     | (हि०) | ४४५, ७२६                  |
| पदसंग्रह  | नवल        | (हि०) | ४४५, ७२६                  |
| पदसंग्रह  | परमानन्द   | (हि०) | ६८४                       |
| पदसंग्रह  | वक्षतराम   | (हि०) | ४४५                       |
| पदसंग्रह  | बनारसीदास  | (हि०) | ६२२, ७६५                  |
| पदसंग्रह  | बुधजन      | (हि०) | ४४५<br>४४६, ६८२           |
| पदसंग्रह  | भगतराम     | (हि०) | ७३६                       |
| पदसंग्रह  | भागचन्द्र  | (हि०) | ४४५, ४४६                  |
| पदसंग्रह  | भूधरदास    | (हि०) | ४४५<br>६२०, ७७६, ७७७, ७८६ |
| पदसंग्रह  | मंगलचन्द्र | (हि०) | ४४७                       |
| पदसंग्रह  | मनोहर      | (हि०) | ४४५, ७८६                  |
| पदसंग्रह  | लाल        | (हि०) | ४४५                       |
| पदसंग्रह  | विश्वभूषण  | (हि०) | ४४५                       |
| पदसंग्रह  | शोभाचन्द्र | (हि०) | ७७७                       |
| पदसंग्रह  | शुभचन्द्र  | (हि०) | ७७७                       |
| पदसंग्रह  | साहिबराम   | (हि०) | ४४५                       |
| पदसंग्रह  | सुन्दरदास  | (हि०) | ७१०                       |
| पदसंग्रह  | सूरदास     | (हि०) | ६८४                       |
| पदसंग्रह  | सेबक       | (हि०) | ४४७                       |
| पदसंग्रह  | हरबचन्द्र  | (हि०) | ६६३                       |
| पदसंग्रह  | हरीसिंह    | (हि०) | ७७२                       |
| पदसंग्रह  | हीराचन्द्र | (हि०) | ४४५, ४४७                  |
| पदसंग्रह  | —          | (हि०) | ४४५                       |

४४५, ६७६, ६८०, ६६१, ७०१, ७०८, ७०६, ७१०  
७१६, ७१७, ७१८, ७२१, ७२३, ७४६, ७४६, ७६०  
७५२, ७५६, ७५७, ७६१, ७७४, ७७६, ७८१, ७६०

| ग्रन्थनाम                   | लेखक             | भाषा  | पृष्ठ सं०                      |
|-----------------------------|------------------|-------|--------------------------------|
| पदस्तुति                    | —                | (हि०) | ७११                            |
| परमज्योति                   | बनारसीदास        | (हि०) | ४०२<br>५६०, ६६४, ७७४           |
| परमसन्तस्थानकनूजा           | सुधासागर         | (सं०) | ५१६                            |
| परमात्मपुराण                | दीपचन्द्र        | (हि०) | १०६                            |
| परमात्मप्रकाश               | योगीन्द्रदेव     | (अप०) | ११०<br>५७५, ६३७, ६६३, ७०७, ७४७ |
| परमात्मप्रकाशटीका           | आ० अमृतचन्द्र    | (सं०) | ११०                            |
| परमात्मप्रकाशटीका           | महादेव           | (सं०) | १११                            |
| परमात्मप्रकाशटीका           | —                | (सं०) | १११                            |
| परमात्मप्रकाशवालावबोधनीटीका | खानचन्द्र        | (हि०) | १११                            |
| परमात्मप्रकाशभाषा           | दौलतराम          | (हि०) | १०८                            |
| परमात्मप्रकाशभाषा           | नथमल्ल           | (हि०) | १११                            |
| परमात्मप्रकाशभाषा           | प्रभुदास         | (हि०) | ७६५                            |
| परमात्मप्रकाशभाषा           | सूरजभान श्रोसवाल | (हि०) | ११६                            |
| परमात्मप्रकाशभाषा           | —                | (हि०) | ११६                            |
| परमानन्दपंचविशति            | —                | (सं०) | ४०४                            |
| परमात्मराजस्तोत्र           | पद्मनदि          | (सं०) | ४०२, ४३७                       |
| परमात्मराजस्तोत्र           | सकलकीर्ति        | (सं०) | ४०३                            |
| परमानन्दस्तवन               | —                | (सं०) | ४२४, ४२५                       |
| परमानन्दस्तोत्र             | कुमुदचंद्र       | (सं०) | ७२४                            |
| परमानन्दस्तोत्र             | पूज्यपाद         | (सं०) | ५७४                            |
| परमानन्दस्तोत्र             | —                | (सं०) | ४०४<br>४३३, ६०४, ६०६, ६२८, ६३७ |
| परमानन्दस्तोत्र             | बनारसीदास        | (हि०) | ५६२                            |
| परमानन्दस्तोत्र             | —                | (हि०) | ४२६                            |
| परमार्थगीत व दोहा           | रूपचन्द्र        | (हि०) | ७०६, ७६४                       |
| परमार्थलुहरा                | —                | (हि०) | ७२४                            |
| परमार्थस्तोत्र              | —                | (सं०) | ४०४                            |

| ग्रन्थनाम                | लेखक            | भाषा    | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम                  | लेखक                     | भाषा       | पृष्ठ सं० |
|--------------------------|-----------------|---------|-----------|----------------------------|--------------------------|------------|-----------|
| परमार्थहिण्डोलना         | रूपचन्द्र       | (हि०)   | ७६५       | पांचपरशोक्तकीकथा           | बेसीदास                  | (हि०)      | ६२१       |
| परभेष्टियोंकेछुसवधतिलक   | —               | (प्रा०) | ५७५       | पांचबोल                    | —                        | (गुजराती)  | ३३०       |
| परम धरुखल्प              | —               | (सं०)   | ११७       | पांचमाहकीचौदम (मण्डलचित्र) | —                        | —          | ५२५       |
| परमू बरास्तुति           | —               | (हि०)   | ४५२       | पाचवासोकामडलचित्र          | —                        | —          | ५२५       |
| परसरामकथा                | —               | (सं०)   | २३३       | पाटनपुरसज्जमाय             | श्यामसुन्दर              | (हि०)      | ४४६       |
| परिभाषासूत्र             | —               | (सं०)   | २६१       | पाठसग्रह                   | —                        | (सं०)      | ४०५, ५७६  |
| परिभाषेनुगेखर            | नागोजीभट्ट      | (सं०)   | २६१       | पाठमग्रह                   | —                        | (सं०प्रा०) | ५७३       |
| परिशिष्टपूर्व            | —               | (सं०)   | १७८       | पाठमग्रह                   | —                        | (प्रा०)    | ५७३       |
| परीक्षामुख               | भाणिक्यनंदि     | (सं०)   | १३६       | पाठसग्रह                   | —                        | (सं०हि०)   | ४०५       |
| परीक्षामुखभाषा           | जयचन्द्र छावड़ा | (हि०)   | १३७       | पाठमग्रह                   | समग्रहकर्ता जैतरामबाफना  | —          | —         |
| परोषहवर्णन               | —               | (हि०)   | ६८        | पाण्डवपुराण                | यश.कीर्त्ति              | (हि०)      | ४०५       |
| पल्यमंडलविधान            | शुभचन्द्र       | (सं०)   | ५३८       | पाण्डवपुराण                | श्रीभूपग                 | (सं०)      | १५०       |
| पल्यविचार                | —               | (सं०)   | २८६       | पाण्डवपुराण                | भ० शुभचन्द्र             | (सं०)      | १५०       |
| पल्यविचार                | —               | (हि०)   | २८६       | पाण्डवपुराणभाषा            | पन्नालाल चौधरी           | (हि०)      | १५०       |
| पल्यविधानकथा             | —               | (सं०)   | २४३, २४६  | पाण्डवपुराणभाषा            | बुलाकीदास                | (हि०)      | १५०, ७४५  |
| पल्यविधानकथा             | सुरालचन्द्र     | (हि०)   | २३३       | पाण्डवपरित्र               | लालबद्धन                 | (हि०)      | १७८       |
| पल्यविधानपूजा            | अनन्तकीर्त्ति   | (सं०)   | ५०७       | पाणिनीयव्याकरण             | पाणिनि                   | (सं०)      | २६१       |
| पल्यविधानपूजा            | रत्ननन्दि       | (सं०)   | ५०६       | पात्रवेगरीस्तोत्र          | —                        | (सं०)      | ४०५       |
|                          |                 |         | ५०६, ५१६  | पात्रदानकथा                | ब्र० नेमिदत्त            | (सं०)      | २३३       |
| पल्यविधानपूजा            | ललितकीर्त्ति    | (सं०)   | ५०६       | पाथिवेश्वर                 | —                        | (सं०)      | ४०५       |
| पल्यविधानपूजा            | —               | (सं०)   | ५०७       | पाथिवेश्वरचिन्तामणि        | —                        | (सं०)      | ४०५       |
| पल्यविधानरास             | स० शुभचन्द्र    | (हि०)   | ३६३       | पाथर्वछन्द                 | ब्र० लेखराज              | (हि०)      | ३८६       |
| पल्यविधानव्रतीपाठ्यानकथा | श्रुतभागर       | (सं०)   | २३३       | पाथर्वजिनगीत               | झाजू समयसुन्दर के शिष्य— | —          | —         |
| पल्यविधि                 | —               | (सं०)   | ६७०       |                            |                          | (हि०)      | ४४८       |
| पल्यव्रतोत्थापन          | शुभचन्द्र       | (सं०)   | ५०७       | पाथर्वजिनपूजा              | साह लोहट                 | (हि०)      | ५०७       |
| पल्यो रमोपवासविधि        | —               | (सं०)   | ५०७       | पाथर्वजिनस्तवन             | जिनचन्द्र                | (हि०)      | ७००       |
| पवनभूतकाव्य              | बादिकन्दमूरि    | (सं०)   | १७८       | पाथर्वजिनेश्वरस्तोत्र      | —                        | (सं०)      | ४२६       |
| पहेलियाँ                 | मारू            | (हि०)   | ६११       | पाथर्वनाथएकवद्धमानस्तवन    | —                        | (सं०)      | ४०५       |
| पोषपत्नीकथा              | ब्रह्मवेणु      | (हि०)   | ६८५       | पाथर्वनाथसिधायनी           | मुनि कनककीर्त्ति         | (हि०)      | १६१       |

| ग्रन्थनाम                  | लोक             | भाषा    | वृत्त सं०                    |
|----------------------------|-----------------|---------|------------------------------|
| पार्वनाथकीकुलामाल          | लौहट            | (हि०)   | ७७६                          |
| पारसनाथकीनिसागु            | —               | (हि०)   | ६५०                          |
| पार्वनाथकीमिशानी           | जिनहर्ष         | (हि०)   | ४४४, ५७६                     |
| पार्वनाथकीमिशानी           | —               | (हि०)   | ७०२                          |
| पार्वनाथकेवर्धन            | वृन्दावन        | (हि०)   | ६२५                          |
| पार्वनाथचरित्र             | रङ्गू           | (श्रव०) | १७६                          |
| पार्वनाथचरित्र             | वादिाराजसूरि    | (सं०)   | १७६                          |
| पार्वनाथचरित्र             | भ० मकलकीर्ति    | (सं०)   | १७६                          |
| पार्वनाथचरित्र             | विश्वभूषण       | (हि०)   | ५६८                          |
| पार्वजिनचैत्यालखचित्र      | —               | —       | ६०३                          |
| पार्वनाथजयमाल              | लौहट            | (हि०)   | ६४२                          |
| पार्वनाथजयमान              | —               | (हि०)   | ६५५, ६७६                     |
| पार्वनाथपपावतीस्तोत्र      | —               | (सं०)   | ४०५                          |
| पार्वनाथपुराण [पार्वपुराण] | भूधरदास         | —       | (हि०) १७६, ७४४, ७६१          |
| पार्थनाथपूजा               | —               | (सं०)   | ४३३                          |
|                            |                 |         | ५६०, ६०६, ६४०, ६५५, ७०४, ७३१ |
| पार्वनाथपूजा (विधानसहित)   | —               | (सं०)   | ५१३                          |
| पार्थनाथपूजा               | हर्षकीर्ति      | (हि०)   | ६६३                          |
| पार्वनाथपूजा               | —               | (हि०)   | ५०७                          |
|                            |                 |         | ५६६, ६००, ६२३, ६४५, ६४८      |
| पार्थनाथपूजामंत्रसहित      | —               | (सं०)   | ५७५                          |
| पार्थमहिम्नस्तोत्र         | महामुनि रामसिंह | (सं०)   | ४०६                          |
| पार्थनाथलक्ष्मीस्तोत्र     | पद्मप्रभदेव     | (सं०)   | ४०५                          |
| पार्थनाथस्तवण              | देवचन्द्रसूरि   | (सं०)   | ६३३                          |
| पार्थनाथस्तवण              | राजसेन          | (हि०)   | ७३७                          |
| पार्थनाथस्तवन              | अगरूप           | (हि०)   | ६८१                          |
| पार्थनाथस्तवन [पार्थविगतो] | ब्र० नाथू       | —       | (हि०) ६७०, ६८३               |

| ग्रन्थनाम            | लोक          | भाषा   | वृत्त सं०                                    |
|----------------------|--------------|--------|--|
| पार्थनाथस्तवन        | समयराज       | (हि०)  | ६६७  |
| पार्थनाथस्तवन        | समयसुन्दरगणि | (राज०) | ६१७  |
| पार्थनाथस्तवन        | —            | (हि०)  | ४४६, ६४५                                     |
| पार्थनाथस्तुति       | —            | (हि०)  | ७४५  |
| पार्थनाथस्तोत्र      | पद्मप्रभदेव  | (सं०)  | ६१४  |
|                      |              |        | ७०२, ७४५                                     |
| पार्थनाथस्तोत्र      | पद्मनंदि     | (सं०)  | ५६६, ७४४                                     |
| पार्थनाथस्तोत्र      | रघुनाथदास    | (सं०)  | ४१३  |
| पार्वनाथस्तोत्र      | राजसेन       | (सं०)  | ५६६  |
| पार्थनाथस्तोत्र      | —            | (सं०)  | ४०५  |
|                      |              |        | ४०६, ४२४, ४२५, ४२६, ४२७, ४३२, ४६६, ५७८, ६४५, |
|                      |              |        | ६४७, ६४८, ६५१, ६७०, ७६३                      |
| पार्थनाथस्तोत्र      | द्यानतराय    | (हि०)  | ४०६  |
|                      |              |        | ४०६, ५६६, ६१५                                |
| पार्वनाथस्तोत्र      | —            | (हि०)  | ४०६  |
|                      |              |        | ४४६, ५६६, ७३३                                |
| पार्वनाथस्तोत्रटीका  | —            | (सं०)  | ४०६  |
| पार्वनाथष्टक         | —            | (सं०)  | ४०६, ६७६                                     |
| पार्वनाथष्टक         | सकलकीर्ति    | (हि०)  | ७७७  |
| पाराविधि             | —            | (हि०)  | २६६  |
| पारावरी              | —            | (सं०)  | २८६  |
| पराशरीसज्जनरंजनीटीका | —            | (सं०)  | २८६  |
| पारागिरीपूजा         | —            | (हि०)  | ७३०  |
| पार्षाकेवली          | गर्गमुनि     | (सं०)  | २८६, ६४७                                     |
| पार्षाकेवली          | ज्ञानभस्कार  | (सं०)  | २८६  |
| पार्षाकेवली          | —            | (सं०)  | २८६, ७०१                                     |
| पार्षाकेवली          | श्रवणजद      | (हि०)  | ७१३  |
| पार्षाकेवली          | —            | (हि०)  | २८७  |
|                      |              |        | ५६५, ६०३, ७१३, ७१८, ७८५, ७८६                 |

| ग्रन्थनाम                            | लेखक              | भाषा  | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम               | लेखक                 | भाषा     | पृष्ठ सं०                              |
|--------------------------------------|-------------------|-------|-----------|-------------------------|----------------------|----------|--|
| विगलछंदशास्त्र                       | माखन कवि          | (हि०) | ३१०       | पुरुषार्थसिद्धयुपायभाषा | टोडरमल               | (हि०)    | ६९                                     |
| विगलछंदशास्त्र (छंद रत्नावली) —      |                   |       |           | पुष्कराढीपूजा           | विश्वभूषण            | (सं०)    | ४६७                                    |
|                                      | हरिरामदास         | (हि०) | ३११       | पुष्पादन्तजिनपूजा       | —                    | (सं०)    | ५०९                                    |
| विगलप्रदीप                           | भट्ट लक्ष्मीनाथ   | (सं०) | ३११       | पुष्पाङ्गलिकथा          | —                    | (सं०)    | ६३३                                    |
| विगलभाषा                             | रूपदीप            | (हि०) | ७०६       | पुष्पाङ्गलिकथामाल       | —                    | (सं०)    | ७४४                                    |
| विगलशास्त्र                          | नागराज            | (सं०) | ३११       | पुष्पाङ्गलिकथानकथा      | पं० हरिश्चन्द्र      | (सं०)    | २४५                                    |
| विगलशास्त्र                          | —                 | (सं०) | ३११       | पुष्पाङ्गलिकथानकथा      | —                    | (सं०)    | २४३                                    |
| पीठपूजा                              | —                 | (सं०) | ६०८       | पुष्पाङ्गलिकथानकथा      | जिनदास               | (सं०)    | २३४                                    |
| पीठप्रशालन                           | —                 | (सं०) | ६७२       | पुष्पाङ्गलिकथानकथा      | श्रुतकीर्ति          | (सं०)    | २३४                                    |
| पुच्छोमेरा                           | —                 | (सं०) | ६९        | पुष्पाङ्गलिकथानकथा      | ललितकीर्ति           | (सं०)    | ६९५, ७६४                               |
| पुष्पछत्तीसी                         | समयमुन्दर         | (हि०) | ६१९       | पुष्पाङ्गलिकथानकथा      | सुरालचन्द्र          | (हि०)    | २३४                                    |
| पुष्पतत्ववर्षा                       | —                 | (सं०) | ४१        |                         |                      |          | २४५, ७३१                               |
| पुष्पास्त्रवकथाकोश                   | मुमुक्षु रामचंद्र | (सं०) | २३३       | पुष्पाङ्गलिकथानकथा      | [पु० गणेशचन्द्रपूजा] | गङ्गादास |  |
| पुष्पास्त्रवकथाकोश                   | टैकचंद्र          | (हि०) | २३४       |                         |                      |          | (सं०) ५०८, ५१६                         |
| पुष्पास्त्रवकथाकोश                   | दौलतराम           | (हि०) | २३३       | पुष्पाङ्गलिकथानकथा      | भ० रतनचन्द्र         | (सं०)    | ५०८                                    |
| पुष्पास्त्रवकथाकोश                   | —                 | (हि०) | २३३       | पुष्पाङ्गलिकथानकथा      | भ० शुभचन्द्र         | (सं०)    | ५०८                                    |
| पुष्पास्त्रवकथाकोश मू०               | —                 | (हि०) | २३४       | पुष्पाङ्गलिकथानकथा      | —                    | (सं०)    | ५०८, ५३९                               |
| पुष्पाहवाचन                          | —                 | (सं०) | ५०७, ६९६  | पुष्पाङ्गलिकथानकथा      | —                    | (सं०)    | २३४                                    |
| पुरन्दरजीवई                          | मालदेव            | (हि०) | ७३८       | पुष्पाङ्गलिकथानकथा      | —                    | (सं०)    | ५४०                                    |
| पुरन्दरपूजा                          | —                 | (सं०) | ५१६       | पूजा                    | पद्मानन्दि           | (सं०)    | ५६०                                    |
| पुरन्दरविधानकथा                      | —                 | (सं०) | २६३       | पूजा एव कथासंग्रह       | सुरालचन्द्र          | (हि०)    | ५१९                                    |
| पुरन्दरप्रतोद्यागन                   | —                 | (सं०) | ५०८       | पूजाक्रिया              | —                    | (हि०)    | ५०८                                    |
| पुरश्चरणविधि                         | —                 | (सं०) | २८७       | पूजाभाष्य की मू०        | —                    | (हि०)    | ६१२                                    |
| पुराणसार                             | श्रीचन्द्रसूनि    | (सं०) | १५१       | पूजा व जयमाल            | —                    | (सं०)    | ५६१                                    |
| पुराणसारसंग्रह                       | भ० सकलकीर्ति      | (सं०) | १५१       | पूजा भमाल               | —                    | (सं०)    | ६५५                                    |
| पुरुषस्त्रीसंवाद                     | —                 | (हि०) | ७८९       | पूजापाठ                 | —                    | (हि०)    | ५१२                                    |
| पुरुषार्थानुशासन                     | गोविन्दभट्ट       | (सं०) | ६९        | पूजापाठसंग्रह           | —                    | (सं०)    | ५०८                                    |
| पुरुषार्थसिद्धयुपाय अमृतचन्द्राचार्य |                   | (सं०) | ६८        |                         |                      |          | ६४९, ६८२, ६९७, ६९९, ७१३, ७१५, ७१८, ७१९ |
| पुरुषार्थसिद्धयुपायवचनिका भूषर मिश्र |                   | (हि०) | ६९        |                         |                      |          | ७८०, ७९६                               |

| ग्रन्थनाम                 | लेखक           | भाषा      | पृष्ठ सं०                               | ग्रन्थनाम   | लेखक            | भाषा        | पृष्ठ सं०          |
|---------------------------|----------------|-----------|---|---|-----------------|-------------|--------------------|
| पूजापाठसंग्रह             | —              | (हि०)     | ५१०                                     | प्रक्रियाकौमुदी   | —               | (सं०)       | २६१                |
|                           |                |           | ५११, ७४३, ७४४                           | पृच्छावली   | —               | (हि०)       | ६५७                |
| पूजापाठस्तोत्र            | —              | (सं० हि०) | ७१०                                     | प्रत्याख्यान  | —               | (प्रा०)     | ७०                 |
|                           |                |           | ७८४                                     | प्रतिक्रमण  | —               | (सं०)       | ६९                 |
| पूजाप्रकरण                | उमाश्रवामी     | (सं०)     | ५१२                                     |   |                 |             | ४२६, ५७१           |
| पूजाप्रतिष्ठापाठसंग्रह    | —              | (सं०)     | ६९९                                     | प्रतिक्रमण  | —               | (प्रा०)     | ६९                 |
| पूजामहात्म्यविधि          | —              | (सं०)     | ५१२                                     | प्रतिक्रमण  | —               | (प्रा० सं०) | ४२५                |
| पूजावर्णविधि              | —              | (सं०)     | ५१२                                     |   |                 |             | ५७३                |
| पूजाविधि                  | —              | (प्रा०)   | ५१२                                     | प्रतिक्रमणपाठ   | —               | (प्रा०)     | ६९                 |
| पूजाष्टक                  | शिश्नभूषण      | (सं०)     | ५१३                                     | प्रतिक्रमणसूत्र   | —               | (प्रा०)     | ६९                 |
| पूजाष्टक                  | अभयचन्द्र      | (हि०)     | ५१२                                     | प्रतिक्रमणसूत्र [वृत्तिसहित]                              | —               | (प्रा०)     | ६९                 |
| पूजाष्टक                  | आशानन्द        | (हि०)     | ५१२                                     | प्रतिमाउत्थापककूट उपदेश                                   | जगरूप           | (हि०)       | ७०                 |
| पूजाष्टक                  | लोहट           | (हि०)     | ५१२                                     | प्रतिमासातचतुर्दशी [ प्र.तमासांतचतुर्दशीप्रतोद्यापनपूजा ] |                 |             |                    |
| पूजाष्टक                  | विनोदलाल       | (हि०)     | ७७७                                     |   |                 |             | अक्षयराम (सं०) ५१६ |
| पूजासंग्रह                | —              | (हि०)     | ५१२, ७४५                                | प्रतिमासातचतुर्दशीपूजा                                    | देवेन्द्रकीर्ति | (सं०)       | ७६१                |
|                           |                |           | ६९४, ६९८, ७११, ७१२, ७२५                 | प्रतिमासांतचतुर्दशीप्रतोद्यापन                            | —               | (सं०)       | ५१४, ५२०, ५४०      |
| पूजासंग्रह                | रामचन्द्र      | (हि०)     | ५२०                                     | प्रतिमासांतचतुर्दशीप्रतोद्यापनपूजा                        | रामचन्द्र       | (सं०)       | ५२०                |
| पूजासंग्रह                | लालचन्द्र      | (हि०)     | ७७७                                     | प्रतिष्ठाकु कुंभपत्रिका                                   | —               | (सं०)       | ३७३                |
| पूजासंग्रह                | —              | (हि०)     | ५६५                                     | प्रतिष्ठादर्श   | श्रीराजकीर्ति   | (सं०)       | ५२०                |
|                           |                |           | ६०४, ६६२, ६६५, ७०७, ७०८, ७११, ७१४, ७२९, | प्रतिष्ठादोषक   | १० नरेन्द्रसेन  | (सं०)       | ५२१                |
|                           |                |           | ७३०, ७३१, ७३३, ७३४, ७३९, ७४८ ।          | प्रतिष्ठापाठ  | आशाधर           | (सं०)       | ५२१                |
| पूजासार                   | —              | (सं०)     | ५२०                                     | प्रतिष्ठापाठ [प्रतिष्ठासार]                               | बसुनंदि         | (सं०)       | ५२१, ५२२           |
| पूजास्तोत्रसंग्रह         | —              | (सं० हि०) | ६९६                                     | प्रतिष्ठापाठ  | —               | (सं०)       | ५२२                |
|                           |                |           | ७०२, ७०८, ७०९, ७११, ७१३, ७१४, ७१६, ७२५, |   |                 |             | ६९९, ७५६           |
|                           |                |           | ७३४, ७५२, ७५३, ७५४, ७७८ ।               | प्रतिष्ठापाठभाषा  | बा० दुखीचन्द्र  | (हि०)       | ५२२                |
| पूर्वमीमांसापर्यकरणसंग्रह | लोगाङ्गिभास्कर | (सं०)     | १३७                                     | प्रतिष्ठानामावलि  | —               | (हि०)       | ३७४, ७२६           |
| पैसठबोल                   | —              | (हि०)     | ३३१                                     | प्रतिष्ठानविधानकी सामग्रीबर्णन                            | —               | (हि०)       | ७२३                |
| पोसहरास                   | ज्ञानभूषण      | (हि०)     | ७६२                                     | प्रतिष्ठाविधि   | —               | (सं०)       | ५२२                |



| ग्रन्थनाम                    | लेखक                | भाषा               | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम                                 | लेखक           | भाषा    | पृष्ठ सं० |
|------------------------------|---------------------|--------------------|-----------|---|----------------|---------|-----------|
| प्रतिष्ठासम्बन्धीयन्त्र      | —                   |                    | ६६८       | प्रवचनसार                                 | आ० कुन्दकुन्द  | (प्रा०) | ११६       |
| प्रतिष्ठासार                 | —                   | (सं०)              | ५२२       | प्रवचनसारटीका                             | अमृतचन्द्र     | (सं०)   | ११७       |
| प्रतिष्ठासार                 | पं० शिवजीलाल        | (हिं०)             | ५२२       | प्रवचनमारटीका                             | —              | (सं०)   | ११३       |
| प्रतिष्ठासारोद्धार           | —                   | (सं०)              | ५२२       | प्रवचनमारटीका                             | —              | (हिं०)  | ११३       |
| प्रतिष्ठासूक्तिसंग्रह        | —                   | (सं०)              | ५२२       | प्रवचनसारप्रामृतवृत्ति                    | —              | (सं०)   | ११३       |
| प्रद्युम्नकुमाररास           | [ प्रद्युम्नरास ]   | ब्र० रायभल्ल       |           | प्रवचनसारभाषा                             | जोधराज गोदीका  | (हिं०)  | ११४       |
|                              | (हिं०)              | ५६५, ६३६, ७१२, ७३७ |           | प्रवचनसारभाषा                             | द्युम्नावनदास  | (हिं०)  | ११४       |
| प्रद्युम्नचरित्र             | महासेनाचार्य        | (सं०)              | १८०       | प्रवचनसारभाषा                             | पण्डि हेमराज   | (हिं०)  | ११३       |
| प्रद्युम्नचरित्र             | सोमकीर्ति           | (सं०)              | १८१       | प्रवचनसारभाषा                             | —              | (हिं०)  | ११४, ७१७  |
| प्रद्युम्नचरित्र             | —                   | (सं०)              | १८२       | प्रस्ताविककलोक                            | —              | (सं०)   | ३३२       |
| प्रद्युम्नचरित्र             | सिंहकवि             | (सं०)              | १८२       | प्रश्नचूडामणि                             | —              | (सं०)   | २८७       |
| प्रद्युम्नचरित्रभाषा         | मन्नालाल            | (हिं०)             | १८२       | प्रश्नमनोरमा                              | गर्ग           | (सं०)   | २८७       |
| प्रद्युम्नचरित्रभाषा         | —                   | (हिं०)             | १८२       | प्रश्नमाना                                | —              | (सं०)   | २८८       |
| प्रद्युम्नरास                | कृष्णाराय           | (हिं०)             | ७२२       | प्रश्नविद्या                              | —              | (सं०)   | २८७       |
| प्रद्युम्नरास                | —                   | (हिं०)             | ७४६       | प्रश्नविनोद                               | —              | (सं०)   | २८७       |
| प्रबोधचन्द्रिका              | बैजलभूपति           | (सं०)              | ३१७       | प्रश्नसार                                 | द्वयमीश        | (सं०)   | २८८       |
| प्रबोधसार                    | यशःकीर्ति           | (सं०)              | ३३१       | प्रश्नसार                                 | —              | (सं०)   | २८८       |
| प्रभावतीकल्प                 | —                   | (हिं०)             | ६०२       | प्रश्नमृगनावलि                            | —              | (सं०)   | २८८       |
| प्रमाणनक्षत्रालोकान्तकारटीका | [ रत्नाकरावतारिका ] |                    |           | प्रश्नावलि                                | —              | (सं०)   | २८८       |
|                              | रत्नप्रभमूरि        | (सं०)              | १३७       | प्रश्नावलि कवित                           | वैद्य नंदलाल   | (हिं०)  | ७८२       |
| प्रमाणनिर्णय                 | —                   | (सं०)              | १३७       | प्रश्नोत्तर माणिक्यमाला                   | ब्र० ज्ञानसागर | (सं०)   | २८८       |
| प्रमाणपरीक्षा                | आ० विद्यानान्द      | (सं०)              | १३७       | प्रश्नोत्तरमाला                           | —              | (सं०)   | २८८       |
| प्रमाणपरीक्षाभाषा            | भारतचन्द्र          | (हिं०)             | १३७       | प्रश्नोत्तरमालिका [ प्रश्नोत्तररत्नमाना ] | अमोघवर्ष       |         |           |
| प्रमाणप्रमेयकल्पिका          | नरेंद्रमूरि         | (सं०)              | ५७५       |   |                | (सं०)   | ३३२, ५७३  |
| प्रमाणप्रमेयभाषा             | विद्यानान्द         | (सं०)              | १३८       | प्रश्नोत्तररत्नमाला                       | तुलसीदास       | (गुज०)  | ३३२       |
| प्रमाणप्रमेयभाषा             | —                   | (सं०)              | १३८       | प्रश्नोत्तरश्रावकाचार                     | —              | (सं०)   | ७०        |
| प्रमाणप्रमेयकल्पिका          | नरेंद्रसेन          | (सं०)              | १३७       | प्रश्नोत्तरश्रावकाचारभाषा                 | बुलाकीदास      | (हिं०)  | ७०        |
| प्रमेयकल्पमार्तण्ड           | आ० प्रभाचन्द्र      | (सं०)              | १३८       | प्रश्नोत्तरश्रावकाचारभाषा                 | पन्नालाल चौधरी | (हिं०)  | ७०        |
| प्रमेयरत्नमाला               | अनन्तवीर्य          | (सं०)              | १३८       | प्रश्नोत्तरश्रावकाचार                     | —              | (हिं०)  | ७१        |

| ग्रन्थनाम                | लेखक          | भाषा    | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम                   | लेखक         | भाषा  | पृष्ठ सं० |
|--------------------------|---------------|---------|-----------|-----------------------------|--------------|-------|-----------|
| प्रतीतिरस्तोत्र          | —             | (सं०)   | ४०६       | प्रीत्यङ्करचोपई             | नेमिचन्द्र   | (हि०) | ७७५       |
| प्रतीतिरोपासकाचार        | भ० सकलकीर्ति  | (सं०)   | ७१        | प्रीत्यङ्करचरित्र           | —            | (हि०) | ६८६       |
| प्रतीतिरोद्धार           | —             | (हि०)   | ७३        | प्रोषधदोषवर्गन              | —            | (हि०) | ७५        |
| प्रशस्ति                 | भ० दामोदर     | (सं०)   | ६०८       | प्रोषधोपवासप्रतोद्यापन      | —            | (सं०) | ६९९       |
| प्रशस्ति                 | —             | (सं०)   | १७७       | <b>फ</b>                    |              |       |           |
| प्रशस्तिकालिका           | बालकृष्ण      | (सं०)   | ७३        | फलफांदल [पञ्चमेरु]          | मण्डलचित्र   | —     | ५२५       |
| प्रज्ञाद चरित्र          | —             | (हि०)   | ६००       | फलवधीपार्षदनावस्तवन         | समयहृन्दरगणि | (सं०) | ६१६       |
| प्राकृतछन्दकोश           | —             | (प्रा०) | ३११       | फुटकरकवित्त                 | —            | (हि०) | ७४८       |
| प्राकृतछन्दकोश           | रत्नशेखर      | (प्रा०) | ३११       | फुटकरज्योतिषपद्य            | —            | (सं०) | ५७३       |
| प्राकृतछन्दकोश           | अनङ्ग         | (प्रा०) | ३११       | फुटकर दोहे                  | —            | (हि०) | ६९५       |
| प्राकृतविगलशास्त्र       | —             | (सं०)   | ३१२       | फुटकरपद्य                   | —            | (हि०) | ७७६, ७७३  |
| प्राकृतव्याकरण           | चण्डकवि       | (सं०)   | २६२       | फुटकर एवं कवित्त            | —            | (हि०) | ६४३       |
| प्राकृतरूपमात्रा         | श्रीरामभट्ट   | (प्रा०) | २६२       | फुटकरपाठ                    | —            | (सं०) | ५७३       |
| प्राकृतव्युत्पत्तिबीजिका | सौभाग्यगणि    | (सं०)   | २६२       | फुटकरवर्गन                  | —            | (सं०) | ५७४       |
| प्राणप्रतिष्ठा           | —             | (सं०)   | ५२३       | फुटकरसवेया                  | —            | (हि०) | ७७५       |
| प्राणायामशास्त्र         | —             | (सं०)   | ११४       | फूलभोतराी का दूहा           | —            | (हि०) | ६७५       |
| प्राणीब्रह्मोत्त         | —             | (हि०)   | ७९७       | <b>ब</b>                    |              |       |           |
| प्रातःक्रिया             | —             | (सं०)   | ७४        | बंकनूतरास                   | जबकीर्ति     | (हि०) | ३६३       |
| प्रातःस्मरणखण्ड          | —             | (सं०)   | ४०६       | बभ्रणवाडोस्तवन              | कमलकलरा      | (हि०) | ६१९       |
| प्राच्यनगर               | बालकृष्ण      | (प्रा०) | १३०       | बलतविलास                    | —            | (हि०) | ७२६       |
| प्रायश्चित्तग्रन्थ       | —             | (सं०)   | ७४        | बढाकनका                     | गुलाबराय     | (हि०) | ६८५       |
| प्रायश्चित्तविधि         | अकलाङ्कचरित्र | (सं०)   | ७४        | बढाकनका                     | —            | (हि०) | ६९३, ७५२  |
| प्रायश्चित्तविधि         | भ० एकसंध      | (सं०)   | ७४        | बढादर्शन                    | —            | (सं०) | ३९८, ४३२  |
| प्रायश्चित्तविधि         | —             | (सं०)   | ७४        | बडो सिद्धपूजा [कर्मदहनपूजा] | सोमदत्त      | (सं०) | ६३६       |
| प्रायश्चित्तशास्त्र      | इन्द्रनन्दि   | (प्रा०) | ७४        | बदरीनायक के छंद             | —            | (हि०) | ६००       |
| प्रायश्चित्तशास्त्र      | —             | (पुज०)  | ७४        | बधावा                       | —            | (हि०) | ७१०       |
| प्रायश्चित्तसमुच्चटीका   | संदिगुरु      | (सं०)   | ७५        |                             |              |       |           |
| प्रीतिकरचरित्र           | भ० नेमिदत्त   | (सं०)   | १८२       |                             |              |       |           |
| प्रीतिकरचरित्र           | जोधराज        | (हि०)   | १८३       |                             |              |       |           |

| ग्रन्थनाम                                   | लेखक         | भाषा      | पृष्ठ सं०               | ग्रन्थनाम                       | लेखक          | भाषा  | पृष्ठ सं०               |
|---|--------------|-----------|-------------------------|---------------------------------|---------------|-------|-------------------------|
| बधावाव विनती                                | —            | (हि०)     | ६८५                     | बारहह डी                        | पाण्डदास      | (हि०) | ३३२                     |
| बन्धना जकड़ी                                | बुधजन        | (हि०)     | ४४६                     | बारहखड़ी                        | रामचन्द्र     | (हि०) | ७१५                     |
| बन्धना जकड़ी                                | बिहारीदास    | (हि०)     | ४४६, ७२७                | बारहखड़ी                        | सूरत          | (हि०) | ३२२                     |
| बन्दे तू सून                                | —            | (प्रा०)   | ६१६                     |                                 |               |       | ६७०, ७१५, ७८८           |
| बन्दोमोक्षस्तोत्र                           | —            | (सं०)     | ६०८                     | बारहखड़ी                        | —             | (हि०) | ३३२                     |
| बधउदयसत्ताचौपई                              | श्रीलाल      | (हि०)     | ४१                      |                                 |               |       | ४४६, ६०१, ६६४, ७२२      |
| बंधस्थिति                                   | —            | (सं०)     | ५७२                     | बारहभवना                        | रइधू          | (हि०) | ११४                     |
| बनारसीविलास                                 | बनारसीदास    | (हि०)     | ६४०                     | बारहभावना                       | आलु           | (हि०) | ६६१                     |
| ६८६, ६६८, ७०६, ७०८, ७२१, ७३४, ७६३, ७६५, ७६७ |              |           |                         | बारहभावना                       | ज.मोमण्ण      | (हि०) | ६१७                     |
| बनारसीविलास के कुछ पाठ                      | —            | (हि०)     | ७५२, ७५६                | बारहभावना                       | जितचन्द्रसूरि | (हि०) | ७००                     |
| बरहावतारचित्र                               | —            |           | ६०३                     | बारहभावना                       | नवल           | (हि०) | १५                      |
| बलदेव महाशुनि सज्जाम समयसुन्दर              | (हि०)        | ६१६       |                         |                                 |               |       | ११५, ४२६                |
| बलभद्रगीत                                   | —            | (हि०)     | ७२३                     | बारहभावना                       | भगवतादाम      | (हि०) | ७२०                     |
| बलात्कारगणपुर्वावलि                         | —            | (सं०)     | ३७४                     | बारहभावना                       | भूधरदास       | (हि०) | ११५                     |
|   |              |           | ५७२, ५७४                | बारहभावना                       | दौलतराम       | (हि०) | ५६१, ६७५                |
| बलिभद्रगीत                                  | अभयचन्द      | (हि०)     | ७३६                     | बारहभावना                       | —             | (हि०) | ११५                     |
| बलंतराजकुसुनावली                            | —            | (सं० हि०) | ७११                     |                                 |               |       | ३८३, ६४४, ६८५, ६८६, ७८८ |
| बसंतपूजा                                    | अर्जराज      | (हि०)     | ६८३                     | बारहभासकी चौदम                  | [मण्डलचित्र]  | —     | ५२५                     |
| बहसरकलापुरष्य                               | —            | (हि०)     | ६०६                     | बारहमामा                        | गाविन्द       | (हि०) | ६६६                     |
| बाईसप्रभस्यवर्णन                            | बा० दुलीचन्द | (हि०)     | ७५                      | बारहमामा                        | चूहरकवि       | (हि०) | ६६६                     |
| बाईसपरिषहवर्णन                              | भूधरदास      | (हि०)     | ७५                      | बारहमाता                        | जसराज         | (हि०) | ७८०                     |
|   |              |           | ६०५, ६७०, ७२०, ७८५, ७८८ | बारहमाता                        | —             | (हि०) | ६६३                     |
| बाईसपरिषह                                   | —            | (हि०)     | ७५                      |                                 |               |       | ७४७, ७६७                |
|   |              |           | ५६६, ६४६                | बारहमाहकी पक्षमी [मठनाचित्र]    | —             |       | ५२५                     |
| बारहभसरी                                    | —            | (सं०)     | ७४७                     | बारहप्रतां का व्योरा            | —             | (हि०) | ५१६                     |
| बारहभद्रप्रेक्षा                            | —            | (प्रा०)   | ७३६                     | बारहसौ चौतीसप्रतपूजा            | जिनेन्द्रभूषण | (हि०) | ६६५                     |
| बारहभद्रप्रेक्षा                            | अवधू         | (हि०)     | ७२२                     | बारहसौ चौतीसप्रतपूजा            | श्रीभूषण      | (सं०) | ५३७                     |
| बारहभद्रप्रेक्षा                            | —            | (हि०)     | ७७७                     | बालवधपुराण प० पन्नाशाल वाकलीबाल | (हि०)         | १५१   |                         |
| बारहखड़ी                                    | दत्तलाल      | (हि०)     | ७४५                     | बाल्यकालवर्णन                   | —             | (हि०) | ५२३                     |

| ग्रन्थनाम                              | लेखक           | भाषा        | पृष्ठ सं० |
|--|----------------|-------------|-----------|
| बालाविबोध [श्रीगंकार पाठका ग्रंथ]      | —              | (प्रा० हि०) | ७५        |
| बावनी                                  | बनारसीदास      | (हि०)       | ७५०       |
| बावनी                                  | हेमराज         | (हि०)       | ६५७       |
| बासठकुमार                              | [मण्डलचित्र]   |             | ५२५       |
| बाहुबलीसम्भाष्य                        | विमलकीर्ति     | (हि०)       | ४४६       |
| बाहुबलीसम्भाष्य                        | समयसुन्दर      | (हि०)       | ६१६       |
| बिम्बनिर्माणविधि                       | —              | (सं०)       | ३५४       |
| बिम्बनिर्माणविधि                       | —              | (हि०)       | ३५४, ६६१  |
| बिहारीसतसई                             | बिहारीलाल      | (हि०)       | ६७५       |
| बिहारीसतसईटीका                         | कृष्णदास       | (हि०)       | ७२७       |
| बिहारीसतसईटीका                         | हरिचरनदास      | (हि०)       | ६८७       |
| बिहारीसतसईटीका                         | —              | (हि०)       | ७०६       |
| बीजक [कोश]                             | —              | (हि०)       | २७६       |
| बीजकोश [मातृका निर्वण्ट]               | —              | (सं०)       | ३४६       |
| बीसतीर्थ द्धुरजयमान                    | —              | (हि०)       | ५११       |
| बीसतीर्थ द्धुरजिनस्तुति                | जितसिंह        | (हि०)       | ७००       |
| बीसतीर्थ द्धुरपूजा                     | —              | (सं०)       | ५१४       |
|  |                |             | ५१६, ७३०  |
| बीसतीर्थ द्धुरपूजा                     | थानजी अजमेरा   | (हि०)       | ५२३       |
| बीसतीर्थ द्धुरपूजा                     | —              | (हि०)       | ५२३, ५३७  |
| बीसतीर्थ द्धुरस्तवन                    | —              | (हि०)       | ४००       |
| बीसतीर्थ द्धुरोो जयमाल [बीस विरह पूजा] |                |             |           |
|  | हर्षकीर्ति     |             | १६५, ७२२  |
| बीसविद्यमान तीर्थ द्धुरपूजा            | —              | (सं०)       | ५६५       |
| बीसविरहमानजकड़ी                        | समयसुन्दर      | (हि०)       | ६१७       |
| बीसविरहमानजयमाल तथा स्तवनविधि          | —              | (हि०)       | ५०५       |
| बीसविरहमाणपूजा                         | —              | (सं०)       | ६३६       |
| बीसविरहमाणपूजा                         | नरेन्द्रकीर्ति | (सं० हि०)   | ७६३       |
| बुधजनविलास                             | बुधजन          | (हि०)       | ३३०       |

| ग्रन्थनाम              | लेखक                   | भाषा    | पृष्ठ सं० |
|------------------------|------------------------|---------|-----------|
| बुधजनसतसई              | बुधजन                  | (हि०)   | ३३२, ३३३  |
| बुद्धावतारचित्र        | —                      |         | ६०३       |
| बुद्धिविलास            | बलतरामसाहू             | (हि०)   | ७५        |
| बुद्धिरास              | शालिभद्र द्वारा संकलित | (हि०)   | ६१७       |
| बुलाखीदास खत्रीकी बरात | —                      | (हि०)   | ७५३       |
| बेनि                   | छोहल                   | (हि०)   | ७३८       |
| बैतालपञ्चीसी           | —                      | (सं०)   | २३४       |
| बोधप्राभृत             | कुंदकुंदाचार्य         | (प्रा०) | ११५       |
| बोधसार                 | —                      | (हि०)   | ७५        |
| ब्रह्मचर्याष्टक        | —                      | (सं०)   | ३३३       |
| ब्रह्मचर्यवर्णन        | —                      | (हि०)   | ७५        |
| ब्रह्मविलास            | भैया भगवतीदास          | (हि०)   | ३३३, ७६०  |

भ

| ग्रन्थनाम                      | लेखक           | भाषा  | पृष्ठ सं०   |
|--------------------------------|----------------|-------|---|
| भक्तामरयज्ञिका                 | —              | (सं०) | ४०६   |
| भक्तामरस्तोत्र                 | मानतुंगाचार्य  | (सं०) | ४०२   |
|                                |                |       | ४०७, ४२५, ४२८, ४२६, ४३०, ४३१, ४३३, ४६६, ४७२, ४७३, ४६६, ४६७, ४६८, ६०३, ६०५, ६१६, ६२८, ६३४, ६३७, ६४४, ६४८, ६४१, ६५२, ६६४, ६८८, ६५१, ६५२, ६६४, ६६५, ६७०, ६७३, ६७५, ६७६, ६७७, ६८०, ६८१, ६८५, ६८६, ६८१, ६८३, ६८६, ७०३, ७०६, ७०७, ७३५, ७३७, ७४५, ७४८, ७५४, ७५८, ७६१, ७८८, ७८६, ७६६, ७६७ |
| भक्तामरस्तोत्र [मन्त्रसहित]    | —              | (सं०) | ६१२   |
|                                |                |       | ६३६, ६७०, ६६७, ७०५, ७१४, ७४१  |
| भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमन्त्रसहित | —              | (सं०) | ४०६   |
| भक्तामरस्तोत्रकथा              | पन्नालाल चौधरी | (हि०) | २३५   |



| ग्रन्थनाम                   | लेखक                              | भाषा    | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम                           | लेखक              | भाषा    | पृष्ठ सं० |
|-----------------------------|-----------------------------------|---------|-----------|-------------------------------------|-------------------|---------|-----------|
| अथहरस्तोत्र                 | —                                 | (हि०)   | ६१६       | भावनाबौत्तीसी                       | शं० पद्मानन्दि    | (सं०)   | ६३४       |
| अरतेसवैभव                   | —                                 | (हि०)   | १८३       | भावनाद्वात्रिणिका                   | श्रा० श्रिमतिराति | (सं०)   | ५७३       |
| अर्जुहरिशतक                 | अर्जुहरि                          | (सं०)   | ३३३, ७१५  | भावनाद्वात्रिणिकाटीका               | —                 | (सं०)   | ११५       |
| अथवैराग्यशतक                | —                                 | (प्रा०) | ११७       | भावनाद्वात्रिणिका                   | —                 | (सं०)   | ११५, ६३७  |
| अथमीवाक्य                   | —                                 | (हि०)   | २८८       | भावपाहुरु                           | कुंदकुंदाचार्य    | (प्रा०) | ११५       |
| अवानीसहस्रनाम एवं कवच       | —                                 | (सं०)   | ७६२       | भावनाथबौत्तीसीप्रतोद्यापन           | —                 | (सं०)   | ५२४       |
| अविष्यदस्तकथा <sup>१</sup>  | शं० रायमल्ल                       | (हि०)   | ३६४       | भावनापद्धति                         | पद्मानन्दि        | (सं०)   | ५७५       |
|                             | ५६४, ६४८, ७४०, ७५१, ७५२, ७८३, ७७५ |         |           | भावनाबत्तीसी                        | —                 | (सं०)   | ६२८, ६३३  |
| अविष्यदस्तचरित्र            | प० श्रीधर                         | (सं०)   | १८४       | भावन, भावसंग्रह                     | चामुण्डराय        | (सं०)   | ७७, ६१५   |
| अविष्यदस्तचरित्रभाषा        | पद्मनाभ चौधरी                     | (हि०)   | १८४       | भावनास्तोत्र                        | द्यानतराय         | (हि०)   | ६१४       |
| अविष्यदस्ततिलकामुन्दरीनाटक  | न्यासनभिरु                        | (हि०)   | ३१७       | भावप्रकाश                           | मानमिश्र          | (सं०)   | २६६       |
| अव्यक्तुमुदबन्धिका          | [ सागरप्रभासुतम्बोपमटोका ]        |         |           | भावप्रकाश                           | —                 | (सं०)   | २६६       |
|                             | पं० आशाधर                         | (सं०)   | ६३        | भावशतक                              | श्री नृागराज      | (सं०)   | ३३४       |
| भागवत                       | —                                 | (सं०)   | ६७५       | भावसंग्रह                           | देवसेन            | (प्रा०) | ७७        |
| भागवतदासगमकधटोका            | —                                 | (सं०)   | १५१       | भावमग्रह                            | श्रुतमुनि         | (प्रा०) | ७८        |
| भागवतपुराण                  | —                                 | (सं०)   | १५१       | भावसंग्रह                           | वामदेव            | (सं०)   | ७८        |
| भागवतमहिमा                  | —                                 | (हि०)   | ६७६       | भावसंग्रह                           | —                 | (सं०)   | ७८, २६६   |
| भागवतमहापुराण [सप्तमस्कन्ध] | —                                 | (सं०)   | १५१       | भाषा भूषण                           | जसवन्तसिंह        | (हि०)   | ३१२       |
| भाद्रपदपूर्वा               | —                                 | (हि०)   | ७७५       | भाषानुषण                            | धीरजसिंह          |         |           |
| भाद्रपदपूर्वामग्रह          | द्यानतराय                         | (हि०)   | ५२४       | भाष्यप्रदीप                         | कैरथ              | (सं०)   | २६२       |
| भावत्रिभङ्गी                | नेमिचन्द्राचार्य                  | (प्रा०) | ४२, ७००   | भाष्यती                             | पद्मानाभ          | (सं०)   | २८६       |
| भावदीपक                     | जोधराज गोदीका                     | (हि०)   | ७७        | भुवनकीर्ति                          | बूचराज            | (हि०)   | २८६       |
| भावदीपक                     | —                                 | (हि०)   | ६६०       | भुवनदीपक                            | पद्मानभसूरि       | (सं०)   | २८६       |
| भावदापिका                   | कृष्णशर्मा                        | (सं०)   | ११८       | भुवनदीपिका                          | —                 | (सं०)   | २८६       |
| भावदीपिकाभाषा               | —                                 | (हि०)   | ४२        | भुवनेश्वरीस्तोत्र [ सिद्धमहामंत्र ] |                   |         |           |
| भावनाउलूतीसी                | —                                 | (प्रा०) | ६४७       |                                     |                   |         |           |
| भावनापद्युविशति             | पद्मानन्दि                        | (सं०)   | ७३६       | भूगोलनिर्माण                        | —                 | (हि०)   | ३२३       |

नोट—रचना के यह नाम और हैं—

१. अविष्यदस्तचरित्र अविष्यदस्तपञ्चमीकथा अविष्यदस्तपञ्चमीरास भूतकासबौत्तीसी बुधजन (हि०) ३६८

| ग्रन्थनाम                              | लेखक                               | भाषा       | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम                   | लेखक                    | भाषा        | पृष्ठ सं० |
|--|------------------------------------|------------|-----------|-----------------------------|-------------------------|-------------|-----------|
| भूत भविष्य वर्तमानजिनपूजा              | पांडे जिनदास                       | (सं०)      | ४७०       | मंडपविधि                    | —                       | (हि०)       | ५२५       |
| भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्र                | भूपाल                              | (सं०)      | ४०२       | मन्त्र                      | —                       | (सं०)       | ५७३       |
|  | ४११, ४२५, ४२८, ४३२, ४७२, ५६५, ६०५, |            |           | मन्त्र व औपधिका नुमला       | —                       | (हि०)       | ३००       |
|  | ६३३, ६३७, ७३७                      |            |           | मन्त्र महौदधि               | पं० महीधर               | (सं०)       | ३५१, ५७७  |
| भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्रटीका            | आशाधर                              | (सं०)      | ४०१, ४१२  | मन्त्रशास्त्र               | —                       | (सं०)       | ३५०       |
| भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्रटीका विनयचन्द्र | (सं०)                              | ४१२        |           | मन्त्रशास्त्र               | —                       | (हि०)       | ३५०       |
| भूपालचौबीसीभाषा                        | पद्मलाल चौधरी                      | (हि०)      | ४१२       | मन्त्रग्रह                  | —                       | (सं०)       | ३५१       |
| भूपालचौबीसीभाषा                        | —                                  | (हि०)      | ७७५       |                             | ६७५, ६६६, ७०३, ७३६, ७६७ |             |           |
| भूवल                                   | —                                  | (सं०)      | ३४६       | मन्त्रमंजिता                | —                       | (सं०)       | ६०८       |
| भैरवनामस्तोत्र                         | —                                  | (सं०)      | ५६६       | मन्त्रादिग्रह               | —                       | (सं०)       | ५७२       |
| भैरवपद्यावतीकल्प                       | मह्लिषेणसुरि                       | (सं०)      | ३४६       | मसीपाश्वर्तनायकवचन          | जोधरा-मुनि              | (हि०)       | ६१८       |
| भैरवपद्यावतीकल्प                       | —                                  | (सं०)      | ३५०       | मच्छावतार [चित्र]           | —                       |             | ६०३       |
| भैरवाष्टक                              | —                                  | (सं०)      | ६१२, ६४६  | मशिरुत्पाकर जयमान           | —                       | (हि०)       | ५६५       |
| मोगीदासकी जन्मकुंडली                   | —                                  | (हि०)      | ७७६       | मधुवसधि                     | —                       | (ध्र०)      | ६५२       |
| भोजप्रबन्ध                             | पं० वल्लाल                         | (सं०)      | १८५       | मदनपराजय                    | जिनदेशमूरि              | (सं०)       | ३१७       |
| भोजप्रबन्ध                             | —                                  | (सं०)      | २३५       | मदनपराजय                    | —                       | (ग्रा०)     | ३१८       |
| भोजरासो                                | नृदयभान                            | (हि०)      | ७६७       | मदनपराजय                    | स्वरूपचन्द्र            | (हि०)       | ३१८       |
| भौमचरित्र                              | भ० रत्नचन्द्र                      | (सं०)      | १८५       | मदनमोदनराजगीतीभाषा          | छत्रपति जैमवाल          | (हि०)       | ३३५       |
| भृगुमंजिता                             | —                                  | (सं०)      | २८६       | मदनविनोद                    | मदनपाल                  | (सं०)       | ३००       |
| भ्रमरगीत                               | मानसिंह                            | (हि०)      | ७५०       | मधुकौशभषध [महिषानुवध]       | —                       | (सं०)       | २३५       |
| भ्रमरगीत                               | —                                  | (हि०)      | ६०, ७५५   | मधुमानतीकथा                 | चतुर्भुजदास             | (हि०)       | ६३६       |
|  |                                    |            |           | मध्यलांकपूजा                | —                       | (सं०)       | ५२५       |
|  |                                    |            |           | मनोरथमाला                   | अचलकोप्ति               | (हि०)       | ७६५       |
| मङ्गल                                  | विनोदोत्तल                         | (हि०)      | ७२०       | मनोरथमाला                   | —                       | (हि०)       | ७८        |
| मङ्गलकनकामहामुनिचतुर्दी                |                                    |            |           | मनोहरपुराका पीठियाका वर्गान | —                       | (हि०)       | ७५६       |
|  | रंगविनयमणि                         | (हि० राज०) | १८५       | मनोहरमञ्जरी                 | मनोहर मिश्र             | (हि०)       | ७६६       |
| मङ्गलपाठ                               | —                                  | (सं०)      | ५६६       | मरकटविलास                   | पद्मलाल                 | (हि०)       | ७८        |
| मङ्गलाष्टक                             | —                                  | (सं०)      | ५६०, ६३५  | मरणकरंडिका                  | —                       | (ग्रा० हि०) | ४२        |
| मंडपविधि                               | —                                  | (सं०)      | ५२५       |                             |                         |             |           |

म

| ग्रन्थनाम                    | लेखक             | भाषा   | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम                   | लेखक            | भाषा      | पृष्ठ सं० |
|------------------------------|------------------|--------|-----------|-----------------------------|-----------------|-----------|-----------|
| मरुदेशीकी सङ्ग्रह            | शुद्धि लालचन्द्र | (हि०)  | ४५०       | महावीरस्तोत्र               | स्वरूपचन्द्र    | (हि०)     | ५११       |
| मल्लिनाथपुराण                | सकलकीर्ति        | (सं०)  | १५२       | महावीराष्टक                 | भागचन्द्र       | (सं०)     | ४१३       |
| मल्लिनाथपुराणभाषा            | सेवाराज पाटनी    | (हि०)  | १५२       | महाभारतकविधान               | पं० धर्मदेव     | (सं०)     | ६२५       |
| मत्स्यपुराण                  | —                | (हि०)  | ७५१       | महिम्नस्तवत                 | जयकीर्ति        | (सं०)     | ४२५       |
| मूर्ध्निस्तवन                | —                | (सं०)  | ६५८       | महिम्नस्तोत्र               | —               | (सं०)     | ४१३       |
|                              |                  |        | ४१३, ४२६  | महोपालचरित्र                | चारित्रभूषण     | (सं०)     | १८६       |
| महर्षिस्तवन                  | —                | (हि०)  | ४१२       | महोपालचरित्र                | भ० रत्नमिन्द    | (सं०)     | १८६       |
| महागणपतिकवच                  | —                | (सं०)  | ६६२       | महोपालचरित्रभाषा            | नथमल            | (हि०)     | १८६       |
| महावन्दक                     | —                | (हि०)  | ७३५       | मांगीनु' गीगिरिमञ्जुपूजा    | विश्वभूषण       | (सं०)     | ५२६       |
| महापुराण                     | जिनसेनाचार्य     | (सं०)  | १५३       | मारिण्यमालाअन्यग्रन्तोत्तरी | संग्रहकर्ता—    |           |           |
| महापुराण [संक्षिप्त]         | —                | (सं०)  | १५२       | श्री० ज्ञानसागर             | (सं० प्रा० हि०) |           | ६०४       |
| महापुराण                     | महाकवि पुष्पदन्त | (ध्र०) | १५३       | माताके सोनह स्वप्न          | —               | (हि०)     | ४२४       |
| महाभारतविष्णुसहस्रनाम        | —                | (सं०)  | ६७६       | माता पद्यावतीछन्द           | भ० महीचन्द्र    | (सं० हि०) | ५६०       |
| महाभियेकपाठ                  | —                | (सं०)  | ६०७       | माधवानदान                   | माधव            | (सं०)     | ३००       |
| महाभियेकसामग्री              | —                | (हि०)  | ६६८       | माधवानलकथा                  | आनन्द           | (सं०)     | २३५       |
| महामहर्षिस्तवनटीका           | —                | (सं०)  | ४१३       | माननु' रामानवति चोपई        | मोहनविजय        | (सं०)     | २३५       |
| महामहिम्नस्तोत्र             | —                | (सं०)  | ४१३       | मानकी बड़ी बावनी            | मनासाह          | (हि०)     | ६३८       |
| महालयमोस्तोत्र               | —                | (सं०)  | ४१३       | मानबावनी                    | मानकवि          | (हि०)     | ३३४, ६०१  |
| महाविद्या [मन्त्रोका संग्रह] | —                | (सं०)  | ३५१       | मानमञ्जरी                   | नन्दराम         | (हि०)     | ६२१       |
| महाविद्याविष्णुस्तवन         | —                | (सं०)  | १३८       | मानमञ्जरी                   | नन्ददास         | (हि०)     | २७६       |
| महावीरजीका चौडाल्या          | शुद्धि लालचन्द्र | (हि०)  | ४५०       | मानलघुबावनी                 | मनासाह          | (हि०)     | ६३८       |
| महावीरछन्द                   | शुभचन्द्र        | (हि०)  | ३८६       | मानविनोद                    | मानसिंह         | (सं०)     | ३००       |
| महावीरनिर्वाणपूजा            | —                | (सं०)  | ५२६       | मानुषोत्तरपरिपूजा           | भ० विश्वभूषण    | (सं०)     | ४६७       |
| महावीरनिर्वाणकव्याणुपूजा     | —                | (सं०)  | ५२६       | मायाश्रद्धाका विचार         | —               | (हि०)     | ७६७       |
| महावीरनिर्वाणकव्याणुपूजा     | —                | (हि०)  | ३६८       | मार्कण्डेयपुराण             | —               | (सं०)     | १५३, ६०७  |
| महावीरपूजा                   | वृन्दावन         | (हि०)  | ५२६       | मार्गशा व दुसुस्थान वर्णन   | —               | (सा०)     | ४३        |
| महावीरस्तवन                  | जितचन्द्र        | (हि०)  | ७००       | मार्गशावर्णन                | —               | (प्रा०)   | ७६६       |
| महावीरस्तवनपूजा              | समयसुन्दर        | (हि०)  | ७३५       | मार्गशाविधान                | —               | (हि०)     | ७६०       |
| महावीरस्तोत्र                | भ० अमरकीर्ति     | (सं०)  | ७५७       | मार्गशासमाप्त               | —               | (प्रा०)   | ४३        |



| ग्रन्थनाम                 | लेखक             | भाषा      | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम           | लेखक                      | भाषा       | पृष्ठ सं० |
|---------------------------|------------------|-----------|-----------|---------------------|---------------------------|------------|-----------|
| मालीरामो .                | जिनदास           | (हि०)     | ५७६       | मुनिमुद्रतपुराण     | ब्र० कृष्णदास             | (स०)       | १५३       |
| मिच्छादुर्लभक             | ब्र० जिनदास      | (हि०)     | ६८६       | मुनिमुद्रतपुराण     | इन्द्रजीत                 | (हि०)      | १५३       |
| मित्रविलास                | घासी             | (हि०)     | ३३४       | मुनिमुद्रत विनयी    | देवाग्रज                  | (हि०)      | ४५०       |
| मिथ्यात्वखंडन             | वस्तराम          | (हि०)     | ७८, ५६०   | मुनीश्वरोकी जयमाल   | —                         | (स०)       | ४२८       |
| मिथ्यात्वखंडन             | —                | (हि०)     | ७६        |                     | ५७६, ५७८, ६४६, ७५२        |            |           |
| मुकुटमसमीकथा              | पं० अश्वदेव      | (सं०)     | २४४       | मुनीश्वरोकी जयमाल   | —                         | (घप०)      | ६३७       |
| मुकुटमसमीकथा              | खुशालचन्द्र      | (हि०)     | २४४, ७३१  | मुनीश्वरोकी जयमाल   | ब्र० जिनदास               | (हि०)      | ५७१       |
| मुकुटमसमीकथागीतान         | —                | (सं०)     | ५२७       |                     |                           |            | ६२२, ७५०  |
| मुक्तावलि कथा             | —                | (सं०)     | ६३१       | मुनीश्वरोकी जयमाल   | —                         | (हि०)      | ६२१       |
| मुक्तावलि कथा             | भारामल           | (हि०)     | ७६४       | मुद्रिज्ञान         | ग्रंथानिपाचार्य देवचन्द्र | (हि०)      | ३००       |
| मुक्तावलिगीत              | मवलकीर्ति        | (हि०)     | ६८६       | मुहूर्त्तचिन्तामणि  | —                         | (हि०)      | २८६       |
| मुक्तावलि [मण्डलविषय]     | —                |           | ५-५       | मुहूर्त्तदीपक       | महादेव                    | (सं०)      | २८०       |
| मुक्तावलिपूजा             | वर्गी सुखसागर    | (स०)      | ५२७       | मुहूर्त्त मुक्तावली | परमहंसपरिव्रजकाकाचार्य—   |            |           |
| मुक्तावलिपूजा             | —                | (स०)      | ५३६, ६६६  | मुहूर्त्तमुक्तावली  | शङ्कराचार्य               | (हि०)      | ७६८       |
| मुक्तावलि विधानकथा        | श्रुतसागर        | (सं०)     | २३६       | मुद्रतमुक्तावली     | —                         | (सं० हि०)  | २६०       |
| मुक्तावलि व्रतकथा         | सोमप्रभ          | (स०)      | २३६       | मुहूर्त्तसंग्रह     | —                         | (सं०)      | २६०       |
| मुक्तावलि विधानकथा        | —                | (घप०)     | २३६       | मूढनाशानामुद्र      | —                         | (स०)       | ७६२       |
| मुक्तावलि व्रतकथा         | खुशालचन्द्र      | (हि०)     | २४५       | सूर्यकेलधरम         | —                         | (स०)       | ३४८       |
| मुक्तावलि व्रतकथा         | —                | (हि०)     | ६७३       | सूक्तमघको गृह्यावलि | —                         | (सं०)      | ७३७       |
| मुक्तावलि व्रतकी तिथिया   | —                | (हि०)     | ५७१       | सूक्ताचारटीका       | श्रा० बसुनिन्द्र          | (श्रा० स०) | ७६        |
| मुक्तावलि व्रतज्ञान       | —                | (स०)      | ५७७       | सूक्ताचारप्रदीप     | मकनदास                    | (स०)       | ७६        |
| मुक्तावलि व्रत विधान      | —                | (सं०)     | ५७७       | सूक्ताचारभाषा       | शुभदास                    | (हि०)      | ८०        |
| मुक्तावलि व्रतोपनिषद्पूजा | —                | (स०)      | ५७७       | सूक्ताचारभाषा       | —                         | (हि०)      | ८०        |
| मुक्तावलि व्रतगीत         | —                | (हि०)     | ७६५       | सृष्ट्यायुज-उदात्ता | —                         | (हि०)      | २३५       |
| मुक्तावलि व्रतकथा         | —                | (सं०)     | २४३       | सृष्ट्युपहोत्वव     | —                         | (सं०)      | ११५, ५७६  |
| मुनिराजका वाग्दामासा      | —                | (हि०)     | ७२७       | सृष्ट्युपहोत्ववभाषा | सदासुख कामलीवाल—          |            |           |
| मुनिमुद्रतखण्ड            | ब्र० प्रसाचन्द्र | (सं० हि०) | ५५७       |                     |                           | (हि०)      | ११५       |
| मुनिमुद्रतनाथपूजा         | —                | (स०)      | ५०६       | सृष्ट्युपहोत्ववभाषा | —                         | (हि०)      | ४१२       |
| मुनिमुद्रतनाथस्तुति       | —                | (घप०)     | ६३७       |                     |                           |            | ६६१, ७२२  |

| ग्रन्थनाम                                 | लेखक                   | भाषा      | वृष्ट सं०       | ग्रन्थनाम                            | लेखक          | भाषा     | वृष्ट सं० |
|---|------------------------|-----------|-----------------|--------------------------------------|---------------|----------|-----------|
| मेघकुमारगीत                               | पूनी                   | (हि०)     | ७३८             | मोहविकेकमुद्र                        | बनारसीदास     | (हि०)    | ७१४, ७६४  |
|   |                        |           | ७४६, ७५०, ७६४   | मोएकदादशकथा                          | श्रुतसागर     | (सं०)    | २२८       |
| मेघकुमारचौदाशिका                          | कनकमोम                 | (हि०)     | ६१७             | मोएकदाश्रीरत्नवन                     | समयसुन्दर     | (हि०)    | ६२०       |
| मेघकुमारचौपई                              | —                      | (हि०)     | ७७४             | मोनिव्रतकथा                          | गुणभद्र       | (सं०)    | २६६       |
| मेघकुमारवार्ता                            | —                      | (हि०)     | ६६४             | मोनिव्रतकथा                          | —             | (सं०)    | २३७       |
| मेघकुमारसम्भाष                            | समयसुन्दर              | (हि०)     | ६१८             | मोनिव्रतविधान                        | रत्नकीर्ति    | (सं० ग०) | २४४       |
| मेघदूत                                    | कालिदास                | (स०)      | १८७             | मोनिव्रतोद्यापन                      | —             | (सं०)    | ५१७       |
| मेघदूतटीका                                | परमहंसपरिव्राजक चार्य— |           |                 |                                      |               |          |           |
| मेघमाना                                   | —                      | (स०)      | २६०             |                                      |               |          |           |
| मेघमानाविधि                               | —                      | (स०)      | ५२७             | यन्त्र [भगे हुए धार्मिके वापस आनेका] |               |          | ६०३       |
| मेघमानाव्रतकथा                            | श्रुतसागर              | (सं०)     | ५१४             | यन्त्रमन्त्रविधिसफल                  | —             | (हि०)    | ३५१       |
| मेघमानाव्रतकथा                            | —                      | (सं०)     | २३६, २४२        | यन्त्रमन्त्रसंग्रह                   | —             | (सं०)    | ७०१, ७६६  |
| मेघमानाव्रतकथा                            | सुशालचन्द्र            | (हि०)     | २३६, २४४        | यन्त्रमन्त्रग्रह                     | —             | (सं०)    | ३५२       |
| मेघमानाव्रत                               | [मण्डविषय]—            |           | ५२५             |                                      |               |          | ६६७, ७६८  |
| मेघमानाव्रतोद्यापनकथा                     | —                      | (सं०)     | ५२७             | यक्षिणीकल्प                          | —             | (सं०)    | ३५१       |
| मेघमानाव्रतोद्यापनपूजा                    | —                      | (स०)      | ५२७             | यक्षकोसामयीका ध्योरा                 | —             | (हि०)    | ५६५       |
| मेघमानाव्रतोद्यापन                        | —                      | (सं० हि०) | ५१७             | यक्षमहिषा                            | —             | (हि०)    | ५६५       |
|   |                        |           | ५३६             | यतिदिनचर्या                          | देवमूरि       | (ग्रा०)  | ८०        |
| मेदिनीकोश                                 | —                      | (सं०)     | २७६             | यतिभावनाष्टक                         | आ० कुन्दकुन्द | (ग्रा०)  | ५७३       |
| मेघपूजा                                   | सोमसेन                 | (स०)      | ७६५             | यतिभाषणाष्टक                         | —             | (सं०)    | ६३७       |
| मेरुवृत्ति तपकी कथा                       | सुशालचन्द्र            | (हि०)     | ५१६             | यतिभाषणाष्टक                         | —             | (सं०)    | ६३७       |
| मोक्षपेडी                                 | बनारसीदास              | (हि०)     | ८०              | यतिभाषणाष्टक के ४६ दोष               | —             | (हि०)    | ६२७       |
|   |                        |           | ६४३, ७४६        | यथाचार                               | आ० वसुनन्दि   | (सं०)    | ८०        |
| मोक्षमार्गप्रकाशक                         | पं० टोडरमल             | (राज०)    | ८०              | यमक                                  | —             | (सं०)    | ४२६       |
| मोक्षशास्त्र                              | उमास्वामी              | (स०)      | ६६४             | (यमकाष्टक)                           |               |          |           |
| मोरपिच्छधारी [कृष्ण] के कवित्त कपोत       | (हि०)                  | ६७३       | यमकाष्टकस्तोत्र | म० अमरकीर्ति (स०)                    |               | ४१३, ४२६ |           |
| मोरपिच्छधारी [कृष्ण] के कवित्त धर्मदास    | (हि०)                  | ६७३       | यमगानमातनकी कथा | —                                    | (सं०)         | २३७      |           |
| मोरपिच्छधारी [कृष्ण] के कवित्त विचित्रदेव | (हि०)                  | ६७३       | यथास्तिलकचम्पू  | सोमदेवसुरि                           | (सं०)         | १८७      |           |
| मोहम्मदराजाकी कथा                         | —                      | (हि०)     | ६००             | यथास्तिलकचम्पूटीका                   | श्रुतसागर     | (सं०)    | १८७       |
|   |                        |           |                 | यथास्तिलकचम्पूटीका                   | —             | (सं०)    | १८८       |

| ग्रन्थनाम              | श्लोक               | भाषा     | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम          | श्लोक                | भाषा     | पृष्ठ सं० |
|------------------------|---------------------|----------|-----------|--------------------|----------------------|----------|-----------|
| यसोधरकथा [यसोधरचरित्र] | सुशाल चन्द्र        | (हि०)    | १११       | योगशात             | वररुचि               | (सं०)    | ३०२       |
|                        |                     |          | ७११       | योगशातक            | —                    | (सं०)    | ३०२       |
| यसोधरचरित्र            | ज्ञानकीर्ति         | (स०)     | ११२       | योगशातक            | —                    | (हि०)    | ३०२       |
| यसोधरचरित्र            | कायस्थपद्मनाभ       | (सं०)    | १८६       | योगशातटीका         | —                    | (सं०)    | ३०२       |
| यसोधरचरित्र            | पूरणदेव             | (सं०)    | १६०       | योगशास्त्र         | हेमचन्द्रमूर्ति      | (सं०)    | ११६       |
| यसोधरचरित्र            | बादिराजमूर्ति       | (सं०)    | १६१       | योगशास्त्र         | —                    | (सं०)    | ११६       |
| यसोधरचरित्र            | वामवर्सेन           | (सं०)    | १६१       | योगसार             | योगचन्द्र            | (सं०)    | ५७५       |
| यसोधरचरित्र            | श्रतसागर            | (सं०)    | १६२       | योगसार             | योगीन्द्रदेव (प्रप०) | ११६, ७५५ |           |
| यसोधरचरित्र            | सकलकीर्ति           | (सं०)    | १८८       | योगसारभाषा         | नन्दराम              | (हि०)    | ११६       |
| यसोधरचरित्र            | पुष्पदन्त           | (प्रप०)  | १८८ ६४२   | योगसारभाषा         | बुधजन                | (हि०)    | ११७       |
| यसोधरचरित्र            | गारुडदास            | (हि० प०) | १६१       | योगसारभाषा         | पद्मलाल चौधरी        | (हि० प०) | ११६       |
| यसोधरचरित्र            | पद्मलाल             | (हि०)    | १६        | योगसारभाषा         | —                    | (हि० प०) | ११७       |
| यसोधरचरित्र            | —                   | (हि०)    | १६२       | योगसारसंग्रह       | —                    | (सं०)    | ११७       |
| यसोधरचरित्रटिप्पण      | प्रभाचन्द्र         | (सं०)    | १६२       | योगिनोकवच          | —                    | (सं०)    | ६०८       |
| यात्रावर्णन            | —                   | (हि०)    | ३७४       | योगिनोस्तोत्र      | —                    | (सं०)    | ५३०       |
| यादववशावलि             | —                   | (हि०)    | ६७६       | योगीश्वर्या        | महात्मा ज्ञानचन्द्र  | (प्र०)   | ६२८       |
| युक्त्यनुशासन          | श्री० समन्तभद्र     | (सं०)    | १३६       | योगीश्वर्या        | योगीन्द्रदेव         | (प्रप०)  | ६०३       |
| युक्त्यानुशासनटीका     | विद्यानन्दि         | (सं०)    | १३६       | योगीश्वर्या        | —                    | (सं०)    | ७१२, ७५८  |
| युषादिदेवमहिम्नस्तोत्र | —                   | (सं०)    | ४१३       | योगीश्वर्या        | —                    | (सं०)    | ६७६       |
| यूनानी त्रुयषे         | —                   | (सं०)    | ६६१       |                    |                      |          |           |
| योगचिन्तामणि           | मन्सिंह             | (सं०)    | ३०१       |                    |                      |          |           |
| योगचिन्तामणि           | उपाध्याय हर्षकीर्ति | (सं०)    | ३०१       | रङ्ग बनाने की विधि | —                    | (हि०)    | ६२३       |
| योगचिन्तामणि           | —                   | (सं०)    | ३०१       | रक्षाबधनकथा        | —                    | (सं०)    | २३७       |
| योगचिन्तामणिसंज्ञक     | —                   | (सं०)    | ३०१       | रक्षाबधनकथा        | श्री० ज्ञानसागर      | (हि०)    | २२०       |
| योगफल                  | —                   | (सं०)    | २६०       | रक्षाबधनकथा        | नाथुराम              | (हि०)    | २४३       |
| योगविन्दुप्रकरण        | श्री० हरिभद्रमूर्ति | (सं०)    | ११६       | रक्षाविधानकथा      | —                    | (सं०)    | २४३, ७३१  |
| योगभक्ति               | —                   | (सं०)    | ६३३, ६२८  | रघुनाथविनायक       | रघुनाथ               | (हि०)    | ३१२       |
| योगभक्ति               | —                   | (श्री०)  | ११६       | रघुवंशटीका         | मल्लिनाथमूर्ति       | (सं०)    | १६३       |
| योगभक्ति               | पद्मलाल चौधरी       | (हि०)    | ४५०       | रघुवंशटीका         | गुणविनयगणि           | (सं०)    | १६४       |

| ग्रन्थनाम                    | लेखक                | भाषा       | वृत्त सं० |
|------------------------------|---------------------|------------|-----------|
| रघुवंशटीका                   | समयसुन्दर           | (सं०)      | १९४       |
| रघुवंशटीका                   | सुमतिविजयगणि        | (सं०)      | १९४       |
| रघुवंशमहाकाव्य               | कालिदास             | (सं०)      | १९३       |
| रतिरहस्य                     | —                   | (हि०)      | ७९९       |
| रत्नकरंडश्रावकाचार           | समन्तभद्र           | (सं०)      | ८१        |
|                              |                     |            | ६९१, ७६५  |
| रत्नकरंडश्रावकाचार           | पं० सदासुख कासलीवाल | (हि० गद्य) | ८२        |
| रत्नकरंडश्रावकाचार           | नथमल                | (हि०)      | ८३        |
| रत्नकरंडश्रावकाचार           | सघी पन्नालाल        | (हि०)      | ८३        |
| रत्नकरंडश्रावकाचारटीका       | प्रभाचन्द्र         | (सं०)      | ८२        |
| रत्नकोष                      | — (सं०)             |            | ३३५, ७९९  |
| रत्नकोष                      | —                   | (हि०)      | ३३५       |
| रत्नत्रय उद्यापनपूजा         | —                   | (सं०)      | ५२७       |
| रत्नत्रयकथा                  | ब्र० ज्ञानसागर      | (हि०)      | ७४०       |
| रत्नत्रयका महार्थ व क्षमावरी | ब्रह्मसेन           | (सं०)      | ७८१       |
| रत्नत्रयगुणकथा               | पं० शिवजीलाल        | (सं०)      | २३७       |
| रत्नत्रयजयमाल                | —                   | (प्रा०)    | ५२७       |
| रत्नत्रयजयमाल                | —                   | (सं०)      | ५२८       |
| रत्नत्रयजयमाल                | ऋषभदास बुधदास       | (हि०)      | ५१६       |
| रत्नत्रयजयमाल                | —                   | (प्रा०)    | ५२८       |
| रत्नत्रयजयमाल                | —                   | (हि०)      | ५२९       |
| रत्नत्रयजयमालभाषा            | नथमल                | (हि०)      | ५२८       |
| रत्नत्रयजयमाल तथा विधि       | —                   | (प्रा०)    | ६५८       |
| रत्नत्रयपाठविधि              | —                   | (सं०)      | ५६०       |
| रत्नत्रयपूजा                 | पं० आशाधर           | (सं०)      | ५२९       |
| रत्नत्रयपूजा                 | केशवसेन             | (सं०)      | ५२९       |
| रत्नत्रयपूजा                 | पद्मानन्दि          | (सं०)      | ५२९       |

५७५, ६३६

| ग्रन्थनाम                     | लेखक                 | भाषा      | वृत्त सं०   |
|-------------------------------|----------------------|-----------|---|
| रत्नत्रयपूजा                  | पं० नरेन्द्रसेन      | (सं०)     | ५९५   |
| रत्नत्रयपूजा                  | —                    | (सं०)     | ५१६   |
|                               |                      |           | ५२९, ५३७, ५५५, ५७५, ६०६, ६४०, ६४६, ६५२, ६९५, ७०५, ७०५, ७५९, ७६३ |
| रत्नत्रयपूजा                  | —                    | (सं० हि०) | ५१८   |
| रत्नत्रयपूजा                  | —                    | (प्रा०)   | ६३५, ६५५  |
| रत्नत्रयपूजा                  | ऋषभदास               | (हि०)     | ५३०   |
| रत्नत्रयपूजाजयमाल             | ऋषभदास               | (प्रा०)   | ५३७   |
| रत्नत्रयपूजा                  | द्यानतराय            | (हि०)     | ४८८   |
|                               |                      |           | ५०३, ५२९  |
| रत्नत्रयपूजा                  | सुरालचन्द्र          | (हि०)     | ५१९   |
| रत्नत्रयपूजा                  | —                    | (हि०)     | ५१९   |
|                               |                      |           | ५३०, ६४५, ७४५   |
| रत्नत्रयपूजाविधान             | —                    | (सं०)     | ६०७   |
| रत्नत्रयमण्डल [चित्र]         |                      |           | ५२५   |
| रत्नत्रयमण्डलविधान            | —                    | (हि०)     | ५३०   |
| रत्नत्रयविधान                 | —                    | (सं०)     | ५३०   |
| रत्नत्रयविधानकथा              | रत्नकीर्त्ति         | (सं०)     | २२०, २४२  |
| रत्नत्रयविधानकथा              | श्रुतसागर            | (सं०)     | २३७   |
| रत्नत्रयविधानपूजा             | रत्नकीर्त्ति         | (सं०)     | ५३०   |
| रत्नत्रयविधान                 | टेकचन्द्र            | (हि०)     | ५३१   |
| रत्नत्रयविधि                  | आशाधर                | (सं०)     | २४२   |
| रत्नत्रयव्रतकथा [रत्नत्रयकथा] |                      |           |   |
|                               | लक्षितकीर्त्ति (सं०) |           | ६४५, ६९५  |
| रत्नत्रयव्रत विधि एवं कथा     | —                    | (हि०)     | ७३३   |
| रत्नत्रयव्रतोद्यापन           | केशवसेन              | (सं०)     | ५३९   |
| रत्नत्रयव्रतोद्यापन           | —                    | (सं०)     | ५१३   |
|                               |                      |           | ५३१, ५३६, ५४०   |
| रत्नदीपक                      | गणपति                | (सं०)     | २९०   |

| ग्रन्थनाम                      | लेखक            | भाषा     | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम                       | लेखक           | भाषा  | पृष्ठ सं० |
|--------------------------------|-----------------|----------|-----------|---------------------------------|----------------|-------|-----------|
| रत्नदीपक                       | —               | (सं०)    | २६०       | रसप्रकरण                        | —              | (सं०) | ३०२       |
| रत्नदीपक                       | रामकवि          | (हि०)    | ३५८       | रसप्रकरण                        | —              | (हि०) | ३०२       |
| रत्नमाला                       | आ० शिवकोटि      | (सं०)    | ८३        | रसमञ्जरी                        | शालिनाथ        | (सं०) | ३०२       |
| रत्नमञ्जूषा                    | —               | (सं०)    | ३१२       | रसमंजरी                         | शार्ङ्गधर      | (सं०) | ३०२       |
| रत्नमञ्जूषिका                  | —               | (सं०)    | ३१२       | रसमंजरी                         | भानुदत्त मिश्र | (हि०) | ३५६       |
| रत्नावलिप्रतकथा                | गुणनन्दि        | (हि०)    | २४६       | रसमञ्जरीटीका                    | गोपालभट्ट      | (सं०) | ३५६       |
| रत्नावलिप्रतकथा                | जोशी रामदास     | (सं०)    | २३७       | रसमागर                          | —              | (हि०) | ६८६       |
| रत्नावलिप्रतविधान              | ब्र० कृष्णदास   | (हि०)    | ५३१       | रसायनाविधि                      | —              | (हि०) | ५६०       |
| रत्नावलिप्रतोद्यापत            | —               | (सं०)    | ५३६       | रमालकु वरकी चौई                 | नरवरू कवि      | (हि०) | ५७७       |
| रत्नावलिप्रतोकी त्रिययो के नाम | —               | (हि०)    | ६५५       | रमिकप्रिया                      | इन्द्रजीत      | (हि०) | ६७६ ७४३   |
| रथयात्रावर्णन                  | —               | (हि०)    | ७१६       | रमिकप्रिया                      | केशव           | (हि०) | ७७१ ७८६   |
| रमलजान                         | —               | (हि० ग०) | २६१       | रागचान्दोग्यकाद्रहा             | —              | (हि०) | ६७५       |
| रमलवास्त्र                     | पं० चिंतामणि    | (सं०)    | २६०       | रागमाला                         | —              | (सं०) | ३१८       |
| रमलवास्त्र                     | —               | (हि०)    | २६०       | रागमाला                         | श्याममिश्र     | (हि०) | ७७१       |
| रयणवास्त्र                     | आ० कुन्दकुन्द   | (प्रा०)  | ८४        | रागमाला के दोहे                 | जैतथी          | (हि०) | ७८०       |
| रविवारकथा                      | सुशालचन्द्र     | (हि०)    | ७७५       | रागमाला के दोहे                 | —              | (हि०) | ७७७       |
| रविवारपूजा                     | —               | (सं०)    | ५३७       | रागरागिनियों के नाम             | —              | (हि०) | ३१८       |
| रविवारप्रतमण्डल [चित्र]        | —               | —        | ५२५       | राष्ट्र धामावरां                | रूपचन्द्र      | (सं०) | ६४१       |
| रविप्रतकथा                     | श्रुतसागर       | (हि०)    | २३७       | रागों के नाम                    | —              | (हि०) | ७७३       |
| रविप्रतकथा                     | जयकीर्ति        | (हि०)    | ६६६       | राजनीति कवित्त                  | देवीदास        | (हि०) | ७५२       |
| रविप्रतकथा [रविवारकथा]         | देवेन्द्रभूषण   | (हि०)    | २३७       | राजनीतिवास्त्र                  | चाणक्य         | (सं०) | ६४०, ६४६  |
|                                |                 |          | ७०७       | राजनीतिवास्त्र                  | जसुराम         | (हि०) | ३३६       |
| रविप्रतकथा                     | भास्करकवि       | (हि० प०) | २३७, ५६५  | राजनीतिवास्त्रभाषा              | देवीदास        | (हि०) | ३३६       |
| रविप्रतकथा                     | भानुकीर्ति      | (हि०)    | ७५०       | राजप्रशांस्त                    | —              | (सं०) | ३७४       |
| रविप्रतकथा                     | —               | (हि०)    | २४७       |                                 |                |       |           |
|                                |                 |          | ६०३, ७५३  | राजा चन्द्रगुप्तकी चौपई         | ब्र० गुलाल     | (हि०) | ६२०       |
| रविप्रतकथा                     | देवेन्द्रकीर्ति | (सं०)    | ५३२       | राजाविकल                        | —              | (सं०) | २६१       |
| रसकौतुक राजसमारंजन             | गंगादास         | (हि०)    | ५७६       | राजा प्रजाको वशम करने का मन्त्र | —              | (हि०) | ५७१       |
| रसकौतुकराजमभारजुन              | —               | (हि०)    | ७६२       | राजारामिसंज्ञाय                 | —              | (हि०) | ४५०       |

| ग्रन्थनाम              | लेखक                                   | भाषा  | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम   | लेखक             | भाषा     | पृष्ठ सं० |
|------------------------|--|-------|-----------|---|------------------|----------|-----------|
| राजुलपञ्चीसी           | लालचन्द्र विनोदीलाल                    | (हि०) | ६००       | रामायणमहाभारतकथाप्रन्तोत्तर                           | —                | (हि०ग०)  | ५६२       |
|                        | ६१३, ६२२, ६४३, ६५१, ६८३, ६८५, ७२२, ७५३ |       |           | रामावतार  | [ चित्र ]        | —        | ६०३       |
| राजुनमङ्गल             | —                                      | (हि०) | ७५३       | रायवसेणामूत्र   | —                | (प्रा०)  | ४३        |
| राजुलकी सञ्ज्ञाय       | जिनदाम                                 | (हि०) | ७५७       | राशिकल  | —                | (सं०)    | ७६३       |
| राठीकरतन महेश दशोत्तरी | —                                      | (हि०) | २३८       | रासायनिकशास्त्र                                       | —                | (हि०)    | ३३०       |
| रांठपुरास्तवन          | —                                      | (हि०) | ४५०       | राहुफल  | —                | (हि०)    | २६१       |
| राङ्गुराक्षस्तवन       | समयसुन्दर                              | (हि०) | ६१६       | रक्तविभागप्रकरण                                       | —                | (सं०)    | ८४        |
| रात्रिभोजनकथा          | —                                      | (सं०) | २३८       | रिट्टोमिचार्ड   | स्वयभू           | (प्रा०)  | ६४२       |
| रात्रिभोजनकथा          | किशनसिंह                               | (हि०) | २३८       | रुक्मणिकथा  | मदनक्रीष्ण       | (सं०)    | २४७       |
| रात्रिभोजनकथा          | भारामल                                 | (हि०) | २३८       | रुक्मणिकृष्णजी को रासो                                | तिपरदास          | (हि०)    | ७७०       |
| रात्रिभोजनकथा          | —                                      | (हि०) | २२८       | रुक्मणिविधानकथा                                       | छत्रसेन (सं०)    | २४४, २४६ |           |
| रात्रिभाजनचोपई         | —                                      | (हि०) | २३६       | रुक्मणिविवाह  | वल्लभ            | (हि०)    | ७८७       |
| रात्रिभाजनन्यायवर्णन   | —                                      | (हि०) | ८४        | रुक्मिणीतिवाहकेलि                                     | पृथ्वीराज राठीड  | (हि०)    | ३६४       |
| राधाजनमोक्षव           | —                                      | (हि०) | ८४        | रुक्मिणीविधानकथा                                      | —                | (सं०)    | ७३३       |
| राधिकानाममाना          | —                                      | (हि०) | ४१४       | रुक्मिणीगिरिपूजा                                      | भ० विश्वभूषण     | (सं०)    | ७३३       |
| रामकवच                 | विश्वामित्र                            | (हि०) | ६६७       | रुद्रमान  | —                | (सं०)    | २६१       |
| रामकृष्णकवच            | दैवज्ञ प० सूर्य                        | (सं०) | १६४       | रूपमञ्जरीनाममाला                                      | गोपालदास         | (सं०)    | २७६       |
| रामचन्द्रचरित्र        | बधीचन्द्र                              | (हि०) | ६६१       | रूमाला  | —                | (सं०)    | २६२       |
| रामचन्द्रस्तवन         | —                                      | (सं०) | ४१४       | रुक्मिणीचरित्र  | —                | (सं०)    | २३६       |
| रामचन्द्रिका           | केशवदास                                | (हि०) | १६४       | रुक्मिणीध्यानवर्णन                                    | —                | (सं०)    | ११७       |
| रामचरित्र [कवित्वजध]   | मुलसीदास                               | (हि०) | ६६७       | रेखाचित्र [आदिनाथ चन्द्रप्रभ बद्धमान एवं पार्वतीनाथ]— |                  |          |           |
| रामबत्तीसी             | जगनकवि                                 | (हि०) | ४१४       |   |                  |          | ७८३       |
| रामविनोद               | रामचन्द्र                              | (हि०) | ३०२       | रेखाचित्र   | —                |          | ७६३       |
| रामविबोद               | रामविनोद                               | (हि०) | ६४०       | रेवानदीपूजा [म्राहूडकोटिपूजा]                         | विश्वभूषण        | (सं०)    | ५३२       |
| रामविनोद               | —                                      | (हि०) | ६०३       | रैदप्रत   | गंगाराम          | (सं०)    | ५३२       |
| रामस्तवन               | —                                      | (सं०) | ४१४       | रैदप्रतकथा  | देवेन्द्रक्रीष्ण | (सं०)    | २३६       |
| रामस्तोत्र             | —                                      | (सं०) | ४१४       | रैदप्रतकथा  | —                | (सं०)    | २३६       |
| रामस्तोत्रकवच          | —                                      | (सं०) | ६०१       | रैदप्रतकथा  | म० जिनदाम        | (हि०)    | २४६       |

| ग्रन्थनाम                      | लेखक             | भाषा    | पृष्ठ सं०                          | ग्रन्थनाम                  | लेखक             | भाषा        | पृष्ठ सं०          |
|--------------------------------|------------------|---------|------------------------------------|----------------------------|------------------|-------------|--------------------|
| रोहिणीचरित्र                   | देवनन्द          | (प्रप०) | २४३                                | लम्बचन्द्रिकाभाषा          | —                | (सं०)       | २६१                |
| रोहिणीविधान                    | मुनि गुणभद्र     | (प्रप०) | ६२६                                | लम्बशास्त्र                | बद्धभानसूरि      | (सं०)       | २६१                |
| रोहिणीविधानकथा                 | —                | (सं०)   | २४०                                | लघुप्रनन्तप्रत्यूजा        | —                | (सं०)       | ५३३                |
| रोहिणीविधानकथा                 | देवनन्द          | (प्रप०) | २४३                                | लघुप्रभिवेकविधान           | —                | (सं०)       | ५३३                |
| रोहिणीविधानकथा                 | बसीदास           | हि०)    | ७८१                                | लघुकल्याण                  | —                | (सं०)       | ५१४, ५३३           |
| रोहिणीप्रतकथा                  | आ० भानुकीर्त्ति  | (सं०)   | २३६                                | लघुकल्याणपाठ               | —                | (हि०)       | ७४४                |
| रोहिणीप्रतकथा                  | ललितकीर्त्ति     | (सं०)   | ६४५                                | लघुवाणक्यराजनीति           | चाणिक्य          | (सं०)       | ३३६<br>७१२, ७२०    |
| रोहिणीप्रतकथा                  | —                | (प्रप०) | २४५                                | लघुजातक                    | भट्टोत्पल        | (सं०)       | २६१                |
| रोहिणीप्रतकथा                  | ब्र० ज्ञानसागर   | (हि०)   | २२०                                | लघुजिनसहस्रनाम             | —                | (सं०)       | ६०६                |
| रोहिणीप्रतकथा                  | —                | (हि०)   | २३६                                | लघुतत्त्वार्थसूत्र         | —                | (सं०)       | ७४०, ७८२           |
| रोहिणीप्रतकथा                  | —                | (हि०)   | ७६४                                | लघुनाममाला                 | हर्षकीर्त्तिसूरि | (सं०)       | २७६                |
| रोहिणीप्रतपूजा                 | केशवसेन कृष्णसेन | (सं०)   | ५१२, ५१६                           | लघुन्यासवृत्ति             | —                | (सं०)       | २६२                |
| रोहिणीप्रतपूजामंडल [चित्रसहित] | —                | (सं०)   | ५३२, ७२६                           | लघुप्रतिक्रमण              | —                | (प्रा०)     | ७१७                |
| रोहिणीप्रतमण्डलविधान           | —                | —       | —                                  | लघुप्रतिक्रमण              | —                | (प्रा० सं०) | ५७२                |
| रोहिणीप्रतपूजा                 | —                | (हि०)   | ६३८                                | लघुमङ्गल                   | रूपचन्द्र        | (हि०)       | ६२४                |
| रोहिणीप्रतमण्डल [चित्र]        | —                | —       | ५२५                                | लघुमङ्गल                   | —                | (हि०)       | ७१६                |
| रोहिणीप्रतौद्यापन              | —                | (सं०)   | ५३३                                | लघुवाचरी                   | —                | (सं०)       | ६७२                |
| रोहिणीप्रतौद्यापन              | —                | (हि०)   | ५४०                                | लघुरविविधप्रतकथा           | ब्र० ज्ञानसागर   | (हि०)       | २४४                |
| ल                              | —                | —       | —                                  | लघुरूपसंगवृत्ति            | —                | (सं०)       | २६३                |
| लंघनपर्यायनिर्याय              | —                | (सं०)   | ३०३                                | लघुशातिकाविधान             | —                | (सं०)       | ५३२                |
| लक्ष्मणोत्सव                   | श्रीलक्ष्मण      | (सं०)   | ३०३                                | लघुशातिकाग्रन्थ            | —                | (सं०)       | ४२४                |
| लक्ष्मीमहास्तोत्र              | पद्मनन्द         | (सं०)   | ६३७                                | लघुशातिका [मण्डनचित्र]     | —                | —           | ५२५                |
| लक्ष्मीस्तोत्र                 | पद्मप्रभदेव      | (सं०)   | ४१४                                | लघुशातिकास्तोत्र           | —                | (सं०)       | ४१४, ४२३           |
|                                |                  |         | ४२३, ४२६, ४३२, ५६६, ५७२, ५७४, ५६६, | लघुश्रेयविधि [श्रेयोविधान] | अभयनन्द          | (सं०)       | ५३३                |
|                                |                  |         | ६४४, ६४८, ६६३, ६६५, ६७०, ७०३, ७१६  | लघुसहस्रनाम                | —                | (सं०)       | ३६२                |
| लक्ष्मीस्तोत्र                 | —                | (सं०)   | ४१४                                |                            |                  |             | ६३७, ६६०           |
|                                |                  |         | ४२४, ६४०, ६४५, ६४०                 | लघुसामायिक [पाठ]           | —                | (सं०)       | ८४                 |
| लक्ष्मीस्तोत्र                 | द्यानतराय        | (हि०)   | ५६२                                |                            |                  |             | ३६२, ४०५, ४२६, ५२६ |
| लम्बचन्द्रिकाभाषा              | स्वामीराम सोगानी | (हि०)   | ७५१                                | लघुसामायिक                 | —                | (सं० हि०)   | ८४                 |

| ग्रन्थनाम                       | लेखक             | भाषा       | पृष्ठ सं० |
|---------------------------------|------------------|------------|-----------|
| लघुसामायिक                      | —                | (हि०)      | ७१८       |
| लघुसामायिकभाषा                  | महाचन्द्र        | (हि०)      | ७१६       |
| लघुसारम्बत अनुभूति स्वरूपाचार्य | (सं०)            | २६३        |           |
| लघुमिद्गतकोमुदी                 | वरदराज           | (सं०)      | २६३       |
| लघुसद्धान्तकोमुभ                | —                | (सं०)      | २६३       |
| लघुस्तोत्र                      | —                | (सं०)      | ४१५       |
| लघुम्नपन                        | —                | (सं०)      | ५३३       |
| लघुम्नपनटीका                    | भावशर्मा         | (सं०)      | ५३३       |
| लघुम्नपनवर्धधि                  | —                | (सं०)      | ६५८       |
| लघुस्वयम्नस्तोत्र               | समन्तभद्र        | (सं०)      | ५१५       |
| लघुस्वयम्नस्तोत्र               | —                | (सं०)      | ५३७, ५६४  |
| लघुशब्देन्दुशेखर                | —                | (सं०)      | २६३       |
| लब्धिविधानकथा                   | प० अश्रदेव       | (सं०)      | २३६       |
| लब्धिविधानकथा                   | खुरालचन्द्र      | (हि०)      | २४४       |
| लब्धिविधानचौपदी                 | भीषमकवि          | (हि०)      | ७७८       |
| लब्धिविधानपूजा                  | अश्रदेव          | (सं०)      | ५१७       |
| लब्धिविधानपूजा                  | हर्षकीर्ति       | (सं०)      | ३३३       |
| लब्धिविधानपूजा                  | —                | (सं०)      | ५१३       |
|                                 |                  |            | ५३४, ५४०  |
| लब्धिविधानपूजा                  | ज्ञानचन्द्र      | (हि०)      | ५३४       |
| लब्धिविधानपूजा                  | —                | (हि०)      | ५३४       |
| लब्धिविधानमण्डल [चित्र]         | —                |            | ५२५       |
| लब्धिविधानउद्यापनपूजा           | —                | (सं०)      | ५३५       |
| लब्धिविधानोद्यापन               | —                | (सं०)      | ५४०       |
| लब्धिविधानव्रतोद्यापनपूजा       | —                | (सं०)      | ५३४       |
| लब्धिसार                        | नेमिचन्द्राचार्य | (प्रा०)    | ४३, ७३६   |
| लब्धिसारटीका                    | —                | (सं०)      | ४३        |
| लब्धिसारभाषा                    | पं० टोडरमल       | (हि०)      | ४३        |
| लब्धिसारक्षपणासारभाषा           | पं० टोडरमल       | (हि०-गद्य) | ४३        |
| लब्धिसारक्षपणासारसंहृष्टि       | पं० टोडरमल       | (हि०)      | ४३        |

| ग्रन्थनाम                  | लेखक           | भाषा    | पृष्ठ सं० |
|----------------------------|----------------|---------|-----------|
| लहरियाजी की पूजा           | —              | (हि०)   | ७५२       |
| लहुरी                      | नाथू           | (हि०)   | ६६३       |
| लहुरी नेमोश्ररकी           | विश्वभूषण      | (हि०)   | ७२४       |
| लाटीसंहिता                 | राजमल          | (सं०)   | ८४        |
| लावणी मांगोतुं गौकी        | हर्षकीर्ति     | (हि०)   | ६६७       |
| लिंगराहूड                  | आ० कुंदकुंद    | (प्रा०) | ११७       |
| लिंगपुराण                  | —              | (सं०)   | १५३       |
| लिंगानुशासन                | हेमचन्द्र      | (सं०)   | २७७       |
| लिंगानुशासन                | —              | (सं०)   | २७६       |
| लीलावती                    | भास्कराचार्य   | (सं०)   | ३६६       |
| लीलावतीभाषा                | व्यास मथुरादास | (हि०)   | ३६६       |
| लुहरी                      | नेमिचन्द्र     | (हि०)   | ६२२       |
| लुहरी                      | सभाचन्द्र      | (हि०)   | ७२४       |
| लोकप्रत्याख्यानधर्मलक्ष्या | —              | (सं०)   | २४०       |
| लोकवर्णन                   | —              | (हि०)   | ६२७, ७६३  |

व

|                               |                    |         |               |
|-------------------------------|--------------------|---------|---------------|
| वक्ता श्रोता लक्षण            | —                  | (सं०)   | ३५६           |
| वक्ता श्रोता लक्षण            | —                  | (हि०)   | ३५६           |
| वज्रदन्तचक्रवर्ति का वारहमामा | —                  | (हि०)   | ७२७           |
| वज्रनाभिक्रवन्ति की भावना     | भूधरदास            | (हि०)   | ८५            |
|                               |                    |         | ४४६, ६०४, ७३६ |
| वज्ररञ्जरस्तोत्र              | —                  | (सं०)   | ४१५, ४३२      |
| वनस्पतिसत्तरी                 | मुनिचन्द्रमूरि     | (प्रा०) | ८५            |
| वन्देतानकीजयमाल               | —                  | (सं०)   | ५७२           |
|                               |                    |         | ६६५, ६५५      |
| वरागचरित्र                    | भर्तृहरि           | (सं०)   | १६५           |
| वरागचरित्र                    | पं० बद्धमानदेव     | (सं०)   | १६५           |
| वर्द्धमानकथा                  | जयमित्रहल          | (अप०)   | १६६           |
| वर्द्धमानकाव्य                | श्रीमुनि पद्मनन्दि | (सं०)   | १६५           |



| ग्रन्थनाम              | लेखक              | भाषा    | पृष्ठ सं०       | ग्रन्थनाम                      | लेखक           | भाषा  | पृष्ठ सं०            |
|------------------------|-------------------|---------|-----------------|--------------------------------|----------------|-------|----------------------|
| वर्द्धमानचरित्र        | पं० केशरीसिंह     | (हि०)   | १५४, १६६        | विष्णुधरकी जयमाल               | —              | (हि०) | ६३८                  |
| वर्धमानद्वारिषिका      | सिद्धसेन दिवाकर   | (सं०)   | ४१५             | विज्ञानित्त                    | हंमराज         | (हि०) | ३७५                  |
| वर्द्धमानपुराण         | सकलकीर्ति         | (सं०)   | १५३             | विदग्धमुल्लमठन                 | धर्मदास        | (सं०) | १६६                  |
| वर्द्धमानविद्याकल्प    | सिंहतिलक          | (सं०)   | ३५१             | विदग्धमुल्लमठनटीका             | विनयाज्ञ       | (सं०) | १६७                  |
| वर्द्धमानस्तोत्र       | आ० गुणभद्र        | (सं०)   | ४१५<br>४२४, ४२६ | विद्वग्जनबोधक                  | —              | (सं०) | ८६, ४८१              |
| वर्द्धमानस्तोत्र       | —                 | (सं०)   | ६१५, ६५१        | विद्वग्जनबोधकभाषा              | सघी पन्नालाल   | (हि०) | ८६                   |
| वर्धबोध                | —                 | (सं०)   | २६१             | विद्वग्जनबोधकटीका              | —              | (हि०) | ८६                   |
| वसुनन्दि श्रावकाचार    | आ० वसुनन्दि       | (प्रा०) | ८५              | विद्यमानबौमतीर्थद्वारपूजा      | नरेन्द्रकीर्ति | (सं०) | ५३५, ६५५             |
| वसुनन्दिश्रावकाचार     | पन्नालाल          | (हि०)   | ८५              | विद्यमानबौमतीर्थद्वारपूजा      | जौहरीलाल विलास | (हि०) | ५३५                  |
| वसुधारागठ              | —                 | (सं०)   | ४१५             | विद्यमानबौमतीर्थद्वारकी पूजा   | —              | (हि०) | ५११                  |
| वसुधारास्तोत्र         | —                 | (सं०)   | ४१५, ४२३        | विद्यमानबौमतीर्थद्वारस्वतन्त्र | मुनि दीप       | (हि०) | ६१५                  |
| वाग्भट्टालङ्कार        | वाग्भट्ट          | (सं०)   | ३१०             | विद्यानुशासन                   | —              | (सं०) | ३५२                  |
| वाग्भट्टालङ्कारटीका    | वादिाराज          | (सं०)   | ३१३             | विनतिया                        | —              | (हि०) | ६८५                  |
| वाग्भट्टालङ्कारटीका    | —                 | (सं०)   | ३१३             | विनती                          | अजैराज         | (हि०) | ७७६, ७८३             |
| वाजिदमी के अर्द्धिल    | वाजिद             | (हि०)   | ६१३             | विनती                          | कनककीर्ति      | (हि०) | ६०१                  |
| वाणी अष्टक व जयमाल     | द्यानतराय         | (हि०)   | ७७७             | विनती                          | कुशलविजय       | (हि०) | ७८२                  |
| वारियेगमुनिकथा         | जोधराज गोदीका     | (हि०)   | २६०             | विनती                          | ब्र० जिनदास    | (हि०) | ४२६, ७५७             |
| वानामग्रह              | —                 | (हि०)   | ८६              | विनती                          | वनारमीदाम      | (हि०) | ६१५<br>६८२, ६८३, ६६४ |
| वानुपुत्र्यपुराण       | —                 | (हि०)   | ११५             | विनती                          | रूपचन्द्र      | (हि०) | ७६५                  |
| वानुपुत्रा             | —                 | (सं०)   | ५०५             | विनती                          | ममयसुन्दर      | (हि०) | ७३२                  |
| वास्तुपूजाविधि         | —                 | (सं०)   | ५१८             | विनती                          | —              | (हि०) | ७६६                  |
| वास्तुविन्यास          | —                 | (सं०)   | ३५४             | विनती गुरुघोकी                 | भूपरदाम        | (हि०) | ५११                  |
| विक्रमचरित्र           | वाचनाचार्य अभयमोम | (हि०)   | १६६             | विनती चौपडकी                   | मान            | (हि०) | ७८१                  |
| विक्रमचौबोली चौपड      | अभयचन्द्रमूरि     | (हि०)   | २४०             | विनतीराश्टम्बुति               | जितचन्द्र      | (हि०) | ७००                  |
| विक्रमादित्यराजाकी कथा | —                 | (हि०)   | ७१३             | विनतीमग्रह                     | ब्रह्मदेव      | (हि०) | ४५१                  |
| विचारमाथा              | —                 | (प्रा०) | ७००             | विनतीमंग्रह                    | देवाब्रह्म     | (हि०) | ६६५, ७८०             |
| विजयवृत्तारमग्रहाय     | ऋषि लालचन्द्र     | (हि०)   | ४५०             | विनतीसंग्रह                    | —              | (हि०) | ४५०<br>७१०, ७४७      |
| विजयतीतिछन्द           | शुभचन्द्र         | (हि०)   | ३८६             | विनोदसतसई                      | —              | (हि०) | ६८०                  |
| विजयवन्दविधान          | —                 | (सं०)   | ३५२             |                                |                |       |                      |

| ग्रन्थनाम                     | लेखक          | भाषा    | पृष्ठ सं०  | ग्रन्थनाम                      | लेखक               | भाषा    | पृष्ठ सं० |
|-------------------------------|---------------|---------|--|--------------------------------|--------------------|---------|-----------|
| विषाकसूत्र                    | —             | (प्रा०) | ४३   | विष्णुकुमारमुनिकथा             | श्रुतस्मागर        | (सं०)   | २४०       |
| विमलनाथपुराण                  | म० कृष्णदास   | (सं०)   | १५५  | विष्णुकुमारमुनिकथा             | —                  | (सं०)   | २४०       |
| विमानशुद्धि                   | चन्द्रकीर्ति  | (सं०)   | ५३५  | विष्णुकुमारमुनिपूजा            | बाबूचाल            | (हि०)   | ५३६       |
| विमानशुद्धिपूजा               | —             | (सं०)   | ५३६  | विष्णुपञ्जररक्षा               | —                  | (सं०)   | ७७०       |
| विमानशुद्धिशानिक [मण्डलचित्र] | —             | —       | ५२५  | विष्णुमहत्त्वनाम               | —                  | (सं०)   | ६७४       |
| विरदावली                      | —             | (सं०)   | ६५८  | विशेषतन्त्रात्रिभङ्गी          | श्री० नेमिचन्द्र   | (प्रा०) | ४३        |
|                               |               |         | ७७२, ७८५   | विश्वप्रकाश                    | वैद्यराज महेश्वर   | (सं०)   | ४३        |
| विरहमाननीर्यद्वारत्रकडी       | —             | (हि०)   | ७५९  | विश्वनीचन                      | धरसेन              | (सं०)   | २७७       |
| * विरहमानपूजा                 | —             | (सं०)   | ६०५  | विश्वनीचनकोशकी शब्दानुक्रमणिका | —                  | (सं०)   | २७७       |
| विरहमञ्जरी                    | नन्ददास       | (सं०)   | ६४७  | विहारकाव्य                     | कालिदास            | (सं०)   | १९७       |
| विरहमञ्जरी                    | —             | (हि०)   | ५०१  | वीतरागगाथा                     | —                  | (प्रा०) | ६३३       |
| विरहनी का वर्णन               | —             | (हि०)   | ७७०  | वीतरागस्तोत्र                  | पद्मनन्दि          | (सं०)   | ४२४       |
| विवाहप्रकरण                   | —             | (सं०)   | ५३६  |                                | ४३१, ५७४, ६३४, ७३७ |         |           |
| विवाहपद्धति                   | —             | (सं०)   | ५३६  | वीतरागस्तोत्र                  | श्री० हेमचन्द्र    | (सं०)   | १३९, ४१६  |
| विवाहविध                      | —             | (सं०)   | ५३६  | वीतरागस्तोत्र                  | —                  | (सं०)   | ७५८       |
| विवाहशोभन                     | —             | (सं०)   | २९१  | वीरचरित्र [अनुप्रेक्षा भाग]    | रङ्गधू             | (प्रा०) | ६४२       |
| विवेकजडों                     | —             | (सं०)   | २९१  | वीरछलीसी                       | —                  | (सं०)   | ४१६       |
| विवेकजडों                     | जिनदास        | (हि०)   | ७२२, ७५०   | वीरजिणदगीत                     | भगौतीदास           | (हि०)   | ५६९       |
| विवेकबिनाम                    | —             | (हि०)   | ८६   | वीरजिणदकी संघावलि              | —                  |         |           |
| विषहरनविधि                    | सोनोपकवि      | (हि०)   | ३०३  | मेघकुमारगीत                    | पूनी               | (हि०)   | ७७५       |
| विषापहारस्तोत्र               | धनञ्जय        | (सं०)   | ४०२  | वीरदाशवर्षातका                 | हेमचन्द्रसूरि      | (सं०)   | १३९       |
|                               |               |         | ४१५, ४२३, ४२५, ४२८, ४३२, ५६५, ५७२, ५८५, ६०५, ६३७, ६४९, ७८८ | वीरनाथस्तवन                    | —                  | (सं०)   | ४२६       |
| विषापहारस्तोत्रटीका           | नागचन्द्रसूरि | (सं०)   | ४१६  | वीरभक्ति                       | पद्मलाल चौधरी      | (हि०)   | ४५०       |
| विषापहारस्तोत्रभाषा           | अचलकीर्ति     | (हि०)   | ४१६  | वीरभक्ति तथा निर्वासभक्ति      | —                  | (हि०)   | ४५१       |
|                               |               |         | ६०४, ६५०, ६७०  | वीररस के कवित                  | —                  | (हि०)   | ७४६       |
| विषाहारभाषा                   | पद्मलाल       | (हि०)   | ४१६  | वीरस्तवन                       | —                  | (प्रा०) | ४१६       |
| विषापहारस्तोत्रभाषा           | —             | (हि०)   | ४३०  | बृजलालकी बारहभावना             | —                  | (हि०)   | ६८५       |
|                               |               |         | ७१६, ७४७   | वृत्तरत्नाकर                   | कालिदास            | (सं०)   | ३१४       |
| विष्णुकुमारपूजा               | —             | (हि०)   | ६८९  | वृत्तरत्नाकर                   | भट्ट केदार         | (सं०)   | ३१४       |
|                               |               |         |  | वृत्तरत्नाकर                   | —                  | (सं०)   | ३१४       |

| ग्रन्थनाम                                  | लेखक          | भाषा    | पृष्ठ सं०               | ग्रन्थनाम            | लेखक            | भाषा  | पृष्ठ सं० |
|--|---------------|---------|-------------------------|----------------------|-----------------|-------|-----------|
| वृत्तरत्नाकरछन्दटोका                       | समयमुन्दरगणि  | (सं०)   | ३१४                     | वैद्यबल्लभ           | —               | (सं०) | ३०४, ७३८  |
| वृत्तरत्नाकरटीका                           | सुलहणकवि      | (सं०)   | ३१४                     | वैद्यविनोद           | भट्टशङ्कर       | (सं०) | ३०५       |
| वृन्दसतई                                   | वृन्दकवि      | (हि०)   | ३३६                     | वैद्यविनोद           | —               | (हि०) | ३०५       |
|  |               |         | ६७५, ७४५, ७५१, ७८२, ७९९ | वैद्यसार             | —               | (सं०) | ७३८       |
| वृहदकलिकुण्डपूजा                           | —             | (सं०)   | ६३६                     | वैद्यामुन            | माणिक्यभट्ट     | (ग०)  | ३०५       |
| वृहदकल्पाण                                 | —             | (हि०)   | ५७१                     | वैद्याकरगभूषण        | कौहणभट्ट        | (सं०) | २६३       |
| वृहदपुरावलीशास्त्रिमण्डनपूजा [चौसठहडिपूजा] | स्वरूपचन्द    | (हि०)   | ५४१                     | वैद्याकरगभूषण        | —               | (सं०) | २६३       |
| वृहदधंटाकराजकर                             | कवि भोगीलाल   | (हि०)   | ७२६                     | वैराग्यगीत [उदरगांत] | छीहल            | (हि०) | ६७७       |
| वृहदचारणिक्यनोतिनास्त्रभाषा                | मिश्ररामराय   | (हि०)   | ३३६                     | वैराग्यगीत           | महमत            | (हि०) | ४१६       |
| वृहदचारणिक्यराजनीति                        | चाणक्य        | (सं०)   | ७१२                     | वैराग्यपञ्चांश       | भगवतीदास        | (हि०) | ६८५       |
| वृहदजगतक                                   | भट्टोत्पल     | (सं०)   | २९१                     | वैराग्यशतक           | भट्टहरि         | (सं०) | ११७       |
| वृहदजनवकार                                 | —             | (सं०)   | ४३१                     | व्याकरण              | —               | (सं०) | २६४       |
| वृहदप्रतिक्रमण                             | —             | (सं०)   | ८६, ८७                  | व्याकरणटीका          | —               | (सं०) | २६४       |
| वृहदप्रतिक्रमण                             | —             | (प्रा०) | ८६                      | व्याकरणभाषाटीका      | —               | (सं०) | २६४       |
| वृहदपोषणकारणपूजा                           | —             | (सं०)   | ५०९, ७३०                | व्रतकथाकोश           | प० दामोदर       | (सं०) | २४१       |
| वृहदगानिस्तोत्र                            | —             | (सं०)   | ४२३                     | व्रतकथाकोश           | देवेन्द्रकीर्ति | (सं०) | २४२       |
| वृहदग्नपनविधि                              | —             | (सं०)   | ६५८                     | व्रतकथाकोश           | श्रुतसागर       | (सं०) | २४१       |
| वृहदस्वयंभूस्तोत्र                         | समन्तभट्ट     | (सं०)   | ५७२                     | व्रतकथाकोश           | मकलकीर्ति       | (सं०) | २४२       |
|  |               |         | ६२८, ६९१                | व्रतकथाकोश           | —               | (सं०) | २४४       |
| वृहदग्नविचार                               | —             | (सं०)   | ६९१                     | व्रतकथाकोश           | —               | (सं०) | २४२       |
| वृहदग्नविधान                               | —             | (सं०)   | ५६०                     | व्रतकथाकोश           | सुशालचन्द       | (हि०) | २४४       |
| वृहदसिद्धचक्र [मण्डनविचर]                  | —             |         | ५२४                     | व्रतकथाकोश           | —               | (हि०) | २४४       |
| वैदरभो विवाह                               | पेमराज        | (हि०)   | २४०                     | व्रतकथासंग्रह        | —               | (सं०) | २४६       |
| वैद्यकसार                                  | —             | (सं०)   | ३०८                     | व्रतकथासंग्रह        | —               | (सं०) | २४५       |
| वैद्यकमारोद्धार                            | हर्षकीर्तिमूर | (सं०)   | ३०५                     | व्रतकथासंग्रह        | ब्र० महत्तिसागर | (हि०) | २४६       |
| वैद्यजीवन                                  | लोलिम्बरज     | (सं०)   | ३०३, ७१५                | व्रतकथासंग्रह        | —               | (हि०) | २४७       |
| वैद्यजीवनग्रन्थ                            | —             | (सं०)   | ३०३                     | व्रतजयमाला           | सुमत्तिसागर     | (हि०) | ७९५       |
| वैद्यजीवनटोका                              | रुद्रभट्ट     | (सं०)   | ३०४                     | व्रतनाम              | —               | (हि०) | ५३६       |
| वैद्यमनोत्सव                               | नयनगुप्त      | (हि०)   | ३०४                     | व्रतनामावली          | —               | (सं०) | ८७        |

| ग्रन्थनाम                           | लेखक               | भाषा    | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम          | लेखक               | भाषा        | पृष्ठ सं०     |
|-------------------------------------|--------------------|---------|-----------|--------------------|--------------------|-------------|---------------|
| ग्रन्थनिर्गम                        | सोहन               | (स०)    | ५३६       | पट्टाहट्ट [प्रायत] | आ० कुन्दवृन्द      | (प्रा०)     | ११७, ७८८      |
| वतबुजामयह                           | —                  | (स०)    | ५३७       | पट्टाहट्ट इटीका    | श्रुतसागर          | (सं०)       | ११६           |
| ग्रन्थविधान                         | —                  | (हि०)   | ५३८       | पट्टाहट्ट इटीका    | —                  | (स०)        | ११८           |
| ग्रन्थविधानरामो                     | दौलतराम रथो        | (हि०)   | ६३८, ७७६  | पट्टमनचरवा         | —                  | (सं०)       | ७५७           |
| ग्रन्थविवरण                         | —                  | (स०)    | ५३८       | पट्टमनचरवा         | —                  | (सं०)       | ६८३           |
| ग्रन्थविवरण                         | —                  | (हि०)   | ५३८       | पट्टमनचरवा         | —                  | (स०)        | ७४८           |
| ग्रन्थवार                           | आ० शिवकोटि         | (स०)    | ५३८       | पट्टमनचरवा         | —                  | (हि०)       | ६४            |
| ग्रन्थवार                           | —                  | (स०)    | ८७        | पट्टमनचरवा         | हर्षकीर्ति         | (हि०)       | ७७५           |
| ग्रन्थव्याख्या                      | —                  | (हि०)   | ८७        | पट्टमनचरवा         | माह लोहट           | (हि०)       | ३६६           |
| ग्रन्थोद्घाटन [संस्कृतवाच्य]        | —                  | (स०)    | ८७        | पट्टमनचरवा         | मदरन्द             | (हि०)       | ८८            |
| ग्रन्थोद्घाटनसूत्र                  | —                  | (स०)    | ५३८       | पट्टमनचरवा         | —                  | (सं०)       | १३६           |
| ग्रन्थोद्घाटनसूत्र                  | —                  | (स०)    | ८७        | पट्टमनचरवा         | —                  | (सं०)       | १३६           |
| ग्रन्थोद्घाटनसूत्र                  | —                  | (हि०)   | ८७        | पट्टमनचरवा         | हरिभद्रमूर         | (सं०)       | १३६           |
| ग्रन्थोद्घाटनसूत्र                  | —                  | (स०)    | ७२३       | पट्टमनचरवा         | —                  | (सं०)       | ११०           |
| ग्रन्थोद्घाटनसूत्र                  | —                  | (हि०)   | ६५५       | पट्टमनचरवा         | गरुडमूर            | (सं०)       | १३६           |
| ग्रन्थोद्घाटनसूत्र                  | —                  | (हि०)   | ८७        | पट्टमनचरवा         | —                  | (स०)        | ७२७           |
| ग्रन्थोद्घाटनसूत्र                  | —                  | (हि०)   | ६०३       | पट्टमनचरवा         | —                  | (सं०)       | ८८            |
| <b>प</b>                            |                    |         |           | पद्मवतिवैशंपयनूना  | विश्वसेन           | (स०)        | ५१६, ५४१      |
| पट्टावपयक [नधु सामाधिक]             | महाचन्द्र          | (हि०)   | ८७        | पट्टावपयक टण्डगु   | भक्तिलाल           | (स०)        | ३३६           |
| पट्टावपयकविधान                      | पद्मालाल           | (हि०)   | ८७        | पट्टावपयक टण्डगु   | राजहोषाध्याय       | (स०)        | ४४            |
| पट्टावपयकविधान                      | जनराज              | (हि०)   | ६५६       | पट्टावपयक टण्डगु   | —                  | (स०)        | ५४२           |
| पट्टावपयकविधान                      | —                  | (स०)    | ३८२       | पट्टावपयक टण्डगु   | लखिनकीर्ति         | (सं०)       | ६०५           |
| पट्टावपयकविधान [संस्कृतमात्रसमाप्त] | —                  | —       | —         | पट्टावपयक टण्डगु   | —                  | (प्रा०)     | ५४१           |
| पट्टावपयकविधान                      | महाकवि श्रमरकीर्ति | (प्रा०) | ८८        | पट्टावपयक टण्डगु   | —                  | (प्रा० सं०) | ५८२           |
| पट्टावपयकविधान                      | पांडे लालचन्द्र    | (हि०)   | ८८        | पट्टावपयक टण्डगु   | रङ्गभू             | (प्रा०)     | ५१७, ५४२      |
| पट्टावपयकविधान                      | बराहमिह            | (सं०)   | २६२       | पट्टावपयक टण्डगु   | —                  | (सं०)       | ५८२           |
| पट्टावपयकविधान                      | —                  | (हि०)   | ६५६       | पट्टावपयक टण्डगु   | —                  | (हि० सं०)   | ५४२           |
| पट्टावपयकविधान                      | भट्टोत्पल          | (सं०)   | २६२       | पट्टावपयक टण्डगु   | —                  | —           | —             |
| पट्टावपयकविधान                      | —                  | (सं०)   | ४१७       | पट्टावपयक टण्डगु   | [पट्टावपयक टण्डगु] | —           | —             |
| पट्टावपयकविधान                      | सुधजन              | (हि०)   | ४१६       | पट्टावपयक टण्डगु   | केशवसेन            | (स०)        | ५३६, ५४२, ६७६ |
| पट्टावपयकविधान                      | —                  | —       | —         | पट्टावपयक टण्डगु   | श्रुतसागर          | (सं०)       | ५१०           |

| ग्रन्थनाम                | लेखक                     | भाषा                               | पृष्ठ सं० |
|--------------------------|--------------------------|------------------------------------|-----------|
| षोडशकारणपूजा             | [षोडशकारणप्रतीद्यानपूजा] |                                    |           |
| सुमनसिंसागर              | (सं०)                    | ५१७, ५४३, ५५७                      |           |
| षोडशकारणपूजा             | —                        | (सं०)                              | ५१५       |
|                          |                          | ५३७, ५४२, ५४३, ५६६, ५७४, ५६४, ५८६. |           |
|                          |                          | ६०७, ६४६, ६५८, ७६३                 |           |
| षोडशकारणपूजा             | सुरशालचन्द्र             | (हि०)                              | ५१६       |
| षोडशकारणपूजा             | द्यानतराय                | (हि०)                              | ७०५       |
| षोडशकारणभावना            | —                        | (प्रा०)                            | ८६        |
| षोडशकारणभावना            | पं० सदासुख               | (हि०ग०)                            | ८८        |
| षोडशकारणभावना            | —                        | (हि०)                              | ८८        |
| षोडशकारणभावना            | जयमाल नथमल               | (हि०)                              | ८८        |
| षोडशकारणभावनावर्णनवृत्ति | पं० शिवजीलाल             | (हि०)                              | ८८        |
| षोडशकारणविधानकथा         | पं० अश्रुदेव             | (सं०)                              | २२०       |
|                          |                          | २४२, २४५, २३७                      |           |
| षोडशकारणविधानकथा         | मदनकीर्ति                | (सं०)                              | ५१४       |
| षोडशकारणप्रनकथा          | सुरशालचन्द्र             | (हि०)                              | २४८       |
| षोडशकारणप्रनकथा          | —                        | (गु०ग०)                            | २४७       |
| षोडशकारणप्रतीद्यानपूजा   | राजकीर्ति                | (सं०)                              | ५४३       |

## श

|                     |               |       |          |
|---------------------|---------------|-------|----------|
| शत्रुघ्नचरितप्रबन्ध | समयसुन्दरगाथा | (सं०) | १६७      |
| शत्रुघ्नविचार       | —             | (सं०) | २६२      |
| शत्रुघ्नशास्त्र     | —             | (हि०) | ६०७      |
| शत्रुघ्नावली        | गर्ग          | (सं०) | २६२      |
| शत्रुघ्नावली        | —             | (सं०) | २६२, ६०३ |
| शत्रुघ्नावली        | अथजद          | (हि०) | २६२      |
| शत्रुघ्नावली        | —             | (हि०) | २६३, ६४३ |
| शतभट्टतरी           | —             | (हि०) | ६८६      |
| शतक                 | —             | (सं०) | २७७      |
| शत्रुघ्नयगिरिपूजा   | भ० विश्वभूषण  | (सं०) | ५१३, ५४३ |

| ग्रन्थनाम                | लेखक             | भाषा                              | पृष्ठ सं० |
|--------------------------|------------------|-----------------------------------|-----------|
| शत्रुघ्नयतीर्थरास        | [शत्रुघ्नयरास]   |                                   |           |
|                          | समयसुन्दर        | (सं०)                             | ६१७, ७००  |
| शत्रुघ्नयभाम             | राजसमुद्र        | (हि०)                             | ६१६       |
| शत्रुघ्नयस्तवन           | राजसमुद्र        | (हि०)                             | ६१६       |
| शनिश्वरदेवकी कथा         | सुरशालचन्द्र     | (हि०)                             | ६८३       |
| शनिश्वरदेवकी कथा         | [शनिश्वरकथा] —   | (हि०)                             | ६६२       |
|                          |                  | ६६४, ७११, ७१३, ७१४, ७२३, ७४३, ७८६ |           |
| शनिश्वरदृष्टिविचार       | —                | (सं०)                             | २६३       |
| शनिस्तोत्र               | —                | (सं०)                             | ४२४       |
| शन्दरप्रभेद व धानुप्रभेद | श्री महेश्वर     | (सं०)                             | २७७       |
| शन्दरतल                  | —                | (सं०)                             | २७७       |
| शन्दरकानवलि              | —                | (सं०)                             | २६४       |
| शन्दरकर्मिणी             | आ० वररुचि        | (सं०)                             | २६४       |
| शन्दरयोगा                | कवि नीलकण्ठ      | (सं०)                             | २६४       |
| शन्दरानुग्रामन           | हेमचन्द्राचार्य  | (सं०)                             | २६४       |
| शन्दरानुशासनवृत्ति       | हेमचन्द्राचार्य  | (सं०)                             | २६४       |
| शरदुत्सवदीपिका           | [मण्डनविधानपूजा] |                                   |           |
|                          | मिहिरानन्द       | (सं०)                             | ५४३       |
| शहरमार्गठ की पत्रा       | मुनि महीचन्द्र   | (हि०)                             | ५६२       |
| शाबटाप्यनव्याध रमण       | शाबटाथल          | (सं०)                             | २६५       |
| शान्ति कनाम              | —                | (हि०)                             | ६६८       |
| शान्तिकरस्तोत्र          | विद्यासिद्धि     | (प्रा०)                           | ६८१       |
| शान्तिकरस्तोत्र          | सुन्दरसूर्य      | (प्रा०)                           | ४२३       |
| शान्तिकविधान             | —                | (हि०)                             | ४४४       |
| शान्तिकविधान (बृहद्)     | —                | (सं०)                             | ५४४       |
| शान्तिकविधि              | अर्हदेव          | (सं०)                             | ५४४       |
| शान्तिकहोमविधि           | —                | (सं०)                             | ६४६       |
| शान्तिसौषण्यास्तुति      | —                | (सं०)                             | ४१७       |
| शांतिचक्रपूजा            | —                | (सं०)                             | ५१७       |
| शांतिचक्रमण्डल (चित्र)   |                  |                                   | ५२४       |

| ग्रन्थनाम                              | लेखक                    | भाषा  | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम                  | लेखक        | भाषा          | पृष्ठ सं० |
|--|-------------------------|-------|-----------|----------------------------|-------------|---------------|-----------|
| शांतिनाथचरित्र                         | अजितप्रभसूरि            | (सं०) | १६८       | शारदाष्टक                  | वनारधीदास   | (हि०)         | ७७६       |
| शांतिनाथचरित्र                         | भ० सकलकीर्ति            | (सं०) | १६८       | शारदाष्टक                  | —           | (हि०)         | १७०       |
| शांतिनाथपुराण                          | महाकवि अशम              | (सं०) | १५५       | शारदीनाममाला               | —           | (सं०)         | २७७       |
| शांतिनाथपुराण                          | सुशालचन्द्र             | (हि०) | १५५       | शार्ङ्गधरसंहिता            | शार्ङ्गधर   | (सं०)         | ३०५       |
| शांतिनाथपूजा                           | रामचन्द्र               | (हि०) | ५५५       | शार्ङ्गधरसंहिताटीका        | नादमल्ल     | (सं०)         | ३०६       |
| शांतिनाथपूजा                           | —                       | (सं०) | ५०६       | शालिभद्रचौवई               | जितसिंहसूरि | (हि०)         | ७००       |
| शांतिनाथस्तवन                          | —                       | (सं०) | ४१७       | शालिभद्रमहामुनिसम्भाय      | —           | (हि०)         | ६१६       |
| शांतिनाथस्तवन                          | गुणसागर                 | (हि०) | ७०२       | शालिभद्र चौवई              | मतिसागर     | (हि०)         | १६८, ७२६  |
| शांतिनाथस्तवन                          | अपि लालचंद्र            | (हि०) | ४१७       | शालिभद्रप्रधानीचौवई        | जितसिंहसूरि | (हि०)         | २५३       |
| शांतिनाथस्तोत्र                        | मुनि गुणभद्र            | (सं०) | ६१५       | शालिभद्रमहामुनिसम्भाय      | —           | (हि०)         | ६१६       |
| शांतिनाथस्तोत्र                        | गुणभद्र स्वामी          | (सं०) | ७२२       | शालिभद्रमन्त्राय           | —           | (हि०)         | ७३४       |
| शांतिनाथस्तोत्र                        | मुनिभद्र                | (सं०) | ४१७, ७१५  | शालिहोत्र                  | —           | (सं०)         | ७३०       |
| शांतिनाथस्तोत्र                        | —                       | (सं०) | ३८३       | शालिहोत्र [ अश्वविचिन्सा ] | —           | (सं०-हि०)     | ३०६       |
|  | ४०२, ४१८, ६६६, ६७३, ७४५ |       |           |                            |             |               |           |
| शांतिपाठ                               | —                       | (सं०) | ४१८       | शालिहोत्र [ अश्वविचिन्सा ] | —           | (सं०)         | ३०६       |
| ४२८, ५४५, ५६६, ६४०, ६६१, ६६७, ७०४, ७०५ |                         |       |           | शास्त्रमुद्रजयमान          | —           | (प्रा०)       | ५४५       |
| ७३३, ७५८                               |                         |       |           | शास्त्रजयमान               | ज्ञानभूषण   | (सं०)         | ४४५       |
| शांतिपाठ (बृहद्)                       | —                       | (सं०) | ५४५       | शास्त्रजयमान               | —           | (प्रा०)       | ५६५       |
| शांतिपाठ                               | शानतराय                 | (हि०) | ५१६       | शास्त्रपूजा                | —           | (सं०)         | ५३६       |
| शांतिपाठ                               | —                       | (हि०) | ६४५       |                            |             | ५६५, ५६५, ६५२ |           |
| शांतिपाठ                               | —                       | (हि०) | ५०६       | शास्त्रपूजा                | —           | (हि०)         | ५१६       |
| शांतिमंडलपूजा                          | —                       | (सं०) | ५०६       | शास्त्रप्रवचन प्रारंभ करने | —           | (सं०)         | ५४६       |
| शांतिरत्नसूची                          | —                       | (सं०) | ५४५       | को विधि                    | —           | (सं०)         | ५४६       |
| शांतिविधि                              | —                       | (सं०) | ५४०       | शास्त्रजीकामंडल [ चित्र ]  | —           |               | ५२५       |
| शांतिविधान                             | —                       | (सं०) | ४१८       | शासनदेवताचर्चविधान         | —           | (सं०)         | ५४६       |
| शाचार्यशांतिगाय त्रुजा                 | भगवानदास                | (हि०) | ४६१, ७८६  | शिक्षाचतुष्क               | नवलराम      | (हि०)         | ६६८       |
| शांतिस्तवन                             | द्वेषसूरि               | (सं०) | ४१६       | शिक्षरविलास                | रामचन्द्र   | (हि०)         | ६६३       |
| शांतिहोमविधान                          | आशाधर                   | (सं०) | ५४५       | शिक्षरविलासपूजा            | —           | (हि०)         | ५४६       |
| शारदाष्टक                              | —                       | (सं०) | ४२४       | शिक्षरविलासभाषा            | धनराज       | (हि०)         | ७६३       |

| ग्रन्थनाम               | लेखक               | भाषा    | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम            | लेखक           | भाषा        | पृष्ठ सं० |
|-------------------------|--------------------|---------|-----------|----------------------|----------------|-------------|-----------|
| शिलालेखसंग्रह           | —                  | (सं०)   | ३७५       | शृंगारकवित्त         | —              | (हि०)       | ६६६       |
| शिलोच्छकोश              | कवि सारस्वत        | (सं०)   | २७७       | शृंगारतिलक           | कालिदास        | (सं०)       | ३५६       |
| शिवरात्रिउद्यापनविधिकया | शंकरभट्ट           | (सं०)   | २४७       | शृंगारतिलक           | रुद्रभट्ट      | (सं०)       | ३५६       |
| शिशुपालवध               | महाकवि माघ         | (सं०)   | १८६       | शृंगारसकेकवित्त      | —              | (हि०)       | ७७०       |
| शिशुपालवधटीका           | मल्लिनाथसूरि       | (सं०)   | १८६       | शृंगाररस के कुटकरखंड | —              | (हि०)       | ५६३       |
| शिशुबोध                 | काशीनाथ            | सं०)    | २६५       | शृंगारसवैया          | —              | (हि०)       | ७६७       |
|                         | २६३, ६०३, ६७२, ६७५ |         |           | श्यामवतीसी           | नन्ददास        | (हि०)       | ६८४       |
| शीतलनाथपूजा             | धर्मभूषण           | (सं०)   | ५४६, ७६५  | श्यामवतीसी           | श्याम          | (हि०)       | ७६६       |
| शीतलनाथस्तवन            | शृणिलात्तचंद       | (हि०)   | ४५१       | श्रवणभूषण            | नरहरिभट्ट      | (सं०)       | १८६       |
| शीतलनाथस्तवन            | समयसुन्दरगणि       | (राज०)  | ६१६       | श्राद्धसंकेतकमण्डल   | —              | (प्रा०)     | ८६        |
| शीतलाष्टक               | —                  | (सं०)   | ६४७       | श्रावकउत्तरतिवर्गान  | —              | (हि०)       | ३७५       |
| शीलकथा                  | भारामल्ल           | (हि०)   | २४७       | श्रावककीकरणगी        | हृपकीर्त्ति    | (हि०)       | ५६७       |
| शीलनववाड                | —                  | (हि०)   | ८६        | श्रावकक्रिया         | —              | (हि०)       | ७५७       |
| शीलवतीसी                | श्रकूमल            | (हि०)   | ७५०       | श्रावकधर्मवर्णन      | —              | (सं०)       | ८६        |
| शीलवतीसी                | —                  | (हि०)   | ६१६       | श्रावकप्रतिक्रमण     | —              | (सं०)       | ८६, ५७५   |
| शीलरास                  | ब्र० रायमल्ल       | (हि०)   | ७४६       | श्रावकप्रतिक्रमण     | —              | (प्रा०)     | ८६        |
| शीलरास                  | विजयदेवसूरि        | (हि०)   | ३६५, ६१७  | श्रावकप्रतिक्रमण     | —              | (सं०प्रा०)  | ५७२       |
| शीलविधानकथा             | —                  | (सं०)   | २४६       | श्रावकप्रतिक्रमण     | —              | (प्रा०)     | ७५४       |
| शीलव्रतकेमेद            | —                  | (हि०)   | ६१५       | श्रावकप्रतिक्रमण     | —              | (प्रा० हि०) | ७६८       |
| शीलमुदर्शनरामो          | —                  | (हि०)   | ६०३       | श्रावकप्रतिक्रमण     | पन्नालालचौधरी  | (हि०)       | ८६        |
| शीलोन्देशमाला           | मेरूसुन्दरगणि      | (गुज०)  | २४७       | श्रावकप्रापविषत      | वीरसेन         | (सं०)       | ८६        |
| शुकसप्तति               | —                  | (सं०)   | २४७       | श्रावकाचार           | उमास्वामि      | (सं०)       | ६०        |
| शुकलपंचमीव्रतपूजा       | —                  | (सं०)   | ५४०       | श्रावकाचार           | अमितगति        | (सं०)       | ६०        |
| शुकलपंचमीव्रतपूजा       | —                  | (सं०)   | ५४६       | श्रावकाचार           | आशाधर          | (सं०)       | ६३५       |
| शुकलपंचमीव्रतोद्यापन    | —                  | (सं०)   | ५४६       | श्रावकाचार           | गुराभूषणानार्थ | (सं०)       | ६०        |
| शुद्धिविधान             | देवेन्द्रकीर्त्ति  | (सं०)   | ५१८       | श्रावकाचार           | पद्मनंदि       | (सं०)       | ६०        |
| शुभमालिका               | श्रीधर             | (सं०)   | ५७४       | श्रावकाचार           | पुंड्रपाद्     | (सं०)       | ६०        |
| शुभमुहूर्त्त            | —                  | (हि०)   | ५६६       | श्रावकाचार           | सकलकीर्त्ति    | (सं०)       | ६१        |
| शुभसंख                  | —                  | (हि.ग.) | ३३६, ७१८  | श्रावकाचार           | —              | (सं०)       | ६१        |
| शुभाशुभयोग              | —                  | (सं०)   | २६३       | श्रावकाचार           | —              | (प्रा०)     | ६१        |

| ग्रन्थनाम                      | लेखक          | भाषा    | वृत्त सं०          | ग्रन्थनाम                            | लेखक            | भाषा    | वृत्त सं०     |
|--------------------------------|---------------|---------|--------------------|--------------------------------------|-----------------|---------|---------------|
| भावकाचारदोहा                   | रामसिंह       | (अप०)   | ४४२, ७४८           | धीर्मतव्यस्तोत्र                     | —               | (प्रा०) | ७५४           |
| भावकाचारनाथा                   | पं० भागवतन्द् | (हि.ग.) | ६१                 | धीस्तोत्र                            | —               | (स०)    | ४१८           |
| भावकाचार                       | —             | (हि०)   | ६१                 | श्रुतज्ञानपूजा                       | —               | (सं०)   | ७२७, ३४६      |
| भावको की उत्पत्ति तथा ८४ गीत्र | —             | (हि०)   | ७४६                | श्रुतज्ञानमक्ति                      | —               | (सं०)   | ६२७           |
| भावकों की बीरानी जातिया        | —             | (हि०)   | ३७५                | श्रुतज्ञानमभ्यसचित्र                 | —               | (स०)    | ३२३           |
| भावको की बहतर जातिया           | —             | (स०हि०) | ३७५                | श्रुतज्ञानवर्णन                      | —               | (हि०)   | ६२            |
| भावशीद्वादशीउपास्थान           | —             | (सं०)   | २४७                | श्रुतबतौद्योतनपूजा                   | —               | (हि०)   | ५१३           |
| भावशीद्वादशीकथा                | पं० अन्नदेव   | (सं०)   | २४२, २४५           | श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन                | —               | (सं०)   | ५१३           |
| भावशीद्वादशीकथा                | —             | (सं०)   | २४८                | श्रुतमक्ति                           | —               | (सं०)   | ६३३           |
| श्रीपतितोत्र                   | चैनसुखजी      | (सं०)   | ४१८                | श्रुतमक्ति                           | —               | (सं०)   | ४२५           |
| श्रीपालकथा                     | —             | (हि०)   | २४८                | श्रुतमक्ति                           | पद्मलाल चौधरी   | (हि०)   | ४५०           |
| श्रीपालचरित्र                  | अ० नेमिदत्त   | (सं०)   | २००                | श्रुतज्ञानव्रतपूजा                   | —               | (सं०)   | ५४६           |
| श्रीपालचरित्र                  | अ० सकलकीर्ति  | (सं०)   | २०१                | श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन                | —               | (सं०)   | ५४६           |
| श्रीपालचरित्र                  | —             | (सं०)   | २००                | श्रुतपंचमीकथा                        | स्वयंभू         | (अप०)   | ६४२           |
| श्रीपालचरित्र                  | —             | (अप०)   | २०१                | श्रुतपूजा                            | ज्ञानभूषण       | (सं०)   | ५३७           |
| श्रीपालचरित्र                  | परिमल्ल       | (हि.ग.) | २२, ७७३            | श्रुतपूजा                            | —               | (सं०)   | ५४६           |
| श्रीपालचरित्र                  | —             | (हि०)   | २०२                |                                      |                 |         | ५६५, ६६६      |
| श्रीपालचरित्र                  | —             | (हि०)   | २०३                | श्रुतबोध                             | कालिदास         | (सं०)   | ३१५, ६६४      |
| श्रीपालदर्शन                   | —             | (हि०)   | ६१५                | श्रुतबोधटीका                         | मनोहरश्याम      | (सं०)   | ३१५           |
| श्रीपालरास                     | जिनहर्ष राणि  | (हि०)   | ३६५                | श्रुतबोध                             | वररुचि          | (सं०)   | ३१५           |
| श्रीपालरास                     | अ० रायमल्ल    | (हि०)   | ६३८                | श्रुतबोधटीका                         | —               | (सं०)   | ३१५           |
|                                |               |         | ६८४, ७१२, ७१७, ७४६ | श्रुतबोधवृत्ति                       | हर्षकीर्ति      | (सं०)   | ३१५           |
| श्रीपालविनती                   | —             | (हि०)   | ६२१                | श्रुतस्कष                            | अ० हेमचन्द      | (प्रा०) | ३७६           |
| श्रीपालस्तवण                   | —             | (हि०)   | ६२३                |                                      |                 |         | ५७२, ७०६, ७३७ |
| श्रीपालस्तुति                  | —             | (सं०)   | ४२३                | श्रुतस्कषपूजा                        | श्रुतसागर       | (सं०)   | ५४७           |
|                                |               |         | ७४५, ७५२, ७८४,     | श्रुतस्कषपूजा                        | —               | (सं०)   | ५४७           |
| श्रीपालजीकीस्तुति              | टीकमसिंह      | (हि०)   | ६३६                | श्रुतस्कषपूजा [ज्ञानपंचमिक्षितिपूजा] |                 |         |               |
| श्रीपालजीकीस्तुति              | भगवतीदास      | (हि०)   | ६४३                | श्रुतस्कषपूजाकथा                     | सुरेन्द्रकीर्ति | (सं०)   | ५४७           |
| श्रीपालस्तुति                  | —             | (हि०)   | ६०६                | श्रुतस्कषपंचमंठल [चित्र]             | —               | (हि०)   | ५४७           |
|                                |               |         | ६४४, ६५०           |                                      |                 |         | ५२४           |



| ग्रन्थनाम               | श्लोक          | भाषा    | पृष्ठ सं० |
|-------------------------|----------------|---------|-----------|
| भुक्तस्कंधविधानकथा      | पं० अश्रुदेव   | (सं०)   | २४५       |
| श्रुतस्कंधचतकथा         | ब्र० ज्ञानसागर | (हि०)   | २२८       |
| श्रुतावतार              | पं० श्रीधर     | (सं०)   | ३७६, ५७२  |
| श्रुताष्टक              | —              | (सं०)   | ६५७       |
| श्रेणिकचरित्र           | भ० शुभचन्द्र   | (सं०)   | २०३       |
| श्रेणिकचरित्र           | भ० सकलकीर्ति   | (सं०)   | २०३       |
| श्रेणिकचरित्र           | —              | (प्रा०) | २०३       |
| श्रेणिकचरित्र           | विजयकीर्ति     | (हि०)   | २०४       |
| श्रेणिकवीर्य            | द्व० गा बैद    | (हि०)   | २४४       |
| श्रेणिकराजासम्भाष       | समयसुन्दर      | (हि०)   | ६१६       |
| श्रेयांसस्तवन           | विजयमानसूरी    | (हि०)   | ४५१       |
| श्लोकैवास्तिक           | आ० विद्यानिन्द | (सं०)   | ४४        |
| श्वेताम्बरमतकेवीरासीबोध | जगरूप          | (हि०)   | ७७६       |
| श्वेताम्बरमतकेवीरासीबोध | —              | (हि०)   | ५८२       |
| श्वेताम्बरों के ८४ बाद  | —              | (हि०)   | ६२६       |

स

|                                  |               |             |          |
|----------------------------------|---------------|-------------|----------|
| सकृत्चौपद्यकथा                   | वेवेन्द्रभूषण | (हि०)       | ७६४      |
| सकृत्चौपद्यकथा                   | —             | (हि०)       | ७४१      |
| संस्कृतिफल                       | —             | (सं०)       | २६३, २६४ |
| संक्षिप्तवेदान्तशास्त्रप्रक्रिया | —             | (सं०)       | १४०      |
| संकीर्तबंधपार्षदजिनस्तुति        | —             | (हि०)       | ६१८      |
| संज्ञहृणीबालाबोध                 | शिवनिधानराणि  | (प्रा०/हि०) | ४५       |
| संज्ञहृणीसूत्र                   | —             | (प्रा०)     | ४५       |
| संज्ञहृणीक्ति                    | —             | (सं०)       | ५७५      |
| संघर्षण्टपत्र                    | —             | (प्रा०)     | ३२३      |
| संघोषण्टिकपत्र                   | —             | (हि०)       | ६२६      |
| संघषण्वीर्यो                     | द्यानतराय     | (हि०)       | ३७६      |
| संज्ञाप्रक्रिया                  | —             | (सं०)       | २६५, २६७ |
| संज्ञानिविधि                     | —             | (हि०)       | ३०६      |

| ग्रन्थनाम         | श्लोक        | भाषा      | पृष्ठ सं०                    |
|-------------------|--------------|-----------|------------------------------|
| संभाराविधि        | —            | (सं०)     | ५४८                          |
| संहृष्टि          | —            | (सं०)     | ५७३                          |
| संभन्धविवशा       | —            | (सं०)     | २६५                          |
| संभोधप्रक्षरबावनी | द्यानतराय    | (हि०)     | ११६                          |
| संभोधपचासिका      | गौतमस्वामी   | (प्रा०)   | ११६, १२८                     |
| संभोधपचासिका      | —            | (प्रा०)   | ५७२                          |
| संभोधपचासिका      | —            |           | ६२८, ७०६, ७५५                |
| संभोधपंचासिका     | रङ्गधू       | (धप०)     | १२८                          |
| संभोधपचासिका      | —            | (धप०)     | ५७३                          |
| संभोधपंचासिका     | द्यानतराय    | (हि०)     | ६०५                          |
| संभोधपंचासिका     | —            |           | ६४८, ६८५, ६६३, ७१३, ७१६, ७२५ |
| संभोधपंचासिका     | —            | (हि०)     | ४३०                          |
| संभोधघातक         | द्यानतराय    | (हि०)     | १२८                          |
| संभोधसतरी         | —            | (प्रा०)   | १२८                          |
| संभोधसत्तापु      | बीरचन्द्र    | (हि०)     | ३३६                          |
| संभोजिनस्तोत्र    | मुनिगुणानन्द | (सं०)     | ४१६                          |
| संभोजिगुणहृचरिउ   | तेजपाल       | (धप०)     | २०४                          |
| संभवनापपदडी       | —            | (धप०)     | ५७६                          |
| संयोगपंचमीकथा     | धर्मचन्द्र   | (हि०)     | २५३                          |
| संयोगवत्तीसी      | मानकवि       | (हि०)     | ६१३                          |
| संभवत्सरवर्णन     | —            | (हि०)     | ३७६                          |
| संभवत्सरोविचार    | —            | (हि०/धप०) | २६४                          |
| संसारप्रटवी       | —            | (हि०)     | ७६४                          |
| संसारस्वरूपवर्णन  | —            | (हि०)     | ६३                           |
| संस्कृतमंजरी      | —            | (सं०)     | २६५                          |
| संहनननाम          | —            | (हि०)     | ६२६                          |
| सकलीकरण           | —            | (सं०)     | ५४८                          |
| सकलीकरणविधि       | —            | (सं०)     | ५१४, ५७८                     |
| सकलीकरणविधि       | —            | (सं०)     | ५१५                          |
|                   |              |           | ५४७, ६३६                     |

| ग्रन्थनाम          | लेखक             | भाषा    | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम              | लेखक             | भाषा      | पृष्ठ सं०     |
|--------------------|------------------|---------|-----------|------------------------|------------------|-----------|---------------|
| सञ्जनचित्तवह्नय    | मङ्गिषेण         | (सं०)   | ३३७, ५७३  | सप्तपदायी              | शिवादित्य        | (सं०)     | १५०           |
| सञ्जनचित्तवह्नय    | शुभचन्द्र        | (सं०)   | ३३७       | सप्तपदायी              | —                | (सं०)     | १५०           |
| सञ्जनचित्तवह्नय    | —                | (सं०)   | ३३७       | सप्तपदी                | —                | (सं०)     | ५५८           |
| सञ्जनचित्तवह्नय    | मिहरचन्द्र       | (हि०)   | ३३७       | सप्तपरमस्यान           | सुरालचन्द्र      | (हि०)     | ७३१           |
| सञ्जनचित्तवह्नय    | दशूलाल           | (हि०)   | ३३७       | सप्तपरमस्यानकथा        | आ० चन्द्रकीर्ति  | (सं०)     | २५६           |
| सङ्काय [चौबह बोल]  | श्री रामचन्द्र   | (हि०)   | ४५१       | सप्तपरमस्यानकपूजा      | —                | (सं०)     | ५१७, ५५८      |
| सङ्काय             | समयसुन्दर        | (हि०)   | ६१८       | सप्तपरमस्यानव्रतकथा    | सुरालचन्द्र      | (हि०)     | २४४           |
| सतसई               | बिहारीलाल        | (हि०)   | ५७६, ७६८  | सप्तपरमस्यानव्रतोद्यान | —                | (सं०)     | ५३६           |
| सतियों की सङ्काय   | श्रीचिद्धजमलजी   | (हि०)   | ४५१       | सप्तभोगीबारी           | भगवतीदास         | (हि०)     | ६८८           |
| सत्तरभेदपूजा       | साधुकीर्ति       | (हि०)   | ७३५, ७६०  | सप्तविधि               | —                | (हि०)     | ३०७           |
| सत्तात्रिभंगी      | नेमिचन्द्राचार्य | (प्रा०) | ४५        | सप्तव्यसनसनकथा         | आ० सोमकीर्ति     | (सं०)     | २५०           |
| सत्तांडार          | —                | (सं०)   | ४५        | सप्तव्यसनकथा           | भारामल           | (हि०)     | २५०           |
| सद्गुणितावली       | सकलकीर्ति        | (सं०)   | ३३८       | सप्तव्यसनकथा भाषा      | —                | (हि०)     | २५०           |
| सद्गुणितावलीभाषा   | पन्नालाल चौधरी   | (हि०)   | ३३८       | सप्तव्यसनकवित्त        | बनारसीदास        | (हि०)     | ७२३           |
| सद्गुणितावली       | —                | (हि०)   | ३३८       | सप्तशती                | गोबर्धनाचार्य    | (सं०)     | ७१५           |
| सभिषातकलिका        | —                | (सं०)   | ३०७       | सप्तश्लोकीगीता         | —                | (सं०)     | ६२<br>३६८ ६६२ |
| सभिषातमिदान        | —                | (सं०)   | ३०६       | सप्तसूत्रभेद           | —                | (सं०)     | ७६१           |
| सभिषातनिदानविक्रमा | बाहडदास          | (सं०)   | ३०६       | समातरंग                | —                | (सं०)     | ३३८           |
| सन्नेहसमुच्चय      | धर्मकलशास्त्री   | (सं०)   | ३३८       | समाष्ट गार             | —                | (सं०)     | ३३६           |
| सन्मसितर्क         | सिद्धसेनदिव्याकर | (सं०)   | १४०       | समाष्ट गार             | —                | (सं० हि०) | ३३८           |
| सतर्पिजिनस्तवन     | —                | (प्रा०) | ६१६       | समासारनाटक             | रघुराम           | (हि०)     | ३३८           |
| सतर्पिपूजा         | त्रिणदास         | (सं०)   | ५४८       | समकित्तवाल             | आसकरण            | (हि०)     | ६२            |
| सतर्पिपूजा         | देवैन्द्रकीर्ति  | (सं०)   | ७६६       | समकित्तवियबोधर्म       | जिनदास           | (हि०)     | ७०१           |
| सतर्पिपूजा         | लक्ष्मीसेन       | (सं०)   | ५४८       | समंतभद्रकथा            | जोधराज           | (हि०)     | ७५८           |
| सतर्पिपूजा         | विरभभूषण         | (सं०)   | ५४८       | समंतभद्रस्तुति         | समंतभद्र         | (सं०)     | ७७८           |
| सतर्पिपूजा         | —                | (सं०)   | ५४६       | समयसार (भाषा)          | कुन्दकुन्दाचार्य | (प्रा०)   | ११६           |
| सतर्पिपूजा [विभ]   | —                | (सं०)   | ५२४       |                        |                  |           | ५७४, ७०३, ७६२ |
| सतनपविषास्तवन      | —                | (सं०)   | ४१८       | समयसारकलया             | अमृतचन्द्राचार्य | (सं०)     | १२०           |
| सतनयावबोध          | मुनिनेत्रसिंह    | (सं०)   | १४०       | समयसारकलयाटीका         | —                | (हि०)     | १२५           |

| ग्रन्थनाम          | लेखक                     | भाषा     | वृष्ट सं० | ग्रन्थनाम                  | लेखक              | भाषा     | वृष्ट सं० |
|--------------------|--------------------------|----------|-----------|----------------------------|-------------------|----------|-----------|
| समयसारकलशाभाषा     | —                        | (हि०)    | १२५       | समाधिमरण                   | —                 | (अप०)    | ६२८       |
| समयसारटीका         | —                        | (सं०)    | १२२, ६६५  | समाधिमरणभाषा पन्नालालचौधरी | —                 | (हि०)    | १२७       |
| समयसारनाटक         | बनारसीदास                | (हि०)    | १२३       | समाधिमरणभाषा               | सूरचन्द्र         | (हि०)    | १२७       |
|                    | ६०४, ६३६, ६८०, ६८३, ६८८, |          |           | समाधिमरण                   | —                 | (हि०)    | १५, १२७   |
|                    | ६८६, ६९९, ७०२, ७१६, ७२०, |          |           |                            |                   |          | ७१०, ७४८  |
|                    | ७३१, ७५३, ७५६,           |          |           | समाधिमरणपाठ                | द्यानतराय         | (हि०)    | १२६, ३६४  |
|                    | ७७८, ७८७, ७९२            |          |           | समाधिमरण स्वरूपभाषा        | —                 | (हि०)    | १२७       |
| समयसारभाषा         | जयचन्द्रदाबड्डा          | (हि० ग०) | १२४       | समाधिशतक                   | पूज्यपाद          | (सं०)    | १२७       |
| समयसारवचनिका       | —                        | (हि०)    | १२५       | समाधिशतकटीका               | प्रभाचन्द्राचार्य | (सं०)    | १२७       |
| समयसारश्रुति       | अमृतचन्द्रसूरि           | (सं०)    | ५७५, ७६४  | समाधिशतकटीका               | —                 | (सं०)    | १२८       |
| समयसारश्रुति       | —                        | (प्रा०)  | १२२       | समुदायस्तोत्र              | विश्वसेन          | (सं०)    | ४१६       |
| समरसार             | रामबाजपेय                | (सं०)    | २६४       | समुद्रघातनेत्र             | —                 | (सं०)    | ६२        |
| समवशरणपूजा         | ललितकीर्त्ति             | (सं०)    | ५४६       | सम्पेदगिरिपूजा             | —                 | (हि०)    | ७३६, ७४०  |
| समवशरणपूजा         | रत्नशेखर                 | (सं०)    | ५३७       | सम्पेदशिलरपूजा             | गंगादास           | (सं०)    | ५४६ ७२०   |
| समवशरणपूजा [बृहद्] | रूपचन्द्र                | (सं०)    | ५७६       | सम्पेदशिलरपूजा             | पं० जवाहरलाल      | (हि०)    | १५०       |
| समवशरणपूजा         | —                        | (सं०)    | ५४६, ७६७  | सम्पेदशिलरपूजा             | भागचन्द्र         | (हि०)    | ५५०       |
| समवशरणस्तोत्र      | विष्णुसेन मुनि           | (सं०)    | ४१६       | सम्पेदशिलरपूजा             | रामचन्द्र         | (हि०)    | ५५०       |
| समवशरणस्तोत्र      | विश्वसेन                 | (सं०)    | ४१५       | सम्पेदशिलरपूजा             | —                 | (हि०)    | ५११       |
| समवशरणस्तोत्र      | —                        | (सं०)    | ४१६       |                            |                   |          | ५१८, ६७८  |
| समस्तत्रत की जयमाल | चन्द्रकीर्त्ति           | (हि०)    | ५६४       | सम्पेदशिलरनिर्वाणकाण्ड     | —                 | (हि०)    | ५६६       |
| समाधि              | —                        | (प्रा०)  | ६४२       | सम्पेदशिलरमहात्म्य         | दीक्षित देवदत्त   | (सं०)    | ६२        |
| समाधितन्त्र        | पूज्यपाद                 | (सं०)    | १२५       | सम्पेदशिलरमहात्म्य         | मनसुखलाल          | (हि०)    | ६२        |
| समाधितंत्र         | —                        | (सं०)    | १२५       | सम्पेदशिलरमहात्म्य         | लालचन्द्र         | (हि० प०) | ६२, २५१   |
| समाधितन्त्रभाषा    | नाथूरामदासी              | (हि०)    | १२६       | सम्पेदशिलरमहात्म्य         | —                 | (हि०)    | ७८८       |
| समाधितन्त्रभाषा    | पवंतधर्मार्थी            | (हि०)    | १२६       | सम्पेदशिलरविलास            | केशरीसिंह         | (हि०)    | ६२        |
| समाधितन्त्रभाषा    | माणिक्यचन्द्र            | (हि०)    | १२५       | सम्पेदशिलरविलास            | देवाश्रम          | (हि० प०) | ६३        |
| समाधितन्त्रभाषा    | —                        | (हि० ग०) | १२५       | सम्यक्त्वकौमुदीकथा         | खेता              | (सं०)    | ५५१       |
| समाधिमरण           | —                        | (सं०)    | ६१२       | सम्यक्त्वकौमुदीकथा         | गुणाकरसूरि        | (सं०)    | ३५१       |
| समाधिमरण           | —                        | (प्रा०)  | १२६       | सम्यक्त्वकौमुदीनाग १       | सहश्याल           | (अप०)    | ६४२       |

| ग्रन्थनाम               | श्लोक              | भाषा     | पृष्ठ सं०     | ग्रन्थनाम                 | श्लोक               | भाषा       | पृष्ठ सं० |
|-------------------------|--------------------|----------|---------------|---------------------------|---------------------|------------|-----------|
| सप्तशतकमीश्वरविद्यापन   | —                  | (सं०)    | ५५५           | सुभाषितपद्य               | —                   | (हि०)      | ६२३       |
| सुमुद्रस्यतक            | जिनदासगोषा (हि०प०) | ३४०, ४४७ |               | सुभाषितपाठसंग्रह          | —                   | (सं०हि०)   | ६६८       |
| सुयुक्तोत्त             | —                  | (सं०)    | ४२२           | सुभाषितमुक्तावली          | —                   | (सं०)      | ३४१       |
| सदयवच्छसालवलिगारी चौपई  | मुनिकेशव           | (हि०)    | २५४           | सुभाषितरत्नसंदोह          | अभितिगति            | (सं०)      | ३४१       |
| सदयवच्छसालवगारीवार्ता   | —                  | (हि०)    | ७३४           | सुभाषितरत्नसंदोहभाषा      | पद्मालालचौधरी (हि०) |            | ३४१       |
| सुदर्शनचरित्र           | ब्र० नेमिदत्त      | (सं०)    | २०८           | सुभाषितसंग्रह             | —                   | (सं०)      | ३४१, ५७५  |
| सुदर्शनचरित्र           | सुमुक्त्विद्यानेदि | (सं०)    | २०६           | सुभाषितसंग्रह             | —                   | (सं०प्रा०) | ३४२       |
| सुदर्शनचरित्र           | ब्र० सकलकीर्ति     | (सं०)    | २०८           | सुभाषितसंग्रह             | —                   | (सं०हि०)   | ३४२       |
| सुदर्शनचरित्र           | —                  | (सं०)    | २०६           | सुभाषिताख्य               | शुभचन्द्र           | (सं०)      | ३४१       |
| सुदर्शनचरित्र           | —                  | (हि०)    | २०६           | सुभाषितावली               | सकलकीर्ति           | (सं०)      | ३४३       |
| सुदर्शनरास              | ब्र० रायमङ्ग       | (हि०)    | ३६६           | सुभाषितावली               | —                   | (सं०)      | ३४३, ७०६  |
|                         |                    |          | ६३६, ७१२, ७४६ | सुभाषितावलीभाषा           | वा० दुळीचन्द्र      | (हि०)      | ३४४       |
| सुदर्शनमेठकीढाल [ कथा ] | —                  | (हि०)    | २५४           | सुभाषितावलीभाषा           | पद्मालालचौधरी       | (हि०)      | ३४४       |
| सुदामाकीवारहलडी         | —                  | (हि०)    | ७७६           | सुभाषितावलीभाषा           | —                   | (हि०प०)    | ३४४       |
| सुदृष्टितरंगिणीभाषा     | टेकचन्द्र          | (हि०)    | ६७            | सुभौमचरित्र               | ब्र० रतनचन्द्र      | (सं०)      | २०६       |
| सुदृष्टितरंगिणीभाषा     | —                  | (हि०)    | ६७            | सुभौमचक्रवतिरास           | ब्र० जिनदास         | (हि०)      | ३६७       |
| सुन्दरविलास             | सुन्दरदास          | (हि०)    | ७४५           | सूक्तावली                 | —                   | (सं०)      | ३४५, ६७२  |
| सुन्दरशृङ्गार           | महाकबिराय          | (हि०)    | ६८३           | सूक्तिमुक्तावली           | सोमप्रभाचार्य (सं०) | ३४५, ६३५   |           |
| सुन्दरशृङ्गार           | सुन्दरदास          | (हि०)    | ७२३, ७६८      | सूक्तिमुक्तावलीस्तोत्र    | —                   | (सं०)      | ६०६       |
| सुन्दरशृङ्गार           | —                  | (हि०)    | ६८५           | सूतकनिर्णय                | —                   | (सं०)      | ५५५       |
| सुपाशर्वनाथपूजा         | रामचन्द्र          | (हि०)    | ५५५           | सूतकवर्णन [ यशस्तिलक मे ] | सोमदेव              | (सं०)      | ५७१       |
| सुप्यव दोहा             | —                  | (सप०)    | ६२८           | सूतकवर्णन                 | —                   | (सं०)      | ५५५       |
| सुप्यव दोहा             | —                  | (सप०)    | ६३७           | सूतकविधि                  | —                   | (सं०)      | ५७६       |
| सुप्यव दोहा             | —                  | (हि०)    | ७६५           | सूतकतांग                  | —                   | (प्रा०)    | ४७        |
| सुप्रभातस्तवन           | —                  | (सं०)    | ५७४           | सूर्यकवच                  | —                   | (सं०)      | ६४०       |
| सुप्रभाताष्टक           | यति नेमिचन्द्र     | (सं०)    | ६३३           | सूर्यकेदधानाम             | —                   | (सं०)      | ६०८       |
| सुप्रभातिकस्तुति        | भुवनभूषण           | (सं०)    | ६३३           | सूर्ययमनविधि              | —                   | (सं०)      | २६५       |
| सुभाषित                 | —                  | (सं०)    | ५७५           | सूर्योन्नतोत्थापनपूजा     | ब्र० जयसागर         | (सं०)      | ५५७       |
| सुभाषित                 | —                  | (हि०)    | ७०१           |                           |                     |            |           |

| ग्रन्थनाम                 | लेखक           | भाषा    | पृष्ठ सं०           | ग्रन्थनाम            | लेखक             | भाषा     | पृष्ठ सं०               |
|---------------------------|----------------|---------|---------------------|----------------------|------------------|----------|-------------------------|
| सूर्यस्तोत्र              | —              | (सं०)   | ६४६, ६६२            | सोलहसतियौकिनाम       | राजसमुद्र        | (हि०)    | ६१६                     |
| सोनागिरिपञ्चीसी           | भागीरथ         | (हि०)   | ६८                  | सोलहसतीसज्जाय        | —                | (हि०)    | ४५२                     |
| सोनागिरिपञ्चीसी           | —              | (हि०)   | ६६२                 | सौंदर्यलहरी स्तोत्र  | —                | (सं०)    | ४२२                     |
| सोनागिरिपूजा              | आशा            | (सं०)   | ५५५                 | सौंदर्यलहरीस्तोत्र   | भट्टारक जगद्भूषण | (सं०)    | ४२२                     |
| सोनागिरिपूजा              | —              | (हि०)   | ५५६                 | सौख्यवतोद्यापन       | अक्षयराज         | (सं०)    | ५१६, ५५६                |
|                           |                |         | ६७४, ७३०            | सौख्यवतोद्यापन       | —                | (सं०)    | ५३६                     |
| सोमवत्पति                 | —              | (सं०)   | २६५                 | सौभाग्यपंचमीकथा      | सुन्दरविजयगणि    | (सं०)    | २५५                     |
| सोमशर्मावारिधिरुक्था      | —              | (प्रा०) | २५५                 | स्कन्दपुराण          | —                | (सं०)    | ६७०                     |
| सोलहकारणकथा               | रत्नपाल        | (सं०)   | ६६५                 | स्तवन                | —                | (प्रप०)  | ६६०                     |
| सोलहकारणकथा               | ब्र० ज्ञानसागर | (हि०)   | ७४०                 | स्तवनप्रतिहन्त       | —                | (हि०)    | ६४८                     |
| सोलहकारण जयमाल            | —              | (प्रप०) | ६७६                 | स्तवन                | आशाधर            | (सं०)    | ६६१                     |
| सोलहकारणपूजा              | ब्र० जिनदास    | (सं०)   | ७६५                 | स्तुति               | —                | (सं०)    | ४४२                     |
| सोलहकारणपूजा              | —              | (सं०)   | ६०६                 | स्तुति               | कनककीर्ति        | (हि०)    | ६०१, ६५०                |
|                           |                |         | ६४४, ६५२, ६६४, ७०४, | स्तुति               | टीकमचन्द्र       | (हि०)    | ६३६                     |
|                           |                |         | ७२१, ७८४            | स्तुति               | नवल              | (हि०)    | ६६२                     |
| सोलहकारणपूजा              | —              | (प्रप०) | ७०५                 | स्तुति               | बुधजन            | (हि०)    | ७०४                     |
| सोलहकारणपूजा              | द्यानतराय      | (हि०)   | ५११                 | स्तुति               | हरीसिंह          | (हि०)    | ७७६                     |
|                           |                |         | ५१६, ५५६            | स्तुति               | —                | (हि०)    | ६६३                     |
| सोलहकारणपूजा              | —              | (हि०)   | ५५६, ६७०            |                      |                  |          | ६७३, ७५८                |
| सोलहकारणभावभावर्णन        | सदासुख         | (हि०)   | ६८                  | स्तोत्र              | पद्मसिंह         | (सं०)    | ५७५                     |
| सोलहकारणभावना             | —              | (हि०)   | ७८८                 | स्तोत्र              | लक्ष्मीचन्द्रदेव | (प्रा०)  | ५७६                     |
| सोलहकारणभावना एवं दशलक्षण |                |         |                     | स्तोत्रसंग्रह        | —                | (सं०हि०) | ६२८, ६५१                |
| वर्णन—सदासुखकासलीवाल      | (हि०)          | ६८      |                     |                      |                  |          | ६६८, ७०३, ७१४, ७१५      |
| सोलहकारणमंडलविधान         | टेकचन्द्र      | (हि०)   | ५५६                 |                      |                  |          | ७२६, ७४१, ७६२, ७६६, ७६७ |
| सोलहकारणमंडल [ चित्र ]    | —              |         | ५२४                 | स्तोत्रसंग्रह        | —                | (सं०हि०) | ७२१                     |
| सोलहकारणवतोद्यापन         | केशवसेन        | (सं०)   | ५१७                 |                      |                  |          | ७३८, ७७५, ७८८, ७७४      |
| सोलहकारणखारास             | भ० सकलकीर्ति   | (हि०)   | ५६४                 | स्तोत्रपूजापाठसंग्रह | —                | (सं०हि०) | ६६८,                    |
|                           |                |         | ६३६, ७८१            |                      |                  |          | ७७३                     |
| सोलहतिथिवर्णन             | —              | (हि०)   | ६६४                 |                      |                  |          |                         |

| ग्रन्थनाम                | लेखक         | भाषा      | पृष्ठ सं०           | ग्रन्थनाम                 | लेखक              | भाषा           | पृष्ठ सं० |
|--------------------------|--------------|-----------|---------------------|---------------------------|-------------------|----------------|-----------|
| स्त्रीयुक्तिलिङ्गत       | —            | (हि०)     | ६४०                 | स्वयंभूस्तोत्र टीका       | प्रभाचन्द्राचार्य | (सं०)          | ४३४       |
| स्त्रीलक्षण              | —            | (सं०)     | ३२६                 | स्वयंभूस्तोत्रभाषा        | द्यानवराय         | (सं०)          | ७१५       |
| स्त्रीभृंगारवर्णन        | —            | (सं०)     | ५७६                 | स्वरविचार                 | —                 | (सं०)          | ५७२       |
| स्थापनानिर्णय            | —            | (सं०)     | ६८                  | स्वरोदय                   | —                 | (सं०)          | १२८       |
| स्थूलभद्रकाचोमासावर्णन   | —            | (हि०)     | ३७७                 | स्वरोदय रनजीतदास (चरनदास) | (हि०)             | ३४५            |           |
| स्थूलभद्रगीत             | —            | (हि०)     | ६१८                 | स्वरोदय                   | —                 | (हि०)          | ६४०, ७५६  |
| स्थूलभद्रशीलरासो         | —            | (हि०)     | ५६६                 | स्वरोदयविचार              | —                 | (हि०)          | ३६६       |
| स्थूलभद्रसज्जाय          | —            | (हि०)     | ४५२, ६१६            | स्वर्गनरकवर्णन            | —                 | (हि०)          | ६२७       |
| स्नपनविधान               | —            | (हि०)     | ५५६, ६५५,           |                           |                   |                | ७०१, ७६३  |
| स्नपनविधि [ बृहद् ]      | —            | (सं०)     | ५५६                 | स्वर्गमुखवर्णन            | —                 | (हि०)          | ७२०       |
| स्नेहलीला                | जनमोहन       | (हि०)     | ७७३                 | स्वर्णाकर्षणविधान         | महीधर             | (सं०)          | ४२८       |
| स्नेहलीला                | —            | (हि०)     | ३६८                 | स्वस्थयनविधान             | —                 | (सं०)          | ५७४       |
| स्फुटकवित्               | —            | (हि०)     | ७०१                 |                           |                   |                | ६५८, ६४६  |
| स्फुटकवित् एवंपद्यसंग्रह | —            | (सं०/हि०) | ६७२                 | स्वाध्याय                 | —                 | (सं०)          | ५७१       |
| स्फुट दोहे               | —            | (हि०)     | ६२३, ६७३            | स्वाध्याययपाठ             | —                 | (सं०/प्रा०)    | ५६४       |
| स्फुटपद्यएवं मंत्रप्रादि | —            | (हि०)     | ६७०                 | स्वाध्यायपाठ              | —                 | (प्रा०/सं०)    | ६८ ६३३    |
| स्फुटपाठ                 | —            | (हि०)     | ६६४, ७२६            | स्वाध्यायपाठ              | पन्नालाल चौधरी    | (हि०)          | ४५०       |
| स्फुटवार्ता              | —            | (हि०)     | ७४१                 | स्वाध्यायपाठभाषा          | —                 | (हि०)          | ६८        |
| स्फुटश्लोकसंग्रह         | —            | (सं०)     | ३४५                 | स्वानुभवदर्पण             | नाथूराम           | (हि०/प०)       | १२८       |
| स्फुटहिन्दीपद्य          | —            | (हि०)     | ५६५                 | स्वार्थबीसी               | मुनि श्रीधर       | (हि०)          | ६१६       |
| स्वप्नविचार              | —            | (हि०)     | २६५                 |                           |                   |                |           |
| स्वप्नाध्याय             | —            | (सं०)     | २६५                 |                           |                   |                |           |
| स्वप्नावली               | देबनन्दि     | (सं०)     | २६५, ६३३            |                           |                   |                |           |
| स्वप्नावली               | —            | (सं०)     | २६५                 | हंसकीडालतथाविनतीडाल       | —                 | (हि०)          | ६८५       |
| स्याद्वादबुलिका          | —            | (हि०/ग०)  | १४१                 | हंसतिलकरास                | ब्र० अजित         | (हि०)          | ७०७       |
| स्याद्वादभंजरी           | मक्षिषेणसूरि | (सं०)     | १४१                 | हठयोगवीपिका               | —                 | (सं०)          | १२८       |
| स्वयंभूस्तोत्र           | समन्तभद्र    | (सं०)     | ४२३                 | हृद्यवतकुमारजममाल         | —                 | (अप०)          | ६३८       |
|                          |              |           | ४२५, ४२७, ५७५, ५६५, | हनुमन्चरित्र              | ब्र० अजित         | (सं०)          | २१०       |
|                          |              |           | ६३३ ६६५, ६८६,       | हनुमन्चरित्र              | ब्र० रायमल्ल      | (हि०)          | २११       |
|                          |              |           | ७२०, ७३१            |                           |                   |                |           |
|                          |              |           |                     | ( हनुमन्तकथा )            |                   | ५६५, ५६६, ७१७, |           |
|                          |              |           |                     | ( हनुमन्तकथा )            |                   | ७३५, ७३६,      |           |

| ग्रन्थनाम        | श्लोक          | भाषा पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम                        | श्लोक                       | भाषा पृष्ठ सं० |
|------------------|----------------|----------------|----------------------------------|-----------------------------|----------------|
| ( हनुमतरास )     |                | ७४०, ७४४,      | हरिवंशपुराणभाषा                  | —                           | (हि०) १५८, १५९ |
| ( हनुमंत चौपई )  |                | ७५२, ७९२       | हरिवंशवर्णन                      | —                           | (हि०) २५५      |
| हनुमान स्तोत्र   | —              | (हि०) ४३२      | हरिहरनामावलिबर्णन                | —                           | (सं०) ६९०      |
| हनुपतानुश्रेष्ठा | महाकवि स्वयंभू | (अप०) ६३५      | हवनविधि                          | —                           | (सं०) ७३१      |
| हमीरचौपई         | —              | (हि०) ३७८      | हारावलि                          | महामहोपाध्याय पुरुत्तचोमदेव | (सं०) २११      |
| हमीररासो         | महेशकवि        | (हि०) ३६७, ७८३ | हिण्डोलना                        | शिवचंद्रमुनि                | (सं०) ६८३      |
| हमबीवाप्तारचित्र | —              | ६०३            | हितोपदेश                         | देवीचन्द्र                  | (सं०) ७४४      |
| हरगौरीसंवाद      | —              | (सं०) ६०८      | हितोपदेश                         | विष्णुशर्मा                 | (सं०) ३४५      |
| हरजीके दोहे      | हरजी           | (हि०) ७८८      | हितोपदेशभाषा                     | —                           | (हि०) ३४६, ७६३ |
| हरदेकल्प         | —              | (हि०) ३०७      | दृष्टावसपिणीकालदोष               | माणकचन्द्र                  | (हि०) ९८, ४४८  |
| हरिचन्द्रशतक     | —              | (हि०) ७४१      | हेमभारी                          | विश्वभूषण                   | (हि०) ७९३      |
| हरिनाममाला       | शंकराचार्य     | (सं०) ३६८      | हेमनीचुहद्वृत्ति                 | —                           | (सं०) २७०      |
| हरिबोलाचित्रावली | —              | (हि०) ६०१      | हेमाव्याकरण [ हेमव्याकरणवृत्ति ] | हेमचन्द्राचार्य             | (सं०) २७०      |
| हरिरस            | —              | (हि०) ६०१      | होडाचक्र                         | —                           | (सं०) ६९९      |
| हरिवंशपुराण      | श्री० जिनदास   | (सं०) १५६      | होराज्ञान                        | —                           | (सं०) २९५      |
| हरिवंशपुराण      | जिनसेनाचार्य   | (सं०) १५५      | होलीकथा                          | जिनचन्द्रसूरि               | (सं०) २५६      |
| हरिवंशपुराण      | श्री भूषण      | (सं०) १५७      | होलिकाकथा                        | —                           | (सं०) २५५      |
| हरिवंशपुराण      | सकलकीर्ति      | (सं०) १५७      | होलिकाचौपई                       | द्वं०गर कवि                 | (हि०प०) २५५    |
| हरिवंशपुराण      | धवल            | (अप०) १५७      | होलीकथा                          | छीतर ठोलिया                 | (हि०) २४६,     |
| हरिवंशपुराण      | यशः कीर्ति     | (अप०) १५७      | होलीकथा                          | —                           | २५५, ६८५       |
| हरिवंशपुराण      | महाकवि स्वयंभू | (अप०) १५७      | होलीकथा                          | —                           | (सं०) २११      |
| हरिवंशपुराणभाषा  | सुरालचन्द्र    | (हि०प०) १५८    | होलीकथा                          | —                           |                |
| हरिवंशपुराणभाषा  | दौलतराम        | (हि०ग०) १५७    | होलीकथा                          | —                           |                |



| ग्रन्थनाम                              | लेखक          | भाषा     | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम                         | लेखक             | भाषा     | पृष्ठ सं० |
|--|---------------|----------|-----------|-----------------------------------|------------------|----------|-----------|
| सम्यक्त्वकीमुद्दीकथा                   | —             | (सं०)    | २५१       | सरस्वतीस्तोत्रमाना [ कारदास्तवन ] | —                | —        | —         |
| सम्यक्त्वकीमुद्दीकथामाया               | अशतराम        | (हि०)    | २५२       | सरस्वतीस्तोत्रभाषा                | बनारसीदास        | (हि०)    | ५२०       |
| सम्यक्त्वकीमुद्दीकथाअम्बा जोधराजगोदीका | (हि०)         | २५२, ६८६ |           | सर्वतोमद्रपूजा                    | —                | (सं०)    | ५५१       |
| सम्यक्त्वकीमुद्दीकथामाया विनोदीलाल     | (हि०)         | २५२      |           | सर्वतोमद्रमंत्र                   | —                | (सं०)    | ५१६       |
| सम्यक्त्वकीमुद्दी भाषा                 | —             | (हि०)    | २५३       | सर्वज्वर समुच्चयदर्पण             | —                | (सं०)    | ३०७       |
| सम्यक्त्वत्रयमाल                       | —             | (सप०)    | ७६४       | सर्वांससाधनी                      | भट्टवररुचि       | (सं०)    | २७८       |
| सम्यक्त्वपञ्चोत्ती                     | —             | (हि०)    | ७६०       | सर्वांससिद्धि                     | पूज्यपाद         | (सं०)    | ४५        |
| सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका                   | पं० टोडरमल    | (हि०)    | ७         | सर्वांससिद्धिभाषा                 | जयचंद्रद्वाराबहा | (हि०)    | ४६        |
| सम्यग्ज्ञानोद्यममाल                    | भगौतीदास      | (हि०)    | ५६६       | सर्वांससिद्धिसंज्ञाय              | —                | (हि०)    | ४५२       |
| सम्यग्दर्शनपूजा                        | —             | (सं०)    | ६५८       | सर्वांससिद्धिनिवारणस्तोत्र        | जिनवत्समुरि      | (हि०)    | ६१६       |
| सम्यग्दृष्टिकोभावनसलोन                 | —             | (हि०)    | ७८५       | सर्वेयाएवंपद                      | सुन्दरदास        | (हि०)    | ६८१       |
| सरस्वतीभ्रष्टक                         | —             | (हि०)    | ४५२       | सहस्रकूटजिनालयपूजा                | —                | (सं०)    | ५५१       |
| सरस्वतीकल्प                            | —             | (सं०)    | ३५२       | सहस्रशुश्रितपूजा                  | धर्मकीर्ति       | (सं०)    | ५५२       |
| सरस्वतीचूर्णकानुसला                    | —             | (हि०)    | ७५७       | सहस्रशुश्रितपूजा                  | —                | (सं०)    | ५५२       |
| सरस्वती जयमाल                          | ब्र० जिनदास   | (हि०)    | ६५८       | सहस्रनामपूजा                      | धर्मभूषण (सं०)   | ५५२, ७४७ |           |
| सरस्वतीपूजा                            | आशाधर         | (सं०)    | ६५८       | सहस्रनामपूजा                      | —                | (सं०)    | ५५२       |
| सरस्वतीपूजा [ जयमाल ]                  | ज्ञानभूषण     | (सं०)    | ५१५, ५६५  | सहस्रनामपूजा                      | चैनसुख           | (हि०)    | ५५२       |
| सरस्वतीपूजा                            | पद्मनिधि      | (सं०)    | ५५१, ७१६  | सहस्रनामपूजा                      | —                | (हि०)    | ५५२       |
| सरस्वतीपूजा                            | —             | (सं०)    | ५५१       | सहस्रनामस्तोत्र                   | पं० आशाधर        | (सं०)    | ५६६       |
| सरस्वतीपूजा                            | नेमीचम्बकशरी  | (हि०)    | ५५१       |                                   |                  |          | ६३६, ७०५  |
| सरस्वतीपूजा                            | संजी वज्रालाल | (हि०)    | ५५१       | सहस्रनामस्तोत्र                   | —                | (सं०)    | ५६४       |
| सरस्वतीपूजा                            | पं० सुधजन     | (हि०)    | ५५१       |                                   |                  |          | ७५३, ७६३  |
| सरस्वतीपूजा                            | —             | (हि०)    | ५५१, ५५२  | सहस्रनाम [ बडा ]                  | —                | (सं०)    | ५५१       |
| सरस्वतीस्तवम                           | लघुकवि        | (सं०)    | ५६६       | सहस्रनाम [ लघु ]                  | आ० समंतभद्र      | (सं०)    | ५२०       |
| सरस्वतीस्तवम                           | ज्ञानभूषण     | (सं०)    | ६५७       | सहस्रनाम [ लघु ]                  | —                | (सं०)    | ५५१       |
| सरस्वतीस्तोत्र                         | आशाधर         | (सं०)    | ६५७, ७६१  | सहेलीगीत                          | सुन्दर           | (हि०)    | ७६४       |
| सरस्वतीस्तोत्र                         | बृहस्पति      | (सं०)    | ७२०       | तात्वी                            | कवीर             | (हि०)    | ७२३       |
| सरस्वतीस्तोत्र                         | ब्रह्मसाम्ब   | (सं०)    | ७२०       | सम्बरदत्तचरित                     | दीरकवि           | (हि०)    | २०४       |
| सरस्वतीस्तोत्र                         | —             | (सं०)    | ७२०, ५७५  |                                   |                  |          |           |





| ग्रन्थनाम               | लेखक         | भाषा      | पृष्ठ सं०   |
|-------------------------|--------------|-----------|---|
| साम्बहृत्कर्मभण्डा      | ब्रह्मदेव    | (हि०)     | ४५१, ६४८  |
| सिद्धहृत्पूजा           | विरधभूषण     | (सं०)     | ५१६   |
| सिद्धकूटमंडल [ चित्र ]  | —            | —         | ५२४   |
| सिद्धशेखरपूजा           | स्वरूपचन्द्र | (हि०)     | ४६७, ५५३  |
| सिद्धशेखरपूजा           | —            | (हि०)     | ५५३   |
| सिद्धशेखरपूजाष्टक       | द्यानतराय    | (हि०)     | ७०५   |
| सिद्धशेखरमहात्म्यपूजा   | —            | (सं०)     | ५५३   |
| सिद्धचक्रकथा            | —            | (हि०)     | २५३   |
| सिद्धचक्रपूजा           | प्रभाचन्द्र  | (सं०)     | ५१०<br>५१४, ५४३   |
| सिद्धचक्रपूजा           | श्रुतसागर    | (सं०)     | ५५३   |
| सिद्धचक्रपूजा [ वृहद् ] | भानुकीर्ति   | (सं०)     | ५५३   |
| सिद्धचक्रपूजा [ वृहद् ] | शुभचन्द्र    | (सं०)     | ५५३   |
| सिद्धचक्रपूजा [ वृहद् ] | —            | (सं०)     | ५५४   |
| सिद्धचक्रपूजा           | —            | (सं०)     | ५१४<br>५५४, ६३८, ६५८, ७३५   |
| सिद्धचक्रपूजा [ वृहद् ] | संतलाल       | (हि०)     | ५५३   |
| सिद्धचक्रपूजा           | द्यानतराय    | (हि०)     | ५५३   |
| सिद्धपूजा               | आशाधर        | (सं०)     | ५५४, ७१६  |
| सिद्धपूजा               | पद्मानंदि    | (सं०)     | ५३७   |
| सिद्धपूजा               | रत्नभूषण     | (सं०)     | ५५४   |
| सिद्धपूजा               | —            | (सं०)     | ४१५<br>५५४, ५७४, ५६४, ६०५<br>६०७, ६४६, ६५१, ६७०<br>६७६, ६८८, ७०४, ७३१<br>७४५, ७६३ |
| सिद्धपूजा               | —            | (सं० हि०) | ५६६   |
| सिद्धपूजा               | द्यानतराय    | (हि०)     | ५१६   |
| सिद्धपूजा               | —            | (हि०)     | ५५५   |
| सिद्धपूजाष्टक           | दौलतराम      | (हि०)     | ७७७   |

| ग्रन्थनाम                | लेखक                | भाषा    | पृष्ठ सं० |
|--------------------------|---------------------|---------|-----------|
| सिद्धवंदना               | —                   | (सं०)   | ४२०       |
| सिद्धभक्ति               | —                   | (सं०)   | ६२७       |
| सिद्धभक्ति               | —                   | (प्रा०) | ५७८       |
| सिद्धभक्ति               | पन्नालाल चौधरी      | (हि०)   | —         |
| सिद्धस्तवन               | —                   | (सं०)   | ६२०       |
| सिद्धस्तुति              | —                   | (सं०)   | ५७४       |
| सिद्धहेमलक्षणवृत्ति      | जिनप्रभसूत्रि       | (सं०)   | २६७       |
| सिद्धान्त धर्मसागर       | पं० रङ्गभू          | (प्रा०) | ४६        |
| सिद्धान्तकौमुदी          | भट्टोजीदीक्षित      | (सं०)   | २६७       |
| सिद्धान्तकौमुदी          | —                   | (सं०)   | २६७       |
| सिद्धान्तकौमुदी टीका     | —                   | (सं०)   | २६८       |
| सिद्धान्तचन्द्रिका       | रामचन्द्राश्रम      | (सं०)   | २६८       |
| सिद्धान्तचन्द्रिका टीका  | लोकेशकर             | (सं०)   | २६६       |
| सिद्धान्तचन्द्रिका टीका  | —                   | (सं०)   | २६६       |
| सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति | सदानन्दगण्धि        | (सं०)   | २६६       |
| सिद्धान्तत्रिलोकदीपक     | वामदेव              | (सं०)   | ३२३       |
| सिद्धान्तधर्मोपदेशमाला   | —                   | (प्रा०) | ६८        |
| सिद्धान्तविन्दु          | श्रीमधुसूदन सरस्वती | (सं०)   | २७०       |
| सिद्धान्तमंजरी           | —                   | (सं०)   | १३८       |
| सिद्धान्तमूर्च्छिका      | नागेशभट्ट           | (सं०)   | २७०       |
| सिद्धान्तमुक्तावली       | पंचानन भट्टाचार्य   | (सं०)   | २७०       |
| सिद्धान्तमुक्तावली       | —                   | (सं०)   | २७०       |
| सिद्धान्तमुक्तावलीटीका   | महादेवभट्ट          | (सं०)   | १४०       |
| सिद्धान्तवेश संग्रह      | —                   | (हि०)   | ४६        |
| सिद्धान्तसारदीपक         | सकलकीर्ति           | (सं०)   | ४६        |
| सिद्धान्तसारदीपक         | —                   | (सं०)   | ४७        |
| सिद्धान्तसारभाषा         | नथमलविलाला          | (हि०)   | ४७        |
| सिद्धान्तसारभाषा         | —                   | (हि०)   | ४६        |
| सिद्धान्तसार संग्रह      | आ० नरेन्द्रदेव      | (सं०)   | ४७        |

| ग्रन्थनाम              | लेखक  | भाषा  | पृष्ठ सं० | ग्रन्थनाम                   | लेखक              | भाषा  | पृष्ठ सं० |
|------------------------|---|-------|-----------|-----------------------------|-------------------|-------|-----------|
| सिद्धिप्रियस्तोत्र     | देवनान्द  | (सं०) | ४०१       | सोमधरस्वामीपूजा             | —                 | (सं०) | ३३५       |
|                        | ४२१, ४२२, ४२५, ४२६, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४३५, ४३६, ४३७, ४३८, ४३९, ४४०, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४, ४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४५८, ४५९, ४६०, ४६१, ४६२, ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४, ४७५, ४७६, ४७७, ४७८, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४८५, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९१, ४९२, ४९३, ४९४, ४९५, ४९६, ४९७, ४९८, ४९९, ५००, ५०१, ५०२, ५०३, ५०४, ५०५, ५०६, ५०७, ५०८, ५०९, ५१०, ५११, ५१२, ५१३, ५१४, ५१५, ५१६, ५१७, ५१८, ५१९, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५२५, ५२६, ५२७, ५२८, ५२९, ५३०, ५३१, ५३२, ५३३, ५३४, ५३५, ५३६, ५३७, ५३८, ५३९, ५४०, ५४१, ५४२, ५४३, ५४४, ५४५, ५४६, ५४७, ५४८, ५४९, ५५०, ५५१, ५५२, ५५३, ५५४, ५५५, ५५६, ५५७, ५५८, ५५९, ५६०, ५६१, ५६२, ५६३, ५६४, ५६५, ५६६, ५६७, ५६८, ५६९, ५७०, ५७१, ५७२, ५७३, ५७४, ५७५, ५७६, ५७७, ५७८, ५७९, ५८०, ५८१, ५८२, ५८३, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ५९०, ५९१, ५९२, ५९३, ५९४, ५९५, ५९६, ५९७, ५९८, ५९९, ६००, ६०१, ६०२, ६०३, ६०४, ६०५, ६०६, ६०७, ६०८, ६०९, ६१०, ६११, ६१२, ६१३, ६१४, ६१५, ६१६, ६१७, ६१८, ६१९, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५, ६२६, ६२७, ६२८, ६२९, ६३०, ६३१, ६३२, ६३३, ६३४, ६३५, ६३६, ६३७, ६३८, ६३९, ६४०, ६४१, ६४२, ६४३, ६४४, ६४५, ६४६, ६४७, ६४८, ६४९, ६५०, ६५१, ६५२, ६५३, ६५४, ६५५, ६५६, ६५७, ६५८, ६५९, ६६०, ६६१, ६६२, ६६३, ६६४, ६६५, ६६६, ६६७, ६६८, ६६९, ६७०, ६७१, ६७२, ६७३, ६७४, ६७५, ६७६, ६७७, ६७८, ६७९, ६८०, ६८१, ६८२, ६८३, ६८४, ६८५, ६८६, ६८७, ६८८, ६८९, ६९०, ६९१, ६९२, ६९३, ६९४, ६९५, ६९६, ६९७, ६९८, ६९९, ७००, ७०१, ७०२, ७०३, ७०४, ७०५, ७०६, ७०७, ७०८, ७०९, ७१०, ७११, ७१२, ७१३, ७१४, ७१५, ७१६, ७१७, ७१८, ७१९, ७२०, ७२१, ७२२, ७२३, ७२४, ७२५, ७२६, ७२७, ७२८, ७२९, ७३०, ७३१, ७३२, ७३३, ७३४, ७३५, ७३६, ७३७, ७३८, ७३९, ७४०, ७४१, ७४२, ७४३, ७४४, ७४५, ७४६, ७४७, ७४८, ७४९, ७५०, ७५१, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६, ७५७, ७५८, ७५९, ७६०, ७६१, ७६२, ७६३, ७६४, ७६५, ७६६, ७६७, ७६८, ७६९, ७७०, ७७१, ७७२, ७७३, ७७४, ७७५, ७७६, ७७७, ७७८, ७७९, ७८०, ७८१, ७८२, ७८३, ७८४, ७८५, ७८६, ७८७, ७८८, ७८९, ७९०, ७९१, ७९२, ७९३, ७९४, ७९५, ७९६, ७९७, ७९८, ७९९, ८००, ८०१, ८०२, ८०३, ८०४, ८०५, ८०६, ८०७, ८०८, ८०९, ८१०, ८११, ८१२, ८१३, ८१४, ८१५, ८१६, ८१७, ८१८, ८१९, ८२०, ८२१, ८२२, ८२३, ८२४, ८२५, ८२६, ८२७, ८२८, ८२९, ८३०, ८३१, ८३२, ८३३, ८३४, ८३५, ८३६, ८३७, ८३८, ८३९, ८४०, ८४१, ८४२, ८४३, ८४४, ८४५, ८४६, ८४७, ८४८, ८४९, ८५०, ८५१, ८५२, ८५३, ८५४, ८५५, ८५६, ८५७, ८५८, ८५९, ८६०, ८६१, ८६२, ८६३, ८६४, ८६५, ८६६, ८६७, ८६८, ८६९, ८७०, ८७१, ८७२, ८७३, ८७४, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८, ८७९, ८८०, ८८१, ८८२, ८८३, ८८४, ८८५, ८८६, ८८७, ८८८, ८८९, ८९०, ८९१, ८९२, ८९३, ८९४, ८९५, ८९६, ८९७, ८९८, ८९९, ९००, ९०१, ९०२, ९०३, ९०४, ९०५, ९०६, ९०७, ९०८, ९०९, ९१०, ९११, ९१२, ९१३, ९१४, ९१५, ९१६, ९१७, ९१८, ९१९, ९२०, ९२१, ९२२, ९२३, ९२४, ९२५, ९२६, ९२७, ९२८, ९२९, ९३०, ९३१, ९३२, ९३३, ९३४, ९३५, ९३६, ९३७, ९३८, ९३९, ९४०, ९४१, ९४२, ९४३, ९४४, ९४५, ९४६, ९४७, ९४८, ९४९, ९५०, ९५१, ९५२, ९५३, ९५४, ९५५, ९५६, ९५७, ९५८, ९५९, ९६०, ९६१, ९६२, ९६३, ९६४, ९६५, ९६६, ९६७, ९६८, ९६९, ९७०, ९७१, ९७२, ९७३, ९७४, ९७५, ९७६, ९७७, ९७८, ९७९, ९८०, ९८१, ९८२, ९८३, ९८४, ९८५, ९८६, ९८७, ९८८, ९८९, ९९०, ९९१, ९९२, ९९३, ९९४, ९९५, ९९६, ९९७, ९९८, ९९९, १००० |       |           |                             |                   |       |           |
| सिद्धिप्रियस्तोत्रटीका | —   | (सं०) | ४२१       | सुकुमालचरित                 | श्रीधर            | (धष०) | २०६       |
| सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा | नधमल  | (हि०) | ४२१       | सुकुमालचरितभाषा             | पं० नाथूलालदोसी   | (हि०) | २०७       |
| सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा | पञ्जालालचौधरी   | (हि०) | ४२१       | सुकुमालचरित                 | हरचंद गंगवाल      | (हि०) | २०७       |
| सिद्धियोग              | —   | (सं०) | ३०७       | सुकुमालचरित                 | —                 | (हि०) | २०७       |
| सिद्धोपास्यरूप         | —   | (हि०) | ६७        | सुकुमालमुनिकथा              | —                 | (हि०) | २५३       |
| सिन्दूरप्रकरण          | सोमप्रभाचार्य   | (सं०) | ३४०       | सुकुमालस्वामीरा             | ब्र० जिनदास       | (हि०) | ३६६       |
| सिन्दूरप्रकरणभाषा      | बनारसीदास   | (हि०) | २२४       | मुल्लघटी                    | घनराज             | (हि०) | ६२३       |
|                        | ३४०, ५६१, ५६५, ७१०, ७१२, ७४६, ७५५, ७६२  |       |           | मुल्लघटी                    | हर्षकीर्ति        | (हि०) | ७५६       |
| सिन्दूरप्रकरणभाषा      | दुन्दरदास   | (हि०) | ३४०       | मुल्लनिघाण                  | कवि अगभाष         | (सं०) | २०७       |
| सिरिपालचरित            | पं० नरसेन   | (धष०) | २०५       | मुल्लसंपत्तिपूजा            | —                 | (सं०) | ३१७       |
| सिंहामनहार्मिशिका      | क्षेमकरमुनि   | (सं०) | २३३       | मुल्लसंपत्तिविधानकथा        | —                 | (सं०) | २४६       |
| सिंहामनहार्मिशिका      | —   | (सं०) | २३३       | मुल्लसंपत्तिविधानकथा        | विमलकीर्ति        | (धष०) | २४५       |
| सिंहामनबत्तीसी         | —   | (सं०) | २३३       | मुल्लसंपत्तिव्रतपूजा        | अक्षयराम          | (सं०) | ३३५       |
| सोमसतरी                | —   | (हि०) | ६८०       | मुल्लसंपत्तिव्रतोद्यापनपूजा | —                 | (सं०) | ३१४       |
| सोसाचरित               | कविरामचन्द्र (बालक)   | (हि०) | २०६       | मुगन्धदशमीकथा               | ललितकीर्ति        | (सं०) | ६४५       |
|                        | ७२५, ७३५  |       |           | मुगन्धदशमीकथा               | श्रुतसागर         | (सं०) | ५१४       |
| सौताचरित               | —   | (हि०) | ५६६       | मुगन्धदशमीकथा               | —                 | (सं०) | २५४       |
| सौताढाल                | —   | (हि०) | ४३२       | मुगन्धदशमीकथा               | —                 | (धष०) | ६३२       |
| सौताजीका बारहमासा      | —   | (हि०) | ७२७       | मुगन्धदशमीव्रतकथा           | [ मुगन्धदशमीकथा ] |       |           |
| सौताजीकीखिन्ता         | —   | (हि०) | ६४८, ६८५  |                             | हेमराज            | (हि०) | २५५, ७६५  |
| सौताजीकीसंभोग          | —   | (हि०) | ६१८       | मुगन्धदशमीपूजा              | स्वरूपचन्द्र      | (हि०) | ५११       |
| सोमधरकीजकडी            | —   | (हि०) | ६४४       | मुगन्धदशमीमण्डल [चित्र]     | —                 |       | ५२५       |
| सोमधरस्तवन             | ठककुरसी   | (हि०) | ७३८       | मुगन्धदशमीव्रतकथा           | —                 | (सं०) | २४२       |
|                        |   |       |           | मुगन्धदशमीव्रतकथा           | —                 | (धष०) | ४         |
|                        |   |       |           | मुगन्धदशमीव्रतकथा           | सुराहाचन्द्र      | (हि०) | ५१६       |

# ← ग्रंथ एवं ग्रंथकार →

## प्राकृत भाषा

| ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम        | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम   | ग्रंथ नाम           | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|-----------------|------------------|------------------------|-------------------|---------------------|------------------------|
| अभयचन्द्रगणि—   | ऋणसंबंधकथा       | २१८                    | देवसेन—           | भारामनासार          | ४९                     |
| अभयदेवसूरि—     | जयतिहुवरणस्तोत्र | ७५४                    |                   | ५७२, ५७३, ६२८, ६३५, |                        |
| अल्लू—          | प्राकृतछंदकोष    | ३११                    |                   | ७०६, ७३७, ७४४       |                        |
| शुद्धनदि—       | छेदपिण्ड         | ५७                     |                   | तत्वसार             | २०, ५७५                |
| काप्ति केय—     | प्रायश्चित्तविधि | ७४                     |                   | ६३७, ७३७, ७४४, ७४७  |                        |
| कु दकुदाचार्य—  | कात्तिकेयानुशेखा | १०३                    |                   | वर्णनसार            | १३३                    |
|                 | अष्टपाहुड        | ६६                     |                   | नयचक्र              | १३४                    |
|                 | पचास्तिकाय       | ४०                     | देवेन्द्रसूरि—    | भावसग्रह            | ७७                     |
|                 | प्रवचनसार        | ११२                    |                   | कर्मस्तवसूत्र       | ५                      |
|                 | नियमसार          | ३८                     | धर्मचन्द्र—       | धर्मचन्द्रप्रबन्ध   | ३६६                    |
|                 | बोधप्रामृत       | ११५                    | धर्मदासगणि—       | उपदेशरत्नमाला       | ५०                     |
|                 | यतिभावनाष्टक     | ५७३                    | नन्दिपेण—         | अज्ञितशास्त्रस्तवन  | ३७६                    |
|                 | रथगुप्ता         | ८४                     | भडारी नेमिचन्द्र— | उपदेशसिद्धान्त      |                        |
|                 | लिंगपाहुड        | ११७                    |                   | रत्नमाला            | ५१                     |
|                 | षट्पाहुड         | ११७, ७४८               | नेमिचन्द्राचार्य— | प्राथवत्रिभगी       | २                      |
|                 | समयसार           | ११६, ५७४, ७३७, ७६२     |                   | कर्मप्रकृति         | ३                      |
| गौतमस्वामी—     | गौतमकुलक         | १४                     |                   | गोम्मटसारकर्मकाण्ड  | ५२                     |
|                 | संबोधपंचांगसिका  | ११६, १२८               |                   | गोम्मटसारजीवकाण्ड   | ६,                     |
| जिनभद्रगणि      | अर्धदिकका        | १                      |                   |                     | १६, ७२०                |
| डाडसीधुनि—      | डाडसीगाथा        | ७०७                    |                   | चतुरविंशतिस्थानक    | १८                     |
| देवसूरि—        | यतिदिनचर्चा      | ८१                     |                   | जीवविचार            | ७३२                    |
|                 | जीवविचार         | ६१६                    |                   | त्रिभंगीसार         | ३१                     |
|                 |                  |                        |                   | द्रव्यसंग्रह        | ३२, ५७३,               |
|                 |                  |                        |                   |                     | ६२८, ७४४               |

| ग्रंथकार का नाम   | ग्रंथ नाम          | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम        | ग्रंथ नाम              | ग्रंथ सूची की पत्र सं०  |
|-------------------|--------------------|------------------------|------------------------|------------------------|-------------------------|
|                   | त्रिलोकसार         | ३२०                    |                        |                        |                         |
|                   | त्रिलोकसारसंहृष्टि | ३२२                    |                        |                        |                         |
|                   | पंचसंग्रह          | ३८                     | अमरकीर्ति—             | शुद्धकर्मोपदेशरत्नमाला | ८८                      |
|                   | भावत्रिभंगी        | ४२                     | ऋषभदास—                | रत्नत्रयपूजाजयमाला     | ५३७                     |
|                   | लब्धिसार           | ४३                     | कनककीर्ति—             | नन्दोद्वरजयमाला        | ५१६                     |
|                   | विशेषलत्तात्रिभंगी | ४३                     | मुनिकनकामर—            | करकण्ठुचरित्र          | १६१                     |
|                   | सत्तात्रिभंगी      | ४५                     | मुनिगुणभद्र—           | दशलक्षणकथा             | ६३१                     |
| पद्मानंदि—        | ऋषभचैत्रस्तुति     | ३८१                    | जयमित्रदत्त—           | रोहिणीविधान            | ६२६                     |
|                   | जिनचरदर्शन         | ३६०                    | जल्हण—                 | वर्द्धमानकथा           | १६६                     |
|                   | जम्बूद्वीपप्रजामि  | ३१६                    | ज्ञानचन्द्र—           | द्वादशानुशेषा          | ६२८                     |
| मुनिपद्मसिंह—     | ज्ञानसार           | १०५                    | तंजपाल—                | योगचर्चा               | ६२८                     |
| भद्रबाहु—         | कल्पयूथ            | ६, ७                   | देवचन्द्र—             | संभवनिःशरणाहृचरित      | २०४                     |
| भावशार्मा—        | दशलक्षणत्रयमाल     | ४८६, ५१७               | धवल—                   | रोहिणीचरित्र           | २४३                     |
| मुनिचन्द्रसूरि—   | वनस्पतिसत्तरी      | ८५                     | नरसेन—                 | रोहिणीविधानकथा         | २४३                     |
| मुनीन्द्रकीर्ति—  | अनन्तचतुर्दशीकथा   | २१४                    | पुरपदन्त—              | हरिवंशपुराण            | १५७                     |
| रत्नशेखरसूरि—     | प्राकृतदृष्टिकोश   | ३११                    | महेशसिंह—              | जिनराशिनिधानकथा        | ६२८                     |
| लक्ष्मीचन्द्रदेव— | स्तेय              | ५७६                    | यशः कीर्ति—            | निगिपालचरित्र          | २०५                     |
| लक्ष्मीसेन—       | द्वादशानुशेषा      | ७८४                    | महेशपुराण              | श्राद्धपुराण           | १४३, ६४२                |
| वसुमन्दि—         | वसुमन्दिश्रावकाचार | ८५                     | महापुराण               | महापुराण               | १५३                     |
| विद्यासिद्धि—     | धार्तिकरस्तोत्र    | ६८१                    | यशोधरचरित्र            | यशोधरचरित्र            | १८८                     |
| शिवाय—            | भगवतीशाराधना       | ७६                     | त्रिदशजिगुचन्द्रकीर्ती | त्रिदशजिगुचन्द्रकीर्ती | ६८६                     |
| श्रीराम—          | प्राकृतरूपमाला     | २६२                    | चन्द्रप्रभवचरित्र      | चन्द्रप्रभवचरित्र      | १६५                     |
| श्रुतमुनि—        | भावसंग्रह          | ७८                     | पद्मिणी                | पद्मिणी                | ६४२                     |
| समंतभद्र—         | कन्याशोक           | ३८३                    | पाण्डवपुराण            | पाण्डवपुराण            | १५०                     |
| सिद्धसेनसूरि—     | इकीसठाराचर्चा      | २                      | हरिवंशपुराण            | हरिवंशपुराण            | १५७                     |
| सुन्दरसूर्य—      | घातिकरस्तोत्र      | ४२३                    | योगीन्द्रदेव—          | परमात्मप्रकाश          | ११०,                    |
| कविहास—           | कामगूथ             | ३५३                    |                        | ५७५, ६६३, ७०७, ७४७     |                         |
| ब्र० हेमचन्द्र—   | श्रुतार्कथ         | ३७६, ५७२, ७०७, ७३७     | रङ्गधू—                | योगसार                 | ११६, ७४८, ७४५           |
|                   |                    |                        |                        | दशलक्षणजयमाल           | २४३,                    |
|                   |                    |                        |                        |                        | ४८६, ५१८, ५३७, ५७२, ६३७ |

| ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम                    | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम      | ग्रंथ नाम                 | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|-----------------|------------------------------|------------------------|----------------------|---------------------------|------------------------|
|                 | पार्वनाथचरित्र               | १७६                    |                      |                           |                        |
|                 | वीरचरित्र                    | ६४२                    |                      |                           |                        |
|                 | खोडगकारण जयमाल               | ५१७, ५४२               |                      |                           |                        |
|                 | लंबोधरपंचासिका               | १२८                    |                      |                           |                        |
|                 | सिद्धान्तार्थसार             | ४६                     |                      |                           |                        |
| रामसिंह—        | सावयधम्म दोहा ( श्रावकाचार ) | ६७ ६४१, ७४८            | अकलंकदेव—            | अकलंकाष्टक                | ५७५ ६३७ १. ७१२         |
|                 | दोहापाहुड                    | ६०                     |                      | तत्त्वार्थराजवास्तिक      | ३२                     |
| रूपचन्द्र—      | रागभासावरी                   | ६४१                    |                      | न्यायकुमुदचन्द्रोदय       | १३४                    |
| लक्ष्मण—        | ऐमिराहाचरित्र                | १७१                    | अक्षयराम—            | प्रायश्चित्तसंग्रह        | ७८                     |
| लक्ष्मीचन्द्र—  | आध्यात्मिकगाथा               | १०३                    |                      | रामोकारपैतीसी पूजा        | १८२. ५१७               |
|                 | उपासकाचार दोहा               | ५२                     |                      | प्रतिमासान्त चतुर्वर्षी   |                        |
|                 | चूनडी                        | ६२८, ६४१               |                      | व्रतोद्यापन पूजा          | ५१६, ५२०               |
|                 | कल्याणकविधि                  | ६४१                    |                      | मुखसंपत्तिव्रत पूजा       | ५५५                    |
| विनायचन्द्र—    | दुषारसविधानकथा               | २४५, ६२८               | ब्रह्म भोजित—        | सौम्यकाव्य व्रतोद्यापन    | ५१६, ५५६               |
|                 | निर्द्धर 'चमोविधानकथा        | २४५, ६२८               |                      | हनुमच्चरित्र              | २१०                    |
|                 | अजितनाथपुराण                 | १४२                    | अजितप्रभसूरे—        | शान्तिनाथचरित्र           | १६८                    |
| विजयसिंह—       | सुगन्धदशमीकथा                | ६३२                    | अनन्तकीर्ति—         | नन्दीश्वरव्रतोद्यापन पूजा | ४६४                    |
| विमलकीर्ति—     | पद्मिणी                      |                        |                      | पलरविधान पूजा             | ५०७                    |
| सह्यापाल—       | ( कौमुदीमध्यान् )            | ६४१                    | अनन्तवीर्य—          | प्रमेयरत्नमाला            | १३८                    |
|                 | सम्पत्स्वकौमुदी              | ६४२                    | अन्नभट्ट—            | तर्कसंग्रह                | १३२                    |
|                 | प्रष्टुमनचरित्र              | १८२                    | अनुभूतिस्वरूपाचार्य— | सारस्वतप्रक्रिया          | ६२५ २६६, ७८०           |
| सिंहकवि—        | रिदुगोमिचरित्र               | १५७, ६४२               |                      | नयुसारस्वत                | २६३                    |
| महाकविस्वयंभू—  | श्रुतपंचमीकथा                | ६४२                    | अपराजितसूरि          | भगवतीभारोधानाटिका         | ७६                     |
|                 | हनुमतानुप्रेक्षा             | ६३५                    | अप्ययदीक्षित—        | कुवलयानंद                 | ३०८                    |
|                 | सुकुमालचरित्र                | २०६                    | अभयचन्द्राणि—        | पंचसंग्रहवृत्ति           | ३६                     |
| श्रीधर—         | भरणस्तमितितार्थि             | २४३, ६२८, ६४३          | अभयचन्द्र—           | श्रीरोदानोपूजा            | ७६३                    |
| हरिश्चन्द्र—    |                              |                        | अभयचन्द्र—           | जैनेन्द्रमहावृत्ति        | २६०                    |
|                 |                              |                        | अभयचन्द्र—           | त्रिलोकसार पूजा           | ४८५                    |

संस्कृत भाषा

अकलंकदेव—

अकलंकाष्टक ५७५

६३७ १. ७१२

तत्त्वार्थराजवास्तिक ३२

न्यायकुमुदचन्द्रोदय १३४

प्रायश्चित्तसंग्रह ७८

अक्षयराम—

रामोकारपैतीसी पूजा

१८२. ५१७

प्रतिमासान्त चतुर्वर्षी

व्रतोद्यापन पूजा ५१६, ५२०

मुखसंपत्तिव्रत पूजा ५५५

सौम्यकाव्य व्रतोद्यापन

५१६, ५५६

ब्रह्म भोजित—

हनुमच्चरित्र २१०

अजितप्रभसूरे—

शान्तिनाथचरित्र १६८

अनन्तकीर्ति—

नन्दीश्वरव्रतोद्यापन पूजा ४६४

पलरविधान पूजा ५०७

अनन्तवीर्य—

प्रमेयरत्नमाला १३८

अन्नभट्ट—

तर्कसंग्रह १३२

अनुभूतिस्वरूपाचार्य—

सारस्वतप्रक्रिया ६२५

२६६, ७८०

नयुसारस्वत २६३

भगवतीभारोधानाटिका ७६

कुवलयानंद ३०८

पंचसंग्रहवृत्ति ३६

श्रीरोदानोपूजा ७६३

जैनेन्द्रमहावृत्ति २६०

त्रिलोकसार पूजा ४८५

अभयचन्द्र—

| ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम            | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम              | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|-----------------|----------------------|------------------------|-----------------|------------------------|------------------------|
|                 | दशलक्षण पूजा         | ४८६                    | अमोलकचन्द्र—    | रथयात्राप्रभाव         | ३७४                    |
|                 | लघुधैर्यविधि         | ५३३                    | अमृतचन्द्र—     | तत्त्वार्थसार          | २२                     |
| अभयसोम—         | विक्रमधरिप           | १६६                    |                 | पंचास्तिकाघटीका        | ४१                     |
| पं० अश्वदेव—    | त्रिकालबोबोसोवधा     | २२६, (रोटतीजकथा)       |                 | परमात्म्यप्रकाश टीका   | ११०                    |
|                 |                      | २४२                    |                 | श्रवचनसार टीका         | ११२                    |
|                 | दशलक्षण पूजा         | ४८८                    |                 | पुरुषार्थसिद्धधुपाय    | ६८                     |
|                 | द्वादशप्रतकथा        | २२८, २४६               |                 | समयसारकलशा             | १२०                    |
|                 | द्वादशप्रत पूजा      | ४६०                    |                 | समयसार टीका            | १२१                    |
|                 | मुकुटसप्तमीवधा       | २४४                    |                 |                        | ७५५, ७६४               |
|                 | लब्धिविधानकथा        | २३६                    | अरुणमणि—        | प्रजितपुराण            | १४२                    |
|                 | लब्धिविधान पूजा      | ५१७                    | अर्हदेव—        | पंचकल्याणक पूजा        | ५००                    |
|                 | श्रवणद्वादशीकथा      | २४५                    | अशाग—           | शान्तिकविधि            | ५४४                    |
|                 | श्रुतस्कंधविधानकथा   | २४५                    | आशाग—           | शांतिनवपुराण           | १५५                    |
|                 | षोडशकारणकथा          | २४७, २४७               | आनन्द—          | प्राणिवैद्यक           | २६६                    |
|                 |                      |                        | आशा—            | माधवानलकथा             | २३५                    |
| अमरकीर्ति—      | जिनमहलनामटीका        | ३६३                    | आशा—            | सोनागिर पूजा           | ५५५                    |
|                 | महावीरस्तोत्र        | ७५२                    | आशाधर—          | अंकुरारोपणविधि         | ४५३,                   |
|                 | यमकाष्ठवस्तोत्र      | ४१३, ४२६               |                 |                        | ५१७                    |
| अमरसिंह—        | अमरकोश               | २७२                    |                 | अनगरधर्मामृत           | ४८                     |
|                 | त्रिकाण्डशेषसूची     | २७४                    |                 | आराधनासारश्रुति        | ६४                     |
| अमिनगति—        | धर्मपरीक्षा          | ३५६                    |                 | इष्टोपदेशटीका          | ३८०                    |
|                 | पंचमग्रह टीका        | ३६                     |                 | कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका | ३८३                    |
|                 | भावनार्हात्रिशक्तिका | ५७३                    |                 | कल्याणमाला             | ५७५                    |
|                 | ( सामायिक पाठ )      | ७३७                    |                 | कलशाभिषेक              | ४६७                    |
|                 | श्रावकाचार           | ६०                     |                 | कनसारोपणविधि           | ४६६                    |
|                 | सुभाषितरत्नसन्दीह    | ३४१                    |                 | गणधरवल्लयपूजा          | ७६१                    |
| अमोधवर्ष—       | धर्मोपदेशश्रावकाचार  | ६४                     |                 | जलयात्राविधान          | ४७७                    |
|                 | प्रयत्नोत्तररत्नमाला | ५७३                    |                 | जिनयज्ञकल्प            |                        |
|                 |                      |                        |                 | ( प्रतिष्ठापाठ )       | ५२१                    |
|                 |                      |                        |                 |                        | ४७८, ६०८, ६३६          |

| ग्रंथकार का नाम              | ग्रंथ नाम          | ग्रंथ सूची की पत्र सं०   |
|------------------------------|--------------------|--------------------------|
|                              | जिनसहस्रनामस्तोत्र | ३६१,                     |
|                              |                    | ५४०, ५६६, ५६६, ६०५,      |
|                              |                    | ६०७, ६३६, ६४६, ६५५,      |
|                              |                    | ६८३, ६८६, ६९२, ७१२,      |
|                              |                    | ७१५, ७२०, ७४०, ७५२       |
|                              | धर्माभूतसूक्तिसंघ  | ६३                       |
|                              | ध्वजारोपणविधि      | ५६२                      |
|                              | त्रिषष्टिस्मृति    | १४६                      |
|                              | देवभास्त्रशुकपूजा  | ७६१                      |
|                              | भूगोलचतुर्विधातिका | टीका ४११                 |
|                              | रत्नत्रयपूजा       | ५२६                      |
|                              | श्रावकाचार         |                          |
|                              | ( सागारधर्माभूत )  | ६३५                      |
|                              | यातिहोमविधान       | ५५५                      |
|                              | सरस्वतीस्तुति      | ६४७, ७६१                 |
|                              |                    | ६५८, ७६१                 |
|                              | सिद्धपूजा          | ५५४, ७१६                 |
|                              | स्तवन              | ६६१                      |
| इन्द्रनंदि—                  | भंक्रारारोपणविधि   | ४५३                      |
|                              | देवपूजा            | ४६०                      |
|                              | नीतसार             | ३२६                      |
| उज्ज्वलदत्त ( संग्रहकर्ता )— | उणादिसूत्रसंघ      | २५७                      |
| कमाश्वामि—                   | तत्त्वार्थसूत्र    | २३, ४२५                  |
|                              |                    | ४२७, ४३७ ५३७, ५६२, ५६६,  |
|                              |                    | ५७१, ५७३, ५६५, ५६६, ६०१, |
|                              |                    | ६०३, ६०५, ६३३, ६३७, ६३६  |

| ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम                 | ग्रंथ सूची की पत्र सं०   |
|-----------------|---------------------------|--------------------------|
|                 |                           | ६४४, ६४५, ६४७, ६४८, ६५०, |
|                 |                           | ६५३, ६५६, ६६४, ७००, ७०४, |
|                 |                           | ७०५, ७०७, ७२७, ७८५, ७८८  |
|                 | पंचनमस्कारस्तोत्र         | ५७६                      |
|                 | पूजाप्रकरण                | ५१२                      |
|                 | श्रावकाचार                | ६६                       |
| भ० एकसंधि—      | प्रायश्चित्तविधि          | ७४                       |
| कनककीर्त्ति—    | शामोकारपैतिसौत्र          |                          |
|                 | विधान                     | ४८२, ५१७                 |
|                 | देवागमस्तोत्रश्रुति       | ३६६                      |
| कनककुशल—        | बोम्मटसार कर्मकाण्डटीका   | १२                       |
| कनकनंदि—        | कुमारसंभवटीका             | १६२                      |
| कनकसागर—        | जिनपंजरस्तोत्र            | ३६०,                     |
| कमलप्रभाचार्य—  |                           | ४३०, ६४६                 |
| कमलविजयगणिसि—   | चतुर्विधाति तीर्थकर       |                          |
|                 | स्तोत्र                   | ३६८                      |
| कालिदास—        | कुमारसंभव                 | १६२                      |
|                 | श्वेतुसंहार               | १६१                      |
|                 | मेघदूत                    | १८७                      |
|                 | रघुवंश                    | १६३                      |
|                 | हृत्तरत्नाकर              | ३१४                      |
|                 | भुतबोध                    | ६४४                      |
|                 | धाकुन्तल                  | ३१६                      |
| कालिदास—        | नलोदयकाव्य                | १७५                      |
|                 | शृंगारतिलक                | ३५६                      |
| काशीनाथ—        | ज्योतिषसारत्नमन्त्रत्रिका | २८३                      |
|                 | शोचबोध                    | २६२, ६०३                 |
| काशीराज—        | धर्मीशर्मजरी              | २६६                      |
| कृष्णचन्द्र—    | कल्याणमंदिरस्तोत्र        | ३८४                      |
|                 |                           | ४२५, ४२७, ४३०, ४३१,      |



| ग्रंथकार का नाम  | ग्रंथ नाम             | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम            | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|------------------|-----------------------|------------------------|-----------------|----------------------|------------------------|
|                  |                       | ५६५, ५७२, ५७५, ५६५,    | गणपति—          | रत्नदीपक             | २६०                    |
|                  |                       | ६१६, ६३३, ६३७, ६७०,    | गुणिरतनसूत्रि—  | षडदर्शनसमुच्चयमुक्ति | १३६                    |
|                  |                       | ७२४, ७५७               | गणेश—           | ग्रहसाधन             | २८०                    |
| कुलभद्र—         | सारसमुच्चय            | ६७, ५७४                | गर्गश्रुति—     | पंचागसाधन            | २८५                    |
| भट्टकेदार—       | श्रुतरत्नाकर          | ३१४                    |                 | गर्गसंहिता           | २८०                    |
| केशव—            | जातकपद्धति            | २८१                    |                 | पाशाकेवली            | २८६, ६४७               |
|                  | ज्योतिषमणिमाला        | २८२                    |                 | प्रश्नमनोरमा         | २८७                    |
| केशवपिथ—         | तर्कभाषा              | १३२                    |                 | शकुनावली             | २६२                    |
| केशववर्धी—       | गोमटसारवृत्ति         | १०                     | गुणकीर्ति—      | पंचकल्पारणकपूजा      | ५००                    |
|                  | धादियत्रतपूजा         | ४६१                    | गुणचन्द्र—      | अनन्तव्रतोद्यापन     | ५१३                    |
| केशवसेन—         | रत्नत्रयपूजा          | ५२६                    |                 |                      | ५३६, ५४०               |
|                  | रोहिणीव्रतपूजा        | ५१३,                   |                 | अष्टालिकाव्रतकथा     |                        |
|                  |                       | ५३२, ७२६               |                 | संघह                 | २१६                    |
|                  | षोडशकारणपूजा          | ५४२,                   | गुणचन्द्रदेव—   | अमृतधर्मरसकाव्य      | ४८                     |
|                  |                       | ६७६                    | गुणनेदि—        | ऋषिमंडलपूजाविधान     | ४६३,                   |
| कैट्यट—          | भाष्यप्रदीप           | २६२                    |                 |                      | ५३६, ७६२               |
| कौहनभट्ट—        | वैश्याकरणभूषण         | २६३                    |                 | चंद्रप्रभकाव्यपंजिका | १६५                    |
| त्र० कृष्णदास    | शुनिसुव्रतपुराण       | १५३                    |                 | त्रिकालचौबोसीकथा     | ६२२                    |
|                  | विमलनाथपुराण          | १५४                    |                 | संभवजिनस्तोत्र       | ४१६                    |
| कृष्णशर्मा—      | भावदीपिका             | १३८                    | गुणभद्र—        | शांतिनाथस्तोत्र      | ६१४,                   |
| सुपणक—           | एकाक्षरकोष            | २७४                    |                 |                      | ७२२                    |
| शेर्मकरमुनि—     | सिंहासनद्वारविशिका    | २५३                    | गुणभद्राचार्य—  | अनन्तनाथपुराण        | १४२                    |
| शुभेन्द्रकीर्ति— | गजपथामंडलपूजा         | ४६८                    |                 | आत्मभुशासन           | १००                    |
| श्वेता—          | सम्बन्धकौमुदीकथा      | २५१                    |                 | उत्तरपुराण           | १४४                    |
| गंगादास—         | पंचलेखपालपूजा         | ५००                    |                 | जिनदत्तचरित्र        | १६६                    |
|                  | पुष्पांगलिव्रतोद्यापन | ५०८                    |                 | धन्यकुमारचरित्र      | १७२                    |
|                  |                       | ५१६                    |                 | मौनिव्रतकथा          | २३६                    |
|                  | द्वैव्रत              | ५३२                    |                 | वर्द्धमानस्तोत्र     | ४१५                    |
|                  | सन्नेर्वाशिसरपूजा     | ५४६,                   |                 | श्रावकाचार           | ६०                     |
|                  |                       | ७२७                    | गुणभूषणाचार्य—  |                      |                        |

| ग्रंथकार का नाम     | ग्रंथ नाम               | ग्रंथ सूची की पत्र सं०                 | ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम             | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|---------------------|-------------------------|--|-----------------|-----------------------|------------------------|
| गुणरत्नसूरि—        | तर्करहस्यदीपिका         | १३२                                    | चिंतामणि—       | रमलशास्त्र            | २६०                    |
| गुणविनयगणि—         | रघुवंशटीका              | १६४                                    | चूडामणि—        | न्यायसिद्धान्तमंजरी   | १३६                    |
| गुणाकरसूरि—         | सम्यक्त्वकोमुदीकथा      |  | चौलचन्द—        | चन्दनयष्टीव्रतपूजा    | ४७३                    |
| गोपालदास—           | रूपमंजरीनाममाला         | २७६                                    | छत्रसेन—        | चदनयष्टीव्रतकथा       | ६३१                    |
| गोपालभट्ट—          | रसमंजरीटीका             | ३५६                                    | अगतकीर्त्ति—    | द्वादशव्रतोद्यापनपूजा | ४६१                    |
| गोशर्द्धनाचार्य—    | सप्तशती                 | ७१५                                    | जगद्भूषण—       | सौंदर्यनहरीस्तोत्र    | ४२२                    |
| गोविन्दभट्ट—        | पुरुधार्यानुशासन        | ६६                                     | जगन्नाथ—        | गणपाठ                 | २५६                    |
| गौतमस्वामी—         | ऋषिमंडलपूजा             | ६०७                                    |                 | नेमिनरेन्द्रस्तोत्र   | ३६६                    |
|                     | ऋषिमंडलस्तोत्र          | ३८२                                    |                 | सुखनिधान              | २०७                    |
|                     |                         | ४२४, ६४६, ७३२                          | जतीदास—         | दानकीवीनती            | ६४३                    |
| घटकपर्प—            | घटकपर्पकाव्य            | १६४                                    | जयतिलक—         | निजस्मृत              | ३८                     |
| चंड कवि—            | प्राकृतव्याकरण          | २६२                                    | जयदेव—          | गीतगोविन्द            | १६३                    |
| चन्द्राकीर्त्ति—    | चतुर्विधतितोर्पाकराष्टक | ५६४                                    | ब्र० जयसागर—    | सूर्यव्रतोद्यापनपूजा  | ५५७                    |
|                     | विमानशुद्धि             | ५३५                                    | जानकीनाथ—       | न्यायसिद्धान्तमंजरी   | १३५                    |
|                     | सप्तपरमस्थानकथा         | २४६                                    | भ० जियाचन्द्र—  | जिनचतुर्विधतितोत्र    | ७५७                    |
| चन्द्रकीर्त्तिसूरि— | सारस्वतदीपिका           | २६६                                    | जिनचन्द्रसूरि—  | दशलक्षगुप्तोद्यापन    | ४८६                    |
| चाणक्य—             | चाणक्यराजनीति           | ३२६, ६४०, ६४६, ६८३, ७१२, ७१७, ७२३, ७८७ | ब्र० जिनदास—    | जम्बूद्वीपपूजा        | ४७७                    |
|                     | लघुचाणक्यराजनीति        | ३३६                                    |                 |                       | ५०१, ५३७               |
|                     |                         | ७१२, ७२०                               |                 | जम्बूस्वामीचरित्र     | ६६८                    |
| चानुष्यद्वाराय—     |                         | ५५                                     |                 | ज्येष्ठजिनवरलाहान     | ७६५                    |
|                     | उबरतिमिरभास्कर          | २६८                                    |                 | नेमिनाथपुराण          | १४७                    |
|                     | भावनासारसंग्रह          | ५५, ७७, ६१५                            |                 | पुष्पांजलीव्रतकथा     | २३४                    |
| चारुकीर्त्ति—       | गीतगीतराग               | ३८६                                    |                 | सप्तशिवपूजा           | ५४८                    |
| चारित्रभूषण—        | महीपालचरित्र            | १८६                                    |                 | हरिवंशपुराण           | १५६                    |
| चारित्रसिंह—        | कातन्त्रविभ्रमसूत्राव-  |  | प० जिनदास—      | सोलहकारणपूजा          | ७६५                    |
|                     | चरि                     | २५७                                    |                 | जलयात्राविधि          | ६८३                    |
|                     |                         |  |                 | होमीरेणुकाचरित्र      | २११                    |
|                     |                         |  |                 | भक्तविभजिनचैत्यलय     |                        |
|                     |                         |  |                 | पूजा                  | ४५३                    |

| ग्रंथकार का नाम    | ग्रंथ नाम                   | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम  | ग्रंथ नाम                | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|--------------------|-----------------------------|------------------------|------------------|--------------------------|------------------------|
| जिनप्रभसूरि—       | सिद्धहेमतंत्रवृत्ति         | २६७                    | दामोदर—          | चन्द्रप्रभचरित्र         | १६५                    |
| जिनदेवसूरि—        | मदनपराजय                    | ३१७                    |                  | प्रशस्ति                 | ६०८                    |
| जिनलामसूरि—        | चतुर्विधातिजिनस्तुति        | ३८७                    |                  | व्रतकथाकोश               | २४१                    |
| जिनबद्ध नसूरि—     | धर्मकारवृत्ति               | ३०८                    | देवचन्द्रसूरि—   | पार्वनाथस्तवन            | ६३३                    |
| जिनसेनाचार्य—      | भाद्रिपुराण                 | १४२, ६४६               | दीक्षितदेवदत्त—  | सम्पेदशिखरमहात्म्य       | ६२                     |
|                    | ऋषभदेवस्तुति                | ३८१                    | देवनदि—          | गर्भघटावकन               | १३१, ७३७               |
|                    | जिनसहस्रनामस्तोत्र          | ३६२                    |                  | जैनेन्द्रव्याकरण         | २५६                    |
|                    | ४२५, ५७३, ६५७               |                        |                  | चौवासतांषीकरस्तवन        | ६०६                    |
|                    | ७०७, ७४७                    |                        |                  | सिद्धिप्रियस्तोत्र       | ४२१                    |
| जिनसेनाचार्य—      | हरिवंशपुराण                 | १५५                    |                  | ४२५, ४२७, ४२६, ४३१,      |                        |
| जिनसुन्दरसूरि—     | होलीकथा                     | २५६                    |                  | ५७२, ५६५, ५७८, ५६७,      |                        |
| अ० जिनेन्द्रभूषण—  | जिनेन्द्रपुराण              | १४६                    |                  | ६०५, ६०६, ६३३,           |                        |
| अ० ज्ञानकीर्ति—    | यशोधरचरित्र                 | १६२                    |                  | ६३७, ६४४                 |                        |
| ज्ञानभास्कर—       | पाशाकेवली                   | २८६                    | देवसूरि—         | शातिस्तवन                | ६१६                    |
| ज्ञानभूषण—         | भ्रात्मसंबोधनकाव्य          | १००                    | देवसेन—          | भालापपद्धति              | १३०                    |
|                    | ऋषिमंडलपूजा                 | ४६३, ६२६               | देवैन्द्रकीर्ति— | चन्दनषष्ठीव्रतपूजा       | ७३                     |
|                    | गोमटसारकर्मकाण्डटीका        | १२                     |                  | चन्द्रप्रभजिनपूजा        | ४७४                    |
|                    | तत्त्वज्ञानतरंगिणी          | ५८                     |                  | शेषनक्रियोद्यापन         | ६३८, ७६६               |
|                    | पंचकल्याणकोद्यापनपूजा       | ६६०                    |                  | द्वादशव्रतोद्यापनपूजा    | ४६१                    |
|                    | भक्तामरपूजा                 | ५२                     |                  | पंचमीव्रतपूजा            | ५०४                    |
|                    | श्रुतपूजा                   | ५३७                    |                  | पंचमेरुपूजा              | ५१६                    |
|                    | सरस्वतीपूजा                 | ५१५                    |                  | प्रतिमासांतचतुर्दशांगुजा | ७६१                    |
|                    | ५४५, ५५१                    |                        |                  | रविव्रतकथा               | २३७, ५३५               |
|                    | सरस्वती स्तुति              | ६५७                    |                  | रैव्रतकथा                | २३६                    |
| देवबद्ध विराज—     | जालकामरण                    | २८२                    |                  | व्रतकथाकोश               | २४२                    |
| त्रिसुवनचंद्र—     | त्रिकालचौबीसी               | ४८४                    | दीर्गसिंह—       | सप्तऋषिपूजा              | ७६५                    |
| दद्याचंद्र—        | तत्त्वार्थसूत्रदशाध्यायपूजा |                        | धनञ्जय—          | कातन्त्ररूपमालाटीका      | २५८                    |
|                    |                             |                        |                  | द्विसंधानकाव्य           | १७१                    |
| दक्षिपतराव बंशीधर— | धर्मकाररत्नाकार             | ३०८                    |                  | नाममाला                  | २७५, ५७४               |

ग्रंथकार का नाम

ग्रंथ नाम

ग्रंथ सूची की पत्र सं०

ग्रंथकार का नाम

ग्रंथ नाम

ग्रंथ सूची की पत्र सं०

|                 |                      |  |
|-----------------|----------------------|--|
|                 |                      | ६८६, ६८८, ७११, ७१२, ७१३                          |
|                 | विद्यापहारस्तोत्र    | ४१५, ४२५, ४२७, ४६३, ४७२, ४८५, ६०५, ६३३, ६३७, ६४६ |
| धर्मकलरामुरि—   | सन्देशसमुच्चय        | ३३८  |
| धर्मकीर्ति—     | कौमुदीकथा            | २२२  |
|                 | पद्मपुराण            | १४४  |
|                 | सहस्रग्रन्थितपूजा    | ५५२  |
| मं० धर्मचन्द्र— | कथाकोश               | २१८  |
|                 | गीतमस्व-मीश्वरिण     | १६३  |
|                 | गोम्मटसारटीका        | १०   |
|                 | संयोगपञ्चमीकथा       | २५३  |
|                 | सहस्रनामपूजा         | ७५७  |
| धर्मचन्द्रगणि—  | श्रीभिक्षानरत्नाकर   | २७२  |
| धर्मदास—        | विदग्धमुलमथन         | १८६  |
| धर्मधर—         | नागकुमारचरित्र       | १७६  |
| धर्मभूषण—       | जिनसहस्रनामपूजा      | ४८०, ५५०   |
|                 | न्यायदीपिका          | १३५  |
|                 | शोतलनाथपूजा          | ५४६  |
| नक्षिरु—        | प्रायश्चित्त समुच्चय |  |
|                 | चूलिका टीका          | ७५, ७८०  |
| नन्दियेण—       | नन्दीस्वरत्नतोषापन   | ४८४  |
| मं० तकुल—       | शपथलक्षण             | ७८१  |
|                 | शालिहोत्र            | ३०६  |
| प० नवबिलास—     | ज्ञानार्णवटीका       | १०८  |
| नरपति—          | नरपतिजयवर्षा         | २६५  |
| नरसिंहभट्ट—     | जिनघातटीका           | ३६१  |

ब्रह्मरिभट्ट—

ब्रह्मेन्दुकीर्ति—

नरेन्द्रसेन—

नाराचन्द्रमुरि—

नाशराज—

नरमोशभट्ट—

नरगोत्रभट्ट—

नारदमन्त्र—

नारचन्द्र—

नक्षत्रनीलकण्ठ—

मुनिनेत्रसिंह—

नेसिचन्द्र—

मं० नेसिचन्द्र—

ध्वजसूचक

विद्यमानबीसतीर्थकर

पद्मावती पूजा

प्रमाणप्रमेयकलिका

प्रतिष्ठादीपक

रत्नत्रय पूजा

सिद्धान्तसारसंग्रह

विद्यापहारस्तोत्रटीका

पिंगलशास्त्र

सिद्धान्तमञ्जूषिका

परिभाषेन्दुसोहर

शार्ङ्गधरसहिताटीका

कथारत्नसागर

ज्योतिषसारसूत्रटिप्पण

नारकन्दज्योतिषशास्त्र

नीलकण्ठराजिक

शब्दशोभा

सप्तनयाषडोष

द्विसंभानकाम्यजीका

सुप्रभातस्तुक

श्रीपथदानकथा

शष्टकपूजा

कथाकोश ( धारापाना-

कथा कोश )

नाम की कथा

१८८

पूजा ५३५

६५५, ७८३

६५५

१३७, ५७५

५२१

५८४

४७

५३६

३११

१७०

२६१

३०६

२२०

२८३

२८५

२८५

१४०

१७२

६३३

२१८

५६०

२१८

२३१

| ग्रंथकार का नाम   | ग्रंथ नाम           | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम        | ग्रंथ नाम                   | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|-------------------|---------------------|------------------------|------------------------|-----------------------------|------------------------|
|                   | धन्यकुमार चरित्र    | १७३                    |                        | सिद्धपूजा                   | १३७                    |
|                   | धर्मोपदेशभावकाचार   | ९४                     |                        | स्तोत्र                     | ५७५                    |
|                   | निशिभोजनकथा         | २३१                    | पद्मानाभ—              | माधवती                      | २०९                    |
|                   | पात्रदानकथा         | २३३                    | पद्मानाभकायस्थ—        | यशोधरचरित्र                 | १०९                    |
|                   | प्रीतिकरचरित्र      | १०२                    | प्रद्युम्नप्रभदेव—     | पार्वनाथस्तोत्र             | ४०५                    |
|                   | श्रीपालचरित्र       | २००                    |                        | ६१४, ७०२, ७४५               |                        |
|                   | सुदर्शनचरित्र       | २०८                    |                        | लक्ष्मीस्तोत्र              | ४१४, ४२३               |
| पंजाननभट्टाचार्य— | सिद्धास्तमुक्तावली  | २७०                    |                        | ४२६, ४३२, ५६६, ५७२,         |                        |
| पद्मनंदि ।—       | पद्मनन्दिपञ्चशतिका  | ६६                     |                        | ५७४, ५९६, ६४४, ६४८          |                        |
|                   | पद्मनन्दिश्रावकाचार | ६८, ९०                 |                        | ६६३, ६६५, ७०३, ७१९          |                        |
| पद्मनंदि ।—       | धनन्तव्रतकथा        | २१४                    | पद्मप्रभसूरि—          | भुवनदोषक                    | २०९                    |
|                   | कस्तुराष्टक         | ५७४                    | परमहंसपरिव्राजकाचार्य— | सुदूतमुक्तावली              | २०९                    |
|                   | ६३३ ६३७, ६८८        |                        |                        | मेघदूतटीका                  | १०७                    |
|                   | द्वयशत्रुतोषापनपूजा | ४९१                    | पाणिनी—                | पाणिनीव्याकरण               | २६१                    |
|                   | दानचारागत           | ६०                     | पात्रकेशरी—            | पत्रपरीक्षा                 | १३६                    |
|                   | धर्मरसायन           | ६१                     | पार्श्वदेव—            | पद्माचर्यष्टकवृत्ति         | ४०२                    |
|                   | पार्वनाथस्तोत्र     | ५६९                    | पुरुषोत्तमदेव—         | धर्मिधानकोश                 | २७१                    |
|                   | पूजा                | ५६०                    |                        | मिकाण्डशेषाभिधान            | २७५                    |
|                   | नंदाश्वरपत्तिपूजा   | ६३६                    | पूज्यपाद—              | हारावलि                     | २११                    |
|                   | भावनाचौसांक्षी      |                        |                        | इष्टोपदेश (स्वयम्भून्नोत्र) | ६३५, ६३७               |
|                   | ( भावनापद्धति )     | ५७५, ६२८               |                        | परमानन्दस्तोत्र             | ५७४                    |
|                   | रत्नत्रयपूजा        | ५०९                    |                        | श्रावकाचार                  | ९०                     |
|                   | ५७५, ६३६            |                        |                        | समाधिलत                     | १२५                    |
|                   | लक्ष्मीस्तोत्र      | ६३७                    |                        | समाधिशतक                    | १२७                    |
|                   | बीतरामस्तोत्र       | ४२४,                   |                        | सर्वाथसिद्धि                | ४५                     |
|                   | ४३१, ५७५, ६३४, ७३१  |                        | पूर्यदेव—              | यशोधरचरित्र                 | १९०                    |
|                   | सरस्वतीपूजा         | ५५१, ७११               | पूर्यचन्द्र—           | उत्सर्गहरस्तोत्र            | ३८१                    |

| ग्रंथकार का नाम   | ग्रंथ नाम                              | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम                 | ग्रंथ नाम               | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|-------------------|--|------------------------|---------------------------------|-------------------------|------------------------|
| पृथ्वीधराचार्य—   | बामुण्डस्तोत्र                         | ३८८                    | भक्तिनाभ—                       | पट्टिशतकटिप्पण          | ३३६                    |
|                   | भुवनेश्वरीस्तोत्र<br>( सिद्धमहामंत्र ) | ३४६                    |                                 | भट्टशंकर—               | वैश्विनोद              |
| प्रभाचन्द्र—      | भारतानुशासनटीका                        | १०१                    | भट्टोजीदीक्षित—                 | सिद्धशतकीमुदी           | २६७                    |
|                   | भाराधनासारप्रबंध                       | २१६                    | भट्टोत्पल—                      | सद्युजातक               | २६१                    |
|                   | भारिपुराणटिप्पण                        | १४३                    |                                 | बृहन्जातक               | २६१                    |
|                   | उत्तरपुराणटिप्पण                       | १४३                    | भद्रबाहु—                       | षटपंचालिकावृत्ति        | २६२                    |
|                   | क्रियाकलापटीका                         | ५३                     |                                 | नवग्रहपूजाविधान         | ४६४                    |
|                   | तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर                  | २१                     |                                 | भद्रबाहुसंहिता          | २८५                    |
|                   | अभ्यसं ग्रहवृत्ति                      | ३४                     | भर्तृहरि—                       | ( निमित्तज्ञान )        | ४८०, ५००               |
|                   | नागकुमारचरित्रटीका                     | १०६                    |                                 | नीतिशतक                 | ३२३                    |
|                   | न्यायकुमुदचन्द्रिका                    | १३५                    |                                 | वरांगचरित्र             | १६५                    |
|                   | प्रमेयकमनमार्तण्ड                      | १३८                    |                                 | वेराम्यशतक              | ११७                    |
|                   | रत्नकरण्डभावाकाचार-<br>टीका            | ८२                     |                                 | भर्तृहरिशतक             | ३३३, ७२५               |
|                   | यशोधरचरित्रटिप्पण                      | १६२                    | भागचंद्र—                       | महावीराष्टक             | ४१३, ४२६               |
| समाधिशतकटीका      | १२७                                    | भानुकीर्त्ति—          | रोहिणीप्रतक्या                  | २३६                     |                        |
| स्वयंभूरतोत्रटीका | ४३४                                    | भानुजीदीक्षित—         | सिद्धचक्रपूजा                   | ५३३                     |                        |
| भ० प्रभाचंद्र—    | कलिकुण्डपारबर्ननाथपूजा                 | ४६७                    | भानुजीदीक्षित—                  | घमरकीवटीका              | २७४                    |
|                   | मुनिमुक्तछन्द                          | ५५७                    | भानुदत्तमिश्र—                  | रसमंजरी                 | ३५६                    |
|                   | सिद्धचक्रपूजा                          | ५५३                    | तीर्थमुनि—                      | न्यायमाला               | ११५                    |
| बहुमुनि—          | सामायिकपाठ                             | ६४                     | परमहंसपरिब्राजकाचार्यश्रीभारती— |                         |                        |
| बागचन्द्र—        | सर्कभाषाप्रकाशिका                      | १३२                    | तीर्थमुनी—                      | न्यायमाला               | ११५                    |
| महादेव—           | अभ्यसं ग्रहवृत्ति                      | ३४                     | भारवी—                          | किराताजुनीय             | १६१                    |
|                   | परमात्मप्रकाशटीका                      | १११                    | भावशर्मा—                       | सद्युसनपनटीका           | ५३३                    |
| महासेन—           | धामराणीपूजा                            | ५६४                    | भास्कराचार्य—                   | सांसावती                | ३६८                    |
|                   | रत्नत्रयकामहार्थ व<br>अमावली           | ७८१                    | भूपालकवि—                       | भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्र | ४११                    |
|                   |  |                        |                                 | ४२५, ५७२, ५६५           | ६०५, ६३३               |

| ग्रंथकार का नाम           | ग्रंथ नाम             | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|---------------------------|-----------------------|------------------------|
| पं० अंगल (संप्रदाय कर्ता) | धर्मरत्नाकर           | ६२                     |
| कविभद्र—                  | शेषपालपूजा            | १८६                    |
| अक्षयकीर्ति—              | अनंतव्रतविधान         | २१४                    |
|                           | बोडकाकरणविधान         | ५१४                    |
| अक्षयपाल—                 | मदनविनोद              | ३००                    |
| अजमिभ—                    | भावप्रकाश             | २४६                    |
| अक्षयवदनसरस्वती—          | सिद्धान्तविन्दु       | २७०                    |
| अक्षयसिंह—                | योगचिन्तामणि          | ३०१                    |
| अनन्तेश्वरप्रियाम—        | भुतबोधटीका            | ३१५                    |
| अश्लिलाशयसूत्रि—          | रघुवंशटीका            | १६३                    |
|                           | शिशुपालवधटीका         | १६६                    |
| अश्लिलाभूषण—              | वशलाशयज्ञतोषाण        | ४८६                    |
| अश्लिलाशयसूत्रि—          | नाराकुमारचरित्र       | १७५                    |
|                           | नैरवपद्यावतीकल्प      | ३४६                    |
|                           | सञ्जनचित्तवस्त्रम्    | ३३७                    |
|                           |                       | ५७७                    |
|                           | स्याद्वदमंजरी         | १४१                    |
| अज्ञादेव—                 | मुहूर्तदीपक           | २६०                    |
|                           | सिद्धान्तयुक्तावति    | १४०                    |
| अज्ञासेनाचार्य—           | प्रद्युम्नचरित्र      | १८०                    |
| अज्ञाशयकवि—               | अनेकार्थचरित्रनिर्जरो | २७१                    |
| अ० अज्ञाचन्द्र—           | त्रिलोकतिलकस्तोत्र    | ६८२, ७१२               |
|                           | पंचमेरूपूजा           | ६०७                    |
|                           | पद्यावतीछन्द          | ५६०, ६०७               |
| अज्ञाधर—                  | मंत्रमहोदधि           | ३५१, ५७७               |
|                           | स्वर्णकिर्णणविधान     | ४२८                    |
| अज्ञाभट्टी—               | सारस्वतप्रक्रियाटीका  | २६७                    |
| अज्ञाधर—                  | बिस्वप्रकाश           | २७७                    |

| ग्रंथकार का नाम       | ग्रंथ नाम            | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|-----------------------|----------------------|------------------------|
| माध—                  | कल्प व धामुनेवप्रमेद | २७७                    |
| माधनदि—               | सामुपालवध            | १८६                    |
|                       | अनुविद्यतितोषकर      | जयमाल ३८८, ४६६         |
|                       |                      | ५७५                    |
| माधिकायनदि—           | परीक्षामुख           | १३६                    |
| माधिकायभट्ट—          | बैद्यामृत            | ३०५                    |
| माधिकायपुरि—          | नलोदयकाव्य           | १७४                    |
| माधवचन्द्रवैविद्यदेव— | त्रिलोकसारवृत्ति     | ३२२                    |
|                       | क्षपणसारवृत्ति       | ७                      |
| माधवदेव—              | न्यायसार             | १३५                    |
| मानतुंगाचार्य—        | भक्ताभारमन्तोत्र     | ४०७,                   |
|                       |                      | ४२५, ४२६, ४३१, ४६६,    |
|                       |                      | ५६६, ६०३, ६०५, ६१६,    |
|                       |                      | ६२८, ६३४, ६३७, ६३६,    |
|                       |                      | ६४४, ६४८, ६५१, ६५२,    |
|                       |                      | ६६४, ६६५, ६७०, ६८१,    |
|                       |                      | ६८५, ६९१, ७०३, ७०५,    |
|                       |                      | ७०६, ७०७, ७४१          |
| सुमिभद्र—             | शांतिनाथस्तोत्र      | ४१७, ७१५               |
| पं० मेघाश्री—         | अष्टांगोपाख्यात      | २१५                    |
|                       | धर्मसंयहप्रावकाचार   | ६२                     |
| अ मेरूचन्द्र—         | अनन्तचतुर्वशीपूजा    | ६०७                    |
| मोहन—                 | कलाविधान             | ४६६                    |
| यशःकीर्ति—            | अष्टाङ्गकाकथा        | ६४५                    |
|                       | धर्मशर्मान्मुदयटीका  | १७४                    |
|                       | प्रबोधसार            | ३३१                    |
| यशोवन्दि—             | धर्मचक्रपूजा         | ४६१, ५१५               |
|                       | पञ्चपरमेष्ठोपूजाविधि | ५०९,                   |
|                       |                      | ५०६, ५१५               |

| ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम                      | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम           | ग्रंथ नाम               | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|-----------------|--------------------------------|------------------------|---------------------------|-------------------------|------------------------|
| यशोविजय—        | कलिकुण्डपादसर्वनाथपूजा         | ६५८                    | राजमल्ल—                  | ब्रह्मात्मकमलमार्त्तण्ड | १२६                    |
| योगदेव—         | तत्त्वार्थवृत्ति               | २२                     |                           | जम्बूस्वामीचरित्र       | १६६                    |
| रघुनाथ—         | ताकिकाशिरोमणि                  | १३३                    | राजशेखर—                  | लाटीसंहिता              | ८४                     |
|                 | रघुनाथविलास                    | ३१२                    |                           | कर्पूरमंजरी             | ३१६                    |
| साधुरणमल्ल—     | धर्मचक्रपूजा                   | ४६२                    | राजमिह—                   | पार्ष्वमहिम्नस्तोत्र    | ४०६                    |
| रत्नशेखरसूरि—   | छंदकोश                         | ३०६                    | राजसेन—                   | पार्ष्वनाथस्तोत्र       | ५६६, ७३७               |
| रत्नकीर्त्ति—   | रत्नत्रयविधानकथा               | २४२                    | राजहंसोपाध्याय—           | षष्ठ्याधिकलातकटीका      | ४४                     |
|                 | रत्नत्रयविधानपूजा              | ५३०                    | मुमुक्षुरामचन्द्र—        | पुण्याथवकथाकोष          | २३३                    |
| रत्नचन्द्र—     | जिनगुणसंपत्तिपूजा              | ४७७, ५१०               | रामचंद्राश्रम—            | सिद्धान्तचन्द्रिका      | २६८                    |
|                 | पंचमेरुपूजा                    | ५०५                    | रामबाजपेय—                | समरसार                  | २६४                    |
|                 | पुष्पाजलिप्रतपूजा              | ५०८                    | रायमल्ल—                  | शैलेश्वरमोहनकवच         | ६६०                    |
|                 | मुधोमचरित्र                    | ( भोमचरित्र ) १८५, २०६ | रुद्रभट्ट—                | वैद्यजीवनटीका           | ३०४                    |
| रत्ननेदि—       | नन्दीश्वरद्वीपपूजा             | ४६२                    | रोमकाचार्य—               | शृङ्गारतिलक             | ३५६                    |
|                 | पल्पविधानपूजा                  | ५०६, ५०६, ५१३          | लकानाथ—                   | जन्मप्रदीप              | २८१                    |
|                 | भद्रबाहुचरित्र                 | १८३                    | लक्ष्मण ( अमरसिंहात्सज )— | अर्थप्रकाश              | २६६                    |
|                 | महोपालचरित्र                   | १८६                    |                           | लक्ष्मणोत्सव            | ३०३                    |
| रत्नपाल—        | सोलहकारणकथा                    | ६६५                    | लक्ष्मीनाथ—               | निगलप्रदीप              | ३१३                    |
| रत्नभूषण—       | सिद्धपूजा                      | ५५४                    | लक्ष्मीसेन—               | अग्निपेकविधि            | ४५८                    |
| रत्नशेखर—       | गुणस्थान क्रमारोहसूत्र         | ८                      |                           | कर्मचूरव्रतोद्यापनपूजा  | ४६४, ५१७               |
|                 | समवसरणपूजा                     | ५३७                    |                           | चिन्तामणि पार्ष्वनाथ    |                        |
| रत्नप्रभसूरि—   | प्रमाणनयतत्त्वावलोकालंकार टीका | १३७                    |                           | पूजा एवं स्तोत्र        | ४२३                    |
| रत्नाकर—        | भारतमनिदास्तवन                 | ३८०                    |                           | चिन्तामणिलक्षण          | ७६१                    |
| रविषेणाचार्य—   | पद्मपुराण                      | १४८                    | लघुकवि—                   | सप्तविपूजा              | ५४८                    |
| राजकीर्त्ति—    | प्रतिष्ठावर्ष                  | ५२०                    | ललितकीर्त्ति—             | सरस्वतीस्तवन            | ४१६                    |
|                 | षोडशकारणव्रतोद्यापनपूजा        | ५४३                    |                           | प्रक्षयदशमीकथा          | ६६५                    |
|                 |                                |                        |                           | प्रनंतव्रतकथा           | ६४५, ६६५               |



ग्रंथकार का नाम

ग्रंथ नाम

ग्रंथ सूची की पत्र सं०

ग्रंथकार का नाम

ग्रंथ नाम

ग्रंथ सूची की पत्र सं०

|                 |                        |          |                 |                      |     |
|-----------------|------------------------|----------|-----------------|----------------------|-----|
|                 | ध्यानासपंचमीकथा        | ६४५      | वराहमिहिर—      | एट्टंचासिका          | २६२ |
|                 | कजिकाप्रतोद्यापनपूजा   | ४६८      | भ० बद्धमानदेव—  | वरांगचरित्र          | १६४ |
|                 | बौसठशिवकुमारका         |          | बद्धमानसूरि—    | लम्नशास्त्र          | २६१ |
|                 | कांडी की पूजा          | ५१४      | बल्लाल—         | भोजप्रबन्ध           | १८५ |
|                 | जिनचरित्रकथा           | ६४५      | वसुनन्दि—       | देवागमस्तोत्रटीका    | ३६५ |
|                 | दशालसणीकथा             | ६६५      |                 | प्रतिष्ठापाठ         | ५२१ |
|                 | पल्यविधानपूजा          | ५०६      |                 | प्रतिष्ठासारसंग्रह   | ५२२ |
|                 | पुण्यांजलिग्रन्थकथा    | ६६५      | वाग्भट्ट—       | मूलाचारटीका          | ७६  |
|                 |                        | ७६४      |                 | नेमिनिर्वाण          | १७७ |
|                 | रत्नत्रयग्रन्थकथा      | ६४५, ६६५ | वादिचन्द्रसूरि— | वाग्भट्टालंकार       | ३१२ |
|                 | रोहिणीग्रन्थकथा        | ६४५      |                 | कर्मदहनपूजा          | ५६० |
|                 | षोडशकारणकथा            | ६४५      | बादिगज—         | ज्ञानमूर्षोदयनाटक    | ३१६ |
|                 | समवसरणपूजा             | ५४६      |                 | पवनदूतकाव्य          | १७८ |
|                 | सुगंधदशमीकथा           | ६४५      |                 | एकीभावस्तोत्र        | ३८२ |
|                 | बशलक्षणकथा             | २२७, २४२ |                 | ४२५, ४२७, ५७२, ५७४,  |     |
|                 | सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका | २६६      |                 | ५६५, ६०५, ६३३, ६३७   |     |
|                 | वैद्यजीवन              | ७१५      |                 | ६४४, ६४१, ६५२, ६५७,  |     |
|                 | पूर्वमीमांसाथर्षप्रकरण |          |                 | ७२१                  |     |
|                 | संग्रह                 | १३७      |                 | गुर्वाष्टक           | ६५७ |
| लोकसेन—         | वैद्यजीवन              | ३०३      |                 | पार्ष्वनाथचरित्र     | १७८ |
| लोकेशकर—        | भक्तिरत्नाकर           | ८००      | वादीभसिंह—      | यशोधरचरित्र          | १६० |
| लोलिम्बराज—     | लघुसिद्धान्तश्रीमुदी   | २६३      |                 | क्षत्रचूडामणि        | १६२ |
| लोगाक्षिभास्कर— | सारसंग्रह              | १४०      | वामदेव—         | पंचकल्पसूक्तपूजा     | ५०० |
|                 | एकाक्षरीकोष            | २७०      |                 | त्रिलोकदीपक          | ३२० |
| लोलिम्बराज—     | योगदात                 | ३०२      | वासवसेन—        | भावसंग्रह            | ७८  |
| बनमालीभट्ट—     | शब्दरूपिणी             | २६४      | बाहददास—        | सिद्धान्तत्रिलोकदीपक | ३३३ |
| बरदराज—         | भ्रुतबोध               | ३१५      |                 | यशोधरचरित्र          | १६० |
|                 | सर्वार्थसाधनी          | २७८      |                 | सशिपातनिबान          | ३०६ |

| ग्रंथकार का नाम      | ग्रंथ नाम              | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम             | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|----------------------|------------------------|------------------------|-----------------|-----------------------|------------------------|
| त्रिलयकीर्ति—        | चन्दनवस्त्रिपत्रपूजा   | ५०६                    |                 | तेरहद्वीपपूजा         | ४८४                    |
| भा० विद्यानन्दि—     | भट्टसहस्री             | १२६, १३०               |                 | पद                    | ५६१                    |
|                      | घातपरीक्षा             | १२६                    |                 | पूजाष्टक              | ५१३                    |
|                      | पत्रपरीक्षा            | १३६                    |                 | मार्गान्तु गीगिरिमंडल |                        |
|                      | पंचनयस्कारस्तोत्र      | ४०१                    |                 | पूजा                  | ५२६                    |
|                      | प्रमाणपरीक्षा          | १३७                    |                 | रेवानदीपूजा           | ५३२                    |
|                      | प्रमाणमीमांसा          | १३८                    |                 | शत्रुञ्जयगिरिपूजा     | ५१३                    |
|                      | युक्त्यनुशासनटीका      | १३६                    |                 | सप्तविपूजा            | ५४८                    |
|                      | श्लोकवातिक             | ४४                     |                 | सिद्धकूटपूजा          | ५१६                    |
| सुमुञ्जुविद्यानन्दि— | सुदर्शनचरित्र          | २०६                    | विश्वसेन—       | क्षेत्रपालपूजा        | ४६७                    |
| अपाध्यायविद्यापति—   | चिकित्साजनम्           | २६८                    |                 | परावतिक्षेत्रपालपूजा  | ५१६                    |
| विद्याभूषणसूरी—      | चितामरणपूजा (बृहद्)    | ४७५                    |                 | परावतिक्षेत्रपूजा     | ५४१                    |
| धिनयचन्द्रसूरी—      | गजसिंहकुमारचरित्र      | १६३                    |                 | समवसरराष्ट्रोत्र      | ४१६                    |
| धिनयचन्द्रमुनि—      | चतुर्दशसूत्र           | १४                     | विष्णुभट्ट—     | पट्टरीति              | १३६                    |
| धिनयचन्द्र—          | द्विसंघानकाव्यटीका     | १७२                    | विष्णुशर्मा—    | पञ्चतन्त्र            | ३३०                    |
|                      | भूपालचतुर्विंशतिका     |                        |                 | पञ्चाख्यान            | २३२                    |
|                      | स्तोत्रटीका            | ४१२                    |                 | हितोपदेश              | ३४५                    |
| धिनयरत्न—            | विदग्धमुखमंडनटी. का    | १६७                    | विष्णुसेनमुनि—  | समवसरराष्ट्रोत्र      | ४१६, ४२५               |
| धिमलकीर्ति—          | धर्मप्रश्नोत्तर        | ६१                     | वीरनन्दि—       | आचारसार               | ४६                     |
|                      | मुखसपत्तिविधानकथा      | २४५                    |                 | चन्द्रप्रभचरित्र      | १६४                    |
| विश्वेकनन्दि—        | त्रिमंगीसारटीका        | ३२                     | वीरसेन—         | भावकप्रायश्चित्त      | ८६                     |
| विरवकीर्ति—          | भक्तामरत्रतोद्यापनपूजा | ५२३                    | तुपाचार्य—      | उससर्गार्थविवरण       | ५२                     |
| विश्वभूषण—           | मठाईद्वीपपूजा          | ४४५                    | वेदव्यास—       | नवग्रहस्तोत्र         | ६४६                    |
|                      | प्राठकोढमुनिपूजा       | ४६१                    | वैजलभूपति—      | प्रबोधचंद्रिका        | ३१७                    |
|                      | इन्द्रध्वजपूजा         | ४६२                    | बृहस्पति—       | सरस्वतीस्तोत्र        | ४२०                    |
|                      | कलदाविधि               | ४६६                    | शंकरभगति—       | बालबोधिनी             | १३८                    |
|                      | कुण्डलगिरिपूजा         | ४६७                    | शंकरभट्ट—       | शिवरात्रिउद्यापन      |                        |
|                      | गिरिनारक्षेत्रपूजा     | ४६६                    |                 | विविक्था              | २४७                    |

| ग्रंथकार का नाम  | ग्रंथ नाम               | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम           | ग्रंथ सूची की पत्र सं०  |
|------------------|-------------------------|------------------------|-----------------|---------------------|-------------------------|
| शंकराचार्य—      | भानन्दलहरी              | ६०८                    |                 | गणधरवल्लयपूजा       | ६६०                     |
|                  | अपराधसूदनस्तोत्र        | ६६२                    |                 | चन्दनषष्ठिप्रतपूजा  | ४७३                     |
|                  | गोविन्दाष्टक            | ७३३                    |                 | चन्दनाचरित्र        | १६४                     |
|                  | जगन्नायाष्टक            | ३८६                    |                 | चतुर्विंशतिजिनाष्टक | ५७८                     |
|                  | दशगणामूर्तिस्तोत्र      | ६६०                    |                 | चन्दप्रभचरित्र      | १६५                     |
|                  | हरिनाममाला              | ३६७                    |                 | चारित्रशुद्धिविधान  | ४७५                     |
| शंभूसाधु—        | जिनशतटीका               | ३६०                    |                 | चिन्तामणिपार्वतीनाथ | पूजा ६४५                |
| शंभूराम—         | नेमिनाथपूजाष्टक         | ४६६                    |                 | जीवन्धरचरित्र       | १७०                     |
| शाकटायन—         | शाकटायनव्याकरण          | २६५                    |                 | तत्ववर्सान          | २०                      |
| शान्तिदास—       | अनंतचतुर्दशीपूजा        | ४५६                    |                 | तोसचौबीसीपूजा       | ५३७                     |
|                  | गुरुस्तवन               | ६५७                    |                 | तेरट्टीपपूजा        | ४८३                     |
| शाङ्गधर—         | रसमंजरी                 | ३०२                    |                 | पंचकल्याणपूजा       | ५०२                     |
|                  | शाङ्गधरसंहिता           | ३०५                    |                 | पंचपरमेष्ठीपूजा     | ५०२                     |
| पं० शाली—        | नेमिनाथस्तोत्र          | ३०६, ७५७               |                 | पल्लवप्रतीघापन      | ५०७, ५३८                |
| शालिनाथ—         | रसमञ्जरी                | ३०२                    |                 | पाडवपुराण           | १५०                     |
| श्या० शिवकौटि—   | रत्नमाला                | ८३                     |                 | पुण्याजलिप्रतपूजा   | ५०८                     |
| शिवजीलाल—        | अभिधानमार               | २७२                    |                 | श्रेणिकचरित्र       | २०३                     |
|                  | पंचकल्याणकपूजा          | ४८६                    |                 | सज्जनचित्तबल्लभ     | ३३७                     |
|                  | रत्नत्रयगुणकथा          | २३७                    |                 | साङ्गद्वयदीपपूजा    | ( भद्रार्द्धीपूजा ) ४५५ |
|                  | चौडशकारणभावनावृत्ति     | ८८                     |                 | सुभाषितार्णव        | ३४१                     |
| शिवधर्मा—        | कान्ठव्याकरण            | २५६                    | शोभनमुनि—       | सिद्धचक्रपूजा       | ५५३                     |
| शिवादित्य—       | सप्तपदार्थी             | १४०                    | श्रीचन्द्रमुनि— | जिनस्तुति           | ३६१                     |
| शुभचन्द्राचार्य— | ज्ञानार्णव              | १०६                    | श्रीधर—         | पुराणसार            | १५१                     |
| शुभचन्द्र—II     | महाह्निकाकथा            | २१५                    |                 | भविष्यदत्तचरित्र    | १८४                     |
|                  | करकण्ठचरित्र            | १६१                    |                 | सुभमालिका           | ५७४                     |
|                  | कर्मदहनपूजा             | ४६५, ५३७               |                 | श्रुतावतार          | ३७५                     |
|                  |                         | ६४५                    |                 |                     |                         |
|                  | कान्तिकेयानुप्रेक्षणीका | १०४                    |                 |                     |                         |

| ग्रंथकार का नाम  | ग्रंथ नाम                 | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|------------------|---------------------------|------------------------|
| नागराज—          | भावशतक                    | ३३४                    |
| श्रीनिधिसंशुद्ध— | जातककर्मपद्धति            | २०१                    |
| श्रीपति—         | ज्योतिषयटलमाला            | ६७२                    |
| श्रीभूषण—        | अनन्तव्रतपूजा             | ४५६, ४१६               |
|                  | चारित्रशुद्धिविधान        | ४७४                    |
|                  | पाण्डवपुराण               | १५०                    |
|                  | भक्तामरउद्यापनपूजा        | ५२३, ५४०               |
|                  | हरीवंधोपुराण              | १५७                    |
|                  | पुष्पांजलीव्रतकथा         | २३४                    |
|                  | अनंतव्रतकथा               | २१४                    |
|                  | असोकरोहिणीकथा             | २१६                    |
|                  | आकाशपंचमीव्रतकथा          | २१६                    |
|                  | चन्दनपङ्क्तिव्रतकथा       | २२४                    |
|                  |                           | ५१४, ५१७               |
|                  | जिनसहस्रनामटीकां          | ३६३                    |
|                  | मानसार्थविगच्छटीका        | १०७                    |
|                  | तत्त्वार्थसूत्रटीका       | २८                     |
|                  | दशवक्षस्रव्रतकथा          | २२७                    |
|                  | पत्यविधानव्रतोपाख्यान कथा | २३३                    |
|                  | मुक्तावलिप्रतकथा          | २३६                    |
|                  | मेघमालाव्रतकथा            | ५१४                    |
|                  | यशस्तिवककम्प्यूटीका       | १८७                    |
|                  | यशोधरचरित्र               | १६२                    |
|                  | रत्नत्रयविधानकथा          | २३७                    |
|                  | रविव्रतकथा                | २३७                    |
|                  | विष्णुकुमारसुनिकथा        | २४०                    |

| ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम            | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|-----------------|----------------------|------------------------|
|                 | व्रतकथाकोष           | २४१                    |
|                 | षट्पाह्वदटीका        | ११६                    |
|                 | श्रुतस्कंधपूजा       | ५४७                    |
|                 | शोडशकारणपूजा         | ५१०                    |
|                 | सरस्वतीस्तोत्र       | ४२०                    |
|                 | सिद्धचक्रपूजा        | ५५३                    |
|                 | सुगन्धवशाभीकथा       | ५१४                    |
|                 | अष्टांगसम्बन्धदर्शन  | २१५                    |
|                 | ऋषभनाथचरित्र         | १६०                    |
|                 | कर्मविपाकटीका        | ५                      |
|                 | तत्त्वार्थसारदीपक    | २३                     |
|                 | द्वादशानुप्रेक्षा    | १०६                    |
|                 | धर्म्यकुमारचरित्र    | १७२                    |
|                 | परमात्मराजस्तोत्र    | ४०३                    |
|                 | पुराणसारसंग्रह       | १५१                    |
|                 | प्रश्नोत्तरोपासकाचार | ७१                     |
|                 |                      | ६१                     |
|                 | पार्ष्वनाथचरित्र     | १७६                    |
|                 | मल्लिनाथपुराण        | १५२                    |
|                 | मूलाचारप्रदीप        | ७६                     |
|                 | यशोधरचरित्र          | १२८                    |
|                 | वर्द्धमानपुराण       | १५३                    |
|                 | व्रतकथाकोश           | २४२                    |
|                 | शांतिनाथचरित्र       | १६८                    |
|                 | श्रीपालचरित्र        | २०१                    |
|                 | तन्त्राधिष्ठावलि     | ३३८, ३४२               |
|                 | सिद्धान्तसारदीपक     | ४६                     |
|                 | सुवर्षनचरित्र        | २०८                    |

सकलकीर्त्ति—

| ग्रंथकार का नाम    | ग्रंथ नाम                | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम  | ग्रंथ नाम              | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|--------------------|--------------------------|------------------------|------------------|------------------------|------------------------|
| मुनिसकलकीर्ति—     | नंदीश्वरपूजा             | ७६१                    |                  | नमस्कारमंत्रकल्पविधि   |                        |
| सकलचन्द्र—         | चैत्यबंधना               | ६६८                    |                  | तर्हित                 | ३४६                    |
|                    | दर्शनस्तोत्र             | ५७४                    | सिद्धनागार्जुन—  | कक्षपुट                | २६७                    |
| सकलभूषण—           | उपदेशरत्नमाला            | ५०                     | सिद्धसेनदिवाकर—  | जिनसहस्रनामस्तोत्र     | ३६२                    |
|                    | गोममटसारटीका             | १०                     |                  | वर्द्धमानद्वात्रिंशिका | ४१५                    |
| सदानंदगणि—         | सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति | २६६                    | सुखदेव—          | सन्मतितर्क             | १४०                    |
| आचार्यसभंतभद्र—    | श्रातमीमांसा             | ६४७                    | वर्णासुखसागर—    | प्रायुर्वेदमहोदधि      | २६७                    |
|                    | जिनशतकार्लकार            | ३६१                    | सुधासागर—        | मुक्तावलीपूजा          | ५२७                    |
|                    | देवागमस्तोत्र            | ३६४                    |                  | चक्रवत्याणकपूजा        | ५००,                   |
|                    |                          | ४२५, ५७५, ७२०          |                  |                        | ५१६, ५३७               |
|                    | शुकन्यनुशासन             | १३० १३६                | सुन्दरविजयगणि—   | परमसतस्थानकपूजा        | ५१६                    |
|                    |                          | ६४७                    | सुमतिकीर्ति—     | सौभाग्यपंचमीकथा        | २५५                    |
|                    | रत्नकरणश्रावकाबार        |                        | सुमतित्रय—       | कर्मप्रकृतिटीका        | ३                      |
|                    |                          | ८१, ६६१, ७६५           | सुमतित्रय—       | चारित्रशुद्धिविधान     | ४७५                    |
|                    | बृहद्वैश्वदेवस्तोत्र     | ५७२, ६२८               | सुमतिविजयगणि—    | रघुवंशटीका             | १६४                    |
|                    | सर्मतभद्रस्तुति          | ५७८                    | सुमतिसागर—       | शैलोक्यसारपूजा         | ४८५                    |
|                    | सहस्रनामखण्ड             | ४२०                    |                  | दशलक्षरात्रतपूजा       | ४८६,                   |
|                    | स्वयंभूस्तोत्र           | ४२५, ४३३,              |                  |                        | ५४०                    |
|                    |                          | ५७४, ५६५, ६३३,         |                  | षोडशकारणपूजा           | ५१७                    |
|                    |                          | ७२०                    |                  |                        | ५५७                    |
| समयसुन्दरगणि—      | रघुवंशटीका               | १६४                    | सुरेन्द्रकीर्ति— | अनन्तजिनपूजा           | ४५६                    |
|                    | वृत्तरत्नाकरखंडटीका      | ३१४                    |                  | अष्टाह्निकापूजाकथा     | ४६०                    |
|                    | शंभुप्रद्युम्नप्रबंध     | १६७                    |                  | छंदकीयकवित्त           | ३५५                    |
| समयसुन्दरोपाध्याय— | कल्पसूत्रटीका            | ७                      |                  | ज्ञानपंचविंशतिका       |                        |
| सहसकीर्ति—         | शैलोक्यसारटीका           | ३२३                    |                  | प्रतोत्थापन            | ४८१                    |
| कविसारस्वत—        | शिलोक्यकोश               | २७०                    |                  | (श्रुतस्कंधपूजा)       | ५४७                    |
| सिंहतिलक—          | वर्द्धमानविद्याकल्प      | ३५१                    |                  | ज्येष्ठजिनवरपूजा       | ५१६                    |
| सिद्धनन्दि—        | धर्मोपदेशपीपुषश्रावका    |                        |                  | पंचकल्पाणकपूजा         | ४६६                    |
|                    |                          |                        |                  | पंचमासवतुर्दशीपूजा     | ५०४                    |
|                    |                          |                        |                  |                        | ५४०                    |

| ग्रंथकार का नाम     | ग्रंथ नाम                | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम  | ग्रंथ नाम                | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|---------------------|--------------------------|------------------------|------------------|--------------------------|------------------------|
|                     | नेमिनाथपूजा              | ४६६                    |                  | छंदोचलक                  | ३०६                    |
|                     | सुखसंपत्तिप्रतोद्यान     | ५५५                    |                  | पंचमीप्रतोद्यान          | ५०४                    |
| सुरेश्वराचार्य—     | पंचिकरणवाक्तिक           | २६१                    |                  | भक्तामरस्तोत्रटीका       | ४०६                    |
| सुयशकीर्ति—         | पंचकल्याणकपूजा           | ५००                    |                  | योगवितानरिण              | ३०१                    |
| सुल्हण कवि—         | वृत्तरत्नाकरटीका         | ३१४                    |                  | लघुनाममाला               | २७६                    |
| द्वैतज्ञ पं० सूर्य— | रामकृत्याकाव्य           | १६४                    |                  | लब्धिविधानपूजा           | ५३३                    |
| आ० सोमकीर्ति—       | प्रद्युम्नचरित्र         | १८१                    |                  | श्रुतबोधश्रुति           | ३१५                    |
|                     | असम्यक्सनकथा             | २५०                    | महाकविहरिचन्द्र— | धर्मशास्त्रम्युदय        | १७४                    |
|                     | समयशरणापूजा              | ५४६                    | हरिभद्रसूरि—     | क्षेत्रसमासटीका          | ५४                     |
| सोमदत्त—            | बडोसिद्धपूजा             |                        |                  | योगविदुप्रकरण            | ११६                    |
|                     | ( कर्मबहनपूजा )          | ६३६                    |                  | षट्दर्शनसमुच्चय          | १३६                    |
| सोमदेव—             | अध्यात्मतरंगिणी          | ६६                     | हरिरामदास—       | पिगलछंदशास्त्र           | ३११                    |
|                     | नीतिवचक्यामृत            | ३३०                    | हरिषेण—          | नन्दीश्वरविधानकथा        | २२६                    |
|                     | यथास्तिलकचम्पू           | १८७                    |                  |                          | ५१४                    |
| सोमदेव—             | सूतक वर्णन               |                        |                  | कथाकोश                   | २१६                    |
| सोमप्रभाचार्य—      | मुक्तावलिप्रतकथा         | २३६                    | हेमचन्द्राचार्य— | अभिधानकित्तामणि          |                        |
|                     | सिन्दूरप्रकरण            | ३४०                    |                  | नाममाला                  | २७१                    |
|                     | सूक्तिमुक्तावलि          | ३४२, ६३५               |                  | अनेकार्थसंग्रह           | २७१                    |
| सोमसेन—             | त्रिवर्णाचार             | ५८                     |                  | अन्ययोगव्यवच्छेदकद्वावि- |                        |
|                     | दशलक्षराजयमाल            | ७६५                    |                  | शिका                     | ५७३                    |
|                     | पद्यपुराण                | १४८                    |                  | छंदांनुशासनश्रुति        | ३०६                    |
|                     | मेरूपूजा                 | ७६५                    |                  | द्वाश्रयकाव्य            | १७१                    |
|                     | विवाहपद्धति              | ५३६                    |                  | धातुपाठ                  | २६०                    |
| सौभार्यगणि—         | प्राकृतव्युत्पत्तिदीपिका | २६२                    |                  | नेमिनाथचरित्र            | १७७                    |
| हयमीब—              | प्रयत्नसार               | २८८                    |                  | योगशास्त्र               | ११६                    |
| हर्ष—               | नैषधचरित्र               | १७७                    |                  | निगानुशासन               | २७७                    |
| हर्षकल्याण—         | पंचमीप्रतोद्यान          | ५३६                    |                  | वीतरामस्तोत्र            | १३६, ४१६               |
| हर्षकीर्ति—         | अनेकार्थशतक              | २७१                    |                  | चीरद्वान्निशतिक          | १३८                    |
|                     |                          |                        |                  | शब्दानुशासन              | २६४                    |

| ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम         | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|-----------------|-------------------|------------------------|
|                 | शब्दानुशासनवृत्ति | २६४                    |
|                 | हेमीव्याकरण       | २७०                    |
|                 | हेमीव्याकरणवृत्ति | २७०                    |

ग्रंथकार का नाम

ग्रंथ नाम ग्रंथ सूची की पत्र सं०

आखण्ड—

षतुविधातितीर्थकरस्तवन

४३७

तमासूकीजयमाल

४३६

पद

७७७

कोकसार

३५३

पद

७१०

आनन्द—

आनन्दघन—

आनन्दसूरि—

चौबीसजिनमातापिता

स्तवन ६१६

नेमिराजुलवारहमामा ६१८

सायुवंदना ६१७

द्वादशानुप्रेक्षा १०६, ६६१

पूजाष्टक ५१२

समाकितढाल ६२

रसिकप्रिया ६७६, ७४३

मुनिमुवतपुराण १५३

पद ४४५

भोजरासो ७६७

पद ७८६, ७६८

चारुबलचरित्र १६८

त्रिश्लोकस्वरूपव्याख्या ३२२

नागकुमारचरित्र १७६

शूलाचारभाषार ५१६, ५३०

लत्रयपूजा ७६

पद ५८५

श्रादिनाथकीविनती ५६१

७२५

जिनस्तवन ७७६

तत्कार्यसूत्रटीका ३०, ७२६

पार्ष्वनाथकीभारती ५६१

## हिन्दी भाषा

|              |                      |          |
|--------------|----------------------|----------|
| अकूमज्ञ—     | शीलबलीसी             | ७५०      |
| अक्षयराज—    | चौदहगुणस्थानचर्चा    | १६       |
|              | भक्तामरभाषा          | ७५५      |
| अक्षयराम—    | पद                   | ५८५, ५८६ |
| अगरदास—      | कवित्त               | ७४८, ७६८ |
|              | कुंडलिया             | ६६०      |
| अचलकीर्ति—   | मनोरथमाला            | ७६४      |
|              | विषायहारस्तोत्रभाषा  | ४१६      |
|              | ६५०, ६७०, ७७४, ६६४   |          |
|              | मंत्रनवकाररास        | ६४७      |
| अजयराज—      | चारमित्रोंकीकथा      | २२५      |
|              | पद                   | ५८१, ६६७ |
|              | ७२४, ६८०, ५८१        |          |
|              | विनती                | ७७६, ७८३ |
|              | वंसतपूजा             | ७८३      |
| अज्ञाजित—    | हंसतिलकरास           | ७०७      |
| अनन्तकीर्ति— | पद                   | ५८५      |
| अवजद—        | शकुनावनी             | २६२      |
| अभयचन्द—     | पूजाष्टक             | ५१२      |
| अभयचन्दसूरि— | विक्रमचौबोलीचौपई     | २४०      |
| मुनिअभयदेव—  | भंसरापार्ष्वनाथस्तवन | ६१६      |
| अमृतचन्द—    | पद                   | ५८६      |
| अवधू—        | बारहभद्रप्रेक्षा     | ७२२      |

साहआलू—

आशानन्द—

आसकरण—

इन्द्रजीत—

इन्द्रजीत—

सत्सचन्द—

उदयभानु—

उदयराम—

उदयलाल—

श्लेषभदास—

श्लेषभहरी—

कनककीर्ति—

जिनस्तवन

तत्कार्यसूत्रटीका

पार्ष्वनाथकीभारती

| ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम         | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम          | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|-----------------|-------------------|------------------------|-----------------|--------------------|------------------------|
|                 | भक्तियाठ          | ६५१                    |                 | रात्रिभोजनकथा      | २३८                    |
|                 | पद                | ६६४, ७०२               | कुबलयचन्द्र—    | नेमिनाथयुजा        | ७६३                    |
|                 |                   | ७२४, ७७४               | कुराललाभगण्ठि—  | डोलामारुबणीचौपई    | २२५                    |
|                 | विनती             | ६२१                    | कुराल विजय—     | विनती              | ७८२                    |
|                 | स्तुति            | ६०१, ६५०               | केशरगुलाच—      | पद                 | ४४५                    |
| कनकसोम—         | भाद्रकुमारधमाल    | ६१७                    | केशरीसिंह—      | सम्प्रेदाशिवरविवास | ६२                     |
|                 | भाषादभूतिचौडालिया | ६१७                    |                 | वर्द्धमानपुराण     | १५४                    |
|                 | मेघकुमारचौडालिया  | ६१७                    |                 |                    | १६६                    |
| कन्हैयालाल—     | कवित्त            | ७८०                    | केशव—           | कविमुण्डीकथा       | ६२२                    |
| कपांत—          | मोरपिच्छभारीकृष्ण |                        |                 | सदयवच्छलाबालिया    |                        |
|                 | के कवित्त         | ६७३                    |                 | की चौपई            | २५४                    |
| ज. कपूरचन्द्र—  | पद                | ४४५                    | केशवदास—।       | वैद्यमनोत्सव       | ६४६                    |
|                 |                   | ५७०, ६२४               | केशवदास—।।      | कवित्त             | ६४३, ७७०               |
| कबीर—           | दीहा              | ७६०, ७८१               |                 | कविप्रिया          | १६१                    |
|                 | पद                | ७७७, ७६३               |                 | नलसिखवर्णन         | ७७२                    |
|                 | साक्षी            | ७२३                    |                 | रसिकप्रिया         | ७७१, ७६६               |
| कमलकलरा—        | वभणुवाडीस्तवन     | ६१६                    | केशवसेन—        | रामचन्द्रिका       | १६४                    |
| कमलकीर्ति—      | धादिजिनवरस्तुति   |                        | कौरपाल—         | पंचमोत्रतोषापन     | ६३८                    |
|                 | ( गुजराती )       | ४३६                    | कूपाराम—        | चौरासीबोल          | ७०१                    |
| कर्मचन्द्र—     | पद                | ५८७                    |                 | ज्योतिषसारभाषा     | २८४                    |
| कल्याणकीर्ति—   | चाण्डतचरित्र      | १६७                    | कृष्णदास—       | रत्नावलीशतविधान    | ५३१                    |
| किरान—          | छहठाला            | ६७४,                   | कृष्णदास—       | सतसईटीका           | ७२७                    |
| किरानगुलाब—     | पद                | ५८४, ६१४, ६६६          | कृष्णराय—       | प्रद्युम्नरास      | ७२२                    |
| किरानदास—       | पद                | ६४६                    | क्षत्रमल—       | सतियों की सज्जाप   | ४५१                    |
| किरानलाल—       | कृष्णबालविलास     | ४३७                    | क्षत्रसेन—      | विलोकसारदर्पणकथा   | ३२१                    |
| किरानसिंह—      | क्रियाकोशभाषा     | ५३                     |                 |                    | ६८६, ६६०,              |
|                 | पद                | ५६०, ७०४               | क्षानचन्द्र—    | परमात्मप्रकाशबालाच |                        |
|                 |                   |                        |                 | बोधटीका            | १११                    |



| ग्रंथकार का नाम     | ग्रंथ नाम         | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम    | ग्रंथ नाम            | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |           |
|---------------------|-------------------|------------------------|--------------------|----------------------|------------------------|-----------|
| सुराज चन्द्र—       | अनन्तव्रतकथा      | २१४                    | खेतसिंह—           | पद                   | ५८२, ६२४               |           |
|                     | आकाशपंचमीकथा      | २४५                    |                    | ६६४, ६६८, ७०७,       |                        |           |
|                     | आदित्यव्रतकथा     |                        |                    | ७८३, ७६८             |                        |           |
|                     | ( रविवारकथा) ७७५  |                        |                    | नेमोश्वर का बारहमासा |                        |           |
|                     | भारतसिद्धीकी      | ७७७                    |                    |                      | ७६२                    |           |
|                     | उत्तरपुराणभाषा    | १४५                    |                    |                      | नेमोश्वरराजुलकीलहरि    |           |
|                     | चन्दनषष्ठीव्रतकथा | २२४                    |                    |                      |                        | ७७६       |
|                     |                   | २४५, २४६               |                    |                      | नेमोजिनंदब्याहली       | ६४८       |
|                     | जिनपूजापुराणकथा   | २४४                    |                    | खेमचन्द्र—           | चौबीसजिनस्तुति         | ४३७       |
|                     | ज्येष्ठजिनव्रतकथा | २४४                    |                    |                      | पद                     | ५८०, ५८३, |
|                     | धन्यकुमारचरित्र   | १७३, ७२६               |                    |                      | ५६१, ६४६               |           |
|                     | दशलक्षकथा         | २४४, ७३१               |                    | गङ्ग—                | पद्यसग्रह              | ७१०       |
|                     | पद्मपुराणभाषा     | १४६                    |                    | गंगादास—             | रसकौतुक                |           |
|                     | पद्मविधानकथा      | २३३                    |                    |                      | राजसभारंजन             | ५७६       |
|                     | पुष्पाजलिद्वतकथा  | २३४                    |                    | गंगादास—             | आदिपुराणगिनती          | ७०१       |
|                     | २४०, ७३१          |                        | आदित्यवारकथा       | ७६५                  |                        |           |
| पूजाएवकथामग्न       | ५१६               |                        | भूलना              | ७५७                  |                        |           |
| मुकुटसप्तमीकथा      | २४४               | गगाराम—                | त्रिभुवनकीवीनती    | ७७२                  |                        |           |
|                     | ७३१               |                        | पद                 | ६१५                  |                        |           |
| मुक्ताबली व्रतकथा   | २४५               | गारबदास—               | भक्तामरस्तोत्रभाषा | ४१०                  |                        |           |
| मेघमालाव्रतकथा      | २३६               | गिरधर—                 | यद्योधरचरित्र      | १६१                  |                        |           |
|                     | २४४               | गुणकीर्ति—             | कवित्त             | ७७२, ७८६             |                        |           |
| यद्योधरचरित्र       | १६१, ७११          |                        | चतुर्विंशतछापय     | ६०१                  |                        |           |
| सन्धिविधानकथा       | २४४               |                        | चौबीसराणधरस्तवन    | ६-६                  |                        |           |
| शातिनाथपुराण        | १५५               | गुणचन्द्र—             | सौलरास             | ६०२                  |                        |           |
| षोडशकारणव्रतकथा     | २४४               |                        | भादीश्वरकेदशमव     | ७६२                  |                        |           |
| सप्तपरमस्थानव्रतकथा | २४४               |                        | पद                 | ५८१, ५८५, ५८७        |                        |           |
| हरिवंशपुराण         | १५८               | गुणनंदि—               |                    | ६मव                  |                        |           |
|                     |                   |                        | रत्नावलिकथा        | २४६                  |                        |           |

| ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम                | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम               | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|-----------------|--------------------------|------------------------|-----------------|-------------------------|------------------------|
| गुणपूरण—        | पद                       | ७६८                    | चम्पालाल—       | चर्चासागर               | १६                     |
| गुणप्रभसूरी—    | नवकारसङ्ग्राह            | ६१८                    | चतर—            | चन्दनमलयामिरिकथा        | २२३                    |
| गुणसागर—        | द्वीपामनदास              | ४४०                    | चतुर्भुजदास—    | पद                      | ७७८                    |
| गुमानरीराम—     | शांतिनाथस्तवन            | ७०२                    | शरणदास—         | मधुमालतीकथा             | २३५                    |
| गुलाबचन्द—      | पद                       | ६६६                    | विमाना—         | ज्ञानस्वरुदय            | ७५६                    |
| गुलाबराय—       | कक्का                    | ६४३                    | चैनविजय—        | भारतीपंचपरमेष्ठी        | ७६१                    |
| ब्रह्म गुलाल—   | बटाकक्का                 | ६८५                    | चैनमुखलुदाडिया— | पद                      | ५८८, ७६८               |
|                 | कवित्त                   | ६७०, ६८२               |                 | प्रकृतिमजिनचैत्यालयपूजा | ४५२                    |
|                 | गुलालपञ्चमीसी            | ७१४                    |                 | जिनसहस्रनामपूजा         | ४८०                    |
|                 | त्रैपनक्रिया             | ७४०                    |                 | पद                      | ४४६, ७६८               |
|                 | द्वितीयसमोसरण            | ५६६                    | छत्रपतिजैसवाल—  | श्रीपतिस्तोत्र          | ४१८                    |
| गोपीकृष्ण—      | नेमिराजुलब्याहलो         | २३२                    |                 | द्वादशानुप्रेक्षा       | १०६                    |
| गोरखनाथ—        | गोरखपदावली               | ७६७                    | छाजू—           | मनमोदनपंचशतीभाषा        | ३३४                    |
| गोविन्द—        | बारहमासा                 | ६६६                    | छोतरठोलिया—     | पार्वजिनगीत             | ४८                     |
| घनश्याम—        | पद                       | ६२३                    |                 | होलीकीकथा               | २५५,                   |
| घासी—           | मित्रविलास               | ३३४                    |                 |                         | ६८५                    |
| चन्द—           | चतुर्विंशतितीर्थकरस्तुति | ६८५                    | छीहल—           | पंचेन्द्रियबेल          | ६३८                    |
|                 |                          | ७२०                    |                 | पंथोगीत                 | ७६५                    |
|                 | पद                       | ५८७, ७६३               |                 | पद                      | ७२३                    |
|                 | गुणस्थानचर्चा            | ८                      | छोटोलालजैसवाल—  | वैराग्यगीत (उदरगीत)     | ६३७                    |
| चंद्रकीर्ति—    | समस्तव्रतकीजयमाल         | ५६४                    |                 | तत्त्वार्थसारभाषा       | ३०                     |
| चन्द्रमान—      | पद                       | ५६१                    | छोटोलालभित्तल—  | पंचकन्याएकपूजा          | ५००                    |
| चन्द्रसागर—     | द्वादशव्रतकथासंग्रह      | २२८                    | जगजीवन—         | एकीभावस्तोत्रभाषा       | ६०५                    |
| चम्पाबाई—       | चम्पासतक                 | ४३७                    | जगतारामगोदीका—  | पद                      | ४४५, ५८१, ५८२          |
| चम्पाराम—       | धर्मप्रश्नोत्तरधावका     |                        |                 |                         | ५८४, ६१५, ६६७,         |
|                 | चार                      | ६१                     |                 |                         | ६६६, ७२४, ७५७,         |
|                 | ब्रह्मब्राह्मचरित्र      | १८३                    |                 |                         | ७८३, ७६८, ७६६          |

| ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम                     | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम           | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|-----------------|-------------------------------|------------------------|-----------------|---------------------|------------------------|
|                 | जिनवाण्णीस्तवन                | ३६०                    |                 | द्रव्यसंग्रहभाषा    | ३६                     |
| जगतराय—         | पद्मनंदि रचनीसीभाषा           | ६७                     |                 | परीक्षामुल्लभाषा    | १३६                    |
|                 | सम्यक्त्वकौमुदीकथा            | २४.२                   |                 | भक्तामरस्तोत्रभाषा  | ४१०                    |
| जगन्कवि—        | रामबत्तीसी                    | ४१४                    |                 | समयसारभाषा          | १२४                    |
| जगराम—          | पद                            | ४०५, ६६८<br>७८५        |                 | सर्वाभिहितभाषा      | ४६                     |
| जगरूप—          | प्रतिमा-त्यापककृ <sup>१</sup> |                        |                 | सामायिकपाठभाषा      | ६६                     |
|                 | उद्देश                        | ७०                     | जयलाल—          | कुशीलखडन            | ५२                     |
|                 | पार्वनाथस्तवन                 | ६८१                    | पांडे त्रयवंत—  | तत्त्वार्थसूत्रटीका | २६                     |
|                 | श्वेतांबरमतके                 | ८४ बोल                 | जयसागर—         | चतुर्विंशतिजिनस्तवन |                        |
|                 |                               | ७७६                    |                 | ( चौबीसीस्तवन )     | ६१६, ७०६               |
| जनमल            | पद                            | ५८५                    |                 | जिनकुशलसूरचौपई      | ६१८                    |
| जनमोहन—         | स्नेहलीला                     | ७७१                    | जयसोमगण्णि—     | बारहभावना           | ६१७                    |
| जनराज—          | षट्शतुवर्णनवारहमासा           | ६५६                    | ऊवाढरलाल—       | सम्भेदशास्त्रपूजा   | ५५०                    |
|                 |                               | ६५६                    | जसकीर्ति—       | उद्येष्ठजिनवरकथा    | २२५                    |
| जयकिशन—         | कवित्त                        | ६४३                    | जसराज—          | बारहमासा            | ७८०                    |
| जयकीर्ति—       | पद                            | ५८५ ५८८                | जसवतसिहराठौड—   | भाषाभूषण            | ३१२                    |
|                 | बंकचूलराम                     | ३६३                    | जसुराम—         | राजनीतिशास्त्रभाषा  | ३३५                    |
|                 | महिम्नस्तवन                   | ४२५                    | जादूगाम—        | पद                  | ४४५                    |
|                 | रविब्रतकथा                    | ६६६                    | जितचंद्रसूरि—   | प्रादीश्वरस्तवन     | ७००                    |
| जयचन्द्रछावडा—  | ग्रन्थ्यात्मपत्र              | ६६                     |                 | पार्वजिनस्तवन       | ७००                    |
|                 | श्रष्टृपाहुडभाषा              | ६६                     |                 | बारहभावना           | ७००                    |
|                 | भ्रातमीमासाभाषा               | १३०                    |                 | महावीरस्तवन         | ७००                    |
|                 | कालिकेयानुप्रेक्षाभाषा        | १०४                    |                 | विनतीपाठस्तुति      | ७००                    |
|                 | चंद्रप्रभचरित्रभाषा           | १६६                    | जितसागरगण्णि—   | नेमिस्तवन           | ४००                    |
|                 | ज्ञानार्णवभाषा                | १०८                    | जितसिंहसूरि—    | चतुर्विंशतिजिनराज   |                        |
|                 | तत्त्वार्थसूत्रभाषा           | २६                     |                 |                     |                        |
|                 | देवपूजाभाषा                   | ४६०                    |                 |                     |                        |
|                 | देवागमस्तोत्रभाषा             | ३६५                    |                 |                     |                        |

| ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम               | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम          | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|-----------------|-------------------------|------------------------|-----------------|--------------------|------------------------|
|                 | बोसतीर्थकरस्तुति        | ७००                    |                 | धर्मपत्रविशतिका    | ६१                     |
|                 | शालिभद्राचौपई           | ७००                    |                 | निजामणि            | ६५                     |
| जिनचंद्रसूरि—   | क्यबलाचौपई              | २२१                    |                 | मिच्छादुष्कण्ड     | ६८६                    |
|                 | क्षमावतीसी              | ६४                     |                 | रैदवतकथा           | २४६                    |
| जिनदत्तसूरि—    | गुरगारतंत्रएवंसप्तस्मरण | ६१६                    |                 | समकितविराजोघर्म    | ७०१                    |
|                 | सर्वादिष्टनिवारणस्तोत्र | ६१६                    |                 | सुकुमान्स्वामीरास  | ३६६                    |
| पं० जिनदास—     | चेतनगीत                 | ७६२                    |                 | सुभौमचक्रवर्तिरास  | ३६७                    |
|                 | धर्मतरंगीत              | ७६२                    | जिनरंगसूरि—     | कुशलगुरुस्तवन      | ७७६                    |
|                 | पद ५८१, ५८८, ६६८        |                        |                 | धनाशालिभद्रास      | ३६२                    |
|                 | ७६४, ७७२, ७७४           |                        | जिनराजसूरि—     | नयकारमहिमास्तवन    | ६१८                    |
|                 | भाराधनासार              | ७४७                    | जिनवल्लभसूरि—   | शालिभद्राचौपई      | २५३                    |
|                 | मुनीश्वरोंकोजयमाल       | ५७१                    | जिनमिहसूरि—     | धम्मरनिमाणी        | ३८७, ७३४               |
|                 | ५७६, ६२२, ६५८           |                        | जिनहर्ष—        | उपदेशशुक्तीसी      | ३२४                    |
|                 | ६८३, ७५०, ७६१           |                        |                 | पद                 | ५६०                    |
|                 | राजुलसज्जाय             | ७५०                    |                 | नेमिराजुलगीत       | ६१८                    |
|                 | विनती                   | ७७५                    |                 | पार्वनायकीनिशानी   | ४४८                    |
|                 | त्रिवेकजकडी             | ७२२, ७५०               | जिनहर्षगणि—     | श्रीपालरास         | ३६५                    |
|                 | सरस्वतीजयमाल            | ६५८                    | जिनेन्द्रभूषण—  | बारहसीचौतीसव्रतकथा | ७६५                    |
|                 |                         | ७७८,                   | जिनेश्वरदास—    | नन्दीश्वरविधान     | ४६४                    |
| पाण्डेजिनदास—   | योगीरासा                | १०५, ६०१               | जीवणदास—        | पद                 | ४४५                    |
|                 |                         | ६०३, ६२२, ६३६          | जीवणराम—        | पद                 | ५८०                    |
|                 |                         | ६५२, ७०३, ७१२          | जीवराज—         | पद                 | ५६१, ७६१               |
|                 |                         | ७२३                    | जैतराम—         | जीवजीतसंहार        | २२५                    |
|                 | मालीरासा                | ५७६                    | जैतश्री—        | रागमालाके बोहे     | ७८०                    |
| जिनदासगोबा—     | सुगुरुशतक               | ३४० ४४७                | जैतसिंह—        | दशवैकालिकगीत       | ७००                    |
| पं० जिनदास—     | धठानीसमूलगुणरास         | ७०७                    | जोधराजगोदीका—   | बोधाराधनाउद्योगकथा | २२५                    |
|                 | धनन्तव्रतरास—           | ५६०                    |                 | योडीपार्वनायस्तवन  | ६१७                    |
|                 | चौरासीन्यातिमाला        | ७६५                    |                 | जिनस्तुति          | ७७५                    |
|                 |                         |                        |                 | धर्मसरोवर          | ६३                     |

| ग्रंथकार का नाम   | ग्रंथ नाम           | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम              | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|-------------------|---------------------|------------------------|-----------------|------------------------|------------------------|
|                   | नेमिजिमस्तवन        | ६१८                    |                 | सोलहकारणकथा            | ७४०                    |
|                   | प्रवचनसार           | ११४                    | झांभूराम—       | पद                     | ४४५                    |
|                   | प्रीतिकरचरित्र      | १८३                    | टीकमचंद—        | चतुर्विंशकथा           | ७५५, ७७३               |
|                   | भावदीपक             | ७७                     |                 | चंद्रहंसकथा            | ६३६                    |
|                   | वारिषेणमुनिकथा      | २४०                    |                 | श्रीपालजीकीस्तुति      | ६३६                    |
|                   | सम्यक्त्वकीमुदीभाषा | २५२                    |                 | स्तुति                 | ६३६                    |
|                   |                     | ६८६                    | टीलाराम—        | पद                     | ७८२                    |
|                   | समन्तभद्रकथा        | ७५८                    | टेकचंद—         | कर्मदहनपूजा            | ४६५, ५१८               |
|                   | पद                  | ४४५, ६६५, ६६६          |                 |                        | ७१२                    |
|                   |                     | ७८६, ७६८               |                 | तीनलोकपूजा             | ४८३                    |
| जौहरीलालबिहाराजा— | विद्यमानवीसतीर्थकर  |                        |                 | नंदीचरित्रतविधान       | ४६४                    |
|                   | पूजा                | ५३५                    |                 |                        | ५१८                    |
|                   | आलोचनासारा          | ५६१                    |                 | पंचकल्याणकपूजा         | ५०१                    |
| ज्ञानचंद—         | सम्बिधिधानपूजा      | ५३४                    |                 | पंचपरमेष्ठीपूजा        | ५०३, ५१८               |
| ज्ञानभूषण—        | अक्षयनिधिपूजा       | ४५४                    |                 | पंचमेरुपूजा            | ५०५                    |
|                   | प्रादीश्वरफाग       | ३६०                    |                 | पुष्याश्वकथाकोश        | २३४                    |
|                   | बलगान्धरास          | ३६२                    |                 | रत्नत्रयविधानपूजा      | ५३१                    |
|                   | पोमहरास             | ७६२                    |                 | सुदृष्टितरंगिणीभाषा    | ६७                     |
| श्री० ज्ञानसागर—  | अनन्तचतुर्विंशकथा   | २१४                    |                 | सोनहकारणमंडलविधान      |                        |
|                   | अष्टाङ्गिकाकथा      | ७४०                    | टोडर—           | पद                     | ५८२, ६१५, ६२३          |
|                   | प्रादिनायकक्याणकथा  | ७०७                    |                 |                        | ७६७, ७७६, ७७७          |
|                   | कथासंग्रह           | २२०                    | पं० टोडरमल—     | आत्मानुशासनभाषा        | १०२                    |
|                   | बबालक्षणप्रतकथा     | ७६५                    |                 | अपराधसारभाषा           | ७                      |
|                   | नेमीचररराजुलविवाद   | ६१३                    |                 | गोम्मटसारकर्मकाण्डभाषा | ४३                     |
|                   | माणिक्यमालाग्रंथ    |                        |                 | गोम्मटसारजीकाण्डभाषा   | १०                     |
|                   | प्रश्नोत्तरी        | ६०४                    |                 | गोम्मटसारपीठिका        | ११                     |
|                   | रत्नत्रयकथा         | ७४०                    |                 | गोम्मटसारसंहृष्टि      | १२                     |
|                   | अष्टुरविप्रतकथा     | २४४                    |                 | बिलोकसारभाषा           | ३२१                    |

| ग्रन्थकार का नाम | ग्रन्थ नाम                 | ग्रन्थ सूची की पत्र सं० | ग्रन्थकार का नाम  | ग्रन्थ नाम                 | ग्रन्थ सूची की पत्र सं० |
|------------------|----------------------------|-------------------------|-------------------|----------------------------|-------------------------|
|                  | पुरुवार्यसिद्धयु पायभाषा   | ६६                      | शान्तिजीभ्रजमेरा— | बीतितोर्थकरपूजा            | ५२३                     |
|                  | मोक्षमार्गप्रकाशक          | ५०                      | थिरुमल्ल—         | लूकणभारती                  | ७७८                     |
|                  | लम्बिसारभाषा               | ४३                      | दत्तनाल—          | भारतकवी                    | ७४५                     |
|                  | लम्बिसारअपरासात            | ४३                      | ब्रह्मदयाल—       | पद                         | ३५७                     |
|                  | लम्बिसारसंहृष्टि           | ४३                      | दयालराम—          | जकडी                       | ७४६                     |
| ठक्कुरासी—       | कृपणसूत्र                  | ६३८                     | दरिगह—            | जकडी                       | ६६१, ७५५                |
|                  | नेमीश्वरकीबेलि             |                         |                   | पद                         | ७४६                     |
|                  | ( नेमीश्वरकवित्त)          | ७२२                     | दलजी—             | भारहभावना                  | १५७१                    |
|                  | पंचेन्द्रियबेलि            | ७०३                     | दलाराम—           | पद                         | ६२०                     |
|                  |                            | ७२२, ७६५                | दशरथनिगोत्या—     | धर्मपरीक्षाभाषा            | ३५३                     |
| कविठाकुर—        | एगोकारपञ्चवीसी             | ४३६                     | दास—              | पद                         | ७४६                     |
|                  | सञ्जनप्रकाश दोहा           | २८४                     | मुनिदीप—          | विद्यमानबीहृत्तीर्थकर पूजा | ४१५                     |
| डालाराम—         | भद्रार्थद्वीपपूजा          | ४५५                     | दीपचन्द—          | धनुसवप्रकाश                | ४८                      |
|                  | चतुर्दशीकथा                | ७७२                     |                   | भ्रातमावलोकन               | १००                     |
|                  | द्वयप्रशागपूजा             | ४६१                     |                   | चिह्निलास                  | १०५                     |
|                  | पंचपरमेष्ठीगुणवर्णन        | ६६                      |                   | भारती                      | ७७७                     |
|                  | पंचपरमेष्ठीपूजा            | ५०३                     |                   | ज्ञानवर्षस                 | १०५                     |
|                  | पंचमेरुपूजा                | ५०५                     |                   | परमात्मपुराण               | ११०                     |
| डूंगरकवि—        | होलिकाजीपई                 | २५५                     |                   | पद                         | ३८३                     |
| डूंगावैष्—       | शेरिणकजीपई                 | २४८                     | दुर्गाचंद—        | भाराधनासारकविकथा           | ५०                      |
| तिपरदास—         | श्री दक्षभण्डारणजी की रासो | ७७०                     |                   | उपदेशरत्नमाला              | ५१                      |
| तिलोकचंद—        | सामाधिकपाठभाषा             | ६६                      |                   | जैनसदाचारमार्गचिह्न        |                         |
| तुलसीदास—        | कवित्तबंधारामचरित्र        | ६६७                     |                   | नामकपत्रकाप्रस्तुतर        | २०                      |
| तुलसीदास—        | प्रयोत्तररत्नमाला          | ३३२                     |                   | जैनागारप्रक्रियाभाषा       | ५७                      |
| तेजदास—          | तीर्थमालास्तवन             | ६१७                     |                   | दध्यससहभाषा                | ३७                      |
|                  |                            | ६७३                     |                   | निर्मल्यदोषवर्णन           | ६५                      |
| त्रिभुवनचंद—     | भनित्यपंचवर्तिका           | ७५५                     |                   | पद                         | ६६३                     |
|                  | पद                         | ७६५                     |                   |                            |                         |

| ग्रंथकार का नाम  | ग्रंथ नाम           | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम          | ग्रंथ सूची की पत्र सं०      |
|------------------|---------------------|------------------------|-----------------|--------------------|-----------------------------|
|                  | प्रतिष्ठापाठभाषा    | ५२२                    |                 | संकटपीयत्रतकथा     | ७६४                         |
|                  | बाईसप्रभण्यवर्णन    | ७५                     | दौलतराम—        | छहडाला             | ५७, ७४६<br>७०७              |
| देवचन्द—         | सुभाषितावली         | ३४४                    |                 | जिनस्तवन           | ७०७                         |
| देवचन्द—         | मुष्टिज्ञान         | ३००                    |                 | पद                 | ४४६, ६५४                    |
|                  | भष्टप्रकारीपूजा     | ७६०                    | दौलतरामपाठनी—   | बारहभावना          | ५६१, ६७५                    |
|                  | नवगदपूजा            | ७६०                    | दौलतराम—        | व्रतविधानरासो      | ७७६                         |
| देवसिंह—         | पद                  | ६६४                    |                 | भ्रादिपुराण        | १४४                         |
| देवसेन—          | पद                  | ५०६                    |                 | श्रीबीसदण्डकभाषा   | ५६,<br>४२६, ४४८<br>४११, ६७२ |
| देवादिल—         | उपदेशसञ्ज्ञाप       | ३०१                    |                 | त्रेपनक्रियाकोश    | ५६                          |
| देवापायडे—       | जिनवरजीकीविनती      | ६०५                    |                 | पद्मपुराणभाषा      | १४६                         |
| देवाप्रभा—       | कलियुगकाविनती       | ६१५,<br>६०५            |                 | परमात्मप्रकाशभाषा  | १११                         |
|                  | श्रीबीसतीर्थकररतुति | ४३८                    |                 | पुण्याश्रवकथाकोश   | २३३                         |
|                  | पद                  | ४४६, ७८३, ७८५          | दौलतभासेरी—     | सिद्धपूजाष्टक      | ७७७                         |
|                  | विनती               | ४५१, ६६५, ७८०          | शानतराय—        | हरिवंशपुराण        | १५७                         |
|                  | नवकारबड़ीवीनती      | ६५१                    |                 | श्रुतिमंडलपूजा     | ४६४                         |
|                  | मुनिमुश्रतवीनती     | ४५०                    |                 | मष्टाल्लिकापूजा    | ७०५, ४६०                    |
|                  | सम्भेदशिक्षरविलास   | ६३                     |                 | अक्षरबावनी         | ६७६                         |
|                  | सासबहूकःकगडा        | ६४८                    |                 | भागमविलास          | ४६                          |
| देवीचन्द—        | हितीपदेशभाषा        | ७४४                    |                 | भारतीसंग्रह        | ६२१, ६२२<br>७७७             |
| देवीदास—         | कवित्त              | ६७५                    |                 | उपदेशदातक          | ३२५, ७४७                    |
|                  | जीववेलडी            | ७५७                    |                 | चर्चादातक          | १४, ६६४,<br>७६४             |
|                  | पद                  | ६४६                    |                 | श्रीबीसतीर्थकरपूजा | ७०४                         |
|                  | राजनीतिकवित्त       | ३३६, ७५२               |                 | छहडाला             | ६५२, ६७२                    |
| देवीसिद्धावडा—   | उपदेशरत्नमालाभाषा   | ५२                     |                 |                    |                             |
| देवेन्द्रकीर्षि— | जकडी                | ६२१                    |                 |                    |                             |
| देवेन्द्रभूषण—   | पद                  | ५०७                    |                 |                    |                             |
|                  | रविधारकथा           | ७०७                    |                 |                    |                             |

प्रथम प्रकार का नाम

| प्रथम नाम           | प्रथम सूची की क्रम सं० |
|---------------------|------------------------|
|                     | ६७४, ७४७               |
| सुखघटक              | ७७७                    |
| जकडी                | ६४३                    |
| तत्त्वसारभाषा       | ७४७                    |
| दशबोलपञ्चीसी        | ४४८                    |
| दशमसण्णपूजा         | ५१६, ७०५               |
| दानभावनी            | ६०५, ६८६               |
| द्यानतविलास         | ३२८                    |
| द्रव्यसंग्रहभाषा    | ७१२                    |
| धर्मविलास           | ३२८                    |
| धर्मपञ्चीसी         | ७१०, ७४७               |
| पंचमेरूपूजा         | ५०५, ७०५               |
| पार्वनाथस्तोत्रभाषा | ५६६                    |
|                     | ६१५, ४०६               |
| पदसंग्रह            | ४४५, ५८३               |
|                     | ५८४, ५८५, ५८६          |
|                     | ५८८, ५८९, ५९०          |
|                     | ६२२, ६२४, ६४३          |
|                     | ६४६, ६५४, ७०४          |
|                     | ७४६, ७५७               |
| भावनास्तोत्र        | ६१४                    |
| रत्नमयपूजा          | ५२६, ७०५               |
| बाणीघट्टभवजयमाला    | ७७७                    |
| बोडशाकारणपूजा       | ५१६                    |
|                     | ५१६, ५५६, ७०५          |
| संघपञ्चीसी          | ३७५                    |
| संबोधपंचासिका       | १२८                    |
|                     | ६०५, ६४८, ६८५, ६६३     |
|                     | ७१३, ७१६, ७२५          |

प्रथम प्रकार का नाम

| प्रथम नाम                  | प्रथम सूची की क्रम सं० |
|----------------------------|------------------------|
| संबोधभारतभावनी             | ११६                    |
| समाधिभरतभाषा               | १२६                    |
| सिद्धलक्षणपूजाघटक          | ७०५                    |
| स्वयंभूस्तोत्रभाषा         | ४२६                    |
| भाद्रपदपूजा                | ५२४                    |
| कलियुगकीकथा                | ७७३                    |
| तीनमियाकीजकडी              | ६२३                    |
| पद                         | ७६८                    |
| शिशिरविलासभाषा             | ७६३                    |
| धनन्तकेल्यपय               | ७५७                    |
| मोरपिच्छवारीकृत्य के कविता | ६७३                    |
| पद                         | ५८८, ७६८               |
| ध्वजाकोरास                 | ५६३                    |
| दानशीलतपभावना              | ६०                     |
| भाषानूषण                   | ६६८                    |
| धनेकार्यनाममाला            | ७०६                    |
| धनेकार्यमंजरी              | २७१, ७६६               |
| पद                         | ५८७, ७०४               |
|                            | ७७०                    |
| नाममंजरी                   | ६६७, ७६६               |
| मानमंजरी                   | २७६, ६६१               |
| बिरहमंजरी                  | ६५७, ७५६               |
| श्यामबलीसी                 | ६८३                    |
| योगसारभाषा                 | ११६                    |
| कनकावलीसी                  | ७३२                    |
| प्रवनाथलिकवित्त            | ७८२                    |
| रसालकुंवरकीचौपई            | ५७७                    |

द्वारिकादास—

धनराज—

धर्मचन्द्र—

धर्मदास—

धर्मपाल—

धर्मभूषण—

धर्मसी—

धीरजसिहराठौड—

जन्दास—

जन्दराम—

वैद्यनन्दबाल—

नखरुक्मि—



| ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम                        | ग्रंथ सूची की पत्र सं०     | ग्रंथकार का नाम             | ग्रंथ नाम            | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|-----------------|----------------------------------|----------------------------|-----------------------------|----------------------|------------------------|
| नयमज्ञविद्याला— | अष्टाङ्गिकाकथा                   | २१५                        | नाथूरामदोसी—<br>ब्रह्मनाथू— | ६५३, ६५४, ६५५, ७५२   |                        |
|                 | जीवचरित्र                        | १७०                        |                             | ७५३, ७६५             |                        |
|                 | वर्धनसारभाषा                     | १३३                        |                             | बारहमासना            | ११५                    |
|                 | परमात्मप्रकाशभाषा                | १११                        |                             | ४२६, ५७१             |                        |
|                 | महीपामचरित्र                     | १५६                        |                             | नद्रवाङ्मचरित्र      | १५३                    |
|                 | मन्वामरस्तोत्रकथा                |                            |                             | शिसाचतुष्क           | ६६५                    |
|                 | भाषा २३४, ७२०                    |                            |                             | समाधितंत्रभाषा       | १२६                    |
|                 | रत्नकरणश्रावकाचार                |                            |                             | चेतावनीगीत           | ७५७                    |
|                 | भाषा ५३                          |                            |                             | पद                   | ६२२                    |
|                 | रत्नप्रमजयमासभाषा                | ५२८                        |                             | पार्ष्वनाथस्तवन      | ६२२                    |
| नयविमल—         | बौद्धशाकालभाषना                  |                            | नाथूराम—                    | श्रक्तकचरित्रगीत     | १६०                    |
|                 | जयमाल                            | ८८                         | गीत                         | ६२२                  |                        |
|                 | सिद्धान्तसारभाषा                 | ४७                         | जन्मस्वामीचरित्र            | १६६                  |                        |
|                 | सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा           | ४२१                        | जातकसार                     | ६८३                  |                        |
| नयनसुल—         | पद                               | ५८१                        | जिनसहस्रनामस्तोत्र          | ३६३                  |                        |
| नयनसुल—I        | वेद्यमनोसव                       | ३०४, ६०३,<br>६६५, ७६८, ७६४ | नाथूलादोसी—                 | रक्षाबंधनकथा         | २३७                    |
|                 | पद                               | ४४५, ५८३                   | नानिगराम—                   | स्वानुभवदर्पण        | १२८                    |
| नयनसुल—II       | भजनसंग्रह                        | ४५०                        | निर्मल—                     | सुकुमालचरित्र        | २०७                    |
| नरपाज्ञ—        | पद                               | ५८५                        | निर्मात—                    | बौहासंग्रह           | ६२३                    |
| नरेन्द्रकीर्ति— | ढालमंगलकी                        | ६५५                        | निहालचंद्रश्यामवाज्ञ—       | पद                   | ५८१                    |
|                 | रत्नावलीव्रतों की तिथियों के नाम | ६५५                        | नयचक्रभावप्रकाशिनी          | टीका                 | १३४                    |
| नवसारास—        | गुरुभ्रंशकीवीनती                 | ७०४                        | नेमीचन्द्र—                 | जकडी                 | १२२                    |
|                 | जिनपन्थीसी                       | ६५१, ६७०<br>६७५, ६६३, ७२५  |                             | तीनलोकपूजा           | ४५३                    |
|                 | पद                               | ४४५, ५८२                   |                             | श्रीश्रीसतीर्थकरोंकी |                        |
|                 | ५८६, ५६०, ६१५, ६४८               |                            |                             | बंशना                | ७७३                    |
|                 |                                  |                            |                             | पद                   | ५८०, ६२२               |
|                 |                                  |                            |                             | श्रीत्यंकरशौचई       | ७७३                    |

| ग्रंथकार का नाम        | ग्रंथ नाम              | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम              | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|------------------------|------------------------|------------------------|-----------------|------------------------|------------------------|
|                        | नेमीश्वरगीत            | ६२१                    |                 | जीवंशरचरित्र           | १७१                    |
|                        | छुष्टरि                | ६२२                    |                 | तत्त्वकौस्तुभ          | २०                     |
|                        | विनती                  | ६६३                    |                 | तत्त्वार्थसारभाषा      | २३                     |
| नेमीचंद्रपाटनी—        | बलुविधातितीर्थकर       |                        |                 | तत्त्वसारभाषा          | २१                     |
|                        | पूजा                   | ४७२                    |                 | द्रव्यसंग्रहभाषा       | ३६                     |
|                        | तीगवौबीसीपूजा          | ४८२                    |                 | धर्मप्रदीपभाषा         | ६१                     |
| नेमीचंद्रबख्शी—        | सरस्वतीपूजा            | ५५१                    |                 | नंदीश्वरभक्तिभाषा      | ४६४                    |
| नेमीदास—               | निर्वाणभोदकनिर्याय     | ६५                     |                 | नवतत्त्ववचनिका         | ३८                     |
| न्यामतसिंह—            | पद                     | ७६५                    |                 | न्यायबीपिकाभाषा        | १३५                    |
|                        | भविष्यदतत्त्वतिलक—     |                        |                 | पांडवपुराण             | १५०                    |
|                        | सुन्दरीनाटक            | ३१७                    |                 | प्रश्नोत्तरभाषाकवचार   |                        |
|                        | पद                     | ७६५                    |                 | भाषा                   | ७०                     |
| पद्मभगवत—              | कृष्णकविमयीमंगल        | २२१                    |                 | भक्त्यामरस्तोत्रकथा    | २३५                    |
| पद्मकुमार—             | भ्रातृगणेशशासत्रभाष्य  | ६१६                    |                 | भक्तिपाठ               | ४४६                    |
| पद्मसिलक—              | पद                     | ५८३                    |                 | भविष्यदलचरित्र         | १८४                    |
| पद्मनंदि—              | देवतास्तुति            | ३६४                    |                 | भूपालवौबीसीभाषा        | ४१२                    |
|                        | पद                     | ६४३                    |                 | भरतकविज्ञान            | ७८                     |
|                        | परमात्मराजस्तवन        | ४०२                    |                 | योगसारभाषा             | ११६                    |
| पद्मराजगण्धि—          | नवकारसङ्गमय            | ६१८                    |                 | यशोधरचरित्र            | १६२                    |
| पद्माकर—               | कवित                   | ७५६                    |                 | रत्नकरम्भभाषकाचार      | ८३                     |
| चौधरीपद्माशास्त्रसंधी— | आचारसारभाषा            | ४६                     |                 | बसुनेंद्रिधावकाचारभाषा | ८५                     |
|                        | आराधनासारभाषा          | ४६                     |                 | विद्यापहारास्तोत्रभाषा | ४१६                    |
|                        | उत्तरपुराणभाषा         | १४६                    |                 | षट्भाषक्यकविधान        | ८७                     |
|                        | एकीभावस्तोत्रभाषा      | ३८३                    |                 | आवकअतिक्रमणभाषा        | ८६                     |
|                        | कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा | ३८५                    |                 | सङ्काणितानवीनभाषा      | ३३८                    |
|                        | गौतमस्वामीचरित्र       | १६३                    |                 | समाधिभरणभाषा           | १२७                    |
|                        | बम्बूस्वामीचरित्र      | १६६                    |                 | सरस्वतीपूजा            | ५५१                    |
|                        | जिनवचनचरित्र           | १७०                    |                 | सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा | ४२१                    |

| प्रथमकार का नाम        | प्रथम नाम            | प्रथम सूची की पत्र सं०    | प्रथमकार का नाम | प्रथम नाम                  | प्रथम सूची की पत्र सं०   |
|------------------------|----------------------|---------------------------|-----------------|----------------------------|--|
|                        | सुभाषितावलीभाषा      | ३४४                       | प्रभुदास—       | परमात्मप्रकाशभाषा          | ७६५  |
| बन्नालाखदूनीबाजे—      | पंचकल्याणकपूजा       | ५०१                       | प्रसन्नचंद्र—   | भारतमहाशासत्रभाषा          | ६१९  |
|                        | विद्वज्जनबोधकभाषा    | ८६                        | फतेहचंद्र—      | पद                         | ५७९, ५८०, ५८१<br>५८२, ५८३  |
|                        | समवसरणपूजा           | ८००                       | वंशी—           | नृवणमंगल                   | ७७७  |
| बन्नालाखदूनीबाजे—      | बालपद्यपुराण         | १५१                       | वंशीदास—        | रोहिणीविधिकथा              | ७८१  |
| धरमानंद—               | पद                   | ६८४, ७७०                  | वंशीधर—         | द्रव्यसंग्रहवालात्रयोपटीका | ७६१  |
| परिभारुज—              | श्रीपालचरित्र        | २०१, ७७३                  | बलतराम—         | पद                         | ५८३, ५८६, ६६८<br>७८३, ७८६  |
| वर्षतचमार्थी—          | द्रव्यसंग्रहभाषा     | ३६                        |                 | मिथ्यात्वखंडन              | ७८   |
|                        | समाधितंत्रभाषा       | १२६                       | ब्रह्मसावरलाल—  | बुद्धिविलास                | ७५   |
| पारसदासनिगोत्या—       | ज्ञानसूयोंदयनाटकभाषा | ३१७                       |                 | चतुर्विधातितीर्थकरपूजा     | ४७३  |
|                        | सारचौबीसी            | ४५२                       | बधीचन्द्र—      | ज्ञानसूयोंदयनाटकभाषा       | ३१७  |
| धारसदास—               | पद                   | ६५४                       | बनारसीदास—      | रामचन्द्रचरित्र            | ६९१  |
| पार्वदास—              | बारहसूटी             | ३३२                       |                 | प्रध्यात्मबत्तीसी          | ९९   |
| पुश्यरत्न—             | नेमिनाथफाट्ट         | ७४८                       |                 | भारतमध्यान                 | १००  |
| पुयसागर—               | साधुबंदना            | ४५२                       |                 | कर्मप्रकृतिविधान           | ५<br>३६०, ६७७, ७४६   |
| पुष्पोत्तमदास—         | बोहे                 | ६८७                       |                 | कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा     | ३८५, ४२९, ५६९<br>५९६, ६०३, ६४३<br>६४८, ६५०, ६६१<br>६६२, ६६५, ६७०<br>७०३, ७०४ |
| पून्वी—                | पद                   | ७८५                       |                 | कवित्त                     | ७०६, ७७३   |
|                        | मेघकुमारगीत          | ६६१, ७२२<br>७४९, ७५०, ७६४ |                 | जिनसहस्रनामभाषा            | ६६०<br>७४६   |
|                        |                      | ७७५                       |                 | ज्ञानपञ्चीसी               | ६१४, ६२४<br>६५०, ७४३, ७७५  |
|                        | वीरजिण्णदकीसंघावली   | ७७५                       |                 |                            |  |
| पूरणदेव—               | पद                   | ६६३                       |                 |                            |  |
| पैमराज—                | वैदरभीविवाह          | २४०                       |                 |                            |  |
| पृथ्वीराजराठौड़—       | कृष्णकविमणिरवेलि     | ३६४<br>६५६, ७००           |                 |                            |  |
| महाराजासवाईप्रवापसिंह— | प्रभुतसागर           | २९६                       |                 |                            |  |
|                        | चंद्रकुंवरकीवार्ता   | २२३                       |                 |                            |  |

| ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम            | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम           | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|-----------------|----------------------|------------------------|-----------------|---------------------|------------------------|
|                 | ज्ञानबावनी           | १०५, ७५०               | बालदेव—         | पद                  | ७६८                    |
|                 | तेरहकाठिया           | ४२६, ७५०               | बाबूलाल—        | विष्णुकुमारमुनिपूजा | ५३६                    |
|                 | नवरत्नकवित्त         | ७४३,                   | बालचंद्र—       | पद                  | ६२५                    |
|                 | नाममाला              | २७६, ७०६               | बिहारीदास—      | भारती               | ७७७                    |
|                 | पद                   | ५८२, ५८३               |                 | कवित्त              | ७७०                    |
|                 |                      | ५८५, ५८६, ५८६,         |                 | पद                  | ५८७                    |
|                 |                      | ५६०, ६१५, ६२१          |                 | पद्यसंग्रह          | ७१०                    |
|                 |                      | ६२२, ६२३ ६६७           |                 | वंदनावकडी           | ४४६, ७२७               |
|                 | पार्वनाथस्तुति       | ७२३                    | बिहारीलाल—      | सतसई                | ५७६, ६७५               |
|                 | परमज्योतिस्तोत्रभाषा | ४०२                    |                 |                     | ६८८, ७२७, ७६८          |
|                 |                      | ५६०                    | बुधनन—          | शुद्धस्तोत्री       | ६६१                    |
|                 | परमानन्दतोत्रभाषा    | ५६२                    |                 | छहठाला              | ५७                     |
|                 | बनारसीविलास          | ६४०                    |                 | तत्त्वार्थबीध       | २१                     |
|                 |                      | ६८६, ७०६               |                 | दर्शनपाठ            | ४३६                    |
|                 | मोहवित्रैकमुद्र      | ७१४, ७६४               |                 | पञ्चास्तिकायभाषा    | ४१                     |
|                 | मौलपेडी              | ८०, ७१६                |                 | पद                  | ४४५, ४४६, ५७१          |
|                 |                      | ७४६                    |                 |                     | ६४८, ६५३, ६५४          |
|                 | शारदाचक्र            | ७७६                    |                 |                     | ७८५, ७६८               |
|                 | समयसारनाटक           | १२३, ६०४               |                 | वंदनावकडी           | ४४६                    |
|                 |                      | ६३६, ६४०, ६५७          |                 | बुधजनविलास          | ३३२                    |
|                 |                      | ६०, ६८३, ६८८           |                 | बुधजनसतसई           | ३३२, ३३३               |
|                 |                      | ६८६, ६६४ ६६८           |                 | योगसारभाषा          | ११७                    |
|                 |                      | ७०२, ७१६, ७२०          |                 | पटपाठ               | ४१६                    |
|                 |                      | ७२१, ७३१, ७५६          |                 | संबोधपरबसिकाभाषा    | ५७०                    |
|                 |                      | ७७८, ७८७               |                 | सरस्वतीपूजा         | ५५१                    |
|                 | साधुवंदना            | ६४०, ६५२               |                 | स्तुति              | ७०४                    |
|                 |                      | ७१६                    | बुधमहाचंद्र—    | सामायिकमाठभाषा      | ६५                     |
|                 | सिन्धुप्रकरण         | ३४०, ७१०               | बुल्लाकीदास—    | पाण्डवपुराण         | १५०, ७४५               |
|                 |                      | ७१२ ७४६                |                 | प्रश्नोत्तरभावकाधार | ७०                     |
|                 |                      |                        | बुधराज—         | टंडाणगीत            | ७२२, ७५०               |

| संश्लकार का नाम | ग्रंथ नाम            | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | संश्लकार का नाम | ग्रंथ नाम         | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|-----------------|----------------------|------------------------|-----------------|-------------------|------------------------|
| भगत राम—        | भुवनकीर्त्तिगीत      | ६६६                    |                 | पद                | ५८७                    |
| सैयाभगतीदास—    | पद                   | ७६८                    |                 | नेमीश्वरकीरास     | ६३८                    |
|                 | ब्राह्मणके ४६ द्वाप  |                        | मागचंद—         | उपदेशसिद्धान्ततरल |                        |
|                 | वर्णन                | ५०                     |                 | माला              | ५१                     |
|                 | प्रकृतिमन्त्रेत्वालय |                        |                 | ज्ञानसूयोदयनाटक   | ३१७                    |
|                 | जयमाल                | ६६४, ७२०               |                 | नेमिनाथपुराण      | १४६                    |
|                 | चेतनकर्मचरित्र       | ७४०                    |                 | प्रमाणपरीक्षाभाषा | १३७                    |
|                 |                      | ६१३, ६०५, ६८६          |                 | पद                | ४४५, ४४६, ५७०          |
|                 | अनित्यपञ्चमीसी       | ६८६                    | भागीरथ—         | श्रावकाचारभाषा    | ६१                     |
|                 | निर्वाणकाण्डभाषा     | ३६६                    |                 | सम्मेदशिलरपूजा    | ५५०                    |
|                 |                      | ४२६, ५६२, ५६५,         | भानुकीर्त्ति—   | मोनागिरपञ्चमीसी   | ६८                     |
|                 |                      | ५७०, ६५०, ५६६          |                 | जीवकायासङ्ग्राह   | ६१६                    |
|                 |                      | ६००, ६०५, ६१४          |                 | पद                | ५८३, ५८५, ६१५          |
|                 |                      | ६२०, ६४३, ६५१          | भारामल्ल—       | रविप्रतकथा        | ७५०                    |
|                 |                      | ६६२, ७०४, ७२०          |                 | कर्मचञ्चोसी       | ७६६                    |
|                 | ब्रह्मविनास          | ३३३                    |                 | चारुदत्तचरित्र    | १६८                    |
|                 | बारहभावना            | ७२०                    |                 | दर्शनकथा          | ५२७                    |
|                 | वेरायपञ्चमीसी        | ६८५                    |                 | दानकथा            | २२८                    |
|                 | श्रीपालजीकीस्तुति    | ६४३                    |                 | मुक्तावलिकथा      | ७६४                    |
|                 | सप्तभंगीवाणी         | ६८८                    |                 | रात्रिभोजनकथा     | २३८                    |
| भगौतीदास—       | बोरजिशंदगीत          | ५६६                    |                 | शीलकथा            | २४७                    |
| भगवानदास—       | भा. धातिसागरपूजा     | ४६१                    |                 | सप्तव्यसनकथा      | २५०                    |
|                 |                      | ७८६                    | भीषत्रकवि—      | लघ्विषयिधानचौपई   | ७७२                    |
| भगोसाह—         | पद                   | ५८१                    | भुवनकीर्त्ति—   | नेमिरानुनगीत      | ६१८                    |
| भद्रसेन—        | चन्दनमलयागिरी        | २२३                    | भुवनभूषण—       | प्रभातिकस्तुति    | ६३३                    |
| भाऊ—            | श्राद्धित्यवारकथा    |                        |                 | एकीभावस्तोत्रभाषा | ३८३                    |
|                 | ( रविप्रतकथा )       | २३७, २४४               |                 |                   | ४२६, ४४८, ६५२          |
|                 |                      | ६०१, ६८५, ७४०          |                 |                   | ६६२, ७१६, ७२०          |
|                 |                      | ७४५, ८५६, ७६२          |                 |                   |                        |

| ग्रंथकार का नाम     | ग्रंथ नाम          | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम         | ग्रंथ नाम          | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |     |
|---------------------|--------------------|------------------------|-------------------------|--------------------|------------------------|-----|
| भूधरदास—            | कवित्त             | ७७०                    | भूधरमिश्र—              | बारहमासना          | ११४                    |     |
|                     | गुणधर्मोकीवीनती    | ४४७                    |                         | वष्पानामिचक्रनतिकी |                        |     |
|                     | ५११, ६१४, ६४२, ६६३ |                        |                         | भावनद              | ८४                     |     |
|                     | चर्चासिमास्थान     | १५, ६०६                |                         | ४४८, ७३६           |                        |     |
|                     |                    | ६४६                    |                         | विनिती             | ६४२, ६६३               |     |
|                     | चतुर्विधातिस्तोत्र | ४२६                    |                         |                    | ६६४                    |     |
|                     | जकडो               | ६५०, ७१६               |                         | स्तुति             | ७१०                    |     |
|                     | त्रिनदर्शन         | ६०५                    |                         | भूधरार्थसिद्धचुपाय |                        |     |
|                     | जैनसतक             | ३२७, ४२६               |                         | वचनिका             | ६६                     |     |
|                     |                    | ६५२, ६७०, ६८६          |                         |                    |                        |     |
|                     |                    | ६६८, ७०६, ७१०          |                         | भेलीराम—           | पद                     | ७७६ |
|                     |                    | ७१३, ७१६, ७३२          |                         | भैरवदास—           | पंचकत्यागपूजा          | ५०१ |
|                     | दशालक्षणाज्ञा      | ५६२                    |                         | भोगीलाल—           | बृहद्विंशत्यर्कसूत्र   | ७२६ |
|                     | नरकदुल्लवर्णन      | ६५, ७८८                |                         | संगलचंद—           | नन्दीश्वरद्वीपपूजा     | ४६३ |
|                     | नेमीश्वरकीःस्तुति  | ६५०                    |                         |                    | पदसंग्रह               | ४४७ |
|                     | ७७७                | मकरद्विपद्यावतिपुरवाल— | षट्संहननवर्णन           | ८८                 |                        |     |
| पंचमेरूपूजा         | ५०५, ५६६           | मकखनलाल—               | मकलंकनाटक               | ३१६                |                        |     |
|                     | ७०४, ७५६           | मजलसराय—               | जैनबद्रीदेशकीपत्री      | ५८१                |                        |     |
| पार्ष्वपुराण        | १७६, ७४४           | मतिकुसल—               | चन्द्रलेहारास           | ३६१                |                        |     |
|                     | ७६१                | मतिशेखर—               | ज्ञानवावनी              | ७७२                |                        |     |
| पुष्पार्थसिद्धचुपाय |                    | मतिसागर—               | बालिभद्रचौपई            | १६८, ७२६           |                        |     |
| भाषा                | ६६                 | मथुरादासव्यास—         | लीलावतीभाषा             | ३६८                |                        |     |
| पद                  | ४४५, ५८०, ५८६      | मनरंगलाल—              | मकुन्धिमचेत्यालमपूजा    | ४४४                |                        |     |
|                     | ५६०, ६१५, ६२०      |                        | चतुर्विधवित्तीर्थकरपूजा | ४७७                |                        |     |
|                     | ६४८, ६६४, ६५४      |                        | निर्वाणपूजापाठ          | ४६६                |                        |     |
|                     | ६६४, ७७६, ७७७      | मनरथ—                  | वितामणिलीकीजयमाल        |                    |                        |     |
|                     | ७८५, ७८६, ७८८      |                        |                         | ६४४                |                        |     |
| वर्षसपरीषद्वर्णन    | ७५, ६०५            | मनरास—                 | भक्तप्रणामाला           | ७४६                |                        |     |
|                     |                    |                        | गुणामरमाला              | ७५०                |                        |     |

| ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम            | ग्रंथ सूची की पत्र सं०         | ग्रंथकार का नाम  | ग्रंथ नाम          | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|-----------------|----------------------|--------------------------------|------------------|--------------------|------------------------|
|                 | पद                   | ६६०, ७२३, ७२४<br>७६४, ७६६, ७७६ |                  | पद                 | ४४७, ४४८, ७६८          |
| मनसाराज—        | पद                   | ६६३, ६६४                       |                  | समाधितंत्रभाषा     | १२५                    |
| मनसुखलाख—       | सम्प्रेषणिसरमहात्म्य | ६२                             |                  | साधुबंदना          | ४५२                    |
| मनहरदेव—        | आदिनायपूजा           | ५११                            |                  | दृष्टावसपिरणीकाल   |                        |
| मझालालखिन्दूका— | चारित्रसारभाषा       | ५६                             | मानकवि—          | मानबावनी           | ३३४, ६०१               |
|                 | पद्यमंदिरपञ्चीसीभाषा | ६८                             |                  | विनतीचौपडकी        | ७८१                    |
|                 | प्रलुम्नचरित्रभाषा   | १८२                            |                  | संयोगवत्तीवी       | ६१३                    |
| मनासाह—         | मानकीबडीबावनी        | ६३८                            | मानसागर—         | कठियारकानडरीचौपई   | २१८                    |
|                 | मानकीलघुबावनी        | ६३८                            | मानसिंह—         | भारती              | ७७७                    |
| मनोहर—          | पद                   | ४४५, ७६३, ७६४<br>७८५, ७८६      |                  | पद                 | ७७७                    |
|                 |                      |                                |                  | भ्रमरगीत           | ७५०                    |
| मनोहरदास—       | मानवितामण्डि         | १८, ७१४<br>७३६                 | मारू—            | मानविनोद           | ३००                    |
|                 | ज्ञानपदवी            | ७१८                            | मिहरचंद—         | पहेलियां           | ६५१                    |
|                 | ज्ञानपेढी            | ७५७                            | सुकन्ददास—       | सज्जनचित्तवल्लभ    | ३३७                    |
|                 | धर्मपरोक्षा          | ३५७, ७१६                       | मेरुनन्दन—       | पद                 | ६६०                    |
| मल्लकचंद—       | पद                   | ४४६                            | मेरुसुन्दरगण्डि— | अजितघातिस्तवन      | ६१६                    |
| मल्लकदास—       | पद                   | ७६३                            | मेला—            | शीलोपदेशमाला       | २४७                    |
| महामत—          | वैराग्यगीत           | ४१६                            | मेलीराम—         | पद                 | ७७६                    |
| महाचन्द्र—      | लघुस्वयंप्रभूतोत्र   | ७१६                            | महेराकवि—        | कल्याणमंदिरस्तोत्र | ७८६                    |
|                 | पदभाष्यक             | ८७                             | मोतीराम—         | हमीररासो           | ३६७                    |
|                 | सामायिकपाठ           | ४२६                            | मोहन—            | पद                 | ५६१                    |
| महीचन्द्रपुरि—  | पद                   | ५७६                            | मोहनमिश्र—       | कवित               | ७७२                    |
| महेन्द्रकीर्ति— | जकडी                 | ६२०                            | मोहनविजय—        | लीलावतीभाषा        | ३६७                    |
|                 | पद                   | ७८६                            | रगविजय—          | चन्दनाचरित्र       | ७६१                    |
| माखनकवि—        | विपलछंदशास्त्र       | ३१०                            | रंगविजय—         | मानसुंगमानवतिचौपई  | २३५                    |
| मायाकचंद—       | तेरहंपंचपञ्चीसी      | ४४८                            | रंगविनयगण्डि—    | आदीस्वरगीत         | ७७६                    |
|                 |                      |                                |                  | उपदेशसम्प्राय      |                        |
|                 |                      |                                |                  | भंगलकलधामहाधुनि    |                        |
|                 |                      |                                |                  | चतुष्पदी           | १८५                    |

| ग्रन्थकार का नाम | ग्रन्थ नाम            | ग्रन्थ सूची की पृष्ठ सं० | ग्रन्थकार का नाम | ग्रन्थ नाम             | ग्रन्थ सूची की पत्र सं० |
|------------------|-----------------------|--------------------------|------------------|------------------------|-------------------------|
| रुद्रधु—         | बारहभावना             | ११४                      |                  | चतुर्विधतित्तीयैकरूपा  |                         |
| रघुराम—          | सभासारनाटक            | ३३८                      |                  | ४७२, ६६८, ७२७,         |                         |
| रघुजीवदास—       | स्वरोदय               | ३४५                      |                  | ७२६, ७७२               |                         |
| रत्नकीर्ति—      | नेमीस्वरकाहिण्डोलना   | ७२२                      |                  | पद ५८१, ६६८, ६८६       |                         |
|                  | नेमीस्वररास           | ६३८                      |                  | पूजासंग्रह ५२०         |                         |
|                  |                       | ७२२                      |                  | प्रतिमासान्तचतुर्दशी   |                         |
| रतनचंद्र—        | बीबीसीविनती           | १४६                      |                  | ब्रतोद्यापन ५२०        |                         |
|                  | देवकीकीडात            | ४४०                      |                  | पुरुषस्त्रीसंवाद ७८६   |                         |
| रत्नमुक्ति—      | नेमीराजमतीरास         | ६१७                      |                  | बारहखंडी ७१५           |                         |
| रत्नभूषण—        | जिनचैत्यालयजयमाल      | ५६४                      |                  | शांतिनाथपूजा ५४५       |                         |
| रत्नकवि—         | जिनदत्तबीपई           | ६८३                      |                  | शिखरविलास ६६३          |                         |
| रसिकराय—         | स्नेहलीला             | ६६४                      |                  | सम्भेदशिखरपूजा ५५०     |                         |
| राजमल—           | तत्त्वार्थसूत्रटीका   | ३०                       |                  | सोताचरित्र २०६, ७२५    |                         |
| राजसमुद्र—       | कर्मबत्तीसी           | ६१७                      |                  | ७५६                    |                         |
|                  | जीवकायासंज्ञाय        | ६१६                      |                  | सुपार्वर्चनाथपूजा ५५५  |                         |
|                  | शत्रुञ्जयभास          | ६१६                      | श्रीधिरामचन्द्र— | उपदेशसंज्ञाय           | ३८०                     |
|                  | शत्रुञ्जयस्तवन        | ६१६                      |                  | कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा |                         |
|                  | सोलहसतियोकैनाम        | ६१६                      |                  | ३८५                    |                         |
| राजसिंह—         | पद                    | ५८७                      | रामचन्द्र—       | नेमिनाथरास             | ३६२                     |
| राजसुन्दर—       | झादशमाला ७४३, ७७१     |                          | रामदास—          | रामविनोद               | ३०२                     |
|                  | सुन्दरभृंगार ६८३, ७२६ |                          |                  | पद ५८३, ५८८            |                         |
| राजाराम—         | पद                    | ५६०                      |                  | ६६३, ६६७, ७७२          |                         |
| राम—             | पद                    | ५६३                      | रामभंगाल—        | पद                     | ५८२                     |
|                  | रत्नपरीक्षा           | ५६८                      | मिश्रभराराय—     | बृहद्ब्रह्मिण्मथनीति   |                         |
| रामकृष्ण—        | जकडी                  | ५६८                      |                  | शास्त्रभाषा ३३६        |                         |
|                  | पद                    | ६६६                      | रामविनोद—        | रामविनोदभाषा           | ६४०                     |
| रामचंद्र—        | भादिनाथपूजा           | ६५१                      | ज० रायसङ्गल—     | भावित्यवारकथा          | ७१२                     |
|                  | श्रीधरप्रमजिनपूजा     | ५७४                      |                  | चिंतामणिजयमाल          | ६५५                     |
|                  |                       |                          |                  | द्विमातीसठारा          | ७६५                     |



| ग्रंथकार का नाम  | ग्रंथ नाम             | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम               | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|------------------|-----------------------|------------------------|-----------------|-------------------------|------------------------|
|                  | जन्मस्वामीचरित्र      | ७१०                    |                 | पूर्वमंगल               | ४०१, ४२८, ४४७          |
|                  | निर्दोषसप्तमीकथा      | ६७६                    |                 |                         | ५१८, ५६५, ५७०          |
|                  | नेमीश्वरकाग           | ३६३, ६०१               |                 |                         | ६२४, ६४२, ६५०          |
|                  |                       | ६२१, ६३८, ७५२          |                 |                         | ६५८, ६६१, ६६४,         |
|                  | पंचशुक्कीजयमाल        | ७६३                    |                 |                         | ६७३, ७०४, ७०५          |
|                  | प्रद्युम्नरास         | ६६५, ६३६               |                 |                         | ७१५, ७२०               |
|                  |                       | ७१२, ७३७, ७४६          |                 | पूर्वकल्पारणकपूजा       | ५००                    |
|                  | मक्तामस्तोत्रवृत्ति   | ४०८                    |                 | बोहाशतक                 | ७४०, ७४३               |
|                  | भविष्यदतरास           | ३६४, ५६४               |                 | पद                      | ५८५, ५८७, ५८८          |
|                  |                       | ६४८, ७४०, ७५१          |                 |                         | ६२४, ६६१, ७२४          |
|                  |                       | ७५२, ७७३, ७७५          |                 |                         | ७४६, ७५५, ७६३          |
|                  | राजाचन्द्रगुप्तकीचौपई | ६२०                    |                 |                         | ७६५, ७८३               |
|                  | शीलरास                | ७४६                    |                 | परमार्थगीत              | ७६४                    |
|                  | श्रीपालरास            | ६३८                    |                 | परमार्थदीहा             | ७०६                    |
|                  |                       | ६८४, ७१२               |                 | परमार्थहिंडोलना         | ७६४                    |
|                  |                       | ७१७, ७४६               |                 | सद्युमंगल               | ६२४, ७१६               |
|                  | सुदर्शनरास            | ३६६, ६३६               |                 | विनती                   | ७६५                    |
|                  |                       | ७१२, ७४६               |                 | समवसरणपूजा              | ५४६                    |
|                  | हनुमन्चरित्र          | २१६, ५६५               | पांडे रूपचंद्र— | तत्त्वार्थसूत्रभाषाटीका | ६४०                    |
|                  |                       | ५६६, ७१७, ७३४          | रूपदीप—         | विगलभ्रमभा              | ७०६                    |
|                  |                       | ७४०, ७५२               | रेखराज—         | पद                      | ७६८                    |
|                  |                       | ७४४, ७६२               | लक्ष्मण—        | चन्द्रकथा               | ७५८                    |
| साधुमीभाईरायमलज— | ज्ञानानन्दभावका       |                        | लक्ष्मीवल्लभ—   | नवतत्त्वप्रकरण          | ३७                     |
|                  | चार                   | ५८                     | लक्ष्मीसागर—    | पद                      | ६८२                    |
| रूपचंद्र—        | अध्यात्मदीहा          | ७४६                    | लक्ष्मिबिमलगाण— | ज्ञानार्णवटीकाभाषा      | १०८                    |
|                  | जकडी                  | ६५०, ७५२               | पं० लालो—       | पार्ष्वनाथचौपई          | ४४८                    |
|                  |                       | ६६१, ७५५               | लाल—            | पद                      | ४४५, ६८६               |
|                  | जिनस्तुति             | ७०२                    | लालचन्द्र—      | भारती                   | ६२२                    |

| प्रथमकार का नाम  | ग्रंथ नाम             | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|------------------|-----------------------|------------------------|
|                  | चिन्तामणिपार्ष्वनाथ   |                        |
|                  | स्तवन                 | ६१७                    |
|                  | धर्मदुःखिचौपई         | २२६                    |
|                  | नेमिनाथमंगल           | ६०५, ७२२               |
|                  | नेमीश्वरका ब्याहला    | ६५१                    |
|                  | पद                    | ५८२, ५८३, ५८७          |
|                  | पूजासंग्रह            | ७७७                    |
| पांडे लालचंद—    | पट्टबर्मापदेशरत्नमाला | ८८                     |
|                  | सन्मेशशिलरमहात्म्य    | ६२                     |
| श्यामि लालचंद—   | मठारहनतेकीकथा         | २१३                    |
|                  | मरुदेवीसज्जाप         | ४५०                    |
|                  | महावीरजीचौडास्या      | ४५०                    |
|                  | विजयकुमारसज्जाप       | ४५०                    |
|                  | शान्तिनाथस्तवन        | ४१७                    |
|                  | धीतलनाथस्तवन          | ४५१                    |
| लालजीत—          | तेरहठ्ठी म्पूजा       | ४८४                    |
| श्यामलाल—        | जिनवरव्रतजयमाला       | ६८५                    |
| लालबख्श न—       | पाण्डवचरित्र          | १७८                    |
| श्यामलालसागर—    | एमोकारछंद             | ६८३                    |
| सुणकराणकासलीवाल— | चौबीसतीर्थकरस्तवन     | ४३८                    |
|                  | देवकीकीढाल            | ४३६                    |
| साईसोडट—         | मठारहनतेकीकथा         |                        |
|                  | ( चौडास्या )          | ६२३                    |
|                  |                       | ७२३, ७७५, ७८०, ७६८     |
|                  | द्वारशानुप्रेक्षा     | ७६६                    |
|                  | पार्ष्वनाथकीपुणमाला   | ७७६                    |
|                  | पार्ष्वनाथजयमाल       | ६५२                    |
|                  |                       | ७८१                    |

| प्रथमकार का नाम  | ग्रंथ नाम           | ग्रंथ सूची की पत्र सं०                 |
|------------------|---------------------|--|
|                  | पार्ष्वजिनपूजा      | ५०७                                    |
|                  | पूजाष्टक            | ५१२                                    |
|                  | षट्श्लेषाबेलि       | ३६६                                    |
| बल्लभ—           | रुक्मिणीविवाह       | ७८७                                    |
| बाजिद—           | बाजिदकेपदिल्ल       | ६७३                                    |
| बादिचन्द्र—      | श्रावित्यवारकथा     | ६०७                                    |
| विचित्रदेव—      | मोरपिच्छभारीके कवित | ६७३                                    |
| विजयकीर्ति—      | मनस्तत्रतपूजा       | ४५७                                    |
|                  | जन्मस्वामीचरित्र    | १६६                                    |
|                  | पद                  | ५८०, ५८२, ५८३, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८६ |
|                  | धेरिणकचरित्र        | २०४                                    |
| विजयदेवसूरि—     | नेमिनाथरास          | ३६२                                    |
|                  | शीलरास              | ३६५, ६१७                               |
| विजयमानसूरि—     | श्रीयांसस्तवन       | ४५१                                    |
| विद्याभूषण—      | गीत                 | ६०७                                    |
| विनयकीर्ति—      | मष्टालिकाव्रतकथा    | ६१४                                    |
|                  |                     | ७८०, ७६४                               |
| विनयचंद—         | केवलज्ञानसज्जाप     | ३८५                                    |
| विनोदीलाललालचंद— | कृपणपच्चीसी         | ७७३                                    |
|                  | चौबीसीस्तुति        | ७७३, ७७६                               |
|                  | चौरासीवातिका        |  |
|                  | जयमाल               | ३६६                                    |
|                  | नेमिनाथकेनवमंगल     | ४४०                                    |
|                  |                     | ६८६, ७२०, ७३४                          |
|                  | नेमिनाथकावारहमाला   | ७५३                                    |

| ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम          | ग्रंथ सूची की पत्र सं०                       | ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम     | ग्रंथ सूची की पत्र सं०         |
|-----------------|--------------------|--|-----------------|---------------|--------------------------------|
|                 | पूजाष्टक           | ७७७  |                 | वृजलाल—       | बारहभावना ६८५                  |
|                 | पद                 | ५६०, ६२३<br>७५७, ७८३, ७६८                    |                 | वृन्दाकवि—    | वृन्दासतई ३३६<br>६७५, ७५१, ७८५ |
|                 | भक्तामरस्तोत्रकथा  | २३४  |                 | वृन्दाबन—     | कवित ६८२                       |
|                 | सम्यक्त्वकौमुदीकथा | २३२  |                 |               | चतुर्विंशतितोषैव रज्जुजा ४७१   |
|                 | राजुलपच्चीसी       | ६००<br>६१३, ६२२, ६४३<br>६५१, ६८५<br>७४७, ७५३ |                 |               | छंदशतक ३२७                     |
|                 | मलकीर्ति—          | बाहुबलीसज्जक्याय ४४६                         |                 | शंकराचार्य—   | तीस चौबीसीपूजा ४८३             |
|                 | दिभलेन्द्रकीर्ति—  | भाराधनाप्रतिबोधसार ६५८                       |                 | शांतिकुशल—    | पद ६२५, ६४३                    |
|                 |                    | जिनचौबीसीभवान्तर<br>रास ५७८                  |                 | ब० शांतिदास—  | प्रवचनसारभाषा ११४              |
|                 | विमलविजयमणि—       | धनापीसाधचौडालिया ६८०                         |                 | शक्तिभद्र—    | मुहूर्तमुक्तावलिभाषा ७६८       |
|                 |                    | ग्रहंभ्रकचौडालियागीत ४३५                     |                 | शांतिकुशल—    | ध्रुवजनारास ३६०                |
|                 | विशालकीर्ति—       | धर्मपरीक्षाभाषा ७३५                          |                 | ब० शांतिदास—  | अनन्तनाथपूजा ६६०, ७६५          |
|                 | विरहभूषण—          | अष्टकपूजा ७०१                                |                 |               | प्रादिनाथपूजा ७६५              |
|                 |                    | नेमिजीकीमंगल ५६७                             |                 | शास्त्रिभद्र— | बुद्धिरास ६१७                  |
|                 |                    | नेमिजीकीलहरि ७४६, ७७८                        |                 | शिवरचंद्र—    | तत्त्वार्थसूत्रभाषा ३०         |
|                 |                    | पद ४४३, ६६८                                  |                 | शिरोमणियास—   | धर्मसार ६३, ६६६                |
|                 |                    | पार्वनाथचरित्र ५६८                           |                 | शक्तिशिव—     | नेमिस्तवन ४००                  |
|                 |                    | विनती ६२१                                    |                 | शिवजीलाल—     | वर्धासार १६                    |
|                 |                    | हेमन्दारी ७६३                                |                 |               | दर्शनसारभाषा १३३               |
|                 |                    | रामकवच ६६७                                   |                 | शिवनिधानगणि—  | प्रतिष्ठासार ५२२               |
|                 |                    | पद ५८७                                       |                 |               | संग्रहणीबालावबोध ४५            |
|                 |                    | जिनान्तर ६२७                                 |                 | शिवलाल—       | कवित्तुंगलखोरका ७८२            |
|                 |                    | संबोधसतागु ३३६                               |                 | शिवसुन्दर—    | पद ७५०                         |
|                 |                    | पांचपरवीरतकीकथा ६२१                          |                 | शुभचन्द्र—    | अष्टाङ्ककागीत ६८६              |
|                 |                    | ६८५  |                 |               | भारती ७७६                      |
|                 |                    |  |                 |               | क्षेत्रपालगीत ६२३              |
|                 |                    |  |                 |               | पद ७०२, ७२४<br>७७७             |

| ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम           | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम           | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|-----------------|---------------------|------------------------|-----------------|---------------------|------------------------|
| शोभाचन्द—       | शिवदेवीमाताकोघाठवों | ७२४                    |                 | भक्तकालकृष्णभाषा    | ३७६                    |
|                 | क्षेत्रपालभैरवगीत   | ७७७                    |                 | श्रुतिमंडलपूजा      | ७२६                    |
| श्यामदास—       | पद                  | ५८३, ७७७               |                 | तत्त्वार्थसूत्रभाषा | २६                     |
|                 | तोसचौबीसी           | ७५८                    |                 | दशालक्षण धर्मवर्णन  | ५६                     |
|                 | पद                  | ७६४                    |                 | नित्यनियमपूजा       | ४६६                    |
|                 | श्यामबलीसी          | ७६६                    |                 | न्यायदीपिकाभाषा     | १३५                    |
| श्याममिश्र—     | रागमाता             | ७७१                    |                 | भगवतीभाराधनाभाषा    | ७६                     |
| श्रीपाल—        | त्रिपण्डितनाकाछद    | ६७०                    |                 | मृत्युमहोत्सवभाषा   | ११५                    |
|                 | पद                  | ६७०                    |                 | रत्नकरण्डभ्रावकाचार | ८२                     |
| श्रीभूषण—       | अनन्तचतुर्दशीपूजा   | ४५६                    |                 | घोडशकारणभावना       | ८८, ६८                 |
|                 | पद                  | ५८३                    | सबलसिंह—        | पद                  | ६२४                    |
| श्रीराम—        | पद                  | ५६०                    | सभाचन्द—        | सुहरि               | ७२४                    |
| श्रीवद्वान—     | गुणस्थानगीत         | ७६३                    | सवाईराम—        | पद                  | ५६०                    |
| मुनिश्रीसार—    | स्वार्थबीसी         | ६१६                    | समयराज—         | पार्वनाथस्तवन       | ६६७                    |
| संतदास—         | पद                  | ६५४                    | समयसुन्दर—      | अनाथीमुनिसम्भाष्य   | ६१८                    |
| संतराम—         | कवित्त              | ६६२                    |                 | भरहनासम्भाष्य       | ६१८                    |
| संतलाल—         | सिद्धचक्रपूजा       | ५५४                    |                 | आदिनाथस्तवन         | ६१६                    |
| संतीदास—        | पद                  | ७५६                    |                 | कर्मछत्तीसी         | ६१६                    |
| संतोषकवि—       | विषहरणविधि          | ३०३                    |                 | कुशलसुफ्तवन         | ७७६                    |
| मुनिसकलकीर्ति—  | भाराधनाप्रतिबोधसार  | ६८५                    |                 | क्षमाछत्तीसी        | ६१७                    |
|                 | कर्मचूरप्रतवेति     | ५६२                    |                 | गौडीपार्वनाथस्तवन   | ६१७                    |
|                 | पद                  | ५८८                    |                 |                     | ६१६                    |
|                 | पार्वनाथाष्टक       | ७७७                    |                 | गौतमपृच्छा          | ६१६                    |
|                 | मुक्ताबलिगीत        | ६८६                    |                 | गौतमस्वाधीसम्भाष्य  | ६१८                    |
|                 | सोलहकारणरास         | ५६४                    |                 | ज्ञानपंचमीबृहदस्तवन | ७७६                    |
|                 |                     | ६१६, ७८१               |                 | तीर्थमालास्तवन      | ६१७                    |
| सदासागर—        | पद                  | ५८०                    |                 | दानसपथीलसंबाद       | ६१७                    |
| सदासुखकासलीवाल— | भर्षप्रकाशिका       | १                      |                 | नमिराजविसम्भाष्य    | ६१८                    |
|                 |                     |                        |                 | पंचयतिस्तवन         | ६१६                    |

| ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम           | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम    | ग्रंथ नाम                | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|-----------------|---------------------|------------------------|--------------------|--------------------------|------------------------|
|                 | पद                  | ५७६, ५८८<br>५८६, ७७७   | सुखानंद—           | पंचमेकपूजा               | ५०५                    |
|                 | पद्यावतीरानीभाराधना | ६१७                    | सुगनचंद्र—         | चतुर्विंशतितीर्थकर       |                        |
|                 | पद्यावतीस्तोत्र     | ६८५                    | सुन्दर—            | पूजा                     | ४७३                    |
|                 | पार्वनाथस्तवन       | ६१७                    | सुन्दरगणि—         | कपडामाला का दूहा         | ७७३                    |
|                 | पुण्यछत्तीसी        | ६१६                    | सुन्दरदास—।        | नामिकालक्षण              | ७४२                    |
|                 | फलवधीपार्वनाथस्तवन  | ६१६                    | सुन्दरदास—।।       | पद                       | ७२४                    |
|                 | बाहुबलिसञ्जय        | ६१६                    | सुन्दरभूषण—        | सहेलीगीत                 | ७६४                    |
|                 | बीसविंशतिरहमानजकडी  | ६१७                    | सुमतिकीर्त्ति—     | जिनदत्तसूरिगीत           | ६१८                    |
|                 | महावीरस्तवन         | ७३५                    | सुमतिसागर—         | कवित्त                   | ६४३                    |
|                 | मेघकुमारसञ्जय       | ६१८                    | सुरचंद्र—          | पद                       | ७१०                    |
|                 | मौनएकादशीस्तवन      | ६२०                    | सुरदास—            | सुन्दरविलास              | ७४५                    |
|                 | राणपुरस्तवन         | ६१६                    | सुरेन्द्रकीर्त्ति— | सुन्दरशृंगार             | ७६८                    |
|                 | बलदेवमहामुनिसञ्जय   | ६१६                    | सुरजमल—            | सिन्दूरप्रकरणाभाषा       | ३४०                    |
|                 | विनती               | ७३२                    |                    | पद                       | ५८७                    |
|                 | शत्रुञ्जयतीर्थरास   | ६१७, ७००               |                    | क्षेत्रपालपूजा           | ७६३                    |
|                 | श्रेणिकराजासञ्जय    | ६१६                    |                    | जिनस्तुति                | ७६३                    |
|                 | सञ्जय               | ६१८                    |                    | दशलक्षणप्रतोद्यापन       | ६३८                    |
| सहसकीर्त्ति—    | श्रीदीश्वररेखता     | ६८२                    |                    | प्रतयममाला               | ७६५                    |
| साईदास—         | पद                  | ६२०                    | सुरेन्द्रकीर्त्ति— | श्राद्धित्यवारकथाभाषा    | ७०७                    |
| साधुकीर्त्ति—   | सत्तरभेदपूजा        | ७३५, ७६०               |                    | जैनबद्रीमुडबद्रोकीपात्रा | ३६६                    |
|                 | जिनकुशलकीस्तुति     | ७७८                    |                    | पद                       | ६२२                    |
| सालम—           | श्रामशिक्षासञ्जय    | ६१६                    | सुरचंद्र—          | सम्भेदशिक्षणपूजा         | ५५०                    |
| साहकीरत—        | पद                  | ७७७                    | सुरदास—            | समाधिमरणभाषा             | १२७                    |
| साहिबराम—       | पद                  | ४४५, ७६८               |                    | पद                       | ६८४                    |
| सुखदेव—         | पद                  | ५८०                    |                    |                          | ७६६, ७६३               |
| सुखराम—         | कवित्त              | ७७०                    | सुरजभानश्रीसवाले—  | परमत्तमप्रकाशाभाषा       | ११२                    |
| सुखलाल—         | कवित्त              | ६५६                    | सुरजमल—            | पद                       | ५८१                    |

| ग्रंथकार का नाम    | ग्रंथ नाम              | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम             | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|--------------------|------------------------|------------------------|-----------------|-----------------------|------------------------|
| कविसूरत—           | द्वादशानुप्रेक्षा      | ७६४                    |                 | निर्वाणशेषमंडलपूजा    | ४६८                    |
|                    | बारहल्की ६६, ३३२, ७१५  | ७८८                    |                 | पंचक्रुमारपूजा        | ७५६                    |
|                    |                        |                        |                 | पूजापाठसंग्रह         | ५११                    |
| सेवगराम—           | धनन्तनाथपूजा           | ४५६                    |                 | मदनपराजय              | ३१८                    |
|                    | प्रादिनाथपूजा          | ६७४                    |                 | महावीरस्तोत्र         | ५११                    |
|                    | कवित्त                 | ७७२                    |                 | बृहद्गुरावलीशांतिमंडल |                        |
|                    | जिनगुरापञ्चोत्ती       | ४४७                    |                 | ( चौसठःश्लोकपूजा )    | ४७६, ५११               |
|                    | जिनवशर्मगल             | ४४७                    |                 | सिद्धलेशोकीपूजा       | ५५३, ७८६               |
|                    | पद ४४७, ७८६, ७६८       |                        |                 | सुगन्धदशमीपूजा        | ५११                    |
|                    | निर्वाणकाण्ड           | ७८८                    | हंसराज—         | विज्ञप्तिपत्र         | ३७४                    |
|                    | नेमिनाथकीभावना         | ६७४                    | हठमलहास—        | पद                    | ६२४                    |
| सेवारामपाटनी—      | मल्लिनाथपुराण          | १५२                    | हरलखंड—         | पद                    | ५८३, ५८४               |
| सेवारामसाह—        | धनन्तपूजा              | ४५७                    |                 |                       | ५८५                    |
|                    | चतुर्विंशतितीर्थकरपूजा | ४७०                    | हरचंद्रप्रवाल—  | सुकुमालचरित्र         | २०७                    |
|                    | धर्मोपदेशसंग्रह        | ६४                     |                 | पंचकल्याणकपाठ         | ४००                    |
| सोम—               | चितामगिणपार्श्वनाथ     |                        |                 |                       | ७६६                    |
|                    | जयमाल                  | ७६२                    | हगूलाल—         | सज्जनचित्तवल्लभ       | ३३७                    |
| सोमदेवसूरि—        | देवराजवल्हराजचौपई      | २२८                    | हर्षकवि—        | चंद्रहंसकथा           | ७१४                    |
| सोमसेन—            | पंचलेशपालपूजा          | ७६५                    |                 | पद                    | ५७६                    |
| श्रीश्रीरामसौगाथी— | लग्नचंद्रिका           | ७५१                    | हर्यकीर्ति—     | जिणभक्ति              | ४३८                    |
| शुद्धरूपचंद्र—     | शुद्धिस्तुतिशतक        | ५२, ५११                |                 | तीर्थकरजकडी           | ६२२                    |
|                    | चमत्कारजिनेश्वरपूजा    | ५११                    |                 | पद                    | ५८६, ५८७               |
|                    |                        | ६६३                    |                 |                       | ५८८, ५९०, ६२१          |
|                    | जयपुरनगरसंबंधी         |                        |                 |                       | ६२४, ६६३, ७०१          |
|                    | बैत्यालभोकीचंदना       | ४३८                    |                 |                       | ७५०, ७६३, ७६४          |
|                    |                        | ५११                    |                 | पंचमपतिवैलि           | ६२१                    |
|                    | जिवसहस्रनाथपूजा        | ४८०                    |                 |                       | ६६१, ६६८, ७५०          |
|                    | मिलोकसारचौपई           | ५११                    |                 |                       | ७६५                    |

| ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम                         | ग्रंथ सूची की पत्र सं० | ग्रंथकार का नाम | ग्रंथ नाम          | ग्रंथ सूची की पत्र सं० |
|-----------------|-----------------------------------|------------------------|-----------------|--------------------|------------------------|
|                 | पार्व्वनाथपूजा                    | ६६३                    |                 | विनती              | ६६३                    |
|                 | बीसतीर्थकरों की जकडी<br>( जयमाल ) | ६४४, ७२२               | हीरकवि—         | सागरदत्तचरित्र     | २०४                    |
|                 | बीस बिरहमानपूजा                   | ५६५                    | हीराचन्द—       | पद                 | ४४७, ५८१               |
|                 | भावककीकरणी                        | ५६७                    | हीरानन्द—       | पूजासंग्रह         | ५१६                    |
|                 | षट्श्लेष्यावेलि                   | ७७५                    | हीरालाल—        | पंचास्तिकायभाषा    | ४१                     |
|                 | सुलषडी                            | ७४६                    | हेमराज—         | चन्द्रप्रभपुराण    | १४६                    |
| हर्षचन्द—       | पद                                | ५८५, ६२०               |                 | गणितसार            | ३६७                    |
| हर्षसूरि—       | भारतिपाखर्व्वजिनस्तवन             | ३७६                    |                 | गोम्मतसारकर्मकाण्ड | १३                     |
| पांडेहरिकृष्ण—  | अनन्तचतुर्दशीव्रत                 |                        |                 | द्रव्यसंग्रहभाषा   | ७३३                    |
|                 | कथा                               | ७६६                    |                 | पंचास्तिकायभाषा    | ४१                     |
|                 | आकाशपंचमीकथा                      | ७६४                    |                 | पद                 | ५६०                    |
|                 | निर्दोषसप्तमीकथा                  | ७६४                    |                 | प्रवचनसारभाषा      | ११३                    |
|                 | निशल्याष्टमीकथा                   | ७६५                    |                 | नयचक्रभाषा         | १३४                    |
| हरिचरणदास—      | कविवल्लभ                          | ६८८                    |                 | बावनी              | ६५७                    |
|                 | बिहारीसतसईटीका                    | ६८७                    |                 | भक्तामरस्तोत्रभाषा | ४१०                    |
| हरीदास—         | ज्ञानोपदेशबत्तीसी                 | ७१३                    |                 |                    | ५१६, ६४८, ६६१          |
|                 | पद                                | ७७०                    |                 |                    | ७०७, ७७४               |
| हरिचन्द—        | पद                                | ६४६                    |                 | साधुकीभारती        | ७७७                    |
| हरिसिंह—        | पद                                | ५८२, ५८५, ६२०          |                 | सुगन्धवशाभीकथा     | २५४                    |
|                 |                                   | ६४३, ६४४, ६६६          |                 |                    | ७६५                    |
|                 |                                   | ७७२, ७७६, ७६६          | मुनिहेमसिद्ध—   | प्रादिनाचमीत       | ४३६                    |



## ➡ शसकों की नामावलि ➡

|                     |                       |                   |                        |
|---------------------|-----------------------|-------------------|------------------------|
| प्रकबर              | ६, १२२, १६७, ५६१, ५६२ | चन्द्रगुप्त       | ६२०                    |
| ( इक्ष्वाकु )       | ६८१, ७६७, ७७३         | विजयवर्मोद्दीचे   | ५६२                    |
| प्रजैपालपवार        | ५६२                   | छत्रसाल           | ४०६                    |
| प्रणहलपुत्राल       | ५६२                   | जगतसिंह           | १७०, १८१, ३६६, ७७६     |
| प्रनंगरासतुंबर      | ५६१                   | जगपाल             | ६६                     |
| प्ररविच             | ५६८                   | जयसिंह ( सवाई )   | ५३, ७१, ६३, ६६, १२०    |
| प्रलाउद्दीन         | ३५६, २५६              |                   | १२८, २०५, ३०५, ४८२     |
| ( भलावदीन )         |                       |                   | ५१५, ५२०, ५६१          |
| प्रलावसला           | १५७                   | जयसिंहदेव         | १४५, १७६               |
| प्रलावद्दीनलोदी     | ५६                    | जहांगीर           | ४१, १४४                |
| प्रहमवशाह           | २१६, ५६१              | जैतसी             | ५६२                    |
| प्रालभ              | २५१                   | जैसिंह ( सिधराव ) | ५६२                    |
| प्रौरगजेव           | ६७, ४७८, ५५५, ६६८     | जोधावत            | ५६१                    |
| प्रौरगसाहि पातसाहि  | ३१, ३६, ५६२           | जोषे              | ५६१                    |
| इन्द्रजीत           | ७४३                   | टोडरमल            | ७६७                    |
| इब्राहीमलोदी        | १४२                   | हुगरेन्द्र        | १७२                    |
| इब्राहीम ( सुलतान ) | १४५                   | तैतबो             | ५६२                    |
| ईसरीसिंह            | २२६                   | देवडो             | ५६२                    |
| ईश्वरसिंह           | २३१                   | नाहरराव ( पवार )  | ५६१                    |
| उदयसिंह             | २०६, २५१, ५६१, ५६२    | नीरगजीव           | ३०५                    |
| उभैसिंह             | २१६                   | नीरग              | ४४८                    |
| किशानसिंह           | ५६२                   | पूरणमल्ल          | १६४                    |
| कीर्तिसिंह          | २६५                   | पेरोजासाह         | ७८                     |
| कुशलसिंह            | ४८                    | पृथ्वीराज         | १०७                    |
| केसरीसिंह           | ३४७                   | पृथ्वीसिंह        | ७३, १४४, ६८३, ७६७      |
| क्षैतसी             | १६०                   | प्रतापसिंह        | २७, १४६, १८६, ४५७, ४६१ |
| गयासुद्दीन          | ५३                    | फतेसिंह           | ४८०                    |
| गजुद्दीहमहापुर      | १२५                   | बस्तावरसिंह       | ७२६                    |
| बबसीराय             | १७२                   | बहलोलसाह          | ६२                     |



|                 |  |                              |               |
|-----------------|--|------------------------------|---------------|
| बाबर            | १६३  | रामस्यंभ                     | २२६           |
| बीकै            | ५६१  | रायचव                        | ४४            |
| कुर्घसिंह       | ५, २००                                     | रायमल्ल                      | ३५१           |
| अमवंतसिंह       | ३४   | रामसिंह                      | ३४६, ३२०      |
| आटीजैने         | १५१, १८८                                   | साताह                        | ५२२           |
| अमरामन          | ५६१  | लिछमरास्मंभ                  | २२६           |
| अमसिंह          | ७१   | बनुदेव                       | ४३६           |
| आवसिंह ( हावा ) | ३६   | बिक्रमसहि                    | ५६७           |
| भोज             | ५६१  | विक्रमादित्य                 | २५१, २५३, ६१२ |
| भोजदेव          | ३५   | विजयसिंह                     | २८३           |
| मकरधुज          | ४३६  | विमलमंजोद्वर                 | ५६२           |
| मदन             |  | विशानसिंह                    | २८३           |
| महमदखॉ          | १०   | वीदे                         | ५६१           |
| महमदसाह         | १५६  | वीरनारायण ( राजाभोजकापुत्र ) | ५६१           |
| महमूवसाहि       | १८८  | वीरमदे                       | ५६२           |
| महूसौरखॉन       | ५३   | वीरबल                        | ६८१           |
| माधोसिंह        | १०४, १६२, ५५१, ६३६                         | शक्तिसिंह                    | ३७            |
| माधवसिंह        | ६३८  | शाहजहां                      | ६०२, ६६८      |
| मानसिंह         | ३४, १५६, १८४, १८६, १६२, १६६, ३१३, ४७६, ४८० | श्रीपाल                      | ३५            |
| मालदे           | ५६१, ५६२                                   | श्रीमालदे                    | १६०           |
| मूलराज          | १३२  | श्रीराव                      | ५६५           |
| मोहम्मदराज      | ६००  | श्रेणिक                      | ३६३           |
| रघुबीरसिंह      | ३८६  | सलेमसाह                      | ७७, २०६, २१२  |
| राजसिंह         | १३१, २७१, ३१३                              | सावलदास                      | १८४           |
| राजमल्ल         | ७२६  | सिकन्दर                      | १५५           |
| रामचन्द्र       | ७७, २४०                                    | सूर्यसेन                     | ४, १६४        |
| रामसिंह         | २७, १४६, २७४, २७५, ६१०, ६११                | सूर्यमल्ल                    | २६६           |
|                 |  | संभामसिंह                    | ३७३           |
|                 |  | सोमबारे                      | ५६१           |
|                 |  | हवीर                         | ३७८, ५६१, ६०६ |

## ★ ग्राम एवं नगरों की नामावलि ★

|                              |  |                              |  |
|------------------------------|--|------------------------------|--|
| ग्रंजमगीई                    | ७२६                                      | मावरा                        | १२३, २०१, २३५, ३६६   |
| ग्रंथावतीगढ ( ग्रामेर )      | ४, ३४, ४०, ७१, १२०<br>१६३, १८७, १६६, ४५६ | ग्रामानेरी                   | ७४६, ७५३, ७७१<br>३५५   |
| ग्रकबरातनगर                  | ४७६                                      | ग्रामेर                      | ३१, ७१, ६३, ६१६, ६१०<br>१३२, १३३, १७२, १८४,<br>१८८, १६०, २३३, ३६४<br>३३७, ३६४, ३६५, ४३२<br>४६२, ६८३, ७५६ |
| ग्रकबराबाद                   | ६, ३६१                                   | ग्रामगढ                      | ३५३  |
| ग्रकबरापुर                   | २५०                                      | ग्रालमगंज                    | २०१  |
| ग्रकीर                       | ३६७                                      | ग्रार ( ग्रामेर )            | ६८१  |
| ग्रजमेर                      | २१६, ३२१, ३४७, ३७३<br>४६६, ५०५, ५६२, ७२६ | ग्रामम नगर                   | ३५   |
| ग्रटोशिनगर                   | १२                                       | ग्रन्दीर ( तुकोगंज )         | ५४७  |
| ग्रहाहिलपत्तन ( ग्रहाहिलगढ ) | १७५, ३५१                                 | ग्रन्पुरी                    | ३५८, ३६३   |
| ग्रमरसर                      | ६१७                                      | ग्रंथावतिपुर ( मालवदेश में ) | ३४०  |
| ग्रमरावती                    | ४८७                                      | ग्रंदोखली                    | ३७१  |
| ग्रवंती                      | ६६, २७६, ३६७                             | ग्रंदर                       | ३७७  |
| ग्रवंलपुरदुर्ग ( ग्रामरा )   | २०६, ३४६                                 | ग्रंदरा                      | २७, ३०, ५०३  |
| ग्रराह्लपुर                  | १७                                       | ग्रप्रियावास                 | ३१६  |
| ग्रलकापुरी                   | ४३५                                      | ग्रज्जैन                     | १२१, ६८३   |
| ग्रलवर                       | २४, ५६७                                  | ग्रज्जेणी ( जज्जैन )         | ५६१  |
| ग्रलाउपुर ( ग्रलवर )         | १४४                                      | ग्रवयपुर                     | ३६, १७६, १६६, २४२<br>२६३, ५६१  |
| ग्रलीगढ ( उ. प्र )           | ३०, ४३७                                  | ग्रकोहमा नगर                 | ४५४  |
| ग्रवन्तिकापुरी               | ६६०                                      | ग्रसिचपुर                    | १८१  |
| ग्रहमदाबाद                   | ३३३, ३०५, ५६१<br>५६२, ७५३                | ग्रौरगाबाद                   | ७०, ५६२, ६१७   |
| ग्रहियुर ( नागीर )           | ८६, २५१                                  | ग्ररुणालाट                   | ३६७  |
| ग्रधी                        | ३७२                                      | ग्रद्धोविदा                  | ५६२  |
| ग्रंथावती                    | ३७२                                      |                              |  |
| ग्रथां महानगर                | १६४                                      |                              |  |
| ग्रथैर ( ग्रामेर )           | १०५                                      |                              |  |

|                        |              |                       |                    |
|------------------------|--------------|-----------------------|--------------------|
| कटक                    | २५४          | केरल                  | ३६७                |
| कफोसपुर                | १६१          | केरवाग्राम            | २५०                |
| कम्बण्ड                | ३६७          | कौलाश                 | ६८२                |
| कञ्जीग्राम             | १६३          | कोटपुतली              | ७५७                |
| कनारा (बिधा)           | २२           | कोटा                  | ६४, २२७, ४५०       |
| कर्णाटक                | ३८६          | कोरटा                 | ३२३                |
| कराड                   | ३६७          | कौशबी                 | ५६२                |
| करौली                  | ६०४          | कुम्भगढ               | १८३, २२१, २६८, ३१६ |
| कलकता                  | १५१          | कुम्भगढ ( कालाबेहरा ) | २१०                |
| कल्पवल्लीपुर           | ३६३          | कण्डार                | ४८०                |
| कलिया                  | ३६७          | कशीली                 | ३३७                |
| काडीग्राम              | २४६          | खिराबदेस              | ७१                 |
| काशीगोता               | ३७२          | खेटक                  | २५१                |
| कानपुरकैट              | १३४          | गंधार                 | १५५                |
| कामानगर                | १२०          | गऊढ                   | ३६७                |
| कारवा                  | २०४          | गढकोटा                | ६३८                |
| कासब                   | ८२           | गात्रीकायाना          | ७१४                |
| कालाबेरा ( कालाबेहरा ) | ४५, २१०      | गिरनार                | ६७०                |
|                        | ३०६, ३७२     | गिरपोर                | ३६२                |
| क्रिदात                | ३६७          | ग्रीवापुर             | ४०८                |
| क्रिषानगढ              | ४५, २५३, ५६२ | गुजरात                | २२४                |
| किहूरोर                | २१८          | गुज्जर ( गुजरात )     | ३६७                |
| कुं कुणदेश             | ५२२          | गुज्जैरदेश ( गुजरात ) | ३६३                |
| कुबायण                 | ४४१          | गुरुवचनमर             | ४३६                |
| कुंभनगर                | २२           | गूलर                  | ३७१                |
| कुंभलसेरुर्गा          | २५१          | गोपाचलनगर ( बवालियर ) | १५५, १७२, २६५, ४५३ |
| कुंभलसेस               | ३६७          | गोलागिरि              | ३७२                |
| कुरंगण                 | ३६७          | गोबटोपुरी             | १८१                |
| कुम्भांगलदेश           | १५५          | गोविन्दगढ             | ४१०                |
| केकडी                  | २००          | गौन्देर ( गोनेर )     | ३७२                |

ग्राम एवं नगरी की नामावलि ]

[ ६३३ ]

|                          |  |
|--------------------------|--|
| श्यामियर                 | १७२, ४५३                               |
| शबरीसा                   | ४७५                                    |
| शाटई                     | ३७१                                    |
| शाटमपुर                  | ४१२                                    |
| शाटसल                    | २३४                                    |
| शऊड                      | ३९०                                    |
| शङ्खपुरी                 | ४१, १८८, ५३१                           |
| शङ्खापुरी                | १७, ३०३                                |
| शन्देरीवेवा              | ५३, १७१                                |
| शंपनेरी                  | ५६३                                    |
| शम्पावती ( चाकसू )       | ३०२, ३२८                               |
| शम्पापुर                 | १६४                                    |
| शमलकार क्षेत्र           | ६९३                                    |
| शाकसू                    | २२५, २८७, ४३४, ४६७<br>४९८, ५६३, ७८०    |
| शालवनपुर                 | ५४८                                    |
| शावडन्य                  | ३७२                                    |
| शावली ( भागरा )          | ५४७                                    |
| शितौड                    | २१३, ५९२                               |
| शिवनकुट                  | ३९, १३९, २०९                           |
| शीतौडा                   | १८५, १८६                               |
| शूक                      | ५०२                                    |
| शोसू                     | ४४०                                    |
| शम्भूडीप                 | २१८                                    |
| शयदुर्ग                  | २७३                                    |
| शयनगर ( जयपुर )          | १६, ११२, १२४<br>१९८, ३०१, ३१६          |
| ( सवाई ) जयनगर ( जयपुर ) | १६६, १७०, २९८<br>३१८, ३३०              |
| जयपुर ( सवाई ) जयपुर     | ७, १६, २५, २७ ३१<br>३४, ३६, ४२, ४४, ४२ |

|                 |                        |
|-----------------|------------------------|
|                 | ३३, ६१, ६९, ७१, ७२     |
|                 | ७४, ७७, ७९, ८५, ८९, ९२ |
|                 | ९३, ९६ ९८, १०२, १०४    |
|                 | ११०, १२१, १२८, १३०     |
|                 | १३४, १४०, १४२, १४५     |
|                 | १४२, १४३, १४४, १४५     |
|                 | १४८, १६२, १६९, १७२     |
|                 | १७३, १८०, १८२, १८३     |
|                 | १८९, १९५, १९६, १९७     |
|                 | १९८, २००, २०१, २०२     |
|                 | २०५, २०७, २२०, २२५     |
|                 | २३०, २३१, २३४, २३५     |
|                 | २३६, २३९, २४०, २४३     |
|                 | २४५, २६२, २७४, २७५     |
|                 | २८०, ३०२, ३०४, ३०८     |
|                 | ३०९, ३४१, ३४०, ३४७     |
|                 | ३६२, ३६४, ३७५, ३८६     |
|                 | ३९४, ४१०, ४११, ४२१     |
|                 | ४४५, ४५०, ४५६, ४६०     |
|                 | ४६१, ४६६, ४७२, ४८१     |
|                 | ४८७, ४९४, ४९६, ५०४     |
|                 | ५०५, ५११, ५२०, ५२१     |
|                 | ५२७, ५३३, ५४९, ५७७     |
|                 | ५९१, ६००, ६१५, ६६९     |
|                 | ६८३, ७१५, ७२९, ७४४     |
|                 | ७६८, ७७५, ७७६          |
| जलयथ ( पानीपत ) | ७०                     |
| जहानाबाद        | ४१, ७०, ९१, १४२        |
|                 | १५२, ६९८               |
| जागक            | ३६०                    |

|                           |                    |                        |                    |
|---------------------------|--------------------|------------------------|--------------------|
| बोकारो                    | १०६, २०५, ५६२      | सिन्धुना               | ३६५                |
| बोकारोपुर                 | १३२                | सुपुल                  | ३६७                |
| बोकारोपुर                 | ५६१, ६२०           | सुपुल                  | ३६७                |
| बोकारोपुर                 | २५, ३१, ६१, ५५६    | सोडा ( टोडा )          | ३७६                |
|                           | ५०२, ६०१           | दफ्तार                 | ३, ३७              |
| बोकारोपुर                 | २०५, ३०१, ५६१      | सुपुल                  | ३६७                |
| बोकारोपुर                 | २६, ३५, ७५, २३१    | सुपुल                  | ३६५                |
|                           | २६३, ३०२, ३३३      | बिर्सा-बेल्गी          | ३७, ८८, १२८, ३५७   |
|                           | ५५५, ५६१, ५६६      |                        | १५६, १७५, १६७, ५५८ |
|                           | ५८७, ५६१, ६५५      |                        | ५५६, ५६१, ७५६, ७६७ |
| आसरापाटन                  | १६३                | बिर्सा-बेल्गी ( दोसा ) | ३६५                |
| आसरापाटन                  | ३७२                | सुपुल                  | ३७२                |
| मिलती                     | ३१५                | सुपुल                  | ३७०                |
| मिलती                     | १७०, ३२६, ५७७      | बेल्गी-बेल्गी          | ३६१                |
| मोटबाडा                   | ३७२                | बेल्गी-बेल्गी ( बीसा ) | १७३, २८६, ३६५      |
| दहडडा                     | ३०२                | बेल्गी-बेल्गी          | ३६६                |
| टोंक                      | ३२, १८६, २०३       | बेल्गी-बेल्गी          | ३६६                |
| टोडापाटन                  | १५८, ३१३           | बेल्गी                 | ३६१                |
| कुपोबीपाटन                | २६३                | दोसा-दोसा              | १७३, ३२८, ३७२, ३७३ |
| दिल्ली                    | ५१                 | ब्रह्मपुर ( मालपुरा )  | २६२, ५०६           |
| दिल्ली                    | ३११, ३७१           | द्वारिका               | ५६७                |
| द्वारदेश                  | ३१६, ३२८           | बलकनपुर                | ३६८                |
| शागाबवास ( नामरपाल )      | ३६७                | धारानगर                | ३६                 |
| ब्रह्मपुर ( दोसा-बेल्गी ) | ७७                 | धारानगरी               | ३५, १३३, १५६, १७६  |
|                           | १३८, १७५, १८३, २०० | नंदतटपाटन              | ६२                 |
|                           | २०५, २३६, ३१३, ५६५ | नबपुर                  | ७७५                |
| बाल                       | ३६७                | नगर                    | ३३७, ५६२           |
| बाल                       | ३०१                | नगर                    | ५३५                |
| बाल                       | १५५, १५७           | नगर                    | ३६८                |
| बाल                       | ३६७                | नगर                    | ५२                 |

प्रथम वर्ष जंगरी की नामावलि ]

[ ६६ ]

|                       |                      |               |                    |
|-----------------------|----------------------|---------------|--------------------|
| नरवल                  | ३६७                  | पेली          | ३३३                |
| नरामरणा               | ११७, ३५३, ३६२, ४१५   | पैलटा         | १५६, ३५६           |
| नरामरणा ( बडा )       | ५८५                  | पैबीगिरि      | ७३७                |
| नलकच्छपुरा            | १५५                  | विपैलाह       | ३३३                |
| नलवर दुर्ग            | ५२५                  | विपैलीन       | ३३३                |
| नवलछपुर               | ३१२                  | पुन्वी        | ५५६                |
| नांगल                 | ३७२                  | पूरुसागनगर    | ३३७                |
| नागरचालदेग            | ५५८                  | पूरुवेसे      | ३३७                |
| नागपुरनगर             | ३३, ३५, ८८, २८०, २८२ | पिरीजकोटे     | ३३७                |
|                       | ३८५, ५७३, ५५३        | पिरीजापसन     | ३२                 |
| नागपुर ( नागौर )      | ७३३, ७६१             | पीबेनामनगर    | ३३८                |
| नागौर                 | ३७३, ५६६, ५८८        | फिहपुर        | ३३१                |
|                       | ५६०, ७१८, ७६२        | फलीधी         | ३३२                |
| नामादेश               | ३७                   | फार्गपुर      | ३५                 |
| निमलपुर               | ५०७                  | फापी          | ३१, ६३, १५०        |
| निराली ( नराभरणा )    | ३७०                  | फौफली         | ३३१                |
| निवासपुरी ( सागोनैर ) | २८६                  | बंग           | ३३७                |
| नीमैठा                | ७६६                  | बंगाल         | ३३७                |
| नीमैठा                | १६८, २५०, ५८५, ५८७   | बंघगोपालपुर   | ३३३                |
| नीरुवा                | १७, ३४१              | बगरू          | ६६                 |
| पैडिलपुरे             | ५३६                  | बगरू-नगर      | ७५, १७०            |
| पैचिननगर              | ५२, ५६०              | बगुहटा        | ३५३, ५५८           |
| पैइन                  | ३८७                  | बटेरपुर       | १३३                |
| पैनेवाहनगर            | ७१                   | बनारस         | ५५३                |
| पैलाडी                | ५६२                  | बरम्बर        | ३३७                |
| पैबोलास               | ७३                   | बराह          | ३३७                |
| प्राटण                | २३०, ३०५, ३६६, ५६२   | बसई ( बस्ती ) | १८६, २६६, ५१५      |
| प्राहनपुर             | ५५६                  | बसवानगर       | १६५, १७०, ३२०, ५५६ |
| प्राणीपल              | ७०                   |               | ५५६, ७३१           |
| पालव                  | ६८६                  | बहादुरपुर     | १६७, १६८           |

|                 |               |                   |                         |
|-----------------|---------------|-------------------|-------------------------|
| बागबंदी         | ६७, १५४, २३४  | मधुरा             | ४७८                     |
| बाणपुर          | १११           | मधुपुरी           | ३१६                     |
| बाबलगर          | ५७६           | मनोहरपुरा         | ७५१                     |
| बाटाहदरी        | ३७२           | मलाटना            | ७७६                     |
| बालाहेडी        | २८८           | मरुत्यल           | ३६७                     |
| बाली            | ५०६           | मसूतिकापुर        | ४०                      |
| बीकानेर         | ५६१, ५६२, ६८४ | मलयखेड            | २०४                     |
| बुन्दी          | ८४, ४०६       | महाराष्ट्र        | २५३                     |
| बैराठ           | ६७, ५६४       | महुवा             | २५, २६४, ४५५, ४७३       |
| बैराठ ( बैराठ ) | २०४           | महेबो             | ५६१                     |
| बाँलीनगर        | ४८, १५६, १८३  | माधोपुर           | २६८                     |
| बहापुरी         | ६६८           | माधोराजपुरा       | ३३३, ४५५                |
| भडीच            | ३७१           | मारवाड            | ४४०                     |
| भदावरदेश        | २५४, ३४०      | मारोठ             | १६३, ३१२, ३७२           |
| भरतखम्ब         | १४३           |                   | ३८४, ५६२, ५६३           |
| भरतपुर          | ३८६           | मालकोट            | ५६१                     |
| भासगढ           | ३७२           | मालपुरा           | ४, २८, ३४, ५६, १२२, १३० |
| भानुमतीनगर      | ३०५           |                   | २३१, २४८, २४६, २६२, ३०१ |
| भावनगर          | ११७           |                   | ३४२, ३४३, ३४४, ४६०, ५६२ |
| भिण्ड           | २५४           |                   | ६३६, ७६८                |
| भिरुद           | २६७           | मालवदेश           | ३५, २००, ३४०, ३६७       |
| भिलोड           | १६८           | मालहपुर           | ३४                      |
| भैतलाना         | ३०३           | मिथिलापुरी        | ५४३                     |
| भोपाल           | ३७३           | मुकम्बपुर         | ७७०                     |
| भृगुकम्बपुरी    | २१०           | मुलतान            | १११, ५६२                |
| भंडोवर          | ५६१           | मुलताण ( मुलतान ) | १७७                     |
| भंडानगर         | ७०६           | मेडता             | १८४, ३७२, ५६१           |
| भांडोडी         | ३७१           | मेहूरग्राम        | ३०                      |
| भांडोगढ         | ५३            | मेवपाट            | २०५, ३८१                |
| भुं बाबती       | ७४            | मेवाड             | ३७१                     |
| भंडनाछापपुर     | २५१           | मेवाडा            | ३७२                     |

ग्राम एवं नगरों की नामावलि ]

[ ६३७ ]

|                        |                    |                     |                      |
|------------------------|--------------------|---------------------|----------------------|
| मोहनवाडी               | ४६०                | रैणवाल              | ४८०                  |
| मोहा                   | ११२, ४४७, ५२०      | रैनवाल              | ३४५, ६६५             |
| मोहाणा                 | १२८                | रैवासा              | २००                  |
| मैनपुरी                | ४६                 | लखनऊ                | १२५                  |
| मोजमाबख                | ५६, ७१, १०४, १७४   | ललितपुर             | १७८                  |
|                        | १६२, २०८, २५५, ४११ | लखर                 | २३६, ३८६, ७००        |
|                        | ४१२, ४१६, ४१७, ५४३ | लाखेरी              | ६६५                  |
| यवनपुर                 | ३४३                | लाडणा               | १८६                  |
| योगिनीपुर ( बिल्ली )   | २६४                | लाबा                | ४२                   |
| मौवनपुर                | ३००                | लालसोट              | ३०                   |
| रएतभंवर ( रणधंभोर )    | ३७१                | लाहौर               | ६६८, ७७१             |
| रणधंभोरगढ              | ७१२, ७४३           | लूणाकरासर           | ७                    |
| रणस्तंभपुर ( रणधंभोर ) | २१२                | वनपुर               | २११                  |
| रतीय                   | ३७१                | वाम                 | २०१                  |
| रहितपुर ( रोहतक )      | १०१                | विक्रमपुर           | १६४, २२३             |
| राजपुर नगर             |                    | विदाघ               | ३७१                  |
| राजगढ                  | १७६                | विमल                | ५६२                  |
| राजग्रह                | २१७, २४४, ३६३      | वीरमपुर             | १७८                  |
| रांठपुरा               | ४५०                | वुन्दावती नमरो      | ५, ३६, १०१, १७८, २०० |
| राणपुर                 | ६१६                | वुन्दावन            | ४२२                  |
| रामगढ नगर              | १४६, ३७०           |                     | ४, ११०, २७६          |
| रामपुर                 | १३, ३५६, ३७१       | वेतरे ग्राम         | ५३                   |
| रामपुरा                | ४६, ४५१            | वैरागर ग्राम        | ४६, २१०              |
| रामसर ( नगर )          | १८१                | वैराट ( बैराठ )     | १०६                  |
| रामसरि                 | ६६                 | बोराब ( बोराज ) नगर | ५६४                  |
| रामवेवा                | १६७                | बेमलासा नगर         | १५४                  |
| रावतकलोधी              | ५६१                | शाकम्बगपुर          | ४५८                  |
| राहेरी                 | ३७२                | शाकम्बाटपुर         | १५०                  |
| रैवाडी                 | ६२, २५१            | शाहजहाँनाबाब        | ४७, १०८, ५०२         |
| रैणपुरा                | ५६२                |                     | ६०१                  |



|                        |                     |                        |                   |
|------------------------|---------------------|------------------------|-------------------|
| बिबपुरी                | ७३५                 | सायवलन नगर ( सागवाडा ) | १५४               |
| बुवांजलपुर             | ८०                  | सागवाडपुर              | ५०८               |
| बोरगढ                  | ६८२, ७७१            | सागवाडा                | ६७, १५१           |
| बोरपुर                 | ५०, २१२, ३६६        | सादडी                  | ३१३               |
| बोरपुरा                | १३६                 | सामोड                  | ८३                |
| बीपलन                  | १३८                 | सारक्याम               | ७                 |
| बीपथ                   | ८५, ३६५             | सारंगपुर               | ८५, १२६           |
| बंघामगढ                | २१५                 | सालकोट                 | ५६६               |
| संग्रामपुर             | ३५१, ५५५            | साहीवाड                | ५६०               |
| सांखीण                 | १६०                 | सिकदरपुर               | ५५                |
| सांगानायर ( सांगानेर ) | ६७८                 | सिकदरावाड              | ७७, १५२, १५५, ३६७ |
| सांगानेर               | ३५, ६३, ७३, ६३, १३६ | सिमरिया                | ५६५               |
|                        | १५५, १५८, १५६, १५३  | सिरांही                | ५६२               |
|                        | १५६, १६५, १८१, २०२  | सीकर                   | ५६६               |
|                        | २०७, २२६, ३०१, ३७१  | सिरोज                  | ८५, ६१३           |
|                        | ३८५, ३६५, ४०८, ४२०  | सीलपुर                 | २५६               |
|                        | ५६०, ५८५, ५८८, ७७५  | सीलौरनगर               | ३५, १२६           |
| सांगवती ( सांगव्हर )   | १६५                 | सुपोट                  | ३६७               |
| सार्भर                 | ३७१                 | सुवेट                  | ३६७               |
| सयाणा नगर              | २६०                 | सुभोट                  | ३६७               |
| सनाबद                  | ३५२                 | सुन्हेरवाली धांधी      | ३७२               |
| समरपुर                 | ५८७                 | सुरंगपत्तन             | ३८६               |
| समोरपुर                | १२७                 | सूधानगर                | ५८१               |
| सम्मैदागिसर            | ३७३, ६७८            | सूरत                   | ६७०               |
| संस्कारपुर             | २५३                 | सूर्यपुर               | ५५६               |
| सवाई माधीपुर           | ६३, ७०, १३२, १५५    | सेवाग्रो               | ५६१               |
|                        | ३७०, ६६३            | सांगानिगिर             | ३५६, ६७५, ७३०     |
| सहारनपुर               | ३३७                 | सोऊंठा ( सोऊत )        | ३६१               |
| सहिजानन्दपुर           | २७६                 | सौरजदेश                | ५६७               |
| साकेत नगरी             | ३                   | हॉंसी                  | ३८१               |

ग्राम एवं नगरों की नामावलि ]

|              |                    |            |         |
|--------------|--------------------|------------|---------|
| हिण्डीन      | २५०, २६६, ७०१, ७२६ | हापरस      | ( ६३६   |
| हथिकंतपुर    | ५६७                | हिण्डी     | १४५     |
| हरसौर        | १८४                | हिमाचल     | २०२     |
| ( गढ ) हरसौर | ६३६                | हिरण्योदा  | ३६७     |
| हरिदुर्ग     | २००, २६६           | हिसार      | ६४४     |
| हरिपुर       | १६७                | हीरापुर    | ६२, २७८ |
| हलसूरि       | ७३४                | हुडवलीदेवा | २३०     |
| हाबोती       | ६०४                | होसोपुर    | १७      |
|              |                    |            | ६८८     |



## ★ शुद्धाशुद्धि पत्र ★

### पत्र एवं पंक्ति

१×४  
 ६×८  
 ७×२६  
 १६×६  
 १७×१६  
 ३१×११  
 ३८×१०  
 ४४×५  
 ४४×२४  
 ४८×२२  
 ५०×१२  
 ५३×१  
 ५५×२६  
 ५६×१५  
 ६३×६  
 ६६×१०  
 ६६×१३  
 ७५×१८  
 ७५×२१  
 ७६×१३  
 ६८×१  
 ६६×६  
 १०४×२०  
 १२१×१

### अशुद्ध पाठ

अथ प्रकाशिका  
 धिकउ  
 गोमटसार  
 ३०४  
 १८१४  
 तत्त्वार्थ सूत्र भाषा  
 वे. सं. २३१  
 ५४५  
 वष  
 —  
 नयचन्द्र  
 काल  
 सह  
 र. काल  
 न्योपार्जित  
 भूधरदास  
 १८७१  
 बालाविवेध  
 आधार  
 श्रीनंदिगण  
 सोनागिर पञ्चीसी  
 १४ वीं शताब्दी  
 १४४१  
 धर्म एवं आचारशास्त्र

### शुद्ध पाठ

अर्थ प्रकाशिका  
 किघउ  
 गोम्मतसार  
 ३१४  
 १८४४  
 तत्त्वार्थ सूत्र भाषा—जयवंत  
 वे. सं. १६६२  
 ५४६  
 वर्षे  
 ५६६  
 नयनचन्द्र  
 काल  
 साह  
 ले० काल  
 न्यायोपार्जित  
 भूधरमिश्र  
 १८०१  
 बालावबोध  
 आचार  
 —  
 सोनागिरपञ्चीसी  
 १६ वीं शताब्दी  
 १३४१  
 अध्यात्म एवं योग शास्त्र

शुद्धाख्य पत्र ]

पत्र एवं पंक्ति

१३१×१

१४०×२८

१४६×७

१४६×७

१६४×१०

१६४×१

१७१से१७६

१७६×२८

१८१×१७

१६२×६

१६२×१४

२०८×६

२१६×११

२१६×६

२४२×२४

२६४×१६

३११ . १२

३१६×१०

३२०×१४

३३६×१३

३६६×—

३८४×१

३८६×४

३६६×४

४०१×२१

४४६×२४

४६४×१२

५०२×८

५५७×२

अशुद्ध पाठ

त्र

१७२८

१० काल

१०४०

सं० १७८४

क्र० सं० ३००० से ३०४८

रङ्गू

दमल्ल

३२१८

भट्टार

१७७४

अकारापंचमीकथा

धर्मचन्द्र

वद्ध मानमानस्य

२१२०

३२८

नेमिचन्द्राचार्य

३६३

भक्तिलाल

३६८-३७४

कल्याणमन्दिर स्तोत्र टीका

—

अणुभा

भूपालचतुर्विंशति

संस्कृत

भादवापुरी

पञ्चगुरुकल्याण पूजा

पाटोकी

शुद्ध पाठ

ष

१८२८

१० कालसं० १६६६

ले० काल

२०४०

सं० १५८४

क्र० सं० २१०० से २१४८

कवि तेजपाल

नादमल्ल

२३१८

भट्टारक

१७१४

आकारापंचमीकथा

देवेन्द्रकीर्ति

वद्ध मानमानस्य

३१२०

३२८०

पद्मानन्द

३३६३

भक्तिलाल

३६६-३७६

कल्याणमाला

और

कनकपुराल

भूपालचतुर्विंशतिटीका

हिन्दी

भादवापुरी

पञ्चगुरुकल्याण पूजा

पाटोकी

पत्र एवं पक्षि

५७३×१६

५७४×१२

५७४×१३

५७५×१०

५७६ २०

५७८×१७

५६९×१०

५६४×१८

६०७×२२

६१६×२२

६१५×१७

६२३×२३

६२३×२४

६२८×१४

६२८×२१

६३५×१०

, , ×१६

६३६×१४

६३७×१०

६३६×१०

, , ×२६

६४२×६

६४५×४

६४८×६

६४६×१७

६६१×२

६७०×१५

६७१×१२

६८०×२५

६६१×६

अशुद्ध पाठ

संस्कृत

संस्कृत

—

संस्कृत

रसकौतुकरायसभा रञ्जन

छानतराय

”

सोलकारखरास

पद्मावतीछन्द

पडिकम्मणसुल

५४५१

नानिगरास

जग

प्राकृत

योगिचर्चा

अपभ्रंश

आ० सोमदेव

अपभ्रंश

स्वयम्भूस्तोत्रहृष्टोपदेश

पंचकल्याण पूजा

त

रामसैन

”

रायमल्ल

कमलप्रभसूरि

पधाधा

पञ्चवीसी

ज्योतिषपदकमाला

कलाहामन्दि स्तोत्र

नन्दराज

शुद्ध पाठ

प्राकृत

प्राकृत

संस्कृत

अपभ्रंश

रसकौतुकराजसभा रञ्जन

छानतराय

—

सौलहकारयौरीस

पद्मावतीछन्द

पडिकम्मणसुत्र

५४३१

नानिगराम

जब

अपभ्रंश

योगचर्चा

प्राकृत

सोमप्रभ

संस्कृत

हृष्टोपदेश

पंचकल्याणपूजा

कृत

रामसिंह

संस्कृत

महा रायमल्ल

कमलप्रभसूरि

पधाधा

जैन पञ्चवीसी

ज्योतिषपदकमाला

कलाहामन्दि स्तोत्र

नन्ददास

पत्र एवं पंक्ति

७१६×६

७३१×२१

७३२×६

७३३×३,४

७३३×५

७३८×२६

७५०×६

७५४×१८

७५५×१७

७६५×५

अशुद्ध पाठ

नन्दराम

”

”

हिन्दी

”

ब्रह्मरायवल्लभ

मानसिंह

अभयदेवसूरि

”

१८६३

शुद्ध पाठ

हिन्दी

—

हिन्दी

संस्कृत

हिन्दी

ब्रह्म रायमल्ल

मानसिंह

अभयदेवसूरि

अपभ्रंश

१६६३



